

॥ अथ जनिस्थरीपारम्भः ॥



श्रीगणेशाय नमः ॥ १ ॥ अथ यथाप्रतिबोधितो भगवन्नागायणानस्वयं आसिन् यथितो पुराणाभिज्ञासः स ह मायेत ॥ अहं तोमि-
 त्वविषिणीं सगवतीं महादशां श्रुत्वा विनोम वनाभमुत्सदधां मिमगाव ॥ इति भवदुर्गिणी ॥ १ ॥ ॥ अथ न्ययां ॥ १ ॥ ॥ अथ न्ययां ॥ १ ॥ ॥ अथ न्ययां ॥ १ ॥ ॥
 ज्ञानमुद्राय ह्यणाय गीतोऽस्तु तदुह नमः ॥ २ ॥ स योगिनिपदा गोवोदा रथो गाल्मिद नः ॥ यो यो न लम्ब ॥ ३ ॥ कादुरथो नास्तु तम
 हतु ॥ ३ ॥ वस्तु देवस्तु तदवक सचाणूरमद न ॥ देवता परमानंदं हृषावित जगद्गुरुसु ॥ ४ ॥ आनंभा ज्ञ आनंद ॥ वेदप्रतिपाद्या ॥
 जयजय स्वसंवेद्या ॥ आत्मरूपा ॥ ५ ॥ देवा त्वचि गणेश ॥ सक्त्वा यथातिमकाश ॥ द्योनि विनिदाश ॥ अथ यथा रिजो जी ॥ २ ॥ हे शब्द
 ब्रह्म अशेष ॥ तैत्तिरीयसि सवय ॥ नेयवत असौ ॥ ३ ॥ स्मृतेति च अवयव ॥ दग्वा रोगि न्द्रमाव ॥ तेषां लोव-
 णाचो विव ॥ अथ शांभा ॥ ४ ॥ अर्धादशपुगणे ॥ तैत्तिरीयसि सवय ॥ पदपद्म तोरवे वण ॥ असुररत्ना ॥ ५ ॥ पदवध नागर ॥ तैत्ति-
 रगाथि न्द्रांबर ॥ जयसाहि न्यवाणमपूर ॥ उजाळा च ॥ ६ ॥ देवा काव्यनादका ॥ जनि यो रिना भर्तृनादका ॥ त्याकि रूपां द्रुगता
 स्फुटय दिका ॥ अथ अग्नि ॥ ७ ॥ नानाप्रमथाची परी ॥ निपुणपुण गाहता कुसरी ॥ दिस्मर्ता उचिन पदे वाद्यां भ्रंशं मली ॥ ८ ॥
 अथ व्यासादिकाची मर्ता ॥ तैत्तिरीयसि सवय ॥ चोरवाळपुणं द्रुकृती ॥ पल्लवसु दका ॥ ९ ॥ देखाषट्पदशेन ह्यणि पर्वी-
 तैत्तिरीयसि सवय ॥ द्योनि विनिदाश ॥ आयुयहानो ॥ १० ॥ तरोतक तोचि फरश ॥ नो हि मंद अक्रुश ॥ वेदान्तम
 हारस ॥ मोदक भिरव ॥ ११ ॥ एकदा तं दित ॥ जोस्वभाव तारवि दित ॥ नाबोद्धु मत संकत ॥ नाति को नो ॥ १२ ॥ मंगसह जसु ल्का
 रवाट ॥ तोप द्रुकरवरद ॥ पथयति छाता सिद्ध ॥ अभयहन्त ॥ १३ ॥ देखा विवक वतस्तु विमळ ॥ ना च शब्दादसंख ॥ जय
 परमानंदक वळ ॥ महास्तरवाचा ॥ १४ ॥ तरोमिवा दतो चिदशन ॥ जोसमता राक्षसवर्ण ॥ देव उन्मेषस्तु ससण ॥ विमराज १५

पाठ. ओं १ नमः श्री जीर्जिनि ओ २ सकलमथिताय ओ १२ चोर्वाका ना ओ १५ स्वमना देवाट ७

मज्जभवराभन्दिशादो ॥ सीसांराभ्यवास्थानां ॥ बोधमदास्तसुनी ॥ अलीसंविती ॥ १६ ॥ प्रमथप्रवालरूपमा ॥ इतोद्वेगनेचि
 निरुक्ता ॥ सारिमागवदतोदम ॥ मस्तकावरी ॥ १७ ॥ उपरिवेदोपनिषदे ॥ जियेउदारचानमकरंदे ॥ नित्यकुसुमेमुकुंदोस्फुरा
 थ ॥ शासतोमन्दी ॥ १८ ॥ अक्रान्तरणयुगल ॥ उकारउदरविशाल ॥ मकारमहापल्ल ॥ मस्तकाकारे ॥ १९ ॥ हनोक्तोएकवदले
 तेशाब्दब्रह्मकवचले ॥ तेषांश्चीगुरुल्लपामिने ॥ आदिबोज ॥ २० ॥ आनाअसिनववांगिवनासीना ॥ जेचानुशयकलाका
 मिनी ॥ तन्मिशारदाविश्वयोहिनी ॥ नमिन्मियां ॥ २१ ॥ यजल्लदोसहुरु ॥ जेणनारिलालाहाससारपूर ॥ ह्यणाअनिविशेष
 अत्यादरु ॥ विवकावरी ॥ २२ ॥ जसोडोळ्यांअजभेद ॥ नेवळोदुष्टमिफानाफुटे ॥ भगवाभ्यपीहजेतथप्रगद ॥ महानिर्वा
 ॥ २३ ॥ कर्चिनामणीआनिराहानी ॥ सदाविजयवोत्तमनोरथो ॥ तसापूणकायस्थीनिर्वृत्तो ॥ ज्ञानदेवह्यण ॥ २४ ॥ ह्यणोनि
 जाणनंगुरुसज्जे ॥ नणहत्तकायहाउजे ॥ जसमखमिन्नेसहेजे ॥ शारवापल्लवसतोपतो ॥ २५ ॥ यानीअजियेचमुवनी
 नित्यमदतोसमुदावशाहनी ॥ नातराअमृतरसस्वादनी ॥ रससकळ ॥ २६ ॥ तेसापुदनापुदतोनोचि ॥ मियाप्रतिवर्दिताअगुरु
 चि ॥ अभिज्ञाधितमनोरुचि ॥ पुरनिना ॥ २७ ॥ आनाप्रवथारानुयागहन ॥ जसकळकथोजन्यस्यान ॥ नैअसिनवउद्यान ॥
 विवक्तुरुच ॥ २८ ॥ नातरासवसरवाचाभाद ॥ जमययमहाभिशि ॥ नाननवरसस्तुष्टि ॥ परिपूणहे ॥ २९ ॥ कोपरमथाम
 मकद ॥ हविद्यान्मूलपोट ॥ शास्त्रजानोवसाद ॥ अशेषान् ॥ ३० ॥ नातरासकळधस्योपाहर ॥ मज्जनाचेजकार ॥ लावण
 रत्नसादार ॥ शास्त्रे ॥ ३१ ॥ नानानयारपसारतो ॥ प्रगदन्असेविजगता ॥ आवस्त्रोत्तमहामनी ॥ व्यासाचिये ॥ ३२ ॥ ह्या
 पोनिहाकाव्यांगवा ॥ ययगुरुवतोचाटोवा ॥ गंधूनिरसाआलाआरो ॥ रसाळपणाचा ॥ ३३ ॥ तेवोविआदकाआणीकरु ॥ ए
 गाठ ॥ १८ ॥ दशापराभर ॥ ३४ ॥ विशयमनीआदरु ॥ ३५ ॥ जेअभिभयवि ॥ ३६ ॥ जोअभिभयवि ॥ ३७ ॥ जोअभिभयवि ॥ ३८ ॥ जोअभिभयवि ॥ ३९ ॥ जोअभिभयवि ॥ ४० ॥ जोअभिभयवि ॥ ४१ ॥ जोअभिभयवि ॥ ४२ ॥ जोअभिभयवि ॥ ४३ ॥ जोअभिभयवि ॥ ४४ ॥ जोअभिभयवि ॥ ४५ ॥ जोअभिभयवि ॥ ४६ ॥ जोअभिभयवि ॥ ४७ ॥ जोअभिभयवि ॥ ४८ ॥ जोअभिभयवि ॥ ४९ ॥ जोअभिभयवि ॥ ५० ॥ जोअभिभयवि ॥ ५१ ॥ जोअभिभयवि ॥ ५२ ॥ जोअभिभयवि ॥ ५३ ॥ जोअभिभयवि ॥ ५४ ॥ जोअभिभयवि ॥ ५५ ॥ जोअभिभयवि ॥ ५६ ॥ जोअभिभयवि ॥ ५७ ॥ जोअभिभयवि ॥ ५८ ॥ जोअभिभयवि ॥ ५९ ॥ जोअभिभयवि ॥ ६० ॥ जोअभिभयवि ॥ ६१ ॥ जोअभिभयवि ॥ ६२ ॥ जोअभिभयवि ॥ ६३ ॥ जोअभिभयवि ॥ ६४ ॥ जोअभिभयवि ॥ ६५ ॥ जोअभिभयवि ॥ ६६ ॥ जोअभिभयवि ॥ ६७ ॥ जोअभिभयवि ॥ ६८ ॥ जोअभिभयवि ॥ ६९ ॥ जोअभिभयवि ॥ ७० ॥ जोअभिभयवि ॥ ७१ ॥ जोअभिभयवि ॥ ७२ ॥ जोअभिभयवि ॥ ७३ ॥ जोअभिभयवि ॥ ७४ ॥ जोअभिभयवि ॥ ७५ ॥ जोअभिभयवि ॥ ७६ ॥ जोअभिभयवि ॥ ७७ ॥ जोअभिभयवि ॥ ७८ ॥ जोअभिभयवि ॥ ७९ ॥ जोअभिभयवि ॥ ८० ॥ जोअभिभयवि ॥ ८१ ॥ जोअभिभयवि ॥ ८२ ॥ जोअभिभयवि ॥ ८३ ॥ जोअभिभयवि ॥ ८४ ॥ जोअभिभयवि ॥ ८५ ॥ जोअभिभयवि ॥ ८६ ॥ जोअभिभयवि ॥ ८७ ॥ जोअभिभयवि ॥ ८८ ॥ जोअभिभयवि ॥ ८९ ॥ जोअभिभयवि ॥ ९० ॥ जोअभिभयवि ॥ ९१ ॥ जोअभिभयवि ॥ ९२ ॥ जोअभिभयवि ॥ ९३ ॥ जोअभिभयवि ॥ ९४ ॥ जोअभिभयवि ॥ ९५ ॥ जोअभिभयवि ॥ ९६ ॥ जोअभिभयवि ॥ ९७ ॥ जोअभिभयवि ॥ ९८ ॥ जोअभिभयवि ॥ ९९ ॥ जोअभिभयवि ॥ १०० ॥ जोअभिभयवि ॥

युनिशब्दोसाच्छास्त्रिकः॥आणिमहाबाधोकावच्छाकादुणावलो॥३४॥अथचातुर्यशाहाणस्माले॥प्रमयस्सुनसआले॥आणिसेसमा
 मयपारवले॥स्सरवाचिगय॥३५॥माधुर्योमधुरता॥मृगारीस्सरस्वता॥रूढपणउचिता॥दिसलेभले॥३६॥अथकळाविदप
 णकळा॥पुण्यासिमानपभागळा॥ह्यणउ॥निजनमजयाचिअवलीळा॥दोषहरेने॥३७॥आणिगाहूतानासिव॥रंगीस्सरशते
 चिआगच्छिक॥पुणासगुणपणाचिबिक्॥बहुवसाय॥३८॥मानतेजधक्कले॥जेसेवेलाक्यदिसउज्जिकले॥तसेव्यासमा
 तीकविकले॥भिरवेवस्व॥३९॥कामदग्नेविजयातले॥तेआपुलियापरीविस्तारिले॥तसेभारतीस्सरवाडले॥अथजान४०
 नातरीनगरातरीविसज॥तरीनागराचिहाइजे॥तसेव्यासोक्तातेजे॥धक्कतसक्क॥४१॥कोमथमवयसाकाळो॥लाव
 णयाचोनक्काळो॥मगदेजेसीआमकी॥अगनाआगी॥४२॥नातरीउद्यानोमाधवोयड॥तथवमशोमचोस्वरवाणीउयडे॥आदि
 त्यापसोनिअपडं॥जियापरी॥४३॥नानाधनोमृतसक्कण॥जेसेन्याहाळितासाधारण॥मगअळकारीबरवपण॥निवाडदा
 वो॥४४॥तसेव्यासोक्ताअळकारिले॥आवडतबरवपणपातले॥तेजाणोनोअज्यथिले॥इतिहासी॥४५॥नानापुरनित्ये
 अनिष्टेत्तागी॥सानोवधरुभिआगी॥पुगणआरच्यानरूपजगी॥भारताआली॥४६॥ह्यणऊनिमहाभारतीनाहो॥तेनोहो
 नोर्कीतिहो॥यणेंकारणेंह्यणिपेपाहो॥व्यासोच्छिष्टजगत्वर॥४७॥ऐसीजगीस्सरसकथा॥तजन्मसुमिपरमाथा॥सु
 नीसागेनपनाथा॥जन्मेजया॥४८॥जेअहोनीयउत्तम॥पवित्रैकमिरूपम॥परममगळधाम॥अवधारिजा॥४९॥आ-
 तांभारतकमळपुराग॥गीतारव्यमसंग॥जोसवादलाओरंग॥अर्जुनसी॥५०॥नातरीशब्दब्रह्माब्धि॥मथियन्याव्यास-
 बुद्धि॥निवडिलेनिरवधि॥नवनीतिहो॥५१॥मगज्ञानाभिसपक॥कडसिल्लिविवेक॥पदआलपरिणक॥आमोदासी॥५२

पाउः ओः ३६ दिसं ओः ४५ आवडंत काथि आश्रायिले ओः ४८ जे ओः ५१ वेद

४

७

जे अपेक्षिजे वरकीं ॥ सदा अनुभवे संतो ॥ साहसावधारयती ॥ रमिजे जेय ॥ ५२ ॥ जे आकर्षण जेमकीं ॥ जे अतिवद्यो
 जगती ॥ ते श्रीपद्मेश्वरी संगती ॥ संगि जेत ॥ ५३ ॥ जे भगवद्गीता ह्यणिज ॥ जे ब्रह्मे गानी प्रशंसिजे ॥ जे सनकादि कृष्ण विज
 आदरेसी ॥ ५४ ॥ जे संसार दनि येन दकल ॥ साजि अभूत कणक वळ ॥ ते वेचिती समसगद ॥ चकार तलगे ॥ ५५ ॥ तिया परी
 ज्ञातो ॥ अनुभावी हक्का ॥ अनिह्यनारपणी नित्ता ॥ आपुनिया ॥ ५६ ॥ हे शब्द वीण समवादिजे ॥ इदिये नैणता मतिग
 जे बोला आदि द्यो विजे ॥ प्रसयासी ॥ ५७ ॥ जे भय परगने तो ॥ परी कसळ दुल्ले नैणती ॥ नैसो परि आहसे मिति ॥ प्र-
 थो डये ॥ ५८ ॥ का आपुला तायेन सां इता ॥ आनिंग जच इ प्रगद तो ॥ हा अनुगार मो गता ॥ कुमुदिना जाणे ॥ ५९ ॥ ऐसे निग
 मीरपणे ॥ स्थिरावन्दि अनः करणे ॥ आयि न्याता निजाणे ॥ मानु डये ॥ ६० ॥ अहा भुजिना चिय पाती ॥ जे परि सणयागे
 रय हाती ॥ निही ह्युपाकर निसती ॥ अवधान द्यावे ॥ ६१ ॥ हसलुगी म्या ह्यणो तल ॥ चरणा लागी निविन विले ॥ प्रभू सरो
 लहदय आपुले ॥ ह्यणु क्रिया ॥ ६२ ॥ जे सास्त्र सावमाय वापाचा ॥ अपत्य बोल जरी वाबडी पाचा ॥ नरी अधिकृत पाचा ॥
 सनाय आयो ॥ ६३ ॥ नैसा तु ह्यो मि अगि कारिता ॥ सज्जनी आपुला ह्यणी तला ॥ तरी गे सहेज उपसाहला ॥ प्रायुं काय
 ॥ ६४ ॥ परी अपराधता आपा क आह ॥ जे संगी नार्य क वळ पाहे ॥ ते भवधार विन इल्लह ॥ ह्यणु क्रिया ॥ ६५ ॥ हे भनावन
 विचारिता ॥ वायो विधिवसा उपनै ह्यि चिना ॥ यरवो काय मानु नै जी रव द्याता ॥ शोभा आया ॥ ६६ ॥ कीर्ति ह्ये भूवा सुवरी ॥
 मापस्य सागरी ॥ सीन पतन्या परी निवर्तये ॥ ६७ ॥ आधका आकाश गि वसाप ॥ तरी भाणी कल्याह नि थोर हा आवे ॥
 ह्यणु क्रि मि अपाद ह्ये आयवे ॥ निह्य रिता ॥ ६८ ॥ तया गीतार्थी थोरी ॥ स्वयं शास्त्र वरी ॥ जे अभयानी प्रभू करी ॥ चमत्कारो
 पाव ॥ ओं २० वाको ॥ ओं ६४ वाकडा ॥ अधिकाधिक ॥ ओं ६७ उपजला ॥ ओं ७० पा. ७

नी ॥ ७० ॥ तं यहरह्यगोर्नाज ॥ त्वं जसकास्वरपनुज ॥ ते संहं न्यन्ननदो र्विज ॥ गीतानम् ॥ ७१ ॥ हविदायसागर ॥ ज
 यानिद्रिनाचाधार ॥ तोस्वये अर्षवन्धर ॥ मन्दादनुवादान्ता ॥ ७२ ॥ गेसेजे अगाध ॥ जथेगडावतीविद ॥ ने अल्पमी
 मतिमद ॥ कायहाये ॥ ७३ ॥ हं अपगवेसे निवव्यावे ॥ महानि जकवणधव्यावे ॥ गगनमुदीमुवावे ॥ मशके केवि ॥ ७४
 परिणय असागक आधार ॥ तेषां चिवालसो सधर ॥ जसा सुकुळ अगुरु ॥ ज्ञानदेवाह्यण ॥ ७५ ॥ चहुवीनरीसी मुरव ॥ ज
 रीजाहला अविवेक ॥ तर्हस तसुपादोपक ॥ सा ज्वळ अस ॥ ७६ ॥ लाहाचकनक हाये ॥ हे सा मथ्यपरिसो चिको आहे ॥
 कांभुतर्हीजिवितलाहे ॥ अमर्तसिद्धी ॥ ७७ ॥ जरी प्रकट सिद्धसरस्वती ॥ तर्ही मुक्याभार्या सारती ॥ एथ वरु सा मथ्य
 शक्ती ॥ नवलुकायी ॥ ७८ ॥ कांजयातं कामधेनुमाय ॥ नया सो अमायकाही आहे ॥ ह्यण पुमिमी प्रवती लाहे ॥ यथी द
 ये ७९ ॥ नरी लुनत पुरत ॥ अधिक तसरत ॥ करुनि धावे हतु मत ॥ विनवीत अस ॥ ८० ॥ आनांद ज अवधान ॥ तु ह्यविल
 विलासी बालन ॥ जे संचष्ट स्वार्थीन ॥ दास्येन ॥ ८१ ॥ ते सा सो अनुग्रहीत ॥ साधूचा निरूपित ॥ ते आपला अजकारित ॥
 मलतयापरी ॥ ८२ ॥ तंव श्रीगुरु ह्यणती राही ॥ हे तुज बालावेन नराकाही ॥ आताय याचि नद ॥ झडकरी विगा ॥ ८३ ॥
 या बाला निह निदास ॥ पावुनि परम उल्हास ॥ ह्यण परि समासना अवकाश ॥ तनुनि यो ॥ ८४ ॥ म्हाकु ॥ ह्यग दवा व
 धर्म सेने कुसुत्रे समवता धुयुत्सव ॥ मासका पांडवांचे वैकमुकुवत मजय ॥ ८५ ॥ दौ ॥ नरी पुज स्नेह सोहित ॥ ह्युत श
 ष्ट अस पुसत ॥ ह्यण संजया सारोमात ॥ कुरु संत्रीची ॥ ८६ ॥ जे धमालय ह्यण जे ॥ ते थपाडव आणि माझ ॥ गले भम
 नी व्याजे ॥ जुझाचे नि ॥ ८७ ॥ नरी तिहो ये तुला भवसर्ग ॥ वायकिजत अस ये रयेरी ॥ ते साडकरी कथन करी ॥ मज मंज

पाठ, ओ. ७६ आथी, ७७ परि सोन आह आ. ८६ तुझाचो भ. ७८

॥८७॥ श्लो० संजय उवाच ॥ हृत्पुत्रोऽप्युवाच ॥ आचार्यमुपसंगम्य राजा वचनमब्रवीत् ॥ २० ॥ तं वि-
नियेवेच्छीतां संजय बाल ॥ ह्यग्रायां च संन्यस्य लले ॥ जसं महाप्रकथीपसंस्तु ॥ ८८ ॥ ते संनयनदात ॥ इदं व-
त्सं कवाट ॥ जसं उरुसं कलानुक्रुत ॥ धर्यं कवण ॥ ८९ ॥ नानगीवडवान्नसादुकला ॥ प्रत्यववाते पारवत्ता ॥ सागरशोष-
निउधवत्ता ॥ अवगमसी ॥ ९० ॥ ते संनयनदात ॥ नानाव्यूहोपरिकर ॥ अवगमन्मयास्त्र ॥ तिर्यकार्त्ता ॥ ९१ ॥ तं देवोति-
दुर्योधने ॥ अर्क्षुरलं कवणमने ॥ नयनं गणजपंचानने ॥ राजगंधाने ॥ ९२ ॥ मगदोणापासीं आला ॥ तयाते ह्यग्राहो-
रिवत्ता ॥ कसादकसारोऽप्यलं ॥ पारवत्ता ॥ ९३ ॥ श्लो० पश्येनापादुपुत्राणां माचार्यमहर्षिचमसु ॥ व्यूढोदपद-
भणनविशेषणधीमता ॥ ९४ ॥ तं देवोतिदुर्योधने ॥ ते संनयनदात ॥ रचिले अपि बुद्धिमाने ॥ द्रुपदकु-
॥ ९५ ॥ जाकानुह्योऽपि व्य-
अवधराभहारासामिनामसंनयनदात ॥ युधुधानां गिराजस्य द्रुपदस्य महारथः ॥ ९६ ॥ आणीकहीअसाधारण ॥
जशस्त्रास्त्रोऽर्वाण ॥ द्वायवर्षोऽपि युधुधानां द्यौः ॥ ९७ ॥ अवधराभहारासामिनामसंनयनदात ॥ तं देवोतिदुर्योधने ॥
तुक् ॥ मसंगीचि ॥ ९८ ॥ एतद्युधुधानां महारथः ॥ आणीकहीअसाधारण ॥ मसंगीचि ॥ ९९ ॥ एतद्युधुधानां महारथः ॥
कितानः काशीराजस्य वीर्यान् ॥ पुरजितुर्गुणोऽपि युधुधानां द्यौः ॥ १०० ॥ एतद्युधुधानां महारथः ॥
वान् ॥ सोमदोषोऽपि द्यौः सर्वमहाः ॥ १०१ ॥ तं देवोतिदुर्योधने ॥ ते संनयनदात ॥
शु ॥ शोष्यदस्व ॥ १०२ ॥ हाकं निभाजपाह ॥ एतद्युधुधानां महारथः ॥ आणीकहीअसाधारण ॥
पाठ, ओः १०३ देवोतिदुर्योधने ॥ ते संनयनदात ॥ तं देवोतिदुर्योधने ॥ ते संनयनदात ॥

हासमभद्रास्तदवनन्दन ॥ जाअपरत्नवास्तुन ॥ तातामभन्तुस्तुणदुयोयध ॥ देरवद्राणा ॥ १॥ आणीकहादोपदोक्कसर ॥ दुसक-
 बहीमहारथविार ॥ मानिलेअसती ॥ २॥ अन्तो ० अरमाकुतुविशिष्टायतान्निबोधदुजोत्तम ॥ नायकामसस ॥ ३॥ अन्तो ०
 ध्यानब्रवीमिते ॥ ७॥ टो ० आताआमुचादहानायक ॥ जरुदवीरसैनिक ॥ नेमसगंआइक ॥ सगिजती ॥ ३॥ अन्तो ०
 भवान्भीषश्चकणश्चहपश्चसमितेजय ॥ अन्त्यामाविकणश्चसामदत्तित्तयवच ॥ ८॥ टो ० उदशेएकदोनी ॥
 जाइजतीबोलोनी ॥ तुह्योआहुकुरुनि ॥ मुञ्जंजे ॥ ४॥ हाभाभ्रगगानदनु ॥ जोप्रतापतेजस्वीमानु ॥ रिपुगजप-
 चाननु ॥ कर्णवीर ॥ ५॥ एकैकान्चनिमनाव्यापार ॥ हविश्चहोयसहर ॥ हाहूयाचार्यनपुर ॥ एकुलाचि ॥ ६॥ एयविक-
 णीवीरआह ॥ हाअन्वत्यामापलपाह ॥ याचाआइदसदावाह ॥ हूतोतमनी ॥ ७॥ समितिजयसोमदत्ति ॥ रंसभाणी-
 कहीबहुतआहती ॥ जयाचियावळामती ॥ धानाहानेणे ॥ ८॥ अन्तो ० अन्वचबहवः श्रुगमदर्थेत्यक्तजभिवता ॥ नाना-
 शस्त्रमहरणाः सर्वसुहृद्विशारदाः ॥ ९॥ टो ० जेशस्त्रविद्यापारगत ॥ मन्त्रानारमृते ॥ होकाजेअस्त्रजान ॥ एयुनिरुद १
 हेअप्रतिमस्तुजगी ॥ पुरताप्रतापआगी ॥ परासवयाणेमजन्मिलगी ॥ आराधिलेअसती ॥ १०॥ पतिव्रतेचैतदयजसे ॥ पति-
 वाचनिनस्पडी ॥ मीसवस्त्रयानेस ॥ सभरासी ॥ ११॥ आमुचियाकाजानेनिपाद ॥ देरवतीआपुलेजीवित्थयाकडे ॥ हेसे
 निरवधिचोरवडे ॥ स्वामिभक्त ॥ १२॥ बुझतीकळकणीजाणती ॥ कळेकीर्तिसीजिती ॥ हेबहुअसोसात्रनीति ॥ एथोनिया
 ॥ १३॥ ऐमसवापरीपुरते ॥ वीरदळाआसुते ॥ आनाकायगणंयाने ॥ अपारहे ॥ १४॥ अन्तो ० अपयास्ततदस्माकंबुधो-
 म्प्राभिरक्षिते ॥ पयासल्लिदमेतथावलभासामिरक्षित ॥ १५॥ टो ० वरीक्षविद्यामाजिअष्ट ॥ जोजगजेदोजगोसुमद

तयादल्लवपणाचापाट ॥ सीष्मासिंय ॥ १० ॥ आनांयचिनिवळंगवसले ॥ हेदुर्गजसंपन्नासिले ॥ एणेंयाडेंथेकुळे ॥ लोकत्रु
॥ १६ ॥ आर्धचिसमुद्रपाही ॥ तेथदुवाडपणकवणणाचाही ॥ मगवडवानळतसेयाही ॥ विरजजेसा ॥ १७ ॥ नानरप्रलभप्र
हिमहावात ॥ यादार्थजेसासाधान ॥ तैसाहागासत ॥ सेनापति ॥ १८ ॥ आतांएणेसीकवणसिडे ॥ हंपाडवसेत्यकीरया
कडे ॥ वरनिलेनिपाटे ॥ दिसतअसे ॥ १९ ॥ वरसीमसनेवधु ॥ नोजाहानाअसेसनानाथु ॥ ऐसेबोलीनियासातु ॥ सादि
लीतेणें ॥ २० ॥ अथनधुचभवेपुण्याभागभवस्थिताः ॥ सीष्ममवाभिरक्षतुभवनः सर्वएवहि ॥ २१ ॥ टी० मरापुन
रपिस्त्रावोले ॥ सकळसेनिकानेह्याणिते ॥ आनादळमारआपुलाले ॥ सरसेकरा ॥ २२ ॥ जयाजियाअहोहिणी ॥ नेण
नियाआवरणी ॥ वरगणकवणकरणा ॥ महारथिया ॥ २३ ॥ नेणेंतआवरजे ॥ सीष्मातळरांहीजे ॥ द्रोणांतक्षणाहिजे
तुह्मीसकळ ॥ २४ ॥ हाचि एकरसावा ॥ सीतेसाहादेरवावा ॥ एणेंदळमारआधवा ॥ साचआमुचा ॥ २५ ॥ तस्यभज
नरानहर्षकुरुहृदः ॥ पितामहः ॥ सिंदनादंविमदोच्चैः शरवदेओप्रनापवान ॥ २६ ॥ टी० चाराजयाचियाबोला ॥ सेनापति
सतोषला ॥ भगतेणकळा ॥ सिंदनाद ॥ २७ ॥ नागाजनअसेअदुत ॥ दोहीसंन्याआन ॥ मतिथ्येनिनसमान ॥ उपजनअ
से ॥ २८ ॥ तथाचतुलगासवे ॥ वीरवृत्तचिनिथावे ॥ दिव्यशरयसीस्यदेवे ॥ आस्फुरिला ॥ २९ ॥ तेहाहीनादीमिनले ॥ तेथ
ब्रह्मोक्षवर्गिराभूतजाहाले ॥ जेसेआकाशकापडिले ॥ तुदेनिया ॥ ३० ॥ यदुग्रहीतअवर ॥ उचवळतसागर ॥ स्तोमसुच
राचर ॥ कापतअसे ॥ ३१ ॥ नेणेंमहायाषराजें ॥ दुसदुमितानेगिरिकंदरें ॥ नवदळामाजिरणतुरें ॥ आस्फुरिली ॥ ३२ ॥
अस्ती० ततः शरवाश्चभयपणवानकुरापुरवाः ॥ सहस्रवाप्यहन्त्यनसाशब्दस्तुमुलामभवत ॥ ३३ ॥ टी० उदडसेयवजन
पाठ, ओ. १०१ मज्ज, ओ. १०२ आरणी, किंवा अरणी चरगणी. ४

मयानेकरवारवर्ति ॥ महाभयजेय ॥ धाकडासी ॥ ३१ ॥ मरगनिशाणसीदळ ॥ शंखकाहाळाभोगळ ॥ आगिभयाकरगुणको-
 ल्लाळ ॥ सुभदांचे ॥ ३२ ॥ आवशेषुजात्राहादितो ॥ विसणलेहाकादेतो ॥ जेथमहाभयमदज्जर्ता ॥ आवरतोना ॥ ३३ ॥ तेथु
 पेडाचीकवणमात ॥ कान्थाकरफिटत ॥ जेणदचक्काकतात ॥ आगनेये ॥ ३४ ॥ एकाउमसाचिमागगळ ॥ नागानेदातुवस
 त ॥ बिरदांचेदादुल ॥ हिवतातो ॥ ३५ ॥ रसाअजुतत्रबबाळ ॥ एकानिअस्याकुकळ ॥ देवह्मणतोप्रकथकाळ ॥ वोडवला-
 आजि ॥ ३६ ॥ अजुत ॥ तत ॥ श्वेतहयगुप्तमहानिस्वदनस्थिता ॥ साधवः पाडवश्चैवदियोशरेवामदभ्यतुः ॥ १४ ॥ पाचजन्य
 तृषीकेशोदधदत्तधनंजयः ॥ पांडुदभ्योमहाशखमीमरुमावकोदरः ॥ १५ ॥ अनेतविजयराजाकृतोपुत्रोयुधिष्ठिरः ॥ नकु-
 लः सहदेवश्चसयोषमणिपुष्पका ॥ १६ ॥ द्रोण एसीस्वर्गोमात ॥ देखेनिनोभाकान ॥ तंवपाडवदळाभात ॥ वतलेकाथी
 ॥ १७ ॥ होकांनिजसारविजयांच ॥ कृतमाडारमहानजांच ॥ जेथगरुडानियेजावळिच ॥ कातलेच्यदा ॥ ३८ ॥ कांथाववाच्या
 मेरजेसा ॥ रहवरभिरवतसंतसा ॥ तेजेकादातन्यादिशा ॥ जेयांचेनि ॥ ३९ ॥ जेथअश्वदाहकआपणा ॥ वैकुंठानाराणाजा
 ण ॥ नथारथाचेगुण ॥ कायदण ॥ ४० ॥ अजस्तमावरीधानर ॥ नासुतिमंतशकर ॥ सारथीशांडशर ॥ अजुनेसो ॥ ४१ ॥ देस्वा
 नबलतयाप्रसूचै ॥ अजुतमसतत्ताच ॥ जेसारथ्यपणपायोचै ॥ नृगतअसे ॥ ४२ ॥ याइकथाविर्मायातला ॥ आपणपुढगहि
 ला ॥ तेणेंपांचजन्यआस्फुरिला ॥ अचलिळाचि ॥ ४३ ॥ परतोमहायोषथोर ॥ गर्जतअसर्गाहर ॥ जेसाउदलालोपीदिन-
 कर ॥ नसआते ॥ ४४ ॥ तेसंतुरबबाळभवते ॥ कोरवदळगाजनहोते ॥ तेहारपोनिनेणोकेउते ॥ गेलेतेंथे ॥ ४५ ॥ तेसाचि
 देखेयेर ॥ निनादेअतिगजरे ॥ देवदत्तधनुधरे ॥ आस्फुरिला ॥ ४६ ॥ नेदानीशब्दअचाट ॥ भिनलंगकवट ॥ तेथअसप्रदा-

पाठ, ओ, १८ कातले, थ

नो ॥ तं वरुमोचि हिंयालिनी ॥ एकमेकांते ह्यणती ॥ सावधैरेसावध ॥ ६३ ॥ श्लो० अथव्यवस्थितान् श्रुत्वा यतः श्लाङ्कपि जः ॥ महत्तशस्त्रसपाते धनु रद्यस्य पादुवः ॥ ७० ॥ टी० तेथवळमोदीपुरते ॥ सहारथीवीरहते ॥ तिहोपुनरपि दळते ॥ आवरिले ॥ ६४ ॥ भगसरिसंपणे उठावले ॥ दुणवढा निउचलले ॥ तया दुंदीसासेले ॥ लोकात्रय ॥ ६५ ॥ तेथबाणवरीध जुधरे ॥ वर्षतातिनिरतर ॥ जेसे पळयात जलधर ॥ अनिवारका ॥ ६६ ॥ तेही श्वलिया अजुने ॥ संतोषप्रऊनि मने ॥ भग-
 सास्त्रमहर्षासेने ॥ यालीतसे ॥ ६७ ॥ तवसंयामोसज्ज जाहल्ले ॥ सकळ कोरवदेरिल्ले ॥ तं धर्मात्राय नुष्य उचलिले ॥ पांडु-
 कुमारे ॥ ६८ ॥ श्लो० त्दर्षाक्रेगनदायाकथमिदमाहमहापते ॥ अर्जुन उवाच ॥ मेनयोरुभयोर्मध्यस्था परमेष्ठ्युत ॥ भ-
 टी० तंवळीं अर्जुन ह्यणत संदवा ॥ आतोझादकरारथपन्नावा ॥ नऊनिमंथे धालावा ॥ दोहोदळा ॥ ६९ ॥ श्लो० यावदे-
 तां निरीक्ष्य हययोदुकाभानवस्थितान् ॥ कसया सह योद्धव्यमभ्युत्थानां न वेत्ति हयवत्तत्र स-
 मागतो ॥ धातुराष्ट्रस्य दुर्बुद्धयुद्धप्रिय निर्कांधवः ॥ ७३ ॥ टी० जयमानां विक ॥ हेसकळवोरसेनिक ॥ व्याहाळीन अशेष-
 दुसनेज ॥ ७० ॥ एगुआल असती आघवे ॥ परीक्वणसीं स्याजुंझावे ॥ हरणीलागपाहाव ॥ ह्याणऊनिया ॥ ७१ ॥ बहु-
 त करुनिकोरव ॥ हेआतुरदुःखस्वभाव ॥ वादिवावीणाहाव ॥ बोधितजुंझी ॥ ७२ ॥ जुझाची आवडी धरिता ॥ पद्मासे-
 गामोधीरनकती ॥ हेसांगानरायाप्रती ॥ कायसंजयो ह्यण ॥ ७३ ॥ श्लो० सजयउवाच ॥ एवमुक्त्वा लब्धवीकेशोरु-
 द्राकेशेन भारत ॥ मेनयोरुभयोर्मध्यस्थापि त्स्वारथोत्तम ॥ ७४ ॥ टी० आइका अर्जुन इतुं कुबां लिळा ॥ तव श्रीह-
 षोरथपे लिळा ॥ दोहोसे न्यामाजिकला ॥ उभातेणे ॥ ७४ ॥ श्लो० मोक्षदोणमसुरवतः संवेषाच महसिता ॥ उवाच-
 पाठ, ओं, ६५, एकवदने, ओं, ६७ दिवा, ओं, ७० अशोरव, ७५

पार्थयैतान्स्मवेतान्कुरुमिति ॥ २५ ॥ तत्रापश्यत्स्थितान्यार्यः पितृनयपितामहान् ॥ आचार्यान्बाबुलान् श्वान्पुत्रान्यौवान्
 सर्वास्तथा ॥ २६ ॥ श्वशुरान्कुरुदंश्चैवमेतयोरुभयोरपि ॥ तान्समीक्ष्यसकांतयः सवीन्बधून्वस्थितान् ॥ २७ ॥ टी ० जेथ
 मीसद्गोणादिकु ॥ जवळिक्रमिसन्सुख ॥ दधिवापतिआणिक ॥ बहुतआहानी ॥ २८ ॥ तेथस्थिरकरुनियारथ ॥ अजुन
 असेपाहत ॥ तोदळप्रारसमस्त ॥ संध्यमेसी ॥ २९ ॥ मगदेवाहणेंदरवदेख ॥ हेगोत्रगुरुअशेख ॥ तवकृष्णासनी
 नावेक ॥ विस्मोजाहाला ॥ ३० ॥ तोआप्रणिया आपणक्षणे ॥ रथकायीकवणजाणे ॥ हेमनीधिरलेरणें ॥ परीकहा
 आश्चर्यअसे ॥ ३१ ॥ ऐसापुढीलसेयेत ॥ तोसहजेजाणेतदयस्य ॥ परिउगाअसेनिवात ॥ तियेवेळीं ॥ ३२ ॥ तंवतिय
 पार्थसकळ ॥ पितृपितामहकुवळ ॥ गुरुबधूमातुळ ॥ देखताजाहाला ॥ ३३ ॥ इष्टमित्रआपुले ॥ कुमरजनदेखले
 हेसकळअसनीआल ॥ नयांमाजो ॥ ३४ ॥ कुरुज्जनसासरे ॥ आणीकहासरेवसादरे ॥ कुमरपौत्रअनुधरे ॥ दोखि
 लेतेथ ॥ ३५ ॥ जयाउपकारहातुकले ॥ दोआपदोजेरसिले ॥ हेअसावडिलथाकुटे ॥ आदिकरुनी ॥ ३६ ॥ ऐसांगात्र
 चिसेहोदळीं ॥ उदितजालेअसकटी ॥ हेअजुनेतियेवेळीं ॥ अगलोकिले ॥ ३७ ॥ इष्टो ० हृपयापरयाविष्टोविषी
 दनिदमप्रवात ॥ टी ० तेथयनींगजबजजाहानी ॥ आणिआपेसाहृपाउपजलीं ॥ तेणेंअपमानेंनियाली ॥ वीर
 वृत्ति ॥ ३८ ॥ जियाउत्तमकुर्दोचियाहानी ॥ आणिगुणलावण्यरआयी ॥ तियाआणिबोतेनसाहती ॥ स्रुतेजपणे ॥
 ॥ ३९ ॥ नवीयेआवडोचिनिमरे ॥ कामुकभिवृनिताविसर ॥ मगणेंदुर्वाणअजुसरे ॥ भ्रमलजेसा ॥ ४० ॥ कीतपो
 वेळकः ॥ पातलियाचशबुद्धि ॥ मगविरक्ताभिद्धो ॥ आतवेना ॥ ४१ ॥ तेसाअजुनातेथजाहोले ॥ असतेपुरुषस
 स्तपक, आमवगउसे ॥ दोहोमनेस्ममारसे ॥ वर्षतोबाणजाकनसा ॥ आकाशपर्यंत ॥ ओं ॥ ४२ ॥ विरहता ॥ ४३ ॥

गेले ॥ जे अतः करण दोधले ॥ कारुणयासी ॥ ८९ ॥ हे स्वामंशवरळ आय ॥ तेथ कांजे सांस्वार होय ॥ ते सानोधधुधर्महासो
 हे ॥ अकळिळा ॥ ९० ॥ ह्यण अनि असनाधीर गेला ॥ त्दयादाव आला ॥ जे सात्त्विक कीर्ति धि वतला ॥ सोमक्रान्त ॥ ९१ ॥
 तया परी पार्य ॥ अति स्नेह सांहित ॥ भगसखद असंखोलत ॥ श्री अच्युतसी ॥ ९२ ॥ अजुन उवाच ॥ हृष्टमस्व
 जनकृष्ण सुयुक्तं सुपस्थित ॥ २८ ॥ सीदंति समग्राणि सुरवंचपरिश्रुत्यति ॥ वेपथुश्च शरीरे मे रोमहर्षश्च जायते ॥
 ॥ २९ ॥ गाडी वस्नसत हस्तान्वक्वैव परिदत्त्यते ॥ नच शक्रोऽप्यवस्थातुं भवती वत्समे मनः ॥ ३० ॥ टी ० तो ह्यणे अवधार
 दवा ॥ म्या पाहिला हा मळावा ॥ तब गानवग आयवा ॥ हे रि वला एथ ॥ ९३ ॥ हे स्यामी उदित ॥ जाहाल अस ती कोर सम
 स्त ॥ पण आपण पया उचित ॥ केवि होय ॥ ९४ ॥ एणनां मे चिनेणा कायी ॥ मज आपण पसर्व थाना हो ॥ मन बुद्धी दावी ॥
 स्योरनो हे ॥ ९५ ॥ देरवंद ह कापत ॥ तो उअसे कोरुं होत ॥ विकळ ताउपजत ॥ गात्रासी ॥ ९६ ॥ सर्वोणा काटाळा आला ॥
 अति संताप उपजला ॥ तेथ दिवळ हात गेला ॥ गाडी वाचा ॥ ९७ ॥ तेन धरत चिनि छले ॥ परि नेणे चि हा तो नि पडिले ॥ ऐसें
 त्दय असे व्यापिले ॥ मोहयेणे ॥ ९८ ॥ जेवज्या पासो निकरिण ॥ दुधेर अति दारुण ॥ तया हून असाधारण ॥ हे स्नेहन वल
 ॥ ९९ ॥ जेणे स्यामी हरजितला ॥ निवात कळ्याचा वाव फेडिला ॥ तो अजुन मोह कळिला ॥ क्षणाभाजी ॥ १०० ॥ जे सास
 मरसे दी कोडे ॥ भलु ते संकाष्ठ कोरुं ॥ परिकळि कुमाजि सापडे ॥ कोवळिये ॥ ११ ॥ तेथ उत्तीर्ण होईल माणे ॥ परिते क
 मळ दळचि रूनेणे ॥ ते संकरिण कोवळपणे ॥ स्नेह देखा ॥ १२ ॥ हे आदि पुरुषाची माया ॥ ज्ञेयाया ही नये विआया ॥ ह्य
 ण अनि मुल विला ऐकराया ॥ संजया ह्यणे ॥ ३ ॥ अवधार मगतो अजुन ॥ देखा निमळ स्वजन ॥ विसरला अभिमा
 पात ॥ ओ ९१ करी शिपिला ॥ ओ ९८ उद्यत ॥ ओ ९७ उपनळा ॥ विकळ ॥ ओ १०० पासाव ॥ ओ १०१ हुतांत अंकणा घातला ॥ ओ १०१ कमळ कीर्ति

न ॥ संयासी च ॥ ४ ॥ कैसी नेणो सदयता ॥ उपननी तेय चित्ता ॥ भगवण्णे कृपा आतां ॥ नसिजेण्य ॥ ५ ॥ साझे अतिशये मनु-
 व्याकुल ॥ होतसे वाचावरुल ॥ जे चयावेह सकळ ॥ येणो नावे ॥ ६ ॥ भ्लो ० निमित्तानि च पश्यामि विपरीता निवेशव ॥ नच अ-
 यो सुपश्यामि हत्वा स्वजनमाहवे ॥ ३१ ॥ टी ० या कोर वा जरी वधावे ॥ तरेयुधिष्ठिरादि कां कां न वधावे ॥ हेये रये अये ॥
 गोत्रज आमुच ॥ ७ ॥ द्युणा निजकां हं जु झ ॥ प्रत्यथानये मज ॥ एणे काय फ्राज ॥ महा पापे ॥ ८ ॥ देवा बहुता परी पाहता
 एय वो रस देहाई लजु झता ॥ वरका हो तु कृविता ॥ लाभार्थी ॥ ९ ॥ भ्लो ० नको सो विजयं ह्यन च गृज्यस्तरा निच
 किन्नो राज्य न गोविदं किं सो गै जी वितनवा ॥ ३२ ॥ येथामर्थे कासित नो राज्यं भोगाः सुखानि च ॥ तदभवत्स्थितायुः प्रमणा
 स्य स्कायमानि च ॥ ३३ ॥ टी ० तया विजयवृत्ति का हो ॥ मजसव या काज ना हो ॥ एथ राज्य तरो काथी ॥ हे पाहान्या
 ॥ १० ॥ यास कळांत वधावे ॥ भगजे भोग भोगावे ॥ तेजळो त आधेवे ॥ याथ ह्यणे ॥ ११ ॥ तें पा सुख वीण हो इल ॥ तें प्रल-
 तें सें साहिजे ल ॥ वरिजी वितही विंचिजे ल ॥ याचि ल्यागी ॥ १२ ॥ परीयासी चातकीजे ॥ भग आपण राज्य सुख भोगि
 जे ॥ हे स्वमो हो मनमाझे ॥ करू न शके ॥ १३ ॥ तरो आह्मी काज नावे ॥ कृवणा ल्यागीं जियावे ॥ जरी विडलां याचि ता
 वे ॥ विरुद्ध मन ॥ १४ ॥ पुत्रांत दुष्टी कुळ ॥ तथाच कायि हे चि फळ ॥ जे निर्दळिजे केवळ ॥ गोत्र आ पुल ॥ १५ ॥ हे मनो नि-
 के विंधरिजे ॥ आपण वज्याच या हाइजे ॥ वरिध उतरी कीजे ॥ सनेइया ॥ १६ ॥ आह्मी जे जे जाडावे ॥ तें समस्तो इही मि-
 गावे ॥ हे जी वितही उपकारावे ॥ काजो इयाच ॥ १७ ॥ आह्मी दिंगतींचे मूपाळ ॥ विमाड नि सकळ ॥ भग संतोष विजकु-
 ल ॥ आपुलें जे ॥ १८ ॥ तेचि हे समस्त ॥ परी के संकर्म विपरीत ॥ जे जाहाल असती उद्याने ॥ जुं झावया ॥ १९ ॥ अंतो रि-
 पात ॥ ओ १२ तें हो ॥ ओ १४ जे वडिलया ॥ ओ १६ ऐसा ॥ ओ १७ उपेगा जे के ॥ ओ १८ ॥

याकुमरे ॥ साडानियांभाडारे ॥ शर्यायांजिहारे ॥ आरोपुनी ॥ २१॥ एमियांनेकसेनिमारु ॥ कवणावरीशर्यायरु ॥ नि
 अहं दयावरु ॥ धातकेवो ॥ २१॥ भन्तो ० आचायोः पितरः पुत्रास्तथेवचपितामहाः ॥ मातुल्लः श्वशुरः पौत्राः श्यालाः ॥
 सवधित्तयथा ॥ ३५॥ टी ० हेनणमत्तिक्कण ॥ परिपेल्लभासादण ॥ जयच्चउपका ॥ असधारणा ॥ आत्मावहुत
 ॥ २२॥ एयशालक्कसासरेभातुळ ॥ अणिबधुकाहसुक्कळ ॥ पुत्रभानुक्कवळ ॥ इहहाअसता ॥ २३॥ अवधारीअत-
 जविकेचे ॥ हेसक्कळहीसोयरआमुत्त ॥ त्थणानिदावआथिवाचे ॥ बोलताचि ३४ भन्तो ० एतान्हनुसिच्छामिअने
 एपधुत्तदन ॥ अणिल्लोकराज्यस्यहनाः किण्णुमहीहत्त ॥ ३५॥ टी ० हेवरीमल्लेकरित्तु ॥ आतांचिएथेयमारित्तु ॥
 परीआपणामनधातु ॥ नचितावा ॥ ३५॥ चेल्लोकिचिअनकळित्त ॥ जरीराज्यहाइल्लमाव ॥ तरोहेअनुचित्त ॥ ना
 चरमी ॥ ३६॥ जरीआजिएथेयसेकोजे ॥ तरोक्कवणाचाभनीडुरिज ॥ सोरागुरुक्कविपहिजे ॥ नुअक्कणा ॥ ३७॥
 भन्तो ० निहल्युधातराद्धान्नः कामोर्निः स्वाज्जेनादंन ॥ पापमेवाअयेदस्मान्महल्लतानात्ताचिनः ॥ ३६॥ टी ०
 जरीवधकरागानजाचा ॥ तरोविसाताहोडुनिदाषाचा ॥ भजजोडिलासित्तहानीन्ना ॥ दूरहोसी ॥ २८॥ कुळह
 गीपातने ॥ तिथेआंगीजडतअशेषे ॥ तरोवेळातुक्कवणेके ॥ दरवावासी ॥ ३०॥ जसाउधानासाजिअनळभस
 चरलादेरवोनिप्रबळ ॥ मरादणमरीकाकळ ॥ स्थिरनोहे ॥ ३०॥ कासकदेमसरावर ॥ अवलोक्कनीचक्रार ॥ न
 सेवितअक्कर ॥ करुभिनिगे ॥ ३१॥ तंयापरीतुदवा ॥ मज्झककूनयेसिमावा ॥ जरीपुण्याचावालावा ॥ नाशि
 जेल ॥ ३२॥ भन्तो ० तस्मान्नाहर्वयहनुधातराद्धान्नसबाधवान् ॥ स्वजनहिक्कयहल्लामुशिनः स्यामसाधव ३७

याड ० ओ २६ येथ, ओ २९ गोत्राचा, ओ २१ निघ ७

दी० ह्यणोनिमीहंनकरीं॥ इयं संप्रार्थना शस्त्रनधरीं॥ हे किं दाल्बहृतां पंश॥ दिसतसे ॥ ३३॥ तुजसीं अंतराय होइल
 मग सो गे आमुचे काय उरल॥ तेणें दुःखी ह्ये फुटल॥ तुजवीण ह्यणा ॥ ३४॥ ह्यण ऊनि कोरव हवधि जती॥ मग आ
 ह्यी भोग भोगि जनी॥ हे असो मात अधडती॥ अर्जुन ह्यण ॥ ३५॥ श्लो० यद्यप्येते न प्रशंति लोभोपहृतचेतसः
 कुलक्षयहतदोषमित्रद्वैतचपातक ॥ ३६॥ कथनशयमस्माभिः प्रपादस्मान्निवर्तितु ॥ कुलक्षयकृतदोषप्रप
 र्शयर्हि नार्दन ॥ ३७॥ टी० हे अभिमानमदं भूलले ॥ जहीपांसं याभा आले ॥ तद्ही आह्मी हत आपुलें ॥ जाणा
 वेलीगे ॥ ३८॥ हे ऐंसेक संकरावे ॥ जे आपुले आपण मारावे ॥ जाणत जाणतां चिसे वावे ॥ काळ कूट ॥ ३९॥ हांजी
 मार्ग चालता ॥ पुढां सिंह जाहाला अवचितता ॥ तोत वचु कविता ॥ लाभ आशि ॥ ४०॥ असता मकाशसाडावा ॥ म
 ग अधकूप आयावा ॥ नरी तेथ कवण देवा ॥ नाभ सागे ॥ ४१॥ कांसमोर अग्निंद रेवानी ॥ जरी न्वचिजे वोस
 डोनी ॥ नरी क्षणी एकाक वकुनी ॥ जाळू संक ॥ ४२॥ ते से दोष हे मूर्त ॥ आगी वाजो असती पाहात ॥ हे जाणता-
 ही के विएथ ॥ मवतीवे ॥ ४३॥ ऐंसे पाशितिय अवसरी ॥ ह्यणें देवा अवधारी ॥ याकूलमषाची थोरी ॥ सांगन तुज
 ॥ ४४॥ श्लो० कुलक्षय मणशंति कुलधर्माः सनातनाः ॥ धर्मनष्ट कुलकुल मयसो भिप्रवत्युत ॥ ४५॥ टी० अ
 संकाशे काष्ठमग्निज ॥ तथ वल्कि एव उपजे ॥ तेणें काष्ठ जात जाळिजे ॥ मज्जलेनी ॥ ४६॥ ते सागेचीं निपरस्प-
 रं ॥ जरी वधयडं मल्लर ॥ नरी तणमहादोष थोर ॥ कुळ चिनाशे ॥ ४७॥ ह्यण ऊनि गणप ॥ वधजय मलोपें ॥
 मग अधर्माचि भारोप ॥ कुळा माजी ॥ ४८॥ श्लो० अथ सोमभिर्मवात्सृषा प्रदुष्यति कुलस्त्रियः ॥ ह्या पुद्गुष्टा-

सुखायोय जायते वर्णसंकरः ॥ ४५ ॥ टी० एयसासाभारविचारवे ॥ कवणेकाय आचरावे ॥ आणविधिनिषेध आचरे ॥
 पारूषति ॥ ४६ ॥ असतादीपतवडिज ॥ मगअधकारिराहादिजे ॥ तरारुजृचिका अरु कृच्छिजे ॥ जयापरी ॥ ४७ ॥ त
 साकुळी कुळसयहाय ॥ नयवच्छेना आलधमजाय ॥ मग आनकाही आह ॥ पापावाचुर्ना ॥ ४८ ॥ जयमनियमस्तु कर्तो
 नेय इन्द्रिय सेरा हातर्त ॥ ह्यणान्नियमिचारयुततो ॥ कुळारुखासी ॥ ४९ ॥ उत्तमअधमीसंचरती ॥ ऐसे वषावण
 मिसळती ॥ तेथसमृद्ध उगदती ॥ जातिथसं ॥ ५० ॥ जैसीचाहदा चियवढा ॥ पाविजेंसंराक उढा ॥ तैसीसहा पापेंकु
 की ॥ संचरती ॥ ५१ ॥ भ्रमो संवरांनरकाय कुलमाना कुलस्यच ॥ पुनर्तिपितरा लोपालुमपिंदादक्रियाः ॥ ४२ ॥ टी०
 मगकुळानया अशया ॥ आणिकुळयातको ॥ येरथरांनरको ॥ जाण आथि ॥ ५२ ॥ देरयेवशा हिसमस्त ॥ यापरिहो
 यपतिता ॥ मगवावोडती स्वर्गस्य ॥ पूवंपुरुष ॥ ५३ ॥ जियनि त्यादि क्रियानाक ॥ आणनिमित्त क्रिया पारुरव ॥
 तेथकवणानिळादेक ॥ कवण भ्रपो ॥ ५४ ॥ तरापीतरकायकरिती ॥ कसेनि स्वर्गीवसतो ॥ ह्यणानिनतहीयेती ॥ कु
 लापासी ॥ ५५ ॥ जैसानरवार्यव्याळलगे ॥ तोशिरवातव्यापेवेगे ॥ तेवर्वा आब्रह्मकुळ आवेव ॥ आह्मविजे ॥ ५६ ॥
 भ्रमो दोषैरते ॥ कुलमाना वर्णसंकरकर ॥ उत्साद्येत जातिधर्मा ॥ कुलधर्माश्चिन्ताः ॥ ४३ ॥ उत्सन्न कुलधर्माणां
 मनुष्याणां जनादन ॥ नरकेन यतं वा सो भवतीत्यनुश्रुतम् ॥ ४४ ॥ अहो वतमहत्यापकर्तुं व्यवसिता वयं ॥ यद्वा ज्यसु
 र्वलोभेन हतुं स्वजनमुद्यताः ॥ ४५ ॥ टी० देवा अवधारा आणीक एक ॥ एथ घउमहाणतक ॥ जेसगदापहान्त्रिक
 कवषापडे ॥ ५७ ॥ जैसाधरा आपुला ॥ या निवेशार्थ भ्रन्नागला ॥ तो आणिकाही मज्जळिला ॥ जाळुनियाली ॥ ५८ ॥
 तेमियातया कुळसंगती ॥ जेजेलाक भवतती ॥ तहीबाया पावते ॥ निमित्तयेण ॥ ५९ ॥ तैसेनाना दोषसंकळा ॥ अजुन ह्यण-

पाव ॥ ओ ४० अउडिजे ॥ ओ ४१ विचरती ॥ ओ ४२ अशयया ॥ ओ ४३ कय ॥ ओ ४४ यावे ॥ ओ ४५ काय ॥ थ

तं कुळ ॥ मग महायोगें कुळ ॥ निरय भोगी ॥ ६० ॥ यडि निया तिये तारी ॥ मग कल्याती होउ कुळ नाही ॥ ये सणें पतन कुलक्षयी
 अर्जुन हाणे ॥ ६१ ॥ देवा हो विविध कार्नाणे कजे ॥ परि अडुनि वरी आस पुजे ॥ तदय वज्र चिह्न काय कीजे ॥ अवशारी पा ॥ ६२ ॥
 अग्नि जे राज्य सुख ॥ जया लागी ते नव स्तणिक ॥ ऐसे जाणतां हो दोष ॥ अहं रूना ॥ ६३ ॥ जे हे विडि मस कुळ आपुले ॥ वधा वया
 दितीं मूढ ॥ सागण काय कुले ॥ घडले आत्मा ॥ ६४ ॥ भोगे ॥ यदि मासु मनी कार मशस्त्र शस्त्र पाणय ॥ धात राझारे हस्त
 स्तन्य दस मतर भवेत ॥ ६५ ॥ टी ॥ आना या वरी जे ज्यावे ॥ तया पासुनि हवरवे ॥ जे शस्त्र साडि निसा होवे ॥ बाण यांचे ॥ ६५ ॥ त
 या वरी होय जिउं ॥ ते मरणा हीं रानिं ॥ परी येणें कल्मसे ॥ चाड नाही ॥ ६६ ॥ ऐसें देखो निस कुळ ॥ अर्जुन आपुलें कुळ ॥ मग
 त्या राज्य तं कुळ ॥ निरय भोग ॥ ६७ ॥ भोगे ॥ संजय उवा ॥ एव सुक्का जुनः सव्ये रथा पस्य दुपा विगत ॥ विरुज्य सशर चाप शो
 क सी विद्यमानसः ॥ ६८ ॥ इति श्रीमद् ब्र० यो० श्री कृ० अर्जुन विषाद योगो नाम प्रथमोऽध्यायः ॥ १ ॥ टी ॥ ऐसे तिये अ
 वसरी ॥ अर्जुन बांभिला मारी ॥ संजय हाणें अवधारी ॥ ६९ ॥ मग अन्य न उद्देगला ॥ नथ रत गहि वर आला ॥ नेश्या
 उद्देगान लंख्याना ॥ रथीनिया ॥ ६९ ॥ जे सारा जकू मर पदच्युत ॥ सर्वथा होय उपहन ॥ कांरि वराहु युस्त ॥ कळोहीन ॥ ७० ॥ नान
 रीस हां भिदिसं भयं ॥ जितिला ना पम भयं ॥ मग आकळुनिकायं ॥ दोन कीजे ॥ ७१ ॥ ते सानो धनु र ॥ अत्यंत दुःख जर्जर ॥ दि
 से जथर हवर ॥ न्या जला नेणो ॥ ७२ ॥ मग यजु थ्या बाण सां दिले ॥ नथ रत अमुपात आले ॥ ऐसें रकरा यावर्तले ॥ संजय हाणें ७३
 आना या वरी तो वें कुंड नाथ ॥ देखानि संखे दपाथ ॥ कवणे परी परमार्थ ॥ निरूपिल ॥ ७४ ॥ ते सविस्तार पुढांरी कथा ॥ अतिसंकोतु
 करे कता ॥ ज्ञाने देहाणें आना ॥ निवृत्ति दास ॥ ७५ ॥ ॥ इति श्री भावार्थ दीपिका याज्ञान देव विरचिता या प्रथमोऽध्यायः ॥ १ ॥
 पाठ ॐ ६१ उगट ॐ ६४ योगुले ॐ ६७ परिस ओ ७० प्रसा ॐ ७३ मेथ वतले ७

अंगणशरिनमः ॥ संजय उवाच ॥ नंतथाहपयाविहमञ्जुपूणीकुलेक्षणं विषादतमिदं वाक्यमुवाच भुसुदनः ॥ १॥
 त्वं सगंसंजयोद्योगे रायते ॥ आदंकेतोपायनेये ॥ शोककुलरुदनात् ॥ करोत अस्मि ॥ १॥ तं कुलदेवो निसमस्त ॥ स्नेह
 उपलब्धं अदुत ॥ तेणेद्रुदं असेचिन् ॥ नृपणे परी ॥ २॥ जसंलवणजलद्वयं ॥ नातरा अश्रुवांतहले ॥ तेसंसाधरूपरि-
 विसन् ॥ त्दयतयात् ॥ ३॥ द्यणानिहृषा आकुलिता ॥ दिसतसे अतिकोमादला ॥ जेसा कदं मोरुपला ॥ राजहस
 तया परीतोपादकुमर ॥ महासोहं अतिजर्जर ॥ देवो निम्नशोडधर ॥ कायबाल ॥ ५॥ श्लाघी मगवानुवाच ॥ ॥ कुत
 स्वाकृदमलमिदं विषयसमुपास्यते ॥ अनार्यजुहमस्वरयसर्कतं करमजुन ॥ २॥ दं द्यणे अजुना आदिपाही ॥ हं उचि
 तकायदेवोयी ॥ त्वं कवणहे कार्य ॥ करंत आहंसी ॥ ६॥ तुजसांगं कायद्वले ॥ कवणउणें आले ॥ करिताकायवेलें ॥ रेव
 रकामं दया ॥ ३॥ तं अनुचितचित्तोदिसा ॥ धोरकहोनसंदिर्सा ॥ तुझनिनामं अपयश ॥ दिशालंयिजे ॥ ८॥ त्वशरवर्त्त
 चाहावी ॥ द्वात्रयाभाजरावा ॥ तुझियां खेपणाचा आवो ॥ तिहोलावी ॥ ९॥ तुवां यामोहरजंजिता ॥ निवातकवचा
 चानारुपी इला ॥ पवां उतुवांकला ॥ गंधवांसी ॥ १०॥ पाहाता तुझनिपाड ॥ दिसचला क्यहाथोवडे ॥ ऐसें पुरुषत्वचोत्रव
 डे ॥ पायां तुझ ॥ ११॥ नाचवर्त्ता अजियेय ॥ सांडनियं वारवृत्तीने ॥ अथे सुवरुदनात् ॥ करोत आहंसी ॥ १२॥ वनचोत्तं
 अजुन ॥ काकारण्ये कीजसीदिनु ॥ सांगपा अधिकारमानु ॥ याभिला आर्या ॥ १३॥ नातरा पवंमयासिबिहो ॥ को अस्म-
 तासि सरण आह ॥ पाहया दुयनचिखलो निजाये ॥ पावकात् ॥ १४॥ कालवर्णे चिजळो वरे ॥ ससंगं काळकूटं मरे ॥ सांग-
 पा राहा फणीदुरे ॥ निचि जवायी ॥ १५॥ सिहासि द्वाबे काल्हा ॥ ऐसा अश्रु आश्रित जाहाला ॥ परेता त्वासाच कला

पाठ - ओ. १ उपनमा ओ. १३ तुवां ओ. १४

आजिण्य ॥ १६ ॥ ह्यणोभिअझुर्नाअजुन्ना ॥ झणोचनदेसीयाहीना ॥ वेगंधिरकरुनियामना ॥ सावधहोई ॥ १७ ॥ सोडो
हंसुंधपण ॥ उर्धपधनुस्यवाण ॥ समामोहकथण ॥ कारुण्यतुझे ॥ १८ ॥ हागातंजाणता ॥ तरानिवाचरिस्सोकोआतो ॥
सागसुसावलेसदयता ॥ उच्चित्तकार्य ॥ १९ ॥ हेअसनिरेकतिस्सनाशा ॥ आणिपारिद्रकासिअपममशा ॥ ह्यणजगलि
वास ॥ अजुनाते ॥ २० ॥ म्हाखेल्यसास्मगमः पार्थनतल्युपपद्यते ॥ सुइहदयदोवल्थ्यत्कानिभ्रपरतप ॥ २१ ॥ हो
ह्यणोनिशोकनकरी ॥ तपुरनाधीरधरी ॥ हथोच्चताअहरी ॥ पाइकुमरा ॥ २२ ॥ तुजनकहचिचि ॥ येणनासलजोड
लबहुत ॥ त्अझुनिवरीहत ॥ विचारपा ॥ २३ ॥ येणसमासोचिनिअवसर ॥ अथसुपालुपणनुपकर ॥ हेआनोचिका
यसोयरे ॥ जाहाल्यतुज ॥ २४ ॥ त्आर्थाचिकायनेणसी ॥ क्कहोगोअजनोळरवसी ॥ वायोचिकायकरिस्सो ॥ अतिशय-
आतो ॥ २५ ॥ आजिचहजुझ ॥ कायजन्मानवलतुज ॥ हेपरस्परतुह्याव्याज ॥ सदाचिआथो ॥ २६ ॥ तराआताकाय
जाहाल ॥ कायस्सहउयनल ॥ हेनेणजिगरीकुइकेले ॥ अजुनातुगा ॥ २७ ॥ माहधरिभियाऐसेहोइल ॥ जअसनीम-
निहाजाइल ॥ आणिपरलोक्काअंतरेल ॥ गेहकसी ॥ २८ ॥ ह्दयचोहिलपण ॥ अथभिरयासिनहेकारण ॥ हेस-
मासोयतनजाण ॥ सत्रियासी ॥ २९ ॥ गेसनितासुपावत ॥ नामापरअसिशकवित ॥ हेऐकोनिपाइसुते ॥ कायबाल ॥
म्हो ॥ ३० ॥ अजुनउवळ ॥ वयसोपमहंसरथेदोणचमइसुदन ॥ इपमिः प्रनियोल्स्योभपूजाहोवोरसुदन ॥ ३१ ॥ दी
देवाहयतुलवरी ॥ वालावतनंगभगवारी ॥ आधीन्तचिचिचारी ॥ समामहा ॥ ३२ ॥ हेजुझनकुममाद ॥ अथप्रवर्तिल्या-
दिसतसेबाध ॥ हाउधउज्जंगमद ॥ वाइवलाआत्तो ॥ ३३ ॥ दग्गमातागितरेअचिजती ॥ सवम्बताषपाविजती ॥ नुयपा
पाव ॥ ओ ॥ २४ ॥ अतिसोआतांविवा अतिशाकहा ॥ ओ ॥ २५ ॥ हागा ॥ ओ ॥ २६ ॥

शीकवींविधिजनी ॥ आपुनिरुयाहारी ॥ १२ ॥ देवासमवृत्तनसस्कारिजे ॥ कायेइतरीपूजिजे ॥ हेवाचुनिकवींनिंदजे ॥ स्वयेवा-
 न्सा ॥ १३ ॥ तेसगोत्रगुरुआमुचे ॥ हेवृजनीयआह्वानसाचे ॥ मजबहुतमीधद्राणाचे ॥ वर्तनस ॥ १४ ॥ जयालागींमनेविरू-
 आत्मीस्वर्ननिशकोथरु ॥ तयापत्यसुक्वोकरु ॥ दानदेवा ॥ १५ ॥ वरिजळोहो जयाने ॥ गथआग्रवेयासिहोचिकायजा
 होले ॥ जयात्तावथअभ्याभिले ॥ मिंगविजेआत्मी ॥ १६ ॥ सोपार्थद्राणाचाकेला ॥ येणधनुवेदसजिद्विला ॥ तेपोउपका-
 रकायआमारला ॥ वर्धातयाते ॥ १७ ॥ जेथोचियाहपुलाहिजेथर ॥ तथेचमनेव्यभिचार ॥ तरीकायमीमस्मास्तर ॥
 अर्जुनह्याणे ॥ १८ ॥ म्हागुरुनहलाहिमहानुभावान्त्रयोमोक्तुमेस्थामपीहलोक्त ॥ हल्यार्थकासांस्तुगुरूनिहेवभुंजी
 यमागान्तरधिरमादरधान ॥ १९ ॥ देवासमुद्रगमोरआइकिजे ॥ वरितोहोआहाचदेश्वजे ॥ परांस्याममननिगिजे
 द्राणाचिये ॥ २० ॥ हेअपारजेगगन ॥ वरतयाहोहोइलमान ॥ पराअगाधमन्त्रगहन ॥ न्दुदयाचे ॥ २१ ॥ करीअमृतहीवि-
 दे ॥ कोकाळवशवज्जहोफुटे ॥ परामनाधमनलोटे ॥ विकरविनाही ॥ २२ ॥ स्नेहालागींमाय ॥ ह्यणिपेतंकीरहाये ॥ परिहृ-
 पातेमृतआहे ॥ द्रोणीइये ॥ २३ ॥ हाकारण्याचींआदि ॥ सकळगुणाचाभिधि ॥ विद्याभिर्धुनरवधी ॥ अर्जुनह्याणे ॥ २४ ॥
 हायेणमानेमहंत ॥ वरिआह्याजार्गहृयावत ॥ आतासागणार्थेधात ॥ चित्येदल ॥ २५ ॥ रसहवर्णावधावे ॥ मगआ-
 पणसूरेश्वराज्यभागावे ॥ नमनार्थेआयवे ॥ जीविनेसी ॥ २६ ॥ हयेणमानेदुमर ॥ जयाहोहोनिभोगमथर ॥ तअसलुएथ
 वर ॥ मिसाप्रागतामला ॥ २७ ॥ नातरदेशाल्यगेजाइजे ॥ कागिरिकदरमेविजे ॥ पराशस्त्रभोतानधरिजे ॥ इयावरी ॥ २८ ॥
 देवानवनिशितीशरी ॥ वावरोनियाचाजिह्वारी ॥ मागगिंवसांवरुधिरी ॥ बुडालेजे ॥ २९ ॥ तेकाहुनिकायकीजनी ॥

पाठ. ओ. ४५ राज्यसुरव. ओ. ४७ हाते. ७

लिनं कर्त्तुं विजती ॥ मजनये हे उपनि ॥ याचि लगी ॥ ४९ ॥ ऐसे अर्जुन ते अवसर ॥ ह्यणे श्री कृष्णा अवधारी ॥ परि ते सना
 ये वि सुशरी ॥ आद को निया ॥ ५० ॥ हे जाणो नि पार्थ स्याला ॥ मग पुनरपि बोला गला ॥ ह्यणे देवो काचि नया बोला ॥ देती नि
 ना ॥ ५१ ॥ म्यो नूचे तद् द्यः कतर न्यो गरयो यद्वा जये मया दिवानो जयेतु ॥ याने वहत्वानि जर्जा विषा मस्ते वस्थिताः प्रभु
 र्वे धान रात्राः ॥ ६॥ टी० यद्दुर्वासा द्याचि नू जे हाते ॥ ते मी विवरु निबो ललो एथे ॥ परि ने कं कायया परेत ॥ तू तु ह्यि जाणे ॥
 ॥ ५२ ॥ ये विरुज यासि रे किं जे ॥ आणि बोली ते चि पाण सोडि जे ॥ ते एथ संया मव्या जे ॥ उभे आहाती ॥ ५३ ॥ आता ए संया ते व
 धावे ॥ की अक्क रु भिया नि यावे ॥ यादा हा माजि बरे वे ॥ ते नेणे आह्मी ॥ ५४ ॥ म्यो का पण्य दोष पहत स्वभावः दृष्टा मि लाय
 मे संभू द ने नाः ॥ ये छे यः स्यान्मि श्चि न दू हत न्ये शिष्य स्ते हं शाधि मांला प्रपन्न ॥ ५५ ॥ टी० आह्वा काय उचित ॥ ते पा हाता न स्फु
 रेथ ॥ जे मा ह येणे चि न्न ॥ व्याकुळ माझे ॥ ५६ ॥ नि भिरा वरु दू जे से ॥ दृष्टी चे ते ज म्भशे ॥ मग पासी त्वि अस्मत्तं न दिसे ॥ व-
 स्तु जात ॥ ५६ ॥ देवा ते संभज जाहाले ॥ जे मन हे त्या ति ग्रासिले ॥ आता काय हत आपुले ॥ ते ह निणे ॥ ५७ ॥ तर श्री कृष्णा
 त्वं विजाणा वं ॥ निक ते आह्वा सांगा वं ॥ जे सरवास वस्व आयवे ॥ आह्वा सित्वं ॥ ५८ ॥ तं गुरु रं वधु पिता ॥ तं आसु नी दृष्ट देव ता
 त्वं विसदोर सिता ॥ आपदा आसु ते ॥ ५९ ॥ जै सा शिष्या नि गुरु ॥ सर्व थाने ने सागरू ॥ की सरित ते सागरू ॥ त्यजि के वी ॥ ६० ॥
 मान रे अपत्या न माये ॥ सादृ भि जरा जाये ॥ नरी ते कंसे निजिय ॥ ऐकं कृष्णा ॥ ६१ ॥ ते सासवो पर आह्वासी ॥ देवा ते चिर क आ-
 हासी ॥ आणि वां निले जरी न मनि मी ॥ मागील माझे ॥ ६२ ॥ तर उचि न काय आह्वा ॥ जे व्यभिचरे नाय मी ॥ ते झड करी पुरुषोत्त
 मा ॥ सरग आना ॥ ६३ ॥ म्या न हि म प्रया भि म माप नु द्या द्यो क सुच्छो षणि भि द्रयाणा ॥ आवाप्य भू माव स पत्न भू ह राज्य सुरा
 पाठ श्री ५२ विष्णु कनि न उ प दे शि जो जी ओ ५० नेणां ७

णामपिचाधिपत्य ॥ ८ ॥ टी० हे सकळ कृच्छरेश्वरी ॥ जेशोक्रउपनमसिमनी ॥ नोतुझियावावांचुनी ॥ नजाय आणिके ६५
 एथं दुखितल आपहोईल ॥ हे महदपद हो पाविजे ल ॥ परिमोह हानि फिरेल ॥ मानसीचा ॥ ६५ ॥ जेसी सर्वथा बोजे आहां क
 ली ॥ तीं सुसंधां ज हो पोरेली ॥ तरेचि विरुदतीं सत्सुती ॥ आवडत सी ॥ ६६ ॥ नातरी आयुष्य पुरलें आहे ॥ तरे ओषध का
 ही नोहे ॥ एथं गृध्रचि उपगा जाये ॥ परक्षा भुते ॥ ६७ ॥ नमराज्य भोग समूह ॥ उज्जीवन नो हे शबुद्धी ॥ एथं ज कळांक
 पानिधी ॥ कोरुण्य तुझे ॥ ६८ ॥ एसें अर्जुन नथ वोलला ॥ नवदण एक ध्यानी सोडिला ॥ मग पुनरपि द्यापला ॥ ऊर्मीने
 णी ॥ ६९ ॥ कौसज पाहाता ऊर्मी नोहे ॥ हे अनारि संगमत आहे ॥ नायासिला महा मोह ॥ काळ संपे ॥ ७० ॥ सवसृष्टदय
 कल्हारी ॥ तेथे कारुण्य वेळचा प्ररो ॥ नागला म्हणा निमहरा ॥ सोजि चिना ॥ ७१ ॥ हे जाणोनि जेसी मोदी ॥ जो दृष्टि सव
 चि विष फुडी ॥ तो यावयाची हरी गारुडी ॥ ७२ ॥ ते सिद्धा पद कुसरा व्याकृष्टा ॥ मिरवत सैन्यी कृष्णा जवळा ॥
 तो सुपावरी अवलीळा ॥ रक्षिल आता ॥ ७३ ॥ म्हणा निना पार्थ ॥ मोह फणियस्तु ॥ म्या म्हणा तला हा हेतु ॥ जाणोनि यां ॥
 ७४ ॥ मग दर्शनां थ फाल्यनु ॥ येतला असे सांगित कवळुनु ॥ जे साधन पटळीं मानु ॥ आछा दिजे ॥ ७५ ॥ तया परोतो धनुष्य
 र ॥ जाला सेतु रवे जजर ॥ जे सायां काळीं गिरिवर ॥ वणवलाका ॥ ७६ ॥ म्हणा निमहे जे सुनीळ ॥ कृपासुत सजक ॥
 तो वोळवा आयोगाळ ॥ महा मोध ॥ ७७ ॥ तेथे सदर्शनाची द्युती ॥ तेचि विद्युत्ता झळकती ॥ गर्भरवाचने आयती ॥ ग
 र्जेनेचि ॥ ७८ ॥ आता तो उदारे कैसावे पंन ॥ तणे अर्जुनाचळ निवेळ ॥ मग नवी विरुद फुटेल ॥ उन्मेषाची ॥ ७९ ॥ तेक
 या आइका ॥ मना चिया आराणुका ॥ जान देव म्हण देखा ॥ निहां न दास ॥ ८० ॥ स्तो० संजय उवाच ॥ एवमुक्तांस्तु

पाठ. ओं. ६४ नवके. ओं. ६७ ओषधी. ओं. ६८ जीव बुद्धि. ओं. ७७ सहज. ७८

७९

८०

८१

धीकेशगुडाकेशः परंतप ॥ नयान्मृदुतिगोविंदमुक्तावणीविभूवह ॥ ८ ॥ टी० गेसंसजग्रअसेसागत ॥ हाणेरुथानोप
 र्थ ॥ पुनरपिशाककुलित ॥ कायबोले ॥ ८१ ॥ आदकसत्तवदोलेअ ॥ ह्यातो ॥ आतानाळवोवेतुह्यस्योत ॥ मोसवथान्जु
 जेरथ ॥ मरवसेनी ॥ ८२ ॥ गेसंयकहेळाधानिन्ना ॥ मगमोनधरुनिवेन्ना ॥ नैथअीझ्णविस्मयापावला ॥ देरवणितया
 ते ॥ ८३ ॥ भूटो० तमवाचल्लोकेशः ग्रहसालिवसा ॥ सनयोरुसयामेअ ॥ विषीदंतमिदवचः ॥ ८४ ॥ टी० मगआपुलाचि
 नोह्यण ॥ एथहेकागिआदरिंलुयणो ॥ अजुनसवथावार्हानेणो ॥ कायकोजे ॥ ८५ ॥ हाउमजेआताकवणपरी ॥ केसेनि
 धीरस्वीकारी ॥ जेसायाहातेपंचाक्षरी ॥ अनुमलीति ॥ ८६ ॥ नानरीअस्यदेखोनिव्याधि ॥ असृतासमीदव्यओषधि
 वेद्यसूचीनिरवधि ॥ निलनीचि ॥ ८७ ॥ तैसेविवरतअसेअीअनेत ॥ तयादोहोसैन्याआंत ॥ जयापरीपथ ॥ फांतिमांडो
 ॥ ८८ ॥ तैकारणमनेधरिंले ॥ मगसरोषबोलेओदरिंले ॥ जेसंमानेचाकोयोरुले ॥ स्महआथी ॥ ८९ ॥ कीओपथचियाक
 उवटपणी ॥ जेसीअसृताचीपुरवणी ॥ तेआहाचनदिसपरिगुणी ॥ मुकुटहोय ॥ ९० ॥ तैसीविरचिरपाहाताउदोसे ॥ आ
 तनरीअतिभरसं ॥ निगंवाक्यन्दरीनेशो ॥ बोलेओदरिंली ॥ ९१ ॥ भूटो० श्रीमगवानुवाच ॥ अशोच्यानल्वशोचस्त्व
 मजावादाअभाषसे ॥ गतासूनगतासंध्यनानुशोचंतिपंडिताः ॥ ९२ ॥ टी० मगअजुनोतह्यणितले ॥ आसीअजिह्व
 बलुदरिंले ॥ जनुवाएथआदरिंले ॥ माझारीची ॥ ९३ ॥ तुंजाणतानरीह्यणविसे ॥ परीनेणिवेनसोडिसी ॥ आपिशि
 कनुह्यणातुरीबोलसी ॥ बूहुसालनीता ॥ ९४ ॥ जात्यथालगेपिसे ॥ मगतेसराधोवजसे ॥ तुझेशाहाणपणतेसे ॥ दिंसत
 रो ॥ ९५ ॥ ह्आपणातनरीनणसा ॥ परीयोकरवानेशोचुपाहासी ॥ हावहुविस्मयआद्यासी ॥ युदतपुदती ॥ ९६ ॥ तनरीसाग

पाठ, ओ. ८३ पातला. ओ. ८६ ओषधि. ओ. ९४ आपणपे, पावसी छ.

पां अर्जुना ॥ तुजपास्त्रनिस्थानियात्रिभुवना ॥ हे अनादि विष्णु चरुना ॥ नमस्तुं कृपायी ॥ ९५ ॥ एषु समर्थ एव आशी ॥ तथा पासू
 निभूतहोती ॥ नरीहवायाचिका यबालती ॥ जगामाजी ॥ ९६ ॥ हाकासायन एसे जाहाले ॥ जे हे कृन्मभूतुवां स्त्रीजले ॥ आ-
 णिनाशपर्वनाशिंल ॥ तुझे निकारी ॥ ९७ ॥ तुझमले पण अहं कृती ॥ यांमिधातन करि रसि चिती ॥ तरे सागकायि हे होती
 चिरतन ॥ ९८ ॥ कां तर एव वधिना ॥ आपिसकळला कहां मरता ॥ ऐसि भानि द्यपण चिना ॥ येवो देसी ॥ ९९ ॥ अनादि सिद्ध
 हें आर्घ्ये ॥ होत जात स्वभाव ॥ नरीतुवां कां शोचावे ॥ सांगे मज ॥ १०० ॥ परीसूख पण निगसी ॥ नचिता वेंते चिनीसी ॥ आ-
 णित् चिनीति सागसी ॥ आत्मापानि ॥ १०१ ॥ देखे विवर्क जे हाती ॥ ते दोही ते हीन शोचिती ॥ हे होय जाय हे भांती ॥ द्यपण
 निया ॥ १०२ ॥ भ्रु ० नलवाहं जालुनासन त्वनमजनाधिपाः ॥ नचैवजमा विद्यामः सर्ववयमतः पर ॥ १०३ ॥ टी ० अजुनासा-
 गेन आदक ॥ एष आत्मीतु ह्यदि एव ॥ आणि हे भू पति अशेख ॥ आदि करुनी ॥ १०४ ॥ नित्यता ऐसे चि असोर्न ॥ नातरी निश्चि-
 तसया जाउनी ॥ हे भ्यानि वगळी करुनी ॥ दोन्ही नाही ॥ १०५ ॥ हे उपज आणि नाशे ॥ ते मायावशे दिसे ॥ ये नृवीत त्वना वस्तु-
 जे असे ॥ ते अविनाशवि ॥ १०६ ॥ जे संपवने तोयहाल विनं ॥ आणितरंगाकार जाहाले ॥ तरी कवण के जन्मले ॥ ह्यपणे येय ॥ १०७
 ते निवायुचें स्फुरण वेंले ॥ आणि उदक सहज सपाट जाहाले ॥ तरे आनाकाय निमले ॥ विचारीपा ॥ १०८ ॥ देहिनी स्मिन्
 शदे हे कोमार याव न जरा ॥ तथा देहातरमासि धीरस्तत्र न मुत्यति ॥ १०९ ॥ टी ० आदुक् शरीर तर शरक ॥ परी वयसा भेदे-
 अनक ॥ हे प्रत्यक्ष विदेख ॥ प्रमाणत्वं ॥ ११० ॥ एष कोमार त्वदिसे ॥ मग नारूपणी ते म्येश ॥ परी देह चित्त न नश ॥ एके कास-
 वे ॥ १११ ॥ ते सचित्त न्याचा वायी ॥ इयं शरीरातर हाती जाती पाही ॥ ऐसं जाणत यानाही ॥ व्यासा हृदुःख ॥ ११२ ॥ भ्रु ० व्यासा

पाठः ओं ९५ गा अर्जुना, किंवा मज अर्जुना, सिद्धः ओं ९८ परिसी, ओं ९९ सपाट देले, ओं १००

स्वशास्त्रिको न यथीनाप्यासुखदुःखदाः ॥ आगमापयिनो नित्यास्मांस्ति नित्यस्वभावन ॥ ११३ ॥ टी० गृथमणावयाहं सि-
 कारण ॥ जइं द्रियां आधनिपण ॥ तिहीं आकळिजे अंनः करण ॥ ह्यणाऊ निम्वमे ॥ ११४ ॥ इंद्रिये विषयसे विनी ॥ तेषूष-
 शोक् उपजनी ॥ ते अंतर आनुविती ॥ संगेये ॥ ११५ ॥ जया विषयांचा जयी ॥ एक निमृताक होनाही ॥ तेषूः खूआणि-
 काही ॥ सखही दिस ॥ ११६ ॥ देव शब्दांचे व्यासी ॥ निदा आणा स्तुती ॥ तेषू देवादेव उपजती ॥ अषण हरे ॥ ११७ ॥ सु-
 दुर्भाषा का मिण ॥ हंस्पयांचे दोनीशुण ॥ जेवपूचे निसंगे करण ॥ सतोष वदा ॥ ११८ ॥ व्यासर आणिसरख ॥ हेरूपीचे
 स्वरूप देख ॥ अउपजवो सरख दुःख ॥ नेत्र हरे ॥ ११९ ॥ सूर्य अणि दुर्गंध ॥ हापरिमळानां मेद ॥ जो आण संगे विषाद
 तोष देता ॥ १२० ॥ नसाचि हो विथरस ॥ उपजवो पीतिवास ॥ ह्यण निहा अणसरा ॥ विषय संग ॥ १२१ ॥ देव इंद्रिया आ-
 धीन होइजे ॥ नेगी तोषा न पाविजे ॥ आणिसरख दुःखे आकळिजे ॥ आपण पा ॥ १२२ ॥ या विषयांचा चिनि काही ॥
 आर्णाक संयथारख जाही ॥ ऐसा स्वभाव चि पाही ॥ दर्शना ॥ १२३ ॥ हे विषय तर केसे ॥ रोहिणीचे जळ जसे ॥ का-
 स्वमीचे आभास ॥ मद जाति ॥ १२४ ॥ देव अंत्यतया परी ॥ ह्या गाऊनि तुं अकर ॥ हा सर्वथा संग न धरी ॥ धनुष-
 रा ॥ १२५ ॥ अस्त्रां वं हलव्यथयन्य ते दूख वरुष भि ॥ समदुःख सरुंधीर सासुत त्याय कल्पते ॥ १२६ ॥ टी० हे विष-
 य जयाते ना कळिती ॥ नया सरख दुःख दाने निपवती ॥ आणि गमास संगती ॥ नाहीतरा ॥ १२७ ॥ तो नित्य रूप पाथा ॥
 वांछे खावा सवया ॥ जो या इंद्रियायां नागवेचि ॥ १२८ ॥ अस्त्रां नास नो विद्यते मावो ना मावे विद्यते सतः ॥ १२९ ॥ मयोरपि
 दृष्टान् रज्ज्वनया फलस्य दर्शयिषिः ॥ १३० ॥ टी० आनां भर्तृना काही एक ॥ सागेन मी आदक ॥ जे विचार परलोका ॥ वोळख-

पाठ. ओ ११३ इ. रवी. ओ ११५ नाय. ओ ११७ आर्णाक. ओ

ती ॥ २५ ॥ या उपाधिमाजीरुस ॥ चैनस्य अस्मैसर्वगत ॥ नैतल्लज्ञसंत ॥ स्वीकारिता ॥ २६ ॥ सहिलोपयजसें भगवत्सोऽ-
 भिमनने असे ॥ परीनिवडुनिगजहसे ॥ वेगळेकीजे ॥ २७ ॥ कोअभिमुखेकिडाळ ॥ नोओनियाचोरवाळ ॥ निवडितोके
 वळ ॥ बुडुमंत ॥ २८ ॥ नातरीजाणिवेच्या आयणी ॥ करितादधिकडसणी ॥ मगनवनेतिनिर्वाण ॥ दिसेजेसे ॥ २९ ॥
 कोभूसबोएकवट ॥ उपाणिताराहयनवट ॥ तेथउडेतेफळकट ॥ जाणोआले ॥ ३० ॥ तेंसंविचारितानिरसले ॥ तेंपण्वे
 महजसाडवले ॥ मगतलत्तातखउरले ॥ ज्ञानियासी ॥ ३१ ॥ ह्याणीनअनित्याचावायो ॥ तथाआस्तिक्यबुद्धिनाहो ॥ नि
 कषेदोहो ॥ दोरियलाअसे ॥ ३२ ॥ अस्मो० अविनाशितुनिदिहियेनसर्वमिदतन ॥ विनाशमव्ययस्यास्थनकञ्चित्कतु
 मर्हति ॥ ३३ ॥ टी० देरवेसारासारविचारिता ॥ फ्यातिनपाहोअसारना ॥ तरोसारतेस्वभावता ॥ नित्यजाणो ॥ ३४ ॥ हा
 लोकाच्याकार ॥ नोजयाचाविस्मार ॥ तेयनामवर्णआकार ॥ चिन्हनाहो ॥ ३५ ॥ जोसर्वदासर्वगत ॥ जन्मदायानत ॥ तथा
 केनियाहिघात ॥ कदानोह ॥ ३६ ॥ अस्तु० अतर्वतदुमेदहानित्यस्याक्ताः शरीरिणः ॥ अनाशिनानमेयस्यतस्याद्युयस्व
 मारत ॥ ३७ ॥ टी० का आणिशरीरजातआयव ॥ हेनाशर्वतस्वभावे ॥ ह्याणीनिर्वाजुझावे ॥ पडकुमरा ॥ ३८ ॥ अस्तु० य
 एनवेनिहंतारयश्चैनमन्यतेहत ॥ उभातेनविजानीतोनायहोतिनहल्यते ॥ ३९ ॥ टी० त्वधरुनिदेहोभिमानते ॥ दिवस्मि
 शरीराते ॥ सीम्यारिताहेमरेते ॥ ह्याणतआहासी ॥ ४० ॥ तरोअजुनातुहेणसी ॥ जरितलताविचारिसी ॥ तरीवधितानू
 नहसी ॥ तेवद्यनह्मता ॥ ४१ ॥ अस्तु० नजायेतस्मियतेवाकदाचिन्नायभूत्वाभवितावानभूयः ॥ अजोमित्यः शान्वतोय
 पुराणोनहन्त्यतेहल्यमानेशरीरे ॥ ४२ ॥ वेदाविनाशिनंनित्ययएनमजमव्यय ॥ कथमपुरुषः प्रार्थयकथयतिहानिकं ॥ ४३

टी० जैसं स्वभाभाजिदेशिजे ॥ तैस्वमनिसाच आपले ॥ मगचेरुनिसोपाहिजे ॥ नयकाहोनाही ॥ ३१ ॥ तैसीहे ज्ञाणमाया ॥ दुख
मनभाहासिवाया ॥ शस्त्रहाणितलियाछाया ॥ जैसीआंगीनरूपे ॥ ३२ ॥ कापुणकुसुलुं उला ॥ तथेविबाकारिदेसंशला ॥
परीभाजुनाहीनासला ॥ तयासवे ॥ ३३ ॥ नातरासर्वाकाशजैसे ॥ मरावृतीभवतरनेअसे ॥ तोमंगलियाअपेसे ॥ स्वरूपवि
॥ ३४ ॥ तैसेशरीराचालोथो ॥ सर्वधानाशनाहोस्वरूप ॥ ह्यणकुनिवृंहगोरो ॥ ह्यातिबापा ॥ ३५ ॥ प्रज्जोवासासिजिणांनि
यथविहायनवांनिरुहानरोपरणि ॥ तथाशरीराणिविहायजीणान्यन्यानिमंयानिववानिदेहा ॥ ३६ ॥ टी० जैसंजीण
वरुसंसिजे ॥ मगनुनवेदिजे ॥ तैसंदहातरांतल्याकाहिजे ॥ चननगोथो ॥ ३७ ॥ प्रज्जोनेनछेदतिशस्त्राणिनेनदहति
पावकः ॥ नेचेमकुंदवन्यापानशोषयतिमारुतः ॥ ३८ ॥ टी० हाअनादिनन्यासाहु ॥ निरुपाधिविशुद्ध ॥ ह्यणकुनिशस्त्रादिदो
छेद ॥ नपेदतथा ॥ ३९ ॥ हांमळयोदकेनाभव ॥ हाअंधाहमसमवे ॥ रथमहाशासनमवे ॥ मारुताचा ॥ ४० ॥ प्रज्जोअठे
द्योयमदान्द्योयमकुंद्याशाअणवच ॥ नित्यः सर्वगतस्याणुरचलोयममानु ॥ ४१ ॥ टी० अजुनाहानित्य ॥ अचळहाशाचिन ॥
सर्वत्रमहोदित ॥ परीपुणहा ॥ ४२ ॥ प्रज्जोअव्यक्तोयमचिंत्यावमविकारोयमुच्यते ॥ तस्मादेवविदित्येनानुशांचितुमहोम
॥ ४३ ॥ टी० हातकाचियहसी ॥ गोचरमोहोकरादी ॥ आनयाचियेमेने ॥ उक्तवावाह ॥ ४४ ॥ हासदादुलभमना ॥ आपनाहसंश
ना ॥ निःसीमहाअजुना ॥ पुरुषोत्तम ॥ ४५ ॥ हायुगवंधारहित ॥ अनादिअविहृत ॥ व्यर्त्तोसअर्तति ॥ सर्वरुपा ॥ ४६ ॥ अजु
नारमाहाजोणावा ॥ मकड्यात्मकदुखावा ॥ मगसहजशाकआधवा ॥ हरेमनुआ ॥ ४७ ॥ प्रज्जोअथेचेमनित्यजातित्यवामत्य
सेमृत ॥ तथापित्वमहावाननशांचितुमहसि ॥ ४८ ॥ टी० अथवागोमनिगर्मा ॥ तंभगवनविमानसी ॥ तहोशेत्वनपव
पाठ ॥ ओ. ३१ स्वमिनि जय ॥ ओ. ३२ अजुनातैमह ॥ ओ. ३३ दया ॥ ओ. ३४ राहा दियत तहो ॥ ओ. ३५ ॥

सी ॥ पंडुकुमरा ॥ ५२ ॥ जे आदि स्थिति अत ॥ हा निरंतर असे नित्य ॥ जे सा प्रवाह अनुसृत ॥ गंगा जळाचा ॥ ५३ ॥ ते अ
 न्निदिना हरि वदे ॥ समुद्रांतरा असे भिल्ल ॥ आणि ज्ञानोचि मध्ये उरले ॥ दिसे जे से ॥ ५४ ॥ इथे नील होत या परी ॥ सरसी नि स
 दो अवधारि ॥ मूर्तां सिकवणी ॥ अवसर ॥ दाकर्तना ॥ ५५ ॥ ह्युणा निह आधुव ॥ गत्य त न न ल गेशोत्वावे ॥ जे स्थिती चिह
 स्त भोवे ॥ अनादि रे सो ॥ ५६ ॥ नात र हे अजुना ॥ न से चितु दियामना ॥ तद र व नि लो क आधीना ॥ जन्म सया ॥ ५७ ॥ त
 र्थाथे काही ॥ तुज या का सिकारण नाही ॥ हे जन्म मृत्यु पाही ॥ अपरिहर ॥ ५८ ॥ म्मो ० जान म्या ह सुवा मृत्यु सुव जन्म
 मृत स्य च ॥ तस्मादपरिहारेथे न त्वं शोचितु महे सि ॥ ५९ ॥ टी ० उप जंत माश ॥ नाश ल पुन र पि दि से ॥ हे या टिका य अत
 से ॥ परि म्रयेणा ॥ ६० ॥ नात र उदा अस्तु आपुं से ॥ अर व इत हा न जात ज से ॥ हे जन्म मरण ते से ॥ अनि वार जरी ॥ ६१
 महा प्रलय अन सर ॥ हे च ल्मा क्य ह स हर ॥ म्मोणा नि हा न परि हर ॥ ६२ ॥ त्वं ज र हे रं से म निं से ॥ त री रे व द
 का करि सी ॥ काय जाणत चि न णां से ॥ धनु धरा ॥ ६३ ॥ गथ आण क हो ग क पा था ॥ तु ज ब हु नी परा पा हा ता ॥ दुःख कर
 व पा स व था ॥ विषो ना ही ॥ ६४ ॥ म्मो ० अव्य क्ता दी न मूर्ता न व्य स म र्था नि भा र त ॥ अव्य क्ता नि थ नान्य व न य पा री दे व ना र
 टी ० जे स म ले इ थ मूर्त ॥ जन्मा आदि अभू ते ॥ मग पा न लो व्य क्ते ते ॥ जन्म लया ॥ ६५ ॥ नि य स या सि जे य जा ती ॥ ते थ नि का त
 आने न हू ती ॥ दे रें पुं व स्थि ती च ये ती ॥ आपु नि ये ॥ ६६ ॥ ये र म थें जे म त मा से ॥ ते नि र्मि हु ना स्व न जे से ॥ ते सा आ का र हा भा
 या व शे ॥ सत्स्वरु पी ॥ ६७ ॥ नात र प व ने स्पर्श ले न र ॥ पट्ट या स न रा का र ॥ का र ग प स अ ल्ळ का र ॥ व्य क्तो क न को ॥ ६८
 ते से स क ल ह मूर्त ॥ जाण पा मा या का रि त ॥ जे से आ का शी बिंब त ॥ भ म्र प ट ल ॥ ६९ ॥ ते से आ दी चि जे ना ही ॥ त था ली गी

पाठ, ओं, ५४ जन्मचि ओं, ५५ जे ओं, ५६ जिये किवा जी ओं, ६१ स्वरुशीनाही ओं, ६२ परागसा, ७

नरुदसीकायी ॥ त्वं अर्वादेन पाहो ॥ चैतन्यगुरु ॥ ६० ॥ जयाती आर्तनिमोगित ॥ विपरीत्यजिह्वसंत ॥ जयालागी विरक्त ॥ वन-
 वासिधे ॥ ७० ॥ दृष्टोस्मि जयते ॥ ब्रह्मचर्याद्व्रते ॥ मुनीश्वरनपात ॥ आचरमातो ॥ ७१ ॥ श्लो ० आश्रयवत्पश्यति विश्विदे-
 नभाश्रयवद्दति तथैव चान्यः ॥ आश्रयवत्त्वेन मन्यः शृणोति श्रुत्याश्रयवेदनैव वक्रश्चित ॥ २१ ॥ टी ० एक अनशी निश्चल-
 जं निहाति ताक वळ ॥ विसरले भक्त ॥ संसारजात ॥ ७२ ॥ एकाग्रणा न्वादक्रुरितो ॥ उपरते हाडुर्निनिता ॥ निरवधितलुगि-
 ता ॥ निरतर ॥ ७३ ॥ एक एक तच्चिनिगले ॥ तदेहमात्रे साडिले ॥ एक भुम्भे पातले ॥ तद्रूपता ॥ ७४ ॥ जैमसरीता ओध स-
 मस्त ॥ समुद्राभा जिभक्त ॥ परमाश्रितेन समाप्त ॥ परतले नाहो ॥ ७५ ॥ तं मिथयोगोत्स्वरचिया मती ॥ भिळणी स्ववग-
 कवसती ॥ परे जे विचार निपुनरावर्त्ता ॥ सजती चिना ॥ ७६ ॥ श्लो ० देही निन्यमवधोयं देहसर्वस्य भारत ॥ तस्मात्सर्वो-
 णि भूतानि नखरौचितुमर्हसि ॥ ७७ ॥ टी ० जे भवेत्सर्वहो देहो ॥ जया करि ताही रात नाहो ॥ तें विश्वात्मक तू पाहो ॥ चैतन्य-
 एक ॥ ७८ ॥ इयच्चिनिस्वभाव ॥ हे हो न जान आये ॥ नरसागका यशोचाव ॥ एयतुवा ॥ ७९ ॥ एहवीं नरी पाथो ॥ तुज-
 काने पो न भनिना ॥ परी कडाळं हशो चिना ॥ वहता परी ॥ ८० ॥ श्लो ० स्वधमसगि चिचेदस्य न विकपितुमर्हसि ॥ ध-
 र्यादिदुष्टाच्छ्रयोन्यन्तर्धियस्य न विद्यते ॥ ८१ ॥ टी ० त्वं भक्तनिकान विचारि ॥ कायहे चिंतिन आहासी ॥ स्वधमस-
 विसरमासी ॥ नरावजणे ॥ न्यायाकारं गं भजने जाहान ॥ अथवा तु जचि काहो पातले ॥ कोयुगचि हे बुडले ॥ जहाए-
 य ॥ ८२ ॥ नरी स्वधम एक आह ॥ नामवधान्या ज्यनाह ॥ मरा तरि जेल काय पाहे ॥ छपाळ पणे ॥ ८३ ॥ अजुना तु जे चित-
 जही जाहाले द्रव भूत ॥ तर्हा हे अनुनित ॥ संधाम समया ॥ ८४ ॥ अगागे सीर जरी जाहाल ॥ नरी पथ्या भिना होय तले

पाठ ० ओ ० मायुने ओ ० तं गिने ओ ० हर्षा निरंते ०

७ ८ ९ १० ११ १२ १३ १४ १५ १६ १७ १८ १९ २० २१ २२ २३ २४ २५ २६ २७ २८ २९ ३० ३१ ३२ ३३ ३४ ३५ ३६ ३७ ३८ ३९ ४० ४१ ४२ ४३ ४४ ४५ ४६ ४७ ४८ ४९ ५० ५१ ५२ ५३ ५४ ५५ ५६ ५७ ५८ ५९ ६० ६१ ६२ ६३ ६४ ६५ ६६ ६७ ६८ ६९ ७० ७१ ७२ ७३ ७४ ७५ ७६ ७७ ७८ ७९ ८० ८१ ८२ ८३ ८४ ८५ ८६ ८७ ८८ ८९ ९० ९१ ९२ ९३ ९४ ९५ ९६ ९७ ९८ ९९ १००

रेमे निविषहायस्तदले ॥ नवज्वरहेतो ॥ ८४ ॥ तैस आनी आनकरिता ॥ नाशहोई नहिता ॥ ह्यपाऊ नित आता ॥ झावधोई
 ॥ ८५ ॥ वाधा विव्याकुळ कारी ॥ आपुला निजधर्म पाहो ॥ जा आचरिता वाधनाहो ॥ कृपण काळो ॥ ८६ ॥ जेस भारी चिचलेता
 अपाय नशेसवया ॥ कांदी पाधारे वनेता ॥ नाजिजे ॥ ८७ ॥ नया परी पाथा ॥ स्वधर्म राहातता ॥ सकळ काम पूर्णता ॥ सह
 जे होय ॥ ८८ ॥ ह्योनि यान्नागी पाहो ॥ तुह्या दुस्त्रिया आणिकवाहो ॥ सया मावचुनि नाहो ॥ उचित जाणो ॥ ८९ ॥ निष्परत हो आ
 वे ॥ उमिणा धादुं झोव ॥ हे असो काय सागाव ॥ मत्पद्वारी ॥ ९० ॥ प्रस्नाकू यहुच्छुयलो पपल स्वर्गद्वार मपावतम् ॥ सु
 रिवनः स्त्रीत्रियाः पाथलभन युद्ध मोदश ॥ ९१ ॥ दी० अजुना जुसुंदर आताच ॥ हहो काजे देव तुमचे ॥ की निधानसकळ ध
 मचे ॥ मगदले असे ॥ ९२ ॥ हासयाम काय द्वाणिपे ॥ की स्वर्गचियेणे रूप ॥ मूर्त कामनापे ॥ उदयकला ॥ ९३ ॥ नातरी गुणा
 चे भिपतिकरे ॥ आते चिंमिपडिमेरे ॥ हे कीर्तीचि स्वथवर ॥ आलो तुजे ॥ ९४ ॥ ह्यत्रिये वहुन पुण्यकीजे ॥ ते जुझारे संलाहिजे
 जेस भारी जाला आडिछिजे ॥ चिंता मणसी ॥ ९५ ॥ नातरी जांभया पसंस्वरव ॥ तेथ अवचंद पडेरि दुरव ॥ तेसा हासयाम दसव
 पातला असे ॥ ९६ ॥ अयचे स्वमि सधर्म्य संया मन करि स्थसि ॥ ततः स्वधर्म कीर्तिचि हिला पापमवाप्यसि ॥ ९७ ॥ दी०
 आता हारे सा अकुरिजे ॥ मगनाथि नशे नूबे मिजे ॥ तरे आपण आहाणा होइजे ॥ आपण परया ॥ ९८ ॥ पूर्व जांचे जोडले ॥
 आपणा चि हाय थारिले ॥ जरी आज शस्त्र सांडिले ॥ रणीं दये ॥ ९९ ॥ असतो कीर्ति जाइल ॥ जगचि अभिशाप दइल ॥ आ
 णि गि वसित पावतोळ ॥ महादोष ॥ १०० ॥ जेसो भोतार हो नवनिता ॥ उपहती पावसवथा ॥ मग ते संदुशज जीवना ॥ स्वधर्म वीणा
 ११ नातरी रणीं रावसाडिजे ॥ तंचो भरी गिधी विदारिजे ॥ तैस स्वधर्म होना अभि मरिजे ॥ माहादोषी ॥ २०० ॥ प्रस्ना० अकी

पाठः ओं ८७ अपावा ओ ११ कांदेव ओं १२ उदये ओं १३ दस्त्री ओं २०० स्वधर्म

निंसीपमूतानिकयथिच्छंतिनेययासु ॥ संभाविनस्वचाक्रोर्तिमरणादतिरिच्यते ॥ ३४ ॥ टी० ॥ ह्यणोनिस्वयमहासांडसीत् ॥ त
 रिपाववरिपडाहोसीत् ॥ आणिअपेशेनवचेत् ॥ कल्यातवरी ॥ १ ॥ जाणनेनितवचिजिचावे ॥ जंबअपक्रोर्तिआगानपवे
 आणिसागपाक्किविनावे ॥ एथानिया ॥ २ ॥ त्वनिमस्सरसदयता ॥ एथुभिनिगसीलकीरभायेता ॥ परीतेगतिस्मस्ता ॥
 नमनेलयया ॥ ३ ॥ हेचहुकुडनिकवज्जितेत् ॥ बाणवरीयेतीत् ॥ तेथपर्योनस्सदिजेत् ॥ ४ ॥ एसेभिहोमाणस्स
 कटे ॥ जरीविपायेपानियेणयेत् ॥ तरोर्तिजियालंबोववेत् ॥ मरणाहुनी ॥ ५ ॥ स्तो० ॥ पथाइणादुपरतमस्यतेत्समहारथा
 यषत्तत्तंबुहमनामूलायास्यमित्तायव ॥ १५ ॥ टी० ॥ तुंआणिकृहोएकनविचारिसी ॥ एथसंभवेजुझोआलासी ॥ आणि
 सकणवपणीनियालासी ॥ माणुताजरी ॥ ६ ॥ नरोत्तुंनेअजुना ॥ यावीरयादुजना ॥ कामत्यथायइलमना ॥ सागेमज
 ॥ ७ ॥ स्तो० ॥ अवाच्यवादांश्चबहुस्वदिष्यंतितवाहिनाः ॥ निंदंतस्तवसामर्थ्यनतोदुःखतरंभुकि ॥ १६ ॥ टी० ॥ हेह्यणतो-
 गलारेगला ॥ अजुनआह्याविहाला ॥ हासांगेवाल्तरला ॥ निकाकायी ॥ ८ ॥ लोकसायासंकखुनिबहुते ॥ वेत्तितीआपु
 नोजिविते ॥ परीवाटवितोर्किर्निते ॥ धनुपरा ॥ ९ ॥ तंतुजअनायासे ॥ अनकळिनजोडिलोअसे ॥ हेअदुनीयजेसे ॥
 गगनआहे ॥ १० ॥ तेसीकीर्तिनिःसीम्स ॥ तुझावारीनिरुपम ॥ तुझेगुणउत्तम ॥ निहोलीकी ॥ ११ ॥ दिगतीत्वेभूपती ॥ प्राट
 होअुनिवारवाणिती ॥ जेगेकिनिगदत्तकती ॥ कृतानादिक ॥ १२ ॥ एसीसीहमायनवट ॥ गंगोतेसीत्तोखट ॥ जयादेखी-
 जगीस्सभट ॥ वावजाहाल ॥ १३ ॥ तेंपारुपतुझेअदुत ॥ आइकोर्निशोदेसमस्त ॥ जालेअनिविरक्त ॥ जीवितेंसी ॥ १४ ॥
 जेसीमिहाचियाहाका ॥ युगातेहायमदधुरा ॥ तेसीकारवाअशेरवा ॥ धाकतुझा ॥ १५ ॥ जेसेपर्वतवजाते ॥ नानरीस

पाठ नाही.

पंगुडोते ॥ तेमे अंनुनाहेतवे ॥ मागिते सदा ॥ १६ ॥ ते अयाधपण जा इन्नु ॥ मंगहानले आंगायेईन्नु ॥ जरीमागुना निघरील
 मजु सुनिवि ॥ १७ ॥ आणि हे पळतां पळोनि दती ॥ परुभि अबकळा करिती ॥ नरां शितकुरी चोळती ॥ आइकता लुज ॥ १८ ॥
 भगत वेळो हिच फुटावे ॥ आतां ताद पण कानुं जुडावे ॥ हो जंतल नरी मागावे ॥ महीतळ ॥ १९ ॥ अलो ० हतो वा मा स्यसिस्व
 री जित्वा मां द्वयससहास ॥ तस्मादनिष्ठकानि च पुद्गायस्य तं गन्धयः ॥ ३७ ॥ टी ० नानरी रणी एथ ॥ मुं सतावे चले जी वि
 त ॥ तरी स्वगम्भर व अनकळित ॥ पावरीन्नु ॥ २० ॥ ह्यणा निचगाभ ॥ विचार न करी करी टी ॥ आतां धनुष्यधरुं निउठी ॥
 जुंझवेगी ॥ २१ ॥ देव स्वधर्म हा आचरता ॥ दोपनाशी असता ॥ मुं जन्म निहक वणनिना ॥ पात कार्थी ॥ २२ ॥ सागो भू वनि
 काय बुडिजे ॥ कोमागी जातो आडळिजे ॥ जरी विषय चालो न ठिजे ॥ तर तिंही पड ॥ २३ ॥ अस्म तं तर निचम रिजे ॥ जरी विषयी
 से विजे ॥ तं सास्वधर्म दोष पाविजे ॥ हे तुकपणी ॥ २४ ॥ ह्या पां मिया नाथो ॥ हत साडु नि सवे था ॥ तु जसा अदृती जुंझती ॥ पाप
 नाही ॥ २५ ॥ अलो ० सुरवदुःख समस्त लाभा मा मो जया जया ॥ तना मुडावयु न्यस्वने वपापम वा स्यसि ॥ ३८ ॥ टी ० सु
 री सताधान थावे ॥ दुःख विषादान सम जावे ॥ आणिला माला सन धराव ॥ मना मा ग ॥ ३६ ॥ एथ विजय पण होइन्नु ॥ की सवथा
 देह जाइल ॥ हं आधी चिको हं पुढे ल ॥ चिंतावेना ॥ ३७ ॥ आपण थाडि चिना ॥ स्वधर्म साहादता ॥ जे प्रवेते निवाता ॥ साहो नि
 जावे ॥ ३८ ॥ एमे या सने हो आवे ॥ तरि दोष न घडे स्वभावे ॥ ह्यणा निच आतां जुंझावे ॥ नि म्मान तुवा ॥ ३९ ॥ अलो ० एषाने मिहि
 तां सारथ्य बुद्धि योगी ल्म मां धण ॥ बुध्या युक्तो यथा पांथ कर्म बंधमहारयसि ॥ ३९ ॥ टी ० हे सांरथ्य स्थिति मुकुळित ॥ सांगात
 शीतु जण ॥ आना बुद्धि याग निश्चित ॥ अवधारणा ॥ ३० ॥ जया बुद्धि युक्ता ॥ जालिया पाथी ॥ कर्म बंध सव था ॥ बोधून पव

पाठ - आ १७ हीनाको ओ १९ एर्ध्वतळ आ २२ एथ पात कार्थी ओ २८ स्वधर्माचे ओ ३१ बांधू

॥ ३१॥ जैसं वल्लकस्त्रं लेहजे ॥ सगशास्त्राचा वर्षावसाहिजे ॥ परं जैतं मोडारं जे ॥ अनुवित ॥ ३२॥ श्रुतं ० नेशापि क्रमनाशास्त्रिय
 न्यवयोनविद्यते ॥ स्वल्पमल्पस्य धर्मस्य चायत्नमहता मयात ॥ ३३॥ टी० ॥ नमोर्गहि कृतगननरा ॥ आगिमास तो उरला असे ॥
 जयप्रयात्रु क्रमादिसे ॥ नो गच्छत ॥ ३३॥ कर्मागारं गहादिजे ॥ परं कर्मागारं गहादिजे ॥ जे साभं नवनवधिजे ॥ भूतबा
 ध्या ॥ ३४॥ निशापरी जे सखुदि ॥ आयुलालया निरवधि ॥ हा असता चि उपाधि ॥ आकृष्ट मसके ॥ ३५॥ जेथ नमचरे पुण्यपाप
 जे सुस्म अगिनि कपा ॥ गुणभया हिले प ॥ नलगर्भ जेय ॥ ३६॥ अर्जुना पुण्यपंगे ॥ जेगं अल्प चि हृदये विदु मकाशे ॥ तसे
 अशेष ही नाशे ॥ संसारं मया ॥ ३७॥ श्रुतं ० स्वव्याया चि क ॥ बुद्धि रेक हकूर नदन ॥ बहु गारवा न्द नना ॥ अखुद्ध या व्यवसायिना
 ॥ ३८॥ टी० ॥ जैसी दीपका धाकुटी ॥ परं चि हुत जात मगदी ॥ तें सोप्य दुहि हे ये कुटी ॥ स्वर्णानय ॥ ३९॥ पाश्या बहु तो प
 री ॥ हे अपक्षि जे विचार प्रहरी ॥ जे दुर्लभ चराचर ॥ मद्रासगी ॥ ४०॥ आगि कर्मागारं गहा वहु वसा ॥ जे मान जोडे परिस ॥
 का असता चानरा ॥ देवपुणे ॥ ४१॥ तें सी दुर्लभ मस दुहि ॥ जेथ पंगमा न्दो न अवाये ॥ जे सागरा मिरुदधि ॥ मिरंतर ॥ ४२॥
 नसे दंष्टरा वाचूनि काही ॥ जित् आगि कर्मागारं गहा ॥ न एक निवृत्ति वाही ॥ अर्जुना जगी ॥ ४३॥ येरने दुर्मती ॥ जे बहु या
 असे विकरनी ॥ तथे निरंतर रचने ॥ अर्जुनी कन ॥ ४४॥ जगानि नायाया ॥ स्वर्ग संसार नरका वस्था ॥ आत्म सुख वस्था
 ह सुमाही ॥ ४५॥ श्रुतं ० नार्हिल कुटुंबाचा चंद्र सूर्या गि मित्र ॥ नेदवा दस्ता ॥ पाथना न्यदस्ती ति वाही ॥ ४६॥ टी० वे
 दाथे रिवालनी ॥ कवला कननि निनी ॥ परं कन मल्ली आसन्ती ॥ धर्क निगा ॥ ४७॥ स्वर्णानसंसारं जन्मिजे ॥ यज्ञादिक
 कर्म कीजे ॥ मग स्वर्ग संसार मा गिजे ॥ मना हर ॥ ४८॥ गय हे वाचूनि काही ॥ आगि कसवया स्मर विनाही ॥ ऐसे अर्जुना
 पात ॥ ओ ३० ॥ यो रश्मि ॥ ओ ३१ ॥ मि रश्मि ॥ ३२ ॥

बोलतोपाही ॥ दुर्बुद्धिते ॥ ४५ ॥ अन्ता ॥ कासात्मानः स्वगौरवः जन्मकुसुमं हृत्पुष्पम् ॥ क्रियाविशेषवहनाभिराश्रयगतिम-
 नि ॥ ४३ ॥ टी ॥ देवकामनाअभिभूत ॥ हा कुनिकर्म आचरत ॥ जेकवळ मागांचित्त ॥ देऊनिया ॥ ४८ ॥ क्रियाविशेष
 ब्रह्मते ॥ नलोपितीविधीते ॥ निपुणहाडांनधमाते ॥ अनुष्ठिते ॥ ४९ ॥ अन्ता ॥ सारंगशयनसंज्ञांनितयापद्धतचेत-
 सा ॥ व्यवसायात्मिकावृद्धिः समाधौनिविधायित ॥ ४६ ॥ टी ॥ परागकांचिक इकरिते ॥ जल्वगकामसमंनधिरती ॥
 यज्ञपुरुषाचक्रतो ॥ मोक्षाज्ञा ॥ ५० ॥ जसांक्रियावाचाराशकते ॥ सग्राधिमज्जानिहेज ॥ कामिप्रोल्नसिचरोविजे-
 काळकूट ॥ ५१ ॥ देवैअमृतकुसुमादन्ता ॥ तोपायहाणांनिगुन्दीदन्ता ॥ तसामासातपिसिभुपजला ॥ हतुकंपण ॥ ५२ ॥
 सायासिपुण्यअजेजे ॥ सगसंसारकुंअपिदिज ॥ रतेसंगतंनिकावर्कजे ॥ अमानदेरव ॥ ५३ ॥ जसांशायवर्णीर-
 ससाचर्निका ॥ करुंनियामानिविको ॥ तसांमागासोदीअगिवर्क ॥ धांइतेरिस ॥ ५४ ॥ त्याणांनिहगया ॥ दुर्वृद्धि-
 देरवसंषया ॥ तयावदवादरता ॥ मर्नावस ॥ ५५ ॥ अन्ता ॥ अचंगणशेषेषावदोनिस्त्रोरांगयाभिवर्गजे ॥ निहंहांनित्य
 सत्वस्थानिर्योगसिभआत्मवान ॥ ४५ ॥ टी ॥ तिहाणणिआवत ॥ हवदजाणांअफमान ॥ त्याणांभुडयनिषदादिस्म-
 मस्त ॥ सात्विकते ॥ ५६ ॥ यरजतभात्मक ॥ जयाभिरुपिजकमाहिक ॥ जेकवळस्वगसूचक ॥ धनुधरा ॥ ५७ ॥ त्याणां
 नितुजाण ॥ हेसरवदःस्वासीचकारण ॥ एव्यद्राणंअनःकरणा ॥ रियादस्मि ॥ ५८ ॥ त्यागवशात्ते अहरी ॥ मोसांअहंन
 करी ॥ एकआत्मसुखअतरा ॥ विसखसणी ॥ ५९ ॥ अन्ता ॥ यावानयउदगानसवनःसमुतादक ॥ तावात्मवेषुबंधेषुआ-
 त्याणस्यविजानतः ॥ ४६ ॥ टी ॥ जरीवेदवहुतवांनित ॥ विविधसिदसूचिते ॥ तर्हाआपणाहंत आपुल ॥ तंचिघप ॥ ६० ॥

असायगदनिर्गारा मस्ति ॥ अशेषही सागो दिसर्त ॥ तरोते तुल्ये हि रागचालिजनी ॥ सांगे मज ॥ ६१ ॥ करुतुदक मय सकळ ॥
 जर्द जाहले अस सहेतळा ॥ तरी आपण थप कवुळ ॥ आनी च जोगे ॥ ६२ ॥ ते सज्ञानी जहानी ॥ तेवद्या तो विवर्तनी ॥ स
 ग अस्मित ते स्वीकृतिनी ॥ शाश्वत ज ॥ ६३ ॥ अद्रो ० कर्मण्ये वाधि कारस्मा फल बुद्धा नन ॥ साक मफल हनु सुभाति सगा
 स्व कर्मणि ॥ ६४ ॥ टी ० दणोर्भि आदं गायो ॥ याचि पर्ग पाह्या ॥ नून उचित होय आता ॥ स्व कर्म ॥ ६५ ॥ आहो ॥ समस्त हो
 विचारि ॥ तव गेस चिहना अल्ह ॥ जेन सांड जे नुश आपुळ ॥ विहत कर्म ॥ ६६ ॥ परी कर्म फळी आसन करणी ॥ अणि अ
 कर्मो सगते निव्हावी ॥ हे स क्रियाचि आचरावी ॥ हतो वणा ॥ ६६ ॥ अलो ० योगस्थः कुरु कर्मोणि सगत्य क्त्वा धन जग ॥ सिध
 सिधोः समो भूत्वा समल्य योग उच्यते ॥ ६८ ॥ टी ० त्रयोग मुक्त हो उनी ॥ फळाचा संगटा कुनी ॥ मग अर्जुना चित्त दे उनी ॥ क
 री कर्म ॥ ६९ ॥ परी आदर्श कर्म देवें ॥ जरी समान निगावे ॥ तरी विशेष तेथ तोषावे ॥ हेही नको ॥ ६८ ॥ कर्मो भि यत्ने कोण
 के ॥ ते सिद्ध निवचनी विदोके ॥ तरी तेथि च नि अर्ण रने रं ॥ ह्या भावेना ॥ ६९ ॥ अत्र रं तो सिद्ध गले ॥ तरी काजा चि की
 र आले ॥ परी निम्यार्हा सगुण जाहले ॥ गेसे निमानी ॥ ७० ॥ दरे वं जेतुना न कर्म निपज ॥ ते तुल्य आदि पुरुषा समर्पिते ॥ तरे प
 रि पूर्ण सहे ॥ जाहले जाणे ॥ ७१ ॥ दरे वं सना सन कर्मो ॥ हे जे सरसे पण सनो धर्मो ॥ ते नि योगा स्थितो उत्तमो ॥ प्रशो स
 ने ॥ ७२ ॥ अद्रो ० दरे पण त्वं वर कर्म बुद्धि योगा दन जग ॥ बुद्धा शरण मनिच्छ कृपाणाः फल हनवः ॥ ७३ ॥ बुद्धि युक्तो जहाती ह
 र्मसकल तदुद्धते ॥ तस्मादागा ययुज्यस्तथागः कर्म भवो गानस ॥ ७४ ॥ टी ० अर्जुना समल्य निनाचे ॥ मवि सार जाण योगा
 ने ॥ जेथ मन आणितुद्ध चि ॥ ऐक्य आया ॥ ७५ ॥ ता बुद्धि योगा विवरना ॥ बहू ने गा र्गया ॥ दिसे हा असना ॥ कर्म योग ॥ ७६
 पाठ ॥ ओं ५८ ते ओं ५९ जेने कर्तुं गनी ॥ ओ ६० कुरु मी ॥ ओ ६१ विंशय ॥ ओ ६२ नववत ॥ ओ ६३ आणा ॥ ओ ६४ कर्म साग ॥ ओ

परं ते च कर्म आचरन्ते ॥ तं रत्नं ह्ययोगपावित्रं ॥ जन्मसंशयसहजं ॥ योगस्थितो ॥ ७५ ॥ ह्यणो निबुद्धिद्विगोसधर ॥ तेष्वअजुना
 होदस्थिर ॥ मनं कर्ग अहंर ॥ फलहतत्वा ॥ ७६ ॥ जेवुद्धिद्विगोपायजेले ॥ तेचिपरगनजाहाले ॥ इहोडभगसंधीसां डिले ॥ पा
 पपुणवी ॥ ७७ ॥ अतो ० कर्मजबुद्धिदुक्ताहो फलतुल्यत्वा मनीषिणाः ॥ जन्मवधविनिमुक्ताः पदगच्छत्यनामय ॥ ७८ ॥ टी ० तद
 मोनरीवर्नती ॥ पराकर्मफलानानुत्तरं ॥ आणियातोयानोलापती ॥ अजुनातया ॥ ७९ ॥ मगनिरामयंभरितं ॥ पावर्तपदअ
 च्युत ॥ तेबुद्धियोगयुक्त ॥ धनुर्धरा ॥ ८० ॥ अतो ० यदानमोहकलिलबुद्धिर्व्यतिनारयति ॥ तदार्गनामिनिवेदं आतव्यस्य अ
 तस्यच ॥ ८१ ॥ टी ० तदस्मात्तहासी ॥ जेमाहानययासी ॥ इसी ॥ आणिवेरायमानसी ॥ सचरुल ॥ ८२ ॥ मगमि कळकरह
 न ॥ उपजेल आत्मज्ञान ॥ तेणे निचोडहाईल मन ॥ अपसनुंसे ॥ ८३ ॥ तथ आणिक काही जाणावे ॥ वां मागलिते स्पर्शवे ॥ हे
 अजुना आपवे ॥ पारुषल ॥ ८४ ॥ अतो ० श्रुतिविप्रतिपन्नाने यदास्थास्यति निश्चला ॥ समाधावचलाबुद्धिस्तदायोगमवाप्
 स्यसि ॥ ८५ ॥ टी ० इंद्रियांचियासंगती ॥ जियेपसरहातसेमती ॥ तेस्थिरहोईलभागुती ॥ आत्यस्वरूपी ॥ ८६ ॥ समाधिसुखी
 कवळ ॥ जेबुद्धिहोईल निश्चल ॥ तेषावर्सातुं सकळ ॥ योगस्थिति ॥ ८७ ॥ अतो ० अजुनडगच स्थितमजस्यकोभाषासमा
 धिस्थस्य कशव ॥ स्थितधीः किंमभापेताकसासातव्रजेन किम ॥ ८८ ॥ टी ० तेषां अजुनसंगेदेवा ॥ हाचि अभिप्रायो भायवा ॥
 मीपुसेन अतोसांगाबा ॥ ह्यपानधी ॥ ८९ ॥ मग अच्युतद्वयणसरवे ॥ जेकिरीहातुं जमिके ॥ तेपूसणउत्पे ॥ मनचमि ॥ ९० ॥
 याबोलापरी ॥ ह्यणानलेसागापाअह्यथाने ॥ ह्यायह्यणिस्थितमज्ञाने ॥ बोळरवां कवी ॥ ९१ ॥ आणिस्यरबुद्धि मोह्यणिजे
 तोकसियाचिन्ह जाणजे ॥ जोसमाधिसरवभुंजे ॥ अरवां इत ॥ ९२ ॥ तोकवणस्थितोअसे ॥ केस निरूपीविनसे ॥ देवासांग

पाठ ॥ ओं ८० दूया ॥ ओं ८१ निचाट ॥ ओं ८२ मागिलात ॥ ओं ८३ अभिप्रायो ॥

वेहेरेसेनस्मोपैती ॥ ८९ ॥ तं वपस्व ह्यवतरण ॥ जोषदुणाधिकारण ॥ तोकायत्रीनारायण ॥ बोलन अस ॥ ९० ॥ श्लो १ ओ
 प्रगवानुवाच ॥ मज्जहानि यदा कामान्मन्त्रान्प्राथम्येनो गतान् ॥ आत्मन्येवात्मनावुष्टः स्थितमज्ञास्मदोच्यते ॥ ९१ ॥ टी १ ह्यणे
 अजुनापरिचरी ॥ जोहा अभिनाषोदमानसी ॥ नो अंतगयस्त्वस्वरं सर्वं ॥ करोत अस ॥ ९२ ॥ जोसर्वदो नित्यत्वम् ॥ अंतः क
 रणभरित ॥ परीविषयासाजिगन्त ॥ जेणंसेमोर्कजे ॥ ९३ ॥ तोकामसर्वथाजोये ॥ जयन्ते आत्मसंतोषो मनसाह ॥ तोचिस्थि
 तमज्ञहोय ॥ पुरुषजोणं १ श्लो १ दुःखं वदन्ति दुग्धमनाः स्मरन्वपुर्विगतस्मृहः ॥ दोतरागभयक्रोधः स्थितधीर्मुनिरुच्यते ॥ ९६
 टी १ नानादुःखीमासी ॥ जयादुर्गनाहोर्चिनी ॥ आणिसरवाचिया आती ॥ अडंपेचिजगा ॥ ९६ ॥ अजुनानवाच्यावा
 यी ॥ कामक्रोधमहज्जनाहो ॥ आणिमयानेतेणेकहो ॥ परिपृणते ॥ ९७ ॥ ऐसाजो निरवधि ॥ तोजाणपंस्थिरवदि ॥ जनि
 रसूनिउपाधी ॥ मेदरहित ॥ ९६ ॥ श्लो १ यः सर्ववान्मिस्नेहस्तत्तन्वायशसुश्रुतं ॥ नास्मिन्दत्तनदेष्टितस्यमज्ञाभतिष्ठ
 ता ॥ ९७ ॥ टी १ जोसर्वत्रसदासीरिमा ॥ परिपृणचंद्रकांजसा ॥ अधोमानमयकाशा ॥ माजिनह्यण ॥ ९७ ॥ ऐसी अनवछि-
 न्मसमता ॥ भूतमार्तोसदयता ॥ आणियालदहोर्चिनी ॥ कयगवल्ह ॥ ९८ ॥ गोभेदेकाहीणवे ॥ तरीसंतोषेतेणेनामिमवे ॥
 जोओरवेदेनिनागेवे ॥ विषादासी ॥ ९९ ॥ ऐसाहं गनशोकरहित ॥ जो आत्मबाधभरित ॥ तोजाणगामजायन्ता ॥ धनंशरा १३०
 श्लो १ यदासंहरतेचायकुंभगार्नवमवशः ॥ उद्दिद्यार्णादिथार्थस्यस्यमजान्मिद्विमा ॥ १०० ॥ टी १ काइसाविद्यापूरी ॥
 उवाइलाअवेषपसरी ॥ नानरीदच्छावेश आवरी ॥ आपुलआरण ॥ १०१ ॥ तेसींदिद्वयं आपेनी ॥ नयानेदं दृष्टान्तेनंतिनी ॥ न
 याचीमज्ञाजाणस्थितो ॥ पानलीअस ॥ १०२ ॥ तेनयान्तीमजा ॥ स्थिरज्ञाहालीमाज्ञा ॥ दुयेअर्थीअवज्ञा ॥ मऊमबोहो ॥ १०३ ॥ श्लो १

विषयाविनिवर्तते निराहारस्य दोहः ॥ रसवर्जरसोऽप्यपरदृष्ट्या निवर्तते ॥ ५॥ टी० ॥ अर्जुनाऽपि गच्छतः ॥ समागतं गच्छतः
 वतिक ॥ जे विषयते साधक ॥ त्यजति निरयमे ॥ ४॥ आत्रादिर्दोऽयं आविरति ॥ परं रसमेतं विरगपुनरुक्ति ॥ तं सहस्रज्योतिः
 लज्जती ॥ विषयी इही ॥ ५॥ जसे विरवरपालवर्षा दुजे ॥ आणिमुळो उदकस्याब्जजे ॥ तरे किसे निनाशा ॥ ५॥ मग दुर्द्विगी विष
 ॥ ६॥ तो उदकाचे निबळ अधिक् ॥ जसा आडये नि आराफा के ॥ ते सासानसी विषय पाये ॥ रसना द्वार ॥ ७॥ मग दुर्द्विगी विष
 यतुते ॥ ते सा निरय मन रस हते ॥ जे जावन निहं न घटे ॥ येणे विण ॥ ८॥ मग अर्जुना स्वभावे ॥ ऐसि नाहीं प्रिय मति ॥ ९॥
 जे कापर ब्रह्मा नु भवे ॥ हो इनि जा दुजे ॥ १०॥ ते गरीर रसावना मते ॥ इंदिये विषय वेसरती ॥ जे साह माय दर्शीत ॥ मग हाय
 ॥ ११०॥ श्रुतो ॥ यत तो ल्हापिको ते य पुरुष स्य विपश्चितः ॥ इंदियाणि प्रमाथी निहरति प्रसभमनः ॥ ६॥ टी० ॥ ये कथोतरि अमुं
 हे आनय साधना ॥ जे राहात तानि जनना ॥ निरतर ॥ ११॥ जयाते अस्यासाचा घरटा ॥ यम निरय साची ताटी ॥ जे मना ते सदा
 सुती ॥ धरुनि आहाति ॥ १२॥ ते ही किजती कासा दिमी ॥ या इंदियाचे जोर्द एसी ॥ जे सीमं जजोते विवर्सा ॥ मुलवर्का ॥ १३॥
 देखे विषय हंते से ॥ पावती अर्दु सिद्धी चे निमिषे ॥ मग आकळितो म्पेशी ॥ इंदियाचे ने ॥ १४॥ तिये संधासन जाये ॥ मग
 अस्यासा थाटा वलटाये ॥ रस वळकट पण आह ॥ इंदियाचे ॥ १५॥ श्रुतो ॥ तानि सवोणिसंयम्य युक्त ॥ आसीत मत्परः विश
 हियस्ये दयाणि नस्य मजा अर्जो क्षिता ॥ ६१॥ टी० ॥ क्षणा नि आडू पाया ॥ यांती निदं ली जो सवया ॥ सव विषयो आस्था ॥ सा
 दुनिया ॥ १६॥ तो चित्त जाण ॥ याग ने म्पेस कारण ॥ जयाचे विषय सरे वे भतः करणा ॥ झुक्वेना ॥ १७॥ जो आत्म बोध युक्त ॥
 हो इनि भसे सत ॥ जामा ते लदया भान ॥ दिसवेना ॥ १८॥ ये कर्वा बाढ्या विषय तरि नाही ॥ परमासन सी हा इ ल जरी का हो ॥ त
 पाठ ॥ ओं ॥ १०॥ जेने ॥ ओं ॥ १६॥ हे नि सातगा ॥ या इंदियांते ॥ ओं ॥ १७॥ सांवेना ॥ १८॥

रीसाद्यंतचिपाहो॥ संसारभ्रमे ॥ १॥ जैसाकां विषाचालेश॥ येनलियां होयबहुवस॥ मगनिभ्रातकीनाश॥ जीवितासी २१
 तेसीविषाचिंशका॥ मनीं वसतींदेरा॥ घातकरीअशेरषा॥ चिवेऊजाता॥ २१॥ भ्रुतो० आगतोविषयात्सुमःसंगस्तेषूप-
 जायते॥ संगालसजायतेकासःकायाच्छरीरोभिजायते॥ क्रोधाद्वनिसमाहःसमोहात्स्मृतिविस्मयः॥ स्मृतिं चशब्दुदित्ना
 शोशुद्धिनाशात्स्वप्नशयति॥ ६३॥ टी० जरीन्तदयोर्विषयस्मृती॥ तरीनिःसगाहोआपजसगती॥ संगेयगतस्मृती॥ अस्मि
 लाषाची॥ २३॥ जेथकामउपजला॥ तेथक्रोधआधींचिआला॥ क्रोधांअसेमेविना॥ संमोहजोणे॥ २३॥ संमोहाजुडिया
 व्यक्ती॥ तरीनाशपावेस्मृती॥ चंडवातेज्योती॥ हतेजैसी॥ २४॥ काअलगावींनिशी॥ जैसीसर्वनेजानेआसी॥ तेसादशा
 स्मृतिं फंशी॥ प्राणियासी॥ २५॥ मगअज्ञानांथकुवळ॥ तेजोआधुविजेसकळ॥ तेयुद्धिने० आकुळ॥ त्ददयासाजी २६
 जैसेंजात्युधापळणीपावे॥ मगतेकाकुळतीसंगधोवे॥ तेसीनुदुर्गिसिहोतीमने॥ धनुप्रगा॥ २७॥ तेसास्मृतिंमिशयडे॥ मग
 सर्वथाबुद्धिअवयडे॥ तेथस्मृत्कहउपडे॥ ज्ञानजात॥ २८॥ चेतव्याचिंशरी॥ शरीरांतवातेदे॥ तेसेंरुपाबुद्धिनाशी॥ हो
 यदेरेवे॥ २९॥ ह्यणोनिआदकेअकुना॥ जैसाविस्मृदिंगळतेइंधना॥ मगतोमोहजासि० अ० पुण्या॥ पुणयोगे॥ ३०॥ तेसीवि
 षयांचिअ्यान॥ जरींनिषांयवाहमन॥ तरीयेसणहपतना॥ गिंदसीतिगावे॥ ३१॥ भ्रुतो० रागद्वेषभुते॥ त्वुनिषयांमिंदयंभरन
 आत्मवश्येवंधेयात्सामसादमोयगच्छति॥ ६६॥ टी० ह्यणोनिविषयआपव॥ सर्वथाचेरोनिभांडेवे॥ मगरागेदुरस्वभावे॥
 नाशतीस॥ ३२॥ पायाआणिकहोणक॥ जरीनाशहरागदेर॥ तरीदुर्दिर्भावपणीविषय॥ रसांतांतीं ३३॥ जैसासुखआ-
 काशगत॥ रश्मिकरजगांतस्पर्शत॥ तरीसंगदांषकाशमित॥ तेथचेमि॥ ३४॥ तेसादोदयाथेउदातीव॥ आत्मरसेचिनिमि
 पाठ॥ ओं २४ आहत॥ ओं २५ मसी॥ ओं २८ सर्वबुद्धि॥ ओं ३४ रश्मिकरी॥ किंवा० रश्मिकरुनि॥ ७

न्म ॥ जोकांमकोधविहान ॥ होऊनिअसे ॥ ३५ ॥ तरोविषयानयाकाहो ॥ आपणयेवाचुनिनाहो ॥ सगविषयकवपाकाशु ॥
 वाधितोत्तकवणा ॥ ३६ ॥ जरीउदकोउदकुवुडिजे ॥ कांअभिआगीपोकिजे ॥ तरोविषयसंगोआशुविज ॥ परिपूर्णता
 ॥ ३७ ॥ तेसाआपणचिकवळ ॥ होऊनिअसानिखळ ॥ तयाचेपन्नाअचळ ॥ निम्यायमानो ॥ ३८ ॥ भ्रुताप्रसादसर्वदुः
 खानाहोभिरस्यापजायते ॥ प्रमलचतमाद्याशुवुडि ॥ पयवतिष्ठन ॥ ३९ ॥ टी ॥ दुखअरपदितप्रमन्तता ॥ आधीज-
 षुचिना ॥ तथरिगणनाहीसमसा ॥ संसारलुः स्वा ॥ ४० ॥ जेसाभमृताचिनिअर ॥ प्रसयजथाचाजवर ॥ तयादुरुधव
 वचाअदर ॥ कहींचिनाहो ॥ ४१ ॥ तसंलदयप्रमन्तहाय ॥ तरीदरवकुचकआह ॥ तथअपसोबुद्धिरोह ॥ प्रमात्म
 रूपी ॥ ४२ ॥ जेसानिर्वातंचादीप ॥ सर्वयानणकंप ॥ तसास्थिरबुद्धिस्वरूप ॥ योगयुक्त ॥ ४३ ॥ भ्रुतोनास्तिबु-
 द्धिरयुक्तस्यनचायुक्तस्यभावना ॥ नचाभावयत ॥ यानिरशानस्यदुतः सारव ॥ ४४ ॥ टी ॥ ययुक्तत्वीकडसणी ॥ नाहो
 ज्याचाभितः करणी ॥ तोआकळिजाणगुणी ॥ विषयादिको ॥ ४५ ॥ तयाग्निरनुद्धिपायी ॥ कुहीनाहोसर्वथा ॥ आ-
 णिस्थेयोचीआस्था ॥ तेहानुपजे ॥ ४६ ॥ निअळल्याचीभावना ॥ जरीनहोनिदोखमना ॥ तरीशानिकवोअनुना ॥ आ-
 पहोये ॥ ४७ ॥ जेथशानेचाजळाळानाहो ॥ तप्रसरविसरोभिनारथकही ॥ जसापापियाचादायो ॥ माक्षनवस ॥ ४८
 दुखेअग्निमाज्जयापती ॥ तियेबीजेजरीविरुदती ॥ तरीअशानासरप्रान्ती ॥ घुडशक ॥ ४९ ॥ ह्यणाभिअयुक्तपणभ
 नचे ॥ तेचिसवस्वदुःखाचे ॥ याकारणइद्रियाचे ॥ तमनकीजे ॥ ५० ॥ भ्रुतोइद्रियाणाहिरतायन्मनोबुविधीयत
 तस्यहरतिप्रज्ञावायुर्नावांमवांमसि ॥ ५१ ॥ टी ॥ इन्द्रियजेह्यणती ॥ तेतचिजेपुरुषकरिती ॥ तेतरलेचिनतरती ॥

याउ ओ ३६ हो ओ ३८ निकळ ओ ४२ सत्स्वरूप ओ ४८ निक ७

विषयसिंधु ॥ ४१ ॥ जैसी नाव थलिये ना किता ॥ जरी वर पड होय दुवाता ॥ नरी बुकला हो सागोता ॥ अपावो पावे ॥ ५० ॥ तैसा
 प्रामे ही पुरुषे ॥ इंदिये लाबिल जरी को तुफे ॥ नरी आक्रमिल जाण दुःखे ॥ सासारिके ॥ ५१ ॥ स्त्रो ० तस्माद्यस्य भ्रमा
 बाहो निरुहो ना निमवशाः ॥ इंदियाणीं दिव्यैश्च स्वस्तस्य प्रज्ञा प्रतिष्ठिता ॥ ६८ ॥ टी ० ह्याणो नि आपुलौ आपण पया ॥
 जरी इंदिये यती आया ॥ नरी अधिक फा हो धन जया ॥ सायक असे ॥ ५२ ॥ देवे कूर्म जिया परी ॥ उवाइला अवयव प-
 सरा ॥ ना नरी इछावो आवरी ॥ आपण पयें चि ॥ ५३ ॥ तैसा इंदिये अपेती होती ॥ जया चें ह्या गितलें करिती ॥ तयाची
 मजा जाण स्थिती ॥ पावली असे ॥ ५४ ॥ आता आणिक हा रक गं हन ॥ पूर्णा चें चिन्ह ॥ अजुना तु जसा गन ॥ परिसणी ॥
 ॥ ५५ ॥ स्त्रो ० या निशा सर्व भूताना तस्या जाग निमययी ॥ यस्या जागति भूतानि सा निशा पश्यतो सुनेः ॥ ६९ ॥ टी ० दे-
 खें भूत जा नींदेले ॥ तयें चि जया पाहले ॥ आण जीव जयचे देन ॥ तैसा निदित जो ॥ ५६ ॥ सो चितो निरुपाधि ॥ अजु-
 ना तो स्थिर बुद्धि ॥ तो चि जाणे निरवधि ॥ मुनीं स्वर ॥ ५७ ॥ स्त्रो ० आपूर्यमाणमचमत्मानि स्रष्टुमिदं मायः प्रविशति यद्
 त ॥ तद्भूतकामाय प्रविशति सर्वं स शान्तमामोति न कामकामी ॥ ७० ॥ टी ० गार्था आणी कही परी ॥ ना जाणो ये इल अव-
 धारी ॥ जैसी अस्सो मना सागरी ॥ अगवें दित ॥ ५८ ॥ जरी सरि ना वोध समस्त ॥ परि पूर्ण होऊ निमिळत ॥ तन्ही अधिक-
 नोतें देवत ॥ मया दान सादो ॥ ५९ ॥ ता नरी घी अंकाळीं सरिता ॥ शाबूनि जातीं समस्तो ॥ परी न्यून न के पाथी ॥ समुद्र-
 जैसा ॥ ६० ॥ तैसा प्रामो क्कहि सिद्धी ॥ तया भिसा मना हो बुद्धि ॥ आणिन पवतान बाधी ॥ अर्थी ततयाते ॥ ६१ ॥ साग-
 रें यांचा घरी ॥ प्रकाश काय वानी वेच्छी ॥ कानल विजे नरी अधकारी ॥ कोडे न तो ॥ ६२ ॥ देवे क्कहि सिद्धि तया परी ॥ आ-
 पाठ ॥ ओ ० ० ० आपुली ॥ ओ ० ० ० परिये सीपा ॥ ओ ० ० ० निश्चित ॥ ओ ० ० ० सर्वथा ॥ ७०

लो गेलो मेन करी ॥ तो विरुंतला असं अंतरी ॥ महासरवी ॥ ६३ ॥ जो आपुले निगारुपण ॥ इद्रमुवनात पावळ हाणें ॥ तो केवि
 रंज पावळ वणे ॥ भिल्लचिनी ॥ ६४ ॥ जो अमनातें ठिगवी ॥ तो जे साकाजी नसेवी ॥ ते सास्वसरवा नुसवी ॥ न भागी क्कहि ॥ ६५
 पाथानवल हे पाही ॥ जेय स्वर्ग सरवाल रवणी नाही ॥ तेथ क्कहि सिद्धि काई ॥ माळता हाती ॥ ६६ ॥ भ्लो ० विहाय का भाल्य
 सर्वानु सोमं चरति निस्मृहः ॥ निर्ममो निरहंकरः स शांतिमधिगच्छति ॥ ७१ ॥ टी ० ॥ ऐसा आत्म बोधे तो पला ॥ जो परिभा
 नंदे पारवला ॥ तो चिस्थिर प्रज्ञ भला ॥ वोळखत ॥ ६७ ॥ तो अहंकारांतें दवडनी ॥ सकळ काम साडुनी ॥ विचरें विचवहा
 उनी ॥ विश्वाभाजी ॥ ६८ ॥ भ्लो ० एषा ब्राह्मी स्थितिः पाथेन नाप्राप्य विमुह्यति ॥ स्थित्वा स्याम त काले पि ब्रह्म निवा
 णमृच्छति ॥ ७२ ॥ ७२ ॥ इति श्रीमद्भगवद्गीतासूपनिषत्सु ब्रह्मविद्यायां योगशास्त्रे श्रीकृष्णार्जुनसंवादे सारथ्यो
 गोनाम द्वितीयोऽध्यायः ॥ २ ॥ टीका हे ब्रह्म स्थिति निःसीम ॥ जे अनुभविती निष्काम ॥ ते पावले परब्रह्म ॥
 अनायासे ॥ ६९ ॥ जेचि दूरी भळता ॥ देहाने चि व्याकुलता ॥ आडवा केंन सेक चित्ता ॥ प्राज्ञा जयो ॥ ७० ॥ तेचि हे -
 स्थिति ॥ स्वमुखें स्वीपति ॥ सागत अजुना भति ॥ सजयो ह्यण ॥ ७१ ॥ ऐसे कृष्ण वाक्य ऐकिल ॥ तेथ अजुने मनी -
 ह्यणि नले ॥ आतां आमुचिया का जाकीर आले ॥ उपपत्ती इया ॥ ७२ ॥ जेक समजत आयव ॥ एथ निराकारि ले देव ॥
 तरे पारुषल व्याजु झोवे ॥ ह्यपूनिया ॥ ७३ ॥ ऐसा श्रीअच्युताचिया बोला ॥ चितो धनु र्धर उवायिल्ला ॥ आतां प्रश्न करील मळा
 आशंकोनी ॥ ७४ ॥ तो प्रसंग असे नागर ॥ जो सकळ धर्मासि आगरा ॥ विषका मृत सागर ॥ प्रानहीन ॥ ७५ ॥ जो आपण सर्व जना
 थ ॥ निरूपिता होईल श्रीअनंत ॥ ज्ञान देव सांगेल भात ॥ निहसि दास ॥ ७६ ॥ इति श्री भा० ज्ञा० द्वितीयोऽध्यायः ॥ ३ ॥ ओ ॥ ७६

७६

७७

७८

७९

८०

८१

८२

८३

८४

८५

८६

८७

८८

८९

९०

९१

९२

९३

९४

९५

९६

९७

९८

९९

१००

१०१

१०२

१०३

१०४

१०५

१०६

१०७

१०८

१०९

११०

१११

११२

११३

११४

११५

११६

११७

११८

११९

१२०

१२१

१२२

१२३

१२४

१२५

१२६

१२७

१२८

१२९

१३०

१३१

१३२

१३३

१३४

१३५

१३६

१३७

१३८

१३९

१४०

१४१

१४२

१४३

१४४

१४५

१४६

१४७

१४८

१४९

१५०

१५१

१५२

१५३

१५४

१५५

१५६

१५७

१५८

१५९

१६०

१६१

१६२

१६३

१६४

१६५

१६६

१६७

१६८

१६९

१७०

१७१

१७२

१७३

१७४

१७५

१७६

१७७

१७८

१७९

१८०

१८१

१८२

१८३

१८४

१८५

१८६

१८७

१८८

१८९

१९०

१९१

१९२

१९३

१९४

१९५

१९६

१९७

१९८

१९९

२००

॥ इति श्रीभाषार्यदायिकायां ज्ञानदेववि।
॥ रचितायां द्वितीयोऽध्यायः समाप्तः ॥

श्रीगणेशाय नमः ॥ ॥ अर्जुन उवाच ॥ ॥ आयसी चित्कर्मणस्ते मत्तु बुद्धिर्जातं न ॥ तत्किं कर्मणो यो रं मां न योजयति
 केशव ॥ १॥ टी० मग आइका अर्जुन ह्यणि तले ॥ देवा तु ह्यो जवा कय वा निने ॥ तं म्यानि कया परि सिले ॥ ह्युपा निधि १
 तेथ कर्म आणिकर्ता ॥ उरे चिना पाहता ॥ ऐस मत्तु दुस्यो अनता ॥ निश्चित जरी ॥ २॥ तरी माते वे वेन्मी हरि ॥ ह्युपा-
 सी पाथार्थ संशाम करी ॥ इये लाज सी नाम हा यरी ॥ कर्म सिता ॥ ३॥ हागा कर्म त्वचि शेष ॥ निराकरि सी निः शेष ॥
 तरी मज कर वो हं हि सक ॥ का करि र्सी ॥ ४॥ तरी हं चि वि चारी श्यो लवी केशा ॥ तं माने दुसी कर्म ले शा ॥ आणिये मणी हे
 हि सा ॥ करवे त आ हा सी ॥ ५॥ अतो ० व्याभिध्ये णे व वा के न बुद्धि मो हा य सी व मे ॥ तं दे क व द निश्चित्य ये न थो हा मा मु या
 ॥ २॥ टी० देवानुवाच ऐस बोलावें ॥ तरी आह्यो निणर्ता काय करवें ॥ आतां संपले ह्युपा आयवें ॥ विवेकाचे ॥ ६॥ हा-
 गा उ पद श जरी रसा ॥ तरी अपभ्रंश तां कसा ॥ आता पुरला आह्या धि वसा ॥ आत्म बो धा च्चा ॥ ७॥ वेंत पथ्य वारु निजा ये
 मग जरी आपणो न विष सये ॥ तरी रोगिया के से निजिये ॥ सांगे मज ॥ ८॥ ऐस आय छे स इजे आल्हादा ॥ का पाज वणि दि
 जे मर्कटा ॥ तं सा उ पद श हा गा मटा ॥ बोद वला आह्या ॥ ९॥ सी आर्थो न कां ही ने णे ॥ वरी क वी छे ला मो हा ये ण ॥ श्री ह्युपा
 विवेक या कारणे ॥ पुसिल तु ज ॥ १०॥ तं व तु स्त्री ए क न वाई ॥ एथ उ पद श मा जि गा वाइ ॥ तरी अनु सर लि था का डा ॥ ऐ
 सें की जे ॥ ११॥ आह्या तनु म न जि वें ॥ तुझ पा बोला वोढ गवें ॥ आणितु वांचि ऐ सं क रा वें ॥ तरी स रने ह्यु णे ॥ १२॥ आना
 ते सिया परे वा धि सी ॥ तरी निके आह्या करी ॥ एथ ज्ञाना चि आश का य सी ॥ अर्जुन ह्यु णे ॥ १३॥ तरी य जा णि वे चे कर स
 रले ॥ परे आणी क एक असं जा हा ले ॥ जेथि ते इ ह छे लें ॥ मान स मांझे ॥ १४॥ ते वो चि थ्यो ह्यु णा हं तु झें ॥ चरित्र कां हं नि णे जे
 पाठ ॥ ओं ० ४ मग ॥ अथवा ॥ तरी मग ॥ ओं ० ६ ह्यु णे ॥ किंवा ॥ ह्यु ण ॥ ओं ० १४ वरी ॥ ओं ० १४ हे उ ह छे लें ॥ ७

जरीचिनागाहसायाझे ॥ येणेंसिधें ॥ १५ ॥ नातराझकवीत आहारीसातें ॥ कांतलचि कीथिमीअनिने ॥ हें प्रवर्गभितानि
रुतें ॥ जाणविना ॥ १६ ॥ ह्यणोनि आइवेंदेवा ॥ हा मावय आननबोलावा ॥ मजविवेकसांगावा ॥ मन्हातजी ॥ १७ ॥ मी
अत्यंतजडअसे ॥ परांगेसाहिनेकेंपरियसे ॥ आहूण्याबोलावेंतुवांतेंसे ॥ एकनिष्ठ ॥ १८ ॥ देखेंगेगनेजिणावें ॥ ओ
षधतरीदेवांच ॥ गरीतें अतिसूच्यकावें ॥ माधुरजसे ॥ १९ ॥ तेंसंसकळारथमरित ॥ तत्वसागावेंदुवित ॥ परबोधेमाझचि
ना ॥ जयापरी ॥ २० ॥ देवातुजोसा निजगुरू ॥ आजिआनधिणाकानकरु ॥ गयमीडकवणाचिधरु ॥ तंमायआमुची ॥ २१ ॥
हांगाकामेंगुनचेंदुमते ॥ देव जाहोने आपेंतें ॥ नरोकामनेनिकानेये ॥ वाणिकेजि ॥ २२ ॥ जरीचितामणीहानाचंद ॥ तें
रीवाछेचेंकवणमाकंदें ॥ कोआपुनैनसरगोंडें ॥ दुछावेना ॥ २३ ॥ देखेंवाअमृतसिंधूतेवाकोवे ॥ भगताहानाचीजरीफुल
वें ॥ नरीसायासकाकरावे ॥ भागिल्ले ॥ २४ ॥ तेंसाजन्मानरेंबुहते ॥ उणभितीअिकसकापती ॥ तोतेंदेवेंआजिहार्ता ॥ जा
हान्नासिजरी ॥ २५ ॥ नरीआपुनयासवसा ॥ कानभागावासिपरशा ॥ देवासकाळहामानसा ॥ पाहिलाअसे ॥ २६ ॥ देखें
सकळीतेंचिजियानें ॥ आजिपुणयशसिआले ॥ हेमनारयजाहाने ॥ विजयीमाझे ॥ २७ ॥ जरीजपरमंगळअभा ॥ म
वळदेवदेवानया ॥ तूंस्वार्थानआजिआह्या ॥ ह्यणकानिया ॥ २८ ॥ जेंसमानेचिजारी ॥ अपन्याअनवसरनाही ॥ स्मन्याला
गुनिपाही ॥ जियापरी ॥ २९ ॥ तेंसदेवाने ॥ पुमिजेतेंसंआवदुतें ॥ आपुनैनआतें ॥ कृपानिधी ॥ ३० ॥ नरीपारिचकीदि
त ॥ आणिआचरितांतरीगुचित ॥ नसांगणुनिअचित ॥ यायत्यणे ॥ ३१ ॥ अन्ना ॥ आभगवासुधान ॥ लोकस्मिन्हीवे
पानिहापुराणेना ॥ मयाच ॥ जोनयोरनसारथ्यानाकर्मयोगनयोगिना ॥ ३२ ॥ दृष्टा ॥ याबोलाअथिअच्युत ॥ ह्यणतअसं
पाठ ॥ ओ ॥ १६ ॥ कीथिले ॥ ओ ॥ २४ ॥ देखें ॥ ओ ॥ २८ ॥ जी ॥ ३० ॥

७

१०

२

३

विस्मित ॥ अर्जुनाहायनित ॥ अभिप्रावो ॥ १२ ॥ जेवुं हयोगसांगतो ॥ सांख्यमनमस्था ॥ मगादनीस्वभावता ॥ मसंगे आ-
 द्यो ॥ १३ ॥ ना उदुशते न पर्सचि ॥ ह्योनिशिपलासिवायचि ॥ नरो आताजागमोचि ॥ उक्तो नहो ॥ १४ ॥ अवधारिवोरमे-
 ष्ठा ॥ ये लोकां यादोनो निष्ठा ॥ मजनिपास्तु निमगदा ॥ अनादि सिद्धा ॥ १५ ॥ एकज्ञानयोगह्यणिज ॥ जो सारथी अनुष्ठिज ॥
 जेथ वोंछर वीसं वे पां विजे ॥ तदुपता ॥ १६ ॥ एक कर्मयोगजाण ॥ जेथ साधक जन निपुण ॥ होऊ निदां निर्वाण ॥ पावती वे-
 छे ॥ १७ ॥ हे भारगनरी दोना ॥ परा एक वादती निदानो ॥ जे सों सिद्ध साध्या भोजनो ॥ लुभग ॥ १८ ॥ कापूवा परसरिता ॥ प-
 णि लिदि सती वाहता ॥ मग सिंधु भिळणी गेव्यता ॥ पावतो शीर्षो ॥ १९ ॥ तसो दोनी हांमते ॥ स्वजितो एक कारणाते ॥ प-
 री उपासित योग्यता ॥ आधीन असे ॥ २० ॥ हे रेक उत्सु वना सरसा ॥ पक्षो फळा सिद्धो बजसा ॥ सांगनर कविने सा ॥ पावे-
 वेगा ॥ २१ ॥ तो हकु हकु दाळें दाळें ॥ के तुलुं न गे के वेछे ॥ सागाचे निवळे ॥ निश्चित दाकी ॥ २२ ॥ तसे देव पाविह गम मते ॥
 अधिष्ठा निज्ञानाते ॥ सांख्य सद्य सोद्याते ॥ आकळितो ॥ २३ ॥ ये रया गये कर्मो धार ॥ विहते चिनि जाचोर ॥ पूर्णता अव-
 सर ॥ पावते हातो ॥ २४ ॥ अस्त्रो ॥ न कर्मणा मनार मान्ने कस्य पुरुषो मनुत ॥ न च मन्यमाना देवी शिंदुं सभधि गच्छति ॥
 टी ॥ वांचो नि कमार मउचित ॥ न करतो सिद्धवत ॥ कर्महीना निश्चित ॥ हो दे जेना ॥ २५ ॥ की प्राप्त कर्म साडिजे ॥ ये तुले-
 निने कस्य हा इजे ॥ हे अर्जुना वांचो लजे ॥ मूर्खपणे ॥ २६ ॥ सांगे पलती राजवे ॥ ऐस्य सनका जेथ पावे ॥ तेथ नावे तो-
 त्यजीवे ॥ यदु कवी ॥ २७ ॥ नातरी त्वसि दच्छिजे ॥ नरो कें सनि पाक न केजे ॥ की सिद्ध ही न से विजे ॥ के विसांगे ॥ २८ ॥ जव-
 निगत नाहा ॥ नव्या पारभसे पाहो ॥ मग सतुष्टि चाठायो ॥ कुव सहजे ॥ २९ ॥ ह्योनि आइ के पायो ॥ जयोनै कस्य परे ॥

७

पाठ ॥ ओं ३० ॥ अभिप्राय ॥ ओं ३४ ॥ क्षाप्रलाभि ॥ ओं ३५ ॥ वाटा ॥ ओं ३९ ॥ ग्राहता ॥ ओं ४६ ॥ निःकर्म ॥ ७

आस्था ॥ तथा उचित कर्म सर्वथा ॥ न्याय्य नो हे ॥ ५० ॥ आणि आपुलिये चाडे ॥ आपा दिले हे मोडे ॥ कां त्य जिले कर्म भाडे ॥ ऐ
सें आहे ॥ ५१ ॥ हे वायांचि मर्यादो मिजे ॥ उकल तर दिखे गो नि पाहिजे ॥ परंत्य जिनां कर्म न त्यजे ॥ निष्ठांत मानी ॥ ५२ ॥ अहो-
न हि कश्चित्सूण मणि जातु तिष्ठत्य कर्मकृत् ॥ कार्य ते न्य वशः कर्म सर्वः प्रहति जैरुणैः ॥ ५३ ॥ हे देवै र्गो हि त कर्म जेतुं ॥ ते स गच्छे जरी वा
छान ॥ तं व माडी मां दि हे अज्ञान ॥ ज चि क्षान्त गुणाधीन ॥ अपेक्षी असि ॥ ५४ ॥ सां गें अ वणें ए का वें तुलें ॥ की नें यो चें त ज गेलें ॥ हे ना सार म बुझा
सं दिलें ॥ तरो स्त मा व का य नि माले ॥ इंदियं चि ॥ ५५ ॥ सां गें अ वणें ए का वें तुलें ॥ की नें यो चें त ज गेलें ॥ हे ना सार म बुझा
लें ॥ परि मळ ने घे ॥ ५६ ॥ जा न री मा णा पा न ग ति ॥ की र्ति नि वि क ल्प जा हा ली म ति ॥ की र्क था त्प दि आ ति ॥ खुं द लिय ॥ ५७
हे स्त मा व बो धे तुलें ॥ की च र ण चो लो वि सर ले ॥ हे अ मो का य नि माले ॥ ज न्म भू तु ॥ ५८ ॥ हे न त क चि ज रो का हो ॥ तरो सा
डि ले र थें ते का र्यो ॥ ह्य णो नि क र्म त्या ग ना हो ॥ प्र ह ति मं तो ॥ ५९ ॥ क र्म प रा धी न प णा ॥ नि प ज न से म ह ति गु णे ॥ ये री ध री म
क र्मो अ नः क र णे ॥ वा हि जे वा यो ॥ ६० ॥ हे रं व र थो अ कू टि जे ॥ म ग ज री नि अ च्छ वे री स जे ॥ तरो च ल हो कू मि हिं डि जे ॥
परं त्वा ॥ ६१ ॥ का उ च्छ लि ले वा यु व र ॥ च्छे श कू प ज जे स ॥ नि च्छे श आ का रो ॥ परं त्वा ॥ ६२ ॥ तें स म कू ति आ धा रे ॥ क
र्म दि श वि का रें ॥ नि क र्म हे ह्य पा रें ॥ नि र न र ॥ ६३ ॥ ह्य ण कू नि स ग ज व म कू तो चा ॥ तं व त्या ग न घुं कू मा चा ॥ ऐ मि या हि
क रू ह्य ण ती न था चा ॥ आ य ह चि उ र ॥ ६४ ॥ अहो ॥ क र्म दि या णि स म न्द व ना ले न ता ॥ ६५ ॥ तं यो चि त्पू र्णा मि
अ्या चारः सु उच्यते ॥ ६६ ॥ हे देव जे उ चित कर्म सां दिती ॥ मग नै स मं हो गा ह ती ॥ परं क र्म दि ग म ह्म ती ॥ मि रो यु नी ॥ ६७ ॥ त यो
क र्म त्या ग न घे डे ॥ जे क र्म त्थ म नी सां प डे ॥ व रं न र ती नें फुं डे ॥ दारि द्र जा ण ॥ ६८ ॥ ऐ सें ने पा था ॥ वि ष या स क्त स वं था ॥ वोळ
पाव ॥ ओं ५८ सां डिलें का ई ओं ६० नि अ च्छ हो कू नि ओं ६३ आ धो ॥ ६४

रखावेतलता ॥ स्वीतिनाही ॥ ६६ ॥ आतां दुःशवधान ॥ प्रसंगें तु जसांगन ॥ यानिराश्याचि निह्क ॥ धनुर्भाग ॥ ६७ ॥ स्मृते ० यस्मि
 द्विर्वापि मनसा निवस्यारभ्यतेर्जुन ॥ कर्मेदयेः कर्मयोगमसक्तः स विधिप्राप्त ॥ ७० ॥ जो अंतरादुद ॥ परमात्मरूपी रा
 द ॥ बाल्यातरीरुद ॥ लोकि कर्जसा ॥ ६८ ॥ ताह दिवा आज्ञा न करी ॥ विषयाचि भय न धरी ॥ ना न कर्मणा करी ॥ उचित ज
 जे ॥ ६९ ॥ तो कर्मेदये कर्मी ॥ राहाद ता तरि न निर्या ॥ पर ते थिचे निरुमी ॥ झाकोठिना ॥ ७० ॥ तो कासना भावनयेप ॥
 मोहमळ न लिपे ॥ जे सें जळी जळी न शिंपे ॥ पदापुढ ॥ ७१ ॥ ते सासं सगा माजि अस ॥ सकळा सांरि रवादिसे ॥ जे सें तो-
 य संगे आमासे ॥ भानु बिंब ॥ ७२ ॥ ते सासा मान्य ले पाहिजे ॥ तर साधारणा चि देखिजे ॥ चरयो निर्धार तो न णिजे ॥ सा
 यज्याची ॥ ७३ ॥ ऐसा चिह्नी चिह्नीत ॥ दरवर्सा तां चि सुक्त ॥ आशा पाशरी हित ॥ बोलवरपां ॥ ७४ ॥ अजुना तां चि ये
 गो ॥ विशीष जे जोगी ॥ ह्यणो निरसा होययालागी ॥ ह्या गिपे तू ते ॥ ७५ ॥ तूं मानसां नि यम करी ॥ निश्चळ होयें अंत
 री ॥ भग कर्मेदियें व्यापारी ॥ यते तु सरें ॥ ७६ ॥ स्मृते ० नियतं कुरु कर्म त्वं कर्म न्यायात्य कर्मणः ॥ शरीरयात्रा पितृते
 न प्रमिथेद कर्मणः ॥ ८० ॥ ह्यणो निनेक्ष्म्य हो आवे ॥ तर एथे तन संभवे ॥ आणी निर्बद्ध कावरा हाटायें ॥ विचा-
 रीपां ॥ ७७ ॥ ह्यणो निजें जंचित ॥ आणी अवसरं करूनि मास ॥ ते कर्म हेतु रहित ॥ आचरेंत ॥ ७८ ॥ पायां आणी कही
 एक ॥ नेणसी तुह कवातिक ॥ जे सें कर्म सोचक ॥ आपसे अस ॥ ७९ ॥ देखे अनुक्रम आधारें ॥ स्वधर्म जो आचरे ॥ तो मोक्ष
 तेण व्यापारे ॥ निश्चित पावे ॥ ८० ॥ स्मृते ० यज्ञार्थोक्तस्य न्यत्र लोको य कर्म बंधनः ॥ तदयं कर्म कांत य मुक्त संगः समा-
 चर ॥ ९१ ॥ टी ० स्वधर्म जो बापा ॥ तो चि नित्य ज जाणपा ॥ ह्यणो भि वतं तां ते यापा ॥ सचार नाही ॥ ८१ ॥ हा निज धर्म
 पाठ ॥ ओं ६७ निरासाचें, ओं ६९ भें, ओं ७६ ही व्यापारी, ओं ८० तेणें विद्वारें, ओं ८१

जैसां ॥ आणिकुकरुमीरति यडे ॥ तेंचिबंध पडे ॥ सासारिक ॥ ८९ ॥ ह्यणोनिस्वधमनिष्ठान ॥ तें अरवडयज्ञयाजन ॥ जोकरीति
 याबंधन ॥ इहीचिंनयडे ॥ ८३ ॥ हानोककर्मबोधिना ॥ जोपरंत्यामूलला ॥ तोनित्ययज्ञातेंबुद्धला ॥ ह्यणोनियां ॥ ८४ ॥ आनां
 येचिविषयोपायां ॥ जसृष्ट्यादिसंस्था ॥ अहोनेकेना ॥ ८५ ॥ स्मृतो ० सहयज्ञा ॥ भजा ॥ सुखापुरोवाचप्रजापति ॥ अनेनम
 सविष्यधमेषवोस्त्वष्टकामयुक् ॥ १० ॥ टी ० तैमित्ययागसंहिते ॥ सृजलोमृतसमस्ते ॥ परिणर्ताचितययज्ञातें ॥
 सूक्ष्महाणउनी ॥ ८६ ॥ तैवेद्योमजोविनिविनाब्रह्मा ॥ देवाकाय आद्ययोग्य आह्वा ॥ तंवह्यणेतोकमच्छजन्मा ॥ सु-
 ताग्रति ॥ ८७ ॥ तुह्यावर्णविशेषवशे ॥ आहोहास्वधर्मविहलाभसे ॥ यातेंउपासामगअपैसे ॥ पुरतीकाम ॥ ८८ ॥ तुह्या
 व्रतनियमनकरावे ॥ शरीरांतेंनयोडावे ॥ दृगैकैहोनवचावे ॥ तीर्थीमिया ॥ ८९ ॥ योगादिकेंसाधने ॥ साकाक्ष आराधने ॥
 मंत्रयंत्राधिनि ॥ द्यणीकरा ॥ ९० ॥ देवतांतरानमजावे ॥ हेंसर्वथाकार्हांनकरावे ॥ तुह्यास्वधर्मयज्ञीयजावे ॥ अनाया-
 से ॥ ९१ ॥ अहंयुक्चिन्ते ॥ अनुष्ठापायांतें ॥ पतिव्रतापतेतें ॥ जियापरा ॥ ९२ ॥ तैसास्वधर्मरूपमरव ॥ हाचिमेव्यतुह्याक
 र्गैसंसृष्टलोकनायक ॥ बोलताजाहाला ॥ ९३ ॥ देवास्वधर्मांतेंमजान् ॥ तरीकास्येनुहाहोदल ॥ मगजजाहोनसीदल ॥
 तुमतेकदा ॥ ९४ ॥ स्मृतो ० देवात्मावयनानेतेंदेवाभावयतुवः ॥ परस्परमावयतुवः ॥ अयः परमवास्वय ॥ ९५ ॥ टी ० जेयेण
 करुनिममुस्तां ॥ परिताषहोदलदवर्त ॥ मगतेतुह्याईक्षितां ॥ अर्थतेंदेवी ॥ ९५ ॥ यास्वधर्मपूजापूजितें ॥ देवगारण्यां
 समस्ता ॥ यागक्षमनिश्चिता ॥ कार्त्तानुमचा ॥ ९६ ॥ तुह्यादेवतेंमजाल् ॥ देवतुह्यातुष्टनेल ॥ गेंसीपरस्परयेडेल ॥ प्रीति
 जेथ ॥ ९७ ॥ तेथतुह्याजिकरुहाणाल् ॥ तेंअनेंसंमिद्धिजाडल् ॥ यांछितहोपुरेल ॥ मानसीचिं ॥ ९८ ॥ वाचासिद्धिपावल ॥

आज्ञापक हो आल ॥ ह्यणि ये तु संतसागतील ॥ महा क्रुद्धि ॥ ९० ॥ जे संकत पती चिं हार ॥ वन आच्ययीं नरतर ॥ वोढो गोप भु-
 मार ॥ लावयेसीं ॥ १०० ॥ ॥ १०१ ॥ इह न भोगानि हो वोढवादास्य तथ शोभा विताः ॥ ते दत्तान यदा गेह्यो गेह्यो मे क्लेशं स्तनिर
 वसः ॥ १११ ॥ टी० ते संसर्व सुखे वसि हत ॥ देव चिं हत ॥ ये इन्द्र वा काटत ॥ तु ह्या पादो ॥ ११२ ॥ ऐसे स मस्त भाग भा ॥ ११३ ॥
 हो आल तु ह्यो अनारत ॥ जरी स्वधर्म व निरत ॥ वनी न वापा ॥ ११४ ॥ कौजानिया स क्ल स पदा ॥ जो अनुसर न दी इय स दा
 ॥ बुद्ध होऊ नियां सादा ॥ विषयां चिया ॥ ११५ ॥ निहोय जभा वि को सरा ॥ जे हं स प भि दि ध लो पुरो ॥ तथा स्वधर्मो भवं च
 श ॥ न भज ल जो ॥ ११६ ॥ अग्रि सुख हो वन ॥ न करो लट व ता पूजन ॥ याम वळे भाजन ॥ ब्राह्म पात्रि ॥ ११७ ॥ विमुर ग हो इन्द्र गुरु
 क्रुद्धो ॥ आदर न करी ल अतिथी ॥ संताप न दी ल जाती ॥ आयु मित्रे ॥ ११८ ॥ ऐसा स्वधर्म क्रिया री हत ॥ आयु मित्र पण री नित ॥
 केवल भोगा सक्त ॥ हो इ ल जो ॥ ११९ ॥ तथा भग आपा वो थार आह ॥ जे न हो त च स कळ जाये ॥ दरवा प्रा म हो नि लाह ॥ भाग
 मो ग ॥ १२० ॥ जे से गता यु शरीरी ॥ चेतन्य वासन करी ॥ का भि देवा चाधरी ॥ न रा हो लु ल्प्या ॥ १२१ ॥ ते सा स्वधर्म ज्ञानो पला ॥
 नरी स र्व सुखा चाथार मोड ला ॥ जे सा हो पास वं हर पला ॥ म का या जोये ॥ १२२ ॥ ते सी निज तु नि जे थ साड ॥ तथा स्वतंत्र व
 स्ती न घडे ॥ आइ का प्रजा हो पुढे ॥ विर चि ह्यणे ॥ १२३ ॥ ह्यण्ड नि स्वधर्म जो सा डील ॥ तथा त काळ दंड ला ॥ चार ह्यण्ड नि ह
 री ल ॥ सर्व स्वतयांचे ॥ १२४ ॥ भग स कळ दोष भवंते ॥ गंव सो नि धनो तयांत ॥ रात्रि समर्थो शम शानांत ॥ भूतें जे सी ॥ १२५ ॥
 सी त्रि सु व नी चिं दुःख ॥ आणि नाना विध पात के ॥ देव्य ज्ञानि तु के ॥ ते थो चि वसे ॥ १२६ ॥ ऐसे होय न या दु ल्प ना ॥ भग न स कट-
 बा पा रु द तो ॥ कल्प्या नी हो स र्व था ॥ प्राणि गण हो ॥ १२७ ॥ ह्यण्ड नि निज तु नि हे न सो डावी ॥ दी द्र ये बर को न दावी ॥ ऐसे भज न
 पाठ ॥ ओं १०० श्री ॥ ओं ३ का ॥ ओं ४ सा विती ॥ ओं ५ यम न ॥ ओं ६ गतां यमी ॥ ७

शिक्वे ॥ चतुरानन ॥ १६ ॥ जैसं जल्वरां जल्वसां दे ॥ भगवत्क्षणीं मरणभण्डे ॥ हास्वधर्मतेणंपादे ॥ विसंबोनये ॥ १७ ॥
 ह्यणाभिहृद्व्यासमस्मी ॥ आपुन्यालियाकृमीं निनिनी ॥ निरतल्वं वेपुह तपुहती ॥ ह्यणिपत असे ॥ १८ ॥ अल्हो यज्ञशि
 पांशिनः सतामुच्यत सर्वकिल्बिषः ॥ भुंजते त्वधपापये पचत्यात्मकारणात् ॥ १९ ॥ टी ० देखागिहितक्रियावि
 धि ॥ निरहृतकावुदि ॥ जा असति यं समुद्दि ॥ विनियोग करी ॥ १९ ॥ गुरुगात्र अशिपूजी ॥ अवसरी भजि हज्जो ॥
 निभिन्नादिकीयजी ॥ पितरोद्गं ॥ २० ॥ यायजुक्रियारुचिता ॥ यज्ञसी हवन करिता ॥ हुत शेष स्वभावता ॥ दुरज्ज
 ॥ २१ ॥ तैस्सर्वे आपुन्य परी ॥ कुदुवसं सोजन करी ॥ को सोगय चित्तनिवारि ॥ कल्मषांत ॥ २२ ॥ नयजावशिष्टभागी ॥
 ह्यणो निंसां डिजेनां अघो ॥ जया परां महारागी ॥ अमृतसिद्धि ॥ २३ ॥ क्रीतल्वनिष्ठ जेसा ॥ नागवे स्थातिनेया ॥ तोशेष
 भागीतेसा ॥ नाकळदाषा ॥ २४ ॥ ह्यणो नस्वधर्म जे अजे ॥ तैस्वधर्मि विविनयोगिजे ॥ सगउरेनें सोगिजे ॥ सतोष-
 सी ॥ २५ ॥ हवचूनिपाया ॥ गहादोनय अन्या ॥ ऐसी आद्यहकथा ॥ २६ ॥ जेदे हनि आपणयेसा
 निती ॥ आपि विवयाते सोगह्यपाती ॥ यापरे नस्वरर्ग ॥ आपि ककाहो ॥ २७ ॥ हेयज्ञोपकरण कळ ॥ नगतसा
 तेबरळ ॥ अहंबुद्धिं वळ ॥ सोगपाहती ॥ २८ ॥ इंदियल्लोस्मारिखं ॥ करार्वेतीपाकानिक ॥ तेषापिचपातकं ॥ सेविना
 जाण ॥ २९ ॥ हेसपनिजात आधवे ॥ हवन द्यमानावे ॥ स्मगस्वधर्म जे अगेवि ॥ आदिपुरुषो ॥ गहादोनय
 भूख ॥ आपणयेसा गहादोनय ॥ निपजवितीपाक ॥ नानाविध ॥ ३१ ॥ जहायजिभिद्धि जाय ॥ परशातोषहोय ॥ नहे
 सामान्य भल्लनहोय ॥ ह्यणानिशा ॥ ३२ ॥ हेन ह्यणावे साधारणा ॥ अन्न बह्यरूप जाण ॥ हेजिवनहनुकारण ॥ निस्सा
 पाव ॥ ओ १३ सेवनी ॥ ओ १३ जे ०

यया ॥ ३३ ॥ अन्तो ० अन्ताद्भवो निसृता निपुजन्त्यादत्तासंभवः ॥ यद्वाद्भवति प्रज्ज्योयज्ञः क्रमसमुद्भवः ॥ ३४ ॥ टो ० अन्ता-
त्तवभूते ॥ भरोहपावतोसंस्त ॥ सगर्पजन्यया अन्तानं ॥ सर्वत्रमसंभ ॥ ३५ ॥ तथापुजन्त्यायुर्नजिन्य ॥ यजानं भर्गदीक्ष
मे ॥ अन्तो ० क्रमसंस्त्याद्भवो विद्वद्वात्ससमुद्भव ॥ तस्मात्सवगतमहानित्ययज्ञमतिष्ठित ११ ॥ टो ० क्रमाभा ॥ आद
ब्रह्मवेदरूप ॥ ३५ ॥ सगर्पद्वानं परात्पर ॥ मसवतसे अक्षर ॥ ह्यण्डमिहं चरचर ॥ ब्रह्मबद्ध ॥ ३६ ॥ पराक्रमोचिचेषू
नि ॥ यज्ञाधिवासंनुति ॥ एकसंस्तदापति ॥ अखंडगा ॥ ३७ ॥ अन्तो ० एवंभवति तंचक्रान्तावनयतो हयः ॥ अथार
रोदियारामोयपथसंजोवति ॥ ३८ ॥ टो ० ऐसीहं आदिपरपरा ॥ संस्तुपुतुजधनुधरा ॥ सागतिलोया अध्वरा ॥ ला
गुनया ॥ ३९ ॥ ह्यण्डमिसंस्तुहाडुचिनु ॥ स्वधर्मरूपकतु ॥ ननुष्टोत्राभस्तु ॥ लोकोदय ॥ ३९ ॥ तोपानकाचोरासी ॥
जाणभारभूमीसी ॥ जोक्रमसंस्तुदियासी ॥ उपगंगला ॥ ४० ॥ तेजस्मक्रमसंकल ॥ अजुना अतिनिकल ॥ जेसका
अक्षपदल ॥ अक्रान्ति ॥ ४१ ॥ सांगक्रान्तिभ्रंजच ॥ तं संज्यानुदेवं तथाचं ॥ जया अनुष्ठानस्वधमाचं ॥ यदेवि
ना ॥ ४२ ॥ ह्यण्डमिहं पांडवा ॥ हास्वधर्मकवर्णनसंदावा ॥ सर्वसंविभजावा ॥ हाचि एक ॥ ४३ ॥ हांगाशरीरजरी-
नाहाल ॥ तरोक्तव्यवारे आनं ॥ मगडुचितकाभापल ॥ वासडावं ॥ ४४ ॥ परिसपासव्यसाच ॥ मूर्तिलाहोनिदेहाच ॥
खंतीकुरीतीकर्मोचि ॥ नेगावेदगा ॥ ४५ ॥ अन्तो ० युस्वात्मरतिरेवस्यादात्मतुसंस्तमानवः ॥ आत्मन्येवचसंतुहस्त
स्यकार्यनिविद्यते ॥ ४६ ॥ टो ० देवं असतो निदेहय ॥ एयतोचि एकनलिपकर्म ॥ जो अखंडितरसे ॥ आपणप ॥ ४६
जेतो आत्मबोधतापला ॥ तरोक्तकायंदरवजाहाला ॥ ह्यण्डमिसहं जसाडवला ॥ क्रमसंगा ॥ ४७ ॥ * अन्तो ० नैवत
पात ॥ ओं ॥ ३४ बरिबु ॥ ओं ॥ ३६ पापपर ॥ किंवा ॥ प्रगवर ॥ ओं ॥ ३९ मनु ॥ संस्तुपु ॥ नाहं चतुष्टयसंस्तं ॥ जेकर्मो जेडो आपुला ॥ ह्यण्डमिसंस्तपादिले ॥ आत्मतेनि ॥

स्थूतेनार्थोनाकृतेनहकश्चन॥ नचाप्यसर्वं हतेषुक्रिश्चिदर्थव्यपात्रयः॥१८॥टी० त्वमिजालियंजैसं॥साधनेनसर्त्त
 अपैसीं॥देखें॥आत्मतुष्टितैसी॥कर्मनाही॥२८॥जंवरीअर्जुना॥नोवोधयेदेनामना॥तंवचियासाधना॥मजवि
 लागे॥३१॥ॐ० तस्मादसक्तः सततकायकर्मसमाप्तर॥ असक्तो न्याचरन्कर्मपरमाप्तोतिपूरुषः॥१९॥टी० ह-
 णऊनिभिषय॥सकळकामनारहित॥होइनिथाउचित॥स्वधर्मराहोदे॥५०॥जैस्वधर्मनिकामता॥अनुसरलुपा
 यो॥तैककल्पपरमपदतत्वा॥पावनेजगी॥५१॥ॐ० कर्मण्येवाहं समिद्धिमास्थिताजनकादयः॥लोकसंघ
 हमेवापि संशयन्कतुमहंमि॥३०॥टी० देखपांजनकादिक॥कर्मज्ञानमशेष॥नसांइनामोक्षसूख॥पावनेजा
 हाले॥५२॥याकारणपाथी॥होआवीकर्मोआस्था॥हेआणिकाहीएकाअर्थी॥उपकारेल॥५३॥जैआचरतोआप
 णपया॥देखीलोगलोकांयया॥तरेचुकलयअपाया॥प्रसंगेचि॥५४॥देखेवमानार्थजाहाले॥जैनिकामतापाव
 ले॥तयाहो कतव्यअसेउरले॥लोकांनारी॥५५॥मार्गीअथासरिसा॥पुंदेदेखणाहीचालेजैसा॥अज्ञानामकदाया
 धर्मतैसा॥आचरेनी॥५६॥हांगागेमंजरीनकांजे॥तरीअज्ञानाकायडमंजै॥तिहोकरुणेपरजाणिजे॥मार्गीतै
 या॥५७॥ॐ० यद्यदाचरतिश्रेष्ठस्तत्तदेवेतरोजनः॥सयन्ममाणकुरुतेलोकस्तदनुवर्तते॥२१॥टी० एथवडिल
 जैजेकरिती॥तयालामधमदेविनी॥तोचियेरअनुविनी॥सामान्यसकळ॥५८॥हेगैसैअसेस्वभावे॥ह्यगोमिन्
 मंनसंडावें॥विशेषेआचरणें॥लगेसंती॥५९॥ॐ० नमयार्थोत्तिकुर्तव्यचिडुलोकेषुकंचन॥नानवासमवामब्य
 वर्तएवचकर्मणि॥२२॥टी० आनोआणिकांचियागोती॥क्रौरशासांगीकिरीदी॥देखेमीचिदयेराहादी॥वर्तंतथेस
 पाठ॥ओं॥५९॥अंकर्म, जैअनुसरले पर॥ओं॥५७॥गोते॥ओं॥५८॥ने॥ओं॥६७॥तुजसांगोकाय॥

॥६०॥ कायसां कडेकाहोसाते ॥ वीकयणाएकभाते ॥ आचरमाधमाते ॥ अणसीजरी ॥६१॥ तरापुरतेपणालागी ॥ आ
 णिकइसराहाजरी ॥ तसीसामयोसाझाआगी ॥ जाणसीत्त ॥६२॥ सूतगुरुपुत्र आणिला ॥ तोतुवापवाडोदेसिनना
 तोहीसोउगला ॥ कमीविते ॥६३॥ अन्ना ० यदित्यहनवर्तये जातुकमप्यतिदितः ॥ समन्तानुवर्ततमन्त्र्याः पार्थिववशः
 ॥२३॥ टी० परास्वधर्मोवैतकेसा ॥ साकासिकाहायजसा ॥ नयानिएकाउइशा ॥ लागोभिया ॥६४॥ जेसूतजातेस
 कळ ॥ असेआह्याआधीनिवेवळ ॥ तरानत्तावेवरळ ॥ ह्यणानिया ॥६५॥ अन्तो ० उत्सोदियुरिस्मेलोकानकुर्याक
 भित्तिदह ॥ सुकरस्यचक्रतास्यासुपहन्त्याभिमाः नजाः ॥२६॥ टी० आह्यापुणकायहाउनी ॥ जरीआत्मस्थितिराहुनी ॥ ना
 तराप्रजोहेकेसनी ॥ निस्तेरल ॥६६॥ इहोआसुचवासपाहावी ॥ सगवर्ततोपराजाणावी ॥ तेलोकस्थितिआघवी ॥ ना
 भिलोहोइल ॥६७॥ ह्यणोभिससयंजोगया ॥ आशिलासर्वजेते ॥ तेणोविशेषेकसाते ॥ न्यजावेना ॥६८॥ अन्तो ० सक्ताः क
 र्मण्यविद्वांसोयथाकुर्वन्निभारत ॥ कुर्याद्ब्रह्मास्त्यासक्तश्चिद्वर्षावुर्मेकसंयहस ॥२५॥ टी० देखेवफळाचियाआशा ॥
 आचरेकामुकजसा ॥ कर्मसिरहोआवातेसा ॥ नराधर्मो ॥६९॥ जेपुदतोपुदतोपायो ॥ हेसफळलोकसस्या ॥ रक्षणी
 यसर्वथा ॥ ह्यणऊनिया ॥७०॥ मागोधारवतावे ॥ विश्वहसाहन्तावावे ॥ अलोकिकनोहावे ॥ लोकाप्रति ॥७१॥ अन्तो
 नबुद्धिमेदजनयेदज्ञानाक्रमसंगिना ॥ जाषयेत्सर्वकर्मणिविद्वान्मुक्तः सयान्तरन ॥२६॥ टी० जेसायासकानसे
 वो ॥ तपक्वान्तिकविजवी ॥ ह्यणोनिवाळकोजेसीनिदावी ॥ धनधरा ॥७२॥ तसीकर्मोजयाअयोग्यता ॥ तयाप्र
 निनेकम्यना ॥ नप्रगटावीवेवळता ॥ आदिकरुनी ॥७३॥ तथेसंगिवाचिलावावी ॥ तेचिणकोमशसावी ॥ नैक
 पाठ ॥ ओं निराशाहो ॥ ओं ७३ योग्यता ॥

छ

छ

छ

छ

छ

मीहीदावावी ॥ आचरोनी ॥ ७४ ॥ तयालोसं महालागी ॥ वतनां कर्मसंगी ॥ तो कर्मबंध आंगी ॥ वजेलना ॥ ७५ ॥ जेसी व
 हुहूपियांची रावोराणी ॥ रुद्रा पुरुषभावो ना होमनी ॥ परिलोकसंगदणी ॥ तेसी चक्रिती ॥ ७६ ॥ देवेंपुढिलचें वझे ॥
 जरी आपुला साधये इजे ॥ तरी सोरोकां नदी देजे ॥ धुधरा ॥ ७७ ॥ स्त्रो ० महुते ० क्रयसाणा निगुण ॥ कर्माणि सवश
 अहंकार वसूहात्मा कर्ताहि भितमन्यते ॥ ७८ ॥ टी ० तेसी शक्राश्रमं कर्म ॥ जियें निपजती प्रकृतिधर्म ॥ अहंमिति
 मूर्खमति फ्रम ॥ मोकती होणे ॥ ७९ ॥ ऐसा अहंकारा रुद ॥ एकदेशी मूढ ॥ तया हा परमाथ्य रूढ ॥ मगदावाना ॥ ८० ॥
 हंभसो मस्तुत ॥ सो गिजेल तुजहित ॥ ते अर्जुनाई क्रमिचि न ॥ अवधारीपा ॥ ८१ ॥ स्त्रो ० तलवितु महाबाहा-
 गुण कर्मविभागयो ॥ गुणा गुणें वृत्ते ते निमत्या न संजति ॥ ८२ ॥ टी ० जेतल जा निधावायी ॥ तो प्रकृति सावना-
 ही ॥ अथ कर्म जात याही ॥ निपजत अस ॥ ८३ ॥ ते देहा मिथान सोडनी ॥ गुण कर्म वाळाडनी ॥ साक्षि भूत होउनी ॥ व
 नेती देही ॥ ८४ ॥ हाणो निशरीर जरी होनी ॥ नरा कर्मबंधाना कडुनी ॥ जैसा का भूतचे धारा मस्तो ॥ यपवेना ॥ ८५ ॥
 स्त्रो ० महुते गुण संसूदा ॥ सुज्जे ते गुण कर्मस ॥ तान कल्मस विदोरा दान्यस्त विन्निचालयेत् ॥ ८६ ॥ टी ० एथ कर्मो-
 तो चिंतिपे ॥ जोगुणसंभ्रमये ॥ महुते चिंति आदोपे ॥ वर्तन अस ॥ ८७ ॥ इदिये गुणा धारे ॥ राहा दर्ते निजव्यापारे ॥
 ने पर कर्म बळात्कारे ॥ आपादीजा ॥ ८८ ॥ स्त्रो ० मधिसर्वाणि कर्माणि मन्यस्याध्यात्मचेतसा ॥ निराशी निर्ममेह-
 त्वायुश्च स्वविगतज्वरः ॥ ८९ ॥ टी ० नरा उचित कर्म भाववी ॥ तुवा आचरो निमज अयावी ॥ परे चिंतव निविन्यसावी ॥
 आत्मरूपी ॥ ९० ॥ हे कर्म बीकना ॥ का आचरे नया अभया ॥ ऐसा अभियान झणे चिना ॥ रिया देसी ॥ ९१ ॥ तुवा शरीर स्वश-
 याठ ॥ ओ ० ७९ ० अहंकारा धिरूढ ०

नोहावे ॥ कामनाजानसांलोवे ॥ मग अथ संरोचित भोगोवे ॥ भोग सकल ॥ १८ ॥ आतां कोटो डेधे क्रानि हाती ॥ आरुढ पाद
 येरथी ॥ देई आलिंगन वीरवृत्ती ॥ समाधाने ॥ १९ ॥ जरी कीर्ति करु देवी ॥ स्वधर्माचा मान वादुयी ॥ दुर्गोभारा पाप सोनि नसा
 डवी ॥ सेदि नोहे ॥ २० ॥ आता पाथीनि ॥ गक होई ॥ या सया भागिनि देई ॥ राखे हा वाचनिका ही ॥ बोलोन ये ॥ २१ ॥ ८२
 ये समना भिदनित्य मनुनिष्ठानिमानका ॥ अक्षयवतान सूर्य तो मुच्यत तो पद पाथी ॥ ३३ ॥ टी ॥ हे अनुपरोधिमत माझे
 जिही परमादर स्वीकारिजे ॥ अह्मा प्रवृत्त अनुष्ठिजे ॥ धनुंधरा ॥ १९ ॥ ते हा सकळ कर्मा वतन ॥ जाण पाक मरहित ॥ द्व
 गोनिही निश्चित ॥ करणायगा ॥ २३ ॥ स्तो ॥ ये लन दुष्य सुयेनानुतिष्ठे विमयन ॥ सर्व ज्ञान विमूढां स्तान् विद्वान् स्थानचि
 तसः ॥ ३२ ॥ टी ॥ नातरा मरुति मंत होउनी ॥ दी दया लळा दउनी ॥ जे हं माझे मत अकरुनी ॥ वो सोडिनी ॥ २४ ॥ जे सा
 मान्य स्वलेखिनी ॥ अवज्ञा करुनि देखिती ॥ सा अर्थ वाद दखणती ॥ वाचा छपण ॥ २५ ॥ ते मोह मांदरा सुलले ॥ वि
 वय विषे पारले ॥ अज्ञान पर्का वुडले ॥ निप्रयान माना ॥ २६ ॥ देखे शवाचा हाती दीधले ॥ जे संकार लबा योगले ॥ नात
 शे जाल्यथा पाहिले ॥ प्रमाण मोह ॥ २७ ॥ कांचिदाचा उदय जसा ॥ उपयोगान वंचना यसा ॥ सूरवा विवेक हा ते सा ॥ २८ ॥ पतंगा
 लना ॥ २९ ॥ एणोनि ते नमानिती ॥ आणि निदा हो करु लागती ॥ सोरो पतंग काय सा हाती ॥ नकाशाती ॥ ३० ॥ पतंगा
 दीपी आलिंगन ॥ नेय त्यासि अनुक्रमण ॥ ते विषयाचरण ॥ आत्मधाता ॥ ३१ ॥ ते सेनेयाथी ॥ जे सूरवया परमा
 थी ॥ तया सीमा घणही सवया ॥ वरावना ॥ ३२ ॥ स्तो ॥ सदश चिह्न तत्त्वस्था ॥ यद्वत्ते ज्ञान वार्त्ताप ॥ मरुति यानि मृतानि
 निग्रह किं करिष्यति ॥ ३३ ॥ टी ॥ ह्मणोनि देये रेके ॥ जाणते निपुण रेवे ॥ वाद्यावीनां को वुके ॥ आदि करुनी ॥ ३४ ॥ हा

पाठ ॥ ओं १२ ऐंसे ॥ ओं १६ ॥ ओं १९ लाहती ॥ ओं १ विमुक्त संसाधन ॥ ६५

गासंप्रसीरेच्छोयेद्वल ॥ कौब्बाद्यासंसर्गसिद्धिजाद्वल ॥ सांगेहोलाहलजिरल ॥ सेविलेयाकाई ॥ १॥ देवेवेवेलबां-
 अथिमागला ॥ मगतोनसावेजेसाउधवला ॥ तेसाईदयालकादिचला ॥ मलानोहे ॥ २॥ येरवातरीअजुना ॥ या
 शरीरापाधीना ॥ कानानाभोगरचना ॥ मेकवावी ॥ ५॥ आपणसायासंकरुनिबहुते ॥ सकलहीसमृद्धिजाते ॥ उ
 दोअस्त्यानेहाते ॥ अतिपाळावेका ॥ ६॥ सर्वस्वेशिणोभिरये ॥ आजवावोसर्गनिजाते ॥ तेणेंयमसाईनिंदहाते
 पोरवावेकाई ॥ ७॥ मगहनवपांचमेळावा ॥ शरीरेंअनुसरुपवला ॥ तवेळीकेलांकिंगवसावा ॥ शीणअसुला
 ॥ त॥ ह्यणूनिक्वळदहभरणा ॥ तेजाणउधडीनागवणा ॥ यालागीणयअंगः करणा ॥ देयावेना ॥ ९॥ अतो ० इंदिय
 म्येद्विचस्यारैरागहोव्यवस्थितो ॥ तथानवराभागच्छेनोत्यस्यपरिपथिनो ॥ १०॥ टो ० येऊवेइंदियाचिया-
 अथा ॥ सारिखाविषयपोषिता ॥ सेतोपकीरचिना ॥ आपलेन्द ॥ १०॥ परीनासवचारात्तासागत ॥ जेमानवेकस्व
 स्य ॥ जेवनगरात्तायांन ॥ सांडिजेना ॥ ११॥ बापाविपाचिस्मधुरना ॥ झणीआवरीउपजेचिना ॥ तोपरिणासविचा-
 रिना ॥ मणाहरी ॥ १२॥ दरवईंदीकासअस ॥ तोलावासरवदुरासे ॥ जेसागळोमीनअभिषे ॥ मुलविजेगा ॥ १३
 परीतयामाजिगळुआह ॥ जोनागातेंयेइनिजाये ॥ तोजेसावाउचानोहे ॥ झांक्लेपणे ॥ १४॥ तेसेअभिलाषेयेण-
 कीजेला ॥ विषयचोआशाधरिजेला ॥ तरीवरपडाहोइजेला ॥ कोधानका ॥ १५॥ जेसाकवळोभियांगारधी ॥ याते
 चियेसंधी ॥ आणिमृगतकुदि ॥ साधावया ॥ १६॥ एथेतसोचिपरीआहे ॥ ह्यणूमिसंगहातुजनेहे ॥ पार्थाहोहो-
 कामकायेहे ॥ यानकजाणे ॥ १७॥ ह्यणूनिनिहाआय्योचिनकसवा ॥ मेनेहीआठवोनभरावा ॥ एकनिजहृतीचा

अथ ॥ ओं १२ सरवहरीदुरासे, अथवाहः सरदुरासे ॥ ७

योनावा ॥ नासो जेदी ॥ १८ ॥ श्लो० अंगान्स्वधर्मो विगुणाः रथमात्स्वमुपि तातं ॥ स्वधर्मे निधनं न्ययः परधर्मो भयावहः ॥ १९ ॥
 टी० अगास्वधर्महा आपुला ॥ जर्गकां कविपजाहाला ॥ नरीहा नि अनुष्ठिता ॥ मला देरव ॥ १९ ॥ पर आचार जोपरा
 वा ॥ तो दे शितावीर दुरवा ॥ परे आचरती नि आचरवा ॥ आपुला चि ॥ २० ॥ मोगे धरुदुर आचवी ॥ एकाले आहानि
 बुरवो ॥ तो हुजे के बिस्वावो ॥ दुबळ जरी जाहाना ॥ २१ ॥ हे अनुचित के समीक ज ॥ अग्रान्ध कवी छिज ॥ अथवा इ
 छिले हो पाविजे ॥ विचारी पा ॥ २२ ॥ नरी लोकांचो धवळार ॥ हे रवो नियां मनोहरे ॥ असती आपुला तणारे ॥ मोउवी
 केवो ॥ २३ ॥ हे असोच निता आपुलो ॥ कुरु पर जरी जाहानी ॥ त हो मोगिता ते चि मली ॥ जिया परी ॥ २४ ॥ ते विभावडे
 तेसा सांकड ॥ आचर नां जर्ग दुवाड ॥ त ही स्वधर्म चि सरवाड ॥ पर शोच ॥ २५ ॥ हांसाकर आणि दुध ॥ हंगोल
 कीर मसिद्ध ॥ परी ह्मि दोषीं विरुद्ध ॥ ये पकवी ॥ २६ ॥ ऐसे मिहां जरी से विज ॥ नरी ते आळुकी चि उर ॥ जेत पर
 णा मी पथ्य न के ल ॥ धनु री ॥ २७ ॥ त्यांनी आणि कां भिजे विह ॥ आणि आपण पेयां अनुचित ॥ तेना चर विज
 शी ह ॥ विचारी ज ॥ २८ ॥ या स्वधर्मा ते अनुष्ठिता ॥ वेचु हो इ लजीविता ॥ तो हि नि का वर सु मयता ॥ दिमत अस ॥ २९
 ऐसे सम स्म सु री शीर मर्णा ॥ बोलि जे जय शोड पाणी ॥ तेथ अजुन त्याणी विनवणी ॥ असे देवा ॥ ३० ॥ हं जेतु हीं सा
 गीतले ॥ ते सक्ळ कोळ्यां परिसले ॥ तरी आतां पुसेन कां हीं आपुले ॥ अर्गसिन ॥ ३१ ॥ श्लो० अजुन उवाच ॥ अ-
 थ केन प्रत्यक्षं पापं कुर्वति पूरुषः ॥ अनिच्छन्नापि बाणो व बलादि बभूव योजिनः ॥ ३२ ॥ टी० नरी देवा हे केसे ॥ ज्ञानि
 यांची ही स्थिति स्वर्ग ॥ माग साडु नि अनारिसे ॥ चालत देखा ॥ ३३ ॥ सर्व ज हो जे होती ॥ हे उपाय ही जाणती ॥ ते ही पर

धर्मव्यभिचरती॥ कवणं गुणं ॥ ३३ ॥ बीजाभाणि सुसा ॥ अंधनिस्सहने जसा ॥ नावकदं वणाहं तस्मा ॥ वरके काया ॥ ३४ ॥ जेअ
सना संसर्गा इति ॥ तेचि ससर्गकारितानथाना ॥ वनवासिहं सविता ॥ जनपदाने ॥ ३५ ॥ आपणनरीलपती ॥ सनस्से पागचुक्रं वि
ती ॥ पुरीबळ्ळारुसुदजती ॥ तयाचिमाजो ॥ ३६ ॥ जयाचो जे वेधे तो विवसा ॥ तेचि जंडो निताकुजो विसा ॥ चुकु विताने
गिवसी ॥ तयातिचि ॥ ३७ ॥ ऐसा बत्कारुगदिसे ॥ नो कवणत्तागुआयहा असे ॥ हेवाला वटुषी कुयो ॥ पायहाणा ॥ ३८ ॥ श्री
श्री भगवानुवाच ॥ कामरुपको धरुपरजोगुणसमुद्भवः ॥ महाशाना महापाया विधेयमहं वीरणा ॥ ३९ ॥ तं वटुदं दृक्कुस
ळ आराभा ॥ योगिगोचानिष्कामकामा ॥ नो ह्यणनसपुरुषो नमः ॥ सागेन आदक ॥ ४० ॥ नरो हे कामक्रोधपाहो ॥ जयते कुर्य
चो सां वणनाहो ॥ हे कृताना नाताग्य ॥ मां निजती ॥ ४१ ॥ हे ज्ञानिथं चिमुजग ॥ विषयदरं चिवाध ॥ भजनमार्गोचिमांग ॥
मारकजे ॥ ४२ ॥ हे देहदुर्गोचिथो ॥ दीदियया मोचि कोद ॥ याचि व्यासो हादिकदुवट ॥ जगावरो ॥ ४३ ॥ हे रजोगुणमानसचि ॥
समूळ आस्तरियेचि ॥ धायपणयरांचे ॥ अविद्याकले ॥ ४४ ॥ हे रजनि कोरजाहोले ॥ परानमासीपदि येते भाने ॥ नेणे निजपद
यांदे धनि ॥ प्रमाद मोह ॥ ४५ ॥ हे मत्सुचानगरी ॥ मानिजती नि कि यापरी ॥ जे जे विताचे वीर ॥ ह्यण्डु नियां ॥ ४६ ॥ जया
सिमुक्कलिया अभिषा ॥ हे विष्व न पुरी च धामा ॥ कुळवा देया चियो आशा ॥ चाळीत असे ॥ ४७ ॥ कुरुकु कवळिता सुहो
जिये च वदा सुवनं थु कुटी ॥ नित्ये भवहि हो धा कुटी ॥ ४८ ॥ जे लो कथयचि मातुके ॥ खेळतां चिरयाय कवनि के
निच्यादासी पणाने निबिके ॥ नृणां जये ॥ ४९ ॥ हे असो माह मां निजे ॥ याते अहंकारं ये पदे जे ॥ जेणे जग आपुलिया भजे
नाचवी न असे ॥ ५० ॥ नेणे सत्याचा मो कसा कादिना ॥ मग असत्य नृणां कुराभिरला ॥ नांदं मरुद विला ॥ जगींद ही ॥ ५१ ॥ सा

पाठः ओः ३७ चुकु विताने गिवसीः ओः ४६ याचो ओः ५० असत्याना ७

अ

अ

अ

अ

अ

अ

अ

अ

अधीशांतिनागविली॥ मरामायासांगीं चरारिती॥ नित्यकरवीं विताळी विली॥ सांगुं विली॥ ५१॥ इहीं वेवकाची आययेरे दिली
 वेराग्याची सोल का दिली॥ जिनथा मानसां दिली॥ उपशमाची॥ ५२॥ इहासतापवनसां दिली॥ येयंदुर्गपां दिली॥ आनि
 दरापसां दिली॥ उपइनियां॥ ५३॥ इहीं वाधाचीं रांपलुं विली॥ सरवाचीं लोपहं विली॥ जिवरां आंगोसूदली॥ ताषत्रया
 ची॥ ५४॥ हे आंगातवयुं न॥ जेवीं चिं आयिज दुल॥ परानातुं जोगीं गंगीं सने॥ ब्रह्मादिका॥ ५५॥ हेचनन्याचं राजां॥ वस
 नीं ज्ञानाचारकाहरीं॥ हाणनिमयवर्तते महासाश॥ सावरतीं ना॥ ५६॥ हे मंके वेणुनुं उर्वती॥ आंगीं वेणजाळती॥ नबोल
 तो कर्षकती॥ याणियोते॥ ५७॥ हे रात्रि वेणसाधितो॥ दोरे वेणवाधितो॥ ज्ञानियां सातरीं वधितो॥ येज येडनी॥ ५८॥ हे
 निरवल वेणरो विली॥ गंधी वेणरो विली॥ हरकवणां जोगनहती॥ आंगुवटपणे॥ ५९॥ अन्ते॥ धूमनां अयते विल्हयथा
 दर्शो मने नच॥ यथोल्बना ह्येनो गंभस्तथा नंदभावन॥ ६०॥ टी० जसचंदमात्वा मुटो॥ गिवसां निधेयं व्याळीं॥ नातरां उ
 ल्वाचीं रवोळी॥ ६१॥ कांगभावेण भासु॥ धूमवेण हां भासु॥ जे सादण मळहीसु॥ कहींचिनसे॥ ६२॥ ते से
 इहीं वेण एं नले॥ आहीं ज्ञाना हां दिरिले॥ जसं वेडो न पागुं नले॥ दोजानपेज॥ ६३॥ अन्ते॥ आवतज्ञानमेते नज्ञानि
 नां नित्य वैरणा॥ कामरूपण कौतयुदु॥ घुरेणानले नच॥ ६४॥ टी० ते सदा नतरीं राहु॥ एरी इहीं भसं प्रसूद॥ हाणो नि
 ते अगाध॥ हो अंनिले॥ ६५॥ आधीं यासो जणाव॥ मग ते ज्ञान पावाव॥ तव पुरा भयान सभवे॥ रागदूषा॥ ६६॥ याते
 साधवया लागीं॥ जे बळ आयिजे आंगीं॥ ते दुधनें जे सो आंगीं॥ भावां वा हाय॥ ६७॥ अन्ते॥ इंदियाणि समो बुदि
 ररथाधि ज्ञान मुच्यते॥ एतो निभाहयत्येष ज्ञानमावृत्य दहिने॥ ६८॥ टी० ते स उपार्थक जती जे जे॥ ते यां स चहातीं विर

पाठ. ओ. ५२ रवाल. ओ. ५६ प्रवर्तले. ओ. ५८ शब्दो. ओ. ५९ पादिके. अन्ते. ओ. ६० बाणिजे. छ. ७.

ज्ञे ॥ ह्यणो निहृदयान्तं जिणं ज ॥ इहं विजगं ॥ ६६ ॥ ऐसियाहो साकडं बोला ॥ एक उथाय अहो मला ॥ नो करि तां जरी आंगव
 ला ॥ तरो संगे ननु ज ॥ ६७ ॥ स्तो ० न स्मात्त्वमिदियाण्यादो निरम्य भरतर्षम ॥ पाआनं प्रजिहत्येन ज्ञानविज्ञाननाशनं ॥ ६८ ॥
 टी ० इयांचाणी हलु फुलता इंदियें ॥ एशुनिमर्शनिकमानें विद्यें ॥ आधीनि रंदं घालीतिये ॥ सर्वथेव ॥ ६९ ॥ स्तो ० इंदि-
 याणि पशण्या हुरिंदियाथ्यः परमनः ॥ मनसस्तु पशवुंदिया बुद्धेः परनस्तु मः ॥ ७० ॥ टी ० मग मनान्ची धाव पारु वेत ॥ आ-
 णि बुद्धी त्वी सोडवण होदल ॥ इतुकि मिथारा सोडेल ॥ या पापियाचा ॥ ७१ ॥ स्तो ० एव बुद्धेः परं बुद्ध्या संस्तु प्यात्मान-
 सात्मानो ॥ जहि शत्रुं महाबाहो कामरूपं दुरासदं ॥ ७२ ॥ टी ॥ इति श्रीमद्भगवद्गीतासूपनिषत्सु ब्रह्मविद्यायां योगशा-
 स्त्रे श्रीकृष्णार्जुनसंवादे कर्मयोगो नाम तृतीयोऽध्यायः ॥ ३ ॥ टीका ॥ हे अनरोहिनि जरी फुटले ॥ तरो निस्मान जाण
 निवटले ॥ जो सरश्मार्वाण उरले ॥ मृग जळनाही ॥ ७० ॥ तें सराग दुषु जरी निमाले ॥ नरो ब्रह्मीच स्वराज्य आले ॥ मग
 तो भोगी सरव आपुले ॥ आपणचि ॥ ७१ ॥ निगुं शिष्याची गोर्वा ॥ पिडा पदो चांगो ॥ तेथ स्थिर राहो भितुरी ॥ कव-
 ण काळी ॥ ७२ ॥ ऐसं सकळ सिद्धांचांगो ॥ देवो लक्ष्म्यांचि नाहो ॥ राया ऐकें देव देवो ॥ बोल ताजा हा ला ॥ ७३ ॥ आ-
 नं पुनरपि तां भनत ॥ आद्य एकांत ॥ सांगेल तेथ पदु स्तन ॥ प्रश्न करीन ॥ ७४ ॥ नया बोला नाहन पाड ॥ कीर सवृत्ती-
 चा निवाड ॥ येणें आनया होइल स्तु वाड ॥ अवण सरवाचा ॥ ७५ ॥ ज्ञान देवो ह्यणो भिगनीचा ॥ चांगु उवावा करु निउ-
 नें पाचा ॥ मग संवाद श्रीहरि पाथोचा ॥ ७६ ॥ ७७ ॥ इति श्रीमाधव्येदीपिकायां ज्ञानदेवविचरिना-
 यां तृतीयोऽध्यायः समाप्तमगमन ॥ ३ ॥ ७८ ॥ भोर्वा ॥ ७९ ॥ ॥ श्रीहृद्यापणमस्तु ॥ ॥ शतममस्तु ॥

पुनः, ओ. ७१ जाहोल. ओ. ७२ पदपिनाचा. ओ. ७३ पर्याप्त. ७४

6

78

श्रीगणेशायनमः॥ आजिअवणोंद्रयापाहिले॥ जेयेणेंगीतानिपानदेरिवले॥ आतांस्वमचिहेंतुकले॥ साचासारिरेवे॥ १॥ आधीचिबुवे
 काचीगोठी॥ वरिअतिपादीअकुष्णाजराजेंटी॥ आणिसत्तराजकिरीटी॥ परिसतअसे॥ २॥ जेसापचमालापझुगंध॥ कीपरिमळअणिस्त
 स्वाद॥ मलाजाहालाविनोद॥ कथेंचाइये॥ ३॥ केसीआगळिकदेवाची॥ जेगांजोडिलीअमृताची॥ होकांजेंतपेओतयाची॥ फळाअली॥
 ४॥ आतांईंद्रियजातआघवे॥ तेंहीअवणाचेंघररिपवें॥ मगसवादफारसमेतावें॥ गीतारव्यहें॥ ५॥ हाअतिसोअतिप्रसंगी॥ सांडुनकथाते
 सांगी॥ जेरुष्थार्जुनदोधे॥ बोलतहोते॥ ६॥ तेंवेळांसंजयोरायातेंझुणो॥ अर्जुनअधिल्लादेवगुणो॥ जेअतिमीतीअनारायणो॥ बोलि
 जनअसे॥ ७॥ जैनसांगोपितयावस्तुदेवासी॥ जैनसांगेचिमातेदेवकीसी॥ जैनसांगेचिबुबाळिमद्रासी॥ तेंगुल्यअजुनेसीबोलत॥
 ना॥ देवीलक्ष्मीयेएवटीजवळिका॥ परीतेंहीनदेरेयामेसाचेंसुख॥ आजिअकुष्णामेसाचेंबिक॥ यातेंचिआधी॥ ९॥ मनकादिकांचि-
 याआशा॥ वाटीनल्यकीरबहुवसा॥ परीत्याहीयेणेंमानेयशा॥ येतीनिना॥ १०॥ याअजिगदीअवराचेंमेसा॥ एथादिसतसेनिरुप-
 म॥ केसेपाथेंयेणेंसर्वोत्तम॥ पुण्यकेलें॥ ११॥ होकांजयाचियामीती॥ अमूर्तहाआलाव्यक्ती॥ भजरकवेंकीचियास्थिती॥ आव-
 डुतअसे॥ १२॥ येन्हवीहायोगियांनडुळे॥ वेदार्थासिनाकळे॥ जेथआनाचेंहंदोळे॥ पावर्तना॥ १३॥ तौहानिजस्वरूप॥ अनादि
 निरूप॥ परीकवणेमानेंसरूप॥ जाहालोआहे॥ १४॥ हात्रेलोक्यपदाचीघडी॥ आकाराचींपलथडी॥ केसायाचियेआवडी॥ अवत
 रलीअसे॥ १५॥ झलोका॥ श्रीमगवानुवाच॥ ॥ इमंविष्वक्तेयोगींक्तवानहमव्ययम्॥ विवस्ताअनवेयाहमनुशिक्षाकतेब्रवीतु
 ॥ १॥ टी०॥ मगदेवझुणेंपंडुस्तो॥ हांचियागाआसीधिवस्तना॥ कथिलापरीतवातो॥ बहूनादिवसांची॥ १६॥ मगतेणोंविष्वक्ते
 रवी॥ हेयोगास्थितीआघवी॥ निरूपिलीबरवी॥ मनुप्रति॥ १७॥ मनूनेंआपणाअनुष्ठिली॥ मगइत्वाकुवाउपदेशिली॥ ऐसीपरु
 पाठ॥ ओ०१०पवले, सारिसें॥ ओ०११पिक॥ ओ०१२होला॥ ओ०१३अवरला॥ ओ०१४अगापडुस्तो, बहुवां॥

۱۱۹۱۱

गुकरकाधेबिदुजे ॥ तरीजमोनिजोजारसाहजे ॥ तेंबोलोकायतुझें ॥ तुजचिपुढां ॥ ३४ ॥ आतापुसंनजंमीकांहीं ॥ तेंथेंचित्तंनिकेंदे
 ई ॥ तेंवंचित्तेंवेंकोपावेंनाहीं ॥ बोलाएका ॥ ३५ ॥ तरीमागीलजेवातो ॥ तुवंसांगीतलीहोतीअनता ॥ तेंनुवंकमजचिन्ता ॥ मानचिन्ता ॥
 ३६ ॥ जेतोविवस्वतस्मानजकायी ॥ ऐसंहवडिलाटाउवेंनाहीं ॥ तरीतुवांचिकेविकही ॥ उपदेशिला ॥ ३७ ॥ तोआइकिजबहुताकाटाचा
 ॥ अणितूंतंबथीकुष्ठासंपेंचा ॥ ह्मणोनिगाइयेमातुचा ॥ विसंवाद ॥ ३८ ॥ तेंवंचिदेवाचिस्वतुझें ॥ आपणकांहींचिनोणजें ॥ हेलोति
 केंकेंविंझाणजे ॥ एकहेळां ॥ ३९ ॥ परीहेचिमातुआघवी ॥ मोपरियेंसैरेप्रीसांगवी ॥ जेकांतुवंतयारवी ॥ उपदेशकेला ॥ ४० ॥ श्रीभ
 गवानुवाच ॥ बहूनिमेव्यतीतांनिजव्यानिंतवचार्जुन ॥ तान्यहंवेंदसवीणि नलंवैत्यपरंतप ॥ ४१ ॥ तेंवथीकुष्ठाह्मणेंपंडुक्रता ॥ तोवि
 वस्वतजेंहोता ॥ तेंआह्मीनसोरेसीचिन्ता ॥ झोंतिजरीतुज ॥ ४२ ॥ तरीतुगांहेनेणसी ॥ पैजचें आह्माबुद्धा सी ॥ बहूतेंगेलींपरीनस्मरसी ॥ आ
 पुढीतें ॥ ४३ ॥ मीजेणेजेणेंअवसरें ॥ जेंजेंहोउनिअवतरें ॥ तेंतेंसमस्तहोस्मरें ॥ धनुर्परा ॥ ४४ ॥ ह्मणो ॥ अजोपिसंभ्रव्यथात्मापूतामामी
 श्वरोपिसन् ॥ प्रकृतिस्वामिधियायसंभवाभ्यात्मा मायया ॥ ४५ ॥ ह्मणोनिआयवें ॥ मागीलमजआठवे ॥ मीअजहीपरिसंभवे ॥ प्रकृ-
 तियोगी ॥ ४६ ॥ माझेंअव्ययत्वतरीननमे ॥ परीदोणेंजाणेंएकादिसे ॥ तेंप्रतिविंबेमायावशें ॥ माझाचिठायी ॥ ४७ ॥ माझीस्वतंत्रतातरी
 नमोडो ॥ परिकर्मोधीनरेमाआवडे ॥ तेहीप्रज्ञातिबुद्धतरीपडे ॥ येन्हवीनाहीं ॥ ४८ ॥ कींएकाचिदिसेदुसरे ॥ तेंदोणेंचिनिआधारे ॥
 येन्हवींकायवस्तुविचारे ॥ दुजेंआहे ॥ ४९ ॥ तेंसाअमृतचिमीकरीदी ॥ परीप्रकृतिजेंअधिष्ठी ॥ तेंसाकारणेंनदेंनरी ॥ कायाळा
 गी ॥ ५० ॥ यदायदाहिर्यस्यगलानिर्भवतिभारत ॥ अस्त्युत्थानमथमस्यतदात्मानस्तुजाभ्यहस ॥ ५१ ॥ टी ॥ जेभ्रमजातआ
 घवो ॥ युगायुगीभ्यारक्षवि ॥ ऐसाओपहास्वभावे ॥ आद्यअसे ॥ ५२ ॥ ह्मणोनिअजत्वपरतेंवी ॥ मीअव्यक्तपणहीनाठवी ॥ जेवें-
 पाठ-ओं०३७ पाहीं ० ॥ ३९ कायनाणजे ० ॥ ४० जेतुवांचिकेवी ० ॥ ४१ तेंयेंनस्मरसी ॥ ४२ ॥

क्तिं धर्मात्ते अस्मिन्नी ॥ अधर्महा ॥ ५० ॥ श्लो० ॥ परित्राणा यसाधूनां विनाशा यत्तदुक्तम् ॥ धर्मसंस्थापनार्थं यत्संस्तवाभियुक्तम् ॥ ५१ ॥ टी० ॥ ते वृद्धा अपुल्यांचेन कैवर्ग ॥ भीसाकार होइनि अवतरे ॥ मग अज्ञानाचे आधर्मे ॥ गिळुनि घळी ॥ ५१ ॥ अधर्माची अकथी
 नेडी ॥ दोषांची लिहली फाडी ॥ सज्जनकरवी गुढी ॥ सरवाची उमवी ॥ ५२ ॥ दैत्यांची कुळ नाशी ॥ साधूंचा मान गिं वशी ॥ ५३ ॥ धर्मासीं
 नीतीसीं ॥ शैससरीं ॥ ५३ ॥ मी अविवेकाची काजळी ॥ फेडनि विवेक दीप उजळी ॥ नैयोगिया पाहो दिवाळी ॥ निरंतर ॥ ५४ ॥ स्वस्त
 रविविषको दे ॥ धर्मचिजर्गनां दे ॥ सक्तां निपती दे ॥ साविकांची ॥ ५५ ॥ तैपांचा अचळ फिरे ॥ पुण्याची पाहात फुरे ॥ जैम्पनि
 माझी प्रगटे ॥ पंडु कुमरा ॥ ५६ ॥ ऐसे या काजालगीं ॥ अवतरे मी युगीं युगीं ॥ परीं हिंचि बोळवे जे जर्गी ॥ तो विवेकिया ॥ ५७ ॥ श्लो०
 जन्म कर्मचर्म दिव्य मेव पोवति तत्त्वतः ॥ त्यक्ता देह पुनर्जन्म नैतिमा मे निमोजुन ॥ १ ॥ टी० ॥ माझे अजले जन्म पो ॥ अक्रियता नि
 कर्म करणें ॥ हे अविकार जो जाणें ॥ तो परम मुक्त ॥ ५८ ॥ तो चा लिला संगें न चले ॥ देहाचा देह ना कळे ॥ मग पंचवर्ती तंव मिळे ॥ माझा नि
 रूपी ॥ ५९ ॥ श्लो० ॥ वीतरागास्य क्रोध भ्रम न्यया मा भुपाश्रित ॥ बहवो ज्ञानतपसा पूता मद्रावभागाः ॥ १० ॥ टी० ॥ ये न्हवीं परा
 नश्रीं चिती ॥ जे कामना न्यून होती ॥ वाटाकाणें वेळीं न चिती ॥ ओ या चिया ॥ ६० ॥ सदां मियाचि आशिले ॥ माझिया मेवा ज्याले ॥
 की आत्मबोधे तो वले ॥ वीतराग जे ॥ ६१ ॥ तैतपोने जाचिया राशी ॥ की एकाय तन ज्ञाना सो ॥ जे पवित्रता ती थोसी ॥ ती थोरूप ॥ ६२
 ॥ तैमद्रावास हजें आले ॥ मी तिंचि ते होइं निठले ॥ जेमजत या उरले ॥ पदर नाही ॥ ६३ ॥ सांगें पितळेची गंधिका ठिक ॥ अफिदही
 होय निःशेख ॥ तें संवर्ग कांड आणिक ॥ जे इंद्र जाइजे ॥ ६४ ॥ तैसय मियमी कडसले ॥ जेतपो ज्ञानें चोरवाळले ॥ मी तिंचि ते
 जाहाले ॥ एथ संशयो कायसा ॥ ६५ ॥ श्लो० ॥ ये यथा मां प्रपद्यंते तांस्तथैव भज्याम्यहम् ॥ मम वर्त्मानुवर्तते मनुष्याः पार्थिव
 पाठः ओ० ५५ सतः ओ० ५७ युगाः ओ० ५९ देहाः ओ० ६० के० ओ० ६१ जे सकां कां० ओ० ६२ जे

॥ ६३ ॥

॥ ६४ ॥

शः ॥ ११ ॥ टी० ॥ येन्नुवन्तरीपाहीं ॥ जेजेसेमासाठायीं ॥ भजतीतयांमीही ॥ तैसाचिभजे ॥ ६६ ॥ देवेमनुष्यजातसकळ ॥ हे-
 स्वभावाभाजनशीळ ॥ जाहलेंअसेकेवळ ॥ माझाठायीं ॥ ६७ ॥ परीज्ञानेवीणानाशिले ॥ जेबुद्धिभेदासिआले ॥ त्यापीलकाचि
 ययाकल्पिलें ॥ अनेकत्वे ॥ ६८ ॥ ह्यणऊनिअसेदीपेदेवरती ॥ ययाअनामयानामेंदेवती ॥ देवीदेवोह्यगती ॥ अचचोते ॥ ६९ ॥
 जेंसर्वत्रसदासमा ॥ तेथविभागाअधसोन्नम ॥ मातवशेंसफ्यम ॥ विविचिती ॥ ७० ॥ कोक्षतेःकर्मणांमिदुयजतइहदेव
 ता ॥ क्षिप्रं हिमातुषेलोकेसिद्धिर्भवति कर्मजा ॥ १२ ॥ टी० ॥ भगवानाहेतुप्रकारें ॥ ययाचिनेतुप्रचारें ॥ मानिलीदेवतातरें ॥ उ-
 पासिती ॥ ७१ ॥ एथजेजेअपेक्षित ॥ तैतेसेचिपावतीसमस्त ॥ परीतैकमफळनिश्चित ॥ वोळखतू ॥ ७२ ॥ याचुनिदेवतेआ-
 णिक ॥ निष्ठांतनाहींसम्यक् ॥ एथकर्मचिफळसूचक ॥ मनुष्यलोकीं ॥ ७३ ॥ जैसेसेत्रीजेनेरजे ॥ तेवाचुनिआनननिपजे ॥
 कांयाहिजेतोंचेदिविजे ॥ दर्पणाधारें ॥ ७४ ॥ नातरीकडयातळवदी ॥ जैसाआपलाचिबोलकिरीटी ॥ पडिसादहोर्तनिउटी ॥ नि-
 भित्तयोगें ॥ ७५ ॥ तैसासमस्तोंयांभजना ॥ मीसाक्षीपूतेंपैअर्जुना ॥ एथप्रतिफळेसावना ॥ आपुलाढी ॥ ७६ ॥ चातुव-
 ण्येमायासृष्टगुणकर्मविभागशः ॥ तस्यकर्तारमपिर्माविद्ध्यकर्तारमव्ययम् ॥ १३ ॥ टी० ॥ आतांयाचिपरीजाणा ॥ चाहीहेवणी ॥ सु-
 जिलेस्यगुणा ॥ कर्मविभागें ॥ ७७ ॥ जेप्रकृतिचेनिआधारें ॥ गुणाचेनिव्यभिचारें ॥ कर्मैतदनुसारें ॥ विविचिलीं ॥ ७८ ॥ एथएकाचिबेंध
 नुष्यपाणी ॥ परीजाहलेंगच्चहुवणीं ॥ ऐसीगुणकर्मकडसणी ॥ केलीसहजें ॥ ७९ ॥ ह्यणनिआइकेपाथीं ॥ हेवर्णभेदसंस्था ॥ मीकतो-
 नरुंसेवथा ॥ याचिलींगीं ॥ ८० ॥ श्लो० ॥ नमो कर्मणि लीपति न मे कर्मफले स्पृहा ॥ इति मां यो भिजानाति कर्मभिर्न स बन्धते ॥ १६ ॥
 टी० ॥ हेप्रजचित्तवनजाहलें ॥ परीम्यानाहीकेले ॥ ऐसेजेणेंजाणितले ॥ तोसदलागा ॥ ८१ ॥ श्लो० ॥ एवं शोलाकृतं कर्म पूर्वैरपि
 पाठः ओं- ६९ अजअवर्तते- ओं- ८० हेतुः ॥ ७९ ॥ ॥ ७९ ॥ ॥ ७९ ॥

मुमुक्षुः किं ॥ कुरु कर्म वत स्वस्वत्वं पूर्वं पूर्वतरं कृतम् ॥ १५ ॥ टी० ॥ मागीलपुरुषं जहोते ॥ तिहोरोसिय ॥ जाणोनिमाते ॥ कर्मकेलो
समस्तो ॥ धनुष्या ॥ ८२ ॥ शंताबीजं जैसीदधली ॥ नुगवतीचिपेरली ॥ तैसीकर्मचिपरितयांजहाली ॥ मोक्षहेतु ॥ ८३ ॥ एथ-
आणि कही एक अर्जुन ॥ हे कर्मो कर्मो ववचना ॥ आपुलयेचाडेस ज्ञाना ॥ योग्य नोहे ॥ ८४ ॥ श्लो० ॥ किं कर्म किं कर्मो न कवया
व्यनमोहिताः ॥ तने कर्मप्रवक्ष्यामि यत्तात्त्वामोक्ष्यसे शुभान् ॥ १६ ॥ टी० ॥ कर्मद्व्यणिपते कवण ॥ अथवा अकर्मो कायलक्षण ॥
ऐसो बचांशो विचक्षण ॥ गुणो नतेले ॥ ८५ ॥ जैसं कां कुंडे नाणो ॥ रव्याचो निसारखणो ॥ डोळयांचे विदेवणो ॥ संशयो घाली ॥
८६ ॥ तैसैने सूर्यतेचे निष्कर्म ॥ गिंविमिजती आहानी कर्म ॥ जे दुजिस्तृष्टिमनो धर्म ॥ करूस कर्ती ॥ ८७ ॥ वांचूनि मूरवाचि गो-
ठी कायसी ॥ एथ मोहलेगा दीर्घदर्शी ॥ ह्यणो नि आतां ते चिपरियेसी ॥ सांगेन तुज ॥ ८८ ॥ श्लो० ॥ कर्मणोऽपि बोद्धव्यं बोद्धव्यं
च वि कर्मणः ॥ अकर्मणश्च बोद्धव्यं गहना कर्मणा गतिः ॥ १७ ॥ टी० ॥ तर्कि कर्म द्व्यणिजे स्वभावे ॥ जेणो वैश्वाकससंभवे ॥ तैसम्य
कै आधिजाणवें ॥ लागे एथ ॥ ८९ ॥ भगवणोऽप्यस्माभिर्मुञ्जित ॥ जैविशेव कर्मविहित ॥ तैही वोळखावें निश्चित ॥ उपयोगे सो ॥ ९०
पारिजो न विदुर्ह्यणिपे ॥ तैही बुद्धावैस्वप्ने ॥ यत्तुलनिकांही न गुणे ॥ अपेसे चि ॥ ९१ ॥ ये हवीं जगहे कर्मधीन ॥ ते भियाची-
व्याप्ती गहन ॥ परिते आदका चन्ह ॥ ग्रामे चि ॥ ९२ ॥ श्लो० ॥ कर्मण्यकर्मयः पश्येदकर्मणि च कर्मयः ॥ स बुद्धिमान् मनुष्येषु
समुक्तः कुरु कर्मकृतम् ॥ १८ ॥ टी० ॥ जो मकळ कर्मो वर्तेना ॥ देखे आपुनी नैक स्यना ॥ कर्मसंगे निराशता ॥ फळा चिया ॥ ९३ ॥
आणि कर्तव्यने लागी ॥ जया दुसरें नाही जगी ॥ ते सियने सूर्यना तरि चांगी ॥ बोधला असो ॥ ९४ ॥ तरो क्रिया कलाप आयवा ॥ अग
चरन दोसे बरवा ॥ तो चितो ये चन्ही जगावा ॥ ज्ञानियागा ॥ ९५ ॥ जैसा कांजळा पाशी उभाठा के ॥ ते जरि आपापे जळामाजि दे
पाव ॥ ओ० ८२ मुमुक्षुः ओ० ८८ कानि ॥ ओ० ८९ स्वयंमेव ॥ ॥ ६ ॥

रेवे॥ तरितोनिभ्रान्तवोळरेवे॥ द्यणंमीदोगळाआहे॥ ९६॥ अथवानवेहनरिगो॥ तोथडियेचरुखजातांदरुववेगो॥ तेचिसाचकारेपा
 होजोलागो॥ तंवरुखद्यणोअचळ॥ ९७॥ तेंसंसर्वकर्मअिसणो॥ तेंपुढेमानूननिवायाणो॥ मगआपणजोजाणो॥ नेकस्येरेसा॥ ९८॥ आ
 णिउठोअस्माचेनिममाणो॥ जेसेनचलतांसूर्याचंचालणो॥ तेंसेनेकस्यतत्वजाणो॥ कर्मीचिअसता॥ ९९॥ तोमनुष्यासारिवतारी
 आवडे॥ परीमनुष्यत्वतयानघडे॥ जेसेजळामाजिनबुडे॥ भानुबिंब॥ १००॥ तेणंनपाहतांविश्वदेखिले॥ नकारितांमर्वकेले॥ नसो
 भितांमोगिले॥ भैरवजयते॥ १०१॥ एकोचिठायीबैसला॥ पारिसर्वत्रतोचिगेला॥ हेअसोविश्वजाहाला॥ आंगोचिन्तो॥ १०२॥ य
 स्यसर्वेसमारंभाः कामसंकल्पवर्जिताः॥ ज्ञानाग्निदग्धकर्माणं तमाहुः प्रोडंतं बुधाः॥ १०३॥ टी०॥ ज्यापुरुषाचाठायो॥ कर्माचान-
 रीखेदनाही॥ तरीफळापेक्षाकांही॥ संचरेना॥ ३॥ आणिहेकर्ममोकराना॥ अद्यावाआदर्शोमिदूनिइन॥ येणेंसंकल्पेहीजय-
 चेमन॥ विटाळेना॥ ४॥ ज्ञानाग्नीचेनिमुरवे॥ जेणेंजाळीकर्मेशीखेवे॥ तोपरब्रह्मचिमनुष्यवेखे॥ वोळखतु॥ ५॥ श्लो०॥ त्यक्त्वाक
 र्मफलासंगं नित्यवसो निराश्रयः॥ कर्मण्यभिप्रवृत्तोपैनेव किंचित्करोति सः॥ २०॥ टी०॥ जोशरीरीउदा॥ फळभोगीनिरास॥ नित्यताउ
 ल्हासा॥ होउनिअसे॥ ६॥ जोसंतोषाचागाभारो॥ आत्मबोधाचियावोवरो॥ पुरेनद्वयणोचिधनुधरो॥ शरीरगिता॥ ७॥ श्लो०॥ निरा-
 शीर्यतचिन्तात्मा त्यक्तसर्वपरिग्रहः॥ शरीरं केवलं कर्मकुर्वन् प्राप्नोति किं लिखम्॥ २१॥ टी०॥ कैसीअधिकाधिकआवडी॥ घेतमहा
 सखाचीगोडी॥ मांडोनियांआशाकुरेडी॥ अहंभावसेमी॥ ८॥ द्वयणोनिअवसरेंजेजपावे॥ तेणोचिसखेसखावे॥ ज्याआपुलेआ
 णिपरावे॥ दोन्हीनाही॥ ९॥ तोदिठीजोपाहे॥ तेंआपणचिहोउनिजाये॥ आइकेतेंआहे॥ तोचिजाहाला॥ १०॥ चरणीहन्चाले॥ मु
 खेंजेजेबोले॥ ऐसेचेशजातंतुले॥ आपणचिजो॥ ११॥ हेअसोविश्वपाही॥ ज्यासिआपणपेंगानूनिनाही॥ आतांकवणतेंकर्मका
 ॥ ३॥

॥ ६॥

॥ ७॥

॥ ८॥

॥ ९॥

॥ १०॥

॥ ११॥

॥ १२॥

॥ १३॥

यी॥ बाधितयान्ते॥ १२॥ ॐ॥ यदृच्छालाभसंदुष्टोदंहातीतोविमत्सरः॥ समः सिद्धवसिस्थोचक्रोपनिगवह्वाने॥ २१॥ टी०
 हामत्सरजेथउपजे॥ तन्मुलेनुरेचिजयादुजे॥ तोभिर्मत्सरकाइह्यणिजे॥ बोलवरी॥ १३॥ द्यणोनिसर्वापरिमुक्त॥ तोसकर्मचिकर्म
 रहता॥ समुपापरिगुणानीता॥ एवध्यातिनाही॥ १४॥ ॐ॥ गतसंगस्यमुक्तस्यज्ञानावस्थितचेतसः॥ यज्ञायाचरतः कर्तव्यसमग्रंवि-
 लीयते॥ २३॥ टी०॥ तोदेहसंगेतीअसे॥ परिचेतन्यासारिवादिसे॥ पाहातापरब्रह्मचेनकसे॥ चोरकळभळा॥ १५॥ ऐसाहीपरी
 कोतुके॥ जरीकर्मकरीयज्ञादके॥ तरतिगेलुवजातीनिःशरवे॥ तयाचाचिठायी॥ १६॥ अकालीचीअन्नेजेशी॥ उर्मिधिपाआकाशी
 ॥ हारपतीछापैशी॥ उदयलोसार्तांग॥ १७॥ तैसाविधिवानेविहितें॥ जरीआचरतसमस्ते॥ तरितियेंऐक्यभावेऐक्यातें॥ पाव
 नीचिगा॥ १८॥ ॐ॥ ब्रह्मार्पणं ब्रह्म विब्रह्मग्नौ ब्रह्मणा हुतम्॥ ब्रह्मैव तेन गन्तव्यं ब्रह्म कर्म समाधिना॥ २४॥ टी०॥ हेहवनमी
 होता॥ कांडयेथज्ञाहाभोक्ता॥ ऐसियाबुद्धीभिनानीभिभता॥ द्यणुनिनया॥ १९॥ अइष्टयज्ञयजावे॥ तेंहविमंत्रादिआयवे॥
 तोदेवतसेअविनाशभावे॥ आत्मबुद्धि॥ १२०॥ द्यणुनिब्रह्मतेचिकर्म॥ ऐसेबोधआलेजयासम॥ तयाकतव्यतेंनेकस्य॥ धनुर्व
 रा॥ २१॥ आतांविवेककुमारत्वमुक्ते॥ जयाविरक्तीचेपाणिग्रहणजाहाले॥ मगउपासनजिहीआगिलें॥ योगागमीचें॥ २२॥ ॐ॥
 देवमेवापरेयज्ञयोगिनः पयुपासते॥ ब्रह्मार्पणं परेयज्ञं यज्ञं नैवोपजुह्वति॥ २५॥ टी०॥ जेयजनशीलअहर्निशी॥ जिहीअवि-
 द्याहविलीमनेसी॥ गुरुवाक्य हुताशी॥ हवनकेले॥ २३॥ तिहीयोगीगिनकीयजिजे॥ तोदेवयज्ञह्यणिजे॥ जेणेंआत्मस्वरूपा
 भिजे॥ पंडुकुमरा॥ २४॥ देवास्तवे देहाचेपाळणा॥ ओचितिनादेहमरण॥ तोमहायोगीजाण॥ देवयोगी॥ २५॥ आतांअवधारीसां-
 गेनआधिक॥ जेब्रह्मगमीसागिनक॥ तयातेंयज्ञोचियज्ञदेख॥ उपाभिजे॥ २६॥ ॐ॥ श्रोत्रादित्रीद्विषापयन्यसंयमाग्निपुजुह्व-
 क्षेपक + ऐसांनिश्चयपरिपूर्णः पाठः ओं० २४ जेथ- ओं० २५ भागः ॥ ७॥

॥ ७॥

॥ ७॥

ति॥ शब्दादीन्वषयानन्यदं द्रव्यानि नुजुह्वति॥ २६॥ टी०॥ एकसंयमाग्निहोत्री॥ तेषु क्लृप्तायामंत्रां॥ यजनकारितीयवित्री॥ इंद्र
 यद्रव्यी॥ २७॥ एकावैराग्यरवि विवर्को॥ तव संयती विहारकेले॥ तैथ अपावृत्तजाहले॥ इन्द्रियानळा॥ २८॥ तिहो॥ वरस्तीचिज्वाळाघेत
 ली॥ तंव विकारावीं धनं पक्क॥ तैथ आशाधूमे सांढिली॥ पांचही कुंडे॥ २९॥ मग वाक्यविधी चिया निरवडो॥ विषय आहुती उडो
 हवन केले कुंडी॥ इंद्रिया निचा॥ ३०॥ भूलो॥ सर्वणींद्रियकर्माणि प्राणकर्माणि चारे॥ आत्मसंयमयोगागोत्रे जुह्वति ज्ञानदीपिते
 २७॥ टी०॥ एकीययापरीपार्या॥ दोषक्षामिलसवथा॥ एकैन्द्रिया रणिमंथा॥ विवेककेला॥ ३१॥ तोउपशमोनिहाटिला॥ धैर्यमारेदाटि
 ला॥ गुरुवाक्येंकाटिला॥ बळकटपणे॥ ३२॥ ऐसं समरसंमंथनकेले॥ तैथ झडकरीकाजाआले॥ जेज्जिवनजाहले॥ ज्ञानानीचें ३३
 पहिलो अद्भि सिद्धीचा संक्रम॥ तो निवर्तोन गेला धूस॥ मग मकट लासूक्ष्म॥ विस्फुलिंगा॥ ३४॥ तयामनाचें मोकळें॥ तैचि पेटवणया
 तलें॥ यमनियमी हळवारलें॥ आइतें होतें॥ ३५॥ तैणें सादुकवणे ज्वाळासमृद्धा॥ मग वासनोतरा चिया समिधा॥ स्नेहें समिना वि
 धा॥ जाळिल्या॥ ३६॥ तथसो हंमत्रें दीक्षितो॥ इंद्रियकर्माचिया आहुती॥ तिये ज्ञानानळीं प्रदीप्ती॥ दिधलिया॥ ३७॥ पार्वीया
 णकर्माचिये खुबे निशी॥ पूर्णा हुती पडलिया हुताशी॥ तैथ अवभृथ समरसी॥ सहजें जाहलें॥ ३८॥ मग आत्मबोधें चें स्वरव॥
 जें संयमानीचें हुतशेष॥ तैचि पुरोडाश देख॥ घेतला तिही॥ ३९॥ एक एणशिया इही यजनी॥ मुकते जाहले त्रिभुवनी॥ यायज्ञ
 क्रिया तरी अनानी॥ परिषाण्यतें एक॥ ४०॥ भूलो॥ द्रव्य ज्ञास्तपो यज्ञा योगयज्ञास्तथापरे॥ स्वाध्याय ज्ञानयज्ञाश्च यतयः सं-
 शितव्रताः॥ ४१॥ टी०॥ एक द्रव्ययज्ञस्त्वणिपत्नी॥ एक तपसामिश्रिया निपजवित्ती॥ एक योगयागही आहाती॥ जेसांगीतले॥
 ४१॥ एकीं शब्दांश द्रव्यजिजे॥ तो वागयज्ञस्त्वणिजे॥ ज्ञानें जेयगमिजे॥ तो ज्ञानयज्ञ॥ ४२॥ हें अर्जुनासकळकुवाडें॥ जें अनश्विना

पाठः ओं ३१ आणिकीं ओं ३५ रमीं ओं ३८ क्रिं-

अतिसांकडें॥ परिजतेंद्रियासीचिघडो॥ योग्यतावशें॥ ४३॥ तेप्रवीणतेथमले॥ आणियोगसमृद्धिआशिले॥ द्यणोंनिआप्-
णपांतिहीकेंले॥ आत्महवन॥ ४४॥ श्लो०॥ अपानेजुव्हनिप्राणप्राणेपानंतथापरे॥ प्राणापानगतीरुध्वाप्राणायामपक्षय-
णाः॥ २९॥ टी०॥ मगअपानाग्नीचेभुरवी॥ प्राणद्रव्येंदरवी॥ हवनकेंलेएकी॥ अप्यासयोगे॥ ४४॥ एकअपानप्राणंश्चिर्पति॥
एकदोहीतेंहीनिरुंधिती॥ तेप्राणायामीह्यणिपती॥ पंडुकुमरा॥ ४६॥ श्लो०॥ अपरेनियताहाराः प्राणान्याणेषुजुव्हति॥ सर्वेयेहे
यज्ञविदोयज्ञक्षपितकल्पाः॥ ३०॥ टी०॥ एकवज्रयोगक्रमें॥ सर्वाहारसंयमे॥ प्राणीप्राणसंयमे॥ हवनकरिती॥ ४७॥ ऐसे
मोक्षकामसकळ॥ समस्तहेयजनशीळ॥ जिहीयसद्दारांमनोमळ॥ क्षाळणकेंले॥ ४८॥ जयाअविद्याजातजाळितां॥ जें
उरलेंनिस्त्रभावता॥ जेथअग्निआणिहोता॥ उरेंचिना॥ ४९॥ जेथजितयाचाकामपुरे॥ यज्ञीचेंविधानसरे॥ मागुतेंजैथोनि
वोसरे॥ क्रियाजाती॥ ५०॥ विचारज्जधनरिगे॥ हेनुजयतेंनेथें॥ जैथैदूतदोषसंगें॥ लिंपेंचिना॥ ५१॥ श्लो०॥ यज्ञशिष्टाभूत
भुजोयांनिब्रह्मसनातनम्॥ नायंलोकोस्त्ययज्ञस्यकुतोऽन्यःकुरुसत्तम॥ ३१॥ टी०॥ ऐसेअनादिमिद्धचौरवट॥ जेंज्ञानयज्ञाव-
शिष्ट॥ तेंसोवितोब्रह्मनिष्ठ॥ ब्रह्माहमंत्रें॥ ५२॥ ऐमेशोषामतेंथाले॥ कींअमत्यभावाआले॥ द्यणोंनिब्रह्मतेजाहाले॥ अनाया-
सें॥ ५३॥ यशोविराक्तमाळनयालीचि॥ जयांसयमाग्नीचीसंवानघडेचि॥ जेयोगयागनकरितीचि॥ जन्मलेसांते॥ ५४॥ जयारे-
हिकथडनाहीं॥ तयांचेंपरत्रपुसशीकाई॥ द्यणोंनिअसोहेगोष्ठीपाहीं॥ पंडुकुमरा॥ ५५॥ श्लो०॥ एवंबहुविधायज्ञावितनाङ्ग-
द्यणोमुखे॥ कर्मजांन्विद्धतांस्मर्वा नेवेंज्ञात्वाविमोक्षयसे॥ ३२॥ टी०॥ ऐसेबहुतींपरीअनेग॥ जेंसांगितलेतुजकांयाग॥ ते-
विस्तारुनिवेदेंचांग॥ ह्यणितलेआहाती॥ ५६॥ परितेणोंवस्मारेकायकरवें॥ हेंचिकर्ममिद्धजाणीवें॥ येतुलेंनिकर्मबंधस्वभा-
पाठ-ओं०५१ जेधननिगे, जें. ७ओं. ५५ सांगोंकांवाई. ॥ ७॥

वें॥ पावेलनां॥ ५७॥ श्लो०॥ श्रेयाद्रव्यमयाद्यज्ञात्तानयज्ञः परंतप॥ सर्वकर्मांस्त्रिलोपार्थज्ञानेपरिसमाप्यते॥ ३३॥ टी०॥ अ-
 र्जुनवेदजयांचेंमूळ॥ जेअक्रियाविशेषस्थूळ॥ ज्यानव्हाकियेचेंफळ॥ स्वर्गस्वरू॥ ५८॥ तेद्रव्यादिगणकीरहोती॥ परिज्ञान
 यज्ञाचीसरीनपवती॥ जेसीतारातेजसपती॥ दिनकरापाशीं॥ ५९॥ देखेंपरमात्मस्वरुनिधान॥ सोधावयायोगीजन॥ जे
 नविसेंबितीअंजन॥ उन्नोषनेत्रीं॥ ६०॥ जेधावतयाकर्माचीलाणी॥ नेकस्यबोधाचीरवाणी॥ जेमुकलियाधणी॥ साधना-
 ची॥ ६१॥ जेथप्रवृत्तीपांगुळजाहाली॥ तर्काचीदृष्टीगोली॥ जेणेंद्रोद्रीयविसरली॥ विषयसंगा॥ ६२॥ मनानेंचेंमनपणगेलो॥
 जेथबोलांचेंबोलुकेंपणठेलो॥ ज्यामाजिसांपडले॥ जेयदिसे॥ ६३॥ जेथवेरागयाचापोंगफिटे॥ निवेकानाहीसोसवुटे॥ जेथन
 पाहातांसहजमेढे॥ आपणपें॥ ६४॥ श्लो०॥ तद्दिक्षमणिपातेनपरिमृशनेनसेवया॥ उपदेक्ष्यतितेज्ञानंज्ञानिनस्तत्त्वदर्शि-
 नः॥ ३४॥ टी०॥ तेंगाज्ञानपेंबरवें॥ जरीमनींअधिआणवें॥ तरीसंतातेंकजावें॥ सर्वरेंवेसी॥ ६५॥ जेज्ञानाचाकुरुठा॥ ते-
 थसेवाहादारिवंठा॥ तोस्वाधीनकरास्करभटा॥ वोळगोनी॥ ६६॥ तरीतनुमनुजीवें॥ चरणासीलागावें॥ आपिअगर्वताकरावें
 ॥ दास्यसकळ॥ ६७॥ मगअपेक्षितजेंआपुलें॥ तेंहीसागातीलपुसिलें॥ जेणेंअतःकरणबोधले॥ संकल्यानये॥ ६८॥ श्लो०॥ य-
 त्नात्स्वानुनमौहमेवयास्यमिपांडव॥ येनभूतान्यशेषणद्रव्यस्यात्मन्यशोमयि॥ ३५॥ टी०॥ जयाचेंनिवास्यउजिवडें॥ जाहालेंचि
 तानिधडें॥ ब्रह्माचेंनिपडें॥ निःशंकहाये॥ ६९॥ तेवेळींआपणपेंयासहितें॥ इयेंअशेषोहमूतें॥ माझास्वरूपअंरवंडितें॥ देखसीतूं
 ॥ ७०॥ ऐसेंज्ञानमकाशोपाहिल॥ तेंमोहांधकराजईल॥ जेंअंगुरुकृपाहोइल॥ पार्थागा॥ ७१॥ श्लो०॥ अपिचेदमिपापेभ्यः सर्वेभ्यः
 पापहृत्तमः॥ सर्वज्ञानपूर्वैर्नैवजिनं संतिरिष्यसि॥ ३६॥ टी०॥ जरीकल्मषाचाआगर॥ दूळातीचासागरा॥ व्यामोहाचाडोंगरा॥ हो
 पाठ० नही०॥ ॥ ७॥ ॥ ७॥

उभिर्अस्सी॥७२॥ तद्दृज्ञानशक्तीचेनिपाडें॥हंआघवंचिगाथाकडें॥ऐसेंसामर्थ्यअसेचोरपडें॥ज्ञानीइयो॥७३॥देखेंविज्व
 संभ्रमाऐसा॥जोअमृत्तान्चाकडवसा॥तोजयांचियाप्रकाशा॥पुरेचिना॥७४॥तयाकायसेहेमनोमळा॥हेबोलतांचिअतिबिडा
 का॥नाहीचिणेंपाडेंदिसाळा॥दुजेजर्गी॥७५॥श्लो०॥यथैधांसिसाभिद्धेनिर्मत्स्यसाकुरुतेयुन॥ज्ञानग्निःसर्वकर्माक्षिप्तस्मसा
 कुरुतेतथा॥३७॥टी०॥सर्गोभुवनत्रयाचीकाजळी॥जोगानामाजिउधवली॥तियेप्रकयीचेवाहदुकी॥कायअम्बपुरे॥७६
 कीपवनाचेनिकोंपें॥पाणियेंचिजोंपळिपें॥तोप्रळयानळदडपें॥तृणकाष्ठेकाडू॥७७॥श्लो०॥नहिज्ञाननसदृशंपवित्रमिहविद्य
 ते॥तत्त्वययोगसौमिद्धःकालेनात्मनिविदति॥३८॥टी०॥ह्यणोभिअसोहेनघडें॥तेंविचारितांचिअसंगडें॥पुढतिज्ञानाचेनिपाडें॥
 पवित्रनिसे॥७८॥एथज्ञानहेंउत्तमहोये॥आणिकहीएकतेमेंकेंआहे॥जैसेंचेतन्यकानोही॥दुसरेंगा॥७९॥यामहातेजाचेनिक
 सें॥जरीचोरवाळप्रतिबिंबदिसे॥कोंगिवसिलेंगिवसे॥आकाशहें॥८०॥नातरीपृथ्वीचेनिपाडें॥कांठाकेंजरीजोडे॥तरीउपमाज्ञानी
 घडें॥पंडुकुमरा॥८१॥ह्यणूनिबहुतींपरीपाहतां॥पुढतपुढतीनिर्धारितां॥हेज्ञानान्वीपवित्रता॥ज्ञानींचिआथि॥८२॥जैसीअमृ
 तचीचिर्वीनिबडिजे॥तरीअमृतांचिसारिस्वीह्यणिजे॥तैसेंज्ञानहेंउपमिजे॥ज्ञानेंसीचि॥८३॥आतांयावरीजेंबोलणें॥तेंवायांचि
 वेळफेडणें॥तंवसाचिहेंपार्थह्यणें॥जेंबोलतअसां॥८४॥परितेंचिज्ञानकेविजाणावें॥ऐसेंअजुनेंजवपुसावें॥तंवतेंमनोगतदे
 वें॥जाणीतलें॥८५॥मगह्यणतसेकिरीटी॥आतांचितेदयीयेगोठी॥सांगेनज्ञानाचियेमेठी॥उपायतुज॥८६॥श्लो०॥अद्वा
 वानुलभतेज्ञानतत्परःसंयतेन्द्रियः॥ज्ञानंलब्ध्वापरांशान्तिमचिरेणाधिगच्छति॥३९॥टी०॥तरीआत्मस्वरवाचिर्गोडिया॥विटः
 जोकासकळविषयी॥जयाचाठायींदंद्रियां॥माननाहीं॥८७॥जोमनासीचाडनसांगी॥जोप्रकृतीचेंकेंलेनेये॥जोअर्थेचेनिसें
 पाठ०-ओं०७२आहासीः ॥४॥ ॥४॥ ॥४॥

भोगों॥ सूरिवंशजाहाला॥ ८८॥ तयर्तोचिगिवसित॥ तेंज्ञानपावेंनिश्चित॥ तयामाजिअचुंबित॥ शांतिअसे॥ ८९॥ तेंज्ञानस्वरूपी
प्रतिष्ठे॥ अणिशांतोचांकुरुदुटे॥ मगविस्तारबहुप्रकटे॥ आत्मबोधचा॥ ९०॥ मगजेउतोवासपाहिजे॥ तेउतीशांतीचिबोचिदे
रिवजे॥ तेथआपपरनेणिजे॥ निह्योरिता॥ ९१॥ ऐसाहाउत्तरोत्तर॥ ज्ञानबीजचाविस्तार॥ सांगतांअसेअपार॥ परिसंसांआ-
तां॥ ९२॥ अह्यो॥ अज्ञाश्रद्धधानश्चसंशयात्माविनश्यति॥ नायलोकोस्तिनपरोनस्त्वंसंशयात्मनः॥ ९३॥ टी०॥ एकंजयमा
णियाचाठायी॥ इयांज्ञानाचीआवडीनाही॥ ज्याचेंज्यालेंदृष्टणोंकाई॥ वरीमरणचांगा॥ ९४॥ शून्यजेंसेगृह॥ कांचेतन्येवीणदेह
तेंसेंजीवितेंसंमोह॥ ज्ञानहीन॥ ९५॥ अथवाज्ञानकीरआपुनोहे॥ तरितेचाडकीजरीवाहे॥ तरितेथजिब्याळाकांहीआहे॥
मासीचापें॥ ९६॥ वांचूनिज्ञानाचीगोठीकायसी॥ परितेआत्माहीनघरीमानसी॥ तरितोसंशयरूपहुताशी॥ पडिलाजाण॥
९६॥ जेअमृतहीपरिनावडे॥ ऐसेसाविद्याचिअरोचकजेंपडे॥ तेंमरणआलेंअसेपुढें॥ जाणोंएकी॥ ९७॥ तेंसाविषयस्वरंजें॥
जोज्ञानेसींचिमाजे॥ तोसंशयअंगीकारिजे॥ एथस्त्रांतिनाही॥ ९८॥ मगसंशयजरीपडिला॥ तरनिश्चांतजाणेंनासला॥ तोरेह
कपरत्रामुकला॥ स्वरवासिगा॥ ९९॥ ज्याकाळज्वरअंगीबाणें॥ तोशीतोथोंजरीनेणें॥ आर्गिआणिचांदणें॥ सरिसेंचिमानो॥
३०॥ तेंसेसाचआणिलिटकें॥ विरुद्धअथवािनकें॥ संशयीतोनोंकरवे॥ हितहित॥ १०॥ हाराचिदिवसपाही॥ जेसाजात्यधांदाउ
वानाही॥ तेंसेसंशयअसतांकाही॥ मनानये॥ ११॥ अह्यो॥ योगसंन्यस्तकर्मोपांज्ञानमंछिन्नसंशयम्॥ आत्मवतनकर्मो-
णिनिबभ्रंतिधनंजय॥ १२॥ टीह्यणउनिंसांशयाहूनियोर॥ आणिकनाहीपापघोर॥ हाविनाशाचीवागुर॥ प्राणियांमि॥ १३॥ येणों
कारणेंतुवांयज्याका॥ आधीहाचिएकजिणावा॥ जोज्ञानाचियाअप्मावा॥ माजिअसे॥ १४॥ जेंज्ञानाचिगडपडो॥ तेंहाबहुवसम्
जोवाढें॥ दृष्टोनिंसेर्वथासंगेंमोडो॥ विध्वासान्ना॥ १५॥ न्दृष्टोनिंनिगवस्मनिठायो॥ तथेंसंशयात्मकहोयो॥ लोकत्रय॥

पाद-ओं-३३ परियेसीं. ओं. १ आपि.

श्लो०॥ तस्मादज्ञानसंभूतं तत्स्थानानां सनात्वनः॥ ध्रुत्वेन संशययोगमातिष्ठानिष्ठकारण ॥ ४॥ इति श्रीमद्भगवद्गीतासूपनिषत्सु
ब्रह्मविद्यायोगशब्दे श्रीकृष्णार्जुनसंवादे ब्रह्मार्पणयोगनाम चतुर्थोऽध्यायः ॥ टी० ॥ ऐसाजरीयोगवे ॥ तरी उपाय एक आंगविभजवी
हूती होय बरवें ॥ ज्ञानरड्ड ॥ ७॥ तरी तेणें ज्ञानशक्तितरवटें ॥ निखळ हूनि वटें ॥ मग निःशेष रसना फिटे ॥ मानसींचा ॥ ८॥ साकारेण पा
थो ॥ उठो वेंगी वरीता ॥ नाशकरो निरुदयस्था ॥ संशयासी ॥ ९॥ ऐसें सर्व ज्ञाचा बाप ॥ जो श्रीकृष्ण ज्ञानदीया ॥ तो द्वाणत समे ह्मण ॥ ऐकल्या
॥ १०॥ तंव यापूर्वी पारबोलाचा ॥ विचारूनि कुमर पंडूचा ॥ कैसा प्रश्न अवसरींचा ॥ करिता होइल ॥ ११॥ तें कथेंची संगती ॥ भावाची संपत्ती ॥
रसं चि उभती ॥ ह्मणिले पुढा ॥ १२॥ जयाचिया बरवें पणी ॥ कीजे आठारसांची वोंवाळणी ॥ जो सज्जनांचे ये आयणी ॥ विसावाजगी ॥ १३॥ जो
शान्तिचि अभिनवेंला ॥ ते परिय सामान्हाटे बोल ॥ जे समुद्राहूनि मंखोल ॥ अर्थ मरित ॥ १४॥ जें सें बिंब तरी बचके एवढें ॥ परि प्रकाशासि निष्ठु
वनथो कडें ॥ शब्दाचि व्यासितें पाडें ॥ अनुभववी ॥ १५॥ ना तरी का भितथी चि इच्छा ॥ फळे कल्य वृक्ष जैसा ॥ बोलव्या पक होय तें सा ॥ तरी
अवधान घावें ॥ १६॥ हें असो काय ह्मणार्थें ॥ सर्व ज्ञाणती स्वभावे ॥ तरी नि कें चित्ता घावें ॥ हे विनंती माझी ॥ १७॥ जैसा हित्सु आपण शांति
हेरवा ॥ दुसरे बोलती ॥ जैसी लावण्य गुण कुळवती ॥ आपण पतिव्रता ॥ १८॥ आधींच सारस्वर आवड ॥ तें चि जरी ओंवापासी जेढें ॥ तरी से
वर्तना का कोडे ॥ नावानां ॥ १९॥ सहजे मलयानिल मंद संगंध ॥ तया अमृता होय स्वाद ॥ आपण तें थें चि जेडें नाद ॥ जरी देवगत्या ॥ २०॥
तरी स्पर्श सोंगी निववी ॥ स्वादें जे कुंते नाचवी ॥ ते वींचिकाना कखी ह्मणवी ॥ बापमाझा ॥ २१॥ तें सें कथेंचें ये रे कणें ॥ एक अथवा सिद्धोय-
पारणें ॥ आपण सारदुःख मूळ उजवणें ॥ विकृती वीणें ॥ २२॥ जरी मंत्रे चि वरी मरे ॥ तरी वायां कां बांधावे कटारें ॥ रोग जाय दुधें सारस्वरें ॥
॥ रीनिंब कंधियावा ॥ २३॥ तें सामां चि चामारन करिता ॥ आपण इंद्रिया दुखन देता ॥ एथ माझ असे आयता ॥ अथवा निमाजि ॥ २४॥ रीणां न आथं कि
या आराणका ॥ रीताये हातिका ॥ ज्ञान देव ह्मणे आइका ॥ निवृत्ति दास ॥ २५॥ इति श्रीमत्प्रावर्थादोपकायां ज्ञानदेश विरचिताया चतुर्थोऽध्यायः ॥
पाठः ओं. ५ मग. ओ. ११ हन अवसरीचा. ओ. १४ खोल. ओ. १९ ओतवदी. ओ. २२ मळवणें.

श्रीगणेशायनमः॥ ॥ अर्जुन उवाच ॥ ॥ संन्यासं कर्मणां कृष्ण पुनर्योगं च शंससि ॥ यच्छ्रेय एतयोरेकं तच्चेद्ब्रह्मुनिश्चितम्
 १॥ टी० ॥ मगपार्थ श्रीकृष्ण तं ह्यणे ॥ हाहा हं कसे तु भवंच बोलणें ॥ एक होव तरी अंतःकरणें ॥ विचारूं ये ॥ १॥ मागास कळ कर्माचा
 संन्यास ॥ तुह्मीच निगोपिला होता बहुवस ॥ तरी कर्मयोगां किं विअ तिरस ॥ योगवीत सांपुढती ॥ २॥ ऐसं द्वय हं बोलतां ॥ आह्वा ने पात
 यांच्या चित्ता ॥ आपुलिये चाडेशीं अनेता ॥ उमज न हो ॥ ३॥ एके एक सारांतें बोधिजे ॥ तरी एक निश्चि बोलिजे ॥ हें आणिकीं काय खांगि
 जे ॥ तुह्मां प्रति ॥ ४॥ तरी या चित्ता गी तुमत् ॥ स्या रा उक्ता सि विन विलें होतें ॥ जे हा परमार्थ ध्यानि तें ॥ न बोलवा ॥ ५॥ परी मागील अ-
 सो देवा ॥ आतां प्रस्तुती उकल देखावा ॥ सांगें तीं ही माजि बरया ॥ मार्ग कवणा ॥ ६॥ जो परिणामी चिनि वर्ळा ॥ अबुं बित ये फळा ॥ आणि अ-
 बुद्धितां प्राजळा ॥ सांवि याची ॥ ७॥ जे सोनि द्वेचें सुख न मोडें ॥ आणि भार्ग तरी बहु साल सोडें ॥ तें संस्कारा सना सांगडें ॥ सोह पें होये ॥ ८॥
 येणें अर्जुनाचे निबोलें ॥ देवो मनीं रिझलें ॥ मग हा ईल एके स्मणितलें ॥ स्तोत्रो नि या ॥ ९॥ देखवा कां भय नु ऐसी माये ॥ सदेव जया हो
 ये ॥ तोच दही पारि लाहे ॥ रेवळा बया ॥ १०॥ पाहें पंगं श्रीशंभूची प्रसन्नता ॥ तथा उपमन्यु चिया आता ॥ काय क्षीराब्धि दूधभाता ॥ देइजे नि-
 ना ॥ ११॥ तें साओदायाचा कुरुठा ॥ श्रीकृष्ण आपुजा हालिया सुभटा ॥ कांसर्व सुखाचा वसोटा ॥ तो चि नो हावा ॥ १२॥ एथच मत्कार काय
 सा ॥ गोसावी श्रीलक्ष्मी कां तो ऐसा ॥ आतां आपुलिया सर्वसा ॥ मागावा कीं ॥ १३॥ ह्यणोनि अर्जुने स्मणितलें ॥ ते हां सांनि ये रें दीधुलें
 ॥ तें चिसांगें बोलिलें ॥ काय कृष्ण ॥ १४॥ ॥ श्रीभगवानुवाच ॥ ॥ संन्यासः कर्मयोगश्च निश्चयेय सकरावृत्तौ ॥ तयोस्तु कर्मस-
 न्यासात्तमयोगो विशिष्यते ॥ २॥ टी० ॥ तो ह्यणो गाकुनी सुता ॥ हंसन्यास योग विचारितां ॥ मोक्ष करत तत्ता ॥ दोनी ही होली ॥ १५॥
 तरी जाणाने नासकळा ॥ हा कर्मयोग कीर प्राजळा ॥ जेसी नाचि स्थि यां बाळां ॥ तो यतरणीं ॥ १६॥ तें सारा सार पाहिजे ॥ तरी स्मेह-

पाहाचि देखिजे॥ येणें संन्यास फळाहिजे॥ अनायासे॥ १७॥ आंतोयाचि मृगी संगें न॥ तजस न्यासियाचें चिन्ह॥ भगस हजे
 अभिन्न॥ जाणसीतू॥ १८॥ श्लो०॥ ज्ञेयः स नित्यसंन्यासी यो न द्वेष्टि न कांक्षति॥ निर्द्वेषो हर्महाबा ह सुखवधात्यमुच्यते॥
 ३॥ टी०॥ तशी गोलियाची सेन करी॥ न पवतांचा डन धरी॥ जो सुनिश्चळ अंतरों॥ मरुजे सा॥ १९॥ आणि मी माझे ऐसी आठवण॥
 विस्मरलें ज्याचें अंतःकरण॥ पार्थातें संन्यासी जाणा॥ निरंतर॥ २०॥ जो मनें ऐसा जाहाला॥ संगतींचे सांडला॥ म्हणोनि मुखें
 सुख पावला॥ अखंडित॥ २१॥ आतां गृहादिक आघवें॥ तें काही न लगेत्यजवें॥ जेवते जाहाले स्वभावे॥ निःस्वार्थ ह्मणुनि ॥
 २२॥ देखें अग्नि विझोनि जाये॥ भगजे राखी दीक वळ हाये॥ तें कापुस गिवसूये॥ जिया परी॥ २३॥ तें सा आसतें निरुपाधी॥ ना
 कळिजे तो कर्मबंधी॥ ज्याचे ये बुद्धि॥ सकल्य नाही॥ २४॥ म्हणोनि कल्पना जे सांडे॥ तें चिगास न्यास घडे॥ इयें कारण दोनी सा
 गडे॥ संन्यास योग॥ २५॥ श्लो०॥ सारव्य योगो एथ गबलाः प्रवर्तित न पांडिताः॥ एक मया स्थितं सव्यगुणभयो विदते फलम्॥
 २६॥ टी०॥ ये न्हवीं तरी पार्था॥ जे मरव हातीं सवथा॥ ते सारव्य योग संस्था॥ जाणतीं केवी॥ २६॥ सहजे ते अज्ञान॥ म्हणोनि ह्य
 णती तें भिन्न॥ ये न्हवीं दीपाची तका इ आनान॥ प्रकाश आहती॥ २७॥ पेंसव्य कृएक अनुभवें॥ जिही देखिलें तत्त्व आघवें॥ ते
 दोही तें ही ऐक्य भावें॥ मानिती गा॥ २८॥ श्लो०॥ यत्सारव्यैः प्राप्यते स्थानं तद्योगो र्पि गम्यते॥ एक सारव्यं च योग नयः पश्यति सप
 र्यति॥ २९॥ टी०॥ आणि सारव्यी जे पाविजे॥ तें चियोगीं भिजे॥ म्हणोनि ऐक्य दोही तें सहजे॥ इया परी॥ ३०॥ देखें आकाशा आ
 णि अवकाशा॥ भेद नाही जे सा॥ तें सें ऐक्य योग संन्यासा॥ वोळखे जो॥ ३०॥ तयासीं चिजगी पाहिळें॥ आपणें पेंते पोचें देखिलें॥
 ज्या सारव्य योग जाणवले॥ भेदे विण॥ ३१॥ श्लो०॥ मन्यासस्तु महाबाहो दुःखमा तु मयोगतः॥ योगयुक्तो मुनि ब्रह्म न चिरे
 ण ॥ ओ० २६० कर्मः

णाधिगच्छति॥ ६॥ टी०॥ जायुक्तिपथेपार्था॥ चतसोक्षपर्वता॥ तोमहासुरवाचांनिमथा॥ वहिर्लपावे॥ ३२॥ येरायोगस्थिनी-
 जयासांडे॥ तोवायाचिगाहव्यासोपडे॥ परम्यासिकर्हीनपडे॥ मन्यासाची॥ ३३॥ श्लो०॥ योगयुक्तमविशुद्धात्माविजात्माजि-
 नोद्रयः॥ सर्वभूतस्त्वमृतात्माकुर्वन्निपनलव्यते॥ ७॥ टी०॥ जणंभ्यांतीपास्तीनिहरतले॥ गुरुवाक्यमनधुतले॥ भगव्यात्स-
 स्वरूपीयातले॥ रौंनिया॥ ३४॥ जेसेसमुद्रोलवणनपडे॥ तंववेगळेअल्पआवडे॥ भगहायासंधूचिएवढे॥ भिळुतेव्हा॥
 ३५॥ तेसेसंकलोनिकाटिले॥ जयाचमनचित्तन्यजाहाले॥ तंगणकुदशियंपरिव्यापिले॥ लोकनया॥ ३६॥ आतांकताकमकरा-
 वे॥ हेखुटलतयास्सभावे॥ आणिकरीजर्हीआघवे॥ तर्हीअकनतो॥ ३७॥ श्लो०॥ नैवकिचिल्लसमीतियुक्तोमन्यततत्ववि-
 त॥ पश्यन्मृण्वनस्पृशन्निघ्नन्वननाछन्नस्वपन्म्वसन॥ ८॥ प्रलपन्निविसृजनगृहन्नुन्मिषन्निमिषन्नापि॥ इंद्रियाणींद्रि-
 यार्थेषुर्वर्ततइतिधारयन्॥ ९॥ टी०॥ जपथानयादही॥ सीएसाआटुनाही॥ तरीकर्तृत्वकेचेकाइ॥ उरसांगे॥ ३८॥ ऐसेतनु-
 त्यांगेविणे॥ असुतचैगुणा॥ दिसतीसंपूर्ण॥ यागयुक्ता॥ ३९॥ येचहोआणिकांचियपरी॥ तोहीएकशरीरी॥ अशेषाहीव्या-
 पारी॥ वर्तवदिसा॥ ४०॥ तोहीनवीपाहे॥ श्रवणीएकतआहे॥ परीतोधिंचासर्वथानोहे॥ नवलदेखे॥ ४१॥ स्वर्शासितरीजाणे॥ परि-
 मळसवीघ्राणे॥ अवसरोचितबालणें॥ तयाहिआधि॥ ४२॥ आहारातस्वीकारी॥ त्याजावंतंपरिहरि॥ निद्रोचियाअवसरी॥ भिद-
 जेसुवे॥ ४३॥ आपुलेनिदच्छादशें॥ तोहीगालातदिस॥ पंमकळकूमएस॥ राहादेकीर॥ ४४॥ हेसांगेकाइएकेका॥ देखेस्वा-
 मोश्चासादिक॥ आणिनिमिषांनिमिष॥ आदिकळनि॥ ४५॥ पार्थानयाचंठाइ॥ हेआघवेचिआधिपाही॥ परितोक्तोनकेका-
 हो॥ प्रतीतिबळें॥ ४६॥ जेभ्यातिसेजसुतला॥ तस्वमसुखेसुतला॥ मगताज्ञानादरीचंदला॥ झणोनिया॥ ४७॥ श्लो०॥ ब्र-

पाठ. ओं-३२ सुखाचेनिमिषां ओं-३४ हिंसांनियां ओं-३७ तयानें ओं-४० अघ्राष ओं-४२ स्वर्शा अवसरोच-

ह्यप्याथावकर्मणि सगंत्यत्कां करोति यः ॥ लिप्यते न स पापेन पदपत्रमिवांभसा ॥ १०॥ टी० ॥ आतो अधिष्ठानसंगती ॥ अशेषाहो
 इन्द्रियवृत्ती ॥ आपुला लियार्थो ॥ वर्तत आहती ॥ ४८॥ दीपाचे निप्रकाशे ॥ गृहीचे व्यापारजैसे ॥ देहो कर्मजात तैसे ॥ योगयु-
 क्तो ॥ ४९॥ तोकर्मकरीसकळे ॥ परीकर्मबधानकळे ॥ जैसं निपेजळीजळें ॥ पदपत्र ॥ ५०॥ श्लो० ॥ कायेन मनसा बुद्ध्या कव-
 रेंद्रिये रपि ॥ योगिनः कर्मकुर्वति सगंत्यत्कां सुदुह्ये ॥ ११॥ टी० ॥ देखें बुद्धीची भाषे निजें ॥ मनाचा अकुरनु देजे ॥ ऐसा व्यापा-
 रतो बोलजे ॥ शरीरगा ॥ ५१॥ हें चमरात परिश्रमी ॥ तरी बाळकाची चेष्टा जैसी ॥ योगिये कर्मकां शीतैसे ॥ कवळात नू ॥ ५२॥
 भगपांच भौतिक मंचलें ॥ जेव्हा शरीर असो निदलें ॥ तें येमन चिराहा टाकलें ॥ स्वप्नी जेवो ॥ ५३॥ नवल ऐकें धनु धरा ॥ कसा वा-
 सन चा संसारा ॥ देहा हो ने दीउजगा ॥ पुरी सुख दुःख भोगी ॥ ५४॥ इंद्रियांचा गांवीं निजें ॥ ऐसा व्यापार जो निपजे ॥ तों केव-
 क्का ह्या निजें ॥ मानसाचा ॥ ५५॥ योगिये तो हो कारिती ॥ परी कर्म तेन बधिजती ॥ जेसां डिली आहे संगती ॥ अहं भावाची ॥ ५६॥
 आतां जाहा लिया फलमत ॥ जैसों पिशाचांचें चित्त ॥ भगइंद्रियांचें चिह्न ॥ विकळ दिसे ॥ ५७॥ स्वरूप तरी देखे ॥ आळा विलें आ-
 इके ॥ शब्द बोले सुखें ॥ परिज्ञान नाही ॥ ५८॥ हें असो कांजो विण ॥ जें कांही करणें ॥ तें केवळ कर्मजाण ॥ इंद्रियांचें ॥ ५९॥ भगसर्व-
 व्रजे जाणतें ॥ तें बुद्धीचें कर्म निरुतें ॥ वोळख अजुनात ॥ ह्यण श्रीहरी ॥ ६०॥ तें बुद्धिदुर करनी ॥ कर्मकारिती चित्त देउनी ॥ परिते कर्मापासु-
 नी ॥ सुकृदिसती ॥ ६१॥ जे बुद्धीचिये दावु ने देही ॥ तथा अहंकाराचें संचिनाही ॥ ह्यणानि कर्मकरिता पाही ॥ चोखाळले ॥ ६२॥ आमां फुरिते
 नवीण कर्म ॥ तें चित्तें निभ्रम ॥ हें जाणती सुखम ॥ गुरुगाम्यजे ॥ ६३॥ आतां शांतरसाचें भरितें ॥ सांडीत आहे पात्रांतें ॥ जें बोलणें बोलापरितें ॥
 बोलवळें ॥ ६४॥ एथ इंद्रियांचा पाग ॥ जया फलला आहे चरा ॥ तयासींचि आशिलाग ॥ परिमावया ॥ ६५॥ हा असो अतिपसंगा ॥ नसं डीपां वशा
 पाठ. ओं. ६१ नैषक्योः

४७

४८

४९

५०

५१

लाग॥ होईल श्लोक संगती संग॥ द्वाण उनि यां॥ ६६॥ जंमना आकृति कुवाडें॥ घागुसिता बुद्धी न तुडें॥ तें देवाचे निस्सर वाडें॥ सांगवेलें तुज
 ॥ ६७॥ जेशब्दतीत स्वभावं॥ तें बोलि चि जरी फावें॥ तरी अणि कं काय वरावें॥ कथा सांगों॥ ६८॥ हा आर्ति विशेष श्रोत याचा॥ जाणोनि दास
 निवृत्तीचा॥ द्वाणें सवा द दोघाचा॥ परि सांनि परि या॥ ६९॥ मग श्रीकृष्ण द्वाणें शार्थें॥ आतां पाप्माचें चिन्ह हुरतें॥ सांगेन तुज निरुतें॥ जिते दे
 ई॥ ७०॥ श्लो॥ युक्तः कर्मफलं त्यक्त्वा शार्थं तिसांसांति नैष्ठिकां॥ अयुक्तः कामकारेण फलं सत्तो निबद्धयते॥ १२॥ टी०॥ तरी आत्मयोग
 आधिला॥ जे कर्म फळाशीं वटला॥ तो घर रियां न वारला॥ शार्थें तजगीं॥ ७१॥ येर कर्म बंधो करी दी॥ अभिलाषा चिया गाठी॥ कळा सलाखे
 दी॥ फळ भोगाचा॥ ७२॥ श्लो॥ सर्व कर्माणि मनसास्य स्यात्सुखवशी॥ नव द्वाण पुरे देही नें व कुन् कारयेत्॥ १३॥ टी०॥ जे सा फळा
 चिये हावें॥ तें स कर्म करी आयवें॥ मग न कीजो वयेणें भावें॥ उपेक्षी जो॥ ७३॥ तो जया कडे वास पाहे॥ तें उती सुखाचीं स्त्रिं हाये॥ तो ह्य
 पोते थराहे॥ महा बोधा॥ ७४॥ नव द्वाण देही॥ तो असत ची पार नाही॥ करि मचिन करी कांही॥ फळ त्यागी॥ ७५॥ श्लो॥ न कर्तृत्वं न क
 र्माणि लोकस्य भूजति प्रभुः॥ न कर्मफलं स योगस्वभावं सुप्रवर्तते॥ १४॥ टी०॥ जे सा कां सर्वे स्वरा॥ पाहिजे तें व निव्यो पार॥ परि तो चिर
 ची विस्तार॥ त्रिभुवनाचा॥ ७६॥ आणिक तो ऐसं ह्यणि पें॥ तरी कवणें कर्म निशि पें॥ जे हात पावो न मिं पें॥ उदास वृत्तीचा॥ ७७॥ योग
 निद्रा तरी न मोडे॥ अकर्तें पणास कु न घडे॥ परि महा मूर्तांचें दळ वाडें॥ उभा री भलें॥ ७८॥ जगाचा जो र्वा आहे॥ परी कवणाचा कही
 नाहे॥ जग चि हे होय जाये॥ तो सुद्धी ही नेणे॥ ७९॥ श्लो॥ ना दत्त कस्य चित्पापन चैव सुकृतां विभुः॥ अज्ञानेना वृतं ज्ञानेन सु
 द्योतितं तव॥ १५॥ टी०॥ पाप पुण्य अशेषां॥ पासीं चि अस तु न देखें॥ आणिसाक्षी ही हो उनि नाकें॥ येरी गोष्टी काय सी॥ ८०॥ पें
 मूर्तीचि न मेळ॥ तो मूर्ते चि हो उनि सके॥ परि अस मूर्ते पण न मेळ॥ दाडुलयाचें॥ ८१॥ तो मूर्ती पाळी संहारी॥ ऐसे बोलती जे चराचरी॥ ते अ
 पाद ओं॥ ६७॥ श्लो॥ ओं॥ ७२॥ एक ओं॥ ७३॥ ऐसे ओं॥ ७४॥ वीष्ट ओं॥ ८०॥ तिस पंथासी॥

ज्ञानगाअवधारी॥ पंडुकुमरा॥ ८२॥ श्लो०॥ ज्ञानेन तु तदज्ञानयेषां नाशितमात्मनः॥ तेषामादित्यवत्त्वानंप्रकाशयति तत्परम् ॥ १६॥ टी०॥ तैअज्ञानजसमूहमुदे॥ तैस्त्रातीचमसरफिदे॥ मगअकतुत्पकते॥ मजइश्वराचे॥ ८३॥ एथइश्वरएकअकतो॥ ऐसमानलैजरीचिन्ता॥ आणितोचिमीहंस्वभावता॥ आदीचिआहे॥ ८४॥ ऐसेनिविवेकउदोचिन्ती॥ तयांसिमदकेचाञ्जगती॥ देखैआपुलियाप्रतीती॥ जगाचिमुक्ता॥ ८५॥ जैशीपूर्वदशेचाउळी॥ उदयाचीसूर्यदिव्याळी॥ कीयेरीहीदशातियेचिकाळी॥ काळीमानाही॥ ८६॥ श्लो०॥ तदुद्धयस्तदात्मानस्तन्निशस्तसरायणाः॥ गच्छत्यपुनरावृत्तिं ज्ञाननिधूतकल्मषाः॥ १७॥ टी०॥ बुद्धिनिश्चयं आत्मज्ञान॥ ब्रह्मरूपमावी आपणा आपणा॥ ब्रह्मनिष्ठाराखेयूणी॥ तत्सरायणअहर्निशी॥ ८७॥ ऐसेव्यापकज्ञानमळे॥ जयाचियाहृदयागिवसितआले॥ तयांचीसमताहृष्टिबोले॥ विशेषकाई॥ ८८॥ एकआपणपेंचिजैसे॥ तेदेखतीविश्वतैसें॥ हंबोलणेंकायसे॥ नवलएथा॥ ८९॥ परीदेवजैसेकवतिकें॥ कहींचिदैन्यनदेखे॥ काविवेकहानोळखे॥ फांतीनेजवी॥ ९०॥ नातरीअधकाचावीानी॥ जैसासूर्यनदेखेस्वमी॥ अमृतनायकेकानी॥ मृत्युकथा॥ ९१॥ हेंअसोसंतापकेसा॥ चंदनस्मरेजैसा॥ मूर्तीभेटनेणतींसा॥ ज्ञानियेते॥ ९२॥ श्लो०॥ विद्याविनयसंपन्नब्राह्मणो गविहस्तिनि॥ शुचिर्नृचैव स्वपाकेचपडिताः समदर्शिनः॥ ९८॥ टी०॥ मगहामशकुहागज॥ कीश्वपचहादिज॥ पैलइतरहाआत्मज॥ हेंउरलें॥ ९३॥ नातरीहेनुहेंचान॥ एकगुरुएकहीना॥ हेंअसोकंचस्वमी॥ जागतया॥ ९४॥ एथभेदतरीकीदेखावा॥ जरीअहभावउरळाहोआवा॥ तोआधीचिनाहीआघवा॥ आतांविषमकाई॥ ९५॥ श्लो०॥ इहवैतैजितः सर्गो यथासांम्ये स्थितमनः॥ निदोषा हि समब्रह्म तस्माद्ब्रह्मणि ते स्थिताः॥ ११॥ टी०॥ ह्यणोनि सर्ववत्सदात्म॥ तेंआपणचिअद्वयब्र

ह्य॥ हंसपूर्णजाणैर्वर्मा॥ समदृष्टांचे॥ १६॥ जहीं विषयसंगनसांडितां॥ इंद्रियतेनंदितं॥ परिमोहिनीः संगता॥ काम
 नेविण॥ १७॥ जहीं लोकांचे निआधारे॥ लोकें केचि व्यापारे॥ परिमोडिलें नंदसुरें॥ लोकें केहे॥ १८॥ जैसा जनाया जरेव
 रा॥ असचि जना नव्हे गोचरा॥ तसा शरीरा परिमोडिलें॥ १९॥ हें सोपवनाचे निमेलें॥ जें सें जळीचि जळी-
 के॥ तें आणिकें द्वाणती वेगळे॥ कळोव्हे॥ २०॥ तें सें नामा रूप तयाचें॥ येन्हवीं जो ब्रह्मचि तासाचें॥ मनसाच्या आलें जयाचें॥ स
 र्ववगा॥ २१॥ ऐसे निमसमदृष्टी जो होया॥ तथापूरुषाः क्षणही आहो॥ अर्जुनासक्षेपें सांगे नपाहें॥ अच्युत द्वाणें॥ २२॥ भ्लो०॥ नम
 दृष्टी स्वयंमाय नो द्वैज द्वाप्यचा प्रियप्र॥ स्थिरबुद्धिरसंभूदो ब्रह्मविद्वद्वाणिस्थितः॥ २३॥ ती चितो निरुता॥ समदृष्टी तत्त्वती॥ हरी द्वाणें पडु सुता॥
 लोदिजे कां गिरवें॥ तैसा शुभाशुभी नं वकरें॥ पातलिया जो॥ २४॥ ती०॥ तरी द्वाणें जळीचि निपूरें॥ जें सें न
 तो चि ब्रह्म॥ २५॥ बाह्यस्पर्श प्रसक्तात्सा विंदयात्मानं यत्स्वरूपम॥ स ब्रह्मयोगगुक्तात्मा स्वरूपमक्षय्यमभ्युते॥ २६॥ ती०॥
 जो आपण पें सांडु नि कांहीं॥ इंद्रियया मावरी येणें नाहीं॥ तो विषय नसें वेहें कांई विचव एथ॥ २७॥ महजें स्वसुखाचें निअपारें॥ सुखा
 डलें निअंतरें॥ रत्निला द्वाणें निबाहिरें॥ पाउल न घली॥ २८॥ सांगें मुकुंद दळाचें निताटें॥ जो जे विलाच द्वां किरणें चोखटें॥ तो च
 कोरक यि वाळुवटें॥ चुंबित असे॥ २९॥ तें सें आत्मा सुख उपाडलें॥ जयासि आपण पें चि फावेलें॥ तया विषय सहज साडवेलें॥
 हाणें कांई॥ ३०॥ येन्हवीं तरी कोतुकें॥ विचारूनि पाहें पांनि कें॥ या विषयाचें निमुखें॥ ३१॥ भ्लो०॥ येहि सें य
 स्पर्श जाभागादुःख योनय एवते॥ आद्यतवतः कौंतेय न ते बुध समते बुधः॥ ३२॥ ती०॥ जिहीं आपण पें नाहीं दोखिलें॥ तें चि
 इही इंद्रियाथी रजलें॥ जें सें रंक कां आलुं केलें॥ तुषां तें सेवी॥ ३३॥ ना तरी मृगें तृषाणी डिलें॥ संपन्नमें विसरो निजळातें॥ मग
 पाठ॥ ओ० १७ कामें॥ ओ० ३ कर्म निवकरे॥ ओ० ५ जे० ६ स्वखाडे अंतरे०

५

५

५

तोयबुधिरडते॥टांकूनियेती॥१॥ तैसैआपणपेनाही॥दुते॥ जयातेस्वसुराचेसदावरते॥ तयासीविषयहेगोमटे॥आ
वडती॥१२॥ येहवीविषयीसुखआहे॥ हेबोलणेचिसारिखेनाहे॥ तरीविषयस्फुरणेकानपाहे॥ जगाभाजी॥१३॥ सांगेवा
तवर्षआनपधरे॥ ऐसैअभ्रछायाचिजरीसरे॥ तरीत्रिमालिकेधवळारे॥ करवीका॥१४॥ ह्यणोनिविषयसुखजेबोळिजे॥ ते
नेणतांगावायाजल्पिजे॥ जैसैमहुरकाह्यणिजे॥ विषकंदाते॥१५॥ नातरासैमानमंगळ॥ रोहिणीतैह्यणतीजळ॥ मै-
सासुखमवादबरळ॥ विषयकहा॥१६॥ हेअसोआघवीबोली॥ सांगपांसपफणीचीसाउली॥ तेशीतलहाईलकेतुली॥ मू-
षकासी॥१७॥ जैसाआमीषकवलपाडवा॥ मीननसेवीतवाचिबरवा॥ तैसाविषयमंगआघवा॥ निष्णांतजाणे॥१८॥ हे
विरक्ताचियेदृष्टी॥ जैन्याहाळिजेकिरीटी॥ तैपांडुरेणाचियेपुष्टि॥ साखिसेदिसो॥१९॥ ह्यणोनिविषमोगीजैसुख॥ तैसाचेत
चिजाणदुःख॥ परिकायकरितीसुख॥ नसेवितानसरे॥२०॥ तैअंतरनेणतीबापुडे॥ ह्यणोनिअगत्यसेवणेघडे॥ सांगे
पूयपकीचौकडे॥ कायचिळसीघेती॥२१॥ तयादुःखयादुःखचिजिह्वार॥ तैविषयकदंभीचेददुर॥ तैमोगजळीचेजळचर
॥ सांडितीकेवी॥२२॥ आणिदुःखयानीजियाआहती॥ तियानिरथकातरीनळती॥ जरीविषयावरीविरक्ती॥ धरितीजीव
२३॥ नातरागर्भवासादिसंकट॥ काजचमरणीचेकष्ट॥ हेविसावेवीणवाट॥ बाहवीकवणे॥२४॥ जरीविषयीविषयासांड
जेळ॥ तरीमहादोषीकंविमजेल॥ आणिससारहाशब्दनळल॥ लटिकाजगी॥२५॥ ह्यणोनिअविद्याजातनाशिले॥
तैतिहाचिसाचदोविले॥ जिहीसुखबुद्धीघेतले॥ विषयदुःख॥२६॥ याकारणैगास्तभटा॥ हाविचारिताविषययोरवटा
॥ दूष्पणैकहीयावाटा॥ विसरानेजाशी॥२७॥ पैयेतैविरक्तपुरुष॥ रयजितीकाजैसेविष॥ निराशातयादुःख॥ इमिव
पाठ. ओं-१३ कायस्तरव, सायस्व ओं-१४ पुरे.

लेंनावडे॥ २८॥ ॥ श्लो० ॥ शक्रोतीहवयः सोढुं माकुशरीरमोक्षणात् ॥ कामक्रोधोद्वेगंसयुक्तः ससखीनरः ॥ ३३ ॥
 दी० ॥ ज्ञानियां चाहनरायी ॥ याची मातही कीरनाही ॥ देही दुहमावजिही ॥ स्ववशकेली ॥ ३१ ॥ ज्यातबाद्याची प्राप्ती ॥ ने-
 णिजेचिनिःशेषा ॥ अंतरासख ॥ एकआशि ॥ ३० ॥ परितवगळेपणं भागिजे ॥ जेसंपक्षियं फळबुजिजे ॥ तेसं नळेतय
 विसरिजे ॥ भागितेपणही ॥ ३१ ॥ भोगी अवस्थाकीउठी ॥ तेअहंकाराचा अंचळोटी ॥ भगसखें सिधेअंटी ॥ गाढपणे
 ॥ ३२ ॥ तियेआलिंगनमेकी ॥ होयभापें आपकवकी ॥ तेथजळजेसंजकी ॥ वेगळंनदिसे ॥ ३३ ॥ कांआकाशीवायोहरपे ॥
 तेथदोन्हीहमाषलोपे ॥ तेसंसखचिउरेस्वरूपे ॥ सरतीतिये ॥ ३४ ॥ ऐशीहेताचीभाषजाय ॥ भगद्वर्णाजरीशकचिहा-
 य ॥ तुरीतयसाक्षीकवणआहे ॥ जागतजे ॥ ३५ ॥ ॥ श्लो० ॥ योनः सखीतरारामस्तथातज्योतिरेवयः ॥ सयोगी ब्रह्म-
 निवाणं ब्रह्मभूतोधिगच्छति ॥ २४ ॥ लभतेब्रह्मनिवाणमृषयः क्षीणकल्मषाः ॥ छिन्नद्वेधायतात्मानः सर्वभूतहिते रताः
 ॥ २५ ॥ दी० ॥ ह्मणोनिअसोहेआधव ॥ एथनबोलणें कायबोलावें ॥ तेवुणाचिपावेलस्वभावे ॥ आत्माराम ॥ ३६ ॥ जेरे-
 सेनिमुखेंमातले ॥ आपणपांचिआपणराहिले ॥ तेमीजाणेंनिखळवातले ॥ साभरस्यत्वे ॥ ३७ ॥ तेआनंदचेअनुका-
 र ॥ सखचेअनुरा ॥ कींमहाबोधेंवहार ॥ केलजेसो ॥ ३८ ॥ तेविवेकाचेगाव ॥ कींपरब्रह्मचिस्वभाव ॥ नातरीअंककाले
 अवयव ॥ ब्रह्मविद्येचे ॥ ३९ ॥ तेसत्वाचेसात्विक ॥ कींचेतन्याचेआंगिक ॥ हेबहुअसाएक ॥ वाभिर्सीकाई ॥ ४० ॥ तूं संतस्त
 वनीरतसी ॥ तुरीकयेचींसेनकरिमी ॥ कींनराळीबोलदस्वसी ॥ सनागर ॥ ४१ ॥ परितरसातिशयामुकुकी ॥ भगप्रथार्थ-
 दीपउजकी ॥ वरीसाधुददराउळी ॥ भगळउरवा ॥ ४२ ॥ एसागुरुचाउवायिला ॥ निवृत्तिदासासीपातला ॥ भगतोहणेह्मणबा
 पाठ-ओं-३० अंतरांचि-ओं-३२ अहंकाराचक-ओं-३४ होय-ओं-३७ गुप्तले.

४

७

७

लिला॥ तैचिआइका॥ ४३॥ अर्जुना अनंतसुखाचोही॥ एकसंरांतळचिघेतलाजिहीं॥ मगस्थिराडोनितेही॥ तैचिजहा
 ले॥ ४४॥ अथवाआत्मप्रकाशोचोसो॥ जोआपणपेंचिविश्वदेखे॥ तोदेहोचिपरब्रह्मसुखे॥ मानूयेला॥ ४५॥ जैसाचोकारेंप
 रमा॥ नतेंअस्तरनिःसीमा॥ जियेगांवींचेनिष्काम॥ अधिकारियो॥ ४६॥ जेप्रहर्षिवाटले॥ विरक्ताभागाफिटले॥ जिनिःसंश
 यपिकले॥ निरतर॥ ४७॥ श्लो०॥ कामक्रोधवियुक्तानायतीनायतचतसाम्॥ अभितोब्रह्मनिर्वाणवर्ततेविदित्वात्मना
 म्॥ २६॥ टी०॥ जिहींविषयापासोनिहरतले॥ चित्तआपुलेंआपणजितले॥ तेनिश्चितजयसतले॥ चेतोचिना॥ ४८॥
 तेपरब्रह्मनिवाण॥ जेआत्मविदांचेंकारण॥ तैचित्तेपुरुषजाण॥ पंडुकुमरा॥ ४९॥ तैऐकैसेनिजाहाले॥ जेदेहोचिब्रह्मत्वाआ
 ले॥ हेहीपुसशीतरीभले॥ संक्षेपेंसांगो॥ ५०॥ श्लो०॥ स्पशान्कृत्वाबहिर्बाह्याश्चैवातरेषुवोः॥ याणापानोसमो-
 कृतानासाभ्यंतरचारिणो॥ २७॥ टी०॥ तरीवैराग्याचेनिआधारे॥ जिहींविषयदवडूनिबाहिरें॥ शरीरेंएकंदरें॥ केलेस
 न॥ ५१॥ सहजेंनिहींसंधीभेटी॥ जेथफ्रूपल्लुवापडेगांटी॥ तैथपाठिसोरेदी॥ पारुखोनिया॥ ५१॥ सांडूनिदक्षिण-
 वामा॥ याणापानसम॥ चित्तेंसीव्योम॥ गांमयकरीति॥ ५३॥ श्लो०॥ यतौद्रियमनोबुद्धिर्मुनिर्माक्षपरायणः॥ विगतेष्वा-
 भयक्रोधयःसदाभुक्तुग्वसः॥ २८॥ टी०॥ तेजैसीरथ्योदकसकळ॥ येउनिगासासुद्रोभूळ॥ मगएकैकवेगळे॥ निवडू
 नये॥ ५४॥ ऐसीवासनातरीचिविचन॥ मगआपेंसीपारुखेअजुना॥ जेवेळींगगनालयामना॥ पवनंकीजे॥ ५५॥
 जेथहेंसंसारचित्रउभटे॥ तोसमोरूपपुटफाटे॥ जैसंसरोवरआटे॥ मगप्रतिमानाहीं॥ ५६॥ तैसंमनथसुदुलजाव॥
 मगअहंभावादिकहेंआहे॥ ह्मणोनिशरीरेंचिब्रह्महोये॥ अनुभवीतो॥ ५७॥ श्लो०॥ प्रोक्तांरयजतपसांसर्वलोकमहे
 पाठ-ओ०-५७ शरीरं॥

स्वरूप ॥ गन्तुं देस सर्वभूतानां ज्ञानाभांशां विमुञ्छति ॥ २० ॥ ॥ इति श्रीभद्रगवद्गीतासूपनिषत्सु ब्रह्मविद्यायां योग-
 शास्त्रे श्रीकृष्णार्जुनसंवादे सन्त्यासंयोगाजोसंन्यासोऽध्यायः ॥ ५ ॥ ॥ १० ॥ आत्मीयागां हनसागीतले ॥ जं देहीचि
 ब्रह्मत्वपावले ॥ तं योगभांगओले ॥ ह्यणोर्नियं ॥ ५ ॥ आणियमनियमाचडागर ॥ अत्यासाच सागर ॥ क्रमान्हपरशत
 को ॥ ५१ ॥ तिही आपणपंकरुनिगिल्प ॥ यपवावं धनं रसा ॥ मगसाचशां चंचित्स्वरूप ॥ होर्नितेले ॥ ६० ॥ ऐसा
 द्यागयुक्तीचा उद्देश ॥ जंथबोलिलोत्तरं तंश ॥ तय अर्जुनसंदेश ॥ ह्यणोनिवमकारिन्मा ॥ ६१ ॥ तं देगिलियाकृष्णजाणित
 ले ॥ मगहांसां निपायातं ह्यणितले ॥ कोर्योचत्त उवाडले ॥ इयबोलिनुं ॥ ६२ ॥ तंव अर्जुन ह्यणो देवा ॥ परचित्तलक्षणाचा
 रावी ॥ भलाजाणितलाजीसावो ॥ मानससाडो ॥ ६३ ॥ भ्यां जंकोर्हो विवरुनिपुसावो ॥ तं उपाधीचिजाणितले देव ॥ तरीचो लि-
 ले तेंचि सांगावो ॥ विवळकरुनि ॥ ६४ ॥ यं हरे निरीअवधारा ॥ जोदाविलातुं ह्रीं अनुसारा ॥ तापव्हण्याहूनिपायउताया ॥ सो
 हपजं सो ॥ ६५ ॥ तें सासारव्याहूनि यजळा ॥ आह्यासां रीखयोअचळा ॥ एथआहंफाहीपरिकाळा ॥ तोसाहोयेवर ॥ ६६ ॥
 ह्यणो निरकवळ देवा ॥ तोचिपडताकायवावा ॥ विस्तरलतरं सांगावा ॥ साधेतचि ॥ ६७ ॥ तंव श्रीकृष्ण ह्यणतीहोको ॥ तुज-
 हाभांगमलानिका ॥ तरीकायजालें आदर्गं जोकां ॥ सरवंबोलो ॥ ६८ ॥ अर्जुन तूं परिससी ॥ परिसां निअनुष्ठिसी ॥ तं
 रीआह्यासीचिवाणिकायसी ॥ सांगावयाची ॥ ६९ ॥ आधीचिचिचभायंचे ॥ बरीमिषजाहोले पुढ्यतयाचे ॥ आतोतें अजुनप
 णरसहाचे ॥ ७० ॥ तं ह्यणं कास्यरसार्चयुष्टी ॥ कींनवयांरसहाचीस्पर्श ॥ हंअसांनणजेदृष्टी ॥ हरीचिचातुं ॥ ७१ ॥
 जंअभुताचीवातली ॥ कींयमोचिपडनसातली ॥ ह्यणोनिअर्जुनमाहंगुतली ॥ निधानं ॥ ७२ ॥ हंबहुजेजलियजेळ ॥

६९

६९

पाठ - ओं - ५९ अपार ओं - ६० साचाचिचिरूप - ओं - ६१ कळविले ओं - ६५ अनुसरा

तें कथें सिफां कहां इल ॥ पारितास्त हरू पानयेल ॥ बोलवरी ॥ ७३ ॥ ह्मणों निविसरा काययेणें ॥ तो ईश्वर कवळ बाकवणें ॥
 जो आपुलें मान्मणें ॥ आपणाचि ॥ ७४ ॥ तरी मागील ध्वनी आंत ॥ मजगमलासा विद्याचि मोहित ॥ जेबला ल्कारे असे ह्मणतें ॥
 परिसबापा ॥ ७५ ॥ अर्जुन जणें जेणें भेद ॥ तुझे कांचि न बोधे ॥ तें सों तें सों चिने दे ॥ निरूपि जेल ॥ ७६ ॥ तो का इसंथाना व
 याग ॥ तयाचा कवण उपेग ॥ अथवा अधिकार प्रसंगा ॥ कवणायथ ॥ ७७ ॥ ऐसें जे कांहीं ॥ उक्त असे इंदुर्द ॥ तें आयवें चि पाही ॥ संग
 न आतां ॥ ७८ ॥ तों चित्त देई नि अवधारी ॥ ऐसें ह्मणों नि श्रीहरी ॥ बोलि जेल ते पुढारी ॥ कथा आहे ॥ ७९ ॥ श्रीकृष्णा जुनासी
 संग ॥ नसांडो नि सांगेल योग ॥ तो व्यक्त करुनि प्रसंगा ॥ ह्मणों नि वृत्ति दास ॥ ८० ॥ इति श्री सावायर्धे भिकायां ज्ञा
 न देव विरचिता यापचम ॥ ८१ ॥ ॥ श्रीकृष्णार्पणमस्तु ॥ ८२ ॥

श्रीगणेशायनमः ॥ मगरायानंदयोगसंज्ञया ॥ तौनिप्रभिप्रायअवधारिजो ॥ श्रीकृष्णायानंदीप्रालंजो ॥ योगरूप १ ॥ सहजैव
 ह्यरसचिंपारणं ॥ कैलेंअर्जुनालपीनाराध्यां ॥ ईशानिचअवधारपादूणं ॥ पातलोआद्या ॥ २ ॥ केसीदेवाचीयोरीनणिजे ॥ जेसे-
 ताहेलियातोयसेविजे ॥ कीर्तोचिचवीकरूनिषाहिजे ॥ तंवअमृतआहे ॥ ३ ॥ तेंसेंआत्मानुह्या जाहलें ॥ जेंआडसुईतवफाव
 लें ॥ नवधतराष्ट्रस्मिणतलें ॥ हेनपुसुतने ॥ ४ ॥ तुयासजयाचीनियेणबोलें ॥ रायाचहदयचोअवलें ॥ जेअवसरोआहेयेनलें ॥
 कुमराचिया ॥ हेजाणोनिमनोहोमिला ॥ ह्येणह्मातारगेमोहंनशिला ॥ येहवाबोलतगंभलाजाहाला ॥ अवसरोइय ॥ ५ ॥ परितेंतेंसेके
 सेनिहोइल ॥ जाल्यथाकेंसेपाहिल ॥ तेवांचयेरुरोषवेइल ॥ ह्येणोनिबहे ॥ ७ ॥ परिआपणचिनांआपुला ॥ निक्कियापरीसतोपला ॥
 जेतांसावादफावला ॥ श्रीकृष्णानुनाचा ॥ ८ ॥ तेणेंआनदाचेंनिधालेयणें ॥ साभिप्रायअंतःकरणें ॥ आतांआदरेसीबोलणें ॥ घडे
 लतया ॥ ९ ॥ तोगीतेमाजिषवींचा ॥ प्रसंगअसेंआदणींचा ॥ जेंसाक्षीराणवीअमृताचा ॥ निवाडजाहाला ॥ १० ॥ तेंसेंगीताथानि
 सार ॥ जेंविंवेंकसिंधुचंपार ॥ नानायोगविभवभाडार ॥ उघडलेंका ॥ ११ ॥ जेंआदिप्रकृतचेंविमवणें ॥ जेंशब्दब्रह्मासिनबोन
 णें ॥ जेथूनिगीतावल्लीचिंठाणें ॥ मंगहपावें ॥ १२ ॥ तोअध्यायसाहावा ॥ वरिस्माद्वित्याचियाबरवा ॥ संगिजेलद्वगोनिपरिस्मा
 वा ॥ चित्तदेउनी ॥ १३ ॥ माझामराठाचिबोलकोतुकें ॥ परिअमृतातेंपंजाजिकें ॥ ऐसींअक्षरगमिकें ॥ मेळवीन ॥ १४ ॥ जियेको
 वळिकेचिनिपाडें ॥ दिसतीनादीचेंरंगथोडे ॥ वेधेपरिमळाचेंवीकमांडे ॥ जयाचिनि ॥ १५ ॥ ऐकारसालपणाचियालोभा ॥ कींअ
 वणीचीहोतीजिभा ॥ बोलेंइंद्रियालागेकळभा ॥ एकमकां ॥ १६ ॥ सहजेंशब्दतरविषोथवणाचा ॥ परिरसनाक्षणेसहाआ
 मुचा ॥ द्याणांमिभावजायपरिमळाचा ॥ हानोचिहोइल ॥ १७ ॥ नवलबोलतीयेरखेचोवाहाणां ॥ देखताडोकापुंगेलागेधणां ॥
 तेदणतीउघडलीरवाणी ॥ रूपाचिहें ॥ १८ ॥ जेथसंपूर्णपदउभार ॥ तेथमनविधोवेवाहिरें ॥ बोलसुजाहोआधिकरे ॥ आलिं-
 णव-ओ-५-नव-ओ-६-हास्यानरा-आ-७-कें-किंबा-केंचेंतें-ओ-८-मायें-ओ-९-२-अमृतामहा-

गावया ॥ १९ ॥ ऐसी इंद्रियं आपुनलियाभावी ॥ झोबतीपरितोसुरिसिपणेंचोबुझावी ॥ जें साएकुलाजगचेवर्वा ॥ सहस्रकर ॥ २० ॥
तेंसंशब्दाचेव्यापकपणा ॥ देखजेअभाधारणा ॥ याहातयाभावाज्जाफावतीगुण ॥ नितामणीचे ॥ २१ ॥ हें असोनयाबोलाचलादेअ-
ली ॥ वेरीकैवल्यरसेवोंगरिलों ॥ हांप्रतिपत्तिमियांकली ॥ निष्ठाभासी ॥ २२ ॥ आतां आत्मप्रसानित्यनवी ॥ तेनिकरूक्मिवाणदिवो
॥ जोइंद्रियंतेंचोरूनिजेवी ॥ तयासीचिफावे ॥ २३ ॥ तथथवणानेंनियणें ॥ वीणथोनथांझावेंलागे ॥ हेमनाचेंनिनिजोंगे ॥ की-
जिजेना ॥ २४ ॥ अहोचबोलाचीबालीफुफुडिजे ॥ आणिवस्त्रानियाचिअंयाघडिजे ॥ मगसुखसीसुरवाडिजे ॥ सरवाचिमाजी ॥
॥ २५ ॥ ऐसंहकवारपणजरीयुडल ॥ तरीचहेंउपेणाजाडल ॥ यद्धवींआयवीगोष्टाहोडल ॥ मुकयाबहिरयाची ॥ २६ ॥ परितेंअसी
आनांआयवें ॥ नलगेथोनयानेंकडुसावें ॥ जेअदिकारियाथस्वभावे ॥ निष्कामकाम ॥ २७ ॥ जिहीआत्मबोधाचियाआवडी ॥ हे
लीस्वर्गसंसारकुणेंडो ॥ तेचानृनिर्णथिंचीगीडो ॥ नेणतीआगिक ॥ २८ ॥ जेंसावायसीचंदनाळरिजे ॥ तेंसाप्रकृतीयथहोनेणि
जे ॥ आणितोहिमाधुनचिजेविरवाजे ॥ चकोराचें ॥ २९ ॥ तेंभाभजनासीनरीदावावो ॥ आणीअज्ञानसीआनगावो ॥ क्षणोनिबोले
वयाविषयणाहो ॥ विशेषनाही ॥ ३० ॥ परिअमुवांदळींमंजसंगें ॥ तेंसज्जनंउपसहवेंलागे ॥ आतांसांगेनकायश्चरंगें ॥ निरो
पिलेंतें ॥ ३१ ॥ तेंबुद्दीहाआकळितांसाकड ॥ क्षणदुनिबोलीविषयेंसांपडे ॥ परिश्रीनिवन्निकपदीपउजियेंडें ॥ देखनमी ॥ ३२ ॥ जे
दिवहीनपविजे ॥ तोंदवीवीणदरिजे ॥ जरीअनींद्रियलाहिजे ॥ जानबळ ॥ ३३ ॥ नातराजेंधातुवालाहीनजोडे ॥ तेंलोहीचिपथरसां
पडे ॥ जरीदेंवयोंचडे ॥ परिमहाला ॥ ३४ ॥ तेंसीसादुरुक्षणाहोय ॥ तराकरिनाकाय आपुनोह ॥ क्षणकनिनेअपारभातेंआहे ॥ जा-
नेदेवक्षणी ॥ ३५ ॥ तेंगंकारणेंसीबोलेन ॥ बोलीअसुणचंअपदायिन ॥ भनींद्रियपरिभोगवोन ॥ इंद्रियांकरुंदो ॥ ३६ ॥ आइकायश्चशा
ओदार्य ॥ ज्ञानेंवराग्यएषवय ॥ हेसाहीगुणवय ॥ यस्तोमंजुय ॥ ३७ ॥ क्षणोनिनिष्ठापावन ॥ जोनिःसंगाचासांगात ॥ तोक्षणीयथार्थदे-
पाव ॥ ओ ॥ २० ॥ झोबता ॥ ओ ॥ २३ ॥ नीच ॥ ओ ॥ २६ ॥ विषयही ॥ ओ ॥ ३४ ॥ मन्दें ॥

तच्चित्त ॥ होई आता ॥ ३८ ॥ ॥ श्री भगवद्गुवाच ॥ ॥ अथाशितः कम्पलः क्षयकर्मकरो गिरः ॥ असन्ध्यासीत्त्वयोगोच्चगन्धर्धन
 चाक्रियः ॥ १ ॥ टी० आडकः आर्याः आशिषः आश्रितः ॥ हे एकनिमिषानाम् आशीर्वाधः ॥ येन्द्रवीरिन्नारि जतोज्ज्वदीन्दी ॥ तेष्वेव
 वि ॥ ३९ ॥ सोडिजुजयानासाचा आभासा ॥ तुरायागतीः चयन्यस्य ॥ दाहनाद्वदीनाहो अवकाशः ॥ दोहोगात्रो ॥ ४० ॥ जेसेनासाचेनि अ
 नरिसेपणो ॥ गका पुरुषान्दोनाय ॥ कदाहीमागो जाण ॥ एकनिमिषाया ॥ ४१ ॥ नादगकचिउदकमहेजे ॥ पौर्मसिनायादोर्मिरेजे
 ॥ तेसें भिन्नत्वजाणिजे ॥ योगसन्ध्यायाच ॥ ४२ ॥ आदकः सुकः सुकः सुकः ॥ अथतथिचितीयवाज ॥ अपदीना ॥ ४३ ॥ तेसा अन्धशचेनि आ
 पळी ॥ ४४ ॥ जेसोमही हउ दिजे ॥ जेणे अवसरे ॥ करणापाव ॥ ४५ ॥ जेने सोडावनकरो ॥ परिभाषापनादशरीर ॥ आणिवुद्दीहाकरेन
 धारे ॥ जोतीचेनि अनुकारे ॥ जेणे अवसरे ॥ करणापाव ॥ ४६ ॥ जेने सोडावनकरो ॥ परिभाषापनादशरीर ॥ आणिवुद्दीहाकरेन
 निपळवरी ॥ जायेचिना ॥ ४७ ॥ गेसातोचिसन्ध्यासे ॥ पाथागापीथसे ॥ ताचिभरवसनिमो ॥ व्यागभर ॥ ४८ ॥ वांचूनिउचितकर्म
 प्रासंगिक ॥ तयातेहाणेहेसाडावढक ॥ तगाटाकोटाको आणिकराक ॥ मोडीचिने ॥ ४९ ॥ जेसासाकृभियांनेपएक ॥ सर्वेचिन्निवि
 जेआणिक ॥ तेसेनि आमहाचापाडक ॥ वचवाया ॥ ५० ॥ गृहस्थाद्यमानेवोद्रे ॥ कपार्थीचिआहसहजे ॥ कोर्तेचिसन्ध्यासे
 वादविजे ॥ सरिसेपुटनी ॥ ५१ ॥ द्वाणुनिअग्निसेवानसादिना ॥ कर्माचरखानांदिना ॥ आहयोगसुखस्मावता ॥ आपणपणचि
 ॥ ५२ ॥ श्लोः यसन्ध्यासमितिमाहुर्योगंतविहृपाडव ॥ नह्यसन्ध्याससंकल्पोयोगोसवतिकथन ॥ ५३ ॥ टी० गेकेसन्ध्यासीतोचियोगी
 ऐसीएकवाक्यतेचीजगी ॥ गृहाउभविदोअनेगी ॥ शास्त्रानरी ॥ ५४ ॥ जेथसन्ध्यासिलासंकल्पतुटे ॥ तेथचियोगाचेसारभटे ॥ ऐसे
 हेअनुभावाचेनिघटे ॥ सांचंजया ॥ ५५ ॥ श्लोः आरुरुक्षार्मुनेयोगकर्मकारणमुच्यते ॥ योगारूढस्यतस्यैवशमः कारणमुच्यते ॥ ५६ ॥
 टी० आतोयोगाचचा निमथा ॥ जरीठाकावाआधिपार्या ॥ तरोसोपानायाकसंपथा ॥ चुकाड्योणे ॥ ५७ ॥ योगेयमनयमांचेनिनळवटे ॥
 पाठः ओः १० हेजाणिजे ओः ४३ गाताः ओः ४६ वरीः ओः ४८ मोडानः ओः ५० सन्ध्यासमवांतेवजे

रिगे आसनाचि येषां लबाटे ॥ येई प्राणायामाचे नि आडकांटे ॥ वरीं तांगा ॥ ५५ ॥ मग प्रत्याहाराचा आधाडा ॥ जो बुद्धीविशालिह पाषां नि सर-
डा ॥ जेथ हृदये सांडितो होडा ॥ कडे लग ॥ ५६ ॥ तरी अभ्यासाचे नि वळे ॥ प्रत्याहारी नि गळे ॥ नैवेत्ये गेल्ले दाळे दाळे ॥ वैराग्याची ॥ ५७ ॥
ऐसा पवनचे नि पावारे ॥ येतो धारणेचे नि पांसे ॥ क्रमोच्यानाचं चवरे ॥ सांडेतं व ॥ ५८ ॥ मगतया मार्गाचे ग्राव ॥ पुरेल प्रवृत्तीची हाव ॥ जेथ-
साध्य साधनाखेव ॥ समर संहारे ॥ ५९ ॥ जेथ पुढील पेंस पांरुखे ॥ मागील स्मरणें ते वाके ॥ ऐसिये सारि सिये झुमिके ॥ समाधि राहे ॥ ६० ॥
येणें उपायें योगीगारूढ ॥ जो निरबधि जाहला योगी ॥ तयाचिया चिन्हाचा नि वाड ॥ सांगेन आडकें ॥ ६१ ॥ श्लो० यदा हि नैवेद्यार्थेषु ब्रह्म
स्तनुषज्जते ॥ सर्वसंकल्पसंन्यासी योगारूढस्तदोच्यते ॥ ६२ ॥ टी० नरीजयाचिया इंदियांचिया घरा ॥ नाहीं विषयांचिया येर झारा ॥ जो
आत्म बोधाचा वोवरा ॥ पडुडला असे ॥ ६३ ॥ जयाचं संपदुःखाचें नि आंगें ॥ द्वागडले मानसचे वोने घे ॥ विषय पासीं हो आलियासे न
रिघे ॥ हे काय ह्मण उंनि ॥ ६४ ॥ इंदियें कर्मचा नांगी ॥ वाटिनी पुरि कुंही ॥ फळ हे नृची चाड नाहीं ॥ अंतः करणी ॥ ६५ ॥ असते नि देह ए-
तुला ॥ जोचे तुचि दिसे नि देला ॥ तो नि योगारूढ जन्मला ॥ वाळखे वृं ॥ ६६ ॥ तें थ अजुन ह्मण अनंता ॥ हे मजो विसोबहु आडकता ॥ सा-
गतया ऐसी योग्यता ॥ कवणें दीजे ॥ ६७ ॥ श्लो० उद्धरेदात्मनात्मानमात्मानमवसादेयेत् ॥ आत्मवत्वात्मनो बंधुराखे वरि पुरात्म-
नः ॥ ६८ ॥ टी० तंव हासो नि कृष्ण ह्मणो ॥ तूं झोन वत्स माहो वृज ॥ कवणासि काय दिजे लक्षणें ॥ अंतर्गत ॥ ६९ ॥ पेंच्या मोहा नि वे-
शेजे ॥ बळिया अविद्या नि दिन हो इजे ॥ तें वेगो दुःख संच भ्रमो गिजे ॥ जन्म मृत्यूचा ॥ ७० ॥ पावीं अवसातें येचे वो ॥ तें तें अवघें नि हो-
यबावो ॥ ऐसा उपजे नित्य सद्भावो ॥ तो हो प्राणायामांचि ॥ ७१ ॥ ह्मण फुनि आपणचि आपणया ॥ घात किजत थसे धनंजया ॥ चिंत दे-
नि ना थिलिया ॥ देहाभिमाना ॥ ७२ ॥ श्लो० बंधुरात्मात्मनस्तस्य येन स्निग्धात्मनजितः ॥ अनात्मनस्तु शत्रुत्वे वेततां त्वेष शत्रुवत् ॥ ७३ ॥
पाठः ओवीः ५७ नरवीं, वैराग्याचियेः ओ० ५८ इयं ओ० ५९ कर्मनिः ओ० ६० इयं ओ० ६१ दः सुखसमः

दी० हाविचंरूनिअहंकारसांडिजे॥ मगअसतीचिवस्तुहांडिजे॥ नरोआपुलीस्वस्मिंसहजे॥ आपणकली॥ ७१॥ येहवेकीशकिहका
 चियापरी॥ तोआपणयांआपणवैरी॥ जोआत्मबुद्धिशरीरी॥ नारुस्थळी॥ ७२॥ केंसेमासीनियेवेळे॥ निंदेवांआधेळेपणाचेडोम
 हळे॥ कीअसतेआपुलेडोळे॥ आपणझाकी॥ ७३॥ काकवणएकस्त्रमलेपण॥ मीतो नव्हेगाचोरलोझणें॥ एसा नाथिळाछंदूअ
 तः करणें॥ घेऊनिठोके॥ ७४॥ येरवांदायंतं तोचिआहे॥ परकाइकीजेबुद्धितेंसीनोहे॥ देवास्वमीचेनिघाये॥ कींमरेसाचे॥
 ॥ ७५॥ जेसीतिशकाचेनिआणमारे॥ नळिकासोविल्लोयेरोमाहरे॥ नरोतिणेउडावेपरिनपुरे॥ मनशंका॥ ७६॥ वायांचिमानणि
 की॥ आहुंवेदियेंआंवळी॥ दिटांतुनळा॥ धरूनिठोके॥ ७७॥ झणेवांधनासीफुडा॥ ऐमियाभावेनियापडुखडा॥ कींमोकाळि
 यापायाचाचवडा॥ गोवीअधिक॥ ७८॥ ऐसाकाजंवीणाआतुडला॥ तोसागपाकायआणिंकंवांधला॥ मगनसांडीचजरीनेला॥
 तोडनिअर्दी॥ ७९॥ झणारुनिआपणयांआपणाचिरिपु॥ जेणेवाहविलाहासकल्यु॥ येरस्वयंबुद्धीझणेबापु॥ जॉनाथिलेनेये॥ ८०
 ॥ श्रुती० जितान्मनःप्रशान्तस्यपरमात्मासमाहितः॥ शीतोष्णसुखदुःखेषु तथा मानापमानयोः॥ ७॥ दी० नयास्वांतःकरण
 जिना॥ सकळकामोपशाना॥ परमात्मापरोता॥ दूरनार्हा॥ ८१॥ जेंसाकिडाळाचादोषजाये॥ नरोपंधरेंतेंचिहाये॥ तेंसेजोवा
 ब्रह्मत्वआहे॥ सकल्यलापी॥ ८२॥ हाघटाकारजंसी॥ निमालियातयाअवकाशा॥ नलगेमिळांजणेंआकाशा॥ आनावाया॥
 ॥ ८३॥ तेंसादहाहकारनाथिला॥ हासमूळजयाचानाशिला॥ तोचिपरमात्मासंचला॥ आधींचिआहे॥ ८४॥ आनांशीतोष्णाची
 यावाहाणी॥ तेथसुखदुःखाचीकडसणी॥ इयेनसमातीकाहोबोलाणी॥ मानापमानाची॥ ८५॥ जंजियेवातामूर्यजाये॥ तेउतें
 तेजाचेविश्वहीये॥ तेंसेनथापावेंतेंआहे॥ तोचिझणउनी॥ ८६॥ देखेंमंधोनिमुटतीधारा॥ तियानरूपतीजेंसियासागरा॥

पाठ. ओ. ७२ नारुस्थळाअथवा नारुस्थळ. ओ. ७७ दिटांत. ओ. ७९ आधा.

७

७

तं संप्रसाशं योगीश्वरा ॥ नन्दती आनं ॥ ८७ ॥ श्लो० ज्ञानविज्ञानतुमात्मा कूटस्थो विजितो द्रव्यः ॥ युक्तद्रव्यते योगीसम
 लोष्टाशमकांचनः ॥ ८ ॥ दी० जोहाविज्ञानात्सकमावो ॥ तथाविवरिताज्जाहालावावो ॥ मगलागलाजवपाहो ॥ तवज्ञानतेतोचि ॥
 ॥ ८८ ॥ आताव्यापकको एकदेशी ॥ हेऊहापोहिजे ऐसी ॥ नेकरावतेली अपेसी ॥ दुजेनवीणा ॥ ८९ ॥ ऐसाशरीरोचिपरिको-
 तुके ॥ परब्रह्मचैनिपाडे तुके ॥ जेणोजितिलोक ॥ इद्रियेगा ॥ ९० ॥ तोजिते द्रव्यसहजे ॥ तोचियेय युक्तसाणिजे ॥ जेणेंसने
 शीरनेणिजे ॥ कवणेकाळी ॥ ९१ ॥ देखेंसो नयाचेंनखळ ॥ मेरुयेसणेंदिसाळ ॥ आणिसातयेचेंडिखळ ॥ कींसरिसेंविमा
 नी ॥ ९२ ॥ पाहातापृथ्वीचेंमोलथोडे ॥ ऐसेंअनघ्यरत्नचोखडे ॥ देखेंदगडाचेनिपाडे ॥ निचाडोऐसा ॥ ९३ ॥ श्लो० मुहब्बि
 ब्राह्मदासीनमध्यस्थहेयबंधुषु ॥ साधुघृणिचपपेपुसमबुद्धिर्बध्निष्यते ॥ ९४ ॥ तेथमुहदआणिशत्रु ॥ काउदासआणि-
 मित्र ॥ हाभावभेदविनिवृ ॥ सत्यूकेंचा ॥ ९४ ॥ तथाबधुकोणकात्वाचा ॥ हेधियाकवणतयाचा ॥ मीचिविषयेसाजयाचा ॥ बो
 धजाहाला ॥ ९५ ॥ मगतयाचियेहथी ॥ अधमीनमअसेकिरीटी ॥ काथपरिसानियेकसवटी ॥ वानियाकीजे ॥ ९६ ॥ तेजे
 सीनिर्वीणवर्णचिकरी ॥ तेसीजयाचीबुद्धीचराचरी ॥ होयसाम्यचिउजरी ॥ निरंतर ॥ ९७ ॥ जेनेविश्वालंकाराचेविसुरे ॥ जरी
 आहातीआननेआकरे ॥ तरीघडतेएवनिमंगारे ॥ परब्रह्मे ॥ ९८ ॥ ऐसेंजाणेंजेदरेव ॥ तस्मावलेंतथाभाववे ॥ ह्यणेनिअहाचषाहच
 नमुकवे ॥ येणेंआकारचिं ॥ ९९ ॥ घापेपदामाजिहथी ॥ दिसेतंतूचिसंघमृष्टी ॥ परिताएकवांचूनिगोष्टी ॥ दुजोनाही ॥ १०० ॥ ऐसेनिप्र
 तीतीहेगवसे ॥ ऐसाअनुभवजयानेंअसे ॥ तोचिसमबुद्धीहेअनारसे ॥ नव्हेजाणें ॥ १०१ ॥ जयाचिनावतीर्थगती ॥ दर्शनेप्रशस्तीसिंवा
 बी ॥ जयाचेनिसंगेब्रह्मभावो ॥ प्रतासही ॥ १०२ ॥ जयाचेनिघेतेंधर्मजिये ॥ दिढीमहासिंहोतेंविये ॥ देखेंसुगं सरवादिइयो ॥ खेळजे
 पाठ ॥ ओ० ८७ बाधतीना ॥ ओ० ९८ जेतेंविश्वअलंकाराचे घडले ॥

याचा ॥३॥ विषयं जग आठ बला चिन्ता ॥ नरो दि आपुली योग्यता ॥ हं असंतयान्तं शंसितो ॥ लाभ आशि ॥४॥ श्लो० योगीयुजी
 न सतत मात्मानरहसि स्थितः ॥ एकार्कयन चित्तात्मा निराशरपरिग्रहः ॥१०॥ टी० पुटनी अस्तु नो मंसे ॥ जयापादिले अद्वैत
 दिवसे ॥ मग आपणयांचि आपणा अस्म ॥ अरवोदित ॥५॥ ऐसियादृष्टीजो विवेकी ॥ पार्थो तो एकाकी ॥ सहजे अपरिग्रही ज्योति
 होलीकी ॥ तो चिद्वर्ण उर्नीत ॥६॥ ऐसिये असाधारण ॥ निष्पन्नाची लक्षण ॥ आपुलो नवद्वय सपण ॥ श्रीकृष्ण बोल ॥७॥ जीजा
 निर्याचा बाप ॥ देवगोयांचि दीक्षा दीप ॥ जयादादलाचा स कल्प ॥ विश्वरची ॥८॥ प्रणवाचिये पंढ ॥ जाहाल शब्द ब्रह्मा जे
 ॥ तजयाचिये यशश्चाकुटं ॥ वेद न पुर ॥९॥ जयाचो न अंग केंते ॥ आवोर विशशीचिये वर्णजे ॥ स्मण उं न जग हं वंसे ॥ वीण अ
 सेतया ॥१०॥ हांगाना मचि एक जयाच ॥ पादनांग नदी दिसंटाच ॥ गुण एक ककयतयाच ॥ कलि शीलतु ॥११॥ स्मणो नि अमो
 हं वानणे ॥ सांगो नणां कवणाची लक्षण ॥ दावावी भियेयेणे ॥ काया लित्वा ॥१२॥ ऐकू हे नाचा वावो चि फुडी ॥ ते ब्रह्म विधा कि जे लउय
 डी ॥ तोर अर्जुना पदिये हे गोडी ॥ नाश लह न ॥१३॥ स्मणो भितें न से वोलणे ॥ नव्हे संपातळ आड लावणे ॥ केल मन विवगळ वाणे ॥ भो
 गावया ॥१४॥ जया सोह भाव अटक ॥ मोक्ष सुरवालागी निरंक ॥ नयाचिये दीक्षा झुणें कळंक ॥ लागेल तुझिया मेमा ॥१५॥ विषयं अहं
 भाव जयाचा जाइल ॥ मोतें चि हा जरी होइल ॥ तर रसगकार्य केजेल ॥ एक लेया ॥१६॥ दीतो चि पाहतां निवजे ॥ कांतो डमरो निबो लि
 जे ॥ नातरी दादू निवें वदीज ॥ ऐ संकाण आहे ॥१७॥ आपुलिया मना बरो ॥ असमाई गोदी जीवां ॥ ते कवणें सिचा बळावो ॥ जरी एन्व
 जाहले ॥१८॥ इया काकुळती जनादने ॥ अन्या पदेशाचे निहाता मने ॥ बोला माजि मन मने ॥ आलिगु सरले ॥१९॥ हं परसता जरि
 कानडे ॥ तरि जाण पापाया उघड ॥ श्रीकृष्ण सुरवाचे चिरपडे ॥ वातले या ॥२०॥ हं असो वयसे निशंवदी ॥ जें सें एक भविंय वंझो
 पार ॥ ओ० १ माजिवें ॥ ओ० ११ आकलशील ॥ ओ० १२ नेणे ॥ ओ० १४ सपतळ ॥ ओ० १५ हा अटक ॥ योगिया

॥ मगनेमोहाचीत्रिपुटी ॥ नाचोलागे ॥ २१ ॥ तें सें जाहालें श्रीअनंता ॥ गें संतो र्मान्मणतां ॥ जरीनयाचानदेखतां ॥ अमिशयएय ॥ २२ ॥ पाहापांनवलकेंसंचेज ॥ केंउपदेशकेंउतेंझंज ॥ परिपुटंवालआचेंभोज ॥ नाचतंअसे ॥ २३ ॥ आवडींअगिलाजरी ॥ व्यसनआणिनशीगरी ॥ पिसंआगिनसुलरी ॥ नरितेंनिकाइ ॥ २४ ॥ द्वाणउंनिभावाथंनोएसा ॥ अर्जुनगेमिग्र्यचाकुवासा ॥ कींसुखेंभंगारलिंयामानसा ॥ दर्पणो ॥ २५ ॥ यापरीबापपुण्यपवित्र ॥ जरीभक्तिबोजांमिसंसेत्र ॥ मोश्रीरुणाकृपपात्र ॥ याचिल्लो ॥ २६ ॥ होकींआत्मनिवेदनातळींची ॥ जेपरिठिकाहीयसारव्याची ॥ पार्थअधिद्यात्रीतेंथिची ॥ मातृकागा ॥ २७ ॥ यासोचिगोसावोवरनेवानिजे ॥ मागापाइकाचागुणघेइजे ॥ ऐसाअर्जुनतोसहजे ॥ पदियंहरा ॥ २८ ॥ याहाणंअनुरगेभजे ॥ जेप्रियोचनेंमानिजे ॥ तेंपतीहानिकायनवाजिजे ॥ पतिव्रता ॥ २९ ॥ तेंसाअर्जुनचिविशेषेस्मवावा ॥ ऐसंआकडलंमजजीवा ॥ जेतोत्रिभुवनींनयांदवा ॥ एकायननजाहाला ॥ ३० ॥ जयाचियाआवडीचेंनिपंगे ॥ असूर्तहिंमूर्तिअवंग ॥ पूर्णादिपरिलोगे ॥ अवस्थाजयाची ॥ ३१ ॥ तंवश्रोनेहणतीदेव ॥ केसीबोलतीहवाव ॥ कायनादातेंहनवरव ॥ जिणोनिआर्ता ॥ ३२ ॥ हांहानवलनोहंदशी ॥ मन्हादीबोलींजतरेशी ॥ वाणउंमरताहेआकाशी ॥ साहित्यरंगाची ॥ ३३ ॥ कैसेउंचेखचोदिएंसनागर ॥ आगिभावाथपंडंगार ॥ हेविस्डोकाथकुसुदीपार ॥ मोवियाहोती ॥ ३४ ॥ चाडचिंचिहडेश ॥ ऐसीमानोरथांदयेथोरी ॥ तेणेंविचळंअंतरां ॥ तेंथडोलआला ॥ ३५ ॥ तेंनिदुनितोसंजणितलें ॥ मगअवधानधासुणितलें ॥ नवलपडवकुळीपांहलें ॥ कृष्णादिवसं ॥ ३६ ॥ देवकियाउदरीवांहला ॥ यशोदासायासेपांढिला ॥ शेरबंडपंगलेला ॥ पांडवासि ॥ ३७ ॥ द्वाणउंनिवृहदिवसवाळगावा ॥ काअवसरूयाहोनिविनवावा ॥ हाहीसोमनयासुंदेवा ॥ पंडचिना ॥ ३८ ॥ हेंअसोकथासंगेवेगी ॥ मगअर्जुनद्वाणसलणी ॥ देवाइयेसंतंनंदेंओगी ॥ नठकतोमाझा ॥ ३९ ॥ येद्वयोयालक्षणाचियाभिजसावा ॥ मोपाठः श्रीः २८ नवनिजे, मगः श्रीः ३३ वानं, ओः ३४ सेगितआहती, ओः ३५ निचाडाः

अपांडे कीरअपुरा ॥ पुरितुमचेनिबोलेंअवधारा ॥ धारावेंजरी ॥ १०॥ जीतुस्तीनिनंदयाल ॥ तरोव्रह्ममियाहोइजल ॥ कायजाहोलेंअ
 प्यासिजल ॥ सागलज ॥ ११॥ हाहानंगां कवणार्चकाहाणी ॥ आइकोनिस्त्राधिजनअसांअंतः करणी ॥ ऐसीजाहोलेंपणाचिनिशिरया
 पी ॥ कायसीदेवा ॥ १२॥ हेंआगेम्याहोइजोका ॥ येतुलगासावा आपुलपणेंकोजोका ॥ तंवहांसांनिश्रीलुखादोका ॥ करूह्मणती ॥ १३
 ॥ देखासंतोषएकनजोडे ॥ तवचिमुखाचेंसंधसाकंड ॥ मगजोडुलियाकवणेकोडे ॥ अपुरेंअसां ॥ १४॥ तेंसासवेंश्वरबळियासेवक ॥
 ह्मणोनिब्रह्महीहायतोकांतुक ॥ परिक्रमाभारआतळापिक ॥ देवाचनि ॥ १५॥ जोजन्मसहअचियासाधो ॥ इद्रादिक्रहंमहाग
 भेदी ॥ तोआधीनकेतुळाकिरीटी ॥ जंबोलहानमाद्र ॥ १६॥ मगएकाजेंपोडवें ॥ ह्मणितलेंम्याव्रह्महोआवें ॥ तेंअशेषहोदेवें ॥ अ
 वधारिलें ॥ १७॥ तेंथएसंचिएकविचारिलें ॥ जगाब्रह्मलंचडाहळुजाहोल ॥ परिदुदारांगंरायआहआलें ॥ बुद्धीचिया ॥ १८॥ येह
 वींदिहसत्तरीयाअपुरी ॥ परिवराग्यवसनांचेनिभर ॥ जसाद्रमायमहुर ॥ सोडोनिआलो ॥ १९॥ ह्मणोनिमामिफळींफळतो ॥ ययासि
 वेबनलगेलांतां ॥ होयविरक्तएसाअनता ॥ भरवंसाजाहाला ॥ २०॥ ह्मणेंजेंजेहाअधिघाल ॥ तेंभारसींचयाफळुळ ॥ ह्मणोनि
 सागीतलानवचेल ॥ अस्मासवाया ॥ २१॥ ऐसींविचरोनियांओहरी ॥ ह्मणितलेंतियअकसरी ॥ अजुनाहाअवधारी ॥ पंथराज ॥ २२॥
 तेंथमृतीतरूचाबुडो ॥ दिसतीनिवृत्तिफळ्यांचियाकांडी ॥ जियेमार्गोचाकापडी ॥ महेशआसुनी ॥ २३॥ पंथांगितेंदेवाहिलो ॥ आड
 चींआकाशीनिघालो ॥ कींतंथ अनुभवाचापाडलो ॥ धारणपडिला ॥ २४॥ तिहीआत्मबोधाचेंनिउजारे ॥ धांवयेतलोएकसरें ॥
 कींएरसकळमार्गनिदसुरें ॥ साडनिया ॥ २५॥ पाठीमाद्वर्षयेणेंआले ॥ साधकोचेसिद्धजाहोले ॥ आत्मनिदयोराले ॥ येणेंचिपेथें
 ॥ २६॥ हामार्गजेंदंभिवज ॥ तेंताहीनसूकबिसरिजे ॥ रात्रिदिवसेनिजे ॥ वांटइये ॥ २७॥ चान्नोपाउलजेथपडे ॥ तेंथअपवर्गनि
 पाट ॥ ओं ॥ २१ माझेहोईल ॥ तें ॥ ओं ॥ २५ सांगेलस्तमुखें ॥ ओं ॥ २९ मांडोनि ॥ ओं ॥ २९ अनुदीन ॥

रवाणीउघडे ॥ आकाशालियातरिजोडे ॥ स्वर्गसुख ॥ ५८ ॥ निगिजेपूर्वालियामोहरा ॥ कांथेइजेपश्चिमेचियाघरा ॥ निश्चलरणेशु
धरी ॥ चालणेंएथिवें ॥ ५९ ॥ योगमार्गेजयाथाजाइजे ॥ तोगाव आपगाचिहाइजे ॥ हेंसांगोकायसहजे ॥ जाणसीतं ॥ ६० ॥ तेथेपा-
थेंसिणितलेवा ॥ तरितेंविमगकेळो ॥ कांआर्निमसुंदोर्निनकादावा ॥ बुडतूंजीमी ॥ ६१ ॥ तंवकृष्णहणतीऐसे ॥ हेउत्सखबोल
णेंकायसे ॥ आसीसागतसांओपेसे ॥ वरिपुशिलेनुवा ॥ ६२ ॥ श्लो० शक्चोदेशप्रतिष्ठाप्यविजितासनमात्मनः ॥ नाखिच्छंतंनानिवा
चंचेलाजिनकुशान्तरम् ॥ ११ ॥ टी० तरिंविशंपंआतांवांलिजल ॥ योरतेंअनुभवेंउपेगाजाईल ॥ ह्मणेनिनेसंएकलागेल ॥ स्थान
पाहावें ॥ ६३ ॥ जेथआराणुकेचेंनिकांडं ॥ वेंसलियाउवांनावडे ॥ वेराग्यासिदुणीचदे ॥ देखिलियाजे ॥ ६४ ॥ जोसंतोवसविलाखा
वो ॥ संतोषासिसांवावो ॥ मनाहोयउत्सावो ॥ धंयाचा ॥ ६५ ॥ अग्यासुकिआपणायोतेंकरी ॥ न्हदयातेंअनुभववरी ॥ ऐसीरम्य
पणाचीथीगी ॥ अखंडजया ॥ ६६ ॥ जयाआडजानांयाथी ॥ तपश्चर्यामनोरथा ॥ पारवांडियाहीआस्था ॥ समूळहोय ॥ ६७ ॥ स्वभावें
वादेयतो ॥ जरिवरपडाजाहान्नाअवविता ॥ तरिसकामहीपरिमाद्योता ॥ नियोविसरो ॥ ६८ ॥ ऐसेनिनराहूयांनंराहवी ॥ म्हा
मतयातेंबेसवी ॥ थापटूनिचवी ॥ विरकीतें ॥ ६९ ॥ दृगल्यबरेसांदिजे ॥ मगनिवांताएथेंचिअसिजे ॥ ऐसेथुंगारियांदिउप
जे ॥ देखतरवेवो ॥ ७० ॥ जेयेणेंमानवरवट ॥ आणितेंयेचिअंतचाखट ॥ जेथअर्धह्मनपगट ॥ डोळ्यांदसे ॥ ७१ ॥ आणिकही
एकपहोवें ॥ जेंसाधकीवसतहोआवें ॥ आणित्जनाचेंनिपायवं ॥ मळेचिना ॥ ७२ ॥ जेथअमृतानेनिपाडे ॥ मुळाहीसकटगेडो ॥ जो
डनीदांटेद्राडे ॥ सदाफळती ॥ ७३ ॥ गारुलापाउलाउदकें ॥ वेधोकाळावोअनिचोरवें ॥ निझरेकांविशेणें ॥ फलमंजये ॥ ७४ ॥ हा
आतपहीअकूमाळ ॥ जाणितेनराशीनळ ॥ पवनअनिनिश्चळ ॥ मदझळके ॥ ७५ ॥ बहुनकरूनिनिःशब्द ॥ दाटनरिवेश्यापट ॥
पाव. ओ० ७० वारिः ओ० ७१ मंजु. ओ० ७२ पाउलां, परिवंकाळोहीचोरवें.

शुक्रहन्पदपदं ॥ तेउतेनाही ॥ ७६ ॥ पाणिलगं हंसे ॥ दोनोचरोसारसे ॥ कवणे एकवेळेंसे ॥ तरेकोकिळहोको ॥ ७७ ॥ निरंतर
 नाही ॥ तरी आलीगेलीकाही ॥ होतुका मधूरही ॥ आद्रीनान झणों ॥ ७८ ॥ परिअवश्यकपाडवा ॥ एसाठावजोडावा ॥ तेथेनिपू
 दहोआवा ॥ कांशिवालये ॥ ७९ ॥ दोहोमाजि आवडते ॥ जेमानलुहोयचितें ॥ बहूत करुनि एकांतें ॥ वैसिजेगा ॥ ८० ॥ झणोंनिंते
 सतेजाणावें ॥ मनराहतं पाहावें ॥ राह्लुतथरचावें ॥ आसन एसे ॥ ८१ ॥ वरीचारवट मृगसेयडी ॥ माजिधनवस्त्राचीयंडी ॥
 तळवटींअमोडी ॥ कुशाकुर ॥ ८२ ॥ सकोमलसरिसे ॥ सुबदराहूतो आपेंसे ॥ एकपाटु तेंसे ॥ वोजायाली ॥ ८३ ॥ परिसावि
 याचिउचहोइल ॥ तरिआगहनडालल ॥ नाचतरोपावल ॥ भूमिदोष ॥ ८४ ॥ झणोंनिंतेसेनकरावें ॥ समभावेधरावें ॥ हे
 बहु असोहोआवें ॥ आसन एसे ॥ ८५ ॥ श्रुतीं तंत्रेकाग्रमनःकृत्यायतचिर्तोदयक्रियः ॥ उपविश्यासनेयुज्यादोगीमात्मावि
 श्रद्धये ॥ १२ ॥ टी० मगंतथ आपण ॥ एकाग्रअतः करण ॥ करुनि सुदुरुस्मरण ॥ अनुभविजे ॥ ८६ ॥ जेथेस्मरतेनिआदें ॥
 सवाल्हासाखिकेभरे ॥ जंवकाविययपणविरें ॥ अहंभावांचें ॥ ८७ ॥ विषयाचाविसरपदे ॥ इंदियांचाकसमसमोडे ॥ मनाचीयडोयडो ॥
 हुदयाभाजी ॥ ८८ ॥ एसे एक्यहंसहंज ॥ फावेतं वराहिजे ॥ मगतेणोचिबोधेवैसिजे ॥ आसनावन ॥ ८९ ॥ आतांभ्रागंतं भ्रागक
 री ॥ पवनानेपवनधरी ॥ ऐसीअबुभवाचीउजरी ॥ होचिलगी ॥ ९० ॥ प्रवृत्तिमाधोनामोहरे ॥ समाधिएलाहोउतरे ॥ आंध्रवैअ
 श्याभूसरे ॥ वैसुतरेवो ॥ ९१ ॥ मुट्टेचोमोदीऐशी ॥ तेचिसांगिजेलआतांपरियेसी ॥ तरिउरूयाजघनासी ॥ जडोनिघाली ॥
 ॥ ९२ ॥ चरणतळदेव्डी ॥ आधारदुमाचाबुडी ॥ सुधुदितेगादी ॥ संचरणां ॥ ९३ ॥ सव्यतोतळेंठेविजे ॥ तेणेंशिवाणीमअर्थाद
 जे ॥ तरेबेंसेनासहजे ॥ वामचरण ॥ ९४ ॥ गुदमेदाआतोती ॥ चारीअगुळेंनिगुती ॥ तेथेसाधसाधयेतोती ॥ सांडुनिया ॥ ९५ ॥ माजि
 णव ॥ ओ० ७७ ॥ हो० हीहो० ओ० ८५ ॥ बायें ॥ ओ० ८७ ॥ जेसे ॥ अथवातेंसे ॥ ओ० ८९ ॥ कठिण ॥ ओ० ९० ॥ व ॥

आंगुलरुक्मिणे ॥ तेथटांचें चिन्मत्तरभाग ॥ नंदेतिजविराजें ॥ पल्लवेनी ॥ ६५ ॥ उचलिलंकांनेणिजे ॥ तैसें पृष्ठात उचलिजे ॥ शु-
 ल्मद्वयधरिजे ॥ तें पोंचिमानें ॥ ९७ ॥ मगशरीरसंचुपाया ॥ अशेषहोसवया ॥ पाळींचामाथा ॥ स्वयंप्रहोये ॥ ९८ ॥ अजुनाहंजणा ॥
 मूळबंधचेंलक्षणा ॥ वज्रासनगोणा ॥ नामयसी ॥ ९९ ॥ ऐसीआधारसुंदपडे ॥ आणिआधींचामार्गमोडे ॥ तेथअपानआंतुलेक
 डे ॥ बोंहोदोलगे ॥ १०० ॥ श्लो० समंकायशिरोघ्रीवंधारयन्मचळस्थिरः ॥ समंस्थनामिकाग्रंस्त्रिंशानवलोकयन् ॥ १२ ॥
 दी० तवकरसपुटआपेंसें ॥ वामचरणीवेंसो ॥ बाहूस्फूर्तिदिसे ॥ थोरीवआली ॥ ११ ॥ माजउमरिलेनिंदें ॥ शिरकमळहोयगा
 डें ॥ नेवहारीचीं कवाडें ॥ लागूपाहानी ॥ १२ ॥ वरचिलेपातेंनदळती ॥ तळीचींतळीं पुंजाळती ॥ तेथअर्धोन्मीलितस्थिती ॥ उपजेत
 या ॥ १३ ॥ दिवाराहोनिआतुलेकडे ॥ बाहेरपाउलघालीकोडें ॥ तेठारीवावोपडे ॥ नामाग्रपीठां ॥ १४ ॥ ऐसंभातच्याआतचिरचें ॥ वा-
 हेरिमाणेंनवचें ॥ ह्यणोनिराहाणेंआधिचोदिठीचें ॥ तेथेचिदोय ॥ ५ ॥ आतांदिशांचीभेदोष्ट्यावी ॥ कांरूपानीवादपहावी ॥ हेचाड-
 मरेआघवी ॥ आसमया ॥ ६ ॥ मगकनकआठे ॥ हनुवटीहोदोतीदाटे ॥ तेगाहोहोर्जनिनेहटे ॥ वसस्थळी ॥ ७ ॥ माजिघंटिकालोपें ॥
 वरिबंधजोआरोपें ॥ तोजाळंधरूणिपें ॥ पंडुकुमरा ॥ ८ ॥ नामीवरिपोरेवे ॥ उदरहोथोके ॥ अंतरिंपांके ॥ हृदयकोश ॥ ९ ॥ साधि-
 घानावरिचिलेकांती ॥ नाभिस्थानतळवटी ॥ बंधपडेकिरीटी ॥ बोदीयाणातो ॥ १० ॥ ऐसीशरीराबाहेरलीकडे ॥ अप्रयासाबीपा-
 रवरपडे ॥ श्लो० प्रशान्तात्माविगतभीर्ब्रह्मचारिव्रतस्थितः ॥ मनः संयम्यमच्चित्तोयुक्तः आसीनमत्परः ॥ १४ ॥ दी० तंवआत-
 नायमोडे ॥ मनोधर्माची ॥ ११ ॥ कल्पनानिमो ॥ प्रवृत्तीशोमो ॥ आगमनविरमो ॥ सावियर्चा ॥ १२ ॥ क्षुधाकायजाहाली ॥
 निद्राकेंउतीगेली ॥ हआठवणहीहारपली ॥ नदिसेवेगा ॥ १३ ॥ जीमूळबंधेंकोडिला ॥ अपानमाथोतासुडला ॥ तैसेवें-

५

५

५

पाठ. ओ. ६. वास. ओ. वृत्ती. ओ. १०. बोदीयाण.

चिवरीसांकडला ॥ धरीफुगू ॥ १४ ॥ क्षामले पणो माजे ॥ उवाइलातायीगाजे ॥ मणिपुरंसांजुसे ॥ राहोनियां ॥ १५ ॥ मगथांब
 लियेबाहूढी ॥ सेंघघेऊनिघेरडहुढी ॥ बाळपणीचीकुहाडुळी ॥ बाहेरयाली ॥ १६ ॥ भीतरीवृळीनधरे ॥ कोठ्याप्राजिसंच
 रे ॥ कफपित्ताचेथारे ॥ उरेंनेदी ॥ १७ ॥ धातूंचेसमुद्रउलडी ॥ मेढाचपवतफोडी ॥ आतलीमज्जाकाटी ॥ अस्थिगत ॥ १८ ॥
 नाडीतेंसोडवी ॥ गात्रातेंविथडवी ॥ साधकातेंमडसावी ॥ परीविद्देवना ॥ १९ ॥ व्याधतंदावी ॥ सवेचिहारवी ॥ आपपृथ्वी
 कालवी ॥ एकवाट ॥ २० ॥ तंवयरीकडेधनुर्धरा ॥ आसनाचाउवारा ॥ शक्तिकरीउजगरा ॥ कुडलनीतें ॥ २१ ॥ नागिणीचेंपिलें
 ॥ कुंकुमेंनाहलें ॥ वळणघेडनिआलें ॥ सेजंमंमं ॥ २२ ॥ तेंसीतेंकुडलिनी ॥ मोटकीओटवळणी ॥ अधोसुरवसंपिणी ॥ निदे-
 लीअसे ॥ २३ ॥ विद्युल्लतेचीविडी ॥ वह्निज्वाळाचीधडी ॥ पंथरयाचीचांसडी ॥ घोंदीचेंजेशी ॥ २४ ॥ तेंसीसुबकआदली ॥
 पुदीहोतीदादली ॥ तेंवज्जासनेचिमुतली ॥ सावधहाय ॥ २५ ॥ तेंथुनक्षत्रजसेउलडलें ॥ कांसूर्यांचेंआसनमोडलें ॥ तेज्जें
 बीजविरूढलें ॥ अंकुरेशी ॥ २६ ॥ तेंसेविटयानेंसोडिती ॥ कवतिकंआगमोडामोडिनी ॥ कंदावरीशक्ती ॥ उठिलीदिसे ॥ २७ ॥
 सहजेंबहुतांदिवसान्चीभूक ॥ वरिचेवविलीतेंहोयमिष ॥ मगआवघोंपसरीसुख ॥ उद्धाउजू ॥ २८ ॥ तेंथत्तदयकोशातळववी
 ॥ जापवनमरेंकिरीटी ॥ तयासगळ्याचीमिठा ॥ देडनिवाली ॥ २९ ॥ सुरवेच्याज्वाळी ॥ तळींवेरीकवळी ॥ मासान्चीवडुबाळी
 आरोगूलागी ॥ ३० ॥ जेजवांसमास ॥ तेंथअहाचजोड्याउस ॥ पावीयकदोनीधाम ॥ दिव्यादीभरी ॥ ३१ ॥ मगतळवेतळद्द
 तशोधि ॥ उर्ध्वोच्चैरंबडमेदी ॥ द्वादाधेरंधी ॥ प्रत्यंगाचा ॥ ३२ ॥ अधोभागतरानसांडो ॥ परिनरवीचेंहासत्वकाटी ॥ तत्तच
 वृनिजडी ॥ पांजरेशी ॥ ३३ ॥ अस्थीचेंनळेनिरी ॥ शिगवेहेरवादिपा ॥ तेंनहाहेरविहोकरंप ॥ रोमदोजान्नी ॥ ३४ ॥ मगन-
 पाव-ओ-१४ सावियत्वी-ओ-२० वट-ओ-३१ ओबिस-ओ-३२ तळक-ओ-३३ आथार-

समधातुच्चासागरीं ॥ ताहानेलीघोटमरी ॥ आणिसर्वेचिउन्हाळाकरे ॥ खडखडीत ॥ ३५ ॥ नासापुढीनिवारा ॥ ज्ञाजातसे आंशु-
 खेंबारा ॥ तोगचियेरूनिमायारा ॥ आंतघाली ॥ ३६ ॥ तेथअधवरोतें आकुंचे ॥ उर्ध्वतळेंतें स्वांचे ॥ नयाखेवामाजिचक्रीचे ॥
 पदरउरती ॥ ३७ ॥ येहवोतरांदोन्हीतेव्हाचिभिलती ॥ परिकुंडलिनानवें कदुनितहोती ॥ तेतथातें ह्मणोंपरोती ॥ तुह्मीचिकय-
 एणें ॥ ३८ ॥ आइकंपार्थिविधातुआघवी ॥ आरोगितांकाहीनुरवी ॥ आणिआपातें तंववेवी ॥ पुसोनियां ॥ ३९ ॥ ऐसीदोनेमृतें
 रवाये ॥ तेवेळींसंपूर्णधायें ॥ मगसोस्यहोर्निराहे ॥ मरुसंपाशी ॥ ४० ॥ तेथतृतीचेनिमंत्तोषें ॥ गरळजेविबभिसुखें ॥ तेणें-
 तियेचेनिपीयूषें ॥ प्राणजिये ॥ ४१ ॥ तोअग्नीआतुनिनिघे ॥ पारिसबाह्यनिववूंचिलागे ॥ तेवेळीकसुबाधतीआंगें ॥ सांढिलीपुट-
 ती ॥ ४२ ॥ मार्गमोडितीनाडोचे ॥ नवविधपणवायूचें ॥ जायह्मणउर्निशरीराचें ॥ धर्मनाही ॥ ४३ ॥ इडापिंगळाएकवती ॥ गोंठोती
 न्हीसुटती ॥ साहीपदरफुटती ॥ चक्राचेहे ॥ ४४ ॥ मगशशीआणिमानु ॥ ऐसाकल्यजेजोअनुमानु ॥ तोवातीवरीपवतु ॥ शिवंस-
 तानदिसे ॥ ४५ ॥ बुद्दीचाफुलिकाविये ॥ परिमळझाणीनुरे ॥ तोहीशक्तीमवेसचरे ॥ मध्यमेमाजि ॥ ४६ ॥ तंववरिलें कडोनिहाळें ॥ बं-
 दामृताचेंतळें ॥ कानवडोनिमिळें ॥ शक्तिसुखी ॥ ४७ ॥ तेणेंनाळकरसभरे ॥ तोसर्वागामाजिसंचरे ॥ जेशिंचातेथपुरे ॥ प्राणपव-
 न ॥ ४८ ॥ तातलियेसुसे ॥ मेणनिघोनिजायजेंसे ॥ मगकांदलाराहेरसे ॥ वोतलेनो ॥ ४९ ॥ तेंसेंपिंडाचेनिआकारें ॥ तेकळाचिकाउ-
 वतरे ॥ वरित्वेचेनिपदरें ॥ पांघुरलीअसे ॥ ५० ॥ जेंसीआभाळाचीबुंधी ॥ करूनिराहेगभस्ती ॥ मगफिटलियादीप्ती ॥ धरूनिये-
 ॥ ५१ ॥ तेंसाआहाचवरिकारडा ॥ त्वेचाअसेपातोडा ॥ तोझडोनिजायकोडा ॥ जेंसाहोये ॥ ५२ ॥ मगकाशमीरीचेंस्वयंभ ॥ कारल-
 बीजानिघालेकोभा ॥ अवयवकर्तृचांभाव ॥ तेंसीदिसे ॥ ५३ ॥ नातरांसंध्यागरीचेंरंग ॥ काटुनिविळिलेंतेंआंग ॥ किंअंतरज्योति

पाठ- ओः ४० माजीः ओः ४१ वमिजः

चेलिंगा॥ निर्वां कल्लं ॥ ५६॥ कुंकुमाचंमराव ॥ सिद्धरसाचंयोनित्व ॥ मजपाहतांसावेव ॥ शान्तिचित्तं ॥ ५५॥ तं आनंदचित्रंवेले
 पा॥ नातरामीहासुखचंरूप ॥ क्रिस्तापतद्रुचंरोप ॥ थावलंजसं ॥ ५६॥ तोकनकचंपकाचाकळ्या ॥ कीअमृताचापूतळा॥ ना
 नासांसिनलामळा ॥ कोवळिकेचा ॥ ५७॥ होकाजेशारदियेचंनिवाले ॥ चंद्रविंवाणले ॥ कांतेजचिमूर्तबंसले ॥ आसनाब
 री ॥ ५८॥ नैसंशरीरहाये ॥ जेवळीकुडलिलीचंदणिये ॥ मगदेहाकृतिविदे ॥ कृतातगा ॥ ५९॥ वार्धक्यतराबहुडे ॥ तारुण्या-
 चीगंगावीविघडे ॥ लोपलीउधंडाळटशा ॥ ६०॥ वयसातरयेतुलवरी ॥ येदवीबाळाचाबळार्यकरी ॥ धैर्याचीथोरी ॥ निरुपम
 ॥ ६१॥ कनकद्रुमाम्यापालवी ॥ रत्नकळिकांनित्यनवी ॥ नगवैतेंसोद्विरवी ॥ नवीनिघनी ॥ ६२॥ दांतहीआनहोती ॥ परिअणडे
 सांजेजती ॥ जेसीदुवाहीबैसंपाती ॥ हिरेशाची ॥ ६३॥ माणिकुलियाचियाकणिया ॥ सावियाचिअणुप्रमाणिया ॥ तेंसियासंबी
 गीउधवतीआणिया ॥ रामाचिया ॥ ६४॥ करचरणतळ ॥ जेसीकांरांतोन्यले ॥ पारवाळांचेहोतीदोळे ॥ कायसांगो ॥ ६५॥ मिडान-
 राचेनिकोदादे ॥ मोतियेनावरतीसंपुटं ॥ मगशिवर्णजिमीउतटं ॥ धनक्तिपल्लवाची ॥ ६६॥ तेंसीपातियांचियेकवळियेनसमाये ॥
 दिठीजाकळीनिनिघांणहे ॥ आधिलीचिपरीहोये ॥ गगनाकळीती ॥ ६७॥ आइकंदेहहोयसोनियांचं ॥ परित्तावइयेवायूचं ॥ जे
 आपआणिपृथ्वीचं ॥ अशानाही ॥ ६८॥ मगसमुद्रांपलीकडीलदेख ॥ स्वर्गाचाआलोचआइके ॥ मनोगतबोळख ॥ सुगिथेचं ॥
 ॥ ६९॥ पवनाचावारिकांवळये ॥ चालतगंगुटकीपाउलनलगे ॥ येणेंयेणेंमसंगे ॥ येतीबहुतांसिही ॥ ७०॥ आइकेमाणाचाहात
 धरूनि ॥ गगनाचीपाउगीकरुनी ॥ मध्यमचेंनिदातराहुनी ॥ तूदयाआली ॥ ७१॥ तेंकुडलिनीजगदंबा ॥ जेंवेंतन्यचक्रवर्तीची-
 शोभा ॥ जयाविश्वबीजाचियाकोंभा ॥ साउलीकली ॥ ७२॥ जेधृत्यलिंगावीपंडी ॥ जेपरमात्मायाशिवाचीकरंडी ॥ जेप्रणवोची-
 पाठः ओः ५५ हेः ओः ६४ मानियाः ओः ६५ पारवाळांः ओः ७३ मणानीः ओः ७३ कवळियाः ओः ७३

उयडी ॥ जन्मसूमी ॥ ७३ ॥ हे असो ते कुंडलिनीबाळी ॥ त्वादया आंत आली ॥ तंव अनहानाचा बोली ॥ चावळे ते ॥ ७४ ॥ शक्तीचि स्थ-
 आंगलागले ॥ बुद्दीचें चेतन्य हांतें जाहलें ॥ तें तें जें आड किलें ॥ अळुमाळ ॥ ७५ ॥ घोषाचा कुंडी ॥ नाद बिनाचीं रूपडी ॥ प्रणवारि
 यामोडी ॥ रेशिची तेसी ॥ ७६ ॥ हे चि कल्यांव नरी जाणिजे ॥ परिकल्पितें कें वे आणिजे ॥ तरि नेणो काय गजे ॥ नित्ये वायो ॥ ७७
 विसरो निगेलां अजुना ॥ जंवना शाना हीं पवना ॥ तंव वाचा आधी गगना ॥ ह्मणुनि युमे ॥ ७८ ॥ तथा आनाहानाचे निमेष ॥ आ
 काश दुभट्ट मोलागे ॥ तंव ब्रह्मस्थानी चें वेगें ॥ सहज फिरे ॥ ७९ ॥ आइ के कमल गर्भाकरें ॥ जें महदाकाश दुसरे ॥ जेथें चेतन्य आ-
 धातुरें ॥ होई नि असिजे ॥ ८० ॥ तथा त्वादयाचा परिबारि ॥ कुंडलिनीया परमेश्वरी ॥ तेजार्चि शिदोरी ॥ विनियोगिनी ॥ ८१ ॥ बुद्दी
 चे निशांकें ॥ हातबोने नि कें ॥ हे तें तेथ न देखे ॥ तें संकलं ॥ निज कानी हार विली ॥ मग प्राण चि के वळ जाहाली ॥ ते वेळी कें सो गम-
 ली ॥ ह्मणावीण ॥ ८३ ॥ हो कां जे पवनाची पुनळी ॥ पांघुरली हो ती सो नें समळी ॥ तें फेडुनियां वेगळी ॥ ते विली निया ॥ ८४ ॥ नातरी वा
 यूचे नि आंगे झगटली ॥ दीपाची दृष्टी नि मटली ॥ कालखलखली नि हार पली ॥ वाजगेनी ॥ ८५ ॥ तें सीत दय कमळ वेहो ॥ दिसे
 जेसी सो नया चि सरी ॥ नातरी प्रकाश जळाची झरी ॥ वाहत आली ॥ ८६ ॥ मग तें त्वादय भूमी पो कळें ॥ जिराली कां एके वेळें ॥ ते
 सें शक्तीचें रूप मावळे ॥ शक्तीचि माजि ॥ ८७ ॥ तेव्हा नरी शक्तीची ह्मणिजे ॥ येतु हो तो माण के वळ जाणिजे ॥ आताना द बिंद नेणि
 जे ॥ कळायोती ॥ ८८ ॥ मनाचा हनमार ॥ कांपवनाचा आधार ॥ ध्यानाचा आदर ॥ नाहींपरी ॥ ८९ ॥ हे कल्पना घे सांडो ॥ तेनी हो
 दये परवडी ॥ हे महाभूताने फुडी ॥ आदणी देखा ॥ ९० ॥ पिंडी पिंडाचा प्रास ॥ मोहानाथ संकिचा दश ॥ परि हा उनिगेला उद्देश
 श्रीमहाविष्णु ॥ ९१ ॥ तथा ध्वनि नाचें कें गें सांडुनी ॥ यथार्थाची घडी झाडुनी ॥ उपनि विली म्या जाणुनी ॥ ग्राहो कथीते ॥ ९२ ॥
 पाव ॥ ओ ॥ ७९ स्थानी चें वेगें ॥ ओ ॥ ८० कर्मान ॥ ओ ॥ ८१ परि वारंग ॥ ओ ॥ ८४ जें सो ॥ ओ ॥ ८७ नित्ये ॥ ओ ॥ ९१ पिंड ॥ ७

प्रसो० युंजन्नेवंसदात्मानंयोगीनित्यतमानसः शान्तिर्निर्वाणपरमांमत्संस्थामधिगच्छति ॥ १७ ॥ दी० ऐकंशक्तीचेतेजज्जलांलोपे ॥
 तेथदेहाचेरूपहारपे ॥ मगतोडोळयागाजिलोपे ॥ जगांनिया ॥ १३ ॥ येहवीआधिलाचिऐसें ॥ सावयवतरिऐसें ॥ परिवायूचेंजेसें
 ॥ बळिलहोये ॥ १४ ॥ नातरकदंळीचागभा ॥ लुथीसाडोनिउभा ॥ कांअवयवचिनभा ॥ उदयलातो ॥ १५ ॥ तैसेंहोयशरीर ॥ तेतस्व
 णिजेस्वेचर ॥ हेपदहोतांचमत्कार ॥ पिंडजर्ना ॥ १६ ॥ देखेंसाधकनियोजिआये ॥ मागंणउलाचिबोलराहे ॥ तेथवाथीवाथीहोये ॥
 अणिमादिक ॥ १७ ॥ परितेगंकायकाजआणपया ॥ अवथारीऐसाधिनजया ॥ लोपआथीभूतजया ॥ देहाचादेहो ॥ १८ ॥ पृथ्वीति
 आपविर्धी ॥ आपातेतेजजिर्धी ॥ तेजातेपवनहूर्धी ॥ त्दद्यामाजी ॥ १९ ॥ पाठीआपणएकलाउरे ॥ परिशरीराचिनिअबुका-
 रे ॥ मगतोहिनिगेअंतरे ॥ गगन्नाभिळे ॥ ३० ॥ तंवळींकुंडलिनीहेमाषजाये ॥ मगमारुतेऐसेनामहोये ॥ परिशक्तीपणतेआहे
 ॥ जंवनभिकेशिर्धी ॥ १ ॥ मगजाळंधरसांडी ॥ ककारंगतफोडी ॥ गगनाचियेपाडी ॥ पैगीहोये ॥ २ ॥ तेंओंकारानियेपाटी ॥ पाय
 देतउवाउवी ॥ पश्यंतीयेचियेपाउवी ॥ मागाघाली ॥ ३ ॥ पुढेंतन्मात्राअर्थवरी ॥ आकाशाचाअंतरां ॥ भरतींगमेसागरी ॥ सरिता
 जेवी ॥ ४ ॥ मगब्रह्मरंध्रीस्थिरावोनी ॥ सोहंसावाचाबाह्यापसरुनी ॥ परमात्मालिगाधावोनी ॥ आगाघडे ॥ ५ ॥ तंवमायाभूता
 चीजचनिकफिटे ॥ मगदेहोमिहोयझुटे ॥ तेथगगनासकटाटे ॥ समरसीतिये ॥ ६ ॥ पैमेघाचेभिसुखीनिवडला ॥ समुद्रकावा
 घीपडिला ॥ तोभागुतजैसाआला ॥ आपणपयां ॥ ७ ॥ तेबिपिंडाचिभिमिषे ॥ पदांपदपवेशी ॥ तेंएकतलदेथतैसें ॥ पंडुकुमरा ॥ ८ ॥
 आतांदुजेंहनहोतें ॥ कोएकचिहेंआइतें ॥ ऐशियेविबचनेपुरतें ॥ उपेविना ॥ ९ ॥ गगनींगनलथाजाये ॥ ऐसेंजेंकाहीआहे ॥ तेंअ
 नुसवेंजोहोय ॥ तोहोऊनिवाके ॥ १० ॥ ह्मणोनितीथिचाभात ॥ नवदेविबोलाचाहात ॥ जेणेंसंचादाचियागावाआत ॥ पैगीकीजे ॥ ११ ॥

अर्जुनायेरुवर्तरी॥ इया अभिषायाचा जेवधरी॥ नेपाहंपांचेरवरी॥ दुर्गेदली॥ १२॥ भूलता भागलीकडे॥ तेथमकाराचेचि आंगम
मांडे॥ सडेयाप्राणासांकडे॥ गगनायेतां॥ १३॥ पागेतेंथेंचितोमसळला॥ तें शब्दाना देवमावळला॥ मगतयाहीवरी आटसोवि-
नला॥ आकाशाचा॥ १४॥ आतां महाशून्याचियाडोही॥ जेथगगनासीचियावोनाही॥ तेथुनागलागलाकाई॥ बोलाचाइया॥ १५॥
झणुनि आरवरा माजिसापडे॥ कींकानावरोजोडे॥ हेतेंसेनरूपेदुडे॥ त्रिशद्वीरा॥ १६॥ जैकाहीदेवे॥ अनुभविलेफळे॥ तें आपणावि-
हेंठाकावें॥ होउनिचां॥ १७॥ पुढतीजाणणेंतेनाहीचि॥ झणोनि असोकितीहचि॥ बोलावेआतांवांयाचि॥ धनुर्धरा॥ १८॥ ऐसेंवा-
दजातमाथोंतेंसरे॥ तेथसंकल्याचेआयुष्यपुरे॥ वाराहीजेथनशिरे॥ विचाराचा॥ १९॥ जेउन्मनियेचेंलावण्य॥ जेंतुयेंचेंतारुण्य॥
अनादिजेंअगण्य॥ परमनल॥ २०॥ जेविश्वोचेंमूळ॥ जेयागदुमाचेंफळ॥ जेंआनदाचेंकेवळ॥ चेतन्यगा॥ २१॥ जेंआकाराचा
त॥ जोमोसाचाएकान॥ जेथआदिआणिअत॥ विरोनिगेले॥ २२॥ जेंमहासुतांचेंबीज॥ जेंमहांतेजचिनेज॥ एवंपार्थजेंबीज॥ स्व-
रूपमाझे॥ २३॥ तेहचतुर्भुजकांमेले॥ जयाचीशोमारूपमिआले॥ देखेनिनास्मिकांनोकिला॥ भक्तवंदरे॥ २४॥ तेंअनिर्वाच्यमहा-
सुरव॥ पैआपणचिजाहलजपुरुष॥ जयाचेकानिकुर्वी॥ प्रातिवरी॥ २५॥ आहोसाधनहेंजेंसांगितले॥ तेंविश्वेश्वरौजिहोकेले॥
तेआसुचेनिपाडेअले॥ निर्वाळलेया॥ २६॥ परब्रह्माचेनिरसे॥ देहाकृती॥ योनिसुसं॥ वोतांवजाहलेंतेंसे॥ दिसतीआणें॥ २७॥
जरिहेमतीनिहनअंतरांफळे॥ तरविश्वचिहेअवयंदाके॥ तंवअर्जुनदार्णेनिकें॥ साचचिजोहे॥ २८॥ कांजेंआपणआतांदेव॥ हाबो-
लिलेजोउपाव॥ तोप्रातीचादाव॥ झणोनिघडे॥ २९॥ इयेंअप्यासींजेंहटहोता॥ तेंभारवंमोनब्रह्मबयेवी॥ हेंसांगतयाचीरीती॥ कळ-
लेंमज॥ ३०॥ देवागोवीचिहेरेकतां॥ बोधउपजनसंचिना॥ याअनुभवेतेंज्ञानना॥ नोहेलकेवी॥ ३१॥ झणउनियेथकाही॥ अन्तरि

पक्त. ओ. १४ दिवो. ओ. १५ गगनामिवावोनाही. ओ. १६ प्रसरा ओ. १७ कही ओ. १८ गतनी

येनाहो॥ परिनावभरीचिन्तई॥ बोलाएका॥ ३०॥ आतोक्छातुवासांगीतदयोग॥ तोमनानरीआलाचंग॥ परिनशवेकुरुणा॥
 योग्यतेचा॥ ३३॥ सहजेआंगिकजेतुलंआहे॥ नितुलियाचिजरीमिहिजाये॥ तरहाचिमार्गसुखापायें॥ अस्थामीन॥ ३४॥ ननरी
 देवनेंसांगतील॥ तेंसंआपणपंजरीनवकल॥ तरंग्यतेवैराजरीहोडल॥ तेंचिपुसां॥ ३५॥ जीवींचियेगंसीधारण॥ ह्मणेनि
 पुसावयाजाहलंकारण॥ मगह्मणतरीआपण॥ चिन्तईजो॥ ३६॥ हाहाजीअवधारिलं॥ जेंदंसाधनतुमीनिरूपिलं॥ तेंआवड
 तयाहिअस्थामिलं॥ फावोशेके॥ ३७॥ कांग्ययतेवैराजनाहो॥ एंसंहनआहेकाही॥ तंथश्रीकृष्णह्मणताकाई॥ धनुयरो॥ ३८॥
 हेकाजकीरनिर्वाण॥ परिआणिकहेजेंकाहोसाधारण॥ तेंहीअधिकारानेवोडविण॥ कायमिद्दजाये॥ ३९॥ पंग्ययतेजसणि
 ज॥ तेप्रार्साचिआधानजाणिजे॥ कांजयोग्यहोडनकाजे॥ तेंआरंभिलंफुळे॥ ४०॥ तरिनेसीएथकाहो॥ साविथाचिकेणीनाहो
 आणियोग्यतेचिकाई॥ रवाणीअसे॥ ४१॥ नांवेकविरक्त॥ जाहलादेहधर्मोनियत॥ तरितोचिनकेव्यवस्थित॥ अधिकारिया॥
 ॥ ४२॥ येतुलालियेआयणीमाजिवेंड॥ योग्यपणतुनंदाजोडे॥ एसेंमसंगसाकडे॥ फंडिलंतयांचं॥ ४३॥ मगह्मणपाथी॥ तेंदरेसी
 व्यवस्था॥ अनियतासिमर्वथा॥ योग्यतानाही॥ ४४॥ श्लो० नात्यधनस्तुयोगीस्तिनंचकानमनश्चनः॥ नचातिस्वप्रशीलस्यजा
 ग्रतेनैवचार्जुन॥ १६॥ टी० जोरसेनंदियाचाअंकिला॥ कांनिदेमिर्जाविकला॥ तोनाहोएथह्मणितला॥ अधिकारिया॥ ४५॥
 अथवाआग्रहाचियेबाहोडी॥ क्षयातृषाकोडी॥ आहारानंतोडी॥ मारुनिगां॥ ४६॥ निंदनियावादाबवचे॥ ऐसाहोवेचेंनिअव
 तरणेनाचे॥ तेशरीरचिन्हंतयाचे॥ मगयोगकवणाचा॥ ४७॥ ह्मणेनिअतिशयविषयसेवावा॥ ऐसाबोधनोहावा॥ कासर्वथा
 निरोधावा॥ हेहीनको॥ ४८॥ श्लो० युक्ताहारविद्वारस्ययुक्तचेष्टस्यकर्मसु॥ युक्तस्वभावोद्यस्ययोगोभवतिदुःखहा॥ १७॥ टी०
 पाठ भो० ४० जें तें ओ० ४४ हेतें ओ० ४७ मां ओ० ४८ तेंसाविरोधनोहावा अथवाविरोधनोहावा

आहारतरि सौ विजे ॥ पराशुक्तीचं निमापमं विजे ॥ क्रिया जात आनरिजे ॥ तथाची स्थिती ॥ ६१ ॥ मापितलाबोलबोलिजे ॥ भितलिया पाउलो
चालिजे ॥ निद्रहीमानदीजे ॥ अवसर एक ॥ ६० ॥ जागणे जरी जाहोले ॥ नरी व्हावे ते भितलें ॥ येतले निधातु सात्व्यसंचले ॥ असे लसुख ॥
॥ ६१ ॥ ऐसें शुक्तीचे निहाते ॥ जें इंद्रिया बांधे जाते ॥ तें संतोषा भिवा दनं ॥ मन चिकरी ॥ ६२ ॥ श्लो० यदा विनियत निज भाव्ये वावति
छते ॥ निस्पृहः सर्वकामेष्वप्ययुक्त इत्युच्यते न दा ॥ १८ ॥ टी० बाह्यं शुक्तीची मुद्रा प्रदे ॥ नव आंत आंत सरव वाटे ॥ तेथें सहजें चियोग घेते
॥ नाश्यासिता ॥ ६३ ॥ जे संश्रयानि नय मंदसे ॥ उद्यमाचे निमित्त ॥ मयसय दिजान ओपसे ॥ घर रिये ॥ ६४ ॥ ते साशु निमित्त कौतुकं ॥
अभ्यासा चिया मोह राहोके ॥ आणि आत्मसिद्धी पिके ॥ अनुभवत थाचा ॥ ६५ ॥ क्षणो निवृत्ति हे पाडवा ॥ घडे जया सरे वा ॥ तो अप
वर्गी विये राणिवा ॥ अचक्षुरिजे ॥ ६६ ॥ श्लो० यथा दीपो निवातस्थानं गते सोपमा स्थिता ॥ योगिनो यतचित्तस्य युंजते योगमात्मभः ॥
॥ १९ ॥ टी० युक्तियोगाचं आंग पावे ॥ एमं प्रयागं न यद्वायवरं ॥ तेथे दोत्र सन्यासो स्थिरावे ॥ मानस जयाचें ॥ ६७ ॥ तथा ते योगयुक्त
तूल्या ॥ हं हीमसंग जाण ॥ तें हो पांच उफल क्षण ॥ निर्वाती विया ॥ ६८ ॥ आनातुं ममनो गत जाणी नी ॥ कांहीं एक आह्मी ह्मणोनी ॥ तें
निर्के चित्ते उ नी ॥ परिसंभया ॥ ६९ ॥ नृनामीची चाडवा दसी ॥ पर अभ्यासो दस्स न होसी ॥ तें सांगंगा काय बिहसी ॥ दुबाड पणे ॥ ६० ॥ नमि
पार्थो हं क्षणे ॥ साधारं यश होमनं ॥ वाया बायल दुय दुजेनी ॥ इंद्रिय करिती ॥ ६१ ॥ पाहें पां आयुष्यातें अटळ करी ॥ जे सर ते जीवित बारी ॥
तया ओषधा ते वरी ॥ काय निद्वान ह्मणे ॥ ६२ ॥ ते मोहना मिजे न के ॥ तें सदां चिया इंद्रिया दुःखें ॥ येह वीसो पें योणा सारि रे ॥ कंही
आहे ॥ ६३ ॥ श्लो० यत्रोपरमते चित्ति निरुद्धयोग संवथा ॥ यच्च वारुणात्मानं पश्यन्नात्मनि तु ध्याति ॥ २० ॥ सुखमात्यंतिकं यत्तदुद्दि
याहमतींद्रियम् ॥ वीत्यत्र न च वार्थं स्थितं अलति न च तः ॥ २१ ॥ टी० क्षणो नि आसना चिया गादिका ॥ जो आह्मी अभ्यास सांगीत
लां निक्का ॥ तेणीं ही इतल तें हांकां ॥ निरोधया ॥ ६४ ॥ येह वीतरं येणीं योग ॥ जें इंद्रियां विदाण लागे ॥ तें चित्त भेंदो रिये ॥ आपणें पयां ॥

परतो निपाठिरींठांके ॥ आणि आपणियांतें आपणोदेखें ॥ देगवतंखें वेंचुंसे ॥ दूणेतत्त्वहेमी ॥ ६५ ॥ नियोवोळवचीं सरिसें ॥ सुरूवा
विद्यासाम्राज्यीवेंसे ॥ मंग आपणपासमनस ॥ विरनिजाये ॥ ६७ ॥ अथापरतें आणीकनाही ॥ जयातें इंदियेने पातीक हो ॥ तें आ
पणचि आपुलियावार्थी ॥ होउनिठांके ॥ ६८ ॥ श्लो० यंलब्ध्वात्तापरस्ताभंमन्यतेनाधिकंततः ॥ यस्मिंस्थितो न दुःखेन गुरुराणपि वि
चाल्यते ॥ २२ ॥ टी० मंगमरुथासूनिथां ॥ देहदुःखाचे निंदां गरी ॥ दाटां जाणपरीं पारे ॥ विनन होतें ॥ ६९ ॥ काशस्त्रे वरी तो डिल्या
॥ देहअग्नीमाजि पडलिया ॥ चिन्नमहासुखें पड्डलिया ॥ चेंवोनये ॥ ७० ॥ ऐसं आपयापां रिगोनि राये ॥ मग देहाचे वासन पाहे ॥ आ
गिके चिं सुख होउनि जाये ॥ क्षणानि विसर ॥ ७१ ॥ श्लो० तं विद्यादुःखसंयोगं वियोगसंज्ञितम् ॥ सनिश्चयेन ये च त्रयोयोगो
निर्विण्णचेतसा ॥ २३ ॥ टी० जसा सरवाचियां गाढा ॥ मन आर्नचिं संचि सोढा ॥ संसाराचियां तांढो ॥ गुंतलेंजो ॥ ७२ ॥ जे योगाची बरवा
संतोषाची रागिवा ॥ ज्ञानाची जाणिव ॥ अथालागी ॥ ७३ ॥ तें अस्थामिले निरांगो ॥ मावयवे देखावं लागो ॥ देखिलंतरा अंगो ॥ होइ जे लया
॥ ७४ ॥ श्लो० संकल्पप्रपञ्चांकाभास्यस्त्यक्ता सा न शपतः ॥ मनसैर्वेदिय ग्रामां विनियम्य समंततः ॥ २४ ॥ टी० तरिताचि योग बापा ॥
एके परी आहो सोपा ॥ जर पुत्रशोकासकल्या ॥ दाखवाजे ॥ ७५ ॥ हा विषयाते विनालिया आइके ॥ इंदियेने माविषाधारणी देखे ॥ तरि
हिये चालि निसुके ॥ जीविलीसि ॥ ७६ ॥ ऐसं वेरागयं हकरा ॥ तरि संकल्याचो सोपरा ॥ मुखें धर्ता विषाधवबारी ॥ बुद्धिनांदे ॥ ७७ ॥ श्लो०
शनेः शनैरुपरमे दुद्धा र्धुति गृहीतया ॥ आत्मसंस्थमनः कृतानां किं विदपि नित्यं ॥ २५ ॥ यतो यतो निश्चल निमनश्चंचलमस्थिरम्
ततस्ततो नियम्येतदात्मन्यवश नयेत् ॥ २६ ॥ टी० बुद्धिधैर्यहोय वे सोदा ॥ तरि मनानें अनुभवाचि वादा ॥ हलु हलु आपणु निकशम
तिष्ठा ॥ आत्मसुखनी ॥ ७८ ॥ याहि एके परी ॥ मार्ता आहो विचारी ॥ हेनतें कैतरा सोपारी ॥ आणी के ऐके ॥ ७९ ॥ आतां नियम मिह
पाठः ओ० ६६ तें ओ० ६७ तेथें चत्तपणें रमः ओ० ६९ दटें ओ० ७० चेंवोवि ओ० ७१ तें ओ० ७९ दके

एकला ॥ जीवें करावा आपुला ॥ जे साकृतनिश्चयाचियाबोला ॥ बाहेरांगेहे ॥ ८० ॥ जरी येतुले निविन स्थिरावे ॥ तरा काजा आलें स्वप्नां ॥
 नौहीतरी घालावें ॥ मोकलुनी ॥ ८१ ॥ मग मोकलिलें जे थजईल ॥ नैथूनि नियमैं चिहोइल ॥ ऐसे निस्थैर्ये चिहोइल ॥ साविथिचिहो ॥
 ८२ ॥ श्लो० प्रशांतमनसहीन थो गिन स्मरवसुतमम ॥ उपैतिशाते रजसुब्रह्मभूतमकल्मषम ॥ २७ ॥ टी० पावीकें तुले निवें वेळे
 ॥ तया स्थैर्याचि निमळे ॥ आत्मस्वरूपाजवळे ॥ येईल सहजे ॥ ८३ ॥ तया ते देवा नि आगाध डेल ॥ तेथ अहेतो हेत बुडेल ॥ आणि ए
 क्यने जे उघडेल ॥ त्रैलोक्य हे ॥ ८४ ॥ आकाशी दिसे दुसरे ॥ ते अफ्रजें विरे ॥ ते गंगनचिहो संरे ॥ विश्वजें ॥ ८५ ॥ ते सें चितलया जा
 ये ॥ आणि चेतन्यचि आघवे होये ॥ ऐसी प्राप्ती सुखोपाये ॥ आहयेणें ॥ ८६ ॥ श्लो० युंज न्वेवंस तात्मान थो गी विगत कल्मष ॥ सु
 खेन ब्रह्मसंस्पृश मत्यंत सुख भक्षुते ॥ २८ ॥ टी० या सोपाया थो गी स्थिती ॥ उकल दे खिला गाबहुती ॥ संकल्पाचिया संपत्ती ॥ रुसो
 नियां ॥ ८७ ॥ ते सुखांचे नि सांगातें ॥ आले परब्रह्मा आंतोंतें ॥ तेथ नृवणां जें सेजळांतें ॥ सांडुं नेणें ॥ ८८ ॥ ते सें होय तिथे मेळो ॥ म
 ग सामरस्याचिया राउळां ॥ महास्मरवाची दिवाळी ॥ जगे सिदिसे ॥ ८९ ॥ ऐसं आपले पांच वरी ॥ चालिजे आपुने पाठीवरी ॥ हे पाथी
 नागवे तरी ॥ आन एके ॥ ९० ॥ श्लो० सर्वभूतस्थ मात्मानं सर्वभूतानि चात्मानि ॥ ईक्षते योगयुक्तात्मा सर्वत्र समदर्शनः ॥ ३१ ॥ योमां
 पश्यति सर्वत्र सर्वत्र समधिपश्यति ॥ तस्याहं न प्रणश्यामि मन्ये न्य प्रणश्याति ॥ ३२ ॥ टी० तरि मीतं व सकळ देही ॥ असें एथ विचारैना
 हीं ॥ आणि ते सें चिमाझा ठाई ॥ सकळ थसे ॥ ९१ ॥ हे ऐसें विसंचलें ॥ परस्परें मिसळलें ॥ बुद्धि येणें तुलें ॥ हो आविगा ॥ ९२ ॥ येह
 वीतरि अर्जुना ॥ जो एक व दलियाभावना ॥ सर्वभूतानि अभिन्ना ॥ मांते भजे ॥ ९३ ॥ भूताने चिने अनेक पणें ॥ अनेक नोहे अंतःकरणें ॥
 केवळ एक तत्वचि माझे जाणें ॥ सर्वत्र जो ॥ ९४ ॥ मग तो मां एक हो मिथ्या ॥ बोलतो दिसतें सवाथां ॥ येह दोन बोलिजे न रिधन जया ॥
 पाठ ॥ ओ० ८१ न राहे ॥ ओ० ८२ हे ॥ ओ० ८३ ने ॥ ओ० ८४ मी ॥ ओ० ८५ पायदनि ॥ ओ० ८६ स्त्रीनि ॥ ओ० ८७ अंग ॥ ओ० ८८ अंग ॥ ओ० ८९ अंग ॥ ओ० ९० अंग ॥ ओ० ९१ अंग ॥ ओ० ९२ अंग ॥ ओ० ९३ अंग ॥ ओ० ९४ अंग ॥

नोमीचिआहे ॥ १५ ॥ दीपा आणि प्रकाशा ॥ एक वंकाचा पाड जंसा ॥ तो माझा ठाई तंसा ॥ मी तया माजी ॥ १६ ॥ जें साउद काचे निआवु
 धेर सा ॥ कागनाचे निमानें अवकाश ॥ ते सा माझ निमंसे रूप सा ॥ पुरुष तो गा ॥ १७ ॥ श्लो० सर्व भूत स्थितं यो मां भजत्येकलभास्थि
 तः ॥ सर्वथा वर्तमानोऽपि स योगी भवति ते ॥ ३५ ॥ टी० जेणें ऐक्याचि येदीतो ॥ सर्वच मानें किरादी ॥ देखला जें सापटी तंतु एक ॥ १८ ॥
 कास रूप तरी बहते आहती ॥ परिते मी सोनं दडवूं नहेती ॥ ऐसी ऐक्याचि येदीतो ॥ केलो जेणे ॥ १९ ॥ मातरो दक्षाची पा
 ने जेतुली ॥ ते तुलारी पें नाई लाविली ॥ ऐसी अहं तद्वं संपादिला ॥ गत्री जया ॥ २० ॥ तो पंचात्मा कीं सापडे ॥ तरि भगसांग पा
 के से निअडे ॥ तो प्रतीतीचि निपाड ॥ मज सी तुज ॥ २१ ॥ माझी व्यापक पण आधवं ॥ गवसलें तयाचे निअनुभव ॥ तरि नद्वण तास्व आ
 वें ॥ व्यापक जाहाला ॥ २२ ॥ आनां शरीरांतरी आह ॥ परि शरीराचा तो नोह ॥ ऐसं बोलवरी होयो ॥ ते करूं ये ॥ २३ ॥ श्लो० आत्मोपम्ये
 न सर्वत्र समं पश्यति योऽर्जुन ॥ सुखं वा र्शदि वा दुःखं स योगी परमो मतः ॥ ३३ ॥ टी० ह्यणो निअसोतें विषों ॥ अथवा आपण पें यासा
 रि रें ॥ जो चराचरें देख ॥ अखंडित ॥ २४ ॥ सुख दुःखादिवं मी ॥ कांश आशु भं कर्म ॥ दोनी ऐसी मनोधर्म ॥ नेणे विजो ॥ २५ ॥ हे समवि
 षमभाव ॥ आणि कही विचित्र जमव ॥ तें मानें जें स अवयव ॥ आपुल होती ॥ २६ ॥ हें एक कुरा यसा गावें ॥ जया वें लोस्य विखावें ॥
 मी ऐसें स्मवावें ॥ बोधाआल ॥ २७ ॥ तयाही देह एक करी आर्थ ॥ लोकीं सुख दुःखीत यांत हाणी ॥ परि आह्मा ते ऐसी प्रतीती ॥ प
 र ब्रह्मचिहा ॥ २८ ॥ ह्यणो निआपण पोविशे दे विजो ॥ आणि आपण विश्वे दे विजो ॥ ऐसं साम्य चि एक उपासिजे ॥ पाडवागा ॥ २९ ॥ हेतु
 ते बहुती जसंगी ॥ आसी ह्यणों याचि लागी ॥ जें साम्य परें ती जगी ॥ प्राप्ती नाही ॥ ३० ॥ श्लो० ॥ अर्जुन उवाच ॥ ॥ यो यं योगक्ष
 या प्रोक्तः साम्येन मधुसूदन ॥ एतं स्थाहं न पश्यामि चंचलत्वास्थितिं स्थिराम् ॥ ३१ ॥ चंचल हि मनः कृष्ण प्रमाथि बलवद्दृढम् ॥ न स्या
 पाव ॥ ओ० १८ मांतीने ओ० ३ गा अथवा आई० ओ० ३ शि० ओ० ८ तरि ॥ ३२ ॥

हंनिग्रहमन्येवायोरिवस्तदुक्तरम् ॥ ३४ ॥ टी० तव अर्जुन द्वाणे देवा ॥ तुह्योसांगाकीर आमुचाकणवा ॥ परिनपुरंजोस्वभावा ॥ मना वि
या ॥ १११ ॥ हंमनेकेसेकेवदे ॥ ऐसेपाहोद्वाणोतरीनसापडे ॥ येहवीराहाटावयाथोडे ॥ त्रैलोक्यया ॥ १२ ॥ द्वाणोनिसेकेसेधडे ॥ जे
मर्कटसमाधोयेइल ॥ कांराहाद्वाणितलियाराहेल ॥ महाबाता ॥ १३ ॥ जेबुद्धीतेसळी ॥ निश्चयानेदाळी ॥ धैर्येसीहातफळा ॥ भिळउनि
जाये ॥ १४ ॥ जेविवेकातेमुलवी ॥ संतोषाचीचाडलावी ॥ बेसिंजतरींहुडवी ॥ दाहीदशा ॥ १५ ॥ जेनीरीधलेधेउबावो ॥ ज्ञानसुय-
मचिहोयेसाबावो ॥ तेमन आपुलास्वभावो ॥ मांडीलकाई ॥ १६ ॥ द्वाणोनिमन एक निश्चलराहेल ॥ मग आह्वा ॥ सिसाम्यहोईल ॥ हे
विशेषहीनधडे ॥ राचिल्यागो ॥ १७ ॥ श्लो० ॥ श्रीभागवानुवाचा ॥ असंशयं महाबाहो मनो दुर्निग्रहं चलम् ॥ अप्रत्यासेन
तु कौंतेय वराग्येण च गृह्यते ॥ ३५ ॥ टी० तव श्रीकृष्ण द्वाणतोसाचनि ॥ बोलत आह्वासिंतेतेसेवि ॥ यथाभनाचाकारचपळवि ॥ स्व
भावो ॥ १८ ॥ परिवेराग्याचेनिआधारं ॥ जरिलाविले अप्रत्यासाचियेमोहरे ॥ तरिकेतुलेनिएकेअवसरें ॥ स्थिरावेल ॥ १९ ॥ का
जेयचामनाचेचेकनिकें ॥ जेदेखिलेयागडेविचावायासोंकें ॥ द्वाणोनिअनुभवसुखाचीकवतिंके ॥ दावीतजाइजे ॥ २० ॥ श्लो० असे
यतात्मना योगी दुष्ट्यापइतिमेमति ॥ वश्यात्मनानुयतनां शक्यावानुमुपायतः ॥ ३६ ॥ टी० येहवोविरक्तिजयांमिनाहो ॥ जेअ
भ्यासीनरियतीकहीं ॥ तयानाकळंहुआदीहो ॥ नमनूकाहो ॥ २१ ॥ परियमनियमाविचावादानवजि ॥ कहीवेराग्याचेसेनक-
रिजे ॥ केवळविषयजळींकिजे ॥ बुडोदुनी ॥ २२ ॥ यथाजालियामानसाकहीं ॥ युक्तीचीकांबोलागलीनाहो ॥ तरोनिश्चलहोईलकाई
॥ कैसेनिसांगें ॥ २३ ॥ द्वाणोनिमनाचानिग्रहदांये ॥ ऐसाउपायजोअहे ॥ तोआरभीममनोदे ॥ केसापाहो ॥ २४ ॥ तरीयोगसाधन
जितुके ॥ तेअवधंचिकायलरिकें ॥ परिआपणपयाअभ्यासानंदके ॥ हेचिद्वणी ॥ २५ ॥ आंगीयोगाचेंहोयबळ ॥ तरिमनकेतुलेचपळ
पाव ॥ ओ० १३ राहें ॥ ओ० १७ येइल ॥ ओ० २५ आपणायत ठेके ॥

कायमहदादिहंसकळ॥ आपुनोहे॥ २६॥ तंथअजुनद्वणोनिंक॥ देवोबोलतीतैनचुके॥ माचेचियोगवळसीनतुके॥ मनोबळे॥ २७॥ तरि
 तोचियोगकेंसाकेविजाणो॥ आत्मोयंतुलेदिवसयाचासुतुदीनणो॥ द्वाणोनिमनांतजीद्वणो॥ अनावर॥ २८॥ हाआतांआघवेअज्या
 तुझेनिभसांदेपुरुषोत्तमा॥ योगपरिचयआह्मा॥ जाहलाआजी॥ २९॥ श्लो० ॥ अजुनउवाच॥ ॥ अयतिःश्रद्धयोपेतोयोगज्ञ
 लितमानसः ॥ अमाप्ययोगसंसिद्धिंकांगतिरुक्तागच्छति॥ ३०॥ कच्चित्प्रभयविभ्रष्टश्चिन्ताम्रमिवनश्याति॥ अयतिश्चोपेतोयोगज्ञ
 होविषुदोद्वेगःपथि॥ ३१॥ एतन्मेशयःकृष्णछेतुमहस्यवोपतः॥ त्वदन्यःसशयस्यास्यछेतानन्दुपपद्यते॥ ३२॥ टी० परिआ
 योक्कएकगोसांविया॥ मजसशयअसेसाविया॥ तोतूवाचूनिफडावया॥ समर्थनाहो॥ ३३॥ द्वाणोनिसांगेंश्रीगोविंदा॥ कवणए-
 कमीशपदा॥ झोबतहोताश्रद्धा॥ उपायेंविण॥ ३४॥ इंदियत्रामोर्निगला॥ आस्थेचिंचंयंवाढालागला॥ आत्मसिद्धिचियापुढि
 ला॥ नगरायावया॥ ३५॥ तवआत्मसिद्धिनठकेचि॥ आणिसागुंतंनयेवंचि॥ ऐसाअस्तुगोलाभाझारोचि॥ आधुप्यमानु॥ ३६॥
 जेसेंअकाबीअभाळ॥ अलुमाळसपातळ॥ विपायेअलेंकेवळ॥ वसेनावर्षे॥ ३७॥ तेंसीदांन्हीदुरावलो॥ जेप्रासीतवअलग-
 वेली॥ आणिअमासिहोसाडवली॥ श्रद्धतया॥ ३८॥ ऐसाबोलाअंतरलाकाजी॥ जोश्रद्धेचासमाजी॥ बुडालानथाहोजा॥ क-
 वणगति॥ ३९॥ श्लो० ॥ श्रीभगवानुवाच॥ पार्थनैवेहनामुत्रविनाशस्तस्यविद्यते॥ नहिकृत्याणकृत्कश्चिदुर्गतिता-
 तगच्छति॥ ४०॥ टी० तंवश्रीकृष्णद्वाणार्तापार्था॥ ज्यामोक्षसुखीआस्था॥ तथाभोक्षावाचूनिअन्यथा॥ गतीआहेगा॥ ४१॥
 परिएतुलेंहंचिएकघडे॥ जेमाझारोविसावेंपंडे॥ तंहापरिऐसेंनिस्सरगडे॥ जोंदवानाहो॥ ४२॥ येहूवोअभ्यासान्नाउचल-
 ता॥ पाउलीजरीचालता॥ तरिदिवसाआधींठाकित॥ सोहंसिद्धते॥ ४३॥ परितंतुलोवेगनदेचि॥ द्वाणउनिविसावांतमिनका
 पाठः ओ० २८ अनावरहे॥

५

५

५

५

वि॥ शरीरमोक्षनवनेसावि॥ वेविलाअसे॥ ४०॥ श्लो० प्राप्यपुण्यकृतान्निष्कानुविलाशाश्वतीःसमाः॥ सुचिनांश्रीमनांगेहयोगश्चष्टिभि
जायते॥ ४१॥ टी० ऐकं क्वचित्कहंकेसे॥ जेशनमरवालो कसायसे॥ तेतापवेअनायसे॥ केवल्यकाम॥ ४१॥ मगंतंथिचंजेअमोघ
॥ अल्लोकिभोग॥ भो गितांदिसांग॥ क्रांताळेमन॥ ४२॥ हाअंत रायअवसिता॥ क्रांवेदवलाश्रीभगवंता॥ दिविभोगभोगता॥
अनुतापीनित्या॥ ४३॥ पाठीजन्मेसंसारि॥ परिसकधर्मोचिथामहरीं॥ लांबातुगवेआणरीं॥ विभवश्चियेचा॥ ४४॥ जयातेनीभि
पथेचालिजे॥ सत्यधृतबालिजे॥ देखावेतेंदेसिजे॥ शास्त्रदृष्टी॥ ४५॥ वेदतोजागेचरू॥ जयाव्यवसायनिजाचरू॥ सारासारवि-
चारू॥ मंत्रीजया॥ ४६॥ जयान्चकुर्वीरचिता॥ जान्दीईश्वराचीपतिव्रता॥ जयातेंगृहदेवता॥ आदिभूद्दी॥ ४७॥ ऐसीनिजपु
ण्याचीजोडी॥ वादिनलीसर्वमरवाचीकुवनाडी॥ तिजेजन्मेतोसुरबाडी॥ योगच्युता॥ ४८॥ श्लो० अथबायोगिनामेवकुलेभवति
धीमताम्॥ एतद्दिदुलभतरलोकेजन्मयदीदृशम्॥ ४२॥ तत्रतबुद्धिसंयोगलभतेपौवेदेहिकम्॥ यततेचततोभूयः संसिद्धीकुरुन-
दना॥ ४३॥ टी० अथवाज्ञानाग्निहोत्री॥ जपरिद्विहाण्यथोत्री॥ महासखसीत्री॥ आदिवन॥ ४९॥ जंमिद्धाताचिथासिंहासनी॥ रा-
ज्यकरितीविभुवनी॥ जेकूजतौकोकिलवनी॥ संतोषाचा॥ ५०॥ जेविवेकग्रामीचेंमुखी॥ बैसलेआथिनित्यफळी॥ तयायोगिशां
विद्याकुळी॥ जन्मपावे॥ ५१॥ मोटकीदेहाकृतोउमट॥ आणनिजज्ञानाचीपाहांदफुटे॥ सूर्याफुटेमगटे॥ प्रकाशजैसा॥ ५२॥ तेसी
दशेचीवाटनपाहता॥ वयसेचियागांवाजयेता॥ वाळपणीचमवदाना॥ वरीतयाते॥ ५३॥ तिथेसिद्धमज्ञेचैनिलासिं॥ मनविसार-
स्वनेदुप्रे॥ भगसकशास्त्रेस्वयंभे॥ निघर्तमुपेवे॥ ५४॥ ऐसेंजेजन्म॥ जयात्तागिंदेवसकाम॥ स्वर्गीठेलेंजपहोम॥ करितोसदां॥ ५५॥
अमरीभाटहाइजे॥ भगसुसुलाकांतवाजिजे॥ ऐसंजन्मपार्थागांजे॥ तंतापावे॥ ५६॥ श्लो० पूर्वोभ्यांसेनतेनैवहयनेद्वयवशांपिस
पाठ॥ ओ० ४१ मोक्ष ओ० ४२ कोतुकपुरे ओ० ५० कूजनी ओ० ५१ तरुचं॥ ५२

जिजासुरपि योगस्य शब्दब्रह्मानि वर्तते ॥ ४४ ॥ टी० ॥ आणिसागलजं सद्बुद्धिं ॥ जंयज्जीविलाजाहलीहोतीअवधि ॥ मगतेचिपुदती
 निरवधि ॥ नवीलाहे ॥ ५७ ॥ तेथसंदेवाआणिपायाळा ॥ वरिद्विजानहोयडोळा ॥ मगदेखेजेसीअवल्लिळा ॥ पाताळबने ॥
 ॥ ५८ ॥ तेसेदुर्भेजेअभिप्राय ॥ कांयुरुगम्यहनवाय ॥ तंयसारंमंवाणजाय ॥ बुद्धियेंइंद्रियेंयेतीमना
 ॥ मनएकवटेपवना ॥ पवनसहजेरागन्ध ॥ भिळांविलागे ॥ ६० ॥ ऐंमंनंणांकायअपेंसं ॥ तयातेचिकीजेअप्यासें ॥ मसाधियरपुसे
 ॥ मानसाचें ॥ ६१ ॥ जाणिजेयोगपीठानाभेंरव ॥ कायहाआरभरभेंचागोंरव ॥ कींवेराग्यसिद्धीचाअनुभव ॥ रूपाआला ॥ ६२ ॥
 हांसंसारउमाणितेंमाप ॥ कांअष्टांगसाग्रीचेंद्वीप ॥ जेंसंपरिमळेंचिधरिजेरूप ॥ चंदनचें ॥ ६३ ॥ तेसासतोषाचाकायघडि
 ला ॥ कींसिद्धिभांडारोद्वनिकाढला ॥ दिसेतेंणंमानेंरूढला ॥ साधकदशे ॥ ६४ ॥ श्लो० ॥ प्रयत्नाद्यतमानस्तुयोगीसशुद्धकिं
 ल्बिषः ॥ अनेकजन्मसंसिद्धस्ततोयतिपरंगतिम् ॥ ६५ ॥ टी० ॥ जेवर्षशानंविचाकोडी ॥ जन्मसहस्त्राचिचाआडी ॥ लंघितां
 पानलाथडी ॥ आत्मसिद्धीचा ॥ ६५ ॥ ह्मणोनिसाधनजातआधवें ॥ अनुसरेतयास्वभावं ॥ मगआयतिचेंबेंसेराणिवें ॥ विवे-
 काचें ॥ ६६ ॥ पाठींविचारितयावेगां ॥ तोविबकहीढाकेशागां ॥ मगअविचारिणीयेतेंआगा ॥ दडोनिजाये ॥ ६७ ॥ तेथमनाचें
 मेहुडेंविरे ॥ पवनाचेंपवनपणासरे ॥ आपणयाआपणसुरे ॥ आकाशही ॥ ६८ ॥ प्रणवाचासाथाबुडे ॥ येतुलेनिअतिबोव्य
 सरकजोडे ॥ ह्मणोनिआधीचिबोलबहुडे ॥ तयालागीं ॥ ६९ ॥ ऐसीब्रह्माचीस्थिती ॥ जेसकळागतीसांगती ॥ तथाअंमूर्ती
 चिभूर्ती ॥ होउनिवाके ॥ ७० ॥ तेजेवहुतीज्जीमागीतली ॥ विसंपाचींपाणिबळेझाडिलीं ॥ ह्मणोनितुपजतुखेंबोबुडाली ॥ लग्नघ
 टिका ॥ ७१ ॥ आणितद्रूपतेसीफलगन ॥ लागोनिलेंअभिन्न ॥ जेसेलोपलेंअश्वगन ॥ होउनिवके ॥ ७२ ॥ तेंसंबिस्वजेथ

५

५

५

५

५

५२ वके.

पाव. ओ. ५९ सायामें.

तो प्रसंग आर्हिसुद्रां ॥ ज्येष्ठां निर्दिशेत्सलउद्यदा ॥ तोपलपि जलमुद्रा ॥ प्रमेयबीजान्चा ॥ ८९ ॥ जसात्किञ्चैति वडपे ॥ गते आध्या-
 त्मीकरवरपे ॥ सहजं निडारले बापे ॥ चतुरविंशति ॥ ९० ॥ वरी अवधानाचा वाफसा ॥ लाधला सो नस्य ऐसा ॥ ह्मणो निपे रंबया-
 धिप्सा ॥ श्रीनिवृत्तोमी ॥ ९१ ॥ ज्ञान देव ह्मणोमी च्चाहें ॥ सद्गुरु निकलें कोडें ॥ माथा हात ठेविला तें पुढें ॥ बीजचि वाडले ॥ ९२ ॥ ह्म-
 णो निचें पुं मुखें जे निगे ॥ तें संताच्या हृदयां सांचें विलागें ॥ हें असो भागो श्रीरंगें ॥ बोलिलें जें ॥ ९३ ॥ परितें मनाच्या काती ऐकावे
 ॥ बोल बुद्धीच्या डोळ्यां देखावं ॥ हें सांता वादी ध्यावं ॥ नितांचिया ॥ ९४ ॥ अवधानाचें निहातें ॥ नेथा पाहू त्या आती तें ॥ हेरि-
 स्मवील आयणी तें ॥ सज्जनानिया ॥ ९५ ॥ हें स्महितें निवविती ॥ परिणाम तें जीवविती ॥ म्हरवाची वाहविती ॥ लासली जीव
 ॥ ९६ ॥ आतां अर्जुनें सी श्रीसुकुंदें ॥ नागर बोलिल जलवितां ॥ तें वां विचेचें निप्रतिबंधं ॥ सागेन मी ॥ ९७ ॥ ॥ इति श्री-
 भावार्थदीपिकाया ज्ञानदेव विरचिता या षष्ठाऽध्याय ६ ॥ ५ ॥ श्रीकृष्णापणमस्तु ॥ ५ ॥

इतिषष्ठाध्यायसमाप्तः

श्रीगणेशायनमः॥ ॥ श्रीभगवानुवाच ॥ ॥ मय्यासक्तमनाः पार्थयोग्युजन्मदाय्ययः॥ असंशयसमग्रमायज्ञास्यस्मिबद्ध-
 धु॥ १॥ ज्ञानेन हं स विज्ञानमिदं वक्ष्याम्यशेषतः॥ दत्तान् ज्ञानं हं प्रयोन्यनुज्ञातव्यमविशिष्यते॥ २॥ टी०॥ आदिकामगतोऽपि अनंत-
 ॥ पार्थ त्वेति असेऽप्युक्तं॥ पैगाद्योगयुक्तं॥ जालासि आतो॥ १॥ मज्जसमग्रानं जाणसी एसें॥ आपलीयातळहानि चैरत्नजैसें॥ तूजज्ञानसा-
 गेन तैसें॥ विज्ञानेसीं॥ २॥ एथ विज्ञाने कायिकरावें॥ एसें घेसी जरी मनो प्रावें॥ तेंपे अधिजाणवें॥ तों चलागो॥ ३॥ मग ज्ञानाचि येवळ-
 ॥ झोकती जाणिवे चेटोळ॥ जैसी तिरांना वनटळ॥ टेंकली सांती॥ ४॥ तैसी जाणिवे जेथ नारीगो॥ विचारमागुता पाउली नियो॥ तर्क-
 आथिणनेये॥ आगीजयाचा॥ ५॥ अर्जुन तया नाव ज्ञान॥ यरप्रपंच हें विज्ञान॥ तैथ सत्य बुद्धि तें अज्ञान॥ हें ही जाण॥ ६॥ आतो-
 अज्ञान अवयें हारये॥ विज्ञान निःशेष करये॥ आधिज्ञान तें स्वरूपे॥ हाडी न जाइजे॥ ७॥ जे गंगागातया चें वोलणें खुटो॥ एक तयाचें
 व्यसन तुटे॥ हें जाणें सांन मोटे उरा नेदी॥ ८॥ एसें वर्म जे रूढ॥ तों के जल वाक्या रूढ॥ जणें थोडे निपु रेकाड॥ बहु त मनीचें॥ ९॥
 श्लो०॥ मनुष्याणां महसेषु काश्चिद्यतति सिद्धये॥ यतनामपि सिद्धानां काश्चिन्मोर्वे नितत्वतः॥ ३॥ टी०॥ पैगा मनुष्यांचि या स हस-
 शा॥ माजि विपादल्यांचि येथी वसा॥ तैसं याधि वसे करो बहु वसा॥ माजि विरळा जाणो॥ १०॥ जैसा फरलेयाचि भुवना॥ आंत एक-
 एक चांगा अर्जुना॥ निवडून किजसेना॥ लसवरी॥ ११॥ किं तया ही पाटी॥ जे वेढीं लोह मासा ते पाटी॥ ते वेढीं विजय थिये चापाटी॥
 ॥ एक चि बैसे॥ १२॥ तैसं आस्थेचा महापुरी॥ शिथता नि कोटिवरी॥ परीमा सिचा पेलतीरी॥ विपाद ला निगो॥ १३॥ स्पणऊ नि सामा-
 न्यागाने हे॥ हे सांगतां विडल गोठगा आह॥ परी तें बोल्यें इल पाहें॥ आतां प्रस्तुत ऐकें॥ १४॥ श्लो०॥ स्त्रीभिरापो न लोवायुः स्वमनो-
 बुद्धिरेव च॥ अहंकार इतीये मोक्षिन्नाग्रहातिरण्या॥ ४॥ टी०॥ तरि अवधारी गांधन जया॥ हे महदादिक माझी माया॥ जैसी याति वि-

बेछाया॥ निजांगाची॥ १५॥ आणि द्येनें यकृति द्यणिजे ॥ जें अष्टधा भिन्न जाणिजे ॥ लोकत्रय निफजे ॥ इये सव ॥ १६॥ हे अष्ट-
धा भिन्न कैसी ॥ एसाध्य न धरि सांजरी मानसी ॥ तरी तें चिगा आनां पश्यसी ॥ विवेचना ॥ १७॥ आपजे जगन ॥ मही मारुन मन ॥
बुद्धि अहंकार हे भिन्न ॥ आठें भाग ॥ १८॥ श्रुती ॥ अपरयमित स्वल्यां यकृति विद्मं पुरा ॥ जीवभूतां महाबाहो यं यं देयं ते ज-
गत् ॥ १९॥ टी० ॥ या आठांचि जसा म्यावस्था ॥ तेमाझी परम यकृति पाथी ॥ तियेनाम अवस्था ॥ जीव ऐसी ॥ १९॥ जे जडां ते जीवो
॥ चेतने ते चेतवी ॥ मना करी मानवी ॥ शोक मोहो ॥ २०॥ पुं बुद्धिचा अंगीं जाणों ॥ तंजिये जवळी कें करणें ॥ जिया अहंकाराचें वि-
दाणें ॥ जगचि धरजे ॥ २१॥ श्रुती ॥ एतद्योनीं निभूतानि सवाणी न्युपधारय ॥ अहंकृत्य स्वजगतः प्रसावः प्रलुपस्तथा ॥ ६॥
टी० ॥ ते स्मृत्स्मयकृति काडें ॥ जें स्थुळा चिया आंगादडे ॥ तें भूतसृष्टिची पदे ॥ टांक साळ ॥ २२॥ चतुर्विध दसा ॥ उमटां लागे आपैसा ॥ मा-
कातरीं सरि सा ॥ परी थरि च आनां ॥ २३॥ होती चो न्यामी लुस थरा ॥ येरा मिती नोणि जे पादारा ॥ परे आदि द्यू न्याचा गासारा ॥
नोणियासी ॥ २४॥ एसें एक तुकें पांच भौतिक ॥ पडती बहु बहु भौतिक ॥ मगानियें समुद्र चें लखा ॥ प्रकृती चि धरी ॥ २५॥ जें ओरवूनि ना-
णों विलारी ॥ पाटीतयार्चा आटणी करी ॥ मार्जीक मार्का चिया व्यवहारी ॥ प्रवर्तुं दावी ॥ २६॥ हे रूप करपरी असों ॥ सांगों उघडजे
सें पश्यसों ॥ नशनाम रूपाचा अविभो ॥ प्रकृती चर्कजे ॥ २७॥ आणी यकृति नितव माझ्या दारी ॥ विवेयेथ आनही ॥ ह्यणीं निआ-
दि मध्य अवसान पाही ॥ जगां भिसी २८॥ श्रुती ॥ मम पर न रान्य किंचि दस्ति नंजय ॥ मथि सर्वो भेद योगं सूत्रे मणिगणाद्व ॥
७॥ टी० ॥ हे रोहिणी चें जळ ॥ नयाचें पाहनां येइ जे मूळ ॥ तें रोहिमन न्दती कें वळ ॥ हांय तें मानु ॥ २९॥ तया चि परी कीरटी ॥ इया मूळ-
ति जालिये स्पर्शा ॥ जें उपसंहासुन की जे लुटी ॥ तें मोचि आहें ॥ ३०॥ एसें होया दिसं न दसे ॥ हेय चि मानी असे ॥ मिया विश्व धरजे

मात. अं. ०९ लक्ष्मणा. ओ० १० चं वरी ओ० २४ नाणि यासी

७

७

७

७

जैसं॥ सुवर्मणि॥ ३१॥ सुवर्णांचेमणीकेल॥ तेसांन्याचेसुतोंवोंवेल॥ तेंम्याजगधरिल॥ सबाह्याभ्यंतरी॥ ३२॥ ॥ स्तो० ॥ रसोह-
 मककोतयभास्मिशाशिसूर्योः॥ यणवःसर्वदेधुशब्दःखेपारुपंचु॥ ८॥ पुणयोगधःपुशिव्याचतेजश्चास्मिविभावसो॥ जीवनेस-
 र्वभूतेषुतपश्चास्वितपस्मिषु॥ ९॥ टी०॥ ह्यणानिउदकीरिसा॥ कांपवर्नीजोस्पश॥ शाशिसूर्योजोप्रकाश॥ तोर्माचिजाण॥ ३३॥ तेंसा-
 चिनैसर्गकिषुद॥ मीरुआचाटार्योपध॥ गगनोमोशाब्द॥ वंदोयणाव॥ ३४॥ नराचाटार्योनरत्व॥ जेंअहंप्रावियेसत्व॥ तेंपौरुषमी-
 हंतत्व॥ बोलजतअसे॥ ३५॥ अग्निगेसेआह्राच॥ तेंजोनामाचेंआहंकवच॥ तेंपरंतंकलुयासाच॥ निजतेंजमी॥ ३६॥ आणिनाना-
 विधयोनी॥ जन्मोनिभूतेंअमुवर्नी॥ वर्ततआह्रातिजवर्नी॥ आपूलाला॥ ३७॥ एकंपवर्नोचपती॥ एकंतुणास्तवर्जती॥ एकेंअन्ना-
 धारेंराहती॥ जळएकें॥ ३८॥ गेसेभूतयतआनान॥ जेंयकानिवर्शादसेजवन॥ तेंअपवाटार्योअभिन्ना॥ मोचिएक॥ ३९॥ ॥ स्तो० ॥
 बीजेंमांसर्वभूतानांविधिपाथसनातन॥ बुद्धिर्बुद्धिमातामस्यतेजस्तजस्विनामह॥ १०॥ बलबलवनांचाहं कामरागविवर्जितं॥ धर्मो-
 विक्रदोभूतेषु कामोस्मिभरतर्वभ॥ ११॥ टी०॥ पेंआदिचोन अवसरें॥ विरुदेगगनाचोनअंकुरें॥ जेंअतिगिळोअसरें॥ यणवपीठे-
 ची॥ ३१॥ जंवहाविश्याकारअसे॥ नवजेंविश्वोचसारिखेंदसे॥ मगमहाप्रलयदशेंकेंसेंननदे॥ ४०॥ एसेंअनादिजेसहज॥ तेंमीगा-
 विश्वबीज॥ हेंहातातळांतुज॥ ददजतभसे॥ ४१॥ मगउघडकरूनपण्डवा॥ जेंहेंआणिसोसाख्याचियागांवा॥ नैययाचाउपेगबर-
 वा॥ देस्वसील॥ ४२॥ परीहेंअग्रसंगिकआलाप॥ आतोअसतुबोखेंसंक्षेप॥ जाणतोपयांचाटार्यंतप॥ तेंरूपमाझे॥ ४३॥ बकिया-
 माजिबळ॥ तेंबीजाणअदळ॥ बुद्धिमूर्तीकंबळ॥ बुद्धतेमी॥ ४४॥ भूतांच्याटार्योकांम॥ तोर्माह्यणेआत्माराम॥ जेणेंअर्थोस्तवध-
 र्मा॥ शोरहोया॥ ४५॥ येन्हीयोविकामाचेनिपेसे॥ करीकारेंद्रयाचिएसे॥ परिधर्मासंबंस्वामें॥ जावेंनेदो॥ ४६॥ जोअप्रवृत्तिचा-
 अब्दाटा॥ सांडुनिविधीचियानियेवारा॥ तेंवीचिनियमाचादिवटा॥ सर्वेचाले॥ ४७॥ कामणेंसयावोजाप्रवर्ते॥ ह्यणोनियमोसिद्धो

यपुरते॥ मोक्षार्थंचिमुक्ते॥ संसारभोगी॥ ४८॥ जोश्रुतिगौरवाचा मांडवी॥ कामसुखीचा वेलवाढवी॥ जंवकर्मफळासि पाळवी॥ अ-
 पवणीदेके॥ ४९॥ ऐसा निवतकांकंदर्प॥ जोभूतांयांबीजरूप॥ तोमीह्मणेबाप॥ योगीयांचा॥ ५०॥ हेंएकेक कितीसांगावें॥ आ-
 तोवरूजातचिआयवें॥ मजपासूननिजाणावें॥ विकारलेंअसे॥ ५१॥ श्रुती०॥ येचवसात्विकाभावागजसास्तामसाश्चये॥ म-
 नएवेतितात्त्विकनत्वहंतेशुतेमपि॥ १२॥ टी०॥ जैसाविकहनभाव॥ कोरजतमादिसर्व॥ तेममरूपसंभव॥ वोलखेंत॥ ५२॥ ते-
 हेजळेतरीमाझाठाणी॥ परीतयांमार्जामीनाही॥ जैसास्वप्निचाडोही॥ जागृतीनबुडे॥ ५३॥ जैसीरसाचीचमूघट॥ बीजकणि-
 कायनवट॥ परितयेस्तवहोयकाष्ठ॥ अंकुरद्वारे॥ ५४॥ मगतयाकाष्टाचाठाणी॥ सांगपंबीजपणअसेकाई॥ तैसामीविकारी-
 नाही॥ जरीविकारलाअसे॥ ५५॥ पैगगानीउपजेआभाळ॥ परीतयगगननाहीकेवळ॥ अथवाआभाळीहोयसलिल॥ तैथअ-
 ध्वनाही॥ ५६॥ मगत्याउदकाचेनिआवेशें॥ दगटलेंतेजेंउरवलस्वीतसे॥ नयेविजूसमजिअसे॥ सलिलकाई॥ ५७॥ सांगें
 अरनीस्तवधूमहोय॥ तियेधूमीकायअग्निआहे॥ तैसाविकारहामीनोहे॥ जरीविकारलाअसे॥ ५८॥ श्रुती०॥ त्रिभिर्गुणमयै-
 शीर्वैश्विःसर्वमिदजगत्॥ मोहितंनाभिजानातिमामेष्यःपरमव्यय॥ १३॥ टी०॥ परउदकीजालीबबुळी॥ तेउदकांतेंजसीझां-
 कोळी॥ कांवायाचिआभाळी॥ आकाशालोपे॥ ५९॥ हागास्तमलटुकेंह्मण्यो॥ परनिद्रावशेंबाणलेंहोय॥ तंवआठवकायदेतआ-
 हे॥ आपणपे॥ ६०॥ हेंअसोडोळ्यांचें॥ डोळांचिपडकरचें॥ तणेंदरवणेपणडोळ्यांचें॥ नगिळिजेकाई॥ ६१॥ तैसीहेमाझीचब-
 बली॥ त्रिगुणास्तकसाउली॥ किंमजचीआडवोडवली॥ जवानिकाजैसी॥ ६२॥ ह्मणअनिभूतेंमातेंनेगती॥ माझीचपरीमीनव्ढ-
 ती॥ जैसीजळींरीजळींनिविरती॥ मुक्ताफळें॥ ६३॥ पैएश्रीयेचाघटकीजे॥ सर्वेचिएश्रीसिमळेजरमेकविजे॥ येहवीतोचि-
 म्हाजे॥ ५५॥ चिन्मते॥ लो॥ ५४॥ नातरी॥

अग्निस्संगोसिजे ॥ तं शिवाका हांये ॥ ६५ ॥ तं संसृजतसर्वं ॥ हेमाद्रौचिकोरअत्यव ॥ परिमायायोगजनिवा ॥ दशंआले ॥ ६५ ॥ ह्य-
 णोनिमाद्भेचिमीनकृती ॥ भाद्रौचिसजनीवस्वती ॥ अहममताध्यानी ॥ विषयोधजाले ॥ ६६ ॥ श्मश्रो ॥ देवस्यशुणमयीमममा-
 यादुरत्यया ॥ मामेवयप्रयतंमायामेतामनिते ॥ ५६ ॥ टी ॥ आतामहदार्देमाद्रीमाया ॥ उतरोनयाधनजया ॥ मीहांइजेहंआ-
 या ॥ कैमेनियो ॥ ६७ ॥ जियेबस्याचकाचोआयाडा ॥ पहिल्यासंकल्पजळानाउयाडा ॥ भवेविमहाधृताचाबुडुबुडा ॥ मानाआला ॥ ६८ ॥ जेसु
 श्विस्तासचेनिवीये ॥ चदनकाळकनेचोनवेगो ॥ पवर्तानमृनिचिदुगा ॥ तंदमोडा ॥ ६९ ॥ जंशुणपनाचनिवाशिप्रर ॥ भरलोमाहोचैनमहापूर ॥ घे-
 ऊनिजातनगर ॥ समनयमार्थी ॥ ७० ॥ जेदुषाचाआवर्तितदृत्त ॥ मन्सराचबळसंपडत ॥ माजिप्रमादादितकपत ॥ महामीन ॥
 ७१ ॥ जेथप्रपंचीवळण ॥ कर्माकर्माचींवाभाण ॥ परततर्तवोभाण ॥ सुखदुःखोची ॥ ७२ ॥ रतीचियाबेदा ॥ आदकृतीकामाचि
 यालाटा ॥ जेथजीवफनसधता ॥ सोयादिस ॥ ७३ ॥ अहंकाराचियाचोळया ॥ तंरिमदत्रयाचियाउकिया ॥ जेथविषयोर्मिच्याआक
 किया ॥ उल्लाळंदेती ॥ ७४ ॥ उदयास्तानेकोड ॥ पाडतलन्यमरणाचंचोड ॥ जेथपांचभोतिवबुडुबुडो ॥ हांतीजती ॥ ७५ ॥ संस्मोहविषम
 मासे ॥ शिळितातियेचींआमिप ॥ तेथदेहेंभांवतवळसे ॥ अज्ञानाचे ॥ ७६ ॥ श्वांतीचिनिखडुळ ॥ रेवलेआस्थेचेअवगाळ ॥ र-
 जौशुणाचेनिखळाळ ॥ स्वर्गाज ॥ ७७ ॥ तमाचेधारसंबाड ॥ सत्ताचेस्थारपाजाड ॥ किंबहुनाहदुबाड ॥ मायानदी ॥ ७८ ॥ पैपु-
 नरावर्तचिनुभंड ॥ झळबतीसत्यलोकीचेहुडे ॥ घायंगडबडींधोडे ॥ ब्रह्मगोकुतांच ॥ ७९ ॥ तयापाणिचांचिनिवाहलेपणो ॥ आ-
 सुनीनधरतीवाभाण ॥ ऐसामायापूरहाकवणो ॥ तरजेळगा ॥ ८० ॥ येथएकनवलावो ॥ जोजोकीजेतरणोपावो ॥ तौनोअपाची ॥
 हायतरेक ॥ ८१ ॥ एकस्वयंबुद्धचाबाही ॥ शिगालेतयाचीबुद्धिचिनाही ॥ एकजाणिवेदेडोही ॥ गर्वशिकले ॥ ८२ ॥ एकीवेदत्रया-
 पाठ ॥ ओं ७२ ॥ वोमणो ॥ ओं ७३ ॥ संधारा ॥ ओं ७४ ॥ घेत ॥ ओं ७५ ॥ आंसं

चियासांगडी॥ घेतल्याअहंभावाचियाथोडी॥ तेमदमीनाचानोडी॥ सगळेचिंगेले॥ ८३॥ एकीवयसेचेंजाडबांधले॥ मगमन्यथा
 चियेकासेलागले॥ तेविषयमगरीसांगले॥ चयकूनिया॥ ८४॥ आनोवाधिच्याचातरंगा॥ माजिमनिशशाचाजतरंगा॥ तेंणेंकवळज
 तातिपेंगा॥ चहूंकडे॥ ८५॥ आणिशोकाचाकडाउपडन॥ क्रोधाचाआवर्नीदाटन॥ आपदापिधिचुंबीजत॥ उधवलादारी॥ ८६॥ म
 गदुःखाचेनिबरतबोलें॥ पाटींमरणचेंरेंवले॥ ऐसेकामाचेकासेलागले॥ तेगळेवाया॥ ८७॥ एकींयजनक्रियेचीपेटी॥ बांधोन
 घातलीपेटी॥ तेंस्वर्गसुखाचाकपाटी॥ शिरकोनिठेले॥ ८८॥ एकींमोसीलागावयाचियाआशा॥ केळाकर्मबाह्याचाभरवसा॥ प
 रीतेपडिलेवळसा॥ विधिनष्टेभंचा॥ ८९॥ तेंथवेराग्यांचीनावनरी॥ विवेकाचानागानलगे॥ वरिकांहितरेंयेयोगें॥ तशिवपायेतो॥
 ९०॥ ऐसेतरंजीवाचियेआंगवणें॥ दयमायानदीचेंतरणें॥ हंकासयासारिवेंबोलणें॥ ह्यणवंपा॥ ९१॥ जरअपथ्यशीळ्याधी॥
 कळेसाधूसिदुर्जनाचीबुद्धी॥ किंसांगोसाडीसिस्थीआलीसांनी॥ ९२॥ जरचोरासप्तादाटे॥ अथवामीनागळघोटे॥ नातरांभेडाउलटे
 ॥ विवसीजरी॥ ९३॥ पाडसवागुरकरांडी॥ कामुर्गामेरुवोलांडी॥ तरीमायेचीपेळुथडी॥ देखतेजीवि॥ ९४॥ ह्यणउमगापडुसुता
 ॥ जैसीसकामानजिणवेंचिवांनता॥ तेंवीमायामयहंसारिता॥ नतरवेंजीवां॥ ९५॥ येथएकचिलीलातरले॥ जेसर्वभावेंमजभजले॥
 तथाएलीचथडीसरलें॥ मायाजळ॥ ९६॥ ज्यांसदुरुनारुपुटे॥ जेअनुभवाचेकासेगाटे॥ ज्यांआत्मनिवेदनतरांटे॥ आकळले॥
 ९७॥ जेंअहंभावाचेंवोझेसांडुनी॥ विकल्याचियाझुककाचुकाउनि॥ अनुभवाचानिरुताहोउनि॥ पाणिदाळ॥ ९८॥ जयारेक्या
 चियाउतया॥ बांधाचाजोडलातारा॥ मगानवृत्तीचियापेळतीरा॥ झोंपावलेजे॥ ९९॥ तेउपरतीचावावीसलत॥ सोहंभावाचेंनिंधांवे
 पेळत॥ मगनिघालेअनकळित॥ निवृत्तिनरी॥ १००॥ येणेंउपायेंमजभजले॥ तेहंभाझीमायातरले॥ पारिंसेप्रक्ताविपाडले॥

पाठ-ओं ९९ उतरणी ओ-१०० झेलत.

बहुवसनाही १ श्लो ॥ नमो दुष्कृतिनामृदाः प्रपद्यन्त नराधमाः ॥ मायया पृहन्त ज्ञाना आसुरमावमाश्रिताः ॥ १५ ॥ चतुर्विंश
 भजन्ते माजनाः सुकृतिनोर्जुन ॥ आतो जिज्ञासुरथार्थं ज्ञानं च प्रनर्षमा ॥ १६ ॥ टी ॥ जेबहुना एकां आवांतर ॥ अहंकाराचा प्र
 तसंचार ॥ जाला ह्यणां निर्विसर ॥ आत्मबोधचा ॥ २ ॥ तेवकां नियमां वस्त्रनादवे ॥ पुढील अयोगतर्चीला जननेणवे ॥ आणिक
 रितात जेन करवे ॥ वेद ह्यणां ॥ ३ ॥ पण्डित शरीराचिया गोवा ॥ ज्यालागी आलयां डवा ॥ नोकार्याय आयवा ॥ सांडुनियां ॥ ४ ॥ इंद
 यद्रामीचेराजबिंदी ॥ अहंममते चिया जन्पवादी ॥ विकारां तराचीं मादी ॥ मळुनियां ॥ ५ ॥ दुःस्वशाकाचा घाई ॥ मारिल्याचीसे
 चिनाही ॥ हें सांगावया कारण काई ॥ जेमांसले माया ॥ ६ ॥ ह्यणां निनेमाते चुकले ॥ एकचतुर्विध मज्जले ॥ जिही आत्मा हितक
 ले ॥ वाटतेंगा ॥ ७ ॥ तोपहिला आत ह्यणजे ॥ दुसरा जिज्ञासु योलुजे ॥ तिजा अर्थार्थी जाणजे ॥ ज्ञानियाचोथा ॥ ८ ॥ श्लो ॥ नै
 पो ज्ञानी नित्यसुक्त एक भक्तिविशिष्ट ॥ प्रिया हि ज्ञानाद्वयम हं स च स भ प्रियः ॥ १७ ॥ टी ॥ तेय आत नो आर्त्तीचि निव्याजे
 ॥ जिज्ञासू तो जाणावया लागीं भजे ॥ निजे नितण इच्छिजे ॥ अर्थसिद्धि ॥ ९ ॥ मग चोथियाचा दायी ॥ कोही चिकरणे नाही ॥ ह्यणा
 निप्रक्त एक पाही ॥ ज्ञानियाजो ॥ १० ॥ जंतया ज्ञानाचे निप्रकाश ॥ फिटलें भेदाचें कडवसे ॥ मग मोचि जाला समरसे ॥ आणि प्र
 कही ते विचि ॥ १५ ॥ परी आणिकांचे दिठनावंक ॥ जेसा स्फटिकाचे भासें रुक ॥ तेसा ज्ञानी नव्हे कोतुक ॥ सांगतां तो ॥ १३ ॥
 जेसा वाराकागानीं विरे ॥ मग वारपण वेगळं चुर ॥ परि प्रक्त हें पंजन सर ॥ जरी ऐक्या आला ॥ १३ ॥ बरी पवनहाळी निपाहिजे
 ॥ तरी रागनावेगळा दोखजे ॥ येच वींगन तो सहजे ॥ असं जेंसे ॥ १४ ॥ तेंसे शरीर हनकमे ॥ तो भक्त ऐसागमे ॥ परी अंतरय
 तो तिथी मे ॥ मीचि जाला ॥ १५ ॥ आणि ज्ञानाचे निउज डल पणो ॥ मी आत्माणें संतां जाणो ॥ ह्यण्डनिमीही तेंसे चिद्वेष ॥ उच
 पाठः ओं ५ मेख वितती ओं १५ अंतरं ॥

बळलासांती ॥ १६ ॥ हांगाजीवांपलीकडिलीखुणो ॥ जोपावांनिवावरोंजाणो ॥ तोंदहाचेंनिवंगळपणो ॥ कायवेगळाहोये ॥ १७ ॥
 श्लो ७ ॥ उदाराः सर्वएवेनेजानीत्यात्मवेवर्ते ॥ आस्थितः सहिद्युक्तात्माभामेवानुनमार्गति ॥ १८ ॥ दी० ॥ ह्यणोनिआपुळालांइताचे
 निलांभो ॥ मजआवडंतोहोभक्त झोबो ॥ परिर्माचिकरंविंगळभो ॥ ऐसाज्ञानियाएक ॥ १८ ॥ पाहोपादुभतंयानियाआशा ॥ जगधेनुसि
 करीतसेफांसा ॥ परिदोरंवीणकैसेसा ॥ वत्साचाबकी ॥ १९ ॥ कोजेंतनुमनप्राणो ॥ तेंआणीककांहीचिंनपो ॥ देखतसांतेंह्यणो ॥ हेमा
 याभाझी ॥ २० ॥ नेयेणोमानेंअनन्यगती ॥ ह्यणउंनिधनुईनिंसीचिरीती ॥ नयाळगींलुह्मापती ॥ बोळिलेंसाचें ॥ २१ ॥ हेंअसो
 मगह्यणितलें ॥ जेंकांतूनसार्गितलें ॥ तेंहोभक्तभले ॥ पदिथेनेआह्मा ॥ २२ ॥ परिजाणोनियांभातें ॥ जेपाहोविसरलेमाधुतें ॥ जेंस
 मागारायेउनिसरितें ॥ मुरडावेंतेलें ॥ २३ ॥ तेंसीअंतःकरणाकुहरीजन्मली ॥ जयाचीपतीतिंगांमजमीनली ॥ तोभीहेकायबोली ॥
 फारकरु ॥ २४ ॥ येन्हवींज्ञानियोंह्यणजे ॥ तोचेंतन्याचिकवळसाझो ॥ हेंनह्यणावेंपरिकायकीजे ॥ नबोळणेंबोळो ॥ २५ ॥ श्लो ७ ॥
 बहूनोजन्मानांमतेज्ञानवाच्योप्रपद्यते ॥ वासुदेवः सर्वशितिसमहात्मासु दुर्लभः १९ ॥ दी० ॥ जेतोविषयाचीमोदीझाडी ॥ माजिका
 मक्काधाचींसांकडी ॥ चुकाउंनीआळाणडी ॥ सहासनेचिया ॥ २६ ॥ मगसाधुसंगेंसुभ्रता ॥ उजूसूळमांचियावारा ॥ अंपव्हीचा-
 अढ्ढाटा ॥ डावकनी ॥ २७ ॥ आपिजन्मशानांचायाहनवाणा ॥ तेविआस्थेचियानलेचिवाहणा ॥ तेंथफळहेतुचाउगाणा ॥ कवणचा
 की ॥ २८ ॥ ऐसाशरीरसंयोगाचियेराति ॥ माजियावनांसडियाआयति ॥ तंवकर्मक्षयानिपाहति ॥ पांहादजाली ॥ २९ ॥ नैसीचगु
 रूकपाउरवाउजकली ॥ ज्ञानाचीवोतपडीपडली ॥ तेंथसाभ्याचीन्मिदुउयडली ॥ नयाचियेदृष्टि ॥ ३० ॥ तेवळींजयाकडेवासपाह
 ॥ नेउतामींचितयाएकआहे ॥ अथवानिवांतजरीराहे ॥ नर्हीमींचिनया ॥ ३१ ॥ हेंअसोआणीककांही ॥ तयासर्वभोवोचिंनिहां

पाठ- ओं- २४ उपजली- ओं- २६ दाट-

जैसें सब स्यंजक डोही॥ बुडालिया घटा॥ ३२॥ तेंसातांमजुर्भातरा॥ मातया आंतवाहरी॥ द्वंसांगिजल बोलवरी॥ तेंसंनळे॥ ३३॥
द्वणोनि असो हृदया परा॥ तोदरवजानाची वारवारी॥ तेंगेंस सरले नकरी॥ आपविशवा॥ ३४॥ हंसमस्तुही अवा सुदेव॥ ऐसा प्रीति
रसाचा वीतला भाव॥ द्वणोनि मक्ता माजी राव॥ आगि ज्ञानियां तांचि॥ ३५॥ जयाचि यशतिनी चा वारवारा॥ पवाड हाय वराच-
रा॥ तो महात्माधनुषरा॥ दुर्लभ आश्री॥ ३६॥ येरब हृत जांडती करीती॥ जयाची भजनं भागा साटी॥ जे आशाति मरे दृष्टी॥ वि
षाध जौले॥ ३७॥ श्लो०॥ कामें स्नेह ते ज्ञानाः प्रपद्येन न्य देवताः॥ तेंतें नियम मास्याय प्रकृत्या नियताः स्वया॥ २०॥ टी०॥
आणि फळाचिया हावा॥ न्दर्यां कामा जो ला रिगावा॥ कोतयाचि यय सगर्णा दिवा॥ ज्ञानाचा गला॥ ३८॥ ऐसे उभयतां ओधारी पड
ले॥ द्वणोनि पार्मचि मातें चुकले॥ मग सर्व भावें अनुसरले॥ देवतांतरा॥ ३९॥ आर्धचि प्रकृतीचि पादका॥ वरिभोगाला गितं वरं क
॥ मग तेणें लोलुप लें कोतुका॥ कें सोनि भजती॥ ४०॥ कवर्णानिया नि यम बुद्धि॥ कें सिया हन उपचार समुद्धि॥ को अपणायथाविधी
॥ विहित करणें ४१॥ श्लो०॥ यो यो यां यांतं नु मक्तः श्रद्धया चिंतुमिच्छति॥ तस्य तस्या चलांशं तां संविद्व्याम्यहं॥ २५॥ टी०
॥ पैजो जिये देवतांतरा॥ भजवयाची चाड करी॥ तयाचि ते चाड पुरा॥ पुरावता मों॥ ४२॥ देवां देवी मों चि पाहीं॥ हाही निश्चय सा-
भिनाही॥ भावते ते वारी॥ वेगळाला धरिती॥ ४३॥ श्लो०॥ सतयाश्च दया युक्तस्तस्या राधनमहीने॥ लभ न च नतः कामाश्च ये
व विहितान् हितान्॥ २२॥ टी०॥ मग ते श्रद्धा युक्त॥ तें शिचें आराधन जें उचित॥ तें साद्वर सा मस्त॥ वृत्ती लागे॥ ४४॥ ऐसें जे-
णें जे भाविजे॥ तें फल तेणें पाविजे॥ परी ते ही सकळ निपजें॥ मज चि स्तवा॥ ४५॥ श्लो०॥ अंतवत् फलं तं शांतं द्रवत्य ल्य मे पसां॥
देवान् देव जे यांति मद्भक्ता यांति मामपि॥ २३॥ टी०॥ परी ते मक्त मातें नेणती॥ जे कल्य ने बाहीरी न घाति॥ द्यणानि कल्पिन फळा
पाट॥ ओ० ३४ संवरले॥ ओ० ३७ विषय मंजाले॥ ओ० ४६ जरि॥ ४७

पावती॥ अंतवतं॥ ४६॥ किंबहुना ऐंसे भजना॥ तंसंसारार्चिं साधन॥ येर फळ भोग तो स्वप्न॥ नाव सरणी देसे॥ ४७॥ हें असो परांते॥
 मग हो कां आवडतें॥ परिय जी जो देवतां तें॥ तो देवत्वासींचिये॥ ४८॥ येर तनु मन प्राणी॥ जे अनुसरलें माझे याचि वाहणी॥ तें देहाचि नि-
 र्वाणी॥ मीं चिदाती॥ ४९॥ श्रुती॥ अव्यक्त व्यक्ति माप न मन्यतें मां म बुद्ध्या॥ परं सावमजानतें मां व्यथमनुत्तम॥ २४॥ टी०॥ प-
 री तें से न करि तो प्राणिये॥ वांया आपुल्या हिती वाणिये॥ जे गोंद नाति पाणिये॥ नऊ हाति चेनी॥ ५०॥ ना न अमृताचा सागर बुडजे
 ॥ मगतो डाको वज्र मिटी पाडजे॥ आणिमनो नरीं आठ वजे॥ थिल्लो रोंद काते॥ ५१॥ हें ऐसें कास या करवें॥ जें अमृती ही शि गो निमरा-
 वें॥ तें सरवें अमृत होऊनि कां न सावें॥ अमृत माली॥ ५२॥ तें माफू कडे नुचा गजरा॥ सांडुनि यंध नुर्दरा॥ कां प्रतीति पास्वीं चिदंब-
 रा॥ गोसावियां नो हावें॥ ५३॥ जे थड्या वला निपा नाडें॥ सखाचा पसार जूनाडो॥ आपुलें निरसर वाडें॥ उडो ये ऐसा॥ ५४॥ तथा उमपा-
 माप कां सरवें॥ मज अव्यक्ता व्यक्ता कामा नवें॥ सिद्ध असतो कनि मावें॥ साधन वरी॥ ५५॥ परी हा बोल आपवा॥ जरीं विचारि-
 जत संपाडवा॥ तरीं विशेष याजीवा॥ नचो जवया॥ ५६॥ श्रुती॥ नाहं मकाशः सर्वस्य योगमाया समावृतः॥ मृदोयं नाभिजना-
 तिलोको मामजस्य यो॥ २५॥ टी०॥ काजे याग माया पडके॥ हे जालें आहति आंधळे॥ ह्याणीं निश्चकाशाचि न देह बळे॥ न देर व-
 ती मातें॥ ५७॥ येन्हर्वा मीं नसे ऐसा॥ काय वस्तु जात अस॥ पाह पांळ वण जळ रसे॥ रहित आहे॥ ५८॥ पवन कवणा तें न सेवेचि
 ॥ आकाश कें न समाधिचि॥ हें असो एक मींचि॥ विस्मी आहे॥ ५९॥ श्रुती॥ वेदाहं समतीता निवर्तमाना निचाजुना॥ भविष्या-
 णि च भूता निमां तु वेदन कश्चन॥ २६॥ टी०॥ येथें भूतें जियें आहति जंतुली॥ नियें मींचि होऊनि ठेडी॥ आणिवर्तति आहति जे-
 तुली॥ तें ही मींचि ६०॥ काभा विष्यमाणें जियें ही॥ ती हीं मज वगडीं नाही॥ हा बोल चिये न्हवीं काही॥ होय ना जाये॥ ६१॥ दोराचि-
 पाठ-ओं० ६९ नित नः ओ० ५५ नेमावे ओ० ५८ काही० ६९

यासापासी॥ डोबाविड्यानागगव्हाकाएसी॥ संख्यानकरवेकाण्हासी॥ तंवीभूतांसिपथ्यले॥ ६२॥ ऐसामीपंडुसुता॥ अनुस्यू
तसदीअसता॥ याससारजभूती॥ नोअनेबोले॥ ६३॥ तरितेचिआतांथांडीसी॥ गोठीसोगिजेळुपरियेसी॥ जेथअहंकारतन्नीसि
॥ वोलमपडिले॥ ६४॥ श्लो०॥ इच्छादुषसमुत्थनदुहमोहेनमारता॥ सर्वभूतानिसमाहंसंयोगीतिपरतप॥ २७॥ टी०॥ तेथइच्छाहेकु
मारीजाली॥ मगनेकामाचियातारण्याआली॥ तेथदुषेसामोडली॥ वराडिक॥ ६५॥ तयादोयांस्तवजन्मला॥ ऐसादुहमोहजा
ला॥ मगतोअजेयानेवाढवला॥ अहंकारे॥ ६६॥ नोदृतीसिसतांयतिकुल॥ नियमाहीनागवेस्यूक॥ आशारसेंदोदल॥ जाला-
सांता॥ ६७॥ अमंनुष्टीचियाभदिरा॥ मत्तहोवोनयनुदरा॥ विषयाचेवावरा॥ विकृतीसिअसे॥ ६८॥ तेंणेंभावमुत्थीचियावाटे॥
विकुरलेविकल्याचेकाटे॥ मगाचिरुआव्हाटे॥ अयवृत्तीचे॥ ६९॥ तेंणेंभूतेंभावावली॥ द्यर्णोनिसंसारोचियाआडवामाजिप-
डिली॥ मगमहादुःखाचघेतली॥ वीझवरी॥ ७०॥ श्लो०॥ येषांत्वंतगतं पापं जनानां पुण्यकर्मणां॥ तेदुहसाहनिर्मुक्ता भजने-
माहदवता॥ २८॥ टी०॥ ऐसंविकल्याचेवायाणें॥ कांटेदेखोनिसिणाणें॥ जेमनिभ्रमानेपासावणे॥ घेतीचिना॥ ७१॥ इजुए
कनिष्टेचापाउली॥ रगडुनिविल्याचियाभाली॥ महापानकाचीसोडली॥ आतवीर्जाहि॥ ७२॥ मगपुण्याचेधावायेनले॥ आ
णिमाझीजवकीकपावले॥ किंबहुनातेचुकले॥ वाटवधेयां॥ ७३॥ श्लो०॥ जरा मरणमोक्षायमामाभित्ययतं नित्ये॥ तेब्रह्मनिद्वि-
दुःकल्लमभ्यासं कर्मचारिवले॥ २९॥ टी०॥ येन्हीतीरीपाथी॥ जन्ममरणार्चनिमेकया॥ ऐसियाप्रयत्नातेंआस्था॥ वियजया
ची॥ ७४॥ तयातोप्रयत्नचिकेवळें॥ मगसमग्रपरब्रह्मं फळे॥ जयापिकेयारसगळे॥ पूर्णतंचा॥ ७५॥ तेंगेळींकृतकृत्यता
जगपरे॥ तेथअध्यात्माचेनवलपणपुरे॥ कर्माचेकामसर॥ विरमेमन॥ ७६॥ ऐसाअध्यात्माभनया॥ होयगाधनजया॥ भ्रुडव
पाठ-ओं-६७ सवक-ओं-७० दोंड-ओं-७१ पासवणे-

६९

६९

६९

६९

लजया ॥ उद्यमीर्मा ॥ ७७ ॥ नयातंसास्याचियंवाटी ॥ एक्याचीसांदेकुळवाडी ॥ तथमेदाचियादुबळवाडी ॥ नेणजेतयां ॥ ७८ ॥
 ७९ ॥ साधिपूताधिदेवमांसाधियज्ञचयंविदुः ॥ प्रयाणकाळोपिचमोतेविदुयुक्तचेतसः ॥ ३० ॥ इतिश्रीमद्भगवद्गीतासूपनि
 षत्सु ब्रह्मविद्यायांयोगशास्त्रे श्रीकृष्णार्जुनसंवादेज्ञानविज्ञानयोगो नाम सप्तमोऽध्यायः ॥ ७॥ टी० ॥ जिहीसाधिपूतादिमा
 ने ॥ पतीतीचेनिहाने ॥ धरूनिआधिदेवांत ॥ शिस्तलेगा ॥ ७९ ॥ ज्याजागिचेचेनिवेगें ॥ मोआधियज्ञदृष्टीरिगें ॥ तेतनुचेनि-
 वियोगें ॥ विनूयेनव्दति ॥ ८० ॥ येचूर्वाआयुष्याचेंसूत्रविधत्तां ॥ अनांचिउमटेखडाडतां ॥ कायममरतयांहीचिता ॥ युगांतनो
 हे ॥ ८१ ॥ परिनेणोंकेंसंपंगा ॥ जंजडांनिगेलेभाशियाआंगा ॥ तेंप्रयाणीचियालगबगा ॥ नसांडितीचमातें ॥ ८२ ॥ येचूर्वातरी
 जाणा ॥ ऐसेजेनिपुणा ॥ तेचिअंतःकरण ॥ युक्तयोगी ॥ ८३ ॥ तंवदुयेशब्दकुपिकेती ॥ नोडुवोचिअवधानाचीअंजुकी ॥ जेना
 वेकअर्जुनतयेवेकी ॥ मागांचिहोता ॥ ८४ ॥ जेथतद्ब्रह्मवाक्यफळें ॥ जेंनानाथरसेंरसाळें ॥ बहुतेंआह्मनिपरमळें ॥ भावाचेनि
 ८५ ॥ सहजकृपामंदानिकें ॥ श्रीकृष्णदुमान्चीवचनफळें ॥ अर्जुनश्चवणाचियेखेळें ॥ अर्वाचिनिपडिळें ॥ ८६ ॥ तियेपेमाचीहो
 कावकळी ॥ कीब्रह्मरसाचासागरीचुबकळी ॥ भगंतसांचिकायोंळी ॥ परमानंद ॥ ८७ ॥ तेंगेबरवेपणेंनिमेटें ॥ अर्जुनाआ-
 निमेषाचेडोहळें ॥ येतातिगळी ॥ विस्मयासृजते ॥ ८८ ॥ तियापुरुषसंपत्तीजोडोळिया ॥ भगत्सागाचोयबाकुलिया ॥ त्दृष्ट्या-
 चाजीवांशुतकुलिया ॥ होतआह्मती ॥ ८९ ॥ ऐसेवरचिर्लुचिबिरवा ॥ मरुजवागेलुगलेफावा ॥ तवसस्त्वादाचियाहांवा ॥ ला
 होकेळा ॥ ९० ॥ झडकरीअनुमानाचेंनिकरतळें ॥ घेरुनिनियेवाक्यफळें ॥ प्रतीतीसुखीएकेंवेळें ॥ याळुपाहे ॥ ९१ ॥ तंवविदराचि
 थारसनानदादनी ॥ परहनुचादशनीनकुतनी ॥ ऐसेजाणोंनिमुभद्रापती ॥ चुंबीबिना ॥ ९२ ॥ भगच्चमत्कारलाहाणो ॥ द्येजळीचिंमिता

पाठः ओं ८५ बहकतः ओं ८९ वावतीः

रांगणें॥ कैसा इसाक विलोअसनागणें॥ असरांचेनि॥ १३॥ इयपदेनवतिमुडिया॥ यगनाचियाधडिया॥ येयआमुचि मतीबुडालिया॥
 थावननिये॥ १४॥ बांचूनिजाणावयाचेंकं॥ गोंठो॥ ऐसंजेंतर्विकल्पूनि करीदी॥ तियापुनरपिकेलीहरी॥ यादेवेंद्रो॥ १५॥ मगविबविलें
 सुमरें॥ हांहेजीयेएकवार॥ शानहीपदंअनुष्ठिणें॥ नवनंयाहाती॥ १६॥ येहवीअवधानांचेनिबिहलेपणें॥ नानाप्रमेयांचीउगाणें॥ काय
 थवणाचेनिआंगवणेंबोलाहाति॥ १७॥ पारितसंहनोहोचदवा॥ देखिलाअसरांचासंकावा॥ आणिविस्मयोजवा॥ विस्मयेमाला
 ॥ १८॥ कानाचेनिगवाक्षद्वारे॥ बोलाचेरशमीअभ्यंतरें॥ ग्राहनांतवचमकारें॥ अवधानटाकलें॥ १९॥ तेंविचिअर्थाचीचाडमजआहो॥
 तेंसांगनोहीवेकनसाहे॥ ह्यणूनिनिरूपणलवलाहे॥ किजोदेवा॥ २०॥ असामागीलपडनाळाघेउनी॥ पुढाअभियायहरीसूनी॥
 तेविचिमाजिशरूनि॥ आतीआपुली॥ २१॥ केंसीपुसर्तपाहंपांजाणिव॥ भिडंचितरेंलंपांनंदीशिंव॥ येहवीं श्रीकृष्णाहृदयासिखेंव
 ॥ देवोसरली॥ २२॥ आहोश्रीगुरुनंजपुसावें॥ तेंयेणमानेंसावयव्हावें॥ हेएकविजाणेंआयव॥ सावसाची॥ २३॥ आत्मतयाचेतेप्रश्नक
 रणें॥ वरीसर्वज्ञम्हीहचिंबोलणें॥ हेसंजयोआवडलेपणें॥ सांगलेंकसो॥ २४॥ नियोअवधानद्यांवंगोदी॥ बोलिलेजुनोदमन्हादी॥ जै-
 सीकानांचेआधीहरी॥ उपयोगाजाये॥ २५॥ बुद्धिचियाजभा॥ बोलाचाचस्वतंगाभा॥ असराचियाभांदा॥ इदियेंजिती॥ २६॥ पाहाणामालोकर
 ॥ घाणांसिकारवाटलेपरिमळें॥ परिवरचियाबरवाकाइडोळें॥ सुखयेनव्दनी॥ २७॥ तेंसंदेशियाचियाहवावा॥ इंदियेंकरितीराणिवां॥
 मगप्रमेयाचियागांवां॥ लंसाजाइजे॥ २८॥ ऐसोनिनगरपणें॥ बोलनिनिजेंबोलणें॥ ऐकाज्ञानदवहणें॥ निवृत्तीचा॥ २९॥
 इतिश्रीभावावार्थदीपिकायाज्ञानेश्वरविरचितायांसप्तमोऽध्यायः ७

७.

७.

७.

७.

७.

७.

७.

७.

श्रीगणेशायनमः ॥ अर्जुन उवाच ॥ किं ब्रह्म किमध्यात्मं किं कर्म पुरुषोत्तम ॥ अधिभूतचक्रं योक्तुमधिदेवं किमुच्यते ॥ १॥ टी० ॥ मर्गं अर्जुन
 ह्यणिनलं ॥ हां हो जी अवधारितं ॥ जंभ्यां पुंसितं ॥ तं नरुपि जं ॥ १॥ सां ग्राक वणतं ब्रह्म ॥ कायसयानामकम ॥ अथवा अयात्म ॥ काय
 ह्यणिपै ॥ २॥ अधिभूत तैवेसं ॥ गथ अधि देवत कवण असं ॥ हं उ य इ मी परि रंसे ॥ एसें बोल ॥ ३॥ म्ह्यो ० ॥ अधियज्ञः कथं कथं देहस्मि
 न्मधुसूदन ॥ प्रयाण काले कथं ज्ञेयो भिनयतात्मभिः ॥ ४॥ टी० ॥ देवा अधियज्ञतो कां दे ॥ कवण पां दयं देहो ॥ हं अनुमानां भ्रमको हो ॥
 दिदीन भरे ॥ ५॥ आणिनयता अतः करणी ॥ तू जाणी जशी देह प्रयाणी ॥ तै कं सो नै दे शा ड याणी ॥ परिसवामांते ॥ ५॥ देवा धवळारो चि
 तामणी चा ॥ जरी प हु ड ला हाय देवां चा ॥ तरं वां सण तां हो बोल तया चा ॥ सां प न वं चे ॥ ६॥ तै सें अर्जुना चिया बोल ॥ बवें ॥ आलें तें चि ह्यणि न लें
 देवें ॥ तें परि रंसे गां बरवें ॥ जं पुंसितं तु वां ॥ ७॥ किर ही वा म धे नृ चा पा डा ॥ बरं कल्यतरु चा ओ हं मा दा डा ॥ ह्यणी नि मनोरथ सिद्धी चिया चा डा ॥
 तो न व ल नो हे ॥ ८॥ श्री कृष्णा को पो नि जा सि मरी ॥ तां पां वे प र ब्रह्म साक्षात्कारी ॥ मां द्य ये नै उ प देश करी ॥ तों केशा परी न प्र व ल ॥ ९॥ जें श्री कृ-
 ष्ण चि हो इ जे आपणा ॥ तें श्री कृष्णा हाय आपुलें अंतः करण ॥ तें धवां सं कल्यांचें आं पाणा ॥ बोल गती सिद्धी ॥ १०॥ परि रंसे जें ये म ॥ तें अर्जुनो-
 चि आं थि निःसीम ॥ ह्यण उ नितयांचे काम ॥ सदा फल ॥ ११॥ या कारणें श्री अर्जुन तें ॥ तं मनां पातनयांचें पुसतें ॥ हो इ ल जाणा नि आ इ तें ॥ वो ग
 रू नि ठे विलें ॥ १२॥ जें अपत्यथानीं गी ॥ तयाचीं मृक तं मां तें सीं चिलो ॥ ये ह वीं तं शाब्द काय सां गी ॥ मग स न्य दे यरी ॥ १३॥ ह्यण वो निरुप
 कुवां गुरु चिया द्याथी ॥ हे न व ल नो हं कां हो ॥ परितें असो आ इ का कां दे ॥ जें देव बोल न ज हां लें ॥ १४॥ म्ह्यो ० ॥ श्री भगवानुवाच ॥ असं रं ब्रह्म परमं
 स्वभावो ध्यात्म सुच्यते ॥ भूत भावा द्रव्य क रो वि सर्गः कर्म सां जितः ॥ १५॥ टी० ॥ मग ह्यणि न लें सर्व वरें ॥ जें आकारो इयं स्वीं वरें ॥ को त लें अस न
 न श्विरें ॥ कवणे का की ॥ १५॥ ये ह वीं स पुरण तयांचें पा हा वें ॥ त री श्च न्या चि न लें स्व भावें ॥ वी रा ग ना चि नि पा ल वें ॥ गाळु नि धि न लें ॥ १६॥

जेंसंहोपरिवरुं ॥ द्योविज्ञानाचियेसोळें ॥ हालवल्लहीनगळे ॥ तेंपरब्रह्म ॥ १७ ॥ आणिआकाराचिनिजालेपणें ॥ जन्मयमार्तेनेपणें ॥ अकारलेपीनमणें ॥ नाहोकाही ॥ १८ ॥ ऐसियाआपाहियाचिसहजस्थिती ॥ जयाब्रह्माचीनिदाताअसती ॥ तथानामसुप्रद्रापती ॥ अथास्त्रगा ॥ १९ ॥ मगगर्गनीजेंविनिमळें ॥ नेणोंकेंचीएकवेळें ॥ उदनीधनपटळें ॥ नानावर्णें ॥ २० ॥ तेंसैंअमूर्तीतियोविराडें ॥ महदादिभूतभेदें ॥ ब्रह्मांडाचेबांधें ॥ हेंचिलगती ॥ २१ ॥ पैंनिर्विकल्पाचियेबडो ॥ फुरेआदिसंकल्पाचीविरुदो ॥ आणिस्वोचमोहोनेयेदो ॥ ब्रह्मगोकुळाचा ॥ २२ ॥ तयाएकैकाचेभीतरीपाहिजे ॥ तंवबीजाचाचिप्रारलादेस्विजे ॥ माजिहोतियांजानियांनेणिजे ॥ लखजीवा ॥ २३ ॥ मगतयाब्रह्मगोकुळांचेआशाश ॥ प्रसवनीआदिसकल्पअसमासैं ॥ हेंअसोरोसीबहुवसा ॥ सुधीवाटे ॥ २४ ॥ परिदुजेनवीणएकळा ॥ परब्रह्मचिसंचला ॥ अनेकत्वाचाआला ॥ पूजेंसा ॥ २५ ॥ तेंसममविषमत्वनेणोंकेंचें ॥ वायांचिचराचरचे ॥ पाहाताप्रसवतियायोनीचे ॥ लक्षदिसती ॥ २६ ॥ योरजीवभावाचियेपाळविये ॥ काहोमयादाकरूनये ॥ पाहिजेकवणेंआपवेंविये ॥ तंवमूळतेंशून्य ॥ २७ ॥ ह्मणूनिकर्तामुदलनदिसे ॥ आणिसेसोंकारणहोकाहीनसे ॥ माजिकार्यचिआपेंसैं ॥ वाटोंचिलगो ॥ २८ ॥ ऐसाकरितेनवीणगोचर ॥ अव्यक्तीहाआकार ॥ निपजेजोव्यापार ॥ तथानामकमे ॥ २९ ॥ म्हणो ॥ अधिभूतंसरोमावः पुरुषध्याधितैवतम् ॥ अधियज्ञोहमेवात्रदेहेदहभूतांवर ॥ ३० ॥ टी ॥ आतांअधिभूतजेंह्मणें ॥ तेंहीसांगोंसंसेपें ॥ नरिहोयआणिहारपें ॥ अफजेंसैं ॥ ३१ ॥ तेंसैंअसन्नपणआहाच ॥ नाहोहोदजेंहसाच ॥ झयातेंरूपाआणिनीपांचपांचा ॥ मिळोनिया ॥ ३२ ॥ भूतांतेंअधिकरूभिधामे ॥ आणिभूतसंयोगेंनरिदिसे ॥ जेंवियोगवेंकृपेंशें ॥ नामरूपादि ॥ ३३ ॥ तयातेंअधिभूतह्मणजे ॥ मगअधिदेवनपुरुषजाणिजे ॥ जेंगेंप्रकृतीचेंमोणिजे ॥ उपाजिलें ॥ ३४ ॥ जोचेतनेचाचक्षु ॥ जोइंद्रियदेशीचाअधक्षु ॥ जोदहासमानोवृक्ष ॥ सकल्पाविहंगमाचा ॥ ३५ ॥ जोपरमात्माचिपरिदुसरा ॥ जोअहकारानिद्रानिदसरा ॥ ह्मणोनिषाद ॥ ओं-२४ असमहास-

स्वप्नाचियावोर॥ बारासंतोषशिणो॥ ३५॥ जीवयणंनावे॥ ज्यातें आळविजेस्वभावे॥ नें अधिदेवतजाणावे॥ पांचयतनचि॥ ३६॥ आतां इ
 येचि शरीरगामी॥ जेशरीरमात्रातें उपशमी॥ तो अधियज्ञप्रणामी॥ पंडुकुमरा॥ ३७॥ येरअधिदेयाधिष्मता॥ हेमीचिकीरसमस्ता॥ परिष
 धरीकडाकाभिकुता॥ तें कायनोहे॥ ३८॥ नरिपधरपणनमळे॥ आणिकडाकाचियाहीअशानमिळे॥ परिजवअसेतयाचेंनमेळे॥ तेंव
 सांकेचिह्मणिजे॥ ३९॥ तेंसेअधिष्मतादिआपवें॥ हेंअविद्येचेंनपाळवें॥ झाकलेंनवमानावें॥ वेगळेंऐसे॥ ४०॥ तेंचिअविद्येचेंजवनीक
 फिटे॥ आणिमंदभावाचीअवधीनुरा॥ मगद्वणोरकहोउंनिजरीआदे॥ नरदानीकायहोती॥ ४१॥ पेंकशांचागुंडाका॥ वारिदेविलीस्फुटि
 कशिळा॥ तेजवपाहिजेडोळा॥ तंवभदलीगमती॥ ४२॥ पाठीकंशपरोनेनळे॥ आणिमंदलपणकायनेणोंजाहाले॥ नरिडांकदेऊंनिसांरिले
 ॥ शिकेतेंकारे॥ ४३॥ नातेअसवंडचिआयती॥ परिसंगंभिन्नागमलाहांती॥ तेंसारिलयांमोगोती॥ जेंसांकांतेसो॥ ४४॥ तेवीचिअहंभावजा
 ये॥ तारेक्यतेंआधींचिआहे॥ हेंचिसांचेंजयहोये॥ तोअधियज्ञमी॥ ४५॥ पेंगाआझीनुज॥ सकळयज्ञकर्मज॥ सांगीनलेंकोजेंकाज
 मनींधरुनि॥ ४६॥ तोहासकळजीवांचाविसावा॥ नैष्ठ्यसुखाचाठवो॥ परिउयडकरुंनपांडवो॥ दाविजतअसो॥ ४७॥ पाहिलेंवैरा
 यदंधनपरिपूती॥ इंद्रियानळांप्रदीप्तो॥ विषयद्रव्याचियाआहुती॥ देउनियो॥ ४८॥ मगवज्रासनतेंचिउवी॥ शोभूनिआथारसमुद्राब
 रवी॥ वेदिकाराचेंमंडर्वी॥ शरीराचा॥ ४९॥ तंयसंयमामोचीकुडें॥ इंद्रियद्रव्याचेंनिषवीडो॥ गजनीउरडें॥ युक्तयोषि॥ ५०॥ मगमनया
 णसंयम॥ हाचिहवनसंपदेचासंयम॥ येणेंसंतोषविजेंनिधूम॥ ज्ञानानळ॥ ५१॥ ऐसेनिहंसकळज्ञानीसमपें॥ मगज्ञानतेंज्ञेशीहारये
 ॥ पाठींज्ञेयचिस्वरूपें॥ निस्वितुंरें॥ ५२॥ तयानावगाअधियज्ञ॥ ऐसेबोलिजाजवसंज्ञ॥ तंवअर्जुनअनयाज्ञ॥ तयापातलेतें॥ ५३॥
 हेंजाणोनिह्मणितलेदेवें॥ पार्थापरिसनआहासिबरवें॥ शकृष्णाचियाबाळासंवें॥ येरुसुखाचाजाहाळा॥ ५४॥ देखाबाळाचेंयध

पाठ ओं- ३९ तेंकायसांकेनोहे ४२ पाहिली गमली

णीधाइजे॥ क्रांशिष्याचे निजाहाले पणं हांइजे॥ हेस हुकूचिएकले निजाणिजे॥ कोयसवति या॥ ५५॥ ह्यणो निसालिकभावाचीं यां
दीं॥ कृणाअगीं अछुनाअधीं॥ नसमातसेपरिबुद्धि॥ सावकूनिदेवे॥ ५६॥ मगपिकलियासुखाचापरिमई॥ कीनिबालियाअमृता
चाकलीळ॥ तैसाकोंवळाआणिरसाळ॥ बोलबोलिल्ल॥ ५७॥ ह्यणेपरिमणेंयाचा राया॥ आदेंकबापाधनंजया॥ ऐसीजळोसरिलि
यामाया॥ तेंयजळीतेंतेंहीजळो॥ ५८॥ अंतकाळेंजमामेवस्परच्युक्काकलेवरम्॥ यः यथातिसमद्रावंयातिनस्त्यवश-
यः॥ ५९॥ दी०॥ जेंआतांचिसांगीतलं हांतें॥ अगाअधियसह्याणतळाजयातें॥ तेंआधींचितयामातें॥ जौणोनिअंती॥ ५९॥ नेदेह
झोळऐसेंमानुनी॥ ठेलेंआपणपेंआपणहोउने॥ जेंसामठगानापरूनि॥ गगनींचिआहे॥ ६०॥ येयतीतींचियामाजियरी॥ तया
निश्चयाचीवोवरी॥ आलीह्यणोनिबाहरी॥ नव्हेचिसे॥ ६१॥ ऐसेंसबान्दरेक्यसंचलें॥ मांहेउनिअसतांगचिलें॥ बाहेरिभूतांचीपां
चहीरखवळें॥ नेणतोचिपाडलीं॥ ६२॥ आतांउमयांउमपणनाहीजयाचें॥ माण्डिलियांराहनकवणतयाचें॥ ह्यणोनिपतीतिचि
येपोदींचें॥ पाणीनहाले॥ ६३॥ नातेंऐक्याचिआहंवांनिळी॥ कींनिन्यनेचयाददधोयानळी॥ जैसीसामरससमुद्रेंधुतली॥ रुळेचि
ना॥ ६४॥ पेंआथारीघटबुडाळा॥ तोआंतबाहेरिउदकेंसरळा॥ पाटीदेंवगत्याजरीफुटला॥ तरीउदककायफुटे॥ ६५॥ नातरीस
पेंकवचसोडिलें॥ काउबोरनेंवरुचोडिलें॥ तरिसांराणकायमोडिलें॥ आवेवामाजी॥ ६६॥ तैसाआकारहाआहाचक्षरी॥ वांचू
निवस्तूतेसांचलीचिअसे॥ तेंचिबुद्धजांलियावसुकुसे॥ केंसेनिआतां॥ ६७॥ ह्यणोनिंयपरिमातें॥ अंतकाळींजाणतसातें॥
जैमोकळीतेदेहातें॥ तेमींचिहाती॥ ६८॥ येन्हीनरीसाधारण॥ उरींआदळलियामरण॥ जोआठवपरीअंतःकरण॥ जेंचि
होइजे॥ ६९॥ जैसाकवणएदकाकुळती॥ पळतांपवनगती॥ दुपावलीअवचिती॥ कुहामाजिपडियेला॥ ७०॥ आतांतयाप-
पाठ- ओं-५७ गमिक-ओं-५८ तेंही-ओं-५९ जाणोअंती-ओं-६२ मीचि-

४

४

४

नानिमणें॥ जें आधवेंचि आधवेंपणें॥ देसत असे॥ ८६॥ जें गगनाहूनि जुनें॥ जें परमाणूनि सांनें॥ जयाचे निमि अधिनें॥ विश्वचढे॥ ८७॥
 जें सर्व तें यथाविद्यें॥ विश्वसर्व जेणें जियो॥ हेतु जयाबिहें॥ अचित्य जा॥ ८८॥ देसें बोलें बाइगुनचरे॥ ते जीति मिरन शिरे॥ जें देहाबे आ-
 धारें॥ चर्मचरुसी॥ ८९॥ सुसडास्य किरणाचारशी॥ जो नित्य उदो ज्ञानियासी॥ अतमानाचें जयासी॥ आडनावनाहीं॥ ९०॥ श्लो॥
 प्रयाण काले मनसाचलेन भक्त्या युक्तो योगबलेन चैव॥ ह्रुवोर्मथे प्रयाणमावेश्य सम्यक्संतपपुरुषमुपैति दिव्यम्॥ ९०॥ टी॥ ०॥ तस्य अ-
 व्यंगवाणेया ब्रह्माते॥ प्रयाण काले प्राप्त॥ जो स्थिरबले निवितें॥ जाणोनि स्मरे॥ ९१॥ बाहेर पद्यासनरचुनी॥ उन्नराभिमुख बैसेनी॥ जीवीं
 सुखसुनि॥ कर्मयोगाचें॥ ९२॥ आतु भिनले निमनो धर्में॥ स्वरूप याची चो निम्यें॥ ओं ऐं आप आम्हें॥ भिळावया॥ ९३॥ आकळो नियों॥
 मध्यमा मध्यमार्गो॥ अग्नित्थानो निनिगो॥ ब्रह्मरंध्रा॥ ९४॥ तें य अचें तें चिनाचा सांगान॥ आहाच वाणादि सें मांडत॥ तें थ प्राणगगना आं-
 ता॥ संचरें को॥ ९५॥ परिमनचें निर्य्येय धरित्वा॥ प्रकृति चिया प्रावना भरला॥ योगबळें आवरला॥ सज्ज हो उनी॥ ९६॥ ते जडा जडा तें विरवि-
 तु॥ झूलता माजि संचरतु॥ जें साधना दलें यस्त॥ घटें सींच होयो॥ ९७॥ कांझा कलियें घटीचा दिवा॥ नेण जे काय जाहाळा केळा॥ यारी-
 ती जो पाडवा॥ देह देवी॥ ९८॥ तो केवळ परब्रह्म॥ जया परमपुरुष सें नाम॥ तें भाझें निज धाम॥ हो उनि दाके॥ ९९॥ श्लो॥ यदस्मरं वेदवि-
 दो वदं निविशति यद्यतयो वीतरगाः॥ यदिच्छते ब्रह्म च यंचरति तेन पदसंग्रहेण प्रवक्ष्या॥ १००॥ टी॥ ०॥ सकळां जाण पोथ्या जे लाणी॥ तिये जा-
 णिवेची जे साणी॥ तयां ज्ञानियां चिये आरणी॥ जया तें अक्षर स्मृणियें॥ १००॥ चंडवा तें हीन मोडे॥ तें गगनां चिकीं फुडें॥ वांचूनि जरी होई
 लुमे हुडें॥ तरा उरलें केचें॥ १०१॥ तें विजाणण्या जें आकळें॥ तें जाणीव पण चि उभाणलें॥ भगनेण वेचितया स्मृणितलें॥ अक्षर सहजे॥ १०२॥ ह्म-
 णो निवेदविद नर॥ स्मृणती जया तें अक्षर॥ जें प्रकृती सांपर॥ परमात्मरूपा॥ १०३॥ आणिविषयांचें विष उलंडुनि॥ जें सर्व दिश्यायाथ भिन देउनि
 पाठः ओं० ९५० अचें नः १०० ह्रूपकुवा० लयस्तुः ओं० २ जाणले पणः

आहानिदं चिबं सोमि ॥ झाडानि च ॥ ५॥ जयाचि निरनरवाटपा द्वाति ॥ निष्कासाभि अपि प्रपन ॥ सर्वदा जं ॥ ५॥ जयाचि-
 या आवडी ॥ नगणिनि ब्रह्म चर्या चि सां कडी ॥ निष्ठुर हाउ निवा पुडी ॥ दोदिये कर्ति ॥ ६॥ एसं जं पद ॥ दुल्लभ आणि अगाध ॥ जयाचिये थडि
 ये वेद ॥ चुबुका लले ॥ ७॥ तें तं पुरुष हांन ॥ जया परी लया जनी ॥ तारया या हि चि स्थिती ॥ एक वेळ सांगो ॥ ८॥ तें एथ अजुनं द्यणित ले स्वामी
 ॥ हे चि द्यणावया हांनो पांमी ॥ तंव स हजं रसां कल नुद्री ॥ तारि बोलो वेंतं अनिसा हांनो ॥ तथे द्यणित ले प्रभु वन दीपे ॥ तु
 जकाय नणो सं संपे ॥ सो गे न एक ॥ १०॥ तं रि सत्ता वो हं गि कडे ॥ यया चि सा विद्या भवं मांडे ॥ हं हृदया चिया डाहो बुडे ॥ तं सकीजे ॥ ११॥
 श्रुती ॥ सर्व दाराणि संयम्य सनात्त दिनि बुद्धि च ॥ सूअ्या धाया त्मनः याणसा स्थितां योगा ध्याना म ॥ १२॥ टी ॥ परि हं तरी च घडे ॥ जरि स
 यमाचीं असवंडे ॥ सर्व दारीं कवांडे ॥ कळा साती ॥ १३॥ तं रि स हजं मन कां डले ॥ न्दरीं नि असं लुगलं ॥ जें सकर चरणो मांडले ॥ परि वरन
 संडी ॥ १४॥ तें संचि नरा हिल्या पोडवा ॥ याणा चा प्रणव चि करुवा ॥ मग अनुशु नि पंथ आणावा ॥ मुद्दि वरी ॥ १५॥ तथे आकाशीं भिळन
 भिळ ॥ तें सीधारी धारणा वळ ॥ जंव माचा त्रय मावळ ॥ अर्ध विबी ॥ १५॥ तं वरी तां स मीरु ॥ निराळीं की जस्थिरु ॥ मग लुगनीं जिवि ओं कारु
 ॥ बिबीं चि विलसे ॥ १६॥ ओं मि ल्ये का शेर अस्व्या हर सा मनुस्मर न ॥ य प्रया नित्य ज न्द ह स या नि पर भांगि ति म् ॥ १७॥ टी ॥
 तें सें ओं हं स्मारीं सर ॥ आणित थो च या पापुरे ॥ मगा प्रणवा नी तुरे ॥ पूण घन जे ॥ १८॥ ह्यणो नि मण वेंक ना म ॥ हंग का शेर ब्रह्म ॥ जो मा
 हो स्वरूप पर म ॥ स्मरत साता ॥ १९॥ या पोर न्य जी दे हांन ॥ तो चि शुद्धि पवं मांन ॥ जया पाव पाया पुरांत ॥ अणो का वाणे ना ही ॥ १९॥ ते
 थ अर्जुन जरीं विपाये ॥ तुझा जी हो नें सें जाये ॥ ना हं स्मरण मग होय ॥ काय स या वरी आती ॥ २०॥ इंदियां अनव डु पांडिल या ॥ जीविता
 चें सुख बुडालिया ॥ आंत बाहोरि सुघडालिया ॥ मुत्का चि द्दं ॥ २१॥ तं वळीं विसावें चि कवणो ॥ मगा कवणा नि सो या करणो ॥ तं थ का त्या चि न जे
 पाट ॥ ओं ११ तं थ ॥ ओं ११ नि व ॥ ओं २० अंती ॥ ओं २१ अ व घ ड

७.

४.

३.

तः करणौ ॥ प्रणवस्वरवा ॥ २२ ॥ तारिणोर्भियाहोव्यन्त्री ॥ इणोथादशदिगासमी ॥ योनित्यसंविदाभीनिदानी ॥ सेवकहोयो ॥ २३ ॥ म्ब्यो०
अनन्यचेताः सततयोमास्मरन्ति नित्यशः तस्याहमुत्सर्गार्थानन्ययुक्तस्य यागिनः ॥ १४ ॥ मामुपेत्य युजन्मदुःखालयमशान्धनम् ॥ न-
मुर्वतिमहात्मानः ॥ संसिद्धिपरमागमाः ॥ १५ ॥ दौ० ॥ जेविषयाभिहितं न क्वादिदुर्नी ॥ प्रवृत्तीतरनिगडवाउनी ॥ मातेहदथीसुनी ॥
प्रोगिताती ॥ २६ ॥ परिप्रोगितयानराणुका ॥ भरणेनाहंस्फादिको ॥ नयस्वरसदिरका ॥ ववणपाड ॥ २७ ॥ ऐसेनितरएकवडो ॥
जेअतः करणीमजशीलुगदले ॥ मौचिहोडनिआंनले ॥ उणसिनी ॥ २८ ॥ तथादहावसानजेपांवि ॥ तौतहीमातेस्मरावे ॥ माभ्योजरीन
पावावे ॥ नरिउपाभितेकायसी ॥ २९ ॥ पैरकरकआडुलेपणो ॥ कादुर्दनीधांनवाधावम्यणे ॥ नरितयावियेगुनीधांनवणो ॥ कायनघडेम
जो ॥ ३० ॥ आणिसक्तोहीतेचिदशा ॥ तरिस्पर्त्ताचासोसक्तयसा ॥ द्वापुअमेहोव्यनीमेसा ॥ नाराणावा ॥ ३१ ॥ निहजेवेड्डीमीस्मरावा ॥ तेवे
कीस्मारिलाकीपावावा ॥ मोआभारहीजीवा ॥ सादवोवना ॥ ३२ ॥ तैकुरणेषणोदेखोनिओनी ॥ मोआपुलयाचउतीणत्वाळणी ॥ भक्ताचियानि
नुत्याणी ॥ परिचर्याकरी ॥ ३३ ॥ देहवक्त्याचावारी ॥ इणोपणोलयासकुमारा ॥ म्यणानिआत्मरोधाचेपांजिरा ॥ सुयेतयाते ॥ ३४ ॥ व
रिआपुलयास्मरणाचीदेवाइनी ॥ हीनांसीकरीगुरु ॥ ऐसेनिमित्यचादूसवळी ॥ मोआणीतयानि ॥ ३५ ॥ म्यणोनदेहांतीचेसाकडे
॥ मांअयाकंहोचिनपडे ॥ मोआपुलयातेओपुलीकडे ॥ सुरेदेचिअमर्ति ॥ ३६ ॥ वरचीदेहांतीरांयसणीफेडुनी ॥ आहाचअहंकारा
चेरजझाडुनी ॥ शरूवासानानिवडुनी ॥ आपणपांमळी ॥ ३७ ॥ आणिसमत्तारादेही ॥ विषाणकतकीचाढावनाही ॥ म्यणोअअदे
रकरितोकाही ॥ विवोगोएसानवाते ॥ ३८ ॥ नातरदेहांतीचिमोयाव ॥ मराआपणयेगानेन्यावे ॥ हेहीनाहंतेस्वभावे ॥ जेआधीचिम
जमिनले ॥ ३९ ॥ याशरीयाचियासाली ॥ असतपणहीचसाडली ॥ वातूनिचिदकातेतली ॥ चंदोचआहे ॥ ४० ॥ ऐसेजेनित्ययुक्त ॥ न-
पादः ओ० २६ मर्मवि ओ० ३३ उपादकी ओ० ३४ आपणपां-
७
७
७
७

यासिसुलभमीसतन॥ स्यणउनिदेहांतीनिश्चिता॥ मीचिहांती॥ ३९॥ मगकुशतरुचस्वाडी॥ जनापत्रयार्त्तचिसगडी॥ जेमृत्ककाका
भिकुरौडी॥ सोडिलीआहे॥ ४०॥ जेंदेव्याचेंदुभते॥ जंमहाभयातेंवाटवितें॥ जेमकळदुखाचेंपुरतें॥ भांडवल॥ ४१॥ जेंदुर्मनचिंमूळ॥
जेंकुकर्माचेंफळ॥ जेंव्यामाहाचेंकेवळ॥ स्वरूपचि॥ ४२॥ जेंसंसारचेंबेसणें॥ जेंविकाराचेंउद्यानें॥ जेंसकळरागाचेंभाणें॥ वाटिलेंआहे॥
४३॥ जेंकाठाचास्वचउशिता॥ जेंआशाचाओगवटा॥ जचमरणाचावालिंवटा॥ स्वभावेजें॥ ४४॥ जेंमुलीचेंभरिंवें॥ जेंविकल्याचेंवोतिव
किंबहुनापेंवें॥ विंचुवांचें॥ ४५॥ जेंव्याघ्राचेंदंस्त्र॥ जेंपण्यागनाचेंमित्र॥ जेंविषयविज्ञानयंत्र॥ सुपूजिता॥ ४६॥ जेंलुवेचाकळवळा॥ नि
वाळियाविषोदकाचागळाका॥ जेंविश्वासुआगवळा॥ संवचाराचा॥ ४७॥ जेंकोटियाचेंरवेंव॥ जेंकाळसपाचेंमादव॥ गोरियेचेंस्वभा
वा॥ गायनजें॥ ४८॥ जेंवैरियाचापाहुणर॥ जेंदुर्जनाचाआदर॥ हेंअसंजेंसागर॥ अनथाचा॥ ४९॥ जेंस्वमीदेखिलेंस्वमा॥ जेंमुगज
ऊंसंसीनलेंजिवितें॥ जेंधूम्रजचेंगगन॥ आतलेंआहे॥ ५०॥ एसंजेंहंशरीर॥ तेंतनपवर्तनीचपुटतीनर॥ जेंहोउनिहेअपार॥ स्वरू
पमाझे॥ ५१॥ श्लो०॥ आब्रह्मभुवनालोकाः पुनरावर्तिनांजुन॥ मामुपेत्यानुकान्तयपुनजन्मविद्यते॥ ५६॥ टी०॥ येह्वंब्रह्मपणा
वियेभइसोनचुकीचिपुनरावृत्तिचिवळस॥ परिनवटलियाचेंजेंसं॥ पाटनदुखे॥ ५३॥ नातरीचेंइलियानतरे॥ नबुडिजस्वमीचे-
निमहापूरे॥ तेंविंमातेंपावलेतंसारे॥ लुपतीचिना॥ ५३॥ येरवीजगदाकाराचेंभरें॥ जेंचिरस्थायीयाचेंधुरे॥ ब्रह्मभुवनगाचेंवरी॥
लोकाचळांचें॥ ५४॥ जियोगांचीपहारिवावरी॥ एकाअमरेंद्राचेंआयुष्यनधरी॥ वळोनिपातीउठाएकसरी॥ चवदाजणाची॥ ५५
श्लो०॥ सहस्रयुगपर्यंतमहद्वह्मणाविदुः॥ रात्रियुगसहस्रातेंहारात्रविदोजनाः॥ ७७॥ टी०॥ जेंचौकाड्यासहस्रजाये॥ तेंदाये
ठावोवळाचिहोये॥ आणितेंसंचिसहस्रभरियेपाहें॥ रात्रीजया॥ ५६॥ येवढेंअहोरात्रजेथिचें॥ तेंथानलाटनीजेंभाग्याचे॥ देखतीति
पाठ० ओ० ५० नव०

७

७

७

७

७

७

स्वर्गचिं॥ चिरंजीवा॥ ५७॥ येरं सुराणां चिन्तयार्द्रं॥ विशेषसांगावीतैथकार्द्रं॥ मुदलइंद्राचीचिदशापाहीं॥ जेदहाचेचौदा॥ ५८॥ य
रिब्रह्मयाचियाहआवायहरांतें॥ आपुल्याडोळां देसवें॥ जैआहातिगातयांतें॥ अहोरात्रविदह्मणिजे॥ ५९॥ अ० ॥ अव्यक्तह्म
यः सर्वाः प्रपवंत्यहरागमे॥ राज्यागमं यत्नयेते तत्रैवाव्यक्तं संज्ञकं॥ १८॥ श्रुतशामः स एवायं भूत्वा भूत्वा प्रलीयते॥ राज्यागमेव शः पाथ्यप्रभव
त्यहरागमे॥ १९॥ टी० ॥ तयेब्रह्मपुवर्नीदिवसेंपाहें॥ नवेढीगणनार्कहीनसमाये॥ गंमैअव्यक्तं चेहोये॥ व्यक्तविषव॥ ६०॥ पुढतीदेहाची
चौपाहारीफटे॥ आणिहाआकारसमुद्रआटे॥ पाठीमगंनसांचिपांहाटे॥ मरेंलागो॥ ६१॥ शारदीयेचियेप्रवेशीं॥ अर्धेजिरतीआका
शीं॥ मगघीष्मांतीजैशीं॥ निगतीपुढनी॥ ६२॥ तैसीब्रह्मादनाचियेआदी॥ हेभूतसृष्टीचीमांदी॥ मिळेंजवसहस्वावधी॥ निमित्तपुरे॥
६३॥ पाठीरात्रीचाअवसरहोये॥ आणिविश्वअव्यक्तीलयाजाये॥ तोहीद्युगसहस्रमोटकापाहे॥ आणितेंसेचिरजे॥ ६४॥ हेसागावया-
कायउपपत्ती॥ जौजगाचाप्रलयोआणिसंभूती॥ इथेब्रह्मपुवर्नीचियाहोनी॥ अहोरात्रामाजी॥ ६५॥ केंसेथोरियेचुंमानपाहेंपां॥ जियास्थि
बीजाचासांठापा॥ परिपुनरावर्नीचियाभापा॥ शीराजाहाली॥ ६६॥ येहूर्वीचेंलोक्यहेंधनुशेरा॥ नियागावीचागापसांरा॥ मोहादिनेद-
शींएकसरां॥ मांडतअसे॥ ६७॥ पाठीरात्रीचासमोपावे॥ आणिअपैसाचिसांटेवे॥ ह्मणियेजेथिचेंतेथस्वभावे॥ साम्यासिये॥ ६८॥
जैसेवृक्षपणबीजासिआलें॥ कींमेघहेंगगनजाहालें॥ तेंसेंअनेकलक्षणसामावले॥ तेंसाम्यह्मणिपां॥ ६९॥ अ० ॥ परस्तस्मानु-
भावोन्योव्यक्तोव्यक्तात्सनातनः॥ यः स सर्वेषु भूतेषु नश्यत्स्मृतिविनश्यति॥ २०॥ टी० ॥ तेषामविषमनदिसेकाहीं॥ ह्मणोनिभूतेंहे
पाषाणाहीं॥ जेंविंधुचिजाहालियादहीं॥ नामरूपजाये॥ ७०॥ तेंविआकारलोपासरिसें॥ जगाचेंजगपणअशे॥ परिजेथेजाहोले
तेंजैसें॥ तैसेंचिअसे॥ ७१॥ तेंतयानावसहजअव्यक्त॥ आणिआकारयेतोंचव्यक्त॥ हेंएकस्तवएकसूचित॥ येहूर्वीदोनीनाहीं॥ ७२
पाठः ओं० ५८ एथः ओं० ६० ब्रह्मं० ओं० ६१ जै० ओं० ६६ जौ० ओं० ७२ आकारः

४

७

४

४

जैसं आदलियारूपं ॥ आदलपणतें खाटीं ह्यणिपें ॥ पुढर्तानां घनाकार हारपो ॥ जेव्हा अळकार होती ॥ ७३ ॥ होदोन्ही जैशीं होणें ॥
 रकीं साक्षीभूत सुवर्णा ॥ तें सीव्यक्ताव्यक्ताचि कडसणी ॥ यत्नूचाठार्यो ॥ ७४ ॥ तें तरी व्यक्ता अच्यक्ता ॥ नित्यनानाशवंत ॥ या दो-
 हीं भावातीन ॥ अनादि सिद्ध ॥ ७५ ॥ जें हें विश्वचिद्रांनि असं ॥ परिक्वपणनासिलें निनासे ॥ अक्षरें पुसिल्या न पुसे ॥ अर्थ जे-
 सा ॥ ७६ ॥ पाहें पांतरगतरी होत जात ॥ शरतेय उदक तें अखंड असत ॥ तें विभूताभावीं नानाशत ॥ अविनाश जें ॥ ७७ ॥ नातरी आद-
 तिये अळकारी ॥ नातें कनक असे जयापरी ॥ तें विमरतिये जीवाकारी ॥ अमर जें आहे ॥ ७८ ॥ अच्यक्ताक्षर इत्युक्तस्तमाहु-
 परमांगतिम् ॥ यं याप्यननिवर्तें तद्धाम परमम ॥ ७९ ॥ पुरुषः स परः पर्यभक्त्या लभ्यस्त्वनन्यथा ॥ यस्यांतस्थानि भूतानि येन स-
 र्वमिदं ततम् ॥ ८० ॥ टी० ॥ ज्यातें अव्यक्त ह्यणों येकाडे ॥ ह्यणतोस्तु नीहें नावडे ॥ जें मन बुद्धीन सांपडे ॥ ह्यणुं नियो ॥ ८१ ॥ आणि
 आकारा आलिया जयाचें ॥ निराकारपण नवचें ॥ आकारलोपें न विसेचें ॥ नित्यतागा ॥ ८२ ॥ ह्यणोनि अक्षर जें ह्यणि जे ॥ तें वींच ह्य-
 णांतो बोधही उपजे ॥ जयापरी तो पेंस न दोखिजे ॥ यानामपरमगती ॥ ८३ ॥ परि आयवा इही देहपुरी ॥ आहे निजिलियाचे परी ॥ जेव्हा पा-
 र करविना करी ॥ ह्यणुं नियो ॥ ८४ ॥ येहूर्वी जेशरीर चेंटा ॥ त्यामार्ज एकी न टके गासुमटा ॥ दाह इंदियांचिया वाटा ॥ वाहनचि आहे-
 ती ॥ ८५ ॥ उकळ्नीं विषयांचा पेटा ॥ होत मनाचा चोंहटा ॥ तो सुखदुःखाचा राजवांटा ॥ भितराही पावें ॥ ८६ ॥ परि रावो पड्डिलिया सु-
 खें ॥ जैसा देशींचा व्यापार न टके ॥ प्रजा आपुला लेनि अभिलखें ॥ करितीचि असती ॥ ८७ ॥ तें सें बुद्धीचें हन जाणणें ॥ कामनाचें घेणें
 देणें ॥ इंदियांचें करणें ॥ स्फुरणवायूचें ॥ ८८ ॥ हे देह क्रिया आयची ॥ न करिनां हाय बरवी ॥ जैसा न चलवें तो नरी ॥ लोक चाले ॥ ८९ ॥
 अर्जुनातथापरी ॥ सुतलारे सा आहे शरीरी ॥ ह्यणोनि पुरुषगा अवधारी ॥ ह्यणि पेंजयतें ॥ ९० ॥ आणि मकूनी पतिव्रते ॥ पंडितारक

पाठ. ओं. ७३ वळे. ओं. ८६ विषयांचिया पेटा.

पत्नीव्रते ॥ येषां ह्येकारणं ज्ञान ॥ पुरुषस्य गणाय ॥ ८९ ॥ पर्वदाच्च बह्वसपण ॥ देवैश्चिनाजयाचं आगण ॥ हंगगनाचं पाथुरण ॥ हाय
 देवो ॥ ९० ॥ ऐसं जाणूनि योगीश्वर ॥ जयानं ह्यणती परास्पर ॥ जे अनन्यगतीचें घर ॥ जे अनन्यगतीचें घर ॥ ९१ ॥ जेतनूवाचचिने ॥ नाइकती दु-
 जिये गोष्टीने ॥ तयाएक निष्ठेचें पकते ॥ मुक्षेव्रजे ॥ ९२ ॥ हें त्रैलोक्यचि पुरुषांचे म ॥ ऐसासाचा जयाचा नामोधर्म ॥ तया आस्तिकाचा आश्रम
 ॥ पांडवागा ॥ ९३ ॥ जे निगर्वचें गोरव ॥ जे निगुण जाणिव ॥ जे सुस्वाचरीणिवा ॥ निराशासी ॥ ९४ ॥ जे सेतो धियावा ठेले नाट ॥ जे अचिना अ-
 नाथाचें मायपोट ॥ भक्तीसी उजवाट ॥ जयागावा ॥ ९५ ॥ हें एकैक सांगोनि वायो ॥ काय फार करूं न जया ॥ पंगोलिया जया ठाया ॥ तो ठावांचि
 होइजे ॥ ९६ ॥ हिंवाचिया झळुका ॥ जे संहिंवाचि पडुं उणादका ॥ कासामोर जैसुयौ अर्का ॥ तमचि प्रकाश होये ॥ ९७ ॥ ते सासंसार जयागावा
 ॥ गेला सांना पाडवा ॥ होई निदाकें आधवा ॥ मोक्षाचाचि ॥ ९८ ॥ नरि अधिमाजि आलें ॥ जे सें रंधे निचि अग्नि जाहलें ॥ पाटीनि वडेचि काही
 केलें ॥ काष्ठपणा ॥ ९९ ॥ नानरी सारखे चा मायेना ॥ बुद्धिमान येणें हां करिता ॥ परिक्रमन व्हे पडुं सुना ॥ जिया परी ॥ १०० ॥ लाहाचें कनकजा
 हालें ॥ हें एकै परिसं चिकलें ॥ आनां आणीक कें चें न गलें ॥ लाहल आणी ॥ १०१ ॥ ह्यणां निवृप होई निमायेने ॥ ते वीरुपणमयेचि निरुते ॥ ते विषावा
 नियां जयाते ॥ पुनरावृत्ति ननाही ॥ १०२ ॥ नें माझे परम ॥ साचो कोरे निजधाम ॥ हें अवुवट तुज वर्म ॥ दाविज न असे ॥ १०३ ॥ यत्र काले लनाए-
 ति मारुनि चें वयो गिन ॥ प्रयानायेति नें काले वक्ष्यामि भरतर्पम ॥ १०४ ॥ टी ॥ ते वीरचि आणिकें ही एकै प्रकारें ॥ हें जाणानं आहे सोपारें ॥ नरि
 देह सोडिने निअवसरें ॥ जर्थी भळुती योगी ॥ १०५ ॥ अथवा अवचटें ऐसं घडें ॥ जे अनवसरें देह सोडें ॥ नरि माघें ते येणें घडे ॥ देहासीचि ॥ १०६ ॥
 ह्यणां निकाळु ॥ ही जरी देह टोवती ॥ नरि देवी तरें वेगव्हाचि होनी ॥ ये ह्वी अकाळी नरीयेनी ॥ संसारु टोती ॥ १०७ ॥ ते सें सायुज्य अणि पु-
 नरावृत्ती ॥ यादोन्ही अवसर आहानी ॥ तोचि अवसर तुज वर्त ॥ १०८ ॥ नरि ऐकें गा सुभटा ॥ पाना लिय मरणाचा माजि वटा ॥ १०९ ॥

पाठ. ओ. ९५ परम. ओ. ९६ नें गव्यामि. ओ. ९७ पांडलें, आदिवा. ओ. ३ आनवट. ओ. ६ अकळ.

पांचे आपुलां लुप्तमयादा ॥ निघर्तां अंतो ॥ ८ ॥ रसावर्गवरिपट्टला मयाण काळो ॥ बुद्धीतं फमना गिळी ॥ स्थितिनळ् ओधर्दी ॥ नकोडे मुन ॥ ९ ॥
 हाचेन नावर्ग आधवा ॥ मरणं दिसेत वट्या ॥ परिअनुभावि लुया द्रह्मावा ॥ गंवसणी होउनी ॥ १० ॥ रसावावध हासमाभावा ॥ आणनि
 वीणवेर्दीं नवाहो ॥ हंतरां चपडे सावावो ॥ अर्गनाचा आयी ॥ ११ ॥ गहापां वारनेकां उदकें ॥ जें सोंदिवयाचें दिवपणा झाके ॥ तें सें असनी जकाय
 देखे ॥ दिटी आपुली ॥ १२ ॥ तें सें देहानें चिनि विषभयातें ॥ देह आंत वाहरि श्लुआ आंत ॥ तों वडो निजाय उजितें ॥ अग्निच जेव्हा ॥ १३ ॥ तें वेळीं-
 प्राणासि प्राणनाही ॥ तेथ बुद्धी असो निवर्ग लकाई ॥ ह्यणां नि आं त्वर्वाण देही ॥ चैनान थारें ॥ १४ ॥ अगां देहांचा अग्नि जरि गेला ॥ तरि दे-
 हनळें चिरवल वोला ॥ वायो आयुष्य वेळ आपुला ॥ आं थारें गवर्सी ॥ १५ ॥ आणिसागील स्मरण आधवें ॥ तें नेणें अवसरें सांभाळावें ॥ मग देह
 लखूनि भिकावें ॥ स्वरूपी वें ॥ १६ ॥ तें वनया देह लुप्त आंचें चिरवलीं ॥ चैन नाचि बुडोनि गेलीं ॥ तेथ मागिलीं पुरिलीं हेठलीं ॥ आठवण सहेजें ॥
 १७ ॥ ह्यणां नि आर्थिचि अभ्यास जो कला ॥ तों मरण नयनां चि मोनि गेला ॥ जें सें देवें ना दिसनां मालवला ॥ दीप हातींचा ॥ १८ ॥ आतां असां हे
 सकळ ॥ जाण पोझानासि अग्नि मूळ ॥ नया अग्निचि मयाणी बळ ॥ संपूर्ण आर्थी ॥ १९ ॥ अग्नि ज्योतिरह बुद्धि ॥ षणमासा उन्नयण
 म ॥ तत्र मया नागछोति ब्रह्म ह्यवि दाजनाः ॥ १९ ॥ टी ० ॥ आंत अग्नि ज्योतीचा प्रकाश ॥ बाहेरि बुद्धि पक्ष आणि दिवस ॥ आणिसा मासांमा
 जिमास ॥ उन्नयण ॥ २० ॥ रसियास मयाणाची निरुती ॥ लाहो निजे देह दिवनी ॥ तें ब्रह्माचि हातीं ॥ ब्रह्माविदा ॥ २१ ॥ अवधारी गाधु धुरा ॥
 येथ वरिसा मर्थ्यया अवसरा ॥ तें विनिहाउजू मार्ग स्वपुरा ॥ यावयापें ॥ २२ ॥ येथ अग्नी हेण हिले पावनरें ॥ ज्योतिर्मयें हे दुसरें ॥ दिवस जाणोनि
 सरें ॥ चौथें शुक्ल पक्ष ॥ २३ ॥ आणिसा मासा माजि उन्नयणा ॥ तें वरची लगासो या ॥ येणें सायुज्य सिद्ध सदन ॥ पावनी यागी ॥ २४ ॥ हाउत्तम
 काळ जाणिजे ॥ यातें अचिरादि मार्ग हाणिजे ॥ आतां अकाळ तोही सहजे ॥ सोगेन आईका ॥ २५ ॥ श्लो ० ॥ धूमो रात्रिस्तथा रुपाः षणमासा
 पाठ- ओं ० १८ धरे ॥ ओं ० १५ यागाचिया, ब्रह्माविद होनी, परब्रह्मा-

दक्षिणायनम् ॥ तत्र चंद्रमसं ज्योतिर्योगीप्राप्य निवर्तते ॥ २५ ॥ टी ० ॥ तस्मिन् प्रयाणाच्चिया अवसरं ॥ वानस्पृश्यासुसरे ॥ तेषां अंतः करणं आंशं
 रे ॥ कौटिल्ये टोके ॥ २६ ॥ सर्वोदयालां कुडपडे ॥ स्मृतिप्रमामाजिबुडे ॥ मनहोयवेडे ॥ कौंडप्राण ॥ २७ ॥ अग्निचिं अग्निपणजाये ॥ मगतो
 धुमचि अववा होये ॥ तेषां च न नागि वसिष्ठादाये ॥ शरीरं चिं ॥ २८ ॥ जैसे चंद्रा आड आभाळ ॥ सदत दाटे सजळ ॥ मगग डदन उजळ ॥
 ऐसे झोबं होये ॥ २९ ॥ कांसे रेभाभावि ॥ गंसे जीविना सिपडे स्मथ ॥ आयुध मरणा चिं सयत ॥ वेळटाकी ॥ ३० ॥ ऐसी मन बुद्धि करणी ॥
 संप्रवती धूमाकुळाची कौंडणी ॥ नेथ जन्म जाडिल येवाहणी ॥ युग निबुडे ॥ ३१ ॥ हांगा हातीं चें जे वळं जाये ॥ ते वळं आणि कालाभाची
 गोठी कें आहे ॥ ह्मणतुं निप्रयाणं नव होये ॥ येतुळी दशा ॥ ३२ ॥ ऐसे देहां आनी स्थिती ॥ बाहेरि कृष्ण पक्ष वरि राती ॥ आणि सामासही वोड
 वती ॥ दक्षिणायन ॥ ३३ ॥ इये पुनरावृत्ती चिं राणी ॥ आघां एक्क वती जया चिं राप्रयाणी ॥ तो स्वरूप सद्दीची काहाणी ॥ कैसे निआइके
 ॥ ३४ ॥ ऐसा जयाचा देह पडे ॥ तया योगी ह्मणोनि चेंद्वरी जाण घडे ॥ मग ते धूनि माधुना बहूडे ॥ संसाराये ॥ ३५ ॥ आही अक्राळ जयांडवा ॥
 ह्मणिले नो हा जाणावा ॥ द्वाचि धून्मार्ग गोवा ॥ पुनरावृत्ती चिया ॥ ३६ ॥ येर नो अचिरादि मार्ग ॥ नो वसत आणि असं नरा ॥ साविता स्वस्त
 चाग ॥ निवृत्ती वरी ॥ ३७ ॥ शुक्रे ० ॥ शुक्र ह्मणोनी न्दीने जगनः शाश्वतं मन ॥ एक यायात्प नाल् निमन्य यावर्तते पुनः ॥ ३८ ॥ टी ० ॥ ऐसया
 अनादि यादी नावाटा ॥ एकी उज्ज्वली अहंता ॥ ह्मणतुं निबुद्धि पूर्व कुभंटा ॥ दाबिल यातुज ॥ ३९ ॥ कांजे मागा मार्ग देखे ॥ साचला दि-
 कूं वोळखावे ॥ हिना हिन जाणो ॥ हित चिं रागी ॥ ४० ॥ पाहें या नावे देखनां बरवी ॥ कोणही आड घाली काय अथावी ॥ कां सुपंथ जाणो निआ
 डवी ॥ रागत असो ॥ ४१ ॥ जीविव असून वोळखे ॥ तो असून काय सांडू शके ॥ ते बिजो उज्ज्वल देखे ॥ तो अहंता नवचे ॥ ४२ ॥ ह्मणो निबुटें ॥
 पारखावे वर कुंडें ॥ पारखिलें तरी न पडे ॥ अनवसरं काही ॥ ४३ ॥ ये ह्मंडी देहांती थार विषम ॥ यामार्गाचें आहे संश्रम ॥ जवें अस्थायी मिल
 पाठ नही ॥

७

७

७

७

७

७

७

याचें हनकाम ॥ जाईलवायो ॥ ६३ ॥ जरि अचि शदि मार्ग चुकलिया ॥ अवचटें धूमपथें पाडालया ॥ नरिसंसारं थोडि जुंतीलिया ॥ भंवतचि
 असावें ॥ ६४ ॥ हें सायसंदरवां नमोटे ॥ आतां कैसें निपाएक वेळी फुटे ॥ ह्मणोनि यांयोग मार्ग गोमटे ॥ शोधिले दोन्ही ॥ ६५ ॥ तंव एकें ब्र
 ह्मत्वा जाईजे ॥ आणिलें कुनगद्य निरयजे ॥ परि देवगत्या जो लाहिजे ॥ देहांत जेणें ॥ ६६ ॥ स्मरे ॥ नें संतोपाथ जा न न्योगी मुह्यति क
 र्चन ॥ तस्या स्मरवेषु कालेषु यागधुक् सो भवजुन ॥ ६७ ॥ टी ॥ तें वळी त्वाणित नुं हें नव्हे ॥ वायो अवचटकाय पावें ॥ देह ज्ये निवस्तु हो आसो ॥ मा
 र्ग चकी ॥ ६७ ॥ जरि आतां देह असा अथवा जावो ॥ आहोतां के वळवस्तु चि आहो ॥ को जें दोरी स्मर्यत्व वावो ॥ दोर्गा चकडुनी ॥ ६८ ॥ मज न रंग
 एण असे कीं नसो ॥ ऐसे हें उदकायनी कही भासो ॥ तें भल तें न्हाजेंस ॥ उदका चिको ॥ ६९ ॥ तरंगाकारें न जन्मो चि ॥ ना तरंग रूपें न मेचि ॥ ते वि
 देह जें देहें चि ॥ वस्तु जाहाले ॥ ७० ॥ आतां शरीराचें तयां चि याटां ई ॥ आड ना व्हें उरलुं नाहीं ॥ तरिकाणें काळें काहो ॥ निमेंतें पाहें यो ॥ ७१ ॥ म
 ग भागेंतें कास या शोधवें ॥ काणें काढुं नेंकें जावें ॥ जरी देशा काळा दे आघवें ॥ आपण चि असे ॥ ७२ ॥ आणि हागा थट जे वळी फुटे ॥ तें वळी ते
 थिचें आकाशलागे नीट वाटे ॥ वातालागलुं तरंगानां भेट ॥ येर वें चुक ॥ ७३ ॥ पाहें पांसें हुन आहें ॥ कीतो आकारु चि जाये ॥ येर गान
 तें गगनी चि आहें ॥ घटलाई आधीं ॥ ७४ ॥ ऐसिया बोधाचें निसुर वाड ॥ मार्ग मागा चें सां कडें ॥ नया सोहें सिद्धाचान पडे ॥ योगियां सी
 ॥ ७५ ॥ या कारणें पंडु सुना ॥ नुवां हो आवें यांग सुक्ता ॥ तें तुला निसर्य काळीं साभ्यता ॥ आपस या हो इल ॥ ७६ ॥ मग भल न्ये भल नव्हे ॥
 देह असो जावो अथवा ॥ परि बुद्धि नित्य ब्रह्म भावा ॥ विषड नाहीं ॥ ७७ ॥ ताकल्या दिज्जाना गावें ॥ कृत्यांती मरणें न पुवें ॥ माजि स्वप्न सें
 साराचें निघावें ॥ झकवेना ॥ ७८ ॥ येणें बोधें जो योगी होये ॥ तया साचिया बोधाचें नीट पण आहें ॥ को जे भागां तें पेलुन पाये ॥ -
 निजरूपाये ॥ ७९ ॥ पैगां ईद्राई कां वंवां ॥ जया सवसें स्वर्गीगानती राणिवां ॥ तें सांडणें मानूनि पांडवा ॥ डावली जा ॥ ८० ॥ स्मरे ॥

पाठः ओं ५३ कायचुकः ओं ०५८ आकृत्यानी.

७.

७.

७.

७.

३५

वेदेषु यज्ञेषु तपःसु चैव दानेषु यत्पुण्यफलं प्रादृष्टम् ॥ अत्यन्तितत्सर्वमिदं विदित्वा योगी परस्थानमुपैति चायम् ॥ २८ ॥ इति श्रीमद्भगवद्गीतासूपनिषत्सु ब्रह्मविद्यायां योगशास्त्रे श्रीकृष्णाार्जुनसंवादे अक्षरब्रह्मयोगो नाम अष्टमोऽध्यायः ८ ॥ जरीवेदाध्ययनाच्चिज्ज्ञेयं ॥ अथवा यज्ञाचेशो न पि कुलं ॥ कर्त्तव्यं तदपदानाचैर्जीडलं ॥ सर्वस्वहनर्जं ॥ ६९ ॥ तथा आद्यवपुण्याच्चा मेका ॥ भार्गवो नैति जयायैकका ॥ तैपरब्रह्मानिर्मका ॥ सांदिनसरे ॥ ६२ ॥ जैनित्या नदाचे निभाने ॥ उपमेचा काटाका नदिसेमाने ॥ पाहापावे दयज्ञादिसाधने ॥ जयास्तरवा ॥ ६३ ॥ जैवेदनासरे ॥ भोगीतयाचे निपयाडेंपुरे ॥ पुढनीमहासुराचें सोयरे ॥ भावडची ॥ ६४ ॥ ऐसंदृष्टिचे निमुखपणे ॥ जयासी अदृष्टाचें बेसणे ॥ जंशतमरसाही आंगवणे ॥ नोहेसिका ॥ ६५ ॥ तथांतयोगीश्वर अलौकिके ॥ देहोचे निहाततुके ॥ अनुमानतीकोतुके ॥ तंवहकवार आवडे ॥ ६६ ॥ मग नया सुराक्षिरीदी ॥ कल्लनि आंगा पाउदी ॥ परब्रह्माचिये पाहीं ॥ आरूढती ॥ ६७ ॥ ऐसंचराचें रेक भाग्य ॥ जे ब्रह्मशा आराधने योग्य ॥ योगियाचें भाग्य ॥ भोगधनर्जे ॥ ६८ ॥ जोसक कळांची कळा ॥ जो परमानंद पुतळा ॥ जो जिवाचा जिव्हाळा ॥ विधवाचिया ॥ ६९ ॥ जो सर्वज्ञ तेचा बोलावा ॥ जो यादव कुळीचा कुळिवा ॥ तो श्रीकृष्णजी पांडवा ॥ प्रतीबोडिला ॥ ७० ॥ ऐसाकुरुक्षेत्रांचा वृत्तांत ॥ संजयोग्याभिअसे सांगत ॥ ते निपरिये सापुढारीमान ॥ ज्ञानदेव हाणे निवृत्तीचा ॥ २७९ ॥ इति श्री भावार्थदीपिकायां ज्ञानदेवविरचितायां अष्टमोऽध्यायः ८ ॥ ॥ श्रीकृष्णार्पणमस्तु ॥ ॥ शतशंभवतु ॥

श्रीगणेशायनमः ॥ ॥ तारि अवधानये कलंदेजि ॥ गमसर्वसुरवासिपात्रहारेजे ॥ हंमतिताम्रभाद्रो ॥ उघड आइका ॥ १॥ परीओहा
 नबोलेंहोजी ॥ तुझासर्वजाचासभाजी ॥ हियावं अवधानहंभाझी ॥ दिनवर्गासलगीचा ॥ २॥ कांजेलुकांचेलखेसरती ॥ मन्तरथां
 चेमनोरथपुरती ॥ अरंभाहंरंथामेंतेंहोती ॥ तुझाएसी ॥ ३॥ तुमचेयादिठीवेथिवेलें ॥ सासिन्मलेप्रसन्ननेचेमळें ॥ तेसा
 उलीदेखोनिलोळें ॥ आनजीमी ॥ ४॥ प्रभूतुलीसुरवाभूतांचेडोहो ॥ हागजनिआहीआपुलीस्वेच्छावालाबोलाहो ॥ तेथहा
 जरीसलगीकरूबिहो ॥ तरांनिवोंकंपा ॥ ५॥ नानरीबाळकवांबडांबोली ॥ वांकुडाविचुकोपाडली ॥ तेचो जकरूनिमाडली ॥ रि-
 झेजेवीं ॥ ६॥ तेंवितुझासंतोचापटियावो ॥ कुंसेनिनरीआद्यावरिहो ॥ याबहुवाआळुकिद्याजीआहो ॥ सलगीकरित ॥ ७॥ वां
 च्चनिमाझियेबोलतियेयोप्यते ॥ सर्वज्ञभावाहश्रोते ॥ कायधडयावरीसाराखेतें ॥ एदोसिकिजे ॥ ८॥ अवधाराआवडेते-
 मणाधुधुरू ॥ परिमहातेजीनिमिरवेकायकरूं ॥ अमृताचियाताढोवोंगरूं ॥ ऐसोरेससोथेवेंचो ॥ ९॥ हांदोहमकरासीवि-
 जणों ॥ कीनादापुटेआइकवणें ॥ लेणियासिलेंगों ॥ हेंकहाआर्थी ॥ १०॥ सागापरिमळकायमुरबाव ॥ सागरेंकवणेदायीनाहा
 वें ॥ हेगगनचिआडआघवें ॥ ऐसापवाडेंकंचा ॥ ११॥ तेंसंतुमचेंअवधानधायी ॥ आणितुझीझणाहंदोये ॥ ऐसेवस्तुकव
 णाआहे ॥ जेणेरिझातुझी ॥ १२॥ तरिविश्मप्रगटीतियागभस्ती ॥ कायहातिवेननकीजेआरती ॥ काचुकोतकअपापती ॥
 अर्थ्यनेदिजे ॥ १३॥ प्रभूतुझीमंदशाचियाभूती ॥ आणिमंदुबळाअर्चितसेभक्ती ॥ झणोनिबोलजहोगगावती ॥ तन्हीस्वी
 कारालकीं ॥ १४॥ बाळकबापाचियाताढोरिगे ॥ आणिबापांचेजेवळुलगे ॥ कीतोसंतोषुलेनिवेगें ॥ मुखचोवोटवी ॥ १५॥ तेसा
 मीजरीतुझाप्रती ॥ चावटीकरितसेंबाळमती ॥ तरितुझासंतोषिऐसीजाती ॥ जेमाचीअसे ॥ १६॥ आणितेणेंआपुलेपणाचेनि
 पावः आः ६ आणिः स्त्रीः ८ तुझीः ओः ९ रसोयः ओः १० जेमाचीयाः ११

मोहं ॥ तु स्त्रीसंतघंतले असा बौद्धं ॥ ह्यणो निकलिये सलगीचानोहे ॥ आभार तु ह्या ॥ १७॥ अहो ता रुच्ये चंगनां द्योटे ॥ नेणे अधिक ३५
 पाव्हा फुटे ॥ रोषें प्रेम दुणवटे ॥ पटियंत यांचे नि ॥ १८ ॥ ह्यण ऊनिम जले करुवाचे निबोलें ॥ तुमचे हू पाळू पण निदोलें ॥ तें वेडेलें ऐसें जी जाणव
 लें ॥ याला गिबोलिलोमीं ॥ १९ ॥ येन्हवींचां दिणें पिक विजत आहे वेपणी ॥ कीं बारया घापत आहे वाहणी ॥ हा हो रागना सिंगवसणी ॥ या
 लिजे केवीं ॥ २० ॥ आड कापणि वोशिजो वेंन लगे ॥ नवनीतीं माथुला निगे ॥ नें विलां जिले व्याख्यान निगे ॥ हे स्वे निजयानें ॥ २१ ॥ हें अ-
 मी शब्द ह्यजिये बाजे ॥ शब्द मावळले युनिवांत निजे ॥ तागीतार्थ मन्हा टीया वोलिजे ॥ हा पाड काई ॥ २२ ॥ परि ऐसिया ही मज धिं व-
 सा ॥ तो पुढतिया चिये किं आशा ॥ जो धिदां वा करुनि भवहशां ॥ पटियनया दो आवें ॥ २३ ॥ तरि आतां चद्रापासीं निवि वितें ॥ जें अ-
 मृताहनीं निवि वितें ॥ नेणें अवधानें किं जावतें ॥ मनोरथा माझिया ॥ २४ ॥ कांजें दिठिवा तु मचावरुये ॥ नें सकळार्थे सिद्धि मती पिके
 ॥ येन्हवीं कोमेली उन्मेष सके ॥ जरी उदास तु ही ॥ २५ ॥ सहजेतरी प्रवधाबा ॥ वच्छला अवधानाचा होय चारा ॥ तरी दो दे पेलती अ-
 क्षरा ॥ प्रमेयाचीं ॥ २६ ॥ अर्थ बोला र्चा वाट पाहे ॥ नें थअ प्रावी नि भवि आशानें विये ॥ भावाचा फुलोरा होत जाये ॥ मति चरी ॥ २७ ॥
 ह्यण निरुक्ता दाचा सुवावोदळे ॥ तर्ही हटया काश सार स्वतें वेळे ॥ अणि ज्ञानास दुश्मनी नरी निगुळे ॥ मांडला रुस ॥ २८ ॥ अहो चंद्र
 कांत द्रवतां कीर होये ॥ परि ते दान वढी चंद्रां कीं आहे ॥ ह्यणो निवच्छानो वच्छा नें दे ॥ आते निविण ॥ २९ ॥ परि आतां आसु नें गोड करवें
 ऐसें तांदुळां कासया निववावें ॥ सांडवडियाने काड प्राथीवें ॥ सूत्र धारणें ॥ ३० ॥ तो काय बाहुलिया चिया काजाना चवी ॥ किं अपुळिये
 जाणि वेची कळा वादवी ॥ ह्यण ऊनि आह्या या देवा देवी ॥ काय काज ॥ ३१ ॥ तें पथी पावुरु ह्यणाने काय जाहालें ॥ हे स मस्तही आह्या या
 वले ॥ आतां सांगें जें निरोपिलें ॥ श्री कृष्ण देवें ॥ ३२ ॥ येथ संतोषीं निरुनी दासें ॥ जाजी ह्यण ऊनि उल्हासें ॥ अवधारा श्री कृष्ण ऐसें

बोलते जाहले ॥ ३३ ॥ श्लो० श्रीभगवानुवाच इदं तु ते गुह्यतमं ब्रह्मसाम्यनस्मृत्वे ॥ ज्ञानं विज्ञानसहितं यस्त्वात्मास्य संशुभात् ॥ १ ॥
 दी० नातरि अर्जुनाहं बीजं ॥ पुटती स्याति जेतुं ज ॥ जेहं अंतःकरणं च गुण ॥ जिवाचिदं ॥ ३४ ॥ येणं माने जीवाचे हि ये फडावे ॥ भगवुज
 कां पां मजसांगावे ॥ ऐसं काहं स्सभावे ॥ कल्पिशी जरी ॥ ३५ ॥ तरे परिये सांगा नाजा ॥ तू आस्थे न्नाच संज्ञा ॥ बोलि नये गोष्टीची अब
 ज्ञा ॥ नेण सी करूं ॥ ३६ ॥ ह्मणो निगूट पण आयुलें मोडो ॥ वरि न बाल गेहो बोलावे घडो ॥ परि आमुचि ये जीवे चें पडो ॥ तुझा जिबी ॥
 ॥ ३७ ॥ अगाथानीं कां रदूध गूट ॥ परि थानासी चि नव्हे कांगोड ॥ ह्मणो निमं स कांसे वतया चि चाड ॥ जरी अनन्य मिळे ॥ ३८ ॥ मुढो
 हनि बीज काटिले ॥ भगनि वीळालिये भूसी पेरिले ॥ तरे ते साडि वरवुरा गेले ॥ ह्मणो ये कासे ॥ ३९ ॥ यात्मा गोस्स मन आणिव ह्म मती ॥
 जो अनिदक अनन्य गती ॥ परि गांगो प्यही पारि तया प्रती ॥ चाव कि जे मुरवे ॥ ४० ॥ तरि प्रस्तुत आता गुणीं देही ॥ तू वांचून आणीक
 नाही ॥ ह्मणो निगूज तरी तुझा वाथी ॥ लपटून ये ॥ ४१ ॥ आतो कि तो नावाना बागुज ॥ ह्मणता कां न डे वाटेल तुज ॥ तरि सांगे न ज्ञान स
 हज ॥ विज्ञाने सी ॥ ४२ ॥ परि तं चि ऐसं नि न वाडे ॥ जे सें भस्म वलं मुरे कुंडे ॥ भगकाटि जे फडा वाडे ॥ पारवूनिया ॥ ४३ ॥ कांचा
 चूचे नि सांडसे ॥ रवां डि जे पय पाणी रा जे हंस ॥ तुज ज्ञाना विला ने ते रं ॥ वाटु नि देऊ ॥ ४४ ॥ भगवारया चिया धारसा ॥ पडि न लाकां डा
 कां लुरे चि जे सा ॥ आणिक जणांचा आपे सा ॥ राशि वा जो दे ॥ ४५ ॥ तें सें जे जाणी तल्लया साटी ॥ संसार संसारा चिये गवी ॥ लाऊनो
 निबे सरी पाटी ॥ मोक्ष धिये चा ॥ ४६ ॥ श्लो० राजर्षि द्यार जगुद्ध पवित्रा भिद सुन मम ॥ प्रत्यक्षा गमं धर्म्यं स्मरु व कर्तुं मव्यय म
 ॥ २ ॥ दी० जे जाणण्यां म विद्ये चा गांवी ॥ गुरु न्वर्त्त आचा विपदी ॥ जे स वळ गूढाचा गोसावी ॥ पवित्रा रावी ॥ ४७ ॥ आणि धर्मो
 चें निज धाम ॥ ते विंचि उत्तमांचें उत्तम ॥ पें जया ये गां नाही काम ॥ ज्ञाना तरावे ॥ ४८ ॥ मोटे कें गुरु मुरे व उदें जतरि से ॥ आणि ह्म द

पाठ. ओ० ३५ फोडावे. ओ० ३७ बोलावे.

शोस्संभविस्मो ॥ प्रत्यक्षप्राबोलागंतैसं ॥ आपंसयाचि ॥ ४९ ॥ तैर्वीचिगासुस्वाचापाउटी ॥ चततोयेइजेजयान्नाभेदी ॥ मगमेरत्वाकी
रमिती ॥ भोगणेयाहिपटे ॥ ५० ॥ परिभोगाचियेलेकीडिलियेमेरे ॥ चित्तउसंतेंहेउसुस्वाभरे ॥ ऐसंमलभआणिसोपारे ॥ वरिपरब्रह्म ॥
॥ ५१ ॥ पैंगाआणीकहाएकडयत्वं ॥ जेंहानाआलियानरीनबचें ॥ आणिअनुसवितांकाहीनवेंचें ॥ वरिविदेहिना ॥ ५२ ॥ यंयजरींतूता
किंका ॥ ऐसीहनघेसींशंका ॥ नाथेवटीवस्तुहोलोका ॥ उरलीकेंविपां ॥ ५३ ॥ जंएकोत्तरेंयाचियात्रादी ॥ जळानियेआणींघालितोडडी ॥
तैअनायामेंस्मगोडी ॥ सांडितोकेवी ॥ ५४ ॥ तरिपवित्रआणिरम्य ॥ तैर्वीचिसुखीपायसुगम ॥ आणिसुस्वरपरमधर्म्य ॥ वरिआ
पणपांजोडे ॥ ५५ ॥ ऐसाअवघाचिहासरवाड आहे ॥ तरिजनाहानीकेवीउरोलाहे ॥ दाशकैन्नाटावकीरहोये ॥ परिनधरावोतुवां ॥
॥ ५६ ॥ श्लो० अथदधानाः पुरुषाधर्मस्थास्यपरंनप ॥ अप्राप्यमनिवर्ततेमृत्युमसागवत्सनि ॥ ३ ॥ टी० पाहेपादूधपवित्रआणिगो
डु ॥ पामोंत्वंचेचियापदराआड ॥ परितेंअंकेरुनिगोचिड ॥ अश्रद्धुचिमेवी ॥ ५७ ॥ कांकमलकदाआणिदुरी ॥ नादणूकएकैचि
घरी ॥ परिपरागमेविजप्त्रमरी ॥ येरांनिरवल्चिउरे ॥ ५८ ॥ नातरानिदैवाचापरिवरी ॥ लोन्धा रुतलिया आहातिसहस्वरी ॥ प
रितेयवसोनिउपवासकरी ॥ कांदरिदेंजीये ॥ ५९ ॥ तैसाहदयामध्यंमीराम ॥ आसतोसर्वसुरवाचाआराम ॥ कांफ्वातासीकाम ॥
विषयावरी ॥ ६० ॥ बहुभुगजळदेरवीनिडोळा ॥ थेंकिजेअमृताचागिकिनागळाळा ॥ तोडिलापरिसर्वाधिलागळा ॥ शक्तिकाला
कें ॥ ६१ ॥ तैसाअहममतेचियेवडस्सडी ॥ मातेंनपवतीरिवापुडी ॥ क्षणोनिजन्ममरणानियेदुडडी ॥ डहबीतेंदेली ॥ ६२ ॥ ये
न्हवीमीतरीकैसा ॥ मुरवाप्रतोमानुकांजैसा ॥ केहोंरेसनदिसेसा ॥ वाणीचानोदें ॥ ६३ ॥ श्लो० मयाततमिदसर्वजगदव्यक्तसू
र्तिना ॥ मत्स्थानिसर्वभूतानिनचाद्रतेक्षवस्थितः ॥ ४ ॥ टी० माझेयादिस्मारलेपणानवें ॥ हंजगविनोहेआधवें ॥ जैसंदूधसुरा
पावः औः ६३ नमोः ओः ६४ पणोर्त्तनः ॥ ५

लेस्वभावे ॥ तरितेचिदही ॥ ६४ ॥ कार्वाजनिजाहलंतरु ॥ अथवाभांगारनि (अवच्छेद) ॥ तस्या मज्जकांचाविस्मारा ॥ तेंहंजगा ॥ ६५ ॥
 हे अच्युत्तरपणो भिजले ॥ तें नमगविस्पाकारे बोधिजले ॥ तें सें अमृतमृभिभयारिस्मारले ॥ वेलाक्यजाणे ॥ ६६ ॥ महदादिदेहानें
 ॥ इयें अशेषहीसृते ॥ येमाझ्यादायीं बिंबने ॥ जें सज्जीफिण ॥ ६७ ॥ परितयाफेना भातपाहतां ॥ जेवीजळनदिसें पडसुता ॥
 नातरां स्वप्नीची अनेकता ॥ चेईलयात्राहिजे ॥ ६८ ॥ तें सीभूतें डंयें साझाटाई ॥ बिंबतीतयाभाजिमीनाही ॥ इथाउपपत्तीतुज
 पाही ॥ सांगीतलियाभायां ॥ ६९ ॥ ह्मण उनिवोर्ला लिखाचोलासा आतिसो ॥ नों कजेयाजागीं हे आसो ॥ परेमज आतें पेसो ॥ दिटा
 तुझी ॥ ७० ॥ श्लो० नचमत्स्थानिभूतानिपश्यसेचो जमैरप ॥ भूतफुल्लचभूतस्थोममात्मा भूतभावनः ॥ ५ ॥ टी० आमुचाप्रवृत्तीपेली
 कडोलभावो ॥ अशीकल्पनेवीणलागसीपाहो ॥ परिमज्जसाभिभूतें हे हिवावो ॥ जें मीमपेक्षणाएनि ॥ ७१ ॥ येद्वर्वासंकल्पा विथेसाजवेळो
 नावेक भिमीरेजनी बुद्धीचिदोळ ॥ ह्मणोन अखंडित्ता यपरिह्मिदो ॥ छूत भिल्ले येदंसे ॥ ७२ ॥ तेनि संकल्पचोलां जें लोपे ॥ तें अखं
 डितनि अहंस्वरूप ॥ जें संशकाजानवें बोलीपे ॥ साप पणमाळें चें ॥ ७३ ॥ येद्वर्वातें हीं पुरा आंतुं निरुपमा ॥ कायघट्टेयागाडुगेयाचे -
 नियतीकोभा ॥ परितें कुल्लाढसतीचे गर्भ ॥ उमटं दों ॥ ७४ ॥ नातरां सांगवें चोपाही ॥ काय तरसां निया आहानीरवाणी ॥ तें अवांतरकर
 णी ॥ वारयाची नव्हे ॥ ७५ ॥ पाहंपाकापसाचाणदो ॥ काय आपसाचिहोतपेदो ॥ तो वेदिनयां नयां दिवो ॥ कापड जाहला ॥ ७६ ॥ जरि
 सोनें लेणे होउनिघट्टे ॥ तरितयाचें सोने पणमोडे ॥ येर अळंकारदेवरचिली कंड ॥ येतयाचे निभांदे ॥ ७७ ॥ मांगे पाहुं साहाचीं यत्नूरे ॥
 कां अरिसाजें अभिस्करे ॥ तें आपलें वीसाचोकारें ॥ तें थं विहोतें ॥ ७८ ॥ तें सीइयें नमळें माडास स्वरुपी ॥ जोभूतभावना आंगी ॥ त-
 यासीं तयाचा संकल्पी ॥ भूताभास असे ॥ ७९ ॥ तेचि कल्पितोपुरे ॥ तभिभूताभासा आधींच सरें ॥ मग स्वरूप उर एक सरें ॥ निस्वळभा

स्ये ॥ ८० ॥ हे आगींभरलियाभवंदी ॥ जेशाभोवतदिसतीअरडीदरडी ॥ तेंशीआपलियाकल्याअसंढी ॥ यगतीसूतें ॥ ८१ ॥ तेंचि
कल्यानासांडुनिपाहीं ॥ तरिमीशूतीसूतेंमाझियादाया ॥ हेस्वमीहीपरिनाहीं ॥ कल्यावयाजोगें ॥ ८२ ॥ आतांमीचयेकसूतेंधत्तां ॥
अथरासूतांमाजीमीअसता ॥ यासंकल्यासन्निपाता ॥ आतुलियाबोलिया ॥ ८३ ॥ झुणेनिपरियेसींणाप्रियोत्तमा ॥ मीविश्वंसींभ्या
त्या ॥ जोइयालटकियासूतयाभा ॥ भाव्यसदा ॥ ८४ ॥ रश्मिचेंनिआधारंजेंसे ॥ नव्हेतेचिसृगजळआभासे ॥ माझाठायासूतजातें
सें ॥ आणिसातेंदिभावी ॥ ८५ ॥ मीयेपरीचासूतभावसु ॥ परिसर्वसूतांमिअभिनु ॥ जेंमीप्रभाआणिआनु ॥ एकनिते ॥ ८६ ॥ हा
आसुचारंश्वर्ययोग ॥ तुवांदेरिवलाकींचाग ॥ आतांसांगेकाहांएथलाग ॥ सूनभेदाचाअसे ॥ ८७ ॥ यालागींमजपासूनिशूतें ॥ आनेन
कृतीहींनसूतें ॥ आणिसूतावेगळियामातें ॥ कहींचनमनींदोग ॥ ८८ ॥ श्लो० यथाकाशस्थितोनियंवायुःसर्ववगोमहान् ॥ तथासा
र्वीणिसूतान्नमत्स्थानीत्युपधाया ॥ ८९ ॥ पेंगगनजेवंदेंजेंसे ॥ पवनहीगगनीतेवटाचिअसे ॥ सहजंहालबिहियावेगळारिसे ॥ ये
हवींगगनतेंवितें ॥ ९० ॥ तेंसेंभूतजातमाझाठाया ॥ कल्पिजेनगंआभासेकांहीं ॥ निर्विकल्पीतरिनाहीं ॥ तेंथमीचिमीआघवें ॥ ९१ ॥
झणऊनिनाहींआणिअसें ॥ हंकल्यानेचेंनिसोरसें ॥ जेकल्यानालोषंश्रुं ॥ आणिकल्यानेसंवहोये ॥ ९२ ॥ तेंचिकल्पितेसुदलजये ॥
तेंअसेंनाहीहेंकेंआहे ॥ झणऊनिपुढतीतूपाहे ॥ हाऐश्वर्ययोग ॥ ९३ ॥ ऐसियाप्रतीतिबोधसागरी ॥ तूंआपणयातेंकल्लोळएकक
शं ॥ मगजंवापाद्वासीचराचरी ॥ तवतूंचिआद्वासी ॥ ९४ ॥ याजाणयेयाचंचेवी ॥ तुजआनाझाणतीदेवी ॥ तरिआतांहेंतसप्रवावी ॥
जालेंकीना ॥ ९५ ॥ तरीपुढतीजरींघणये ॥ बुद्धिसिकल्यानेचिझोणये ॥ तरिअभेदबोधजये ॥ जेंस्वमीपंडिते ॥ ९६ ॥ झणोनियेनिदेवी
वाटमोडे ॥ निरिखळउडोधाचेंचिआपणपेंघडे ॥ ऐसेवमजिआहेपुढें ॥ तेंदावेंआतां ॥ ९७ ॥ तरीधनुर्धराधेयो ॥ निकेंअवधानेंदेवा
धनजया ॥ पेंसर्वभूतांतेंमाया ॥ करीदरीगा ॥ ९८ ॥ श्लो० सर्वसूतानिकोनियमकुट्टिंयातिमात्रकाम् ॥ कल्यासयेपुनस्तानिकल्यादोविस्तृ

जाग्रहम् ॥ ७ ॥ दी० जियेनावगाप्रकृती ॥ जेहि विध सांगातली तुममती ॥ एका अष्टाशमे दव्यक्ती ॥ दुजी जीवरूपा ॥ १८ ॥ हा प्रकृती
 विस्वो आद्यवा ॥ तुवांमाधा परिमिलास पाडवा ॥ ह्मणांनि असो काइ सांगावा ॥ पुढत सुदती ॥ १९ ॥ तरी तिथे माझिये प्रकृती ॥ म
 हा कल्याचा अंतो ॥ सर्व भूते अव्यक्ती ॥ एक्यासियेती ॥ १०० ॥ गीथाचा अंतो रसी ॥ सर्वाजंतु जे सी ॥ मागु तो म्हासी ॥
 मली न होती ॥ ११ ॥ कावाषियेंदं फ्रिष्ट ॥ जंझाशार दीयाच अनघ दुपुढे ॥ ते रूधा जनात आटे ॥ गगनीचे गनी ॥ २ ॥ गोनरी आ
 काशाचे रवोप ॥ बायु निवांत चलोपे ॥ कोतर गाकार हारपे ॥ जळी जेवां ॥ ३ ॥ अथवा जागी नलिये वेळ ॥ स्वप्न मनीचि मनोमा
 वळे ॥ ते संपाकृत प्रकृती भिळ ॥ कल्पसयो ॥ ४ ॥ मग कल्यादि पुढती ॥ मीचि स्तुजो एसी वदती ॥ तरी इय विषयी निरुती ॥
 उपपत्ती आडक ॥ ५ ॥ स्तो० प्रकृति स्वामि धिष्ठाया विस्तुजा मिपुन पुनः ॥ भूत ग्राम मिमं कल्पमवशम कृतवशात् ॥ ८ ॥ दी०
 ॥ तरी हेचि प्रकृती किरीटी ॥ मी स्वकाया सहजे अधिष्ठा ॥ तेथ तत्सम वाचपदी ॥ जेवीं विणावणी दसे ॥ ६ ॥ मग तिथे विणा वणी
 चे निआधारे ॥ लाहानाचो कडिया पदत्व भर ॥ तेसी पंचात्मक आकार ॥ प्रकृतीचि होये ॥ ७ ॥ जे मी विरजण्याचे निसंगे ॥ दय
 वि आटे जोलागे ॥ तेसी प्रकृती आगारिंगे ॥ सृष्टी पणाचिया ॥ ८ ॥ बीज जळाची जवळी कलाह ॥ आणि तेचि शाखोपशाखी
 होये ॥ ते संप्रजकरणे आह ॥ भूतांचे ॥ ९ ॥ अगानगर दंगये कुले ॥ याद्वगण्यासाच पण कोर आले ॥ परि निरुते पाहा
 तां काय मिणले ॥ रायचे हात ॥ १० ॥ आणि मी प्रकृती अधिष्ठित केसे ॥ जे सास्वर्मा जो असे ॥ मग तो निप्रवेशा ॥ जागृता व
 स्वे ॥ ११ ॥ तरि स्वप्नो निजागृती येता ॥ काय पाद्य दुरवती पडसता ॥ कीं स्वप्नामाजि असता ॥ प्रवास होये ॥ १२ ॥ या आद्य
 विद्याचा अभिप्रावा कायि ॥ जे हे भूत सृष्टीचं काही ॥ मज एक ही करणे नाही ॥ एसाचि अर्थ ॥ १३ ॥ जे सी राये अधिष्ठिली प्रजा

पाठ. ओ. १८ नावकां. ओ. ३ तरगता. ओ. ८ आळ. ओ. १० तरी.

७

७

७

व्यापारं आपुलालिकाजा ॥ तेषामप्रकृतानामगमाश्चा ॥ यैरकरणं तं द्रव्यं ॥ १४ ॥ पादेषां पूर्णचंद्रा विद्यमंदो ॥ समुद्रोऽपपरभर-
तंदोदी ॥ तेषंचंद्राभिकायां करीदो ॥ उपस्वापुड ॥ १५ ॥ अदपरिजविकका ॥ लोहचक्रं तरिचक्रका ॥ तत्रिकृणसोणश्यामका ॥
सन्निधानाच्चा ॥ १६ ॥ किंवदुनायापरी ॥ मीनिजप्रकृतौ अंगिकारी ॥ आणिसुतसुष्टीएकसरी ॥ प्रसवोचिल्लो ॥ १७ ॥ जोहासू-
तग्रामआश्रवा ॥ असंप्रकृतोअर्थानपाडवा ॥ जैमोर्विज्ञाचिचोवेत्तल्लवा ॥ समथभूमि ॥ १८ ॥ नातरावाळादिकावयसा ॥
गोसावीरंहसंगजसा ॥ अथवाग्रनावर्द्धाआकाशा ॥ वीरिये मरी ॥ १९ ॥ कामुसामीकारणान्द्रा ॥ तेषीप्रकृतोहनेद्रा ॥ याअ-
शेषाहिभूतसमुद्रो ॥ गोसाविणीवा ॥ २० ॥ ग्यादरा जोगितगसा ॥ स्वरूकाअथयामुदमा ॥ हेअगोसुतग्रामा ॥ प्रकृतीचिसूख ॥
॥ २१ ॥ स्मृणोनिभूतहनसूजावी ॥ कामुमिन्निमिपाळावी ॥ इयकरणांनयेतआश्रवा ॥ आमचियाश्रवा ॥ २२ ॥ जळींचंद्रिके-
वियापसरतोवली ॥ तेवाढीचंद्रनाहोकेली ॥ तेवीमानेपायांनिदली ॥ दरीवसे ॥ २३ ॥ ज्यो० नचमानानिकर्माणिनिवक्षतिथन-
जय ॥ उदासीनवदामीनामसक्तंतेपुक्रमस ॥ २४ ॥ दी० आणिसुदलियांयथुजयाच्यान्द्रा ॥ नशेकरुसंधवाचाधाट ॥ तेवि-
सकळकसामीचशेवट ॥ तंकायवाधनीमाने ॥ २५ ॥ धृमराजोर्चापमरी ॥ वाजतियावायूननरीहोकारो ॥ कामूर्यबबामाझा-
री ॥ आधारंशिरं ॥ २६ ॥ हेअमोपर्वतांचयेहटयेंचि ॥ तेवीपन्यधारकनवनरोचें ॥ तेवींकरुजातप्रकृतेचि ॥ नलगेमज ॥
२७ ॥ येन्हवांदेयप्रकृतोविकारी ॥ एकमीचअसेअवधारी ॥ परिदुदारीनांनयापरि ॥ करीनाकरवी ॥ २८ ॥ जैसादीपेवेल्या-
परिवरी ॥ कवणानंनियमीजानिवारी ॥ आणिकवणहवणिच्य्यापारी ॥ रादोतंनंदिनेण ॥ २९ ॥ तोंजैसाकासाक्षिभूतु ॥ गृह-
व्यापारमवनिहेतु ॥ तेषाभूतकर्माअनारक्त ॥ मीमृतीअसे ॥ ३० ॥ ह्याएकानअभिप्रायांपुढनपुढती ॥ कायसागोबहु-

पाठ आ. १६ चालेचानो ओ. ३० वीरिये ओ. २३ वादविदो ओ. २५ होकरो जे.

११

१२

तां उपपत्तीं ॥ यथा गच्छेत्तस्मात्पत्नी ॥ येन तेन जगता ॥ ३० ॥ अन्त्या न सोऽयं दोषः कश्चित् ॥ स्त्रियं च मनसोऽचरन् ॥ हेतुना नैव कौते-
 यजगद्विपरिवर्तते ॥ १० ॥ टी० जन्मावन्तरात्मनो ॥ तस्मात्तस्मिन्मन्त्रकाले निजं च ॥ तस्मात्तस्मिन्मन्त्रकाले निजं च ॥ तस्मात्तस्मिन्मन्त्रकाले निजं च ॥
 मो ॥ ३१ ॥ कांजमियो अधिष्ठित्यामरुती ॥ दोतीनराचद्विद्यासंभृता ॥ द्वागोविमोदतु ॥ उपपत्ती ॥ वडयया ॥ ३२ ॥ आता-
 येणोऽजियेडो निरुते ॥ त्याहाळीयाएश्चद्विद्यासंभृता ॥ जगात्ताहाडोऽपत्ती ॥ एतद्विद्यासंभृता ॥ ३३ ॥ अथवाभूतं माझानार्थी ॥ आ-
 णिभूतं माजिमीनार्ही ॥ यास्वुगात्तु कही ॥ इतो नरुती ॥ ३४ ॥ दोसवस्व जगत्तु नरुती ॥ ३५ ॥ मीरतीयं न जगत्तु ॥ आतां इदियां-
 देउनि क्वाहा ॥ तदयो फोगी ॥ ३६ ॥ हाटो गोनो हाता ॥ नेवमादयानि सायं यथा ॥ नमोदा ॥ रावया ॥ जवीतुषीकण-
 ॥ ३७ ॥ येहवी अनुमानाचे निपम ॥ आयदेकार क्यदेगो ॥ यनि क्ययका निगसा क्कान ॥ तस्य भुगोति वे ॥ ३८ ॥ जेजाळज-
 चीं पांगिळे ॥ तयचद विवदिसे आ तु इन्ने ॥ परिथदेव फादुत द्या ॥ ३९ ॥ तय द्या विवय क्कानो ॥ ४० ॥ तस्य योल्म्वरि वाचा वळे ॥
 वां याचि द्वाक वितीमतीतीचेंडो ॥ मगसात्वा क्कंदो आवे ॥ ४१ ॥ अथि न होई ॥ ४२ ॥ अब जानति मासूदामानुषीतनुमा-
 श्रितम् ॥ परभावमजानतो मगभूतगद्विस्वरन ॥ ४३ ॥ टी० कियद्वज्जगद्विस्वरिवाद्या ॥ साणिमाचेंचाद आथिजरीभियां ॥ तसि-
 त्तांगा उपपत्तीडया ॥ जतन विज ॥ ४४ ॥ देहो विदीये च कोन मयळे ॥ तय विदीये च कोन मयळे ॥ ४५ ॥ तय विदीये च कोन मयळे ॥ ४६ ॥
 खतीतोष ॥ ४७ ॥ नातरि ज्वरिवाळल मुरव ॥ तदयो ते ह्मया रुडि पिरव ॥ तय विदीये च कोन मयळे ॥ ४८ ॥ ह्मणोनि-
 पुतत पुदतीधनजया ॥ झनो विमवरीया अतिमाया ॥ जे विदीये च कोन मयळे ॥ ४९ ॥ पेंस्युळ हरीदेवनीसा-
 ते ॥ तेचिनेरवण जाण निरुते ॥ जेसस्वनेचिनि अभूते ॥ ५० ॥ येहवी स्पृष्ट हरीभृद ॥ मोन जाणती कारहद

परिंजणणेंचिजाणणेंयाआड॥ रिगोनिवाकें॥ ४५॥ जैसानसत्राचियाआमासा॥ सावीधातजाहालातयाहसा॥ माजिरतकुंदो
 चियाआशा॥ रिगोनिवा॥ ४६॥ सांगेंगंगायाबुद्धिसृजक॥ दांकोनिआलियाचेंकवणफळा॥ कासरतसुदणोनिबाबुळा॥ सेवि
 लीकरी॥ ४७॥ हारनिळयाचाचिदुसरा॥ याबुद्धीहातधातलविस्वारा॥ कारलेंदणोनिगारा॥ वेचिजेवि॥ ४८॥ अथवानि
 धानहेंमृगतलें॥ हणोनिरवदिसागारखोळेभरिदु॥ कोसाउलीनेगतांघातले॥ कुहासीहें॥ ४९॥ तेंविंभीहणोनिप्रपूबी॥
 मिहीबुडीतोथलीकृतनिश्चयाची॥ निहीचंदामावीजेविजळीची॥ प्रभाधरिनी॥ ५०॥ तैसाकृतनिश्चयवायोगेला॥ जैसा-
 कोणहीएककाजीप्याला॥ मगपरिणामपाहोलागला॥ असुनाचा॥ ५१॥ तैसीस्यूळाकारिनाशिवंतें॥ भरवसाबाधोनिचि
 तें॥ जवपाहतीमजअविनाशांतें॥ तरीकेंचादिसे॥ ५२॥ अगाकाईपश्चिमसुदाचियातदा॥ निगिजेतआहेपुर्विलीयावा
 रा॥ कांकोडाकांडितासुभटा॥ कणजोडे॥ ५३॥ तैसेविकारलेंहेंस्यूळ॥ जाणितलेंयामीजाणवतसेकेंवळ॥ कायफेणपीतां
 जब॥ सेविलेंहोये॥ ५४॥ हणोनिमोहिलेनिमनोधर्में॥ हेंचिमीमानूनिसंश्रमें॥ मगयेथिचींजियेंजन्मरुमें॥ नितेंमजचि
 हणती॥ ५५॥ येतुलेनिअनामानाम॥ मजअक्रियाभिकर्म॥ विदेहासीदेहधर्म॥ आरोपिती॥ ५६॥ मजआकाशान्याआ
 कार॥ निरूपाधिकाउपचार॥ मजविधिबजिताव्यवहार॥ आचारादिक॥ ५७॥ मजवर्णहीनावर्ण॥ गुणातीतासिगुण॥ मज
 अचरणत्तरण॥ अपाणियापाणी॥ ५८॥ मजअमयेयामान॥ सर्वगतासीस्थान॥ जैसेंमैजमाजीवन॥ निदोलादेवे॥ ५९॥
 तैमेंअथवणाओव॥ मजअचक्षुसीनेत्र॥ अगोत्रागोत्र॥ अरूपारूप॥ ६०॥ मजअव्यक्तासीवक्ता॥ अनार्तासिआर्ता॥ स्व
 यंतुसातुसी॥ भावितीगा॥ ६१॥ मजअनावर्णाभावर्ण॥ भूषणातीतासिभूषण॥ मजसककारणाकारण॥ देवतीते॥ ६२॥
 पाठ. ओ. ४८ हांनिळयाचा.

मजसहजातैः करिती ॥ स्वयंभानेर्मातिष्ठिता ॥ निरंतरांतं आह्वानिता ॥ विमर्जिता ॥ ६३ ॥ मोसर्वदास्ततः सिद्ध ॥ तोकां बा-
 बनरुणावृद्ध ॥ मजएकरूपासंबंध ॥ जाणतीएसं ॥ ६४ ॥ मज अहेतासिद्धजे ॥ मजअकृतयासिद्धजे ॥ मीअसोत्ताकोसुजे ॥
 ऐसं स्पणती ॥ ६५ ॥ मज अहुवाचं कुळवर्णनते ॥ मजनित्याचेनिधनेशिणती ॥ मजसर्वानरांतं कल्पिता ॥ अरिमित्रगा ॥ ६६ ॥ मी-
 स्तानदाभिरामा ॥ तथाभजअनेकरसकंचा काम ॥ आद्यवाचिमा अरेंसम ॥ कोव्यणतोएकदेशी ॥ ६७ ॥ मीआद्याएकचरांचरी ॥
 स्पणतीएकाचोकेपस करी ॥ आणिकोणेनिएकांतमारी ॥ दोचहुदादनी ॥ ६८ ॥ किबहुनाएसंसमस्त ॥ जेंहमासुधमयकृत ॥
 तथाचिमासमीएसंविपरीत ॥ ज्ञानतयांचं ॥ ६९ ॥ जेवआकारएकपूरादुखनी ॥ तेंवहादेवपणेंभावंप्रजती ॥ मगतोचिविघड-
 लियादाकिती ॥ नाहीह्मणोनि ॥ ७० ॥ मातंयेणेंयेंगंनकोरं ॥ जाणतोमनुष्यऐसंनि आकारे ॥ क्षणऊनिज्ञानचितं आधारें ॥ सोना
 सिकरी ॥ ७१ ॥ श्लो० मोयाशामोचकर्मणोभोयदानोविचंतसः ॥ राक्षसीमारुतेंचिवनस्तुतिंमोदनीश्रिता ॥ ७२ ॥ टी० या-
 लागीजचलेतेंभोध ॥ जेसंवापियेंवीणमंथ ॥ कामुगजकचेतंग ॥ दुहनीविपाहोवें ॥ ७३ ॥ अथवाकान्हेरीचंअसिवार ॥ नातरी
 वोंडंबरीचंअळकार ॥ किंगंधवंनगरांचेआवार ॥ आभासतीका ॥ ७४ ॥ साबरीवादिनल्यासगळा ॥ वरीफळनाहोआनपाकळा
 ॥ कास्तनजालंगळा ॥ शोडयेजेंसं ॥ ७५ ॥ तेंसंपुर्वचिंतयाजियातें ॥ आगिदिगिकर्मनयांचेनिफजलें ॥ जेसंसां वरीफळआले
 ॥ घेयेनादिजें ॥ ७६ ॥ मगजेंकाहीनंप्रहिल्लें ॥ तेंमकटनारेंकतोडिलें ॥ मोतीजेंसं ॥ ७७ ॥ किबहुनातयाचीशारें ॥ जेंसीकुसारी
 हातीदीधलीशरें ॥ काअशोच्यामंत्र ॥ दीजेंकुथिली ॥ ७८ ॥ तेंसंज्ञानजातया ॥ आगिजेंकाहीआचरलगाधनजया ॥ तें
 आद्यवेचिगेलेबाया ॥ जेंविनहीन ॥ ७९ ॥ पैतंमोगुणाचीराक्षसी ॥ जसुवुद्धीतंयासी ॥ विवेकान्वाटावचिपुमी ॥ निशाचरीजें ॥ ८० ॥

पाठः ओ० ६८ वादविनी

नित्यप्रकृतिवरपडेजले ॥ ह्मणऊनिं बंतेचैनिकपणेंगेले ॥ वरितामसीयेचियेपडिले ॥ मुरवामाझी ॥ ८० ॥ जेथआशीवियेलाको ॥ भ्र
 तहिंसाजीमलोळे ॥ तेवीचिअसंतोवाचेंकवळे ॥ अरवडचवळी ॥ ८१ ॥ जेंअनथाचिकांनवेरी ॥ आवबुबेंचाटीतनिघेबाहरी ॥
 जेप्रमदापर्वतीचिदरी ॥ मदाचीमानली ॥ ८२ ॥ जेथंदूषाचियादादा ॥ खसरवसाज्ञानाचाकृतिरगडा ॥ जेअगस्तीगवसणीभूदा
 स्थळद्वर्दा ॥ ८३ ॥ ऐसेआसुरियंप्रकृतीचंतोडी ॥ जेजालेगाशुनंतोडी ॥ तेबुडोनिगेलेंकुंडी ॥ व्यामोहाच्या ॥ ८४ ॥ एवन्मावियेप
 डिलेगते ॥ नपविजतीचिविचाराचेंनिहांते ॥ हेअसोंतेगेलेंजेथें ॥ तेथ्र्हीचिनाही ॥ ८५ ॥ ह्मणोनिअसोतुइयेवायाणी ॥ काय
 मींमूर्खाचींबोलणी ॥ बांयावाढवितांवाणी ॥ शिणोलहन ॥ ८६ ॥ ऐसेंबोलिलेंदेवें ॥ तेथजीजीह्मणीतलेंपाडवें ॥ आइकेंजेथ
 वाचाविमवे ॥ तेसाधुकथा ॥ ८७ ॥ स्तो० महात्मानस्तुमांणार्थदेवीप्रकृतिमाश्रिताः ॥ भजंतेःनन्यमनसोशात्ताभूतादिमव्य
 यम् ॥ १३ ॥ टी० तरीजयाचेचोखदेमानसी ॥ मीहोऊनिअसेंक्षेत्रसन्त्यासी ॥ जयानिजेन्यातेंउपासी ॥ वैरगथगा ॥ ८८ ॥ ज
 याचियाआस्थेचियासद्वावा ॥ आतधर्मकरीराणिवा ॥ जयाचेंमनओल्हावा ॥ विवेकासी ॥ ८९ ॥ जेज्ञानगंगेनाहोले ॥ पूर्णता
 जेऊनिथाले ॥ जेशांतीसिझाले ॥ पल्लवनवे ॥ ९० ॥ जेपरिणामानियालेंकौप्र ॥ जेथेंयमंडपाचेसंभ ॥ जेआनदसमुद्रांकुभ ॥
 तुबुकुळोनिभरिले ॥ ९१ ॥ जयाचियेप्रकृतीचीयेतुलीपामी ॥ जेकेंबन्यातेंपरतेंसरह्मणती ॥ जयाचियेलिळेमाजिनीती ॥ जि
 यासीरिसे ॥ ९२ ॥ जेआघवांचाकरणी ॥ लेइलेशातीचिलेणी ॥ जयाचेंचिन्नगवसणी ॥ व्यापकामज ॥ ९३ ॥ ऐसेजेमहालुभाव
 ॥ दोवियेप्रकृतीचेंदेव ॥ जेजणांनियासर्व ॥ स्वरूपमाझे ॥ ९४ ॥ मगवाढतेनिअमें ॥ मातेंमजतीजेमहात्मे ॥ परिदुजपणमनो
 धर्म ॥ शिवतलेंनाही ॥ ९५ ॥ ऐसेमीचहोऊनिपाडवा ॥ करतीमाझीमेवा ॥ परिनवलावतोसांगावा ॥ असेआइक ॥ ९६ ॥ स्तो
 ॥ मनंतकीःइयंतोमायतंतश्चहृदव्रताः ॥ नमस्यतश्चमाभक्त्यानित्ययुक्ताउपासते ॥ १४ ॥ टी० तरीकीर्तनाचेनिनटनाचें ॥

नाशिले व्यवसायमायि अन्तान् ॥ जेनामचिनाहोपापचि ॥ ऐमें केलें ॥ १७ ॥ यमदमाप्रवकळाअणिली ॥ नीथेंदायावरुनि उठ-
 विनी ॥ यमलोकिर्नागोदली ॥ राहाटोआशुधी ॥ १८ ॥ यमदगोकाययमाचि ॥ दमदगोकवणानंदमुवें ॥ नीथेंदगानोकायबववें
 ॥ दोषऔषधासिनाहो ॥ १९ ॥ ऐसंभाझेनिनामधोपा ॥ नाहोचिकिर्तिविश्वाचीदुर्गेवें ॥ अवयेंजगचिमहास्वरें ॥ दुमदुमीतसर-
 लें ॥ २० ॥ तेंपाहाटेंवणयाहावित ॥ अमृतवर्णजोविवित ॥ योगेवीणदावित ॥ कवन्यडोळा ॥ २१ ॥ परियायारकापाडुधरु ॥
 नेणतीमानेयाथोराकडुसर्णीकरु ॥ एवसरुआनदान्च आवरु ॥ होतजगा ॥ २२ ॥ दहोराकाथनिवेंकुळाजावो ॥ तेंनिहोकिटवी
 केलेंआधवो ॥ ऐसंनामधोपगोरव ॥ धवळलविश्व ॥ २३ ॥ तेंजंमूयतंससाज्जळ ॥ परितोहोअस्तवेंहकिडाळ ॥ चंद्रसंपूणगरवा-
 दवेंळ ॥ हंसदापूरतें ॥ २४ ॥ मेघउदारापरिवीसरा ॥ दगण्डुनिउग्रसंमिनपूर ॥ होकिशकपणसपारवरा ॥ पंचानन ॥ २५ ॥ जयाचवाचे
 पुढांभोजी ॥ अगवडनामनाचतअसभाझी ॥ जजन्मसहस्रांवाळगीजो ॥ एकवळयावया ॥ २६ ॥ नामीवेंकुठानसे ॥ वेळगकभानुविबोहो
 नदिसें ॥ वरीयांगयाचोहोमानसो ॥ उमरडोनिजाये ॥ २७ ॥ परानयापासीपाडवा ॥ मोहारापलागिवसावा ॥ जेयनामधोपवरवा ॥
 करितीभाझी ॥ २८ ॥ केंसेमाझांगणीथाले ॥ देशकाळातेंविसरुल ॥ काननसुरेंवरुसावले ॥ आपणपाणि ॥ २९ ॥ कृष्णाविष्णुद्वरेगो
 विंद ॥ यानामाचेनिशिवळप्रबंध ॥ माजोआत्मचर्चाविशद ॥ उदुडगती ॥ ३० ॥ हंवहुअसोचापरी ॥ कीर्तितोसातेंअवधारो ॥ रा-
 कविचारितीचराचरो ॥ पांडुकुमरा ॥ ३१ ॥ भगआणिकतेअजुना ॥ साविशवहुवाजनना ॥ पंचमाणभना ॥ पादाउयउनी ॥ ३२ ॥
 बाहेरीयमनियमाचाकाटीलाविली ॥ आतवज्जासनार्चापोळापल्हासिलो ॥ वरोप्राणायामार्चीसोडिली ॥ बाहानायेंवें ॥ ३३ ॥ तें
 अउल्हादशक्तीचेनिउजवटें ॥ मनपवनांचेनिमुखांडें ॥ सतराविंचेंपाणिप्याडें ॥ बळाविलें ॥ ३४ ॥ तेंह्ममन्याहारंरख्यातीकेली ॥

विकारांची संपत्ती बाहेरिती॥ इंदियें बांधोनि आणिली॥ तद्वया आन॥ १५॥ तंव धारणावरू दाटिनले॥ महाभूतांतें एकवटिलें॥ योगचि
तुरंगसैम्यनिवटिलें॥ संकल्याचें॥ १६॥ तयावरीजें तरेजेंत॥ क्षणोनि ध्यानाचें निशाण वाजत॥ दिसेत न्मयाचें चंद्राळकृत॥ एकछत्र॥
१७॥ पाठीसमाधी श्रियेचा अशेषा॥ आत्मासुभवराज्य सरसा॥ पदृभिषेक देखा॥ समरसें जहाला॥ १८॥ ऐसें हे गहन॥ अर्जुनामाझे
भजन॥ आतां ऐकूं मागेन॥ जे करिती एक॥ १९॥ तरी दोल्ही पालव वरी॥ जे सा एक तूं अंबरी॥ ते सामी वाचूनि चराचरी॥ आणती
ना॥ २०॥ आदिब्रह्मा करूनि॥ शीवटीमशक धरूनि॥ माजो समस्त हं जाणोनि॥ स्वरूपमाझे॥ २१॥ मग वाड्याकुटन स्मृणती॥ सजीव
निर्जिविने पती॥ देखिले येवस्तु उजूलती॥ मीचि स्मृणोनि॥ २२॥ आपलें उन्नमत्त्व ना ठेवा॥ पुढील योग्या योग्य नेणवो॥ एकसरें व्य
क्तीमात्राचें निनावें॥ नमुवि आवडे॥ २३॥ जे सं उचीउदक पडिले॥ नें तलवटवरी येउलागलें॥ तें सैन मिजे भूत जात देखिले॥ ऐसा-
स्वभावाचि तयाचा॥ २४॥ काफळ लयात स्मृती शारवा॥ सहजें स्मृतीस उतरे देखा॥ तें मेजीवमात्रा अशेषा॥ स्वात्मावनीते॥ २५॥ अस्व
ह अगर्वता होऊनि असती॥ तयाचि विनय हें चिसपती॥ जेजय जय मंत्रें अर्पिती॥ माझा ठायी॥ २६॥ नमितां मानापमान गबाले॥
क्षणोनि अवचितार्मीच जहाले॥ ऐसें निरंतर भिभळले॥ उपमिती॥ २७॥ अर्जुना हे गुरु विभक्ती॥ सांगीतली तूज मनी॥ आतां ज्ञा-
नयज्ञें यजिती॥ ते भक्त आइ के॥ २८॥ परिभजन करिती हातवटी॥ तं जाणत आहासि करिती॥ जे मागां इथागोष्टी॥ केलिया आ-
क्षी॥ २९॥ तंव आदिजी अर्जुन झणो॥ हें दैविकि राप्रसादाचें करणें॥ तरिकाय अमुताचें आरगणें॥ पुरें स्मृणवेलें॥ ३०॥ याबोल्या श्री
अनने॥ लागूंदें रवो नितयाते॥ कीं स्मखावले निचिने॥ डोलत असे॥ ३१॥ क्षणें भलें केलें पार्थी॥ येतूवी हा अनवसर सर्वथा॥ प
रि बोलवितसे आस्था॥ तुझी माते॥ ३२॥ तंव अर्जुन झणें हें कायी॥ चकोरें वीणाचा दिणें चिनाही॥ जगाचि निवविजे हातयाचा ठायीं
पाठः ओ० १५ बौहिले० ओ० १९ सांगो आनः ओ० २३ नमनवें० ओ० ३० अमुताचिया० काइ पुरें स्मृणवें० ओ० ३१ लागवा०

स्वभावोकींजी ॥३३॥ येनेच कोरेतिये आपुलियेचंडां। चानूकारितेचंद्राकडे ॥ तेंवी आझीविन उंतेथोकडे ॥ देवोदुपासिंधु ॥३४॥ जीमेप
 आपुलियेमोदी ॥ जगाचा आर्तदवडी ॥ वाचूनिचातकाचीताहानकेवदी ॥ तोवधावपाहुनी ॥३५॥ परिचुएकाचियाचाडे ॥ जेविणेंजे
 चितो कणपडे ॥ तेवि आर्तवहकाथोंड ॥ तरिकांसांगवेदेव ॥३६॥ तेथदेवेंद्वानितेलेराहें ॥ जोसंतोष आह्माजाहाला आहे ॥ तथावरी
 स्तुतीसाहे ॥ ऐसंउरलेनाही ॥३७॥ पेंपमिमतुआहामिर्निकयापरी ॥ तेंचचकुतावन्हाडीककरी ॥ ऐसेपुरस्करोनिझीहरी ॥ आद
 रितेंबोली ॥३८॥ स्त्री० ज्ञानयज्ञेनचाप्यन्यजंनोभामुपासते ॥ एकत्वेनपृथक्तेनबहुधाविश्वतोमुखम् ॥३९॥ दी० तरिज्ञानय-
 ज्ञतोएवरूप ॥ जेथआदिसकल्पहावृप ॥ महाभूतमंडप ॥ भद्रताप्रश ॥३९॥ मगपांचाचेजोवशेषगुण ॥ अथवाइंदियेआणिआ
 ण ॥ हेचियज्ञोपचारभरण ॥ अज्ञानद्युत ॥४०॥ तेथमनबुद्धीचियाकुडा ॥ आतज्ञानागनीध्रकुडा ॥ साप्यतेचिस्फुहाडा ॥ बेदि-
 काजाणें ॥४१॥ सविवेकमनीपाटव ॥ तेचिमंत्रविद्यांगारव ॥ शांतिंसंपत्तीस्तुक्स्तुव ॥ जीवयत्ना ॥४२॥ तोपतीतीचेनिपात्रें ॥ वि-
 वेकमहाभंत्रें ॥ शानाग्निहोत्रें ॥ भद्रनाशी ॥४३॥ तेथअज्ञानसंरोनिजाये ॥ आणियजितांथजनहंगये ॥ आत्मसमरसीन्हाये ॥ अ-
 वभृतीजेव्हा ॥४४॥ तेव्हाभूतेंविषयकरण ॥ हेंवंगळलेंकांहींनक्षण ॥ आयवंगकविऐसंजाणें ॥ आत्मबुद्धी ॥४५॥ जेसाचेइला
 तोअजुना ॥ क्षणस्वमीचीहोविचित्रसेना ॥ मीचिजाहालाहोतोंना ॥ निद्रावशें ॥४६॥ आतांसेनातेसंनानव्हे ॥ हंमीचआघवे ॥ ऐ-
 सेंएकत्वेमानावे ॥ विश्वतया ॥४७॥ मगतोजीवहंभावसरे ॥ आब्रह्मपरमात्मबोधेंभरे ॥ ऐसेभजतीज्ञानाध्वरें ॥ एकत्वेणें ॥४८॥
 अथवाअनादिहंअनेक ॥ जेंआनसारिस्वएकाएक ॥ आणिनामरूपादिक् ॥ तेंहोविषम ॥४९॥ क्षणोनिविश्वभिन्नभिन्न ॥ परि-
 नमंदेतयाचेज्ञान ॥ जेसेअवयवतरांआनआन ॥ परिऐकेचिदेहीचे ॥५०॥ काशाखासांनियाथोरा ॥ परिआहातिएकाचियेतस्म
 पार ॥ ओ० ३६ टांकावें ॥ ओ० ३९ तेथ ॥ ओ० ४३ जो ॥

वरा॥ बहुरश्मीपरीदिनकरा॥ एकचैत्रेवा॥ ५१॥ तैविनानाविधव्यर्त्ता॥ आनानेनावे॥ आनानावृत्ति॥ ऐसेजाणतीसेदलांशुतां
 अभेदामाते॥ ५२॥ येणेंवेंगळालेपणेंपांडवा॥ करितीज्ञानयज्ञवरवा॥ जनभेदतीजाणिवा॥ जाणतेद्वगुनी॥ ५३॥ नातरांजिधा
 वांजियेवायी॥ देसराजीकांजेंकाही॥ तेसीवांचूनिनाही॥ ऐसाविबोधा॥ ५४॥ पाहपाहुडुडुडाजेउताजाये॥ तेउतेजळतयाएकआ
 हे॥ मगविरेअथवाराहे॥ तद्दोनळाचिमाजी॥ ५५॥ कापवनेपरमाणुउचलले॥ तेपृथ्वीपावेगळेनाहीगेंले॥ आणिमाझीने
 जरीपडले॥ तरीपृथ्वीचिवरुते॥ ५६॥ तैसेंफलतेथभलतेणेंसावें॥ फलतेंहीहोअश्रवावोहावें॥ परितेमीऐसेंआघवें॥ होऊ
 निवेलें॥ ५७॥ अगाहेजंददीमाझीव्यानी॥ तेवुदीचितयाचीयतीनी॥ तैसेबहुधाकारवतेनी॥ मीविद्दोउनी॥ ५८॥ हंभानुवि
 बआवडेतया॥ संसुखजेंमैधनजया॥ तैसाभोविश्वाइया॥ समोरसदा॥ ५९॥ अगातयांचियाज्ञाना॥ पावीपोटनाहीअर्जुना॥
 वायुजसागना॥ सर्वाणींअसें॥ ६०॥ तैसामेजिनुनाआघवा॥ तेंचितुकेतयांचियासदावा॥ तरिनकरितांपांडवा॥ सजनजाहा-
 ले॥ ६१॥ येह्वंतिरीसकळमीचिआहे॥ तरीकवणेंकिंउपासिनाही॥ एथएकजाणगेवीणताये॥ अमासासी॥ ६२॥ परितेअसोये
 णेउचिते॥ ज्ञानयज्ञेयजितसांते॥ उपासितीमाते॥ तेंसांगितलें॥ ६३॥ अखंडसकळेसकळांसुखें॥ सहजअपितेअसेंमजए
 कीं॥ कींनेणेंयासादींमूर्खीं॥ नपविजेचिमाते॥ ६४॥ श्लो० अहंकरहंभज॥ स्वधाहमहंमोपधम॥ मजोहमहंमेवाज्यमहम
 ग्निरहहुतम॥ १६॥ टी० तौचिजाणिवेचजरीउदयहोये॥ तरीमुदलवेदमीचिआहे॥ आणितौविधानेंजयाविचे॥ तौकतहीजीवि
 ॥ ६५॥ मगतयाकृपापासुनिबरवा॥ जोसांगेपांगआघवा॥ यज्ञप्रगटेपांडवा॥ तौहीमीगा॥ ६६॥ स्वादामीस्वधा॥ सोमादिऔष-
 धीविबिधा॥ आज्यमीसमिधा॥ मंचमीद्वर्वा॥ ६७॥ हातामीहवनकीजे॥ तेथअग्नीतोस्वरूपमाझे॥ आणिहुतवस्तुजेजे॥ तैही-
 पाठ॥ ओ० ५८ बहुवि० ओ० ५९ तैसने०

मीचि ॥ ६८ ॥ श्लो० पिताहमस्य जगतो माता धाता पितामहः ॥ वंद्यपवित्रमोक्षकारकमामयजुरेवच ॥ १७ ॥ टी० पंजयाचेनि अंगं स्त्रो
 ॥ इयेमकृतीस्तव अष्टांगे ॥ जन्मपादिरजत असंजंगं ॥ तोपितामसा ॥ ६९ ॥ अर्थनारायणं तदेवरा ॥ तोपुरुषवतोचिनारी ॥ तं विभीचराचरी
 माताहीहोये ॥ ७० ॥ आणि जाहाल जग जग राह ॥ जेणे जीवित वाटत आह ॥ तं भावाचूनि नोहे ॥ आननिरुते ॥ ७१ ॥ इयेमकृतिपुरुष
 होन्हो ॥ उपजलीं जयाचिया अमनमनी ॥ तोपितामह विभुवनी ॥ विस्वाचामी ॥ ७२ ॥ आणि आयं वया जाणयेया चिया वाटा ॥ जया-
 गावायेतीगासु भटा ॥ वेदांचिया नाहटा ॥ वेद्यहा गिजे ॥ ७३ ॥ जयनानाम तो बुद्धावणी आली ॥ एकमकाशास्त्राची अनोळखी फिटली
 ॥ चुकली जने जयमिळो आली ॥ जं पवित्र स्मणिने ॥ ७४ ॥ पद्मसर्वाजा जाहाला अकर ॥ द्योपध्वनी नादाकार ॥ तयाचं भुवन जो आकार ॥
 तोहीमीगा ॥ ७५ ॥ जया ओंकारा विये कुशा ॥ अहं होती अउमकार सी ॥ त्रयं उप जत वेद सी ॥ उठली ती न्हो ॥ ७६ ॥ द्वाणो बिभ्रय जुः सा
 म ॥ हंती न्हो द्वाणो मी आत्माराम ॥ एवं भीवि कुलक्रम ॥ शब्दमहाची ॥ ७७ ॥ श्लो० गति भर्ता ममः साक्षी निवासः शरणं स्रुतम् ॥ प्र-
 भवः प्रलयस्थान निधानबीजमव्ययम् ॥ १८ ॥ टी० हंचराचर आद्यवे ॥ जयं प्रकृती आतसां ववे ॥ तेशिणली जय विसवे ॥ तं परम
 गतीमी ॥ ७८ ॥ आणि जयाचे निमकृती जिये ॥ जेण अधिष्ठली विश्व विये ॥ जोये उनिमकृती इये ॥ गुणा ते मोगी ॥ ७९ ॥ क्षपक ओषी-
 ॥ जालियं मकृती देशे ॥ कर्ता कारयितारूप असे ॥ परा विश्वाभिलाष समरसे ॥ अन्तिमपणे ॥ ११ ॥ तो विश्व श्रियेचा भनो ॥ भविगा
 ल्यपंडुसुता ॥ भोगो सायी समस्ता ॥ त्रैलोक्याचा ॥ ८० ॥ आकाशें सवत्रवसावे ॥ वायू न नाव भरी उगेन सावे ॥ पावकें दाहावे ॥ वर्षी
 वेजळ ॥ ८१ ॥ पर्वती बेंस कानस डावी ॥ समुद्रां रेखांनी लांडावी ॥ पृथ्वी या मृते वाहावी ॥ हे आज्ञा माझी ॥ ८२ ॥ म्या बोलिल्या वेद बो-
 ले ॥ म्यांचालिल्या सूर्यांचाले ॥ म्याहालिल्या मागाहाले ॥ जो जगाने चाकित ॥ ८३ ॥ मियांचि निया भिन्नासांना ॥ काळ घासितं सेपू-

तां॥ इयं ह्यणिग्यानेयं दुस्त॥ सकलं जयाचीं॥ ८४॥ जो ऐसा मयथ॥ तो मी जगचा नाथ॥ आणि गगन ऐसा माक्षिभूत॥ तो ही-
 मोची॥ ८५॥ इहीना मरूपी आधवा॥ जो भरला असे पांडवा॥ आणिना मरूपाचा बोल्लावा॥ आपण विजो॥ ८६॥ जेसे जळाचे
 कल्लोळ॥ आणि कल्लोळीं आथी जळ॥ ऐसे निवसवीत मेस कळ॥ तो निवास मो॥ ८७॥ जो मज होय अनन्य शरणा॥ त्याचे निवारी मी
 जन्य मरणा॥ या लागी शरणागता शरण्या॥ मोचि एक॥ ८८॥ मोचि एक अने कपणें॥ वेगळाले निप्रकृति गुणें॥ जीत जगचे निप्रा-
 णें॥ वर्तत असें॥ ८९॥ जेसा समुद्रा थिहूर न ह्मणता॥ भल तेथ बिबेस विता॥ तेसा ब्रह्मादिस वाभूता॥ स्फुटत मो॥ ९०॥ मी
 चिगा पांडवा॥ यात्रिभवनामि बोल्लावा॥ स्तुष्टि सय भववा॥ मूळ ते मो॥ ९१॥ बीजशारवा निमसवे॥ मगत रूख पण बीजो समा-
 वे॥ तेसेंस कल्ये होय आधवे॥ पाठी संकल्यो मिळ॥ ९२॥ ऐसें जगचे बीज जो संकल्य॥ अव्यक्त वासना रूप॥ त्या कल्यातीं जेथ नि-
 क्षेपा॥ होय ते स्थान मो॥ ९३॥ इयेना मरूप लोदती॥ वर्णव्यक्ती आदती॥ आनीचि भेद फिटती॥ जें आकार नाही॥ ९४॥ ते संकल्य वा-
 सना मस्कार॥ माघो ते रचावया आकार॥ जेथ राहोनि असती भमरा॥ ते निधान मो॥ ९५॥ तणाव्यहमद्वर्ष निगृह्णाभ्युत्सजाभिच-
 ॥ अमृत चैव मृत्युश्च सदसच्चाहमर्जुन॥ ९६॥ ही मी सूर्याचे निवंधे॥ तेपें ते हंशोवे॥ पाठी इद्रहोद निवंधे॥ ते पुदती मरे॥ ९७॥ अग्नि-
 काष्ठ रवाये॥ नैकाष्ट नि अग्नि होये॥ तेसें मरते मारि ते गाहे॥ स्वरूप माझे॥ ९८॥ यानागीं मृत्यूचा भागी जे जे॥ ते ते ही पै रूपाझे॥ -
 आणि न मरते न वेस हजे॥ मोचि आहें॥ ९९॥ आता बहु बोलां नि सांगवे॥ ते ऐक हे कायेण आधवे॥ तरी सातासत ही जाणवे॥ मी
 विप्रेगा॥ १००॥ ह्यगो नि अर्जुना मी नसें॥ ऐसा कवण वाव असे॥ परि प्राणियाचे देवें कसे॥ जे न देखती साते॥ १०१॥ तर गणायिं वेबा-
 ण म्मकती॥ रथ मी वातीं वीणा न देखती॥ तेसें मी चिने मी नोदती॥ विस्मो देखे॥ १०२॥ हे आंत बाहेर भियां कोंदले॥ जग निरिवल-
 पाठः आ. ८५ ही. ओ. ९३ होय ते मो. ओ. ९८ अविनाश मो.

माद्रौचिवोत्तिले ॥ कीं केंसं कर्मनयां आड आलं ॥ जंमोचिनाहो ह्यणर्ता ॥ २॥ परिसृतकुहापडिजे ॥ का आपण पयांतें कडिये
 का रिजे ॥ ऐसं आथी काय कीजे ॥ अप्राप्तासी ॥ ३॥ ग्रामा एका अन्नासाठी ॥ अधधावता हो किरीटी ॥ आटळला चितामणि
 गेलोटी ॥ आधळेपणें ॥ ४॥ तें सें ज्ञान जें सांडि निजये ॥ तें ऐसी ह्दशा आहे ॥ ह्यणो नि कि जें तें केलें नो ह्द ॥ ज्ञाने विण ॥ ५॥ आं
 धळेया गरुडाचे पारव आहती ॥ तेक वग्राउगे जाती ॥ तें सें सत्कर्मचि उपरे वाती ॥ ज्ञाने विण ॥ ६॥ स्त्री ० त्रिविद्या सोसाय
 पूत पापायें जौ रिखा स्वर्गेंतें मर्थयें ॥ तें पुण्यमासा घसुरे दलो कर्मश्च नि दिव्याचि दिवेव भागान् ॥ २०॥ टी० देव पांगा किरी
 टी ॥ आश्रमधर्मा चियारा हाटी ॥ विधि मार्गा कस वटी ॥ जे आपण चिहोती ॥ १॥ यजन करितां केलें तुकें ॥ तिही वेदाचा माथा तु-
 कें ॥ क्रिया फळें सिउमी ठाकें ॥ पुढां जयां ॥ ८॥ ऐसे दीक्षित जे सोमप ॥ जे आपण चिय ज्ञाचें स्वरूप ॥ तिहितया पुण्याचे निनिवे-
 पाप ॥ जौ दिलें देवें ॥ ९॥ जेशुति त्रयांतें जाणोनि ॥ शतवरीय ज करूनि ॥ यजिल्या मातें तुकांनि ॥ स्वर्ग वरिती ॥ १०॥ जें मे क-
 ल्पत रूतळ वटी ॥ वें सोनि झौलिये पाडित सेगांटी ॥ मग नि देव निघे किरीटी ॥ दैन्य चि करू ॥ ११॥ तें मे शत क्रतु यजिले मातें ॥
 कीं दीप्ति नाति स्वर्ग सरवातें ॥ आता पुण्य कीं हें निरुतें ॥ पाप नो हें ॥ १२॥ ह्यणो निमजवीण पाविजे स्वर्ग ॥ तो अज्ञानचा पुण्यभा-
 र्ग ॥ शानियेत यानें उपसर्ग ॥ हानि ह्यणती ॥ १३॥ ये हवीं तीं नरकाचें तुं रव ॥ पावो नि स्वर्ग ना मकी सरव ॥ बाबूनि नित्यान दगां नि-
 दोष ॥ तें स्वरूप माझे ॥ १४॥ मज येतां पै सुभटा ॥ या द्विविधा ग्राह्यादा ॥ स्वर्ग निकावादा ॥ चोरा चिया ॥ १५॥ स्वर्ग पुण्यात्सं-
 पायें येइजे ॥ पापात्संकापें नरका जाइजे ॥ मग मातें जेणें पाविजे ॥ तें श्रद्ध पुण्य ॥ १६॥ आणि मज चिमा जो असता ॥ जेणे भोदु-
 ह्ये पाडु मता ॥ तें पुण्य ऐसे ह्यणतां ॥ जीभ न तुं देकाई ॥ १७॥ परि हें असा आतां मस्तुत ॥ ऐक्यापरिते दीक्षित ॥ यजुनिमा
 पाट ॥ ओ० २ ओट नलें ॥ ओ० ११ देतसे ॥ ओ० १४ स्वर्ग ॥ ओ० १७ दुरी होयें ॥

तैथाचिता स्वर्गभांग ॥ १८ ॥ मगामीनय विजेसें ॥ जेयापक्षपुण्यअसे ॥ तेणेंलाधळेनिसेरसें ॥ स्वर्गयेती ॥ १९ ॥ जेथअमरव
हेंसिहासन ॥ ऐरावतासारिवंवाहन ॥ राजधानीभुवन ॥ अमरावती ॥ २० ॥ जेथमहासिद्धीचींआडारे ॥ अमृताचींकोवारे ॥ जि
येगंवींरिवल्लारे ॥ कामधेनूचीं ॥ २१ ॥ जेथबोळगेदेवांपाडका ॥ सैद्यचिंतामणीचियास्त्रमिका ॥ विनोदवनवाटिका ॥ सुरतसूचिया ॥
२२ ॥ गंधर्वगतगणी ॥ जेथरंभेशियानाचणी ॥ उर्वशीसुरव्यविलासिनी ॥ अंतोरिया ॥ २३ ॥ मदनबोळगेवोजारे ॥ जेथचंद्रशिपेसाव
रे ॥ पवनारंसेंह्मणियारे ॥ धावणें जेथ ॥ २४ ॥ पैबेहस्मतीमुख्यआपण ॥ ऐसेस्सस्तिश्रियेचेब्राह्मण ॥ स्नाटिवेचेसुरगण ॥ बहुवसज-
बे ॥ २५ ॥ लोकापाळरंगेचे ॥ राउतजियेपदवीचे ॥ उच्चैः श्रवराबाचे ॥ खोलणिये ॥ २६ ॥ हेअसोबहुऐसें ॥ भोगइद्रसूखासरिसे ॥
तेभोगीजतीजवअसे ॥ पुण्यलेश ॥ २७ ॥ श्लो० तेतंभ्रक्तास्वर्गलोकांविशालक्षणीपुण्येमर्त्यलोकांविशंति ॥ एवचयीधर्मयलु
प्रपक्वागतोगतकामकामालुसंते ॥ २८ ॥ टी० मगतायापुण्याचीपउटीसरे ॥ सर्वेचिंद्रपणाचीउटीउतरे ॥ आणियेइलागतीमा
यारे ॥ मृत्युलोका ॥ २९ ॥ जैमावश्याभोगीकवडावेचे ॥ मगदारहीचेपूनेयतियेचे ॥ तैसेलाजिरवाणेदोक्षिताचे ॥ कायसांगे ॥ ३० ॥
एवंतिथियाभातेनुकळे ॥ जिहीपुण्यंस्वर्गकामिले ॥ तयांअमरपणांतेंवोवोजाले ॥ अंतीमृत्युलोका ॥ ३१ ॥ मातेचियाउदरकहरी ॥ प
चुनिविष्टेचादाथरी ॥ उकडूनिनवमासवरी ॥ जन्मजन्मोनिमरती ॥ ३२ ॥ अगास्त्रांनिधानफवे ॥ परिचेइलियाहारपेआघवे ॥ ते
संस्वर्गस्वरवजाणवें ॥ देवज्ञाचे ॥ ३३ ॥ अर्जुनावेदविदुजहीजाहला ॥ तारंमांतेंपणांतेंवायागेल ॥ कणसांडुनिउपणिला ॥ क्रेडा-
जसा ॥ ३४ ॥ स्मणर्जिमजएकेंविण ॥ हेचयीधर्मअकरण ॥ आतामांतेंजाणोनिकाहीनेण ॥ तूंस्त्रियाहोसी ॥ ३५ ॥ श्लो० अ
नन्याश्चित्तयौमायेजनाः पयुपासते ॥ तेषांनित्याभियुक्तानांयोगक्षेमंवद्वात्म्यहम् ॥ ३६ ॥ टी० पैसर्वभावेसीउरिते ॥ जेवोपिले
पाठः ओ० २५ तारिये ओ० २६ पदीचे ओ० ३० स्थितया किंवा स्थितया ओ० ३३ वेद

मज्जिचित्तं ॥ जैसागर्भगोळउद्यमानं ॥ कोणयाहीनणं ॥ ३५॥ तैसामीवांचूनि कांही ॥ आणीकगोमटेचिनाही ॥ मज्जिचिनामपाही ॥
 जिणयावें विलें ॥ ३६॥ ऐसेअनन्यगतकेंचित्ते ॥ चिंतिनसातेमांतं ॥ जेउपासितोतयांतं ॥ मोचिसेवी ॥ ३७॥ तेएकचट्टनिजियेस
 णीं ॥ अनुसरलेगासाद्रियेकहणीं ॥ तेंव्हांचितयांचिचिनवणीं ॥ मज्जिचिपडलीं ॥ ३८॥ मगनिहोजेंजकरावें ॥ तैमज्जिचिपडिले
 आयवें ॥ जैसीअजातपस्सांचेनिजिवें ॥ प्रक्षिणीजिये ॥ ३९॥ आपुलीताहानभूकनणं ॥ तान्हयानिकेतेंमाउलीसीचकरणें ॥ तैसेआ
 नुसरलेमज्जप्रणें ॥ तयांचेसर्वमीकरें ॥ ४०॥ तयांमाद्रियासायुज्याचीचाड ॥ नरितेंचपुरवीकोड ॥ कांसेवाह्मणतीतराआड ॥
 प्रेमसुयें ॥ ४१॥ ऐसामनीजोअरितोभावो ॥ तोपुढापुढालागेंतयांदेवां ॥ आणित्दधलियान्चनिवाहो ॥ तोहोमीचीकरी ॥ ४२॥ हाया
 गस्समआयवा ॥ तयांचामज्जिचिपडिलापाडवा ॥ जयांचियासर्वभावा ॥ आश्रयमी ॥ ४३॥ स्तो० येथ्यन्यदेवताभक्तायजतेअह्ययान्तिताः
 ॥ तैयिमामेवकौंतेयजंत्यभिधिपूर्वकम् ॥ ४३॥ टी० आतांआणीकहीसंमदाये ॥ परिमातेंनणतीसमवाये ॥ जेअग्निइंद्रसूर्यसोभाये ॥
 ह्मणउंनियजिती ॥ ४४॥ तेहीकीरमातेंचिदांये ॥ कांजेंहंआयवेंमाचिआहें ॥ पारितेभजतीउजरीनद्धे ॥ विषमपडे ॥ ४५॥ पाहंपाशा-
 खापल्लवरुसवांचे ॥ हेकायनद्धतीएकाचिबाजचे ॥ परिणणीघेंणेंसुळांचें ॥ तेंसुळींचधांपां ॥ ४६॥ कांदाहाहीद्रियेआहाती ॥ इयंज-
 रींएकेचिदेहींचींहीतीं ॥ आणित्दहींसंबलेविषयजतीं ॥ एकाचिगया ॥ ४७॥ नरिंकरोनिरससोयबरवी ॥ कानीकेंवोभरवी ॥ फु-
 लेंआणूनि तुरबावी ॥ डोळांकवीं ॥ ४८॥ तेंथरसतोमुरवचिसंवावा ॥ परिमळतोघ्राणेंचिध्यावा ॥ तैसामीतोयजावा ॥ मोचिस्यगोत्रि-
 ४९॥ येरमातेंनणोनिभजन ॥ तेंवायांचिगाआनेआन ॥ ह्मणोनिकर्मांचेडोळेजान ॥ तैनिंदपिहोआवे ॥ ५०॥ स्तो० अहंहिसर्वय-
 ज्ञानांभोक्ताचप्रभुरेवच ॥ नतुमामभिजानंतितलेनातश्च्यवंति ॥ २४॥ टी० येहर्वापाहंपापाडुसता ॥ यायेजोपचाराममस्ता
 णठ- ओं- ४० भायेसीच- ओं- ५१ यजोपहारां- ५२

भीवांचूनिभोक्ता ॥ ५१ ॥ मीसकळायज्ञाचीआदो ॥ आणियजनाययामीन्विअवधि ॥ कीमातेचुकोनिदुर्बुद्धी ॥ देवांभज
 ले ॥ ५२ ॥ गंगेचेंउदकगंगेजेंसे ॥ अर्पिजेदेवपितरोदेशें ॥ माझेमजदेतोतेंसे ॥ परिआनाभिआवीं ॥ ५३ ॥ ह्यणउनिनेपार्थी ॥ मातेन
 पवतीचिसर्वथा ॥ मगमनीवाहिलीजेआस्थी ॥ तेथआले ॥ ५४ ॥ श्लो० यातिदेवव्रतादेवानपितृनृयांतिपितृवताः ॥ मृताभियांतिमू
 तेज्यायांतिमद्याजिनांपिमां ॥ २५ ॥ टी० मनेवाचाकरणी ॥ जयाविथाभजनीदेवांचियावाहणी ॥ तेशरीरजातियेसणी ॥ देवचिजाले
 ॥ ५५ ॥ अथवापितरांचीव्रते ॥ बाहानेज्यांचीचित्ते ॥ जीवितसरलियातयांते ॥ पितृत्ववरी ॥ ५६ ॥ कांक्षद्रदेवतादिमृते ॥ तियेंविज
 यांचिपरमदैवते ॥ जिहांअभिचारिकींतयाते ॥ उपासिले ॥ ५७ ॥ तयादेहाचीजवमिकाफिटली ॥ आणिमृतत्वाचीप्राप्तीजाहली ॥
 एवंसंकल्पवशेफळली ॥ कर्मेतया ॥ ५८ ॥ मगमीचिडोळादेखिला ॥ जिह्वाकानीमीचिऐकिला ॥ मीचिमनीआविला ॥ वानिलावाचा ॥
 ५९ ॥ सर्वांगीसर्वांगी ॥ मीचिनमस्कारिलाजिहां ॥ दानपुण्यादिकेंकांहीं ॥ तेंमाझियाविमोहरां ॥ ६० ॥ जिह्वांतेविअध्ययन
 केलें ॥ जेआतबाहोरिमियांचिआले ॥ ज्यांचेजीवितजोडलें ॥ मजचिलागीं ॥ ६१ ॥ जेअहंकारवाहतआंगी ॥ आस्तीहरीचेसुखावया-
 लागीं ॥ जेलीभिऐएकचिजगीं ॥ माझेनिलोसं ॥ ६२ ॥ जेमाझेनिकामेंसकाम ॥ जेमाझेनिमेषेंसंप्रेम ॥ जेमाझियासुलीसंप्रेम ॥ ने
 णतीलोक ॥ ६३ ॥ ज्याचीजाणतीमजविशास्त्री ॥ मीजोंदेतयाचेनिमंत्रे ॥ ऐसेजेचेष्टामात्रें ॥ ६४ ॥ तेंमरणऐलीचकडे
 ॥ मजमिळोनिलेपुढें ॥ मगमरणीआणिककडे ॥ जातीलंकेवा ॥ ६५ ॥ ह्यणींनिमद्याजिजाहले ॥ तेंमाझियासायुज्याआले ॥ वि
 हीउपचारमिषेदिधले ॥ आपणपेंमज ॥ ६६ ॥ पेंअनुनामादेवार्थी ॥ आपणपेंवांगसोरसनाहीं ॥ मीउपचारेंकवणाहीं ॥ नाकळंगा ॥
 ६७ ॥ एथजाणीवकरीतोचिनेणें ॥ आशिलेपणभिरवीतेंचिउणें ॥ आस्तीजाहालोऐसेजोसूणें ॥ तोंकांहींचि नव्हे ॥ ६८ ॥ अथवा-
 णाठ-ओः ५५ मन-ओः ५८ तिये-ओः ६८ कंहीं-

१७

१७

१७

१७

१७

१७

१७

यज्ञदानादिकिरीटी ॥ कांतपेहनजेहुदहुटी ॥ तेतणाएकासाटी ॥ नसरेएथा ॥ ६९ ॥ बाहेंपंजाणिवेचेंनिबळें ॥ कोह्नीवेदापासूनअसंआ
 गळे ॥ कींशोषाहनितांडाळें ॥ बोलकेंआथी ॥ ७० ॥ तोहोआथुरणातळवटीदडे ॥ येरुनेतिनीतस्यणोनिबहुडे ॥ एथासनकादिकवेडे ॥ पिसेजा
 हाले ॥ ७१ ॥ करिनातापसाचीकडसणी ॥ कवणजवळोठिबिजेरुळपाणी ॥ तोहोअभिमानसांडुनिपायवणी ॥ माथावाहे ॥ ७२ ॥ नी
 तरीआथिलेपणेंसरिशी ॥ कवणीआहळस्मियेंएसी ॥ श्रियेसारिखयादासी ॥ घरीजयेते ॥ ७३ ॥ नियाखेळतांकरितीघरकुली ॥
 तयानामेंअमरपुरेजरिवेली ॥ तरिनहांतीकायबाहुली ॥ इद्रादिकतथाची ॥ ७४ ॥ नियानाकडोनिजेव्हांमोडतो ॥ तेव्हांमंदेद्राचरक-
 होती ॥ नियाजिशाझाडाकडेपाह्यती ॥ तेकल्यवृक्ष ॥ ७५ ॥ ऐसियाजियेचियाजवळिका ॥ सामथ्यघरीचियापाइका ॥ तेलस्मीमुरव्य
 नायका ॥ नमनेचिएथा ॥ ७६ ॥ भगसर्वस्वरूनिसेवा ॥ अभिमानसांडुनिपाडवा ॥ नेपायधुवावयाचियादेवा ॥ पात्रजाहाली ॥ ७७ ॥
 स्यणोनिथोरपणपक्षांझिजे ॥ एथव्युत्पत्तीआघर्वावसरिजे ॥ जेंजगाधाकूटेंहोइजे ॥ तेजवळीकमाझी ॥ ७८ ॥ अगासहस्रकिण्या
 चियेदिठी ॥ युदाचद्रहोलोपकिरीटी ॥ तेथरवघातकाहुदहुटी ॥ आपुलेनिजे ॥ ७९ ॥ तेंसंलस्मियेचेंथोरपणनसरेथ ॥ जेथशसूचेंहो
 पपनपुरे ॥ तेथयेरमाहतहेंदरे ॥ केविंजाणींलाहे ॥ ८० ॥ यालागिंधारीरसांडोवाकिजे ॥ सकळगुणांचेंज्योणउतरिजे ॥ संपत्तिमदसा
 डिजे ॥ कुरबडीकरुनी ॥ ८१ ॥ श्लो० पत्रपुण्यफलतोययोमैमत्तयाप्रयच्छति ॥ तदहमत्स्यपहतमश्माभिप्रयतात्मनः ॥ ८२ ॥ टी०
 भगनिःसीमभावउल्हासें ॥ मजअर्णवयचेनिभिसें ॥ फळएकआवडेतेसें ॥ भलनथाचेंहो ॥ ८३ ॥ भक्तमाझियाकडेदावी ॥ आणि
 भादोन्हीहावबोडवी ॥ भगदेंठनफेंडितांसेवी ॥ आदरंसी ॥ ८४ ॥ पैंगाभक्तीचिंनिनोवें ॥ फुलएकमजघोवें ॥ तेंलुरेवेंतरिम्यातुरंवा
 वें ॥ परिसुरवीचयाली ॥ ८५ ॥ हेंअसोकायसीफुलें ॥ पानचिएकआवडतेजाहुलें ॥ तेसाजूकहीनहोसुकलें ॥ भलनतेस ॥ ८६ ॥ परि
 पाठ- ओ- ६९ दानादिक- ओ- ७३ सिद्धी- ओ- ७५ येउते- ७

सर्वभावेभ्यर्त्तदं रवे ॥ आणि भुक्त्वा अमृतं तो रवे ॥ तें संपन्न चि परि ते गें स्मरे ॥ आरोंगू लागे ॥ ८६ ॥ अथवा ऐसें ही एक घडो ॥ जें
 पात्वा ही परि न जोडो ॥ तरि उदका चें तव साकडें ॥ न दळे लकी ॥ ८७ ॥ तें मल तेथ निमोले ॥ न जोडितां आहो जे डले ॥ तें चि सर्व स्व करूनि
 अपिलें ॥ जेणें मज ॥ ८८ ॥ तें गें वैकुंठा पासो निविशाळें ॥ मज लागीं केली राउळे ॥ कोसु माहो निनिर्मळें ॥ लेणीं दिधली ॥ ८९ ॥ दुधा-
 ची सेजारे ॥ ही राखी ऐसीं मनोहर ॥ मज लागीं अपारें ॥ स्मृजिली तें गें ॥ ९० ॥ कपूर चंदन अंगरू ॥ ऐसे या सगंधाचि माहो मेरू ॥ म
 ज हातीं लाविला दिन करू ॥ दीप माळे ॥ ९१ ॥ गरुडा सारि रवि वाहन ॥ मज सरत हूचो उद्याने ॥ कामधेनूचें गोधने ॥ अपिली ते
 गें ॥ ९२ ॥ मज अमृत हूनि स्मर सं ॥ बोनीं वांगारि लीं बहु वसे ॥ ऐसा भक्त चें नि उदक ले शो ॥ परि तो येगा ॥ ९३ ॥ हे सांगे वं काय कि-
 रीदी ॥ तुवांचि देखिले आपुलिया दिवी ॥ मी सुदामया चिया सोडां गांठ ॥ पद्धया सोठां ॥ ९४ ॥ पैकत्ती एकी मो जाणें ॥ तेथ सानें
 थोर न द्युणें ॥ आही सावाच पाहुणे ॥ भल ते या ॥ ९५ ॥ येर पत्र पुष्प फळ ॥ हे भजवया भिस के वळ ॥ वाचूनि आसु चिया लाणि निष्क
 का ॥ भक्ति तळ ॥ ९६ ॥ द्युणो नि अर्जुना अवधारें ॥ तू बुद्धी एकी सो पारी करी ॥ तरांस हजें आपुलिया मनो मंदीरी ॥ न विसंवे मानें
 ॥ ९७ ॥ श्लो० यत्करोषियदस्मासि यज्जुहोषिददासि यत् ॥ यत्तपस्यसि को ते यत्तु कुरुधुमदर्पणम् ॥ २७ ॥ टी० जेजे कां हो व्यापा
 र करि सी ॥ कां भोग हन सो गि सी ॥ अथवा यजीयं जि सी ॥ नाना विधी ॥ ९८ ॥ ना तरा पात्रा वश ये दाने ॥ कांसे वकारे सो जीवने ॥ तणा दिह न सा
 धने ॥ व्रतें करि सी ॥ ९९ ॥ तें कुर्या जात आयें वें ॥ जें सें निप जे नु स्व भावें ॥ तें भावना करो नि करा वें ॥ माझिया मोहरां ॥ १०० ॥ एरो सर्व
 या आपुल जीवी ॥ केलिया चि सें कां हो चि नुरी ॥ ऐसी युवो निकर्म घावी ॥ माझिया हाती ॥ १०१ ॥ श्लो० श्रमाश्रम फलैरे वं मोस्य सैक
 मबंधनैः ॥ सत्याभयोग युक्तात्मा विमुक्तो मामुपैष्यसि ॥ २८ ॥ टी० मग अग्नि कुंडो बीजे घातली ॥ तिथे अंकुर दृशे जे विमुक्तो ॥
 तें विन फळ नीचि मज अपिलो ॥ श्रमाश्रम ॥ २ ॥ अगा कर्म जें उरा वें ॥ तें तिही सारवदुःखी फळा वें ॥ आणि तया ते मोगाव याथो वें ॥

देहाएका ॥३॥ तें उगणिले मजकर्म ॥ तें व्हाविपु सिलें मरण जन्म ॥ जन्मासंश्रम ॥ वरची लहंगें ले ॥४॥ स्मरण उभि अर्जुना या पारी ॥
 पाहें पावेळ न व्हेल पारी ॥ हे सन्यास गुंति सोपारी ॥ दिधली तुज ॥५॥ या देहाचिये बांदोडीन पडिजे ॥ सूरवदुःखाचिया सागरीं न
 बुडिजे ॥ सूरवें स्मरव स्मरण घडिजे ॥ माझिया चि आंगा ॥६॥ श्लो० समोद सर्व मूर्ते पुन मेढ्यां स्तिन प्रियः ॥ ये भजंति तु मां भा
 न्या मयि ते ते सुचाप्यहम् ॥२१॥ टी० तो मी पुन मी केसा ॥ तरि जो सर्व मूर्ते समोद मरि सा ॥ जेथ आप पर ऐसा ॥ भागना हे ॥७॥
 ॥ जे ऐसिया माते जाणोनि ॥ अहंकाराचा कुरवा मोडोनि ॥ जे जिवें कर्म करूनि ॥ मातें भजलें ॥८॥ ते वर्तत दिसती देहा ॥ पारितो
 देहीना माझा वारी ॥ आणि माते याचा हृदयी ॥ समग्र भसे ॥९॥ सविस्तर वट त्वजेंसे ॥ बीज कणि कं माजि असे ॥ आणि बीज क
 णवसे ॥ वटी जेवी ॥१०॥ ते विआह्मात या पर स्मरें ॥ बाहेर ना माचूं नि अंतरे ॥ वांचूनि आत वट वस्तु विचारे ॥ माते निते ॥११॥ आ
 ता जायाचें जें सें लेणे ॥ आगावरी आहाच वारणे ॥ तें सें देह धरणें ॥ उदास तयांचें ॥१२॥ परि मळ निघालिया पवना पाठी ॥ मागे बोसू
 ल राहे देही ॥ तें सें आयुष्याचिये मुवी ॥ केवळ देह ॥१३॥ येर अवष्टम जो आघवा ॥ तो आकूटो नि मद्गवा ॥ मज नि आत पांडवा ॥ पेंठा जा हा
 ला ॥१४॥ श्लो० अपि चेत्सदु राचारी भजते मामनन्यभाक् ॥ साधुरे व समतव्यः सम्याद्यवसितो दिसः ॥१५॥ टी० ऐसे भजते निम
 म भावें ॥ ज्या शरीर ही पाणी न पवे ॥ तणें भलत या व्हावें ॥ जातो निघा ॥१५॥ आणि आचार पाहाता सुभदा ॥ तो दुष्ट नाच करि रसे
 लवांटा ॥ परि जी वितें विलें चोहटां ॥ मर्कट चिया की ॥१६॥ अगा अंत निघा मनी ॥ साच पण पुढे ले गती ॥ स्मरण निजी वित जेणे करि
 ॥ दिधलें शें सी ॥१७॥ तो आधीं जरी दुराचारी ॥ तरी सर्वोत्तम चि अवधारी ॥ जें साबुडाला म हा पुरी ॥ नमरत निघाला ॥१८॥ तथा
 चें जी रित ऐल थडिये आलें ॥ स्मरण निबुडाले पण जे विबाया गेलें ॥ ते विनुरे नि पाप केलें ॥ शेवट लिये मर्कटा ॥१९॥ या लागीं दुष्ट ना
 पाठः ओ० ८ भजती मातें ओ० १२ सदा ओ० १८ आधीः

जही जाहाल्य ॥ तरि अनुतापतीर्थी न्हाला ॥ न्हाउनि मज आंन आला ॥ सर्व भावें ॥ २० ॥ तरि आनोपवित्रतयाचें कुळ ॥ अभिजात्यें तें निनिमो

ऊ ॥ जन्मलयाचें फळ ॥ तयासी च जाडले ॥ २१ ॥ तो सकळ हो पदि नला ॥ तपें तो चितपि नला ॥ अशंग अभ्यासला ॥ योग तेणें ॥ २२ ॥ हें फल

बहुत पायी ॥ तो उतरला कर्मसर्वथा ॥ जयाची अरकडगा आस्थ्या ॥ मज चि लागीं ॥ २३ ॥ अवधिया मनोबुद्धी चियारा हटी ॥ भयोनिएक

निष्ठेची पेटी ॥ मज माजि किरीटी ॥ निसोपिली जेणें ॥ २४ ॥ श्लो० क्षिप्रमवति धर्मास्त्राशस्त्रच्छांतिं निगच्छति ॥ कौंतेय प्रजिना ही-

न मे भक्तः प्रणश्यति ॥ ३१ ॥ टी० तो आतां अवसरें सज सांभवा होइल ॥ ऐसा हनभा वतु जडाइल ॥ हांगा अभुता आंतरा हिल ॥ तया

मरण कैचें ॥ २५ ॥ पै सूर्य जो वेकु न देजे ॥ तया वेळा कोरा निद्विणिजे ॥ तें विमाझिये भक्ती वाण जें कीजे ॥ तें महापाप नोहे ॥ २६ ॥ ह्मणी-

नितया चिया चिन्ता ॥ माझी जवळी कपाडु सता ॥ ते व्हावि तो तत्त्वता ॥ स्वरूप माझे ॥ २७ ॥ जैसी दीपें दीपला विजे ॥ तेथ आदील कोणें होळ

सुजो ॥ तें मास वर्षे जो मज भजे ॥ तो मीच होइ निवोके ॥ २८ ॥ मग माझी नित्य शांति ॥ तया दशांते चिकांती ॥ किं बहुना जितो ॥ माझे-

निजीचे ॥ २९ ॥ एथ पाथी पुढत पुढती ॥ तें चितें सांगो किती ॥ जरि मियांचा हुतरा फकी ॥ न विसें बिजेगा ॥ ३० ॥ अगा कुळा चियाचो सरदप-

णानलगा ॥ अभिजात्य झणें न्हाया ॥ व्युत्पत्तीचा वाउगा ॥ सोसकां वाहावा ॥ ३१ ॥ कां हें पें वयसा माजा ॥ आशिले पणें कांगाजा ॥ एक भा

वनाही माझ्या ॥ तरी पाव्हाळ तो ॥ ३२ ॥ कणें वाण सोपें तें ॥ कण सें लागली आशियन दातें ॥ काय करवें गोमटें ॥ वोसनगर ॥ ३३ ॥ नातरी

सरी वर आटलें ॥ रानी हुंः शिया हुंः रवी फेटलें ॥ कावां झफुळी फुललें ॥ झाड जैसा ॥ ३४ ॥ तें सें सकलें वैभव ॥ अथवा कुळ जातिगो-

रव ॥ जैसा शरीर आहोसावेव ॥ परिजीव चि नाही ॥ ३५ ॥ तें सें माझिये भक्ती वाणा ॥ जळो ते जियाले पण ॥ अगा पृथ्वी वरी पाषाणा ॥

नसती काई ॥ ३६ ॥ पें हि वराची दाट साउली ॥ सज्जन जैसी वाळी ॥ तें सांपुण्ये डावळु निगेली ॥ अंभक्त तें ॥ ३७ ॥ निब निबोळि

पावः ओः २१ जाहालें ओः २४ निवतेचा ओः २९ माझे ओः ३२ रूपे ॥ ३३ ॥

यांमोडोभिआला॥ तुरितोकाउळियासींचिस्सकाळजाहाला॥ तैसाभक्तिहीनवादिबला॥ दोषांचिलार्गी॥ ३८॥ कांफडुसवापरिंघादि
 ले॥ बाहुनिचोदंगोंवेलें॥ तैस्सणियांचेउपेगाआले॥ जियापरी॥ ३९॥ तैसैभक्तिहोनाचेंखिणे॥ जोस्वप्नीहोपरिस्सकृतनेणे॥ तैसा
 संसारदुःखासिंभ्राणें॥ बोगरिलें॥ ४०॥ स्मणोनिकुळउत्तमनोहावें॥ जातोअत्यजहीव्हावें॥ वरिदेहाचेंनिनावें॥ पयचिहीलाभो॥
 ॥ ४१॥ पाहेंपांसावजेंहातिरुधरिलें॥ तेंणेंतयाकाकुळतीमातेंस्मरिलें॥ कंथयाचेंपशतवावोजाहालें॥ पावल्यामाते॥ ४२॥ श्लो०
 मांद्दुथैव्यणभित्ययेपिस्सुः पापयोनयः॥ स्त्रियांवैश्यास्तथाशूद्रास्तेपियांतिपरंगतिम्॥ ३२॥ दौ० अगानावेंधेलांवोसवदी॥ जे
 आधवेयाअधमाचियेसेवदी॥ तियेपापयोनीहीकिरीदी॥ जन्मलेजे॥ ४३॥ तेषापयोनिमुट॥ मुरवजेंसेकादगड॥ परिमाझावाशेद
 ॥ सर्वभ्रावें॥ ४४॥ जयाचियेवाचेमाझेआलाप॥ हद्योभोगीमाझेचिरूप॥ जयाचेंमनमकल्या॥ माझाचिबाहे॥ ४५॥ माझियाका-
 तींविण॥ जयांचेरितेनाहीअवण॥ जयासर्वोणीभूषण॥ माझेसेवा॥ ४६॥ जयाचेंज्ञानविषनेणे॥ जाणीवभजएकातेंचिजाणे॥ ज
 यांसेंवाभेतराजिणें॥ येन्हीमैरण॥ ४७॥ ऐसेआधवाचिपरियाडवा॥ जिहीआपुल्यासर्वभावा॥ जिवाचयाळागींवालावा॥
 भाचिकेला॥ ४८॥ तेंपापयोनीहाहोतुका॥ तैअताधीतहीनहोतुका॥ परिमजसीतिंकिंतोतुका॥ तुदीनाही॥ ४९॥ पाहेंपांभक्तीचेजिआ
 थिलेपणें॥ दैत्यांदंआणिलेंउणें॥ माझेनृसिंहललेणें॥ जयांचियेमहिमे॥ ५०॥ तोप्रह्लादगामजमावी॥ घेताहंदेवहुताकधी॥ का
 जेंभियांदावेंतेगोशी॥ तयाचियाजोडे॥ ५१॥ येन्हीवदेंत्यकुळसाचोकरें॥ परिइंद्रहीसरिनळाहुउपेरा॥ स्मणोनिभक्तिगाएथसरें॥
 जातिअप्रमाण॥ ५२॥ राजानेचेंअसरेंआहाती॥ तियेचामाएकजयापडतो॥ तयाचामासावीजोडतो॥ सकळवस्तु॥ ५३॥ बाहुनि
 मोनेंरूपेप्रमाणनोहे॥ एथराजाज्ञाचिसमयेआहे॥ तेंचिचामएकजेलोहे॥ तेंणेंविकतीआधवा॥ ५४॥ तैसेंउत्तममलेंतिनेरें॥ तैचि
 पाठ॥ ओ० २९ रात्रीठोंवेलें॥ ओ० ४० आवतणें॥ ओ० ४४ गूढ॥ ओ० ४७ मरणमलें॥ ५

सर्वज्ञातासरे ॥ जैमिनोषु द्विर्मरै ॥ माझे निमैमे ॥ ५५ ॥ ह्यणो निरुक्तजातिवर्ण ॥ हें आद्यवें विगाअकरण ॥ एथ अर्जुना माझे पण ॥ सार्थक
एक ॥ ५६ ॥ ते विमलतेणें भावें ॥ मनमज आंतु येतें हो आवें ॥ आलें तरां आवें ॥ मणील भावी ॥ ५७ ॥ जैसे तव चि वहाळ वो हळा ॥ जवन प
वती गंगाजळ ॥ मग हो उरि ठाकती के वळ ॥ गंगारूप ॥ ५८ ॥ कां वें रचंदन काष्ठें ॥ हे विवचनात वचि घट ॥ जवन घापती एक वट ॥ अमि
भाजी ॥ ५९ ॥ तैसे सुत्र वें शिखा ॥ कां सद् अत्यजा दि दशा ॥ जाती तव चि वेगळा लिया ॥ जवन पवती मातें ॥ ६० ॥ मग जाति व्यक्तिप
डे बिंदुले ॥ जेव्हां आवें होती मज मीनले ॥ जैसे लवण रूप घातले ॥ सागरा भाजी ॥ ६१ ॥ तंव वरी न दान दीचीं नांवां ॥ तव निपूर पद्मि
चैवावे ॥ जवन येती आवें ॥ समुद्रा भाजी ॥ ६२ ॥ हे विकवणे एक भिषें ॥ चित माझे ठावें प्रवेश ॥ येतु लहो मग आपें सें ॥ मोचि होण
असे ॥ ६३ ॥ अगावरी फोडा वया लागीं ॥ लो हो भिळा कां परि सत्चि आगीं ॥ कां जें भिळति ये प्रसंगीं ॥ सोनें विहोई ला ॥ ६४ ॥ पाहें पाव
लु माचे निव्याजें ॥ तियाज्जांगना चि निजें ॥ मज भिनलिया काय माझे ॥ स्वरूप न व्दती ॥ ६५ ॥ नातरी भयाचे निमिसे ॥ माते न पवि
जे चिकायक सें ॥ कीं अरव डें वें शें ॥ चैद्या दिकां ॥ ६६ ॥ अगासो येरणें विणडवा ॥ माझे साधुज्या दवां ॥ कां मम लेव सुदेवा ॥ दि
का स कळा ॥ ६७ ॥ नारदां भूवा अक्रूरा ॥ शूका हन सन तुमाग ॥ इयां सत्तिमी धनु रेशा ॥ प्रायें जैसा ॥ ६८ ॥ वैसा चि गोपिका भिका
में ॥ तया कसां भय सुभ्रमूं ॥ येरां थोत का मनो धर्म ॥ शिशुपाला दिका ॥ ६९ ॥ अगामी एक लाणि वें रंगें ॥ मज ये वें श्रेष्ठ लते निमा
गीं ॥ भक्तिकां विषय विरागें ॥ अथ व वें ॥ ७० ॥ ह्यणो निपार्था पाहीं ॥ प्रवेशा वयु माझा ठायीं ॥ उपाशंती नाहीं ॥ वाणी एका ॥ ७१ ॥
आणि म ल तियाज्जाती जन्मावे ॥ मग भजि जां विरोधावे ॥ परि सत्तकां वें रोद्धावे ॥ माझिया चि ॥ ७२ ॥ अगाक वणें एके बोले ॥ मा
झे पण ज ही जाहाले ॥ तरी मी होणें आले ॥ हाता निरुतें ॥ ७३ ॥ याला गि पाप येनी ही अनुना ॥ हा वें शय शूद्र अंगना ॥ माते भज
पाठ ॥ ओः ५५ मोहरे ॥ ओः ६९ माव ॥ ओः ७० वें रागें ॥ ओः ७१ केणी ॥ ओः ७२ मज ॥ वें रिया हो आवें ॥ ७३

तांसदना ॥ भोद्वियायेती ॥ ७४ ॥ श्लो० किमुनब्राह्मणाः पुण्याभक्ताकजर्यस्तथा ॥ अनित्यमशमलोक्रमिमप्राव्यभजसुखमा ॥ ३३
 दी० मगवर्णमभिछत्रचामर ॥ स्वर्गजयाचिअग्रहार ॥ मत्रविधेसिमाहेर ॥ ब्राह्मणजे ॥ ७५ ॥ जेपृथीतळीचेंदेवा ॥ जेतपोवठारसोख
 व ॥ सकळतीर्थोसीदेवा ॥ उदयलेंजे ॥ ७६ ॥ जेथअरसुडवभिजेयागी ॥ जेवेदांचीबज्जागी ॥ जयाचेयादितोचियाउत्सगी ॥ मंगळवाटे
 ॥ ७७ ॥ जयाचिवेआस्थेचिनेवोलें ॥ सत्कर्मपांल्हाळोंगेलें ॥ संकल्पेंसत्यजियाले ॥ जयाचेनी ॥ ७८ ॥ जयाचेनिगळेले ॥ अग्नीमि
 आयुष्यजाहाले ॥ ह्मणोनिसमुद्रगणीआपुले ॥ दिधलेयाचिमीती ॥ ७९ ॥ मियांलक्ष्मीडौवळोनेकेलोपरोती ॥ फेडोनेकोस्तुभघेत-
 लाहाती ॥ मगवोटविलीवक्षस्थळाचीवांसती ॥ नरगरजां ॥ ८० ॥ आडूनिपाउलाचीसुद्रा ॥ मोहदयीवाहंगसुभद्रा ॥ जेआपुलियादे
 वासमुद्रा ॥ जतनेलागी ॥ ८१ ॥ जरांचाकोपसुभद्रा ॥ काळाभिरुद्राचावसोटा ॥ जयाचेप्रसादींफुकटा ॥ जोडतोसिद्दी ॥ ८२ ॥ ऐसेपुण्य
 पूज्यजेब्राह्मण ॥ आणिमाझावाचीअतिनिपुण ॥ आतांमांतपावतीतेंदोक्कवण ॥ समथवि ॥ ८३ ॥ पाहेंपाचंदनाचेनिअंगअनिळे ॥
 शिवतिळीनेबहोतेजेजवळें ॥ तिहोनिजीवीहोदंवांचीनिडळें ॥ बेसणीकेली ॥ ८४ ॥ मगतोचंदननेथेनपवा ॥ ऐसेमनोकैसेनिधरवा
 अथवापातलोहंसमर्थी ॥ तेंव्हाकायिसाच ॥ ८५ ॥ जेथनिववीलऐसयाआशा ॥ हरचंद्रमाआधऐसा ॥ वाहिजतअसेशिरसा ॥
 निरंतर ॥ ८६ ॥ तेथनिवविताआणसगळा ॥ परिमळेंचंद्राहूनआगळा ॥ तोचंदनकेविंअवलळा ॥ सर्वांगीनेवैसे ॥ ८७ ॥ कांरथोदकज्यो
 चियेकसे ॥ लागलियासमुद्रजालीअनायासे ॥ तियेंगेंगेंसिकायअनारिसे ॥ गत्यतरअसे ॥ ८८ ॥ ह्मणोनिराजशींकांब्राह्मण ॥ जंशंग
 तिमतीभोचिशरण ॥ तयाचिश्रद्धीमीचिनिर्वाण ॥ स्थितीहीमीनि ॥ ८९ ॥ यालागींशतजर्जरनवें ॥ रिंगोनेकेविनिस्थिताहोआवें ॥ कैसे
 निउघडियाअसावें ॥ शस्त्रवधी ॥ ९० ॥ आगावरीपडहापादाण ॥ नसूबावेंकेविबोडण ॥ रोंगेंदादलियाआणिउदासपण ॥ बोरदेसी ॥ ९१
 पाठ ॥ ओ० ७८ पाहाळी ॥ ओ० ८० जवळुनि ॥ ओ० ८१ नरोदा ॥ ओ० ८२ समर्थी ॥ ओ० ८४ शीतळें ॥ ५

जेष्वहं कृदेजकतवणवा॥ तेषूनिनिभिजेकेविण्डवा॥ तेचिलोकांयेरुनिमोपद्रवा॥ कौदिनभाजिजोमते॥ १२॥ अगामानेनप्रजाषया
 लागी॥ क्वणबळपांआपुलियाआगीं काइघरींकींमोगीं॥ निश्चितीकली॥ १३॥ नातरविद्याकींवेयसा॥ ययांप्राणियासिहाऐसा॥
 मजनमजनांमरवसा॥ स्मरवाचकीण॥ १४॥ तरंमोय्यजानेतुले॥ तेंएकारेहाचियानिकियालगले॥ आणिएथेदेहूतरअसेपडिले॥
 काळाचियेतोडी॥ १५॥ बापदुःखाचेंकणेंसुटलें॥ जेथमरणचेंभरलोदलें॥ नियोमृत्युलोकींचेशेवटिलें॥ येणेजाहलहादवेको॥ १६॥
 आतांस्मरवेंसिजोविता॥ कैचंयाहिंकींजेलपांडुसुता॥ कायरावेंडीफुकिता॥ दीपलागो॥ १७॥ अगाविषाचेंकारेवाहुनो॥ जोरस
 येइजेपिळुनी॥ तयानामअसुतठेनो॥ जेंसेअमरहाणें॥ १८॥ तेविषयाचेंजेस्मरव॥ तेंस्मरवपरमदुःख॥ परिकायकींजमूरवें॥ से
 वितानमरे॥ १९॥ कांशीसरवांडुनिआपुले॥ पायींचारवनीबांधिलें॥ तेंसेमृत्युलोकींचेंसल्ल॥ अहेआखेवो॥ २०॥ ह्मणोनिमृत्युलोकींस्मरवा
 चीकहाणी॥ ऐकिलकवणाचियेअवणी॥ कैचोसुखनिद्राआथरणी॥ इगळाचा॥ २१॥ नियोलोकींचाचंद्रसयरोगी॥ जेषुदय
 होयअस्तालागी॥ दुःखलेउनिस्मरवाचियाआंगी॥ सकिनजगानें॥ २२॥ जेथमंगळाविद्याअंकुरी॥ सर्वेचिअमंगळाचापडेबोहोरी॥ मृ
 त्युउदराविद्यापरिवारी॥ गमगंवसी॥ २३॥ जेनाहीतेंतयातेंचितवी॥ तंवतेचिनेइजंगंधवी॥ गेलियाचिकवणेगंधी॥ श्रद्धानलगे॥
 ॥ २४॥ अगागिंविंसांआथविद्यावादी॥ परतलेंपाउलाचिनाहींकिरोदी॥ सेंथनिमालियाचियागोष्टी॥ तियेंपुराणेंजेथिची॥ २५॥ जेथी
 चियेअनित्यतेचीथोरी॥ करीतयाब्रह्मयाचेआयुअवेरी॥ कैसेनाहोहाणेंअवधारी॥ निरुदनिया॥ २६॥ ऐसीलोकींचिजियेनांदणुका॥
 तेथजन्मलेआथिजे लोक॥ तयांचियेनिश्चिंतेंचेंकुका॥ दिसतअसा॥ २७॥ पैहृष्टाहृष्टाचियेजोडी॥ लागींभाडवलनसुटेकवडी॥ तेथ
 सर्वसेंहानितेथकोडी॥ वेचितागा॥ २८॥ जोबहुवेविषयविलासेंगुंफे॥ तोह्मणतेउचाईपडिलासापें॥ जोअभिलाषमारंदडपे॥ तयांत
 पाठ १२ कैविंनभजिजे ओ १९ नसेवितां ओ ३ अहेपरी ५

सम्भावचिरिमा ॥ २४ ॥ परिबापभाग्यमाद्रो ॥ जेष्टान्तसागावधचेनिव्याजे ॥ कैसागसिलोसुनिराजे ॥ श्रीव्यासदेवे ॥ २५ ॥ येतुले
निहंबाडसायामें ॥ जंबोबोलनअसेहटमानसे ॥ नवनधरेविआपुलियाऐसे ॥ मातिकेंक्रेले ॥ २६ ॥ विचचाकाटलेआठुधेना ॥ वान
चाणगुळलाजेशिंचितेथ ॥ आपादकनुक्ति ॥ रोमाचआले ॥ २७ ॥ अर्दन्मालिनडोळे ॥ वर्षनानिआनंदजळे ॥ आंतुलियासुरगेभी
चेनिवळे ॥ बाहरिकापे ॥ २८ ॥ मेंआयवाचिरोममूर्च्छी ॥ आलीसेदूकणिकाभिर्मळी ॥ लेइलामोतियाचोकणियाली ॥ आबुडेनेसा
॥ २९ ॥ ऐसामहासुरराचेनिअतिसंग ॥ जेथआटणीहोपाहेजीवदश ॥ तेथनिरोंपिलंब्यसे ॥ तेनेहीचहो ॥ ३० ॥ आणिकश्रीकृष्ण
चेबोलणे ॥ दोंकरीआलंअवणे ॥ कीटेंहस्मृतेचतेणें ॥ वापसाकेला ॥ ३१ ॥ तेव्हांनेत्रीचेंजळविसर्जी ॥ सर्वांगीचास्वदपरिमा-
जी ॥ तेवीचिअवधाराह्मणेहोजी ॥ धनराष्ट्रते ॥ ३२ ॥ आनाश्रीह्मणावाक्यधीजांनिवाड ॥ सजयसात्विकाचाविवह ॥ ह्मणोनिअ
तयांहीईलसुखाड ॥ प्रमेयपिकाचा ॥ ३३ ॥ अहोअलुमाळअवधानदेयावे ॥ येतुलेनिआनंदाचेराशीवरीबेसावे ॥ बापअवणेंदि
यांदेवे ॥ घानलीमाळ ॥ ३४ ॥ ह्मणोनिबिभूमीचाजोठावो ॥ अर्जुनादावीलमिहाचारावो ॥ तोएकाह्मणेशानदेवो ॥ निह्मलीन्वा ॥
॥ ३५ ॥ इतिश्रीगीतार्थदीपिकायाज्ञानदेवविरचितायानवमोऽध्यायः ॥ १ ॥ ॥ श्रीकृष्णापर्णमस्तु ॥ ॥

पाठ + स्तंभः सेदोऽथरोमांचः स्तरमंगोऽथवेपथुः वैवर्ण्यमष्टुमलयइत्यष्टौसाहिकामताः ओः २६ वांढः ओः २७ एकवटलेंकांगेः ओः ३१ कृष्णांजुनावे ॥ ॥

सज्ञानहमणनी॥१॥ जयाचें आयुष्यधाकुदंहायो॥ बळप्रज्ञाजिरोनिजाये॥ तथाचेनमस्कारितीपाये॥ वडिलस्युनी॥१०॥ जंवजंबबा
ळबळियावाटे॥ तंवतंवभोजनचतीकोडें॥ आयुष्यनिमालेंआतुलियेकडे॥ तेंग्लानीचिनाहों॥११॥ जन्मलियादिवसद्विसें॥ हों
लागेकाळाचेयानिएसें॥ कींवाढनीकरितरीउल्हासें॥ उभावितीगुदिया॥१२॥ अगामरहाबोलनसाहती॥ आणिमेलियान
तरीरंडती॥ परिअसतेजातंनगणती॥ गहिंसपणे॥१३॥ दूरसापेंगिळिजतुआहेउभा॥ कींतोमासियावेंटाळीतजिमा॥
तेंसेमाणीएकवेलोभा॥ वाढवितीतुष्ट्या॥१४॥ अहाकटकटाहोवरवटें॥ इयेसुलोकींचेंउफराटें॥ एथअर्जुनाजरीअंबव
टें॥ जन्मलासीतूं॥१५॥ तरिसडइडोनिबाहिलांनिय॥ इयेभक्तीचियेवाटेलाग॥ जियापावसीअव्यग॥ निजथाममाझे॥१६॥
स्त्री० मन्मनाभवमदक्तोमद्याजीमानमस्करू॥ मायेवैष्यसिशुत्तैवमात्मानंमत्परायणः॥३४॥ ॥इतिश्रीमद्भगवद्गीता
सूपनिषत्सूत्रविद्यायोगशास्त्रेश्रीकृष्णार्जुनसंवादेराजविद्यारजगुह्ययोगोनामनवमोऽध्यायः॥१॥ दी० तूंमनहेमी-
निकरी॥ माझियाभजनीसमधरी॥ सर्वजनमस्कारी॥ मजएकानें॥१७॥ माझेनिअनुसंधानेंदेरवा॥ संकल्पजळणेंनिःशेष॥ मद्याजी
चोरव॥ याचिनावें॥१८॥ ऐसांमिथाआथिनाहोसी॥ तेंथमाझियाचिस्वरूपापावसी॥ हेअंतःकरणेंचंतुजपासों॥ बोलिजतअसों॥
॥१९॥ अगाआवधियांचेरियाआपुन्ने॥ जेंसर्वस्वभादीभसंदेविलें॥ तेंपावोनिसरवसचलें॥ होऊनिठासी॥२०॥ ऐसंसावळनि
परब्रह्म॥ तेंणेंभक्तकामकन्यद्रमों॥ बोलिलेश्रीआत्मागमें॥ संजयोह्यणें॥२१॥ अहोएकजतअसेकीअवधारा॥ तवइयाबोला
निवातह्यातारा॥ जेसाह्येसाजुदोकापरा॥ तेंसागुगुगुअमो॥२२॥ तेंथसंजयेमाथातुकिंला॥ अहोअमृताचापाउसवर्षला॥
कींहाएथअसतृचिगेली॥ मीजियायवा॥२३॥ तद्दीदातारहाआमुच॥ क्षणोनिहंबालतांमैलेनवचा॥ कायकीजेपयाचा॥
पाठ-ओ०१० बळ-ओ०१२ जन्मलेनिहेहदिस-ओ०१३ जातें वायासोमावारी-श्री०१६ बहिला-ओ०२२ नेणें-४

श्रीगणेशाय नमः ॥ नमो विशदबोधविदग्धा ॥ विद्यारविंदप्रबोधा ॥ परात्मसंयमप्रमदा ॥ विलासिण्या ॥ १॥ नमो संसारतमसूया
 ॥ अपरिमितपरसवीर्यो ॥ तरुणतरतूर्यो ॥ लालनलीला ॥ २॥ नमो जगदरिवलपालना ॥ मंगळमणिनिधाना ॥ सज्जनवनचंदना ॥
 आराध्यलिंगा ॥ ३॥ नमो चतुरश्चतचकारचंद्रा ॥ आत्मानुभवनरेन्द्रा ॥ श्रुतिसारसमुद्रा ॥ सच्चयमन्त्रा ॥ ४॥ नमो सभावभजना
 ॥ भवेभक्तुभंजना ॥ विशवाद्वयभुवना ॥ श्रीगुरुराया ॥ ५॥ तुमचा अनुग्रहागणेश ॥ जे आपुला देसोरसा ॥ तें सारस्वतीप्रवेश ॥ बाळ
 काही आधि ॥ ६॥ जो देविका उदारवाचा ॥ जें उद्देशदनाभिकाराचा ॥ तेन वसस्तभाळीचा ॥ पवाडलास ॥ ७॥ जी आपुलियास हते
 ची वागेश्वरी ॥ जरी मुक्यांतें अंगीकारी ॥ तो वाचस्पतीसों करी ॥ प्रबंध होडा ॥ ८॥ हे असो दिठी जयावरी झळके ॥ की हा पद्यकरमा
 था पासवे ॥ तो जीवचिपरितुके ॥ महेशंसी ॥ ९॥ एवढें माहमेचें जयकरण ॥ तेवाचा बळेवाना वेंकवणे ॥ कां मूर्या चिया आंगाउट
 णें ॥ लग्नत असो ॥ १०॥ के उताकल्यतरवरी पुंलारा ॥ कायसा निपाहुणे रक्षीरसागरा ॥ कवणें वासीकापुरा ॥ सवासंदवो ॥ ११॥ चंद-
 नातें कायस निचचीवें ॥ अमृतातें के उतराधावें ॥ गगनावरी उभवावें ॥ घडें कवी ॥ १२॥ तें सें श्रीगुरुचे महिमान ॥ आकाळीतें के-
 असे साधन ॥ हे जाणो नयानमन ॥ निवातकलें ॥ १३॥ जरी प्रजेचें निआधिलपणें ॥ श्रीगुरुसामर्थ्याक पकरू ह्मणे ॥ तरितें सो-
 निया भिंगरणें ॥ तें सें होइल ॥ १४॥ कांसाडे पथर या रजतवाणी ॥ तें सोस्तराचें बोळणी ॥ उगियाचि माथा ठेवि जे चरणें ॥ हें चिभ-
 लें ॥ १५॥ मग ह्मणितलें जी स्वासी ॥ भले निभमलें देखिला तुझी ॥ ह्मणानि कृष्णानुन सगमी ॥ प्रयागवटजा हालो ॥ १६॥ मोगो
 दूधदेह्मणितलिया साठी ॥ आघविया सीराव्धीची करू निवाटो ॥ उपमन्युपुटू धूजंदो ॥ ठेविली जें सी ॥ १७॥ नातरी वेंकुठपीठनाय-
 के ॥ रुसला धवकवतिके ॥ बुझाविला दर्डनिभा तुके ॥ ध्रुवपदाचें ॥ १८॥ ते सीजे ब्रह्मविद्या विद्यारावो ॥ सकळशास्त्राचा विसंवा-
 णट-ओं-२ अग्रनिमः बाल-ओं-४ गुण-ओं-८ हाजी वागीश्वरी-ओं-११ ऐसाकवणें-ओं-१२ काई-ओं-१६ जी-

हवो॥ नैमगवद्गीतावोचियोगावो॥ ऐसेकेले॥ ११॥ जंबोलणियाचेरानीं हुडतां॥ नायकिजेफळालियाअक्षराचीवार्ता॥ तैवाचाचि
केलीकल्पलता॥ विवेकानी॥ २०॥ होनीदेहबुद्धीएकसरी॥ तैआनंदभांडाराकलीवोवरी॥ मगगीताथेसीरसागरी॥ जळशयनजाले
॥ २१॥ ऐसेएकेकदेवाचेकरणें॥ तैअपारबोलोकेवीमीजाणें॥ नहीअनुवादलोधीतरणें॥ तैउपसाहिजोजी॥ २२॥ आतांआपुले
निरुपायसादें॥ मियांमगवद्गीतावोवीप्रबंधें॥ पूर्ववडविनाटें॥ वारवाणिलें॥ २३॥ प्रथमींअर्जुनाचाविषाद॥ हजाबोलिला
योगविषाद॥ पारसारख्यबुद्धीसिभेट॥ दाडनिया॥ २४॥ तजोकेवळकर्मप्रतिष्ठिलें॥ तैचिचतुर्थीज्ञानेसीप्रगटिलें॥ पंचमीं
व्हरिलें॥ योगतत्वा॥ २५॥ तैचिषष्ठांमाजिप्रगट॥ आसनालागांनिस्यह॥ जीवात्मभावएकवार॥ होतीजेणें॥ २६॥ तैसीजेयोग
स्थिती॥ आणियोगग्रंथजेगती॥ तैआघवीचिउपपत्ती॥ सांगीतलीषष्ठी॥ २७॥ तथावरीसमसी॥ प्रकृतिपरिहारोपक्रमीं॥
कैरूनिभजतिजेपुरुषोत्तमीं॥ नैबोलिलेचाही॥ २८॥ पाटीसमसीप्रश्नसिद्धी॥ बोलोनिप्रयाणसमयशुद्धी॥ एवसकळवाक्या
वधि॥ अष्टमाध्यायी॥ २९॥ मगशब्दब्रह्मीअसरव्याकें॥ जेतुलाकाहीअभियायपिके॥ तैतुलामहाभारतएकें॥ लसंजोडे॥ ३०॥
नियेआघवाचिजेमहाभारती॥ तैलाभेरुष्टाजुनवचनेन्ती॥ आणिजेअभियावोगीतैसातैशती॥ तोएकलचिनवमी॥ ३१॥ ह्मणो
निनवमींचियाअभियाया॥ सहसामुद्रालावावया॥ बिहालोंमगमींवांयो॥ गर्वकांकरूं॥ ३२॥ अहोगुह्यासारवरेमालयाचें॥ हंबाधेता
रिएकाचिरसाचें॥ परिस्वादगोडयेचे॥ आनआनजैसे॥ ३३॥ एकजाणोनिंयांबोलती॥ एकतारयदायजाणविती॥ एकजाणोज्ञा-
तांहारपती॥ जाणतेगुणसी॥ ३४॥ होऐसेअध्यायगीतेचे॥ परिअनिर्वच्यनवमाचे॥ तोअनुवादलोहेतुमचें॥ सामर्थ्यप्रभू॥
३५॥ अहोएकाचिशारीतपिबली॥ एकीसुष्टीवारिसुष्टिकेली॥ एकीपाषाणीवाडेनिउतरली॥ समुद्रीकटकें॥ ३६॥ एकीआकाशें-
पाव-ओं-२० परिते-ओं-२१ प्रजति-ओं-२१ विधिअथवासांघि-ओं-३० आतां-ओं-३१ अठगपर्वी-ओं-३६ का-

६

६

सूर्यान्ते धरिले ॥ एकीचतुर्ली चिसागरात्ते भरिले ॥ तेसमजमुकुराकरवो बालविले ॥ अनिर्वाच्यतु ह्यी ॥ ३७ ॥ परिहं असो एथरोसे ॥ श्री-
रामरावणजुझिनलेकसे ॥ श्रीरामरावणजैसे ॥ मोनले समरी ॥ ३८ ॥ ते नवमी कृष्णाचे बालणे ॥ तेनवमी चियाचिरोसे मी ह्यणे
॥ यानिवाडातल ज्ञाणे ॥ जयागीतार्थ हाती ॥ ३९ ॥ एव नवई अथायपहिले ॥ मियांमती सारिवेवोखाणिले ॥ आतां उचरव-
डउपाइले ॥ ग्रंथाचें केका ॥ ४० ॥ जेशविष्णुप्रीतिवसृती ॥ अस्तत अर्जुनासांगीजती ॥ तेविद्गदारसदृशती ॥ ह्यणिपेलकथा ॥ ४१ ॥
देशियेचे निनागरपणे ॥ शांतभृंगारोंते जिणे ॥ तरिवो विद्या हातीलेणे ॥ साहित्यासी ॥ ४२ ॥ मूळग्रंथी चियासंस्कृता ॥ वरिभन्हादी
नीदपाहानो ॥ अभिप्रायमानिलियाचित्ता ॥ कवणभूमी हनचोजवे ॥ ४३ ॥ जेस आगांचि निरुद्वरपणे ॥ लेणिया आगांचि होयलेणे ॥ तेथ
अळकारिले कवणकवणे ॥ हेंनिर्वचेंना ॥ ४४ ॥ तेसीदशी आणिसंस्कृतवाणी ॥ एकाभावाथाचासंस्वसनी ॥ शोभतीते आयणी ॥
चोरवट आइका ॥ ४५ ॥ उदयलियाभाव रूप ॥ करितारसृतीचलागवडवडप ॥ चातुर्यद्वारे पडप ॥ जोडले आह्या ॥ ४६ ॥ तेसेदेश
येचें लावण्य ॥ हरीनिरसांआणिलें तारुण्या ॥ मगरचिलें अगण्या ॥ गीतातन्व ॥ ४७ ॥ अंचराचरपरमगुरू ॥ चतुरचित्तचमत्कार ॥
तोएकायादवेषरु ॥ बोलताजाहाला ॥ ४८ ॥ ज्ञानदेवानृतीचाद्वारे ॥ एसें बोलिलें श्रीहरीतणे ॥ अर्जुनाआथरियाचिमातुअंतःक-
रणे ॥ धडौता आहासी ॥ ४९ ॥ मल्लो ॥ ॥ श्रीभगवानुवाच ॥ ॥ भूय एवमहाबाहो ॥ शृणु मपरमवचः ॥ यत्ते हंप्रीयभाषायव-
क्ष्यामि हितकाम्यया ॥ १ ॥ टी ॥ आहोभागील जें निरूपणकलें ॥ तेंतुं अथधानचि पाहिलें ॥ तंवदोचें नव्हे भलें ॥ पुरतें आहो ॥ ५०
घटोद्योडे सें उदक घालिजे ॥ तेंणें नगळे तरी वरिताभरिजे ॥ ऐसापरिसांनिपाहला भिंतवपरिसविजे ॥ ऐसें चिहोतसे ॥ ५१ ॥ तयाव-
री सर्वस्वसां डिजे ॥ मगचोरवतरीताचि भांडारी कीजे ॥ तेसां करीदातू आतां माझे ॥ निजधामकी ॥ ५२ ॥ ऐसें अर्जुनाजवसे वेश्वर ॥
पाठ-ओं-२० नंगला-ओं-४३ उचिता-ओं-४६ उवाल्या-वडप-

पाहोनिबोलिलोंअत्यादें॥गिरीदेखोनिस्मरें॥मेघजैसा॥५३॥तैसाकृपाकुवाचारावो॥ह्मणेंआइकेंगामहाबाहो॥सांगीत
 लाचिअभिप्रावो॥सांगेनपुदती॥५४॥पैंमतिवर्षीक्षेवंपरिजे॥पिकाचीजरीवाढीदेखिजे॥याळागीनुबगिजे॥वाहोकरिता॥५५॥
 पुदतपुदतीपुवेंदेतां॥जोडेबाभियेचीअधकता॥ह्मणोनि सोनें पांडुसुता॥शांधूचिआवडे॥५६॥तेंसंस्थपार्थो॥तुजआप्परना
 होसवथा॥आह्मीअपुलियाचिस्वाथो॥बोलांपुदती॥५७॥जेंसबाकलावेजेलेणो॥तयाप्रमाणेंबाळकाइजाणो॥पैंभितेसु
 र्वाचेसोहकेमोगणें॥माउलियोदही॥५८॥तेंसेंतुझोहितआघवें॥जंवजकांतुजफावें॥तंवतंवआमुचेंसुरवदुणावें॥ऐसेआ
 हे॥५९॥आतांअर्जुनाअसोहोवकडी॥मजउघडतुझीआवडी॥ह्मणोनि त्वमीचीसवडी॥बोलतांनपडे॥६०॥आह्मायेतुलिया
 चिकारणें॥तेंचिनेंतुजशीबोलणें॥परिअसोहेंअंतःकरणें॥अवधानंदे॥६१॥नरीऐकेंऐकेंगास्रवमो॥वाक्य माझेंपरमा॥जें-
 असरेंलेउनिपरब्रह्म॥तुजसेंवासिआलें॥६२॥परिकरीदीतूंमातें॥नेणसीनाभिरुतें॥तरितोगाजोमीएथें॥तेंविश्वचिहें॥६३॥
 म्लो०॥नमोविदुःस्मरणाःप्रभवन्महर्षयः॥अहमादिहैदेवानांमहर्षीणांचसर्वशः॥२॥ही०॥एथेवदमुकेजाहाले॥मनपच-
 नपांगुळ॥रतीविणभावळ॥रविशशीजिथें॥६४॥अगाउदरीचिगर्भजैसा॥नदेखेअपुलियेमायेचीवियसा॥मीआववेयादे
 वानेसा॥नेणवकाही॥६५॥आणिजळचराउदधीचिमान॥मशकानोलांडवेचिगगन॥तेवोमहर्षीचेंज्ञान॥नदेखेचिमातें॥६६॥
 मीकृवणपांकेतुला॥कवणाचाकेंजाहाला॥याभिरुनीकरितांबोला॥कल्पेंगेलें॥६७॥कोजेमहर्षीआणियादेवो॥येरांभूतजाता
 सर्वो॥मीचिआदिह्मणोनिपंडवा॥अवधजाणतो॥६८॥उत्तरलेंउदकपर्वतवळ्यो॥जरीझाडवाटतमुळीलागे॥नरोमियाजाले-
 निजगें॥जाणिजेमातें॥६९॥कांगांभेवनेवदगिवसवे॥जरीतरंगीसागरसांदवे॥कांपरमाणुमाजीस मा ॥भूगोळहा॥७०॥त-
 पाठ-ओं-६७ रुमेगेंदी- ओं-७० गांभे-

शिभियांजलिस्मृतीनां॥महर्षीअथवादेवां॥मातेजाणावयाहोआवा॥अवकाशगा॥७१॥ऐसाहीजरीविपाये॥सांडनिपुढीलपाये॥
 सर्वेदियांसिहोये॥पाठिमारजी॥७२॥नसअलिससर्वासी॥स्वयेअलिसहोणंनमासी॥हेंचिमहाभूतोचियामाथयासी॥चटण
 साचें॥७३॥प्रवर्तलाहीवेंगाबिहुंडा॥देहसांडनिमागलीकुंडा॥महाभूतोचियाचंदे॥माथयावरी॥७४॥श्लो०॥योमामजमनादि-
 चवेंतिलोकमहेश्वरमु॥असमृटःसमंयपुसर्वपापैःप्रमुच्यते॥३॥टी०॥तेथराहोनिवायाठकें॥स्वप्रकाशचोगे॥अजलमार्गदे-
 रेवें॥आपुलिवाडोळा॥७५॥मीअर्गदसोंपरा॥सकळलोकमहेश्वर॥ऐसियासातेजोनर॥यापरिजाणें॥७६॥तोपाषाणमाजिपरिसा॥जसारसाआन
 सिद्धरसा॥तेसासनुषाआंतनोअंश॥माझाचिजाणा॥७७॥तेंचालतेंज्ञानचेंबै॥तयाचेंअवयवतेसुखाचेंकोभ॥येरमाणुसपणानेसां
 ब॥लौकिकप्राणा॥७८॥अगाअवचितंकापुरा॥माजिसांपडलाहिरा॥दरीपांडुलियानरा॥नागवेकाही॥७९॥तेंसामनुष्यलोकाआन
 ॥तोजरीजाहालापारुत॥तन्हीप्रकृतिदोषचीमात॥नेणचिकी॥८०॥तोआयमथेचिसोडिजणपी॥जेंसाजळतचंदनसपी॥तेविमाने-
 जाणेसकन्यी॥वज्रीनियापें॥८१॥तेंचिआमुतेंकेंसोजाणिजे॥ऐसेकल्योर्जगीचिस्तुझे॥तरीमीऐसाहंमाझे॥सावेंकें॥८२॥जेंवेग-
 कालियाभूती॥सारखेंहोनिप्रकृती॥विरपुरलंआहेचिजगती॥आघाविया॥८३॥श्लो०॥बुद्धिज्ञानमसमोहःक्षमास्तयंदमःश-
 मः॥सरस्वदुःखंभवोभावोभयप्राप्तयेमेवच॥८४॥अहिंसाभमतातुष्टिस्तपादानंयथायथा॥भवेतिभावाभूतानांभक्तएवपृथग्वि-
 धीः॥५॥टी०॥तेंथप्रथमजाणबुद्धी॥मगज्ञानजोनरवधी॥असमाहसहनसिद्धी॥क्षमास्तय॥८५॥मगशमदमदोन्ही॥सु-
 खदुःखवर्तनजनी॥अर्जुनासावासावभानी॥हेप्रावाचिमाजी॥८५॥पंपयआणिनिर्मयता॥अहिंसाआणिसमता॥तुष्टि-
 तपपांडुसता॥बोळखतू॥८६॥अगायथाआणिअपकीती॥हेजेभावसर्वत्रदस्तती॥तमजचिपासूनिहंती॥भूताचियादा
 पाठ-ओ०७८बीज, परी, पणाची, लोकाचियाचिमागा-ओ०७९नीगजेतय-ओ०८०नीगजेतय-ओ०८१अचिबिनाशामानी-ओ०८२दानयश-७

यो ॥ ८७ ॥ जैसीभूतें आहतीसिनानी ॥ तैसेंचिहंदीवेगकालेंसानी ॥ एकउपजतीमाझाज्ञानी ॥ एकेनेणतीसातें ॥ ८८ ॥ प्रकाश
आणिकडवसे ॥ हंसूर्याचिस्तजैसें ॥ प्रकाशउदर्योदसे ॥ तमअस्तसी ॥ ८९ ॥ आणिमाझेजाणणेंनेणणें ॥ तेंतवभूतांचियाप्री
वैचेंकरणें ॥ झणांनिभूतीभावांचियाहोणें ॥ विषमपडे ॥ ९० ॥ यापरीमाझियाभावी ॥ हेजीवसृष्टिआघवी ॥ गुंतलीअसे
जाणावी ॥ पांडुकुमरा ॥ ९१ ॥ आतांदेजेसृष्टीचेपालक ॥ जयांआधीनवर्ततीलोक ॥ तेअकराभावांआणिक ॥ सांगेनतुज ॥ ९२
॥ महर्षयः समपूर्वचलारोमनवस्तथा ॥ मद्रावामानसाजानेयेथेलोकइमाः प्रजाः ॥ ६६ ॥ तरीआघवाचिगुणीवृद्ध
॥ जेमहर्षिमाजिप्रबुद्ध ॥ कश्यपादिप्रसिद्ध ॥ समन्त्रपीगा ॥ ९३ ॥ आणोकोहीसांगितल ॥ जेकांचोदाआंतुलमुदल ॥ स्वयम्
मुखवाडिल ॥ चारीमनु ॥ ९४ ॥ ऐसेहेअकरा ॥ माझामनींजाहालेधनुर्धरा ॥ सृष्टीचियाव्यापरा ॥ लागोनिया ॥ ९५ ॥ जैलो-
काचीव्यवस्थानपडे ॥ जयाविभूवनाचेकोहीनमोडे ॥ तेंमहाभूतानेंदळवाडे ॥ अचुंबितअसे ॥ ९६ ॥ तेंचिहेजाहाले ॥ मगइ-
हीलोककेले ॥ तथअथ्यदरचूनिदेविले ॥ इहीजन ॥ ९७ ॥ झणांनिअकराहीहराजा ॥ मगयेरजगयांचियाप्रजा ॥ एवंचिवश
विस्तारहामाझा ॥ ऐसेंचिजाणा ॥ ९८ ॥ पाहंयांआरंभीचीजाकले ॥ मगतांचिवद्दुलयांबुडजाहाले ॥ बुडोंकोमनिधाने ॥
स्यांदियाचे ॥ ९९ ॥ रवोदयांप्रास्निअननेका ॥ मूर्तिदित्यानानाशारवो ॥ ग्रान्वास्तवदरगा ॥ पल्लुवीफूलफळे
॥ एवंचुसत्वजाहलेंसकला ॥ तेंनिघोरिअवकंवळ ॥ तंनवीजांचेचिआयें ॥ १०० ॥ तेंसामीएकचिपहिलें ॥ मगमीतेंचिमनातेंव्या-
ले ॥ तथसप्तमन्त्रोआणिजाहाले ॥ चारिमनु ॥ १०१ ॥ मिहोविश्वधंलाकनिमंले ॥ लोकालोकपूजवेगकाले ॥ लोकपाळीवाट
विले ॥ प्रजाजात ॥ १०२ ॥ ऐसेंनिहंविश्वयेथें ॥ मीचिविस्मारिलांसांनरुतें ॥ यारिमावाचिनिहोतें ॥ मानेजया ॥ १०३ ॥ श्री ० ॥

पाठ-ओ० देवाचें-ओ० १९ बुडत-ओ० १०० शारवोपशारवा

एतां विष्णुर्नियोगं च मयैवेति तत्त्वतः ॥ सोऽधिकं पनयोगेन युज्यते नान्न सशयः ॥ ७॥ टी० ॥ यालागि सुभद्रापती ॥ हे भवइयामां श्रिया वि-
 भूती ॥ आणियां चिया व्याप्ती ॥ व्यापिलें जग ॥ ५ ॥ द्यणो निगाया परी ॥ ब्रह्मादिपिण्डिका वरी ॥ सीवांचूनि दुसरी ॥ गोष्टी चिनाही ॥ ६ ॥ ए-
 से जणे जो साचे ॥ तथाचे शिरे जाहाले ज्ञानाचे ॥ द्यणो निउत्तमाधम भेदाचे ॥ स्वप्नदेखे ॥ ७ ॥ सीमां श्रिया ग्रिफ्ती ॥ विभूती अधिष्ठ-
 लिया व्यक्ती ॥ हे आघवे योग्य तर्ती ॥ एकाचि मानी ॥ ८ ॥ द्यणो निनिः शं कं येणें महायोग ॥ मज्जमालें मनांचे निआंगें ॥ एथ सशय क-
 रणें नलगो ॥ तौ त्रिभुद्धी जाहाला ॥ ९ ॥ कां जे ऐसे करीती ॥ माते भजे जो अमदादीती ॥ नयांचिय मज्जनाचे नादी ॥ सीचिलुभो ॥ १० ॥
 द्यण उर्नि अभेटे जो भक्ति योग ॥ तेशां कानाही नये रवंग ॥ करितें तेलाने रीचांग ॥ तें सांगी नलें घटी ॥ ११ ॥ तौ चि अभेटे केसा ॥ हे-
 जाणावया मानसा ॥ सादर जाला तरी पयें सा ॥ बोलें जलें ॥ १२ ॥ म्हो ॥ अहं सर्वस्य प्रभवो मत्तः सर्वं नृवर्तते ॥ इति मत्वा भजंते-
 मां बुधा भावसमन्विताः ॥ ८ ॥ टी० ॥ तर्झी चिये कसवी ॥ या जगाज च पाडवा ॥ आणि मज्जि चि पास्ती निआघवा ॥ निवां हयें च ॥ १३
 ॥ कल्लोळ भाळा अनेगा ॥ जन्म जळा चि पेंगा ॥ आणितया जळा चि आय्यतरंगा ॥ जीवनही जळा ॥ १४ ॥ ऐसें आघवांचि दायी ॥ त-
 यां जळा चि जे विपाही ॥ तें सासीवांचूनि नाही ॥ विशवांडय ॥ १५ ॥ गेसिया व्यापका मते ॥ मान्नि जे नजती भलें ते ये ॥ परिसाचो का-
 रे उडितें ॥ प्रेमभावे ॥ १६ ॥ देश काळ वतमान ॥ आघवं मज्जसी किफूनि अभिन्न ॥ जें सावायू हो उनि गगन ॥ गगनीं चि विचरे ॥ १७
 ॥ ऐसें निजे निज ज्ञानी ॥ खेळत सुखें प्रभुवर्नी ॥ जगद्रुपामनी ॥ सातु उनि सातें ॥ १८ ॥ जें जे भेटे मृत ॥ तें तें मानिजे भगवत ॥ ह्या भ-
 क्तियोगा निश्चित ॥ जाण माझा ॥ १९ ॥ म्हो ॥ मच्चित्तम इतयाणा बाधयंतः परस्परम् ॥ कथयन्तश्च मान्नि तेषां निचरमाति च ॥
 १॥ टी० ॥ चित्ते सीचि जाहाले ॥ मियें चियाणें थोले ॥ मग जीवें मरा विसरले ॥ बांधा चिया भुली ॥ २० ॥ मग नया बांधाचे निमजें ॥ ना-

चतीसंवादसुखाचीं भोजे ॥ आता एकमेकां धेपें दिजे ॥ बोधचि वरी ॥ २१ ॥ जैसो जिवळि कुंचो सरोवरें ॥ उचबळालिया कालवनी परस्परें ॥
 ॥ भगत रंगासी धक्कारें ॥ तरंगांचे होती ॥ २२ ॥ तें सोयरेयांचियो मिळणी ॥ पडत आनंद कळ्हाळाची विणी ॥ तें थें बोधबोधचीं लेणी ॥
 बोधाचीं मरी ॥ २३ ॥ जैसो सूर्य सूर्यातें वोंगाळेल ॥ कीं चंद्र चंद्रम्यास मदीं धले ॥ नातरी सारसो निपाडें भिनले ॥ दोनी वाया ॥ २४ ॥ तें
 सें प्रयाग होत साभर स्याचे ॥ वरी वासागत रत साविकाचे ॥ तें संवादचतुर्थीचे ॥ गणेश जाहाले ॥ २५ ॥ तें व्हांत या महासुखाचे-
 निभरें ॥ धवो निंदहा चिया गावा बाहरें ॥ मिया धालें तें उहारे ॥ लागतीं गाजो ॥ २६ ॥ पेंगु रुशिष्या चिया एकांनी ॥ असो एकाचि
 वदती ॥ तें मया चिया परीं निजगती ॥ गर्जनी संघ ॥ २७ ॥ जैसी कसल कळिका जाले पणें ॥ तदर्थी चिया मकरंदांतरा खोनेणें ॥ देखा
 रंका पारणें ॥ आमोदाचें ॥ २८ ॥ तें सोचि मांतें विश्वी काथित ॥ कथितें निनायें कथूं विसरत ॥ भगत या विसरामाजि विसरत ॥ आंगें जिवें ॥
 २९ ॥ ऐसें प्रभाचें नवहुव सपणें ॥ नाही राती दिवा जाणणें ॥ केलें माझं सुख अव्यय बाणें ॥ आपण पें जिही ॥ ३० ॥ ज्यो ॥ तें वासतत सु-
 कानां भजनीं प्रीति पूर्व कस ॥ ददां मनुष्यागत येन मां मुपयां नते ॥ ३१ ॥ दी ॥ तया भजे आहो काही ॥ द्यावें अर्जुना पाहीं ॥ ते द-
 थिंचि चि ही ॥ घेतलीं सल ॥ ३२ ॥ कां जेने जिया वादा ॥ निगालुंगा सुखा ॥ तें सोयपा हो नि आळां ता ॥ स्वर्ग पवर्ग ॥ ३३ ॥ ह्यणों भित हो-
 जें मे भरीलें ॥ तें चि आमचें देणें उपावेलें ॥ परि आहो देयावें तीं केलें ॥ तिही ह्यणि पें ॥ ३४ ॥ आतां या वरी येतुलें घडे ॥ जें तें चि सुख
 आगळें वाटें ॥ आणि काळाची हृष्टी न पडे ॥ हें आहो कारणें ॥ ३५ ॥ नुकें या चिया बाळु काकिरी दी ॥ गंव सणी करूं निस्ते हा चि बा-
 दी ॥ जैसी खळतां पाटा पाटी ॥ माउली धावें ॥ ३६ ॥ तें जो जे खेळ दावी ॥ तो ना पुढें सोनयाचा करूं नि देवी ॥ तें सी उपासी चि पद-
 वी ॥ पोषित मी जायें ॥ ३७ ॥ त्रियं पदवी चि निपाय कें ॥ तें मांतें पावनी यथा सुखें ॥ हे पाळनी मज विशे रे ॥ आवडे करूं ॥ ३७ ॥ पें

पाठ. ओं. २३ जवळि केचि ओं. २३ मळणी वांध ओं. २४ खेच ओं. २७ अक्षरा ओं. ३० पया ओं. ३३ हे.

गाभक्तासिमाङ्गकोण्ड॥ मज्जनसंन्यासार्त्तचिन्ता॥ काजंममकाचंसाकड॥ आमुचियापरि॥ ३८॥ पाहंपास्वर्गमोक्षप्राप्य
ले॥ दोन्हीभागतयांचियवाहणीवले॥ आर्हाआगाहसूर्याचिन्ते॥ लक्ष्मियेसि॥ ३९॥ परिआणणंपेवीजएक॥ तेनेसोचिसुखसा
जुका॥ संपेभालागिदख॥ मेविलंजनन॥ ४०॥ हादायवर्गकरादी॥ आर्ह्यायेमकपेवोआणण्यासादी॥ याबोलीबोलावियागोष्टी॥
तेभियानव्दनीगा॥ ४१॥ श्लो०॥ तेंपासेवुतुकरायमहमज्जनम॥ नाशायान्यभावस्थाज्ञानदोपेनभास्वता॥ ११॥ टी०॥ द्विगो
निमज्जआत्मयाचाभाव॥ जिहीजियावयावल्गदाव॥ राक्षसीवाचुनिबाव॥ येरभाजिले॥ ४२॥ तयातन्वज्ञाचोखता॥ दिवोपातासाची
सुप्तता॥ मगमीचिहोउनिदवता॥ पुढापुढाचाले॥ ४३॥ अज्ञानाच्येराती॥ भाजितमार्चाभिन्कणीदिताती॥ तेनाशूनिघालीपरि-
ती॥ तयांकरीनियोदया॥ ४४॥ ऐसेयेमकाचेनिमयांसं॥ योलिलेजयपुरोचंसं॥ तेअर्जुनमनोभं॥ निबालेद्विगतसा॥ ४५॥ हाहोजीअवथा
रा॥ भलाकरफोडिलासंसार॥ जाहलाजगनजिहजोहर॥ वेगळाभू॥ ४६॥ जोजन्मलगणाआपुले॥ हेआजमियाडोळतखिले॥ जोवित
हाताचढे॥ ओवडेंतेसे॥ ४७॥ अजिआयुयापुनवपजोहाला॥ माझयादवादेशाउदयली॥ जवाक्यकृपालाधन्वी॥ दोविकानिमु
खे॥ ४८॥ आतायेणंवननतेजाकारे॥ गतलेआंतल्याहोर्लआधारे॥ द्वर्णानंदरवतसंसाचोकारे॥ स्वरूपतुझे॥ ४९॥ श्लो०॥
॥ अर्जुनउवाच॥ ॥ परब्रह्मपरमभयविघ्नपरमभवान्॥ पुरुषशाश्वतद्विद्यामाददवमजविभुश॥ ११॥ टी०॥ तरिहंसागतूपरब्र
ह्म॥ जेंयामहाभूतोविरावतेंधाम॥ पवित्रतूपरम॥ जगन्नाथ॥ ५०॥ तेंपरमदवर्तनिहोदवा॥ तेंपुरुषजपंचविखावा॥ दिव्यतूप
कृतिभावा॥ पैलोकडीला॥ ५१॥ अनादिमिहृतंस्वामी॥ जोनाकाळजसोजन्मभरी॥ तावूहेआर्ही॥ जाणितलेआता॥ ५२॥ तेंया
कालत्रयासिसूत्री॥ तूजीवकलेअधिष्ठात्री॥ तूब्रह्मकटाहधारी॥ हेककलेपुढे॥ ५३॥ श्लो०॥ आहुस्वामयःसर्वदेवर्षिवेद-
पाठः ओ० ३८ आसुते० ओ० ३९ शेषा० ओ० ४१ योलिजन० ओ० ४४ मिहकृणी० ओ० ४७ आडवतअसे० ओ० ४८ उजवणी० ओ० ५० नाथ० ओ० ५२ धर्मी० ओ० ५३ यंत्रासि-

स्तथा॥ असितो देवलो व्यासः स्वयंचैव ब्रवीषिमे॥ १३॥ टी०॥ पैंआणी कहीएकंपरी॥ इयेयतीतीचियेतसेथोरी॥ जेमागेंसोंचिक्क
 षेध्वरी॥ सांगीतलेतुतें॥ ५४॥ परितयासांगितलियाचेंसाचपणा॥ हेंआतांमाझेदेखतसेअंतःकरण॥ जेकृपाकेलीअपणा॥ ह्य
 णीनिदेवा॥ ५५॥ येन्हवीनारदुअसइजवळांयो॥ तोहीऐसंचिवचनीमाये॥ परिअथनवुजोनिठायो॥ गीतसुरवाचैको॥ ५६॥ जो
 ओंखेयाचागांवी॥ आपणपपगातलरवी॥ तारिनिहोंवातपलीचिआवी॥ वोंचुनिप्रकाशकचा॥ ५७॥ पौरदेवर्षिअभ्यात्मगानां
 ॥ आहचरागांसीजमधुरता॥ तेंचिफावेयेरचिन्ता॥ ननुगोचिकांही॥ ५८॥ पैंआसितां देवलाचो नसुखें॥ मीएवंविधियातुलेंआ
 इकें॥ पारितेंबुद्धीविषयविरवें॥ यारिलीहोती॥ ५९॥ विषयविषाचापडियाइ॥ गाडपरमाथेलागेकडु॥ विषयतेगोडु॥ जीवासिजा
 हाळा॥ ६०॥ आणिहेंआणिकांचेकायसांगावें॥ राउळा आपणचियेंद्रनिव्यासदेवें॥ तुझेस्वरूपआयवें॥ सर्वदांसांगिजे॥ ६१
 परितेंआंधारींचेंतामणीदेखिला॥ जेविनंज्याबुद्धीउगंधिला॥ पाठीदिनोदयीवोळुखिला॥ होय ह्यणोनि॥ ६२॥ तेंसोंव्यासा
 दिकांचीबोलणी॥ तैयामजपारींचीद्रव्हाचियाखाणी॥ परिरुपेक्षित्याजाहोनियातखाणी॥ तुजवीणकृष्णा॥ ६३॥ म्हेलो०॥ सर्वमे
 तहंतंमन्येयच्यावदभिकेशवा॥ नहिनेभगवन्त्यक्तिविदुदेवानदानवा॥ १६४॥ टी०॥ तेआतांवाक्यसूयकरतुझेफाकले॥ आणिअ
 र्चीनांभागेहीतेजकथिले॥ तयाआघवयेंचेंचिफ्रितल॥ अनोकरपणा॥ ६४॥ जीज्ञानाचेंबोजतंतवयाचेबोले॥ माजिन्दुदयभूमिके
 पडिलेसरबोले॥ वरिइयेरुपचीजाहालीवोले॥ ह्यणोंनिसंवादफळेसीउठिले॥ ६५॥ श्रीकृष्णावाक्यसंवादें॥ फुलीआलेमकरद॥
 तेंफळजीविनोदें॥ दिधलेभज॥ ६६॥ अहानारदादकासेता॥ त्यांचियाशुक्तिरूपसरिता॥ मोमहोदधीजाहालोअनंता॥ संवाद-
 सरवाचा॥ ६७॥ प्रसुआघवेनियेणजन्मे॥ जियंपुण्येकेंलोभियाउत्तमें॥ तयांचिनतकतीचिअंगीकामें॥ महुुरुतुवा॥ ६८॥ येन्ह
 पाठ-ओं-५७ हागा-ओं-५८ येन्हवीं-ओं-५९ विधा-ओं-६० कडु-ओं-६१ नियणसों-ओं-६२ अर्चीमागे-

वीचंडिलवडिलांचे निमुखें ॥ मीसदांतुं तू कांनीं आदकें ॥ परिकृपान किजें चितुवां एकें ॥ तवनेणें वेचिका हीं ॥ ६१ ॥ द्यणो निभाय जें साजु-
 कूळ ॥ जालियां केलें उद्यम सादास फळा ॥ तें संश्रुताथें तिसकळा ॥ गुरुदया माचि ॥ ७० ॥ जीवन कर झडें सो जीवें साटी ॥ पाडि निजचें काटी-
 आटी ॥ परि फळें सीतिं विभटी ॥ जें वसंत पावे ॥ ७१ ॥ अहो विषमा जें वोहर पडे ॥ तें मधुर तें मधुर आवडे ॥ पिरसाय नें तें गोडे ॥ जें आरोरायें
 देही ॥ ७२ ॥ कांदें द्रियें वाचायाण ॥ याजाद्रियांचें तें चिरार्थक पण ॥ जें चेतन्य यंत्रिनि आपण ॥ मंचर माजी ॥ ७३ ॥ तें संशब्द जात आ-
 लोडिलें ॥ अथवा योगादिक जें अभ्यासिणें ॥ तें तें चिद्वर्गां ये आपुलें ॥ जें सानुकृती पुरु ॥ ७४ ॥ ऐसय जालिये यतीने चिनि मजें ॥
 अर्जुना निश्चयनाच त भोजें ॥ तें वीचिद्वर्गां तें वातु झी ॥ वाक्य मज मानलें ॥ ७५ ॥ तरि साचि हें कें वल्य पती ॥ मज विशुद्धी ओली म-
 तीती ॥ जें तें दवां दानवांचि य मती ॥ जागा न दुरी ॥ ७६ ॥ तुझे वाक्य व्यक्ती न येतें देवा ॥ जो आपुलिया जाण जाणिवा ॥ तों कंही चि-
 नो हे हें सद्वा ॥ भरें वेंस नि आलें ॥ ७७ ॥ ब्रह्म ॥ राय मां वात्मनात्मन वल्य न्य पुरुषाच मी ॥ भूत भावन भूत शब्द वदव जागस्पते ॥
 १५ ॥ टी ॥ एथ आपुलें वाड पण जें सें ॥ आपणा चिजाणिज आकाशें ॥ कामीय तुदीय न वद सें ॥ पृथ्वी चिजाणें ॥ ७८ ॥ तें सा आपु-
 लिये सर्व शक्ति ॥ तुज तूं चिजाण सील क्षमापती ॥ येर वेंदा हें कुंभ तें ॥ मिरवती वार्यो ॥ ७९ ॥ हागा मन तें मागां सांडावें ॥ पवन तें वावी-
 मवावें ॥ आदि धन्य उतरें निजावें ॥ कुंठ तें वाही ॥ ८० ॥ तें संहनु झे जाणें आह ॥ द्यणो निकोणा हीं ठावें कं नो ॥ आतां तुझें ज्ञान हा-
 ये ॥ तुज चिजो ॥ ८१ ॥ जी आपण यात नूं चिजाण सी ॥ आणिकां तें सांगावया हीं समर्थ हो सी ॥ तरि आतां एक वळ धाम पुसी ॥ आ-
 ती चिये निडकीचा ॥ ८२ ॥ हे आई किलें कीं भूत भावना ॥ त्रिभुवन गज पंचना ॥ सकळ देव देवत चिना ॥ जग भायका ॥ ८३ ॥ जरी
 शरीर तुझी पाहत आहो ॥ तरि पासी उभे ठाकावया हीं याग्य नो हो ॥ या शौच त जरी गिन वृं बिहो ॥ तरि आन उपाय ना हीं ॥ ८४ ॥ भ-
 पाठ ॥ ओ ॥ ७१ जीवन कर ॥ ओ ॥ ७४ ब्रह्म ॥ ओ ॥ ७६ आलें ॥ ओ ॥ ८२ पयातें ॥ ओ ॥ ८४ शाब्दना ॥

रलेसमुद्रसरित्ताचहूंकड॥ तन्निंबापियासिंक्रूरड॥ कांजंमपोनिथेंबुरापड॥ तेंपाणिकीतया॥ ८५॥ तेंसंभंगुरसर्वत्रआर्थो॥ प-
रिच्छयाआद्याचंचिगर्त॥ हंअसामजप्रती॥ विभूतिसांगो॥ ८६॥ ॐ०॥ वक्तुमहस्यशेषणादिव्याख्यासीविभूतयः॥ याभिर्वि-
भूतिभिर्लोकानिमास्त्वव्याप्यतिष्ठति॥ १६॥ टी०॥ जोतुझियाविभूतीआधविया॥ परिव्यापितीशक्तिदिव्याजिया॥ तियाआपु-
लियादावाविया॥ आपणामज॥ ८७॥ जिहीवभूतययासमस्ता॥ लोकांतव्यापूनिआहासीअनंता॥ तियाप्रधानानामांकितो॥ प्र-
गटाकरी॥ ८८॥ ॐ०॥ कथविद्यामहंयोगिस्त्वांसापशिनंतयन॥ कंफुकुचभावेधुचिंत्यासिभगवन्नया॥ १७॥ टी०॥ जीकेंसंभि-
यांतुतेंजाणावें॥ कायजाणोंनिसदांचिंतावें॥ जरीतुंचिद्वर्णोंआधवें॥ तीरेचिंतचिनघड॥ ८९॥ द्दवर्णोनिमागाभावजसे॥ आपुले
सांगीतलेतुवाउहेशें॥ आतांविस्तारोंनितें॥ एकवळबोल॥ ९०॥ ज्याजयाभावाचियाठायो॥ तुतेंचिंतितांमजसायासनाहो॥
तेविकककरूनिददे॥ यांगआपुला॥ ९१॥ ॐ०॥ विस्तरयात्मानंयोगोविभूतिंचजनादना॥ भूयःकथयतुनिर्दिष्टपूजतोना
स्तिभेषुतम्॥ १८॥ टी०॥ आणिपुसालियाजियाविभूती॥ त्याहीबोलावियाभूपती॥ एयद्दवर्णसीजरीपुदती॥ कायसांगो॥ ९२॥
तरीहभावमना॥ द्दवर्णजायहोजनादना॥ पंप्राकृताहोअमृतपाना॥ नानद्दवर्णवेजेवी॥ ९३॥ जेंकाळकूटाचंसहोदरा॥ जेंमूळ
भेणेंप्यालेअमरा॥ तरिदेहाचेपुरदरा॥ चोदाजानी॥ ९४॥ एसाकवणाएकदीराखीचारसा॥ जयावायांचिअमृतपणाचाआभास॥ त-
याचाहीभिठाश॥ जेंपुरद्दवर्णानदी॥ ९५॥ तयापावळयाहयेतुलवरी॥ गोंडयेचिआथिथोरी॥ मगहंतवअवधारी॥ परमामृत
साचें॥ ९६॥ जेंमंदराचकनदाकिता॥ क्षीरसागरनडहुकता॥ अनादिसभावना॥ आइतेंआहो॥ ९७॥ जेंअवणाद्वानळब-
जथनेंजतीरसंगंधा॥ जेंमलनयाहीसिद्ध॥ आठवळचिफावो॥ ९८॥ जयाचिगोंठीनिंगकतरेवो॥ आपवांससारहाषावो

पाठ- ओं- ९८ द्रवना- जेमजळ-

वक्त्यानित्यनालागंयेवो॥ आपणपंथ्या॥ ११॥ जसमृत्युचोभाष॥ हारपांनिजायनिः शेष॥ आंतबाहरिमहासुख॥ वाढोचलागे
 ॥ २०० ॥ मगदवगत्याजरीयेवज॥ तरिते आपणाचिहाडेनिटाकिजे॥ तंतुजलेंताचिचमाझो॥ पुरद्वणानशक॥ १॥ तंवतुझेनामचि
 आह्याआवडे॥ नरिभेटी हाथआणिजवादिबजोडा॥ पाटीगाठसांगसोसुरवाडो॥ आनेदाचनी॥ २॥ आतोहंरुखकायिसयासा
 शिरवे॥ कोहोनिवंचेनामजपरितोरे॥ बरिथचुलजाणजयणपुख॥ पुनरुक्तहाहो॥ ३॥ हांगामूर्यकायिषाळा॥ अग्निद्वणोंये
 तआहोवाविका॥ कोनित्यवाहतयागंगाजळा॥ पागसंगणअंस॥ ४॥ जेतुद्विआणिकयावरिबोलिले॥ हेंआह्यानादासिरुपर
 शिवले॥ आजिचंदनतरुचीफुले॥ तुरबातआह्यामी॥ ५॥ तथापार्थचियाबोला॥ सवोगंधोरुध्याडालळा॥ द्वर्णभक्तिज्ञानासिजा
 हाळा॥ आगरहा॥ ६॥ ऐसापतिकराचियातापाआत॥ प्रमाचाअघउचवळत॥ सायासयावरुनिअनत॥ कायबोले॥ ७॥
 ॥ ८॥ ॥ श्रीभगवानुवाच॥ ॥ हंततेकथयिष्यामीदव्यान्धात्माविभूतयः॥ आधान्यतः कुरुअष्टनांस्त्वतोविस्तरस्यमे॥ ११९
 ॥ १०॥ मीपितामहाचापिता॥ हंआढिवतांहीनातर्वचिन्ता॥ काद्व्यातसपादुरुता॥ भलेकले॥ ८॥ अजुनातेबाह्यणएयकाही॥
 आह्याविस्मोकरावयाकारणनाही॥ अंगंतोलेकरुकाई॥ नव्दचिनदाच॥ ९॥ परिप्रस्ततऐसंअसे॥ हंकरवाआवडोचाअतिसो॥
 मगद्वर्णआदकेसागतसो॥ धनुयेगा॥ १०॥ तरतुवापुसलियाविभूती॥ तथाचेंअपारपणसुभद्रापती॥ जमाझियाचिचिपरीमाझियेस
 नी॥ आकळतीनां॥ ११॥ आर्गीचियारोमाकिती॥ जयाचियातयासिनगवती॥ तोंसियामाझियाविभूती॥ असंख्यमज॥ १२॥ ये
 रवींतरीमीकैसाकेवढा॥ द्वर्णोनिआपणपयानव्दचिफुडा॥ यालागिग्रधानजियानामीरूढा॥ भियाविभूतीआदकें॥ १२॥ जियंजा
 णितलियासाठी॥ आचवियाजाणवतीलकिरीटी॥ जेंसेबीजआलियामुठी॥ तरुविआलाहोये॥ १३॥ काउधानहाताचटिनले॥ तरि
 पाठ-ओं-२०० भावनिःशेष-ओं-४ तुवांस्वमुखेंजें-ओं-७ वेग-

अपैंसी सांपडलीं फळें फुलें ॥ तें विंदे खिलिया जया देस वलें ॥ विशव सकळ ॥ १५ ॥ येन्हवीं साचचि गा धनु रंगा ॥ नाहीं शेवट माझि-
 या विस्तारा ॥ पैंगना एरिया अपारा ॥ मज माझि असणें ॥ १६ ॥ झुलो ॥ अहमात्मा गुडा के दास सर्व भूता शय स्थितः ॥ अहमादिश्च
 मय्येच भूताना मंत एव च ॥ २० ॥ टी ० ॥ आदकें कुटिलालक मस्तका ॥ धनु देव्य बका ॥ मी आत्मा असैं एक को ॥ भूतमात्रा चाडायों ॥
 १७ ॥ आतुलीक देमी चियांचें अंतः करणी ॥ भूतां व हिंसा मी चिगं वसणी ॥ आदि मी निवाणी ॥ मय्य ही मी चि ॥ १८ ॥ जैसें मेषां
 तें यांत कीवरी ॥ एक आकाश चि आंत बाहेरी ॥ आणि आकाशी चि जाळें अवधारी ॥ असणें ही आकाशी ॥ १९ ॥ पाठील या जे वेळीं जा-
 नी ॥ ते वेळीं आकाश चि होउनि तांनी ॥ ते विआछां दि स्थिती आनी ॥ भूतां मी ॥ २० ॥ तें सें बहुयस आणि व्यापक पण ॥ माझी विभू-
 तिया गजाण ॥ तरी जीव चि करूनि थवण ॥ आदका नि आदक ॥ २१ ॥ याही वरया विभूती ॥ सांगणें तेलें सुभद्रा पती ॥ सांगेन ह्यणि त-
 लें तुज मती ॥ त्या प्रधाना आदकें ॥ २२ ॥ झुलो ॥ आदित्याना मंद विष्णु ज्योतिषां र विरगुमान ॥ मरी चि मरुता मी स्मिं नक्षत्राणां मं हं श-
 शी ॥ २१ ॥ टी ० ॥ हें बोलोनि तो रुपावंत ॥ ह्यणें विष्णु मी आदित्या ॥ रंगी मी राक्षि मवंत ॥ सूर्य भासाजी ॥ २३ ॥ मरु ह्यणां चावगीं ॥ मरी
 ची ह्यणें मी शाही ॥ चंद्र मी गगन रंगी ॥ तारां माजी ॥ २४ ॥ झुलो ॥ वेदानां साम वेदो स्मि देवानां मी स्मि वासवः ॥ इंद्रियाणां मनश्चा-
 स्मि भूतानां मी स्मि चेतना ॥ २२ ॥ टी ० ॥ वेदां आंत साम वेदु ॥ तो मी ह्यणें गों विदु ॥ देवां मां जि मरु दुधु ॥ मं हें द्रु तो मी ॥ २५ ॥ इंद्रिया-
 मां जि अकरा वें ॥ मन तें मी हें जाणां वें ॥ भूतां मां अस्व मावें ॥ चेतना तें मी ॥ २६ ॥ झुलो ॥ रुद्राणां शक्रश्चास्मि विने शो यक्षरक्ष-
 साम् ॥ वसूनां भपावकश्चास्मि मेरुः शिखरिणां मद्रुम् ॥ २३ ॥ टी ० ॥ अशेषां ही रुद्रा मां झारी ॥ शंकर जो मदनारी ॥ तो मी थें थन-
 धरी ॥ आंति कां ही ॥ २७ ॥ यक्षरक्षो गणां अंत ॥ शंभूचा सखा जो धनवंत ॥ तो कुबेर मी हें अनंत ॥ ह्यणत जा हा ला ॥ २८ ॥ मरा-
 पाठ-ओं-२० गती किंवा अंती-ओं-२२ तुज मति, निगुती-

आठाहीवसूमाझारी॥पावकतोमीअवधारी॥शिरवराधिलियांसर्वोपरीमेरुतोमी॥२९॥ ऋलो०॥पुरोधनसांचमुख्यमांविहिपा-
 र्यबृहस्पतिम्॥मेनानीनामदृक्दःसरसामस्मिसागरः॥२९॥महर्षीणांभृगुरहगिरामस्थेकमदारम्॥यज्ञानापयज्ञोस्मि-
 स्थावराणांहिभालयः॥२९॥टी०॥जोस्वर्गसिंहासनासावावो॥सर्वज्ञतेआदिचाठावो॥तोपुरोहितोमांजिरावो॥बृहस्पतीमी३०
 ॥विभुवर्नोचियासेनापती॥आतस्केयतोमीमहामती॥जोहरवीर्येअग्निसगती॥कृत्तकातजाहालो॥३१॥सकाळकासरो-
 वरासी॥माजिसमुद्रतोमीजळराशी॥महर्षीआततपोराशी॥भृगुतोमी॥३२॥अशषाहीवाचो॥माजिनटनाचसत्याचा॥ते
 अक्षरएकमीवैकुण्ठोचा॥वेल्हाळद्वारो॥३३॥समस्ताहीयज्ञाचोपर्वो॥जपयज्ञतोमीयेलाकी॥जोकर्मयोगंग्रणवादिकी॥नि-
 पजविजे॥३४॥नामजपयज्ञतोपरम॥बाधूनशकेरुनानादिकर्म॥नामंपावनधामोधर्म॥नामपरब्रह्मवेदार्थी॥३५॥स्थावरा-
 गिरीआंत॥पुण्यपूज्यजोहिमवंत॥तोमीद्वारोकांत॥लक्ष्मियेचा॥३६॥ऋलो०॥अश्वत्थःसर्वदृक्षाणांदेवर्षिणांचनारदः॥गंध-
 र्वोणांचिवरथःसिंहानांकपिलोभुनिः॥२६॥उच्चैःश्रवसमश्वानोविहिमाममृताःद्रवम्॥ऐरावतगजेंद्राणानराणांचनराधिपम्
 ॥२७॥टी०॥कल्पद्रुमहनपारिजात॥गुणेंचदनहीवाडविरव्यात॥तारियाएक्षजाताआत॥अश्वत्थतोमी॥३७॥देवद्वर्षीआ-
 तपेडवा॥नारदतोमीजाणावा॥चित्ररथमीगंधर्वो॥सकाळिकामाजी॥३८॥ययांअशषाहीसिद्धा॥माजिकपिलचायमीप्र-
 बुद्धा॥तुरंगजाताप्रसिद्धा॥आंतउच्चैःश्रवामी॥३९॥राज्यभूषणाराजाआत॥अजुनामीगारेरावत॥पयोराराक्षिस्करमंथित॥
 अमृतांशतोमी॥४०॥यथानरांमाजिराजा॥तोविभूतिविशेषमाज्ञा॥जयातेसकळलोकप्रजा॥होउनिर्माविती॥४१॥ऋलो०
 ॥आयुधानामहंक्वथेनूनामस्मिकामधुकू॥प्रजनश्चास्मिकदपःसर्पाणामस्मिवासुकिः॥२८॥अनंतश्चास्मिनागानारुणा
 पाठ-ओ-३२माझारी-ओ-३६पुंज-

यादसामहम्॥ पितृणासयमात्मास्मियमः संयमनामहम्॥ २१॥ टी०॥ पेंआघवेयाहतिपेरं॥ आंतवज्जनेमीधनुधरा॥ जेंशतम
खोत्तीर्णकरा॥ आरूटोनिअसे॥ ४२॥ धेनुमथेंकामधेनु॥ तेमीद्वणोविष्वकूमनु॥ जन्मवितयाआंतमद्वु॥ तोमीजाणों॥ ४३॥
सपकुळाआंतअधिष्ठाता॥ वासुकीमीकुंतिसुता॥ नागामाजिसमस्तो॥ अनंततोमी॥ ४४॥ अगाथादूसांआंत॥ जोपश्चिमसम
देचाकांत॥ तोवरुणहेंगअनंत॥ श्रापतअसे॥ ४५॥ आणितपुत्रगणासमस्तो॥ माजिअर्यमाजोपितृदेवता॥ तोमीहंतत्वता॥
बोलतआहे॥ ४६॥ जगाचेंशुभाशुभेंल्लिहती॥ याणियाचामानसाचाझाडधनी॥ मगकैलियानुरूपहोती॥ भोगनियमजो॥ ४७
तयानियमितयामाजियम॥ जोकमसाक्षीपर्म॥ तोमीद्वणेंआन्धारासम॥ रमापती॥ ४८॥ म्हे०॥ मन्हादश्वासिदैत्यानांका
लःकलयतामहम्॥ मृगाणांचसूत्रेंद्रोहवृत्तंतयश्चपक्षिणाम्॥ ४९॥ टी०॥ अगादेत्यांचियाकुली॥ मन्हादतोमीन्यहाकी॥ द्य
णोनैदैवभावादिमकी॥ लिपंचिना॥ ४९॥ पंककिनयामाजिमहाका॥ तोमीद्वणेंगोपाळा॥ श्वापदोमाजिषाण्डूक॥ तोमीजाण
॥ ५०॥ पक्षिजातीमाझारी॥ गरुडतोमीअवभारी॥ यालागिजोपाठीवरी॥ वाहोशकेमातें॥ ५१॥ म्हे०॥ पवनःपवतामस्मि
रामःशरूभुतामहम्॥ झषाणासवरश्चास्मिस्मानसामस्मिजान्दवी॥ ५१॥ टी०॥ पृथ्वीचियांपेंसारा॥ माजिघडीनळगना
धनुधरा॥ एकोचिरुद्राणेंसनाहीसागरा॥ मदक्षिणाकीजे॥ ५२॥ तयावहिलयागतिमंतो॥ आंतपवनतोमीपण्डूसुता॥ शरूधरा
समस्तो॥ माजिथीरामतोमी॥ ५३॥ जणेंसाकडिलयाधर्माचेंकेंवारे॥ आपणपयोधनुष्यकरूनिदुसरें॥ विजयलक्ष्मीएकमोहरें॥
केंलेंचनी॥ ५४॥ पाठीउभेवाकूनिस्वतन्त्री॥ मनायलेंकेंश्वराचासिसाकी॥ गगनीउंदोद्वगनयाहस्तबकी॥ दिधलीभूतो॥ ५५॥ जे
णेंदेवांचामाणिवांसन्या॥ धमासिर्जाणोंधारकं॥ सूर्यवंशीउंदेल॥ सूर्यजोका॥ ५६॥ तोहानियेरपरजितयांआंत॥ रामचंद्रमी-
पाठ-ओ-४९॥ मकी-ओ-५२॥ करिजो-ओ-५५॥ शिवकी॥ हात-

४

४

४

रमाकांत॥ शकरमीपुच्छवत॥ जळचराभाजी॥ ५७॥ पेंसमस्ताहीवाघी॥ मध्यंजमगिरथें आणि लिंगगा॥ जन्हने गिळिली मग
 जंघा॥ फाडूनि दिधली॥ ५८॥ तें विभु वने कसरिती॥ जाल्ही रमा पांडुसुता॥ जळजवा हासमस्तो॥ माझरी जाणें॥ ५९॥ ऐस
 निवेग कालासि धिपेंकी॥ विभूतीनामठी वितारें की॥ सगळे जन्मसहसे अवलोकी॥ अर्धानव्हेती॥ ६०॥ झेलो॥ सर्गणा
 मादिरंत श्रम अंचे वाहमजुन॥ अध्यात्मा विद्या विद्यानी वादः श्रवदतामहम्॥ ६१॥ असराणामकारास्मिहं हः सामासिकस्य-
 च॥ अहमं वाक्ष्यः कालाधानाहं विश्रवतो मुखः॥ ६२॥ टी॥ ॥ जैसी अवधी चि नसवें चेचावी॥ ऐसी चाडउपजेल जैजीवी॥ तें
 गगनाची बांधावी॥ लाघजेंवी॥ ६३॥ कां मुखोय परमाधूनी गुणाध्यावा॥ तिरभूगोल चिकारें सुवावा॥ तैसा विस्तारमाझा
 पाहावा॥ तरि जाणाविमांतें॥ ६४॥ जें सशास्त्रीसी गूलफळ॥ एकाहका विटाकुहाणि जेसकळ॥ तरी उपहुनियां मूळ॥ जे विहा-
 नी घेंपें॥ ६५॥ तें विमाझी विभूति विशेष॥ जरी जाणापांडु जेती अशेष॥ तरी स्वरूप एक निदोष॥ जाणिजमाझें॥ ६६॥ येचुवी
 वेगळालिया विभूती॥ काथिएक कपरिससी किती॥ ह्यणां निरकार हंकां महामती॥ सर्वमी जाणा॥ ६७॥ मी आघा वियेचि स्पृष्टी॥-
 आदि मथांतीं करीती॥ वोत मोत पटी॥ तंतुं जयी॥ ६८॥ ऐसिया ध्यापकामांतें जाणांवी॥ तें विभूति नें देकाय करवें॥ परि हेतु झीयो
 म्यतानव्हे॥ ह्यणां निअसो॥ ६९॥ कां जनुवा पुंसि दया विभूती॥ ह्यणां नितिया आदक सभद्रापती॥ तरि विद्यामाजि प्रस्तुती॥ अ-
 ध्यात्मा विद्या ते मी॥ ७०॥ अगाबोल तयांचिया ठायी॥ वादता मी याही॥ जोसक शारु स मने कहीं॥ सरंचिना॥ ७१॥ जोनित्र
 चूंजाती वाद॥ आई वतया उखसासक चंदो॥ जयावरी बोलतियांची गोडे॥ बोलणी होती॥ ७२॥ ऐसा प्रतिपादनामाजि वाद॥-
 तो मी ह्यणे गोविंद॥ असरा माजि विशद॥ अकार ते मी॥ ७३॥ पेंगास मासा माझरी॥ दूह तो मी अवधारी॥ मधा काला गोनि-
 पाठ॥ ओं॥ ५७ जानकी॥ ओं॥ ५८ आणि तो॥ ओं॥ ५९ तारिणी सरिता॥ ओं॥ ६० सता॥ ओं॥ ६१ जें जाणावें॥ ओं॥ ७० उखें संसवळ॥ किवा उखें संसवळ॥

ब्रह्मवरीं॥ ग्रामितातोमी॥ ७२॥ मेरुमं दारादिकीं सर्वीं॥ सहितप्रस्थितं विरवीं॥ जो एकाणवाते हो जिरवीं॥ जेथिचा तेथें॥ ७३॥
जो प्रकचने जा देत मिठी॥ सगळिया पवनाने गिळी किरीटी॥ आकाश जया चिया पोटीं॥ मांमा वळे॥ ७४॥ ऐसा अपार जो काळ॥
तो मी ह्मणेल क्षमी लीळा॥ मरा पुढती स्मृतीचा मेळ॥ सृजिता तो मी॥ ७५॥ श्लो०॥ मृतकः सर्व हर आह सुद्रवश्च भविष्यताम्॥ क्रीर्तिः
श्रीर्वाकचनारीणां स्मृतिर्मैधा धृतिः क्षमा॥ ३६॥ टी०॥ आणि स्मृजिल्या भूत ते मी चि धरीं॥ सकळां जीव नही मी चि अवधारिं॥ शो
खीं सर्वो ते या स हारीं॥ ते व्हां मृतक ही मी चि॥ ७६॥ आतां स्त्री गणाचा पेंकी॥ माझिया विभूती सात आणिकी॥ तिया एक कवति
कीं॥ सांगि जतील॥ ७७॥ तरी नित्य नवी जे कीर्ती॥ अजुना ते माझी मूर्ती॥ आणि ओदो ये सो जे संपत्ती॥ ते ही मी चि जाणें॥ ७८॥
आणि ते गा मी वाचा॥ जे सरवा सनी न्यायाचा॥ आरु दों निवि काचा॥ जागींचि ले॥ ७९॥ देखि ले नि पदार्थें॥ जे आठवु
नि दे मातें॥ ते स्मृति ही एथें॥ त्रिभुद्धी मी॥ ८०॥ पें स्महिता अनुपायी नी॥ श्रुता ते गा मी इये जनीं॥ धृती मी चि भुवनीं॥ क्षमा ते
मी॥ ८१॥ एव नारी माझारीं॥ या सात ही शक्ति मी अवधारिं॥ ऐसें संसार गज केसरी॥ ह्मणत जा हा ला॥ ८२॥ श्लो०॥
बृहत्साम तथा सांखा गायत्री छंदसा महम्॥ मासाना मार्गशीर्षा हृद्य तू नानुक्रमकरः॥ ३५॥ टी०॥ वेद राशी चिया सासा
॥ आंत बृहत्साम जे प्रियो नमा॥ ते मी ह्मणेर मा॥ प्राणेश्वर॥ ८३॥ गायत्री छंद जें ह्मणिजे॥ ते सकळां छंदां माजि माझे॥ स्व-
रूप हें जाणिजे॥ निभ्रांत तुवां॥ ८४॥ सासा आंत मार्ग शिर॥ तो मी ह्मणेशांड धर॥ भूतू माजि कुसुमाकर॥ वसंत तो मी॥ ८५॥
श्लो०॥ द्युत छलयत्सामि स्थिते जस्त जस्विना महम्॥ जयो स्मिद्य वसा यो स्मि सत्सत्स्व वना महम्॥ ३६॥ दृष्ट्यांनां स
सा देवो स्मि पांडवो नांधं जयः॥ मुनीनां स प्यह व्यासः कवीनां मुशनाका विः॥ ३७॥ टी०॥ छकित यां विदणा॥ माजि जूतें मी-
पार॥ ओ० ८१॥ अनपायिनी॥

विचक्षण॥ ह्यणोनिचोहटाचरीपरिकवणा॥ निवारूनये॥ ८६॥ अगाअशेयाहीतजसा॥ आततेजतंमीभरवसा॥ विजयो-
मीकार्योदेशा॥ सकळामाजी॥ ८७॥ जणंचोखाळतदिसल्या॥ तोव्यवसायातव्यवसाया॥ माझेस्वरूपहेराय॥ सराचाव्यणो॥
८८॥ सलाथिलियाओत॥ सत्वमीह्यणोअनंत॥ यादवामाजिअर्धामंत॥ तोचिंतोमी॥ ८९॥ जोदवकीवसदयास्तजहालो॥ कु-
मारीसाठीगोकुळींगेलो॥ तोमीयाणासकटपियालो॥ पूतनेतें॥ ९०॥ नुघडनाबाळकपणाचीफुली॥ जणोभियाजकतगोकुळराखिले॥
कली॥ करोंगिरिधरूनिउमाणिळी॥ महद्रमहिमा॥ ९१॥ कालिंदीचेतुदयशाल्यपेडिले॥ जणोभियाजकतगोकुळराखिले॥
वासरुवासाठीलाविले॥ विरंचीसपिसो॥ ९२॥ प्रथमदशचियपहोटे॥ माजिकसाएशीअचाटे॥ महाधुंडाअवचटे॥ लीळाचि-
नासिली॥ ९३॥ हेकायकितीएकसागावे॥ तुवाहीदोखिलेराकिलेअसंआघवे॥ तरियादवामाजिजाणावे॥ हेचिस्वरूपमाझे॥
९४॥ आपिसोमवशीतुह्यापाडवा॥ माजिअजुनतामीजाणावा॥ ह्यणोनि एकमेकाचियामेमसावा॥ बिघडनपडे॥ ९५॥ सन्या-
सीतुवाहोअनिजनी॥ चोरूननिनेलीमाझीभिगिनी॥ तन्हीविकल्पनुपजेमनी॥ मीतुंदोन्हीस्वरूपएक॥ ९६॥ मुनीआंतव्यासदे-
व॥ तोमीह्यणोयादवराव॥ कवीश्वरामाजिधेयाववा॥ उशनाचार्यतोमी॥ ९७॥ प्रहो॥ देडादमयनामस्मिनीतिरस्मिजिगीषनामु-
॥ मोनंचेवास्मिगुह्यानां ज्ञानज्ञानवतामहम्॥ ९८॥ दी॥ अगादमितयांमाझारी॥ अनिवारददतोमीअवधारी॥ जोसुंगियेळा-
गोनिब्रह्मवरी॥ नियमितपवे॥ ९८॥ पेंसारासारनिधेरितयां॥ धर्मज्ञानाचापक्षधरितयां॥ सकळशास्त्रामाजियया॥ नोतेशा-
स्वतेमी॥ ९९॥ आघवियाचिगुटां॥ माजिमोनेंसहाडा॥ ह्यणोनिनबोलतयापुटां॥ सशहीनेणहोये॥ ३०॥ अगाज्ञानियां-
चियाढायो॥ ज्ञाननेमीपाही॥ आताअसाहययांकाही॥ पारनदेखो॥ १०॥ यच्चापिसर्वभूतानांबीजतदहमजुन॥ न-
पाठ नाही॥

तदस्तिविनायत्स्यान्नायाभूतचराचरम्॥३०॥नोतोस्तिमदिव्यानांविभूतीनांपरंतप॥एषतूदृशतःशोकोविभूतेर्विस्तरमेवया॥
 ४०॥दी०॥पैंपर्जन्याचियाधारा॥वरीलेखकरवेलधनुर्धरा॥कांष्ट्वीचियावृणांकुरा॥होइलती॥२॥पैमहोदधीचियातसंगां
 ॥व्यवस्थाधरूतयेजेविंगा॥तेविंमाझियाविशेषलिगा॥नाहीभिनी॥३॥ऐशियाहसातपाचयाप्रधाना॥विभूतीसांगितलियातू
 जअर्जुना॥तोहउदृशजोगामना॥आहाचगमला॥४॥येराविभूतिविस्मार्गसिंकाही॥एथसर्वथालेखनाही॥ह्यणोनिपरिस
 सीतूकाई॥आहीसांगोंकिती॥५॥यालागिएकिवहकांतुज॥दोउआतांमनिज॥सर्वभूतांकुरेबीज॥विरूढतअसेतेसी॥६॥
 ॥ह्यणोनिसानेथोरनह्यणवें॥उंचनीचभावसाडावे॥एकमीचियेसेमानवें॥वस्तुजाततें॥७॥तरीयावरीसाधारण॥आईक-
 पोआणीकहीरुणा॥तरिअर्जुनातेतूजाण॥विभूतीमाझी॥८॥यद्यदिभूमिमात्स्यत्वंश्रीमदुजितमेववा॥तत्तदेवाव
 गच्छत्वममतेजोशसंभवम्॥४१॥दी०॥जेथजेथसंपत्तिआणितया॥दोन्हीवसनीआलियाजयादया॥तेतेजाणधनजया॥
 अशमाझी॥९॥श्लो०॥अथवाबहुनतेनाकिंज्ञानेनतवाजुन॥विष्टभ्याहमिदंरुत्समेकांशेनस्थितोजगत्॥४२॥इतिश्री
 मद्भगवद्गीतासूपनिषत्सुब्रह्मविद्यायांरागशास्त्रश्रीकृष्णार्जुनसंवादेविभूतिविस्तारयोगोनामदशमोऽध्यायः॥१०॥दी०
 ॥अथवाएकलेएकबिबगनी॥परिप्रभाफांकेविभुवनी॥तेविमजएकाचियाचिसकळजनी॥आज्ञापाळजे॥१०॥जयातेएकले
 झणेह्यणा॥तोनिधनयाभाषनेणा॥कायकासधेनुसर्वसंना॥चालतअसे॥११॥नियेंतेजेधवाजोमाये॥तेतेएकसरेविघ्नस
 वौलागे॥तेविंविश्वविभवतयाआंगें॥होउनिअसती॥१२॥तयातेवांशकान्याहचिसंज्ञा॥जेजगेनमस्कारिजेआज्ञा॥ते
 सेंअथीतेजाणयाज्ञा॥अवतारमाझी॥१३॥आणिसामान्यविशेष॥हंजाणगेण्यसंदोष॥कांजेमीचिएकअशेष॥विश्ववहस
 पाठ-ओं-१एकाचिया॥विभूतिमाझी-ओं-१०एकाचियाचि-ओं-११नयाते-ओं-१४आतां-माहाशेष-ओं-१४आह-६॥

णोनि॥१४॥तरिआतासाधारणआणिचांगा॥ऐसाकैसेनिपांकल्यावाविभाग॥वायांआपुलियेमनीवंगा॥भेदाचालावावा॥१५॥
 येहवीत्पकासयापुसळावे॥अमृतकाराधूनिअर्धकरावे॥हागावायूसिकायपाडावे॥उजवेआगाआहे॥१६॥पैसेसूर्यबिंबा-
 सिपोटपाटी॥पहानानासैलेआपुलिदही॥तेविमाझास्वरूपीगोटी॥सामान्यविशेषाचानही॥१७॥आणिसीनानाइहीवि-
 भूती॥मजअपारातेमविसीलकिती॥द्वयांनिकिविबहुनासमद्रापती॥असोहंजाणणे॥१८॥आतांपैमाझीनएकेअशें॥हंज
 गव्यांपेलेअसे॥यान्नाशिभेटमाडुनियरिसं॥२०॥तयप्रजुनह्मणस्वामी॥यत्तुलुहरोभरयबोलितुह्मी॥जभेदएकआणिआह्मी॥साडावाएकी
 श्रीमंते॥श्रीकृष्णाचे॥२०॥तयप्रजुनह्मणस्वामी॥यत्तुलुहरोभरयबोलितुह्मी॥जभेदएकआणिआह्मी॥साडावाएकी
 ॥२१॥हाहोसूर्यह्मणकायजगाते॥आधारदवडाकापगाते॥तेविधसाळह्मणादवाते॥तरीअधिकहाबोल॥२२॥तुझेनामचि
 एककाणहीवळा॥जयांचियंसुरवासिकांनाभेळ॥तयांचियान्हृदयातेमाडुनिपळे॥भेदजीसाच॥२३॥तोतूपरब्रह्मचिअस
 के॥मजदेवीदधलासिहस्तुदके॥तरीआतांभेदकाचसाक॥दरवावाकवणी॥२४॥जीचद्रविंबाचाभासायां॥रिगालियांवरीही
 उवारा॥परिणणेपणेशाडधरा॥बोलाहेतुह्मी॥२५॥तेथसाविद्याचिपरीतोषानिदेवे॥अर्जुनातेआलिगिलेजीवे॥मगह्मण
 तुवानकोपावे॥आमुचियाबोला॥२६॥आह्मीतुज्जभेदाचियावाहाणी॥सांगीतलीजिविभूतीचीकहाणी॥तेअभेदकायअतः
 करणी॥मानकीकीनमने॥२७॥हेचिपाहावयालागी॥नावेकबोलिलेबांहरिसवडियामगी॥तवविभूतीतुजचंगी॥आ-
 लियाबोधा॥२८॥तेथअर्जुनह्मणदेवे॥हंआपुलेआपणजाणावे॥परिदेखतसेंविश्वआयें॥तुवांभरले॥२९॥पैरायातोपा
 दुसून॥ऐसियेयतीतीमिजाहालावरेंत॥सजयाचियाबोलांनिवात॥धतराष्ट्रआहे॥३०॥कीसजयदुखवेलीनअंतःकरणे
 पाट-ओं-१७नाशे-ओं-२१येथ,रहस्य-ओं-३०पैरंत.

॥ ह्यणत्तमेनवल्लनस्सुदेवावदणं ॥ हाजीविंधदयाआहेमीदणं ॥ तंरअंतहीआपळा ॥ ३१ ॥ परिअसोहेतोअर्जुन ॥ स्सहिनां
चावादनीतसेमान ॥ कीयाहीवरितयाआना ॥ धिक्साउपनळा ॥ ३२ ॥ ह्यणहेचिहृदयाआंतुलीपतीती ॥ बाहेरिअवतरोकाडोळ
होबनोदवाआगळा ॥ ह्यणउनिक्की ॥ ३३ ॥ मियाइहीचदेहाडोळा ॥ झोबावेंविश्वरूपासकळा ॥ येवटी-
चियापुस्वा ॥ तेंतेसाचिकुंगीतसेयेरु ॥ ३४ ॥ आजितोकव्यतरूचीशाखा ॥ ह्यणानिवाझोकनलगतीदेखा ॥ जेजेयेइलतया-
॥ किरोतोसी ॥ ३५ ॥ ह्यणोनिविश्वरूपपुण्यावयादुर्गा ॥ विवाहीसकरआपणचिजाहाला ॥ तोसदुरुअसोजोडला
॥ निवृत्तीचा ॥ ३६ ॥
श्रीलुघ्यार्पणमस्तु ॥
ईतथ्यामावायंदीपिकायांज्ञानदेविगचिनायांशसोऽध्यायः ॥ १० ॥

पाठ-ओं-३१ देवाचं.

॥ शरभंभवतु ॥

श्रीगणेशायनमः ॥ आतांथावरीणकादशी ॥ कथाआहेदोहोरसीं ॥ जंथपार्याविश्वरूपेंसीं ॥ होईलसंदी ॥ १॥ जंथशांताचियाप
 रा ॥ अद्भुतआलाहेपाहुंणरा ॥ आणिचरांहीरसापांतकरा ॥ जाहालामान ॥ २॥ अहोवधुवरांचियेमिळणी ॥ जेंसोंवराडियंहीलु-
 गडींलेणीं ॥ तेंसेदेशेचंसारामनीं ॥ भिरवलरस ॥ ३॥ पशुशांतादुनकरवे ॥ जेंडोळ्यांअजळींघ्यावे ॥ जेंसेहरिहरयेमभावे ॥ ओ
 लेवंवा ॥ ४॥ नातरीअवंसेचांदलसीं ॥ फुटलींबंबेदोनींमरसीं ॥ तेविएकवकारसीं ॥ केलाएथ ॥ ५॥ मिनलेगंगेयधुनेचेओघ ॥ तेंसर
 सांजाहालेयगा ॥ ह्यणोंनसुखानहोतजगा ॥ आघवण ॥ ६॥ अजिगीतासरस्वनीगुप्त ॥ आणिदोनीरसतेवोघयुते ॥ यालागिंवि
 वेणीहेउचित ॥ फावलीलापा ॥ ७॥ एथअवणाचंनिहरीं ॥ तीर्थींरुपंतंरोपारें ॥ ज्ञानंदवह्यणेदातारें ॥ माझेनिकेले ॥ ८॥ तीरेंसुरू
 ताचींगहनें ॥ तोडोंनिमन्हाटियाशब्दसोपानें ॥ रचिंतींथर्सनिधानें ॥ श्रीअर्चुनिदेंवे ॥ ९॥ ह्यगोनिमलनेणेंएथसद्गोवेनाहावें ॥ प्रया
 गमाधवींविश्वरूपहावें ॥ येतुलेनिंसंसारसिद्धावें ॥ तिळादका ॥ १०॥ हेंअसोणेंसंसावयव ॥ एथसांसिनलेआर्थीरसभाव ॥ जंथअ
 वणसरवाचीराणिव ॥ जोडलीजगा ॥ ११॥ जंथशांतादुनरांकेडे ॥ आणियंनरसांपडजोडे ॥ हेंअल्यचिपरउघडें ॥ हेंवल्यएथ ॥
 १२॥ तोड्वाअकरावाअथाव ॥ जोदेवाचाआपणपोंविसवताठाव ॥ परिअर्जुनसंदेंवांचाराव ॥ जंथहीपातळा ॥ १३॥ एथअर्जुनचिका
 यह्यणोंपातळा ॥ अजिहाआवडतयाहसकाळजाहाला ॥ जंगीनाथआला ॥ मन्हाटये ॥ १४॥ याचिळगींमाझे ॥ विनविलेंआइ
 किजे ॥ तरिअवधानदिजे ॥ सज्जनीनुह्मी ॥ १५॥ तेंवींचितुह्यांसंताचियंसंगे ॥ ऐसींमलगींकीरकरूनलंगे ॥ परिमानवेंजीतुह्मी
 कोभें ॥ अपत्यामज ॥ १६॥ अहांपुसाआपणचिपटविजे ॥ मगपुटेंतरीमाथातुंकिजे ॥ काबोलविलेनिचेजेंनरिजे ॥ बाळकामय ॥ १७
 तेंविमजेंजेंबोलें ॥ गेंथशुतुमचेंचिशिकविलें ॥ ह्यणोंनअवधारजोआपुलें ॥ आपणदेवा ॥ १८॥ हेंसारस्वताचेगंड ॥ तुह्यीचिळा-

विलंजी साड ॥ त्रीआतां अवधाना मुनं वाड ॥ सिंघो नि कीजे ॥ १९ ॥ मग हेरसमाव फुलीं फुलेल ॥ नानार्य फल प्रारं फळा येइल ॥ तुमचे नि
 धर्म होइल ॥ सर वाडजगा ॥ २० ॥ या बोलास तर झले ॥ ह्मणी तो षलो गा भले केले ॥ आतां मांगें जें बोलिलें ॥ अजुने तेथें ॥ २१ ॥ तें वनि
 वृत्ति दास ह्मणो ॥ जी कृष्णार्जुनाचें बोलणें ॥ मोया कृतकाचें सांगों जाणें ॥ परि सांग वा तुझी ॥ २२ ॥ अहो रानी चिया पाले रवा दया ॥ नेवाणें
 करवि जे लंके श्वरा ॥ एकठा अजुन परी असोहिणी अकरा ॥ निजोचि काई ॥ २३ ॥ ह्मणो नि समर्थ जें कशी ॥ तें न हा नये चराचरी ॥
 तुझी सतत या परी ॥ बोलवा भातें ॥ २४ ॥ आतां बोलि जनसे आइका ॥ हागीता सावनि का ॥ जो श्रीवें कुठ नायका ॥ मुखीं निनि घाला ॥
 २५ ॥ बाप बापुं थगीना ॥ जैव दीं या नि पाद्य देवना ॥ तो श्री कृष्ण वक्ता ॥ जिये ग्रंथी ॥ २६ ॥ तेथि चें गोरव कें सैवानां वें ॥ जें श्री घां भूचिंय
 मनी नागवें ॥ तें आतां न मस्कारि जे जिवें भावें ॥ हेंचि भलें ॥ २७ ॥ मग आई का तो करीती ॥ घाळुनि विश्वरूपीं दूटी ॥ पाहली कें सी गो-
 दी ॥ करिता जाहाला ॥ २८ ॥ हें सर्व ही सर्व श्वरा ॥ ऐसा यती निगत जो ये नि कर ॥ तो बाहेर हो आवागोचर ॥ लोच नासी ॥ २९ ॥ होजिवाओं
 तुली चाड ॥ परि देया भिसांगतां साकड ॥ कांजें विश्वरूप पट ॥ कें सो नि पुसावें ॥ ३० ॥ ह्मणे मागा कवणी कहो ॥ जें पाटयें तेने पुसिलें
 नाही ॥ तें सहसा कें साई ॥ सांगा ह्मणों ॥ ३१ ॥ मी जरी सलगी चांचांगा ॥ तरिकाय आई साहुनि अंतरंगा ॥ परिते ही हा प्रसंगा ॥ बि
 हाली पुसों ॥ ३२ ॥ माझी आवडें तेसी सैवा जाहाली ॥ तरिकाय होई लुगारुडा चिया येतुली ॥ परितो ही हे बोली ॥ करी चिना ॥ ३३ ॥
 मी काय सनकांदि कांही निजवळ ॥ परितो ही नागवें चिदाचाला ॥ मो आवडे न काय प्रेमळा ॥ गोकुळि चिया ऐसा ॥ ३४ ॥ गथातें होलें कु
 रणें झकविलें ॥ एकाचे गर्भास हो साहिलें ॥ परि विश्वरूप हे राहाविलें ॥ न दावीच कवणा ॥ ३५ ॥ हा टाय वरी गुज ॥ याचि अंत
 रींचें हीं निज ॥ केविले राउरी मज ॥ पुसों येपां ॥ ३६ ॥ आणि न पुसेंचि जरी ह्मणें ॥ तारी विश्वरूप देखिलिया विणें ॥ स्रग्वनो हेचि परि
 पाठ ॥ ओ० २३ ॥ चिदाय ॥ ओ० २४ ॥ जो ॥ ओ० २५ ॥ पति कर ॥

जिणें ॥ तेंहीव पाये ॥ ३७ ॥ ह्यणानि आतांपुसो अळुमाळुसो ॥ मग करू देवाटाकेंतसे ॥ येणें प्रवर्तलासाध्यसे ॥ पार्थबोले ॥ ३८ ॥ प
रितेचि ऐसोनि भावें ॥ जे एकादा उन्नरासवें ॥ दोर्वाविश्वरूप आयेवें ॥ द्वाडाटुनी ॥ ३९ ॥ अहोवासरुंदरिवलियाचिसादी ॥ धेनुरवडबडो
निमो हें उठी ॥ मगसना मुरवाचियेमेटी ॥ कायपाह्याये ॥ ४० ॥ पाह्यापांतयांपादचिनिनावें ॥ जो कृष्णारनिहोयति पाळुधोवें ॥ तयांस
अर्जुन जवपुसावें ॥ तंवसाहीलकाई ॥ ४१ ॥ तोय हजो चरुमहाचें अयतरण ॥ आणिये रुरमहाधातलें आहोमजवण ॥ ऐसिये भिळुचणी
वेगळे पण ॥ उद्देहीचवहु ॥ ४२ ॥ ह्यणानि अर्जुनाचियाबोलासरिसा ॥ हंवाविश्वरूप हाईल आपेसा ॥ तोचि पाहला प्रसंगेसा ॥ ऐकजेत
री ॥ ४३ ॥ श्लोक ॥ ॥ अर्जुन उवाच ॥ ॥ मरतुमुग्रहाय परमेशुद्दभ आत्मसां जितम् ॥ यन्वयांत वचस्तेन मोहाया विगतामम ॥ १ ॥ टी ॥
मग पार्थदेवांतें ह्यणे ॥ जी तुह्मी मजकारणें ॥ वाच्य केलें जेनबोलणें ॥ कृपा निशे ॥ ४४ ॥ जे महांभूतें द्रव्य आदती ॥ जीवमहदादिचे ठायी फट
ती ॥ तें जें देव होइ निराकृती ॥ तें विरावणें शोधचें ॥ ४५ ॥ होतें नंदयाचिये परी ॥ होविले कृपाणाचिये परी ॥ शब्दब्रह्मासि हें चरी ॥ जयाची के
ली ॥ ४६ ॥ तें तुह्मी आज आपुलें ॥ मज पुढो हिंयों दिलें ॥ जया अभ्यात्मा वांवाळलें ॥ ऐश्य हेरें ॥ ४७ ॥ तें वस्तुमज स्वामी ॥ एका हेका दिथली
तुह्मी ॥ हें बोलांतरी आह्मी ॥ तुजपासां निभित्म केंचें ॥ ४८ ॥ परिसाचि महांमोहाचिये परी ॥ बुडिल्या देखां निशिसवरी ॥ तुवां आप
णें पयाळोनि श्रीहरी ॥ मग काटिलें मातें ॥ ४९ ॥ एक तुंवाचुनि कही ॥ विश्वाटु जयाची भाषनाही ॥ की आमुचे कर्म याही ॥ जे आह्मी आ
थी ह्यणों ॥ ५० ॥ मीजगी एक अर्जुन ॥ ऐसा देही वाहें अभिमान ॥ आणिकोरवांतें इयास्वजन ॥ आपुलें ह्यणें ॥ ५१ ॥ याही वरीयातें मी मारी न
ह्यणें तें पापें कोरेण ॥ ऐसें देखत हो तो दुःस्वम ॥ तोच वावला प्रभू ॥ ५२ ॥ देवा गंधर्वांनीची वस्ती ॥ सोडुनि पयाळो लक्ष्मीपती ॥ होतो
उदकांचिया आंती ॥ रोहिणीपीत ॥ ५३ ॥ जीं करि इतर कापडाचें ॥ परिलहरी येत होति यासाचें ॥ ऐसें वायां मरतयां जीवांचें ॥ अंय तुवांचे
पाट ॥ ओं ॥ ५६ ॥ गोविलें ॥ ओं ॥ ५७ ॥ फाडिलें ॥ ५० ॥ काही ॥ ओं ॥ ५३ ॥ साडुनि

तलें ॥ ५६ ॥ आपुलें प्रतिबिंब नें पणता ॥ सिं हकुवांयाली लु दे रोगी नि आतां ॥ ऐसा धरिजे नों वं अनंता ॥ राखिलें मातें ॥ ५५ ॥ ये हवीं माझात
 शी ये तुले वरी ॥ एथ निश्चय होता अवधारी ॥ जें आतां चिंसातां ही सागरी ॥ एक चर्मिळ जे ॥ ५६ ॥ हें जग नि आयवें बुडावें ॥ वरि आकाश ही
 तुदी निपडावें ॥ परि खुंझणें न घडावें ॥ गोत्र जें सीमज ॥ ५७ ॥ ऐसिया अहंकाराचिये वीदी ॥ भियां आग्र हजळीं दधलीं हाती बुडी ॥ चांगिचि
 तेज वळीं ये हवीं काटी ॥ कवण मातें ॥ ५८ ॥ नाथिलें आपण पो एक मां नलें ॥ आणि नळतयाना मोगात्र ठेविलें ॥ शोरपिसें होतें लागलें ॥ प
 रिराखिलें तुझी ॥ ५९ ॥ मागां जळत काढले जो हरी ॥ तें ते देहासीच भय अवधारी ॥ आतां हे जो हर याहार दुसरी ॥ चैतन्या सकट ॥ ६० ॥ दुरा
 ग्रहों हरणयास ॥ माझी बुद्धी विसंधरास दलीं कारे ॥ मग मोहाण वगवासें ॥ शिघो निठेलों ॥ ६१ ॥ तैथ तुझी निगोसावी पणें ॥ एक वेळ बुद्धी
 निथाढायायेणें ॥ हे दुसरे वराह होणें ॥ घडिलें तुज ॥ ६२ ॥ गेंसें अपार तुझें केलें ॥ एकी वाचा कायमी बोलें ॥ परि पंच ही पालव मोकिले ॥
 मज याति ॥ ६३ ॥ तें कोही न वचि वांयो ॥ मळें यश फाविलें देव राया ॥ जे साद्यंत माया ॥ निरसिली माझी ॥ ६४ ॥ अजी आनंद सरोवरींचीं क
 मळें ॥ तें सेहे जे नुझे डोळे ॥ आपुळिया प्रयादाचीं राउळें ॥ ज्याला रोगीं करिती ॥ ६५ ॥ हां होतया ही आणि मोहाची पेटो ॥ हे काय सीपा बळी
 गोठी ॥ केउतीं मृग जळाची लुही ॥ वडवानळें सीं ॥ ६६ ॥ आणि मी तें वदातारा ॥ येक येचिये नि यो निगाभारा ॥ येत आहे चारा ॥ ब्रह्मरसा
 चा ॥ ६७ ॥ तें पो माझी मां हजाये ॥ एथ विस्माकां ही काय आहे ॥ तरी उदर लोकां तुझे पयें ॥ भिवत लें आहाती ॥ ६८ ॥ अष्टोक्त ॥ भया
 पयौ हसूतानां भुतौ विस्तरशो भया ॥ त्वनः कमल पत्राक्ष माहात्म्यमपि चाव्ययम् ॥ २ ॥ टी० ॥ पैक मलायत डोकसा ॥ सूर्य कोटि ते तसा ॥
 भिया तुज पण सोनि मंहरा ॥ परि शिळें आजी ॥ ६९ ॥ द्येयें भूतें जयापरी होत ॥ अथ वालया हन जें से निजती ॥ तें मज पुढा पकती ॥ विव
 चिली देवें ॥ ७० ॥ आणि प्रकलिन कीर उगाणा दिधला ॥ पर पुरुषाचा ही दावदा बिला ॥ जयाचा मां हि मापां परो निजाला ॥ धडोता वेद ॥

पाठ. ओ. ५५ कुहा. ओ. ५८ राटी

७१॥ जीशब्दसिवादनये ॥ कांधर्मीशेषपरत्वांतं वियं ॥ तं धिचं प्रभेचं गये ॥ वोळगो ह्मणोनि ॥ ७२ ॥ ऐसें अगाधमाहात्म्य ॥ जें सकळ-
 मूर्ति कगम्य ॥ जें स्वाभानुभवम्य ॥ तं दयापरी दाविलें ॥ ७३ ॥ जें साकं रुफिटलिया आभाळीं ॥ ददीशे ग्म्य मंडळीं ॥ काहानें सारुनि बा-
 बुळी ॥ जळ दोश्वजे ॥ ७४ ॥ नांतरी दुवळूनिया सापाचें वेंट ॥ जें सें चंदनारें वेंटें घडें ॥ अथवा विवसी पळे मगचेंटो ॥ निधान हातीं ॥ ७५ ॥
 तें सोंपलुनी ह्मणु हातीं ॥ तें देवें चसो गोनि परेंती ॥ मग परत्वा माजिये मनी ॥ शेजार केलो ॥ ७६ ॥ ह्मणोनि दियो विषयी चाभज देवा ॥ प्रस-
 माकीर जाहाला जीवा ॥ परि आणी करु हेवा ॥ उपनला असे ॥ ७७ ॥ तो भिडां जरी ह्मणो राहो ॥ तरी आनाकवणां पुसों जावों ॥ कथतुजवो
 चोनि ठावो ॥ जाणत आहो आह्मी ॥ ७८ ॥ जळचूर जळचा आभार धरी ॥ बाळकस्तनपानीं उपरोध करी ॥ तरी जयाजिण्या श्रीहरी ॥ आ-
 नुपयो असे ॥ ७९ ॥ ह्मणोनि म्हांडरी कडने धरावें ॥ जीवा आवडते ही तुज पुढां बोलवें ॥ नंवरा हें ह्मणितलें देवें ॥ चाडसांगें ॥ ८० ॥ म्हणो क ॥
 एवमेत दयात्म्य त्वात्मानं परमेश्वरम् ॥ दृष्टमिच्छामि ते रूपं मंश्वरं पुरुषोत्तमम् ॥ ३ ॥ टी ॥ मग बोलिला तो किरीटी ॥ ह्मणे तुझी केली जे गो-
 ढी ॥ तिया प्रतीतीचीं दिडी ॥ निवादीं माहरी ॥ ८१ ॥ आतं जयाचें निमकस्यें ॥ हेलाक परंपरा हाय हारपें ॥ जया टायतें आपणपें ॥ मी ऐसें
 ह्मणसी ॥ ८२ ॥ तें सुंदल रूप तुझें ॥ जं धुनि द्यो ह्मजें हनच नुमुजें ॥ मारकायाचें निव्याजें ॥ घेवों येसी ॥ ८३ ॥ पेंजळ शयनाचिया अव-
 गणिण्या ॥ कामक्ष्यकूर्म इयाभिरगणिण्या ॥ रेवळ सरलिया त्र्युणिण्या ॥ सोदादसी जिया ॥ ८४ ॥ उपनिषदें जें गानी ॥ योगिये ह्म द्यो शिरो-
 निपाहानी ॥ जयातें सनकादिक आहनी ॥ पोटाकुनियां ॥ ८५ ॥ ऐसें अगाध जें तुझें ॥ विश्वरूप कानी ऐक जे ॥ तें देखावयाचें तमाझें ॥ उ-
 तावीळ देवा ॥ ८६ ॥ देवें फेंडुनियां सांकड ॥ कोमो पुमिळी जरी चाड ॥ तं र्हिचि एकी वाड ॥ आतंजी मज ॥ ८७ ॥ तुझें विश्वरूप आघवें
 ॥ माझिये दिदीसी गोचर हो आवें ॥ ऐशी थोर आश जवें ॥ बोधोनि आहें ॥ ८८ ॥ म्हणो ॥ मन्यसे यादत च्छक्यं मया द्रष्टुमिति प्रभो ॥ यो-
 पाठ ॥ ओं ॥ ७१ बरी ॥ किंवा परि ॥ ओं ॥ ७२ ॥ उकल नया ॥ ओं ॥ ७३ ॥ सारिलो ॥ ओं ॥ ८० ॥ सांकाडि न भवे ॥ ओं ॥ ८३ ॥ येवों येवों ॥ ओं ॥ ८८ ॥ रूपणा ॥

गेश्वरतनोमेतदंशयात्मानमव्ययम् ॥ ४ ॥ टी० ॥ परिभाषा कएकरथशार्दी ॥ तुजविश्वरूपतंदेखावयालागी ॥ पैयोग्यतामाश्रयशां
 गीं ॥ असेकीनाहीं ॥ ८९ ॥ हे आपलें आपणमीनेणें ॥ तें को नेणसीजरीदेवह्मणें ॥ तसियोगियाकाय जाणें ॥ निदानरोगाचें ॥ ९० ॥ आणि
 जीआर्तचिंनिपडिमरें ॥ आर्त आपलीं तांकीं पोंविसरें ॥ जेसामान्हेलाह्मणें नपुंरें ॥ समुद्रमज ॥ ९१ ॥ ऐसासचाडपणाचियेमुली ॥ नसां-
 ष्माळवेसमस्याआपुली ॥ यालागियोग्यताजेंविमाउली ॥ बाळकाचीजाणें ॥ ९२ ॥ तथापरिश्चीजनार्दना ॥ विचारिजोसाक्षीसंभावना
 ॥ मगविश्वरूपदर्शना ॥ उपकामकीजे ॥ ९३ ॥ तरिऐसीतेकृपाकरा ॥ येन्हवीनळंदेह्मणाअवधारा ॥ वायांपंचमालापंचधिया ॥ सुख
 केउतेंदेणें ॥ ९४ ॥ येन्हवीएकलंगापियाचेंतुपें ॥ मयतगापुरतेंकायनवध ॥ परिजाहालीहीरुष्टपरवें ॥ जन्होरवडकींहाये ॥ ९५ ॥
 चकोराचंद्राभुतफावलें ॥ येरांआणवाहूनिकायवारिळें ॥ परिडोळयावीणपाहिलें ॥ वायांजाये ॥ ९६ ॥ ह्मणार्तिविश्वरूपतुंमहसा
 ॥ दाविसीकीरहाभरवसा ॥ कांजेकडाडाआणिगदिंसा ॥ मांजनिन्यनवातुंकी ॥ ९७ ॥ तुझे औदार्यजाणोंस्वतंत्र ॥ देतानह्मणसीण
 चापत्रि ॥ पैकेंवल्यऐसेंपवित्र ॥ वैरियाहीदिधलें ॥ ९८ ॥ मांझदुरासाध्वकारहाया ॥ परितोहीआपाधीतुझेपाय ॥ ह्मणोंनिधाडिसीते
 थजाय ॥ पाईकजेंसा ॥ ९९ ॥ तुवांसनकादिकांचेनिमानें ॥ सायुज्येंसौरसदिधलापूतनं ॥ जंविषाचेंनिस्सनपानें ॥ मांकुंआली ॥
 १०० ॥ हांगाराजसूययागाचियासभासदीं ॥ देस्तोत्रिभुवनवींमांदीं ॥ केंसाशनधादुवांम्यशब्दीं ॥ निस्तेजिलासी ॥ १ ॥ ऐविया
 अपराधियाशिश्नपाळा ॥ आपणपेंटावांदेधलागोपाळा ॥ आणिउजानचरणाचियाबाळा ॥ कायभ्रवपदींचाड ॥ २ ॥ तोवनआ
 लिशाचिलागीं ॥ जेंबैसावेंपिनयाचियावोसंगीं ॥ कींनोचंद्रसूर्यादिकांपरिसजगीं ॥ म्हाय्यकेला ॥ ३ ॥ ऐसावनवांसियांसकळां ॥ दे
 ताएकचितूंधसाळा ॥ पुत्राआळवितोअजामिळा ॥ आपणपेदेसी ॥ ४ ॥ जेणेंरुरीहाणितलासिंपपरा ॥ तयाचाचरणवाहासीदलान-
 पाठ-ओं-८३ पेवोंघवों-ओं-८८ रूपपणा-ओं-९० मरोग-ओं-९ दुर्वादी-

रा॥ अस्मन्मयो रयं चिया कळेवरा॥ विसंबसीना॥ ५॥ ऐसा अपकारिया तुझा उपकार॥ तूं अपात्रीही परिउटाण॥ देदान द्यगोनिदार
 वेंढेकर॥ जाहालासि बळीचा॥ ६॥ तूं तें आरपीना आयकें॥ होता पुंसां बोलावीत कोतुकें॥ नित्येचें कुंदी तुवांगणिके॥ स्फुरवाड कळे-
 ॥ ७॥ ऐसी पाहूनि वायाणि भिषे॥ आपण पातें बोलागी वा निवसे॥ तोतुं को अनारसे॥ मजलागीं करि सी॥ ८॥ हांगा दुसतयाचे नि-
 पवाडे॥ जेजगाचें फेडी सांकडे॥ नित्येका मध्येनृचे पाडे॥ काय भ्रकळे दुताती॥ ९॥ द्यगोनि मया जे विनविळें काही॥ तें देवन दाखविती हे-
 कीरनाही॥ परदेखावयालागीं देई॥ पात्रता मज॥ १०॥ तुझे विश्वरूप आकळे॥ ऐसे जरी जाणसी माझे डोळे॥ नरें आनीचें दोहूळ-
 पुरधीं देवा॥ ११॥ ऐसी दायदाय विनंती॥ जंवकरूसरलास भद्रापती॥ तंवतया घडगुणचक्रवती॥ साहवेंचिना॥ १२॥ तोळपापीयू-
 षसजळ॥ आणि येरुजवळां आलावयाकाळ॥ नानाथीकृष्णां कोकळ॥ अर्जुनवसंत॥ १३॥ नानरीचंद्रां बवाडांळें॥ देखोनि हरीर-
 सागर उचंबळे॥ तें सादुणें ही वरी प्रेमबळे॥ उल्लसित जाहाला॥ १४॥ मग नित्ये प्रसन्ननेत्रेन आतोपें॥ गार्जोनि द्यगि तलें सकुपें॥ पाथी-
 देव देखवै मुपें॥ स्वरूप माझी॥ १५॥ एक विश्वरूप देखावें॥ ऐसा मनोरथ कळेला पांडवें॥ कीं विश्वरूप मय आपवें॥ करुनि घातलें
 ॥ १६॥ बाप उदार देव अपरिभित॥ याचक स्वच्छासदा देत॥ असं सद्गुरु वरी देत॥ सर्वस्व आपुलें॥ १७॥ अद्भोशे पांचही डोळे चोरले
 ॥ बेटजयालागीं झकवले॥ लुक्षियें ही राहाविलें॥ जिह्दारजें॥ १८॥ तें आतां प्रादुर्भा अनंकया॥ करीत विश्वरूप दर्शनाचा पंदा-
 ॥ बाप माग्या अगाधा॥ पार्थीचिया॥ १९॥ जे जागतां स्वभावस्थे जाये॥ तो जे स्वप्नीचें आदवें होये॥ तें विंअनंत ब्रह्म कराहुं आ-
 हे॥ आपण चि जाहाला॥ २०॥ तें सहस्रसमुद्रासोडिली॥ आणि स्थूळ दृष्टीचि जवनी कफडिली॥ किबहुना उपडली॥ योगमन्दी॥
 २१॥ परिहाडें देखलु कीनाही॥ ऐसी सोचि न करी काही॥ एक सरा द्यग तं सपाही॥ स्नेहानुर॥ २२॥ श्लोक॥ ॥ श्री प्रागवानुवच

पाठ॥ ओ॥ ६ कर॥ ओ॥ ८ वानसें ओ॥ १३ तो कोकिल॥ ओ॥ १५ उमयें॥ ओ॥ २१ तें थितीसहज

पश्यमेषां यत्पाणिशतशो यस्मिन् हस्तशः ॥ नानाविधानि दिव्यानि नानावर्णां कृतानि च ॥ ५॥ टी० ॥ अर्जुनानं वा एकदा बह्वर्णित
ले ॥ आपणितौ च दत्तवृत्तरिका यदा विले ॥ आनां देवैरेव आयवै स्मरिले ॥ माझा चिरूपी ॥ २३ ॥ एकं रुशो एकं स्थूलं ॥ एकं नृस्ये एकं विशा
कं ॥ एतृत्तरसरले ॥ अग्रोतं एकं ॥ २४ ॥ एकं अनावरं योजकं ॥ सव्यापारं एकं निश्चलं ॥ उदासीनं रूढं होले ॥ तीव्रं एकं ॥ २५ ॥ एकं-
घृणितं सावधं ॥ असल गोकुलं अगाधं ॥ एकं उदारं अतिबद्धं ॥ कृपणं एकं ॥ २६ ॥ एकं शांतं सदा मंदं ॥ स्तब्धं एकं सानंदं ॥ गति-
निशब्दं ॥ सौम्यं एकं ॥ २७ ॥ एकं साभिप्रायं विरक्तं ॥ उन्मिदितं एकं निद्रितं ॥ परितुष्टं एकं अर्तितं ॥ प्रसन्नं एकं ॥ २८ ॥ एकं अशखं स
शखं ॥ एकं रौद्रं अतिभयं ॥ भयानकं एकं विचित्रं ॥ लयस्थं एकं ॥ २९ ॥ एकं जननलीलां विलासं ॥ एकं पालनशीलं लालसं ॥ एकं
संहारकं सावेशं ॥ साक्षिभूतं एकं ॥ ३० ॥ एव नानाविधं परिबद्धं सुषं ॥ आणित्वं ज प्रकाशं ॥ तेवीं च एक एका ऐसो ॥ वर्णही
नद्धं ॥ ३१ ॥ एकं तातलसांड पथं ॥ नैसीक पिलवर्णं अपारं ॥ एकं सर्वांगिजें सो भिंदूं ॥ दुवरलं नम ॥ ३२ ॥ एकं सावित्राची तुल
की ॥ नैसी ब्रह्मकटाहं वचिलं माणिकी ॥ एकं अरुणोदया सा रिवी ॥ कुंकुमवर्णं ॥ ३३ ॥ एकं शत्रूदूस्फटिक सो ज्वळे ॥ एकं इ
दनील सनीलं ॥ एकं अजनवर्णं सकळं ॥ रक्तवर्णं एकं ॥ ३४ ॥ एकं रुसकांचन सभा पिवळी ॥ एकं समजल जल दृश्या मळी ॥
एकं चांपे गौरी के वळी ॥ हरितं एकं ॥ ३५ ॥ एकं तमनामना मंडी ॥ एकं श्वेत चंद्र चोरवडी ॥ ऐसी नानावर्णें रूपडी ॥ देवें माझी ॥ ३६
हें जें सोकां आना नवण ॥ नैसी आकृती ही अनारि संपणा ॥ लाजकंद परिधाळा शरण ॥ नैसीं स्फुरें एकं ॥ ३७ ॥ एकं अति लावण्या स
कारे ॥ एकं स्निग्ध पवु मनो हरे ॥ शृंगार श्रियेची भांडारं ॥ उग्रडिली जें सी ॥ ३८ ॥ एकं पीना वयव मासक ॥ एकं शक ॥ अति विकळ ॥
एकं दीवकं ठो विलाळ ॥ विकट एकं ॥ ३९ ॥ एव नानाविधा कृती ॥ इया पाहातां पारनाही सभदा पनी ॥ ययांचा एक की अंग ग्रंथी ॥ दे-
ओ २६ कुंठे ओ २७ संतसभदें ओ २८ उन्मिद ओ २९ सतरां ओ ३० सरां ओ ३१ एकं ओ ३२ अजनो चळ समकोळ ओ ३३ आयत

खण्डजगाम ८०॥ श्लो० ॥ पश्यादित्यान्वसुनरुद्रानश्विनोमरुतस्तथा ॥ बहून्यहरपूर्याणिपश्याश्व्याणिप्रभृत ॥ ६॥ टी० ॥ जेयसु-
न्मीलनहोताहोस्त्वीनांथप्रभरती आदित्याचियासूर्या ॥ वृटनीनिमोक्तनीमटी ॥ दंतआहानी ॥ ६१॥ वटनीचियावाफेसवं ॥ होजला-
कामयआयवं ॥ जेथपावकादिकपाव ॥ समूहवसूचा ॥ ६२॥ आणिमृत्तलांचेशवट ॥ कोपंमिळोपाइनीएकवट ॥ तेथरुद्रगणांच
संघाट ॥ अवतरनदरवं ॥ ६३॥ पेंसोम्यतेचावोलावा ॥ मिर्तानेजअश्विनोदवा ॥ आर्त्ताहोनीपांडवा ॥ अनेकवायु ॥ ६४॥ अपरी
एककाचियेलीले ॥ जन्मतीसरसिद्धांचीकुळे ॥ ऐसींअपारंआणिविशाळ ॥ रूपेंदुयंपाहीं ॥ ६५॥ जयांतसांगवायावदबोबडे ॥ पा-
हावयाकाळाचेंहीआयुष्यथोकरडे ॥ धातयाहापरिनसांपडे ॥ टावज्याचा ॥ ६६॥ जयांतवदजयींकर्पनायकें ॥ नित्येंदुयंप्रत्यक्षदेख
अनेकें ॥ भोगींआश्व्याचींकवतिकें ॥ महामिही ॥ ६७॥ श्लो० ॥ इहैकस्यजगत्सपश्याद्यसचराचरम् ॥ भमरंदहगुडुकेशाय
चान्यद्रुष्टमिच्छसि ॥ ७०॥ टी० ॥ श्यामूर्तीचयाकिरीटा ॥ गंमभृकीदरंरुपंसासृष्टी ॥ स्फुरतरुतळवटी ॥ तृणांकुरजसे ॥ ६८॥ वानाय-
नआणिप्रभासे ॥ उडतपरमाणुदिसतीजसे ॥ थमतब्रह्मकाटाहतेस ॥ अवयवसंघी ॥ ६९॥ एथएकैकाचियाप्रानदेशी ॥ विश्व
देखविस्तारसी ॥ आणिविश्वहीपरंतमानसी ॥ जरीदरखावेंत ॥ ७०॥ तरेंदुयहीविययींचंकांही ॥ एथसर्वथासांकंडाही
सखेआवडेंतमाझियादेही ॥ देखसीत ॥ ७१॥ ऐसेंविषवसुतेनणें ॥ बोलिलेकारण्यपूर्ण ॥ तंवदेखतआहेकांनाहीनस्पण ॥ निवां
तबियेरु ॥ ७२॥ एथकापाहाउगला ॥ स्पणनिश्रीकृष्णजवणाहिला ॥ तंवआर्त्तचिंलणलंडला ॥ तेंसाचिआहे ॥ ७३॥ मगस्पणउत्कंठ
बोहरनपडे ॥ अझणीसरखाचीसोयनसांपडे ॥ परिटाविलेंतुंटे ॥ नोकळचियाया ॥ ७४॥ हेबोलीनदेवहासिले ॥ हांसोनिदर्वाण
यांस्पणितले ॥ आह्मीविश्वरूपपरीदाविले ॥ परंदेखसीचिनात ॥ ७५॥ ययाबोलायेरंविचस्पणें ॥ स्पणितलेहाजीकवणांसितेंउणें
पाद-जो-४१निमीळणी,दंतें-ओ०६९आणिचंडवानाचंनिकारां ओ०७०पट्यां ओ०७१नित्य ओ०७२मूर्तीं ओ०७३काटंयथ ओ०७४न-

॥ तुह्यीबकाकरवींचांदिणें ॥ चरउपहामा ॥ ५६ ॥ हांहा उदोनियां आरिसा ॥ ओंधळियांदाउबेसा ॥ बहिरयापुढें भ्रूषीकेशा ॥ गाणीवक्रा
॥ ५७ ॥ मकरंदकणाचाचारा ॥ जाणतांथावूनिददुरा ॥ वायांथाडाशांहे ॥ यरौ ॥ कोपाकवणा ॥ ५८ ॥ जेंअतींद्रियहणोनियवस्थिलें ॥ के
वळेज्ञानहरीशियाभागाफिटलें ॥ तंतुह्यीचमचक्रपुढेंसांदलें ॥ मीकेंसनिंदखे ॥ ५९ ॥ परिरहंतुमचंणेंनबोलावें ॥ मीचिसाहेतोंचबुरवें
॥ रथआधिह्मणितलेंदवें ॥ मानुबापा ॥ ६० ॥ साचविश्वरूपजरिआह्मीदावावें ॥ तरीआधींदरवावयासामर्थ्यकींदावें ॥ पारिबालनबो
लुतपेमभावें ॥ धसाळुगेलो ॥ ६१ ॥ कायजाहालेंनवाहतांभाईपरजे ॥ तरितांवेलांशींपलियारीणवायांजाइजे ॥ तरीआतांमाझेंनिज
रूपदेखिजे ॥ तेंहरीहंवेंतुजे ॥ ६२ ॥ ॥ नतुमांशक्यसंदृष्टमननैवस्वचक्षुषा ॥ दिव्यंदत्तामितेचक्षुः ॥ पश्यंमयोगमैश्वरम् ॥ ६३ ॥
॥ मगतिआहरीपांडवा ॥ आमुचाऐश्वर्ययागाआघवा ॥ दरवांनियांअनुभवा ॥ माजिवडाकरी ॥ ६३ ॥ ऐसंनेणेंवेदांतवेद्यें ॥ सकळ
लोकेकआद्यें ॥ बोलिलेंआराध्यें ॥ जगाचेंनि ॥ ६४ ॥ ॥ संजयउवाच ॥ ॥ एवमुक्त्वाततोराजन्महायोगेश्वरोहरिः ॥
दर्शयामासपार्थायपरमरूपमैश्वरम् ॥ १ ॥ ॥ टी ॥ पैकौरवकुळचकर्ती ॥ मजहाचिविस्मयपुढतपुढती ॥ जेश्रियेहानिजगती ॥ सदे
वअसेकवणी ॥ ६५ ॥ नातरींखुणेंचेंवानावयालागीं ॥ श्रुतीयाज्ञनिदावापोजगीं ॥ नासेवकपणतरींअंगीं ॥ शेषाचिआशि ॥ ६६ ॥
हांहोजयाचेंनिसासे ॥ शिणतीआहरीपाहारायोगीजसे ॥ अनुसरलेंगरुडाऐसें ॥ नवणआहे ॥ ६७ ॥ परितेंआधवेचिचकीकडेतलें-
॥ सापेंकृष्णमुखएकंदरजाहलें ॥ जिर्णदेवसीह्मनिजन्मलें ॥ पांडवह ॥ ६८ ॥ परिपांचाहीआंतअजुना ॥ श्रीकृष्णासावित्रिचिजाहा
ळाआधीना ॥ कामुककांजैसांअंगना ॥ आपेनाकीजे ॥ ६९ ॥ पदगिलेंपारिव्रह्मऐसंनयेले ॥ आपरीक्राडासृगहीतेंसानचले ॥ कैसेंदे
वणयेंसरवादले ॥ तंजापोनये ॥ ७० ॥ आजपरब्रह्महेंसगळें ॥ भोगावयासंदेवयाचिचोडोळे ॥ कैसेवाचेंचेहनलळे ॥ पाळीतअसे ॥ ७१

पाठ-श्री-५६ मगशाई-परा-ओ-६८दिग्विनि-

हाकोपेकीं भिवांतसाहे॥ हारुसेनरीबुसावीतजाये॥ नवलपिसेंलागलेंआहे॥ पाथांचेंदेवा॥ ७२॥ येन्हवींविषयत्रिणांनजन्मले॥ जेशका
 दिक्दादुले॥ तेंविषयचिनिवांतजाहाले॥ प्राप्तयाचे॥ ७३॥ हायोगियांचेंसमाधिधन॥ कींहासनिहलेंपार्थाआधीन॥ यालागिंविस्मयमाझे
 मन॥ करीतसेराया॥ ७४॥ तेंवींचिसंजयद्यणकायसा॥ विस्मयाण्येकोरवशा॥ श्रीकृष्णस्वीकारजेतथांगेसा॥ प्राप्तयोदयहोये॥ ७५॥ ह्यणों-
 निनेतेवांचारावां॥ ह्यणंपार्थांतनुजदिव्यदृष्टदेवों॥ जयाविश्वरूपाचाटावों॥ देवसीतुं॥ ७६॥ ऐसींश्रीमुखानिअक्षरे॥ भियतीनाजवएकस
 रे॥ तंवअविद्येचेंआधारें॥ जावेंचिलागे॥ ७७॥ तीअक्षरेंनव्दतींदेखा॥ ब्रह्मसाम्राज्यदीपिका॥ अजुनालागींचक्कळिका॥ उजळालिया
 श्रीकृष्णों॥ ७८॥ मगदिव्यचक्षुप्रकाशजाहाला॥ नयाज्ञानदृष्टीफोटाफुटला॥ ययापरीदाविनाजाहाला॥ ऐश्वर्येआपुलें॥ ७९॥ हेअवता
 रजेसकळ॥ तेजियेसमुद्रांचेंकोकल्लाक॥ विश्वहेंसृगजळ॥ जयारश्मीस्तवदिसा॥ ८०॥ जियेअनादिभूमिकेंभिते॥ चराचरहोचिब्रुमु
 दे॥ आपणंपंथीवेंकुंटे॥ दाविलेतया॥ ८१॥ मागांबाळुपणीयेणेंश्रीपती॥ जेंकंवळुरवादल्लाहोतीमाती॥ तेंकोणेंनियाहांती॥ येशोदाथ
 रिला॥ ८२॥ मगभेणेंभेणेंजेंसें॥ मुखीझाडाद्यावयाचेंभिमिसें॥ चवदाहीभुवनेंसाप्रकाशें॥ दाविलेंभिये॥ ८३॥ नातरीभुधुवनींभ्रवांभि
 केतें॥ जेंसेंकापालशंखेंशिवितलें॥ आणिवेदांचियेहीमनतलें॥ तेंलागलाबोलों॥ ८४॥ तेंसाअनुग्रहपेंराया॥ श्रीहरीकुंलाधनंजशा
 आतां कवणे कडेहीमाया॥ ऐसींभाषणेंचिनी॥ ८५॥ एकसरेंऐश्वर्यंतजपाहालें॥ तयाचमत्काराचेंकाणकजाहालें॥ चिनसमाजी
 बुडोनिटलें॥ विस्मयाचिया॥ ८६॥ जेंसाअब्रह्मपूर्णदकी॥ पोंहेमाकंदेयएकाकी॥ तेंसाविश्वरूपकीतुकी॥ पार्थलोळे॥ ८७॥ ह्यंपोंके
 वेंदेगगनएथहोतें॥ तेंकवणेंतलेंपांकुउतें॥ तेंचराचरेंमहाभूतें॥ कायजाहाली॥ ८८॥ दिशांचेंटावहीहारपळे॥ अर्थधंकायनेणों
 जाहालें॥ चेईलयास्वभतेंसेंगेलें॥ लांकाकार॥ ८९॥ नानासूर्यतजप्रमाणें॥ सचंद्रतारागणेंसंलोपें॥ तेंसीगिळिबिश्वरूपें॥

प्रपचरचना॥१०॥ तेष्वांमनासीमनपणनस्फुरे॥ बुद्धिआपणपेंनसांवरे॥ ईदयांचेरशमीभाघारे॥ स्तदयवरीप्रमले॥११॥ तेथताट-
 स्थानाटस्थपडिले॥ ठकासीटकलागले॥ जेंसंभाहनास्थयानले॥ विचारजातो॥१२॥ तैसाविस्मितपाहेकोडे॥ तंवपुढांहेतंचतुडे
 जरूपडे॥ तेंचिनानारूपचहूंकडे॥ मांडांनिठले॥१३॥ जेंसेवर्षाकार्ळांचेमोडो॥ कांसहाप्रकृत्यांचेंतेजवाटे॥ तेंसेआपणावीणकव-
 णीकडे॥ नेदींचिउरें॥१४॥ प्रथमस्वरूपसमाधान॥ पावोनिठलाअर्जुन॥ सर्वोचिउडिलेलोचन॥ तंवविश्वरूपदेखे॥१५॥ इहींचिदे
 हीडोळां॥ पाहावेंविश्वरूपासकळा॥ तोंश्रीकृष्णोंसोहळा॥ पुरविलेसा॥१६॥ श्लो०॥ अनेकवल्लनयनमनेकाडुतदर्शनम्॥
 अनंकादिव्याभरणोंदिव्यानेकोयतायुधम्॥१७॥ टी०॥ मगतेथसंघदेखेवदनं॥ जेंसरमानायकाचीराजमुवने॥ नानाप्रकटो
 निधानें॥ लावण्यश्रीयेचीं॥१८॥ कोंआनटांचीवनेंसासिन्नली॥ जेंसीसोंदयाराणीवजोडली॥ तैसीमनोहरेंदेखिली॥ हरीचिंकळें
 तेणें॥१९॥ तयाहीमाजिएकें॥ सावियाचिभयानकें॥ काळरात्रीचींकटकें॥ उठावलीजेंसी॥१९॥ कीमत्सुसीचिमुखेंजाहाली॥
 होकाजेंभयार्चीदुर्गेपन्नासिली॥ कीमहाकुंडउघडली॥ मळयानकाची॥२०॥ तैसीअद्भुतंभयास्फुरें॥ तेथवदनंदेखिलींवीरें॥
 आणिकेंअसाधारणेंसाळकारें॥ सौम्यबहुत॥११॥ पेंज्ञानहृदिचेनिअवलोकें॥ परिवटनाचाशेवदनटके॥ मगलोचननेकवतिके॥
 लागलापाहो॥२२॥ तवनानावर्गेकमळवने॥ दिकासिलींतैसीअर्जुनं॥ नत्रंदेखिलेपारुगेनं॥ आदित्योची॥३॥ तेंथेंचिकृष्णमेषाचि
 यादरी॥ माजिकल्यांनवजुचियाफुटी॥ तैसाबाब्हिंगळादिठी॥ म्हुंभंगानळी॥४॥ हेंएकेंकअश्वर्यपाहातां॥ तिथेंएकेंचिर्षी
 पांडुसुता॥ दर्शनाचीअनेकता॥ प्रतिफळली॥५॥ मगद्वेणचरणतेकवणेंकडे॥ केउनेमुकुटकेंदोदंडो॥ ऐसीवाटविताहेकोडो॥ चो
 उदरेवावयाची॥६॥ तेथमारयनिधीपाथो॥ कांविफलहोईलमनेरथा॥ कायपिनाकपाणिपाचाभाता॥ वांयकांडीआहानी॥७॥

पाठ. प्रो. १०. स्पडी. ओ. ७. पाणिचा. कांड.

नातरीचतुराननाचियेवाचे ॥ कायआहानीलुठिकियाअक्षरांचरांचे ॥ द्रवणानिसाद्यातपणअपाराचे ॥ देखिलेंतेणे ॥ ८ ॥
जयाचीसायवेदो नाकळे ॥ तयाचंसकळावयएकचिवळे ॥ अजुनाचेदोन्हांडोळे ॥ भोगितंजहाळे ॥ ९ ॥ चरणौनीमुकुट-
वरी ॥ देखतविश्वरूपाचीथारी ॥ जेनानारत्नअळकारी ॥ मिरवतअसे ॥ १० ॥ परब्रह्मआपुलानिअये ॥ ल्यावयाजाहाला
आपणचिअनेगे ॥ तिथेलणीमीसांगे ॥ कादुसयासारिवी ॥ ११ ॥ जियेप्रभंचियेझळाळा ॥ उजाळचंदोदित्समंडळा ॥ जमहाने
जाचाजिह्वाळा ॥ जेणेंविश्वप्रगटे ॥ १२ ॥ तोदिव्यनेजगुगार ॥ कोणाचियेमनीसीहोयगोचर ॥ देवआपणपेंचिलइलेंसंवीरा ॥
देखतअसे ॥ १३ ॥ मगतेथेंचिज्ञानाचियाडोळा ॥ पहातकरपळुवांजवसरळा ॥ नयनोडनकल्यातींचियाज्याळा ॥ तेंसीशस्त्रे-
झळकतंदरेवे ॥ १४ ॥ आपणआंगआपणअळकार ॥ आपणहानआपणहानित्यार ॥ आपणजीवआपणशरीर ॥ देखेंचराचर
कोंदलेंदेवे ॥ १५ ॥ जयाचियाकिरणाचेनिरवरेपणे ॥ नसवांचेहानफुटाणे ॥ तेजेश्वरडळावन्हिद्वारे ॥ समुद्रोरियो ॥ १६ ॥
मगकाळकूटकछोकींकवळिले ॥ नानामहाविजृंचेदोगउमटले ॥ तेंसंअपारकरदोखिले ॥ उद्यतायुधी ॥ १७ ॥ अहो ॥ दि-
व्यमात्यांबरधरीदिव्यगंधानुलेपनम् ॥ सर्वाश्चर्यमयंदेवमनेनंगिवगतोमुखम् ॥ १८ ॥ री ॥ १८ ॥ कांभणेंतेशूनिकाटिणीदि-
ही ॥ मगकूटमुगुटपाहानसंकिरीटी ॥ तंवसुरतरुचीसुधी ॥ जयापासोनिकोजाहालो ॥ १९ ॥ जियेमहासिद्धीचीमूळपी-
ठ ॥ शिणलीकमळाजयावावटे ॥ तेंसीकुसुमअतिचोखटे ॥ तुरांबलींदेखिलीं ॥ १९ ॥ मुगुटावरीस्तवक ॥ दायीठग्यंपू-
जाबंधमनेक ॥ कंठीरुक्तानिअलोकिक ॥ माळादंड ॥ २० ॥ स्वर्गसूर्यंतजवेदले ॥ जेंसंपधरेनैमरुतेंमटिले ॥ तेंसेनि-
तंबावरीमाटिले ॥ पीतांबरझळके ॥ २१ ॥ श्रीमहादेवकापुरेंउटिला ॥ कोकैलासपारजेंडवरिला ॥ नानाक्षीरांदकपाय
पाठ-ओं-१४ पहातो, कल्यातांविज्रविया- ओं-१६ रिये- ओं-१७ उमळले- ओं-१८ कबुकेट-

रविला ॥ क्षीरणं बन्नेसा ॥ २२ ॥ जैसीचंद्रमयाची यडी उपलबिली ॥ मग गगनाकरवी बुंधी घेवविली ॥ तैसीचंद्रनिपि जरी
देखिली ॥ सर्वांगीतें ॥ २३ ॥ तें णें स्वप्रकाशाकांतीचें ॥ ब्रह्मानंदाचा निदाप मोडे ॥ ज्याचें नसो रम्ये जीवित जोडे ॥ वेदधीनि
ये ॥ २४ ॥ ज्याचें तें लपें अनुलप करी ॥ जें अनेंगही सर्वांगीधरी ॥ तथा सुगंधाची शोरी ॥ कवण वानी ॥ २५ ॥ ऐसी एकैक स्मृ-
गार शोभा ॥ पहातां अर्जुन जात सोंक्षोभा ॥ तैवीच देव वैसला कीं उभा ॥ कीं सन्मुख यांत हें नेणवे ॥ २६ ॥ बाहेर दिठि घडू
निपाहे ॥ तंव आयवें मूर्ति मय देखत आहे ॥ मग आतां न पाहें ह्यणों निउगाराहे ॥ तारि आंत ही तैसीचि ॥ २७ ॥ अनावर सु-
खें समार देखे ॥ तथा णें पाठी मोराज वठाके ॥ तंव तथा ही कडे स्त्री मुखें ॥ कर चरण तैसीचि ॥ २८ ॥ अहो पाहातां कीर प्रा-
भासे ॥ एथ नवलावो काय असो ॥ परि न पाहातां ही दिसे ॥ चोज आदका ॥ २९ ॥ कैसें अनुग्रहाचें करणें ॥ पार्थाचें पाहणें आणि
न पाहणें ॥ तथा ही सकट नारायणें ॥ व्यापृनि घेतले ॥ ३० ॥ ह्यणों निअर्थ्याचा पुरी एकी ॥ पडिला ठाये ठाये तडी राकी ॥ तं
वचमत्काराचिया आणिकी ॥ महाणीची पडे ॥ ३१ ॥ ऐसा अर्जुन असाधारणें ॥ आपुल्या दर्शनाचे निविंदाणें ॥ कवळुनि घेत-
लातें ॥ अनंतरुपें ॥ ३२ ॥ तो विश्वनां मुख स्वभावं ॥ आणि तें चिदावायलागीं पाडवें ॥ पार्थिला आतां आववे ॥ होउनि ठेला
॥ ३३ ॥ आणि दीपें कासूयें प्रगटें ॥ अथवा निमुटालया देखवें चिरबुटें ॥ तैसीदीनि नव्हे जेवें कुटें ॥ दिथली आहे ॥ ३४ ॥ ह्यणों नि-
किरीदी भिदो ही परी ॥ तें देखणें देख अवधारी ॥ हे संजय हस्तिनापुरी ॥ सोगत सेराया ॥ ३५ ॥ ह्यणें किंबहुना अवधारिलें ॥ पार्थ
विश्वरूप देखिलें ॥ नाना आभरणीं भरलें ॥ विश्वनां मुख ॥ ३६ ॥ श्लो ॥ दिवि सूर्य सहस्वस्य भवेद्युगपदुस्थिता ॥ यदि भा-
सदशी सास्याद्रासस्तस्य महात्मनः ॥ ३७ ॥ टी ॥ त्वें अगम्य भवेद्युगपदुस्थिता ॥ कल्याणिएकचि
पाठः श्रीः २४ वेद्यः श्रीः २५ निलेपेः श्रीः २६ काश्यांतः श्रीः २७ मयोः श्रीः २८ धनंजयः श्रीः २९ अर्जुनः श्रीः ३० अर्जुनः श्रीः ३१ अर्जुनः श्रीः ३२ अर्जुनः श्रीः ३३ अर्जुनः श्रीः ३४ अर्जुनः श्रीः ३५ अर्जुनः श्रीः ३६ अर्जुनः श्रीः ३७ अर्जुनः श्रीः

मंडावा ॥ हां दशादिह्यं च होये ॥ ३७ ॥ तं रातं दिव्यं मयं सहस्रवरी ॥ जरी उदयजंती काण्केचि अवसरी ॥ तं ह्रीं तया नं ज्ञाची शरी ॥
 उपभूतये ॥ ३८ ॥ अथ भूगर्भा निविष्टं चामेकासाकीज ॥ आणिप्रक्षाल्य चामेची सवसा मणी आणजे ॥ तं वींचि दश कही मेळी येजे ॥
 मद्वा तं ज्ञाचा ॥ ३९ ॥ तं ह्रीं तं दं द्रुगं भूतं च निपादं ॥ हं तं ज्ञां हो कां हो हो दलया हो ॥ आणितया ऐसे कीरचो खडं ॥ विशह्नी नो हे ॥
 ४० ॥ ऐसे मं हा त्वया नी दरी तं रातं ज्ञा ॥ साक न सं सवगी चं तं ज ॥ तं मुनि कृपाजी मज दृश्य जातलें ॥ ४१ ॥ अहो ॥ तं त्रैकस्थं
 जगत्कृत्स्नं प्रविभक्तं मनिकथा ॥ अपश्यत् दृष्टव्यं शरीरं पांडव सदा ॥ ४२ ॥ टी ॥ आणितये विश्वरूपी एकी कडे ॥ जग आष
 वें आपुलें निपवाडें ॥ जें स मं हा दरी सांजुं जूडुवुडु ॥ सिना नं दिसती ॥ ४३ ॥ को आकाशी गंध वनगर ॥ भूत कीं पिपीलिका बांध
 रा ॥ नाना मेरु वरी सपुर ॥ परमाणु जंसे ॥ ४४ ॥ विश्व आद्यं च चिंतयापरी ॥ तिया देव चक्रवर्ती चिया शरीरी ॥ अर्जुन तिये अवसरी
 देखता जाहाला ॥ ४५ ॥ अहो ॥ ततः सविस्तरा विष्टं दृष्टं गोमाधनं जयः ॥ प्रणम्य शिरसा देवं कृतां जलिरभाषत ॥ ४६ ॥ टी
 तेषां एक विश्वं एक आपण ॥ ऐसें अकुमाकुलं तं ज दुजपण ॥ तं ही आटो निगलें अतः करणा ॥ विराळें सहसा ॥ ४७ ॥ आहु आनंदा
 चेदें जाहालें ॥ बाहोरिगात्रांचें बळहारणी निगलें ॥ आपाद पांगुलें ॥ पुलकां तै ॥ ४८ ॥ वार्षिये प्रथम दशो ॥ बाहळया शोलांचे
 सवो जंसे ॥ विरूढ कोमला कुर्तसे ॥ रोमांच जाहाल ॥ ४९ ॥ शिव तलाच दकरी ॥ सोमकांत द्वादशरी ॥ तैसायां स्वेद कृशिका
 शरीरी ॥ दाटल्या ॥ ५० ॥ मांजसा पडलनि अलिकुलें ॥ जकावरी कमळ काजें विं ओं दोळें ॥ तें विं अंहुलिया सखा मींचे नि
 बळें ॥ बाहोरि कोपो ॥ ५१ ॥ कपूर कर्दळांचे निगम पुट ॥ ठुकलतां कापुराचे निंकां दाटें ॥ पुलिंगा गळती ते विं थें बुटें ॥ नेत्रां निपडती ॥
 ५२ ॥ उदयले निरुधाकर ॥ जेसा भरला चिस मुद्रभरे ॥ तैसा वेळो वेळा उभिरं ॥ उचंबळत असे ॥ ५३ ॥ ऐसा सात्त्विकां ही आटां
 पाट ॥ ओं ॥ ४३ बेंसलें ॥ ओं ॥ ४६ पुलकांचलें ॥ ओं ॥ ५० पुलका

भावां ॥ परस्परैर्वर्तते सहेवा ॥ तेथ ब्रह्मानंदाची जीवा ॥ राणी वफावली ॥ ५२ ॥ तैसा चितया सूरवानुभवा पाठी ॥ केलौ तूनाचा सो
 भाळा दिठी ॥ मग उमसो नाकरी दिठी ॥ वास पाहिळी ॥ ५३ ॥ तेथ वेंसला होता जिया सवा ॥ तिया चिकडे मस्तक वाला विला देवा ॥
 मग जोडुनि कर संपुट वरा ॥ बोलत असं ॥ ५४ ॥ श्लो ॥ ॥ अर्जुन उवाच ॥ ॥ पश्यामि देवांस्तव देव देह सर्वोस्तथा शू
 तविशेषं संधान् ॥ ब्रह्माणमीजं कमलासनस्थं सर्षपं च सर्वानुरगांश्च दिव्यान् ॥ ५५ ॥ दी ॥ ॥ ह्यणे जय जया जी स्वामी ॥ नवल
 रूपा के ली तुझी ॥ जें हें विश्वरूप कीं आम्ही ॥ ग्रह ते देखी ॥ ५६ ॥ पोरताचि मळे केलें गोसाविया ॥ मज परितोष जाहाला
 सविया ॥ जी देखिलास जो दया ॥ सुधिसि तूं आत्मा ॥ ५६ ॥ देवा मंदराचे निअंगल गे ॥ तायी ठायीं श्वापदांची दांगें ॥ तैसीं दये
 तुझा देही अने गे ॥ देखत संप्रवने ॥ ५७ ॥ अहो आकाशाचि येखों कुळ ॥ दिसती घाह गणाची कुळ ॥ कां महावृक्षां आमि सावें
 ॥ पक्षि जातीचीं ॥ ५८ ॥ नया परीं श्रीहरी ॥ नुझ्या विश्वात्सा कीं ये शरीरी ॥ स्वर्ग देखत सें अब धारी ॥ सरगणें सो ॥ ५९ ॥ प्रफु
 महाभूतांचें पंचक ॥ एथ देखत आहे अनेक ॥ आणि भूत प्रांमणें क ॥ भूत सृष्टीचे ॥ ६० ॥ जी सत्य लोक तुज माजि आहे ॥ दे
 खिलाच नुरान नहानो हे ॥ आणि येरीकडे जवपा हे ॥ तंव केल्यास ही दिसे ॥ ६१ ॥ श्रीमहादेव भवानि येशी ॥ तुझा देखत आ
 हे एक अंशी ॥ आणि नुने हा गान्धर्वांशी ॥ तुज माजि देखे ॥ ६२ ॥ पैक पयादि म्भिकुळें ॥ इयें तुझिया स्वरूपी सकळें ॥ देखत
 संपाताळें ॥ पद्मगं सो ॥ ६३ ॥ किंबहुना त्रैलोक्य पती ॥ तुझिया एकैकी अवयवाचि ये भिती ॥ इयेंच तूं शशुवने चि वरुती ॥ अंकुरी
 जाणों ॥ ६४ ॥ आणि ते शिंचें जलें ॥ तें चित्र रचना जी अनेक ॥ ऐसें देखत सें अलोलिक ॥ गांभीर्य तुझें ॥ ६५ ॥ श्लो ॥ ॥ अ
 नेक बाहू दर वळने चें पश्यां मित्वां सवतो नत रूप ॥ नांत न मध्यं न पुनस्तवां दि पश्यां भविष्येश्वर विश्वरूपम् ॥ ६६ ॥ दी ॥ ॥

पाठ नाहो

यारिव्यन्त्रसूत्रं निपेयं ॥ च हूंकडे जेवपा हन असं ॥ तव दोंदोड को जेंसं ॥ आकाशा को भेंले ॥ ६६ ॥ तेंसं एकैक निरंतर ॥ देवा देवत-
 असें तुझे कर ॥ करीत आयवंचि व्यापार ॥ एकैचि काकी ॥ ६७ ॥ मृगमहाभूत्याचे निपे सारे ॥ उघडली ब्रह्मकटाहार्चि भोंडारे ॥ तेंसी
 देखतसें अपारं ॥ उदरं तुझीं ॥ ६८ ॥ जीस हस्त्रशीर्षयाचे दोखले ॥ कोटी वरी हांता तिण्की वेळे ॥ कीपर ब्रह्मचिव दन फळे ॥ मोडी नि
 आले ॥ ६९ ॥ तेंसी वळें जे उतीत उनी ॥ तुझीं देखतसें विशव मूर्ती ॥ आणितया निपरी नेच पंक्ति ॥ अने कासं प ॥ ७० ॥ हें असो स्वरुपा
 नाळ ॥ की भूमी दिशा अंतराळ ॥ होव साठे लीस कळ ॥ मूर्ति मय देखतसें ॥ ७१ ॥ तुजवीण एका दिया कडे ॥ परमाणु दि ए तु
 ला कोडे ॥ अवकाशा पा हात सें परि न सापडे ॥ ऐसं व्यपिलुं तुवां ॥ ७२ ॥ इयें नाना परी अपरि मि तें ॥ जे नुलीं सां द गिळीं होती
 महाभूतें ॥ ते तुला ही प वाड तुवां अनंतें ॥ कोट ला देखतसें ॥ ७३ ॥ ऐसा कवणे ठाया हूनि तें आलासी ॥ एथ बेसलां भि की उ-
 णा आहसी ॥ आणिक वणि यं माये चि प्रपंती हांता सी ॥ तुझें टाण के वटें ॥ ७४ ॥ तुझें रूप वय केंसं ॥ तुजें पै ला कडे काय अ-
 से ॥ तू काय सया वरी आहासि ऐसें ॥ पाहिलें मियां ॥ ७५ ॥ तंव देखिलुं जी आघ वेंचि ॥ नरि आतां तुझा ठाव तूं चि ॥ तूक वणा
 चान ब्हेसि ऐसाचि ॥ अना दि आयता ॥ ७६ ॥ तूं उभा ना वेंठा ॥ दिघडां ना खुजटा ॥ तुजतळी वरी वेंकुटा ॥ तेंचि आहासी ॥ ७७
 ॥ तूकूं ऐ आपणयांचि ऐसा ॥ देवा तुझीं तूं चिवयसा ॥ पाठी पोटर पेशा ॥ तुझें दगा ॥ ७८ ॥ किंब हूना आतां ॥ तुझें तूं चि अमय
 वें अनता ॥ हें पुटन पुटती पा हातां ॥ देखिलुं मियां ॥ ७९ ॥ परिया तुझिया रूप आतां ॥ जी उणी विएक असें देखत ॥ जे आ-
 दि स मध्य अंत ॥ तीन्ही नाहीं ॥ ८० ॥ येतु वीं गि वसिलें आघ वाठारीं ॥ परिसोय न लां हेचि कंठीं ॥ झणों निश्रिही हे नाही ॥ नी
 न्ही एथ ॥ ८१ ॥ एवं आदि स मध्यांतरा हिता ॥ तूं विशव वरा अपरि मिता ॥ देखिलां भि जीतलता ॥ विशवरूपा ॥ ८२ ॥ तुजम हा
 पाठ ॥ ओं ॥ ६६ त्या ॥ ओं ॥ ६९ दाखलें, मांडोनि ॥ ओं ॥ ७३ नानाभूती सांदिन ॥

मूर्तीचिया आंगीं॥ उमटलिया एथ कसूती अंगीं॥ लइला सिवाने परिची आंगीं॥ ऐसा अवघड तुआ हासी॥ ८३॥ नाना एथ
कसूती निया दुमवली॥ तुझिया स्वरूप महा चर्ची॥ दिव्या लंकार फुलीं फकीं॥ सासिन्नलिया॥ ८४॥ हांकां जेम होदधी तूंद
वा॥ जाहाला॥ सतरा मूर्तीं हलावा॥ की तू एक दृष्ट करवा॥ मूर्तिक फकीं फळालासि॥ ८५॥ जी भूतीं भूतक सांडिलें॥ जे सें
नक्षत्र गगन गुढारले॥ ते स मूर्ति मय भरले॥ देखत सें तुझे रूप॥ ८६॥ जी एक कोच अंग प्रांतीं॥ होय जाय हे विजगती॥ ए
वटया हीं तुझा आंगीं मूर्ती॥ की रांभा जाळिया॥ ८७॥ ऐसा पवाड मांडुनि विशवाचा॥ तूंक वण पाएथ कोणाचा॥ हें पाह
लें तेव आसुचा॥ सारथी तां विवू॥ ८८॥ नरिमज पाहा नां मुकुंदा॥ तूं ऐसा चिव्या पकसवदा॥ मग भक्ता नुग्रहेतया सुगंधा
॥ रूपानें धरि सी॥ ८९॥ कैसेच हें फज्जें चंसां वळें॥ पाहातां वाल्हावनी मन डोळे॥ रे मदे उजाडे तरि आकळे॥ दोही चिबा
हीं॥ ९०॥ ऐसी मूर्ति कोडि सवाणीं रुपा॥ करूनि हांसीनां विश्वरूपा॥ की आमुचिया दिटी सलेपा॥ जे सा मान्य हो देखती॥
९१॥ तरि आतां दिटीचा विटाळ गाला॥ तुवां महजे दिव्य चक्षु केला॥ ह्मणोनियाथारू पें देखवला॥ महिमा तुझा॥ ९२॥ परि म
कर तुंडा भागिले कडे॥ होला सितांचित् एवढे॥ रूप जाहालासि हें पुढें॥ वाळविलें मियां॥ ९३॥ श्रुतो॥ किशोदिन गादिन चक्रि
णं चतजोरा शिं सवते दोमि मंतम्॥ पश्या भित्वा दुर्गिरी स्थस मंतातूरी मानला कंघुनि मयेयम्॥ ९४॥ दी०॥ नोहे तो चिहा शि
री॥ मुकुट लेइला सिन्धी हरी॥ परि आतां चतज आणियांरी॥ नवलकी बहु हे॥ ९५॥ तेचि हे वारली चिये हातीं॥ चक्र पशिलि
तया आझनी॥ सांघरि नां सिं श्व मूर्ती॥ तेन मोडं रघुणा॥ ९६॥ येरी कडे तेचि हे नोहे गदा॥ आणित् कोळया दोनीं मुजानि
रायुया॥ वांगोर सांघरा वयागीं विंदा॥ संसरिलिया॥ ९६॥ आणितेणें चि वेगें सहसा॥ माझिया मनोरथा सरिसा॥ जाहाला

पाठ-ओं-८६ गुढलें. ओं-९६ वांगोर.

भिषिविश्वरूपोविश्वेश॥ ह्यणोभिजाणो॥ ९७॥ परिकायसेवाहं चोज॥ विश्वयकरावयाद्रुपाडनाहोमंज॥ चित्तहोडोनिजान-
 मोनर्बुज॥ आश्चर्येयणो॥ ९८॥ हंगथआयिकानाही॥ ऐसेअसाहोनयेकाही॥ नवलअंगप्रभेचीनुवादे॥ केंसीकोदलीसेय॥
 ९९॥ एथअग्नीचीहीदहीकरपन॥ सूर्यस्वद्यातनेसाहारपन॥ ऐसेनीवपणअद्रुत॥ तजाचेयया॥ ३०॥ होकोमहातेजचियामहाण
 वी॥ बुडोनिगेलीसृष्टिआयवी॥ र्क्षायुगोतविजृचापानुवी॥ झोकलेगगन॥ १॥ नानरीसंहारनेजाचियाज्याळा॥ तोडोनिमोच
 बांधलाअंतराळा॥ आतांदिव्यज्ञानाचियाडोळा॥ पाहवेना॥ २॥ उज्वळअधिकाधिकवहुवस॥ धडाडीतआहअनिदाहस॥
 पडतदिव्यचक्षूसहीज्ञास॥ न्याहाळिता॥ ३॥ होकोजेमहामूर्क्योन्नाभडाड॥ होताकाकागिनरुद्राचियादारींगूद॥ तोतनीयनय
 नाचामद॥ फुल्लाजैसा॥ ४॥ तेंसंपसरलनिग्रकाश॥ संप्रपांचवनियाज्वाळाचेवळसे॥ पडनाब्रह्मकटाहकोळसे॥ होत
 आहाती॥ ५॥ ऐसाअद्रुततेजोराशी॥ जन्मानवलभ्यादखिलासी॥ नाहोव्यामीअणिकांतीसी॥ पारजीतुझिये॥ ६॥ अष्टो
 ७॥ त्रिमक्षरंपरमवेदितव्यत्वमस्यविश्वस्यपरंनिग्रानम्॥ त्वमव्ययः शाश्वतमधर्मगोमासनातनस्वंपुरुषोत्तमम्॥ १८॥ टी०
 ॥ देवाचंअक्षर॥ ओठाविंमोत्रांसिपर॥ श्रुतीजयाचंघर॥ गिंवसीतआहानी॥ ७॥ जेंआकाराचेंआयतन॥ जेंविश्वनिदस
 पैकनिधान॥ तेंअव्ययतृगाहन॥ अविनाशजी॥ ८॥ तृधर्माचाबोळावा॥ अनादिसिद्धतूनित्यनवा॥ जाणोमीसततिसावा
 ॥ पुरुषविशेशवृ॥ ९॥ अष्टो०॥ अनादिमध्यांतमननवीवमनंतवाहुशशिसूर्यनेत्रम्॥ पश्यामितादीसहनाशक्कूस्वर्गज्मा
 विश्वविभितपंतम्॥ ११॥ टी०॥ तंआदिमध्यांतराहिन॥ स्वसामर्थ्यतूनंअनन॥ विश्वबाहुअपरिमित॥ विश्वचरणतू॥ १२॥
 पैचंद्रचंडीशडोळा॥ दावितासिकापप्रसादलीळा॥ एकोरुससितमाचियाडोळा॥ एकांपाळितोसिरुपादही॥ १३॥ जीए

पाट० ओं० १६ वागारे० ओं० १९ श्वतो० ओं० १ काजे० ओं० १ विशेष०

७९

७८

७७

वंविधावृत्ते॥ मोदेखतसेहंनिरुत्ते॥ पेटलप्रलयार्नीचंजितें॥ तेंसेवल्लहंतुझे॥ १२॥ वणिवंनिपेटलुपर्वत॥ कवकूनिज्याळा
 चेउमडउठत॥ तेंसीचाटीनदादातांत॥ जीमलोकत॥ १३॥ इयेवदनीचियउबा॥ आणिजीसवांगकांतीचियाप्रभा॥ वि-
 श्वनातलेंअतिक्षोभा॥ जातआहे॥ १४॥ भ्रूलोबा घावाएथिव्योरिदमंतराहव्यासत्यैकेनादिगश्चसर्वा॥ हट्टाद्रुनरुतसुगुंत
 वेदलोकप्रयव्यथितंमहात्मन्॥ २०॥ दी०॥ कांजेंद्योलोकआणिपानाळ॥ एथिवीआणिअंतराळ॥ अथवादशादशासमाकु
 क॥ दिशाचक्र॥ १५॥ व्यापकव्याप्यपाहाती॥ नदिसेरुगमीचीव्यवस्था॥ जडोनिटेलतल्लिनता॥ विश्वरूपीची॥ १६॥ हे
 आथर्वेचितुवांएकें॥ भरलेंदेखतआहंकोतुंके॥ परिगगनाहीसकटमयानकें॥ आपुविजेजेवी॥ १७॥ नातरीअद्भुतरसाचि
 याकछोकी॥ जाहालीचवदाहीपुवननासिकडियाकी॥ तेंसंआश्चर्यमगमीआकळीं॥ कायएक॥ १८॥ नावरेव्यासीहअसाध
 रण॥ नसाहवरूपचेंउग्रपण॥ सखदुरीगेलेंपरीमाण॥ विपाथेंपरिजे॥ १९॥ अगाधव्यासीहेनसाहवे॥ याणकांडनिदेही-
 सामावे॥ रोमांकपितकापदुणावे॥ मयभीतमनहोये॥ २०॥ देवाऐसेंदेखांनिहूतें॥ नेणांकेसेंआलेंमयाचेंभरितें॥ आनांदु-
 खकछोकींझळवतें॥ तीन्हीफ्रवनें॥ २१॥ येद्वीतुंजमहात्मयावेदेखणें॥ तस्मिंयदुःखासिंकोमेळवणें॥ परिहंसखनव्हांचिये
 णेंगुणें॥ तेंजाणवतआहेमज॥ २२॥ जंवतुंझेरूपनोहदिट॥ तबजगासीसंसार॥ रिकुगोमटें॥ आतांदेखिलासितरीविषयवि
 दे॥ उपजलावास॥ २३॥ तेंवींचितुजंदेखिलियासाठी॥ कायसहसातुजंदेवोंयेदंमिठी॥ आणिनेदींतीरीशोकसंकटी॥ राहोंके
 वी॥ २४॥ ह्यणोनिमागासरोतवसंसार॥ अडवीतयेतसेंअनिवार॥ आणिपुटातूतवअनावर॥ नयेसिधेवों॥ २५॥ ऐसामा
 झारिलियासांकडा॥ बापुदयाचेंलोक्याचाहोतसेंहुरडा॥ ऐसाहाध्वनीजीपुटा॥ चोजवलामज॥ २६॥ जैसाआरंबळलाओं-
 पाठ-ओं॥ १३ दांत-ओं॥ १५ फुलेंक-ओं॥ १७ तें-ओं॥ १९ जग-

गी॥ तोसमुद्रार्थेनवावयान्नागी॥ तंवक्लृप्तपाणियांचियातरंगी॥ आगच्छोनिहे॥ २७॥ तेंसंयाजगांसिजाहाले॥ नूतेंदेखो
 नितकर्मकृतदेले॥ २८॥ अमीहवासरसंयाविशानिकचिद्विनाःयांजन्मयांमृणोनि॥ स्वस्तिन्युक्तमहाधिस्मिन्संयाः
 स्तवंतितांस्तनिभिःपुष्पान्नाभिः॥ २९॥ टी०॥ यामाजिपुष्पभक्त॥ सराजीनिचांचंमच्यावे॥ ३०॥ हेतुझनिआगीकृतजें॥ जी
 कूनिस्वकर्मार्चोर्वाजें॥ भिळततुजऔतजें॥ सद्वाचेंगी॥ ३१॥ आणि कएकसाविशानिपयमोक्त॥ सर्वस्वभरानितुझिया
 हेरु॥ तुजप्रार्थितानिकरु॥ जोडानिया॥ ३२॥ देवाविद्यार्णवीर्णाइसो॥ जीविषयवागेंआंतुइलो॥ स्वर्गसंसारिचयासांकडलो॥ दोहोभासो
 ३३॥ ऐसआमुचेंसोदवणें॥ तुजवांचुनिकीजेलकवणें॥ तुजशरीरागासवणें॥ दणनदेवा॥ ३४॥ आणिमहशीअथवासिद्ध॥ वि
 द्याधरसमूहचिविध॥ हेबोलतुजस्तिवाद॥ कर्तिल्लवन॥ ३५॥ २८॥ टी०॥ रुद्रादित्यावसयोयेंचसाध्याविश्वेभिनोमरुत
 श्चोषपाश्व॥ गोधर्वराक्षासुरसिद्धसंघावोसंतन्याविस्मितांश्चवसवें॥ ३६॥ टी०॥ हरद्रादित्यांचंमेळोवे॥ वसुहममाध्यआव
 वे॥ अश्विनोदेवविश्वदेवविभवं॥ वायुहोर्दंजी॥ ३७॥ अवधारापितरआणिगंधर्व॥ पेलुयक्षरक्षोगासवें॥ जीगंहेंद्रमुख्यदेव
 ॥ कांसिद्धादिक॥ ३८॥ हेआघवेचिआपुर्णालुयांलकी॥ गुंकाटत आपणेंपेतुझाअवलकी॥ हेमहामूर्तीदेवकी॥ पाहान-
 आहाती॥ ३९॥ मगपाहतपाहतप्रतिक्षण॥ विस्मितांस्तेनअनःकरण॥ करितनजमुकुटीवोवाळणी॥ प्रभुजीनुज॥ ४०॥
 तेजयजघोषकलरवें॥ स्वर्गगाजिविनानिआपवें॥ ठोवितील्लाटावरीबरवें॥ करसंपुट॥ ४१॥ नियोविनयद्रुमाचियेअवरी॥
 सरवाडलीसात्विकांचीमाधवी॥ क्षणोनिकरसंपुटपुधुवों॥ तूंहोनासिफळ॥ ४२॥ टी०॥ जीलोचनाभाग्रउदेलें॥ मनूसरवाचेंसुया
 बाहूरुपादम॥ बहूदरबहुदक्षाकालदृष्टाकाःप्रव्यथितास्तथाहम्॥ ४३॥ टी०॥ ४४॥ रूपमहत्तंबहुवक्त्रनृचंमहाबाहोबहु
 पाठ॥ ओं॥ २९॥ आंतूनि॥ ओं॥ ३०॥ अग्निह्न॥ ओं॥ ३१॥ सोळाठतप्रवलकी॥ ओं॥ ३२॥ स्वर्गगाजनानिआपवे॥

योपाह्वे ॥ जं अगाधतु संदोस्विले ॥ विश्वरूपदही ॥ ४० ॥ हलो कस्य व्यापक रूपदे ॥ पाहानां देवाही वचकपदे ॥ याचं सच्युरव्य
 णजोदे ॥ भूतुतया कडुनी ॥ ४१ ॥ ऐसे एकचिपरिविचें ॥ आणि भयानकें वळें ॥ बहुलोचन हे सशस्त्रे ॥ अनंत भुजा ॥ ४२ ॥
 अनंत उरु बाहु चरण ॥ बहुदूर आणि नाना वर्ण ॥ कैसे प्रतिवर्तनी मातले पण ॥ आवेशाचें ॥ ४३ ॥ हो काम हा कल्याचिया अंती ॥
 तंव फले नियम जेत ते उती ॥ मळयानची जी जनी ॥ आबुखिली जैसी ॥ ४४ ॥ नातरीं संहार त्रिपुरारी चीं यंत्रें ॥ की प्रलय सैर-
 वाचीं क्षेत्रें ॥ नाना सुगंत शर्फी चीं पात्रें ॥ मृतक चोवोड विली ॥ ४५ ॥ तैसी जिये नये कडे ॥ तुझीं वळें जीं प्रचंडें ॥ न समानी दरी
 माजि सिंहाडे ॥ तैस दशनिदिसती लागि ॥ ४६ ॥ जैसे काळरात्रीचीं निआधारे ॥ उल्हास नित्यतीस हार खंचरे ॥ तैसिया वदनीं प्र-
 कय रूधिर ॥ काढि लादादा ॥ ४७ ॥ हे असो काळ अवतल रण ॥ कांसव संहार मातले मरण ॥ तैसे अति भिंगुळु वाणे पण ॥
 वदनीं तुझिये ॥ ४८ ॥ हे बापडी लोक सुधी ॥ मोदकी गविण हि ली दिदी ॥ आणि दुःख काळिंदी चियातरी ॥ झाड हो उनिठली ॥ ४९
 तुज महाभूतक निया सागरी ॥ आतां हिं जे लो क्यजी वित्त चितरी ॥ शोक दुर्वात लहरी ॥ आंदोलत असे ॥ ५० ॥ एथ कोपो निजरी
 वें कुठें ॥ ऐसें हन ह्यणि पेल अवचरे ॥ जेतु जलोकांचे कादवाटे ॥ वृथ्वा निसुख भोगी ॥ ५१ ॥ तैरी जी लोकांचे कीर साधारण ॥ बो-
 ग आड सूनसे वोडण ॥ के विसहसा हाणें प्राण ॥ माझी चकापनी ॥ ५२ ॥ ज्या भज संहार रुद्रासिपें ॥ ज्या भजें गोंधुल्लुपे ॥ तो
 मी एथें अहा वाह किं कापें ॥ ऐसें तुवां कुठें ॥ ५३ ॥ तैरि नवल बापा हे माहारी ॥ इयाना मी विश्वरूप जरी ॥ हे व्यास रूपणें हरी ॥
 प्रयासि आणी ॥ ५४ ॥ मृत्यु ० ॥ नभः सृशंदी सभने कवणीं व्याप्ताने दीत विशाल नेत्रम् ॥ दृष्ट्वा हिलां प्रव्यथितां तारात्वा धृतिं
 न विंदामि शमंच विष्णो ॥ २४ ॥ टी ० ॥ ठेलीं महाकाळे सीं हटे तटे ॥ तैसी किति एक रागितें ॥ इही वादो नियां पाकुटें ॥ आकाश
 पाठ. ओं-६० जीवा. ओं. ४२ तैवी विवदु. ओं. ४३ या. रु. ओं. ५१ धन्य. ओं. ५२ वर्ग.

केले ॥ ५५ ॥ गगनाचे निवाडुपणीं नाकळे ॥ त्रिभुवनींचियाहीनारिया नवें दाळे ॥ ययाचे निवाफा आगी जळें ॥ कैसें थडाडीत असे
 ॥ ५६ ॥ तेवींचि एकासारि रेंवेरुको नोहे ॥ एथ वणावणांचा भेद आहे ॥ होको जे मळयीं सावावोला हे ॥ वन्हीययाचा ॥ ५७ ॥ ज
 याचिये आंगीं निदीसी ॥ येवटी जे त्रैलोक्य की जे रावोडी ॥ कीतया होतोडे आणि तोडीं दोन दाटा ॥ ५८ ॥ केसावारयाधनुर्वानचट
 ला ॥ समुद्र कीं महापूरीं पडिला ॥ विषा निमारा प्रवतला ॥ वडवान कासी ॥ ५९ ॥ हळा हळ अग्नि पियालें ॥ नवल मरण मारा प्रव
 तलें ॥ तैसें सहार ते जाया जाहालें ॥ वदन देखा ॥ ६० ॥ परिकोण माने विशाळ ॥ जेसें नुति नुति अंतराळ ॥ आकाशासि कड्या
 क ॥ पटोनि ठेले ॥ ६१ ॥ नानरी कास्ये स्नान वसुंधरी ॥ जों हरण्याक्षरि गाला विवरी ॥ तें उघडलें हटके शवरी ॥ जे विपाताळ कुहर
 ॥ ६२ ॥ तें सावळ्या चिया विकाशा ॥ माजि जिव्हांचा आगळा चि आवेश ॥ विषवन पुरे स्मणीं नियास ॥ नभरीचि कोडे ॥ ६३ ॥
 आणि पाताळ व्याळा चिया फुलारी ॥ गरळ ज्वाळा लागती अंबरी ॥ तें सीप सरळिये वदनरी ॥ माजि होजि कड्या ॥ ६४ ॥ काढीन म-
 कय विजुंचीं जुं पाडे ॥ जेसें पन्नासिले गगनाचे हुडे ॥ तें सों आवाळु वावरी आंकडे ॥ धग धगीन दाटाचे ॥ ६५ ॥ आणि ललाट पटा
 चिये रवोळे ॥ जेसें भयानें मेढवि ना तिडोळे ॥ होका जे महाभूत च उ माळे ॥ कडव साराहिले ॥ ६६ ॥ ऐसें वाडुनि भयाचे भोज ॥
 एथ काय निपजवू पाहानोसि काज ॥ तें नेणां परि मज ॥ मरण भय आले ॥ ६७ ॥ देवा विश्वरूप पाहायाचे डोहले ॥ केले तिथे पा
 तलों पाति फळे ॥ बापादेखिलासि आतां डोळे ॥ निवावे तैसें निवाले ॥ ६८ ॥ अहोरेह पाथि वकीर जाये ॥ ययाची काकु कती
 कवणा आहे ॥ परि आतांचे तन्य माझे वषायें ॥ वांचेल कीं नवांचे ॥ ६९ ॥ येहवीं भयास्तव आंग कापे ॥ नावे क आंगळे न-
 रिमन नापे ॥ अथवा बुद्धी ही वासिपे ॥ अभिमान विसरिजे ॥ ७० ॥ परिये नुस्त्रिया हे वेगळा ॥ जो केवळ आनंद कका ॥

पाठ-ओ-५७ बानी-१ किवा वाडी-ओ-६९ ठाके-ओ-६७ दाडीन-

७

७

तथा अंतरात्म्याहीनिश्चय ॥ औलीशरी ॥ ७१ ॥ बापसाक्षात्काराचा वेध ॥ कैसा देशाडीकेला बोध ॥ हा गुरु शिष्य संबंध ॥ विपायेनांदे ॥ ७२ ॥ देवातुझा ये दर्शनी ॥ जेव्हा कल्प उपजलें आहें अंतः करणी ॥ तें सांवावया ला गिंगवसणी ॥ धैर्याची करितसें ॥ ७३ ॥ तंव माझीं नानां धैर्य हार पलें ॥ कीं नयाही वरी विश्वरूप दर्शन जाहलें ॥ हें असो परिमजमलें आंतुडवि लें ॥ उपदेशाद्या ॥ ७४ ॥ जीवा विसंवावया चिया चाडा ॥ संघां वाधावी करितसें बापुडा ॥ परिसो यही कवण कडा ॥ नल्लं एथें ॥ ७५ ॥ ऐसें विश्वरूपा चियामहामारी ॥ जीविलंगेलें आहें चराचरी ॥ जीबोलें तरिकाय करी ॥ कैसे निराहें ॥ ७६ ॥ द्रष्टा कराला निचते मुरवा निदृष्टे वकालानल साभिमानि ॥ दिशोनजाने नल भेच शर्म प्रसीद देव शजग निवास ॥ २५ ॥ दी ० ॥ पें अखंडोळ्या पुढें ॥ फुटलें जें संमहाभयाचें भांडें ॥ तैसीं तुझीं मुखें वितेंडें ॥ पसरलीं देखें ॥ ७७ ॥ असा दो तदादाची दाटी ॥ नझाकं वेमाहो दोयोदी ॥ संघप्रकृय शर्याची दाटकाटी ॥ लागली या जैश्या ॥ ७८ ॥ जैसें तसका विश्वभार लें ॥ हो कांजें काळराप्ति न संचरलें ॥ कीं आंगने या स्वर्यो रिलें ॥ वज्राग्नि जैसे ॥ ७९ ॥ तैसीं तुझीं वलें पचेंडें ॥ वरि आवेश हा बाहोरि वोसडे ॥ आले मरण रसाचें लोंदें ॥ आह्मावरी ॥ ८० ॥ संहार समयींचा चंडा निळ ॥ आणि महाकल्यात प्रलयानळ ॥ या दोही जै होय मेळ ॥ तें काय एक न जळ ॥ ८१ ॥ तैसीं हीं संहारकें तुझीं मुखें ॥ देखो निधीरकां आह्मा पारुखें ॥ आतंभु लोंमी दिशान देखें ॥ आपण पेंनेणेन ॥ ८२ ॥ मोटें कै विश्वरूप डोकां दोखलें ॥ आणि सरवाचें आवर्षण कांपडिलें ॥ आतंजा पाणिजा पाणि आपुलें ॥ अस्ताव्यस्त हें ॥ ८३ ॥ ऐसं करि सिद्ध्यणो निजरि जाणें ॥ तरि हे गोष्टि सांगावी कोमी ह्मणें ॥ आनो एक वेळ वांचवी जीमाणां ॥ या स्वरूप प्रकृया पासांनी ॥ ८४ ॥ जरि तूं गोसावी आमुचा अनंता ॥ तरि सुंदेवोडण माझिया पाट ॥ ओं ॥ ७१ ॥ सिरगी झाली ॥ ओं ॥ ७८ ॥ हो ॥ ओं ॥ ७९ ॥ आंगने या स्वर्य परिजलें ॥ ओं ॥ ८६ ॥ वांचवी जो ॥

जीविता ॥ सोढवीपसारा हाभागुना ॥ माहासारीचा ॥ ८५ ॥ आइकेंसक देवाचि पर देवते ॥ तुगचें नन्यगा विश्ववसेतो ॥ तें-
विसरलासि हें दुपरतें ॥ म्हाखे आदरिले ॥ ८६ ॥ द्यगां नवगीप्रसन्न होइ देवराया ॥ सहरीसंहरी आपुलीमाया ॥ काटीमातेम
हाभया ॥ पासोनिया ॥ ८७ ॥ होतें द्यायवर्गपुततपुतनी ॥ तें तें द्यणिजेबहुवाकाकुर्ता ॥ ऐसाभीविश्वमूर्ती ॥ भंडकाजाहल्लो ॥
८८ ॥ जें अमरावर्तये आलाधाडा ॥ तें त्याकळे निकेलाउवेडा ॥ जोमीकाळाच्याहीतोडा ॥ वासिपनपरी ॥ ८९ ॥ परिनया-
आंतुल नव्हे हें देवा ॥ राथमृत्युसहीकरुनि चढावा ॥ तुवाआमुचाचि घोटभरावा ॥ यासकळविश्वेसी ॥ ९० ॥ कैसानब्द-
ताप्रक्याचावेळ ॥ गोरवांतचि भिनलसि काळ ॥ बापुडाहाधिमुवनगोळ ॥ अन्यायुजाहाला ॥ ९१ ॥ अहासाग्याविपरीता
॥ विघ्नउठिलें शांत करिता ॥ कटकटाविश्वगेलें आनी ॥ तुलागलासि घ्रासूं ॥ ९२ ॥ हें नळे मोगे कडें ॥ मेषपसकृनि यांतोडें ॥
कवळितासि चहूंकडे ॥ सैन्येदये ॥ ९३ ॥ मृत्यो ॥ अमीचि खोभतराधुस्यपुत्राः सर्वे सहैव निपालसये ॥ श्रीध्याद्रोणः सुत
पुत्रस्तथासौ सहास्मादीयं रापि योधमुख्यैः ॥ ९४ ॥ नोहंति हं कौरवकुळीचं वीर ॥ आंधीक्याधुतराष्ट्राचं कुमर ॥ हेगेलगे
लसहपरिवार ॥ तुझियावदनी ॥ ९५ ॥ आणि जें यांचें निसावायें ॥ आलुदेशां देशीचं राये ॥ तरांचें सागावया जावोनला
हे ॥ ऐसें सरकटीत आहासी ॥ ९६ ॥ मदमुरगाचियासंघटा ॥ येत आहासीं घटघटा ॥ अरणीहनथाटा ॥ दंतांमिभिटी ॥ ९६
जंजबिचिचीलमार ॥ पदानीचं मोगार ॥ सुखीआनभार ॥ हारपतातिमो ॥ ९७ ॥ कुनाताचियाजावळी ॥ जें एकचि विश्वा
नीं भळी ॥ तियेकोठीवरीसगळी ॥ गळितामिशखें ॥ ९८ ॥ चतुरंगापरिवारा ॥ संजोडयार हंवरा ॥ दांतनलाविसीं मांपरये
श्वरा ॥ कैसानुष्टलासि बरवा ॥ ९९ ॥ हागाभीष्ट ऐसाकवण ॥ सत्यशौर्यनिपुण ॥ तोही आणि ब्राह्मणद्रोण ॥ ग्रासिलासि
पाठ-ओ. ८८ हा-ओ. ९१ गोसांवीचें- किंवा देखातू- ओ. ९८ कोडी-

कटकटा ॥ १०० ॥ अहासहस्रकराचातुर ॥ अथांगलागलाकर्णवीर ॥ आणि आसुचिया आघवांचाकर ॥ फंडिलादेखें ॥ ११ ॥
 कटकटाधानया ॥ कैसंजाहालें अनुग्रहायया ॥ मियाप्राथुनिजगाबापुडिया ॥ आगिळें मरण ॥ २ ॥ मागां थोड्यावहुवाउपप
 नी ॥ थेंगांसांगीनन्दीयाविभूनी ॥ तैमानसंविमापुटनी ॥ बेंसलांपुसां ॥ ३ ॥ द्वाणोनिमोग्यतें अशरूनीनुके ॥ आणिबुद्धीहीहो
 यागसांरिवीटाके ॥ माझेकपाठीं पिटावेनोक ॥ तलादेलाकात्या ॥ ४ ॥ पूर्वीअमृतहीहाताआलें ॥ परिदेवनसनीचिउगळे ॥ म
 गकोकडूटुगविलें ॥ शंबरीजेंसें ॥ ५ ॥ परितें एकबगीथोडें ॥ केलियापनैकारामाजिवें ॥ आणितियेअवसरींचेंतेंसाकडे
 ॥ निस्तरविलेंशंभु ॥ ६ ॥ आनाहाजकृतवाराकावेंटाके ॥ कोणाहीविपाभरलेंगगनगिळें ॥ महाकाळोसिकेखेळें ॥ आंगवत
 असें ॥ ७ ॥ ऐसाअर्मुनदुःखेंशिणत ॥ शोचितासेजवाआंत ॥ परिनदेखेनोयस्तन ॥ अभिप्रायदेवाचा ॥ ८ ॥ जेमीमारि-
 ताहेकौरवमरते ॥ ऐसांनिवेटाखिलाहातामोहेंबहुते ॥ तोफेडावयालागींअनंतें ॥ हेंदाराविलेंनिज ॥ ९ ॥ अरेंकोणहीकोणहानें
 नमारी ॥ अथमीविहोसवसंहारी ॥ हेंविश्वरूपव्याजेंहरी ॥ यकटिनअसे ॥ १० ॥ परिवायांचिव्याकुलता ॥ तेंनचोजवेचिपंडु
 कता ॥ मगअहाकेंपनन्दता ॥ वाटवितअसे ॥ ११ ॥ श्रुतो ॥ वल्काणितेनवरभाणाविशंनिदंष्ट्राकरालानिभयानकानि ॥ कै-
 चिदिलगनाशनानरेषुसंशयनेचूर्णितेंरुनमांगी ॥ २० ॥ टी ॥ तेंयद्वाणेपाहाहोएकेवेळें ॥ सासिकवचेंसिदोन्हीदळें ॥ वद-
 नींगेळींआभाळें ॥ गगनींकांजेंसी ॥ १२ ॥ कामहाकल्याचियाशेवटी ॥ जेंरुतांनकोपळाहोयसुष्टी ॥ तेंएकाविसांहिसर्गाभिरी
 ॥ पानाळासकटें ॥ १३ ॥ गतरीगुदासीनेदेवें ॥ संचकाचीवैभवं ॥ अथिचींतेशस्वभावं ॥ विलयजानी ॥ १४ ॥ तैसींसांभिन
 लींसेंन्येएकवटें ॥ इयेंमुखीजाहालींमविटें ॥ परिएकहीतोंडोनिनसुटे ॥ कैसेकमेदेखा ॥ १५ ॥ अशोकाचेअंगवशो ॥ वयाळें

पाठ ॥ ओ ॥ ६ ग्रनि ॥ ओ ॥ ७ ग्ववळ ॥ ओ ॥ ८ नें ॥ ओ ॥ १५ सांचली ॥

५

५

५

५

करेनैजैसे ॥ लोकवक्त्रा माजितेस ॥ वायागेल ॥ १६ ॥ परि सयाळें मुकुटेंसी ॥ पाडलीं दादांचें सांडसी ॥ पीठ होतें केसी ॥ दिस
 त आहानी ॥ १७ ॥ तिचें तें दातांचें येसवडी ॥ कूटलागळें जिभें चावुडी ॥ काहो काहो आंगरडी ॥ दंडाची मारवली ॥ १८ ॥ हो को-
 जे विशय रपें काळें ॥ ग्राशिलें लोकांची शुंगरें बळें ॥ परि जीवित देही चांजि साळें ॥ अवश्य कें गखिली ॥ १९ ॥ तें सी शरीरा माजिचो
 खडी ॥ इयं पुन मांगें होनीं फुडी ॥ ह्यो नांभ माहाकाळ्या चिया हि तोडी ॥ परि गुरलीं शेंखी ॥ २० ॥ मग ह्मणें हें काई ॥ जन्म ला-
 आन मोहर चि नाही ॥ जग आपें सें चि वट न डोही ॥ मंचर ताहे मो ॥ २१ ॥ यया आपें आप आय विया सुधी ॥ लागलिया आहा
 निवट ना चिया शेंवडी ॥ आणि हा जेथिं चिया तें थो मदी ॥ देत सें उगला ॥ २२ ॥ अह्या दिक्क स मस्त ॥ इचा मुरवा माजि धोवत ॥ येरसा
 मान्य हें मरत ॥ गेली चि वटनी ॥ २३ ॥ अणो किही न्ह त जात ॥ तें रुप जगें चि दायो घाशित ॥ परि या चिया मुरग नि फांत ॥ न सुटे
 चि काही ॥ २४ ॥ अहो ॥ यया न्ह दीस दंडाची वुंगी ॥ स मुद्र सवाभि मुखा दवोत ॥ त आत नांभ निर लाक वार बिंशति वल्काण्यभि
 विज्वलति ॥ २५ ॥ दी ॥ जें स माहा नटें चें यया ॥ की हलें त कि तो य मुद्राचें आंग ॥ त सें आय वाचि कड नि जग ॥ यं वंश न मुरगो ॥
 २५ ॥ आयुष्य पंथें माणी गणी ॥ करी नि अहो रात्राचें माणी ॥ वेगें वल्का मळणी ॥ साधि जत आहानी ॥ २६ ॥ अहो ॥ यथा
 प्रदी मंज्वल न पत ना विंशति ना शायरा मंज्वला ॥ तें थें वना ग्राय विंशति ना कास्त चापि वल्काणि सभू दुवेगा ॥ २७ ॥ दी ॥ ज
 कत या गिरीच्या आंगवरया ॥ माजि गपतों पत ना चिया झोका ॥ तें सें स मय गोक देखा ॥ इय वट न पडती ॥ २७ ॥ परि खें तुले ये
 थय वेशले ॥ ते तुलिया गे हां पाणि पांगिल्लें ॥ बहि वटीं हे पुसिल्लें ॥ नाम रूप पत यांचें ॥ २८ ॥ अहो ॥ अलि न्ययें ग्रस मानः संपत्ता
 लोकां न स मया न्वद नै ज्ये लद्विः ॥ तें जो भिराणू यं जग त्या मय भासस्त वायाः यपतं नि विष्णो ॥ २९ ॥ दी ॥ आणि यतु भिया हो-

१६

१७

१८

पाठ- ओं ०२० गरी- ओं ० सोवाणी- ओं ०२० ब्राह्म

आरोग ॥ करिनां मुकुंदाहीरुणपणा ॥ केंसेदीपनअसाधारण ॥ उदयलें यया ॥ २९ ॥ जैसारीगियाज्वराहूनिउठिला ॥ कंभ
णगाढुकाळणाहिला ॥ तैसाजिभांचलळकाटेरिवला ॥ अवाकुवेंचाटितो ॥ ३० ॥ जैसेआहाचेनिनवेंकाही ॥ तोंडापा
सोनिउरलोंचिनाही ॥ केंसीसमसामितनचाई ॥ फुकेलेपणाची ॥ ३१ ॥ कायसागराचाघोटभरावा ॥ कींपर्वताचाघांसक
रावा ॥ ब्रह्मकटाहयालावा ॥ आधवाचिताटे ॥ ३२ ॥ दिशासगळियाचिगिकाविया ॥ चोंदिणियाचाटनिध्याविया ॥ ऐसे-
वर्तनआहसाविया ॥ लोलुप्यावानुझी ॥ ३३ ॥ जैसाभोगीकामवाटे ॥ कांडधनेआगीसिहकाकचटे ॥ तैसीखानरवातांचितो
डें ॥ खाखानेंठेळी ॥ ३४ ॥ केंसेगकचिकेवटपसरलें ॥ त्रिभुवनजिह्वायीआहेतेंकळें ॥ जैसेकाकवीठघातळें ॥ वडवानळी
॥ ३५ ॥ ऐसीअपारवदन ॥ आतांयतुनीकेंचीत्रिभुवन ॥ कांआहारामळतांयेणेंमानें ॥ वाढविलीसैंघ ॥ ३६ ॥ अगाडालो
कबापुडा ॥ जाहालावदनज्वाळावरपडा ॥ जैसीवणवेंयाचियावेदो ॥ सांपडनीमृगें ॥ ३७ ॥ आतांतेंसैंयाविषयाजाहाले
॥ देवनळेहेंकर्मआलें ॥ कांजगजळचरापागिलें ॥ जाहालेंकाळें ॥ ३८ ॥ आतांइयेअंगप्रमेचियेवारुं ॥ कोणीकडूनिन
गिजेलचराचरें ॥ हींवल्लेनोहीजेजोहरें ॥ नोंडवलींजगा ॥ ३९ ॥ आगींआपुलेनिदाहकपणें ॥ केंसेनिपोळिजेतेनेणें ॥ परि
जयालागेतयामाणें ॥ स्फटिकानाही ॥ ४० ॥ नातरांमाझेंनिस्वरपणें ॥ केंसेनिवटेहेंशस्त्रकायिजाणे ॥ कांआपुलि-
यामारानेणें ॥ विषजैसे ॥ ४१ ॥ तैसीतुजकाही ॥ आपुलियाउयपणाचींसेचिनाही ॥ परिऐलीकडिलेसुरवीरवाई ॥ होस
रलीजगाची ॥ ४२ ॥ अगाआत्मानु ॥ सकळाविश्वव्यापक ॥ तरिकांआत्माअतक ॥ तैसावोडवलासी ॥ ४३ ॥ तरि-
मियांसांडिलीजीवित्वाचीचाड ॥ आणिनुवांहीनिधरावीमीड ॥ मनीआहेतेंउघड ॥ बोलुपांसुरवें ॥ ४४ ॥ कितीवाटवि-
पाठ ॥ ओं ॥ ३३ ॥ कींल्यचातुज ॥ ओं ॥ ३४ ॥ वाटविलेंअसान्यतां ॥

७

७

७

७

सीयाउग्ररूपा ॥ आंगीचैष्मगवतपण आरुवांवापा ॥ नाहींतरीकृपा ॥ मजपुरतपाही ॥ ६५ ॥ ॥ स्तो ॥ आरव्याहमेको
 भवानुग्ररूपोनमोस्तुतेदेववरप्रसीद ॥ विज्ञानुभिच्छामिभवंतमाद्यंनहिप्रजानामितवमवृत्तिम् ॥ ६६ ॥ टी ॥ तदिए
 क्वेळवेदेद्या ॥ जीविभुवनैकआद्या ॥ विनवर्णविश्ववंद्या ॥ आदिकेमाझी ॥ ६७ ॥ ऐसंबोळोनिवीरें ॥ चरणनमस्कारि
 लेशिरे ॥ मगह्मणंतरीसर्वेश्वरें ॥ अवगारिजी ॥ ६८ ॥ भियाहोभावयासमाधान ॥ जीपुमिळेंविश्वरूपध्यान ॥ आणिएके
 चिकानेंविभुवन ॥ गिळितचिउतिलासि ॥ ६९ ॥ तरितुकाणकायेनुली ॥ इयेभ्यासरमुखेकामेळविळी ॥ अवघियाचि
 करीपरिजली ॥ शस्त्रेकाल्या ॥ ७० ॥ जंजंवतवरागाटपणें ॥ वाटोनिगगनाआणितोसिउणें ॥ कांडोळेकरूनिभंगुळ
 वाणें ॥ फेडसावीतआहासी ॥ ७१ ॥ गथवृत्तांतेंसंदेवा ॥ चारसयाकिजतसेहवा ॥ हाआपुलातुवासागावा ॥ अभिप्राय-
 मज ॥ ७२ ॥ याबोलाह्मणेंअनंत ॥ मीवाणहेंआहामीपुसत ॥ आणिकायिसयालागीअसेवाटत ॥ उग्रतेसी ॥ ७३ ॥ ॥ स्तो ॥
 ॥ ॥ श्रीष्मगवानुवाच ॥ ॥ कान्हास्मिन्नाकस्यवृन्द्यद्वो लोकान्समाहनुमिहप्रवृत्तः ॥ अतोपत्वानेभविष्यन्तिस्-
 र्वेयवस्थिताः प्रत्यनीकेषुयाथाः ॥ ७४ ॥ टी ॥ तरिमीकान्हाहंपुटें ॥ लोकसेहारावयालागीवाटें ॥ सेयपसरिलाआ
 हातीतोंडो ॥ आतोयासीनहेंआयवें ॥ ७५ ॥ गथअजूनह्मणकरुता ॥ उवगिलेंमागिन्यासंकटा ॥ ह्मणोनिआळाविला
 नंवबोखटा ॥ उवाइलाही ॥ ७६ ॥ तवीचिकटिणबोलेंआसनुदी ॥ नेणेंअजूनहाइलंहिंपुटी ॥ ह्मणोनिस्वोचिह्मणेंकिरी
 टी ॥ परिआनएककांहीअसे ॥ ७७ ॥ तरिआतोचियेंसहारवाहरें ॥ नुंस्वोपाइवअसाबाहिरे ॥ तथजातजाताधनुधरें ॥
 सांवारिलेयाण ॥ ७८ ॥ होताभरणमहामारींगला ॥ तोभागुनासावधजाहाला ॥ मगलागलाबोला ॥ चित्तेंदें ॥ ७९ ॥ ॥
 पाट-ओं-५-आणितामि-ओं-५-उपाइला-ओं-५-जेंग-

सैव्यणिजनआहेदेवं॥ अर्जुनामाझेंतुह्वाहंजाणावें॥ येरजाणमीआघवें॥ सरलोद्यासू॥ ५८॥ वज्जानकींयचंडीं॥
 जैसीघांपेळोणियांचीउंडी॥ तैसेगजहंमाझियातोंडीं॥ तुवादेखिलेंजे॥ ५९॥ तरितयामाझारीकाहीं॥ सरवसेनिउणें-
 नाहीं॥ इथेयांचिसैन्येंपाहीं॥ बरवजतेंआहानी॥ ६०॥ ऐशाचतुरंगाचियासंपदा॥ करितमहाकाळेंसीस्पर्धा॥ वा
 टिवेचियामदा॥ वळुयलेजे॥ ६१॥ हेजेमिकोनियांमेळे॥ कुंथतीवीरप्रवृत्तीचेनिबळे॥ ज्यावरीगजदळे॥ वारवणि
 जताती॥ ६२॥ ह्यणतींस्वष्टीवरीस्पर्षीकरूं॥ आणवाहूनिमुद्युतेंमारूं॥ आणिजगाचाभरूं॥ घोरयया॥ ६३॥ पृथ्वी
 सगळीचिगिकू॥ आकाशवरिचावरीजाकू॥ कायबाणवरीखिळू॥ वारयातें॥ ६४॥ बोलुहतिथेराहूनिनिखटा॥ दिस
 तीअरनीपरिसदासठ॥ मारकपणेंकाळकूटा॥ मडुरह्यणत॥ ६५॥ तरिहेगंधर्वनगरींचेउभाळे॥ जाणपोकळीचेपेंढ
 वळे॥ अगाचिचींचेपुतळे॥ वीरहेदेखें॥ ६६॥ जेंसंलुपांचेरूपकंलें॥ नयाहानींशस्त्रदिधलें॥ चैनन्यावीणमांडलें॥ उ
 ग्ररूप॥ ६७॥ हांगाभृगजकाचापूरआला॥ दळनव्हेकापडाचासापकेला॥ इयाभृंगाकरूनियांखाळा॥ मांडिडीयापें
 ॥ ६८॥ अली०॥ तस्मान्वमुनिष्ठयशोलभस्यजित्वाशत्रून्मुखराज्यंसमृद्धम्॥ मयैवैतेनिहताः पूर्वमेवभिषिक्तमात्रंम
 वसव्यसाचिन्॥ ३३॥ टी०॥ येरचेष्टविनेंजेबळ॥ तेंमागांचिमियांयासिलुंसकळ॥ आतांकोल्हेरिचेवेनाळ॥ तैसेनि
 जीवहेआहानी॥ ६९॥ हालविनीदोरीतुटली॥ तरितयेखांबावरीलबाहुली॥ भलुतेणेंलोडिलें॥ उलथोनपडती॥
 ॥ ७०॥ तेंसासेन्याचायाबगा॥ ओडुनोवळमानुगेपेंगा॥ ह्यणोनिरुडोउठीविगां॥ शाहाणाहोदें॥ ७१॥ तुवांगोग्रहणा
 चेनिअवसरें॥ घातलेंमोहनाखाएकसरें॥ मगविराटाचेनिमहाभेडुतरें॥ आसदुनिनागविलें॥ ७२॥ आतांहेत्या
 पाठ॥ ओं॥ ५८ तंवऐसें॥ ओं॥ ६० बलाजतें॥ ओं॥ ६२ जम॥ अथवा यमा॥ ओं॥ ६८ स्वाळा॥ ओं॥ ६९ चेष्टवी॥ ओं॥ ७२ वीराचे॥

हनिनिपटारं जाहाले ॥ निवर्त आशितरणपाडिले ॥ घेइय शांतिपुंजितिले ॥ राकंठनि अर्जुने ॥ ७३ ॥ आणिकारदंशचि नोह ॥ समयराज्य
 ही आले आहे ॥ तूं निमित्तमात्रचि होये ॥ स्वयमाच ॥ ७४ ॥ अम्हो ॥ द्रोणाचर्माम्नेच जयद्रथचक्रणतया न्य ॥ नृपयाधवीरान् ॥ मया ह-
 तोस्त्व जहिमाव्यथिष्ठा युधस्वजनाभिगणसपत्नान् ॥ ७५ ॥ टी ॥ द्रोणाचा पाडन करी ॥ भीष्माचें मयन धरी ॥ केंसो निकर्णावरी ॥ प-
 र्जुन हन ह्यणी ॥ ७६ ॥ कोण रुपय जयद्रथा कीजे ॥ हंसचिंतयि न तुझे ॥ आणिकोही आर्थी जेजे ॥ नावाणि गोवरी ॥ ७७ ॥ तें ह्मण करूक आ-
 यवे ॥ चिन्विचोसि हाइसो नावे ॥ जंसेवाले निहाते व्यवे ॥ युयनि या ॥ ७८ ॥ याचरी मांडवा ॥ वायसा युद्धाचें मज्जावा ॥ हा आषासगा-
 आधवा ॥ येरयासिलो मिया ॥ ७९ ॥ जेव्हां तुंवो दंडा ॥ तें समिद्रिया वटनी पाडि ॥ तें व्होनि याचें आयुष्य शरणे ॥ आतां रितोसोपे ॥
 ७९ ॥ द्वाणोनि वाहिला उठो ॥ भियां मांरले तुं निवरी ॥ नरिंघें शोकस करी ॥ नाथि गिया ॥ ८० ॥ आपणा नि आडोखि व्हाजिजे ॥ नोको-
 नुं कें जेसा विंथो नि पाडिजे ॥ तें संदखं गातुं झे ॥ नमिनी आहे ॥ ८१ ॥ आपाधि रूढ जे जो हांने ॥ तें रुपजतां चयापेनें ॥ आतां राज्य-
 सीसं चले ॥ मशतुं संगी ॥ ८२ ॥ सावि याचि उतत हांने दंडा द ॥ आणिके क्रिये जे गोहिं मर ॥ तें वाधिं न्य शिर ॥ साया मन लगतो ॥ ८३
 ॥ ऐसि पाइया गोरी ॥ विशवाचा वाकपरी ॥ लिहूनि याग्यां किरीटी ॥ दजय हांने ॥ ८४ ॥ अम्हो ॥ ॥ मंजय दयाच ॥ ॥ एतच्छ्रुत्वा य-
 चनं केशवस्य कुंताजिर्वेपमानो किरीटी ॥ नमस्कृत्या कृष्णवाहरो यो मग हर्षमिमीत ॥ प्रणम्य ॥ ८५ ॥ टी ॥ ऐसी आघ-
 वीचि हे कथा ॥ तया अपुण मनोरथा ॥ संजयसारा कुंताजीया ॥ ज्ञान दवखणे ॥ ८६ ॥ मग मया खोको न गगाजक ॥ सुदंभिया वा-
 जनीं स्वका ॥ तें सीवाच विशाळ ॥ बोलतां तया ॥ ८७ ॥ नान रीस हांने याचे पुमाडे ॥ एडय हांने केवळे ॥ कोणुं मयुषि मिला मर-
 गचकें ॥ ही राब्य जेंसा ॥ ८८ ॥ तें सारां मरि म हाचें ॥ हे राब्य विशवसें ॥ वांळि न गगाथी ॥ अनन करे ॥ ८९ ॥ तें अर्जुने सोद-

कैरेकिलें॥आणिसुखकीमयदुणावळें॥हंनोपांगीकोपिनलें॥सर्वगतयाचें॥८९॥सखोलपणंवळीमोटा॥आणितैसेचि
जोडळकरसंपुट॥आणिवेळीवळालुळाट॥चरणतिंवो॥९०॥तेवीचिकाईबोलोजाये॥तंवगळाबुजलाचिठाये॥हंसुखकी
मयहोये॥हेंविचारानुद्दो॥९१॥परितेव्हांदेवाचेनिबोळें॥अजुनाहेंएसेजाहाळें॥मियांपदावरूनदिशिलें॥इलोकाचिया॥९२॥
मगतैसानिभगंभेणें॥पुढतीजोहारुनिचरण॥मगद्वणेंजीआपण॥गेसंबोलिलेती॥९३॥म्लो॥॥अजुनउवाच॥॥
स्थानेदुर्धर्षकेशतवप्रकृत्याजगत्यदुष्टत्यनुरज्यतेच॥रक्षांसिमीतानिरीशोद्वतसर्वनमस्यतिचिसिद्धसंघाः॥३६॥टी॥ना
तरीअजुनामीकाळ॥आणियासिजेनामाझाखंळ॥हाबाळनुझाकीरअटळ॥मान्आझी॥९४॥परितुवांजीकाळें॥आजिस्थि
तीचियेवेळें॥यासिजेहंनमिळें॥विचारासी॥९५॥केंसेनिआगोचिनारुण्यकादावें॥केंचनव्हेतेंवांढूक्यआणावें॥द्वणोनिकरुद्व-
णसीतेंनव्हे॥बहुतकरुनी॥९६॥होजीचांपादरीनभरना॥काणहीवेळीअनंत॥कायमथ्यान्हीसविता॥मावळतआहे॥९७॥पैतुजअ-
खंडिताकाळा॥तिनीआहानीजीवंळा॥त्यानिन्हीपरिसवळा॥आपुण्यालियासमर्थ॥९८॥जेवेळीहोलागोउत्पत्ती॥तेवेळीस्थितीप्रळ-
यहारपनी॥आणिस्थितिकारुनिभरवनी॥उन्पनिप्रकृत॥९९॥पाटीप्रळयाचियेवेळें॥उत्पत्तिस्थितिमावळें॥हेंकायसेनहोनट
के॥अनादियेसं॥१००॥द्वणोनिआजितवभरंभगे॥स्थितीवत्तिजनआहेभगे॥एथ्यासिसीतुंहंनलो॥माझाजीवी॥११॥तंतव-
काळाचाहीकीजना॥मावळुंकाळआदिकना॥अनीन्हीचिनयना॥काळगिनरुद्व॥१२॥तंवसकेंतेदेवबाळें॥अगाथादोहीसैन्याचेंभरणपु-
रलें॥तेंप्रत्यक्षचिनुजदाविलें॥यंरथथाकाळेंजणा॥३॥हासकेंतजवअनंत॥वेळुलागलाबोलना॥तंवअजुनैलोकमायुता॥देशि-
लायथास्थिता॥४॥मगद्वणानसेदेवा॥दंसूत्रीविषवलाधया॥जगआळामांआववा॥पूर्वस्थितीपुढती॥५॥परिपडिलियादुःखमा-
पादः॥११॥तें॥१२॥बरीदेविलें॥१३॥ती॥१४॥दृष्टायः॥१५॥नटके॥१६॥नगी॥१७॥सैन्यासीनः॥

गरी ॥ तं काटि सीका जया परी ॥ तं किर्ति तु द्वा त्थी हरौ ॥ आठवित असं ॥ ६ ॥ किर्ति आठविता वेळो वेळो ॥ भोगी तसे महा सुखाचा
 सा हा का ॥ नेथ हर्षी भूत कल्ले का ॥ वरिलो कृत आहो ॥ ७ ॥ देवा जिया नेपणें जगा ॥ धरितु आठवी अनुशगा ॥ आणितु दुष्टा नथा भगा ॥
 अधिका धिका ॥ ८ ॥ पें विष्णु वर्ना चिया रास सा ॥ महा मय तं दुर्ध केशा ॥ द्यणां नि पकृती नि दाही दशा ॥ पें द्वा कडे ॥ ९ ॥ ऐस र नर
 भिद्ध किन्नर ॥ किबहु नाच चर ॥ तें तु ज र खो नि हर्ष नि मर ॥ न म स्का रि त भ सती ॥ १० ॥ क र्मा च्च ते न न मे र स्म हा म्भ न
 गरी य से ब्र ह्म ण्य्या दि वन ॥ अ न त दे व श ज ग न्वा स द्वा स द्वा र स द स त न्वा र य न ॥ ३ ॥ ११ ॥ ए थ गा क व णा का र णा ॥ रा स स ह न
 रा य णा ॥ न ल ग र्ता चि च र णा ॥ प कृ त जे जा हा न्ते ॥ १२ ॥ आ णि हं का य नु ते पु सा वे ॥ ये तु लें आ द्या स ही ज णा वे ॥ त रि सूर्यो द यी रा द्रा वे
 ॥ क र्मे नि त मे ॥ १३ ॥ जी तें स्व म का या चा आ रा र ॥ आ णि जा हा ला आ हा र यो च र ॥ द्य णां भि नि शा च गं व र ॥ प्र ट ला स ह जे ॥ १४ ॥ हे
 ये तु लें दि व स आ द्या ॥ कां ही न णे वं चि त्थी रा सा ॥ आ नं दे ख त से मां हि मा ॥ गं भो र नु द्रा ॥ १५ ॥ जं थू नि ना ना सु धी चि या वोळी ॥ प
 सर ती भू त त्रा मा चि या वे र्थी ॥ न या म ह द्वा तें द्या न्दी ॥ दो व र्का द छ ॥ १६ ॥ दे या नि सी म स त्व स दो दि त ॥ दे व नि सी म गु ण अ न न ॥
 दे व नि सी म सौ म्य स त त ॥ न रें द र वां ची ॥ १७ ॥ जी त्ति ज ग ति यो ला वा ॥ अ क्ष र त्व स दा शि वा ॥ तो चि स द स त दे वा ॥ त या द्वा अ ती त ने
 त्ते ॥ १८ ॥ त्व मां दे वः पुर षः पुरा ण म्ब म स्य वि श्व य प रं भि धा न म ॥ वे त्ता भि वे द च प र च था म त्वा ता नो वि श्व भ न न रू रा ॥ १९
 टी ॥ तं म क्ति नि पुरु षा चि या आ दी ॥ जी म ह त्वा त्ति चि अव र्धी ॥ स्व यं त् अ ना दी ॥ पुरा त न ॥ १८ ॥ तं स क ठ वि श्व जी व न ॥ जी वो भि हू
 चि नि धा न ॥ भू त भ गि य्वा चे ज्ञा ना ॥ तु द्वा चि हा ती ॥ १९ ॥ जी त्ति चि या ला च ना ॥ स्व रू प सु र व त्ति चि अभि न्न ॥ त्रि भु व ना चि या आ य
 त ना ॥ आ य त न त्ते ॥ २० ॥ द्य णां नि जी प र म ॥ त्ते त्ते द्य णि जे म हा थ म ॥ क ल्या ती म ह द्वा स ॥ तू न मा जि र गे ॥ २१ ॥ कि ब हु ना नु वां दे व
 पाठ ॥ ओं १० येर ॥ ओं १६ सांसे ॥ ओं २१ नु म्रिया अंका ॥

७

३

७

७

॥ विश्वविस्तारि लुआहे आश्रवें ॥ तरि अनंत रूपावानावें ॥ कवणें तुजें ॥ २२ ॥ श्लो० ॥ यायुयंमोग्निर्वरुणः शशांकः प्रजापतिस्त्वम
पितामहश्च ॥ नमोनमस्तेस्तु स हस्तकृत्यः पुनश्च भृश्यापिनमोनमस्ते ॥ ३१ ॥ नमः पुरस्तादथ पृष्ठतस्तेनमोस्तु ते सर्वत एव सर्वो अ
नंतवीर्याभिनि विक्रमस्त्वसवसाम्ना विततां ससवः ॥ ८ ॥ टी० ॥ जीकाय एक ते नक्षसी ॥ कवणें ठायीं नमसी ॥ हें असौ जे साया
हासी ॥ तें सियानमो ॥ २३ ॥ वायु तूं श्री अनंता ॥ यम तूं नियमिता ॥ याणि गर्ण वि सना ॥ अग्नि तूं ॥ २४ ॥ वरुण तूं सोम ॥ त्वष्टा
तूं ब्रह्म ॥ पितामहाचा ही परमा ॥ आद्य जनक तूं ॥ २५ ॥ आर्णाक ही जें जें काही ॥ रूप आशी अथवाना ही ॥ नयानमो तुज ते सया ही ॥
श्री जगन्नाथा ॥ २६ ॥ ऐसें सानुरागें चित्तें ॥ नमन के लें पांडु स्तुतें ॥ मगा पुढती द्योने नमस्ते ॥ नमस्ते प्रभो ॥ २७ ॥ पाठीं तिये सांचतें ॥
न्याहाळि श्री स्तुतें ॥ आणि पुढती द्योने नमस्ते ॥ नमस्ते प्रभो ॥ २८ ॥ पाहून पाहतो मांतें ॥ समाधान पावे चित्तें ॥ आणि पुढती ह्य
णे नमस्ते ॥ नमस्ते प्रभो ॥ २९ ॥ इयें चराचरी जें स्तुतें ॥ यें वच देखत यांतें ॥ आणि पुनः पुना द्योने नमस्ते ॥ नमस्ते प्रभो ॥ ३० ॥ ऐसीं रूपे
नियें अद्भुतें ॥ आश्चर्य स्फुरती अनंतें ॥ तंव तंव नमस्ते ॥ नमस्ते चि द्योने ॥ ३१ ॥ आणि कस्तूरी ही ना ठवे ॥ आणि निवांत ही न सवे ॥
नणें कैसा प्रेम भावें ॥ गार्जो चि द्योने ॥ ३२ ॥ किंबहुना इथा परी ॥ नमन के लें सहस्र वरी ॥ किं पुढती द्योने श्री हरी ॥ तुज सन्मुखानमो
॥ ३३ ॥ देवांसि पाटि पोट आधिकी नाहीं ॥ तें पोट पोरगा भ्राह्मकांड ॥ तरि तुज पाटि मों रया ही ॥ नमो स्तासी ॥ ३४ ॥ उष्मा माझिये पाठीं
सी ॥ द्योने निपाटि मों द्योणां वें नृहारासी ॥ सन्मुख विच्युत जें गें सी ॥ न घडें तुज ॥ ३५ ॥ आनां वेग काळिया अवयवां ॥ नेणें रूप कंठ देवा
॥ द्योने निमो तुज सर्वा ॥ सर्वात्मका ॥ ३६ ॥ जी अनंत बळ संप्रभमा ॥ तुज नमो अमति विक्रमा ॥ सकळ कार्कासना ॥ सर्व देशों ॥ ३७ ॥ आ
श्रविया आकाश जें सें ॥ अवकाश चि होउनि आकाश असं ॥ तूं सर्व पणें तें संगत लासि सवें ॥ ३८ ॥ किंबहुना केवळ ॥ सर्व हें हू चि नितिव
पाट-ओं-२३ काय काय-ओं-२८ पाठीसी-ओं-३० समस्ते-अयं ईला-ओं-३७ देवा-

नै॥ परस्त्रीरणविक्रया॥ पयाचंसे॥ ३०॥ द्यणो नयादेवा॥ त्वेव गद्या तच्छर्मस्यवा॥ ह आन्दभजसद्भावा॥ आनातो चसव॥ ३०॥
 श्लो०॥ सर्वस्मिन्वाग्रभयदुक्तं दंष्ट्रणा हेया दह संवर्ति॥ अज्ञानमाहिमानं तवेदमयायमादायणयेनवापि॥ ३१॥ हे०॥
 पररेषियातृस्वामी॥ काहेचनेगोजी आह्वी॥ द्यणो नसोयग्यंवेधमी॥ गहतन्नातृजनयो॥ ३२॥ अहाथारवा उरजाह्वो॥
 अमृतं संपाजनम्याकुलं॥ गार्ग्यं कुंधर्मनिदं॥ कामं धनुतं॥ ३३॥ यस्मान्मन्वदवाचि जाडन्य॥ योतेफाईन आह्वीगोह्वो॥
 घानल्लो॥ कन्यनरुतोडो निवेल्लो॥ कृपशाना॥ ३४॥ निजामणोत्तं रियाणो नृगर्भो॥ नणंयकानेवाताकुं वागो॥ इल्लो॥ तैरोनुझी
 जवळी कथाडिल्लो॥ मोगानपणो॥ ३५॥ हे आ जचोचि भाहो गोरुदे॥ भवणं मुझ हंनदे॥ गदपगवळ नृमुदे॥ सारथी किल्लो
 मी॥ ३६॥ ययाकोर दो चियायरा॥ विष्टादं गडिल्लो भिदानारा॥ गम्यावीधो जभयो जरागगरो॥ विजळो जिय आह्वी॥ ३७॥ तंयोगि
 योचं सभाधिसुख॥ कुसाजाणे चिनामी सुख॥ उपरोध जास सुख॥ तुजरोल्लो॥ ३८॥ न्यो॥ यथावहायार्थमसक्तं नोसि वि
 हाशय्यासनसो जनपु॥ एकोथवाथ्यच्युतनत्स भक्षनक्षाम यत्स॥ सदसमयम॥ ३९॥ दो॥ ४०॥ तंयविधवाचि भ्रमादिभादो॥
 वैससीजिये सभासदो॥ तंयो सोयरीवो॥ चया संवधी॥ गद्योवालो॥ ४१॥ विष्णो कुरुच्छायंको॥ तंरतुं अंनि अगोमानपावो॥ न-
 मानिसीतरी जावो॥ स्वयं निसन्तुगी॥ ४२॥ पायालगो निवु झावणी॥ लुझादो यो झाडू पाणी॥ यो हजगशी कुरणी॥ बहुकल्लो
 आह्वी॥ ४३॥ स्वजन्मण चियावाला॥ तुजमुदं वेसं उपगता॥ हागडस यो कटा॥ मरि कुरुच्छो आह्वी॥ ४४॥ दवो भिकोलका
 दीपुरु॥ आखाडां झोबीलो बीकरु॥ मारोखनु नानस्कारु॥ न करेही भाडो॥ ४५॥ नो गनरो गुरी भागो॥ सर्वजासिका बुद्धीसा
 गो॥ नेवीं चिद्वणो कायल्लो॥ तुझे आह्वी॥ ४६॥ गंगा अपराध हा आह॥ जावि भवर्त्तनिसमाये॥ नानगनाचि कोपाये॥ सिवनि
 गद॥ ओ॥ ३९॥ निवळ॥ ओ॥ ४६॥ जी॥ ओ॥ ४७॥ देवाभि॥ अविस्करु॥ ओ॥ ४८॥ आडविनि॥

लेतुसे ॥ ५४ ॥ देवबोनयाचअवसरी ॥ लोभेंकीर आठवण करी ॥ परिमाझानिस्तुगगर्वअवथारी ॥ जेफुगूंचेबेसो ॥ ५५ ॥ देवाचिया
 भोगायननी ॥ खेळतांआशंकेनामनी ॥ जोरिगोनियांशयनी ॥ सारिसापहुं ॥ ५६ ॥ रुखाह्मणोनिहाकारिजे ॥ यादवपणेतुंतेले
 रिवजे ॥ आपलीआणशालुजे ॥ जातांतुज ॥ ५७ ॥ मजएकसर्नबैसणें ॥ कांतुझाबोलनमानणें ॥ हेंवोनदीचेनिदाटपणें ॥ बहु
 तघडलें ॥ ५८ ॥ ह्मणोनिकायकायआतां ॥ निवेदेजेतुअनंना ॥ मीराशिआहंसमस्तां ॥ अपराधांची ॥ ५९ ॥ यालागीपुढाअच-
 वापाटी ॥ जियेराहाटलांबहुवेंवोरवटी ॥ नयेमायेचियापरिपेटी ॥ सामावीप्रसो ॥ ६० ॥ जोकोणहीएकेवेळे ॥ सारिताघेउंनियेतीरव
 डुळें ॥ नयेसामाविजेनिमिधुजळें ॥ आनरुपायनाहीं ॥ ६१ ॥ तेंसीपीनीकांप्रमादें ॥ देवेंसीमजविरुद्धें ॥ बोलविलींभियेंमुकुदें ॥
 रुपसाहावीजी ॥ ६२ ॥ आणदेवाचेनिस्तमलेंक्षमा ॥ आधारजालीआहेयाभूतयाभा ॥ ह्मणोनिजीपुरुषोत्तमा ॥ विनवृत्तेथोडें ॥
 ६३ ॥ तरिआतांअप्रमेया ॥ मजशरणागनाआपुलिया ॥ क्षमाकीजोजीचया ॥ अपराधांसि ॥ ६४ ॥ श्लो ॥ पितासिलोकस्यचराच
 रस्यत्वमस्यपूज्यश्चगुरुर्गरीयान् ॥ नत्वत्समोत्स्यभ्यधिकः कुतोऽन्योलोकत्रयेप्ययनिमप्रभावः ॥ ६५ ॥ दी ॥ जीजाणीतलोभ-
 यांसाचें ॥ महिमानआतांदेवाचें ॥ देवोद्वेगचराचराचें ॥ जन्मस्थान ॥ ६५ ॥ हरिहराद्वेगस्थानां ॥ देवातुंपरमदेवता ॥ वेदानेंहीप
 रविता ॥ आद्यरुतं ॥ ६६ ॥ गंधीरतुंशीरामा ॥ नानाभूतैकसमा ॥ सकळगुणअप्रनिमा ॥ अद्वितीया ॥ ६७ ॥ तुजसींनाहोंसरि
 से ॥ हेमनिपादनकायसे ॥ तुवाजालेनिअवकाशो ॥ सामाविलेंजगा ॥ ६८ ॥ नयातुझेविपाडुंजे ॥ ऐसेंबोलतांचलाजिजे ॥ तेथअ
 धिकाचिकीजे ॥ गार्हिकी ॥ ६९ ॥ ह्मणोनिभिपुवनीतुंएक ॥ तुजसारिवानांहीआणिक ॥ तुझामहिमाआलोलिक ॥ नेणजेवानू
 ॥ ७० ॥ श्लो ॥ तस्मात्पुणाम्यपिणधायकायप्रसादयत्नामहर्षिशमीक्ष्यम् ॥ पितैवपुत्रस्यसखेवसरव्युः प्रियः प्रियायाहोमिदेव
 णट् औं ६० प्रतिपादनाचि-

सोदुम् ॥ ४४ ॥ दी ॥ ऐसो अजुने द्यगितने ॥ मगपुतर्तदुवलयानन्दे ॥ नैयसान्निकाचे आले ॥ भरतेतयो ॥ ७५ ॥ मगद्वणतसेप्रसीद
 प्रसीद ॥ वाचाहोतसेसहृद ॥ कादोजीअपराध ॥ मसुदोती ॥ ७६ ॥ तुजविषयसहृदोतनेकाही ॥ सोयरेपणेनमनूचिपाही ॥ तुजकेशेव
 राचियाठारी ॥ आश्रयेयेले ॥ ७७ ॥ तुवणेनीयपरीलासे ॥ मातेवणिमीपाससे ॥ तशिभयोवागालुजेक्षोसे ॥ अधिकधिक ॥ ७८ ॥ आतारे ॥
 सियाअपरागो ॥ मर्यादानाहीसुकुदा ॥ द्यणमनिरसरभमगादा ॥ पमोनियो ॥ ७९ ॥ जेहोचिबिनवावयालागी ॥ कुंचियागयनामाझिया
 आंगी ॥ परिअपदाजेसेसदगी ॥ बापेसंबले ॥ ८० ॥ पुत्राचेअपराध ॥ जरिजादालेअगाध ॥ तरापितासाहनिहूद ॥ तसेसाहजोजी ॥
 ८१ ॥ सख्याचेउदत ॥ मर्यामाहनिगत ॥ तसेसुखासमज ॥ माहिजोजी ॥ ८२ ॥ प्रियाचियादायोसम्मान ॥ प्रियनपाहसर्वथाजाण ॥ ते
 वीडिच्छिष्टकाटिलेआपण ॥ तसेसार्काजोजी ॥ ८३ ॥ नानरीयाणाचेयोरभेद ॥ मगजनिस्मृतनी ॥ जयेसंकटे ॥ तियेनेवोदितानवाटे ॥ सं-
 कोचकाही ॥ ८४ ॥ काउभितेआंगेजनि ॥ आपणपेरुधुलेजियामनाभावे ॥ नियाकोतिसनाक्रियानरादावे ॥ न्हयजेवी ॥ ८५ ॥ नयापरिजो
 भियो ॥ होविनविलेनुमतंगासाविया ॥ आणीककाहीएकद्वणावया ॥ कारणअमे ॥ ८६ ॥ अटपुर्वहृषितोस्मिदृष्टाभयेनचप-
 व्यधितमनोमे ॥ तदेवमेदर्शयेदेवरूपसीतदेवेषाजगन्निवास ॥ ८७ ॥ दी ॥ तरिवेसोम्यलुगीकेतो ॥ जोविषवरूपाचेआळयेतली ॥
 तंमायवोपुगविली ॥ स्नेहाळाचेनी ॥ ८८ ॥ सरनरुचीझाडे ॥ आराणीलावावीकोडे ॥ देयावेकामधेनुचंपाडे ॥ खेळावया ॥ ८९ ॥ भियान
 क्षुर्धोवपाडावा ॥ चंद्रचंद्रवालागीआवा ॥ हाछुदोसहनिनेलाआयवा ॥ साठुलयेनुवो ॥ ९० ॥ जीयाअभुतलेशालागीसायास ॥ लक्ष्मिपा
 उसकेलाच्यारमास ॥ एखोवाहुनचासेचास ॥ चिंतामणिपरिले ॥ ९१ ॥ ऐसाऊनकृत्यकलास्वामी ॥ गहलकापाठिलातुहो ॥ दाविलेजेह
 रबदो ॥ नायकिजेकानी ॥ ९२ ॥ मांदेरवावयाचेकिउतेपाटी ॥ जयाचीदुपनिपदानाहीमेदी ॥ तेजन्हारोचिपांटी ॥ मजलागीसोइलीद
 पाठ ॥ ९३ ॥ बलपिने ॥ ओ ॥ ९४ ॥ संदु ॥ ओ ॥ ९५ ॥ हरबदो ॥ किवाहरिहरमदो ॥ ओ ॥ ९६ ॥

जीकल्यादिनागैनी॥ अजचीघडीपरनी॥ माझीजेतुलीहोउनी॥ गेलीजन्मे॥ ८९॥ तयाआघवियांचिआन॥ घरडोडीघेडोनिअसे
पाहन॥ परिहोदोखिलीगेकिलामान॥ आंतुडोचिना॥ ९०॥ बुढीचेंजाणणें॥ कहींनवचेचिजयाचेंनिंआणणें॥ हेंसादहीअंतःकरणें॥
करवेंचिना॥ ९१॥ तेंथडोळयांदर्याहोआवी॥ हीगोष्टीचिकायसयाकरावी॥ किंबहुनारेंसेपूर्वी॥ दृष्टनासुत॥ ९२॥ तेंहोविश्वरूपआपुलें
॥ तुह्मीमजडोळादिविलें॥ तेंरुमीझेंमनझालें॥ न्दृष्टदेवा॥ ९३॥ परिआतांरशीचाडजीवीं॥ जेतुजसीगोढीकरावी॥ जवळीकहंभोगावी
॥ आलिंगावयासी॥ ९४॥ एथेंचरूपीकरूह्मणिजे॥ तरिकाणेंकंमुगेंरशीचावळजे॥ आणिकवणारेंवेदेजे॥ तुजेलखानाहीं॥ ९५॥
ह्मणोनिवारियासंवेगंवाणें॥ नटकेगगनारवंदणें॥ जळकेंक्यारेंवळणें॥ समुद्रोकिंउतें॥ ९६॥ यालागिजीदेया॥ एथिचंभयउपजतसे-
जीवा॥ ह्मणोनिथेतुळाल्यावाद्या॥ जेपुरंदंआतां॥ ९७॥ पंचराचरविनोदेंयाहिजे॥ मगनेणेंसरुवेंघरीराहिजे॥ तेंसंचतुष्टुजकूपतु
झें॥ नोविसावाआह्मा॥ ९८॥ आह्मीयागजानआभ्यासावें॥ तेंणेंयाचिअनुभवायावें॥ शास्त्रांतेंआलोहावें॥ पारिमहानताहावि॥
९९॥ आह्मीयजनोकिजनीसकळें॥ पारितोयफळवयेंणेंचिफळें॥ तीर्थेहोतुसकळें॥ याचिन्नागी॥ १००॥ आणीकहीकांहीजेंजे॥
दानपुण्यआह्मीकीजे॥ नयाफळींफळतुझें॥ चतुर्भुजकूप॥ १०१॥ गेसीतेंथिचीजीवाआवडी॥ ह्मणोनिनेचिदेखावयालवडसवडी॥ व
तंतआहजेंसकडी॥ तंफाडिजेवगी॥ १०२॥ अगार्जावीचेंजाणतया॥ सकळविश्वयसविनया॥ प्रसन्नहोइपूजितया॥ देवांचियादेवा॥
३॥ श्लो०॥ कशीटिंगां दनंचकहस्तामिच्छामिलांद्रुमहंतथैवा॥ तेंनवरूपणचतुर्भुजेनसहस्रबाहोभवविश्वभूतें॥ ४६॥ टी०॥ के
सेनोत्पलानेराहावित॥ आकाशाहीरगालावित॥ नैजाचेंवांजरावित॥ इद्रनीका॥ ४७॥ जैसापरिमळजाहालाभरगजा॥ कांआनदा
सिनियालियासुजा॥ ज्याचेंजानूवरीसफरध्वजा॥ जोडलीबरवा॥ ४८॥ मस्तकींमुकुटांतेंलैवविनै॥ कींमुकुटामुकुटमस्तकझालें॥ धृंगारा
पाद-ओ०-१३ सोपिथ-ओ०-१० नंदयेंचि क्रिया द्योयवव, क्षम-ओ०-१८ दन ओ०-३ दोकन.

लुण्ठान्प्रतः॥ आगांचिनिजयाचिया॥ ६॥ इद्रधनुष्याचियंआडणी॥ मांमिमयगांनरंगाणी॥ तेंसंआंबारिलेंशाईपाणी॥ वैजयंतिथा
 ॥ ७॥ आनांकवर्णनिउदारादा॥ अस्मरांतंतकंवत्यपदो॥ वेंसंचक्रहनगोंविंदा॥ सौख्यतजोमरवे॥ ८॥ किंयहुनास्वामी॥ तेंदेखबिया-
 उकोठिनपामी॥ द्यणोनिआनंतुद्वी॥ तेंसयाहांआवे॥ ९॥ द्वेविश्वरूपचासंहन॥ मोगनिचालेजडोळे॥ ओतांहांतानिअंधळे॥ १०॥
 षासुंतिराणी॥ १०॥ तेंसाकारकृष्णरूपड॥ वांचुनिपाहांनावडु॥ तेंनरयतांथोड॥ मानिनातिह॥ ११॥ आह्यांमोगमोक्षाचियाठाणी॥
 श्रीमतिवांचुनिनाही॥ द्यणोनितेसाचिसाकारहाई॥ हेंउपसंहारीआता॥ १२॥ ॥ ॥ श्रीमगावानुवांच॥ ॥ मयाप्रसन्नेनवाजु
 नेंदरूपपरदर्शितमात्मयोगात्॥ तेजोमयविश्वमनंतसाद्यस्त्वंतुदन्त्यननंदरूपम॥ १३॥ टी०॥ याअजुनाचियाबोला॥ विश्वरूपावि-
 स्मयोजाहाला॥ द्यणेंगस्मानाहीदेखला॥ धसाळुक्राणी॥ १३॥ कोणाहुंवल्गुपावलाआहासी॥ तयालाभाचानोधनधेसी॥ मोभेणोंकायने
 णोंबोलुसी॥ हंकाडेसा॥ १४॥ आह्यीसाविषाविजंमभूतहाणें॥ तेंआगांचिवरीद्विणंदेणें॥ यांचोनिजवअसेवेचणें॥ कवणांसिगा॥
 १५॥ तेंहंतुझियेचाडें॥ आंजिजीवांचेनदकराडें॥ कामगुनियायवेदें॥ रांचिंयेआन॥ १६॥ गंसीकायनेणोंतुंझियेआवंडी॥ जाहालाप्र
 संभताआमुचीवेडी॥ द्यणोनिगोप्याचीहीपरिगुदी॥ १७॥ तेंहेंआपाराअपार॥ स्वरूपमाझपरास्वर॥ एधुनिनेअव
 तार॥ कृष्णादिक॥ १८॥ हेंज्ञानतजांचेनिशिवळ॥ विश्वात्मकवचळ॥ अनंतहेंअदळ॥ आद्यसकळा॥ १९॥ हेंतुजवांचोनिअजुना॥ प्रवी
 षुतदृष्टनाहीआना॥ जेजोगेनळेसाभना॥ द्यणोनिचा॥ २०॥ नवदयज्ञाअयननदानेंचक्रियाभिनतपांकिरुये॥ एचरूपः
 शक्यअहंतुंलाकेदुष्टुंस्वदन्त्यनकुरुप्रवीर॥ २१॥ टी०॥ याचीसायपातले॥ आणिवेदोमोनाचयेतले॥ यज्ञकीरमापेंतेआले॥ स्वर्गोनि
 या॥ २२॥ साधंकीदेखिन्नाआयास॥ द्यणोनिवाळिलायागाथ्यास॥ आणिअथयनीसोरसा॥ नाहीएथ॥ २३॥ सौगंचौसत्कर्म॥ धावि

पाठः ओं० ८ मंदाः ओं० १० म्वादुः ओं० १६ मंकाडः ओं० १६ जीविनिः ओं० २० अथयनः

नलांसि संप्रभं ॥ तिही बहुते कींच्ये ॥ सत्यलो कर्ता किला ॥ २३ ॥ तपोगे श्रव्य देखिजे ॥ आणि उभयांचि उग्रपणा सांडिले ॥ एव तपसा प
 ना जे दले ॥ अपारा नरे ॥ २४ ॥ तें हनुवा अनायासे ॥ विश्वरूप देखिजे जेसे ॥ इयं मनुष्यना कीर्तनेसे ॥ न पावे चक्रवर्णा ॥ २५ ॥ आजि आनस
 प नि लागी ॥ तृणकचि आथिला जगी ॥ हे परम प्राण्य आगी ॥ चिन्ही ही नाही ॥ २६ ॥ म्लो ० ॥ माने व्यथा माचि निमूट भावो दृष्टा रूप धोर
 भी ह्रस्व मेदस ॥ व्यपेत मी ॥ यीन मना ॥ पुनस्त्व तदे मेरु पमिदं य पश्य ॥ २७ ॥ टी ० ॥ द्यणो नि विश्वरूप ला संस्लाय ॥ एधि चैन पने येन य
 ॥ हं वाचु नि अन्य चांग ॥ नमनी काही ॥ २७ ॥ हांगास मुद्र अस्मत्वा मरला ॥ आणि अवसात वर पडा जाहाला ॥ मग कोणी ही आधि-
 वांसी डिला ॥ बुडि जे लक्ष्मणी नि ॥ २८ ॥ ना तरी सोनया चाडों गंग ॥ यं सणा न च ले हा थोर ॥ गेसें द्यणो नि अक्षर ॥ करणे घडे ॥ २९ ॥ देव वि
 तां मणी लेइजे ॥ कीं हे ओझें द्यणो नि सांडिजे ॥ काम धेनु दया इजे ॥ न पागे ये द्यणो नी ॥ ३० ॥ चंद्रमा आलिया घरा ॥ द्यणि जे निगे कोर
 तो सि उबारा ॥ पडि साथि पाडि नो सि दिन करा ॥ परता मग ॥ ३१ ॥ तें सें गे श्रव्य हं म हा ने ज ॥ आजि हाता आले आ हे स हज ॥ कीं एथ लुजगा
 जबज ॥ हो आवी को ॥ ३२ ॥ परि नेण सी च गो व दया ॥ काय को पें आ नो य नं जया ॥ आग सांडा नि छाया ॥ आलिं गि नो सिमा ॥ ३३ ॥ हें न
 वें जो मी सांचें ॥ एथ म न करु नियां काचें ॥ प्रेम धरि सी ॥ आंग वणि येचें ॥ चतुर्भुजें ॥ ३४ ॥ तरि आझा नि वरी पाथी ॥ सांडां साडी हे आ
 स्या ॥ धियो विषयी अनास्या ॥ धरि सी द्यणी ॥ ३५ ॥ हेरूप जे गि योर ॥ विरुत नि आनि थोर ॥ तरि कृत नि श्रया चं घरा ॥ हें चिकरी ॥ ३६ ॥ -
 रूपणा चि नर नि जे सी ॥ गोंवा नि घाली देव या पार्सी ॥ मग नुस धे न देह सी ॥ आपण असे ॥ ३७ ॥ को अजात पक्षिया जवळा ॥ जीव ठेनि
 अधिमाळी ॥ पक्षिणी अंतराळा ॥ माजि जाये ॥ ३८ ॥ नाना गाय नरे डांगरी ॥ धारि चि न बांधिलें वत्सो पारी ॥ तैसें प्रेम एथि चं करी ॥ स्या
 न पती ॥ ३९ ॥ येरें वरि चि ले नांचे ॥ बान्धु सखया स्तस्वा पुरते ॥ भोगि जो कां श्री मूर्तीनें ॥ चतुर्भुज ॥ ४० ॥ परि पुटत पुटनी पाडवा ॥
 पाठ ॥ ओं २३ सांगें ॥ टीकिला ॥ ओं ३३ गावे दया ॥ ओं ३४ अवगणि येचें ॥ ओं ३७ न संध ॥ ओं ३८ विगाळा

हा एक बालन विसर्गवा ॥ जो यं यं रूपं हुनैस्स द्रावा ॥ नेदां वीनियो ॥ ६॥ इकं हानन्दते चिदभिव्यक्तं ॥ द्योना निमयं जंतुं जडं प्रजलं ॥ तं सा दीन
 एष सं चले ॥ असौ देयम ॥ ६२ ॥ आतो कुरु तुजया सारिवे ॥ एस्मै द्या गितं नो विषवनां मुखे ॥ नरिमागीलरूपस्तु स्वे ॥ न्याहाळीं गंदे ॥ ६३ ॥
 श्लो ॥ ॥ संजय उवाच ॥ १ ॥ दय जुन वास देवस्मथो न्का स्वकुरु परदर्शया मासं मृयः ॥ आश्वासया मास च भीतमं न भूत्वा पुनः स्म
 यय पुर्महात्मा ॥ ५० ॥ टी ॥ ॥ सं वाक्य बालन रयवो ॥ मागुता भुमृथ जाहाला देवो ॥ इना परि नवदावो ॥ आवडी चानिये ॥ ६६ ॥ श्री क
 षाचि वन्य उघडे ॥ वरिस्वस्ति विश्वरूपा यवद ॥ हातो दिधने कानावड ॥ अर्जुना सि ॥ ६७ ॥ वस्तु घडे निवाळिजे ॥ जें सं रत्ना सि द
 षण रे विजे ॥ नानरी कन्या पाहुनिया ह्यगिजे ॥ मनान ये हे ॥ ६६ ॥ तया विश्वरूपा ये वदी दशा ॥ करि नाथी तीचा वाढ के सा ॥ शोला दे
 धला सं उप दशा ॥ किरीटी भिदे व ॥ ६७ ॥ मोडो निमंगारा चारवा ॥ नृणां य इले आप निदया सवा ॥ मग ना वडे जरी जीवा ॥ तं रिआ टि ने पु
 दुती ॥ ६८ ॥ तें सें शिष्या चियं ग्रीति जाहान ॥ कृष्ण त्वहाने विश्वरूप जाळे ॥ तं मनान ये चिमग आगिले ॥ कृष्ण पण भागुते ॥ ६९ ॥ हा ट
 व वर शिष्या चीन कर्मा ॥ साहाने गुरु आहारी कृणो दर्शो ॥ परि ने गिजे आवडी कर्मा ॥ संजय द्यो ॥ ५० ॥ मगो विषव व्याघ्र निमग
 वंते ॥ जें दिव्य नज प्रकटल हाते ॥ ती चि सा मा वलं भागुते ॥ कृष्णारूपी नियो ॥ ५१ ॥ जें सं त्व पर दह आघवे ॥ तन्य दो सा भावे ॥ अथ वा दु
 माकार सो ठवे ॥ बीज कोण के जे वी ॥ ५२ ॥ नातरी स्वसं सप्तम जे सा ॥ गिळिजे चे इला जीव दशा ॥ श्री कृष्ण योग हा ते सा ॥ संहार
 लातो ॥ ५३ ॥ जें सीम सा हार पलीं बबी ॥ कीजळ दुसपती नमी ॥ नाना भर्ते सिंधु गर्भा ॥ शिगाल राया ॥ ५६ ॥ हा को जे कृष्णारु
 ती चिय मोडी ॥ होतो विश्वरूप पदा चिय डी ॥ तें अर्जुना चिय आवडी ॥ उकरुनि दो विली ॥ ५५ ॥ तव परमाणु वारगा ॥ तेणें देखि
 लें सा विद्या चांगा ॥ तेथ्या हकी येन व्हे चि लागा ॥ द्योना निघडी केली पुदती ॥ ५६ ॥ तें सं वाटिचे निवड वसपणो ॥ रूपें विषव जिनि ले जे
 पाट ॥ ओं- ६१ नद्यावें ॥ ओं- ६४ असो परि ॥ ओं- ६९ केलें ॥

जेषो॥ तं सौम्यक्रोदिसवाणो॥ साकारजाहलें॥ ५७॥ किंबहुनाअनंतें॥ धारलेंधाकुटपणभागुतें॥ परिआश्वासिलेंपार्शतें॥
बिहालियासीं॥ ५८॥ जोस्वामीस्वर्गांगला॥ तोअवसांतजेंसाचेंदला॥ तेंसाविस्मयजाहाला॥ किरीटीसीं॥ ५९॥ नातरीगुरुकृपमेवें॥
वोसरलेयाग्रपंजनआधवें॥ स्फुरतलेतवीपांडवें॥ श्रीसूनिदरिली॥ ६०॥ नयापाडवारेसेंचिनी॥ आडाविश्वरूपाचीजवनि
काहोनी॥ तोफोटोनिगेलीपर्योती॥ हंभळेंज्झालें॥ ६१॥ कायकाळांतजिणोनिआला॥ कंमहावातमार्गांसांडला॥ आपुलियाबाहो
उतरला॥ सातहीसिंधु॥ ६२॥ तेंसासनापबहुचिंतें॥ घेइजनअसेपंडुकतें॥ विश्वरूपापाटीकृष्णांतें॥ देखोनियां॥ ६३॥ मगसूया
चियाअस्तमानी॥ भागुनीतारागुवनीरागनी॥ तसादेख्योन्नागलाअवनी॥ लोकांसाहत॥ ६४॥ पाहतेंयेंतेचिकुरुसेव॥ तेंसोचिदेखदो
हींभागीगोत्र॥ वीरवपनातिशस्त्राव॥ संघटवरी॥ ६५॥ नयाबाणाचियामांडवाआंत॥ तेंसाचिरशदेखनिवांत॥ धुरेबेसलालस्मी
कात॥ आपणतळी॥ ६६॥ ज्यो०॥ ॥ अर्जुनउवाच॥ ॥ द्रष्टुंदमापुंश्वरूपनवसोप्यजनादन॥ इदानींमस्मिंसंवत्तः सचेताः प्रकृ-
तिगतः॥ ५९॥ टी०॥ एवमागिलेंजेंसेंसें॥ होखलेंवीरविक्राम॥ मगद्वणेजीजियालोरेसें॥ जाहालेंआनो॥ ६७॥ बुद्धीतेंसांडो
निज्ञान॥ भणेंवळथेलेंरान॥ अहंकारसींमन॥ तंशधर्जाहालें॥ ६८॥ इंदियंप्रवृत्तीसुलली॥ याचावाचकपणाचुकली॥ ऐसीआ
पंपरीहोनीजाली॥ शरीरग्रामी॥ ६९॥ तिचेआधर्वाचिभागुतो॥ जयतिंभलदीप्रवृत्ती॥ आतांजिनाणेंश्रीसूनी॥ जाहालेंथिया॥
७०॥ तेंसेंसंखनविघेतलें॥ मगश्रीकृष्णातेंद्वानितलें॥ भियांनुमंचेरूपदंशिलें॥ मांनुषहें॥ ७१॥ हंरूपदारववणेंदेवराया॥ कींम
जअपल्याचुकलिया॥ बुझावोनितुवाभाया॥ स्तनपानदिधलें॥ ७२॥ जीविश्वरूपाचियासागरी॥ हांतोनरगमविनचोवेवरी॥ तोइ
येनिजमूनच्यानीरी॥ निगालेंआनो॥ ७३॥ आदकेंदरकापुरसहाडा॥ मजसुकतियाजीझाडा॥ हेमदीनव्हेबहुडा॥ मंधा-
चांकला॥ ७४॥ जीसाविथाचितपाकुटली॥ तयामजअमृतसिंधूहामंढला॥ आतांजिण्याचाफिटला॥ अमरवसा॥ ७५॥ मां

श्रियाहृदयरंगणी ॥ द्रोताहृदपलतांचीलावणी ॥ सखेसीबुझावणी ॥ जाहालीमज ॥ ७६ ॥ श्लो० ॥ ॥ श्रीभगवानुवाच ॥ सुदुर्दर्शभि
दंरूपंदृष्टवानासियन्मम ॥ दंबाव्यस्यरूपस्यनित्यदर्शनकोक्षिणः ॥ ५० ॥ टी० ॥ यथापार्थानियाबोलासवें ॥ हंकायह्मणितलेदेब ॥ तु
वंप्रमेदवूनियावें ॥ विश्वरूपींक ॥ ७७ ॥ मगइयेमीमूर्ती ॥ भेदावेंसाडयाआयती ॥ तेंशिकवणसुमद्रापती ॥ विसरलाभां ॥ ७८ ॥ अर्गा
आंधळयाअर्जुना ॥ हाताआडियांमूरुहंझायसाना ॥ एसाआश्रिमना ॥ चुकीचाभावो ॥ ७९ ॥ तरिविश्वात्मकरूपडें ॥ जेंदाविकेंआह्या
तुजपुढें ॥ तेंशंभूहीपरिनजोडें ॥ तंपेंकरितां ॥ ८० ॥ आणिअरुणादिसंकीर्ती ॥ योगीशणनातिकीर्ती ॥ परिअवसरनाहींमंटी ॥ ज
याचिये ॥ ८१ ॥ तोंवश्वरूपएकादंवळ ॥ कर्मनंदरवोंअकुमाळ ॥ ऐसंस्मरतोकाळ ॥ जातसेदेवां ॥ ८२ ॥ आशंचियाअंजुकी ॥ देउ
निहृदयाचियानिदकी ॥ तेंचातकनिराकी ॥ लागलंजेंसो ॥ ८३ ॥ तेंसउत्कटानिभर ॥ होउनिथासुरवर ॥ घोकीतआटहीपाहर ॥ भे
रीजयाचो ॥ ८४ ॥ परिशिवश्वरूपासांरिग्वें ॥ स्वर्मांहीकोणहीनंदरव ॥ तंप्रत्यक्षनुवासरवें ॥ देखिलहं ॥ ८५ ॥ श्लो० ॥ नाहवेंदनेतप
सानदाननचेज्यया ॥ शक्यएवंविधाद्रुद्रुष्टवानसिमायया ॥ ५३ ॥ टी० ॥ पेंउगायांसिवाटा ॥ नवाहनीएथसुभटा ॥ साहीस-
हीतवाहूटी ॥ वाइलावेंटी ॥ ८६ ॥ मजविश्वरूपाचियामाहरो ॥ चालावयाधनुधरा ॥ तर्पाचियाहीसवंपारा ॥ नव्हचिलागा ॥ ८७ ॥
आणिदानांदेकीरकानहें ॥ मीयज्ञाहीतैसानसांपडें ॥ जैसैनिकासुरवाडें ॥ देखिलतुवो ८८ ॥ तसाणीएकीचपरी ॥ आतुडंगाअवधारी ॥ जरीभक्ती
येउनिवरी ॥ चित्तेंतेंगा ॥ ८९ ॥ श्लो० ॥ भक्तालनन्ययाशक्यअहंमवेंविशार्जुन ॥ ज्ञातुद्रुचतन्वनमवेंचुचप्रतरतप ॥ ५४ ॥ टी० ॥ परिने
चिषक्तीऐसी ॥ पजन्याचीसुदकाजसी ॥ धरावाचूनिअनारिसी ॥ गनीचनेण ॥ ९० ॥ कांसकजळसयाचे ॥ घेउनसमसुद्रांतोंगवसिनो
॥ गांगजैसीअनन्यगती ॥ भिनलीचिघिळें ॥ ९१ ॥ तेंसंसर्वभावसंपारें ॥ नयगतयेमएकसरें ॥ मज्जाजिसंचरें ॥ मीचिहांउनी ॥ ९२ ॥ आणिने

पार.ओं-८४ नर.ओं-८६ चोहरा.ओं-८८ रानादिका.ओं-९२ नूमज.५

वीं चित्रीयेसा ॥ शड्येमाश्रापीसंरिप्सा ॥ क्षीराध्विक्वजेसा ॥ क्षीराचिचि ॥ १३ ॥ तैसैमजलागुनीमुंगविरी ॥ किंबहुनाचरचरी ॥ भजनभिकंदुस-
री ॥ परीचिनाही ॥ १४ ॥ तथाचिरुणासवें ॥ एवविशमीजाणावें ॥ जाणिलतातरीस्वभावें ॥ रूढहीहोयें ॥ १५ ॥ मगइपनीअग्निउद्दोपे ॥ आणि
इधनहोभाषहाराये ॥ तेंअग्नीचिहोडनिआरोपे ॥ भूतेजवी ॥ १६ ॥ कांडुदयनकीजेतेजाकरें ॥ तंवगगनचिहोडनअसेआधारें ॥ मगपुढील
याएकसरें ॥ भकाशहोयें ॥ १७ ॥ तैसंभाझियेसाक्षात्कारी ॥ सरअहंकारचिवारी ॥ अहंकारलोपीअवधारी ॥ हंतजाय ॥ १८ ॥ मगमीतेंह-
आधवें ॥ एकर्मनिअथिस्वभावें ॥ किंबहुनासामावें ॥ समरसंती ॥ १९ ॥ ब्लो ॥ मलमरुच्ययरभोमद्रुक ॥ संगवर्जित ॥ निर्वैर ॥ सर्वभूतबु-
ध ॥ सामाभेनिपांडव ॥ २० ॥ इतिश्रीमद्भगवद्गीतासुगनिषन्मब्रह्मविद्यायोगाश्रास्त्रेश्रीकृष्णार्जुनसंवादेविश्वरूपदर्शनयोगनामए-
कादशोऽध्यायः ११ ॥ ॥ जामजचिएकालागी ॥ कर्मवाहानसंआगी ॥ जयामजवाचोनिजगी ॥ गोमटेनाही ॥ ७० ॥ दृष्टादृष्टसकळ ॥ जया-
चेंमीनिकेवळ ॥ जेणेंजिण्याचेंफळ ॥ मजचिनामदोविलें ॥ १ ॥ मगभूतेंदभाषाविसरला ॥ जेंदोमीचिआहेसूतला ॥ द्वाणोनिनिर्वैरजा-
हाला ॥ सर्वत्रभजे ॥ २ ॥ ऐसाजोभक्तहोयें ॥ तयाचेंविधातुकइजजाय ॥ तैमीचिहोडनिवाये ॥ पांडवगा ॥ ३ ॥ ऐसंजगदुरदोदलें ॥ ते
णेंकरुणारसरसाळें ॥ संजयोस्यणेबोलिलें ॥ श्रीकृष्णादवें ॥ ४ ॥ यथावरीतांपांडुकुंमर ॥ जाहालाआनंदसंपदायार ॥ आणिकृष्णचर-
णचतुर ॥ एकतोजगी ॥ ५ ॥ तेंणेंदेवाचियादोनहीसूती ॥ निकियाज्याहाकिलियाचिती ॥ तंवविश्वरूपहूनि कृष्णाकृती ॥ देखिला-
लाम ॥ ६ ॥ परितयाचियेजाणिवें ॥ माननकीजिचिदेवें ॥ जंव्यापकाहूनिनल्हें ॥ एकदेशी ॥ आहेंचिसमशयियालागी ॥ एकदोनचो-
गी ॥ उपपत्तीशाई ॥ दावितजाहाला ॥ ८ ॥ तियाएकानिसुभद्राकानें ॥ चितोआहेंद्वगता ॥ तिरिहोयबरवेंदोहोआन ॥ तेंपुढेनोपुणें
॥ १ ॥ ऐसाआळूचकरुलजिवी ॥ आतापुसतीवोजबरवी ॥ आदरीलनपरिसावी ॥ पुढेकया ॥ १० ॥ यांजळओवीप्रबधें ॥ गोष्टीसांगिजे-
लविनोदें ॥ नेंपरिसाआनंद ॥ ज्ञानदेवद्वणा ॥ १ ॥ भोनिनद्रावाचेंजुळी ॥ भियांवांविद्यापूळ ॥ मोकळी ॥ अपिलेंअधियुगुली ॥ विश्वरूपा-
ची ॥ ७१ ॥ इतिश्रीभावायर्थादीपिकायाज्ञानदेवविरचितायाएकादशाध्यायः ॥ ११ ॥ ८ ओ १८ स्तोत्रे ओ ११ योन्मद्रुच्ययेनिजसिपादमसाद ॥ ६

श्रीगणेशाय नमः ॥ जयजयवोषाद्वे ॥ उदारोऽसिद्धे ॥ अनवरतं आनन्दे ॥ नर्वधिनये ॥ १॥ विषयव्याकें मिथी ॥ दियभिया लुठानाठो ॥
 तेंतु झिये ह्म पाहर्षी ॥ भोर्विहोये ॥ २॥ तरि नवणातेनापणेळी ॥ हेंसे निवोशोक जाळी ॥ जरि प्रसादरसकल्लोळी ॥ उरये मितं ॥ ३॥ येगस्त
 स्वाचिसोहळे ॥ सेवकांनुद्धो निरसं हाळ ॥ सोहं मिद्धे चेलद्धे ॥ पाळसीनं ॥ ४॥ आथारशक्ती चिया अकी ॥ वाहं वसी कोलुकी ॥ नृदयाकाश पस
 रवी ॥ पौरयदेंसी निजे ॥ ५॥ मयक ज्योतीची वांवाळणी ॥ करि सीमनपवनाचें रोवळणी ॥ आत्मस्मरणार्च बाळतणी ॥ लेवविसी ॥ ६॥ सत-
 रावियेचें स्तन्यदसी ॥ अनहानाचा हं लुरगासी ॥ समाधि बोधोनि जनिसी ॥ बुझा उलो ॥ ७॥ ह्यणो भिसा दूका तें माउली ॥ प्रिकसारस्वत लुझि
 यापाउली ॥ याकारणें मीसा उली ॥ नमं डोनुझी ॥ ८॥ अहास हुरुचिये ह्म पाहर्षी ॥ तुझें वारुण्य जयते अधिधी ॥ तोसकळ विद्याविषयसंधी
 धावोहोये ॥ ९॥ ह्यणो निअवेझी मने ॥ निजजनसुल्लभते ॥ आजार्थी माने ॥ ग्रंथी मरुपणी ॥ १०॥ नवरसी भरवी सागर ॥ करवी उचितरत्नांचे
 आगर ॥ प्रवाथेचि गिरिवर ॥ नफज विमाये ॥ ११॥ माहि त्यसो निद्या चियारुण ॥ उयडवी देशिये चिया अस्सोणी ॥ विवेक वल्लीची लाव
 णी ॥ होतें ईस्ये ॥ १२॥ सवाद फळा नयाने ॥ ममेयाची उद्याने ॥ लावी ह्यणें गहने ॥ निरंतर ॥ १३॥ पासा उचि दरकुटे ॥ मोडो वाखाद अक
 दे ॥ कुतर्फीची दुष्टे ॥ सावजें फेडी ॥ १४॥ ओह्मणा गुणो माने ॥ सर्वज करी वासरते ॥ राणि वेंबे सर्वो ज्योतयते ॥ अवणा चिये ॥ १५॥ येम
 हादि ये चियानगरी ॥ ब्रह्मविद्येचा सकाळ करी ॥ येणं दणें सखचिवरी ॥ होतें दयाजगा ॥ १६॥ नृआपुल्लि निस्त्रिह पसुवे ॥ मोते पायुर-
 विशी लुसदेंवे ॥ तरि आतां चिहं आयवें ॥ निमीन माये ॥ १७॥ दये विनवणो ये साठी ॥ अवलो किलें गुरुह्म पाहर्षी ॥ ह्यणो गीताये सोडो ॥
 नबोले बहू ॥ १८॥ तेथ जीतोम हा मसाद ॥ ह्यणो भिसा विद्या जाहाना आनंद ॥ आतां निरोपी नमबध ॥ अवधान दोजे ॥ १९॥ श्लो० अ
 रुंनुवाच ॥ एवं सतत युक्ताये प्रस्तास्ता पर्युपासते ॥ येचाप्यक्षरमव्यक्तेषां केषां योगवित्तमाः ॥ १॥ टी० तरि सकळ वीराधिपज ॥ जो
 पाठ ॥ ओ० १ अनाहृत ॥ ओ० २ नादी ॥ विषय ॥ ओ० ५ पालकी ॥ परि येदसी ॥ ओ० ७ हसुर ॥ ओ० ९ धाना ॥ ओ० ११ रसां ॥ ओ० १७ निर्मोनि ॥ ७

सोमवंशी किञ्च अज ॥ तोषोऽनुजाहोलाभान्मज ॥ पांडुनुगत्वा ॥ २० ॥ हृष्याते ह्यणे अवधारिते ॥ आरुणा विश्वरूपमजदाविले ॥ तेन वल्ल-
 पो भिव्या हान्ते ॥ चित्तमासे ॥ २१ ॥ आणिर्ये ह्यृणा सुते चित्तमेवे ॥ आलागी सोयथ रितो जीवे ॥ तवनको ह्यणे निदेवे ॥ वारिले माने ॥ २२ ॥ तदि-
 व्यक्त आणि अव्यक्त ॥ हंतु विग क भिक्तात ॥ भक्ता पाणि विज्यक्त ॥ अव्यक्त योमो ॥ २३ ॥ यादो नीजी वादा ॥ वृते पावा वया वैकुण्ठा ॥ व्यक्ता व्य-
 क्तदार वंता ॥ शिगेजे जय ॥ २४ ॥ पंजे वा निमाश्यातुका ॥ ते चि वे ग कि ये वा लायेका ॥ ह्यणे भिक्ते देशा व्यापका ॥ सोरसा पाड ॥ २५
 असृता चिया सागरी ॥ जेदा भेसा मथ्या च योरी ॥ ते चि दे अमृत लहरी ॥ वृद्धी येन मिया ॥ २६ ॥ हे कीर माझा चित्ता ॥ मतीति आश्रिजी भि-
 ती ॥ परिर पुसणे योगपती ॥ तैया चिन्तागो ॥ २७ ॥ जेदे वातु ह्मी नावेक ॥ अंगो क्कारि न्ने व्यापक ॥ ते सा च चि कीर वनिक ॥ हे जाणावया ॥ २८ ॥
 तरितु जला गिं कर्म ॥ तं चि जया चें परम ॥ भक्ता भिमनो धर्म ॥ विको भिया तं दे ॥ २९ ॥ इत्यादि संवापरी ॥ जे भक्त तू ते ओहरी ॥ बांधो निया-
 जि कारी ॥ उपासनी ॥ ३० ॥ आणि जे मणवा पलीकडे ॥ वेर गरिये सिजे कानडे ॥ का भिस या हि सांगे ॥ न हो नै जे वस्तु ॥ ३१ ॥ ते अस्पर
 जो अव्यक्त ॥ निदाष देशा सहित ॥ सोह मावे उपासित ॥ जा भिये जे ॥ ३२ ॥ नया आणि जी भिक्ता ॥ ये रे ये रां मा जि अनता ॥ कवणे योग तत्त्व ना
 आणितला सागा ॥ ३३ ॥ इया करी री चिया बोला ॥ तो जग दुसु सोत पला ॥ ह्यणे हो म अ मला ॥ जाण सी क र्त्त ॥ ३४ ॥ स्तो ० श्री भगवा-
 नुवाच ॥ मथ्या वश्य मनो ये मानि न्य युक्ता उपासते ॥ अदृशा परयो पना स्ते मे युक्त तमा मताः ॥ ३५ ॥ तदि अस्म गिरि विद्या उपकंठी
 रिगालियार विंबा पाठी ॥ रय मे जे सै करी दो ॥ संचरती ॥ ३५ ॥ कावर्षा कां सारिता ॥ जे सा च टोला रो पांडु सला ॥ ते सै नीच नवी प्रज-
 नां ॥ आच्छादि से ॥ ३६ ॥ परांती कि भिया हि सागर ॥ जे सा मागी ल हाया वा अभिचार ॥ नित्ये ये मे चिये ए सा पाडि सैर ॥ मय मावा ॥ ३७ ॥ ते सै स-
 र्वी दया सहित ॥ मज नाजि स निश्चिन ॥ जे रां धि देव सैन ह्यणत ॥ उपासिती ॥ ३८ ॥ इया परी जे भक्त ॥ आपणें पंम जे देत ॥ ते चि योग युक्त
 पाठ ० ओ ० ३८ रति देवो ०

५

५

५

५

५

५

५

५

५

५

परममात्री ॥ ५९ ॥ स्तो० ॥ येत्स्वक्षरमनिर्देशयमव्यक्तं प्रत्युपासते ॥ सर्वत्रागमविन्यनकृत्स्नमचनं भवे ॥ ५९ ॥ अणि येरनेहोपाडवा ॥
जेअरुदोमिसोहमावा ॥ स्तोत्रोतीमिस्वरवा ॥ अक्षरासि ॥ ६० ॥ मनाचेनरनीनलगे ॥ जेयषुद्धीचिह्मरनीरगे ॥ इंद्रियावृत्तजोगे ॥ कायहोद
तु ॥ ६१ ॥ परिध्यानाहो कुवाडे ॥ ह्यणोनिगकेतारो नसापडे ॥ व्यक्तेसिमाजिवडे ॥ कवणोहीनोह ॥ ६२ ॥ जयासर्वत्रसर्वपणे ॥ सर्वा-
होकाळोअसणे ॥ जेयषुद्धीचिंनवणे ॥ हिंपुदो जाहले ॥ ६३ ॥ जेहोयनोहो ॥ जेनाहीनाओहो ॥ ऐसेह्यणोनिउपाये ॥ उपजतीचिना ॥ ६४
जेवळेनाहळे ॥ सरेशोमेळे ॥ तेआपुलेनिविबळे ॥ आगविलेजहो ॥ ६५ ॥ स्तो० ॥ संनियम्येद्रियशामसर्वत्रसमबुद्धयः ॥ तेआमुवति-
मायिवसवधुवहनेरताः ॥ ६६ ॥ टी० ॥ पूर्वराग्यमहापावके ॥ जाळीनिविषयाचो कटके ॥ आयपलीतबके ॥ इंद्रियधरिलो ॥ ६६ ॥ मग-
सयमाचीथादो ॥ स्त्रीमिसुरदिलीउपगदो ॥ इंद्रियकोडलोवपानी ॥ तूदयाचिया ॥ ६७ ॥ अपानीचियातोडा ॥ नावेनिआसनसुदास्त
हाडा ॥ मूळबाधाहडा ॥ यन्नासिला ॥ ६८ ॥ आशेचेलागनोडिले ॥ अर्धोचिकडेझोडिले ॥ निदेंशोधिले ॥ काळवरवे ॥ ६९ ॥ वज्जा
मीचियाज्वाळो ॥ करुनिसमथावृत्तीहोळो ॥ व्याथीचिचिचिचि ॥ बाणुनिसयातीचीआडवांवी ॥ उपजलीसिडकी ॥ कृत्तरातिची ॥ ७० ॥
केजवेलेमभा ॥ विमथावरी ॥ ७१ ॥ नवदाराचियाचोचिचि ॥ मनोमहापचेनिमुडे ॥ दिपलीबळी ॥ ७२ ॥ चंदसूर्याबुझावणी ॥ करुनिअनहताची-
सुडवणी ॥ सतराविचेचणणी ॥ जिकिलेंवेगी ॥ ७३ ॥ मगमभ्यामासअविचे ॥ नेणकोरिवेदादरे ॥ दोहिलेचवेरे ॥ ब्रह्मरंभ ॥ ७४ ॥
वरीषकरानसोपान ॥ तेसांजोनिथागहन ॥ काखेस्तुनियागगन ॥ सरलेअहो ॥ ७५ ॥ ऐसेजसमबुद्धो ॥ गिळावयासाहसिहो ॥ आग
वितातिभिरवथो ॥ योगदुर्गे ॥ ७६ ॥ आपुनियासादावादो ॥ शून्यतेतउठाउवो ॥ तेहीसोनिचिकरीदो ॥ पावतीगा ॥ ७७ ॥ वांचूनियाशा-
पाट-ओ-४९ सांडिले ॥

चैनवळे ॥ अधिकसाहोमिळे ॥ एसेनाहोआगळे ॥ कष्टचितया ॥ ५९ ॥ श्लो ॥ कुशोधिकतरस्तेषाम्यक्तासक्तचेतसाम् ॥ अव्यक्ताहिगवि-
 दुःखंदेहवदिरवायने ॥ ५ ॥ टी ॥ जिहोमकळमूलांचियाहिती ॥ निराळवो ॥ अव्यक्ती ॥ परमरतियाआसक्ती ॥ मक्तोविणो ॥ ६० ॥ तयाम
 हेंद्रोदपदे ॥ करितानिवादवये ॥ आणिक्रुद्धिसाहोचोदुहे ॥ पौजेनिवाती ॥ ६१ ॥ कामक्रोधाचेविजग ॥ उवावतीअनेग ॥ आणिशूरल्येसी
 आग ॥ जुंसावेंकी ॥ ६२ ॥ ताहागेनाहानिचिपयावो ॥ मुकलियासूकचिखावो ॥ अहोगनवावी ॥ मनावारा ॥ ६३ ॥ उनीदयाचेपहुडयो ॥
 भिरयाचेवल्लवणे ॥ झाजीमसाजणे ॥ चौवळोवेंगा ॥ ६४ ॥ शीतवेतावे ॥ उद्यापायुने ॥ दृष्टीचियाआसावे ॥ दाराआत ॥ ६५ ॥ किंब
 हुनापाडवा ॥ हाअभिपवैशानिल्यनवा ॥ स्वतारावीणकरावा ॥ तोहायोग ॥ ६६ ॥ गथस्वामोचेंकाज ॥ नावापिंन्याज ॥ परिसरणेंसींझज ॥
 भित्तनवें ॥ ६७ ॥ ऐसेंभृत्यहूमीनस्व ॥ कांयोंतेकृतविषव ॥ डोंगरीगळनासुरव ॥ नफातकाई ॥ ६८ ॥ ह्यणोनियोगाचियाबादा ॥ जेनिगाले
 गासुमदा ॥ तयाहुःखाचाचिवांदा ॥ प्रागाआत्मा ॥ ६९ ॥ पाहेंपोलोहानेचणे ॥ जेंबोचरियापडतीरवाणे ॥ तेंपोतमरणेंकींमरणें ॥ शूद्रने
 पो ॥ ७० ॥ ह्यणोभिसमुद्रबाहो ॥ तरणेंआधिकहो ॥ कागरनामाजिपाई ॥ रेवलिजत ॥ ७१ ॥ वळयलियारणाचीथादी ॥ आणींजलगतानाका
 दी ॥ सूर्याचीप्रउगी ॥ कोहोयगा ॥ ७२ ॥ यासागींपगुळाहवा ॥ नद्वेवाशुसिपांडवा ॥ तेविदेहवंताजीवां ॥ अव्यक्तोंगति ॥ ७३ ॥ ऐसाहीज-
 शयिवसा ॥ बायोनिअआकाशा ॥ झोंबतीतरोकुशा ॥ पावहोती ॥ ७४ ॥ ह्यणोनिरनेपया ॥ नेणतोविह्वथा ॥ जेकाप्रकिंपया ॥ वेतगळे
 ॥ ७५ ॥ श्लो ॥ येतुसर्वणिक्मोणिमयिसन्यस्यमत्यराः ॥ अनन्येनैवयोगेनमांआयतउपासते ॥ ६ ॥ टी ॥ कर्मोद्वे-
 कुरवें ॥ करितोक्मैअशरेवें ॥ जियेकांवरणविशेवें ॥ प्रागाआली ॥ ७६ ॥ विधेतेपळित ॥ निषेधांतेंपळित ॥ मज्जेतेनिजाळित ॥ कर्मफ-
 के ॥ ७७ ॥ यथापरीपाहो ॥ अर्जुनामाझेराई ॥ सम्यग्मनिनाहो ॥ करितोक्मै ॥ ७८ ॥ आणीकहोजेजंसर्व ॥ काधिकवाचिकसानसिकभाव

पाठ-ओ-६१ पंजनि-ओ-६४ चाळोवें-ओ-६८ डोंगरी-ओ-७० याणे-ओ-७२ केवि-ओ

अ

अ

अ

अ

अ

अ

अ

अ

तयामीवाचविन्याव ॥ आनोतानाह ॥ ७९ ॥ ऐसे जेमत्पर ॥ उपाभितेनिरंतर ॥ ध्यानमिषेयर ॥ माझेझाने ॥ ८० ॥ जयाचिये आवढो ॥ केनीमजशा
 कुळवाडी ॥ भोगमासवापुढो ॥ त्याजिलोकुळ ॥ ८१ ॥ ऐसे अनन्ययोगो ॥ विकले जिवेमने आगे ॥ तयाचें कायिकसांगे ॥ जेसर्वमीकरील
 श्रुतो ॥ तेषामहसमुद्धतो ॥ मृत्युमेभारसागरान ॥ भवाभिनचिरात्यार्थमर्थ्योवशितेनसाम ॥ ७ ॥ श्रुतो ० किबहुनायधुरा ॥ जोभाते
 चियायउदरा ॥ तोभातेचासोयरा ॥ येतुन्नासा ॥ ८३ ॥ तवोर्मातया ॥ जेसे भसते तैसिया ॥ कीककाळुनोकिनिया ॥ येतलापाठा ८५ येदुवी
 तरीमाझिया भसत ॥ आणिभसागर्चाचिना ॥ वायरमथानोकागा ॥ कौरान्भोगे ॥ ८५ ॥ तैसेतमाझे ॥ कलवहंजाणिजे ॥ कायिसोभहो
 नलजे ॥ तयाचोभसो ॥ ८६ ॥ जन्ममृत्युचियाभादो ॥ झळयनोदयास्तरा ॥ तदरवोभियोपदो ॥ ऐसेंजाहोले ॥ ८७ ॥ भवसिंधुचिनिमाजे
 कवणाभियाकुमुपजे ॥ तयजरीकोमाझे ॥ निहोताहन ॥ ८८ ॥ व्यणोनिगापादया ॥ मृतचिमेकावा ॥ करुनित्याचियागाना ॥ धावनआलो ८९
 नाभाचेमहसवर ॥ नायादया अवयारी ॥ सार्दभयांससारी ॥ तारुजाहोले ॥ ९० ॥ सृजेनेद्विगिने ॥ तेथ्यानकासन्धविनि ॥ परिगृहीयातले
 तिरयावरी ॥ ९१ ॥ यमाचिपेदी ॥ बायलीगवोनियापदो ॥ मग ओगिलेतें ॥ सायुन्याचिया ॥ ९३ ॥ परिभक्तोचिभनोव ॥ चतुष्यदारिआश्रवे
 वेकुर्वीचियराणिवे ॥ योग्यकेले ॥ ९३ ॥ व्यणोनिगाभक्तो ॥ नाहोण्णहोचिंता ॥ तयातेममुद्धता ॥ आधिर्मासदा ॥ ९४ ॥ आणिजेद्वोचिक्कास
 को ॥ दिथनी आपुनीचिबनो ॥ तेदोचिमजसूति ॥ न्याचियभादो ॥ ९५ ॥ याकारेणगाभक्तया ॥ हासचतुवाधनंजया ॥ शिकजेछेयया
 भाराभजिजे ॥ ९६ ॥ श्रुतो ० मय्येवमन आयत्वमशिशुद्धिनिवराय ॥ निवभय्यभिमय्येव भनउद्धनसशयः ॥ ८ ॥ टी ० अगामान-
 संहारक ॥ माझास्वरूपसहनिव ॥ करुभियानीनसुकर ॥ बुद्धिभय्येसी ॥ ९७ ॥ दयंतोनासरिसी ॥ मजमाजिनेयेसी ॥ रिगालीतरियाव
 सी ॥ मानवृगा ॥ ९८ ॥ जेमनबुद्धिदहो ॥ यरकेलेमाझाठायी ॥ तिरसोरोमगकादं ॥ मीतूरे ॥ ९९ ॥ व्यणोनिदोपपान्वे ॥ सवंचितेज

पाठ-ओ-८०. प्रकृतेशोचो-आ-९०. निर्णिने-ओ-९६. कीजे-

छ

छ

छ

छ

छ

छ

छ

छ

छ

छ

छ

छ

मालवे ॥ अंशर्धिवंवासं ॥ प्रकाश जाये ॥ १०० ॥ उचललेयामाणासरिसी ॥ इंद्रिये हो भिगत जेसी ॥ तेसा मन बुद्धिपासी ॥ अहंकारे ॥ ११ ॥ ह्यणीनिमा
 क्षियास्वरूपी ॥ मन बुद्धि दयेनि क्षयी ॥ येतुने निमर्ग व्यापी ॥ मोचि होसी ॥ २१ ॥ ययाबोला का हो ॥ अनारि सेना ही ॥ आपनी आपणा ही ॥ वाहन संग
 ॥ ३१ ॥ स्तो० अथ चित्तसमाधातुन शक्ती प्रिय स्थिर ॥ अभ्यास योगन तोया भिच्छा सुधन जय ॥ ५० ॥ टी० अथ बोह चित्त ॥ मन बुद्धि सोह
 त ॥ माझा ततो अनुबित ॥ नराकसी देवो ॥ ४ ॥ तरि गारे से करी ॥ यया आवाण हा रासा शरी ॥ मोटे के निमष भरी ॥ देते जई ॥ ५॥ यगजंज
 कां भिभिर ॥ देव नृमाझ सरव ॥ नेतुले अंग चक्र ॥ विषयी येइल ॥ ६ ॥ जेय शरत्कारिगे ॥ आपि सरिता वोह दुलगे ॥ ते से चित्त कोट लेवगे ॥
 यपचेनी ॥ ७ ॥ मग पुन व हन जे से ॥ शशि विंदि से दिसे ॥ हारपत आवसे ॥ नारी चि होये ॥ ८ ॥ ते से भोग आतु निन गता ॥ चित्त मजमा जिरि
 गता ॥ हू हू हू पादु फुता ॥ सी चि हो भिनु ॥ ९ ॥ अगा अभ्यास योग क्षणिजे ॥ तो हा एक जाणिजे ॥ येणे का ही निन पजे ॥ ऐ से ना ही ॥ १० ॥ ऐं अ
 ब्यासा चो नबळे ॥ एका गति अंतराळे ॥ व्याघ्र संप्रमा जके ॥ केन्हे रफी ॥ ११ ॥ विषकी आहारी पडे ॥ समुद्र पायवाट जोडे ॥ एकी वाट ह्य
 यो कडे ॥ अभ्यासे केले ॥ १२ ॥ ह्यणीनि अभ्यासा सिद्धा हो ॥ सर्वथा दुष्कर ना हो ॥ याला गिमा सावई ॥ अभ्यासे भिळे ॥ १३ ॥ स्तो० अ
 ब्यासे ज्यसमर्थी भिम त्मर्म परमो भव ॥ मर्त्यमपि कर्मणि कुर्वन्मिदमवायसि ॥ १० ॥ टी० कां अभ्यासा होलागी ॥ कसना हो लुझ्या
 आगी ॥ तरि आहासी जया भागी ॥ तेसा निअसे ॥ १४ ॥ इंद्रियेन कोडी ॥ भोग तेन तोडी ॥ अस्मिमान सांढी ॥ स्वजातीचा ॥ १५ ॥ कुळध
 र्मचाळी ॥ विधि निषेध पाळी ॥ मग फलेंव तुझ सरळी ॥ स्थितो आहे ॥ १६ ॥ परिमने वाच देह ॥ जे साजो व्यापार होये ॥ तो मी करीत आहे
 ऐसे नसणे ॥ १७ ॥ करणे कां न करणे ॥ हे आयपे तो चि जाणे ॥ विष चळते से जेणे ॥ परमात्मे ॥ १८ ॥ उपाया पुरया चि का ही ॥ उरें ने दो आपु
 लिया बायी ॥ स्वजातीचा फल भियेई ॥ जो गि वहे ॥ १९ ॥ माळये ज उते नले ॥ ते उते निवात चि गेले ॥ तया पाणि या ऐसे केले ॥ हो आपे वा २०
 पाठ ॥ ओ० १ मनो बुद्धि ॥ ओ० १ हो इल ॥ ओ० २१ आठ उमाते ॥

ह्यणोनिप्रवृत्तिभाणिनिवृत्ती ॥ दयैवोद्वीनयमती ॥ अरवंदचिनवृत्ती ॥ माझावायो ॥ २१ ॥ येद्वीनयमती ॥ उज्जूकाआझादा ॥ रथका
 ईरवटपटा ॥ कर्मअसे ॥ २२ ॥ आणित्तेजकर्मनपज ॥ तेथोदेवहुनह्यणिजे ॥ निवाताचिअर्पिते ॥ माझ्यातयो ॥ २३ ॥ ऐभियासद्भाव
 नी ॥ तनुत्याणीअर्जुना ॥ तंसायुज्यसदना ॥ माझियायेसी ॥ २४ ॥ स्तो ॥ अथेतदध्यशक्तोभिकर्तमद्यागमाश्रितः ॥ सर्वकर्मफलत्या-
 गंततः कुरुयतात्मवान् ॥ २५ ॥ टी ॥ नातरदिहीतज ॥ नेदवकर्मपज ॥ तरिगामांतनुमज ॥ पांडुकुमरा ॥ २६ ॥ बुद्धीचियपार्थीयिदी
 कर्माआदिदांसवदी ॥ मातंबाधणाकिरीदी ॥ दुवाडजरी ॥ २७ ॥ तरिहंहीअसा ॥ सांडासादाअतिसा ॥ परिमंयतिमोवसा ॥ बुद्धितुझी
 ॥ २८ ॥ आणित्तेजोनेवे ॥ घलनीकर्मसकळ ॥ नयाचिनेयंपळ ॥ न्यीजतजाये ॥ २९ ॥ वृक्षकावलो ॥ लाटतीपळेआली ॥ तेसीसंखो
 निपजली ॥ कर्मसिद्धे ॥ ३० ॥ परिमातेमनीयरावे ॥ कामजुदेवोकरावे ॥ हेकाहीनकाआवुन ॥ जाडुदेवरन्यी ॥ ३१ ॥ रवडकीजे
 सेवर्षले ॥ कांआगीयाजियेरिले ॥ कर्ममानीदरिवले ॥ स्वमजस ॥ ३२ ॥ अगाआन्मजचाविषी ॥ जीवजसाभिरभिलाषी ॥ तेसाव-
 र्मिअशेषी ॥ निष्कामहोई ॥ ३३ ॥ वन्हीचोव्जाळजेसी ॥ वायाजायआकाशो ॥ त्रियाजोततसी ॥ अन्यामाजो ॥ ३४ ॥ अजुनाहा
 फलत्याग ॥ आवडकारअसलग ॥ परियोगमाजियोग ॥ पुरचाहा ॥ ३५ ॥ योगफलन्यागसांड ॥ तेनवमनवफुट ॥ एकवळवणु-
 झाडे ॥ वांझेजसी ॥ ३६ ॥ तेसेयेणोचिशरीरे ॥ शरीरायेणसर ॥ किबहुनायेणसर ॥ चिरापड ॥ ३७ ॥ पंअभ्यासाचियापाडो ॥ दा
 किजेज्ञानकिरीदी ॥ ज्ञानेयेइजेमदी ॥ ध्यानाचिये ॥ ३८ ॥ मगध्यानाभिरवव ॥ देनतथायेविचभावे ॥ तद्धाकर्मजातसर्व ॥ दुरीठा
 के ॥ ३९ ॥ कर्मजेशदुरावे ॥ तेथफलन्यागसंभवे ॥ न्यागासुवभागवे ॥ शांतिसगळा ॥ ४० ॥ त्याणानियावयाशांतो ॥ हाचिक्रम
 संप्रदापनी ॥ अस्यासचिप्रस्तुती ॥ करणएय ॥ ४१ ॥ स्तो ॥ अयोहिज्ञानमभ्यासातज्ञानान्मानोविशायते ॥ ध्यानोन्मपफल
 पाठ ॥ ४२ ॥ आठऊमाने ओ २५ तेवतन ॥ ओ २७ स्वहिती ॥ ओ ३२ विशी ॥ ओ ३५ वकु ॥ ओ ४० पावावया ॥ ४१ ॥

त्यागस्व्यागाच्छांतिरनंतरम् ॥ १२ ॥ टी० ॥ अभ्यासाद्गुणिगहन ॥ पार्थीमगज्ञान ॥ ज्ञानापासोनिध्यान ॥ विशेषजे ॥ ४१ ॥ सगक
 मफलत्याग ॥ तोध्यानापासोनिचंग ॥ त्यागाद्गुनिमोग ॥ शांतिस्वरवाचा ॥ ४२ ॥ ऐसियाययावादा ॥ इहोविपैर्णोस्ममदा ॥ शांती
 चाभाजवदा ॥ दाकिलाजें ॥ ४३ ॥ श्लो० ॥ अदृष्टासर्वभूतानामेत्रः करुणाएवच ॥ निर्ममोनिरहंकारः समदुःखस्वरवः सुमी ॥
 ॥ १३ ॥ टी० ॥ तोसर्वभूतंचावागो ॥ द्वेषानेनेणचिंरहो ॥ आपपरनाहो ॥ चेतन्यजेसा ॥ ४४ ॥ उन्नमतेयरीजे ॥ अध्यात्तेअक्करि
 जे ॥ हंकाहोचिनेणजे ॥ वस्त्रयाजेवो ॥ ४५ ॥ कारयाचिंदहचाळू ॥ रक्षापणेनेगाळू ॥ हेनहणेचिक्कपाळू ॥ माणपेंगा ॥ ४६ ॥ गाइचो
 त्साहरू ॥ व्याघ्राविषहोअभिमाक्त ॥ ऐसेनेणेचिकाकरुं ॥ नायेंजेसे ॥ ४७ ॥ तेसीआयिविचामृतमात्रो ॥ एकपणंजयामेत्रो ॥
 वेपिसयात्री ॥ आपणजो ॥ ४८ ॥ अणिमीहेभाषनेणे ॥ माझेकाहोचिंनह्याण ॥ सुखदुःखजाणो ॥ नाहोजया ॥ ४९ ॥ नेवोचिस्समे
 लागो ॥ दुखीसिपवाडआंगो ॥ संनोषाउत्संगो ॥ दिथेलेयर ॥ ५० ॥ श्लो० संतुष्टः सतंतयोगीयतात्यादृढनिश्चयः ॥ मय्यर्पित
 मनोबुद्धिर्योमद्भक्तः समेप्रियः ॥ १४ ॥ टी० वीषिचैवोणसागर ॥ जेसाजळेनिर्मर ॥ तेसानिरुपचार ॥ संतोषीजो ॥ ५१ ॥ वाहूनि
 आपलोआण ॥ धरीजोअतःकरणा ॥ निश्चयाभात्तपण ॥ जयचिनी ॥ ५२ ॥ जीवपरमात्मादेनी ॥ वैसलेएकासर्गो ॥ जयाचिया-
 त्ददयभुवर्गो ॥ विराजती ॥ ५३ ॥ ऐसायोगसमृद्धि ॥ होअनिजोनिरवधि ॥ अर्पिमोबुद्धि ॥ माझावो ॥ ५४ ॥ आतबोहरियो
 गा ॥ निर्विकलयाहीचांग ॥ तिरिमाझाअनुराग ॥ समेमजया ॥ ५५ ॥ अजुनातोभक्त ॥ तोचयोगीतोचिमुक्त ॥ तोवल्लुभासीकां
 ता ॥ ऐसापिदये ॥ ५६ ॥ हेननोआवडे ॥ मजजीवचिनिपाडे ॥ हेहोएथयेफडे ॥ रूपाकरण ॥ ५७ ॥ तशीपटितयतयनीकाहाणी ॥
 हेमलोचिभावरणी ॥ इयेनवनबोलणी ॥ परिबोलवीअझा ॥ ५८ ॥ ह्यणेनिगाआह्मी ॥ वेगाआलीउपमा ॥ येइवीकायमेमा ॥ अ-
 पात्र ॥ ओ० ५३ पेणा ॥ ओ० ४५ तरी ॥ ओ० ४८ पाजो ॥ ओ० ५१ वरुवाये ॥ ओ० ५३ वैसीनि ॥ ओ० ५८ मरणी ॥ ७ ७

बुवाद् असे ॥ ५९ ॥ आतां असोहें किं रहा ॥ पं प्रिया चिय गोष्ठी ॥ दुणा थां व उनी ॥ आव डीगा ॥ ६० ॥ मया हा वार विषाये ॥ प्रेमळ सें
 वादिया होया ॥ तिये गोडीं सि आहे ॥ कंटाळें मगा ॥ ६१ ॥ ह्यणां निगायां दुसृता ॥ तेंचि प्रिय आणि तें चिन्मोता ॥ वरि प्रियाची वानां प्रस
 रें आनी ॥ ६२ ॥ तरि आतां बोली ॥ भले या सरवामी नली ॥ ऐसें ह्यणत क्षणीं डोली ॥ लागला देवो ॥ ६३ ॥ मग ह्यणे जाणा ॥ तया भक्ता
 चेल क्षणा ॥ जयां मां अंतः करणा ॥ बेसो यादीं ॥ ६४ ॥ स्तो ॥ यस्मान्नो द्विजे ते लोको लोका न्नो द्विजे ते च यः ॥ हर्षा मर्ष मयो द्वे गे सु
 कोयः सन्त मे प्रियः ॥ ६५ ॥ टी ॥ तरि संपूचे निमांजे ॥ जळ चरा मय नृपजे ॥ आणि जळ चरीं नु मां गेजें ॥ समुद्र जे सा ॥ ६६ ॥
 ते विं उन्मते जंग ॥ जयां सिरवंतान नगे ॥ आणि जयाचे नि आंगे ॥ नशिणं नो क ॥ ६७ ॥ किं वृहना पाडवा ॥ शरीर जे सें अवयवा ॥
 ते सा नृबगे जीवा ॥ जीव पणें जे ॥ ६८ ॥ जग चिदेह जाहाले ॥ ह्यणां नि प्रिया प्रिय गेले ॥ हर्षा मर्ष वने ॥ दुजेन विषा ॥ ६९ ॥ रंसाद
 द्विनि सुक्त ॥ मर्ये द्वगरीहत ॥ या हि वरि भक्त ॥ माझा वायो ॥ ६९ ॥ तरि तथा चागा मज मोहो ॥ काय सांगो तो पटियावो ॥ हें असो
 जिवो जेवो ॥ माझो भितो ॥ ७० ॥ जै निजानें दयाला ॥ परिणाम आयुष्य आला ॥ पूर्ण ते जाहाला ॥ वल्लभ जे ॥ ७१ ॥ स्तो ॥ अन
 पेक्षः शक्तिं दत्त उदासीनो गतव्यथः ॥ सर्वारंभ परित्यागं त्याम दत्तः समप्रियः ॥ ७२ ॥ टी ॥ तया चिया नायां पाडवा ॥ अपेक्ष
 ना हीं रिगावा ॥ सरगा सिचटाव ॥ जयाचे असण ॥ ७३ ॥ मोक्ष देऊनि उदार ॥ काशी होय फार ॥ परिवर्चण लागे शरीर ॥ तिये गावा
 ॥ ७४ ॥ हिम वन दोष स्वाय ॥ परिजीविताची हा नीहाय ॥ तसे शरीर चले नोह ॥ सज्जनचे ॥ ७५ ॥ शक्ति वेश्रु चिगंगा होये ॥ आणि
 पापताप ही जाये ॥ परि ते ये आह ॥ बुडणें गक ॥ ७६ ॥ रेवो लिपे पा र्नी जे ॥ तरो प्रसन्नो न बुडिजे ॥ रोळ उा चिल्लि हे जे ॥ नमर ता
 मोक्ष ॥ ७७ ॥ संतांचे नि अंग नये ॥ पाप ते जिणें गंगे ॥ तेणें सतसंगे ॥ शक्ति वें केसे ॥ ७८ ॥ ह्यणां नि असो जे रसा ॥ शक्ति वें ते
 पाव ॥ ओ ॥ ६९ संवा दिये ॥ ओ ॥ ६९ जळ चरा मय नृपजे ॥ ओ ॥ ७० जेवें ॥ ओ ॥ ७१ नित्या नंद ॥ ओ ॥ ७२ ॥ ७३ ॥ ७४ ॥ ७५ ॥ ७६ ॥ ७७ ॥ ७८ ॥ ७९ ॥

शोकुवासा ॥ जेणे उद्धययित्ते दिवा ॥ मनोमय ॥ ७८ ॥ आंत बाहेरि चोखाळ ॥ स्वर्य ते साभिर्मळ ॥ आणितलार्थे चिपायाळ ॥ देखणाजो
 ७९ ॥ व्यापक आणि उदास ॥ जे सेंकां आकाश ॥ ते सेंजयांचे मानस ॥ सर्वत्रगा ॥ ८० ॥ संसार व्यर्थ फिटला ॥ जो नेरा रये निवटला ॥
 व्याधात तो निमूटला ॥ विहरा मजेमा ॥ ८१ ॥ ते सासत तो स्वर्य ॥ कृष्ण हीट वंचनेदरे ॥ नणिज गनासुखे ॥ लज्जा जेवी ॥ ८२ ॥ आ
 णिक सार भालागी ॥ ज्या अहं कृती नाहीं आंगी ॥ जे से नरयन आंगी ॥ विस्मोभिजये ॥ ८३ ॥ ते सा उपशम चि मगा ॥ ज्या मि आना
 पेगा ॥ जो पोस्ती चिया आंगा ॥ निहिन्ना असे ॥ ८४ ॥ अर्जुना हा वावरी ॥ जो मोह भावें मरये वरी ॥ तो हे ताचो पैल तोरी ॥ निगो सरला
 ८५ ॥ को भक्ति सरवा लागी ॥ आपण पेंचि दोही पारी ॥ वांटो निया आंगी ॥ सेवकें बाणे ॥ ८६ ॥ येरा नाम मनि वी ॥ मग मज ते विजव
 रवी ॥ न मज तया दावी ॥ योगियाजो ॥ ८७ ॥ तयाचे आह्वा व्यसन ॥ आमुचे तो नज आन ॥ किं बहुना समाधान ॥ तो मिळेतें ॥ ८८ ॥
 तया लागीं मज रूपेण ॥ तयाचे निमजार्थे असणे ॥ नयानेण कृजे जीवें प्राणे ॥ ते सापटिये ॥ ८९ ॥ स्तो ॥ योन तृष्यति न हृदि
 न शोचति न कांक्षति ॥ श्रमा श्रमपरित्यागी भक्तिमान्त्वः समीपयः ॥ ९० ॥ टो ॥ जो आत्म्या भासा रिये ॥ गोमटे कांही चि न दे
 रे ॥ हाणो भोगी विशर्ये ॥ हरि रये न जे ॥ ९१ ॥ आपण चि वि श्रव जाहाला ॥ तस्मिन् भाव सहज चि गेला ॥ ह्यणो निदृष ठेला
 मया पुरुषा ॥ ९२ ॥ पें आपुल जे सान्ते ॥ ते कल्यांती ही न वचे ॥ हे जाणो निगतचे ॥ न शोचीजो ॥ ९३ ॥ आणि जया परो ते काही ना हो
 ते आपण चि आपुना दावी ॥ जाहाला त्या लागीं जो काही ॥ आकांक्षी ना ॥ ९४ ॥ वारवे दंका गोमटे ॥ हे कांही चि तया नुभटे ॥ रात्रि दे
 व समनये ॥ स्वर्या मिजेवी ॥ ९५ ॥ ऐसा बोध चि केवळ ॥ जो हो दून असे निष्कळ ॥ त्या हो वरी मजनशीळ ॥ माझा दावी ॥ ९६ ॥ त
 रित थारें सें दुसरें ॥ आह्वा पदिय ते सोयरे ॥ नाहीं गासा चोकारे ॥ तुझी आण ॥ ९७ ॥ स्तो ॥ समः शत्रोच भिषे च तथा माना पमान
 पात्रः ओः ८१ निवडला ओः ८० जेना ओः ९३ आण चि किंवा आपुने ओः ९४ राति देवी छ ॥ ९५ ॥ छ ॥ छ ॥ छ ॥ छ ॥ छ ॥ छ ॥ छ ॥

योः ॥ शीतोष्णोष्णरवदुःखेषु समः संगो भवति जितः ॥ १८ ॥ टी० ॥ पार्थाजया चिदाश्रयो ॥ त्रैपथ्यान् चानानाहो ॥ रपुभिर्जालोहो ॥ सरिस्मा
पाडे ॥ ९७ ॥ यशश्चिया उज्जिच इकरावा ॥ पारश्वया आधारप्राजावा ॥ हर्णेण विगाण मुहा ॥ दोप जेसा ॥ ९८ ॥ जोरवा जावया वावया
ली ॥ कालावणी जयने केनी ॥ दोया एक चिसा उन्दी ॥ दुस्से जेसा ॥ ९९ ॥ नानर्गट्ट कन्दु ॥ पाकितया जेसा गोइ ॥ गोकितया कन्दु
नोहे चि जेवी ॥ १०० ॥ अरिभिर्जितेसा ॥ अर्जुना जया भावणसा ॥ मानापमानी सरिस्मा ॥ होत जाये ॥ १ ॥ तिहा जे त्वसपान ॥ जेस्
कांगरन ॥ तेसा एक चिमान ॥ शीतोष्णी जया ॥ २ ॥ दक्षिण उत्तरमारुता ॥ मेरु जसा पादरुता ॥ तेसा भरवेदुःखदाभा ॥ भव्य
स्थजो ॥ ३ ॥ मारुयचंद्रिका ॥ सरिस्मीशाररुता ॥ तेसा जोस कटिका ॥ मृतांसम ॥ ४ ॥ आर्यनया जगा एक ॥ सव्यजस उद
क ॥ तेसे जयने तीन्हो लोक ॥ कांक्षितेगा ॥ ५ ॥ जोस वान्दभग ॥ साजोनिया नारा ॥ एका की अस आरग ॥ आगो म्भना ॥ ६ ॥ भ्रमो
नृत्यनिदास्तु निर्मानि संतुष्टयेन केन चित् ॥ अति केन स्थिरमति संतुष्टमर्च्यो यो जनः ॥ १० ॥ टी० ॥ जोनिदं नये ॥ स्मृती नन्त्या
ये ॥ आकाश नल्लो ॥ लप जेसा ॥ ३ ॥ तसे नंद आण स्मृती ॥ मान कर भिन्न कसे ॥ विचरे भगवतो ॥ जनीगो ॥ ८ ॥ साचल
रिंके दोही ॥ बोलो निनबोलु जाला मोनी ॥ जो भोगिता उमनी ॥ भारायना ॥ १ ॥ जोयथान्ता मरुतो रेव ॥ अन्ता भेन पा रुरेव ॥
पाउसे वीणन सके ॥ समुद्र जेसा ॥ १० ॥ आण वायु भिगुं कथायो ॥ विन्दर जगो वा हो ॥ जतान धरं चक्र हो ॥ आश्रय जो ॥ ११ ॥
आयचि आकाश स्थिति ॥ जो वायु भिन्न वर्त्तनी ॥ ती वे जगो न विच्यति ॥ स्थान जया ॥ १२ ॥ हं विश्व चिमा ज्यय ॥ ऐसी मतो
जयाची स्थिर ॥ किं बहुना न चर ॥ आपण जालान्ता ॥ १३ ॥ मर्यादगे हा पाथा ॥ माझा भजो आस्था ॥ तरितया ते माथा ॥
मुकुट करी ॥ १४ ॥ उत्तमा भिम भक्त ॥ खल विजं हे कायको नुक ॥ परिमान करि नोतीन्हो लोक ॥ पायवणिया ॥ १५ ॥ तरि आशा
पाठ ॥ ओ० २ ॥ ते सं० ओ० ५ ॥ आकाश निर्मा ॥ १० ॥ ११ ॥ १२ ॥ १३ ॥ १४ ॥ १५ ॥

वस्तुशी आनरु ॥ कर्मनोनिजं प्रकरु ॥ जगहो यथा गुरु ॥ सत्ता शिव ॥ १६ ॥ परिहो असो आनो ॥ यो ह्येताने वानिनां ॥ आत्मस्तुती होतं
संचार असे ॥ १७ ॥ यथालागि नानाहे ॥ द्युगितेने रसानाहे ॥ अर्जुनादीनाहे ॥ शिरिजं योते ॥ १८ ॥ जे पुरुषार्थे सिद्धि वीथी ॥ येरु भिआ
पुनेया हाती ॥ शिगाला भक्ति पंथी ॥ जगादन ॥ १९ ॥ ने रान्याचा अधिकारी ॥ मोहादी सो दीवार्थी करी ॥ कंजळ्याचि येपरी ॥ तळ
वदथ ॥ २० ॥ द्युगोनिगानमस्करु ॥ नचाते आर्ह्यमाया मुकुट करु ॥ नया वीटा व करु ॥ न्हदथी आर्ह्यी ॥ २१ ॥ तया चिया गुणार्चनी
णी ॥ लेववु आपुनिये वाणी ॥ नयाचि कीर्तन्य वर्णी ॥ आर्ह्य निद्रु ॥ २२ ॥ नोपाहा ॥ ने जो हके ॥ द्युगुनि अवस्फीमज जोळे ॥ हातीचि
निनीला कमळे ॥ प्रसृत याते ॥ २३ ॥ दोवरी दोनी ॥ मुजा आनो य उनी ॥ आनिता वया आगुनी ॥ तयाचें आंग ॥ २४ ॥ तया संगार्चनि
सरवाडे ॥ मज विदेहाद हय रेणु गडे ॥ विबहमा आवड ॥ निरूपम ॥ २५ ॥ तणासी या न्याय ॥ अथ कायसें विचित्रा ॥ पारतयाचें चरित्र
एक तो जे ॥ २६ ॥ नेहीनाणा पोरने ॥ आयदनी हे निरुते ॥ जे भक्त चरित्राते ॥ जग प्रीती ॥ २७ ॥ जो हो अर्जुना साधन ॥ सांगोतलाय
स्तुत ॥ शक्ति योग संपन्न ॥ योग रूप ॥ २८ ॥ जेणें सीमां त करी ॥ कामनी शिरस्यार्थी ॥ गवदी थोरी ॥ जया स्थिति ये ॥ २९ ॥ अन्तो
येतु ध्यायार्थी भदय थोक्त पंथुण सते ॥ अहथाना भगवत्सा भक्ता स्तोती वीमंथिया ॥ ३० ॥ इति आत्मद्वारा वहीता सूप भिषक्त
ब्रह्म विद्या यां गारा स्त्री दृष्ट्या जुन संवादे भक्ति योग नाम द्वादशोऽध्यायः ॥ ३१ ॥ ते देवादी रम्य ॥ अमृत धारा यम्य
करिती प्रतीति गम्य ॥ आद को निजे ॥ ३२ ॥ तेसीं अर्चुने नि आदरे ॥ जयाचि वार्थी विस्मरे ॥ जे विजया योग ॥ जे अनुष्ठिती ॥ ३३ ॥ ए
शिरि नरूपी जे सी ॥ तेसीं चस्थिती मानसी ॥ भगवत्सेवो जे सी ॥ परणी जाहा न्यो ॥ ३४ ॥ अध्याने परम करुनि ॥ इये अर्थो प्रम
धरुनि ॥ हे सर्व स्वमान्नीन ॥ येती जे पें ॥ ३५ ॥ पाया गाजणी ॥ नेचि भक्त नेचि योगी ॥ उन्हात यां लागी ॥ अरव उमज ॥ ३६ ॥

नार. आ. १०५५

55

नेतीर्थनेस्त्र ॥ जगतीं चरिष्ये ॥ मन्त्रिकं शोभयेत् ॥ जया पुरुषा ॥ १५ ॥ आह्नीज्यान्ने कुरु आन ॥ ते आमृते देवतार्चन ॥ ते वाचु
 नि आन ॥ गोमते नमः ॥ १६ ॥ तया च आह्ना व्यसन ॥ ते आमृते भिद्यि निधान ॥ किंच हना समाधान ॥ ते मिळतीति ॥ १७ ॥ पेत्रे मु
 काची वाती ॥ जे अनुवाद ते षादु सता ॥ ते मानुष परम देवता ॥ आपुर्ला आह्नी ॥ १८ ॥ ते से निज जना नंदे ॥ तेणे जगदादिक दे ॥
 बोलिले सुकुंदे ॥ सजयो ह्मणे ॥ १९ ॥ राया जो निर्मेळ ॥ निखल कलोकल पाक ॥ शरणागता स्नेहाक ॥ शरण्य जो ॥ ४० ॥ पे
 मार सहायशीक ॥ लोकलाल नलीक ॥ प्रणत प्रतिपाक ॥ रेवक जयाचा ॥ ४१ ॥ जो धर्म कृति धवक ॥ अगाध दात सखळ
 अतुक बळ मळ ॥ बळिबंधन ॥ ४२ ॥ जा मरुज न वत्सक ॥ प्रमक जन याजक ॥ सत्य सेतु सकक ॥ कलानिधि ॥ ४३ ॥ तो
 श्री ह्मणां वैकुंठीचा ॥ चक्रवर्ती निजाचा ॥ सांगे यरुलवाचा ॥ भाइ कत अस ॥ ४४ ॥ आता या वरी ॥ निरूपिती परी ॥
 सजय ह्मणे अवधारी ॥ धृतराष्ट्राते ॥ ४५ ॥ ते चिरसाक कथा ॥ महादिया प्रतिपया ॥ आणिले आता ॥ अवधारि जो ४६
 ज्ञान देव ह्मणे गुह्यी ॥ मतवाळ गाव ते आह्नी ॥ हंपद विलो स्वामी ॥ निरुनि देवे ॥ ४७ ॥ ७ ॥ २४७ ॥ इति श्री भावार्थदी
 पिका याज्ञान देव विरचित याथाहादा शाध्यायः समाप्तः ॥ १२ ॥ श्री ह्मणां पणमस्तु ॥ ॥ श्रमं भवतु ॥ ७ ॥

पाठः ४६ पथा.

॥ इति श्रीभगवत्पद्मसूत्रेण विष्णुसूत्रेण द्वादशोऽध्यायः समाप्तः ॥ ७॥

श्रीगणेशाय नमः ॥ आत्मरूपगणशक्तेऽन्यास्मरण ॥ हांयसकृच्छविद्यां च अधिकरण ॥ तं वंदूच्चिरण ॥ श्रीगुरुत्वे ॥ १॥ जयाचेनि आठवे
 शब्दस्त्री भागवे ॥ सारस्वत आद्यै ॥ जिह्मिंये ॥ २॥ वक्रुत्वागोपणो ॥ अमुताते परपुष्पणे ॥ रसहोती चोळगणे ॥ अस्तरांसी ॥ ३॥ प्रा
 वाचे अवतरण ॥ अवतरवितोरवुण ॥ हाताचे देस पूर्णो ॥ तत्व भेद ॥ ४॥ श्रीगुरुत्वे प्राय ॥ जे ल्हादय गिवस्त्रनिहाये ॥ ते ये वंदे प्राग्य होये ॥ उ
 न्येयासी ॥ ५॥ तेन भस्करुनि आना ॥ जो प्रितामहाचा पिता ॥ नस्मृयेचा पत्नी ॥ ऐसे ल्हाणे ॥ ६॥ स्त्रो ॥ श्रीप्रागवानुवाच ॥ इदं श-
 रीरं कौतयस्ते अभित्यभिधीयते ॥ एतद्यो वंचितं प्राहुः स्त्रज्जामिन न हिदः ॥ १॥ टी ॥ तरोपार्थापरिंजो ॥ देहं हं स्त्रह्मणिजे ॥ हं ज्ञा
 णो नो बो लिजे ॥ स्त्रज्ज एथे ॥ ७॥ स्त्रो ॥ स्त्रज्जचा पिमा विद्धि सर्वस्त्रेषु भारत ॥ स्त्रज्जज्ञा ज्ञो ज्ञानयन स्त्रानमतमम ॥ २॥ टी का
 तरि स्त्रज्जज्ञ एथे ॥ नो मी चि जाणा नरने ॥ जो सर्वस्त्रांते ॥ सगोपोनि असे ॥ ८॥ स्त्रज्ज आणि स्त्रज्ज्ञाते ॥ जाणणे जे निरुते ॥ ज्ञाने रमे
 नयाते ॥ मान् आसी ॥ ९॥ स्त्रो ॥ तस्त्रज्ज च यादक यद्दि कारियग अयव ॥ सच यो यत्नभाव अतत्समासेन मे स्थणु ॥ ३॥ टी ॥ ना
 रि स्त्रज्जयेणो नावे ॥ हं शरीर जेणे मावे ॥ ह्मणि तले ते आयवे ॥ सांगो आना ॥ १०॥ हं स्त्रज्ज ह्मणिजे ॥ केसे के हं उ पजे ॥ कृवण कृवणी वा
 दविजे ॥ विकारां एथ ॥ ११॥ हं ओदहात मोदके ॥ को वंदे पाके नुके ॥ कोणाचे हं ॥ १२॥ इत्यादि सर्व ॥ जे जे याचे प्रा-
 चा ॥ नेबोलती सावव ॥ अवधान देद ॥ १३॥ ये याचि स्थव्याकारण ॥ अतिस दां बोवणे ॥ तं कं यणे चि रक्काण ॥ तो डाळ वल्हा ॥ १४॥ चाळि
 नां हे विबोली ॥ दर्शने शेवटा आला ॥ ते वी चि नाही खुस्त्रिबोली ॥ अस्त्रो देहं ॥ १५॥ शास्त्राचि ये सांयारिके ॥ विचिळि जे येणे चि दे ॥
 याचि भिये एक के ॥ जगावा द ॥ १६॥ तो डंसी तो ज्ञान पडे ॥ बोला बोले निम घडे ॥ इयागुत्तं व उबडे ॥ त्राय अहाली ॥ १७॥ नेणे को
 णाचे हे स्थव ॥ परिकेसे अभिमावाचे वळ ॥ जे यो घरी कृपाळ ॥ पितृवत असे ॥ १८॥ नास्त्रिकाद्या वयानोड ॥ वेदाचे गां दे बंड ॥ वे
 देरवो निपांड ॥ ज्ञान चि वाजे ॥ १९॥ एक ह्मण तो विमूळ ॥ लटि के हे वाग जाळ ॥ नास्त्रिपार्तनरी पोफळ ॥ यानले आहे ॥ २०॥ पाषाड चिये कडे ॥
 पाठ ओ १ मेचि ओ १६ विवळिजे ओ १८ अभिमानचे ओ २० ह्मण तुली किवा ह्मण नाहे पोफळ

गर्वांलुचितीमुं न भिद्यो जितो विनं हं तज्जामि येनो २१ मृत्युवद्वाचे निमाजं हं जाईल वीण काजं तें देवो निगाव्याजे भिद्यो लोयोगी
२२ मृत्युभि आधाधिते निही निरंजन ते विले यम नियमाचे केले सोळावे पुरे २३ येणें चिस्त्रा भिमाने राज्य त्या जिले देशाने
शुनि जाणा निस्माने वास केल्या २४ ऐसियाये जाय हे देश पांथुरणें ताही दिशा लाच करव्यणो निकोळ सा काम केल्या २५
पैस त्या लोभनाथा तदने आलो बळाशी तर्गतो सवथा जाणो चिना २६ श्रुतः ऋषिभिर्बहुधा गीतं छंदोभिर्विविधैः प्रथ-
क ब्रह्मसूत्रं यैश्चैव हं गुप्तमिदं विनिश्चिनैः ६ ही एक ह्यणती हे प्यळ जीवाचे चिसमूळ मग प्राण हे कुळ नयाचे एथ २७ ज-
यामाणाचे धरी अंगे रावती माउचारी आणि सनाते सा आचरी कुळ वाईतसे २८ नया ते दीक्षये लचि पेदी न ह्यणे आवसी पाहा
शें विषय सेत्री आदी काढा मत्ती २९ मग विधीची वाचतु करी आणि अन्याय बोजा फवा कुकसाचा करवी राबजरी ३० त-
मितया चिसासिने असं माव्य पापणिके मग जन्म कोटी दुःखें सोगो नीव ३१ नानरी विधीचिये वापे सक्किया बो जे आयोपे त-
री जवळ कोटि मापें सरव चिस विजे ३२ तेंच आणि क ह्यणती हे नई हें जिवानें चिन ह्यणावे आसु तें पुसा आघवे क्षत्राचे या ३३
अहो जीव एथ उरिवा वस्ता करवा देजाना आणि माणा हा वलोना ह्यणो भिजारी ३४ अनदिजे मळति सारव्य जियें तें गानी क्ष-
त्रे ह्यति नियो चि जाणा ३५ आणि नियें चि आयवा आधी धर मेळवा ह्यणो निने वाहिवा घरी वाहे ३६ वाह विद्या चिये रा-
हरी जेकां मुदल निये इय मृदा तीं नयो चिया पोदी जाहाले गुण ३७ रजोगुण परी ते तुलें सत्सो कशी मग वेळें तम करी संवरणी
३८ रघूनि मत्वाचे रवळें मळि एके कालुगे निपोळें तेथ अव्यक्ताचे विमिळें साजे मन्मदी ३९ तें व एकी मनि मनी शबोला चि चारके-
ती ह्यणि न लें यथा जसी अवर्चिना ४० हाहा पर नला आट के मळती चिमान हासें ब्रह्मनात उगे चि आइका ४१ इत्यसे
जसां उलियें सलीन ते चिये तुळिये निदां के ली होनी बिळियें संकल्ये येणें ४२ ती अवसानाचे इत्या उद्यमी सदैव मला ह्यणो नि

तेवाजोडलां दुच्छावर्षो ४३ निगलंबीचीवाडी होतीअभिप्रवसायेवडी हंतयाचिअजेजोडी रूपआली ४४ मगमहाभूतंचेरकवाड
 मेरावेटाळुनिमीट भूतयामाचेआघाट चिनिनेचारी ४५ यावरीआदी पाचविण्याचीबांधी बांधलीअमेदी पांचभूतकी
 ४६ कर्माकमाचेगुंटे बांधयातलेदोर्हांकटे नपुसकवरटे रानकेली ४७ तेथेरस्यारेलागी जन्ममृत्यूचीसंगरी सहा
 विलोभिलारी संकलयेणे ४८ मगअहंकारासिगकजाधी करुभिर्जावितावधी वाहाविलेंअबुद्धी चराचर ४९ यथापरी-
 निराळी वाटेसकल्याचीडाळी ह्यागोनितासुळी उपचायया ५० यथापरिमनगोकिंवा तेथपाडियाधिलेआणिकी ह्याण-
 नीहाहाविवेकी केसेतुह्नी ५१ परतल्याचियागावी संकन्यसजदेखावी तरिनांपानमनावी यहुनीतयाची ५२ परिअ-
 सोहेंनूहे तुह्नीयानलगवें आताचिहेंआयवें सांगिजेन ५३ तरिआकाशीकवणें केलीमेधाचींभरणें अंतरिस्स-
 तारागणें धरीकवण ५४ गगनाच्चादवा कोणवादिळाकंधवा पवनहंतुतअसावा हेंकवणाचमत ५५ रोमाक-
 वणपेरी सिधूकवणभारि पर्जन्याचियाकरी धाराकवण ५६ तेंसेंसंयहेंस्वभावं हेवृत्तीकवणाचीनहे हेवाहेतयाफा-
 वे येरांतुटे ५७ तंवआणिकेंकें स्तोभेंद्वणितलेनिवें तरिआगिजेंक कळेंकेंविहें ५८ तरियाचायार देखता-
 निअनिवार तरिस्वमतिभर अभिमानिया ५९ हेंजाणंमृत्यूचाआगिता सिहाडयाचादरकुटा परिकायकीजेवाजटा पु-
 रिजतअसे ६० महाकल्यापरीती कवधान्निअवचिती सत्यलाकप्रदजाती आंगीवाजे ६१ लोकपाळनित्यनवे दिंगजोचि
 मेळावे स्वर्गीचियेआडवे रिगोनिमोडी ६२ येरययाचनिअंगवातें जन्ममृत्यूचियेतें निर्जिवेंहोऊनिभ्रमतें जीवमृ-
 गो ६३ त्याहाळीपाकेकडा पसरलासेचवडा करुनियामातिवडा आकारगज ६४ ह्याणिंकाळाचिसत्ता हाचिबो-
 पाव ओ ४३ दुच्छेसर्वे ओ ५५ नडागा ओ ५९ परी ओ ६० रागीटा ओ ६१ दिंगज ओ ६२ च ओ ६३ च

लभिरुक्ता॥ ऐसेवादापांडुमुक्ता॥ क्षेत्रात्वागो॥ ६५॥ हेबहुउरिखिवरवी॥ ऋषीकैलोनैमिषी॥ पुराणेदयेविषी॥ मतपत्रिका॥ ६६॥ अनुष्टुबा
 दिछंद॥ प्रबर्धोअयेविषे॥ तेंपत्रावलबनमदे॥ करितीअस्मणी॥ ६७॥ वेदोचेंब्रह्मसामस्तत्र॥ जेंदेवणेपणेपवित्र॥ परितयाहीहें
 स्तत्र॥ नेणवेचि॥ ६८॥ आणीकआणिकीहोबहुनो॥ महाकवीहेतुमनो॥ याज्ञगीमती॥ वेचिलिया॥ ६९॥ पारिऐसेहेंएवढे॥ अ-
 मुकयाचेचिपुढे॥ हेंकोणहाहीवरपडे॥ होयचिना॥ ७०॥ आनायावरीजेसे॥ क्षेत्रहेंअसे॥ तुजसांगोनैसे॥ साद्यतगा॥ ७१॥ स्तो-
 महाभूतान्यहंकाराबुद्धिरव्यक्तमेवच॥ दीदियाणितरीकंचपचचेद्वियगोचराः॥ ५॥ इच्छादेषःस्मरवदुःखसंघातश्चैतनाधुनिः॥ एत-
 त्संनसमासेनसविकारमुदाहृतं॥ ६॥ दी० तस्मिन्महाभूतपचक॥ अणिअहंकारएक॥ बुद्धिअव्यक्तदयाक॥ दीदियाच्या॥ ७२॥
 मनआणीकहीएक॥ विषयाचादयाक॥ देवस्मरवदुःख॥ संघातइच्छा॥ ७३॥ अणिचैतनाधुनि॥ एवसेत्रव्याप्ति॥ सांगीनलीतुज
 मति॥ आयवीचि॥ ७४॥ आनामहाभूतेंव्रणे॥ कवणविषयकेसोकरणे॥ हेंवेगळालेपणे॥ एकेकसांगो॥ ७५॥ तरीदृष्ट्योआपने
 ज॥ वायुव्योमइयेतुज॥ सांगीनलीबुद्धि॥ महाभूते॥ ७६॥ अणिजागानियेदशे॥ स्वमलालेंअसे॥ नानरीअवसे॥ चंद्रगुट॥
 ॥ ७७॥ नानाअष्टौदबाळकी॥ तारुण्यराहेंयोकी॥ कानकुडतांकिर्ति॥ आसोदजेसा॥ ७८॥ किंबहुनाकाशी॥ वद्विजेविकरीदी॥
 तेविमळतीवियापोदी॥ गौप्यजोअसे॥ ७९॥ जेसाज्वरधातुगत॥ अपय्यांचेभियपाहवा॥ मगजामियाआत॥ बाहेरीच्यापी॥ ८०॥ तेसो
 पाचहीगोपडे॥ जेंदेहाकारउघडे॥ तेनाचवीचहुंइडे॥ तोअहंकारगा॥ ८१॥ नवलअहंकाराचीगोदी॥ विशेषनलगेअज्ञानापावी॥
 सज्ञानाचेसोबंकी॥ नागसंक्रांतीचावी॥ ८२॥ आनाबुद्धिजेद्विणजे॥ तेंगेंमियाचिचंद्राणिजे॥ बोलिलेयदुगजे॥ आदकेंसांगो
 ॥ ८३॥ तरीकंदपेजेनिबळे॥ दींदियवृत्तीचेनिमेळे॥ विस्मांडुनियेतीपाळे॥ विषयाचे॥ ८४॥ तोस्मरवदुःखवाचानागवा॥ जेयउगा-
 पाठ नाही॥ ८५॥

निरवच्छेदः ॥ तत्कृतं कृतं भिदाच्छेदः ॥ स्थाणो नर जातं चक्रः ॥ भस्मिन्नेतरे ॥ ८ ॥ नैव हि स्मिन्निहंते ॥ अहं नराश्रया उपावरी ॥ तेषं श्राव्या माक्षारी ॥ विरि-
 यावच्छेदः ॥ ९ ॥ नायायनहनाय ॥ च हर्षो नृत्त्यनाश्रयावच ॥ जयाच निमग्नो जीव ॥ दशवल्गु ॥ १० ॥ जेमद्वर्तसि सुख ॥ कामानश्रयावच्छेदः ॥ जेमरुद-
 म्भयच्छेदः ॥ अहंकारासी ॥ ११ ॥ जेमद्वर्तसि सुख ॥ जयाच निमग्नो जीव ॥ दशवल्गु ॥ १० ॥ जेमद्वर्तसि सुख ॥ कामानश्रयावच्छेदः ॥ जेमरुद-
 जेमद्वर्तसि सुख ॥ अहंकारासी ॥ ११ ॥ जेमद्वर्तसि सुख ॥ जयाच निमग्नो जीव ॥ दशवल्गु ॥ १० ॥ जेमद्वर्तसि सुख ॥ कामानश्रयावच्छेदः ॥ जेमरुद-
 कुहुर ॥ वायुनवाचं अतर ॥ बुद्धिचंदार ॥ जयाच निमग्नो जीव ॥ दशवल्गु ॥ १० ॥ जेमद्वर्तसि सुख ॥ कामानश्रयावच्छेदः ॥ जेमरुद-
 ॥ ११ ॥ नरस्पर्श आगिराद्ध ॥ रुतसंगद ॥ हाविषयपंचविध ॥ ज्ञानं दयाचा ॥ १२ ॥ दहं पांचद्वार ॥ ज्ञानाभिधाववाहरी ॥ जेसाकाहि-
 रविआचरी ॥ सावावपश ॥ १३ ॥ मरास्वरवर्णविमर्ग ॥ अथवास्वीकारत्याग ॥ संक्रमणं आनंदरुत्सर्ग ॥ विष्णुमूत्राचा ॥ १४ ॥ हे कृ-
 द्रियाचंपाच ॥ विषयगासाच ॥ जेवोयोनिगायाच ॥ क्रियाधावे ॥ १५ ॥ गेमेहेदाही ॥ विषयगादयेदेही ॥ आनादच्छातेही ॥ सांगि-
 जेल ॥ १६ ॥ नरभूतल आनवे ॥ वानुका नद्गाव ॥ र्णमियावरीचं नव ॥ जेगावर्त्तनी ॥ १७ ॥ इंद्रियाविषयांचियासेदी ॥ सरसीच जेगाउदी-
 कामाचीवाहदी ॥ धरूनिगा ॥ १८ ॥ जयेचं भिउठिदपणे ॥ मनासंधावणे ॥ नरयाचं नयकरण ॥ नोदेसुती ॥ १९ ॥ जियेवृत्तीविया-
 आवदी ॥ बुद्धिहोयवदी ॥ विषयां जियागोदी ॥ नेगादच्छा ॥ २० ॥ आणिदच्छित्तियासांगड ॥ इंद्रियां आपिषनजोडे ॥ तेथजेडेजो-
 साडावपडे ॥ तोचिदेष ॥ २१ ॥ आनायावरीसर ॥ तेंगवविधदर ॥ जेगावर्त्तनी ॥ २२ ॥ जियाचं निजोलेपणे ॥ पांगुळाहो जेमाणे ॥ सात्विकासींहुणे ॥ वरिहीला-
 तीआणवाहे ॥ देहस्थूर्तीचियाय ॥ मोडीनयेजे ॥ २३ ॥ जयाचं निजोलेपणे ॥ पांगुळाहो जेमाणे ॥ सात्विकासींहुणे ॥ वरिहीला-
 म ॥ २४ ॥ काआयाविषयांचि इंद्रियावृत्ती ॥ न्द्रियाचियाएकंती ॥ यापदूनि सरुनी ॥ आणिजेगा ॥ २५ ॥ विबहुनासाया ॥ जीकआत्ययाचि-
 पाव ॥ ओ १० मरुती सख ॥ ओ १४ कृत्यं ॥ ओ २२ न आनवे ॥ ओ २३ वेगं ॥

पांलागेजीवा तेथदोहीसींवरवा पाडुजेधरी ८५. हेकरवहेंदुःख हेंपुण्यहोदोष हेंमळहेंचोरख ऐसींनिवाडजे ८६ जियेथय-
 मोचमरुजे जियेसानेथोरुसो जियादिदीपारखिजे विषाजीवें ८७ जेंतेजतत्वाचीआदी जेसत्तुणुणाचीबुद्धी जेआत्मया
 जीवाचीसंधी वसवीतअसे ८८ अर्जुनानेगजाण बुद्धित्संपूर्ण आतांआईकबोळवरण अव्यक्ताचें ८९ पैसेखाचिया-
 भिड्ढातीं प्रहृतीजेमहामती तेचिथेयमरुती अव्यक्ता ९० आणिसांख्ययोगमते प्रहृतीपरिसवितीतुनें ऐसींदोहंपरी
 जेथे विचिंत्ती ९१ तेथदुजेजेजीवदशा नियेनावधीरशा अव्यक्तगथेसा पर्यायहा ९२ तरिपहालियारजनी नाराखोप
 नीगगनी काहारेअस्माना भूतक्रिया ९३ नानरीदेहनेलियागतीं देहादिककिरीटी उपाधिलपेणटीं हतकर्मका ९४
 कांबीजसुदेआतु थोकेतरुसमस्तु कांवरुप्रणतनु दशराहे ९५ तैसेसांडुनियांस्थूळधर्म महाभुतेभूतग्राम लयाजानी
 सूक्ष्म हाऊनिजेथ ९६ अर्जुनानगानाव अव्यक्तहेंजाणवें. आतांआईकआयवे इंद्रियमेद ९७ तरिअवणानयन त्वचा-
 धाणरसन इयेंजाणज्ञान करणेंपौचें ९८ इयेंतत्वमेळांपकीं करवहुःखाचीउरिवरवी बुद्धिकरितेसुखी पांचेंदही ९९ म-
 गावाचाआणिकर चरणआणिअथोदार पायुहेप्रकार पांचआणिक १०० कर्मेद्रियेहाणिपती नियेंदयेजाणिजती आइकेंके
 बल्यपनी सांगतसे १ पैसाणाचीअनेरी क्रियाशक्तिजेशरीरी नियेचीभिगनिद्वारा पांचेंदही २ एवंदाहाहीकरणें सांगी-
 तलींदेवहाणे परिसभानापुटेपण भड्डुतेऐसे ३ जेंदियांभाणिबुद्धी साझारिनियेसंधी रजोगुणाचारवादी तरळतअसे ४
 तीळिमाअबरी कांसुगतण्यातुहरी तेसेवायांचिकारी वावोजाहाले ५ आणिशक्तशोणितनाचासाथा भिळनांपांचांचाबाधा
 वायुतत्वदशाथा एकचिजाहांनें ६ मगनेहीदाहीसागीं देहधर्माचारवेवांगी अधिष्ठितेंआंगी आपुलाला ७ तेथचांचल्या
 पाठ. ओ. ५ तेंसा. ६९ ७९ ८९ ९९ १०९ ११९ १२९ १३९ १४९ १५९ १६९ १७९ १८९ १९९ २०९ २१९ २२९ २३९ २४९ २५९ २६९ २७९ २८९ २९९ ३०९ ३१९ ३२९ ३३९ ३४९ ३५९ ३६९ ३७९ ३८९ ३९९ ४०९ ४१९ ४२९ ४३९ ४४९ ४५९ ४६९ ४७९ ४८९ ४९९ ५०९ ५१९ ५२९ ५३९ ५४९ ५५९ ५६९ ५७९ ५८९ ५९९ ६०९ ६१९ ६२९ ६३९ ६४९ ६५९ ६६९ ६७९ ६८९ ६९९ ७०९ ७१९ ७२९ ७३९ ७४९ ७५९ ७६९ ७७९ ७८९ ७९९ ८०९ ८१९ ८२९ ८३९ ८४९ ८५९ ८६९ ८७९ ८८९ ८९९ ९०९ ९१९ ९२९ ९३९ ९४९ ९५९ ९६९ ९७९ ९८९ ९९९ १००९ १०१९ १०२९ १०३९ १०४९ १०५९ १०६९ १०७९ १०८९ १०९९ ११०९ १११९ ११२९ ११३९ ११४९ ११५९ ११६९ ११७९ ११८९ ११९९ १२०९ १२१९ १२२९ १२३९ १२४९ १२५९ १२६९ १२७९ १२८९ १२९९ १३०९ १३१९ १३२९ १३३९ १३४९ १३५९ १३६९ १३७९ १३८९ १३९९ १४०९ १४१९ १४२९ १४३९ १४४९ १४५९ १४६९ १४७९ १४८९ १४९९ १५०९ १५१९ १५२९ १५३९ १५४९ १५५९ १५६९ १५७९ १५८९ १५९९ १६०९ १६१९ १६२९ १६३९ १६४९ १६५९ १६६९ १६७९ १६८९ १६९९ १७०९ १७१९ १७२९ १७३९ १७४९ १७५९ १७६९ १७७९ १७८९ १७९९ १८०९ १८१९ १८२९ १८३९ १८४९ १८५९ १८६९ १८७९ १८८९ १८९९ १९०९ १९१९ १९२९ १९३९ १९४९ १९५९ १९६९ १९७९ १९८९ १९९९ २००९ २०१९ २०२९ २०३९ २०४९ २०५९ २०६९ २०७९ २०८९ २०९९ २१०९ २११९ २१२९ २१३९ २१४९ २१५९ २१६९ २१७९ २१८९ २१९९ २२०९ २२१९ २२२९ २२३९ २२४९ २२५९ २२६९ २२७९ २२८९ २२९९ २३०९ २३१९ २३२९ २३३९ २३४९ २३५९ २३६९ २३७९ २३८९ २३९९ २४०९ २४१९ २४२९ २४३९ २४४९ २४५९ २४६९ २४७९ २४८९ २४९९ २५०९ २५१९ २५२९ २५३९ २५४९ २५५९ २५६९ २५७९ २५८९ २५९९ २६०९ २६१९ २६२९ २६३९ २६४९ २६५९ २६६९ २६७९ २६८९ २६९९ २७०९ २७१९ २७२९ २७३९ २७४९ २७५९ २७६९ २७७९ २७८९ २७९९ २८०९ २८१९ २८२९ २८३९ २८४९ २८५९ २८६९ २८७९ २८८९ २८९९ २९०९ २९१९ २९२९ २९३९ २९४९ २९५९ २९६९ २९७९ २९८९ २९९९ ३००९ ३०१९ ३०२९ ३०३९ ३०४९ ३०५९ ३०६९ ३०७९ ३०८९ ३०९९ ३१०९ ३११९ ३१२९ ३१३९ ३१४९ ३१५९ ३१६९ ३१७९ ३१८९ ३१९९ ३२०९ ३२१९ ३२२९ ३२३९ ३२४९ ३२५९ ३२६९ ३२७९ ३२८९ ३२९९ ३३०९ ३३१९ ३३२९ ३३३९ ३३४९ ३३५९ ३३६९ ३३७९ ३३८९ ३३९९ ३४०९ ३४१९ ३४२९ ३४३९ ३४४९ ३४५९ ३४६९ ३४७९ ३४८९ ३४९९ ३५०९ ३५१९ ३५२९ ३५३९ ३५४९ ३५५९ ३५६९ ३५७९ ३५८९ ३५९९ ३६०९ ३६१९ ३६२९ ३६३९ ३६४९ ३६५९ ३६६९ ३६७९ ३६८९ ३६९९ ३७०९ ३७१९ ३७२९ ३७३९ ३७४९ ३७५९ ३७६९ ३७७९ ३७८

लाह ॥ तेथजे होय ॥ नयानांमस्तरव ॥ ३१ ॥ आणि ऐसी हे अवस्था ॥ नजोडनां पाथी ॥ जीजेनें चिसरवथा ॥ ३२ ॥ हंमनोरथ-
 मंगेन होय ॥ येरधीनें भिद्रिगेलेचि आहं ॥ हंदांनें चिउ पाय ॥ सरवडुःखासी ॥ ३३ ॥ आतां असंगा सासि भूता ॥ देहीचें तन्याची जेसना
 तियेनामपंडुसुता ॥ चेतनाएथ ॥ ३४ ॥ जेनरवैनि केशवरी ॥ उभीजागे शरीरी ॥ जेतिहीं अवस्थांतरां ॥ पालदेना ॥ ३५ ॥ मनबुद्ध्या
 दिआथी ॥ जिएचें भेटवटवी ॥ मुसुतीवनमाथवी ॥ सदांचिजे ॥ ३६ ॥ जडाजडीं अशां ॥ राहादेजे सरिसी ॥ तेचें तनागातुजसी ॥ लाह
 केनाही ॥ ३७ ॥ पैरां पोपरिवारनेणें ॥ आज्ञाचि परचक्रजिणें ॥ कांचंदाचें निपूणपणें ॥ सिंधुभरती ॥ ३८ ॥ नातरां भ्यामकाचे निमिन्निधा
 न ॥ लोहोकरासचेतन ॥ कांस्तूर्य संगजन ॥ चेंदवीगा ॥ ३९ ॥ अगामुखयेळें विण ॥ पनियाचें पोथण ॥ करीनरी स्तूपा ॥ कूर्मजिर्वी ॥ ४०
 पार्थतथापरी ॥ आत्मसंगतीदये शरीरां ॥ सजीवत्वाचा करी ॥ उययोगजडा ॥ ४१ ॥ मरानियेनें चेतना ॥ ह्यणिपेंपें अर्जुना ॥ आनांरती-
 विवंचना ॥ भेदआदक ॥ ४२ ॥ तरितत्वां परस्परें ॥ उयडजानिस्वभावेवर ॥ नोहेंदृष्टीतेनरीं ॥ ननांदिजे ॥ ४३ ॥ नीरांन आदीनेज ॥ नें-
 जावायूसीं झंज ॥ आणिनें सहज ॥ वायूसिंमसुती ॥ ४४ ॥ तैवींचि कोणही वेळे ॥ आपणकाय सयाहीन मिळे ॥ आंतरियां निवेगळे ॥
 आकाशहं ॥ ४५ ॥ ऐसांहीं पांचही भूतें ॥ नसाहं नीगकंमकानें ॥ कर्वातियेही ऐक्यानें ॥ देहायेनी ॥ ४६ ॥ दहाची उरिव श्रवी ॥ सांडुनि
 वसनीगकी ॥ गक्रमेकानें पोथी ॥ निजगुणंगा ॥ ४७ ॥ आणिगं संमिळेत यासाजणें ॥ चोळयेथे जेणें ॥ तियेनामगी स्तूपां ॥ दुतीपिंगा ॥
 ४८ ॥ आणिजीवेंसी पांडवा ॥ याछनि सांचांमळावा ॥ तोहांथ जणावा ॥ संयानेंपेंगा ॥ ४९ ॥ एवछतीसही भेद ॥ सांगीतले तुज-
 विशद ॥ ययायेतुलेयानें भूमिदू ॥ संचह्यणिजे ॥ ५० ॥ रथांगांचांमळावा ॥ जेवीरथ ह्यणिजे पांडवा ॥ कां अधोर्ध्व आवेवा ॥ नामदे
 ह ॥ ५१ ॥ करीतुरगसमाजे ॥ सैनानां निपजे ॥ कावाक्यं ह्यणिपती पुजे ॥ अस्तरांचें ॥ ५२ ॥ कांजळयेंचांमळा ॥ वाच्य होय आ-
 पाव ॥ ओं ॥ ३१ ॥ ग्राना ॥ ओं ॥ ४८ ॥ चंठ ॥ ओं ॥ ५० ॥ तलभेद ॥ ओं ॥ ५१ ॥

प्राप्ता ॥ नाना लोकोत्सुक्यां ॥ नामजगा ॥ ५२ ॥ नास्तु हस्तवह्नी ॥ मन्त्राण्यस्य स्थानी ॥ शरीरं जनीर्जनी ॥ दीपहाय ॥ ५६ ॥ तैमोच्छिता-
 महीदयेतत् ॥ भिन्नो जेणे एकत्वे ॥ नेणें सद्गुणपरत्वे ॥ क्षत्रह्यणिजे ॥ ५२ ॥ आणिवाने भिमौतुक ॥ पुण्यपापस्थपिके ॥ ह्यणो
 निआहीकोतुक ॥ क्षत्रह्यणो ॥ ५६ ॥ आणिकाचे भिमने ॥ देहह्यणनीययाने ॥ परिअसाहे अनने ॥ नासेयया ॥ ५७ ॥ पैपरतवा
 क्षणेने ॥ स्थावरनीअनेने ॥ जेकाही हाते जने ॥ नेसेचिहं ॥ ५८ ॥ परिस्तरउरगी ॥ यडत आहयोनि विभागी ॥ नेगुणक्रमे सं-
 गी ॥ पीडिलेसाते ॥ ५९ ॥ होचगुणविवचना ॥ पुनोहाणिपल अजुना ॥ मस्तु नुजाना ॥ रूपदावू ॥ ६० ॥ क्षत्रतं वसविस्तर ॥ संगीत-
 तं सविकार ॥ ह्यणो विआनाउदार ॥ ज्ञान आदक ॥ ६१ ॥ जयाज्ञानायाया ॥ रागनिगिच्छितातियोगी ॥ स्वर्गाची आडवंगी ॥ उमरडोनी ६२
 नयरीनीफरदीची फीड ॥ नकारिही सिद्धीची नाड ॥ योगाएसे दुवान ॥ हकसिती ॥ ६३ ॥ तपोदुर्गेवोलाडित ॥ कतुकोटिवोलाडित ॥ उलू-
 खनिसाडित ॥ क्रमेवह्नी ॥ ६४ ॥ नाचामजनमारी ॥ धावन उद्यालिया आगी ॥ एकरियनातिस्तरंगी ॥ सधुस्तेचिये ॥ ६५ ॥ ऐसीं जयेसा-
 नी ॥ सुनीश्वराची उगाही ॥ वेदतरुच्या पानोवानी ॥ हिडताती ॥ ६६ ॥ दुडु उरुस्तरंगी ॥ इयावह्नी पाडवा ॥ जन्मशांताचा साडोवा ॥ दोंक-
 नजे ॥ ६७ ॥ जयाज्ञानाची रागवणी ॥ अविद्येउणे आणी ॥ जीवात्मा या नुहावणी ॥ याज्ञानिदे ॥ ६८ ॥ जें इदियाचीं द्वारे आडी ॥ महतीचे पा-
 यमोडी ॥ जें दैत्यचि फेडी ॥ मानसाचे ॥ ६९ ॥ देताचा दुकाळ गाहे ॥ सांम्याचे सयाणें होये ॥ जयाज्ञानाची सोये ॥ ऐसें करी ॥ ७० ॥ मदा-
 चातावोचिपुसी ॥ जें महासोहाते यासी ॥ मेदी आपपरंसी ॥ भाषउसे ॥ ७१ ॥ जें संसारानें उच्छेदी ॥ सत्कल्पपंकमसावी ॥ अनवसा-
 नें वेदाळी ॥ ज्ञेयांतें जें ॥ ७२ ॥ जयाचे निज्यालेपणे ॥ पांयूळ होइ जे पाणे ॥ जयाचे निविदाणे ॥ जगेहेचे ॥ ७३ ॥ जयाचे निउजाळे ॥
 उयडती बुद्धीचे डोळे ॥ जीवदोदाफरी लोळे ॥ आनंदाचिये ॥ ७४ ॥ ऐसें ज्ञान ॥ पवित्रेक निधान ॥ जैथ विशाळ लेमन ॥ चोरवकीजे ७५
 पाव. आ. ६० आतां ७० ६६ उयानी ७

आत्मयाजीवबुद्धिः ॥ जैलान्तीहोतीस्सयव्याथो ॥ तेजयाचियासन्निधो ॥ निरुजाकीजे ॥ ७६ ॥ तेअनिस्सुखकीनिरूपजे ॥ ऐकनोबुद्धिआ
 णिजे ॥ वाबूनिजोबादेरिविजे ॥ ऐसेनाहो ॥ ७७ ॥ सरातेचियशरीरो ॥ जेआपुलायभावोकरो ॥ तेइन्द्रियाचियाव्यापारो ॥ हस्तीहिदि-
 से ॥ ७८ ॥ पवसनानेरिगवणे ॥ झालचेनिसाजेपणे ॥ जाणजनेविकरणे ॥ सागनेज्ञान ७९ अगाव्हासिपानाळो ॥ जळसापडेसुखी-
 तेथारवाचियेबाहाळो ॥ वरिहीदसे ॥ ८० ॥ क्राश्रमीचमांदव ॥ सांगेकाभाचिलवत्व ॥ नानाआचारगौरव ॥ सकुलोनाचे ॥ ८१ ॥ अथ
 वासफसमाचिया आयतो ॥ स्नेहजेसायेव्यक्ती ॥ कादुशगाचयेवस्तो ॥ पुण्यपुरुष ॥ ८२ ॥ नानरीकेळीकापूरजाहाला ॥ जेवंपरिप
 खजाणोआला ॥ काभिणारोदीपनेवला ॥ बाहोरिफाके ॥ ८३ ॥ तेसन्दरीचैनिज्ञाने ॥ जियेदेहोउभदनीचिहे ॥ तियंसागोआताअव
 धाने ॥ चारोआदक ॥ ८४ ॥ श्लो० अमानित्यमदमिलमहिंसादागिराजेव ॥ आचारोपासनयोचथैर्यमान्यविनियहः ॥ ७९ ॥ टी० तरा
 कवणेहीविपयीचें ॥ जिवासास्यहोणेनरुचे ॥ समावितपणाचें ॥ वोह्यजया ॥ ८५ ॥ आशिलेचिशुणवानिता ॥ सान्यपणेमानिता ॥
 योगनेचैयनो ॥ आगारूप ॥ ८६ ॥ तेराजवजान्तिगोमैसा ॥ व्यायेहथलाधुगजैसा ॥ काबाहीनरनावळसा ॥ दादल्यजेवी ॥ ८७ ॥
 पाथानेणेपाडे ॥ सन्मानेजोसाकडे ॥ गरिमेतंआगाकडे ॥ येनोचिनेदी ॥ ८८ ॥ पुण्यताडोळानदरवावी ॥ स्वकीनिकार्थनायकावी ॥ हा
 अमुकरेसीनोहावी ॥ सेचिलोको ॥ ८९ ॥ तेथसत्कारार्थकेगोनी ॥ तेआदरादेइतभनी ॥ मरणेसांसाटी ॥ नमस्कारितां ॥ ९० ॥ वा-
 चस्पनीचैनिपाडे ॥ सर्वज्ञानरीजोडे ॥ परिवर्जिवेमाजिदडे ॥ सहिमेभेणे ॥ ९१ ॥ चातुन्यपवी ॥ महत्वहारवी ॥ पिसंपणभिरवी ॥
 आवलीनी ॥ ९२ ॥ लौकिकाचाउदग ॥ शास्त्रावरीरुबग ॥ उरेपणचाग ॥ आयोभर ॥ ९३ ॥ जगेअवज्ञाचिकरावी ॥ सबंधंसायनथ
 रावी ॥ ऐसीऐसीजीवी ॥ जाडबहु ॥ ९४ ॥ तळवटपणबाणे ॥ आंगोहिणावोरवेवणे ॥ तेनेचिकरणे ॥ बहूनकरुनी ॥ ९५ ॥ हाजीव
 पाठ ॥ ओ० ८० बौहरी ॥ ओ० ९० आदरे ॥ ओ० ९५ तळवटपण ॥ छ ॥

ननानोहे ॥ लोककल्याणयोगेभावे ॥ नैसर्गिणोहोभावे ॥ ऐसीआशा ॥ ९६ ॥ पैलवान्नकोनोहे ॥ कीवारीनजानआहे ॥ जनऐसाश्रम-
जाये ॥ नैसर्गोदजे ॥ ९७ ॥ माझे असतेपणलोणे ॥ नामरूपहारणे ॥ मजज्ञेणेशिमिणे ॥ भूतजात ॥ ९८ ॥ ऐसीजयाचीनवसिमे ॥
जोनित्यएकानाजानआहे ॥ नामरूपचो जिये ॥ विजनाचनी ॥ ९९ ॥ वायु आणितयापडे ॥ गगनसीबोलो आवडे ॥ जीवयाणेंझडे ॥
पडियतीजया ॥ २०० ॥ किबहुनाऐसोत्सी ॥ चिदंजयादेवसी ॥ जाणनयाज्ञानेसी ॥ शंजजाहाली ॥ १ ॥ पैँअमामित्वपुरुषी ॥ नेजा
णावैइहीमिषी ॥ आनाअदंमिचिवाचरवीसी ॥ सौरसादंवी ॥ २ ॥ तरा अदंमित्तेसे ॥ लोभियाचूंभूनजेंसे ॥ जीवजाबोपरिलुम
से ॥ रौबलावावी ॥ ३ ॥ तयापरीकिरीटी ॥ पडित्यहोमाणसकटी ॥ परिसूछतनाप्रकटी ॥ आगेबाले ॥ ४ ॥ रक्ताणेंआलापाको ॥
पळवीजेविअजुना ॥ कातुपवीपणयागना ॥ वडितपण ॥ ५ ॥ आदय आवुडेअडवी ॥ मग आदयवाजेविहारवी ॥ नामरौकुळ-
वधूलपवी ॥ अवयवांनै ॥ ६ ॥ नागादुषीविष्टआपुनै ॥ पाथुरवीपेरिते ॥ नैसर्गोदंमिपजलें ॥ दानपुण्य ॥ ७ ॥ वारिवरीदेहनपूजी
लोकानेंनरजी ॥ स्वयमवाग्धजी ॥ ज्ञांथोपणें ॥ ८ ॥ परोपकारनबोलें ॥ नामरवीअप्यासिलें ॥ नशकीविकूजोडलें ॥ स्कीनीसावी ९
शरीरमोगाकडें ॥ पाहातासूपणआवडे ॥ येरुवृंदिमंनिषीथोडें ॥ नहूनह्यणें ॥ १० ॥ यरादिसोसाकड ॥ देहोचिआयनीरोड ॥ परिदा-
नीजयाहोड ॥ मरनरुसी ॥ ११ ॥ किबहुनास्वयमीथोर ॥ अयसरुंरत्नार ॥ आत्मनर्चचरुर ॥ येरुवीवेडा ॥ १२ ॥ केळीचिंदळवाडें ॥ हळु
पोकळआवडे ॥ परिफळोनिगाडें ॥ रसाळजेंसे ॥ १३ ॥ कामयाचिआगझेलि ॥ दिसवारीनजेंसेजाडल ॥ परिवर्षतीनवल ॥ घणवटने
॥ १४ ॥ नैसाजोपूणपणी ॥ पाहताथानीआयणी ॥ येरुजोनरवाणी ॥ नोचिवाय ॥ १५ ॥ हेंअसोयाचिझाचा ॥ नदनाचगाडेंजयाच्या ॥
जाणज्ञाननयाच्या ॥ हाताचदलें ॥ १६ ॥ पैंगोअदंमपण ॥ ह्यणिनहंजाण ॥ आना आदंकरवुणा ॥ अहिंसेची ॥ १७ ॥ नरिअहिंसीबहु
पात ॥ ओ. ४ बोलो.

नोपरा ॥ बोलिनीधरो अयधरो ॥ आपाभातिगणानंनरी ॥ निरुगिनी ॥ १८ ॥ गार्ग्येस्वोदेर्या ॥ जेशारवाडुभियाशारवा ॥ मगतयाचियाबु
 दुरगा ॥ कूपकीजो ॥ १८ ॥ कानाहनाडोभरचिबेजे ॥ मगमस्कोविषाडोभरिजे ॥ मानदेउळमोडनिकजे ॥ पौळदेवा ॥ २० ॥ तेसीहि-
 साचिकरुनिअहिंसा ॥ निपनविजेदादेसा ॥ येइवलेपसासा ॥ निगणकेना ॥ २१ ॥ जैअवृष्टीचैनिरुपद्रवे ॥ गादुलेविश्वआयवे ॥ ह
 पोनिपजनेटीकरावे ॥ नानायागा ॥ २२ ॥ तवतियदधेचियाबुडो ॥ पशहिंसावरोकडी ॥ मगअहिंसेचीयडी ॥ वैचोदसे ॥ २३ ॥ पेश
 जेनुसधाहिंसा ॥ तेयउगवतइयाअहिंसा ॥ रजिगदलवायविचम ॥ अयाचिना ॥ २४ ॥ आणिआयुवदआयवा ॥ नोयाचमोहरा
 पाडवा ॥ जोजीवाकारणेंहारा ॥ जोविशत ॥ २५ ॥ गारासंगेयादावली ॥ जोकतोहतेदेगिनी ॥ नोहिंसाभिवारावयाकली ॥ चिक-
 त्सापे ॥ २६ ॥ तवनेचिकित्सपशुं ॥ गवाचकदरयागिनि ॥ आणगदहाउपडविने ॥ समूओसपजो ॥ २७ ॥ एकंआजमोडविनी ॥ अ
 जंगमाचीरवालीकाहाडविनी ॥ एकंराभिणीउकडविनी ॥ गुदामासो ॥ २८ ॥ अमानयाचुनरुवरा ॥ सर्वोगतंविधिव्याशिरा ॥ ऐसेजीवि
 येऊनियनुधरा ॥ कोरडेकेले ॥ २९ ॥ आणिजंगमाहीहात ॥ आऊनिकगदिल्लोपस ॥ मगरारिपुनंशिणत ॥ आणिऊजीव ॥ अहोवसंतोदव
 कोरे ॥ मोडनिकेदीदेहारे ॥ नगरुनिवेहारे ॥ गवादीयातली ॥ ३१ ॥ मत्सकुपायुसोवेले ॥ तवतळवरीउयडेपडिल्ले ॥ घरमोडनिकेले ॥ मोडवपु
 टें ॥ ३२ ॥ नानापायुरणे ॥ जाळुगिजसेनापण ॥ काजालेंआगधुणे ॥ कुजराजे ॥ ३३ ॥ नातरीबेलविक्कुनिगोला ॥ पुसनावोनिबाधिजे
 गावा ॥ दयाकारणकिंचेश ॥ कादहंसो ॥ ३४ ॥ एकंधर्माचियावाहणी ॥ गाळभादरंयेपाणी ॥ नवगादितया ॥ आहाळणी ॥ जीव
 मेले ॥ ३५ ॥ गकनपचर्तचिकण ॥ दयहिंसंजेसेणे ॥ नेथकुदथेलेसाण ॥ तेचिहिंसा ॥ ३६ ॥ गवंहिंसाचिकरुनिअहिंसा ॥ क्रमका-
 डोभिणयेसा ॥ सिद्धातसमनसा ॥ वोळसेले ॥ ३७ ॥ पहिंअहिंसचेनाव ॥ आर्थाकनेजव ॥ तंवस्फुतिवाधलीहाव ॥ दयमर्ता ॥ ३८
 पाठ ॥ ओं २० विरिजे ॥ ओं २१ मानगेसा ॥ ओं २२ पाहिजे ॥ ओं २३ ॥ ओं २४ ॥ ओं २५ ॥ ओं २६ ॥ ओं २७ ॥ ओं २८ ॥ ओं २९ ॥ ओं ३० ॥

नारिकेलनिदयेनाद्यावे ॥ ह्यणोनिपदिनेबोन्नावे ॥ तेवीचिनुवाहिजाणवे ॥ ऐसासाव ॥ ३९ ॥ बहुतरुंभिरिरीदी ॥ हाचिविषयइरीगो
वी ॥ येदवीकांआदादी ॥ धांविजेन्ना ॥ ४० ॥ आणित्स्वमनाचिर्धानिधारा ॥ लागोनिधायलुधरा ॥ ग्राममतानरा ॥ निर्वेचकाजे ॥ ४१ ॥ ऐ-
सीहीहेअवधारी ॥ निरुपिर्नपरी ॥ आनाय्यावरी ॥ सुखजेगा ॥ ४२ ॥ तेस्वमतबोन्निजेन्ना ॥ अहिसेरूपकिजेन्ना ॥ जियाउरिलियाआ
नुड ॥ सोनदिसी ॥ ४३ ॥ प्रीतेअधिष्ठित्तिआगे ॥ आणित्तेआचरनोनवगे ॥ जैसीकसवरीचिसगे ॥ वानियाते ॥ ४४ ॥ तेसेज्ञानमगावि
येमेदी ॥ सारिसेचिअहिसेचोबबउठी ॥ तेचिऐसोकिरीदी ॥ परीसआता ॥ ४५ ॥ नरितरंगनोन्नादिता ॥ लहरीपायेनफोदिता ॥ साचल
नमोदना ॥ प्राणियांचा ॥ ४६ ॥ वेगेआणिलेसा ॥ दिवोयास्तुनिआमिया ॥ जळोबककसा ॥ पाउलसये ॥ ४७ ॥ कांक्रमळावरीभ्रमर ॥
पायेरविनीहलुवार ॥ कुचुबेलकेसर ॥ दयाशंका ॥ ४८ ॥ तेसेपरमाणुपांगुनले ॥ जाणुनिजीवसानुले ॥ तेथानारुणयामाजिपाउले ॥
लपवूनिचाले ॥ ४९ ॥ तेवाटहुपेचीकरिता ॥ तेदिशाचिस्नेहसरिता ॥ जीवातळीआयरिता ॥ आपुलाजीवि ॥ ५० ॥ ऐसियाजतना ॥
चालणजयाअष्टुना ॥ हेअनिर्वाच्यमैमाणा ॥ पुरिजेना ॥ ५१ ॥ पैमोहाचेनिसांगडे ॥ लासीपिलींधरीतोडे ॥ तेथदाताचेआगरडे
लागतीजेसे ॥ ५२ ॥ कास्मेहाळमाये ॥ तांऊयाचीवासपाहे ॥ नियोदवीआहे ॥ हळुवारजे ॥ ५३ ॥ नानाक्रमळदेळोळ ॥ विजतीदा
ळटाळे ॥ तेजेणेपाडेबुळ ॥ वारायेपे ॥ ५४ ॥ तेसेनिमार्दवेपाये ॥ भूमीवरीच्यसीतजाये ॥ लागतीतेथहोये ॥ जीवांसतर ॥ ५५ ॥
ऐसियालपिमाचालता ॥ ह्यमिकोटकांडुसता ॥ देरेवेतरिमायुना ॥ हळुविनेये ॥ ५६ ॥ ह्यणेपायथडफडोल ॥ तरीस्वायीचिमिदा
मोडेल ॥ रत्नलेपणापडेल ॥ ज्ञोतीहन ॥ ५७ ॥ दयाकाकुळती ॥ वाहाणीरियायुती ॥ कोणेहीव्यक्ती ॥ नवचेवरी ॥ ५८ ॥ जीवाचेनिम
वे ॥ तृणातेहीनोलाढावे ॥ मगनलेरिवताजावे ॥ हेकंगोती ॥ ५९ ॥ सुगियमेरुनोलाढावे ॥ मशकासिंधुनतरवे ॥ तेसेपेदलियावकरवे
पाव ॥ ओ ॥ ४० आउबारी ॥ ओ ॥ ४३ अतुल ॥ ओ ॥ ४७ जैसा ॥ ओ ॥ ५१ परि ॥ ओ ॥ ५३ अ ॥ ५४ अ ॥ ५५ अ ॥ ५६ अ ॥ ५७ अ ॥ ५८ अ ॥ ५९ अ ॥ ६० अ ॥ ६१ अ ॥ ६२ अ ॥ ६३ अ ॥ ६४ अ ॥ ६५ अ ॥ ६६ अ ॥ ६७ अ ॥ ६८ अ ॥ ६९ अ ॥ ७० अ ॥ ७१ अ ॥ ७२ अ ॥ ७३ अ ॥ ७४ अ ॥ ७५ अ ॥ ७६ अ ॥ ७७ अ ॥ ७८ अ ॥ ७९ अ ॥ ८० अ ॥ ८१ अ ॥ ८२ अ ॥ ८३ अ ॥ ८४ अ ॥ ८५ अ ॥ ८६ अ ॥ ८७ अ ॥ ८८ अ ॥ ८९ अ ॥ ९० अ ॥ ९१ अ ॥ ९२ अ ॥ ९३ अ ॥ ९४ अ ॥ ९५ अ ॥ ९६ अ ॥ ९७ अ ॥ ९८ अ ॥ ९९ अ ॥ १०० अ ॥

अतिक्रमः॥६०॥ ऐसी जयार्चनां॥ हृषाकृष्णो फळा आली॥ देवसर्पानि जयादी॥ दयावाचे॥ ६१॥ स्वयंभवसर्पानि नरककुमार॥ सुखमोहाचे माहेर
 माधुयाजाहोले अक्रूर॥ दशमनेमं॥ ६२॥ सुदोस्तहृषाक्षरे॥ माया नानुनी भस्मरे॥ शब्दाशहो अंगदरे॥ हृषाभायो॥ ६३॥ तयचो लणो जिनाहो
 बोले ह्यणे जरीकाही॥ तारबोलकाणाहो॥ रघुवत्क्रा॥ ६४॥ बोलतो अर्थिदुर्हो नये॥ तारहो गादिवावसां निहरो॥ आणि कोणासुनारये॥ शं
 कामनी॥ ६५॥ मोडली गोवीहनमोदेन॥ वासिपेन वरोणी उदेन॥ आदका निवोनी उल॥ कोणही जने॥ ६६॥ तरहुयाळी कोणा नोहीवी॥ मं
 वर्दक वणची वचवावी॥ ऐसासा वजनी॥ ह्यणो नया॥ ६७॥ मग सायिं लविवाये॥ जोरनोये दाल जने॥ तारपरि सत्या होये॥ मायबाप
 ॥ ६८॥ काना दबहाचि मुसे आले॥ कोरागापय आसले॥ पतिवने आले॥ वाधेक्य जेसे॥ ६९॥ तेसें साज आणि सावाळ॥ मतले आणिर
 साळ॥ शब्द जेसें क्लोळ॥ अमृताचे॥ ७०॥ विरोध वादवद॥ माणानापलाळ॥ उपहास लळ॥ नमस्पर॥ ७१॥ आतवेगा वंदण॥
 आशाशकापनारण॥ हे सन्यासने अवगुण॥ जयावाचा॥ ७२॥ आणि तयाचि पर्गि करीदा॥ थाउ जयादिदी॥ सांडिलिया मुकु-
 दी॥ मोकडिया॥ ७३॥ कोजे मूतिंगस्तु आहे॥ तियेरु पोशकोरिपायें॥ ह्यणो निवासन पाहे॥ बहुतरु रुनि॥ ७४॥ ऐसाही कोणार-
 केवेळे॥ भितरले छपेचे निबळे॥ उयले निळेळे॥ दृष्टीयाली॥ ७५॥ तरिचंद्रावेदो नयारा॥ निघतात दूर्त गोचरा॥ परिणकसरेच
 कोरा॥ नियती दोद॥ ७६॥ तेसें माणियां होये॥ जरीनोवास पाहे॥ तया अवलो कनाची सोये॥ झुमी हीनणें॥ ७७॥ किबहुनारसी
 दिवी जयाची मृतांसी॥ करही देरवसी॥ तेसें चिते॥ ७८॥ तरिहो उगियाहूतार्थ॥ राहिले सिद्धाचे मनोरथ॥ तेसेबयाचे हाते॥ नि
 व्यापार॥ ७९॥ असम आणि सन्यासले॥ कानि रचन आणि विस्मले॥ मुको निगमले॥ मोन जेसे॥ ८०॥ नयापरीकांही॥ जशक
 रा करणेनाही॥ जे अक्रतयाचा बायी॥ वसोरेती॥ ८१॥ आसले लवारा॥ नरवन्नागाल अंधरा॥ दयाबुद्धी करा॥ चकोनेदी ८२
 मरु ओ० ६२ अंतरे ओ० ६७ उगा ओ० ६९ उपाय्यवतो ओ० ७१ उपरीय क्रिंता उगोय पाप ओ० ८० असम ओ० ८१

तेथ आंगावरील उडवावी ॥ कांजोळारिगने झाडाचीं ॥ पशुपण्यांदावावी ॥ नासमुद्रा ॥ ८३ ॥ इयाक्रेउतियागोवि ॥ नावडेदंडकावी ॥
 मगशस्त्राचीकिरीटी ॥ बोलणेंके ॥ ८४ ॥ नोळ्याकमबेरगळणें ॥ कापुषयाळाझेलणें ॥ नकरोह्मणगोफणें ॥ गेसोहोदल ॥ ८५ ॥
 हाजवनीजरीसावळी ॥ यालागीं आंगनहूरवाळी ॥ नरवांचोरुं लाळी ॥ बोटावरी ॥ ८६ ॥ तंवकरणें याचाचि अस्माव ॥ परिगसाही
 पडेडोवी ॥ नरिहातां होचिसराव ॥ जे जोडिजती ॥ ८७ ॥ कानांमिंकारांउचिउजे ॥ हातपडिल्यादेइजे ॥ नानरिआततेस्पर्शज
 अळुमाळ ॥ ८८ ॥ हेहीउपरंधकरण ॥ तरीआतमयहरणें ॥ चेणनोचिद्राकरणें ॥ जिझाळालो ॥ ८९ ॥ घानोनितोस्पर्श ॥ मळयाभि-
 छरवरपुस्त ॥ येणेंमानपश ॥ कुरवाळण ॥ ९० ॥ जेसदोचिनेमोकळ ॥ जेसोचिंदनारेंशीतळे ॥ नफळतोहीनिफळे ॥ होतीचिना ९१
 आतांआसोहेंवाजळ ॥ जाणतकरतळ ॥ सज्जनांचेथीळ ॥ स्वप्नावजेसे ॥ ९२ ॥ आतांमनगयाचे ॥ सांगोह्मणसांचे ॥ नरिआंगी
 नलेकोणाचे ॥ विलासहे ॥ ९३ ॥ काडुशारवानदेनरु ॥ जळेवीण असेसारु ॥ तेजआणिनेजाकारु ॥ आनकाई ॥ ९४ ॥ अवव
 वआणिशरीर ॥ हेवगळालेकाथवीर ॥ करसध्याणिनर ॥ शिजानोआथी ॥ ९५ ॥ ह्मणानिहेजेसर्व ॥ सांगीतलेबात्यभाव ॥ तेस
 नचिसावयव ॥ ऐसजाण ॥ ९६ ॥ जेमुईचीजरीविने ॥ तेचिवरीरुसव जाहाजे ॥ तेसंदियद्वाराफांकले ॥ तेअनरचिबी ॥ ९७ ॥
 पैमानसोचिजरी ॥ अहंसेचीअनवसरी ॥ नरिंकेचाबाहेरी ॥ वोसंदेव ॥ ९८ ॥ आवडेतेवृत्तीकरीदी ॥ आधींमनोनीचिउती ॥ मगते-
 वाचेहिंदी ॥ कुरांसये ॥ ९९ ॥ यांच्छानिमनोचिनाही ॥ तंवाचेसीउमरेतकुई ॥ नोजेवीणमुई ॥ अकुरअसे ॥ १०० ॥ ह्मणोनियनप
 णजेंमाहे ॥ तेइंदियांआधींचितवूदे ॥ स्तूत्रधारवीणसाइरणडे ॥ वावोजेंस ॥ १०१ ॥ उगमोचिवाळुनजाये ॥ तेवोथीकेचें वाहे ॥ जी-
 वोगेलियांआहे ॥ चेष्टादेही ॥ १०२ ॥ तेसहेपाड्या ॥ मूळययासावा ॥ हेंचिराहटेआयदा ॥ द्वागदेही ॥ १०३ ॥ परिजियेवेंबाजेंस ॥ जे
 पाठ-ओ-२३ वारिनी-ओ-८७ प्रस्तावो-किवा-रावो-ओ-९१ रिने-ओ-९५ ज-७

होऊनि आंगे असे ॥ वाहेरिचें तें सें ॥ व्यापार करूं ॥ २५ ॥ या न्यागोसाचो कार ॥ मनीं अहिंसा या न्यागोसा ॥ जें सोपि केलें त्वी आदरे ॥ बोसात न ये
 ॥ २६ ॥ ह्यणोनि इंदियने चिसपदा ॥ वेनिताही उचडवादा ॥ तें अहिंसाचा वेदा ॥ करितें आह्मता ॥ २७ ॥ समुदीदा देभारिते ॥ नें समुद्रचि प्ररीत-
 याते ॥ नें सें स्वसं पनिचि ॥ इंदियाकें ॥ २८ ॥ हे बहू असो पंडित ॥ धरुनि बाळाचा हात ॥ बोनि र्हाही मरुत्यक्त ॥ आपणचि ॥ २९ ॥ नें सें दे
 या तुल आपुले ॥ मनें हात पायां आणिले ॥ मरगतें थप जगिले ॥ अहिंसेने ॥ ३० ॥ या करणों करिता ॥ इंदियां चिया गोरी ॥ मनाचि ये चिरा-
 हावीं ॥ रूप केलें ॥ ३१ ॥ तें सासन देहाचा ॥ मनसं न्यासाद लाचा ॥ जाहाला वायें जयाचा ॥ देव सुशोभ ॥ ३२ ॥ तो जाण वेल्हाळ ॥ ज्ञानाचें
 व्याउळ ॥ हे असो निखळ ॥ ज्ञानचिनी ॥ ३३ ॥ जें अहिंसा कां नें किजे ॥ यथाचार निरुपिजे ॥ नया हांगूं जें उपजे ॥ नें तो चिया हावा ॥ ३४
 तें सें ह्यणि नलें देव ॥ तें बोलें गें कें सांगावें ॥ परफावें जें हे उपसाहावें ॥ नुझीस जें ॥ ३५ ॥ ह्यणान्ति परवाचार गुंरू ॥ विसरे भागील मोह-
 धरू ॥ कावरे न गें पंखिरू ॥ गगनां भरे ॥ ३६ ॥ तें मया ममानि च्यास्कुनीं ॥ भाविन्दियार सहते ॥ वाहा वला मनी ॥ आकळेना ॥ ३७ ॥ त
 रिने सें नो हे अवधारा ॥ कारण असो विस्तारा ॥ यें कर्वा पदतरीं अदरा ॥ नहां चिचि ॥ ३८ ॥ अहिंसा हाण तो योडी ॥ परि तें विहे होय उच
 डा ॥ जें लोरी जती कोडी ॥ मतां चिया ॥ ३९ ॥ यें कर्वा पासं मतातरे ॥ आत नूनि आग भरे ॥ बोलि जेत तें नसरे ॥ तुह्या यासी ॥ ४० ॥
 रत्न पारि रिया चिया गांवीं ॥ जाई लगद कीतार मो जवी ॥ काश भरी न करावी ॥ मिड गणतें ये ॥ ४१ ॥ कादसा वास कापुरा ॥ मंद जें थअ-
 वधारा ॥ पिताचा विकारा ॥ नये साते ॥ ४२ ॥ ह्यणोनि दयें समे ॥ बोलि कें पणाचि निस्ते ॥ ४३ ॥ लारा सरन लुं भे ॥ बोला जूं भू ॥ ४४ ॥
 सामान्या आणिवि शेषा ॥ सकळे की जेत दरवा ॥ तारका ना मनाचे या मुरगा ॥ कडे न्यालना तुह्या ॥ ४५ ॥ शकें चि गदळे ॥ जें शकूं प्रमे
 ये येळे ॥ तें माणिया पाउली पळे ॥ अवधान ॥ ४६ ॥ काकरु निवावु छियेची बुंशी ॥ जळयि येवती ॥ नयाची वास पाहती ॥ हंस
 पाठ ॥ ओ- ६ उदा- ओ- १५ हिरवे- ओ- २३ नेयाल- ओ- २४ येनें- ओ- २५ वाहानी- ७

काई ॥ २५॥ कांअप्पापैलं कडे ॥ जें येत चां दिणें कोडे ॥ तें न कोरें चंचु वडे ॥ उचलितना ॥ २६॥ तें सें तुह्यावास न पाहाल ॥ ग्रंथ ने यावे -
 रि को पाळ ॥ जरी अवसंवादनो हे ल ॥ निरूपण ॥ २७॥ न बुद्धा वितां मतें ॥ मि फूजे असो पंचिता गतें ॥ नें व्याख्यान जी तु मते ॥ जो इनि ने
 दी ॥ २८॥ आणि माझे न व आयवे ॥ ग्रंथ न येणे चि मावे ॥ जेतु ह्या संतो हो आवे ॥ स सुख सदा ॥ २९॥ येइ वी गो सा चा करे ॥ तु ह्या-
 गो ता थो चि सो यरे ॥ जाणो मी गो ना गे कु सरें ॥ धरती मिया ॥ ३०॥ जे सर्व स्व आपु ल दाल ॥ मग दये ने सा दु वृ गित्या ल ॥ ह्यो नि गि
 यन कुं बोल ॥ सार्चि चे हे ॥ ३१॥ कां सर्व स्वाचा लो मधरा ॥ आणि दये वो ला च अ कर करा ॥ तारी ते मज अवधारा ॥ एक चि गतो
 ॥ ३२॥ कि व हु ना मज ॥ तु म चि या हू पा का ज ॥ ति ये ना गो व्या ज ॥ ग्रंथ न वे के ले ॥ ३३॥ तारी तु ह्यार मि का जो गो ॥ व्याख्यान शो या वे लागे
 ह्यो नि जी मतां गे ॥ बो लो गे ना ॥ ३४॥ ते व कथे मि प सरु जा हा ना ॥ मो का र्थ दूरी गे ला ॥ को जो ह्य सा य सो बो ला ॥ अप त्या मज ॥ ३५
 आणि यां सा आ नित हर व ॥ फे डि नां ला गे वे छ ॥ नें दूषण न के र व डळ ॥ सा डा वा को ॥ ३६॥ कां स व नो र नु कृ पितो ॥ दि व स ला ग लि या मा
 तो ॥ को पा वे वी जी वि ना ॥ जि ता गो की जे ॥ ३७॥ पारी या वी ल ही न के ॥ तु ह्यो उ प मा हि ल ते वि व र ने ॥ आ तो अ व या रि जो दे वे ॥ बो ल
 ने रे म ॥ ३८॥ ह्यो उ चो ष क ला च ना ॥ सा व ध हो दे अ चु ना ॥ करू तू म ज्ञा ना ॥ ३९॥ तारी सा न गा ते ग्यो ॥ वो छ र व त्ने नि
 र्ते ॥ आ को री वी ण जे थें ॥ स्त मा अ से ॥ ४०॥ अ ग्रा थ स री वी ॥ कु म र्छि णो जि या प री ॥ कां स दे वां चि अ र्च ने ॥ स प नि जे सी ॥ ४१॥ पा
 थो ते र्णे पा डें ॥ ह्य मा ज या ने वा दे ॥ न हो ल स्त ण ते पु दे ॥ ले ह्य ण सा गो ॥ ४२॥ तारी द ये ने ले णे ॥ आ नं ता दे जे णे ॥ थ र जे ते विं सा ह णे
 सर्वे चि ज या ॥ ४३॥ त्रि वि ध सु र व्य आ य वे ॥ उ प द वा दे य वे ॥ व रि प ड लि या न के ॥ वा क डा जी ॥ ४४॥ अपे सि त पा वे ॥ नें जे तो वे-
 या ना वे ॥ अ न पे सि ता हो क र वे ॥ या न नो चि ॥ ४५॥ जो मा ना प मा ना गे सा दे ॥ स न दुः ख जे थ मा मा ये ॥ नि दा स्तु ति नो हे ॥ दु र व ड-
 पाठ-ओ-२७ नि वि वा द-ओ-२८ नि प्र दे-ओ-२९ जीव-ओ-३० सां गो पार मं-३१

जो ॥ ४६ ॥ उंझाळीं निजो न पाप ॥ हिमवतं नं कां प ॥ कायसं गंही नचां हि प ॥ या न लेश ॥ ४७ ॥ स्वधिरयशं चा मारु ॥ नेण जे सा मेरु ॥ की
 थराय झसू करु ॥ दोहें न ह्मणें ॥ ४८ ॥ नामाचराचरो मूनी ॥ दादणा न दे सिनी ॥ नैसा ना भंड पानी ॥ यामे जेना ॥ ४९ ॥ येउ निज कंठे
 नाट ॥ आनि यान दिन दाचे मधाट ॥ करो वाड पोत ॥ समु जे र्वी ॥ ५० ॥ नैसे जया चिया वाये ॥ नसा हाण कां हो जिना हो ॥ आणि साहने
 मंगे से हो ॥ स्मरण लुरे ॥ ५१ ॥ शरीरा जे पातले ॥ तें करु निया ना आयुले ॥ नथ साहने नि न वले ॥ यो प जेना ॥ ५२ ॥ हे अनाक्रोश समा
 जे थ आशी प्रयोजमा ॥ जाणने गे म हि मा ॥ दा ना सि गा ॥ ५३ ॥ नो प्ररुष पाडवा ॥ जो ना चा जो ना वा ॥ आना पोरस आर्जवा ॥ रूप करु
 ॥ ५४ ॥ नरि आर्जव ते रसे ॥ याणाचे सो ज न्य जे सं ॥ आवड न या ही दोये ॥ एक चि पें गा ॥ ५५ ॥ यो तो उपाह नि य काश ॥ न करी जे विच
 लाश ॥ जगा एक अवकाश ॥ आकाश जे सं ॥ ५६ ॥ नैसे जया चं मच ॥ माणु सम ति आन आन ॥ नो हे आणि वन न ॥ रे सं पें ते ॥ ५७ ॥ जे
 जग चि स नो वर ॥ जरो सी जि नाट सो य रि क ॥ आप पर हे मारव ॥ जाणने ना ही ॥ ५८ ॥ मल ते गें सो मंढ ॥ पाणि या ए सा दाळ ॥ क
 वणो वरवीं आडळ ॥ ने ये चि त्त ॥ ५९ ॥ वारिया चं थाव ॥ तैसे सरळ माव ॥ शंका आणि हाव ॥ ना हो जया ॥ ६० ॥ साये पुढे वाळ का ॥ शिगा
 ना हीं शंका ॥ तैसे सम दे ना लो कां ॥ नालो ची जो ॥ ६१ ॥ फांक निया दे दीवरा ॥ परिवर ना हो थ सु धरा ॥ तैसा को न कां परा ॥ ने पो चि जो ॥ ६२
 चोर बाळ पणार लाचे ॥ रत्ना वरी करणाचे ॥ तैसे पुढे मज याचें ॥ करणे पाठी ॥ ६३ ॥ आनो जुं जे ने ने ॥ अनुभव चि जो पावणे ॥ ध-
 री सो कळीं अतः करणे ॥ नो हे जया ॥ ६४ ॥ दिठो नो हे मिण र्था ॥ बोलणे ना हां स दिग्धी ॥ कवण संहि न वृद्धी ॥ राहा तो नेणें ॥ ६५ ॥
 दाहा हीं दीये मांजळें ॥ निःस्पृचे निर्मळें ॥ पांच ही पा लव मो कळें ॥ आवडी पाहार ॥ ६६ ॥ असुना चि थार ॥ तैसे मज्ज अंतर ॥ कि
 बहु ना जो मा हेर ॥ या चि दाचे ॥ ६७ ॥ नो पुरुष स भदा ॥ आर्जवा चिया आग वदा ॥ जाणने या नि धर दा ॥ जोग केला ॥ ६८ ॥
 पाट ओ ॥ ५५ ॥ उद्देशो ॥ ओ ॥ ५६ ॥ पाणि यांचा ओ ॥ ५७ ॥ जीव ॥ ओ ॥ ५८ ॥ जीव ॥ ओ ॥ ५९ ॥ जीव ॥ ओ ॥ ६० ॥ जीव ॥ ओ ॥ ६१ ॥ जीव ॥ ओ ॥ ६२ ॥ जीव ॥ ओ ॥ ६३ ॥ जीव ॥ ओ ॥ ६४ ॥ जीव ॥ ओ ॥ ६५ ॥ जीव ॥ ओ ॥ ६६ ॥ जीव ॥ ओ ॥ ६७ ॥ जीव ॥ ओ ॥ ६८ ॥ जीव ॥ ओ ॥ ६९ ॥ जीव ॥ ओ ॥ ७० ॥ जीव ॥ ओ ॥ ७१ ॥ जीव ॥ ओ ॥ ७२ ॥ जीव ॥ ओ ॥ ७३ ॥ जीव ॥ ओ ॥ ७४ ॥ जीव ॥ ओ ॥ ७५ ॥ जीव ॥ ओ ॥ ७६ ॥ जीव ॥ ओ ॥ ७७ ॥ जीव ॥ ओ ॥ ७८ ॥ जीव ॥ ओ ॥ ७९ ॥ जीव ॥ ओ ॥ ८० ॥ जीव ॥ ओ ॥ ८१ ॥ जीव ॥ ओ ॥ ८२ ॥ जीव ॥ ओ ॥ ८३ ॥ जीव ॥ ओ ॥ ८४ ॥ जीव ॥ ओ ॥ ८५ ॥ जीव ॥ ओ ॥ ८६ ॥ जीव ॥ ओ ॥ ८७ ॥ जीव ॥ ओ ॥ ८८ ॥ जीव ॥ ओ ॥ ८९ ॥ जीव ॥ ओ ॥ ९० ॥ जीव ॥ ओ ॥ ९१ ॥ जीव ॥ ओ ॥ ९२ ॥ जीव ॥ ओ ॥ ९३ ॥ जीव ॥ ओ ॥ ९४ ॥ जीव ॥ ओ ॥ ९५ ॥ जीव ॥ ओ ॥ ९६ ॥ जीव ॥ ओ ॥ ९७ ॥ जीव ॥ ओ ॥ ९८ ॥ जीव ॥ ओ ॥ ९९ ॥ जीव ॥ ओ ॥ १०० ॥ जीव ॥ ओ ॥

आतां यथावरी ॥ गुरुभक्तजीवरी ॥ मांगोरा अथारी ॥ चतुरनाथा ॥ ६९ ॥ तिरिआथविचिदेवी ॥ जसप्रसीहसेवा ॥ जम्रह्मवरीजीवा
 शोच्यातेंही ॥ ७० ॥ तेआचार्योपास्ती ॥ सांगजेंनुजमनी ॥ वेसोंदेगकृपांथी ॥ अवधानवी ॥ ७१ ॥ तिरिसकळजळसमूही ॥ येऊनिंगण-
 नियाळीउदधी ॥ कींझुतीहेमहापदी ॥ पैतीजाहानी ॥ ७२ ॥ नानावेदाळीनिजीवितें ॥ गुणगुणउपविने ॥ पाणनाथासिउचितें ॥ दिवसें
 प्रिया ॥ ७३ ॥ तेससबाळ्यआपुने ॥ जेणेंगुरुकुळीवोपले ॥ आपणपेकले ॥ प्रतेचिघरा ॥ ७४ ॥ गुरुहजियेदसों ॥ तोदेशचिवसे-
 मानसी ॥ विराहणीकांजेंसी ॥ वधूभाते ॥ ७५ ॥ नयेकडोनयेतसेवारा ॥ देसोनिधांवेसामोरा ॥ आउपडेत्वणेघरा ॥ बीजेकेंजो ॥ ७६
 साचामेयाचियाभूळी ॥ तियेदेंशेसीचिआवडेवोळी ॥ जावथानैपतीकरूनियाची ॥ गुरुहजो ॥ ७७ ॥ परिगुरुआज्ञाधारितें ॥ दे-
 हगांवीअसोपकले ॥ वांसरुवाळाविले ॥ दावेंजेंसे ॥ ७८ ॥ ह्यागेदेंतेंबिरडेफलेल ॥ केनीस्वामीमदेळ ॥ युगाहूनिविडल ॥ निमिषमा-
 नी ॥ ७९ ॥ ऐसेयागुरुआसीचिआले ॥ कांसयेगुरुचीचियांल्ले ॥ तंरिगनायुथाजोउले ॥ आयुष्यजेंसे ॥ ८० ॥ कांसकनयाअकुरा
 वरिपडिलियापीयूषधारा ॥ नानाअन्योदकींचियासागरा ॥ आजगाम्या ॥ ८१ ॥ नातरोकेंनिधानदेखिलें ॥ कांअथळियाजेकडेउघड-
 ले ॥ मणगाचियाआगाआले ॥ इंदपद ॥ ८२ ॥ तेसागुरुकुळीचिनिवांवे ॥ महास्वंधारावे ॥ जेकोडेहीनपोराळवे ॥ आकाशकां-
 ॥ ८३ ॥ पैंगुरुकुळीगेसी ॥ आवडीजयादेखसी ॥ जाणजाननयापसों ॥ यादहीकरवी ॥ ८४ ॥ आजिअम्यनरितियेकडे ॥ प्रेमाचेनिप-
 वाडे ॥ श्रीगुरुचरूपदे ॥ उपासीअ्यानी ॥ ८५ ॥ हृदयशुद्धीचियाआवारी ॥ आराधनोगुरुसुनेवरी ॥ मगसर्वसांवेसीपरिवारी ॥
 आपणहोय ॥ ८६ ॥ कांचेनद्याचियेपावळी ॥ मांजिआनदाचियाराउळी ॥ मीसुसुडिंगादळ ॥ आनासृत ॥ ८७ ॥ उदयिजना-
 बोधार्का ॥ बुईबोडालसालिका ॥ भरोनियांयवका ॥ नारगोळीवाहे ॥ ८८ ॥ काळशाल्हीत्रिकाळी ॥ जीवदशाधूपजाळी ॥ ज्ञा-
 पा-ओ-७९ ॥ प्रभक्तचितें ॥ ओ-७६ ॥ काने ॥ ओ-७७ ॥ दिशासी, शाना ॥ ओ-८६ ॥ धुत ॥ ओ-८९ ॥ काळा ॥ ७९

नदीपोंकच्छी ॥ निरंतर ॥ ८० ॥ साभरस्थाचीरससोय ॥ अरवुंद अर्पित जाये ॥ आपण भराडाहाये ॥ गुरुनंजिग ॥ ८० ॥ नातरी-
जीवाचियेसेजे ॥ गुरुकांतकरुनिफ्रजे ॥ ऐसीमसार्चनसो जे ॥ दुर्द्विवाहे ॥ ८१ ॥ कोणेएक अवसरी ॥ अनुरागभरे अंतरा ॥ कीतयना
भकरी ॥ सीराव्ही ॥ ८२ ॥ तेथेअथध्यानबहुसरव ॥ तेचिरोपनुक्किभिदोष ॥ वरिजवशयनदरव ॥ भावोयुक्त ॥ ८३ ॥ मगवोअग-
नीपाये ॥ तेवस्वभापणहाये ॥ गुरुजहोभिउभाराहे ॥ आपणचि ॥ ८४ ॥ नासी आपणजन्मे ॥ ऐसगुरुयनियेम ॥ अनुभवीबनो
धर्मे ॥ ध्यानसरव ॥ ८५ ॥ एकधियेवळे ॥ गुरुसायकीभावबळे ॥ मगस्तन्यसखेनाळे ॥ भकावरी ॥ ८६ ॥ नातरीकिरीही ॥ जैन-
न्यतरुतवदी ॥ गुरुयेनु आपणपदो ॥ वत्सहाये ॥ ८७ ॥ गुरुसुपास्वहसामिहो ॥ आपणहायमासोच्छी ॥ कोणेएकवेच्छी ॥ होचिमा-
वी ॥ ८८ ॥ गुरुकरुणामुलाचिवडप ॥ आपणसवावर्तचिहायमप ॥ ऐसैसमंजन्य ॥ मनचिवये ॥ ८९ ॥ चक्षुरसेवीण ॥ पितृहायआ-
पण ॥ कैसेपे अपारपण ॥ आवडचि ॥ ९० ॥ गुरुतेपक्षिणाकरी ॥ चागयचाचवरी ॥ गुरुतांस्वर ॥ आपणकास ॥ ९१ ॥ ऐसैमसाचे
निथारो ॥ ध्याननिध्यानमसये ॥ पूर्णसिंधूहलावे ॥ फुटगेजैसे ॥ ९२ ॥ किंवहुवायापरी ॥ अंगिरुसूर्वा अंतरा ॥ सांगी आनो अवथा-
री ॥ वात्यसेवा ॥ ९३ ॥ तीरजीवीऐसआवांके ॥ ह्यणदास्यकरनिनिके ॥ जेसनिगुरुकोतुके ॥ मागह्यणनी ॥ ९४ ॥ नोसायासाच्याउपा-
स्ती ॥ गोसावीमसमहोती ॥ तेथमीचिनती ॥ ऐसोत्करी ॥ ९५ ॥ ह्यणननुमच्यादवा ॥ परिवारजा आगवा ॥ येनुलेरुपेहोआवा ॥
मीचिएक ॥ ९६ ॥ आणिउपकरनी आपुर्नी ॥ उपकरणेआथिजेतुछी ॥ माझीरुपेनेतुछी ॥ हो आर्वीस्वामी ॥ ९७ ॥ ऐसाभोगेनवरु ॥
तेथहाह्यणनीआंगुरु ॥ मगतापरिवार ॥ मीनिहोदज ॥ ९८ ॥ उपकरण तांतसकटिक ॥ तेमीनिहोदनेएके ॥ तेद्वीउपास्तीचेको-
तुस ॥ दोरिजेनु ॥ ९९ ॥ गुरुबहुनाचीमाये ॥ परियेकानेहाऊनिमाये ॥ तेंसंकरुनि प्राणवाये ॥ छपेतिये ॥ १०० ॥ तया अनुसगावे-
पाव-ओ-१३ गुच्छी ओ-७ जी-७

७

७

७

७

७

७

धलायी॥ गुरुपत्न्यवतयवर्वा॥ संत्रसम्यासकरवी॥ नोप्राकरवी॥ ११॥ चतुर्दिसवारा॥ नलाहोनियेवाहिरा॥ तेंसागुरुरूपेपाजिरा॥
मीचिहोइन॥ १२॥ आपुनियागुणाचेंतुणों॥ करीनगुरुसंवस्थाभिणों॥ हेअसाहोइनंगंवसणी॥ गुरुसक्तिसों॥ १३॥ गुरुस्वहा-
नियेवृष्टी॥ मोष्टध्वीहोइनतळवटी॥ तेंभियामनोरथाचियास्तुष्टी॥ अननारची॥ १४॥ हाणेंअगुरुत्वेमुन॥ तेंआपणमीहोइन॥
आणिदासहोइनकरीन॥ दास्यतेथिचें॥ १५॥ निर्गमागमीदिनाये॥ जेवोनांतजतउवें॥ तेमीहोइनआणिहार॥ हारपाळ१६
पाउवामीहोइन॥ तियामीचिलवर्वा॥ छत्राणिमीकरेन॥ बारीपण॥ १७॥ मीतळउपरजाणविता॥ चवरपरहातदेना॥ स्वाभीपु-
देंरवोलतौ॥ होइनमी॥ १८॥ मीचिहोइनसागळा॥ करुसुईनगुरुळा॥ सांजितेनोनेपाळा॥ पांड्यामीचि॥ १९॥ हटपमीवाळगेन
मीचिउगाळुथेइन॥ उळगमीकरेन॥ आपोळीचें॥ २०॥ होइनगुरुत्वेअसन॥ अळकारपरिधान॥ चंदनादिहोइन॥ उपचारते२१
मीचिहोइनसुआरु॥ वोगरीनउपहार॥ आपणपंअगुरु॥ बोवाळीन॥ २२॥ जेवेळीदेवोआरोगिमी॥ तेह्वांपतोकरमीचिपाती॥
मीचिहोइनपुढगे॥ देईनविजा॥ २३॥ तातमीकादेन॥ सैजमीझाडीन॥ नरणसवाहन॥ मीचिकरीन॥ २४॥ मिहासबहोइनआप-
ण॥ चरिगुरुकरीआराहणा॥ होइनपुरेपणा॥ बोळगेचें॥ २५॥ अगुरुत्वेमन॥ ज्यादेईलअवधान॥ तामीपुदाहोइन॥ चमत्कार॥
२६॥ तयाअवणाचेंआगणी॥ होइनशब्दाचियाअसोहरणी॥ स्पशहोइनयसणी॥ आंगाविया॥ २७॥ अगुरुत्वेडोळे॥ अवलोक
नेस्नेहाळें॥ पाहातनिंयसकळे॥ होइनसपें॥ २८॥ तियारसनेजोरुचेस॥ तोनारसम्याहोइजेस॥ गंधरूपेंकीजेस॥ याणसेवा॥ २९॥
एवंबास्यभनागत॥ अगुरुसंस्वासरुत॥ वेतार्कानवस्तुजात॥ होऊभियां॥ ३०॥ जंवदेहहअसेल॥ तंवबोळगेऐसीकीजेस॥ मगदे-
हानेनवस॥ बुद्धिभाहे॥ ३१॥ इयशरीरांचियाती॥ मळवीमवियेसिती॥ तेथआचरणउभवाती॥ अगुरुत्वे॥ ३२॥ माझास्वामीकून-
पाव॥ ओ॥ ११॥ मीचिमिनि॥ ओ॥ १२॥ मीआणि॥ ओ॥ १३॥ स्वांजगा॥ ओ॥ २०॥ परिस्र॥ ओ॥ २१॥ ३२॥ ३३॥ ३४॥ ३५॥ ३६॥ ३७॥ ३८॥ ३९॥ ४०॥ ४१॥ ४२॥ ४३॥ ४४॥ ४५॥ ४६॥ ४७॥ ४८॥ ४९॥ ५०॥ ५१॥ ५२॥ ५३॥ ५४॥ ५५॥ ५६॥ ५७॥ ५८॥ ५९॥ ६०॥ ६१॥ ६२॥ ६३॥ ६४॥ ६५॥ ६६॥ ६७॥ ६८॥ ६९॥ ७०॥ ७१॥ ७२॥ ७३॥ ७४॥ ७५॥ ७६॥ ७७॥ ७८॥ ७९॥ ८०॥ ८१॥ ८२॥ ८३॥ ८४॥ ८५॥ ८६॥ ८७॥ ८८॥ ८९॥ ९०॥ ९१॥ ९२॥ ९३॥ ९४॥ ९५॥ ९६॥ ९७॥ ९८॥ ९९॥ १००॥

निके ॥ स्वर्गनिजियंउदरे ॥ तेथलयानेदंनभिके ॥ आपांप्राप ॥ ३३ ॥ अंगुरुवोवाळुजती ॥ कांभुवनींभयोऽज्जिळजती ॥ तयादीयांचियादी-
 सी ॥ वेवीनतेजा ॥ ३४ ॥ चवरीहनविजणा ॥ तेथलयाकरीलभाणा ॥ मयाआगाचावोळगणा ॥ होदंनमी ॥ ३५ ॥ जियेजियंभवकाशींभओगु-
 रूअसनीपरिवारीसीं ॥ आकाशालयाआकाशीं ॥ गंदननये ॥ ३६ ॥ परिजानमलानसंडीं ॥ निभयोभिपुलोकांनघोडीं ॥ ऐसीभयाणावया
 कोडी ॥ कल्यांचिया ॥ ३७ ॥ येतुलवरीशिवळा ॥ जयांचियामानसा ॥ आणिकरूनहोनेसा ॥ अपारजो ॥ ३८ ॥ रात्रीदिवसनेणो ॥ ओले
 बहुनहणे ॥ द्वाणियांचेनिदाहपणो ॥ साजाहोये ॥ ३९ ॥ मोव्यापारयेणोनावे ॥ रागनाहनिशारवे ॥ एकलाकरीआयवे ॥ गवंचिकाळी
 ॥ ४० ॥ ल्हादयहृत्पुढा ॥ आगोचियदवडा ॥ काजकरीहोडा ॥ मानससी ॥ ४१ ॥ एखादिद्यावळा ॥ अंगुरुचियारवेळा ॥ लोणाकरीसक
 खा ॥ जीविताचे ॥ ४२ ॥ जोगुरुदास्यहृश ॥ जोगुरुमेमसपाव ॥ जोगुरुआजनिवास ॥ आपणचिजो ॥ ४३ ॥ जोगुरुकुळसकुळान ॥
 जोगुरुबंधुसौजन्यसज्जन ॥ जोगुरुमेवाव्यसनसव्यसन ॥ निरनर ॥ ४४ ॥ गुरुसामदायधर्म ॥ तेविजयाचवर्णाआम ॥ गुरुपरिचर्या
 नित्यक्रम ॥ जयाचेगा ॥ ४५ ॥ गुरुसैनगुरुदेवना ॥ गुरुमानागुरुपिता ॥ जोगुरुसेवपरता ॥ मागेनेणो ॥ ४६ ॥ अंगुरुचेदार ॥ तेजयाचे
 सर्वस्वसार ॥ गुरुसंवकासहोदर ॥ मेमेमजे ॥ ४७ ॥ जयाचेवक्र ॥ वोहंगुरुनामानेमन ॥ गुरुवाक्यावांचुभिशार ॥ हानेनिशिवे ॥ ४८ ॥
 शिवतुल्यरुचरणीं ॥ मन्त्रनेमहापाणी ॥ नयानोर्ययाचेआणी ॥ तीर्थत्रैलोक्यांची ॥ ४९ ॥ अंगुरुचेउशिशे ॥ लाहजेअवचट ॥ तेनेणेल्ला
 भविटे ॥ समाधीसी ॥ ५० ॥ कुंवलयसरवासावीं ॥ परमगुणंदिकरींदी ॥ उधच्छतीपायापावीं ॥ चालनाजे ॥ ५१ ॥ हेअसोसागावेकती ॥
 नाहीपारगुरुभक्त ॥ परीगाउकांतमती ॥ कारणहे ॥ ५२ ॥ जयाइयसक्तचिचाड ॥ जयाइयेविषयचिंचोड ॥ जोहोसेवेचंचुनिगोड ॥
 नमनीकाही ॥ ५३ ॥ मोतलजानाचावो ॥ ज्ञानतेणोचिआवो ॥ हेअसोमोदेवो ॥ ज्ञानभक्त ॥ ५४ ॥ हेजाणांमासाचेकरे ॥ तेथज्ञानउ-
 पाव ॥ ओ- ३४ जेजब्नी ॥ ओ- ३५ यडी ॥ क्रिया वायानथडी ॥ भयवा वायानवडी ॥ ओ- ३६ निजवास ॥ ओ- ३७ पुजे ॥ ओ-

यजोनिद्वारं ॥ नादत असंगापुरं ॥ दयारिती ॥ ५५ ॥ जियं गुरुसंवे विरवीं ॥ माझा नीव अभिजातवी ॥ ह्यणो निसाय चुको ॥ बोना केनी ॥ ५६ ॥ वै
 इवी असना हा नें वृद्धा ॥ सज्जवधानी आधळा ॥ परिचय सांग पागुळा ॥ पासूनि मंद ॥ ५७ ॥ गुरुवर्णनि सुका ॥ आळशी पोशिजे फु
 का ॥ परिमर्ना आर्थो नि का ॥ सासुरागा ॥ ५८ ॥ तें पणें प्रकारणें ॥ हे त्यूळ गे सणें ॥ पडलें सज ह्यणे ॥ ज्ञान देवो ॥ ५९ ॥ परि नो झोल उ
 पसाहावा ॥ आणि वोळगे अयसर देयावा ॥ आता हाण न जीवर वा ॥ यथार्थ चि ॥ ६० ॥ परि सापरि साजी ह्यथा ॥ जो भूत भास सहि
 शु ॥ तो वोले त संविधा ॥ पायें एक ॥ ६१ ॥ ह्येणें शर चित्त्व गां एसे ॥ जया पाशीं दिसे ॥ आग मने जेसे ॥ का पुरांचे ॥ ६२ ॥ कार लाचे द
 व वाडे ॥ जेसे सबाह्य चोर पडे ॥ आन बाहेरि गे गाडे ॥ स्तूय जे सा ॥ ६३ ॥ बाहेरि कर्म साळला ॥ मानरी ज्ञान उजळला ॥ दही दाही
 परि आला ॥ पारवाळ एका ॥ ६४ ॥ मुनि का आणि जळे ॥ बाह्येणें मळे ॥ निमळ होय वोलें ॥ वेदाचे नी ॥ ६५ ॥ मलु तेथें बुद्धि वळी ॥
 रज आरि सा उजळी ॥ सोंदणी फेडी निगळी ॥ वस्त्रांचि या ॥ ६६ ॥ किंब हुना या परी ॥ बाह्य चोर व अवधारी ॥ आणि ज्ञान दीप अन-
 शी ॥ ह्यणो निगळ ॥ ६७ ॥ चेहूनी त री पांडु नूना ॥ अंतर शूद्र न सना ॥ बाहेरि कर्म तो सांवे या ॥ विदं दुगा ॥ ६८ ॥ मृत नें सांशु गारि-
 ला ॥ गाद रनीथी झणिला ॥ कडु दुधिया मारिना ॥ गुळ जे सा ॥ ६९ ॥ पोस गृही नोरण बांधिलें ॥ का उपवास अन्व लिपिलें ॥ कुतूब
 सेंदुर केले ॥ कांत ही नेने ॥ ७० ॥ कल शिटि माचे पाकळ ॥ जळो वरी मने होळाळा ॥ काय करु चि वीय गळ ॥ आत शण ॥ ७१ ॥ ते सक-
 मी वरि चि चक्रे ॥ नसर थार सौल कुजा ॥ नडे मारे चाय ड ॥ एवित्र गंगे ॥ ७२ ॥ ह्यणो नि अनरी ज्ञान हावें ॥ मग बाह्य ला मेलु सभा
 वे ॥ वरी ज्ञानें कर्म सवें ॥ एसे कें जोडे ॥ ७३ ॥ या लागीं वाह्य सागा ॥ कर्म धूत ला चागा ॥ ज्ञानें फल ला वंग ॥ भनरी ज्ञा ॥ ७४ ॥ तेथ अनर-
 बाह्य गेलें ॥ निमळ त्या ग कुजा लां ॥ किंब हुना उरुं ॥ शर चित्त्व चि ॥ ७५ ॥ ह्यणो नि सदा व जीव गत ॥ बाहेरि त सती फांकत ॥ स्फटि क
 पाठ ॥ ओ ५५ ॥ उयडे नि जगा ॥ ओ ५६ ॥ स्यळ ॥ ओ ५७ ॥ वरे ॥ ओ ५८ ॥ तन्वगा ॥

गृहीतं ज्ञानं ॥ दीपं ज्योतिः ॥ १६ ॥ जित्पुत्रं जित्पुत्रं ॥ गोविन्दं जित्पुत्रं ॥ १७ ॥ भद्रं कर्णेन्द्रियार्थं ॥
 देहः ॥ परिमोक्षार्थं ॥ १८ ॥ सत्पुत्रं जित्पुत्रं ॥ १९ ॥ जित्पुत्रं जित्पुत्रं ॥ २० ॥ जित्पुत्रं जित्पुत्रं ॥ २१ ॥
 जित्पुत्रं जित्पुत्रं ॥ २२ ॥ जित्पुत्रं जित्पुत्रं ॥ २३ ॥ जित्पुत्रं जित्पुत्रं ॥ २४ ॥ जित्पुत्रं जित्पुत्रं ॥ २५ ॥
 एकचित्तं नृणां ॥ २६ ॥ जित्पुत्रं जित्पुत्रं ॥ २७ ॥ जित्पुत्रं जित्पुत्रं ॥ २८ ॥ जित्पुत्रं जित्पुत्रं ॥ २९ ॥
 ॥ पुण्ड्रं जित्पुत्रं ॥ ३० ॥ जित्पुत्रं जित्पुत्रं ॥ ३१ ॥ जित्पुत्रं जित्पुत्रं ॥ ३२ ॥ जित्पुत्रं जित्पुत्रं ॥ ३३ ॥
 त्वपण ॥ ३४ ॥ जित्पुत्रं जित्पुत्रं ॥ ३५ ॥ जित्पुत्रं जित्पुत्रं ॥ ३६ ॥ जित्पुत्रं जित्पुत्रं ॥ ३७ ॥
 अगा ॥ ३८ ॥ जित्पुत्रं जित्पुत्रं ॥ ३९ ॥ जित्पुत्रं जित्पुत्रं ॥ ४० ॥ जित्पुत्रं जित्पुत्रं ॥ ४१ ॥
 वचे ॥ नृणां जित्पुत्रं ॥ ४२ ॥ जित्पुत्रं जित्पुत्रं ॥ ४३ ॥ जित्पुत्रं जित्पुत्रं ॥ ४४ ॥ जित्पुत्रं जित्पुत्रं ॥ ४५ ॥
 जित्पुत्रं जित्पुत्रं ॥ ४६ ॥ जित्पुत्रं जित्पुत्रं ॥ ४७ ॥ जित्पुत्रं जित्पुत्रं ॥ ४८ ॥ जित्पुत्रं जित्पुत्रं ॥ ४९ ॥
 कानाहीनं जित्पुत्रं ॥ ५० ॥ जित्पुत्रं जित्पुत्रं ॥ ५१ ॥ जित्पुत्रं जित्पुत्रं ॥ ५२ ॥ जित्पुत्रं जित्पुत्रं ॥ ५३ ॥
 दोषं च निबद्धं ॥ ५४ ॥ जित्पुत्रं जित्पुत्रं ॥ ५५ ॥ जित्पुत्रं जित्पुत्रं ॥ ५६ ॥ जित्पुत्रं जित्पुत्रं ॥ ५७ ॥
 पातलेनी ॥ ५८ ॥ जित्पुत्रं जित्पुत्रं ॥ ५९ ॥ जित्पुत्रं जित्पुत्रं ॥ ६० ॥ जित्पुत्रं जित्पुत्रं ॥ ६१ ॥
 भावरपदी ॥ ६२ ॥ जित्पुत्रं जित्पुत्रं ॥ ६३ ॥ जित्पुत्रं जित्पुत्रं ॥ ६४ ॥ जित्पुत्रं जित्पुत्रं ॥ ६५ ॥
 निहास्यपुत्री ॥ ६६ ॥ जित्पुत्रं जित्पुत्रं ॥ ६७ ॥ जित्पुत्रं जित्पुत्रं ॥ ६८ ॥ जित्पुत्रं जित्पुत्रं ॥ ६९ ॥
 गङ्गा ॥ ७० ॥ जित्पुत्रं जित्पुत्रं ॥ ७१ ॥ जित्पुत्रं जित्पुत्रं ॥ ७२ ॥ जित्पुत्रं जित्पुत्रं ॥ ७३ ॥

दरत्त्वदी॥ आकाशमज्जजाली॥ वणविद्या॥ ९८॥ नैसां आनागेलां उमी॥ न देग जब जमोथमी॥ किंब हुनाथैर्यक्षमी॥ कल्याती-
ही॥ ९९॥ पैर्येयंगीभाष॥ वोलिजेस विषय॥ नेह दशागोदर॥ दंरमण्या॥ १००॥ हेस्येयंगीनये॥ जेथ आगेजिंवेजोडे॥
तज्ञानाचउपडे॥ निधानसाच॥ ११॥ अणिइसाजुंसाधरा॥ कांदरियाहातिवेरा॥ नविसचमाडारा॥ लुब्धकजैसा॥ १२॥ काएक
लोतथाबाळका॥ यारणेंनिगळेअबिका॥ मधुविषींमधुमक्षिका॥ सोमिणेजैसी॥ ३॥ अमुनाजोथारी॥ अंतःकरणजतनकरी॥
नेदउभेनाफोदारी॥ दंदियाच्या॥ ४॥ हाणेकामबागुलुकुल॥ हेआशासथारीदेखेल॥ तर्गजावांकुल॥ ह्यणोनिविहे॥ ५॥ बाहेरी
धंदजेसी॥ दादुगापतिकाच्यासी॥ करोतेहणनैसी॥ प्रवृत्तीसी॥ ६॥ संचेतनीवाणेपणे॥ देहासकूनआरणे॥ संयमावशेकरणे॥ बुद्ध
नियाली॥ ७॥ मनाचिथामहादारी॥ प्रत्याहाराचियाणातरी॥ यमदमशरीरी॥ जागवउमे॥ ८॥ आथारीनामिकंवां॥ वंघवयचो
घरदी॥ चंदसूर्यसंपुदी॥ सूर्यचिन्ता॥ ९॥ समार्थचिंशेजपासी॥ बायेनयालीआनासी॥ चित्तैतव्यसमरसी॥ अंतःकरण॥ १०॥ अ
गाअंतःकरणनिग्रहीजो॥ तोहाहेजाणिजो॥ हाआथीतेयविजयो॥ ज्ञानाचोपै॥ ११॥ जयाचीआज्ञाआपण॥ शिरीचाहेअंतःकर
ण॥ मनुष्याकारजाण॥ ज्ञानचिन्ता॥ १२॥ श्लो० इंदियाथैवैरगरयमनहकारएवच॥ अन्यभुल्यजराव्याधिदुःखदोषानुदर्शनम्॥ ८॥
टी० अणिविषयाविषयी॥ नेराग्याचिनिर्को॥ पुरवणीमानसकिं॥ जितीआथी॥ १३॥ गीर्मलियाअन्ता॥ लाळनघोंदीजेविरसना
आगनसूचंआनिगना॥ मुताचिया॥ १४॥ विषयणेनागवे॥ जळतपरीनिरिपवे॥ व्यामविवरानचवे॥ वस्तीजेवी॥ १५॥ धडाहीन
लोहरसी॥ उडीनयालवजसी॥ नकरवेउथी॥ अजगराची॥ १६॥ अर्जुननेणेपाडे॥ जयासीविषयवार्तनावडे॥ नेदीइयंचेनि-
नोडे॥ कहींचजायो॥ १७॥ नयाचेमनीआलस्य॥ देहीअनिकाश्य॥ शैवदमीसामरस्य॥ जयासिया॥ १८॥ तपोव्रताचयेव्यावा॥
पाठ० ओ० २ नदूक० ओ० १० अंतरेत० ओ० १८ यम०

नयाचेवार्थसांडवा ॥ युगांतजयागावा ॥ आतयेतां ॥ १९ ॥ बहुयोग्याभ्यासीहाव ॥ विजनाकउद्योग ॥ नयाहंजानव ॥ सयासाचे
नाराचचीं आक्षुरणे ॥ पूयपकांलाळणे ॥ तैसेलेरगप्रोगणे ॥ एहंकीचें ॥ २० ॥ अणिस्वगागमानसे ॥ एकेविमानऐसें ॥ कीह
लेपिशितेजैसे ॥ श्वानाचेका ॥ २१ ॥ तेंहेंविषयवेराय ॥ आत्मलाभाचेभास्य ॥ येणवह्यानदायाग ॥ होतर्जिवा ॥ २२ ॥ ऐसाउम
यसोगीत्रास ॥ देखसीजेथबहुवस ॥ जाणवेथेरीहवास ॥ ज्ञानाचातें ॥ २३ ॥ अणिमचाज्ञानियेगरी ॥ दुष्टापूर्वकरा ॥ परीके-
लेपणशरीरी ॥ वसोनदी ॥ २४ ॥ वर्णाश्रमप्रापके ॥ कर्मनित्यनेमिनिके ॥ यामाजीकाहोनवक ॥ आचरता ॥ २५ ॥ परिहंभया
कले ॥ कीहंसाक्षेनिसिद्धागले ॥ ऐसेनाहोवेविने ॥ पारानेमाजी ॥ २६ ॥ जेसेंअवचितेपणे ॥ पायुसीसर्वत्रविचरणे ॥ कोनिरा-
प्रिमानीउदेजणे ॥ सूर्याचेजैसे ॥ २७ ॥ कांअुनिस्वभावतावोले ॥ रागाकाजेविणचाळे ॥ तैसेंअवदुर्महानिमन् ॥ वर्तणेन्याचे ॥ २८
क्रतुकाळीनरीफळती ॥ परिफळनोहंनणती ॥ नयादृष्टाचियेणसहती ॥ कर्मसिद्धी ॥ २९ ॥ एनेमर्नर्मविर्वादी ॥ जेथअहंकारा
उरवीजाहाली ॥ एकावर्दीचिकर्तिली ॥ दारीजैसी ॥ ३० ॥ संसंधदीणजैसी ॥ अस्त्रेअसतीआकाशी ॥ देहांकमेंतैसी ॥ जयासि
गा ॥ ३१ ॥ मद्यपाश्रगीचिवस्त्र ॥ कोलेमाहार्तेचिशस्त्र ॥ वेत्तावरीशास्त्र ॥ बांधलेआहे ॥ ३२ ॥ नयापाडंदही ॥ जयासीआहे-
हैसेचिनाही ॥ निरहंकारतापाही ॥ नयानव ॥ ३३ ॥ हेसंपूर्णजेथोदसे ॥ तेथेविज्ञासअसे ॥ जेथविषीअनारिसें ॥ बोलांनये
॥ ३४ ॥ जन्ममृत्युजरादुःखे ॥ व्याधिषार्धव्यकलुषे ॥ जियेआंगानयतांदरे ॥ दुःखमिजो ॥ ३५ ॥ साधकविबसिया ॥ का
उपसर्गयोगिया ॥ पावेउणयापुरया ॥ वायवाजवी ॥ ३६ ॥ वेरजन्मानरीचि ॥ सर्गमनोनिवचे ॥ तेविअनंजनाचे ॥ उ
णेजोवाहे ॥ ३७ ॥ डोळाहरळनविर ॥ घाईकोतनजिरे ॥ तैसेंकाळीचेंनविसरे ॥ जन्मदुःख ॥ ३८ ॥ ल्यणपूयगतीरयाजा ॥ अहा
पात्र ॥ ओ २४ तो ॥ ओ २६ अरके ॥

मूत्रं द्यौं निधाय ॥ इतरे भियां चारिला ॥ कुचस्वेद ॥ ४७ ॥ ऐसे गे सिया परी ॥ जन्माचा काटाळा धरी ॥ ह्यणे आना तें मीन करी ॥ जेणे-
ऐसे होये ॥ ४९ ॥ हारी उभचा वया ॥ जुवारी जे साये डाय ॥ कीचें रावा पंचिया ॥ पुत्र जे चें ॥ ४२ ॥ मारिलिया चें भिरगे ॥ पाठी चले
वोस्तूड पागे ॥ तेंणे आसे पें लगगे ॥ जन्म पावी ॥ ४३ ॥ परी जन्म ते तें लगज ॥ नसाडी जया चें भिज ॥ सभाविता भिस्तेज ॥ नजिरे जे
वी ॥ ४४ ॥ आणि मृत्यु दुटा आहे ॥ तो चि कल्यांत कां पाहे ॥ परि आजी च होये ॥ सावध जे ॥ ४५ ॥ माजि आया तें ह्यणता ॥ थडियेची
पाडु स्मृता ॥ पोहणार आइता ॥ कासे भिजे वी ॥ ४६ ॥ कान पवमारणा चानावो ॥ साभाळिजे जे सा आवो ॥ वोडण मूड जे घावो ॥ नला
गताचि ॥ ४७ ॥ पाहे पाहे चावा तवथा ॥ नव आजी चि हाइ जे सावधा ॥ जीवन वचतां ओषधा ॥ धांविजे जे वी ॥ ४८ ॥ येरवो ऐसे घडे
जे जळत घरी सा पडे ॥ तो मग न पवाडे ॥ कुहाराणो ॥ ४९ ॥ चोंटिये पाथर गेला ॥ तें से भिजे जोडाला ॥ तो बोबे हास कटा भिमाला ॥
कोण सांगे ॥ ५० ॥ ह्यणे निममर्थे सोबेर ॥ ज्या पडिले हाड मवाडर ॥ नोजे सा आवही पाहार ॥ परज्जु भिअसे ॥ ५१ ॥ नातर केळ
वली नोवरी ॥ कां सन्यासी जया परी ॥ तें सान भरता जो करी ॥ मृत्यु स्मृता ॥ ५२ ॥ पैंगे जे जया परी ॥ जमे विजय निवारी ॥ मर-
णे मृत्यु मारी ॥ आपण उरे ॥ ५३ ॥ नया घरी ज्ञानाचें ॥ साकडे ना हांसाचें ॥ जया जन्म मृत्युचें ॥ भिमालें शत्य ॥ ५४ ॥ आणित
याचि परी जरा ॥ न तें कलां शरीरा ॥ तारण्याचि या भरा ॥ साजि दुखें ॥ ५५ ॥ ह्यणे आजिचा अवसरी ॥ पुष्टि आहे शरीरी ॥ तें
होई लकाचरी ॥ वाळली जेसी ॥ ५६ ॥ निदें वाचे व्यवसाय ॥ नें सना कर्त हात पाय ॥ अमत्रा ज्योचि पश आहे ॥ बळाय द्या ॥
॥ ५७ ॥ फुलां चिया सोसा ॥ लगीं ममदागा ॥ तें करे याचा गुदया ॥ नें सें होई नु ॥ ५८ ॥ वोटाळा चारवुरी ॥ आषाढ वा तें बुरी ॥ नेह-
शामाया शिरी ॥ पावे लग्ना ॥ ५९ ॥ पद्म देळ घाई साळ ॥ भांडता नीहे डोळे ॥ तें होनी पडवळे ॥ पिकली जेसी ॥ ६० ॥ भवईची प
पाठ - ओ- ४२ जाने - किंवा जपे - ओ- ४६ अथाव - ओ- ४८ पातां देचा पेणा - भियनां - ओ- ५२ सन्यासिनी - ओ- ५४ आरव रुतनें - ओ- ६० विषाळ -

उच्छे ॥ योमश्चनीशिनसाळें ॥ उरकुहोजेजळें ॥ ओसवांचेनी ॥ ६५ ॥ जेसेवावुळीचेरवाड ॥ गिरबड्ढनिजानेसरड ॥ नेसेपिचडी
 नोड ॥ सरकटिजळ ॥ ६२ ॥ राधवणीतुलपुटे ॥ पद्मवुदमानीरयातवडे ॥ तेसींचियनाकाडे ॥ बिडबिडती ॥ ६३ ॥ ताबूलेवोंवरुं
 हासांदातदाउ ॥ सनागरभिरऊ ॥ बोलजेणें ॥ ६४ ॥ नयाचियांताजा ॥ येदंलजळबठाचालोदा ॥ इयाउमळतीदादा ॥ दांसांमि-
 हो ॥ ६५ ॥ कुळवाडीऊणदादली ॥ किंवाकडियातोरबसली ॥ तेसींनुगीकाहोत्रिंडी ॥ जीभेचेचि ॥ ६६ ॥ कुसलेकोरडी ॥ वारेनेजाती
 बरडी ॥ तेसेआपदानोडी ॥ दौळियेसी ॥ ६७ ॥ आषाढियेचेभिजऊ ॥ जेसींझिरपनींयेल्याचींमोळ ॥ तेसेस्वाडीहूनित्वाळे ॥ पेट
 नीपुर ॥ ६८ ॥ वाचेमिअपवाड ॥ कानीअनुयड ॥ पिडगरुवासाकड ॥ होदंनुहा ॥ ६९ ॥ तृणाचेबुझवणे ॥ ओदोळवारेनगुणा
 तेसेयेदलकापणे ॥ सर्वागासी ॥ ७० ॥ पायापडतीवेगडी ॥ हातवळतीसुरकुडी ॥ बरवपणावागडी ॥ नाचविजळ ॥ ७१ ॥ मूळसू-
 त्रदारे ॥ होऊनिगतीरवोकरे ॥ नवमियेहोतीइतरे ॥ माझियाभिधनी ॥ ७२ ॥ दंरकानिथुंकीलजग ॥ मृत्युचापडेलपाग ॥ सोद
 रियाउबग ॥ येदंलमाझा ॥ ७३ ॥ स्त्रियाह्मणनीविवर्सा ॥ बाळेंजानेमुल्ली ॥ किंवहुनाचिळसी ॥ पात्रहोइन ॥ ७४ ॥ उमळीचाउ
 जगरा ॥ सेजारियासोदलियाघरा ॥ शिणवीलह्मणनीत्वातारा ॥ बहुतातेहा ॥ ७५ ॥ ऐसीवार्धक्याचीसूचणी ॥ आपणि
 यानरूणपणी ॥ दंरवेमगमनीं विटजागा ॥ ७६ ॥ ह्मणपाहंयेंइल ॥ आणिआताचमोगिताजाइल ॥ मगकायउरल ॥ हिना-
 लागी ॥ ७७ ॥ ह्मणानिनाइकणंपावे ॥ नंवआदकोभिघालीआघवे ॥ पंगुनहोताजावे ॥ तेथजाया ॥ ७८ ॥ हृष्टीजंवआहे ॥ नंव
 पाहवेंतेमुलेपाहे ॥ मूकलाआधीवाचावाहे ॥ सुभाषित ॥ ७९ ॥ हातहोतीरबुळे ॥ हेपुढीलमोदकेंकळे ॥ नंवकरूमिघाली-
 सकळे ॥ दानादिकें ॥ ८० ॥ ऐसीदशायेइलपुढ ॥ नंवमनहोइउवेड ॥ तवनिचनिमचीचावेड ॥ आत्मज्ञान ॥ ८१ ॥ जेंचोरपाहे
 पाठ ॥ ओ ६० विशाळें ॥ ओ ६१ पाहंया ॥ ओ ६६ का ॥ ओ ६७ अपत्य ॥ दादियेसी ॥ ओ ७४ मूळेसी ॥ ओ ७५ तेदां ॥ ७६

ज्ञो बन्ती ॥ नव आधुं चिरु भिजे संपती ॥ कां स्यां का स्यां क्रियाती ॥ नव चर्मां की जे ॥ ८२ ॥ तै सें वाधे क्यथावे ॥ सग जे वाधां ज्ञां वे ॥ तें आनां-
 चि आयवे ॥ वस ते करी ॥ ८३ ॥ आतां सो इमि न्ही दुर्गे ॥ कां वक्रित धारि लोखगे ॥ जे अउ पेस्ति भिजे भरि दे ॥ नो नाग वलकीं ॥ ८४ ॥ तै
 सें दृष्टा ज्य होय ॥ आनि पण वाधा जाय ॥ जे नो शन संह आहे ॥ ने गो कंचा ॥ ८५ ॥ आदि न्ही निको लोखाई ॥ तया फळे जे विवोडी ॥ ज्ञा
 हान्वा असी तरे राखोडी ॥ ज्ञाढी लकाई ॥ ८६ ॥ म्हणो न वाधे क्यचि न आनवे ॥ वाधे क्य जे नाग ये ॥ तया चाटा जे जाणावे ॥ ज्ञा
 न आहे ॥ ८७ ॥ तै सें चि नाग राग ॥ यदि या निना जे वपुदां भोग ॥ तैव अणे राग जे उगे ॥ करुं भयान्ही ॥ ८८ ॥ सापाचा नोडी ॥ पदि
 ची जे उडी ॥ ते लारु भि साडी ॥ प्रबुद्ध जैसा ॥ ८९ ॥ तै मां विंय ग जे गदुखे ॥ तै पतिशाल कोप ॥ तै स्नेह साइ नि करुं ॥ ९० ॥ दृष्टा स होये
 ॥ ९० ॥ आणि जे जे जे पें कडे ॥ दोष सूती लो नें ॥ तया कर्म रथीं युटे ॥ नियमाचे दाटी ॥ ९१ ॥ ऐं मां गि सा आइती ॥ जयाची परी अस
 ती ॥ तो चि नो ज्ञान संपती ॥ गोसांवीया ॥ ९२ ॥ आतां आणी कही एक ॥ लक्ष्मण अलौकिक ॥ मांगल भाइक ॥ धन जया ॥ ९३ ॥ अस्त्रो-
 असक्ति रम मिषंग ॥ पुत्र दार गृहादिषु ॥ मित्यं च सम निचत्वा मिष्टानि सोपपनिषु ॥ ९४ ॥ टीः तरि जो या देहागरी ॥ उदास गे रा
 यापरी ॥ उरित जे सा बिदारी ॥ बेसला आहे ॥ ९५ ॥ कां दृष्टाची साउली ॥ वाटे जातो भि न्ही ॥ धरा वरी ते नुडी ॥ आस्थाना हो ॥
 ॥ ९६ ॥ साउली सांसी च असे ॥ परि असे हे ने णि जे जे ॥ स्त्रिये च ने सें ॥ लो लुप्य ना हो ॥ ९७ ॥ आणि प्रजा जे जाली ॥ नि ये
 वस्ती कर आली ॥ कां गोरु वे वे सली ॥ ररवा न्ही ॥ ९८ ॥ जां स पर्निमा जी असती ॥ ऐसा गे म पाडु सता ॥ जे सा का वाटे जाना ॥
 सांसी वे विला ॥ ९९ ॥ किं बहुना पुंसा ॥ यां जरिया सांजि जे सा ॥ वेदा जे सी गे सा ॥ विहमि असे ॥ १०० ॥ ये हवीं दार गृह पुत्रां सा
 हो जय मे मत्री ॥ तो जाण पांथाची ॥ ज्ञाना सिगा ॥ ६० ॥ महा सि धु जे ॥ श्री अथर्व सारि स ॥ दृष्टा भि द्ते सें ॥ जया चागा ॥ १०१ ॥
 पाठ ॥ ओः २३ सवते ॥ ओः १४ बैसविळा ॥ ओः १५ जया ॥ ओः १७ किर ॥

कानिद्रीकांछहोता॥ विधानकेसविता॥ तैसासरवदुःखीचिना॥ सेदुनाही॥ २॥ जैयनमाचेनिपाडे॥ समत्वाच्यननपडे॥ तेथज्ञान
 रोकेडे॥ वोळखेंत॥ ३॥ श्लो० मंत्रिचानन्ययोगेनमभिरच्यमित्रारिणा॥ विविक्तदेशमेविलमरनिर्जनसंसिद॥ ११॥ टीका
 आणिमीवांचूनिकांही॥ आणीकगोमटेनाही॥ ऐसाभिश्रयपाही॥ जयाचोकेला॥ ४॥ शरीरवाचामानसा॥ पियालीकृतनि
 श्रयाचाकोषा॥ एकमीवांचूनिवास॥ नफहतीआन॥ ५॥ किं बहुनानिकदनिजा॥ जयचिंजाहानेंमज॥ नेणेंआपणयांआत्मासे
 ज॥ एकिकेली॥ ६॥ रिगनावलुआपुढे॥ नाहीआगीजीवींसाकडे॥ गिरेकांतेचेनिपाडे॥ गंकसरनाजो॥ ७॥ मिळोनिमिळत
 विअसे॥ समुद्रीगंगाजळजेसे॥ मोहाउनिमजतेसे॥ सर्वस्वेंमजती॥ ८॥ सूर्याचाहोणाहोदजे॥ कांसूर्यासवेंचिजाइजे
 होविकलेपणसाजे॥ प्रमेसिजेवी॥ ९॥ पैपाणियांचियेसृष्टिमिक॥ पाणीतळपेकानुके॥ तेनुहरीक्षणतीकोतुक॥ येइवीतेपा
 णी॥ १०॥ जोअनन्यपारी॥ सीजाहालाहीमानेवरी॥ नोविनासूनधारी॥ ज्ञानपंगा॥ ११॥ आणितीथेधोतेनेदे॥ तपावेंचे
 रवटे॥ आवडतीकपाटे॥ वसवूंजया॥ १२॥ शैलकक्षाचीकुहरे॥ जळाशयपरिसरे॥ अधिष्ठाजाआदरे॥ नगरानये॥ १३॥ बहुए
 कांनावरीमीती॥ जयाजनपदाचीखंती॥ जाणमनुष्याकारसूती॥ ज्ञानाचीनो॥ १४॥ आणीकहापुढती॥ चिद्रेगासूमती॥
 ज्ञानाचियेनिरुती॥ लागिसांगो॥ १५॥ श्लो० अध्यात्मज्ञाननित्यत्वंतत्त्वज्ञानार्थदर्शन॥ एतद्ज्ञानमिभिर्मोक्तमज्ञानयदतो
 न्यथा॥ १६॥ टी० तरिपरमात्माऐसे॥ जेएकवरुअसे॥ तेजयादिसे॥ ज्ञानासव॥ १६॥ तेएकवांचूनिआने॥ जियेंसुवस्त
 गादिज्ञाने॥ तेंअज्ञानेसामने॥ भिश्येकला॥ १७॥ स्वर्गजाणेहेंसांडी॥ भवविषयीकानसाडी॥ देअध्यात्मज्ञानीबुडी॥
 सदावाची॥ १८॥ भंगालियवाटे॥ शाधूनियाआकाट॥ निधिजेविनेने॥ राजपथा॥ १९॥ तैसेअज्ञानजानाकरी॥ आश
 पाठ॥ ओ० ४ तिहीं॥ ओ० ७ अनुसरलाजो॥ ओ० ९ तरि॥ अविकल्पण॥ ओ० १४ वरी॥ ओ० १८ आत्म॥ ७

वैचित्र्यं कुरु सारी ॥ मगमनश्चिह्नमाहरी ॥ अ-व्यात्मजानी ॥ २७ ॥ ह्यणैक-हं चि-आथी ॥ येरजाणजेते-भ्रान्ती ॥ ऐसीभिकरेसीमती ॥
 मेरुहोय ॥ २१ ॥ एवं निश्चय जयात्वा ॥ हारी-अध्यात्मजानाचा ॥ अ-वदेवोगगनी-चा ॥ ते-सारा-हला ॥ २२ ॥ तथा चि-याठाय-ज्ञान ॥
 याबोत्ताना-हं आनै ॥ जे-ज्ञान-वै-सले-मन ॥ ते-हं-चि-ते-तो ॥ २३ ॥ त-रि-वै-सले-पणे-जे-हो-ये ॥ ते-बु-सना-चि-बोले-न-हो-ये ॥ त-रि-ज्ञान-
 या-आहे ॥ स-रि-सा-पाड ॥ २४ ॥ अ-णि-त-त्व-ज्ञान-नि-मळ ॥ फळे-जे-ए-क-फळ ॥ ते-जे-य-ही-वरी-सै-कळ ॥ दि-ही-हो-य-जे-ण ॥ २५ ॥ ये-हु-वा-
 बो-ध-आ-ने-नि-ज्ञान ॥ ज-री-जे-य-न-दि-से-चि-मने ॥ त-रि-ज्ञान-न-म-हं-न-मने ॥ आ-हा-ला-सा-ता ॥ २६ ॥ आ-ध-र-या-हा-ती-दि-वा ॥ द-ऊ-नि-का-र-
 क-रा-वा ॥ ते-सा-ज्ञान-नि-श्चय-आ-ध-वा ॥ वा-यो-चि-जा-ये ॥ २७ ॥ ज-री-ज्ञान-चे-नि-म-का-यो ॥ प-र-त-लो-दि-ही-न-पै-से ॥ ते-स्फू-नी-चि-अ-से ॥ अ-
 ध-हो-उ-नी ॥ २८ ॥ ह्य-पो-नि-ज्ञान-जे-तु-ले-दा-वी ॥ ते-नु-दी-व-स्तु-चि-आ-ध-वी ॥ ते-दे-खे-ऐ-सी-दू-वी ॥ बु-द्धी-चो-ख ॥ २९ ॥ या-लु-गी-ज्ञाने-नि-
 ही-षे ॥ दा-विले-जे-य-ंदे-खे ॥ ते-से-नि-उ-न्मै-ये ॥ आ-धि-य-ता-जो ॥ ३० ॥ जे-व-दी-ज्ञान-ची-द्वि-ही ॥ त-व-दी-न-या-ची-बु-द्धि ॥ तो-ज्ञान-ह-शा-ब्दी ॥ क-
 र-णे-न-ल-गो ॥ ३१ ॥ पै-ज्ञाना-नि-य-प-से-स-वे ॥ ज-य-ची-म-ती-जे-थी-पा-वे ॥ तो-हा-त-ध-र-णि-या-शि-वे ॥ प-र-त-त्वा-ने ॥ ३२ ॥ तो-चि-ज्ञान-हे-बो-ल-
 तो ॥ वि-स्म-यो-क-व-ण-या-दु-स-ता ॥ का-य-स-वि-त-या-ने-स-वि-ता ॥ ह्य-णा-वे-अ-से ॥ ३३ ॥ त-व-अ-जे-ते-ह्य-ण-ती-अ-सो ॥ न-सां-गे-त-या-चा-अ-नि-सा-
 य-थो-रु-ने-थ-आ-उ-सो ॥ या-मि-सी-का-हा ॥ ३४ ॥ तु-झा-हा-नि-आ-ह्मा-यो-र ॥ व-कू-ला-चा-या-हु-णे-र ॥ जे-ज्ञान-वि-षा-फ-र ॥ नि-रो-पि-त्वा ॥ ३५ ॥
 र-स-हो-आ-या-अ-नि-मा-नु ॥ हा-ये-ना-सि-क-स्मि-नु ॥ त-री-अ-व-न्-नि-श-नु ॥ क-रि-ना-सि-कां-गा ॥ ३६ ॥ हा-थी-बै-स-नि-ये-वे-ळे ॥ जे-र-स-सो-य-
 ये-ऊ-नि-प-ळे ॥ नि-ये-चा-ये-र-बो-ड-वि-ळे ॥ को-णा-अ-था ॥ ३७ ॥ आ-य-वा-चि-वि-ष-थी-सा-दी ॥ प-रि-सां-ज-व-णे-दे-को-ने-दी ॥ ते-र-वु-र-तो-डी-
 नु-स-थी ॥ पो-वी-क-व-ण ॥ ३८ ॥ ते-सी-ज्ञान-म-ती-न-फां-के ॥ ये-र-ज-ल्य-न-ने-णो-को-नु-के ॥ प-रि-ते-अ-सो-नि-के ॥ के-ले-तु-वा ॥ ३९ ॥ ज-या-ज्ञान-ले-
 पा-ठ-ओ-२३ ह्य-ण-णी-व्य-व-धा-न-ओ-२५ स-र-क-ओ-२७ ये-ऊ-न-ओ-२९

शोदशे॥ किंजनीयोगादसायासे॥ नैधर्णचे॥ अणितु क्षियाऐसे॥ निरूपण॥ ४०॥ अमृतचिंसातवांक्रडी॥ लागोकांअनुघडे॥
 सरथाचादिवसीकोडी॥ राणिजनका॥ ४१॥ पूर्णचंद्रसीरानी॥ युगएकअसोनिपाहरी॥ तरिकायनपाहजआहानी॥ चकीरेंते॥
 ४२॥ तैसेज्ञानचेबोळण॥ अणियेणेरसाळपण॥ आनापुरकाणह्मण॥ आकर्णना॥ ४३॥ आणिसंभार्यपाहुणार्ये॥ स
 भगाचीवादतहोये॥ तैसरेनणेरससोये॥ ऐसेआर्थी॥ ४४॥ नैसाजाहालायसंग॥ जेज्ञानीआह्याभिलाग॥ आपितुज
 हीअबुरग॥ आर्थिनय॥ ४५॥ ह्मणोनिययाव्याख्याना॥ पार्सासेआनीचौरुणा॥ नात्यणोनियेसीदेखणा॥ होसीज्ञानी॥
 ४६॥ तरीआनाययारी॥ मज्ञचाभाजधरी॥ पदंसाचकरी॥ निरूपणी॥ ४७॥ यासंतवाक्यासरिसे॥ ह्मणितलेनिघनिदा
 से॥ माझेहीजिऐसे॥ मनोगत॥ ४८॥ यावरीआनालुह्यी॥ आज्ञापिलास्वामी॥ तरिवायांवांजाळमी॥ वादोनेदी॥ ४९॥ ग
 वदयेअतरा॥ ज्ञानलक्षणअवधारा॥ श्रीहृष्णाधनुधरा॥ निरूपिनी॥ ५०॥ मगह्मणोयानोवे॥ ज्ञानएथजाणोवे॥ हेंस्वमत
 अणिआपवे॥ ज्ञानियेहीह्मणनी॥ ५१॥ करतळावरीवाळाळा॥ डोलतदखिजेआवळा॥ तैसेज्ञानआह्मिडोळा॥ दाविसेबु
 ज॥ ५२॥ आनाधनंजयामहामती॥ अज्ञानांसीवदनी॥ तेहीसांगोव्यक्ती॥ लक्षणसी॥ ५३॥ येद्वीज्ञानपुंदजालिया॥
 अज्ञानजाणवधनंजया॥ जेज्ञाननकतेअपेसया॥ अज्ञानचि॥ ५४॥ गहेंपादिवसआयवांसरे॥ मगरात्रीचिवारीवावरे
 वांचूनिकांहीनिसरे॥ नाहीजेवी॥ ५५॥ तैसेज्ञानजेथनाही॥ तेंअज्ञानचिपाही॥ नरिसांगोकांहीकांही॥ चिद्वेनिये॥ ५६॥
 तरिसंभावनेजिये॥ जोमानाचेवाटपाह॥ सत्कारेहोये॥ तोषजया॥ ५७॥ गवंपर्वनाचीशिरवे॥ तैसाभह्मवावृत्तुनितर
 तयाचियावारीपुरे॥ अज्ञानआह॥ ५८॥ अणिस्वधर्माचीसंगडी॥ बांधवाचेचापिपंकी॥ उभिलजेसादेउळी॥ जाणोनिबुक्ता
 पाव॥ ओ॥ ४९ वाक्यी॥ ओ॥ ५० उरे॥ ओ॥ ५१ ज्ञानो॥ पिंवा ज्ञान॥ ४०

॥५९॥ यालीविद्योपसारा॥ सूर्यसूक्तान्चाङ्गोरा॥ करुतेतुल्यमोहरा॥ स्फुतीचिया॥ ६०॥ आंगवरिवरिचर्चा॥ जनतेअर्चि
तांर्वची॥ तोजाणअज्ञानची॥ स्वाणीग्य॥ ६१॥ आणिवर्द्धवनीविचरे॥ तेयजळतेजेंसंजंगमस्यावरे॥ तेसंजयाचेनि-
आचारे॥ जगादुःख॥ ६२॥ कोवुकेजेजस्य॥ तेसबळाहूनिस्वरूपे॥ विवाहूनिमंकल्ये॥ मारकजे॥ ६३॥ तयातेबहुअ-
ज्ञाव॥ तोअज्ञानाचेनिथान॥ हिंससिआयतन॥ जयांचेजिणे॥ ६४॥ आणिफुकेमाताफुगे॥ रेचिल्यासवेचिउफुगे॥
तेसासयोगवियोगे॥ चेदेवोहटे॥ ६५॥ पडलोवारयाचियावळसा॥ धुळाचेदेआकुशा॥ हरिखावळयेतेसा॥ स्तुती
वेळ॥ ६६॥ निदामोतकीआइके॥ आणिकपाळधरुनिठाके॥ शंबेवरेवारेनिशोके॥ चिरवलेजेसा॥ ६७॥ तेसामानाए-
मानीहोये॥ जोकोळीचिउर्मिनराहे॥ नयाचानायेअहे॥ अज्ञानपुरे॥ ६८॥ आणिजयाचियामनीगानी॥ वरिवरीमो-
कळीवाच्चाद्वी॥ आगेमिळजिपेगानी॥ मलतयादे॥ ६९॥ व्याधीचेचाराघालणे॥ तेसंप्राजळजोगावणे॥ चागाचीअतः
करणे॥ विरुद्धकरे॥ ७०॥ गारशगाळगुडाळनी॥ कामिबोळीजेसपिकर्ता॥ तेसीजयाचीमली॥ बाह्यक्रिया॥ ७१॥ अ-
ज्ञानतयाचियाठायी॥ हेविनंअसेचाही॥ यावायाआनहीनाही॥ सत्यमानी॥ ७२॥ आणिगुरुकुळीजे॥ जोगुरुमांकिउमजे॥ वि-
द्योघेअनिमाजे॥ गुरुस्तीचिजे॥ ७३॥ तयांचेनामयेणो॥ तेवांचाशक्तदुनहाणे॥ योग्यदुनोमदणे॥ बोलतादय॥ ७४॥ आनारु-
रुमक्ताचेनावयेवो॥ तेणवाचेनायश्चित्तद्वयो॥ गुरुमक्ताचेनामयाहा॥ सूर्यजेसा॥ ७५॥ येतुलेनिगुणपचा॥ निस्तरलहेया
चा॥ जोगुरुतुल्यकाचा॥ नामोजाला॥ ७६॥ हाठांयवरी॥ तयानामाचेमयहरी॥ मगह्मणेअवधारी॥ आणिकेचिडे॥ ७७॥
तरीआगेकसेदिला॥ जोमनेविकल्पेभरला॥ अहर्वेचाअवगळला॥ कुहाजेसा॥ ७८॥ नयानाडीकांदिवडे॥ आंतनुस-
पाव॥ ओ० ६३ सावळ० ओ० ६४ मांके० ओ० ७० विरु० ओ० ७४ वांचे०

धीहाडे ॥ अंयचिनेणेपाडे ॥ सवाद्येजा ॥ ७९ ॥ जेसंपादाळागोसणे ॥ उधडे झाकळनसणे ॥ तेसे आपले परावेनेपो ॥ दव्यालागो ॥ ८० ॥ इयायामसिहाचिवादायी ॥ जेसामिळणोदावा अवावनाही ॥ तेंसामिळोविषोकाही ॥ विचारीना ॥ ८१ ॥ कर्मोचावेच्छुके
 कानिन्येनेमिभिकदावे ॥ तेजयानदुःख ॥ जीवामाजी ॥ ८२ ॥ पापेजानिसुग ॥ पुण्याविषयोअतिभिलाग ॥ जयाचियामनेवेग
 विकल्याचा ॥ ८३ ॥ नोजाणामिभिका ॥ अज्ञानाचापुतळा ॥ जोवाधोनिअसेडोळा ॥ विनाशेने ॥ ८४ ॥ आणिसुखेअळुभाळे
 जोधेयोपासोनिच्ये ॥ जेसेतुणबीजदळे ॥ सुगयेचने ॥ ८५ ॥ पावास्तुदलियासवे ॥ जेसथिस्तुरकालवे ॥ तेसामयचिभिना-
 वे ॥ राजबजेजा ॥ ८६ ॥ मनोरथानिचाधोरसा ॥ बाहणंजयानियामानसा ॥ प्रीणिदलाजसा ॥ दुधियापाहो ॥ ८७ ॥ वायूचिनि
 सावाये ॥ धूर्तदरागशान्या ॥ दुःखवानाहोय ॥ तेसेजया ॥ ८८ ॥ वाउधणाचियापरी ॥ आन्ययकहोचिनधरी ॥ क्षेत्रीनीथी
 पुरी ॥ थारानणे ॥ ८९ ॥ कामानिभियासरजा ॥ पुढतेबुडवपुढतीशेजा ॥ हिंदुणवाराकोरजा ॥ तेसाजया ॥ ९० ॥ जेसारेविल्या
 विणे ॥ राजणथारानणे ॥ तसापइतराहोणे ॥ येद्वेहिंद ॥ ९१ ॥ नयाचाबायोउदड ॥ अज्ञानअसेविनड ॥ जोचांचल्येप्रावड
 मंकटाचे ॥ ९२ ॥ आपिपेगाधनुधरा ॥ जयाचियाअंतरा ॥ नाहोवादावारा ॥ सयमाचा ॥ ९३ ॥ लोडयेआलालोदा ॥ नमनीवाळु
 वेसवरवडा ॥ तेसानिषथाचियागोडा ॥ विहनाजो ॥ ९४ ॥ प्रतापेआदमाही ॥ स्वधमपायेवालाही ॥ नियमाचीआशाही ॥
 जयाचीक्रिया ॥ ९५ ॥ नाहोपापाचाकटाळा ॥ नणपुण्याचाजिझाळा ॥ लाजेचापुडवळा ॥ रवाणांनियाही ॥ ९६ ॥ कुळेंसोजे
 पावमोरा ॥ वेदाजेसीदुहा ॥ कुल्यासंत्यव्यापारा ॥ निवाइनणे ॥ ९७ ॥ वसुंजेसामोकाट ॥ वाराजसाअफाट ॥ फुटलाजसा-
 पाट ॥ निरजनी ॥ ९८ ॥ आधेळहातरुमान्ने ॥ काडोगरीजेसंपदले ॥ तेसेविषयस्मदले ॥ चिजजयाचे ॥ ९९ ॥ पेउकरडाका
 पाव ॥ ओ ८८ धुळा ॥ ओ ९० बुडवुदनी ॥

७९

८०

८१

८२

८३

८४

८५

८६

८७

यमपडे ॥ मोक्रादकोणानातुडे ॥ ग्रामद्वारीचें आडे ॥ नोनाडीकोणा ॥ ७० ॥ जें सें सर्वो भवजालें ॥ कां सामान्याबीक आलें ॥ वाषियेचेउ
 मविलें ॥ कोणनारिगे ॥ ११ ॥ तें सें जयाचें भंतः करणा ॥ नयाचा वार्धासं पूर्ण ॥ अज्ञानाचा जाणा ॥ क्विद्धाहे ॥ १२ ॥ आपणीं विषयांची गो
 डी ॥ जो जीतमंलानसाडी ॥ स्वर्गाहारावयाजोडी ॥ एधुनीचि ॥ १३ ॥ जो अखंड भोगाजि ॥ जयाव्यसनकामक्रोडेचें ॥ सुरवदे
 रवोनि विरक्ताचें ॥ संचेलु करी ॥ १४ ॥ विषोशिणोभियाराहे ॥ परि नशिण सावधनोहे ॥ कुहलाहानिराये ॥ केदीजेसा ॥ १५ ॥ स्वरो
 देकोनेदीउडे ॥ लोनीनफोडीनाक्रोडे ॥ तद्दोजेविनक्राडे ॥ मायेनारवर ॥ १६ ॥ तें साजो विषयांलागो ॥ उडीघाली जळते धागी ॥
 व्यसनार्चं धांगी ॥ लुणोमिरवी ॥ १७ ॥ फुटोनि पडतव ॥ मृगवाटवो हाव ॥ परि न हाणेत माव ॥ रोहिणीची ॥ १८ ॥ तें साजन्वोनि मृ
 लुवरी ॥ विषयांचा भिताव हुती परी ॥ तद्दोत्रासने घे परी ॥ अधि क्रमेसा ॥ १९ ॥ पहिले ये बाळदशे ॥ आर्दे बाहे निपिसे ॥ तें सरे
 मगस्त्रीमासे ॥ फलोनिराक ॥ १० ॥ मगस्त्री भोगिता यावो ॥ वृद्धा प्यालागे येवो ॥ तें कानोचि ममावो ॥ बाळक्रासि आणी ११
 आयळें व्यालें जेंसे ॥ तें सीबाळें परि वसे ॥ परि जो वसरे ते नत्रासे ॥ विषयासि जो ॥ १२ ॥ जाणतयांचा वार्धा ॥ अज्ञानासि पार
 नाही ॥ आता आणी क्वकही ॥ चिद्धेसांगो ॥ १३ ॥ तरि देह हाचि आत्मा ॥ ऐसे याजो मनो धर्मा ॥ वळये नि या कसा ॥ आरंभक
 री ॥ १४ ॥ आणितोणें कापुरें ॥ जें जें कांदा आचरे ॥ नयाचि भिआ विस्तरें ॥ कुथोलागे ॥ १५ ॥ डोंदये वेविले भोजें ॥ देवल विसेजे
 विपुज ॥ तें साविद्यावयसाभाजे ॥ उताणाचाले ॥ १६ ॥ हाणमीचि एक अर्थी ॥ साझाचि घरोस पती ॥ माझी आचरतीरिती ॥
 कोणा आहे ॥ १७ ॥ नाही माझी नि पाडे पाड ॥ मीसर्व न एकचि रूढ ॥ ऐसासर्व तु हो गड ॥ घेऊनि वाके ॥ १८ ॥ व्याधिला गलियासा
 पुसा ॥ नयेचि भोग दावू जेसा ॥ निवें न साहे जेतें सा ॥ उदिलाचें ॥ १९ ॥ पैगुणेत याखाये ॥ स्नेहें कोजळत जाये ॥ जेय वेविजे ॥
 पाठ ॥ ओ ॥ जाय ॥

तेथ होये ॥ मसी ऐसा ॥ २० ॥ जीवनें शिंपिलानि डिपडी ॥ विजिला मागसांडी ॥ नागला तरी काडी ॥ उरो नेदी ॥ २१ ॥ अळु माळ अक्रा
 शकरी ॥ ते तुलेनी चउवारा थरी ॥ ते सियादी पाचिया थरी ॥ सविध जे ॥ २२ ॥ ओषधचे भिनावे असुने ॥ जे सानवज्वर आबुंथे ॥ को
 विषचि होऊनि पयने ॥ सर्पादूध ॥ २३ ॥ ते सास हुर्यां मत्सर ॥ व्युत्पत्ती अहंकार ॥ तपो ज्ञाने अपार ॥ नाठा चढे ॥ २४ ॥ अत्यजरा-
 णि वेवैस विला ॥ आरधारण भिळला ॥ ते सागवें फुगला ॥ देखसी जो ॥ २५ ॥ जोला टणे सान लुवे ॥ पाथरने विन द्रवे ॥ गुणि-
 या सनागवे ॥ फोडसे जेसे ॥ २६ ॥ किं बहुना नया प्राप्ती ॥ अज्ञान आहे वारीसी ॥ हे निरुपे गा तुजसी ॥ बोलत असो ॥ २७ ॥ आ-
 णी कही धनंजया ॥ जो ग्रह देह सास ग्रिया ॥ नंद रेव काळो चिया ॥ नम्यो नया ॥ २८ ॥ कृत त्या उपकार वेला ॥ काचो राख्य वहा रीद-
 धला ॥ निस्सरास्त विला ॥ घिसरे जेसा ॥ २९ ॥ वाटाळ तांला विजे ॥ नेतें संचिकान पुस बोले ॥ कीं पुढे नीवो दाळु आले ॥ स्रुणे जेसे
 ॥ ३० ॥ वेडूक सापा चिया नोंदी ॥ जातसें सखुड बुडी ॥ तो मसिक चिया कोडी ॥ स्मरना जेवी ॥ ३१ ॥ ते सीन वही दार स्तवनी
 आंगी देहाची लुनी जनी ॥ जेण जाले ते चिनी ॥ सलेना जया ॥ ३२ ॥ मातेचा उदर कुहरी ॥ पंचूनि विखेचा दाथरी ॥ जतरीन वया
 सवरी ॥ उकडला जे ॥ ३३ ॥ तियेग मी चिय थ्या ॥ कां जे जाले उपजना ॥ नेका हो चिसव थ्या ॥ नाठवी जो ॥ ३४ ॥ मळ मूत्र पंक्ती ॥ जे
 लोळने चाळे अंकी ॥ देखो निजोन शुकी ॥ नासने ये ॥ ३५ ॥ काळो चिना जन्मगेले ॥ पाहेच पुढी आले ॥ ऐसे हे काही वाटले ॥ नाही
 जया ॥ ३६ ॥ आणि पेंतया चिया परी ॥ जीविताची फरारी ॥ देखो निजोन करी ॥ मृत्यु चिना ॥ ३७ ॥ जिणियाचे भिषवासे ॥ मृत्यु
 एक एथ असो ॥ हें जयाचें निमानसे ॥ मागि जेना ॥ ३८ ॥ अल्पोदकोचा मासा ॥ हे नाटे गुमिया आशा ॥ नवचे चिकं जेसा ॥ अगा
 धडी हा ॥ ३९ ॥ कागोरो चिया मुली ॥ मृग व्याधा ह्मीन घाली ॥ गळन पाहता गि केली ॥ उडो मीने ॥ ४० ॥ दीपा चिया झगमगा ॥
 पाठ ॥ ओ ॥ २९ ॥ उपेग ॥ ओ ॥ ३३ ॥ मातृकादर ॥ सुनी ॥ जे अथना जेणे ॥

जाळलहंपेगा॥ नेणवेचिपेगा॥ जयापरी॥ ४१॥ गंगारनिद्रास्वरें॥ घरजळत असंतेनंदेरे॥ नेणांतजेविश्वरें॥ रांधिलेंअन्न
 ॥ ४२॥ तेसाजीविनांचेनिमेषें॥ हासृत्यचिआलाअसे॥ हेंनेणचिराजसें॥ सूरवेजोगा॥ ४३॥ शरीरींचीवत्स॥ अहोरात्रांचेजो
 डी॥ विषयस्वरमोदी॥ साचविमानी॥ ४४॥ परिबापुडाएसेनेणें॥ जेंवैथेतेंसर्वस्वदेणे॥ नेविनेनागवणे॥ रूपाण्या॥ ४५॥ स
 वचोरांचेराजणे॥ नेचिनेजाणयेणें॥ लेपात्मपनकरणा॥ नेचिनाश॥ ४६॥ यादुरागेआगसतले॥ नेतयाचिनावरुतले॥ तेसंने
 णेंमुल्ले॥ आहारनिद्रा॥ ४७॥ सन्मुखशून्या॥ धांवनयापायचपळा॥ मनिपदोजवळा॥ मृत्युजेवी॥ ४८॥ नेविंदेहाजंवजववा
 द॥ जंवजवदिवसाचापवाड॥ जंवजवस्वरवाड॥ भोगाचायया॥ ४९॥ तंवतवअधिकारिके॥ मरणआसुथ्यातिजिने॥ मीठ
 जेविंदे॥ यासिजतअसे॥ ५०॥ तेसंज॥ विल्वजाये॥ यास्त्वक्राळानेनपाहे॥ हेहातोहातचिनहोये॥ राउवेजया॥ ५१॥ किं
 बहुनापाडवा॥ हाआंगींचामृत्युगित्यनवा॥ मदरेवेजोमावा॥ विषयचिया॥ ५२॥ तोअज्ञानदेशीचारावो॥ याबोलामहाबाहो
 नपडेगाभावो॥ आणिकाचा॥ ५३॥ पैजियिनांचेनिमोये॥ जेसाकासृत्युनंदेरे॥ तेसाचिनासुरण्यपे॥ जरा नगणी॥ ५४॥ क
 दाहोलादकागाडा॥ कांशिखरंगिसतलाभोडा॥ तेमानदरेवेजोपुढा॥ वार्थस्वआहे॥ ५५॥ कांआडवोहकापाणीआले॥
 कांजेसंदसयाचेस्तद्वयानने॥ तेमोतारण्याचेंचतले॥ सुरजया॥ ५६॥ पुष्टिजोगेविषयो॥ कांनिपाहेनिसरो॥ मस्तकभा
 दरीशिरो॥ कूपबळ॥ ५७॥ दादीसाउळधरी॥ मानहालोनिवारी॥ नरीजोकरा॥ मारचोपेस्त॥ ५८॥ पुढेलउरीआदळे॥ नं
 वनदरेवेजविअंधे॥ कांदाळयावरलेनिगळे॥ आळसीनिषे॥ ५९॥ तेसोतारण्याअजि॥ मोशिनादृष्टाव्यापाहे॥ नंदे
 रेनाचिसाचे॥ अज्ञानगा॥ ६०॥ दूतअक्षसंकुजे॥ कोरिसावृंदांगकुंजे॥ पारनह्यणपाहेसाडे॥ ऐसेंचिहादल॥ ६१॥ आ

पाठ ओ० ४५ वृक्षच ओ० ४६ तेचिमरण ओ० ४७ बाणी- ४८

णि आंगी वृद्धेर्वा ॥ संज्ञायै उ निमरणाची ॥ परिजयानारण्याची ॥ भूलो न फिट ॥ ६२ ॥ तो अज्ञानाचेयर ॥ हें साचनि घेउत्तर ॥ तेवो-
 चि परिसेसी थोर ॥ चिह्ने आणिक ॥ ६३ ॥ तारवाधाचिये आवडे ॥ एक वेळ आलाचरो निदेवं ॥ तेणो विश्वास पुढी थावे ॥ वसूलेसा
 ॥ ६४ ॥ कासपय आता ॥ अवंचने वया आणिल्या स्वस्थ ॥ येतु लिया सार्थी निश्चित ॥ नास्तिक होये ॥ ६५ ॥ तैसेचि अवचते हे ॥ ए-
 क दोनी वेळ चित्वा हे ॥ एथरो एव आह ॥ हे मानी नाजो ॥ ६६ ॥ वैरिया निंद आली ॥ आतां दुहे माझी सरली ॥ हे मानी नासाप-
 ली ॥ सुकला जेवीं ॥ ६७ ॥ तैसी आहार निंदेची उजरी ॥ रोग निवात जो वरी ॥ तंजो न करी ॥ व्याधीची चिंता ॥ ६८ ॥ आणिल्या
 नादिमेळे ॥ सपत्ती जवजव फळे ॥ तेणेर जे डोळे ॥ जार्ता जयाचे ॥ ६९ ॥ सवळें चि विवोग पडेल ॥ वेळो निविप निघेईल ॥ हे दुःख
 पुढील ॥ देखेनाजो ॥ ७० ॥ तो अज्ञान गाण्डवा ॥ आणितो ह तो चि जाणावा ॥ जोइं दिये अहासवा ॥ चरा एथ ॥ ७१ ॥ वयसेच नि-
 उवाये ॥ सपत्ती चि निसावये ॥ सव्यासे व्यजाये ॥ सरकां देत ॥ ७२ ॥ नकरावते करी ॥ अस भाव्य मनी धरी ॥ चितून येते विचारी
 जयाची मती ॥ ७३ ॥ रिघे जेथ न रिघावे ॥ मोगे जे न ध्यावे ॥ स्पर्श जेथ न लुगावे ॥ आगमन ॥ ७४ ॥ न जावे तेथ जाये ॥ न पाहवे
 तंजो पाहे ॥ न रवावे तं रवाये ॥ तेवीं चितोषे ॥ ७५ ॥ न धरावा तो सरग ॥ न लुगावे तेथ लागा ॥ नाचरावा जो मारी ॥ आचरे जो ॥
 ॥ ७६ ॥ नायकावे ते आदके ॥ न बोलावे तं वके ॥ परादिष होनी लहे देखे ॥ मवत ना ॥ ७७ ॥ आंगामना सिरुचियावे ॥
 येतुले निहत्या हत्या ना ठवे ॥ जो करणें यचि निनावें ॥ फल ते चि करी ॥ ७८ ॥ परिपाप मज होईल ॥ कानरक यात ना येईल ॥ हे का-
 हो चि पुढील ॥ देखेनाजो ॥ ७९ ॥ तयाचि निभागलगे ॥ जगी अज्ञान दादुगे ॥ जे सजाना ही संगे ॥ दोबो संके ॥ ८० ॥ परि असो हे
 आदक ॥ अज्ञान चिह्ने आणिक ॥ जेणे तुज सम्यक ॥ जाणवेल ॥ ८१ ॥ तरि जयाची रीप मिपुरी ॥ गुंतली देखे सिधरी ॥ न वगय-
 पाठ ॥ ओ, ८१ जाणवेने, छ.

केसरी॥ प्रमरजेसा ॥ ८५ ॥ साकरोचियाराशी॥ बेसलीखेपासी॥ तेसेनिस्त्रीचित्त आवेशी॥ जयचिंमन ॥ ८३ ॥ विलावेडूक कुंदी॥ म
 शक गुंतलाशे बुंदी॥ जेसा दोरस बुडवुली॥ रूतलापकी ॥ ८४ ॥ तेसे घरी हूनि भियणे ॥ नाही जे विमने प्राण ॥ जयासा पहा उनि-
 भसणे ॥ मादो नित्येन्य प्रियोत्तमा चिया करी॥ प्रमदाये आदो॥ तेसी जे विसी को पढी॥ धरूनि वाकि ॥ ८६ ॥ मधुर सोई सै ॥ म
 धुकर जने जे सै ॥ गृह संगोपने सै ॥ करी जोगा ॥ ८७ ॥ ह्या नार पणी जाले ॥ रत्न एक विषाईले ॥ तया चिंका जे गुले ॥ माता पित
 रा ॥ ८८ ॥ ते तुलें निपाडें प्रार्थी ॥ यरी मम जया आस्था ॥ आणि स्त्री वाचूनि सर्वथा ॥ जाणे नाजो ॥ ८९ ॥ ते सास्त्री देही जोजी वे
 पंजे भियां सर्व प्रावे ॥ कोण मी काय करावे ॥ कांही नें ॥ ९० ॥ महा पुरुषांचे चित्त ॥ जालिया वस्तुगन ॥ बाक्य व हार जात ॥
 जया परी ॥ ९१ ॥ हाने लज्जान देरवे ॥ परा पवाद नाईके ॥ जयाची इंदिये एक सुरवे ॥ स्त्रिया केली ॥ ९२ ॥ चित्त आराधी स्त्रिये
 चे ॥ आणि नित्येचे चिच्छेदनाचे ॥ माकड गारुडियाचे ॥ जे सें होये ॥ ९३ ॥ आपण पेही शिणवी ॥ इच्छा मित्र दुखवी ॥ मग कव
 ड चिवाटवी ॥ लोभ जे सा ॥ ९४ ॥ तेसा दान पुण्य रखाची ॥ गोत्र कुटुंबांची ॥ परी बाइणी स्त्रियेची ॥ उणें होने दी ॥ ९५ ॥ प्रजिता
 देवने जोगवी ॥ गुरू ते बोले डीकवी ॥ माय व्यापादवी ॥ निदार पण ॥ ९६ ॥ स्त्रियेचा तरो वरवी ॥ प्रोगसं पति अनेका ॥ आणि व
 स्तुनि की ॥ जे जे देखे ॥ ९७ ॥ प्रेमा थिले निभत्ते ॥ जेसे निभिजे कुळ देवते ॥ तेसा एका ग्रचिते ॥ स्त्री जोउ पासी ॥ ९८ ॥ सा
 च आणि चोरव ॥ ते स्त्रियेचीं चि अशेरव ॥ येर विषयी जोगा वणूक ॥ तेही नाहीं ॥ ९९ ॥ इथे ते हन कोणी देखेल ॥ झणे वेखा
 से जाईल ॥ तरि युगिचि बुडेल ॥ एसे जया ॥ ८० ॥ नाय दया भोग ॥ नमो हजै नागाची आणा ॥ तेसी पाळी उणखुण ॥ स्त्रि
 येची जो ॥ १ ॥ किब हुना धन जया ॥ स्त्री चि सर्व स्वजया ॥ आणि नित्ये चिया जालिया ॥ लागीं जे म ॥ २ ॥ आणी कही जे सप
 पाठ ॥ ओ ॥ ८५ ॥ जीवने मरणे ॥ ओ ८७ ॥ मधुर सादोसे ॥ ओ ८८ ॥ माणी कड पाईले ॥ ओ ९५ ॥ गार मरी ॥ ओ

स्त ॥ त्रियैवैसंप्रिजात ॥ तं त्रैवाहमिग्राम ॥ मानजोको ॥ १ ॥ ता अज्ञानासीं मूढा ॥ अज्ञानतेणें वळ ॥ हे असो के वळ ॥ तोतें चिरूप ॥ ४४ ॥ आणि मानलियासमगरी ॥ मोतें नलें तो स्वासी मरी ॥ लाटाचा परझारी ॥ ओं दोळे जेवी ॥ ५ ॥ ते विप्रियवृक्ष पावे ॥ आणि स-
 र्वे जो उंचावे ॥ ते साचि भ्रात्र्यासवे ॥ तळवटये ॥ ६ ॥ ऐसे निजयाचे चितो ॥ वैषम्य साय्याचा वावरी ॥ वाहे तो महामती ॥ अज्ञान
 गा ॥ ७ ॥ आणि माझा ठायो मर्त्ता ॥ फळा लागी जया आनी ॥ धनो हे शो वरकी ॥ नटणे जेवो ॥ ८ ॥ नातरी काताचा मानसी ॥ रि
 गो निस्वैरिणी जैसी ॥ राहो ते जोरसी ॥ जावया न्यागो ॥ ९ ॥ ते साशाने किरादो ॥ मजती गायपरी ॥ करूनि जो दिवो ॥ विषो सूये
 ॥ १० ॥ आणि भजनि न्यासवे ॥ तो विविषय जरी न पावे ॥ नरी सादी ह्याणे आघवे ॥ टवाळ हें ॥ ११ ॥ कुणबद कुळवाडी ॥ ते सा-
 आन आन देव माडी ॥ आदि लाची परवडी ॥ करी न्या ॥ १२ ॥ न्यागुरु मार्गी ते वै ॥ न्याचा सरगर वांदे वै ॥ तरितयाचा मन्त्र शि
 के ॥ येरनेये ॥ १३ ॥ आणि जाते सिनि सुर ॥ स्यावरी बहु सर ॥ त्वी चिना हा एक सर ॥ निवी हजया ॥ १४ ॥ मासी मूर्ती नि फजवी ॥
 ते घराचे कोनी बैसवी ॥ आपण देवो दर्वा ॥ यात्रे जाया ॥ १५ ॥ नित्य आराधन माझे ॥ काजो कुळ देवता मजे ॥ पर्वी विशेष कीजे ॥ पू
 जा आना ॥ १६ ॥ माझे अधिष्ठान घरी ॥ आणि वावसे आनाचे करी ॥ पितृकार्यावसरी ॥ पितराचा होये ॥ १७ ॥ एकादशीचा दिवशो
 जे तुखा पाड आह्यासी ॥ तं तुला चिनांगोसी ॥ पचसी चा दिवसी १८ ॥ वैयामो टका पाहे ॥ आणि गणेशाचा चि होये ॥ चउदसी ह्याणे माये
 तुसाचि बो दुर्गे ॥ १९ ॥ नित्य नोम निक्कं कर्म साडी ॥ मग वै सेन वचंडो ॥ आदित्य वारी वादो ॥ बहिर बापावो ॥ २० ॥ पाठो सोमवार पावे
 आणि बेलें सी लिंगा थावे ॥ ऐसा एक नाचि आघवे ॥ जोगा वीजो ॥ २१ ॥ ऐसा अखंड मजन करू ॥ उगानो हे सुण मरी ॥ अवघे न
 गावदारी ॥ आहवें जैसी ॥ २२ ॥ ऐसे निजो मक्त ॥ देवसी सारा धावत ॥ जाण अज्ञानाचा मृत ॥ अवतार तो ॥ २३ ॥ आणि एका
 पाठ, ओ, ५, तीरो, ओ, ९, को, नटुनी, आणि कर्सी, ओ, १५, नेरुनि बैसवी, ओ, १६, नीब, ओ, २२, नसे, छ

भेचोस्ते॥ नपोवनेतीर्थं वदे॥ देरवो भोजोपाविदे॥ तोही तोचि॥ २६॥ जयाजनपदी स्मरव॥ गजबजे चं कवतिका॥ वानू आवडे लोकि
 क॥ तोही तोचि॥ २७॥ आणि आत्मागोचर होये॥ ऐसी जे विद्या आहे॥ ते आदको भिजोरवाहे॥ विहांसजो॥ २८॥ उपनिषदांकडे न
 वचे॥ योगशास्त्र नस्ते॥ अध्यात्मज्ञानी जयाचि॥ मनचि नाहीं॥ २९॥ आत्मचर्चा करी आथी॥ ऐसिये बुद्धीची प्रीती॥ पाडूनि जया
 ची मती॥ बोदाळ जाहाली॥ ३०॥ कर्मकांड तरोजाणे॥ मुरवो हतपुराणे॥ ज्योतिषी तो ह्मणो॥ ते सोंचि होये॥ ३१॥ शिल्पी अति निपु-
 ण॥ सूपकर्म ही मवीण॥ विधि अर्थ वगा॥ हातीं आथी॥ ३२॥ कोकी नाहीं तें दे॥ मारत करी ह्मणिले॥ ३३॥ स्मृतीची वची॥ दशजाणे गारुडे चि॥ निघट
 नी॥ ३४॥ नीती जात रुझे॥ वेद्य कही बुझे॥ काव्य नाई वुझे॥ चतुर नाहीं॥ ३५॥ स्मृतीची वची॥ दशजाणे गारुडे चि॥ निघट
 यजे चि॥ पाइकी करी॥ ३६॥ पेंव्या करणी निरवडा॥ तर्क अति मादा॥ परी एक आत्मज्ञानी फुडा॥ जल्यथजो॥ ३७॥ ते एक वा
 चुनि आयवा शास्त्री॥ सिद्धान्ति माणयाची॥ परे जळोनें मूक नसाचो॥ नपा हेगा॥ ३८॥ सोरा आंगीं अशेषे॥ पिसें असती जो
 बसे॥ परि एक ली दृष्टी नसे॥ ते सें तेंगा॥ ३९॥ जरी परमाणु एवढे॥ सती वनी मूक जो दे॥ तिरवहु काय गाडे॥ ४०॥ मरणे येरे
 ॥ ४१॥ आसुष्याची नृक्षणां॥ सिसें वीणा अळकरणे॥ वोहरे वीण बाधावणे॥ तो विदुषगा॥ ४२॥ तें सें शास्त्र जात जाण॥ आ
 यवेचि अममाण॥ पार्थी अध्यात्मज्ञानी वीण॥ एक लेनी॥ ४३॥ यालागीं अर्जुना पाहीं॥ अध्यात्मज्ञानाचा वीण॥ जया गित्य बोधना
 ही॥ शास्त्र मृदा॥ ४४॥ तया शरीर जंजाळें॥ तें अज्ञानाचे बोंदिरुढे॥ तयाचे व्युत्पन्न तें गेलें॥ अज्ञान वेलो॥ ४५॥ ते जे जे बो-
 ले॥ तें अज्ञान चि फुलले॥ तयाचे पुण्य जे फळले॥ तें अज्ञान गा॥ ४६॥ आणि अध्यात्मज्ञान कांहीं॥ जेणे मानिले चि नाहीं॥ तो ज्ञाना
 र्थ न देखे काई॥ हे बोलावे असे॥ ४७॥ ऐली चि थडे न पवता॥ पळेजो मायोता॥ तया पेंडु दोषीची वार्ता॥ काय होये॥ ४८॥ कंठ्या
 पाठ॥ ओ॥ ३९ कीर॥ ओ॥ ४९ व्युत्पत्ती, छ

रवर्गचिजयं ॥ शीरोर्योविन्दुष्वचि ॥ त्रिकोणं परिपूर्णं चि ॥ त्रैविन्दुस्त्रये ॥ ४५ ॥ तत्रिंशद्वात्मज्ञानजया ॥ अनोद्धरवधनजया ॥ तयाज्ञा
 नार्थदुःखवया ॥ विषोक्तार्थ ॥ ४६ ॥ ह्यणोनि आतां वशेषं ॥ तोजानचि न तनदेखे ॥ हंसागांव आखे लखे ॥ ननु गेलुज ॥ ४७ ॥ जेहा
 सगं भिषाविले ॥ तेकांचि पाहिले थाले ॥ तें ससां भिषां देवो भले ॥ तें चि होये ॥ ४८ ॥ वाञ्छुनिया वेगळे ॥ रूप करणे हेन मिळे ॥ जे विअ
 वनिने आंधळे ॥ ते दुजेन मिसे ॥ ४९ ॥ एवदे ये उपहसी ॥ ज्ञानांचि देयापुतो ॥ अमां नित्ति द्यष्टुती ॥ वारवाणिती ॥ ५० ॥ जिये ज्ञा-
 नपदे अवरा ॥ क्विछापरि मोहगं ॥ अज्ञानया आयाग ॥ सह जे येयी ॥ ५१ ॥ सागां साकांचि निर्धार्थी ॥ एसे सांगी तले श्रीसुबुंदे ॥
 नाउफरादी देखे ज्ञानपदे ॥ तें चि अज्ञान ॥ ५२ ॥ ह्योनि बिदयावाहणी ॥ वेल्नी म्याउपनवणी ॥ वाचुनि दुधो मेळउनि पाणी ॥ फारकी
 जेकार्थ ॥ ५३ ॥ तें सेजीनच उबडी ॥ पदाची कोरन माडी ॥ सुख अनी चिये चाही ॥ निर्मल्य जाहनी ॥ ५४ ॥ तंव ओते द्यणती राहें ॥
 कं परि हारावा आहें ॥ विहसी कांवाये ॥ कविणे पका ॥ ५५ ॥ तूतें श्रीसुरारी ॥ ह्यणितेनें मकडवरी ॥ जे अभिप्राय गह्वरी ॥ झोकि
 ले आही ॥ ५६ ॥ तें देवांचे मनोगत ॥ दावित आहासो तिसून ॥ हेहा ह्यणतां निज ॥ दादेल तुझे ॥ ५७ ॥ ह्यणोनि असो हंन बोली ॥
 परिसावियागा तो पलो ॥ जे ज्ञान तो रिगे मळ विडो ॥ अवण सरखाचि ॥ ५८ ॥ आतां दयावरी ॥ जे तो श्रीहरी ॥ बोडिला तें करी ॥ कथने
 गां ॥ ५९ ॥ दया संत वाक्यास रिसे ॥ ह्यणितेनें निहति दासे ॥ जी अवधारा तरि गेसे ॥ बोडिले देवे ॥ ६० ॥ ह्यणती तुषां पाडवा ॥ हा
 चि न सुख्य आयवा ॥ आरि कितलो जाणावा ॥ अज्ञान भाग ॥ ६१ ॥ दया अज्ञान विभागा ॥ पाठी देऊनि पेंगा ॥ ज्ञान विरवी चांगा
 दहा हें देजे ॥ ६२ ॥ यगनि वीखिले निजानें ॥ जेय मेरे तुमनें ॥ तें जाणावया अजुनें ॥ आस केली ॥ ६३ ॥ तंव सर्व ज्ञाचारवो ॥ ह्यणे-
 जाणे नित याचा भावो ॥ परिसंज्ञया अभिभावा ॥ सांगे आतां ॥ ६४ ॥ श्लो- जेय जतन स्वस्या भियत ज्ञात्वा मृतमश्नुते ॥ अनादि
 पाठ, ओ, ४९ येई, ओ, ५१ जें, ध

यत्परं ब्रह्मन सत्त्वा स दुच्यते ॥ १२ ॥ टी० तद्विज्ञेय एवेत्यणो ॥ वस्तुनैवेणे चिकारणे ॥ ज्ञानेनैव च विक्रवणो ॥ उपायानये ॥ ६५ ॥ आ-
 णिजाणितेनैवावरोहेन ॥ दाहो वरणेनाहो जेथे ॥ जाणणे चित्तम्याते ॥ आणज्याचे ॥ ६६ ॥ जे जाणितेनैवासावी ॥ संसाराकाङ्क्षि-
 यं कांटी ॥ जिये मिजा जे प्रेदी ॥ नित्यानदाचा ॥ ६७ ॥ ते ज्ञेय एवेसे ॥ आदि जयानसे ॥ परब्रह्म अपेसे ॥ नामजया ॥ ६८ ॥ ज्ञे-
 हो ह्यणो जादजे ॥ तव विश्वाकारं देखिजे ॥ आणिविष्वचि एवे ह्यणिजे ॥ तदिह माया ॥ ६९ ॥ रूपवर्णव्यक्ति ॥ नाहो दृश्य दृश-
 स्थिती ॥ तद्विक्रवणैसे आधी ॥ ह्यणवेया ॥ ७० ॥ आणिसाच चिजरीनाही ॥ तदिमहदादिक्रवणायो ॥ स्फुरत केचे काई ॥ तणे
 वीणअसे ॥ ७१ ॥ ह्यणोनि अर्थानार्थ हेवोन्ही ॥ जे देखे निमुषी जाहाली ॥ विचारची मोडली ॥ वाटजेथे ॥ ७२ ॥ जेसी मांडघ-
 दशावरी ॥ तदाकारअसे मुखी ॥ तैसे सर्व होऊनियां सर्वी ॥ असे जेवस्तु ॥ ७३ ॥ अतो सर्वतः पाणिपादं तत्सर्वतोऽस्ति शिरोमु-
 रं ॥ सर्वतः श्रुतिमस्त्रोके सर्वमावृण्यति स्मृति ॥ १३ ॥ टी० आयवांचि दर्शिकाळी ॥ नवतो देशकाळवेगळी ॥ जे क्रियास्थूकास्थू-
 ळी ॥ नेचि हातजयाचे ॥ ७४ ॥ तयातेयाकारणे ॥ विश्वबाहु एसे ह्यणणे ॥ जे सर्वचि सत्तणणे ॥ सर्वदाकरी ॥ ७५ ॥ आणिसमस्ताहो-
 द्याया ॥ एककाळो घनजया ॥ आले असे ह्यणो निजया ॥ विश्वाधिनाम ॥ ७६ ॥ पैसेवितया आंगजेळे ॥ नाहो ते वेगळे वेगळे ॥ तैसेसु-
 वदष्टेसकळे ॥ स्वरूपजे ॥ ७७ ॥ ह्यणोनि विषयतश्च स्फ ॥ हा अचक्षूचावार्थिपस्फ ॥ बोलावया दस्त ॥ जाहालावेद ॥ ७८ ॥ जेसुवो-
 चे शिरावरी ॥ जे नित्यानंदं रांगचे परो ॥ ऐसिये स्थितीवरी ॥ विश्वसूया ह्यणिपे ॥ ७९ ॥ पैगासुति तेचि सुख ॥ हुताशनज-
 से देख ॥ तैसे सर्वपण अशेष ॥ भोक्तेजे ॥ ८० ॥ यात्सर्गितया पार्था ॥ विश्वतो मुखद्वयवस्था ॥ आली वाकूपथा ॥ श्रुतीचिया-
 ॥ ८१ ॥ आणिवस्तुमार्चांगन ॥ जेसे असे संसल ॥ तैसे राब्दजातीकान ॥ सर्ववजया ॥ ८२ ॥ ह्यणोनि आली तयाते ॥ ह्यणो सर्व-
 पाद ॥ ओ० ७२ विचारामि ॥ ओ० ७५ हे ॥ ओ० ७९ शरीरावर्ग ॥ नित्यमांदशिरावरी ॥ ओ० ८० पर्णी ॥ ओ० ८१ ॥

अत्रादकृते ॥ गवृजसर्वते ॥ आवरुनिअसे ॥ ८३ ॥ ये हवीं तरी महामती ॥ विश्वतश्च सद्गुणश्रुती ॥ तथा चियव्यामी ॥ रूपवैले ॥ ८४ ॥ वांस्तु
 निहस्तनेत्रपाये ॥ हेभाषतेयुक्ताहे ॥ सर्वशून्यलाचानाहे ॥ निष्कर्षजे ॥ ८५ ॥ पैकृत्सुखानेंद्रहोळे ॥ ग्रसिज्जनअसेऐसेकळे ॥
 परिग्रसितेयासावेगळे ॥ अस्कार्द ॥ ८६ ॥ तेसंसाचिजेएक ॥ तेथेंकव्याप्यव्यापक ॥ परिबोलावथानावेक ॥ करावेंलागे ॥ ८७
 पैरल्यजेदावावेंजाहानें ॥ तेंविंदुलएकवैले ॥ तेसंअद्वैतसागावेंलोले ॥ तेंद्वैतकाजे ॥ ८८ ॥ ये हवीं तरी पाशी ॥ गुरुशिष्यस
 लथा ॥ आडळपंडेसर्वथा ॥ बोलखंड ॥ ८९ ॥ ह्यणोनिगाश्रुती ॥ द्वैतभावेअद्वैती ॥ निरूपणाचीवाहती ॥ वाटवेली ॥ ९० ॥ तेचिआ
 नाअवधारी ॥ इयेनेत्रगोचरेआकारी ॥ तेंजेयगाजयापरी ॥ व्यापकअसे ॥ ९१ ॥ श्रो ० सर्वद्वियगुणाभाससर्वद्वियविवर्जितस
 असंनसर्वसृच्चैविर्येणगुणभोजूच ॥ ११५ ॥ टी ० तरितेगांकरादीऐसे ॥ अवकाशीआकाशजैसे ॥ पटीपंदहोऊनिअसे ॥
 तेंनुजेवि ॥ ९२ ॥ उदकहोऊनिउदकी ॥ रसजेंसाअवलोकरी ॥ दीपपणेदीपकी ॥ तेंजजैसे ॥ ९३ ॥ कपूरुत्वंकापुरी ॥ सौरभ्यअसेज
 यापरी ॥ शरीरहोऊनिशरीरी ॥ कर्मजेंवी ॥ ९४ ॥ किंबहनाजेंसांगडवा ॥ सोनेचिसोनयाचारवा ॥ तेंसेजेंयासवी ॥ सर्वोगीअसे ॥
 ॥ ९५ ॥ परिअसेरैवेपणामाजिवडे ॥ तवरवारेसाआवडे ॥ वाहूनिसेनेसांगडे ॥ सोनयांजेवी ॥ ९६ ॥ पैगावोयचिचाकुजा ॥ परि
 पाणीउजूसहाजा ॥ वह्निआलानोरवजा ॥ लोहनदेदी ॥ ९७ ॥ यत्ताकारेंवदाळे ॥ तेथनमगमेंवाढेळे ॥ मवीतरीचोफळे ॥ आ
 येंदसे ॥ ९८ ॥ परितेअवकाशजैसे ॥ नोहजतीचिआकाशें ॥ जेंविकारहोऊनितेसैं ॥ विकारीनोहे ॥ ९९ ॥ मनसुरव्यइदिया ॥
 सत्वादिगुणायया ॥ सारिखेरोसेधनजया ॥ आवडेदीर ॥ १०० ॥ पैगुळाचिगोडी ॥ नोहेबांधेयासागडी ॥ तेसीगुणइदियफुडी
 नाहीतेश ॥ ११ ॥ अगास्तीराचियेदशे ॥ द्युतस्तीराकारेंअसे ॥ परिस्तीराचिनोहेजैसे ॥ कापिअजा ॥ १२ ॥ तेंसेजेंदयेविकारी ॥ वि-

पाठ ॥ ओ १० निरूपणासी ॥ ओ १६ खेवणा ॥ ओ १ येरी ॥

कारनोहेअवधारी॥ पैआकारनामभोंवरी॥ येरसोवैतेसोने॥ ३॥ इयउयउमहादिया॥ तेंवेगळेपणधनजया॥ जाणयुणहंइया॥ पा-
 सोनिने॥ ४॥ नामरूपसंबंध॥ जातिक्रियाभेद॥ हाआकारमीचप्रवाद॥ वस्तुसिनाही॥ ५॥ तेगुणनहेकही॥ गुणतयासबधनाही
 परितयाचिवाद॥ आभासनी॥ ६॥ येतुलेयासाठी॥ सांभानाचापोटी॥ ऐसंगमेजयाकिरीदी॥ जेहेचिधरी॥ ७॥ तरिंताधर
 णेऐसे॥ अश्यातेंजेविआकाशे॥ कांमगिद्वंद्वजैसे॥ आरसेनी॥ ८॥ नातरीसूर्यप्रभिमंडळ॥ जेसेनिधरीसलिल॥ कांशमीक-
 रींमृगजळ॥ धरिजेजेवी॥ ९॥ तेसंगासंबंधेविणा॥ ययासर्वानेंधरीभिगुण॥ पैरितेवायाजाण॥ मिथ्यादृष्टी॥ १०॥ आणियाप
 रनिगुणे॥ गुणानेभोगणे॥ रकाराज्यकरणे॥ स्वमीजैसे॥ ११॥ ह्यणोभिगुणाचासंग॥ अथवागुणभोगा॥ हाभिगुणोंलाग॥
 बोलांनये॥ १२॥ श्लो० नहिरतश्चमृतानामचरमेवच॥ मृतमत्वात्तदविज्ञेयदूरस्थचातिक्तेचतत॥ १३॥ टी० जेचरा
 चरमृता॥ मांजिअसेपादुफता॥ नानावकीदुष्णता॥ असेदेजेसी॥ १४॥ तेसेनिअविनाशभावे॥ जेसुस्यदशेआयवे॥ व्या
 धूनिअसेतजाणवे॥ जेयएथ॥ १५॥ जेएकआतबाहेरी॥ जेएकजवळदूरी॥ जेएकवाज्जनिपरी॥ दुर्जीनाही॥ १५॥ क्षीरसागरी
 चीगोडी॥ मांजिबहूथडियेथोडी॥ हेंनाहीतयापरी॥ पूर्णजेगा॥ १६॥ स्वेदजममृती॥ वेगळाल्यामृती॥ जयाचियेअनुस्यूती॥
 रोमणेनाही॥ १७॥ पैओनेमुरखान्दळा॥ यदमहमसीअनेका॥ मांजिबिबोभिचिंदिका॥ नसेदेजेवी॥ १८॥ नानालवणकणा
 चियेराशी॥ क्षारताएकजेसी॥ काकोडोएकीदुसी॥ एकविगोडी॥ १९॥ श्लो० अविमक्तत्वमृतेषुविमक्तमिवचस्थितम्॥
 मृतमर्तवचत्वेयग्रिमिष्युप्रमविष्युच॥ १६॥ टी० तेसेअनेकीमृतजाती॥ जेआहेएकीव्यासी॥ विश्वकार्यसमती॥ का
 रणजेगा॥ २०॥ ह्यणोनिहामृताकार॥ जेथुनिनेचितयाआधार॥ कल्लोकासागर॥ जियापरी॥ २१॥ बाल्यादिनिद्रीवयसी॥

कांयाएकचित्तये॥ तैसां आदिस्थितिगामी॥ अरुण उजे॥ ११॥ मायं ज्ञानमभ्यास॥ होतां ज्ञानां दिनमान॥ जैसं कांगगना॥ पालदेना॥ १२॥ अ-
 गासुहृदिवैद्यप्रियोचना॥ जयानामह्यणतीव्रता॥ व्यामिजैविष्णुनामा॥ पात्रजाहोति॥ २४॥ मगआकारहाहारपे॥ तेकांरुद्रजैह्यणिपे॥
 तेहीगुणवयजेकांरोपे॥ तेजैअरुन्य॥ २५॥ नभाचैसुन्यल्विगळुन॥ गुणत्रयातेनुरउन॥ तेरुन्यतेमहाशून्य॥ श्रुतिवचनसमत ३६॥
 प्रसो० ज्योतिषामपितज्ज्योतिरुसमसः परमुच्यते॥ ज्ञानं ज्ञेयज्ञानगम्यल्हिसर्वस्यधिधितं॥ १७॥ टी० जेअग्नीचिंदोपन॥ जे
 चंद्राचैजीवन॥ सूर्याचैनयन॥ दसवर्तजेण॥ २७॥ जयाचिनिउजियेउं॥ तांगणउयेंउं॥ महोतेजस्करवाडे॥ राहादेजेण॥ २८॥ आ-
 दीचिजेआदी॥ वृद्धीचिजेवृद्धी॥ बुद्धीचिजेबुद्धी॥ जीवाचिजेजीव॥ २९॥ जैगनाचैनयन॥ जैनचाचैनयन॥ कानाचैकान॥ वाचैची
 वाचा॥ ३०॥ जेमाणाचाभाण॥ जेगर्तनिचरणा॥ क्रियचैकर्तपण॥ जयाचैनी॥ ३१॥ भाकारजेणे आकारे॥ विस्तारजेणें विस्तारे
 संहारजेणें संहारे॥ पांडुकुमरा॥ ३२॥ जेमदिनीचिसिंदनी॥ जेपाणीपिपुनिअसेपाणी॥ तेजादेवतावणी॥ जेणेतेज॥ ३३॥ जेवा
 मुचाथवासोशवास॥ जेगगनाचा अवकाश॥ हेअसोआघवाचिभास॥ आपासेजेण॥ ३४॥ किबहुनापंडवा॥ जेआघवैचिअसेआघ
 वा॥ जेथनाहीरिगावा॥ द्वैतभावामी॥ ३५॥ जेदेखिहोयाचिसवे॥ दृश्यदृष्टाहेआघवे॥ एकवटकालवे॥ सामरस्ये॥ ३६॥ म
 गतेविहोयज्ञान॥ जावाज्ञेयहने॥ जेणैगमिजेस्थान॥ तेंहेतेशि॥ ३७॥ जेसंगलियांलेख॥ आरखहोतीएक॥ तेसंसाध्यसम्यना
 दिक्॥ ऐक्यासियो॥ ३८॥ अर्जुनाजयेनाई॥ नसरंदेनाचावहा॥ हेअसोजेतुंत्यो॥ सर्वाचाअसे॥ ३९॥ प्रसो० इतिस्त्रैत्रयाज्ञा
 नं जेयचोक्तसमासवः॥ मुद्राकृतदिज्ञायमद्रावायोपपद्यते॥ १८॥ टी० एवहेतुजपुढा॥ आदिसेचरुहाडा॥ दाविलंप्राजेवा
 डा॥ विवचुनी॥ ४०॥ तैसंचिसिआपाठा॥ जैसंभेदेखसीदिवा॥ तैसंज्ञानहीकिरीटी॥ सागीतले॥ ४१॥ अज्ञानाहीकौतुकं॥ रूप
 पाठ॥ ओ० २४ द्योतिजे॥ ओ० २८ उजवहे॥ ओ० ३३ क्रियोस॥ ओ० ३७ ज्ञानेजेयगहन॥ जेय०

केलेनिर्ले॥ ज्वंआयणीतुद्धीदेके॥ पुरेह्यणे॥ ४२॥ आणिआनोहंगेकडे॥ उपपत्तीचेनिपवाडे॥ निरूपितेंउघडे॥ जेयपेंया॥ ४३॥ हे-
 आयवीचिविचचना॥ तुद्धाप्रसनिअर्जुना॥ मस्तिद्धिमावना॥ मासिद्यायेती॥ ४४॥ देहादिपरियहो॥ सन्यासकरूनियांजिहो॥ जो
 वमाज्ञावाडे॥ दृष्टिकरेना॥ ४५॥ तेमानेकिरीटी॥ हेविजाणोनियांशेवटी॥ आपणपयांसादेवादी॥ मोचिहेती॥ ४६॥ मीचिहेतोप
 री॥ हेपुरव्यागाअवधारी॥ सोहोपसवोपरी॥ रचलीआह्मी॥ ४७॥ कडापायरीकीजे॥ निगळीमाचबाधिजे॥ आथावीरुइजे॥ नश
 ऐसी॥ ४८॥ येहूवोआयवेचिआत्मा॥ हेसागोनिवोरिचया॥ परिनुसियाप्रनोधर्मो॥ मिळलना॥ ४९॥ ह्यणोनिएकचिसंविडे॥ नश
 तुंधीआह्मीकेले॥ जेंअदळपणदेरिविले॥ तुझियेमजे॥ ५०॥ पैबाळकाजेंजेवविजे॥ तेंयांसएकविमावाईकीजे॥ तेंसंएकचिहेंच
 तुयीजें॥ कथिलेआह्मी॥ ५१॥ एकसेअएकज्ञान॥ एकजेयएकअज्ञान॥ प्रागेकेलेअवधान॥ जाणोनितुझे॥ ५२॥ आणिएसेना-
 होपणो॥ जरीहाअभिमावोतुजहाना॥ नयेतरीहेव्यवस्था॥ एकवेळसांगो॥ ५३॥ आनोचोदारीनकरूं॥ एकहीह्यणोनिनसरूं॥
 आत्मनात्मयाधरूं॥ सरिसाचिपाद॥ ५४॥ परितुवायेतुलेकरावे॥ याणेंतेआह्मादेआवे॥ जेंकानाचिनावेवेवावे॥ आपणपयावे॥
 ५५॥ याओह्मयाचियाबोला॥ पार्थरोमाचिनजाहाना॥ तेथदेवह्यणतीभला॥ उचबळेना॥ ५६॥ ऐसेनितोयेतावेगा॥ धरूमिह्य-
 णोअरंग॥ प्रकृतिपुरुषविभाग॥ परियेसेसांगो॥ ५७॥ ज्यामागीतेजगो॥ सारथह्यणतयोगा॥ जयाचियेमादेवलागो॥ योक्-
 णिलजाहालो॥ ५८॥ तोआईनिदेश॥ प्रकृतिपुरुषविवेक॥ ह्यणेआदिपुरुष॥ अजुनते॥ ५९॥ म्हा० प्रकृतिपुरुषचेविवेक
 नदीउभावीप॥ विष्णोरंध्रगुणेंचैवविद्विमलतिमंभवाच॥ १०॥ टी० नरीपुरुषअनादीअथी॥ आणितेंविलागोनिप्रकृति॥ सा-
 वेसरिसीदिवोरीनी॥ जयापरी॥ ६०॥ कौरूपनोहेवायो॥ परीरूपानागलीछाया॥ निकणवादेधनजया॥ कणेंसीकोंडा॥ ६१॥ ते
 पात॥ ओ० ६२॥ तरि॥ ओ० ५५॥ आदद॥ ओ० ५१॥ चतुर्थव्याजे॥ ओ० ५२॥ कानासमिचि॥ ओ० ६०॥ दोहोनिर्मो॥ ओ० ६१॥ को० ६२॥

सीजाणजवेदे॥देहीइयेएकवेदे॥प्रकृतिपुरुषंप्रकटे॥अनादिसिद्धे॥६२॥पैंसेत्रयेणेनवे॥जेंसांगीतलेआषवे॥तिंचिएयजाणवो॥प्रकृतिहे॥६३॥आ-
 णिसेत्रजरेसे॥जयातेहणितलेअसे॥तोपुरुषहेअनारिसे॥नबोलीयेदे६४इयेआननिनवे॥पारिभिरूपआननोहे॥हेलक्षणनसु-
 कावो॥पुतनीपुतनी॥६५॥तरीकेवळहैसता॥तोपुरुषगापादुसता॥प्रकृतीतिसमस्ता॥क्रियानामे॥६६॥बुद्धिइयेअनःकरण
 इत्यादिबिचारप्ररण॥आणितेतीक्ष्णगुण॥सत्त्वादिक॥६७॥हाआयवाचिमेळावा॥प्रकृतीजाहालाजाणावा॥हेचिहेतुसमव-
 कमीचिया॥६८॥ श्लो० कार्यकारणकर्तृत्वेहेतुःप्रकृतिरुच्यते॥पुरुषःसरवदुःखानाभौतत्वेहेतुरुच्यते॥२०॥ बी० नैषा
 दच्छाअणिबुद्धी॥यदवीअहंकारेर्मांआधी॥मगतियालावितिवेधी॥२१॥तैचिकारणनाकावया॥जेंसुअषर-
 णेंउपाया॥तयानावधनंजया॥कार्येपंगा॥२२॥आणिदच्छामदाचाथावी॥लागलीमनातउठवी॥तेंइदियेराहादवी॥हेकृ-
 त्पेंगा॥२३॥ह्याणोनितीक्ष्णजाणा॥कार्यकर्तृत्वकारणा॥प्रकृतीमूळहेराणा॥सिद्धांचाहणे॥२४॥एवनिहीचिभिसमवाये
 प्रकृतिकर्मीरूपेहोये॥परिजयागुणावादेअये॥त्याचिसारिवी॥२५॥जेंसत्वगुणेंअधिष्ठजे॥तेंसैत्कर्म्मसृजिजे॥रजोगुणेनि-
 पजे॥सध्यमते॥२६॥जेंकांकेवळतमं॥होतीजियेकर्मे॥निषिद्धेअयमं॥जाणतिये॥२७॥ऐसेभिसतासते॥कर्म्मप्रवृत्तीस्तव
 होतें॥तथापामोभिनिर्वाळते॥सरवदुःखगा॥२८॥असंतोदुःखउपजे॥सत्कर्मींसरवीनपजे॥तयादोहोचाबोलिजे॥मोगपुत-
 चा॥२९॥सरवदुःखजवरी॥निफजतीसाचोकारो॥तवप्रकृतिउद्यमकरी॥पुरुषमोगो॥३०॥प्रकृतिपुरुषचिकुळबांडो॥सो-
 यतोअसंगरी॥जेंआकुलीजोडी॥आबुलियाआबुलिये॥सगतीनासोये॥होआबुलीजयविये॥बोजेएका
 ॥३१॥ श्लो० उक्तः प्रकृतिस्थो हि सुक्तमृद्विति जान्गुणाच्च॥कारणगुणसंगोऽस्य सदस्यो निजमयः॥३२॥ टी० जेंअनंगतोपे-
 पार॥ओ० ६६ जे, ओ० ७१ मदांतें, ओ० ७४ सालिक, ओ० ७५ अयमं, ७६

या ॥ निकवडासया ॥ जीर्णोपनिष्टा ॥ पास्तुनिष्टा ॥ ८५ ॥ तथा आडना वपुस ॥ वै द्योस्तीना नपुसक ॥ किं वहुना एक ॥ किञ्च योना हो ॥ ८६ ॥ तो अचक्षुः अचक्षुः ॥ अहस्र अचक्षुः ॥ रूपना वर्ण ॥ नाम आशी ॥ ८७ ॥ महुतिकर्मास्तु होये ॥ पारुण्योपनिष्टा ॥ तया सा प्रियं कुरु होये ॥ नाम पुरुषा ॥ ८८ ॥ अर्जुना का हो चिथेना हो ॥ तो महुती चामर्त रपा हो ॥ वीं भोगणो रमया हो ॥ स्तुतुः रवाचं ८९ ॥ तो तरो अकनी ॥ उदास अभोक्ता ॥ पारिद्यापति मता ॥ भोग विजे ॥ ९० ॥ जिये ते अहुमाक ॥ रूपा गुणाचा चळटाळ ॥ तो मल ते सा हो रेवळ ॥ लरवा आणी ॥ ९१ ॥ इयं महुती नव ॥ गुण मयी हो चिनाव ॥ किं वहुना सावेव ॥ गुण तो चिहे ॥ ९२ ॥ हे प्रतिस्पर्णा नि त्यनवी ॥ रूपा गुणाची च आधवी ॥ जडो ते हो साजवू ॥ इथेचा साज ॥ ९३ ॥ नाम इयं प्रसिद्धे ॥ स्नेह इयो स्मिग्धे ॥ इदिये महुते इयेचेनी ॥ ९४ ॥ कायी मनहं नपुसक ॥ फोतो हे उवीत कीलो क ॥ ऐसे ऐसे अलो किक ॥ करण इयेचे ॥ ९५ ॥ हे प्रमाचिम हा हो पा ॥ हव्याची चिंस्त ॥ विकार उमप ॥ इयाकले ॥ ९६ ॥ हे कामाची साडवी ॥ हे मोहवनी विमाधवी ॥ इये प्रसिद्धी देवी ॥ माया होना भा ॥ ९७ ॥ हे वाड्याची वाटी ॥ हे साकार पणाची जोडी ॥ मपंचाची धाडी ॥ अभंगहे ॥ ९८ ॥ कळारथी निजालिया ॥ विद्या इयेच्या वे लिया ॥ इच्छा ज्ञान क्रिया ॥ वियाली हे ॥ ९९ ॥ हे नटाची टांक साळ ॥ हे चमत्काराचे वलाउल ॥ किं वहुना सकळ ॥ रेवळ इयेचा ॥ १०० ॥ जे उत्तम प्रलय होत ॥ ते इयेचे सायमात ॥ हे असो अद्भुत ॥ मोहन हे ॥ १०१ ॥ हे अहयाचे दुसरे ॥ हे निःसंगत्वे सोयरे ॥ हे निगलवें निगरे ॥ नादत असे ॥ १०२ ॥ इये ते येतु लावरी ॥ सोभा ग्या व्याती थोरी ॥ ह्यणो नि तथा आवरी ॥ अना वसते ॥ १०३ ॥ त याचा तव नायी ॥ निपट्ट नि का हो चिना ही ॥ वी तथा आये वूही ॥ आपण चि होये ॥ १०४ ॥ तथा स्वयं भाची सप्तती ॥ तथा अमूर्तची - मूर्ती ॥ आपण हा यस्थिनी ॥ गवोतया ॥ १०५ ॥ तथा अनतोची आती ॥ तथा पूर्ण ची न्दसी ॥ तथा अकुळाची जाती ॥ गोत होये ॥ १०६ ॥

पाठ ॥ ओ ८५ अगा मर्तो ॥ ओ ८६ मासिये ॥ ओ ८७ नीच ॥ ओ ८८ इत्थे नि ॥ ओ ८९ भोगनी ॥ अनो किक ॥ ९०

नया अचर्चाचिच्छिद्र ॥ नया अयाराचिमान ॥ नया अमनस्याचिमान ॥ वृद्धाहो होये ॥ ३ ॥ तया भगवत्पाराचिआचार ॥ तया भव्यापाराच्युया
 पार ॥ निरहकाराचा अहंकार ॥ होऊनिहावे ॥ ४ ॥ तया भगमाचिनाम ॥ तया अजाचिजन्म ॥ आपणहायेकर्म ॥ जन्मतया ॥ ५ ॥ तया निर्गुण
 चैगुण ॥ तया अचरणाचिचरण ॥ तया अथवणाचिथवण ॥ अचक्षुचिक्षु ॥ ६ ॥ तया भागवतीनचिभाव ॥ तया निरवयवाचिअवयव ॥
 किंबहुना होयसर्वा ॥ पुरुषोचिहो ॥ आ ऐमो भिदया मद्धती ॥ आपुनियाराव्यामी ॥ तया अयिकारतो वदती ॥ माजो वोजि ॥ ७ ॥ तय्यपुरु
 षत्वजो असे ॥ तय्यमहानिदयो ॥ चंद्रसा अंगमे ॥ हरपुनो जवो ॥ ८ ॥ विदक वृहचाया ॥ मीनानियाया नाया ॥ वसहोयराचिका ॥ ज्याप
 री ॥ ९ ॥ कासाधूतंगोयच्छ ॥ संचरगो निमयेयच्छ ॥ गाना मीतनाचा आमाळी ॥ दादनक्रो ज ॥ १० ॥ तय्यपयपरदनायातो ॥ कावहो जे साका
 री ॥ गुडुनिधनलापदो ॥ रत्न दीपा ॥ ११ ॥ गजापराधनि जाहाला ॥ वेगिंहगंगेपरधलो ॥ तया पुरुषमद्धति आन्त ॥ स्वतजामुक्ते ॥ १२ ॥
 जागतानिरसहसा ॥ निद्रार्पजनि जसा ॥ स्वर्गानिधारासा ॥ वृक्षवोजि ॥ १३ ॥ तसमिदगिजानपणी ॥ पुरुषागुणभोगण ॥ उदास
 अंतरीगुण ॥ आंतुडेजवी ॥ १४ ॥ तैसे अजा निरहोये ॥ आगीजनिमन्यचिधोये ॥ वाजतीजवल्याह ॥ गुणसंगाते ॥ १५ ॥ पुरेते
 तेसे पंडुसुता ॥ तातले लोहपित्त ॥ जे विवर्हस्मिचिचिधाना ॥ वेगिजनीतये ॥ १६ ॥ को आंदाको दया उदक ॥ ग्रति भाहोये अनक
 तेना नत्वित्यणतीलोक ॥ चिद्रजिवो ॥ १७ ॥ दपणा चिया जनीलका ॥ दुजगण जे सय पुरवा ॥ कावुवु मस्मिदका ॥ लोहितत्वये ॥ १८
 ते सागुण संगमे ॥ अजन्मा हा जन्मे ॥ रावतंगे सांगमे ॥ ये ऊर्वनाहो ॥ १९ ॥ अयमात्तम धनी ॥ या सांगसियामानी ॥ जे सप्तस्य
 सीहोयस्सर्पी ॥ अत्यजादिजाती ॥ २० ॥ त्याणो निके वळा पुरुषा ॥ नाहो हेणो भोगे गंदरा ॥ एथ गुणसगिचि अशेखा ॥ आगिंमूळ
 ॥ २१ ॥ श्लो ॥ उपद्रष्टानुमताच मनीमोक्षमेदशवरः ॥ परमान्मनिचायुक्ते दहोस्मि पुरुषः ॥ २२ ॥ दि० हानद्वतिसार्ज उभा ॥ प

रिजुईजैसोबोयंवा॥ इयाप्रहृतिपृथ्वीनमा॥ तेतुलापाड॥ २३॥ प्रहृतिमार्जित्वातदी॥ मेरुहोयहाकिरीदी॥ माजिबिबेपरिजोदी॥ लो
 दोनेण॥ २४॥ प्रहृतिहोयजोये॥ हातोअमर्नचिओहे॥ ह्यणोभिआत्रह्याचिहोये॥ शामनहा॥ २५॥ महानियणोअये॥ यावियासत्ताज
 गविषा॥ इयाजोगोइये॥ वरहवुहा॥ २६॥ अनंतकाळोकिरीदी॥ जयािमळतइयाकृदी॥ तियािरगताइयाचोपोदी॥ कल्यांतसमंद॥ २७॥
 हामहद्वह्यगोसावी॥ ब्रह्मगोनकलाधवी॥ अपारपणेसवी॥ मपंचति॥ २८॥ पियादेहामाझादी॥ परमात्माणेसीजेपरी॥ बोनिजेतअ-
 वधाशे॥ ययातेचि॥ २९॥ अगाप्रहृतिपरीना॥ एकआर्थपइसता॥ गेसाप्रवादगेतलता॥ पुरुषहोपे॥ ३०॥ स्तोत्र्यग्वेविनिपुरुषंमह
 मिचगुणैःसह॥ सर्वथावर्तमानाणिनसंभ्रयोमिजायेते॥ ३१॥ टी० जोतिरवळपणेंयेणो॥ पुरुषाययाजोणा॥ आणिरगुणोचिकरणे॥ प्र
 हृतीचिंते॥ ३२॥ हेरुपुहछाया॥ पलजळेहमाया॥ गेसांनिवाइयनंजया॥ जोन्दीजे॥ ३३॥ तोगोपादेअर्जुना॥ प्रहृतिपुरुषविवचना॥
 जयाविषयामना॥ गोचरजाहान्दी॥ ३४॥ तोशरीरचेनिमंका॥ कुरुकांकेमपकळे॥ गरिआकाशचूंमंनमेळे॥ तैसाअसे॥ ३४॥ आशिलेनिहेह
 जोनेयेपुदहमोहे॥ दहरोलियानोहे॥ पुनरगितो॥ ३५॥ गेसानयापक॥ प्रहृतिपुरुषविवेक॥ उपकारअर्न्नाविक॥ कयोपेगा॥ ३६॥ गीर-
 हाविअतरे॥ विवेकप्राप्तिचियापरी॥ उदयेजेतेअवधारी॥ इणयेवहुता॥ ३७॥ स्तोत्र्यनेनाम्यानिपश्यतिहेचिदात्यानमात्माना॥ अन्य
 सारव्येनयोगेन कर्मयोगेनचापरे॥ ३८॥ टी० कोणकर्मसमदा॥ विचाराओगता॥ आत्मानात्मकिदा॥ पुदेदउनी॥ ३८॥ छनीसहो
 वानीमदा॥ तादोनिनिविवाद॥ निवाइतीशद्व॥ आयणोपे॥ ३९॥ तगाआपणपयान्दोदी॥ अध्यात्मज्ञानाचियादिदी॥ देरतनीगाळिदी
 आपणोपेचि॥ ४०॥ आणिपुदतबो॥ चिन्तेनाभाणव्ययोगे॥ कतेअंगलगे॥ कमाचिंते॥ ४१॥ स्तोत्र्यअन्येवैवमजानतः श्रुत्वाव्येष्यउ
 पासते॥ तोपिचातितरत्येवमुत्प्रातिपरायणाः॥ ४२॥ टी० येणेंयेणनकरो॥ निस्तरतीसाचोकार॥ हेमवभायकांडरे॥ आयवेचि॥ ४२

पाठ - ओ - ४२ मउरे

३१

३२

३३

३४

३५

३६

परितेव रिनेत्तिमे ॥ अभिमानतव जेवतेग ॥ ग्गका चिया विग्यासो ॥ देकुर विन्ना ॥ २३ ॥ जीहनां हनद वने ॥ हानिकृणवाधपते ॥ युसाभिमाहा रि
नी ॥ देतो सुख ॥ २४ ॥ नयाचि नमुरवे जेभया ॥ तेनुदे आनेरचासो ॥ ग्गका चिया ॥ भनहाते ॥ २५ ॥ नयाएकगो योजिनिनावे ॥ दोवती मोआ
घवे ॥ नया अस्सरासो जेवि ॥ नेभाकर ॥ २६ ॥ तेहा अनेक्रिपेअजा ॥ दयाभरणाय वरमाजा ॥ पाक भिनयतेना जा ॥ गामेतया ॥ २७ ॥ ऐसेसे
हेउपये ॥ बहुवसायेपये ॥ जाणावयाहोये ॥ ऐकवस्तु ॥ २८ ॥ आनापुर हवहव ॥ येरायाचिभयिन ॥ भद्वोगवयित ॥ देउतुज ॥ २९ ॥
येनुन्निप दुसता ॥ अनुभवदाहाणा आयिना ॥ यरनवनु जहाणा ॥ मायाभनाहो ॥ ३० ॥ द्यणोनिगवुहुरज ॥ मतवाहवजाज ॥ सोन्नेत्तिवव
फनिनार्यनि ॥ ३१ ॥ प्रका दानये जायतोती कभान्वयावर मगसा ॥ भनदने जेभयागोचि ॥ हिहमगविस ॥ ३२ ॥ दी ० तरोस्ववजयेणेबोल
नुजआपणपजहागिन्ने ॥ आणिसनहाण्यार्गितेन्द ॥ आद्यवर्च ॥ ३३ ॥ नयापयरागोचिभद्वो ॥ हाउजमनेसाकटे ॥ अग ॥ संगसो लुन्दो ॥ कल्लो
वजेसा ॥ ३४ ॥ कोतजा आणिरुमसा ॥ भद्वजान्दियावरीरा ॥ दुराजका चियापुरा ॥ ३५ ॥ हाया ॥ ३६ ॥ जानायागधरथार ॥ द्वाकं वीमुयावसरथे ॥ उ
ठिजेजेविअकुरो ॥ नानाविधे ॥ ३७ ॥ तेराजगत्वर आयये ॥ जेवाहो जवगणनोवे ॥ तेनाउभयरागसंभवा ॥ ऐमेजाणा ॥ ३८ ॥ दयान्नागेअजु
ना ॥ क्षेमजाप्रथाया ॥ पास्सनिगहानेभिना ॥ क्षवत्योके ॥ ३९ ॥ प्रका ० समसवपुहनेपुगुमिनपरमवरा ॥ निनयत्सविनयतयः पश्यतिसपश्य
ति ॥ ४० ॥ दी ० पेपन्वतवनकु ॥ नरितयचिनेआहा ॥ ऐराग्यालेजाकापोहा ॥ ऐक्य दसा ॥ ४१ ॥ क्षितेआदवोचिहोती ॥ एकाचोणकआहती
परिपस्सपनेति ॥ वेगछाद्येस्सा ॥ ४२ ॥ योनीनामिहाआनोने ॥ भनारिमानते ॥ वपहेशिलाने ॥ आद्यवयाचि ॥ ४३ ॥ ऐमेदुरवाभिकरदे ॥
भदस्ससोहनपादो ॥ तिरजन्माचियाकादो ॥ नन्दाहर्मागियाक्षनागानयाजनेशिक ॥ देविपकवमुदं ॥ होनोण्णवचिफुके ॥ तुबिणियिची
॥ ४४ ॥ होनुकाइवुवकुडे ॥ यरिवोरनिहमोद ॥ तमोक्षितेअवयदे ॥ यरिनस्तु उज ॥ ४५ ॥ अगारकणाविहवमी ॥ इष्णताभमानजेसो ॥ तिसा
पाठ आ २३ मे आ २३ जका आ २५ वगका आ २७ धरिनी २

२६

[illegible]

गार , गार्गि. ७

यदाहितं यथाकृमाद्यभक्तस्य भगवत्पुत्रयुनि॥ तन्नागवर्चविस्तारव्रह्मसंपद्यततदा॥ ३०॥ दो० ये हर्षेनोचं भगुना॥ होतुं ब्रह्मभगुना॥ त्रयां मृतादृतीप्रि
न्ना॥ दिसर्गोक्तो॥ ८५॥ लहरीजोसिया मन्त्रो॥ परमाणुनाणकात्म्यन्त्रो॥ रसोकरुमं मुक्तो॥ श्रुत्याचां जने॥ ८६॥ नातरादेहां भवेव॥ मर्नां आयव
विभावा॥ विस्फुल्लिगसुवै॥ वद्गोक्त॥ ८७॥ ते संप्रसूताकारणकांचो॥ गृथार्थदोरीगंजसांच॥ नोचिब्रह्मसंपनन्वि॥ तारुन्वगे॥ ८८॥ मगजयति
याकडे॥ ब्रह्मर्ची दठाउयदे॥ विबुहना जोडे॥ अपारसरुव॥ ८९॥ येवुनि नुजपाथा॥ प्रहृतिपुरुषध्ववस्था॥ दायेदावाप्रतीतिपथू॥ मा
जिजाह्ना॥ ९०॥ अमृतं जसेयचुका॥ कोनिधानदिवेजेको॥ तनुमां मद्दाका॥ सासावाहो॥ ९१॥ जीजाहासियप्रतीति॥ यस्वाधेण
जेंचिनी॥ ते आनां सः मद्रापती॥ दुयापरी॥ त्तिगकटोर्ननिवाल्॥ दोर्ननुजतीमरगान्द॥ हटुं मनानवाल्॥ मगनेघटुं॥ ९२॥ एंसेतुं वद्विणित
ले॥ मगबोसो प्रादग्नि॥ ते ये भवशानांचोचिक्कन्दा॥ सवंगियरे॥ ९३॥ प्रमो० भर्मा दत्तानिगुणतात्परमात्मायमव्ययः॥ शरीरस्थोपि को
तयनवरोनिनियत॥ ९४॥ दो० तीरपरमात्माह्यणिपं॥ नोणसा जाणस्वन्मये॥ जकां मेळनिद्रि॥ अयं जेसा॥ ९५॥ को जे जकां अदीपाहो॥
ते अमृतविअसेरिदी॥ मांजिविबुतदृष्टा॥ आणिकांचिये॥ ९६॥ तेसां आत्मादहो॥ आर्थह्यणिपुं हकाहो॥ सांचितरीनाहो॥ तो जेथि
चोतेथे॥ ९७॥ अरिसांमुखजेसे॥ बिबिलयानास असे॥ दहो वसणेंतसे॥ आत्मगन्तोचे॥ ९८॥ नयादेहा ह्यणते भिदी॥ हे सपांयिनी जीव
गोदी॥ वारियावाळुवेगावी॥ केही आहो॥ ९९॥ आगि आणिका पुसा॥ दोरासुखावाकेसा॥ रुउतासादा आकाशा॥ दुख्येयेसो॥ १००॥
एकभियधुर्वेकडे॥ एकंतपथिये मरूड॥ तिथमदीचि नगडे॥ सवेधहा॥ १०१॥ उजवडा आणि भाशोरया॥ जो पाइ मृताउभया॥ तो चिंगां आत्म
या॥ देहाजाणा॥ १०२॥ रात्रि आणि दिवसा॥ कनका आणिका पुसा॥ अशाडकां जेसा॥ ते सांचियासी॥ १०३॥ देहंत वशांचोचं जोडे॥ हे कर्मचिगुणां
गुंथले॥ भंवतसे चकींरुदले॥ जन्ममृत्यूचा॥ १०४॥ हे काळानकाचं कुडो॥ यातनी निगियाचो उडो॥ मासो पारवणखर्दो॥ तंव हे मर॥ १०५॥ हे
पाठ० ओ० २१ हाजी अथना वांचुनि ओ० २३ अवधानाची ओ० २४ सुख ओ० २५ सावाकार ओ० २६ १०० पिसा पीणागंभी ओ० ३६ हा

विप्राये अर्गातपदे ॥ परिमस्र ॥ कृमिगडे ॥ जाहोमंशवानावरिपदे ॥ तरेतोविष्ठा ॥ ६ ॥ याचुके दोहोकाजा ॥ तरे होय हयमेचापुंजा ॥ हापरिणासक्रीपं
 अजा ॥ कसमलगा ॥ ७ ॥ दयादहाचोहेतया ॥ आण आत्मानोरेसा ॥ पैशुद्गिन्यअपेसा ॥ अनादिपणे ॥ ८ ॥ सकळनानिष्कळ ॥ अभ्रयनाभि
 यशीळ ॥ वृक्षनास्युळ ॥ निरुणपणे ॥ ९ ॥ सासासना निरापास ॥ प्रकाशना अमकाश ॥ अन्वभाव हुवस ॥ अरूपपणे ॥ १० ॥ रिताना मरित
 रहितना मरित ॥ मूर्तना अमूर्त ॥ शून्यपणे ॥ ११ ॥ आनंदना निमनद ॥ ऐकना विविध ॥ मुक्ता बाद्ध ॥ आत्मपणे ॥ १२ ॥ येतुलानते तुला ॥ आ
 दना नरिचिन्मा ॥ बोलताना उगना ॥ अलसपणे ॥ १३ ॥ स्मृत्तिचा हाणोनरचे ॥ सर्वसंहारे नरेचे ॥ आधीनाथी यादोहत्ति ॥ पचलहा ॥ १४ ॥ मेवे
 नाचवे ॥ वाटेना रवेचे ॥ विटेनोवेचे ॥ अच्ययपणे ॥ १५ ॥ गंवरूपपणे ॥ आत्मा ॥ देहो जौहाणली प्रयोत्तमा ॥ तंमठा कोरेव्योमा ॥ नामजेसे ॥ १६
 ॥ तें संतयाचि ये अमुस्यती ॥ हाती जातो दिहाकृती ॥ तोयनासाडी स्मरती ॥ जैसा तैसा ॥ १७ ॥ अहोपात्रे जैसी ॥ येती जाती आकाशी ॥ आत्मसे
 तेसी ॥ देह जाण ॥ १८ ॥ ह्यणी नदये शरीरी ॥ काहे न कुरुवे करी ॥ आयताही व्यापारी ॥ सज्जन होये ॥ १९ ॥ यालागीं स्वरूपे ॥ उणा पुरानये
 हे असो नोनिपे ॥ देही देहा ॥ २० ॥ श्लो ॥ युथा रमवगत सोहय्या दाकाशे नोनिपयते ॥ भवजावस्थितो देह तथात्मानो पलियते ॥ २१ ॥ दी ॥ अगा
 आकाश जेनाही ॥ हेमो रये चिक्वणे ठायी ॥ योर कश्चि येनिक ही ॥ गौदि जेना जेसे ॥ २२ ॥ तें सासर्वत्र सर्व देहो ॥ आत्मा असतचि असेणाही
 पीसंगदोपे कुही ॥ लिप्त नोहे ॥ २३ ॥ पुढत पुढो गये ॥ हेचि न्महाण निरुने ॥ जे जाणावे ते सज्जते ॥ दोत्रा वहीना ॥ २४ ॥ संसर्गे चि छिजलोहे ॥ प
 रिजो ह भामक नोहे ॥ सिंघे सैत्रजा आहा ॥ तनुना पाडा ॥ २५ ॥ दीपकाची अर्ची ॥ गहादी नाहये रची ॥ परिवेगळी कबोडोची ॥ दोपा आणि घरा २५
 पेका साचा पोटी ॥ वज्र अस पोरी करीटी ॥ काष्ठ नोहे याहरी ॥ पाहिजे जा ॥ २६ ॥ अपाडन सा आसाळा ॥ रवि आणि मृगजळा ॥ ते साचि आत्मा
 हो जेका ॥ देखावोये ॥ २७ ॥ श्लो ॥ युथा भक्त प्रपत्ये कः कलं भक्तो किं भक्त रवि ॥ दोत्रां दोत्रोच तथा कलं भक्त प्रपत्ये ॥ २८ ॥ दी ॥ हे अधर्मे अ
 पाठ ॥ ओ १० ॥ आमास ॥ ओ ११ ॥ एकला साकळा ॥ ओ १२ ॥ दाता ॥ ओ १३ ॥ जे ॥ ओ १४ ॥ जे ॥ ओ १५ ॥ जे ॥ ओ १६ ॥ जे ॥ ओ १७ ॥ हा देवसी जेरी

सिंगक ॥ गगनोभिर्जेषा भक्त ॥ मकटवर्नोक्त ॥ नवेनोक्ते ॥ १८ ॥ गयस्त्रैत्रज्ञतो गेसा ॥ मन्त्रशास्त्रोक्तो गेसा ॥ यावत्तुते हेन पुसा ॥ शक्तो गेसा ॥ १९ ॥ प्रो-
 क्षत्रक्षेत्रज्ञयोरव्यंतरज्ञानचक्षुषा ॥ स्फुटमस्मृतिमोक्षचये विदुर्गोतिनगर ॥ ३३ ॥ इति श्रीमद्भगवद्गीतासु भाष्ये त्रयोविंशोऽध्यायः ॥ ३४ ॥
 कृष्णार्जुनसंवादे क्षेत्रक्षेत्रज्ञयोगो नाम चतुर्थोऽध्यायः ॥ १३ ॥ टीका शब्दमलसारज्ञा ॥ भेदवर्णनोच्यमज्ञा ॥ ज्ञेश्वरसंज्ञा ॥ अथादरेवे ३०
 इत्यदोहोचि अंतर ॥ तेन गयानुर ॥ ज्ञानियोचि द्वार ॥ आराधित ॥ ३१ ॥ याचिन्मार्गोत्पत्ति ॥ जोतिनो गीतमपत्ति ॥ शास्त्राचिदुत्पत्ति ॥ परिधि
 तीर्थरी ॥ ३२ ॥ योगाचिया आकाशाः ॥ वक्ष्ये जेयवदाधिवसा ॥ याचियाचि आशा ॥ मुरुयाभिगा ॥ ३३ ॥ शर्गरादिमयस्य ॥ साधिनार्तत्तुणव
 न ॥ जीवैर्यतचित्तोत ॥ वाहणाधर ॥ ३४ ॥ गेसाभियापर ॥ ज्ञानाभियाभरावर ॥ कुरुनिद्या अंतर ॥ निरुतेहोती ॥ ३५ ॥ मगक्षेत्रक्षेत्रज्ञाचि ॥ जे
 अंतरदेरवर्तसाचि ॥ ज्ञाने उन्नेरवर्तयाचि ॥ बोवावृ आहो ॥ ३६ ॥ आणिमहासत्ता दक् ॥ मयदन्तो अनको ॥ यमगर्न सैर्न दक् ॥ मक्षतिजेहे ॥
 ॥ ३७ ॥ जेश्वरकनिकान्याये ॥ नलगानिलगली आह ॥ हे गेसे आहोतसहोये ॥ या उव जया ॥ ३८ ॥ जेसाचिमाकानमाका ॥ गेसाचिदेगिजेजेछा
 सपबुद्धिदवाका ॥ उरिवहो दुर्ना ॥ ३९ ॥ काशान्तिनशक्त ॥ हेसाचहोयेमर्तोत ॥ रूपयाचिप्रार्तो ॥ जा उनीया ॥ ४० ॥ तेसाविगरेवे गेरेपणे ॥ म
 हुतो जे अतः करणे ॥ देरवर्तोनेमीत्यणे ॥ ब्रह्महोती ॥ ४१ ॥ जे आकाशाहो नवाड ॥ जे अभ्यक्तोपल्लो कटाजि मेरुजिया ॥ म्रपाजपाड ॥ मृतेमंदो ॥ ४२ ॥
 आकारजेश्वर ॥ जीवल जेयोक्ते ॥ हेन जेयमुरे ॥ अद्वये जे ॥ ४३ ॥ तेपरमतवण्या ॥ होतोतसर्वया ॥ जे आत्मानात्मव्यवस्था ॥ गजहंस ४४
 ऐसाहाजी आयवा ॥ श्रीकृष्णतयापडवा ॥ उगाणादिधनजोवा ॥ जोवाचिया ॥ ४५ ॥ मयकलशीचि यरी ॥ रत्निजे जयापरी ॥ आपणपेतया-
 श्रीहरि ॥ दिधेलैतेसे ॥ ४६ ॥ आणिकोणादेतकोण ॥ तोनरेतमानारायण ॥ वरी अर्जुनांत्योद्वृष्या ॥ हामीहोणे ॥ ४७ ॥ परि असेनेनाथिने ॥ न
 पुसताकोबोसिछे ॥ किंवहुनोदिधेने ॥ सर्वसदेवे ॥ ४८ ॥ कोनोपार्थजीमनी ॥ अक्षणीतुमनमनी ॥ अधिकधिक उताहो ॥ नादवीनअसे ॥ ४९ ॥ -
 पाठ ॥ ओ ॥ २९ ॥ पौते ॥ ओ ॥ ३० ॥ वाउके ॥ ओ ॥ ४२ ॥ अवयड ॥ छ

३

३

३

३

छ

स्नेहाचिन्तामरावरं ॥ आनुयित्वाहापयेयोगी ॥ नाडुअजुना अंतरीं ॥ परिस्मृतांतेर्त्सं ॥ ५७ ॥ तेयस्मरारणउदारे ॥ रसज्ञाअणिजेवणारं ॥ भिळ्ठतीसगाअवतसे
 हातेजिमा ॥ ५८ ॥ तेसेजेहागेभेदेवा ॥ तथाअवधानाचिचालवन्वा ॥ पाहाताव्याख्यानचदुत्तंथावा ॥ जोगुणवरी ॥ ५९ ॥ सुवायेमेयसांवेरे ॥ जैसाचंदे-
 भिंयुंमरे ॥ तेसाभातलारम आदरे ॥ ओनयात्तेनी ॥ ६० ॥ आता आनंदमयआयवे ॥ विभवकीजेनदेवे ॥ तेरायेपरिसावे ॥ संजयेह्योगो ॥ ६१ ॥ एवंजेम
 हाप्रारती ॥ श्रीव्यासेअपानमनी ॥ सीष्पपवंसरती ॥ ह्यणिनच्छाया ॥ ६२ ॥ तोआझुष्णाजुनमवाद ॥ नागर्गबोलेविशद ॥ सांगोनिदाउपबध ॥
 बोवियेचा ॥ ६३ ॥ नुमराचिशानिकथा ॥ आणिलेनकरवाक्यथा ॥ जेंदंगाराचापाया ॥ पायवेदी ॥ ६४ ॥ दाउदेह्लाळदेशीनवी ॥ जैसाहिन्येवो-
 जवी ॥ अमृताननुकीनेवी ॥ गोउसपणो ॥ ६५ ॥ बोलेवन्हाअंतेतोमगुणो ॥ चंद्राभियेउमाणो ॥ रसरंगासुलवणे ॥ नादलोपी ॥ ६६ ॥ रेचसचिचाहोम
 ना ॥ आणिसालिकाचापाझा ॥ अवगासेवंभयना ॥ समार्थीजोदे ॥ ६७ ॥ तेसावागिलासीवस्तार ॥ गीतार्थीओविषवंसर ॥ आनंदाचाअवार ॥ मा-
 डुंजगा ॥ ६८ ॥ फिसेविवेकाचिवाणी ॥ होकांमोमनाजिणो ॥ देगवोआचदेनेरवाणी ॥ ब्रह्मविद्येनी ॥ ६९ ॥ दिसोपरतलडोळां ॥ पाहोसरराचोसोहळा ॥
 रिपोमहाबोधसकाळा ॥ मोजविषय ॥ ७० ॥ होनप्रजनुआना आयवे ॥ गेमेवोनिजेनवरवें ॥ जेअधिभिक्षाअसेपरमदेवें ॥ ओनिद्विप्तिमी ॥ ७१ ॥ ह्य-
 णोनिअस्तरंसेदी ॥ उपमाओकुकोदाकोदे ॥ झानेदुनर्मतपदे ॥ यंथार्योमी ॥ ७२ ॥ हाभाबोवरीमानें ॥ पुस्तचासारस्वते ॥ देहेअसेओमने ॥
 ओगुरुराय ॥ ७३ ॥ नेणेजोडपासाये ॥ मोवोनेनेनेसाणये ॥ आणितुमचियेसमेलाहे ॥ गीनाह्योगो ॥ ७४ ॥ वरिवुहांसंतांचेपये ॥ आजिनीत्याय
 लेआहो ॥ ह्यणोजिनेहो ॥ अतकसाहो ॥ ७५ ॥ ममुकाशरीरेमुके ॥ नुपजेहेकोनिते ॥ नाहोउणीसासुदिके ॥ लस्पीयेमी ॥ ७६ ॥ तेसागुह्यांसांवा
 सी ॥ अज्ञानचोगोठीकार्य ॥ यालागीनवरसी ॥ वरुयेमी ॥ ७७ ॥ किंबहुनाआनादेवा ॥ अवसरसजदेयावा ॥ ज्ञानदेवह्युणेवरवा ॥ सांगेन-
 यय ॥ ७८ ॥ इतिआसावार्थदार्णिकयाज्ञानदेवविचिन्तायात्रयेतशी ॥ ७९ ॥ ॥ आंकुष्माण्डपणमस्तु ॥ ॥ म्मलक ३४ अथो ११७०

पाठ ओ. ५५ गीती ओ. ५७ परिक ओ. ५८ जैसी ही ओ. ६० फिरे मनार्ची ओ. ६६ निद्विप्त ओ. ६८ सावाये ओ. ६९ पानलो ओ. ७१ मी. ध

श्रीगणेशायनमः॥ जयजय आचार्यो॥ समस्तस्वरूपो॥ प्रज्ञाप्रभातस्थो॥ सखेटयाजो॥१॥ जयजयसर्वविशंवया॥ सौहृमाव
सहावया॥ नानामोहेलावया॥ समुद्रतल॥२॥ आदकेगा आनंदधु॥ निरंतरकारुण्यसंधु॥ विशदविद्यावधु॥ वल्लभाजो॥३॥ तुज्या
प्रतिपत्सो॥ तयाविश्वहृदाविसी॥ प्रकृतैकरिस्सी॥ आगवंचित॥४॥ किंपुटिलचिह्दचौरिजे॥ हाहृष्टिवंध्याभ्रफुजे॥ परिनवतयाप्रकृ
तुझे॥ जे आपणपंचोर॥५॥ जीवंचित्तुसर्वयया॥ माकोणबोधैकोणमाया॥ गंभियाओपे आपलाययिया॥ नमोतुज॥६॥ जाणोजगी
आपबोले॥ तेनुझियाबोलासरसजाने॥ तुझेजिसमब आने॥ पृथ्वीयेसी॥ आगवंचितदिशक्त॥ उदयकरितोभिजगती॥ तेनुझि
यादीमी॥ ते जेतेजा॥७॥ जेचळवळिजे अभिने॥ तेलीदेकविजीभजबळे॥ नभतुजमाजोखळे॥ नृपथपि॥९॥ किबहुनाभायाअशेष॥
जानजीतुझिभजेळस॥ असोवानेणसायास॥ अतुर्तिमह॥१०॥ वेदवान्निनवचिचांग॥ जंवनरसेतुझेआय॥ भगआत्यांतयासुगा॥ ग्वे
पाती॥११॥ जीएकार्णवाचगई॥ पाहानाच्यमधाचापाडनाही॥ मामहानदोकाई॥ निवडयेती॥१२॥ कोउहृदयनियासास्त॥ चंद्र
जेसासद्योत॥ आह्याअतनुजआत॥ तोपाडअसे॥१३॥ आणिदुजयाथांवेमोडे॥ जेयपरशोवंपरबुडे॥ तोतूमाकोणेतोडे॥ वानावा
सि॥१४॥ यानागीं आतां॥ स्तुतीसांडुभिनिवाता॥ चरणोतिवजेमाथा॥ होचिमोडे॥१५॥ तिरुंजसा आहसितेसिया॥ नमोजोगुरुराया
भजयथोद्यमफळावथा॥ वेकाराहोई॥१६॥ आतांछपाभाडवलसोई॥ प्रशंभाझेमर्तचिपोतई॥ नरैजानपद्यजोई॥ थोरामोने॥१७
भगसीसंभरनेणें॥ संतानेकणसंभणें॥ नेवर्वाभक्तभूणें॥ विवेकाची॥१८॥ जीर्णार्थनिधान॥ काढमाझेमन॥ सूर्यस्नेहाजन॥
आपनेतुं॥१९॥ हेवाकसुष्टोकेवेळ॥ देरवेतुंमाझेबुद्धिचेजेळ॥ तेसाउदयंजोर्जाभिमंळ॥ कारुण्यबिंबे॥२०॥ माझीमज्ञावेलीवे
ल्हाळ॥ काव्येहोयसफळ॥ तोवसंतहोथिस्नेहाळ॥ शिरोमणी॥२१॥ नमयेमहापुर॥ हेभतिंगायथोरें॥ तेसावर्षउदोरें॥ दिवा
पाठ॥ ओ६वंधो॥ १२थेबाब॥ ३२जोगिजेनि॥ ओ॥ १६॥ तुज॥ ओ॥ १७॥ योरावी॥ ७॥

विनी ॥ २२ ॥ अग्राविनेकधामा ॥ नृत्तामसाद्वचदमा ॥ करसजपृणिषा ॥ स्मृतर्विजि ॥ २३ ॥ जो अवलोकि लियामो ॥ उच्यषसागरीं स्मरव
वोसे दलस्फूर्ति ॥ रसवतीचे ॥ २४ ॥ तंव संतोषो निश्चिगुरुराजे ॥ ह्यणितलुं विनिव्याजे ॥ मोरि उलेंद रेग निदुजे ॥ स्तवन पये ॥ २५ ॥ हो
असो आगो वज्रदा ॥ नो जापनाय करुणो मदा ॥ येशंदा विउल्लखा ॥ मंगो नेंद ॥ २६ ॥ हो का जो स्वामी ॥ हे विपाह त होतो म ॥ जे अमु
खें द्यवणा वृद्धी ॥ ग्रंथ सांग ॥ २७ ॥ परिह व्याकृतें ॥ किं हे माझे निजालें ॥ ऐसे ना हो विलें ॥ वासने साजि ॥ २८ ॥ सहजे दुर्वचार्हर ॥ अगो
चितनं अमर ॥ वरी आला पुर ॥ पीवृषा च ॥ २९ ॥ तिरि आतां येण मसादे ॥ विन्यासें व हेंद ॥ मूळ शास्त्र पदे ॥ वास्वानी न ॥ ३० ॥ परि जो -
वां आतुनी कडे ॥ जे सोसे देहा चिजो णिबुद ॥ ना अविणित रिचाडे ॥ वौं दिसे ॥ ३१ ॥ नैसी बोलि साचारी ॥ अवतरे माझे माधुरी ॥ मा -
ले मागु निधरी ॥ गुरु रूपे च ॥ ३२ ॥ तिरि मागात्रयोदशी ॥ अध्यायी गोठी ऐसी ॥ आह्मण अर्जुनं मी ॥ ना वळने ॥ जे सिव क्षेत्र जयोग ॥ हो
इजे येण जगे ॥ आत्मारुण संगे ॥ संसारिया ॥ ३३ ॥ आणि हाचि मळति गतु ॥ स्वरुदः स्वामी हीतु ॥ अथ वा गुणानीतु ॥ केवळ हा ॥ ३४
तिरि के सापं असगा संग ॥ कोण तो स्तव स्तत्र जयोग ॥ स्वरुदः स्वादि सोग ॥ केवितया ॥ ३५ ॥ गुणने के सो कती ॥ बांधती कुवणी रती ॥ ना
नरी गुणातीती ॥ चिदंकाद ॥ ३६ ॥ एवं दया आयवेया ॥ अथास्तरावया ॥ विशेषेथ चोदा विद्या ॥ अध्यायासी ॥ ३७ ॥ तिर तो आना
ऐसा ॥ मस्तुत परि येसा ॥ अभिप्राय विशेषा ॥ वेकुंठि च ॥ ३८ ॥ नो ह्यणेणा अर्जुना ॥ अवधानाचीं सर्व सेना ॥ मेळ अंभ उयाजाना ॥
जो वावें हो ॥ ३९ ॥ आत्मीयाणां तु जवहुनी ॥ दाविने हे उपपत्ति ॥ तिरि आझणी मतीती ॥ कुशो नारि य ॥ ४० ॥ श्री भगवानुवाच
परमयः प्रवक्ष्यामि ज्ञानानामुत्तम ॥ यत्ज्ञात्वा मुनयः सर्वपरां सिद्धिं मत्तो गताः ॥ ४१ ॥ टी ० ह्यणे निगा पुढती ॥ सांगि जे -
नीत पति ॥ परि द्युण ह्यणे अनी ॥ डाहारी लेजे ॥ ४२ ॥ येक वं ज्ञान हे आपुले ॥ परि परे ऐसे निजालें ॥ जे आवडेलो येतलें ॥ भवस्वया
पाठ ॥ ओ २६ ज्ञानार्थ ॥ ओ ३१ वाट ॥ ओ ४२ पै ॥ ओ ४२ प्रतीती ॥ ४३

दिक॥ ४३॥ अगाथाचिकरणे॥ हे उतमसर्वापरासी ह्यणे॥ जेवढोहंतुण॥ येरंजाने॥ ४४॥ जियेंभनस्वर्गांतं ज्ञापती॥ यागचिंवांग
 ह्यणती॥ पारवोपुढे आर्थ॥ भेदीजया॥ ४५॥ तियेआयर्वाचिजाने॥ केन्दीयेणेंस्मने॥ जेशावातोवीपगने॥ गिळजतं भर्ता
 ॥ ४६॥ कांउदितेरस्मिराजे॥ नोपिलेचिंदादितेजे॥ नानाप्रळयावुमाजे॥ नदीनद॥ ४७॥ तेंसंयेणपाहलया॥ नानजात जायलया
 ह्यणेनियाधनजया॥ उत्तमहे॥ ४८॥ अनादिजेमुक्ता॥ आपलीअसेपुंइसता॥ तोमोहाहायेता॥ होयजेणे॥ ४९॥ जयाचिया
 प्रतीती॥ विचारवारीसमस्ती॥ नेदीजेचोसंस्ती॥ मायाउधउ॥ ५०॥ मनंमनथान्दुनियाभगा॥ विअंतिजालीयाभगा॥ नेदेहोदेहा
 जोगे॥ होतीचिना॥ ५१॥ मगतेतहाचिवेळ॥ बोलादुनिगेकेचिवेळ॥ सववुकाकाटाळा॥ मासजाले॥ ५२॥ अन्तो० इदंज्ञानमुपाय
 न्यमसाधम्यमागताः॥ सर्गेपिनोपजायतेमनयेनव्ययति॥ २॥ टी० जेसाअियाभित्यता॥ तेंपोनिन्यतेपुंइसता॥ परिपृणपृणता
 मासियाचि॥ ५३॥ मोजेसाअननानंद॥ जेसाचिसत्यसंधं॥ तेसेचितेप्रेद॥ उरेचिना॥ ५४॥ जेमजिवेदुंजसे॥ तेतंचिजालेतें
 से॥ यदभंगोद्यकांशे॥ आकाशजेवी॥ ५५॥ नानारिदीपमुळकां॥ दीपशिखाअनेकुं॥ भिनलियाअबलोवो॥ होयजेये॥ ५६॥ अजं
 मतयापरी॥ सरनीहैवाचोवारी॥ नांदोनामार्थणकां॥ मातुंवीणे॥ ५७॥ येणोचिपेकारणे॥ जेपहिलेंसुखचिंजुंणे॥ तेंहंतयाहोणे
 पेडेचिना॥ ५८॥ सुखाचियेसर्वदा॥ जयांदेहाचिनाहंवार्य॥ तेकेचेप्रळयावधी॥ निमतीलया॥ ह्यणोनिजन्मसया॥ भर्तानिधनजया
 मोजालेज्ञानादया॥ अनुसरोना॥ ६०॥ ऐसोजानाचिवादी॥ वागिलेदेनंआवडी॥ तेविचिपार्थाहोगोनी॥ लावावया॥ ६१॥ तंवतयाजा
 नेआन॥ सर्वांगोनियालेकान॥ सपाईअवधान॥ आतलाणा॥ ६२॥ आतोदेवाचियागेसे॥ जाकळीजतअसेवोरसे॥ ह्यणोनिनिरूप
 णआकाशे॥ वेदाळेना॥ ६३॥ मगह्यणेगामजाकांना॥ उजबलीआजिवकृतता॥ जेबोलायेवदाओता॥ जोडल्यसी॥ ६४॥ तीराए
 पाठः ओ० ५४ शब्द, ७

वसीअमेकीं॥गोविंजदेहपाशकीं॥विगुणीलुन्वर्ग॥सुरणेपर॥६६॥पस्त्रयेणव्याजे॥यान्नागीहंबोलिजे॥जेमत्सगबीजे॥भूतोपिके६७
 भूतो॥समयोनिर्महद्दस्यतस्मिन्नामंदयाव्यहं॥संभनःसर्वभूतानांततोभवतिभारता॥१॥टी०येरुवतरीमहद्दस्य॥यान्नागीहोत्तंसे
 नाम॥जेमहदादिबिआस॥शाळिकाहे॥६८॥विकाराबहुवसयोरि॥अर्जुनाहोचिहरी॥होणीमभवयारी॥महद्दस्य॥६९॥अच्युतवा
 दसती॥अव्यक्तएसावदती॥सोरव्याचियायंतती॥प्रभूतोहिचि॥७०॥वेदांतदयंतमाया॥ऐसेह्यणिजेमाज्ञयाया॥असोकितीबोलेवा-
 या॥अज्ञानहे॥७१॥आपन्नाभापणपया॥विसरजोयनजया॥तोचरूपइया॥अज्ञानासा॥७२॥आणिकुहोयेकअसे॥जेविचारवे
 गळतीहसे॥आयविको॥७३॥हालबिलियाजाये॥निच्युर्दांतरीहोये॥दुधेजैसेसाया॥दुधावीते॥७४॥ऐजागरनाम्सना॥नास्वरू
 पभवस्थान॥नेसपुत्रीकांयन॥जैसेहोये॥७५॥ज्ञानवियतावायुते॥वास्त्रेआकाशरिते॥तयाऐसेभरुते॥अज्ञानगा॥७६॥पेल
 स्वाबकापुरप॥ऐसाभिच्ययनाहोएक॥परकायनेणोआलोक॥दिस्मनअसे॥७७॥तेबिंबस्तुजैसेअसे॥तैसेकीरनिदसे॥परिका
 हीअनारिसे॥देरिवजेना॥७८॥नारतानातेजा॥तंसधिजिविसांजा॥तेवैवरुद्धनामिजा॥ज्ञानआयी॥७९॥ऐसेकोण्हीएकीदशा॥निये
 वाजअज्ञानएसा॥तयाउजिनियामकाशा॥क्षेत्रज्ञनाम॥८०॥अज्ञानयोरियेआणिजे॥आपणपेंतरीनेणिजे॥तेरूपजाणिजे॥क्षेत्र-
 ज्ञाचे॥८१॥हाचिउभययोग॥बुद्धेबापाचागा॥सनेचनेसर्ग॥स्वभावहा॥८२॥आताअज्ञानासारखें॥वस्तुआपणपाचिदेखें॥परि
 रूपअनेके॥नेणोकोणें॥८३॥जैसाएकभ्रमना॥हाणजोरमीरावोभाला॥कामुच्छित्तनेगला॥स्वर्गलोका॥८४॥तोबलचकालयादिवा
 भगेदेखणेजेंजेउठि॥तयानाम्नासही॥मीचियेंपया॥८५॥जैसेकांस्वभमोहा॥नोएकीदेरिवजेबहुवा॥तोचितोपाडआत्मया॥स्व
 रणेनीणअसे॥८६॥होनिभिन्नांनि॥मयेयउपलऊपुढती॥परिभूतती॥याचियेंती॥८७॥तरयासिहेगहिणा॥अनादितरुणा॥अभि-
 पाव॥ओ॥७५॥सिद्धती॥ओ॥८६॥देख॥

वाच्यगुणी॥ अविद्योहे ॥ ८८ ॥ दयनाहीनरूप ॥ ताणेंहें अतिउमप ॥ होनि दत्तासमीप ॥ चेतोदुरी ॥ ८९ ॥ पैसाज्ञेनिचिआंगे ॥ पडेल्याह
 जोगे ॥ आणि रातासमंगे ॥ गुविणी होये ॥ ९० ॥ महद्गुहा उदरी ॥ मरुती ओठे वंकारी ॥ गर्भचिकरी ॥ येने वेडी ॥ ९१ ॥ उभयसंगे
 पहिले ॥ बुद्धित्वमसवळे ॥ बुद्धित्वे उभारले ॥ होय मना ॥ ९२ ॥ तरुणी समानाची ॥ अहंकार तत्त्वचो ॥ तेणे महासूताची ॥
 अभिव्यक्ति होये ॥ ९३ ॥ आणि विषय दयागोसी ॥ स्वभावेंत वभूतासी ॥ ह्यो भिय तो सरसी ॥ ति येही रूपा ॥ ९४ ॥ जोळी निव
 कारसो ॥ पाठीं त्रिगुणांचें उभे ॥ ते ज्या वासनागर्भ ॥ तये नाव ॥ ९५ ॥ रूपाचा आवाका ॥ जैसी बाज कणिका ॥ जे विबोधे उदका
 प्रेतखेवो ॥ ९६ ॥ तेसी साज्ञेन संगे ॥ अविद्यानाजगे ॥ आरये वानगो ॥ आणियाचि ॥ ९७ ॥ मग गर्भगोळातया ॥ कैसे रूप ते ये -
 आया ॥ ते परि ये संख्या ॥ सजनाचिया ॥ ९८ ॥ पैमणि जसे दज ॥ उदज जारज ॥ उमवती सहज ॥ अवयव हे ॥ ९९ ॥ व्योमवा-
 युवशे ॥ वाटले निगमरसे ॥ मणिज उभे ॥ अवयव तो ॥ १०० ॥ पोटीं स्तनित मरजे ॥ आगळी कानोय तेजे ॥ उठितां निपजे ॥ स्वेदज
 गा ॥ १०१ ॥ आपसखी उल्लंघे ॥ आणि तमोसाचे निहंछे ॥ स्थावर उभे ॥ उद्भूत हा ॥ १०२ ॥ पांचा पाच हो वरजो ॥ होतो मनबुद्ध्यादिसा -
 जि ॥ हे हे तुज रायुजी ॥ ऐसे जाण ॥ १०३ ॥ ऐसे चारि हे सरळ ॥ सरचरण तळ ॥ महाप्रसूति स्थूळ ॥ तं चि शिर ॥ १०४ ॥ प्रवृत्ती पेलले पाद
 निहृती ते पातिनिद ॥ सरयेनी आंगे आव ॥ उर्ध्वार्च ॥ १०५ ॥ कव उल्लासनास्त्रंग ॥ मुन्युन्नाक्रम्य भाग ॥ अयो देशचारा ॥ नितं वतो
 ॥ १०६ ॥ ऐसे लंकूर एक ॥ प्रसवली हे देख ॥ जयाचे निहंजो क ॥ बाळ संग ॥ १०७ ॥ चोऱ्यां भिलस्योनि ॥ तिये काजो परासां दुणि ॥
 वाटे प्रतिदनी ॥ वाळव हे ॥ १०८ ॥ नाना देह अवयवी ॥ नामाची लेणी जेववी ॥ माहस्त्ये वाटवी ॥ नित्यनव ॥ १०९ ॥ सृष्टी वेगळे वेग
 वीसा ॥ तियाकराची आगाळिया ॥ भिन्नाभिमानासूदलिया ॥ मुदिताये ॥ ११० ॥ हे ये कोल ते चराचर ॥ अविचारित सुंदर ॥ म
 पाठ ॥ ओ १०९ ॥ सारेले ॥ ओ १०५ ॥ हे उभे ॥ ओ १०६ ॥ मध्य अर्थ भाग ॥ १०७ ॥

सर्वोपशोभ ॥ शोरावली ॥ ११॥ ऐं ब्रह्मायतः काळ ॥ विष्णुनेमि आहुवळ ॥ महाशिवसायं काळ ॥ बाळायया ॥ १२॥ महाप्रकयसेजे ॥ रेवे
कोनिनेवांनिजे ॥ विषमज्ञानेउमजे ॥ कल्पोदयी ॥ १३॥ अर्जुनादयापर ॥ मिथ्यादृष्टिचार्यो ॥ दुगालुष्टोचाकरी ॥ चोजणउले
॥ १४॥ सकल्यजयादृष्ट ॥ अहंकारतोविनट ॥ ऐसियाहोयसेवट ॥ ज्ञानेदया ॥ १५॥ आतांअसोहेबहुबोली ॥ ऐसोविश्वमायाब्या
ली ॥ तेयसांगजाली ॥ माझीसन्ना ॥ १६॥ म्हे ० सर्वयोनिपुकोतेयमृत्यःसंभवतियाः ॥ नासां ब्रह्महृद्योनिरहंबोजमदःपिता
॥ ४॥ टी ० याकारणेमीपिता ॥ महद्रहहेमाना ॥ अपत्यपदुस्रता ॥ जगडबर ॥ १७॥ आतांशरीरेबहुते ॥ देवोनिनमेदेहोचिते
जेमनबुद्ध्यादिस्ते ॥ ऐकेचियेये ॥ १८॥ हांगाएकचिदेही ॥ कायअनारिसेअवयवनासो ॥ नेविंविचित्रविश्वपाहो ॥ एकचिहे ॥ १९॥ ते
उचनीचाअहाळिया ॥ विषमावेगळालिया ॥ येकानिजेविजालिया ॥ बाजाचिया ॥ २०॥ आणिसंबधतोहोएसा ॥ स्तुतिकेवैतनेकजे
सा ॥ कोपटत्वकापुसा ॥ नात्रहोय ॥ २१॥ नाताकल्लुगुपरपरा ॥ संततोज्ञेसीसागरा ॥ आत्माआणिचराचरा ॥ संबधतेसा ॥ २२॥ ह्य
णोनिवहीआणिज्याळ ॥ दाहीवर्त्तनिकेवळ ॥ तेविमोंगासकळ ॥ संबधवाव ॥ २३॥ जालेनिजगेमीझाके ॥ तरजगलेकोणाफ
के ॥ किछेवरीमाणिके ॥ लोपिजेकाडे ॥ २४॥ अळकारतेआने ॥ तगिसेनेपणकाडेगेले ॥ विकसळभाकले ॥ कमळत्वामुके ॥ २५॥ -
सागपाधनजया ॥ अवयवीअवयविया ॥ आछादिजेकींतया ॥ तेचिरूप ॥ २६॥ विरूढलियाजोधका ॥ कणिसाचानिवळा ॥ वेच-
लाकींआगळा ॥ दिसतसे ॥ २७॥ ह्यणेनिजगपरेते ॥ सारूनियाहेजमाते ॥ तेसाहोउरिते ॥ आधेवैमीची ॥ २८॥ हातूसाचाका-
रा ॥ निश्चयाचारवरा ॥ गाठीनाधवीरा ॥ जीवाचिया ॥ २९॥ आतांमियामीदोस्वविला ॥ शरीरेवेगळाला ॥ गुणोमीचिबाधला ॥ ए-
साआवडे ॥ ३०॥ जेसेस्वर्मांआपणा ॥ उवूनियाआत्मापरण ॥ भोगीजेगाजाण ॥ कीपधजा ॥ ३१॥ कोकवळानेजेळे ॥ मकाईसुनि
पाद ॥ ओ ॥ ११३ आर्त्तनिदिजे ॥ ओ ॥ ११५ निक्कट ॥ पा ॥ ओ ॥ १२१ यडलाकुंम ॥ ओ ॥ १३० मजदाविला ॥

४

४

४

४

४

४

४

४

पिबच्छे ॥ देवर्षीर्नां हो कच्छे ॥ तयांसीर्निचि ॥ ३३ ॥ नानासूर्यमकशो ॥ मकदोतं माश्रमशो ॥ नोलोपलाहं होदिसे ॥ सूर्यचिक्को ॥ ३३ ॥ ऐं आप-
 णोपे निजान्भिया ॥ छायागा आपुलिया ॥ बिहोर्भिवर्हानिया ॥ आन आह ॥ ३४ ॥ तैसीं दयनानादेहं ॥ दाएनिमीनानाहोये ॥ तेथरेसाजोबं-
 धआहो ॥ मोहोहीदेखे ॥ ३५ ॥ विंधचिक्कोनबंधिजे ॥ हं ज्ञाणणेसजमाझे ॥ नेणणेनिउपजे ॥ आपलेनि ॥ ३६ ॥ तरिकाणगुणेंकेसा ॥ म-
 जचिमीबंधंगसा ॥ आवडेनें परिपसा ॥ अर्जुनदेवा ॥ ३७ ॥ गुणनेक्रितोर्कायम ॥ कायिययारूपनाम ॥ केजलेहेनर्म ॥ अवधारिणा ॥ ३८
 श्लो ॥ सत्वरजस्समर्शनगुणाः सकृन्ति संप्रवाः ॥ निबन्धति सहावाहो देहे हेहि नमव्यय ॥ ५ ॥ टी ० तरिसत्वरजतम ॥ त्रिधांमि-
 हं नाम ॥ आपि सकृत्तिजन्म ॥ मृमिकादया ॥ ३९ ॥ येथसत्त्वतउत्तम ॥ रजतेमध्यम ॥ निहोमाजितम ॥ साविथाधारे ॥ ४० ॥ हेण्केचि-
 वृत्तीचारार्थी ॥ त्रिगुणत्व आवेढेणाही ॥ वयसात्रयदेही ॥ येकीजेविं ॥ ४१ ॥ कांमिनिस्विक्रीडे ॥ जवजंवतूकवादे ॥ तंवतंवसोनेही
 नपडे ॥ पांचिकाफूसी ॥ ४२ ॥ पेंसावधपणजेसे ॥ वाहाविनें आळसे ॥ सूर्युर्भवेसे ॥ घणावोनि ॥ ४३ ॥ तैसें अज्ञानांगिकारे ॥ निगाली
 वृत्तिविरवुरे ॥ तें सत्वरजहारें ॥ नमहीहोये ॥ ४४ ॥ अर्जुनागाजाण ॥ दयानामगुण ॥ आतांदारवडंखुण ॥ वांधतीते ॥ ४५ ॥ तारिसे
 ब्रजदशे ॥ आत्मा मोदकापेसे ॥ हेदेहमीपेसे ॥ मुहूर्तकरा ॥ ४६ ॥ अजन्ममरणाती ॥ देहधर्मीसिमस्ती ॥ ममत्वाचीस्मृती ॥ येनाजव ॥ ४७ ॥ जे
 सीमीनाजातोडी ॥ पडेनाजवउडी ॥ तंवगळ आसूडी ॥ जळपारधी ॥ ४८ ॥ म्मो ० तन्मत्त्वमिमं नृत्वात्वाकाशकृमनामयम् ॥ सूरवस-
 गेनवम्यमिज्ञानसंगेनचानय ॥ ६ ॥ टी ० तेंविंस्वत्त्वुद्येके ॥ सूरवज्ञानाचियापाशिके ॥ वोदिजतीप्रगसूडेके ॥ भुगेजसा ॥ ४९
 मगज्ञानेचउफडी ॥ जाणिविचिरवुरवोडी ॥ स्वयंसूरवहेयाडी ॥ हातींचिंगा ॥ ५० ॥ तेव्हाविद्यामानेंतोपेथलाभमावेहीरखे ॥ सीसंजु
 एहेहीदेखे ॥ म्माथोलागे ॥ ५१ ॥ ह्यणसाग्यनामाझे ॥ भाजिसूरवियेनाहोदुजे ॥ विकाराष्टकेफुजे ॥ सालिकाचिनि ॥ ५२ ॥ आ-
 पाठ ॥ ओ ३५ ॥ हींदाउं ॥ ओ ४५ ॥ दाउं ॥ ओ ४९ ॥ रुउंके ॥

गिर्येणैहीनसरे ॥ लांकणलगदुसरे ॥ जेविहनेचेसरे ॥ मृतआंणीं ॥ ५३ ॥ आपणचिज्ञानस्वरूपआहे ॥ तेंगेलेंहेदुःखनवाहे ॥ किंविषय
 ज्ञानहोये ॥ गगनायेवढा ॥ ५४ ॥ रावोजैसास्वमी ॥ रंकपणेरियथानि ॥ तोदोटाणामिमांनि ॥ इंद्रनाभि ॥ ५५ ॥ तेंसंगादेहार्तता ॥ जा-
 न्यादेहवता ॥ होल्येपेइसता ॥ बान्धजांने ॥ ५६ ॥ प्रवृत्तिशस्त्रबुद्धे ॥ यज्ञविद्याउमजे ॥ किंबहुगुरुझे ॥ स्वर्गवरी ॥ ५७ ॥ आणिहम
 णेआर्जोआन ॥ मोवांचुनिनाहोसज्ञान ॥ चातुर्थद्रागगना ॥ चिन्माझे ॥ ५८ ॥ ऐसेसत्त्वस्वज्ञाना ॥ जीवाभिलाडनिकाना ॥ वेत्युंचीक
 शनाची ॥ पांगुळाचिया ॥ ५९ ॥ आताहाचिशरीरी ॥ रज्जिज्यापरी ॥ वीधियेतेअवधारी ॥ सांगिजेला ॥ ६० ॥ श्लो ॥ रजोगयात्मकविदु
 दध्यासगसमुद्रवस ॥ तन्निवर्त्तकोतेयकर्मसंगेनदेहिन ॥ ६१ ॥ ही ॥ हेरजयाचिकारण ॥ जीवांतंरजउजाणें ॥ हेआमनास्वाचे
 तरुणें ॥ सदाचिगा ॥ ६२ ॥ हेजीवोमोहकेंरिंगे ॥ आणिकामाचामोहनागे ॥ मगनारयावळये ॥ तृष्णेचिया ॥ ६३ ॥ मृतआबुरवुरि-
 आगियाळे ॥ वज्राभिचेंसादुकले ॥ आताबहुयेकुले ॥ ओहेतेय ॥ ६४ ॥ तैरीखवळेचाड ॥ होयहुःखासकटगोड ॥ इंद्रीहसा
 कूड ॥ गमोलागे ॥ ६५ ॥ तैसीतृष्णावादिनिभ्या ॥ मेरुहीहाताभिल्या ॥ तद्दीहणेंयेखादिया ॥ सारुणावळये ॥ ६५ ॥ जी
 विनाचीकुरोडी ॥ बोवाळलागेवडो ॥ मानिल्लणाचियेजोडी ॥ ६६ ॥ आजिअसनेविचिजेला ॥ परिपाहेपांकायकीजे
 ले ॥ ऐसापांगोवडील ॥ व्युत्सायमाडी ॥ ६७ ॥ ह्याणेंस्वगाहनजावें ॥ तिरकायेथेखावें ॥ इयालागीथोदे ॥ यागकरूं ॥ ६८ ॥ व्रता
 पाठवते ॥ आचरेइसापुते ॥ काम्यवांचुनिहाते ॥ शिवणेनाही ॥ ६९ ॥ पेंघांधांनीचावारा ॥ विसाचोनेणेवीरा ॥ तैसानह्यणव्यापा
 रा ॥ रात्रिदिवस ॥ ७० ॥ कायचचळमासा ॥ कामिनीकूटाक्षजेसा ॥ लवलाहोतेसा ॥ विजुहीनाहो ॥ ७१ ॥ तेतुलेनिगावेगे ॥ स्वर्ग-
 संसारपोंगे ॥ आणिमाजिरंगे ॥ क्रियाचिये ॥ ७२ ॥ ऐसादेहीदेहावेगळा ॥ तैतृष्णेचियासाखळा ॥ स्वदादोपवाहेगळो ॥ व्यावारा-
 पाठ ॥ ओ ॥ ५५ ॥ गोमर्दामणक ॥ ओ ॥ ७३ ॥ लंदना ॥ ओ ७३ ॥ आगळा ॥

चा ॥ ७३ ॥ हे वज्रगुणचिदारुण ॥ देहादि ह्यासीवधन ॥ परिस आतो विदाण ॥ तमाचेंते ॥ ७४ ॥ अमुं तमस्तज्ञान जं विदु मोहन सर्व हो हे
 ना ॥ अमादान्स्थनिद्राभिस्तन्निबभ्रमि मारुत ॥ ८ ॥ टी ० व्यवहाराचो हो उळे ॥ मंद जेणे पडळे ॥ मोहारात्रीचे काळे ॥ महं दुर्जेसे ७५
 अज्ञानाचें जियाळे ॥ तया येकाला गेले ॥ जेणे विश्व भुलले ॥ नाचत असे ॥ ७६ ॥ अविषेक महा मंत्र ॥ जें मोक्ष मद्याचें पात्र ॥ हे असो
 मोहनारु ॥ जीवां मिजें ॥ ७७ ॥ पाथीने गानम ॥ रचुनो संवसे ॥ चोखुरो दिहात्म ॥ मानीयाते ॥ ७८ ॥ हे येक चिकार शरीर ॥ माजोला
 गेवराचरी ॥ आणित थुसुरी ॥ गार्हनाही ॥ ७९ ॥ सर्वे द्रिया जाद्व ॥ मनामाजि मोक्ष ॥ माल्हाती दाह्य ॥ आलस्याचे ॥ ८० ॥ आंगे-
 आंग सोडो मोडी ॥ कार्य जातो अनावडी ॥ नुसर्ता परिवडी ॥ जांभयांचि ॥ ८१ ॥ उघडिया चिदिनि ॥ देव गोंनाहीं किराही ॥ नाळ विना
 चिउदि ॥ बोह्योनि ॥ ८२ ॥ पजिलिये योडी ॥ नेणे कानी सुरडी ॥ तया चिपरि मुरकुडी ॥ उक्त नेणे ॥ ८३ ॥ एव्हा पाताळें जावो ॥ का
 आकाश ही वरीयेवो ॥ पराउ तें हा प्रावो ॥ उपजो नेणें ॥ ८४ ॥ उचिता सुचित आयवें ॥ झां सरताना ठवें जीवें ॥ जेथिचांत थलो छो वे
 एसीमिया ॥ ८५ ॥ उभ्र उभ्र करतें ॥ पडियाय कोळे ॥ पायांचे शिरियाळे ॥ मांडलागे ॥ ८६ ॥ आणी निद्रा विषय चिंगा ॥ जीवो आ-
 स्थित्या ॥ झोपी जाता स्वर्ग ॥ वावो हाणे ॥ ८७ ॥ त्रह्या युहो रजे ॥ मानिजे लिया चिभिर्मजे ॥ हे याचो नहुजे ॥ व्यसन नाही ॥ ८८ ॥ का
 वाते जातो वीर्य ॥ कलहाती डोलांगे ॥ अमृत ही परीनेय ॥ जरी निद्रा आली ॥ ८९ ॥ मोचि आकाश बळे ॥ व्यापार कोणे नेवेळे ॥ नि
 गालंतरी आयळे ॥ रोपें जसे ॥ ९० ॥ वैधवां कुं सरदावे ॥ कोणसी काय बोलावे ॥ देहाकतें कानागवें ॥ हे हीनेने ॥ ९१ ॥ वणव्या भिया
 आयवा ॥ पारवें पुसो नयेयावा ॥ पतगया हावा ॥ या निजु वि ॥ ९२ ॥ ते सावळे येसा हसा ॥ अकरणी चिथिनसा ॥ किब हनां सा ॥
 प्रमादुरुचे ॥ ९३ ॥ एवनि दाल्स्थ ममादी ॥ तम इयात्रि विधि ॥ बोये निरुपाधि ॥ चोरवटोने ॥ ९४ ॥ जेसा वदिक काही मरे ॥ तो दसे-
 पाठ ॥ ओ ७५ जे ओ ८० उका ॥ ओ ९१ के हं ॥ ओ ९४ इही भवर्था ॥

काक्षाकारं ॥ व्यामथदं आवरे ॥ तं यदा कथा ॥ ९५ ॥ गानासरोवर भरलें ॥ तें सें गुणाशी बांधलें ॥ आत्मत्वगेमि ॥ ९६ ॥
 सत्सरोरवे संजय निरजः कर्मणि भारत ॥ ज्ञानमाहृत्य तु तमः प्रसादं संजयत्युत ॥ ९७ ॥ टी० ॥ पैपरि ह्नु नि कप्रवात ॥ जें देही आवो
 पोपित ॥ तें कदी सतम ॥ देह जें वि ॥ ९८ ॥ कां वर्ष आत पजेंसे ॥ जिणो नि सो नि चि दिसे ॥ ते क्का होय हिं वरे से ॥ आकाश हे ॥ ९९ ॥ नाना
 प्रजापती ॥ लोपू नि ये सप्तपुमी ॥ तें दण एक चिन वृत्ती ॥ ने नि होये ॥ १०० ॥ तें सौ रजत प्रहारवी ॥ जें सत्व मातु भिरवी ॥ तें जी वाहर वी-
 क्षणवी ॥ सुखि वृत्तानामी ॥ १०१ ॥ तें सें चित्सत्वरज ॥ लोपू नि तमाचें प्रोज ॥ वळये तें स रुज ॥ प्रयादी होये ॥ १०२ ॥ तया चि गा परि पाठी
 सत्वतमो नें पोठी ॥ याल्नि जे क्का उठी ॥ रजोगुण ॥ २ ॥ ते क्का कमा वांच्च नि कां ही ॥ आन गोम दें ना ही ॥ ऐसें मानि देही ॥ देहराज ३
 त्रिगुण वृद्धि नि रूपण ॥ तें त्मे वी सागी तें नें जाण ॥ आतां सत्वा दृष्टि ह्नु क्षण ॥ सादर परि ये सा ॥ ४ ॥ पै रजतम विजयें ॥ सत्व गा देही
 इये ॥ वादता चि न्हें तियें ॥ ऐसीं होती ॥ ५ ॥ त्मे सव होर पुंदे ह्नु स्मि म प्रकाश उ प्रजा येते ॥ ज्ञान यदा तदा विद्या हि ह्नु सत्व भित्युत ॥ ११ ॥
 लोमः प्रवृत्ति रा रमः कृष्णामशम स्पृहा ॥ रमस्य तानि जायने विहृहे भरत पम ॥ १२ ॥ अमकाशो प्रवृत्ति च प्रमादो मोह एव च ॥ त
 मस्ये तानि जायने विहृहे कुरु न दन ॥ १३ ॥ यदा जत्व मृदु ते तु मलयं योति देह भूत ॥ तदेतम विदो ज्ञान मलाच्य नि पद्यते ॥ १४ ॥ रज
 सि मलयगन्वा क्रमसागेषु जायते ॥ नया प्रथी न रमसि मूदयो नि प्रजा येते ॥ १५ ॥ टी० ॥ जे प्रजा आतुली कुडे ॥ न स मानो बाहेरी वोस
 डे ॥ वसती पद्यं वंदे ॥ हृती जें सी ॥ ६ ॥ सवें द्वि यांच्चा आंगणी ॥ विवेक रुरी रावणी ॥ साच विकर चरणी ॥ होती लेळे ॥ ७ ॥ राज हंसा
 पुंदे ॥ चीचूचे आगर दे ॥ गोडी जे विस्मर दे ॥ क्षीर नाराचे ॥ ८ ॥ ते विंदोषा दोषा विवेकी ॥ इंदिये चि होतो पारसी ॥ नय स बोर पाथि-
 की ॥ वोळगे तें ॥ ९ ॥ नाथि कृणें ने कानि चि वाळी ॥ न पाहू नें दिगी चि गाळी ॥ अवाच्य ने दाळी ॥ जो सचि गा ॥ १० ॥ वाली पुदों जें से ॥ प
 पाठ ॥ ओ ॥ ६ ॥ गुणा सामी ॥ ओ ॥ ३ ॥ पाठी ॥ ओ ॥ १० ॥ नाथिके ॥ ओ ॥ १० ॥ पाहोवे ॥ ७

लोलागकांछवसे ॥ निषिद्धं द्रव्यं तस्य ॥ गयोर्नोहे ॥ ११ ॥ धाराधरकांछ ॥ तस्योदुद्धापयच्छ ॥ शालग्रामार्ति ॥ १२ ॥ अग्रासु
 नेवचादिवसी ॥ चंद्रमसाद्येव आकाशी ॥ जानीद्विनेसी ॥ संनिभस्य ॥ १३ ॥ आगनागकुवेदे ॥ मयनिचोहते ॥ यानसोविदे ॥ विषयां वरी १४
 गवसंत्वषादे ॥ तेहचिद्रूपं ॥ आग्निनिधनहोयते ॥ नेकां विजरी ॥ १५ ॥ कागहायेनिरुयाणे ॥ जालया प्ररुगयो ॥ मरुयेनेपाहुणे ॥
 स्वर्गोनिया ॥ १६ ॥ त्रिजंसीचिद्यारंभासंयसी ॥ अग्निवर्षस्त्वओदायंयदुनी ॥ सापत्राआणिर्कान्ती ॥ कानोहाये ॥ १७ ॥ मगगोमदयान
 या ॥ जबळी असेयनंजया ॥ त्रिंस्मनीजोषदेहा ॥ ये आधिया ॥ १८ ॥ जेस्वगुणी उदते ॥ येउ निसनचोरकन ॥ नियेसांइनिकोपते ॥ भोग
 समहे ॥ १९ ॥ अवचेदेगसाजो जाये ॥ तोसालाचारिचयाहाये ॥ विवदुनाजन्मयाहे ॥ जनिनयामाजि ॥ २० ॥ संसपांधनुधरा ॥ राधोरायप
 णेडोंगरा ॥ गेलिया अपुरा ॥ होयकादं ॥ २१ ॥ नातंग्येयिकादिवा ॥ नेलियायी जयागना ॥ तोनेयंनोरमादया ॥ दोपचिको ॥ २२ ॥ ते
 सीतेसलशुद्धी ॥ आगळीजानेसीवृद्धी ॥ तंरगावोलागेवृद्धी ॥ विवदुनाज ॥ २३ ॥ पमहदोस्तोस्पादी ॥ विचाण्ठमिसंवदी ॥ विचारस-
 करपोदी ॥ जिगेनिजाये ॥ २४ ॥ छुनोसासततीसाये ॥ चोविसापचवीसाय ॥ तन्दीनुरा नस्मावे ॥ चतुर्थजे ॥ २५ ॥ ऐसेसंयजेसवी
 तम ॥ जालेअसेजशासगम ॥ नयासगेनिरूपम ॥ आहदेहे ॥ २६ ॥ द्रव्याचिपतिरुग ॥ तमसन्व अथोमुरग ॥ वेसोनिजेआगळीक ॥
 धरीरज ॥ २७ ॥ आपलियाक्रायाचा ॥ दुमादगावीदेहाचा ॥ साजवितीचिदाचा ॥ उदयगमा ॥ २८ ॥ पाजन्तीवाहदुद्धी ॥ करिवेगळी
 वेदाळी ॥ तेसिविषयांसारळी ॥ इंद्रियाहोये ॥ २९ ॥ परदारगदिकरते ॥ परिधिरुद्रोसेनावडे ॥ मगशीअयेचिनिताडे ॥ संयच्छारीश्
 हाताचवरिलोम ॥ करोस्तेरत्नाचारव ॥ वेदाळितांअलास ॥ तनउरे ॥ ३० ॥ आणि आलपलिया ॥ उदपाजातांमल्लनया ॥ मवृत्ती-
 धनंजया ॥ हातनफादि ॥ ३१ ॥ तेविंविंगरवादानासाद ॥ कावरावाअश्वमेध ॥ ऐसाअचातछंद ॥ घेउनिउडी ॥ ३२ ॥ नगरेचिरत्तावी
 जळाशयेनिर्मावी ॥ महावेलेवावी ॥ नानाविधे ॥ ३३ ॥ असेसाअफादोकमी ॥ समारंभउपकमी ॥ आगिहडाहदकमी ॥ पुनेन
 पाद ओ ३१ वाको ७

हृणें ॥ १२ ॥ सागरहंसांशपदे ॥ आगिनत्वाहतेनकवले ॥ ऐसेंअमिताशीजोडे ॥ दुर्मरत्व ॥ १६ ॥ स्महासनासुतां ॥ आशेचापेदकडी ॥
विश्वयोपचाडा ॥ पायांतळीं ॥ १७ ॥ इत्यादिवातानांजनीं ॥ इथेचि देहोतीमाजीं ॥ आणिएशासमाजीं ॥ वेंचेजरीदेह ॥ ३८ ॥ तरिआय
वाचिदेहो ॥ परीपरिषारलाऔनिदेहो ॥ रिगपरयोनिही ॥ मासुथीचि ॥ ३९ ॥ स्मर गळेभिमिकारी ॥ वसोगंराजमदिशो ॥ तरीकाय-
अध्वारी ॥ रावोहोइल ॥ ४० ॥ वेलतेयेकरवाडे ॥ हेनतुकेगाफुडोनेइजोकावक्राडे ॥ समथेचेनि ॥ ४१ ॥ हाणोनिव्यापाराचाहातीं ॥ उसतुदे
हानासती ॥ नैसयाचियेपांथी ॥ जुंपजेतो ॥ ४२ ॥ कमजलाचाभादे ॥ किंबुहनाहोयदेही ॥ जोरजोवृत्तीचाडोही ॥ बुडोभिनिमे ॥ ४३ ॥
मगतैसास्सिपुदती ॥ रजसत्वहती ॥ गिळुनियेउन्नती ॥ तमोगुण ॥ ४४ ॥ तैचिजियेडिंगें ॥ देहिंविमबात्वासांगें ॥ तिथेपरिसचांगें ॥ ओव
बळे ॥ ४५ ॥ तरीहोयगेंसमन ॥ जैसरविचंदहीन ॥ रात्रिचेंकांगन ॥ अंगसेचिये ॥ ४६ ॥ तैसेंअंतरअसोस ॥ होयस्फूर्तिहीनउदूस ॥ वि
चाराचिभाष ॥ हारपें ॥ ४७ ॥ बुद्धिमत्तेवेनाथोडे ॥ हादायवर्मबाळेंसांडी ॥ आमवोदेशाथडी ॥ जालादिसें ॥ ४८ ॥ आवेकचेनिमा
जे ॥ सबात्यशरीरगाजे ॥ एकुळनियेपीदजे ॥ मोदयेतेया ॥ ४९ ॥ आचारसंगाचींहाडे ॥ मरुपतीइदियापुदे ॥ मरेजरीतेणेकडे ॥ क्रिया-
जाये ॥ ५० ॥ पैआणिकीहकादिसे ॥ जेंदुसुतीचिनउल्हासे ॥ आथारींदेरवणेंजेसें ॥ दुडुळाचे ॥ ५१ ॥ तैसींनिषिद्धाचोनिनावें ॥ मल
तेहीपरेहांवे ॥ तिथेविययीथांवे ॥ येतीकरणे ॥ ५२ ॥ मदिरानयेताडने ॥ सनिगतेवोणवरुं ॥ निथेमेंचिसुडे ॥ पिसेंजेसें ॥ ५३ ॥
चित्ततरीगेतुंआहे ॥ परिउत्तर्नतिनोहे ॥ गेंमेमान्कातिजेमोहे ॥ माजरेनि ॥ ५४ ॥ किंबहुनाऐसेसीं ॥ इथेचिह्नेतमपोषी ॥ जेंवोहेआ-
थितिसी ॥ आपुलिया ॥ ५५ ॥ आणिहंचिहोयप्रसंगें ॥ मरणाचेंजरीपडेश्यंगें ॥ तरितुलोनिनगे ॥ तमेंसींते ॥ ५६ ॥ रादराइप
णबिजी ॥ साठउनिथांगान्यजी ॥ मगविरुढेंतुजुजी ॥ गोष्टीआहे ॥ ५७ ॥ पैहोसनिदीपकान्निका ॥ येरुआगीविस्त्रोकां ॥ कांजेथ्य
पाठ ॥ ओ ३८ माजीं ॥ ओ ३९ आन ॥ ओ ४० गाकुनि ॥ ओ ४१ मोदये ॥ ओ ४२ गाही ॥ ओ ४३ बोनि ॥ ओ ४४ गिने ॥

लोनेनेथ अस्मा ॥ तोचि आहे ॥ ५८ ॥ ह्यणानितमाच्येनाथ ॥ बोधोनि योसंख्याति ॥ देह जायत मागाते ॥ तमाचोविहोये ॥ ५९ ॥ आतांकायुरे
 पोवळे ॥ जोनमोदुहि मृत्युलाहे ॥ तोमशकापक्षी होये ॥ आउका दुर्मो ॥ ६० ॥ श्लो ० कर्मणः सुदृढस्य हः सात्विकं निर्मलं फल ॥ रज
 सस्तु फलदुःखमज्ञानमसः फल ॥ ६१ ॥ टी ० योगे चिपेकारणे ॥ जैनपजे सत्वगुण ॥ ते सुदृढनंगे होय ॥ श्रीतसमो ॥ ६२ ॥ ह्यणो
 नितयानिर्मळा ॥ सुखवशाने सरळा ॥ अश्ववैय फळा ॥ सानिकते ॥ ६३ ॥ मगराजसाजियाक्रिया ॥ तयादेवावणि फळिया ॥ जे स-
 रवे चितारुनिया ॥ फळतीहुः रे ॥ ६४ ॥ कानिबोक्रियाचे पिफ ॥ वरिणोद आत विषय ॥ ते सतराजमदेख ॥ क्रिया फळ ॥ ६५ ॥ तामुसकर्म
 जितुके ॥ अज्ञान फळे चिपिके ॥ विषाकुरगि रे ॥ जिया परी ॥ ६६ ॥ श्लो ० मलात्मज्ञापते ज्ञानरजसोऽन्नाभा एव च ॥ ममादमो हातम
 सो भवतो ज्ञानमेव च ॥ ६७ ॥ टी ० ह्यणो निचारे अजुना ॥ येय सत्ये च हेतु ज्ञाना ॥ जसाका दिनमाना ॥ सय होये ॥ ६८ ॥ आणिते स
 चिहे जाणा ॥ लोभासि जयकारण ॥ आपदे विस्मरण ॥ अदेता जे वि ॥ ६९ ॥ मोह अज्ञान प्रमादा ॥ यथोमेच्छा दोष दंदा ॥ पुढती पु
 दती मबुद्धा ॥ तमचि मूळ ॥ ७० ॥ ते सविचाराचा डोळा ॥ तिर्हा गुणयगळ वेगळा ॥ दोविदे जे सा आवच्छा ॥ तच्छहानिचा ॥ ७१ ॥ तंव
 रजतमोदोन्ही ॥ देखलो सोदपतनी ॥ सत्वावाचुनिनेण ॥ ज्ञानाकडे ॥ ७२ ॥ ह्यणो नि सत्वो कवनी ॥ एक जादे जस्य वती ॥ सर्व त्यागेच
 नुर्थी ॥ मति जे सी ॥ ७३ ॥ श्लो ० ऊर्ध्वगच्छति सत्वस्थामथ्यति द्वातितराजसाः ॥ जयत्यगुण द्वातिस्था अधोगच्छति तामसाः ॥ ७४ ॥
 टी ० ते संसत्वाचे निदनाचे ॥ असणे जाणे जयाचे ॥ ते तनु त्यागी स्वर्गाचे ॥ राय होत ॥ ७५ ॥ दया निपरि रजे ॥ जिहीकां जिजे मार
 जे ॥ तिहो मनुष्य होइ जे ॥ मृत्युलोकी ॥ ७६ ॥ तेथ सरखलुःखाचे शिव दे ॥ जे विजे के नितादे ॥ जेय दये मरण वाटे ॥ पांडले सुवी ॥
 ॥ ७७ ॥ आणितयाची स्थिती तमी ॥ जेवा दोनिन मर्ता प्रागदमी ॥ ते येती नरक मूमी ॥ मूळ पच ॥ ७८ ॥ एव वस्तू चिया सत्ता ॥ त्रि
 पाठ ॥ ओ ॥ ६२ एक ॥ ओ ॥ ६३ दंदवारुणी पिफुलिया ॥ ओ ॥ ७३ नउनाचे ॥ ओ ॥ ७३ परिप ॥ ओ ॥ ७३

सूर्यकांतचिह्नपात्रे ॥ क्रमच्छीविष्णुसावे ॥ जावतंसे ॥ ९७ ॥ चयाकोणचैकाही ॥ सगिताजैसांदखनाही ॥ नैसाअकतोमदेही ॥ सुत्ता-
रूप ॥ ९८ ॥ मोलाउनीगुणदेखे ॥ गुणवाहेमियांपोखे ॥ ययाचेनिभिः शेरवे ॥ उरेतेसी ॥ ९९ ॥ ऐसेभिवेक्कजाया ॥ उदयहोयधनजशु-
येगुणार्तातनाया ॥ इच्छेपथे ॥ १०० ॥ आनंनिगुणअम्भाणिक् ॥ तेनोजाणेभुत्तु ॥ हेजावेकेउठेठे ॥ नयाचिचरी ॥ ११ ॥ किबहुना
पडुक्कना ॥ ऐसीतोभाजोसत्ता ॥ पावेजैसीसगिता ॥ सिंधुक्कगा ॥ १२ ॥ नखिकवरुनिउठ्ठला ॥ जेसाशक्रशारेवेसत्ता ॥ नैसासूळअहं-
नादकिला ॥ तेमाह्यणोनि ॥ १३ ॥ अगाअज्ञानाचियानिदा ॥ जोघोरतहोतावदवदा ॥ नोस्वरूपीमबुद्धा ॥ चैइलाकी ॥ १४ ॥ पेंबुद्धिसेदा
चाभारिस्ता ॥ तयाहातोनिपडिनावीरेशा ॥ ह्यणोनिमतिमुखाभाभा ॥ सुक्कना ॥ १५ ॥ देहाभिमानाचावारा ॥ आतावाजेविनावीरा ॥
तेएक्यवीचिसारा ॥ जीविशाहे ॥ १६ ॥ ह्यणोनिमद्रावोमि ॥ माभिगाविजेतेणसरुमी ॥ वर्षातीआकाशी ॥ यनजातजेवो ॥ १७ ॥ श्रुतो-
गुणानेनानीत्यर्थान्देहादेहसमुद्धान ॥ जन्ममृत्युजरादुःखयिमुक्तामृतमश्नुते ॥ १८ ॥ दो ॥ तेविर्माहाउनिनरुता ॥ मगदेहीवि-
येअसता ॥ नागवेदेहसभूता ॥ गुणासिता ॥ १९ ॥ जेसाभिगाचीनयोर ॥ दोपमकाशनाचरे ॥ कानविदेविस्मागेर ॥ वडवानळ ॥ २० ॥ ते
साध्यालगेलागुणात्ता ॥ बोधनेमळतयात्ता ॥ तेदेहीजैसाव्यामोत्ता ॥ चंद्रजळो ॥ २१ ॥ तिर्हागुणआपलालियेयादी ॥ देहानाचविनीबा-
गदी ॥ तोपाहेहीनयादी ॥ अहनेते ॥ २२ ॥ हागायवरी ॥ नेहतामिनेन्नाअनरी ॥ आताकायवर्तशरीर ॥ हेहीनेजे ॥ २३ ॥ साइनिआगी-
चैरवेळी ॥ सुपरिगालियापाताळो ॥ तेवचाकोणसासाळो ॥ तेसंजाळे ॥ २४ ॥ कांसारभ्यजीजेसा ॥ आमोदपिच्छेनिजायेआकाशा
भायाराकमळकोशा ॥ नयेचितो ॥ २५ ॥ पेंस्वरूपसभरसे ॥ तेएक्यगजालंतसे ॥ नेयकिरपमहेकसे ॥ नेणेदूह ॥ २६ ॥ ह्यणोनिजन्मजरुम-
रण ॥ इत्यादिजैसाहीगुण ॥ तेदेहीचिनेकारण ॥ नाहीनया ॥ २७ ॥ घटाचियारवापरिया ॥ यदमगीफेडलिया ॥ महाकाशअपे-
पात ॥ ओ ॥ २८ ॥ काजेकही ॥ ओ ॥ २९ ॥ अर्थपथे ॥ ओ ॥ ३० ॥ वेदला ॥ ओ ॥ ३१ ॥ मद्रान ॥ ओ ॥ ३२ ॥ काही ॥ ओ ॥ ३३ ॥ हा ॥ ओ ॥ ३४ ॥

सया ॥ जलेचिअसे ॥ १७ ॥ तेसादेहबुद्धजाये ॥ जंअपणपंअवोहोये ॥ तेआनकाहोअहे ॥ तेचचुनी ॥ १८ ॥ येणेंअरबोधलेपणे ॥ तयासि
 गादेहीअसणे ॥ हाणूनिमोदिणे ॥ गुणतीत ॥ १९ ॥ ययादेवाचियाबोला ॥ पार्थअतस्सरवावला ॥ मेयेसंबोरिलला ॥ मयूरजैसा ॥ २० ॥
 श्लो० अजुनउवाच कैलिंगैस्त्रीचगुणनितान्ततोमवतप्रभो ॥ किमाचारःकथंचेतोस्त्रीनगुणानगिवर्तते ॥ २१ ॥ टी० तेणेतोवें-
 वीरपुसे ॥ जोकोणहीचिहीतोदिसे ॥ जयामाजोवसे ॥ गेसाबोध ॥ २२ ॥ तेनिगुणकायआचरे ॥ केसेनिगुणनिरुतरे ॥ हंसगिजोसाहेरे ॥
 हरेपेनि ॥ २३ ॥ ययाअजुनाचियाप्रभो ॥ तोषइगुणाचराणा ॥ परिहारआकर्ण ॥ बोलतअसे ॥ २४ ॥ हाणपार्थतुझीनवाई ॥ हंयंतुलनि
 पुससीकाई ॥ तेनामचितयापाहीं ॥ साचळदिक् ॥ २५ ॥ गुणातीतजयानव ॥ तोगुणार्थीनतरिनाहे ॥ नाहोयतरिनागवे ॥ गुणायया २५
 परिअर्थानकानागवे ॥ हेचिकैसेनिजाणवै ॥ गुणाचियेवरवे ॥ माजिअसता ॥ २६ ॥ हासंदेहजरीवाहसी ॥ तोरस्करेंपुसोलाहसि ॥
 परिसंभ्रांतयासी ॥ रूपकरू ॥ २७ ॥ श्लो० श्रीभगवानुवाच प्रकाशंचमृदन्तिचमोहमेवचगाडव ॥ नेद्विष्टसंमृदन्तिनिमिदृत्ताभि-
 काक्षति ॥ २८ ॥ टी० तरिरजचेनिमाजे ॥ देहीकसोचेंआणोजे ॥ मृदनीजेंयेइजे ॥ वेदाळुनि ॥ २९ ॥ तेमोचिकाकर्मद ॥ ऐसेनियेअ-
 माव ॥ कादरिदलियेबुद्धीवीट ॥ तोहीनाही ॥ ३० ॥ अथवासलेंचिअधिके ॥ जेंसर्वेद्विजानफाके ॥ तेंस्फुटितोरेवें ॥ उभजेहीना ३०
 कावाटिलेनितसे ॥ नागिळेजिचिमोहप्रसे ॥ तेअज्ञानलेनअमे ॥ येणेंहीनाही ॥ ३१ ॥ पैमोहाचाअवसरों ॥ ज्ञानाचीचाडनधरी ॥ शोनेक
 पैनादरी ॥ होतानदुरवी ॥ ३२ ॥ सायमातमयात्का ॥ यातिहांकाळांचोगणना ॥ नाहिजेवितपना ॥ तेसाअसे ॥ ३३ ॥ तयाबेगळचिक्राय
 प्रकाशो ॥ सोमिबथावेंअसे ॥ काथिजळाणवपाउसे ॥ साजाहोये ॥ ३४ ॥ नाप्रवतलेनिकर्म ॥ कर्मठत्वतयाकांगसे ॥ सांगेहिमवंतहवें
 कोपकाइ ॥ ३५ ॥ नानरिमोहआलिया ॥ काइपांढानाभूकिजेसतया ॥ होमासोतेउद्धाळेया ॥ जाळवतअसे ॥ ३६ ॥ श्लो० उदासी
 पाव ॥ ओ० १८ जाणणें ॥ ओ० २० मोरू ॥ ओ० २६ साचें ॥ ओ० २६ जाणवे ॥ ओ० २६ उरवरवे ॥ ओ० ३६ नाना ॥ ओ० ३६ होमाआगतिं, ४

नवदासीनिगुणैर्योनविचल्यते ॥ गुणवर्तत इत्येव यो वति स्मृतिर्न गत ॥ २३ ॥ टी० तैस्स गुणगुणकार्येह ॥ आद्येवैचि आपण आह ॥ ह्यणो-
नियेक्का नो हे ॥ तज्जो टी ॥ ३७ ॥ रेख्दी यागा प्रतीती ॥ तो देह आत्मा सेवस्ती ॥ वोद मा जियुती ॥ जातं जेसी ॥ ३८ ॥ तो जिन ता बांहा
रवी ॥ ते सा गुण न वूना करवी ॥ जेसी काओ णवी ॥ संया माचि ॥ ३९ ॥ का शरीरा अंती लपण ॥ यरी अति आचा ब्राह्मण ॥ नाना चो हटा
चास्थाण् ॥ उदास जेसा ॥ ४० ॥ आणि गुणा चाया वाजावा ॥ दळ्ळ चळेना पाडवा ॥ सुगजळा चाहलावा ॥ भरु जेसा ॥ ४१ ॥ हे बहुत कायि
बोलिजे ॥ व्यामवार निर्वै जेज ॥ कां सुय ना गिळिजे ॥ अंधकारे ॥ ४२ ॥ स्वमकारा गजिया परी ॥ जागत याति न संतरी ॥ गुण ते साधु
वधारी ॥ नवधिजेतो ॥ ४३ ॥ गुणा सिकी रना तुदे ॥ परिदूरु निजे पाहकांड ॥ नेगुण दोष मायिरवडे ॥ सम्यजेसा ॥ ४४ ॥ सत्कर्मसा
लिकी ॥ रजते रजो विषयकी ॥ तम मोहादिकी ॥ वर्तत असो ॥ ४५ ॥ परि सतया चि यागा मन्ना ॥ होति गुण भ्रिया समस्ता ॥ हे फुडे जाण
सविना ॥ लोकि काजिवि ॥ ४६ ॥ समुद्र चि सरती ॥ रामका न चि द्रवति ॥ कुसुं दोष का सति ॥ चेदे तो रसा ॥ ४७ ॥ का वारा चि वाजे विदे
रग निश्चळ अभिजे ॥ ते सा गुणा चिये गजबजे ॥ जलेना जो ॥ ४८ ॥ अजु न धिये न लक्षणा ॥ ने गुणा नीत जाण ॥ परि स आना आचरण ॥ त
याचि जी ॥ ४९ ॥ अस्ती ॥ समदुःख सरवः स्वस्थः समलोषा धमकात्तनः ॥ तुल्यमिया प्रिया धीरस्तुल्य निदात्मसत्सुतिः ॥ ५० ॥ टी०
तीरव रत्ना सिपा तिणेती ॥ नाह सिता वाचु भिकरीटी ॥ ऐसं सय दिदी ॥ चराचर मद्रूप ॥ ५१ ॥ ह्यणा नि सरवदुःख सारिसे ॥ काला-
ळ आचरे ऐसं ॥ रिपु भक्ता जेसं ॥ हरी चंदेण ॥ ५२ ॥ येरवी नीर सहजे ॥ सरवदुःख ते वि सविजे ॥ देह जळो होइजे ॥ मा सोळीजे
॥ ५३ ॥ आना नंत वतेण सां डिल ॥ अहि स्वस्वरूप सो निमां डिल ॥ सस्या नीं न वडिल ॥ बीजे जेसं ॥ ५४ ॥ का वाय साडु निगाग ॥
रिया नि ससुद्रं वि भाग ॥ नि सरती जग बग ॥ रक्काला चवी ॥ ५५ ॥ ते वि आपण पां चि जया ॥ वस्ती जाली गाय न जया ॥ तया देही
पाठ ॥ ओ ३८ जाना ॥ ओ ३८ माजी ॥ ओ ४१ चंदे ॥ ओ ४२ वचिजे ॥ ओ ४३ पासरती ॥

अपेक्षया ॥ स्मरयेते सैन्दुः ख ॥ ५२ ॥ गन्धितं संपाहृतं ॥ हे चरणजो दिग्विजो ॥ आत्मारामदेहा आनन्दे ॥ इद्वैतस्य ॥ ५६ ॥ वैभित्तानि च भिन्नो
 सि ॥ सापैतसोऽवशः ॥ ते किञ्च प्रपन्था सारि ॥ दहो दह ॥ ५७ ॥ ह्यणो नितयाचार्यो ॥ शोणा सो नयाचार्यो ॥ शोणा सो नयाचार्यो ॥ रत्ना गुदे याका-
 हो ॥ नेण जे सैद ॥ ५८ ॥ यगये योपास्वगं ॥ कानि रपडो वाय ॥ परि आत्मबुद्धीसी भग ॥ कदां नो हे ॥ ५९ ॥ निवृत्तं निउपवृत् ॥ अर्द्धो
 ननु न विरुद्ध ॥ साम्यबुद्धी न सोऽह ॥ नया परो ॥ ६० ॥ हा अद्वागैसि निस्त विजो ॥ कानी च ह्यणो नीर्भो देजो ॥ परि नेण जे चो रिझो ॥ शरव
 जेसी ॥ ६१ ॥ तसो भिदा आगि सुतो ॥ नयं कण ह निव्यर्त्ता ॥ नाहो आचार्य कावर्त्ता ॥ सूया यो ॥ ६२ ॥ अष्टोऽमाना पमान यो स्तुल्य सु-
 ल्या भिचारिण स्यो ॥ सवारं भगव्यार्णो गुणानितः स उच्यते ॥ ६३ ॥ टी ० ईश्वर रूपानि भूजिन्ना ॥ काचोर ह्यणो भिगां जिन्ना ॥ ह्यवग
 जं विदित्ना ॥ कलारावो ॥ ६४ ॥ कां स हृदपां सिं भाल ॥ अथ यो वैश्वर जान्ते ॥ परि नेण रानी पाहाले ॥ ते जे जे वि ॥ ६५ ॥ साहो क्रतु येना
 आकाश ॥ निपि जे निना जे स ॥ ते विषय स्यमान स ॥ ६६ ॥ आणी कही ये कृपा हो ॥ आचार तया चाचार्यो ॥ निरव्यापा
 रा भिना हो ॥ जानि दिस ॥ ६६ ॥ सवार भा उदक न ॥ ग्रह नीच जे थ स्या वळ ॥ जन्तु नो पाक स पद्ध ॥ ने नो आगी ॥ ६७ ॥ दृष्टा दृष्ट चि-
 नो वै ॥ भाव चिज विं दुग वि ॥ स विज स्वभाव ॥ पठ हाये ॥ ६८ ॥ स्मरवनाशी गुणने ॥ पाशा गुणने साने ॥ ते सी सां डि स्या दी सने ॥ वज्र नी आ
 से ॥ ६९ ॥ आनां किती हा विस्तर ॥ जाणे रसा आचार ॥ ज्ञानां नि माचार ॥ गुणां निना ॥ ७० ॥ गुणां ने अभिभू सणे ॥ यदु उपये जे ने ॥ तो
 आन आर्द्र कक्षणा ॥ म्रो स्रष्टानथ ॥ ७१ ॥ अष्टोऽमाना पमान यो स्तुल्य सुल-
 ॥ ७२ ॥ टी ० निरव्या भिचार ह्मनि चित्ते ॥ सत्सि रोगमान ॥ से विने गुणां ॥ जालु शके ॥ ७३ ॥ तारकाण्यो कैसी भक्ता ॥ अथ भिचार-
 कायव्यक्ति ॥ हे आगव चिनि रूनी ॥ हो आवी नाग ॥ ७४ ॥ नरोपाया परि यसा ॥ मोत न ये थ रसा ॥ रत्नी किळा वे जे सा ॥ रत्न चितो ॥ ७५
 पाठ ॥ ओ ६३ बुद्धि ॥ ओ ६७ मावळे ॥ ओ ६९ स्मरवनाशिंगे ॥ ओ ७० ज्ञाने ॥ ओ ७२ जाकळ ॥ ओ ७३ व्यभिचार ॥ ओ ७४

काद्रवपणांमिनी॥ अवकाशीचिअंबर॥ गोडंतोचिसारवर॥ आननाही॥ १५॥ वहंतोचिजाळा॥ दुळाचिमातकमळा॥ हूरवतोचिडाळा॥ प्रळ-
 दिक॥ १६॥ हिभेजंआकर्षल॥ तंचिहमवतजेंवजल॥ नानादृधसुरल॥ तेंचिदही॥ १७॥ तेंसंविशवयेणेंनावे॥ हंभीचिपेआयवें॥ च-
 दंचंद्रांबिंबसोलावें॥ नलगजेविं॥ १८॥ घुताचिथिजलपणा॥ नसोडितांघुतचिजाण॥ कांथादिताकावृण॥ सोनचिने॥ १९॥ नउकलि-
 नापट॥ तंतूचिअससृष्ट॥ नविरवितायट॥ मृत्तिकाजेंविं॥ २०॥ म्हणोभिविस्वपणजावें॥ मगनेमानयेयावें॥ तेमानव्हेआयवें॥ सगद-
 विमी॥ २१॥ ऐसनिमानेंजाणिजे॥ तेअव्यभिचारशस्त्रिस्तृणजे॥ येथुंमदकांहींदोरजे॥ तारव्यभिचारनो॥ २२॥ याकारपेसंदोते
 साडुनिअसंदचिने॥ आपणयासकटसोते॥ जाणावंगा॥ २३॥ याथोसानयाचीदिक्॥ सानयासीलागहींदेरव॥ तेंसंआपणपेआ-
 णिक॥ मानवना॥ २४॥ तेजाचेतेजोनिनिघाला॥ पारितर्जाचिअसेलाला॥ नयारशमोएसाभला॥ बोधहोआवा॥ २५॥ पेंपरमा-
 णुसूतली॥ हिमकणहिमाचली॥ मजमाजिन्याहाळी॥ अहंतेंसं॥ २६॥ हाकातरगलाहन॥ परिसिधूसिनाहोभिन्न॥ तेंसाईस्वरीमो-
 अना॥ नोहचिमा॥ २७॥ ऐसनिबासमरेंसा॥ दृष्टजेंउल्लासे॥ तंमत्तिपेंगसे॥ आहीह्यणा॥ २८॥ आणिज्ञानचेंचांगोवें॥ दयेदृष्टीमा-
 नावे॥ योगाचंहाआयवें॥ सर्वस्वहं॥ २९॥ सिंधुआणिजळधरा॥ माजीलागलीअरंवंधारा॥ तेंसीवतिवीरा॥ प्रवर्तेते॥ ३०॥ का-
 कुहसिंआकाशी॥ तोंडेंसादानाहेंजेसा॥ तोपरमपरुषुतेंसा॥ एकनदेगा॥ ३१॥ अतिविबोनिबिबवरि॥ प्रभेचिजेसीउजरी॥ तेंसो-
 हृदुतोअवधारि॥ तेंसीहोय॥ ३२॥ ऐसनिमगपरस्पर॥ तेंसाहृदिनेजेंअवतर॥ तेंविधेहीसकटसर॥ अपेसया॥ ३३॥ जेसासोपवा-
 चारवा॥ सिंधुमाजिण्डवा॥ विगलेयाविरवावा॥ हेंहीतकि॥ ३४॥ नातरिजाळुनिवृण॥ वल्लिहिंविझेआपण॥ तेंसंमदनाशनिजा-
 णा॥ ज्ञानसुर॥ ३५॥ माझेपलपणजाये॥ प्रकृतेलेपणवाये॥ अनादिऐक्यजेंआहे॥ तेंचिनिवड॥ ३६॥ आनागुणांतोकिरीटी॥

पाठ. ओ. १८ तें. ओ. ८१ गा. ओ. ९५. उर. ७.

७.

७.

जिणिणानवनीगोदी ॥ जगत्पणाहीभिर्न ॥ ९७ ॥ विबहुनाएशीदशा ॥ तेब्रह्मत्वगाम्दशा ॥ हेनोपवजारेसा ॥ मातेमजि
॥ ९८ ॥ पुदतीइहींभुगी ॥ भक्ततोमाझाजगो ॥ हेब्रह्मतातयाजगो ॥ पतिवता ॥ ९९ ॥ जैसंगेचेनिबोधे ॥ डळमळीतजळजेनिये ॥
ब्रह्मत्वाभिचिपाया ॥ सायुज्यएसीव्यवस्था ॥ याचिनेमैचोथा ॥ पुरुषार्थगा ॥ १० ॥ परीमाझोआराधन ॥ ब्रह्मत्वीहोयसोपान ॥ तेथ-
सीहनसाधन ॥ गेंयल्लेहो ॥ ११ ॥ नारेझणीगेंमे ॥ तुझाचिनीपेंमे ॥ पैब्रह्मआननसे ॥ मोवाचुनि ॥ १२ ॥ ब्रह्मणोहिप्रतिष्ठाहममृ-
तस्मात्प्रयस्यच ॥ शाश्वतस्यचयमस्यसुखस्यैकान्तिकस्यच ॥ १३ ॥ इतिश्रीमद्भगवद्गुणप्रयविभारायोगानामचतुर्दशोऽध्यायः ॥ १४
दो ॥ आगाब्रह्मपानावा ॥ अपिमायमीपाडवा ॥ मोचिबोलिजेआयवा ॥ शब्दोइही ॥ १५ ॥ पैमडळुआणिचंद्रमा ॥ दोनानकूनीसुखमा
नेसायजआणिब्रह्मा ॥ सेदनाही ॥ अगानित्येजेनिष्कप ॥ अनाद्यतथैरूप ॥ स्रवजेंउमप ॥ अद्वितीया ॥ १६ ॥ विवेकआपलेंकाम ॥
सारुनिटाविजयास ॥ निष्कर्षीचेंनिःसीम ॥ विबहनामी ॥ १७ ॥ ऐसेसेहोअवधारा ॥ तोअनन्याचासोयरा ॥ सागतसेवीरा ॥ पार्थासि-
पें ॥ १८ ॥ येथधृतराष्ट्रह्मण ॥ संजयाहेतुतेंकोण ॥ पुरीसेभिविणवायाणें ॥ काबोलमी ॥ १९ ॥ माझीअवसरीतेंफेडी ॥ विजयाचीसां-
गेयुदी ॥ येरुजिवस्त्रेणंसादो ॥ गोदोशिया ॥ ११० ॥ सजयविस्मयमानसी ॥ आहाकारुनिरससी ॥ ह्मणकैसेपदेवसी ॥ इंदुयया ॥ १११ ॥
तरिरुपाकुनालुहो ॥ ययाविवेकहायोदो ॥ मोहाचाफिदो ॥ महारोग ॥ ११२ ॥ संजयऐसेचिंनिता ॥ संवादतोसाभाळिता ॥ हरिस्वाचाये-
तनिता ॥ महापूर ॥ ११३ ॥ क्षणीभिआनंयेणें ॥ उत्साहोचिनिअवनरणें ॥ श्रीहृष्यानिंबोलणें ॥ सांगिल ॥ ११४ ॥ तयाअक्षराआतीलमा-
व ॥ पावर्बनिमीलुभचाताव ॥ आइकाक्षेणंज्ञानदेव ॥ निवृत्तीचा ॥ ११५ ॥ ॥ इतिश्रीभागवतीयोऽज्ञानदेवविचतुर्दशोऽध्यायः ॥ ११६ ॥

पाठ. ओ. १९ जो. ओ. २ नांव. ओ. ३ गयेन. छ.

छ.

छ.

छ.

छ.

श्रीगणेशायनमः॥ आनाहृदयं आपुलं॥ चोपाळुनिघामलं॥ वरीवैसं प्रपा उलं॥ श्रीगुरुचो॥ १॥ ऐक्यभावाचीं अंजुबी॥ स
 वैदियकुडनी॥ मस्तूनिघाणुषा जुळी॥ अय्यंतेंवो॥ २॥ अनन्योदकंधुवट॥ वामनाजेतन्निष्ठ॥ तेंलाविलेंसेबोट॥ चंदनाचेंगंड॥
 प्रेमाचेभिभांगरें॥ निर्वाळनिष्ठपुरं॥ लेखसुमकुमारें॥ पटंनियें॥ २॥ वणावलीभावही॥ अव्यभिचारेंचोरवडी॥ तिथेयालं
 जोडी॥ आगोळिया॥ ५॥ आनतामोटबहुळ॥ सात्विकाचेंमुकुळ॥ तेंउमलेलेंअदृढळ॥ ठेउवरी॥ ६॥ तेंथेअहंहायुपजाळी॥
 नाहंतेंजेंवोवाळं॥ सामरस्यंपोवाळं॥ निरंतर॥ ७॥ माझीतनुआणिमाण॥ इयातोह्यापाउवालेवउंथीनरण॥ करूसोगमोक्ष
 निबलोण॥ पायातया॥ ८॥ इयाश्रीगुरुचरणसवा॥ होपात्रतयांदेवा॥ जेसकळार्थमेळावा॥ पाटवाधो॥ ९॥ ब्रह्मीचेंविसवणेव
 रि॥ उन्मेषलोहउजरी॥ जेवाचेंतेंइयकरी॥ सुधामिंधू॥ १०॥ पूर्णचंद्राविचाकोडी॥ वक्तृत्वाधोपेकुरेंडो॥ तेंसीआणीगोडी॥
 अक्षरांतें॥ ११॥ सूर्यअधिष्ठिलीयाची॥ जगाराणीविंदेंप्रकाशाची॥ तेंसीवाचाथोतयाज्ञानाची॥ दिवाळीकरी॥ १२॥ नादब्रह्म
 खुजें॥ कैवल्यहीतेंमनसजें॥ ऐसावोलेंदंखिजे॥ जेणेंदेंवें॥ १३॥ अवणसूरवाचाभाडवी॥ विश्वभोगीमाधवी॥ तेंसीसामिल
 लीवरवी॥ वाचावली॥ १४॥ ठायनपवनाजयाचा॥ मनसीसुखलुवाचा॥ तोदेवहोयशब्दाचा॥ चमत्कार॥ १५॥ हेज्ञानासिनचो
 जवें॥ ध्यानासिहीजेंनागवे॥ तेंअणाचरणवे॥ गोटांमाजि॥ १६॥ येवेंदेंएकसोभग॥ वळधेवाचेंचेंआंग॥ श्रीगुरुपादपद्म-
 रागं॥ लाहेंजेका॥ १७॥ तरिबहुबोलूंकाई॥ आजितेंआनवादी॥ मातेवाचूनिनाही॥ ज्ञानदेवदाणो॥ १८॥ जेंतान्हेनिभियाअपत्ये॥
 आणिमाझगुरुएकलोतें॥ झणोंनिक्वपेसिएकहातें॥ जालेंनिये॥ १९॥ पाहापासरोवरीआद्यवी॥ मेघचातकासीरिचवी॥
 मजलागींसावी॥ तेंसंकेलें॥ २०॥ झणोंनिरिकामेंतेंड॥ कऱ्हेलेंबडबड॥ कींगिताऐसंगोड॥ आंजुडलें॥ २१॥ होयअट्ट
 पाठ. ओ. १४ भोग. धौ. १८ आनी. ५

आपैते॥ तैवां कृचिरत्ने परते॥ उष्ट्रायुष्यते मारितं॥ लोमकरी॥ २२॥ आधणी धातु नियाहरका॥ होता अमृतचित्तं दुह॥ अशिशु कुचो
 राखे वेढा॥ श्रीजगन्नाथ॥ २३॥ तथा परी श्रीगुरु॥ करिते जे अंग कारा॥ तें होउ निठा के समसार॥ मोक्ष मय आधवा॥ २४॥ गहापाकाई-
 श्रीनारायणें॥ तथा पुढ वांचें उणें॥ कीं जे चिनापुराणें॥ विश्वद्यें॥ २५॥ ते मेशी निवृत्तिराजें॥ अज्ञान पण हें माझे॥ आणिलें बोजे॥
 ज्ञाना चिया॥ २६॥ परि हे असो आता॥ प्रेमरुत तसे बोलता॥ वेगु रंगोर वर्णिता॥ उन्मेष असो॥ २७॥ आतां तणें चिपसाये॥ तुलासा
 तांचे मी पायें॥ वोकगे न अभिप्राय॥ श्रीगीतें चेना॥ २८॥ तरितो चिप्रसूती॥ बोदाविषा अध्यायाच्या अंती॥ निर्णय के वल्यपती॥ ऐ-
 सा केला॥ २९॥ जे ज्ञान नयाच्या हाती॥ तो चि समर्थ मुक्ती॥ जे याशत मरवसपत्ती॥ स्वर्गी चिये॥ ३०॥ काशत एकजन्मा॥ जो जन्मो
 निब्रह्मकर्मा॥ करिता चि ब्रह्मा॥ आनना हे॥ ३१॥ ना तरि मूर्खाना प्रकाश॥ लाहे जे वंदो कस॥ तें विज्ञानिया सौरसा॥ मोक्षचा तो॥ ३२॥
 तरि तथा ज्ञानालागी॥ कवण पायोग्य ना आणी॥ हे पाहता आणी॥ देणाना एक॥ ३३॥ जे पाताळिचे ही निधाना॥ दावील कीरज
 ना॥ परि हो आवेलोचन॥ पायाळाचे॥ ३४॥ तसे मार देल आना॥ येथ कोरावा ही आना॥ परिते विथारे ऐसमना॥ शूद्र हो आवें॥ ३५॥
 तरि विरक्ती वाचुनी केही॥ शानासित गणे नाहीं॥ हे विचार निठाई॥ ठेवि अंदेवो॥ ३६॥ आतां विरक्तीची कवण पणी॥ जे येउनि मन ते
 वरी॥ हें हांसवतें श्रीहरा॥ देखिलें असो॥ ३७॥ जे वषंग धिजीर समोयो॥ जे जेवणारा वाउ विहोयो॥ तें तो ताट मांडुनि जाये॥ जयाप
 री॥ ३८॥ तेसी साराया समस्ता॥ जाणिलें जे अनित्यता॥ तें वेराग्य दचडिना॥ पाठी लागो॥ ३९॥ आतां अनित्य वया केसे॥ तें चि-
 वत्साकार भिषें॥ सांगित अमृति येथें॥ पंचदशी॥ ४०॥ उपदिते कुबति रु॥ झाडये रिमोहरावो॥ तें वेगें जे सेसुके॥ ते से हें नो हे
 ॥ ४१॥ यांत एक परी॥ रूपका चिया कुशरी॥ मारा तसे वारी॥ समाराची॥ ४२॥ कस्तूर नमसार वावो॥ स्वरूप अहंते चावो॥ हो-
 पाठः ओ० २०॥ निर्णो० ओ० २०॥ विजगतीं ओ० ३२॥ नाना ओ० ३२॥ ज्ञाने चि० ४

आवथाअध्यावो॥पंधरावाहा॥४३॥ आताहचिआधवो॥ग्रंथगर्भसिंचागोवो॥उपलकिजलनोवो॥आकर्णजो॥४४॥ तरिमहानर
 समुद्र॥जोपूर्णपूर्णिसाचंद्र॥नोहमकेचानरद्र॥ऐसेस्रणे॥४५॥ अग्रायपहुकुमंसा॥येतांनवसूत्रनिराधग॥करीतसअडवारा
 ॥विश्वामासजो॥४६॥ तोहाजगडबस॥नोहयेथसंसार॥होनाणिजेमहानर॥थावनाअसो॥४७॥ परियेरसुखसंसारिवा॥न
 बींमुखेवरीशारवा॥तेसानोहेहाणोनिलेखा॥नयेचिकवणा॥४८॥ आणांकाकुह्लाडो॥होयारिगावाजरीबुडो॥नरोहेकभलतेव
 दी॥वरिचोबदो॥४९॥ जेतुटलियामुखापसि॥उलंडेकाशारवसि॥परितेसोणोठोकायसो॥होसोपानके॥५०॥ अर्जुनाहेक
 वतिक॥सांगताअसेअलौकिक॥जैवादीअधोसुख॥रुखायया॥५१॥ जैसाभानुउचिनेणोके॥रश्मीजाळतळीफोको॥ससा
 रहेकावरुखे॥झाडेतेसो॥५२॥ आणिआशीनाथीनितुके॥रंधलेअसेयणोचिरके॥कल्यांतोचिनिउदके॥व्यामजेसे॥५३॥कार
 वोच्याअस्तमानी॥आधारेंकोदरजनी॥तेसाचिहागर्भनी॥मांडलाअसो॥५४॥ यथाफळानाचुबिता॥फूलनानुरबिता॥जैका
 हीनपंडुसता॥तेरुखचिहा॥५५॥ होउध्वमूळआहे॥परिउन्मूलिनोहे॥येणेचिहाहोये॥शाडूळगो॥५६॥ आणिउध्वमूळऐसे
 मनिगादेलेंकीरअसो॥परीआर्थाहोअसोसो॥मूळयया॥५७॥ प्रबळलोचोमेरो॥पिंपळाकावडाचियापरी॥जैपारंविश्यामाझारी
 ॥डाहळियअसनी॥५८॥ तेविंविगाधनजया॥संसारनरुयया॥आधीचिआधीरवांदिया॥हेहीनाहो॥५९॥ तरीउध्वोहोकेडो
 ॥शोरवाचेमाहोडे॥दिसतातिअणडे॥सासिबले॥६०॥ जालेगगनचिपालवये॥कांवारामांडलारुखाचेनिआये॥नानाअव
 स्थेचाये॥उदयलाअसे॥६१॥ ऐसाहाएक॥विश्वाकारविदक॥उदयलाजाणरुख॥ऊर्ध्वमूळा॥६२॥ आताउध्वयाकवण॥ये
 थेंमूळतेकिल्लक्षण॥काअर्थोसुखपण॥शारवाकेंसिया॥६३॥ अथवादुमायया॥आधीजियोसुखिया॥तियाज्ञेणकेंसिया॥उ

पार. ओ. ४४ आकर्णजे. ओ. ४७ नाणे. ओ. ५६ शाडूळ. ओ. ६१ पांचेलिये. आ. ६१ अवस्थात्रयं. ७

ध्वंशास्वा ॥ ६४ ॥ आणि अमृतहा ऐसी ॥ प्रसिद्धी कायसी ॥ आत्मविद विलासी ॥ निगणिकेला ॥ ६५ ॥ हें आघवे विबरो ॥ तुझे प्र-
 तीती सिफावे ॥ तैसे नि सांगों सोलिवें ॥ विन्यासों ॥ ६६ ॥ परी ऐवें गा सुभगा ॥ हा प्रसंग असे तुज चि जोगा ॥ कानचिकरी हो सवो
 गा ॥ हि ये आधिल्या ॥ ६७ ॥ ऐसं प्रेमसे सूर फुरें ॥ बोलिले जवया दवोरें ॥ तंव अवधान अर्जुनाकारो ॥ मूर्त जालो ॥ ६८ ॥ देव निरू-
 पितो तेथें कुलें ॥ येवढे श्रीते पण फाकले ॥ जेस आकाशें खेव पसरिलें ॥ दाहो दिशो ॥ ६९ ॥ श्रीकृष्णोक्ति सागरा ॥ हा अगस्तीचि दु-
 सरी ॥ लुणो निघांत मरों पाहे एकसरा ॥ अवधेयाचा ॥ ७० ॥ ऐसी सोय सांडु निखवळिली ॥ आकडी अर्जुनी देवें दिखली ॥ तेथ जा-
 ले नि सुखे केली ॥ कुरवडीतया ॥ ७१ ॥ श्री
 छंदोभियस्य पणोभियस्त वेदस वेद वित् ॥ १ ॥ दी० मग द्वाणे धन जया ॥ तें उर्ध्वगत रूप द्या ॥ तें उर्ध्वरेचिका जया ॥ उर्ध्वतगमे
 ॥ ७२ ॥ येद्वीमध्योर्ध्व अधा ॥ हे नाहीं जेथ मेद ॥ अहयासी एक वट ॥ जया वारी ॥ ७३ ॥ जो नाई किजतानाद ॥ जो असो रम्य म कर द ॥
 जो आंगाधिला आनद ॥ सूर ते विणा ॥ ७४ ॥ जया जे आन्हा पोरें ॥ जया जे पुढें माघो ते ॥ हरये वीण देखते ॥ अहश्य जे ॥ ७५ ॥ उ-
 पाधीचा दुसरा ॥ घालितां वोपासिरा ॥ नामरूपास सागरा ॥ होय जयते ॥ ७६ ॥ जातु होया विहीन ॥ नुसर्धो निज्ञान ॥ सखा मरले
 गरान ॥ गाळी वजे ॥ ७७ ॥ जे कार्य नाकारण ॥ जया तु जे नायेक पण ॥ आपण या जे जण ॥ आपणचि ॥ ७८ ॥ ऐसे वस्तु जे सांचें ॥ तें ऊ-
 र्ध्वगाथात रूचें ॥ तेथ आरधेणें मूर्तीचें ॥ तें ऐसं असे ॥ ७९ ॥ तरी माया ऐसी रव्याती ॥ नमाले चयया आर्या ॥ हे वाझे चीसंतती ॥ वा-
 नणे जे सें ॥ ८० ॥ तैसी सतना असत होये ॥ जे विचारानें नामन सोहे ॥ ऐसे या परी आहे ॥ अनादि द्वाणती ॥ ८१ ॥ जे नाना तला वि-
 मादुस ॥ जे जगदस्वमाचें आकाश ॥ जे आकार जगानें दुस ॥ घडो केले ॥ ८२ ॥ जे भवदुमबीजका ॥ जे प्रपंच विप्रसृष्टिका ॥ विप्र-
 णतः ओ ६९ इये अर्थी ॥ ओ ७० तो ॥ ओ ७१ दिसते निविण दिसते ॥ ओ ८० कां ॥ ओ ८१ प्रपंचाचि ॥ ७२

रीतज्ञानदीपिका॥सांचलीजो॥८३॥ तंमायावस्तुचातयां॥असंजसेनिनाहां॥मगवस्तुप्रमाचिंणाहां॥प्रकटहोयो॥८४॥ जेव्हाआ
 पणयांआलीनिदा॥करीआपणपंजेविमुग्ध॥काकाजकीआणीमंद॥प्रभादीपो॥८५॥ स्वमीप्रियापुंदतरुणांगी॥निंदलीचेव्रउ-
 निवेगां॥आलिंशिलेनिवोणआलिंगा॥सकासकरी॥८६॥ तेंसीस्वरूपजालीमाया॥आणिस्वरूपनेणजेयनंजया॥तेचितरु-
 यया॥मूळपहिले॥८७॥ वस्तुसिआपलाजोअबोध॥तोउर्ध्वीआढळेंकंद॥वेदांतीदाचिमिह॥बीजभाव॥८८॥ यनअज्मन
 सुषुप्ती॥तोबीजाकुरभावस्वणती॥येरस्वप्नहनजायुती॥द्राफळभावितयेना॥८९॥ ऐसीययावेदांती॥निरूपणभाषामतीती॥
 परीतेंअसोप्रस्तुती॥अज्ञानसूळ॥९०॥ तेंउर्ध्वआत्मानिमळें॥अर्धाध्वसूचितामूळें॥वळियाबांधानिआळें॥मायायोगाचं॥९१॥
 मगअधिलोसंदेहांतरे॥उठितीजियअपार॥तेंचापामधे इनिआगारे॥खेलावती॥९२॥ ऐसंभवादुभानेंमूळ॥हेंउर्ध्वीकरीबळ
 ॥मगआश्रियाचेंबळ॥आधिदावी॥९३॥ तेंउर्ध्वचिहूत्तोपहिले॥महतत्त्वउभलले॥तेपानेवालेंदुल्ह॥येकनिघो॥९४॥ मगसल
 रजतमात्सुक॥त्रिविधअहंकारजोयक॥तोतिदणाअमोमुख॥डीरफुटा॥९५॥ तोबुद्धिचोघोरुनिआगारी॥मिदाचीहृदीकरा॥ते
 थमनचेंजळधरी॥सांजेपणें॥९६॥ ऐसामूळानियागादिका॥विकल्परसकोवळिका॥चित्तचतुष्टयडाहाळिका॥कोभिजेतो॥९७॥
 ॥मगआकाशवायूद्योतक॥आपपृथ्वीहेपाचपाक॥महाभूतानेंसुरास॥सरळेहोती॥९८॥ तेंसीथोत्रादितन्मात्रो॥तियेअगव-
 सागभपत्रें॥लुकुलुळितेंविचित्रें॥उमळतेणा॥९९॥ तेथशब्दाकुरवरीयडी॥श्रीवावादींदहडी॥होतोफरितकांडेनकुडी॥आका-
 शेचि॥१००॥ अगतचेंचेंलपल्लुवा॥स्पशांकुरीयेतीथाव॥तेंथबांबळपडेअभिनव॥विकारांचे॥१०१॥ पावीरूपपत्रणालीवेली॥च
 क्षलांबतेकांडेघाली॥तेवेकींच्यामोहतामली॥पान्देलीजाये॥२॥आणिरसाचेंआंगवसें॥वाटतावेणेंबहुवसें॥जिद्धेआर्तिचा

पाठ. ओ. १२ आंधळां. ओ. १३ आणियचें. ओ. १४ दाक्ष. ओ. १५ डाळ. ओ. परबडा. ओ. १६ वेको. ७

असोसं॥नियतीवंचं॥३॥तैसंचिकोमेलंनिगंधे॥घ्राणाचिडिरिथवंबांधे॥तेथतळघेस्वानंदं॥प्रलोभाचा॥४॥एवमहदादिअहं
 बुद्धि॥मनमहाभूतसमृद्धि॥इयेसंसारचिअवधि॥मासनजे॥५॥किंबहुनाइहीआटे॥आगीहाअधिकफांटे॥परिशिंपोनि
 येवटेउमठे॥रूपंजैविं॥६॥कांसमुद्राचेनिपसारे॥वरीतरंगतअसारे॥तैसंब्रह्मविहोयवृक्षाकारे॥अज्ञानमुख॥७॥आतां
 याचाचिहाविस्तार॥हाचियथोपेसार॥जैसाआपणेंचिस्वप्नोपरिवार॥येकाक्रिया॥८॥परितेंअसोहंऐसें॥कावरेझाडउससे॥
 ययामहदादिआरवसें॥अधोशारवा॥९॥आणिअमृत्यऐसेंयथोते॥झणनजेजाणते॥तेंहीपरिसहोयेथे॥सांगिजेल॥१०॥
 तरिअमृत्यझणिजेउरवा॥तोवरीएकसारिखा॥नाहीनिर्वाहययाहीरुखा॥प्रपंचरूपासी॥११॥जैसानलोटासण॥मेघहोयना
 नावर्ण॥कांविजूनसेसंपूर्ण॥निमेषभरी॥१२॥कायनथापदादळा॥वरीलयाबेसकानाहीजळा॥कांचित्तजैसेंव्याकुळा॥माणुसा
 चें॥१३॥तैसोचिययाचीस्थिती॥नाशतजायझणझणाप्रती॥झणोनिथयतेंझणती॥अमृत्यहा॥१४॥आणिअमृत्ययेणेंना
 वों॥पिंपळझणतीस्वभावे॥परितोअभिप्रायनोहे॥श्रीहरीचा॥१५॥येहूवोपिंपळझणतोविरवां॥भियागतीदेखिलोअसेनकी॥
 परितेंअसोकायलोकिंका॥हेतुकाजा॥१६॥झणोनिहाप्रस्तुत॥अलौकिकपरिसांगंथा॥तरिझणिकलेचिअमृत्य॥बोलिजेहा॥१७॥
 ॥आणीकहीयेकथोर॥यथाअव्ययत्वाचाडगर॥आधीपरीतोमीतर॥ऐसाआहुं॥१८॥जैसामेघाचेनितोडें॥सिंधूएकेआंगेकाटे
 ॥आगिनदीयेरीकडे॥प्रारितीचिअसनी॥१९॥येथबोहटेनाचटे॥ऐसापरिपूर्णचिआवडे॥परितेंफुलजवबुधुड॥मेघानदीचि॥
 ॥२०॥ऐसीयारुखाचेंहोणेंजाणें॥नतकेंहोतेंनवलिलेपणें॥झणोनिथयतेंलोकझणो॥अव्ययहा॥२१॥येहूवीदानशीळपुरुषा॥वे
 चरूपणेंचिसंचक॥तैसाव्ययेंचिहाकरवा॥अव्ययगमे॥२२॥जातोंवेगेंबहुवसें॥नवचेकाभूमीरुतलेंअसो॥एथचेंचक्रदिसे॥जिया
 पाठ॥ओ॥५॥महदहं॥ओ॥११॥मृत्य॥ओ॥१६॥घडनां॥ओ॥१८॥असे॥

परी॥ २३॥ जैमं कालातिक्रमेजं बांछे॥ तैमं कुटीरावजयगळे॥ तैयकोडीवरीउमाळे॥ उठती आणिक॥ २४॥ परीयेकीकेयबागेली
 ॥ शारवाकोडीकेयवांजाली॥ हें नेणजेजेविउमललीं॥ आषाढअंशे॥ २५॥ महाकल्याचाशेवदीं॥ निंदेलियउमळतीसुधी॥ तैस
 चिआणिशिवेदांगउठी॥ सोमिन्नले॥ २६॥ संहारवातेप्रचंडे॥ पडतीप्रलयार्ताचींमालंडे॥ तवकल्यादिचौजुबाडे॥ पाल्हेज
 ति॥ २७॥ रिगेमन्तूरमनुपुटे॥ वंशावरीवंशाचेमांडे॥ जैसाइक्षवृन्दीकांडे॥ नकोडे॥ जिकेजेविं॥ २८॥ कलियुगांतिकोरडी
 ॥ चहुयुगांचींमालेसाडी॥ तवकृतयुगातीचिपेलीदेवडी॥ पडेपुढती॥ २९॥ वर्ततेवर्षजाये॥ तेंपुढिलामुब्दहारिहोये॥ जैसा
 दिवसजातकीयेतआहे॥ हेंचोजेवना॥ ३०॥ जैशावारियाचाझूळका॥ सांदादाउवानव्हेदेखा॥ तैसियाउठतीपडतीशारवा॥
 नेणोकिती॥ ३१॥ एकीदेहाचीडिरीतुटे॥ तवदेहाकुरीबहुवीफुटे॥ ऐसेनिमवतरुहावोटे॥ अव्ययेसा॥ ३२॥ जैसेवाहतेपाणीजाय
 वेगे॥ तैसेंचआणिकभिकेमोगे॥ येथअसतचिअसिजेगे॥ मांनिजेसत॥ ३३॥ कालागोनिडोळाउघडे॥ तंवकोडीवरीघडेमो
 डे॥ नेणतयातरंगआवडे॥ नित्यऐसा॥ ३४॥ नानावायसाएकबुळंदोहींकडे॥ डोळाचाळिताअपांडे॥ दोन्हीआथीऐसाप
 डे॥ ऋमजेविंजगा॥ ३५॥ पैभिं गीरीनिधियेपडली॥ तेगमेभूमीसोजैसीजडली॥ ऐसावेगातिशयशुली॥ हेतुहोये॥ ३६॥ हे
 बहुअसोझडती॥ आधारेभोवडितांकोलती॥ तेदिसेजेसीआयती॥ चक्राकार॥ ३७॥ हाससारवृक्षतेसा॥ माडतमाडत
 सहसा॥ नदेखोनिलोकापिसा॥ अव्ययमानी॥ ३८॥ परियथाचवेगदेखे॥ जोहाक्षणीकऐसाबोळरेव॥ जाणेकोडिवेळनिमि
 रेवें॥ होतजात॥ ३९॥ नाहींअज्ञानावाचनिमूळ॥ यथाचैअभिलेपणटवाळ॥ ऐसंझाडचिसिनसाळ॥ देखिलेजेणे॥ ४०॥ तथा
 तेंगापडसुता॥ भीमवदनाहोपणेंजाणता॥ पैवाग्ब्रह्मीसिद्धता॥ वद्यतोचि॥ ४१॥ योगजाताचेजोडले॥ तथायेकासींचिउप

पाठ- ओ- २६, उद्भवलिङ्ग- ओ- २९ सर्वे- ओ- ४० सामिन्नलेपण-

५

५

५

५

योगागेलें ॥ किंबहुना जियालें ॥ ज्ञानही तें ॥ ४२ ॥ हे असो बहुबोलणें ॥ वानिजल तो कवणें ॥ जो भवरु स्वजाणें ॥ उरिवे एस ॥ ॥ ४३ ॥ श्लो० अथ श्रुध्वं प्रसूता सस्य शारवा गुणप्रहदा विषय प्रबालाः ॥ अथ श्रुमूलान्यनुसंतानि कर्मानुबंधी निमनुष्य लोके ॥ २ ॥ टी० मग यथाचिप्रपचरूपा ॥ अधोशाखिया पादपा ॥ डाहा क्रिया जातो उमण ॥ उर्ध्वोही उज्ज ॥ ४४ ॥ आणि अधि फाकली डाबें ॥ तिये होतो मूळें ॥ तथाही तळी पयळें ॥ वेल पालव ॥ ४५ ॥ ऐसे जे आह्मी ॥ स्मणितले उपक्रमी ॥ तेही परिसें संग मी ॥ बोलौ सांगों ॥ ४६ ॥ तीरे बहुसुखें अज्ञानें ॥ महदादिकां शासनें ॥ वेदांची श्रवणें ॥ यंत्रुनियां ॥ ४७ ॥ परि आधीं तुवसे द ज ॥ जरा युजइज अंज ॥ हे बुदोनि महासुज ॥ उवती चारी ॥ ४८ ॥ ययाए कैकचे नि आगवै ॥ चोन्याशील सधा फुटें ॥ ते वेळीं जीवशाखी फाटें ॥ मेघचि होती ॥ ४९ ॥ प्रसवन शारवा सरळिया ॥ नाना स्त्री डाहाळिया ॥ आड फुटती माळिया ॥ जातो चिया ॥ ५० ॥ स्त्री पुरुष नपुंसकें ॥ हे व्यक्तिके दांचे टके ॥ आंदोळती आंगिकें ॥ विकार मारे ॥ ५१ ॥ जैसा वर्षा काळ गनी ॥ पाल्हे जेन वधनो ॥ तैसें आकार जात अज्ञानी ॥ वेली जाये ॥ ५२ ॥ मग शाखांचे नि आंग मारे ॥ लुवो नि गुंफती परस्परें ॥ गुणक्षोभांचे वारे ॥ उदय ज ती ॥ ५३ ॥ तेथ तेणें अचाटें ॥ गुणांचे नि झड झडाटें ॥ तिहां गयीं हाफाटें ॥ उर्ध्वमूळ ॥ ५४ ॥ ऐसा रज्जा चिया झड्डका ॥ झडाडितो आगळिका ॥ मनुष्य जातीं शाखा ॥ थोर वती ॥ ५५ ॥ निया उर्ध्वोचि अधी ॥ माझारींचे कोदा कोदी ॥ आड फुटती रवादी ॥ चतुर्वर्णांचा ॥ ५६ ॥ तेथ विविध निषेध सपल्लवा ॥ वेद वाक्यांचे अभिनव ॥ पालव डोलीनी वारवा ॥ आपुला लिखा परी ॥ ५७ ॥ अथ काम प्रसू ॥ अग्रवनेथी थारे ॥ तेथ क्षणिके पदांतरें ॥ इह भोगाचीं ॥ ५८ ॥ तेथ प्रवृत्तीचे नि वृद्धी मों ॥ स्वांकरे जतीं शमाश्रमों ॥ नाना क्रमांचे रवांबे ॥ नेणों किती ॥ ५९ ॥ नेवीं विभोग क्षय मागिलें ॥ पडतें तें दांतीं चि बुडसळें ॥ तव पुढा वाटि पेलें ॥ नवया देहाची ॥ ६० ॥ अण पाठ ॥ ओः ४८ जार जो द्विसमणिज ॥ ओः ४९ अणगटें ॥ अधो फुटें ॥ ओः ५० फाटती ॥ ओः ५१ आणती तया ॥ ओः ६० देहाची ॥ ५१

णिशब्दादिकस्फुटहावे॥ सहजगेंहवावे॥ विषयपल्लवने॥ नित्यहोती॥ ६१॥ ऐसेंरजोवातेप्रचंड॥ मनुष्यशाखांचेमांदोडे॥ वादती-
 तोएथरूढे॥ मनुष्यलोका॥ ६२॥ नैसांचितोरजाचावारा॥ नावेकधरीवेसर॥ मगवाजोलागेधोरा॥ नमाचामो॥ ६३॥ तेथवायांचि-
 या मनुष्यशाखा॥ नीचवासनाआधारे॥ पाल्हेजतोडाहाळिका॥ कुकर्मोचिया॥ ६४॥ अप्रवृत्तीचेवृणवाळे॥ कौभनिघती-
 सरुंछे॥ घेतपानपलवडां॥ प्रमादानी॥ ६५॥ बोलतीनिषेधनियमो॥ जियाकचायजुःसोमे॥ तोपालातयायुमो॥ टक्यावरी॥
 ६६॥ प्रतिपादितोअभिचार॥ आगमंजपरमार॥ तेंहापानांघेतीनसर॥ यासनावेली॥ ६७॥ तंवतवहोतीथोरुडे॥ अकर्मानी
 तळबुडे॥ आणिजन्मशाखापुढेपुढे॥ घंतीयांवा॥ ६८॥ तेथचाडाळ्यादिनिरुहा॥ दोपजातीचाथोरभादा॥ जाळपडेकर्मभ्रष्टा॥
 भुजोनिया॥ ६९॥ पशूपक्षीमूकर॥ व्याघ्रदक्षिणविरवार॥ हेआडशाखाविकर॥ थोरावती॥ ७०॥ परिशाशाखापाडवा॥ स-
 वीगीहीनित्यनवा॥ नरकभोगयावा॥ फळाचातो॥ ७१॥ आणिहिंसाविषयपुढारी॥ कुकर्मसंगेंधुरधुरी॥ जन्मवरीआगारी॥
 वादतीचिअसे॥ ७२॥ ऐसेहोतीतरुत्तण॥ लाहलोष्टपाण॥ इयाखांदियातेवींचिजाण॥ फळेहोहेचि॥ ७३॥ अजुनायाअव-
 धारी॥ मनुष्यालागोनिइयापरी॥ वृद्धिस्थायरांतवरी॥ अधोशाखाची॥ ७४॥ ह्मणोनिजेमनुष्यडाळे॥ इयेंचिजाणावींआधां-
 चींमूळें॥ जेएथुनिहापघळें॥ ससारतरू॥ ७५॥ कैदहीउर्ध्वचिंपायी॥ सुदलमूळपाहता॥ आधींचियामध्यस्था॥ शाखाड-
 या॥ ७६॥ परितोमसीसाल्वी॥ स्फुटतुद्रुतात्पकी॥ विरूढतोयाशाखा॥ ७७॥ आणिवेदत्रयाचियापाना
 ॥ नयेअन्यत्रलागेंअजुना॥ जेसुनुष्यावाचुनिविधाना॥ विषयनाही॥ ७८॥ ह्मणोनितनुमानुषा॥ इयाउर्ध्वमूळेंनिजरीशा-
 रवा॥ तरीकर्मवृद्धीसंदरवा॥ इयेचिमूळ॥ ७९॥ आणिआनीतरीझाडों॥ शाखावादातामुळेगादी॥ मूळगाढेतववादी॥ पेस-
 पाव॥ ओ॥ ६३ जेथवां॥ ओ॥ ६५ फोक॥ ओ॥ ६९ जाणें॥ ओ॥ ७० निकर॥

आथी ॥ ८० ॥ तं संचिदयाशरीरा ॥ कर्म तं वेदहासं सारा ॥ अग्निं देहं न वद्व्यापारा ॥ नाह्मणोचिनये ॥ ८१ ॥ ह्यणो नि देहं मालुषं ॥ इयं
 मूळं होती न चुके ॥ ऐमं जगज्जनके ॥ बोलिलें तें ॥ ८२ ॥ मगतमाचें तें दारुणा ॥ स्थिरावले या वा उधाण ॥ सत्वाची स्रष्ट सत्राणा ॥
 बाहु दुळी ॥ ८३ ॥ तें याचि मनुष्याकारा ॥ मुळां सवासना विद्यती आरा ॥ येउनि फुटती कोंबारा ॥ स्फुटतां कुंगी ॥ ८४ ॥ उकलतें नि
 उन्मेषं ॥ प्रज्ञाकुशल तें चित्तरे ॥ दिश्यानि यती निमिषं ॥ बाबें जुनी ॥ ८५ ॥ मतीचें सोदवावे ॥ यालितो स्फूर्तो च्यावे ॥ बु
 द्धिसंकाश घेयावे ॥ विवेकाचेनी ॥ ८६ ॥ तैथ मेधारसें सगर्भा ॥ आस्थापत्रां संबांवा ॥ सरळ नि यती कें म ॥ सहृतीचें ॥ ८७ ॥ सदाचा
 सचिया सद्दसा ॥ टका उठती बहवसा ॥ घुमघुमिती घोषा ॥ वेद पद्याचा ॥ ८८ ॥ शिष्टागम विधानो ॥ विविध यागवितानें ॥ इयेपा-
 नावरी पानें ॥ पालेजती ॥ ८९ ॥ एशाच मद्भीघोमाळिया ॥ उठती तपाचिया डाहाळिया ॥ देती वैराग्यशारवाको वळिया ॥ वेल्हाक
 पणें ॥ ९० ॥ विशिष्टां व्रतांचें फोक ॥ धाराचा अणगदीं तरव ॥ जन्मवेगें उर्ध्वमुख ॥ उंचावती ॥ ९१ ॥ माजि वेदाचा पालादाद ॥ तो क-
 री म्माविघेचा झडझडाद ॥ जंववाजें अचाट ॥ सत्वा निळ ॥ ९२ ॥ तैथ धर्म डाक बाहाळी ॥ दिसती जन्मशारवासरळी ॥ तिया आड फाट
 ती फळी ॥ स्वर्गादिकी ॥ ९३ ॥ पुढें उपरती रागें लोहिवा ॥ धर्म मोक्षाची शारवापालवी ॥ पाल्हा जतें नित्य नवी ॥ वादती विअसे ॥ ९४ ॥ पें
 र किंचिदादि ग्रहवर ॥ पितृभूषि विद्याधर ॥ हे आड शारवाप्रकार ॥ पैसे येती ॥ ९५ ॥ याहा पासून उचवडें ॥ गुदले फळाचे निबुडें ॥ इद्रा-
 दिक ते मांदोडे ॥ थोर शाखांचे ॥ ९६ ॥ मगत याही उपरी डाहाळिया ॥ तपोधनो उंचावळिया ॥ मर्चि कश्यपादि इया ॥ उपरी शाखा
 ९७ ॥ एवमाळो वाळी उचरोत्तर ॥ उर्ध्वशाखाचा पिसार ॥ बुडां माना अग्नीयोर ॥ फळाढ्यहा ॥ ९८ ॥ वरी उपरि शारवाही पावी ॥ येतो फ-
 लभारजे किरीटी ॥ ते ब्रह्मेशांत अणयदीं ॥ कोंम नि यती ॥ ९९ ॥ फळाचे निवो झेपणें ॥ उर्ध्वविंवा डेडुणें ॥ जवमाघो तें बैसणें ॥ मूळी-
 पाठ ॥ ओः ८९ पांजरती ॥ ओः ९४ लाह्या लाहत ॥ ओः ९७ ज्ञानी ॥ ओः ९८ पणें ॥ १००

चिह्नोयो॥२०॥ प्राकृताहीनरीरुखा॥ जफकंटाटलीहोयशारवा॥ तेवोवांडलंदिरवु॥ बुडासिये॥१॥ तेंसेंयेथुनिहाअघवा॥ संसारतरू
 चाउठावा॥ सियेमुळींठेकतीपांडवा॥ वाहतेनिजांने॥३॥ द्युणांनिब्रह्मशानापसों॥ वाटणनाहोजीवांने॥ तेथुनिमगवरोतें॥ ब्रह्मचिकें॥३॥
 परिहेअसोरोसे॥ ब्रह्मादिकतेआंगवसे॥ उर्ध्वमूकासरीसे॥ नतूकतीगा॥४॥ आणिकहूशास्वाउपरना॥ जियासनकादिकनामोविरव्या
 ता॥ तियाफकींमुळीनाडकता॥ भरलियाद्वी॥५॥ ऐसीमनुष्यापासूनिजाणावी॥ उर्ध्वब्रह्मादिशेषपालवी॥ शाखाचीवाटीबरवी॥३॥
 नावेंपै॥६॥ पायाउर्ध्वीचियाब्रह्मादि॥ मनुष्यत्वाचिहायआधी॥ द्युणांनिइयेंआधी॥ द्युणीतलींमुळे॥ ७॥ एवंतुजअलौकिक॥ हाअर्थ॥ येशा
 रवा॥ सांगीतलाभवरूखा॥ उर्ध्वमूक॥ ८॥ आणिअधिचिंहिमुळे॥ उपपत्तीपारसविलीसविवेके॥ आतांपरिसउच्यूके॥ केसेनिहा॥१॥ ब्रह्म
 नरूपमस्येतथोपलभ्यतेनातोनाचिर्दनचसम्यक्तित्वा॥ अश्वत्थमनसुविरूढमूलमभगशस्त्रेणट्टेनछिन्वा॥३॥ टो॥ परितुझाहनपाटी
 रोसेंगमेलकिरीटी॥ जेयवेदंझाडुसाटी॥ गोसेकायिअसा॥१०॥ किंब्रह्मयाचासवदरी॥ उर्ध्वशाखाचीथोरी॥ आणिमूळतंवीनराकारी॥३॥
 धीअसे॥११॥ हास्थवराहीनळी॥ फाकतअसेअधीचांडां॥ भाजिधावतसंदुजासुळीं॥ मनुष्यरूपी॥१२॥ ऐसागाढाणिअफाढा॥ आतां
 कोणकरोययासेवढा॥ तिरझाणिहाहकवढा॥ धरसीमावा॥१३॥ तिरहाउच्यूकावयोदूश॥ येथसायासचिकारियासा॥ कायबाळाबागुलदेशी
 दवडावाहो॥१४॥ गंधर्वदुगकायपाडावी॥ कायशशिषाणमोडावी॥ होआवेभगनाडावे॥ वरपुण्यकी॥१५॥ तेंसासंसारहावीसा॥ रूखनाही
 सातोकारा॥ माउच्यूळणींदारा॥ कार्थसातरि॥१६॥ आह्वांसगीतलीजेपरी॥ मूढडाळाचीउजरी॥ तेंवाओचीघरपरी॥ लंकुरजेसी॥१७
 कायकीजेनिचेदंभेपणी॥ स्मृतीचींतिथेवोचूणी॥ तेंसीजाणतेकाहाणी॥ दुगळेंचित॥१८॥ वांचूनिआह्वांनिरूपिलजेंसें॥ ययाचेअचकमूळ
 असेतेंसें॥ आणितंभाचिजरीहाअंस॥ भांचाकरा॥१९॥ तरिकोणाचेनिंसांतना॥ निपजतीतयाउच्यूळणे॥ कायफुकिलियागानें॥ जाइजेलगा॥२०

पाठ ओ० ६ लागीं न० ओ० १ उपपत्तीदादितो ओ० ११ द० ओ० १४ उच्यूकावायादोषे ओ० १८ जायां ओ० १८ उगळे

दृष्टौ नैपेधनं जया॥ आहो विनिर्लेख्यते माया॥ कामवीचं ननु पराया॥ चोद्य रिलज्जेसा॥ २३॥ मृगजळा विधातकी॥ तयो दिवदुस्तु नव्याहका॥ का
 चूनि ते पोषिणये साकी केळी॥ ललविस्तीकाई॥ २४॥ मूळ अज्ञान चित्तं वलटिकें॥ मातया चैकाग्र्ये हे कुतें॥ दृष्टौ नि संसार सवसलके॥ वादो
 चिया॥ २५॥ आणि अंतयानादी॥ रसे बांलिजे कांही॥ तें ही सा चिण्याही॥ एके पो॥ २६॥ तस्ये बोध जवना हो॥ तं विनोद काय अंत आहो॥ कीरात्री-
 मरे तं वणहे॥ तया आरौते॥ २७॥ तें साज वपायी॥ विवेक धुवी साया॥ तंव अंत नाही अश्वत्था॥ भव रूप धया॥ २८॥ वाज ते तं वारे निवांत॥ न
 राहे जी धि चेतया॥ तं वत रातां अंत॥ दृष्टा वीचकी॥ २९॥ दृष्टौ नि मय जें हारपे॥ तें मृगजळा भासलो पो॥ काम सा जाय दोपो॥ माल वळे नी॥
 २८॥ तें सें मूळ बीज अविद्या रावो॥ तें ज्ञान जें उमं होयो॥ तें चयया अंत आहे॥ ये हवी नाही॥ ३१॥ तें रोचि हा अनारी॥ ऐसी हि अश्वीषा बरी॥
 ते आळ नाही अनुरोपी॥ बोळा तें यया॥ ३०॥ जें सांसार वृक्षा चाटाई॥ सांचे कारतं वनाही॥ माना ही तया आदिकाई॥ कोण हो इन्हा॥ ३१॥ जो सा-
 रजे थुं नुपजे॥ तया ते आदि हं साजे॥ आता नाही चित्त दृष्टा णजे॥ कोवु निया॥ ३२॥ दृष्टौ नि जचे ना आहो॥ ऐसिया संगो कवण मायो॥ याला
 गीना ही पणो चि होये॥ अनादि हा॥ ३३॥ वादो चिया लोका॥ केन्वी जन्म पत्रिका॥ नसी नीळ मूमिका॥ कें कल्पुंगा॥ ३४॥ व्योम कुसुमं चा पा
 डवा॥ कवणें दंतोडा वा॥ दृष्टौ नि ना ही ऐसिया मवा॥ आदिका चि॥ ३५॥ जें सें घटा चें ना ही पण॥ असती असे केले निविणा॥ तें सासु मूळ
 वृक्ष जाण॥ अनादि हा॥ ३६॥ अजुना ऐसे नि पाही॥ आद्यंत यया सी नाही॥ माजि स्थिती आसा संकां ही॥ परि वळते गा॥ ३७॥ ब्रह्म ग
 रो ह नि न निगे॥ आणि समुद्र हीं कीर न रगे॥ तरि साजि दसे वा उगे॥ मृगां बुज सें॥ ३८॥ तें सा आद्यंत कीर नाही॥ आणि सा च ही नो हे क
 ही॥ परी लटिके पण न्वी न वाई॥ पटिया से गा॥ ३९॥ नाना रंगीं गज बजे॥ जें सें द्रुधुं दे रिजे॥ तें सा ने पतया अपजे॥ आहो ऐसा॥
 ४०॥ ऐसे नि स्थिती चिये वेळे॥ भुलवी अज्ञान चें डोळे॥ लाघवी हर मेखळ॥ लोक जे सा॥ ४१॥ आणि न समने चि शां भिका॥ व्यस्ती हे स
 पाव॥ ओं-२० गुरो पी॥ ओं-४२ नव्हती॥

॥ ७ ॥

॥ ४ ॥

॥ ५ ॥

तैसीदिसोकां॥ तरीदिसणेंहीक्षणाएक॥ होयजाये॥ ४२॥ स्वमीहीसामिलेंजितवें॥ तरिनिवाहाकाएकसांशिवें॥ तेंविआभासहाक्षणिक्के॥
 रितनिगा॥ ४३॥ देवताआहेआवडे॥ घेउजाइजेतरिनातुडे॥ जैसातिकर्जाजेमाकडे॥ जकासांजि॥ ४४॥ तरंगभंगसडीपडे॥ विजुहीनपुरहोडे॥
 आभासामिनेणपाडे॥ होणेंजणेंगा॥ ४५॥ जैसाग्रीष्मशेषीचावारा॥ नोणेंजैसमोरकीपाठमोरा॥ तैसीस्थितोनाहीतरुवरा॥ भवरूपाय
 या॥ ४६॥ त्वआदिनाअंतस्थिती॥ नारूपययासिआयी॥ आतांकायसीकुंथी॥ ४७॥ आपुलियाअज्ञानसांठें॥ नव्हताथाव
 लकिरीदी॥ तशेआतांआत्मज्ञानाचालोदी॥ खांडेनिगा॥ ४८॥ वांचुनिज्ञानेवीणाएके॥ उपायकारिसीजितुके॥ तिहींगुंफासिअधिके॥ रुखी
 ड्या॥ ४९॥ सर्गाक्तीगवांरोरगदी॥ ययाहिंडावेंरुखीअधि॥ ह्यणेंनिमूळाचअज्ञानछोदिं॥ सम्यक्ज्ञानें॥ ५०॥ येहवतीरीयेचियाउरगा॥
 जोगमेळवितोपैगा॥ तोशिणार्चवोउगा॥ केलाहोय॥ ५१॥ तरावयासुगजकाचिंगगा॥ होणिलोगांधावतांदगा॥ माजिवाहळेंबुडजे
 पैगा॥ सावजेवि॥ ५२॥ तेंविनाथिलियासंसा॥ उपदेंजैचनैयाविरा॥ आपणंपेळोपवारा॥ विकापीजाये॥ ५३॥ ह्यणेंभिस्वमीचियाया
 औषधेचेविधिपनंजया॥ तेंविअज्ञानमूळायया॥ ज्ञानचिखडुगा॥ ५४॥ परितेंचिलीलापरजवे॥ तेंमेवरायानेनवे॥ अपंगबळहोअवें
 ॥ बुद्धीसिंगा॥ ५५॥ उठिलेनिवेरायजणें॥ हात्रिवर्गकोसाडणें॥ जैसेचमुनियारूणें॥ आतांचिगेलें॥ ५६॥ हाठायवरीपाडवा॥
 पदार्थजानेआघवा॥ विटवितोहीआत्मा॥ वैरायलाठ॥ ५७॥ मगदेहाहंतेचोनदें॥ सांडुनिएकेचिवेळे॥ यत्यकबुद्धीकरतळें॥ हा
 तयसावें॥ ५८॥ निसर्कोविकेसाहणें॥ जैब्रह्माहमस्मिबोधेंसणणें॥ मगपुरतेनिबोपेंउठणें॥ एकलेंचि॥ ५९॥ परिनिधयान्चमुहीवळ॥
 पाहावेंएकदोनिवळ॥ समातुळेंअतिचोखाळ॥ मननेवीरी॥ ६०॥ पाठिहातीयेराआपणयां॥ निदध्यासाएकजालिया॥ पुटदुजनुरेलया
 दा॥ पुरतेगा॥ ६१॥ तेंआत्मज्ञानचेंस्वाडे॥ अहंतप्रभेचेनिवाडे॥ नेदीलुंगकरणकडे॥ भववृद्धासि॥ ६२॥ शरदामसीचावारी॥ जैसा-
 पाठ-ओं-४५-नुपकरे-ओं-४६-मध्य-ओं-५१-नोवावीचिभासा-ओं-५२-जचत-ओं-५३-मया-ओं-५४-ऐसा-ओं-५५-मन-
 ॥ ७॥

केरुदेअंबरा॥ कांडयलारवीआधारा॥ घोटमरी॥ ६३॥ नानाउपवडहोतवेवो॥ नुरेस्वसंभ्रमाचाढवो॥ स्वप्रतीतीधारेत्वाहो॥ क
 रीलतेसें॥ ६४॥ तेव्हांऊर्वकांधोसूका॥ कांअधिचेंहनशाखाडोळें॥ तेंकाहीचिनादिसेसृजळ॥ चांदिणाजेविं॥ ६५॥ ऐसेनिगाविरनाथा
 आत्मज्ञानाचियाखडलता॥ छेदूनियासवाधवत्या॥ ऊर्वसूळतें॥ ६६॥ श्लो॥ ततःपदतत्परिस्मार्गितव्यंस्मिन्गतानिवर्ततेभूयः॥
 तमेवचांदपुरुषप्रदयतःप्रवृत्तिःप्रसूतापुराणी॥ ६७॥ मगइदंतोसवाळले॥ जेमीपणेवीणडाहारले॥ तेंरूपपाहिजेआपलें॥ आ
 पणचि॥ ६८॥ परित्पणार्जेनिआधारें॥ एकचिक्करूनदुसरें॥ मुरवपाहातीगंढारें॥ तैसेंनकोहो॥ ६९॥ हेंपाहणेंऐसेंसवीरा॥ जेसान
 बुडालियाविहिरा॥ मगआपलीयाउगसीझरा॥ भरोनिढाके॥ ६९॥ नातरिआढालियाअस॥ निर्जबबीप्रतिबिंब॥ नेहदेकांभिनभ
 घटासाविं॥ ७०॥ नानाईधनांशसरलेया॥ बन्दीपरतेजेविंआणण्या॥ तैसेंआणेंआपधनजया॥ न्याहाळणें॥ ७१॥ जिद्धेआपलीचिबिंबा
 सणें॥ चक्षुनिजबुबुळदेखणें॥ आहृतयाऐसेंनिरीक्षणें॥ आपुलेंपें॥ ७२॥ कोप्रसोसिमसामिळे॥ गगनगगनावरीलोळे॥ ननापणीप्र
 रेंलेखोळे॥ णणियाचिये॥ ७३॥ आपणेंचिआणयातें॥ पाहिजेजेंअहूतें॥ तेऐसेंहोयनिरुतें॥ बोलिजनुअसे॥ ७४॥ जेपाहिजतेनवी
 णपाहिजे॥ कांहीनेणणाचिजाणिजे॥ आयुधुरुध्वाणिजे॥ जयादायतें॥ ७५॥ तेथहीउपाधीचावोयंबा॥ घेउनिश्रुतिउत्पवितेजिमा॥
 मगनामरूपाचाबडबा॥ कारितीवाया॥ ७६॥ पंमवस्वर्गाउबगले॥ मुमुक्षुयोगज्ञानावळघले॥ पुढर्तनियोंदयांगाले॥ पेजाजेश॥ ७७॥
 मंगराचियापायापुढा॥ पकतीवीतरागहोडा॥ ओलांडेनिब्रह्मपदार्चकमंडडा॥ घालितीमाणा॥ ७८॥ अहंतादिमावाआपुलिया॥
 झाडादेउनिआयेवेया॥ पत्रपेतीज्ञानियेजया॥ मूळयरासी॥ ७९॥ पेंजेथुनीहोयवदी॥ विष्णुपरंपरेचीविरूढी॥ वाढतीआशाजेसीको
 रडी॥ निंदेवाचि॥ ८०॥ जिकंकावस्तूचेंनेणें॥ ऑणिलेंशोरजगाजाणणें॥ नाहींनादिवेलेजें॥ मोतुजगी॥ ८१॥ पाथोतेवस्तुपरहिते
 पाठ-ओं- ६५-जळ-ओं- ६९-वोसंडलिया-ओं- ८०-बेलाडी- ॥ ६५ ॥ ॥ ६९ ॥ ॥ ८१ ॥

आपणपें आपुलें ॥ पाहजे जे सें हिवलें ॥ हिव हिवें ॥ ८३ ॥ आणि कही एकतया ॥ वोळखण असे धनंजया ॥ तरी कांजया से रलिया ॥ येणें निना हू
 ८३ ॥ पोरितया से दती ऐसे ॥ जे ज्ञान सव वसरिसे ॥ महा प्रकयें बुचें जे से ॥ भरलें पण ॥ ८४ ॥ ॥ श्री ॥ ॥ निमोन मोहा जित सुंग दोषा अथात्मानि-
 त्याचि निवृत्त कामाः ॥ दूदें वैमुक्ताः सरवदुःखं संज्ञे गच्छत्यमृताः पदमयं यतता ॥ ५ ॥ टी ॥ ॥ जया पुरुषाचें कामना ॥ सोडो निरोलें मोहमान ॥ व
 र्धती जे से घन ॥ आकाशा तें ॥ ८५ ॥ निव वड्या निष्ठुरा ॥ उर्बा गेजे जें वि सोयरा ॥ तें से नाश वितो विकारां ॥ वेदाळू जे ॥ ८६ ॥ फळ लीकळी उन्म
 को ॥ तैसी आत्मला सें प्रबळें ॥ जयाचि क्रिया टाळें टाळें ॥ गळती आहो ॥ ८७ ॥ अगो लालीया सरवी ॥ देवो लीसे रापकती पक्षी ॥ तें से स्थांडिले
 अघोर वी ॥ विकल्पी जे ॥ ८८ ॥ आईकें सकळ दोष वृणीं ॥ अंकुरी जति जिय मोहनी ॥ तियें प्रदुष्टे चिका हा आणी ॥ नाहीं जया तें ॥ ८९ ॥ सुये दया सार
 सी ॥ शची पळो निजा य आपेसी ॥ गेली देह अहंता तैसी ॥ आवय संवें ॥ ९० ॥ पें आयुष्य ही जा जे वातें ॥ शरीर सोडो जें अभवितें ॥ तें वे निदस रें दने
 सोडिले जे ॥ ९१ ॥ लोहाचे सांकेड परिमा ॥ न जोडे अघार वं जे सा ॥ दैत बुद्धी चातें सा ॥ दुकाळ सदां जया ॥ ९२ ॥ अय सुख दुःखा करे ॥ हं देही जये
 गोचरे ॥ तियें जयां कां स भोरें ॥ होती चिना ॥ ९३ ॥ स्वमी चें राज्य कां सरणा ॥ नो हं हं शाकां सिकारणा ॥ उपवृत्ती च्या जाणा ॥ जिया परी ॥ ९४ ॥ तें से
 सरवदुःख रूपी ॥ दूद जे पुण्य पापी ॥ न घेपी जती सर्पी ॥ गरुड जे सा ॥ ९५ ॥ आणि अनात्म वर्ग नीरा ॥ सोडो नि आत्म रसाचें सीरा ॥ विचरता
 मिजे सा विचारा ॥ राज हस ॥ ९६ ॥ जैसा वर्षा निमृत्ती ॥ आपला रस अंश माव ॥ भागो तो आणो राशि जाळी ॥ बंबासीची ॥ ९७ ॥ तें से आत्म
 फांती साटी ॥ कसु विरसली बारावटी ॥ तें एक वाटिनी ज्ञान दृष्टी ॥ अखंड जे ॥ ९८ ॥ विबहुना आत्म दयाचा ॥ निरार्थी विवेक जयांचा ॥ बुडाला वो
 पंगोचा ॥ सिंधुमा जे सा ॥ ९९ ॥ पें आयवें चि आपुलें पणें ॥ नुरो चितया अभिलषणें ॥ जें से यथु नि पन्हा जाणें ॥ आकाशा नाही ॥ १०० ॥ जैसा अ-
 र्मी चोडो गार ॥ नवें कोणी बीज अंकुरा ॥ तैसा मनी जयाचा विकार ॥ उदय जे ना ॥ १०१ ॥ जैसा काढिल्या मंदराचका ॥ राहें क्षीराब्धी निश्चळ ॥ तै-
 पाठ ॥ ओं ॥ ९४ उपवदलिया ॥ ओं ॥ ९६ चरताति ॥ ओं ॥ ९९ सिंधुसि ॥ ओं ॥ १०० जालें ॥ ॥ ध ॥

समुद्रजयासब्धः॥ कामोर्मिचि॥२॥ चंद्रः कब्धो धा लः॥ चंद्रोऽपि कोणो॥ ततोऽपि सावल्॥ ततोऽपि सेच अवस्वल्॥ नपडे जया॥३॥ हंकिती बोक्ते
असागडो॥ जेवंपरमाणु नुरे वायुपुटो॥ ततोऽपि चार्चवो॥ नावोऽपि जया॥४॥ एवं जेजे कोणो ऐसो॥ केले साना स्व हुतवो॥ तेतथा भिळती
जैसो॥ हेमो हेम॥ तंतान ह्यण सीकोण॥ तनिने अद्यात्स गाजाण॥ जेथ नित्य वस्तु संपादन॥ काम रहित॥६॥ तेथ ह्यणि जेक वणे वाई॥
रेसे ही पुस सीकाही॥ तरी ते पद गानाही॥ वेच, बो॥॥ अह्य पणों दे विजे॥ को जेय ले जाणिजे॥ अमुकें से ह्यणिजे॥ ते जे नव्हे॥ ८॥ श्लो॥
नतद्रासय ते सूर्यो न शशांको न पावकः॥ यद्रतान निवर्तते तद्गाम परममस॥६॥ टी॥ पौंदरीयाचा बवाळि॥ कांचंद्र हने जे उजळि॥ हंका
यबो लो अशसाब्धी॥ प्रकाश जिं॥९॥ तें आपवें चिदि समणे॥ जयत्वे कां न देवणे॥ विषवसा सतसे जेणे॥ लपले नि॥१०॥ जें सें शिंपी पणहार
पो॥ तंव तं वस्वरें होय रूपो॥ कोदरी लोपना संपो॥ फार होइ जे॥११॥ ते सीचंद्र सूर्या द्योने॥ इथें ते जें जेय फारें॥ तिथें जयाचि नि आयतें॥ प्रकाश
ती॥१२॥ ते वस्तु की ते जोराशी॥ सर्व सत्ता त्वक सारसी॥ चंद्र सूर्याचा मानसी॥ प्रकाश जे॥१३॥ ह्यणों निचंद्र सूर्य कडवसी॥ पडती वस्तु-
चा प्रकाश॥ यालागीं ते जें ते जे जे जे॥ तें वस्तुचें अंगा॥१४॥ आणि जयाचा प्रकाशी॥ जग हार पंचद्राकें सी॥ सचंद्र न सचें जें सी॥ दिने द्यौ
१५॥ ना तरी प्रबोधिल येवळे॥ तें स्वर्मीचि डिं डीमावळे॥ कानुरे चि सांज वेळे॥ मृगतृष्णिका॥१६॥ ते साजिये वस्तु चाठायो॥ कोण हीच का-
आसा सनाही॥ तें साह्यो निज धाम पाहो॥ पाठचें गा॥१७॥ पुढत जे तेथ गेले॥ ते न घेती साधोती पाउले॥ महादधी कांसी नले॥ सरिता
स्रोत जें सी॥१८॥ कालवणाचिया कुंजरी॥ सुदलिया लवण सागरी॥ होथि चि ना सागरी॥ परती जें सी॥१९॥ नाना गेलिया अंतराळा
नयेती चि बहिष्काळी॥ नाही तम लोहो निजळा॥ निघणें जे वि॥२०॥ तें विसज सों एक वटा॥ जे जाले ज्ञानेचो स्वट॥ तया पुनरावृत्तीची वाटा॥
मोडली गा॥२१॥ तेथ प्रज्ञा एब्धीचा रायो॥ पार्थ ह्यण जे जी परि सावो॥ पारि वनिती एकि देवो॥ चित्त देतु॥२२॥ तरी देवो भिस्वथें ए
पाठ॥ ओं॥ ४८ पडें॥ ओं॥ १५॥ भ्रष्टो॥ ओं॥ २२॥ पसावो॥ ॥ ३॥ ॥ ३॥

कहीती॥ मगमायो तेजे नयेनी॥ तेदेवेंसिभिन्नआथी॥ कींअभिन्नजी॥ २३॥ जरिभिन्नअिअनादिसिद्ध॥ तरीनयेतीहेंअसंबद्ध॥ जेफुलांगे-
 लेषटपद॥ तेफुलेचिहोलुका॥ २४॥ पैलक्ष्महनिअनारिसे॥ बाणछर्शशिबोनिअसे॥ मारुतेपडतीनेसे॥ येतीचिने॥ २३५॥ नातरिहिविते-
 स्वमाये॥ तरिकोणकोणेसींभिळवें॥ आपणयासींआपणरुपावें॥ शस्त्रेकैवि॥ २६॥ ह्मणोनिनुजसींअभिन्नांजीवां॥ तुझासंयोगवियोग
 देवा॥ नयेबोलेंअवयवों॥ शरीरेंसी॥ २७॥ आणीजेंसदांवेगळेनुजसीं॥ तयांभिळणीनाहीकोणेदिवसीं॥ मायेतीनयेतीहकायसी॥ बायं
 बुद्धि॥ २८॥ तरिकोणगातेंनुतें॥ पावोनिनयेतीमायोने॥ हंविश्वतोमुखामातो॥ बुझाविजी॥ २९॥ इयेअपेक्षांअर्जुनाचा॥ तोशिरोमणिमव
 ज्ञाचा॥ तोषळाबोधशिष्याचा॥ देखोनिया॥ ३०॥ मगह्मणोगामहामति॥ मांमोवोनिनयेतीपुढती॥ तेभिन्नाभिन्निति॥ आहानीदोनि
 ॥ ३१॥ जेंविवेकेंखोलेंपाहिजे॥ तरिमतिचितेसहजें॥ नाअहाचवाहाचतरिदुजे॥ ऐसेहीगमती॥ ३२॥ जेसंपाणियावरिवेगळ॥ तळपतांदि
 सतीकल्लोळ॥ येहवीनरीनिस्विळ॥ पाणीचिने॥ ३३॥ कांसुवर्णाहनिआने॥ लेणींगमतीभिन्ने॥ मगपाहिजेतंवसोनें॥ आयवेंचिने॥ ३४
 तेमेंज्ञानाचियेदिरी॥ मजसींअभिन्नचितेकिरीदी॥ येरभिन्नपणतेंउठी॥ अज्ञानास्व॥ ३५॥ आणिसाचोकरेंनिवस्तुविचारें॥ केंचेंम-
 ज्जएकासिदुसरें॥ जेंभिन्नाभिन्नव्यवहारें॥ उमसिजळ॥ ३६॥ आयवेंचिआकाशसुनिपोटी॥ विबेभ्यजेंआनेरवोटी॥ तेंप्रतिबिंबकेंउठी॥
 केंरश्मिशिरे॥ ३७॥ कांदून्यांतींविद्यापाण्यां॥ कायवोतसृतिधनंजया॥ ह्मणोनिंकेवेंअंशअविक्रिया॥ एकाभज॥ ३८॥ परिवोयाचे
 निषेळें॥ पाणिउज्जुपरिचांकुडेंजालें॥ रविदुजेपणआलें॥ तोयवगें॥ ३९॥ व्योमचोएळेंकांवाटोळें॥ हेंऐसेंकायसयाभिळें॥ परिघटमठी
 वेंटाळें॥ तेंसेंहीआथी॥ ४०॥ हांगांनिदेचेनिआधारें॥ कायएकळेनिजगनभरे॥ स्वमींचेनिजेंअवतरे॥ रायपणें॥ ४१॥ कांमिनेळेनि-
 किडाळें॥ वानिमोदासियेसोळें॥ तेंसास्वसायेवेंटाळें॥ शुद्धजेंमी॥ ४२॥ तेंअज्ञानएकरूढें॥ तेणेंकोहंविक्ल्याबेंमांडे॥ मगविवक्तुनिदि-
 पाठ ओंवी २३ ही.

जे फुडें। देहो हांगेंसे ॥ ४३ ॥ श्लोक ॥ मयै वांशो जीवलोके जीवभूतः सनातनः ॥ मनः षष्ठानीं द्रियाणि प्रकृतिस्थानि कथं नि ॥ ७ ॥ टीका
 ऐ सेशरि राचिये वडें ॥ जें आत्मज्ञान वेगळे पडे ॥ तें माझा अंश आवडे ॥ थोडे पणें ॥ ४४ ॥ समुद्र का वायु वडें ॥ तरंगाकार उच्छ्वसे ॥ तो रा
 मुद्रांश ऐसा दिसो ॥ सानिवा जें विं ॥ ४५ ॥ ते विं जडानें जीव विता ॥ देह अहंता उपज विता ॥ मीजी वगमं पंडु स्फुता ॥ जीवलोकी ॥ ४६ ॥ पें-
 जीवा चिया बोधा ॥ गोचर जो हाधांदा ॥ ते जीवलोका शब्दा ॥ अभिप्राय ॥ ४७ ॥ अगाउ पजणें निमाणें ॥ हें साच चिजें कां मानणें ॥ तो जी
 वलोके मी ह्मणो ॥ संसार हन ॥ ४८ ॥ एव विध जीवलोकी ॥ तुं मातें ऐसा अवलोकी ॥ जें साच इंद्रकां उदकी ॥ उदकातीन ॥ ४९ ॥ पें का स्मि
 राचारवा ॥ कुंकुमावरी पांडवा ॥ आणिकांग मेळो हिवा ॥ तो नरी नळे ॥ ५० ॥ तें सें अभिपणान मोडे ॥ माझें अक्रियत्व नखंडे ॥ परिष-
 नी भोक्ता ऐसे आवडे ॥ ते जाण गाफनाती ॥ ५१ ॥ किंबहुना आत्मा चोखट ॥ होउनि प्रकृती सिएक वट ॥ बांधे प्रकृति धर्माचा पाट ॥ आप
 ण पथो ॥ ५२ ॥ पें मना दिसा ही इंद्रियें ॥ श्रोत्रादि प्रकृतिका म्यें ॥ निपें माझीं ह्मणो निहोयो ॥ व्यापारारूढ ॥ ५३ ॥ जें सें स्वर्मा परिब्राजें ॥
 आपण पयां आपण कुटुंब होइ जे ॥ मगतयांचे निधां विजो ॥ मोहें सें रा ॥ ५४ ॥ तें सा आपलीया विस्मृती ॥ आत्मा आपण चिप्रकृती ॥ मा
 रिरवाग भोगिनुदनी ॥ निपें सिंचि प्रजे ॥ ५५ ॥ मनाचार धीवळये ॥ श्रवणाचा द्वारें निधे ॥ मग शब्दा चिया रिधे ॥ राना माजि ॥ ५६ ॥
 तो विप्रकृतीचा वागोरा ॥ करीतलचे चिया मोहोरा ॥ आणि स्पर्शा चिया योगोरा ॥ वना जायो ॥ ५७ ॥ कोणो के अवमर्गो ॥ रिधो निनेत्राचा
 द्वारी ॥ मगरुपाचा डोंगरी ॥ सेर हिंडे ॥ ५८ ॥ कां रसने चिया वादा ॥ निधो निगासुभटा ॥ रसाचा दुर्दुटा ॥ भरो चिब्राने ॥ ५९ ॥ नान
 रिधे पोचि घाणें ॥ देहा शक भूनि घणें ॥ मग गंधांचिं दारुणें ॥ आडवें लंघी ॥ ६० ॥ ऐसे निहें दिपनायकें ॥ धरु निमन जवळीकें
 ॥ भोगी जनी शब्दादिकें ॥ विषय भरणें ॥ ६१ ॥ श्लोक ॥ शरीर यदवामो नित्य च्चाय्युक्ता मतीश्वरः ॥ गृहीत्वेता निसंयानि वायुर्ग-
 नात औवी ॥ ५६ ॥ हाती.

धानिवाशयीत् ॥ ८ ॥ टी० ॥ परिकर्तभोकारेसो ॥ हेजीवाचेनैचिदिसं ॥ जेशरीरिकांपेसे ॥ येकाधिये ॥ ६३ ॥ जेसाआधिअआणिबिला
 सिथा ॥ नैचिवोळरवोयेधनंजया ॥ जेंगजसेव्याठया ॥ वस्तीसिये ॥ ६३ ॥ तेसाअहंकर्तत्वाचावाढ ॥ कोविषयेदियाचाधुमाड ॥ हाजो
 णिजेनैनिवाड ॥ जेंदेहपावे ॥ ६४ ॥ अथवाशरीरातेसांडी ॥ तहीइंदियाचीतांडी ॥ हेआपणपया ॥ सवजेडी ॥ येऊनिजाये ॥ ६५ ॥ जे-
 साअपमानिलाअतिथि ॥ नेसुकताचीसंपत्ती ॥ कांसाइखडेयाचीगती ॥ सूत्रंतू ॥ ६६ ॥ नानामावळतेनितपनें ॥ नेइजतीलो
 कांचीदर्शनं ॥ हेअसोहतीपवनं ॥ नैइजेसी ॥ ६७ ॥ तेविमनःषष्ठांयथा ॥ इंदियातेधनजया ॥ देहराजनेदेहा ॥ पासुनिगेळा ॥ ६८
 श्लो० ॥ श्रोत्रं चक्षुः स्पर्शनं चरसनं शणमेव च ॥ अधिष्ठाय मनश्चायं विषयानुपसेवते ॥ १ ॥ टी० ॥ मगयेथेंअथवास्वर्गी ॥ जेथजें-
 देहअपणी ॥ तेथेतैसेचिपुडतीपांगी ॥ मनारिक ॥ ६९ ॥ जेसामालवळियादिवा ॥ प्रमैसिजायपाडवा ॥ मगउजळिजेतेथतेथवां ॥
 तैसाचिफांके ॥ ७० ॥ तरिरेसेसियाराहादी ॥ अविवेकीयांचेदिही ॥ येतुळेंहेकिरीटी ॥ गमेविगा ॥ ७१ ॥ जेआत्मादेहासिआला ॥ आ-
 णिविषयेणेंचिभोगिला ॥ अथवादेहोनिगेळा ॥ हेसाचिमानिती ॥ ७२ ॥ येतुळेंहेकिरीटी ॥ गमेविगा ॥ ७१ ॥ जेआत्मादेहासिआला ॥ आ-
 कृतीचेंतेणें ॥ मानियेळें ॥ ७३ ॥ श्लो० ॥ उक्तामंतं स्थितं वापि पुजानं वा गुणान्वितम् ॥ विमूढानानुपश्यन्ति पश्यन्ति शानचक्षुषः
 ॥ १० ॥ यतनोयोगिनश्चैनपश्यंत्यात्मन्यवस्थितम् ॥ यतंतोव्यहृतात्मानो नैनपश्यंत्यचेतसाः ॥ ११ ॥ टी० ॥ परिदेहाचेमोहकेंउभे
 ॥ आणितेनतेथउपलभे ॥ तिथेचळबळेचेतिलोभे ॥ आलाह्मणती ॥ ७४ ॥ तैसेचितयासंगती ॥ इंदियेआपलाअवर्तनी ॥ न-
 यानावसुभद्रापती ॥ भोगेणंजया ॥ ७५ ॥ पाठीभोगक्षीणअपेसं ॥ देहगेलियातेनदिसं ॥ तेथेंगेलागेलाऐसें ॥ बोझातीगा ॥
 ७६ ॥ पैरुखडोळतंदेखावा ॥ तरीवारावाजतमानावा ॥ हारवनादिसेतेंथेपाडवा ॥ नाहीतीगा ॥ ७७ ॥ काआरससमोरठेबिजे ॥ आ-

पाठ ओं० ६५ काटी ओ० ६७ निगे.

णिआपणपेतथेदेखिजे॥ तरिनेधवांचिजालेंमानिजे॥ कायआधीनाहीं॥ ७८॥ कांपरताकेलियाआरिसा॥ लोपजालातयाआभा
सा॥ तरीआपणपेनाहीऐसा॥ निश्चयकरावा॥ ७९॥ शब्दतरीआकाशाचा॥ परिकपाळींपिरेमेयाचा॥ कांचदीवेगअप्ताचा॥ आरो
पिजे॥ ८०॥ तैसेंहोइजेजाइजेदेहें॥ तेंआत्मसत्तेअविक्रिये॥ निष्ठांकितीगामोहें॥ आंधळेते॥ ८१॥ येथआत्माआत्मयाचाकार्यी॥ दे-
खिजेदेहीचायमेदेही॥ ऐसेंदेखणेतेंपाही॥ आनआह्वाति॥ ८२॥ सानेंकांजयाचेडोळे॥ देखोनिनराहानिदेहीचेखोळे॥ सूर्यरश्मी
आणियाळें॥ ग्रीष्मींजैसें॥ ८३॥ तैसेंविवेकाचेनिपैसें॥ जयाचीस्फूर्तस्वरूपीबैसें॥ तेज्ञानियेदेखतीऐसें॥ आत्मयातें॥ ८४॥ जे-
सेंतांरागणींभिरिळें॥ गगनसमुद्रींबिंबळें॥ परितेंतुटोनिनाहीपडिलें॥ ऐसेंनिवडे॥ ८५॥ गगनगगनींविआहे॥ हेंआत्मासेतेंवा-
ये॥ तेंसाआत्मादेखतीदेहें॥ गवसिलाही॥ ८६॥ खळाळ्याचियेखगगी॥ फेडनिरवळाळाचाभागी॥ देखिजेचंद्रिकाकांउगी॥ चंदी
जेविं॥ ८७॥ कोनाडरचीप्रशोषे॥ सूर्यतोजेसतेंसाचिअसे॥ देहहोतांजानांतैसें॥ देखतीमातें॥ ८८॥ घटमठयडलें॥ तेंविपाठि
मोडलें॥ परिआकाशतेंसंचलें॥ असत्तचिअसे॥ ८९॥ तैसेंअसंडेआत्मसत्ते॥ अज्ञानदृष्टिकल्पितें॥ हेंदेहनिहोतेंजतें॥ जाणतीफु-
डें॥ ९०॥ चैतन्यचढेनावोहटे॥ चैष्टवीनाचेष्टे॥ ऐसेंआत्मज्ञानेचोरवटो॥ जाणतीते॥ ९१॥ आणितानहीअपेंतेंहोइल॥ प्रज्ञापरम्राणु
हीउगाणादेइल॥ सकळशास्त्रांचेयेइल॥ सर्वस्वहाता॥ ९२॥ परीतेव्युत्पत्तीऐसी॥ जरीविरक्तीनगिमेयानमी॥ तरीरावीत्तिकामज
मी॥ नकेंचिमेदी॥ ९३॥ पैतोंडफरोकांविचारा॥ आणितंतःकरणींविषयांभीचारा॥ तरीनातुडेधनुर्धरा॥ त्रिशद्दीप्ती॥ ९४॥ हा-
गावोसणानियाचाग्रंथी॥ काइतुटतींसारग्रंथी॥ कींपैरिसिल्लियायेथी॥ वाचिलीहोये॥ ९५॥ नानाबांधोनियांडोळे॥ घाणींलान-
विजनिमुक्ताफळें॥ तरीनयांचेंकायफळे॥ मोलमान॥ ९६॥ नैसाबिचीअहंतेंगवो॥ आणितमेसकळसरवो॥ ऐसेनिकोडीएक
पाठ ओंवी॥ ९६॥ आभासतमे ओं॥ ९५॥ परिवसिलिया॥

जन्मजावो॥ परीनपविजं माते॥ ९७॥ जो एक मीकांसमस्ती॥ व्यापकअसे भूतजाती॥ ऐकतिये व्योमती॥ रूपकरुं॥ ९८॥ श्लो० यद्वा
दित्यगतं तेजो जगद्भासयते शिखे॥ स्रज्जदमसि यन्त्राग्नेतत्तेजो विद्मि मासकं॥ ९९॥ तर्गस्यार्थमकटआयवी॥ हे विश्वरचना जे दा-
वी॥ ते दीप्तिमाझी जाणावी॥ आद्यंती आहे॥ १०१॥ जलशोषुनि गोखियारावित्ता॥ ओव्हास पुरवीतसे जे मायाता॥ तंच दीपडुसुता॥ जो-
त्कामाझी॥ १००॥ आणि दहनपाचन सिद्धी॥ करीतसे जे निरवधी॥ ते हुताशति जे रुद्धी॥ माझी विगा॥ १०॥ गामाविषयचमूतम-
निधारयाभ्यहमोजमा॥ प्रथामिचोषधीः सर्वाः सोमो भूत्वारसात्मकः॥ १३॥ दी०॥ मीरिगाळोअसें मूतळीं॥ ह्मणोनि समुद्रमहा-
जळीं॥ हे पांशुचिटे पुळीं॥ विरेचिना॥ २॥ आणि भूतें हिं वराचरें॥ हे धरीतसे अपारें॥ तें मीचि धरी धरो॥ रिगोनिया॥ ३॥ गगनीसी-
पंडुसुता॥ चंद्राचे निमिसें अफुता॥ भरला जालो चालता॥ सरोवर॥ ४॥ ते सुनीफांकती रश्मि कर॥ ते पाटये वृन्निअपार॥ सर्वोष-
धीचे आगर॥ भारितअसें मी॥ ५॥ ऐसे निरस स्यादिकासकळा॥ करी धान्यजाती सुकाळा॥ देउन्नदारा जिह्वाळा॥ भूतजाता॥ ६॥
आणि निपजविलें अन्न॥ तारि तें सें केचें दीपन॥ जेणे जिरू निरमाधान॥ भोगित जीव॥ ७॥ श्लो०॥ अहं वैश्वानरो भूत्वा प्राणि-
नां देहमाश्रितः॥ प्राणापानसमायुक्तः पचाम्यन्नं चतुर्विधं॥ १४॥ दी०॥ ह्मणोनि प्राणिजातांचा मर्द॥ करूनि कंदावरी आगिठी
॥ दे प्रसिजतरीं हि किरीटी॥ मीविजालो॥ ८॥ प्राणापानाचा जोडमर्ती॥ फुंक फुंकोनियां अहाराती॥ अदीतसे नेणों किती॥ उदरमा-
जी॥ ९॥ शूकें अथवा स्निग्धें॥ सुपकें कां विरधें॥ परि मीचि गाचतुर्विधें॥ अन्ने पचीं॥ १०॥ एवं मीचि आयवें जना॥ जनाविरहित
तें मीचि जीवन॥ जीवनीं सुखसाधन॥ वन्दिही मीचि॥ ११॥ आतां ऐसियाही वरी कां दी॥ सांगो व्यामीचि नवादी॥ येथ दुजे नाहीचि
येई॥ सर्वच मीगा॥ १२॥ तारि कें से निपावे रें॥ सदां रुक्वि ये येकें॥ येकें ति ये बहु दुःखें॥ आन भूतें॥ १३॥ जैसी सगळिये पाटणि॥ ए-
पाठ ओंवी ९८ व्यंजम. ओ० ८ दीप्त.

केचिदपि देवलावणी॥ जालियाकां न देवणी॥ उरली एकें॥ १४॥ ऐसी हनउरवी विरवी॥ कंरित आह्मासीमानसि की॥ नरिपरिसने
हीनि कीं॥ शंका फेडु॥ १५॥ पैअवधामीचिअसें॥ येथनाहीं कीरअनारिसो॥ परिमाणि याचिया उल्लासें॥ बुद्धि ऐसा॥ १६॥ जैसी ए
कचि आकाशधनी॥ बाधविशेषे अनानि॥ वाजावें पडे भिन्नी॥ नांदारीं॥ १७॥ कांलो कचेष्टी वेगळला॥ जो हा एकविभालु उगा
बळी॥ तो आनानी परिगेल॥ उपयोगासी॥ १८॥ नानाबिजधर्मानु रूप॥ झाडाउपजवी जैसे आपा॥ तैसें परिणमलें स्वरूप॥ मय
हें जीवा॥ १९॥ अगानेणा आणि चतुरा॥ पुढांनी छयाचा दुसरा॥ नेणा सर्पवें जाला येरा॥ मुरवा लागीं॥ २०॥ हें असो स्तानी चिउद-
क॥ शरुकीं मोनियें व्याळीं विरव॥ नैसा सज्ञानासी मी करव॥ दुःख तो अज्ञानासी॥ २१॥ भ्रमो॥ सर्वस्य चाहं हृदिसां निविष्टो म-
नस्य तिज्ञानमयो हं न च॥ वेदैश्च सर्वैरहमेव वेद्यो वेदांतकृद्देवि देव चाहं॥ २२॥ टी०॥ ये हवीं सर्वांचा हृदय देशी॥ मी अमुका हें
सी॥ जे बुद्धी स्फुरे अहिर्निशी॥ ते वस्तु गांभी॥ २३॥ परिसता सर्वे वसता॥ योगज्ञानी पैंसनां॥ गुरुचरणउपासिनां॥ वैराग्यें सिं॥
॥ २४॥ येणें चिसत्कर्म॥ अशेषही अज्ञान विरमो॥ जयाचें अहंविश्रामो॥ आत्मरूपीं॥ २५॥ तै आपें आपदे खोनि देखीं॥ मीया आ-
त्मो निमदा सुखी॥ येथें मी वांचून अवलोकीं॥ आन हे तुअसे॥ २६॥ अगासूर्ये त्या जालियां॥ सूर्ये सूर्य विपाहा वाधन जया॥ नं-
विं मारें भिया जाणावया॥ मीं चि हेतु॥ २७॥ नाशरीर परातें सेविता॥ संसार रोगें रक्षितें॥ २८॥ जयाची अहता॥ बुद्धो निरे लो-
॥ २९॥ तै स्वर्गसंसार लागीं॥ धावता कर्मभारीं॥ दुःखाचा सेलभारीं॥ विभ्रागी होनी॥ ३०॥ परि हें ही होणे अर्जुना॥ मज चित्त
व नथा अज्ञाना॥ जैसा जागता चि हेतु स्वभा॥ निद्रें तो होये॥ ३१॥ पैअं प्रेदिवस हा रपला॥ नोही दिवसें चि जाणो आला॥ ते विमी-
नेणो निविषय देखिला॥ मज चित्त न वस्तुनी॥ ३२॥ एवनि दंका जागणि या॥ प्रबोध चि हेतु न जया॥ तै विज्ञाना अज्ञाना जीवां-
पाठ ओंवी १८ उद्देशा.

चिय ॥ सीधिमूळ ॥ ३१॥ जेसेसपलकादोरा ॥ दोरचिमूळयसुधरा ॥ तेसाज्ञानाअज्ञानाचियासंसार ॥ भियांचोभिद्दि ॥ ३२॥ हाणो-
 निजेसाअसेतेंसया ॥ सातेनेणोनिधनजया ॥ वेदजाणोंगेलतंवनया ॥ जालियाधारणा ॥ ३३॥ नरनिहीशारवासेदी ॥ मोचिजाणिजेनेत्रि
 श्रुद्धी ॥ जेसापूर्वपरावदी ॥ समुद्रचिदी ॥ ३४॥ आणिमहासिद्धतापार्सी ॥ सुनिहारसिद्धतेण ॥ जेसियासंगीयाआकाशी ॥ वान
 लहरी ॥ ३५॥ तेंसेसमस्तहीश्रुतिजात ॥ वाकलाजिअंसेनिवात ॥ तेंसीचिकरींयथावत ॥ मकटोनियां ॥ ३६॥ पाठींअुनीसहित-
 अशेष ॥ अगहाएजेथीनिःशेष ॥ तेंभिजज्ञानहीचोरव ॥ जाणनामीचि ॥ ३७॥ जेसेनिदेरियांजागिजे ॥ तेंकांस्वमाचेंकीरुनाहीदु
 जें ॥ परिरकत्वहीदेखोपाविजे ॥ आपलेंचि ॥ ३८॥ तेंसेआपलेंअदृश्यण ॥ मोजाणतेंसेदुजेनवर्ण ॥ तयाहीबोधाकारण ॥ जाण
 नामीचि ॥ ३९॥ मणआगिलागलियाकापुरा ॥ नाकाजळनोवेंच्यनरा ॥ उरणेनाहीरीरा ॥ जयापरी ॥ ४०॥ तेविंसमुळअविद्यारव
 ये ॥ तेज्ञानहीजेबुडोनिजाये ॥ तन्हीनाहीकीरनोहे ॥ आणिनसाहेअसणेही ॥ ४१॥ पोंविश्वयंऊनिगेलामागेसं ॥ तयाचोरानेक-
 वणकींभंवसी ॥ जेकोणीएकदयाऐसी ॥ श्रुद्धतेसी ॥ ४२॥ ऐसीजडाजडव्यासी ॥ रूपकरिनाकेवल्यपनी ॥ ठीकलीनिरूपहिती ॥
 आपुलारूपी ॥ ४३॥ तोआद्यवाचिबोधसहसा ॥ अर्जुनीउमदलाकैसा ॥ व्योमीचाचेंदोदयजैसा ॥ क्षीरार्णवीं ॥ ४४॥ कामाभिभिनी
 चोरवटें ॥ समोशिलचिउमठ ॥ तेंसाअर्जुनीआणिवेकुंते ॥ नांदतंसबोध ॥ ४५॥ तस्वापवस्तुस्वभाव ॥ फावेवंतंवगोडियथाव
 हाणोनिअनुभवियांचाराव ॥ अर्जुनहाणें ॥ ४६॥ जीव्यापकपणबोलनां ॥ निरुपधिजकेंआतां ॥ स्वरूपमसंगता ॥ बोलिलेदेवो ॥ ४७
 तेंकवेळअधंगबाणें ॥ कींजोकाभजकारणें ॥ तेथद्वारकेंचानायहाणें ॥ भवेंकेंते ॥ ४८॥ पेंअर्जुनाआह्याहिनडेकोडे ॥ अरकडबा-
 लोआवडे ॥ परिकायकीजेनजोडे ॥ दुसतेऐसें ॥ ४९॥ आजिमनोरथांसिफळ ॥ जोडलासितुंकेवळ ॥ जेंतोडपरुनिनिरवळ ॥ आन-
 पाव ॥ ओ ॥ ३७ सकट ॥ ओ ॥ ३८ तेंवेळां ॥ ओ ॥ ४८ सांगणें ॥

लासिपुसी ॥ ५४ ॥ जै अहेनावरीहि सो गिजे ॥ तिये अलुमवचि वुं विरजे ॥ पुसो निमजमाझे ॥ देनो सिस्सर ॥ ५१ ॥ जै सा आरसा आलिंयो
 जगळा ॥ दिसे आपणें आपला जोळा ॥ तै सांस्वारीयां तुं मिळ्या ॥ शिरोमणी ॥ ५२ ॥ तुवो नेणो निपुसावें ॥ मग आहो परिस उबे सा
 वें ॥ तो गाहा पाउनळे ॥ सोय रया ॥ ५३ ॥ एंसे ह्यणो नि आलिं गिले ॥ ह्य पाट्टी अवलो किले ॥ मग देव काय बोलिले ॥ अर्जुनेसी ॥ ५४
 पेंदुने वीर एक बोलणें ॥ दोही चरण एकाच ठणें ॥ तेंसे पुल्लें सांगणें ॥ तुसे माझे ॥ ५५ ॥ एवं आही तुझी येथें ॥ देखावें एका अ
 शीतें ॥ सांगत पुसतें येथें ॥ दोही एक ॥ ५६ ॥ ऐसा बोलत देव मुलजामोहें ॥ अर्जुना तें आलिं रू निवायें ॥ मग व्याहाला ह्यणे नोहे ॥
 आवडि हे ॥ ५७ ॥ जाले इशुर साचि दाख ॥ तरिल वणें देणें किडाळ ॥ जेंसे वाद सुखाचेर साळ ॥ नासे लथितें ॥ ५८ ॥ आधिच आह्वाय
 या काही ॥ नमारायणासीं मिन्न नाही ॥ परी आतो जिरा माझा दाई ॥ येगा हा माझा ॥ ५९ ॥ इया बुद्धि सहसा ॥ श्री कृष्ण भूणे वीरिशा
 पै गानो नुवों तैसा ॥ प्रभे कला ॥ ६० ॥ जो अर्जुन श्री कृष्णा विरन होता ॥ तो परलो नियां मायुता ॥ प्रसावळीची कुर्या ॥ ऐको आला ६१
 तेथस ह्मदे बोलें ॥ अर्जुन जे जीवणी नलें ॥ निरुपाधिक आपुलें ॥ रूप सांगा ॥ ६२ ॥ यया बोला तो शाही ॥ तेंचि सांगावया लागीं ॥ उपा
 धी देही सांगीं ॥ निरुपे निअसे ॥ ६३ ॥ पुसि नियां निरुपहित ॥ उपाधिका सांगें येथ ॥ हें कोण हाही प्रस्तुत ॥ गम जरी ॥ ६४ ॥ तरि ना
 काचे अशोक ठणें ॥ तथाचि नावलोणी काहा ठणें ॥ चोरयाचि येथ श्रु हुनो ठणें ॥ किड विजे विं ॥ ६५ ॥ बाल भिन्मि गगनी गहोने ॥ परि
 आणी तव असे माहेतें ॥ भ्रमचि जावें गगन तें ॥ सिद्धि चि कीं ॥ ६६ ॥ वीरल कों इयाचा गुं उच्छा ॥ झाडुं निरुपे नियां वेगळा ॥ कण ये
 तो विरंगोळा ॥ असे काई ॥ ६७ ॥ तें साउपाधि उपहिनां ॥ सेवत जेथ विचारिनां ॥ तें कोणा तें हीन पुसना ॥ निरुपाधिक ॥ ६८ ॥ जे
 सेन सांगेणें ॥ बाळा पनी सीरु पुकरी ॥ बोल निमाने पणें विवरी ॥ अचर्चा तें ॥ ६९ ॥ पेंसांगेणें या जोगें नहे ॥ तेथितें सांगें कोणे

सिंआहे ॥ त्र्यंशो निरुपधिस्थिणां हं ॥ बोलिजे आदि ॥ ७० ॥ पाडिवाचिचंद्रखा ॥ निरुती दावावयागारवा ॥ दाविजेनेविंओपाधिक
 बोलीइया ॥ ७१ ॥ श्रेयो हविमोपुरुषो लोकोस्तराश्चाक्षरवचा ॥ स्तरः सर्वोणिमूतानि कूटस्थोऽस्य सान्यतो ॥ ७२ ॥ दी ० मगनो ह्यणे
 गासव्यस्मात् ॥ पैंद्रयसंसारपाटणीत्वा ॥ यस्मिंसावियादात्ती ॥ दुपुरुषी ॥ ७३ ॥ जैसीआयवाचिगानी ॥ नादतदिवारात्रदो
 न्दी ॥ तैसेसंसारजधानी ॥ दोक्कीचिहं ॥ ७४ ॥ आणिकर्हातिजापुरुषआहे ॥ परितीयादोहोचिनावनसाहे ॥ जोउदेलंग
 निंसीरवाये ॥ दोहीनंयया ॥ ७५ ॥ परित्तेवंगतीअसो ॥ आधिदोहं चिहं परिमो ॥ जेसंसारयासवसें ॥ आलेअसति ॥ ७६ ॥ ए
 कअंधव्यावेलापु ॥ येसंसारगैपुरताचोगु ॥ परिग्रामगुणेंसंग ॥ यइवादाया ॥ ७७ ॥ तयाकानामक्षर ॥ एकांनं ह्यणतीअस
 र ॥ इहंदाहीचिपरिसंसार ॥ कोदलाअस ॥ ७८ ॥ आताक्षरतोक्रवण ॥ असुरतोकोनक्षण ॥ हेअभिमायसंपूर्ण ॥ विवंचुगा
 नरीमहदहकारा ॥ न्यारुनियाधनुर्धरा ॥ तृणानंचिपांगोरा ॥ वीरपंगा ॥ ७९ ॥ जेकांहीसानेथोर ॥ चालेनंअथवास्थिरा ॥ किंबहु
 जोगाचर ॥ मक्कुद्धिसिंजे ॥ ८० ॥ जेतुलेंपांचमूतीकयडने ॥ जेनामरूपासोपडने ॥ गुणत्रयाचापडने ॥ कामवाजे ॥ ८१ ॥ मूना
 कृतीचिनाणे ॥ यडतासांगेरेंजेणे ॥ काळासिंजरेखणे ॥ जिहीकवडा ॥ ८२ ॥ जाणणेनिचिधिपरेने ॥ जेजेकांहीजाणिजेने ॥ ते
 यतिस्वणीनिमते ॥ होऊनियां ॥ ८३ ॥ अगाकादुनिस्थानेचिदांग ॥ उभवीसृष्टीचिंआंग ॥ हंअसोबहुजग ॥ जथानाम ॥ ८४ ॥ पै-
 अष्टथाभिन्नरेसं ॥ जेदाविलेंप्रकृतीभवे ॥ जेक्षेत्रहारंलुत्तसिं ॥ सागींकेले ॥ ८५ ॥ हेमागोलसांगीकृती ॥ अगाआतोचिजम
 स्तुती ॥ वहाकाररूपाकृती ॥ निरुती ॥ ८६ ॥ तेंआयेंविंसाकारा ॥ कलुनीआपणयापुरा ॥ जालेअसेनदनुसार ॥ चैतन्यवि
 ८७ ॥ जैसाकुहांआपणचिबिंबें ॥ सिंहमतिबिंबपाहतासोसं ॥ मगसोभलासमारें ॥ यालीनेथ ॥ ८८ ॥ कांसिबुलीअसतचिअ
 पाव, ओ, ८९ ॥ जे.

७

७

७

सै ॥ ब्योमावरीषोमबिंबजेसं ॥ अहं न हे उ, नि ते सं ॥ द्वै त मे पं ॥ ८९ ॥ अर्जुनायापरी ॥ साकारकल्पूनिपुरी ॥ आत्माविस्मृतीचिकुरी ॥ भि-
निद्रातेष ॥ ९० ॥ पेंस्वमीसंजारदेखिजे ॥ मगपहुउणेंजे सं ते थकीजे ॥ तेंसेपुरेशयनदेखिजे ॥ आत्मयासि ॥ ९१ ॥ पाठितियेनिद्रेचे
निषरे ॥ मीसरवीडु ॥ रवीह्याणतयोरे ॥ अहंममतेचेनिषोरे ॥ बोसपायेसांदं ॥ ९२ ॥ हाजनकहेमात्ता ॥ हासीनोरहीनपुरता ॥ पुत्र
विनकांता ॥ माझेहेना ॥ ९३ ॥ ऐसीयावैळयौनिस्वप्ना ॥ धावतमवस्वगीचियारना ॥ तयाचितन्यानामअर्जुना ॥ क्षरपुरुषगा ॥ ९४
आतारेकक्षेत्रज्ञयेणें ॥ नामेंजयातेंबोळणें ॥ जगज्जीवकाह्यणे ॥ जियेरशेतें ॥ ९५ ॥ जोआपुलेनिविसरें ॥ सर्वभूततंवअलुका
रे ॥ तोआत्माबोल्लिजेसैरें ॥ पुरुषनामें ॥ ९६ ॥ जेनोवस्तुस्थितीपुरता ॥ ह्यणेनिआलीपुरुषता ॥ वरीदेहपुरीनिदेजता ॥ पुरु
षनामें ॥ ९७ ॥ आणिक्षरपणाचानाथिला ॥ आळययाऐसेनिआला ॥ जेउपाधिचीआतला ॥ ह्यणेनियों ॥ ९८ ॥ जैसीखळाडी-
नियाउदका ॥ सरसिंदहाळेचंदिका ॥ तेंसाविकारंओपाधिका ॥ ऐसाविगसे ॥ ९९ ॥ कांखळाळमोटकाशोषे ॥ आणिचंदिकानें
सरिसिचफंशो ॥ तेंसाउपाधिनानीनिदिसे ॥ ओपाधिक ॥ १०० ॥ ऐसंउपाधीचिनिपाडें ॥ क्षणिकत्वयानेंजोडे ॥ तेंणेंखोंकरपणेयेडे
सरहेनास ॥ १०१ ॥ एवंजीवचेतन्यआयवे ॥ हेंक्षरपुरुषजाणावें ॥ आतोरूपकूंदूबरेवें ॥ असरासि ॥ १०२ ॥ तरिअसरजोदूसरा ॥ पुरुष
पैयसुर्थगा ॥ तोमयस्थगामिरिवरां ॥ मेरुजेसा ॥ १०३ ॥ जेतोरखीपाताळस्वगी ॥ इहीनमेदेतिहंसागी ॥ तेंसादेहीजानाजानागी ॥
पडेनाजो ॥ १०४ ॥ नायथार्थज्ञानेएकहोणो ॥ नाअनेकत्वेहुंजेयेणें ॥ ऐसेनिखिळजेनेणणें ॥ तेंचितरूप ॥ १०५ ॥ पायतानि ॥ ओषजाके ॥
नायदसाडादिहोयें ॥ तयास्तुतिंडाऐसेआहे ॥ मयस्थज ॥ १०६ ॥ पेंओदेनिगेवियासागर ॥ मगरतरंगनबीरा ॥ तयाऐसीअनाकार ॥
जेदशागा ॥ १०७ ॥ पार्थीजागणेंतराबुडे ॥ परिस्वमांचेंकांहीनमांडे ॥ तेंसियेनिद्रेसांकडे ॥ न्याहाळणेंजे ॥ १०८ ॥ विन्वआयवेंनिमाळुळे
पाठ ॥ ९१ सेज ॥ ओ ॥ ९४ वेयोनि ॥ ओ ॥ ५ अन्यत्वे ॥ ओ ॥ न्याहाळी ॥

आण आत्मं बोधनरी लुजळे ॥ तिये अज्ञानदशी के वळे ॥ अक्षरनाम ॥ ९ ॥ अजा ह्यण तां जन्मना हीं ॥ त्याभिना शक्तिं चाकां ॥ यालागीं
 अक्षरपाहीं ॥ अज्ञानयन ॥ १० ॥ सर्वो कर्त्ता सांडिलें जें सें ॥ चंद्रपणउरें अवसे ॥ रूपजोणें वें तें सें ॥ अक्षरनें ॥ ११ ॥ पै सर्वोपाधि वि
 नासे ॥ हे जीवदशा जेथें सें ॥ फळ पाकां जें सें ॥ झाड बीजां ॥ १२ ॥ तें सें उपार्थी सिंउपि हत ॥ थोको निरां के जें थ ॥ तयांतें अव्यक्त
 बोलतीरा ॥ १३ ॥ यन अज्ञानसुषुप्ती ॥ तो बीजमाव ह्यणती ॥ येरस्वमहन जागृती ॥ फळ भावतो ॥ १४ ॥ जयासीकां बीज भाव
 विदांतीं केला ऐसा भाव ॥ तोनया पुरुषाचाव ॥ अक्षराचा ॥ १५ ॥ जेथुनी अन्यथा ज्ञान ॥ फांको निजागृती स्वम ॥ नानाबुद्धींचें
 राना ॥ रिगालें असे ॥ १६ ॥ जीवत्व जेथुनी कर्ताही ॥ दिव्य उदाविना चि उठी ॥ तेउमय पैदांचीं मठी ॥ अक्षरपुरुष ॥ १७ ॥ येरस्वपुरु
 षकांजनी ॥ जिहां वेळे जागृती स्वमी ॥ तिया अक्षरया जोदोन्ही ॥ वियालागी ॥ १८ ॥ पै अज्ञानयन स्सुषुप्ती ॥ ऐसे सीजिं कां रव्याती ॥
 याउणि येकी मासी ॥ ब्रह्माचिजे ॥ १९ ॥ साचि चि पुढती वीरा ॥ जरनयेता स्वम जागरां ॥ तरी ब्रह्मा भावो साचो कारा ॥ ह्यणो येता
 २० ॥ परिमहानि पुरुषदेमि ॥ अस्मिं जालें जिये गरनी ॥ क्षिप्रसे त्रज स्वमी ॥ देवि लाजेणें ॥ २१ ॥ हें असो अधोशाखा ॥ यासंसार
 रूपारखा ॥ मूळ तें पुरुषा ॥ अक्षराचें ॥ २२ ॥ हा पुरुष का ह्यणिजे ॥ जे पुणं पणें विनिजे ॥ पै मायापुरीं पंहुडिजे ॥ तें पें ही बोलें
 २३ ॥ आणिविकाराचि जे वारि ॥ ते विपरीत ज्ञानाची परी ॥ नेणिजे जिये माझारी ॥ तें सुषुप्तिगाहा ॥ २४ ॥ ह्यणो नि यथा आपें सें
 क्षरणें पानसे ॥ आणिक हीं निहान नौशें ॥ ज्ञानाउणें १५ ॥ यालागीं हा अक्षर ॥ ऐसा वेदांतें उगार ॥ केला देशी थोर ॥ सिद्धता
 चा ॥ २६ ॥ ऐसें जीवकार्य कारण ॥ जया मायासंगि चलक्षण ॥ अक्षरपुरुष जाण ॥ चेंत न्यते ॥ २७ ॥ श्लो० उत्तमः पुरुषः स्वतन्त्रः
 परमात्मै लुदाहृतः ॥ योलो कत्रयमाविश विमर्त्य व्यय ईश्वरः ॥ १७ ॥ टी० आता अभ्यथा ज्ञानी ॥ यादोनी अवस्था जाज-
 पाठ ॥ ओ० ११ जाण ॥ ओ० १७ बोधांची ॥ ओ० २५ नसे ॥ ओ० २५ विणें ॥

नीं ॥ तथाहरपतीयनीं ॥ अज्ञानत्वीं ॥ १८ ॥ ते अज्ञानज्ञानी बुडालिया ॥ ज्ञानेकीं तिसुखलगे लिया ॥ जेसावही काष्ठजालूनिया ॥ स्वयेजा
के ॥ १९ ॥ ते सैं अज्ञानज्ञानेनेले ॥ आपणहि बस्तु देउनि गेलें ॥ ऐसं जाणणे निबीणउरलें ॥ जाणतें जे ॥ १० ॥ ते तो गाउत म्पुरुष ॥ जो
नृतीयक्रां निष्कर्ष ॥ दोही हुने अणिक ॥ मागिला जो ॥ ११ ॥ स्रष्टुसी अणि स्मृमा ॥ पासनि बहु वै अर्जुना ॥ जाणणें जे सैं अना ॥
बोधाचेचि ॥ १२ ॥ कारशरी अणि मृगजळा ॥ पासनि अर्क मंडळा ॥ अफाटते विवेगळा ॥ उत्तमगा ॥ १३ ॥ हेनाकाशीचा काशि
हुनि ॥ अना रिसा जे सावही ॥ ते साक्षरा सारा पासनी ॥ आनचिने ॥ १४ ॥ पेंयसू नि आपली मयांदा ॥ एक करीत न दीनदा ॥
उभिकलांत उदावादा ॥ एकांणवाचा ॥ १५ ॥ ते सैं स्वभना स्रष्टुनी ॥ नाजागराचि गोष्टि आथा ॥ जेसी गिळिली दिवोराती ॥ प्रळयते
जे ॥ १६ ॥ मग एक प्रणनदुजे ॥ असंनाही हें नेणिजे ॥ अनुभव नि बुजे ॥ बुडाला जेणें ॥ १७ ॥ ऐसं आधि जे कांहीं ॥ ते तो उत्तम पुरुष
पाहीं ॥ जे परमात्मा इही ॥ बोलि जे नामा ॥ १८ ॥ ते ही येथ न भिसळता ॥ बोलणें जीव तें पंडुसुता ॥ जेसी बुडणीयाची वानी ॥
थडियेचा कीजे ॥ १९ ॥ ते सैं विवेकाचिये कांठी ॥ उभें वाकलियां करीती ॥ पारावाराचिया गीठि ॥ करणें वेदा ॥ २० ॥ ह्यणें निपु-
रुष क्षरा सरा ॥ दोन्ही देखोनि अनावरा ॥ याते ह्यणती पर ॥ आत्मरूप ॥ २१ ॥ अर्जुनागे सियापरी ॥ परमात्मा शब्द वरी ॥ सू-
चि जेगा अवधारीं ॥ पुरुषोत्तम ॥ २२ ॥ ये ह्मणी न बोलणे निबोलणें ॥ जेथिचें सर्व नेणिवा जाणणें ॥ काहीच न होनि होणें
जेवस्तुगा ॥ २३ ॥ सोहते ही अस्त बलें ॥ जेथ सांगतें विसांणें जालें ॥ द्रष्टवें सिंगेलें ॥ देखणें जेथ ॥ २४ ॥ आतां विबाअणि
प्रतिविबा ॥ माजिकें विहसणोन येयसा ॥ जर्दीकें सें निहंसासा ॥ जायेचिना ॥ २५ ॥ कांघाणा फुळा दोही ॥ दुती असे साझारिली
वाधीं ॥ ते न दिसेत रंगिनाही ॥ ऐसें बोलोनये ॥ २६ ॥ ते सैं दृष्टादृश्य हे जाये ॥ मग कोण ह्मणे काय आहे ॥ हेचि अनुभव ते चिगा
पाठ ॥ ओं ॥ ११ अणिक ॥ ओं ॥ १७ जेथ ॥ ओं ॥ ४० केलियां ॥ ओं ॥ ४४ इय ॥

हे ॥ रूप्रतक्षा ॥ ४७ ॥ जोमकार्योवीणामकाश ॥ जोइशितव्यंवाणइश ॥ आपणेनीचिअवकाश ॥ वसवीतअसेजो ॥ ४८ ॥ जोनादोरे
 अजनाद ॥ स्वोदेंचारवविजनास्कद ॥ जोभोगीजतअसेआनद ॥ आनंदेंचि ॥ ४९ ॥ जोपूर्णतेचापरिणाम ॥ पुरुषगासर्वोत्ति-
 म ॥ वियातीचाहीदुआम ॥ विरालजिथें ५० ॥ सरवासीसुरवजोडले ॥ जेतेंजेजासिसापडले ॥ शून्यहीबुडाले ॥ महरा-
 र्थीजिथे ॥ ५१ ॥ जेविकाशाहोवरीउरता ॥ यानातेहीयासूनपुरता ॥ जोबहुतंपाडेबहुता ॥ पासूनबहु ॥ ५२ ॥ येमेणतयासू-
 ती ॥ रूपेपणाचीमतीति ॥ रूपेनहोनिशुक्ती ॥ दावोजेवो ॥ ५३ ॥ कामानाअलकारदश ॥ सोनेनलपतलपोलेअसे ॥ विश्व-
 नहोनियातेंसे ॥ विन्ध्यजोधरी ॥ ५४ ॥ हेंअसोजलतरंगा ॥ नाहींमिनामृणजेविगा ॥ तेंविंसतामकाशजगा ॥ आपणवि-
 जो ॥ ५५ ॥ आपलियासंकोचविकाश ॥ आपणविरूपवोरशा ॥ हाजर्जाचंद्रहनजेसा ॥ समग्रगा ॥ ५६ ॥ तैसाविश्वपणेका-
 हीहोये ॥ नाविश्वलोपीकेंहीजाये ॥ जेसाराभिदिवसनाह ॥ द्विधारवि ॥ ५७ ॥ तैसाकाहीचिकोणीकडे ॥ कायिसेमिहवेंचि
 नफडे ॥ जयाचेंसागडें ॥ जयासीचि ॥ ५८ ॥ स्तो ० यस्मात्सरमतीतोहमक्षरादपिच्येनमः ॥ अतोस्मि लोकेवेदेचप्रथितः पुरु-
 षोत्तमः ॥ ५९ ॥ टी ० जोआपणपेंचिआपणिया ॥ मकाशीतसेयनंजया ॥ कायबहुबोलंजया ॥ नाहींदुजे ॥ ६० ॥ तोगासी
 निरुपधिक ॥ क्षराक्षरात्तमएक ॥ ह्योनिद्वारेवेदलाक ॥ पुरुषोत्तम ॥ ६१ ॥ स्तो ० याममेवसममृदाजानतिपुरुषोत्त-
 मे ॥ ससर्वविदूजितमामसर्वभावेनभारत ॥ ६२ ॥ टी ० परिहंअसोरेसिया ॥ मजपुरुषोत्तमातेयनंजया ॥ जाणेजोमहि-
 लेया ॥ ज्ञानमित्र ॥ ६३ ॥ च्चेइलियाआपुलज्ञान ॥ जेंसंनाहीचिहोयुस्म ॥ तैसेस्फुरतेंत्रिभुवन ॥ वावेजालें ॥ ६४ ॥ का-
 हातीयंतिलियापाळा ॥ फिरेसर्पासाचाकाटाळा ॥ तैसामाझेनिबोधेंदवाळा ॥ नागवेता ॥ ६५ ॥ लेणेंसेनेचिजाणें ॥

पाठ. ओ. ५८ कही.

तेलेपेपणतेवावक्षणे ॥ तेविंमंजाणेनिजेणे ॥ वाकिलाप्रेद ॥ ६४ ॥ मगह्यणेसर्वभस्मिच्चिदानंद ॥ मीचिएकस्ततःसिद्ध ॥
जोआपणेनभिसंद ॥ नेणेनिजाणे ॥ तेणेचिसर्वजाणितले ॥ हेहोह्यणोथेकुले ॥ जेतयासर्वभ्रउरले ॥ हेतनाही ॥ ६६ ॥
ह्यणोनिमाझियाभजना ॥ उचितनोचिअखुना ॥ गगनजैसेआलिगना ॥ गगनाचिया ॥ ६७ ॥ क्षीरसागरपरशुणे ॥ कीजेंक्षीर
सागरचिपणे ॥ असृत्तचिहोउजमिळणे ॥ असृतीजिवे ॥ ६८ ॥ सांडपंधराभिसळावे ॥ तेंसांडपंधरेचिहोआवे ॥ तेविंबीजा
लियासंभवे ॥ मक्तिमाझी ॥ ६९ ॥ हांगांसंधूसंआनिहोती ॥ तीरांगांकुंसेनिमिळती ॥ ह्यणोनिमीनहोताभक्ती ॥ अलव-
आहे ॥ ७० ॥ ऐसियालागीसर्वभक्तरी ॥ जैसाकुंदोळअमन्यसागरी ॥ तेंसामातअवधारी ॥ मजिन्नलाजो ॥ ७१ ॥ सूर्याआणि
दुसरे ॥ एकवेकजेणेलोभे ॥ तोपाउमातूलाभे ॥ सजनातया ॥ ७२ ॥ अद्भुत ॥ इतिगुह्यतमंशास्त्रमिदमुक्तमयासय ॥ एतदु
आबुद्धिमान्यास्तुतस्तुत्यव्यभारत ॥ ७३ ॥ ॥ इतिश्रीमद्भगवद्गीतासूपनिषत्संज्ज्ञाविद्यायोगशास्त्रेश्रीकृष्णा
युनिसंवादपुरुषोत्तमयोगनामपंचदशोऽध्यायः ॥ १५ ॥ टी ॥ एवेकथिलयादोरभ्यजहसर्वशास्त्रेकुलभ्य ॥ उपनिषदांमोर
पय ॥ कमलद्व्याजिवे ॥ ७३ ॥ हंशब्दब्रह्मचंमयिते ॥ श्रव्याभगजचेनिहात ॥ मयुनिकादिनेआदते ॥ सारआह्मि ॥ ७४ ॥
तेज्ञानाभुताचीजान्ती ॥ जेआनंदचंद्रीचिसतरावी ॥ दिवास्माराणवीचिननवी ॥ मयुनिकादिनेआदते ॥ सारआह्मि ॥ ७४ ॥
निपदवर्षे ॥ अर्थोचिनिजीविमाणे ॥ मीवांचोनिहोनेणे ॥ आनकाही ॥ ७५ ॥ ह्यणोनिआपुले
वाकिले ॥ मगसर्वस्वमजदीगले ॥ पुरुषात्तमी ॥ ७६ ॥ ह्यणोनिजगंगांजाता ॥ मियाआत्मनिपतिवतु ॥ जेहमस्तुतनुवा
आता ॥ आह्मिणीली ॥ ७७ ॥ सात्वतिबोलाचिनहेहशास्त्र ॥ पेंससारजिणतशास्त्र ॥ आत्माअवतरवितमत्र ॥ अक्षर

दये ॥ ७९ ॥ परिजुजुतांसागीतले ॥ नंअजुनारेसंजाले ॥ जेगोव्यधनकादिले ॥ माझेओजितुवा ॥ ८० ॥ मज्जेतन्यशंभुचा
 माथा ॥ जोनिक्षपहातापाथा ॥ नयागीतमोजालासिआस्था ॥ निर्धनगा ॥ ८१ ॥ चोरवतिवा आपुलिया ॥ पुढिलाउग्रमाणा
 येयावया ॥ तथादपणार्चीचिपरिधनजया ॥ केलीआत्मा ॥ ८२ ॥ कांभरलेचंद्रतारागणी ॥ नभोसधुआरणयामाजिआणि
 तेसागीतेभिंभीअतःकरणी ॥ सुदलातुवा ॥ ८३ ॥ जेअविषयमळकता ॥ तुंसांठिलासिभ्रमता ॥ त्पणोनिगीतिसिजवसो
 दा ॥ जालासिगा ॥ ८४ ॥ परिहबालाकार्यगता ॥ जेहेमाझीउन्मेषलता ॥ जाणतासमस्ता ॥ मोहासुक ॥ ८५ ॥ सेविली
 असृतसरिता ॥ रोगदवडनिपडुसुता ॥ अमरपणउचिता ॥ देऊनिघाली ॥ ८६ ॥ तेसीगीताहेजाणतलिया ॥ कायवि-
 स्मयमाहजावया ॥ परिआत्मज्ञानिआपणषया ॥ मिळिजेथेथ ॥ ८७ ॥ अयाआत्मज्ञानाचावाधो ॥ कर्मआपुलुयाजीवि-
 तायाही ॥ हाऊनियाउतराई ॥ लयाजाय ॥ ८८ ॥ हरपलेदारुनिजसा ॥ सागसेरवीरविलासा ॥ ज्ञानचिक्कसवळयेतसा ॥
 कर्ममासादाचा ॥ ८९ ॥ त्पणोनिज्ञानियापुरुषा ॥ कृत्यकरूसरलंदरवा ॥ ऐसाअनाथाचासरवा ॥ बोलिल्यातो ॥ ९० ॥ तेंअ-
 दृष्टावदनासुत ॥ पार्थसारथिअसेवोसुउत ॥ मगव्याससुपात्रास ॥ संजयासी ॥ ९१ ॥ तोदतराभूराया ॥ सूतसपानकराव
 या ॥ त्पणोनिजीवितानया ॥ नोहेचभारी ॥ ९२ ॥ यत्तुर्वर्गीनाअवणअवसरी ॥ आवडोलागतअनाधिकारी ॥ परिसरभी
 तेचिउजरी ॥ पातलाभली ॥ ९३ ॥ जेत्काद्रास्सीदूधयातले ॥ तेत्कावायांगेलंगमले ॥ परिफळपाकंदुणावले ॥ देखिलेजे-
 वि ॥ ९४ ॥ तेसींभीहरीवर्कचिअक्षर ॥ सजयेसारीतलीआदर ॥ तिहोअधुतोहीअवसरी ॥ ससिंयजाला ॥ ९५ ॥ तेचि
 मन्हेनेनिविन्यासे ॥ भियाउन्मेषेवसेगोबसे ॥ जेजाणेनणेतसे ॥ भिरांपिले ॥ ९६ ॥ सेवतेथेअशषकाही ॥ आंगपाहता
 पाठ नाही ॥ ९७ ॥

पाठ, ओ, १८ तें तें गज, ओ १९ परि, थ

9

5

श्रीगणेशाय नमः ॥ मावळधीतिविश्वभासा ॥ नवल उदयलाचंडाश ॥ अह्या छिनीविकाश ॥ वंदू आता ॥ १॥ जो अविद्यागतीकसोनि
 यो ॥ गिळिज्ञानांज्ञानचांदीण्यां ॥ जेसुदिनकरीजाभियां ॥ स्तवोयच्या ॥ २ ॥ जेणेंविवळति येसवेक ॥ लाहोनि आत्सज्ञानांचेंदे
 के ॥ सांडितीदेहाहेतुचिंअंविमळें ॥ जीवपक्षी ॥ ३ ॥ दिगदेहकसळाचा ॥ पोतिवंचताचिद्रुमराचा ॥ बोदमासजयाचा ॥
 उदयलाहोये ॥ ४ ॥ शब्दाचियाआसकडी ॥ भेदनदीचातोहाथदी ॥ आरडोंतेंविरहेवडी ॥ बुद्धिबाध ॥ ५ ॥ तथाचक्रवाक
 चंमिशुन ॥ सामरस्याचेसमाधान ॥ भोगवीजोचिद्रुगन ॥ सुवनदिवा ॥ ६ ॥ जेणेंपाहोलीयेपाहाटे ॥ भेदाचिचोरळीफेदे
 रिघतीआत्मानुभववाटे ॥ पांथीकयाणी ॥ ७ ॥ जयांचेभिबेवक्रकिरणसंगें ॥ उन्नेरवस्तूर्यकांतफुणगे ॥ दीपलेजाकितीदा
 गें ॥ संसारची ॥ ८ ॥ जयाचारशिपुजनिबर ॥ हातोस्वरूपउरवरीस्थिर ॥ येमहाभिदूचापूर ॥ मृगजळते ॥ ९ ॥ जोमत्यक
 बोधाचियाभाथा ॥ सोहतेचामआळीआलिया ॥ लपआत्मभ्रातिछाया ॥ आपणपातळी ॥ १० ॥ तेवेळींविश्वस्वमासीहेत
 कोणअन्यथामतीभिद्रें ॥ सांभाळीतुरेचिजेथें ॥ मायारती ॥ ११ ॥ ह्याणीनिअदूयबोधपाटणी ॥ तेथमहानदाचीदाटणी
 मगस्वरानुभूतींचेंघणींदेणी ॥ संदोवोलागती ॥ १२ ॥ कुंबहुनारेसंभें ॥ मुक्तकैवल्यस्फुटिवसं ॥ सदासाहिजेकांप्रकाश
 ज्याचेनि ॥ १३ ॥ जेभिज्यामव्योमीनारावो ॥ उदयलाचिउदयजतरवेवो ॥ फेडोपुर्वोदिदिशासिनावो ॥ उदयास्ताचा १४
 नदिसणेंदिसणेंनसोभावळवी ॥ दोहोंझांकेलेंतेंसंद्यालवी ॥ कायबहुबोलोंतेंआयवो ॥ उरवाचिआनि ॥ १५ ॥ तोअहोरा
 त्राचपेलकड ॥ कोणेंदेखावाज्ञानमातेड ॥ जोप्रकाशेवाणसरवाड ॥ प्रकाशाचा ॥ १६ ॥ तथाचिस्तूर्याभ्रनिवृत्ती ॥ आता
 नमोचिद्विणोपुदतपुदती ॥ जेबोधकायेइजवसेस्तुति ॥ बोलाचिया ॥ १७ ॥ भगदेवाचेमहिमानपाहोभियां ॥ स्तुतीतरीयेइ
 पाठ, ओ, ४ बंध, ओ, १० पांचि, ओ, १४ उदोभस्तुचा, ओ, १७ बांधका,

अचंचावया ॥ जरीस्तव्यबुद्धीसीलया ॥ जाइजेकां ॥ १८ ॥ जोसर्वेचीवांजाणिजे ॥ सौनवियामिठीयावाजिजे ॥ कांहीचनहोनिआ
 णिजे ॥ आपणपयांजो ॥ १९ ॥ नयातुझियाउद्देशासाठीं ॥ पश्यंतीमध्यमापेदीं ॥ सूनीपेरेचेहीपाठी ॥ वैरवरीवरे ॥ २० ॥ तयातु
 नेमीसिवरूपणे ॥ लेववीबोलनेयास्मोत्राचेंलेणे ॥ हेउपसाहावेहीम्हणताउणे ॥ आह्मथानदा ॥ २१ ॥ परिरंकेअमृताचासागर
 देखिलुयापडेउचिताचाविसर ॥ भगवद्रूपावेयाहुणे ॥ शाखांचावया ॥ २२ ॥ तेथशाकरीरबहुतदृष्टावा ॥ तयाचिह्रु
 वेगचिनोव्यावा ॥ उजळोनिदित्यतेजाहोनिवा ॥ तंभीक्किचिगाहावी ॥ २३ ॥ बाळाउनिजजाणोहीय ॥ तारिबाळपणचिके
 आहे ॥ परिसाचचियेरीसाये ॥ ह्यणीनिताषे ॥ २४ ॥ हांगागावरसयाभरलें ॥ पणिपानीयायेदेतआलें ॥ तेगंगाकायह्मणीत
 हे ॥ परतेसर ॥ २५ ॥ जीम्हणुचोवैसाअपकार ॥ किंतामानुनिप्रयोपचार ॥ कायतोषेचिनाशाईधर ॥ गुरुत्वासी ॥ २६ ॥ कोआ
 थोरंनिरवतिलेअंबर ॥ जालेदिवसचाथामोरा ॥ नेणेतयातेपरंतेसर ॥ ह्यणीतलेंकाई ॥ २७ ॥ तेविषेदबुद्धिचेंयेतुले ॥ घा-
 लीनसूर्यसुखाचेंकाढकें ॥ तुकिन्नासिनेंयेकावेक ॥ उपमाहिजोर्जा ॥ २८ ॥ जिहोआनाचोडोकापाहिलासि ॥ वेदादिवा-
 चावागिलासी ॥ जेंउपमाहिलेतयासी ॥ नेंआह्माहीकरीं ॥ २९ ॥ परिमीआजितुझारुणी ॥ लाचावलेअण
 राधनगणी ॥ प्रसन्नंकरीपरीअर्थणी ॥ नुनिंददा ॥ ३० ॥ भियांगीतायेणेंनावं ॥ तडोपसायाभनसुहावे ॥ वाजलायलेतंदुणे-
 नथावे ॥ देवलोदेवे ॥ ३१ ॥ साक्षियासत्यवादाचेनप ॥ वाचाकेलुबहुतकल्प ॥ तयाप्रकाचहमहाहीप ॥ यातलोप्रभु ॥ ३२ ॥
 पुणेंपोशिलेंअसाधारणें ॥ नियांवेवृक्षगणवानणें ॥ दबुनिमजउनीर्ण ॥ जार्जोअजि ॥ ३३ ॥ जीजिविलाचाआडवी ॥ आलुडलो
 होतोभरणगार्वा ॥ तेअवदसाचिआडवी ॥ फाडिलोहोआर्जा ॥ ३४ ॥ जेगीतायेणेंनावेनावणिणी ॥ जेअभिविद्याजिणोनिदाहुणी
 पाठ ॥ ओ० ३७ पदार्जो ॥ ओ० २८ सूर्यशशा ॥

तर्कान्तिवृद्धीश्चाहंजोगी ॥ ३५ ॥ पौनर्नारायणविनिवेशं ॥ महालक्ष्मीयेन्द्रनिवेशं ॥ तन्मतेनिर्धनसे ॥ ह्यणोयेकाईशं
 काअथकाराचिनाथा ॥ देवैरसूयाम्लिया ॥ तोअधकारचिजगायथा ॥ प्रकाशानेह ॥ ३७ ॥ जयादेवाचीपाहानाथ्योरी ॥ विश्वपरमा
 णुहीदशानधरी ॥ तोभावाचियसरोवरी ॥ न दुर्चिकाई ॥ ३८ ॥ तैसार्मगीतावाग्वणा ॥ हस्वपुष्पात्तानुरवणी ॥ परिसमर्थतुकां
 शिरयाणी ॥ फेडिलीते ॥ ३९ ॥ ह्यणोनिनुद्वेगनिप्रसादं ॥ मीगीतापद्यंअगाधं ॥ निरूपीनजीविशदे ॥ ज्ञानदेवहणें ॥ ४० ॥ नरेश
 अथ्याथोपयगवां ॥ श्रीकृष्णोतयापादवा ॥ शास्त्रासिद्धान्आधवा ॥ उगाणिला ॥ ४१ ॥ जेवृक्षरूपकपरिसाया ॥ क्लेलेउपा-
 धिरूपअशेषा ॥ सद्बोधेजेंसंदाषा ॥ अंगलीना ॥ ४२ ॥ आणिकूटस्थजोअस्सर ॥ दाविलापुरुषप्रकार ॥ तेणेंउपहिनाही
 आकार ॥ चेतन्याकेला ॥ ४३ ॥ पाठितुत्तमपुरुष ॥ शब्दांचेकरुनिमिष ॥ दाविलेंचोरव ॥ आत्मतल ॥ ४४ ॥ आत्मविष
 यीआनुवत ॥ साधनजेंआंगदट ॥ ज्ञानहंहीस्पष्ट ॥ चावळला ॥ ४५ ॥ ह्यणोनिइयेअथ्याथी ॥ निरूप्यनुरचिकाही ॥ आता
 गुरुशिष्यांदोही ॥ स्नेहलाहणा ॥ ४६ ॥ एवइयेविषयीकीर ॥ जाणतेंकुझावलेअपार ॥ परिसुमुक्षदनर ॥ साकाक्षजाले
 ४७ त्यामजपुरुषोत्तमा ॥ ज्ञानमेंदेजासुवर्मा ॥ तोसर्वज्ञतोविस्मीसा ॥ भक्तीचाही ॥ ४८ ॥ ऐसेहेंत्रैलोक्यनायक ॥ बोलिले-
 अथ्याथांतम्लोकें ॥ तेथेज्ञानचिबहुतेक ॥ वागिलेंतोषें ॥ ४९ ॥ मारुनिप्रपंचाचाथोट ॥ कीजेदेरवताचिदेरवतथाहृष्ट ॥
 आनंदसाव्याज्योपात ॥ बाधिजेजीवा ॥ ५० ॥ येवढेंशालापेणणाचाउपवो ॥ आननाहेंचिह्यणेदेवो ॥ हासम्यक्ज्ञानाचारवा
 उपायामाजि ॥ ५१ ॥ ऐसेआत्मजिज्ञासुजेहोते ॥ तिहांतांपलेभिचिंतें ॥ आदरेतथाज्ञानोतें ॥ वोवाकिलेजीवें ॥ ५२ ॥ आता-
 आकडीजथपडे ॥ तयाचिअवसरपुढेंपुढें ॥ रिंगालागेहेंघड ॥ प्रमारेसे ॥ ५३ ॥ ह्यणोनिजिज्ञासुचोपेकी ॥ ज्ञानीप्रतीति
 होचनाजंविकी ॥ तंवयोगासेमज्ञानागिरि ॥ स्फुरेलचिकें ॥ ५४ ॥ ह्यणोनिनेंचिसम्यक्ज्ञान ॥ कैसेनिहोयस्वाधीन ॥
 फाव, ओ, ४५ देहो, थो, ५१ उवावा, ७

पठ, ओ, ४५ देहों, ओ, ५१ उवावा, ७

जलेशां द्विपत्य ॥ यदेलके विं ॥ ५५ ॥ कांउपजो चिंजलहा ॥ जंउपजलै हो अहंकांगमूये ॥ नें ज्ञानी विरुद्ध काय आहे ॥ हें जाणवें-
 कीं ॥ ५६ ॥ मग जाणतया जे विरू ॥ तयाची वाट वाहतो करू ॥ जानिहते ते विचारू ॥ सर्व भावें ॥ ५७ ॥ ऐसा ज्ञान ज्ञासु तु ह्यो सम
 स्तीं ॥ भावजो थरिला असे चितो ॥ तो पुरवावया लक्ष्मीपती ॥ बोलि जेल ॥ ५८ ॥ ज्ञानी मरुज नमो दे ॥ आपली विभ्याती हो व
 री वाटे ॥ तियास पत्तीचे पत्राडे ॥ सांगि जेल देवी ॥ ५९ ॥ आणि ज्ञानचे निकामा करे ॥ जे राग द्वेषां सिदे थारे ॥ तिये आसरी ये
 हि थोर ॥ करील रूप ॥ ६० ॥ सहज इच्छा निष्ठ करणी ॥ दोधी चिदया करवुं कीणी ॥ हे नवमाध्याये उभारणी ॥ केली होती ॥ ६१
 वेद्यसा उभाये या उवाचो ॥ तंव बोडवला आन मस्मावो ॥ नरो तया मसंग आतां देवो ॥ निरूपीत असं ॥ ६२ ॥ तया निरूपणा
 चिंनो वें ॥ अध्याय पद सोळावें ॥ लावणी पाहता जाणावें ॥ सागि न्नावरी ॥ ६३ ॥ परिहें असो आतां प्रस्तुती ॥ ज्ञानाचा हिता
 हितो ॥ समर्थो संपत्ती ॥ दयाची दोळी ॥ ६४ ॥ जे मुमुक्षु मर्ग चिंनोळावी ॥ जे माहृगधीची प्रसंदि वि ॥ ते आधीं नवदेवी ॥ सप
 ति ऐका ॥ ६५ ॥ जेथ एकरुकां तें पोरवो ॥ ते सैब हुन पदायें कं ॥ संपादि जती ते लोकीं ॥ संपत्ति ह्यणिजे ॥ ६६ ॥ ते देवी स्त-
 रवसंभवी ॥ तेशें देवागुण येको पजोवी ॥ ज्ञानां ह्यणिनि देवो ॥ संपत्ती हे ॥ ६७ ॥ श्रुतौ कृ ॥ श्री भगवानुवाच ॥ अप्रयस
 त्वसंश्रुतिर्ज्ञानयोगव्यवस्थितिः ॥ दानदमस्तपश्च स्वाध्यायस्तप आर्जव ॥ १ ॥ टी ॥ आता तया चिदे वरुणा ॥ मजिये
 रे चावें सण्ण ॥ वैसे तया आकर्णा ॥ अप्रयस ॥ ६८ ॥ तरि यन्मुनि महापुंग ॥ नयपबुडण याची शयारी ॥ कारागनगणिज यरी
 पथ्या चिया ॥ ६९ ॥ ते साकर्मकां निया मोहरा ॥ उवुन दुनि अहंकारा ॥ संसाराचा दारा ॥ सांडणें येणें ॥ ७० ॥ अथ वारे क्य
 मावांचे निपेसं ॥ हुजं मान्नि आत्मारंसे ॥ मयवानां नश ॥ दवडणें जे ॥ ७१ ॥ पाणि बुडये मिनातें ॥ तं वमीळ चिपाणि आते ॥
 पाठ. ओ. ५६ उमजो उमजले, पावनेचोनि.

नविंआपणजालेभिअहेत ॥ नाशेसद ॥ ७० ॥ अगाअमययेणेनावे ॥ बोलिजेतेहजाणवे ॥ मण्यकुजानानेआयेवे ॥ धावणेहे ७१ ॥
 आतांसत्वशहीजेहणजे ॥ तेरेआचिहीजाणजे ॥ नरगेज्जेमाविंझे ॥ रागनांदेजेमा ॥ ७२ ॥ काणीइवावा ॥ ननरे ॥ अने
 सेतुदीसांडुनिमारे ॥ माजीअतिसदमअणे ॥ चंद्रजेसागहे ॥ ७३ ॥ नातरिवाषआसा ॥ दला ॥ या ॥ भयाहा ॥ मो ॥ डले ॥ माजी
 निजरूपेनिवडली ॥ गगजेसा ॥ ७४ ॥ तसीसकल्पविक्कन्याचीवादी ॥ सांडानरजनभाचीकावडी ॥ सोयितानेजयभरी
 चीआवडी ॥ बुद्धिजेउरे ॥ ७५ ॥ इंदियवगीदारवर्गिलया ॥ वरुहअथवासलीया ॥ विस्मयकाहीकेलिया ॥ नुडोवि-
 सी ॥ ७६ ॥ गावागेलियावल्लुम ॥ पतिवतचाविरहसोम ॥ मन्तनेसणीहानीला ॥ ममनेजिवी ॥ ७७ ॥ नेविंसत्वकरू
 परचलेपणे ॥ बुद्धिजेरेसेअनन्यहोणे ॥ नेसत्वशहीहोये ॥ कुशिलता ॥ ७८ ॥ आनाआत्वलासाविरवी ॥ ज्ञानयोगा
 माजीएकी ॥ जेआपुलियादकी ॥ होवेमरे ॥ ७९ ॥ तेयेसर्गकयचिचमवर्त ॥ न्यागवरेणयारीती ॥ निष्कामेपूर्णाहु-
 ती ॥ हुताशीजेसा ॥ ८० ॥ कांसकुळीयेआपुली ॥ आलजाकुळीचिरिथली ॥ हेअसोलतुमोव्यिरवली ॥ मुकुंदी
 जेसी ॥ ८१ ॥ तेसेनिविकळपणे ॥ जयोगज्ञानेचियाहूनिचहोण ॥ तोनिजागणहोण ॥ सुजानाथ ॥ ८२ ॥ आताहेह
 वाचचित्ते ॥ यथासंपन्नेवित्ते ॥ वैरीजालियाहोआता ॥ नवचणेजेका ॥ ८३ ॥ फुलोफकीछया ॥ मुळीपनीहीयनज
 या ॥ वाटेचानुचुकेआलया ॥ हसजेसा ॥ ८४ ॥ तेसमनानिधनवरी ॥ विद्यमानेआल्याअवसरी ॥ आनाचियेमनोहरी
 उपयोगाजाण ॥ ८५ ॥ तथानावजाणदान ॥ जेमेसनिधानचेअंजन ॥ हेअसाआधिकचिह्नु ॥ हमाचेंते ॥ ८६ ॥ तरीविष
 केइयांमिळणी ॥ करुनिघांपेवितुटणी ॥ जेसेतोइजेरवडूकणणी ॥ पारकया ॥ ८७ ॥ तेसाविषयजानांचावाश ॥ वजो
 पाठ, ओ० रुचले, ओ० ८६ खडु,

नेदिजेइंद्रियद्वारा ॥ इथेबांधीमप्रत्याहार ॥ हातोवोपी ॥ १० ॥ आंतुन्नुचित्तचेअंगवरी ॥ सांडुमिप्रवृत्तिपेकोहेरी ॥ आगीसू-
 यिजदाहीहीद्वारे ॥ वेरायाची ॥ ११ ॥ आसोश्रवसाहुनीबहुवसे ॥ ब्रूतेआचरेरगरपुसे ॥ वोसेनितांरात्रिदिवसे ॥ नाराणुकज-
 थ ॥ १२ ॥ पदमरेसाह्यणिपे ॥ तोहाजाणस्वरूप ॥ यज्ञार्थहसंक्षेप ॥ सांगोपेक ॥ १३ ॥ तीरब्राह्मणकरुमिधुरे ॥ स्त्रियादिक-
 पेलमेरे ॥ माझागेअधिकारे ॥ आपुन्नालेनि ॥ १४ ॥ जयाजसेवर्त्तम ॥ मजनीग्रदेवनाथम ॥ तेतेणयथागम ॥ विधीयजि-
 जे ॥ १५ ॥ जेसाद्विजडकुर्मकरी ॥ शूद्रतयतेवमस्कारी ॥ कींदोहीमिहीमरोवरी ॥ निपजयाग ॥ १६ ॥ तेसेअधिका-
 रपर्यालोचें ॥ हेयजकरणेसर्वचि ॥ परिदृषयदृषपूकाशेचि ॥ नयापेमार्जा ॥ १७ ॥ आगिपीकृतांगेमासावो ॥ नेदिजेदेहाचे-
 विहारेजावो ॥ नावेदोक्षेसीनरीतावो ॥ होइजेस्मये ॥ १८ ॥ अजुनागवयज ॥ मंत्रत्रजाणमोज ॥ केवल्यमार्गाचाअभिज्ञ-
 सागातोहा ॥ १९ ॥ आताचेदुवेंभूमीहाणिजे ॥ हेनहुकोहानाआणिजे ॥ कांस्यवैजयेरिजे ॥ परिपिकोल्डस ॥ २० ॥ ना-
 तरिविलेदरावया ॥ आदरवैजिदिवया ॥ कांशाग्राफक्यावया ॥ सिंगिजेसका ॥ २१ ॥ हेबहुअसोआरिमा ॥ आपणपेदेरवा-
 वयांजिमा ॥ पुढवपुढतीबहुवसा ॥ उदिजेमीनी ॥ २२ ॥ तेमाप्रतिपाद्यजोदंभुर ॥ तोहोवयालासींगोचर ॥ श्रुतीचानिरंतर-
 अस्मासकरणे ॥ २३ ॥ तेदुजासीचब्रह्मसूत्र ॥ येरास्तोवकानामसूत्र ॥ आवतेपणोपवित्र ॥ पावावयातत्व ॥ २४ ॥ पार्थांगास्ता-
 आवा ॥ बोलिजेतोहाह्मणेदेवो ॥ आतातपशब्दामिमावो ॥ आइंरुआशा ॥ २५ ॥ तरादानसर्वस्वदगा ॥ वचणतव्यर्थकरणे-
 जेसफळोनिस्वयेसकण ॥ इद्रावणिजेवो ॥ २६ ॥ नानाधुपाचाअग्निप्रवेश ॥ कनकांगुकाचानाश ॥ पितृपक्षपोषितांहास ॥ चे-
 दाचाजेसा ॥ २७ ॥ तेसास्वरूपाभिसमरा ॥ लागींमाणेंद्रियशरीरां ॥ आदणीकरणेजंवेरा ॥ तेचितप ॥ २८ ॥ अथवाअना-
 पाठ ॥ ओं ०३ यागार्थ ॥ ओं ०९ माज ॥ ओं १०० वींविस्तरिजे ॥

रिसें ॥ तपस्वरूपजरीअसे ॥ तरिजाणजेविंदुधाहंस ॥ स्मृत्यत्वाचू ० तसेंदहजगनिर्मयमळणी ॥ जोउदयअतसूयेपाणी ॥ तो
 विवेकअंतः करणी ॥ जागवीजे ॥ १० ॥ पाहताआत्मयाकड ॥ परिरुद्धिचापमसाकड ॥ सनिद्रास्ममबुड ॥ जागणेंजैसे ॥ ११ ॥
 तैसाआत्मपथलोच ॥ अवर्षेजोसाच ॥ तपाचाहानिर्वेच ॥ धनुधरा ॥ १२ ॥ आताकायाहाराकड ॥ जेंरेंनानाभूतीचैतन्य ॥
 तैसंप्रणिमात्रीसोजन्य ॥ आर्जवते ॥ १३ ॥ अहिंसातन्यमक्रोधस्थायः शांतिरपेशून ॥ दयाभूतेषुलोलुभार्दवहो
 रचापलं ॥ २ ॥ टी ० अणिजगाचियासुरावृद्धें ॥ शरीरवाचासामसे ॥ राहाटणेंतुअहिंस ॥ रूपजाण ॥ १४ ॥ आतोतिरे
 होऊनिमवाळ ॥ जैसेजानीचेंसुक ॥ कांतजपरीशानळ ॥ शशाकाचें ॥ १५ ॥ शक्रेदाविताचिरोफेड ॥ आणजिमेतरिनळेंक
 ड ॥ तैवारवदनाहीमायडु ॥ उपमाकैची ॥ १६ ॥ तरिभउपणवुबकें ॥ झगटताहीपरिनाडकें ॥ येरवीफोडीकोराकें ॥ पाणिजे
 सें ॥ १७ ॥ तैसंतोडावयासेंदह ॥ तीरवजेंसेकालात ॥ आव्यलतरिमाधुर्य ॥ पार्थियाली ॥ १८ ॥ ऐकोतांतकोतुके ॥ काना
 तेनियतीसुरें ॥ जैसाचारिवेचैभिवेके ॥ अह्यहोभेदी ॥ १९ ॥ किंवडुनाप्रियपणें ॥ कोणातैहीझकउनेणें ॥ यथार्थतरीखु
 पणें ॥ नाहोकवणा ॥ २० ॥ येदवीगोरीकारकानाकोड ॥ परिसाचाचापारवाकंकीड ॥ आगियेचेंकरणेउपड ॥ परिजकोतेसा
 च ॥ २१ ॥ कानीलागतामहुर ॥ अर्थेपिमाडीजिह्वार ॥ तेवाचनहूसदर ॥ लावचिया ॥ २२ ॥ परिअहिनीकोपोनिमोप ॥ -
 लालनीनउजेंसुषु ॥ तिचभातेचेंस्वरूप ॥ जसेंक्राहोये ॥ २३ ॥ तैसंप्रवणसरवचतुर ॥ परिणमोनिमाचार ॥ बोलणेंजेंप्र
 विहार ॥ तैसत्ययेथें ॥ २४ ॥ आतायालिताहीपाणी ॥ पाषाणीनिनेयेआणि ॥ कामंशिलियालोणी ॥ कांजीनेदी ॥ २५ ॥ ल
 चापायेशिरी ॥ हलयाहीफडेनकरी ॥ वसंतीहीअंबरी ॥ नहोतीफुलें ॥ २६ ॥ नानारंभेचोनिहोरूपें ॥ शक्तीनुठिजेचिकदपें ॥
 पाठ, नाही

कांभस्मीवह्नीनउद्दीपे ॥ २७ ॥ तेवोचिक्कुमारक्रोधेभरे ॥ तेभियांमंत्रार्चविजाक्षरे ॥ तियेभिभिनेहीअपरि ॥ मीनलि
या ॥ २८ ॥ पैधातयाहीपायापडतां ॥ जुहुंगतायुपडुमता ॥ नेसीनुपजेउपजवितां ॥ कीथोर्मिगा ॥ २९ ॥ अक्रोश्रुत्वनेरेसे ॥ नावति
चेदशे ॥ जाणारेसेअीनिवास ॥ ह्यणंनलनया ॥ ३० ॥ आतांमृत्तिकान्यागेरुह ॥ ततन्यागेरुह ॥ त्यजिजेअिविवद ॥ बीजत्योगे
३१ कात्यजनिभिनिमात्र ॥ त्यजिजेआयवेचित्र ॥ कोनिद्राव्यागेविन्द्र ॥ क्कनआकृते ॥ ३२ ॥ नानाजकत्यागेतरंग ॥ वर्षी-
त्यागेमेय ॥ त्यजिजीजेसैमीरा ॥ धनत्यागे ३३ तेविलुद्धेनेदीही ॥ अहंतामांदुनयाही ॥ भादिजेअशेषही ॥ संसारजात ३४
वयानावत्याग ॥ ह्यणेतोयज्ञाग ॥ हेमानुनिस्समग ॥ पार्थिवसे ॥ ३५ ॥ आनाशान्तिर्दिग्दिगा ॥ त्वेव्यक्तमजसांग ॥ देवोह्यणती
चांग ॥ अवधानदेई ॥ ३६ ॥ तथेपिक्कोनिजयाग ॥ जानाजानहीसायोगे ॥ दागेपेविकुमे ॥ नेशातीपेगा ॥ ३७ ॥ जेसाप्रकयाबु
चाउभड ॥ बुडक्रुभिर्विश्वाचापवांटा ॥ होयआपणनेमिपट ॥ आपणनि ॥ ३८ ॥ प्रगपुगपुनोयमिधू ॥ हानुरेचिव्यवहारमेहु
परिजलेव्याचाबोध ॥ तोहीबवपा ॥ ३९ ॥ नेभाजियादेतामर्धा ॥ जानुनहंनपेरोर्दि ॥ पगारेनेचिभिर्दिनी ॥ शान्तिचेरुप ४०
आताकदर्थविनव्याधी ॥ बळिकुरणांनियाअर्धा ॥ आपणमरशोरी ॥ सुदुयनेमसा ॥ ४१ ॥ कश्चिगवनांरुतर्दागाये ॥ धुटभा
कडनपाह ॥ जोतियेचियाग्निहोय ॥ कान्ताभुन्दा ॥ ४२ ॥ नानावदनयातेकादमगा ॥ नयेअन्यजकीआह्यगा ॥ कांदनिगा
रेवप्राण ॥ हेचिजाणे ॥ ४३ ॥ कीमहावनीपापिये ॥ अथदेकन्दर्पपाये ॥ नतसमिन्यावपानाहा ॥ शेटुजेभा ॥ ४४ ॥ नेसअ-
ज्ञानप्रमादादिकी ॥ कांआत्तनीहंसदोरी ॥ निद्राव्याचासर्वविषी ॥ शिवकिंनता ॥ ४५ ॥ तयोओगीरुआपुले ॥ देउंनयांमेळ
विसरविजतीसले ॥ सलतीतिये ॥ ४६ ॥ अगापुदिन्नाचेदोष ॥ कुरनिआपुदिनेमिचिजोगन ॥ पगभागेअनन्योक्त ॥ नगासरी ४७
पाठ ॥ ओ २७ नारांपे ॥ ओ ३३ जवि ॥ ओ ३८ निवान ॥ ओ ४६ माहयणि ॥

जिसा पुज्जनि देवपाहिजे ॥ पेरुनि शेता जाइ जा ॥ तो धुनि पसा देयइ जे ॥ अतिथीचा ॥ ५८ ॥ तसे आगुने निगुणे ॥ पुढिलाने उणे ॥
फुडुनिया पाहणे ॥ तथा करे ॥ ५९ ॥ वाचुनि निविधि जे वसो ॥ नातुड विजे अमूमो ॥ नाना वीजे नाकी ॥ सदाची निहो ॥ ६० ॥
वीर काणे कुव पाये ॥ पडिले तें उभे होये ॥ तें चिकीजे परि पाये ॥ नदा ववसा ॥ ६१ ॥ ५९ ॥ ६० ॥ ६१ ॥ ६२ ॥ ६३ ॥ ६४ ॥ ६५ ॥ ६६ ॥ ६७ ॥ ६८ ॥ ६९ ॥ ७० ॥ ७१ ॥ ७२ ॥ ७३ ॥ ७४ ॥ ७५ ॥ ७६ ॥ ७७ ॥ ७८ ॥ ७९ ॥ ८० ॥ ८१ ॥ ८२ ॥ ८३ ॥ ८४ ॥ ८५ ॥ ८६ ॥ ८७ ॥ ८८ ॥ ८९ ॥ ९० ॥ ९१ ॥ ९२ ॥ ९३ ॥ ९४ ॥ ९५ ॥ ९६ ॥ ९७ ॥ ९८ ॥ ९९ ॥ १०० ॥

लुल्लदशागउकी॥ जाणनेहे॥ ६७॥ आतांमाशियाजेंसोहूक॥ जळवरजोविजक॥ कापक्षियांअनराक॥ मोककेंहे॥ ६८॥
 नातरीबाळकोदुशें॥ मातेचेंस्नेहजेंसें॥ कावसतीचास्यशी॥ मउमलयानिल॥ ६९॥ डोकयांश्रियाचीपेटी॥ कापिलियाकू
 मीचिदिटी॥ तेंसोप्लुतमाजीराहंदी॥ मवाकते॥ ७०॥ स्वशांभितमूडु॥ सुरवीयेनासुस्वादु॥ आणासिसंगधु॥ उजाक
 आगे॥ ७१॥ तोआवडेनेधवायतो॥ मलत्याविरुद्धजरीमहाला॥ तनीउभयेता॥ कापूरकी॥ ७२॥ परिमहाभूतेपोटीवा
 हे॥ तेवींचिपरमाणुभाजिसाये॥ याविश्वालुसारहोय॥ परानजेंसें॥ ७३॥ कायसांगेसंजिणें॥ जेजगाचिनीजेवे-
 प्राणें॥ तयानाचहणें॥ मार्दवमी॥ ७४॥ आनापराजयेराजा॥ जसाकूटथिजेलाजा॥ कामानियानिस्तेजा॥ निरुआस्तव
 ७५॥ नानाचाडकमंदिराशी॥ अववेदेअलियासन्यासी॥ सराजानहोपुजेसी॥ समभातया॥ ७६॥ क्षत्रियांरणीपळोनि
 जाणें॥ तेंकोणसाहेलाजीरवाणें॥ कांवेयव्येयाचरणें॥ महाभर्तायेने॥ ७७॥ रुपसाउदयलकुछ॥ सप्ताविनाकुरीचेंबोट
 तयालाजाप्राणसकट॥ होयजेंसें॥ ७८॥ तेंसेंओटहानपणें॥ जेंग्रावहोरुनिजिणें॥ एणजेउपजोमरणें॥ नावानावा॥ ७९॥
 तियेगार्मभेदसुसें॥ रक्तसूत्रसें॥ वीतिवहोउनिअसे॥ तेंवाजीरवाणें॥ ८०॥ हेवहूअभोदेहपणें॥ नामरूपासियेणें
 नाहोलाजीरवाणें॥ तयाहूनि॥ ८१॥ ऐसैसियाअवक्रका॥ येउपरिजातुक्रावजा॥ तेलजेंपनिमेका॥ निस्सगामोद२३
 आतासुवतवृणुटीरिया॥ चेष्टाचिनाकेसायवडिया॥ तेंसिआनराद२४॥ कावावळालियादिन
 कर॥ मरीकिरणाचाप्रसर॥ तेंसामनोजयेप्रचार॥ बुद्धीदिया॥ ८२॥ समनइननियमे॥ होनीदाहोइंदियेअक्षमे
 तेंअचापल्यवर्षी॥ येणेंहोये॥ ८३॥ श्लो०॥ तेजःक्षमाशुनिःशान्तम० होनतिभाविता॥ संवत्सपदं देवोमभिजात
 पाठ, ओ० ७३ पाठी, ओ० ८१ याही ७८

स्यभारत॥१॥टी॥॥आताइश्वरमासीलगी॥प्रवर्तताज्ञानयोगी॥धिवसेयाचा आंगी॥उपिबतत्क॥॥१॥नोपनंदसंगणोसे
 तेहीआलेअधिप्रवेशी॥परीमाणेप्रवेशे॥नगणचिसती॥८७॥तेसेआत्मनाथांचियाआधी॥आउनीवषयविपत्तीवांधी॥धा
 वीआबडेपाणधी॥श्रुत्याचिये॥८८॥ननाकेनिषधआड॥नपडेविधीचीसीड॥नपज्ञाचकाड॥महा॥मद्वचि॥८९॥ऐसेइंध
 राकडेनिज॥धावेआपसयासहज॥तयानावतेज॥अध्यासिकते॥९०॥आतासर्वहीमाहानियागिरिमा॥गर्वानयेतेकि
 स्समा॥जेसेदेहवाहोनिरोमा॥बाहणेनेणे॥९१॥आणिमातलियांदियांचेवेग॥कांपाचीनिरवकनुरोग॥अथवायोगवि
 योग॥प्रियाप्रियाचि॥९२॥ययाआद्यवियाचाचिथोर॥एकेवेकेआलियापूर॥तरीअगस्त्यकांधरुनधीर॥उमातोके॥९३
 आकाशीधूमाचीरेरवा॥उठिलीबहुवाआगकिंका॥तेगिकियेकीस्फुक्का॥वाराजवी॥९४॥तेसेअग्निप्रतापिदवा॥अ
 ध्यात्मादिउपदवा॥पातलेयापाडवा॥शिकुनिघाली॥९५॥ऐसेचिचिसोमाचाअवसरी॥उचलुनियेयाजचागांवकरी॥दु
 तीह्यपिपेअवधारी॥तिरयेतेगा॥९६॥आतानिवांकुनिकनक॥मरिलागंगेपीयूषे॥नयाकलशाचियासा॥रिखे॥शोचिअ
 से॥९७॥जेंआंगीनिष्काफअन्वार॥जिवीदेवकसान्चार॥तागवाद्यइलाआकार॥श्रुचिताचाचि॥९८॥कांप्रेडीतपा
 पताप॥पोरबीततीरिचिपादप॥समुद्राजयआप॥गगेवेंजेसे॥९९॥कांजगांचेआद्येफेडित॥अयेचीगराडुंउयडित॥नि
 येजेसाभास्वत॥मदुक्षिणे॥१००॥तेसीबाधलांसोडिता॥बुडालिकारिता॥साकडोंफेडिता॥आर्ताचिया॥१०१॥किबहुना
 दिवसरती॥पुढिलाचिसरवहेउज्जति॥आणितआणितान्स्वार्थी॥प्रवेशेजे॥१०२॥वांचुनिअपुलियाकाजलांगी॥प्राणिजा
 ताचाअहितभागी॥संकल्याचीहीआडवेगी॥नवरणेजे॥१०३॥पेअइहलेशियागोष्टी॥एकसीजियाकिरदा॥तेसांगी
 पाव॥ओ॥८६॥कौशिक॥ओ॥९३॥मार्चनी॥ओ॥९५॥प्रस्मनि॥ओ॥९६॥वे॥ओ॥२००॥अधकार॥७॥

तलोहेदिदी ॥ पाहेंयेतेसें ॥ ४ ॥ आणिंगांशं स्रुचमाथां ॥ पावोनिसेकोचलीजेविपाथां ॥ नेंविमान्यपणेंसर्वथा ॥ लाजणजे ॥ ५ ॥ तेंहे
 पुढतपुढती ॥ अमानिलजाणसुमती ॥ मागांसागीतलेसेकिती ॥ तेचितेंबोली ॥ ६ ॥ एवइहीसंघिसें ॥ ब्रह्मसंपदोहवसतअसे ॥
 मोसचक्रवर्चिजेंसें ॥ अग्राहारहोये ॥ ७ ॥ नानाहंसपत्तीदेवी ॥ यागुणतीर्थाचिबिल्यनवी ॥ निवीगसगराचिदेवी ॥ गंगाचि-
 आली ॥ ८ ॥ किंशुकुसुमाचिसाळा ॥ हेयेडनिमुक्तिबाळा ॥ वैरायविरेपेदेगळां ॥ गिवसीतअसे ॥ ९ ॥ कांसद्विसगुणज्योती
 इहीउज्ज्वलिआरती ॥ गीताआत्मयाजपती ॥ नौराजनाआली ॥ १० ॥ उगकिंतेनिमळे ॥ गुणेंयेचिमुक्ताफळे ॥ देवीशक्तिके
 शीतार्णवीची ॥ ११ ॥ कायबहुवाचेंसें ॥ अभिव्यक्तयेअपेंसी ॥ केलेहैतेगुणराशि ॥ संपत्तिरूप ॥ १२ ॥ आताहुःखाचीआतु
 वदवेली ॥ दोषकाट्याचीजरीपरली ॥ तद्निनिजाभिधानिबिघाली ॥ आसुरीनि ॥ १३ ॥ पेंत्याड्यत्यजावद्यानागी ॥ जाणावीजही
 असुपयोगी ॥ ऐकतेचांगी ॥ श्रोत्रशक्ति ॥ १४ ॥ तरीनरकव्यथाथोवी ॥ आणावयाहोवी ॥ अयोगी ॥ येळकेनातेआसुरी ॥ संप-
 नीहे ॥ १५ ॥ नानाविषयवर्गएकवद ॥ तयानावेंजेसाबासद ॥ आसुर्यंसंपत्तीहासेहें ॥ दोषांचोतेसा ॥ १६ ॥ म्हेदेमोदयोमि
 मानश्चकोपः पारुष्यमेवच ॥ अज्ञानचाभिज्ञाननगरार्थसंपदमासुरी ॥ १७ ॥ तरीतयाचिआसुरा ॥ दोषांसाजोजयावीरा
 बाडपणाचागारा ॥ तोदंभेसा ॥ १८ ॥ जेमीआपुर्लाजननी ॥ नयदागिअयोजनी ॥ तेंतीअचिपगितनी ॥ कारणहोये ॥ १९ ॥ कांवि
 चापुसुपदिश ॥ बोभादलियाचेहटा ॥ तारइसुदाचिमिअमिशा ॥ हेतुहोती ॥ २० ॥ पेंआंगेंबुडगापहापुरीं ॥ जेवेगेकाहीपेड
 नीती ॥ तेंनांविचिबांधिलियांशिरीं ॥ बुडवेंजेसी ॥ २१ ॥ कारणजेंजिघिता ॥ तेंनांभिनेंजगिसेविता ॥ तीरअनचिपुडुसुता ॥ होय-
 विष ॥ २२ ॥ तेसादृशासुचासरवा ॥ धमजानातोपोहाजिदेरवा ॥ तीरनारिनालोचिदोषां ॥ नागीहोये ॥ २३ ॥ ह्युणेंनिवावेचा
 पाठ, ओ. ५ संकोच, ओ. ८ निर्वाण, ओ. १६ विष, ओ. १६ रंगद, ओ.

[illegible]

बोलणें ते वृष्टी ॥ दुर्गळाची ॥ ४२ ॥ येरजें क्रियाजान ॥ तें निरवयाचें क्वत ॥ ऐसें सबात्य स्वसांभित ॥ अयाचें गा ॥ ४४ ॥ तोय नुं ध्यांत अध-
 मजाण ॥ पासुथाचें अवतरण ॥ आतां आइ वरुण ॥ अज्ञानाची ॥ ४५ ॥ तरीशी तोषास्पर्शा ॥ निवाडनेणें पाषाणें जे सा ॥ कांरात्री
 अणि दिवसा ॥ जात्यांच तो ॥ ४६ ॥ आगिउठिला आरोगणें ॥ जें सारवाद्या रवाच नक्षणे ॥ कांणिरसाडनेणे ॥ सोनयालोहा ॥ ४७
 नातर ते नानारसी ॥ शिंयां निदवी जें सी ॥ परिरस स्वादासी ॥ नेणें जेवीं ॥ ४८ ॥ कावागजें सापाररवी ॥ नक्षेचि गासागसागो वरवी
 तें सें कृत्या हूत्य विवेकी ॥ अथपणजें ॥ ४९ ॥ हें चोरव हें मैक्र ॥ ऐसें नेणें निचां बाळ ॥ देणें ते केवळ ॥ मुरवी चियादी ॥ ५० ॥ तें सें पा-
 पपुण्याचें शिवचंद ॥ करी निरवातां बुद्धिचें छि ॥ कडु मधुर नवाटे ॥ ऐसी जे दशा ॥ ५१ ॥ नियोनाम अज्ञान ॥ यावां नानाहीं आन ॥ ए-
 वं साही दोषांचें चिह्न ॥ सांगी तले ॥ ५२ ॥ इति च साही दोषांगी ॥ हे भासरी संपत्ती दादुंगी ॥ जें सथोर विषय सुभने अंगी ॥ अंग-
 सांन ॥ ५३ ॥ कांति यावळी चापंति ॥ पाटतां थोडे वापगमती ॥ परि विषवही प्राणा हुती ॥ करुन पुरे ॥ ५४ ॥ धातयाही गेलि याशर-
 ण ॥ त्रिदोषीं निचुं कसरण ॥ तया तिहींची हे दुणी जाण ॥ साही दोष हे ॥ ५५ ॥ इहीं साही दोषां संपूर्णी ॥ जालीं दयेची उभारणी
 ह्युणो भि आसरी उणी ॥ संपदाने ॥ ५६ ॥ परि क्रूर गृहांची जें सी ॥ सादीं मिके एके चिराशी ॥ कांयेती निंदका पासी ॥ अशेष पा-
 पे ॥ ५७ ॥ मरणा रत्याचें आग ॥ पाइयां नि आवये चिराग ॥ का कुमुहर्तु दुर्योग ॥ एक ततती ॥ ५८ ॥ विश्वात्मना आनंदवी जें चो-
 रा ॥ शिणलास इज महापुरा ॥ तें सें दोषी इही नरा ॥ अभिष्ट की जें ॥ ५९ ॥ कां आगु व्यजां नि यवळ ॥ शोळिये सात वे उकि मिके ॥ ते
 सें साही दोष सगळे ॥ जेडती तया ॥ ६० ॥ मोक्ष सांग कडे ॥ जें याचा आबुखापडे ॥ तें न निरे ह्युणो निबुडे ॥ संसारां जो ॥ ६१ ॥ अ-
 धमां पोनी चापाउदी ॥ उतरत जो किरादी ॥ स्थावरां हीं तळवटी ॥ वेमणें ये ॥ ६२ ॥ हें अमो नयान्ताठांयी ॥ भिळो नि साही दोषीं चि-
 पाट, नाही ॥ ६३ ॥

हीं॥ आसुरीसंपत्तीपाहो॥ वाढवोजे॥ ६३॥ तेसयायादेवी॥ संपत्तीनाभिभूताजी॥ मागीनीत्यादी॥ देव॥ ६४॥ भूजे
 देवीसंपद्भिभूतायनिवधायारुद्रकृता॥ मायकचः संपददरोममिमासातोमिमादव॥ ७॥ देवी॥ ७॥ देवदत्तनीमातीपद्मिनी॥ दे-
 वीजोत्पत्तीतली॥ तेमोससूयपाहिली॥ उरवाचिनाण॥ ६५॥ येरजेंदसरी॥ संपत्तीनाभिभूताजी॥ तमाहनाहाचसरी॥ सो
 र्वबीजीवा॥ ६६॥ परिहृआइकानिस्त्रणे॥ प्रययेसीहोरसे॥ कायगतीचरिणे॥ धाकधरिजे॥ ६७॥ हेआसुरीसंपत्तीतया॥
 बथालागीधनजया॥ जोसाहीदोषायो॥ आन्यरहाये॥ ६८॥ तेनवपादया॥ मागीतिलयादेवा॥ गुणनिधिवरवा॥ ज्यनारी
 ६९ ह्यणोनिपायांया॥ देवीसंपत्तीस्वाभिया॥ हाउनिचावउवाया॥ केवन्याचिया॥ ७०॥ भूजे॥ होमूगमरीगोलाहोस्मिन्देव
 आसुरएवच॥ देवोविस्तरशः प्रोक्त आसुरपाथयेष्टणु॥ ६॥ देविका॥ आणितेंतोआसुरो॥ सपत्तिवंगोनग॥ अनादिसिद्ध
 उजरा॥ राहादोचाआहू॥ ७१॥ जेंसंपत्तीचाभवसरो॥ व्यापारिजनिशाचरी॥ दिवसासूव्यवहारो॥ मनुष्यादिक॥ ७२॥ तेसि
 याआपलालियाराहादी॥ वर्तनीदेवीसूदी॥ देवोआणिद्विरीदी॥ आसुरोयेये॥ ७३॥ तेरीचिविस्तारुनिदेवी॥ ज्ञानकथना
 दिमस्तवी॥ मागीलुगथीवरवी॥ मागीतली॥ ७४॥ आतंआसुरजेंसूदी॥ तेथिचिउपलुंगोदी॥ अयथानाचदिदी॥ देपांने
 की॥ ७५॥ तरीवाद्योषणनाद॥ नेदिकवणाहिसाद॥ कांअपुथीमकरद॥ नलपंजेसा॥ ७६॥ तेरीप्रदुतीहेआसुर॥ एकलनो
 हेगोचर॥ जंवरकाथेयरीर॥ माल्हायिना॥ ७७॥ मगअविकरलालाकुडे॥ पावकजेसाजोडे॥ तेसीयाणिदेहीसापडे॥ आतो
 पसीहू॥ ७८॥ तेवेदीजवादिउसा॥ तेचिआंनुलारसा॥ देहाकारहोयेनेसा॥ प्राणियांचा॥ ७९॥ आनांतयानिमाणियां॥ रूपक
 रंरनजरा॥ घटलजेआसुरीया॥ दोषबुद्धी॥ ८०॥ भूजे॥ प्रवृत्तिचिनिहनिचजनानाविदुरासुराः॥ नशीचंनपिचानासन
 पाठ॥ ओ॥ ६६ लोप्रमोहाची॥ ओ॥ ७४ किल्लारे॥ ७५ ७६ ७७ ७८ ७९ ८०

सत्यं तेषु विद्यते ॥ ७ ॥ टी ॥ तरि पुण्यालार्गं प्रवृत्ति ॥ क्रांतापविषं भिद्वृत्ति ॥ याजायायाचं रत्न ॥ नयाचं मन ॥ ८ ॥ निगुणेषा
 आशिप्रवेशा ॥ चित्तनेदीत आवेशा ॥ कोशकीटजेसा ॥ जाचिनलार्गे ॥ ८ ॥ कांदिदले सायुती येदल ॥ कांनये हे सुदील ॥ नपाहाना
 देमांडवल ॥ मूर्खचोरा ॥ ८ ॥ तैसियाप्रवृत्ति निवृत्ति ॥ नेणी जती आरुरी जनी ॥ आणिशोचं तैस्वमी ॥ देवनी नाने ॥ ८ ॥
 काळिमासांडल कोळसा ॥ वरिचोरवो हो देल वायसा ॥ राक्षस हो सासा ॥ विदोशे के ॥ ८ ॥ परि आरु राभाणिया ॥ शौच न होय
 नेजया ॥ एवित्रलजे विम्राडिया ॥ मद्याचिया ॥ ८ ॥ वाद विना विधीची आश ॥ कां पाहाना न लुं चिवास ॥ आचारानी साव
 नेपोचि तो ॥ ८ ॥ जे संचरणे शोके येचं ॥ क्रांदा वणवारियाचे ॥ जाळणे अभिचं ॥ मनु ते उते ॥ ८ ॥ तैसै पुढासु निस्वर ॥ आव
 रतीने गा अस्तर ॥ सत्ये भिकारे वर ॥ सदाचितयां ॥ ८ ॥ जरी नांगिया आपुनिया ॥ विचु करी गुद गुलिया ॥ नरी साचा बोलिया
 बोलती ते ॥ ८ ॥ अपानाचे नितीडे ॥ जरि सगंधायेणे घेइ ॥ तस्मिन् यथा जाडे ॥ आभंगे ते ॥ ८ ॥ ते सेंत न करिता काही ॥ आ
 नेचि वोरवटे पाही ॥ आतो बोलती ते न वाई ॥ सांगिजे ल ॥ ८ ॥ यद्दगी करयाचा वाचीचांग ॥ तैतया भिकेचे नीत आग ॥ तैसा अ
 करीचा प्रसंग ॥ मसंगपरिस ॥ ८ ॥ उपवणिजे जे विनीडे ॥ उगळी पुवाच उमड ॥ हं जणिजे तो ये उघड ॥ साधो ते बोले ॥ ८ ॥ भु
 असत्य समितें जगदाहुरनीस्वर ॥ अपरस्पर संसृतीस मय न्का महेतुक ॥ ८ ॥ टी ॥ तरि विष्णु हा अनारि हा वो ॥ येथ नि
 यताई चररावो ॥ चावडिये न्यावो अन्यावो ॥ निवरी वेद ॥ ८ ॥ वेदां अन्त्या गणत ॥ जे निष्ठाये ॥ ८ ॥ साध्या गो सरवा ड ॥ स्त
 रीजिये ॥ ८ ॥ ऐसी हे विषय ववस्था ॥ अनारि जे पाश्या ॥ इये ते द्यपती वृथा ॥ अवयोचि हे ॥ ८ ॥ यत्त प्रदोद निवृत्तयागी ॥ देव पि
 से मनि मालिगी ॥ नाग वले भगवें योगी ॥ समाधि स्थंभे ॥ ८ ॥ येथ आपने निबळे ॥ मोगिजे जे जे वेदाळे ॥ हे वांचे निवेगळे ॥ पुण्य
 पाठ ॥ ओ ८४ कानि ल ॥ ओ ९४ धुमाचे ॥

आहे ९९ नां अग्रक्रमेण आंगिकें ॥ वेगळे वेगळीं नदरे ॥ ऐसा गादि जवणा विषय सरवे ॥ तैचि पाप ॥ ३०० ॥ प्राण येतों संपन्नांचे ॥ ते-
पापजरी साचे ॥ तरी सर्व स्वयेतयांचे ॥ हे पुण्य परळकीं ॥ १ वळा अबळा नरकाचे ॥ देवि बाधित जरी होये ॥ तरी सास यां कां न होयें ॥
निसंतान ॥ २ आणि कुठेशी धूनि दोन्ही ॥ कुमारे चिता मलमां ॥ मेळवी जनी मजा साधनी ॥ हे तु जगा ॥ ३ ॥ नरां पशुपक्षां द जाती
जयां भिनना हा संतती ॥ तया कोणे मति पर्त्ता ॥ विवाह बंध ॥ ४ ॥ चोरियें बंधन आज ॥ नरते का पाणि मिथि पाजे ॥ वालां प्रहार
केले ॥ कोढा कोणी होये ॥ ५ ॥ ह्मणो निंदवंगां सा ॥ नां धर्मा पास भागवी ॥ आणि परत्राचा गार्वी ॥ करी तो भोगी ॥ ६ ॥ परिपर
ब्रमादेवो ॥ नदिसे ह्मणो निते वावो ॥ आणि कर्तो निस मादावो ॥ मोण्या सिक्कवण ॥ ७ ॥ येथ उगीं म्या इंदु सुरती ॥ जे साकां स्वर्ग-
लोकीं ॥ ते साचि ह्मि ही नरकीं ॥ लोळत आय्य ॥ ८ ॥ ह्मणो निन रक्षु स्वर्ग ॥ नक्षे पाप पुण्य भाग ॥ जेतो हीं तारीं स्मरु भोग ॥
क्रामाचा चितो ॥ ९ ॥ या कारणे काम ॥ रक्षी पुरुष युग्म ॥ मिळती ते थजंस ॥ आगुं व जग ॥ १० ॥ आणि जें अग्नि व्याघे ॥ स्वाथाला
गीं होये ॥ पाठि परस्परें द्वेष ॥ कामचि नाशी ॥ ११ ॥ वैकामा वांचुनि कांहीं ॥ जगा मूर्खचि आननाहीं ॥ ऐसे बोलती पाहीं ॥ आसु
रगाते ॥ १२ ॥ आतां असो हो कि डाळ ॥ बोलीन करूं पयळ ॥ सांगात चिम सोल ॥ होता से वाचा ॥ १३ ॥ स्ट्रो ० एतां हरि मवरूप्य
न झाल्या नो ल्य बुद्धः ॥ अभवत्युग्र क्रमणाः क्षया यजगती हिनाः ॥ १४ ॥ टी ० आणि ईश्वराचारवर्तनां सुसंधियाचि करीती-
चांथी ॥ हे ही नाहीं चित्तीं ॥ निश्चयरक ॥ १४ ॥ किंबहुना उपड ॥ आंगोलाउनियां पोखाड ॥ नास्ति कृपणांचि हाड ॥ रोविले जीवीं १५
ते वेळीं स्वगालागीं आदर ॥ कानरकाचा अडदर ॥ आवासनांच अंकुर ॥ जळोन गेला ॥ १६ ॥ मग केवळ ये देहर वोडां ॥ अमे त्याद
काचा बुडुडा ॥ विपय कीं सुहाडा ॥ बुडले गा ॥ १७ ॥ जें आटावे होती जळचर ॥ तें डोहीं भकती दाबर ॥ कांपडावें होये शरीर ॥

पाठ. ओ. १०, सकृदिप्रा. ७. ७. ७. ७. ७. ७. ७. ७. ७. ७.

तैसैंगंउदय ॥ १८॥ उदयजणंकेतुंजैसं ॥ विश्वाअनिरेहो ॥ जन्मलीतंतैसे ॥ लाकांआहुं ॥ १९॥ विरूहलियांअशम ॥ फुटतीतं
 केसंम ॥ पापाचेकीर्तिसंम ॥ न्नासनेने ॥ २०॥ आणिसागांपुढांजाळणें ॥ वांचूनिआगीकांहीनेणें ॥ तैसेंविरूहचिह्णकरणें ॥ म
 लुंवेयां ॥ २१॥ परितेंचिगाकरणें ॥ आदिरतोसंभवेजें ॥ तोआहकपर्याहणें ॥ श्रीनिवास ॥ २२॥ स्तो० काममाअित्यहुः
 रदंभमानमदान्विताः ॥ मोहाहूहीत्वासत्त्वाहान्मवनेंतेशचित्रताः ॥ १०॥ टी० तरिजाळणियेंनमरे ॥ आगीइंधनन्नु
 रे ॥ तयांदुर्मराचियेधुरे ॥ मुक्ताळजो ॥ २३॥ तयाकामाचबोलावा ॥ जीवांधरुनिपांडवा ॥ दंभमानाचमेळावा ॥ मेळवीतो
 ॥ २४॥ मातलियाकुंजरा ॥ आगळीजालीशदिरा ॥ तैसामदाचातावातवजरा ॥ चढतांआगीं ॥ २५॥ आणिआग्रहातेचिबा
 वो ॥ वरिमोहयाऐसासादाबो ॥ मगकायवानुनिवाहो ॥ निश्चयत्वा ॥ २६॥ जिहींपरोपतापघडे ॥ परावाजीबुरगडे ॥ तिहींक-
 मोहीअभिगाढे ॥ जन्मवृत्ती ॥ २७॥ मगआपुल्लेकेंलोकावरिती ॥ आणिजगतेधिःकारिती ॥ दाहीदिशीपसरिती ॥ स्फुटहाजा
 क ॥ २८॥ ऐसेमिगाथाटोपें ॥ थोरियेआणिनीपापें ॥ धर्मधेनुवरुपें ॥ सुटलेंजैसं ॥ २९॥ स्तो० चिंतामपरिमेयांचमल
 यांतासुणअिताः ॥ कामोपमोगपरमाएतावदितीनिश्चिताः ॥ ११॥ टी० अचियेकाआयती ॥ तयाचियांकर्ममहत्तौ ॥ आणि-
 जिणियाहिपरैती ॥ वाहतीचिंता ॥ ३०॥ पाताळ्याहूनिनिम्स ॥ जियेजेंचियेसावेगन ॥ जेपाहांतांभिसुवन ॥ आणुहीनोहे
 ॥ ३१॥ तेयोगंपदवीमवणी ॥ जीविंअनियमचितवणी ॥ जैसाइनेणमरणी ॥ वल्लभाजैसीं ॥ ३२॥ तैसींचिंताअपार ॥ वाद-
 वितीनतरा ॥ जीवींस्त्रनिअसार ॥ विषयादिक् ॥ ३३॥ स्त्रियागीइलेंआदकावें ॥ स्त्रीरूपडोकादेखावें ॥ सर्वेदियेंआलिं-
 गावें ॥ स्त्रियेतेंचि ॥ ३४॥ कुरबंडीवीजेअमृतें ॥ ऐसेसुरवास्त्रियेपरोतें ॥ गहींचिहाणोभिचिनें ॥ निश्चयकेला ॥ ३५॥ मग
 पाठ ओ. १९ अनिवाचोदोष. ओ. ३० वृत्ति. ओ. ३१ होउनि ओ. ३२ सोग. ओ. ३४ आस्त्रेपावें. ७ ॥ ७ ॥ ७ ॥

तस्याचिरंभोगा ॥ लागीं पाताळ स्वर्गा ॥ धांवती दिग्विभागा ॥ पर्यंतही ॥ १६ ॥ श्लो० आशापाशशतैर्बद्धाः कामक्रोधपरायणाः
 ईहते कामभोगार्थं मन्यायेनार्थसंचयान् ॥ १२ ॥ टी० आमीषकवकुथोरीभाशा ॥ नमिचारि तांगिळीमासा ॥ तेंसें कीजे विबयां-
 शा ॥ तयाभिगा ॥ १७ ॥ बाळीत तंव न पवती ॥ मग फोरडियेचि आशेची संनती ॥ वाट उवाट उं होती ॥ कोशफिडे ॥ १८ ॥ आ-
 णिपसरिला अभिलाष ॥ अहूर्ण होये तोचि देष्ट ॥ एवं कामक्रोधाहूनि अधिक ॥ पुरुषार्थ नाही ॥ १९ ॥ दिवसांचे बोलणें शरी-
 जा गोवा ॥ ठाणात रियांजें सापाडवा ॥ अहोरात्रिही विसावा ॥ मेढरिना ॥ २० ॥ तेंसें उंची नि लोटिले कामें ॥ निहटती क्रो-
 धाचि ये देसें ॥ तरी रागहू पंमरें ॥ नमाती केंही ॥ २१ ॥ तें विंचि जीबीं चिया हांवा ॥ विषयवासनाचा मेळावा ॥ केला परीतो भो-
 गाचा ॥ अर्थे किंजा ॥ २२ ॥ ह्यणोनि भोगावया जोगा ॥ पुरता अर्थे पेंगा ॥ आणावया जगा ॥ झोंबती सरा ॥ २३ ॥ एका तें सा-
 धुनि मारिती ॥ एकाचीं सर्व स्वें हरिती ॥ एकाला गें उभारिती ॥ अपाय यंत्रें ॥ २४ ॥ पाशिकें पोती वागुरा ॥ सुणीस साणेची का-
 दीरवों चारा ॥ येऊनि निपती डोंगरा ॥ पारधी जेसे ॥ २५ ॥ तें पोसावया पोद ॥ मारुनि माणियांचे संघाट ॥ आणितो ऐसे निहट्ट ॥
 तेही करिती ॥ २६ ॥ परमाणयें ॥ मेळवीती वितें ॥ मिळाल्या वितें ॥ तोषणें केंसे ॥ २७ ॥ श्लो० इदमथ मया लब्धमिमांसे
 मनोरथं ॥ इदमस्तीदमपि मेम विषयति पुनर्धनं ॥ १३ ॥ टी० ह्यणें आजि मियां ॥ सपती बहु ते कांचिया ॥ आपुला हातीं केलिया
 धन्यनामि ॥ २८ ॥ ऐसां झोंज वजाये ॥ तंव मन आणीकही वाहे ॥ संधें चि ह्यणें पाहें ॥ आणिकांचेंही आणूं ॥ २९ ॥ हें जेतें असे
 जोडिलें ॥ तयाचे निमांडवें ॥ लाभाये ईं उरलें ॥ वराचर हें ॥ ५० ॥ ऐसे निधानं विव्याचिया ॥ मीचि होईन स्वाभिया ॥ मगदि-
 वी पडे तया ॥ उरें नेदें ॥ ५१ ॥ श्लो० असौ मया हतः शत्रुर्हनिष्ये चापरानपि ॥ ईश्वरो ह मंभोगी सिद्धो ह बलवान्भू रवी ॥ १४ ॥
 पाठः ओ० ४० दिहा, ओ० ४७ मिनयांचितें, छ

टी० हेमारेखरथोडे ॥ आणीकहासाथीनगाढ ॥ मगनादेनपवाडे ॥ येवलाचिमी ॥ ५३ ॥ मगमाझीहोतीकामारी ॥ निवेवांजून
 येरंमारी ॥ किंबहुनाचररी ॥ ईश्वरतोमी ॥ ५३ ॥ मीमोगक्ष्मीचारवो ॥ आजिसर्वस्वरवासीवो ॥ ह्यणोनिद्रहोवावो ॥ मा-
 तेपाहुनि ॥ ५४ ॥ मीमनेवाचोदेह ॥ करीतेंकेंसेनोहे ॥ केंमजवाचूनआहे ॥ आज्ञासिद्धआन ॥ ५५ ॥ तंवचिबोळ्याकाळ ॥ ज-
 वनदिसंमीअतुबळ ॥ सुरवाचाकीरनिशिवळ ॥ रासिचामीचि ॥ ५६ ॥ श्लो० आद्योभिनवनानस्मिकोन्योस्ति सहशोमया
 यदेयदास्याभिमोदिष्य इत्यज्ञानविमोहिताः ॥ १० ॥ टी० कुबेरआशिलाहोये ॥ परीतोनेगेमाझीसोये ॥ संपत्तीमजसमन
 के ॥ श्रीनाथही ॥ ५७ ॥ माझियाकुळाचाजालु ॥ काजातीगोताचामेळु ॥ पाहातांजहाहीहकु ॥ उणाचिदिसे ॥ ५८ ॥ ह्यणो
 भिमिरवितीनावें ॥ वायाईश्वरादिआपवें ॥ नाहीमजसीसरीपावे ॥ ऐसेकाफी ॥ ५९ ॥ आतालोपलाअभिचार ॥ त्याचाकरीन
 मीजीणोंद्वार ॥ प्रतिधीनपरमार ॥ यागवार ॥ ६० ॥ मातेंगातीवानिती ॥ नटेनाचैरिझविती ॥ तयादेदनमागती ॥ तेतेवस्तु ६१
 माजिरअन्नपानी ॥ प्रमदाचाआलिं गनी ॥ मीहोईनविभुवनी ॥ आनंदाकार ॥ ६२ ॥ कायबहुसांगोरेसे ॥ तेआसुरीप्रहृति
 पिसे ॥ तुरंगितीअसोसे ॥ गगनोलैतये ॥ ६३ ॥ श्लो० अनेकचित्तविभ्रान्तामाहजालसमावृताः ॥ प्रसक्ताः कामभोगेषु
 पतंतिनरकशक्नो ॥ १६ ॥ टी० ज्वराचेनिआतोपें ॥ रोगीमलतेसेजल्ये ॥ चावळतीसंकल्ये ॥ आणतेतैसे ॥ ६४ ॥ अज्ञान-
 आतलेधुळी ॥ ह्यणोंनिआशाबाहडुळी ॥ मोवंडीजतीअंतराळी ॥ मनोरथाचा ॥ ६५ ॥ अनियमआपणदेमद ॥ हांसमुद्रोमी
 अमंग ॥ तैसेकामितिअनेग ॥ अरवंडकाम ॥ ६६ ॥ मगपेंकामनाचितयां ॥ जिवींजाल्यवेलरिया ॥ वोषपिलींकांदिया ॥
 कमळेंजैसीं ॥ ६७ ॥ कांपाषाणाचियामायां ॥ हांडीफुटलीपार्था ॥ जीवितेंसेस्वर्था ॥ कुदकेजाले ॥ ६८ ॥ तेह्नांचदतीयेरथणी ॥ १६

पाठ. ओ. ६० तया. ओ. ६१ रजनी. छ.

तमाचीहोयंपुरवणी ॥ तेसामोहअंतः करणी ॥ बोदोंचिलोणे ॥ ६९ ॥ आणिवोहेजंवजंवमोहो ॥ तंवतंवविषयीरोहो ॥ विषयते
थरावो ॥ यातकासि ॥ ३७० ॥ पापेंआपलेनिथावें ॥ जवकरितीमेळावे ॥ तंवजितांचिआयवे ॥ देतीयरत्न ॥ ७० ॥ हाणोंनिगा
सुमती ॥ याकुमनोरथापाळिती ॥ तेआसुरयेतीवस्ती ॥ तयाठाया ॥ ७१ ॥ जेथअशीपयतकर ॥ रवदिरागाराकेंडोंगर ॥
तातलोतेलीसागर ॥ उतलतो ॥ ७२ ॥ जेथयातनांचीअणी ॥ हेनित्यनवीयमजाचणी ॥ पडतीतिथेदारुणी ॥ नरकलोकीं॥ ७३
ऐसेनरकाचिथेसेले ॥ प्राणींजेजेजन्मले ॥ तेहीदेखेंसुलले ॥ यजितयाणीं ॥ ७४ ॥ येहवीयोगादीकक्रिया ॥ आहाण
तेचिधनजया ॥ परिविफळतीआचरोनियां ॥ नाटकीजेसे ॥ ७५ ॥ वसुधाचियाउजरिया ॥ आपणयापतिकुस्त्रिया ॥ जोडोनि
तोषितीजेसिया ॥ आहवणों ॥ ७६ ॥ आत्मसंभावितास्तब्धाधनमानमदान्विताः ॥ यजंतेनामयज्ञेस्तेदंभेनाविधिपूर्व-
कं ॥ ७७ ॥ दी० तेसैंआपण्यांआपण ॥ मानितांमहतपण ॥ फुगतीअसाधारण ॥ गर्वितेणें ॥ ७८ ॥ मगलवोंनेणतीकेंसे ॥ आ
दिवांलोहाचेरवांबजेसे ॥ कांउधवलेआकाशें ॥ शिळाराशो ॥ ७९ ॥ तेसेआपुलियेबरवे ॥ आपणांचिरझतांजीवें ॥ तणाहीहू
निआयवें ॥ मानितीनीच ॥ ८० ॥ वरिधनाचियासादिरा ॥ माजूनिधनुर्धरा ॥ मृत्याहृत्यविचारें ॥ सवतेकलें ॥ ८१ ॥ जयाआणी
आयतीऐसी ॥ तेथयज्ञाचीगोटीकायसी ॥ तारिकायकायपिसों ॥ नकरीतीगा ॥ ८२ ॥ हाणोंनिकोणेयेवेवेळे ॥ मोदयमद्याचे
निबळें ॥ यागाचीहीटवाळें ॥ आदरिती ॥ ८३ ॥ नाकुडमडपवेदी ॥ नाउचिनसाधनसमृद्धी ॥ आणितयासीतर्वविथी ॥ हंडवि
सदा ॥ ८४ ॥ देवांआह्मणांचेभिनावें ॥ आडवारनहिनोहवें ॥ ऐसैंआथीतेथयावें ॥ लागेकवणा ॥ ८५ ॥ देवासरुवाचोसोक्रसा
गाइपुढेवेडनिजेसा ॥ उगाणायेतीक्षीरसा ॥ बुद्धिवत ॥ ८६ ॥ तेसैंयागाचेभिनावें ॥ जगवाडनिहावें ॥ नागवितीआयवें ॥ आ-
पाव, ओः ७७ उपपत्तिः अ. ७९ विसरा, ७९

हेरावरा ॥ ८७ ॥ ऐसा काहं अपुलीया ॥ होमिती जे उजरिया ॥ तेणें कांमिती प्राणिचां ॥ सर्व बाधा ॥ ८८ ॥ श्लो० अहंकार बलं दर्पे कांम
क्रोधं च संश्रिताः ॥ सासात्मा परदेहेषु प्रदिष्टं तोम्यस्त्पकाः ॥ १८ ॥ टी० मग पुढां मेरी निशाण ॥ लाउनी ते दोसित पण ॥ जगो को काशि
ती आपण ॥ वावो वावो ॥ ८९ ॥ तेव्हा महले तेणें अथसा ॥ गर्व च देमहि मा ॥ जे से लेवे दिधले तमा ॥ काजळाचे ॥ १९० ॥ तें सें गोद्व
यणावा ॥ ओं हूत्य उचावे ॥ अहंकार दुणावे ॥ अविवेक ही ॥ ९१ ॥ मग दुजयाची साष ॥ सुरवावया भिः शेष ॥ बळिये पणा अधीक ॥
होय बळ ॥ ९२ ॥ ऐसा अहंकारा बळा ॥ जाल योय कषळा ॥ दर्प सागर भरां देवळा ॥ सांडुनि उते ॥ ९३ ॥ मग वो संडले निदर्प ॥ का
साही पित्त कुरूपे ॥ तया धर्मी सें यप क्रिये ॥ क्रोधा श्रितो ॥ ९४ ॥ तें थउन्हा कां आगी रवर मरा ॥ तेलालु पाचिया कोवारा ॥ लागला आ
णि वारा ॥ स्फटला जें सा ॥ ९५ ॥ तें सा अहंकार बळा आला ॥ दर्प कांम क्रोधां गूढला ॥ या दोहींचा मेळ जाला ॥ ज्याचा वारी ॥ ९६
ते आपुली या संवेशा ॥ मग कोणी कोणा हिंसा ॥ या प्राण्यांतें वीरशा ॥ नसायितीगा ॥ ९७ ॥ पहिलें तंव धनुर्धरा ॥ आपुलि या-
मां सरुधिरा ॥ वेचकार्ती अपि चारा ॥ त्या गोभया ॥ ९८ ॥ तें यजाळी नजिये देहे ॥ इया माजि जो मो आहे ॥ तया आत्मया मज यावे
वाजतीने ॥ ९९ ॥ आणि अपि चार किं तिही ॥ उपद्रविं जे तुलें कांही ॥ तें थें चैतन्य मी पाही ॥ साण पावें ॥ १०० ॥ आणि अपि
चारा वेगळे ॥ विषाये जें अवगळें ॥ तया दाकिती इटाळें ॥ पें शूर त्याचीं ॥ १०१ ॥ सति आणि सत्पुरुष ॥ दानशीळ या द्विक ॥ तपस्वी-
अलौलिक ॥ सन्यासी जे ॥ २ ॥ कांम क्त हनन हात्से ॥ इयें माझीं निजा चिंथामें ॥ निर्वाळलीं होम धर्म ॥ ओं नां दिकें ॥ ३ ॥ त-
यां दूषांचनी काळ कूटें ॥ बास दोनि तरवें ॥ तुबोला चिं सदेहे ॥ स्मृति कांडें ॥ ४ ॥ तान हं द्विषतः क्रूरान्समोरेषु नराध-
मान् ॥ क्षिपां स्वजस्म शंभानां सुग्रीवो योनिषु ॥ १०२ ॥ टी० ऐसा यवाचि परी ॥ प्रवर्तले भाझा वें ॥ तया या पिया जे शी
पाठ नाही ॥ ११

कुरीते आर्द्रकपां ॥ ५॥ नरो भवत्युदहाचातां ॥ ये उनीरुसते जे जगा ॥ ते पदवी हिरोनि पैगा ॥ ऐसें वरी ॥ ६॥ जे कुशागारं चि उकरउ
 भवपुरीचा पानिवडा ॥ ते तमो योनीतया सुदा ॥ वृत्ती चिद ॥ ७॥ मग आहाराचि निनाव ॥ तृणही जेथे नुगवे ॥ ते व्याग्रहश्चिक-
 उवे ॥ नैसी ये कुरी ॥ ८॥ तेथे स्त्रधादुःख बहते ॥ तो दुनि रवार्ति आ पणयाते ॥ सरमरो मागुते ॥ होत चि अंसती ॥ ९॥ का आ-
 पला गरळ जाळी ॥ जळती तया आगाचि पदळी ॥ तस रस चिकरा बिळी ॥ निरुधला ॥ १०॥ परिये तला म्हासघापे ॥ ये तुले नही
 मापे ॥ विसावात याना टोपे ॥ दुर्जन सी ॥ ११॥ ऐसें भवत्यां चिया कोडी ॥ गणिता ही संख्या थोडी ॥ ते तुला वेल न काटी ॥ कुशो-
 नितयां ॥ १२॥ तरित थामी जेथ जाणे ॥ तेथि चि हं प हल पणे ॥ ते पावो नियरे दारुणे ॥ महोती दुःखे ॥ १३॥ श्लो० आस-
 रं योनि सापन्ना मूढा जन्मी निजान्मनि ॥ मास प्राप्ये व को ते यन तो यां त्य मांगति ॥ २०॥ टो० हा ठाय वरी ॥ संपत्ती ते आसरी
 अयोगति अवधारी ॥ जोडली तिहीं ॥ १४॥ पावी व्यायां दिता मसा ॥ योनी तो अकुमाळ रेसा ॥ देहा गराचा उमसा ॥ आ-
 धी जोही ॥ १५॥ तो ही सी वोल्हा वाहिरे ॥ मगत सचि होती एक सरें ॥ जेथे ते आथारें ॥ काळ वंदजे ॥ १६॥ जया चिया
 पाणचिळ सी ॥ नरक येती विवसी ॥ शीण जाय मूर्छी ॥ सिपें जेणे ॥ १७॥ सक जेणे मेळ ॥ ताप जेणे पोळ ॥ जयाचे निनावे स-
 के ॥ महा प्रय ॥ १८॥ पापा जयाचा कटाळा ॥ उपजे अस गळ अस गळा ॥ विटाळ ही विटाळा ॥ बिहे जया ॥ १९॥ ऐसें बिश्वाच
 या वारवटेया ॥ अधम जे धन जया ॥ ते ते होती भागुनिया ॥ नाम सायोनी ॥ २०॥ आहासागता वाचारडे ॥ आत वित्त अस निशि
 रुंदे ॥ कदार मूर्खी के वटे ॥ जोडले निरय ॥ २१॥ काय सयाते आसर ॥ संपत्ति पोषि तो वाजरा ॥ जिया दिथे ले गोर ॥ पतने
 से ॥ २२॥ ह्मणी निनु वा प्रसुधर ॥ नाहा मगानि यामो हरा ॥ जे उता गस असरा ॥ संपत्ती वता ॥ २३॥ आण देसा दिदा वसा-
 पाव नाहीं,

हीं ॥ हे संपूर्णजयाचतुर्थी ॥ नेत्यजवेहेकाई ॥ स्वर्णोकीरा ॥ २४ ॥ **श्लो०** विनिर्गमकस्येदं दशांशानमात्मनः ॥ कायक्रोधस्त-
 थालोमस्तस्मादेतवयत्यजेत् ॥ २१ ॥ टी० परिमक्रोधलोम ॥ यानिहीनोयथाब ॥ धांवेनेथेअशरम ॥ पिकलेजाण ॥ २५
 सर्वदुःस्वाभापुमिया ॥ दर्शनायनजया ॥ पादाउहेभलतया ॥ दीपिलेआहा ॥ २६ ॥ दोयपियांनरकभोगी ॥ सुवावयाला
 गीजगी ॥ पातकाचीदादुगी ॥ समानिहे ॥ २७ ॥ तेरोखगातंविचवरी ॥ अमकंरजतीआपुदातरी ॥ जंवहेनिन्होअंतरी
 उततीना ॥ २८ ॥ अपायतिहोआशलगा ॥ यातनाइहोसंवंग ॥ हाणिहाणिनोहेनिच ॥ हेनिहाणि ॥ २९ ॥ कायबहुबोलुसु-
 मदा ॥ सांगीतलीयानिदृष्टा ॥ नरकाचादाखंदा ॥ त्रिशकुहा ॥ ३० ॥ याकामक्रोधलोमा ॥ याजिजीवेंजोहोयउमा ॥ तो-
 निरयपुर्णेनीसभा ॥ सन्मानपावे ॥ ३१ ॥ स्वर्णोनिपुदतपुदतीकिरीटा ॥ हेकायाइहाषेअपुदा ॥ न्यजार्विचिगावोखती ॥ आ-
 यवविषयी ॥ ३२ ॥ **श्लो०** एतेर्विमुक्तः कोनेयतभादुरोस्त्रिभिर्नरः ॥ आनरन्यात्मनः क्रयस्ततोयातिपरंगतिं ॥ २॥ टी०
 धर्मादिकांचोहीआंन ॥ पुरुषार्थान्निर्तेचमात ॥ करावीजेंसायात ॥ सांडिलहा ॥ ३३ ॥ हेनिमर्जावीजंवजागती ॥ तंववरी
 भिक्याचीपासी ॥ हेमाझेकाननाइकती ॥ देवोहीद्वणे ॥ ३४ ॥ जयाआपणेंपेदिग ॥ आत्मनाशाजोबिहे ॥ तेणेनथरावी
 हेमोये ॥ सावधहोइजे ॥ ३५ ॥ पोटींवांधोनिपावण ॥ समुद्रीचाहोआंगवण ॥ कांजियावयाजवण ॥ काळकूटाचे ॥ ३६
 इहीकायक्रोधलोममिं ॥ कार्यसिद्धोजाणेंतेसी ॥ स्वर्णोनिवांधोनिपुमिं ॥ अगच्छाणा ॥ ३७ ॥ उरेंनीथ्यननं ॥ होनिक्की
 सोरवळतुटे ॥ तेंसरेआपलियेवाटे ॥ चालोसोमे ॥ ३८ ॥ बिदावासांउत्तरांग ॥ त्रिकुलोपितांलुयानगर ॥ बिदायनिमा-
 लियाअंतर ॥ जेंसं होय ॥ ३९ ॥ तैसाकामादिकींतयो ॥ सांडिलासुरवपावोनिजगा ॥ सगलाहमासमार्गी ॥ सज्जनबाह्य ॥ ४०

पाटओ२६ दिहले, ओ० २८ परांतरी ओ० २९ सवोय, ओ० ३० लोह,

मगसत्संगेनबळे ॥ सत्तास्त्राचेनिबळे ॥ जन्ममृत्युचिनिमाले ॥ निस्तेराणे ॥ ४१॥ नेकळीआत्मानंदेआधवे ॥ जसदावसनवरवे ॥
 तेनेसंचिपाटणपावे ॥ शुद्धरूपेचे ॥ ४२॥ तेथेयियाचिपरमसीसा ॥ तोभेदधारुलीआत्मा ॥ तेनेनेकीअनेजिनिम्या ॥ संसारीबहे ॥
 ४३॥ ऐसाजोक्रामक्रोधलाभा ॥ झाडीकरूनिवाक्रेउभा ॥ तोयवटियालाभा ॥ गासावीहाय ॥ ४४॥ श्लो० यः शास्त्रविधिसुस्तु
 ज्यवर्ततेक्रामकारतः ॥ नससिद्धिमवाप्नोतिनस्करवनपरगति ॥ ४३॥ टी० नाहेनावजुनिकाहीं ॥ कामादिकांचाचिगयी ॥ दो
 दिलिजेणेंडोई ॥ आत्मचोर ॥ ४५॥ जोजगीसमानसरूप ॥ हिताहितहावितादोप ॥ तोअमान्यकुलाबाप ॥ वेदजेण ॥ ४६॥
 नयरीचिविधीचीभीह ॥ नकरीचिआपलीचाड ॥ वाढवीतगलाकोड ॥ इंदियाचें ॥ ४७॥ कामक्रोधलाभाचीकामा ॥ नसांडिव
 पाळिलीभाष ॥ स्वरचोरआसोस ॥ वळयलारान ॥ ४८॥ आणिपरत्रतवजाये ॥ हेकरतयाआहे ॥ परीऐहिकहीनलाहे ॥
 मोगभोगु ॥ ४९॥ तोसदेकेचियावाहणी ॥ मगपिवोनलाहणणी ॥ स्वर्माहेतिकाहाणी ॥ दर्शितया ॥ ५०॥ तरिमासाला
 गीसुलला ॥ ब्राह्मणपाणबुडारियाला ॥ केतेथर्हापावला ॥ नास्तिकवाद ॥ ५१॥ तेसेविषयाचनिकोडे ॥ जेणंपरत्राकलेउ
 बडे ॥ तंवतोविआणिकोडे ॥ मरणेनला ॥ ५२॥ एवपरत्रनास्वर्ग ॥ नारीहिकहीविषयभागा ॥ तेथेकुतामसंग ॥ मोक्षा-
 चातो ॥ ५३॥ ह्येणोनिकामाचेनिबळे ॥ जोविषयसरूपाहेसळे ॥ तयाविषयनास्वर्गमिळ ॥ नाउदरेतो ॥ ५४॥ श्लो० ते-
 स्मात्तास्त्रप्रमाणंतेकार्यकार्यव्यवस्थितो ॥ ज्ञात्वाशास्त्रविधानोक्तकर्मकुरुमिहार्हसि ॥ ४४॥ इतिश्रीमद्देवा
 स्तरसंपद्धिभागयोगनामषोडशाध्यायः १६ टी० याकारणेंपेबापा ॥ जयाआथीआपलीहृषा ॥ तेणेवेदांचियागिरापा
 आननकीज ॥ ५५॥ पतिनीचियामता ॥ अनुसरानीपतिव्रता ॥ अनार्यासंआत्माहता ॥ भेदेचिते ॥ ५६॥ नातरिशीगुरुव
 पाव, नाही. ७

चना ॥ दिग्देतुजतन ॥ शिष्यध्यात्मभुवना ॥ माजिपेस ॥ ५७ ॥ हे असो आपुलवेवा ॥ हाताआधीजरीयावा ॥ तरेआदरेजेविंदि
 वा ॥ पुलकीजे ॥ ५८ ॥ तैसेसाअशेषाहंपुरुषार्थ ॥ जोगोसार्वाहोह्योपार्थ ॥ तणेअुलीस्मृतिमाथा ॥ बेसणेयापे ॥ ५९ ॥ शा-
 स्त्रह्यणलजसाउषे ॥ तेराज्यहीतणमानवे ॥ जेयेवरीतेनह्यणावे ॥ विषहीविरुद्ध ॥ ६० ॥ ऐसियावेदेकनिष्ठा ॥ जालियाज
 रीसमला ॥ तरिकेआहेअनिष्ठा ॥ भेटणेगा ॥ ६१ ॥ ऐअहितापास्तुनिकाठिती ॥ हितदेउनीवाढिविती ॥ नाहोअुतीपरोती ॥
 माउलीजगा ॥ ६२ ॥ ह्यणोनिब्रह्मसीमेळवी ॥ तंवहेकाणहनसाडावी ॥ अगातुह्नीहीऐसीमजावी ॥ विशेपेसी ॥ ६३ ॥ जेआ-
 जिअर्जुनातूये ॥ करावयासत्यशास्त्रसार्थ ॥ जन्मलासिबळार्थ ॥ धर्माचेनि ॥ ६४ ॥ आणियमानुजेहेमे ॥ बोधेनिआ-
 लेअपेस ॥ ह्यणोनिअनारिस ॥ करुतये ॥ ६५ ॥ कार्याकार्यविवेकी ॥ शास्त्रचिकरावीपारखी ॥ अकृत्यतेकुंदेलोकी ॥ वा-
 छावेगा ॥ ६६ ॥ मगह्यपणेखरेनिगे ॥ तेतुवांआपलेनिओगे ॥ आचरोनिआदरेचगे ॥ सारावेगा ॥ ६७ ॥ जेविश्वमाभा-
 ण्यादीतीसुदी ॥ आजितुझाहती ॥ असेसुबुद्धी ॥ लोकसंगहासिभिषुद्धी ॥ योग्यहोसी ॥ ६८ ॥ एवअस्मरवर्गआयवा ॥ सा-
 गोनिनेथिचानिगावा ॥ तोहीदेवंपाडवा ॥ निरूपिला ॥ ६९ ॥ इयावरीतोपडुचा ॥ कुमरसद्गवजिविचा ॥ पुसेलतेचेतन्या
 ना ॥ कानीऐका ॥ ७० ॥ सजयोव्यासाचियाभिरापा ॥ तोवेळफेडिलातयाचुपा ॥ तेसामीहीनिष्टनिरुपा ॥ सागेनतुझा ॥ ७१
 तुह्नीसंतसाक्षियाकडो ॥ दिवीचाकरालबहुडा ॥ तरितुझांभानेयेवदा ॥ होईनगी ॥ ७२ ॥ जणोनिनिगअयधान ॥ सजवे
 करपसायदान ॥ दीजोजीसनाथहोइन ॥ रानदेवह्यणे ॥ ७३ ॥ ७४ ॥ इतिअमीभावाथदीपिकायाज्ञानदेवविरचिता
 यांषोडशोऽध्यायः ॥ १६ ॥ ७५ ॥ श्रीह्यणापणमस्तु ॥ ७६ ॥ ७७ ॥ ७८ ॥ ७९ ॥ ८० ॥ ८१ ॥ ८२ ॥ ८३ ॥ ८४ ॥ ८५ ॥ ८६ ॥ ८७ ॥ ८८ ॥ ८९ ॥ ९० ॥ ९१ ॥ ९२ ॥ ९३ ॥ ९४ ॥ ९५ ॥ ९६ ॥ ९७ ॥ ९८ ॥ ९९ ॥ १०० ॥

पार. ओ. ६९ विरु. ७५

श्रीगणेशाय नमः ॥ विश्वविकाराशितमुद्रा ॥ जयसोऽवीतुझीयोगनिद्रा ॥ तयानमोजनगोद्रा ॥ श्रीगुरुसाया ॥ १॥ त्रिगुणत्रिपु
 रीं चेटिला ॥ जीवत्वदुर्गादिला ॥ तो आत्मशशूनि सोडविला ॥ तुझा स्मृती ॥ ३॥ द्यणोनि शिवेंसी काटाका ॥ गुरुत्वे तूं जिआ
 गळा ॥ तही हकुमायजळा ॥ साजितारुनि ॥ ३॥ जे तुझा विरवीं मूढ ॥ तयालागीं तू वक्रवुड ॥ सोनियासितरीं अरवुड ॥ उज्ज्वि
 आहसी ॥ ४॥ देवि धिदिठीपाहतां सानी ॥ तही मीलनाची लनी ॥ उत्पत्तिप्रकयदां न्ही ॥ लीलाचिकरिमी ॥ ५॥ प्रवृत्तिकणाक्ष
 कीं ॥ उदिली मंदगंधानि कीं ॥ पूजिजसीनी कोसकीं ॥ जीवभृगाचा ॥ ६॥ पाठीं निवृत्ति न कर्णताळें ॥ आहा किंलें तूं पूजाधिपुके
 ॥ तें स्वांभिरविसी मोकें ॥ आगाचें लेणें ॥ ७॥ वासंगींचालास्य विलास ॥ जो हाजगद्रूप आभास ॥ तो तांडवमिसं कळस ॥
 दाविसीलुं ॥ ८॥ हे असो विस्मयदातारा ॥ तूं हो सीजयाचा सोयरा ॥ सोदरी केचियाव्यवहारा ॥ मुकेचितो ॥ ९॥ -
 फेडिता बधनाचा ठावो ॥ तुजगत बंधू ऐसा भावो ॥ धरुं लोको गेडवावो ॥ तुझाचि आंगीं ॥ १०॥ तंव दुजयाचि निनावें नया ॥ देह
 ही नुरेचि पें देवया ॥ जेणें तुं आपणयां केलीं मुद्रा ॥ ११॥ तूं ते करुनि पुढें ॥ जेउपायीं घेतीं देवडे ॥ तयाठासि बहु वेंपाडे ॥
 सोगांचितुं ॥ १२॥ जो आनं सुखमानसीं ॥ तयालागीं नाही तुल्याचें देशीं ॥ ध्यानही विसरें तेणें सि ॥ वालसतुज ॥ १३॥ तूं तें सि
 क्षत्रिजोनें ॥ तो नांदें सर्वज्ञपणें ॥ वेदांहित्ये वटें बोलणें ॥ नेघसीकानीं ॥ १४॥ सोनगातु सें राशिनाव ॥ आतां सोत्री कें बांधो-
 हांव ॥ दिससी ते तुलीमाव ॥ मजो काई ॥ १५॥ देविकें सेवक हो पाहो ॥ तरि सोदितां दोहचि लाहो ॥ द्यणोनि आतां काही नो-
 हो ॥ तुजलागीं जी ॥ १६॥ जें सर्वथा सर्वही नो हिजे ॥ तें अहयातू तें लाहिजे ॥ हें जाणे मी वर्म तुझे ॥ आराध्यालिंगा ॥ १७॥ तरे
 नुरोनि वेषकें पण ॥ रसीसजिनलें लवण ॥ तें सैनमनमासे जाण ॥ बहु काय बोलो ॥ १८॥ आतां रिताकुं मसमुद्रां रिगे ॥ तो-
 पद. ओ. १ कोटी. ओ. १ सहस्रतुज. ओ. ७ आहाली. ओ. १ विसो.

उचं च तत्तमरोनिनिगे ॥ कां दशदीपसं ॥ दीपचिहोयं ॥ १९ ॥ तैसातु द्विचाप्रणती ॥ मीपूजालो श्रीनिवृत्ती ॥ आतां अणीनव्य
की ॥ गीतार्थतो ॥ २० ॥ तदीषोडशाध्यायशेखी ॥ तियेसमाप्तीचाम्बोकी ॥ जोऐसा निणोयानिबुकी ॥ देविलादेवं ॥ २१ ॥ जैकृत्या
कृत्यव्यवस्था ॥ अनुष्ठायपाथी ॥ शास्त्रचियेकसर्वथा ॥ प्रमाणतुज ॥ २२ ॥ तेषु अर्जुनमानसं ॥ ह्मणेहै ऐसं कैसे ॥ जैशास्त्रे
वीणनसे ॥ सुटिकाकर्मा ॥ २३ ॥ तरतस्तकाचीफडे ॥ दाकोनि कै तोमुणिफादे ॥ कैंनाकीचाकेशजोडे ॥ सिंहाचिये ॥ २४ ॥ मगते
पोंतोबोविजे ॥ तरचलेपोंपविजे ॥ येहवींकायअसिजे ॥ रिक्तकरी ॥ २५ ॥ तैसीशास्त्राचीसोककी ॥ इयाकैकोणवेंदाळी ॥ ए
कवाक्यतेचाफकी ॥ पैमिजेकै ॥ २६ ॥ जालयाहीएकवाक्यता ॥ कालासैवैकअनुष्ठिता ॥ कैचापैसारजीविता ॥ येतुलालिया ॥ २७
॥ आणिशार्वेअर्थदेशीकाकै ॥ याचहुहीयेकफके ॥ तोविपावोकैमिळे ॥ आधवयापों ॥ २८ ॥ ह्मणौनिशास्त्राचेंचडतें ॥ नोदेप्र-
कारेंबहुतें ॥ तरिसूर्यसुसुहायेथें ॥ कायगतीपां ॥ २९ ॥ हापुसावयाअभिप्राव ॥ जोअर्जुनकरीप्रस्ताव ॥ तोसतराविचादाव ॥
अध्यायायेथ ॥ ३० ॥ तरिसर्वविषद्वितृष्णा ॥ जोसकककींप्रवीण ॥ कृष्णाहीनवलकृष्णा ॥ अर्जुनतेंजो ॥ ३१ ॥ शौर्याजोडला
आधार ॥ जोसोमवशाचाभ्युगार ॥ सुखादिउपकार ॥ जयाचीलीका ॥ ३२ ॥ जोमतेचाप्रियोत्तम ॥ ब्रह्मविद्येचाविश्वास ॥ सहच-
रमनोधर्म ॥ देवाचाजो ॥ ३३ ॥ तोअर्जुन ह्मणोगातमालशासा ॥ इंदियाफावलियाब्रह्मा ॥ तुम्हाबोलआत्मा ॥ साकांक्षपैजी ॥ ३४ ॥
जैशास्त्रेवांचूनिआणिकें ॥ प्राणियास्वसोह्मनंदरेव ॥ ऐसंकाकैपहें ॥ बोलिलासि ॥ ३५ ॥ अर्जुन ० अर्जुनउ ० येशास्त्रविधिमुस्त-
ज्ययजंतेश्वर्यान्विता ॥ तेषांनिष्ठतुकाकृष्णासत्त्वमोहोरजस्तमः ॥ ३६ ॥ तैरनिभिकचितोदेश ॥ नक्षत्रिकाकाअवका
श ॥ जांकरवीशास्त्राभ्यास ॥ तोहीदुगी ॥ ३६ ॥ आणिअभ्यासीविरजिया ॥ होतजियासामश्रिया ॥ त्याहानाहीआपैतिया ॥ ३७

पाठ. ओ. २१. ओ. २५. कंठा.

तिथयेवळीं ॥ ३७ ॥ उजूनोहोचियाचीन ॥ नेदीचिप्रज्ञासंग्रह ॥ ऐसेदेलेअपादान ॥ शास्त्राचेजया ॥ ३८ ॥ किंबहुनाशास्त्राविरतिं ॥ ये
 कहीनलाहानीचिनरवी ॥ ह्मणुनिउरिविवरि ॥ सांडिलीजिही ॥ ३९ ॥ परिनिर्धोस्तनिशास्त्रे ॥ अर्थास्तुष्टानेपेवळे ॥ मोदनातिवरं
 त्रे ॥ साचारजे ॥ ४० ॥ तथाऐसेआह्मीहोआवे ॥ ऐसीचाडबाधोनिजीवे ॥ घेतीतयाचेमार्गावे ॥ आचरावया ॥ ४१ ॥ इडयाचिया
 औरवरा ॥ तळिबाळीहेदातारा ॥ कापुटासूनिपडिरा ॥ असमचाले ॥ ४२ ॥ तैसेसर्वशास्त्रनिपुण ॥ तथाचेजेआचरण ॥ तें
 चिकरितीयमाप्य ॥ आपलीयेअहे ॥ ४३ ॥ मगशिवादिकेंपूजेने ॥ सूस्वादिकेंमहादानें ॥ अभिहोत्रादियजने ॥ करितीजेअहा ॥
 ४४ ॥ तथासत्वरजतमा ॥ माजिकोणपुरुषोत्तमा ॥ गतीहोयतेआह्मी ॥ सांगीजजी ॥ ४५ ॥ तंववेकुदपीठिलिंग ॥ जोनिगमप
 दाचापराग ॥ जियेजयाचेनिहेंजग ॥ अंगछाया ॥ ४६ ॥ काकसावियाचीवाड ॥ तोलोकोत्तरप्रोट ॥ अहितीयगूढ ॥ आनंदघन
 ॥ ४७ ॥ इयेम्हाधीजनीजेपेवळे ॥ तेंजयाचेआंगीअसिकें ॥ तोअर्थाकृष्णस्सुखें ॥ बोलतअसे ॥ ४८ ॥ म्हा ॥ विविधाभवतिअ
 द्वाद्विनासास्वभावजा ॥ सात्त्विकीराजसीचेवतामसीचेतितामृणु ॥ ४९ ॥ ह्मणेपार्थातुसाअतिसो ॥ घेईगाआह्मीजाण-
 तसो ॥ शास्त्राभ्यासाचाआडसो ॥ मानितोसिकी ॥ ४९ ॥ तुसधीयाचीअहा ॥ झोबोपाहसीपरमपदा ॥ तारितेसेहेंप्रबुद्धा ॥ सो
 होपेनोहे ॥ ५० ॥ अहाह्मणीतलियासाठी ॥ पातेजोनयेकिरीटी ॥ कायदिजअत्यजघृष्टी ॥ अत्यजनोहे ॥ ५१ ॥ गंगोदकजरीजा
 लें ॥ तैरिमद्यभांडाआलें ॥ तेंघेउंचेकाहेकेलें ॥ विचारीपां ॥ ५२ ॥ चंदनहोयशीतकु ॥ परिअग्निसीपावेमेकु ॥ तेंहातीथरि
 तांजाकुं ॥ नशकेकाई ॥ ५३ ॥ कांकिडाचियेआदनियेपुढीं ॥ पडिलेसोकेकिरीटी ॥ घेतलेचोरवदासाठी ॥ नागवीना ॥ ५४ ॥ तें
 सेंअहेचंदकवाडे ॥ आंगीकीरचोखडे ॥ परिपाणिथाचापडे ॥ विस्मारीजेसे ॥ ५५ ॥ आशिपाणिघेतंवस्वभाव ॥ अनादिमाया

पाठ. ओ. ४२ अक्षरवरा. ओ. ५३ काठीकरा.

प्रसाधे ॥ त्रियुणाचे विआये ॥ बाळिले आहाती ॥ ५६ ॥ तेथ ही दोन गुण रांचती ॥ मग एक धरि उन्वती ॥ तें तें सिया चि वृत्ती ॥
 जीवांचिया ॥ ५७ ॥ वृत्ति ऐसें मन धरिती ॥ मना ऐसी किया करिती ॥ केलिया ऐसी वरिती ॥ मगो निदें ॥ ५८ ॥ बीज मोडे झाड हो
 ये ॥ झाड मोडें बीज सभाये ॥ ऐसें नि कल्य कोडे जाये ॥ परी जाती नानाशी ॥ ५९ ॥ तिया परि धियें अपारे ॥ होत जात जन्मांतरे ॥ त्रियुणा
 त्व नल्प भिचरे ॥ प्राणि याचें ॥ ६० ॥ ह्मणुनि प्राणि यांचा पैकीं ॥ पडिली अद्वा अवलोकीं ॥ ते होय गुणा सारि स्वी ॥ तिही चयां ॥ ६१ ॥
 विप्रा ये झाडे सत्व शुद्ध ॥ तें ह्मं ज्ञानाची करी साद ॥ परि एका दोषा वरवद ॥ येर आहाती ॥ ६२ ॥ सत्वाचे नि आंगल गें ॥ ते अद्वा मोह
 फळारियो ॥ तें वर जत झुगे ॥ कां पां राहाती ॥ ६३ ॥ मोडोनि सत्वा चि बाये ॥ रजोगुण आकाशें जाये ॥ ते ह्मं ते चि अद्वा होये ॥ कर्म-
 केव सुणी ॥ ६४ ॥ मगत माची उठी आगी ॥ ते ह्मं ते चि अद्वा भंगी ॥ होला गोमोगालागीं ॥ फल तेया ॥ ६५ ॥ अद्वा ० सत्वाचु रूप सवें
 स्व अद्वा सधति भारत ॥ अद्वा मये यं पुरुषो योय च्छुद्धः स एव सः ॥ ३ ॥ टी ० एवं सत्वर जनमा ॥ वेगळी अद्वा सुवर्मा ॥ नाहीं गंजी
 वयासा ॥ माजियया ॥ ६६ ॥ ह्मणोनि अद्वा स्वाभाविक ॥ असे पै त्रियुणात्मक ॥ रजन ससात्तिक ॥ फेदीं हो ॥ ६७ ॥ जें सें जीव नचि
 उदक ॥ परि विषी होय सारक ॥ कांभिरया माजि निरव ॥ उंशी गोड ॥ ६८ ॥ तें सा बहु वसें तें ॥ जो सदा चि होय निमो ॥ तेथ अद्वा प
 रिणमे ॥ तें चि होउनी ॥ ६९ ॥ मग काजका आणिससी ॥ नरि सवि वचना जेंसी ॥ तें वी अद्वा ताससी ॥ सिनी नाहीं ॥ ७० ॥ तें सी च्चरा
 जसी जीवीं ॥ रजो मय जाणावी ॥ सात्वि कीं आघवी ॥ सत्वाची च ॥ ७१ ॥ ऐसे निहासकळ ॥ जगडंबर निरि वळ ॥ अद्वा चि चि कव
 क ॥ घेतला असे ॥ ७२ ॥ परियुण नय वशें ॥ त्रिविध पणाचें लासें ॥ अद्वा चें उदिलें असे ॥ तें वी करवतूं ॥ ७३ ॥ नरि जाणिजे झाड-
 फुलें ॥ कांभान सजाणिजे बोलें ॥ भोंजें जाणिजे केलें ॥ पूव जन्मीचें ॥ ७४ ॥ तें सी जिहीं जहीं चि न्हों ॥ अद्वा चिं रूपें ति न्हों ॥ दे-

पाठ ओ. ५९ मुकलें. नसे.

ध

ध

ध

ध

स्वीजनीतेषां नी ॥ अवधारीणि ॥ ७५ ॥ प्रलो ० यजंतं सात्विकादवाच्यस्तरसां सिराजसाः ॥ प्रेताभूतगणां श्रान्त्ययजंतं तामसाज-
 नाः ॥ ७६ ॥ टी ० तरी सात्वीकश्चंद्रा ॥ अयथा चाहो यबाधा ॥ तेन या बहु त कस्तु निर्मया ॥ स्वर्गि आर्था ॥ ७६ ॥ ते विद्या जातपटुर्ती ॥
 यज्ञ क्रिये निवडती ॥ किंबहुना पडती ॥ देवलोकी ॥ ७७ ॥ आणि अद्वा जना ॥ धडले जे वीरशा ॥ ते सजती राक्षसा ॥ खेच राहन
 ॥ ७८ ॥ अद्वा जे कांता मसी ॥ ते मी सांगे न तु जपाशी ॥ जे केवळ पापरासी ॥ आत कर्कशा निहयले ॥ ७९ ॥ जीव वधे साधू निवळा म
 धूत प्रेत कुळें मकी ॥ स्मशानी संध्या काळी ॥ पूजिती जे ॥ ८० ॥ तंतं सो गुणांचे सार ॥ काढ नि निर्मलिनर ॥ जाणता मसि येचे ध्वर ॥ अ
 देचे नें ॥ ८१ ॥ ऐसीं इही तिही लिंगी ॥ त्रिविध अद्वा जरी ॥ पेंहें यया लारी ॥ सांगत असै ॥ ८२ ॥ हे सात्वीक मति जया ॥ निर्वा हो हो
 यधन जया ॥ बागूल जो हे तथा ॥ कैवल्य ते ॥ ८३ ॥ जे हे सात्विक अद्वा ॥ जतना धरावी प्रबुद्धा ॥ येरी दोनी विरुद्धा ॥ सांडा विया ॥ ८४
 ॥ तो न पदो कां ब्रह्म सूत्र ॥ न लो दो सव शास्त्र ॥ सिद्धा त न हो त स्व तें च ॥ तथा चा हाती ॥ ८५ ॥ परिश्रुति स्मृती चिं अर्थ ॥ जे आपण हो
 कून मूर्ते ॥ अनुष्ठाने जगा देत ॥ वडील जें जे ॥ ८६ ॥ तयांची आचरती पाउले ॥ पाऊ नि सात्विकी अद्वा चाल ॥ तो ते चि फकते विलें ॥
 ऐसे लाहे ॥ ८७ ॥ पें एक दीप लावी सायामें ॥ आणि कते थें लाउं येस ॥ तरि तो काय प्रकाशें ॥ वंचि जगा ॥ ८८ ॥ कां ये के मोल अपातु
 ॥ वें जो नि केलें धवळार ॥ तो सुरवाड वर्त्तार ॥ न सोशी काधी ॥ ८९ ॥ हे असो जो तं कं करी ॥ तें तथा चि चतुषाहरी ॥ किं सु आरा-
 सिचि अन्न घरी ॥ येरां नो हे ॥ ९० ॥ हे बहु काय बोले पेंगां ॥ ये कां गीत मासी चिंगंगा ॥ येरां स मस्तो काय जगा ॥ वाहक जाला ॥ ९१ ॥
 क्षणों नि आपली यापरी ॥ शास्त्र अनुष्ठिती कुसरी ॥ जाणत या तें अद्वा कुजो वरी ॥ तो मूर्ख हीतरे ॥ ९२ ॥ अशा स्त्रविहित थो
 रंत थें ये तरे जनाः ॥ दंभा हंकार सगुक्ताः कामराग बलान्विताः ॥ ९३ ॥ टी ० नाशास्त्राचे निर्कार नावें ॥ स्वाकरोही नेणती जी

पद. ओ. ७६ जयांचा. तयां. ओ. ८९ की. ओ. ९० येथे न कर्त्तवी. ओ. ९१ बहून.

७५

७६

७७

वं ॥ शरियास्त्रांहीशिर्वं ॥ देकेंनेद्विती ॥ १३॥ वडिलांचिपक्रिया ॥ देरबोर्नवतीवांकुलिया ॥ पंडितांडांकुलिया ॥ वाजिविती ॥ १४॥
 आपलेनीचिआदोपें ॥ धनत्वाचेनिदोपें ॥ साचिपिपसांडाचींतपें ॥ आदरिती ॥ १५॥ असुलियासुडिलांचिया ॥ आंगीयालुनिकाने
 या ॥ रकमांसयोजितया ॥ १६॥ रिचिवितीजकतकुडी ॥ लाबितीचेडयाचातोंडों ॥ नवसियादेतीउडी ॥ बाककाची ॥
 १७॥ आयुहाचियाउजरिया ॥ सुददेवतांवरिया ॥ अन्त्यागेंसातरिया ॥ ठाकतीयेक ॥ १८॥ अगाआत्मापरपीडा ॥ बीजतस
 खेदीसुहडा ॥ पेरितीमगपुढों ॥ तेंचिपिके ॥ १९॥ बाहुनाहीआपलिया ॥ आणिनावेंतेंहीधनंजया ॥ नधरीहोयतया ॥ ससुदों
 जेंसे ॥ १०॥ कावेंद्यातेंकरीसका ॥ रससांडीपाचरबोळां ॥ तोरोगियाजिवेंविस्का ॥ सवताहोये ॥ ११॥ नानापडिकराचेनिस
 कं ॥ कादीआपलेचिडोके ॥ तेंवानवसांआंधळें ॥ जेंसेंदाके ॥ १२॥ तेंसेंतयाअसुराहोये ॥ जनिंदुनियास्त्रांचिसोये ॥ सेंघां
 वतातिमोहें ॥ आडवींजेंकां ॥ १३॥ कामकरवीतेंकरिती ॥ कोपसारवीतेंमारिती ॥ किबहुनामातेंपुरिती ॥ दुःखाचागुडा ॥ १४॥
 १५० कर्षयंतः शरीरस्थं भूतया ममचेतसः ॥ मांचेवांतः शरीरस्थं तान्ध्व्यासुरनिश्चयान् ॥ १६॥ दी० आपकापरावादेहीं ॥
 दुःखदेतीजेंकांहीं ॥ मजआत्म्यातेंतुलाही ॥ होयसीया ॥ १५॥ पेंवाचेचेनिहीपालवें ॥ पापियातयानातकावें ॥ परिपडिलेंसा
 गावें ॥ त्यजावया ॥ १६॥ प्रेतबाहिरेंचालिज ॥ कांअंत्यजसंपाषणीत्यजिजे ॥ हेंअसोहानेंह्माकिजे ॥ कसमळातें ॥ १७॥ तेंथुलुही-
 चियाआशा ॥ तोलेपनमनवेंजेंसा ॥ तयातेंसांडावयातेंसा ॥ अनुवादहा ॥ १८॥ तरिअर्जुनातुंतयातें ॥ देवसातेंस्वरहोमानें
 ॥ जेआनप्रायश्चिनयेचें ॥ मानेलया ॥ १९॥ स्र्णोनिश्चरजसत्त्विकी ॥ पुढतीनेचिपेंचेंका ॥ जतनकरावीनिकी ॥ सेवोपवी ॥ १९॥
 ॥ तरिधरावातेंसासंग ॥ जेयोंपोरदेसात्त्विकलरा ॥ सत्वदुर्हचाप्राग ॥ आहारयेपें ॥ १९॥ येहूवीनरीपाहीं ॥ स्वभावदुर्हचा
 पाठः ओः १४ वाचयः ओः १५ अनुष्ठिनीः ओः १६ प्रणनियाः ओः १ जयाः ओः २ पठकाः ओः १० सर्वाः ओः ११ बुद्धीः

ठाई ॥ आहारावांचूनिनाही ॥ बळीहंतु ॥ १२ ॥ यत्पक्षपाहंपंथीरा ॥ जोसावधयेमदिरा ॥ तोहोउनिठाकेमाजिरा ॥ तिथेचिद्विषणी ॥
 १३ ॥ कांजोसाविद्याअन्तरससेवी ॥ दोव्यापिजेवातळ्ळसस्वभावी ॥ कायज्वरजालियानिववी ॥ पायादिक ॥ १४ ॥ नातरिअंशु-
 तजयापरी ॥ येतलियाभरणवारी ॥ कांआपुलियाऐंकरा ॥ जेंसंविष ॥ १५ ॥ तेंविंजेंसाधेपेआहार ॥ धातुनेंसाचिहोषआ-
 कार ॥ आपिधातुंएसाअंतर ॥ भावपोगे ॥ १६ ॥ जेंसंभाडियाचेनितापें ॥ आतुलेंउदकहीनापे ॥ तेंसीधातुवशंआदोपे ॥
 चित्तवृत्ती ॥ १७ ॥ क्षणोनिस्मात्विकरससंविजे ॥ तेंसंत्वाचीवाटिपाविजे ॥ राजसानामसाहोइजे ॥ येगेंरसी ॥ १८ ॥ तरीस्मात्वि-
 ककोणआहार ॥ राजसतामसाकायिआकार ॥ हेंसांगोंकरांआदर ॥ आकर्णनी ॥ १९ ॥ श्लो ० आहारस्वपिसर्वस्वत्रिवि-
 धोभवतिप्रियः ॥ यज्ञस्तपस्तथादानंतेषांभेदमिमंमृणु ॥ १० ॥ टी ० आणिएकसरेआहारा ॥ केंसेंनितनींमोहरा ॥ जालिया
 तेंहीवीरा ॥ रोकडेदाऊं ॥ २० ॥ तरिजेवणाराचियारुची ॥ निष्पत्तिंकिंबोनियाची ॥ आणिजेवितानेंवृणुणाची ॥ दासीयेथ ॥
 २१ ॥ जोजीचकतींमोक्ता ॥ तोगुणास्तवस्वभावात्ता ॥ पावोनियात्रिविधता ॥ चेष्टेविधा ॥ २२ ॥ क्षणोनित्रिविधआहार ॥ यज्ञ
 हीप्रकार ॥ तपदानहनव्यापार ॥ विविधचित्ते ॥ २३ ॥ पेंआहारलक्षणपहिलें ॥ सांगोंजेक्षणीनलें ॥ तेंआइकभाषलें ॥ रू-
 पकरूं ॥ २४ ॥ श्लो ० आयुःसत्वबलारोग्यसुखशीतिविवर्धनाः ॥ रम्याःस्मिग्धाःस्मिराहृद्याआहाराःसात्विकप्रियाः ॥ ८ ॥
 टी ० तरीसत्त्वगुणाकडे ॥ जेंदेवेंमोक्तापडे ॥ तेंमधुरांरसीवाटे ॥ सेचुतया ॥ २५ ॥ आंगेंचिद्व्यंसुरसे ॥ जेंआंगेंचिपदस्थ-
 गोडिसे ॥ आंगेंचिस्नेहंबुद्वसं ॥ सुपक्वेंजियें ॥ २६ ॥ आकारेनदतीडगळें ॥ स्पशेंअतिमवाळें ॥ जिमेलागींस्नेहळें ॥ स्वा-
 देंजियें ॥ २७ ॥ रसेंगादीवरिठिलीं ॥ द्रवभावांआधिलीं ॥ ठायेंठावसांडिलीं ॥ अस्मितापें ॥ २८ ॥ आंगेंसांनेंपरिणामेशार ॥ जें-
 ३१

पाठ. ओ. १२ बोलें. ओ. १५ वेतलें. ओ. १७ निवळें. ओ. २८ द्रव्य-

सैशुरुसुखीचैअसर ॥ नैसीअत्पीजिहोअपर ॥ नृमिराहे ॥ ३९ ॥ आणिसुरवीजेंसिंगोडें ॥ तेंसीचिहिहेंआंतुलकडे ॥ तिहीअल्पा
 प्रीतिवाटे ॥ सात्विकंभि ॥ ३० ॥ एंवयुगलस्वणा ॥ सात्विकंभोज्यजाण ॥ आयुष्याचेंत्राणा ॥ नित्यनंवेहें ॥ ३१ ॥ येणेंसात्विकर
 सें ॥ जंवदेहीमोवरिबे ॥ तंवआयुष्यनदीउससे ॥ देहाचिदेहा ॥ ३३ ॥ सत्वाचिचेकीरपाळती ॥ कारणहाचिसुमती ॥ दिव
 साचिचेउज्ज्वली ॥ सातुजेंसा ॥ ३३ ॥ आणिशरीराहनमानसा ॥ बळाचोपेकुएसो ॥ हाआहारनरीदशा ॥ कैचीरोगां ॥ ३४ ॥ हा
 सात्विकहोयभोग्य ॥ तेंचिभोगावयाअयोग्य ॥ शरीरासींभोग्य ॥ उदचलेजाणो ॥ ३५ ॥ आणिसुरवाचेंयेणेंदेणें ॥ निकेंउपा-
 याचेंयेणें ॥ हेंअसोवाटेसाजणें ॥ आनंदेंसी ॥ ३६ ॥ ऐसासात्विकआहार ॥ परिणमलाथोर ॥ करीहाउपकार ॥ सबाह्यासीं
 आतांराजसासिमीती ॥ जिहोरसींआर्थी ॥ करूंतयाहीव्यक्ती ॥ प्रसंगेंगा ॥ ३८ ॥ कद्रुम्ललवणादुष्यातीह्णारुसवि-
 दाहिनः ॥ आहाराजसस्येष्टादुःखशोकामरुप्रदाः ॥ ३९ ॥ टी ० ॥ तर्पमानेंजेकद्रुवट ॥ कांचुनिचाहूनि
 दासट ॥ आस्लहन ॥ ३९ ॥ कणिकीनैजेंसंपाणी ॥ तेंसंमीदबांधयाआणी ॥ तेंतुलीचमूकवणी ॥ रसानरीची ॥ ४० ॥ ऐसेंस्वारट
 अपडें ॥ राजसातयाआवडे ॥ उन्हाचेनिमिषेंनोडें ॥ आगीचिशिळी ॥ ४१ ॥ वोफेचियेसिंगे ॥ वातीहीलाविल्यालागे ॥ तेंसें
 उन्हासागे ॥ राजसनी ॥ ४२ ॥ वावदकपांडुनिठायें ॥ सबकवन्हिडाहारलाआहे ॥ तेंसेंतिरवतोखायें ॥ जेघार्येविणारुपें ॥ -
 ४३ ॥ आणिपरवेहूनिकोरडें ॥ आंतबाहरीयेकेपाडें ॥ तोजिद्वादशआवडे ॥ बहुतया ॥ ४४ ॥ परस्परेंदांतां ॥ आदकहोचस्व
 तां ॥ तोगासुरवीधतां ॥ तोषोलागे ॥ ४५ ॥ आधिचंद्रव्येचुरसुरीं ॥ वरीपरवडीजतीमोहरी ॥ जिबेयेतांहीतीधुवारी ॥ नाकें-
 तोडें ॥ ४६ ॥ हेंअसोउगेआंगितें ॥ ह्मणेंतेंसेराडें ॥ पटयेप्रणामपरतें ॥ राजसासिंगा ॥ ४७ ॥ ऐसानुपुरेनिनोडा ॥ जिआ
 यत. ओ. ३१ नीच. ओ. ३४ वासा. ओ. ३६ उवाया. ओ. ३९ आम्ही. ओ. ४३ गडदक. ओ. ४५ तोडें.

केलावेडा ॥ अंनभिषेअग्नीमदुझडा ॥ पोटीसरी ॥ ४८ ॥ तेंसाचिलवघासुटे ॥ मगसुईनासेजेसांटे ॥ पणिचाचेंनसुटे ॥ तेंडो-
 निपात्रा ॥ ४९ ॥ तेंआहारनकतीघेतले ॥ व्याधिब्याकजेसुतले ॥ तेंचववावयाधानले ॥ माजवणपोटी ॥ ५० ॥ तेंसेयेकसांसांके-
 ॥ गेरुडतीऐकेवेके ॥ ऐसाराजसआहारफळे ॥ कुंवकदुःखे ॥ ५१ ॥ एवंगजसाआहारा ॥ रूपकेलेंधनुईरा ॥ परिणामाचाहीवि-
 सुरा ॥ सांगीतला ॥ ५२ ॥ आतांतयातामसा ॥ आवडेआहारजेसा ॥ तेंहीसांगोंचिकसा ॥ झणेंसुस्ती ॥ ५३ ॥ तरकुहिलेंउसटें-
 रवातां ॥ नमनिजेतेणेंअनहिता ॥ जेंसेंकाउपाहिता ॥ हेंसिरवाये ॥ ५४ ॥ म्लो ० यातयाभगतसंपूतिप्रशुषितचयतु ॥ उच्छि-
 दमपिन्नामेध्यभोजनतामसप्रियं ॥ ५५ ॥ टी ० निपजलेंअन्नतेंसें ॥ दुपाहरीकांयेरेंदिवसें ॥ अतिकरतेंतामसें ॥ घेइजेते ॥ -
 ५५ ॥ नातरिअर्धुकडिलें ॥ कांनिपटकरपोनिगेलें ॥ तेंसेंहीरवायचुकले ॥ रसाजेंयेवो ॥ ५६ ॥ जयाकांआधिनिष्यनि ॥ जेथर
 सधरीव्यक्ती ॥ तेंअन्नऐसीप्रतीती ॥ तामसांनाही ॥ ५७ ॥ ऐसेनिकहीविषाये ॥ सदन्नावरपडाहोये ॥ तरीघाणिसुटेतंवराह-
 ॥ व्याघ्रजेसा ॥ ५८ ॥ कांबहुवेदिवशींवालांडिलें ॥ स्वादपणेंसांडिलें ॥ शुष्कअथवासडलें ॥ गाभिणेंहीहो ॥ ५९ ॥ तेंहीबाळांच
 हातवरी ॥ निवडिलेंजेंसीराहाडीकरी ॥ कांसवेंबेंसेनिनारी ॥ गोतांबीलकरी ॥ ६० ॥ ऐसेनिकमकेंजरवाय ॥ तेंतथासुरब
 भोजनऐसेंहोय ॥ परिघेणेंहीनधाय ॥ पापिथातो ॥ ६१ ॥ मगचभक्त्कारदेखा ॥ निषेधाचाआबुरवा ॥ जयाकांसदोषा ॥ -
 कुट्टव्यासी ॥ ६२ ॥ तथाअपेयांचापानी ॥ अरबायांचांमोजनी ॥ वाटवीजेतान्ही ॥ तामसेंतेणें ॥ ६३ ॥ एवतामसजवणासा
 ॥ ऐसेसीमेसुहेरीरा ॥ ययाचेंफळदुसरा ॥ स्पर्णानाहीं ॥ ६४ ॥ जेंजेकांनिहेंअपवित्र ॥ शिवेतयाचेंवक्क ॥ तेंकांचिपापा
 च ॥ जालातोकीं ॥ ६५ ॥ चावरतेंजेजवी ॥ तेजेवितेवोजनसणावी ॥ पोदभरतीजाणावी ॥ यातनाते ॥ ६६ ॥ शिरछेदे

काचहोये ॥ कांआगीरिघतांकेसंआहे ॥ हेजाणावेंकाइयाहे ॥ परिसाहातविअसे ॥ ६७ ॥ ह्यणींनिताससाअन्ता ॥ परिणा-
मगासिना ॥ नसांगोंचिअर्जुना ॥ देवह्यणे ॥ ६८ ॥ आतांययावरी ॥ आहाराचियापरी ॥ यत्तहीअवधारी ॥ त्रिधाअसे ॥
६९ ॥ तैरीतिहीमाजीप्रथम ॥ सात्तिकयज्ञाचेंवर्म ॥ आईकपासुमहिम ॥ शिरोमणी ॥ ७० ॥ श्लो० अफलाकांक्षिभिर्यसो
विधिदृष्टोयदृज्यते ॥ यष्टव्यमेवेतिमनःसमाधायसमात्तिकः ॥ ७१ ॥ टी० तरियेकप्रियोत्तम ॥ वांचेनिवाटोंनेदीकाम ॥
जैसाकामनोधर्म ॥ पतिव्रतेचा ॥ ७२ ॥ नानासिधूतेंदांकुनिगंगा ॥ पुढारांनकरीचिरिगा ॥ कांआत्मादेखोनिउगा ॥ वेददला
॥ तैसेजेंआपुलास्वहीती ॥ वेंचूनिपांचिनवृत्ती ॥ नुरवितीचिअहंकृती ॥ फकालागी ॥ ७३ ॥ पातलेचाझडाचेंसूक ॥ मायु
संसरोनेणींचिजळ ॥ जिरालेंकांकेवळ ॥ तथाचाचिआंगी ॥ ७४ ॥ तैसेमनंदही ॥ यजननिश्चयाचाढाई ॥ हारणोनिजेंका
हीं ॥ वांछितीना ॥ ७५ ॥ निर्हांकळांछात्यागी ॥ स्वधर्माचांचूनिविरागी ॥ कीजेजोयजसवंगी ॥ अकंकन ॥ ७६ ॥ परिआरिसा
आपणापें ॥ डोकांजेंसेयेपे ॥ कांतकहातीचेनिदीपें ॥ रत्नपाहिजे ॥ ७७ ॥ नानाउदितेंदिवाकरें ॥ गमावामार्गोदीप्परे ॥ तै-
सावेदनिद्रीं ॥ देखोनिचा ॥ ७८ ॥ तिचेंकुडमंडपवेदी ॥ आणीकहीसंसारसमृद्धि ॥ तैमेळवणीजैसीविधी ॥ आपणपांके-
ली ॥ ७९ ॥ सकळावयवउचितें ॥ लेणीपातलीजैसीआंगानें ॥ तैसेपदार्थजेथिचानेथें ॥ विनियोगनी ॥ ८० ॥ कायवांतुंबहु
तींबोलीं ॥ जैसीसर्वांभरणींभरली ॥ तेयज्ञविद्यानिरूपाआली ॥ यजनमिषें ॥ ८१ ॥ तैसासांगोपांग ॥ निपजजोपांग ॥ लुठक
नियंलागा ॥ महलाचा ॥ ८२ ॥ प्रतिपाकतरीपादाचा ॥ झाडींकीजेतुकसीचा ॥ परीफळाफुलाढायेचा ॥ आश्रयोनाही ॥ ८३
॥ किंबहुनाफळाशेवीण ॥ ऐसेथानियुतीनिर्माण ॥ होयतोयोगजाणा ॥ सात्तिकगा ॥ ८४ ॥ श्लो० अभिसंधायतुफलंद
पाद. ओ. ७० परी. को. ७५ दंडमनेंदाही. ओ. ८४ यज.

ध

ध

ध

मार्यमपिचिवयत् ॥ इत्यनेभरतश्रेष्ठतंयज्ञविद्भिराजसं ॥ १३॥ टी० आतांयज्ञकीरवीरया ॥ करीपंयाचिंएसा ॥ परिआद्वालागीं
 जैसा ॥ अवंतिंलारावी ॥ ८५॥ जरिरजायरासिये ॥ तराबहुतपयोगाजाये ॥ आणिकर्ताहीहोये ॥ जैगाभाजो ॥ ८६॥ तैसांय
 रूनिआवांका ॥ ह्मणस्वर्गजोडेलअसिका ॥ दीह्मिंतहोईनमान्यलोकां ॥ यडेलयाग ॥ ८७॥ ऐसीकेवळफळांलागीं ॥ महत्तफो-
 करावयाजगीं ॥ पार्थानिष्पत्तिजेयगीं ॥ राजसंपत्ते ॥ ८८॥ म्म्लो० विधिहीनमसृष्टान्नसंचहीनमदक्षिणं ॥ अद्वाविराहंतं
 यज्ञंतामसंपरिचक्षते ॥ १३॥ टी० आणियशुपक्षीविवाहीं ॥ जैसीकामापरोत्तानाहीं ॥ तैसातामसायज्ञापाहीं ॥ अग्रदचिंयू
 क ॥ ८९॥ वारयावादनवाहे ॥ किंमरणसुहृतपाहे ॥ निषिद्दासीविहे ॥ आगीजरी ॥ ९०॥ तरीतामसाचियाआचारा ॥ विधीचा
 आधीनाचोदावारा ॥ ह्मणुनितोधनुर्धरा ॥ उच्छ्रवल ॥ ९१॥ नाहीविधीचैतेथचाड ॥ नयेमंत्रादिकतयाआड ॥ अन्नजातानं
 सुदेतोंड ॥ मांसियेजैविं ॥ ९२॥ वैराचाबोधब्राह्मणा ॥ तेथकैरिगेलदक्षिणा ॥ अग्नीजालावावधाणा ॥ वरिपडाजैसा ॥ ९३॥ तै
 सेवार्थाचिसर्वस्वचे ॥ सुरवनदेरवतांअहूचे ॥ नागविलेंनिपुत्रिकाचै ॥ जैसंधर ॥ ९४॥ ऐसाजोचज्ञाभास ॥ तयानामया-
 गतामस ॥ आइकेंह्मणोनिवास ॥ श्रीयेचातो ॥ ९५॥ आतांगेचैएकपाणी ॥ परिनेलेंआनानीवाहणी ॥ एकभळीएकआणी
 ॥ शुद्धतजैसं ॥ ९६॥ तैसंतिहीगुणीतप ॥ येयजाहालेंआहुत्रिरूप ॥ तेंएककेलेंदेपाप ॥ उदरीएक ॥ ९७॥ तरितेचितहींजो
 दीं ॥ कैसेनिपाह्मणोनिमुबुद्धी ॥ जाणोंपाहासीतरिआधी ॥ तपचिजाण ॥ ९८॥ येथतपह्मणिजेकाइ ॥ तेंस्वरूपदाउपाहो
 ॥ मगसेदिलेंगुणीतिहीं ॥ तेंपाढंबोलों ॥ ९९॥ तरितपजेंकांसम्यक ॥ तैहीअविधआइक ॥ शारीरमानसीक ॥ शाब्दगा ॥ १००
 ॥ आतांयातिहोमाझारीं ॥ शारीरतंवअवधारीं ॥ तरिसंभूकांश्रीहरी ॥ पटियंताहोये ॥ १॥ म्म्लो० देवद्विजयुक्ताज्ञापूजनहो
 पाठ. ओ. ८६, आहुमदके. ओ. ८९, ओजेंइच्छा. ओ. ९०, वेदाची. ओ. ९४ ही.

चमाजये ॥ ब्रह्मचर्यमहिंसाशरीरतपउच्यते ॥ १५ ॥ टी० तयोप्रियादेवतालया ॥ योत्रादिकंकरावशा ॥ आठहीपाहारीजिसेपा-
यो ॥ उल्लिगाधारे ॥ २ ॥ देवांगणभिरवणिगो ॥ आंगोपचारपुरवणिगो ॥ करावयाह्मणिया ॥ शोसतीहात ॥ ३ ॥ लिंगकांप्रतिमा-
दिदी ॥ देवतरेवोअंगेही ॥ लोट्टिजेकाकाठी ॥ पडलीजैसी ॥ ४ ॥ आणिविधिविनयादिको ॥ गुणावडीलजेलोको ॥ तथाब्राह्म-
णाचीनिकी ॥ पादकीकीजे ॥ ५ ॥ अथवाप्रवासकोपडा ॥ कांशिगलेजेसाकडो ॥ तेजीवसुरवाडा ॥ आणीजती ॥ ६ ॥ सकळती-
र्थोचियेथुरे ॥ जियेकांमातापितरें ॥ तयोसेवेमिकीरशरीरें ॥ लोणकीजे ॥ ७ ॥ आणिसमाराएसादारुण ॥ जोसेदलियां
हरीशीण ॥ तोज्ञानदानींसरुण ॥ मजिजेयुक्त ॥ ८ ॥ आणिस्वधर्मोचाआगिदा ॥ देहजाड्याचियाकिदा ॥ आवुनीपुदीसुमदा
॥ झाडाकीजे ॥ ९ ॥ वसुधूतमात्रांनभिजे ॥ परोपकारांमजिजे ॥ स्त्रीविषयीनियमिजे ॥ नवेंनावें ॥ १० ॥ जन्मतेमिप्रसंग ॥ स्त्री
देहशिवणेंआंगी ॥ तेयुनिजन्याआघवें ॥ सोविळेंकीजे ॥ ११ ॥ धूतमात्राचेनिनावें ॥ तृणहीनासुडावें ॥ किंबहुनासंडावे ॥ छे-
दमेद ॥ १२ ॥ ऐसेसीजेशरीर ॥ राहाटीचीपडेउजरी ॥ तैशारीरतपघुमरी ॥ आलेजाण ॥ १३ ॥ पार्थासमस्तहीहंकरणें ॥ देहा-
चेनिप्रधानपणें ॥ ह्मणोंनियचातेसीह्मणें ॥ शरीरतप ॥ १४ ॥ एवशरीरजेंतप ॥ तथाचेंदाविलेंरूप ॥ आतांआदंकनिषाप
॥ वाड्ययतें ॥ १५ ॥ श्लो० असुदेगकरवास्वसत्प्रियहितंचयत ॥ स्वाध्यायाभ्यसनंचेववाड्ययंतपउच्यते ॥ १५ ॥ टी० तु-
रिलोहाचेंआंगतुक्त ॥ नतोडितांचिकनक्त ॥ केलेंजेंसेंदेव ॥ परसेतणें ॥ १६ ॥ तैसेंदुरववितांसेजे ॥ जावळ्यासुरवनिप्रज
॥ ऐसेसाधुलकादेरिखिजे ॥ बोलणांजिये ॥ १७ ॥ पाणीसुदलझाडाज्ये ॥ तृणतेप्रसंगेंजिये ॥ तैसेंचेकाबोलिलेंदोये ॥ सर्वां
हिहित ॥ १८ ॥ जोडेअमृतांचीसुरमरी ॥ तैशाणातेंअमरकरी ॥ स्थानंपापतापवारी ॥ गोडीहीदे ॥ १९ ॥ तैसाअगिवेकहीहिंदो ॥

आपुलें अन्नमदलसंते ॥ आदकतांरुचिनविदे ॥ पीयूषीजेंसी ॥ २० ॥ जरकोणीकरपुसणें ॥ तराहो आवेऐसेबोलणें ॥ नातरिआव
 तेंवणें ॥ निगमकानाम ॥ २१ ॥ अखदागदतिही ॥ प्रतिष्ठाजतीवारसुवर्ण ॥ केलीजेंसीधर्त ॥ ब्रह्माष्ठा ॥ नातरिएकाधेमांन
 क ॥ नायकचीतो ॥ २४ ॥ मल्लो ॥ मनःप्रसादः सौम्यत्वसौनमात्मविनयः ॥ तैर्होसांगोआदक ॥ ह्मगेलीकनाथनाथ
 तरिसंगवरतरंगी ॥ सांडिलेंआकाशमंघी ॥ कांचंदनाचेउरगी ॥ उद्यानवनजेंसैं ॥ २५ ॥ नानाकळावैषम्यचंद्र ॥ कांसांडिलाआ
 रूपीजें ॥ २७ ॥ तपनेवीणप्रकाश ॥ जाडंपेवीणविरसीरस ॥ पोकळीवीणअवकाश ॥ होयजेंसा ॥ २८ ॥ तेंसीआपलीसोचदे
 रवे ॥ आणिआपलियास्वभावामुके ॥ दिवलेजेंसीआंगिकें ॥ दिवोनेदी ॥ २९ ॥ तेंमनचळतेककेंवीण ॥ शशिबिंबजेंसैं
 लोभलाभलेपणें ॥ मनमनपणाहोथरुनेणें ॥ शिवतलेंजेंसंलवणें ॥ आपलेंनिज ॥ ३३ ॥ तैथकेंउठलीतेभाव ॥ जिहांदेंद्रि
 यमार्गीधाव ॥ घेउनिठाकावेगांव ॥ विषयांचेते ॥ ३४ ॥ ह्मणोंनितयेमानसीं ॥ भावशुद्धीचिअसंआपेसीं ॥ गेमशुचिनेसी
 ॥ बळहाताची ॥ ३५ ॥ कायबुद्दबोळोअर्जुना ॥ जेंहंदेसायमना ॥ तेंमनस्तपोभिधाना ॥ शत्रुहोयनें ॥ ३६ ॥ परितेंअसोहेजा
 ण ॥ मानसतपाचेंलह्मण ॥ देवाह्मणसंपूण ॥ सांगीनलें ॥ ३७ ॥ एवेंदेहवाचाचिनें ॥ जेंपानलेअविधत्ताते ॥ तेंसामान्यतप

पदः ओ. २४ त्रिमवर्ती ओ. २९ नेष्टानिजांग ओ. ३६ मनोतपभिधानः ओ. ३८ ह्मणोंनि.

तूते ॥ परिसविलिंगा ॥ ३८ ॥ आतां गुणत्रयसंगे ॥ हे चि वि शेषे चि वि धी रगे ॥ ते हो आ ई क संगे ॥ प्रज्ञाबद्धे ॥ ३९ ॥ श्लो० श्रद्धया परब्र-
 तमंतपस्तत्रिविधनरे ॥ अफलाकांक्षिभिर्मुक्तैः सात्त्विकं परचक्षते ॥ ११७ ॥ टी० तं हि चित्तपत्रिविधा ॥ जेदाविलेतु जप्रबुद्धा ॥ ते वि-
 क्रीपूर्णश्रद्धा ॥ सादु नि फळी ॥ ११८ ॥ जे पुरतिया सत्वश्रद्धी ॥ आचरिजे आसि क्यबुद्धी ॥ नैतयाने चिगा प्रबुद्धी ॥ सात्त्विकस्मृतिपे ॥ ११९ ॥
 ॥ श्लो० सत्कारमानपूजार्थतपोदमेन चैव यत ॥ क्रियते तदिदं श्रोक्तराजसत्त्वलभ्यधुवं ॥ १२० ॥ टी० नातरितपस्थापमेला-
 र्गी ॥ दुर्जपणमांडुनिया जगी ॥ महत्वाद्वाचाश्रुगी ॥ बैसावया ॥ १२१ ॥ त्रिभुवनी च्या सत्त्वाना ॥ नवचावेदाया आना ॥ धुरे-
 च्या आसना ॥ साजनालागी ॥ १२२ ॥ विष्वाचिया स्तोत्रा ॥ आपण हो आवया पात्रा ॥ विस्व आपलिया पात्रा ॥ करावियाया
 वे ॥ १२३ ॥ लोकांचिया विविधा पूजा ॥ आश्रय न धरावया दुजा ॥ भोगभोगाविवोजा ॥ महत्वाचिया ॥ १२४ ॥ अगाबोलभारवू-
 नीतपे ॥ विकावया आपणापे ॥ अगर्दनि पदपे ॥ जयापरी ॥ १२५ ॥ हे असोधनमानी आश ॥ वाढनीतपकीजे सायास ॥
 ते ते चित्तपगजस ॥ बोलीजेगा ॥ १२६ ॥ परिपदहरणी जें दुहिले ॥ ते ते गुरु न दुभे चि व्याले ॥ कांठभेंसे तच्चारिले ॥ पिकावया-
 नुरे ॥ १२७ ॥ तेंसे फोकारितांनप ॥ कीजे जे साक्षेप ॥ ते फळीं नवमोप ॥ भिः शेषजाये ॥ १२८ ॥ ऐसें नि फेक देरवो नि करितां ॥ मा-
 झारी मांडी पंडुसुता ॥ ह्मणों नि नाही स्थिरता ॥ तपातया ॥ १२९ ॥ ये हवीं तंरी आकाशमांडी ॥ जोगजों नि ब्रह्मांड फोडी ॥ तो-
 अकांक्षेय काय घडी ॥ राहात ओह ॥ १३० ॥ नें सें राजसतप जें दोये ॥ तें फळीं कीरवाझजाये ॥ १३१ ॥ आचरणों हो नो हे ॥ नि-
 वांहे नेगा ॥ १३२ ॥ आतां नें चितपपुटती ॥ तामसा चियेरीती ॥ तें परत्रा आणि कीर्ती ॥ मुको नि कीजे ॥ १३३ ॥ श्लो० मृदुश्रा-
 हेणात्स नो यत्पीडया क्रियते तपः ॥ परस्योत्सादनार्थं वा तत्तामससु दातृतं ॥ १३४ ॥ टी० केवळ सर्वपणाचा वारा ॥ जीर्णं-

पाठः ओ० ४० फळे ॥ ओ० ४२ महत्वाच्ये ॥ ओ० ४६ पण्यांमना ॥ ओ० ५१ अवकाळ

ध

ध

ध

ध

घेरनिधनुंधरा ॥ नामदो वजेशररा ॥ वोरियाचें ॥ ५४ ॥ पंचाग्नीचिंदुंगी ॥ खोलवीजनीषारीगालागीं ॥ कांइधनकीजेहे आगी
 ॥ आंतुलावी ॥ ५५ ॥ मायांजालिजनीगुरुक ॥ पढीघालीजनीगक ॥ आंगजाळितीदंगक ॥ जकतप्रीतां ॥ ५६ ॥ दवडोनिम्बा-
 सोम्बास ॥ कीजनिवायांचिउपवास ॥ कायेपतीधूमाचेयांस ॥ अयोसुरवें ॥ ५७ ॥ हिमोदकेंआकंदें ॥ खडकसोवजतंतदें ॥ जि
 तयांमासाचेचिमुटे ॥ तोडितीजेथ ॥ ५८ ॥ ऐसीनानापरीहेकाथा ॥ घायसूतांपेंधनजया ॥ तपकीजनाशावया ॥ पुढिलांतें ॥ ५९
 ॥ आंगभारेंसुलथाडो ॥ आपणफुटोनिहोयखंडखंडा ॥ कांआडजालियातेंरगडा ॥ करजेसा ॥ ६० ॥ तेंविआपलीयाआटणि
 था ॥ सुरवेंअसनयाप्राणिथा ॥ जीयावयाशिराणिथा ॥ कीजनीया ॥ ६१ ॥ किंबहुनादेवोखवदी ॥ घेउनीफुंशाचीहातवरी ॥ तप-
 निफजतेंकिरीटी ॥ तामसहोये ॥ ६२ ॥ एवंसत्तादिकाचाआंगीं ॥ पडिलेंतपतिहोआगीं ॥ जालेंतेहीतुजचोगी ॥ दाविलेंव्यक्ति
 ॥ ६३ ॥ आताबोलतांप्रसंगा ॥ आलेंह्मणोनिएंगा ॥ करूरूपदानलिंगा ॥ त्रिविधातया ॥ ६४ ॥ येथगुणाचेंनिबळे ॥ दानहीत्रिवि
 ध७३०सेजालें ॥ तेंचिआडकपहिलें ॥ सात्विकगेसें ॥ ६५ ॥ प्रस्नो ० दातव्यमितियहानंदीयतेनुपकारिणो ॥ देशेकालेचपात्रेच
 तदानंसात्विकस्मृतं ॥ २० ॥ दी० तरिस्वधर्माआतोतें ॥ जेंजेंभिकेल आपणयातें ॥ तेंतेंदेइजकरुनिबहुतें ॥ सन्मानयोगें ॥
 ६६ ॥ जालयासुवीजप्रसंग ॥ पडेक्षेत्रवाफेचापांग ॥ तेंसाचिदानाचाहालाग ॥ देखतअसे ॥ ६७ ॥ अनधरत्नाहाताचरे ॥ तेंसां-
 गाराचीवोटीपडे ॥ दोनीजालींतीरीनजोडे ॥ लेतेंआंग ॥ ६८ ॥ परिसणसुहृदसंपत्ति ॥ येतिन्हीयेकांभीकती ॥ जेंभाग्यधरीउ
 न्मती ॥ आपुलाविषीं ॥ ६९ ॥ तेंसंनिफजवाचयादान ॥ जेंसत्तासियेसंवाहन ॥ तेंदेशकाकभाजन ॥ द्रव्यहीभिके ॥ ७० ॥ तरि
 आधितवप्रयलेंसि ॥ होआवेंकुरुक्षेत्रकांकाशी ॥ नातरितुकेसोइहिंसी ॥ तोदेशहीहो ॥ ७१ ॥ तेथरविचंद्रारहुमेक ॥ होना

पाठ. ओ. ६५ बोलें. ओ. ७० निफलजावया.

६

६

६

६

पाहंपुषकाक ॥ कानथासारिवाभिर्मक ॥ आनहैजालो ॥ ७२ ॥ नैयाकाळीनियेंदुशी ॥ होआवीपात्रसंपत्तीऐसी ॥ मूर्तिआहेइ-
 रिलीजेंसी ॥ शुचिर्त्तेनिकां ॥ ७३ ॥ आचारचेंमूकपीठ ॥ वेदांचेउत्तरपेंठ ॥ नेंसहिजरलचोरवट ॥ पावोनियां ॥ ७४ ॥ मगतयाचा
 दाईविता ॥ निवतवावीस्वसत्ता ॥ परिप्रियापुढेकाता ॥ रिगजेंसेनि ॥ ७५ ॥ काज्याचेडेविलेनया ॥ देउनहोइउत्तरादया ॥ नाना
 हडपेविडाराया ॥ दिधलाजेंसा ॥ ७६ ॥ नेंसेनिनिष्कामेंजिवें ॥ भूस्थादिकअर्पवें ॥ किंवहनादानं ॥ नंदावेउठो ॥ ७७ ॥ आपिदान-
 जधाधोवें ॥ तयातेंसंयापाहावें ॥ जयावेतलेंनुसचेंवे ॥ काथसेनही ॥ ७८ ॥ सादघातलियाआकाशा ॥ नंदोप्रतिशब्जेंसा ॥ को-
 पाहिलाआरसा ॥ येरीकडे ॥ ७९ ॥ नातरीउदकाचियेभूमिके ॥ आफाकिलेविकेंदुकें ॥ उग्रकोनिकवतिकें ॥ नयेजदाना ॥ ८० ॥ ना-
 नावसाचातलाचार ॥ माथातुरंधिलाबुर ॥ नकरीप्रत्युपकार ॥ जियापरी ॥ ८१ ॥ नेंसेदिधलेंदानयाचें ॥ जोकोणेहाओंगेनुसचें-
 ॥ अर्पिलयासाभ्यनयाचें ॥ कीजेंपंगा ॥ ८२ ॥ ऐसियाजेंसामधिया ॥ दाननिफजेवीराराया ॥ नेंसाविकदानवयां ॥ सर्वोद्दिजाणा ॥
 ८३ ॥ आगितांचिदेशकाक ॥ घडेनेंसाचिपात्रमेक ॥ दानसागहीभिर्मक ॥ न्यायगन ॥ ८४ ॥ भ्रूलो ० यत्तुप्रत्युपकारार्थेफलमु-
 दिश्यवापुनः ॥ दीयतेचपरिक्रुष्टतद्राजसमुदाहृतं ॥ ८५ ॥ दी ० परिमानींधरुनिदुभनं ॥ चारिजेजेंविगादनें ॥ कोपेवकरुनिआ-
 दनें ॥ परुजाधिजे ॥ ८५ ॥ नानादिदीयाळुनिआहेरा ॥ आवतुजाइजेंसोथिरा ॥ कावाणथाडिजघरा ॥ वोवसीयाचे ॥ ८६ ॥ पेंकळां
 तरगांदिबांधिजे ॥ मगापुढिलाचेंकाजकीजे ॥ पूजाघेउनिरसदीजे ॥ पीडितोसि ॥ ८७ ॥ सजयज्जदानदणं ॥ नातणोचगाजिव
 पो ॥ पुढेनीसुजावासावेंयणें ॥ दिजेंजेंका ॥ ८८ ॥ अथवाकोणीवाटेजातां ॥ घेतलेंउसचोनशकता ॥ भिळेजेंपंडुसुता ॥ हिजो-
 नम ॥ ८९ ॥ तरीकवड्यायेंकासाही ॥ अशोबांगोत्रांचेंचिकरीही ॥ सर्वप्रायश्चित्तेंसुयेमुढी ॥ नयांचिये ॥ ९० ॥ तेंविंचियांरिलो

पाठ-ओः ७२ ओंणीकहीहो ओः ७४ नें ओः ७८ प्रत्युपकारनकरवें

किं॥ फळेवांजिजतीअनकं॥ नाहिजेतराशुक॥ येकाहीनोहे॥ ९१॥ तेहीब्राह्मणनवोसरे॥ किंहाणिचेनिशिणेंद्रांसुरें॥ सर्वस्वजेंसे
 चोरें॥ नागऊनिनेलें॥ ९२॥ कायबहुसोंगोसुभती॥ जेदजेयामनोवृत्ति॥ तेदानगात्रिजगती॥ गंजमयें॥ ९३॥ ॥ श्री० ॥ अदेशकाले
 यद्दानमपात्रेभ्यश्चदीयते॥ असकृतमवसाततत्तामसमुदाहृतं॥ २२॥ टी० मगल्लंछाचेवसोदे॥ दोंगाणेहनकेंकते॥ काशिबिरचो
 हटे॥ नगरींचेंते॥ ९४॥ तेहीतेहीटाईभिकणी॥ समयसांजवेळकारजनी॥ तेकांडदारहोणेंधनी॥ चोरियेचा॥ ९५॥ पात्रेभाटनागारी
 ॥ सोमान्यस्त्रियाकाजुवारी॥ जियेंमूर्तिमंतेसुहरी॥ सुलवावया॥ ९६॥ नृत्याचीपुरवणी॥ तेपुढांडोकेभारणी॥ गीतभाटीवतोभ्यवणी
 कर्णजप॥ ९७॥ तयाहीवरीअकुमाळ॥ जेधेंपुलांगथाचाशुक॥ तंवभसाचातोवेताळ॥ अवतरेतेसा॥ ९८॥ तथविस्मांडुनिचांजग
 ॥ आणिलेपदार्थअनेग॥ तेघाल्निमानंग॥ गवांदिमि॥ ९९॥ एवंपेसेनिजेदणें॥ तेतामसदानमीद्वणें॥ आणिघडेदेवगुणें॥ अणि
 केहीऐक॥ ३००॥ विपायेंघृणाक्षरपडे॥ राकियेकाउकासांपडे॥ तेसेतामसांपर्वजोडे॥ पुण्यदेशी॥ १॥ तेथंदरवोनिताआथिला॥ -
 योग्यमाणोंहीआला॥ मोहीदणीचढला॥ सांबावेजरी॥ २॥ तरीअधूनधरीजीवी॥ तयासाथाहीनखालवी॥ स्वयेनकरिनाकरवी॥
 अर्थ्यादिक३ आलियानघलीबैसों॥ तेथगंधासताचाकायअतिसो॥ हाअप्रसंगकीरअसो॥ तामसींनरीं॥ ४॥ पैबोकवीजेरिणा
 इतें॥ तेसासांकीतयाचाहात॥ तूंतुंकरणयाचाबहुत॥ प्रयोगतेथें॥ ५॥ आणिजयाजेंदेकिरीदी॥ तयानेंउभाणीतयासारी॥ -
 मगकुबोलेकोलोटी॥ अवसेचा॥ ६॥ हबहुअसोयापरी॥ मोलवंचणेंजेंअवधारीं॥ तयानावचगचरीं॥ तामसदान॥ ७॥ ऐसेआ
 पुढालाचिन्हें॥ अककृतेंतिह्नीं॥ दानेंदोर्विलांभिधानीं॥ रजतमाया॥ ८॥ येथमीजाणतअसें॥ विपायेंतूंगाऐसें॥ नकल्पि
 सीलमानसें॥ विचक्षणा॥ ९॥ जंभवबंधनमोचक॥ येकलेकमंसात्तिक॥ नरीकांवेरवासंसदोरव॥ येरबोलावीं॥ १०॥ परिनोसुं-

पाठ. ओ. ९९. अतलथा. ओ. ३००. तेहीऐकें.

७

७

७

७

तितां द्वितीया ॥ श्रीनारायणं नमस्कृत्य ॥ को धनसाहतां जेसी ॥ वातिन लगे ॥ ११ ॥ तैसें शुद्ध सत्ता आड ॥ आहं रजतमाचं क भड ॥ तैसें दूगो
यातें फ्रीड ॥ ह्मणावें का ॥ १२ ॥ आस्मीं शुद्धादि दानांत ॥ जें समस्त ही क्रया जात ॥ सांगी तलें कां व्याम ॥ तिही गुणी ॥ १३ ॥ तें अश्वभर वसे
नि तिन्ही ॥ न सांगो चि ऐं सभा नी ॥ परिसत्त्वदा वाधा दोही ॥ बोल लोचें ॥ १४ ॥ जें दोहो साजित जें असु ॥ तें दोन्ही सांडितां चि दिसे
॥ अहोरात्र त्या गें जें ॥ सी अक्षर ॥ १५ ॥ तें सें रजत मविनाश ॥ तिजें जें उचम दिसे ॥ तें सलहे आपे सें ॥ आवां सियें ॥ १६ ॥ एवं दावान
आसत्त्वुज ॥ निरोपिलें तमरज ॥ तें सांड नि सत्वे काज ॥ सार्धा आपलें ॥ १७ ॥ सत्वे चि येणें चां खाळे ॥ करीय जादिकें सकळें ॥ पावसी
तें करतळें ॥ आपलें निज ॥ १८ ॥ सूर्यें दावलें सातें ॥ काय येक ना दिसे येथें ॥ तें विसलें केलिया कळातें ॥ काय नेदी ॥ १९ ॥ इंकीर आ
वड तो विखी ॥ शक्ति सत्तां आधि नि की ॥ परिसोक्षे सी येथी ॥ मिसळ पो जें ॥ २० ॥ तें येक आन चि आहे ॥ तया चा सावावो जें लाहे ॥
तें सोसाचा ही होये ॥ गावीं सरतें ॥ २१ ॥ पें सांगार जर्हा पंधरें ॥ नर्ही राजवडी चीं अदरें ॥ लाहें तें चिसरे ॥ जिघापरि ॥ २२ ॥ स्वच्छे
शीतळें सुगंधें ॥ जळें हो ती सुख प्रदें ॥ परि पवित्रत्व संबंधें ॥ ती थांचे नि ॥ २३ ॥ नैर्ही कां भलें सी थोरी ॥ परि गंगा जें अंगिकारी ॥ तें
चि ति ये सागरा ॥ प्रवेश गा ॥ २४ ॥ तें सें सात्विका कर्म करी ही ॥ यत्तां सोहा चि ये भेरी ॥ न पडे आड काठी ॥ तें वेगळें आहे ॥ २५ ॥ हा बो
ल आयकत रंवी ॥ अर्जुना आधी न माये जीवी ॥ ह्मणे देवें कृपा करवी ॥ सांगावें तें ॥ २६ ॥ तें अक्षपाळ न च ननी ॥ द्योना आदें क न श
चीव्य की ॥ जेणें सात्विकें ते सुक्ती ॥ रत्न दे रिवलें ॥ २७ ॥ श्लो ० ॐ नत्सर्दिर्न नर्द शो ब्रह्मणांश्चि विधिः स्मृतः ॥ ब्राह्मणां स्तेन वे
दाश्च यसाश्चि विहिताः पुरा ॥ २८ ॥ दी ० तरि अनादि परब्रह्म ॥ जें जगदादि व आस धाम ॥ तया चें येक नास ॥ विधापें असे ॥ २९ ॥ तें
कीर अनाम अजाती ॥ परि अविद्या व गी चि ये राती ॥ माजि वोळखावया श्रुती ॥ खुण न ली ॥ ३० ॥ उपजलिया बाळक सी ॥ नें यना

पाठ ओ १३ गा ओ १४ फावार्हास ओ २० निती ओ २४ नयो ओ २४ हाये ओ २९ गा न गकी

हीं तथापासी ॥ ठेविलें निनावेसी ॥ चोटे तडठी ॥ ३३० ॥ कष्टले ससागशिणी ॥ जेदे वीचेनिगादया ॥ पणनेदे नविजणा ॥ तोमेकृत
 हा ॥ ३१ ॥ ब्रह्माचा अबोल फिलावा ॥ अहं तहं तत्वतां भेदावा ॥ एसां सत्रदं गिलाकं वणा वंदेवाप ॥ ३३ ॥ मरादा विल निजेणयक
 ॥ ब्रह्म आक विलेक वतिके ॥ सागां असतहाके ॥ पुढाउमे ॥ ३३ ॥ परिनिगमाचळ शरवरी ॥ उगा न पदाथ न गरी ॥ आहात गद्यह्म
 चायेकाहारी ॥ तयांसिंचकळे ॥ ३४ ॥ हं ही असोय जापती ॥ शक्तां जसृष्ट करती ॥ तेजया एका आदृति ॥ नामान्विये ॥ ३५ ॥ प्रसू
 षी चिया उपक्रमा ॥ पूर्वगिा वीरि तमा ॥ वेडा एसा ब्रह्मा ॥ येकला होना ॥ ३६ ॥ मज इस्वर तेनां करे ॥ नासृष्टी ही कंनशके ॥ तो न
 थोर केला येके ॥ नामेजेणो ॥ ३७ ॥ जयाचा अर्थ जीवि आनां ॥ जेवणांचा चिजपतो ॥ विम्यसू जन याग्य तो ॥ आर्लांतया ॥ ३८ ॥
 तेथ वारि चले ब्रह्म जज ॥ तथावेद दिथले शासन ॥ यज्ञां मेवंतन ॥ जीविके कले ॥ ३९ ॥ पाठीनिणां कर्तियेर ॥ स्मृजंन लोका अ
 पार ॥ जाले ब्रह्म दत्त अग्रहार ॥ तिन्ही सुवन ॥ ३९ ॥ एसां नाम मंत्र जणो ॥ धातया अटळ चिकरण ॥ तथाचे स्वरूप आदिक क्षणे ॥
 श्रीकांत तो ॥ ४१ ॥ तरिसव मंत्रांचाराजा ॥ तो प्रणव आदि वणां बुद्धा ॥ आणितत्कार दुजा ॥ निमासत्कार ॥ ४२ ॥ एव ओतत्सदाका
 र ॥ ब्रह्म नाम हे त्रिः प्रकार ॥ हे कुलतुरे विसुंदर ॥ उपनिषदांने ॥ ४३ ॥ यणां मीगा होऊनियेक ॥ जें कर्म चाले सानिक ॥ तें केवल्या
 तें प्रादिक ॥ धरिचें करी ॥ ४४ ॥ परिकापुराचे थळिव ॥ आणुनि दंड लटव ॥ लेवो जाणोचि अडव ॥ तेथ असेबाणा ॥ ४५ ॥ तें सं
 आद रिजेल सत्कर्म ॥ उच्चैरे लब्रह्म नाम ॥ परिनेणि जल जरिवम ॥ विनियागाचे ॥ ४६ ॥ तरिम हंत चिया कोडी ॥ घराशालि
 या ही बोदी ॥ मानुं नेषता ही परवडी ॥ सुदल तुटे ॥ ४७ ॥ काल्याचा चारवट ॥ ही कसागार येकवट ॥ घालुनि बांधली मोट ॥ गळा
 जेवी ॥ ४८ ॥ तें सें तीं डों ब्रह्म नाम ॥ हातीं तं सानिक कर्म ॥ विनियोगे वीण काम ॥ विफळ होये ॥ ४९ ॥ अगाअन्ध आणि भूक ॥

पाठ. जो. ३२ अदंतले. ओ. ३२ पै. ओ. ४९ अदंत.

७.

७.

७.

७.

यामींअसपरिदेव ॥ जेऊंनेणतांबाळक ॥ लंघनचिकीं ॥ ३५० ॥ कांस्तहसूत्रवेस्वानरा ॥ जोलियाहसंसरा ॥ हातवरीनेणतांवीर्य
 ॥ प्रकाशनोहे ॥ ५११ ॥ तैसेवेळेकृत्यपावे ॥ तेशिचामन्हीआठवे ॥ परिच्ययेंतेंआघवें ॥ वनियोगेवीणा ॥ ५३॥ ह्मणोनिवर्णत्रि
 यात्यक ॥ जेहंपरब्रह्मनामयेक ॥ विनियोगातूँआडक ॥ यथाच्चाआतो ॥ ५३॥ ॥ स्तो० तस्मादोमित्युदाहृत्ययज्ञदानतपः क्रियाः
 प्रवर्ततेविधानोक्ताः सततं ब्रह्मवादिनाम् ॥ २४॥ टी० तरियानामोचोँ अस्मरेंतहीं ॥ कर्मा आदिमध्यनिदानीं ॥ प्रयोजोवीपे-
 स्थानीं ॥ इहोतिन्दी ॥ ५४॥ हेचियेकिहातवटि ॥ घेउनीहूनकिरीटी ॥ आलेब्रह्मविदसेटी ॥ ब्रह्माचिये ॥ ५५॥ ब्रह्मसीहोआवया
 एकी ॥ तेनवेचतीयज्ञादिकीं ॥ जेचावळेलेकोरवी ॥ शास्त्राचिया ॥ ५६॥ तोआदितवोंकार ॥ ध्यानंकरितीगांचर ॥ पाठीआ
 णितीउच्चार ॥ वाचेहीतो ॥ ५७॥ तेपोध्यानेप्रकट ॥ प्रणवोच्चारेंस्पष्ट ॥ लागतीमगवाटे ॥ क्रियांचये ॥ ५८॥ आंधरीअभंगदिवा
 आडवीसमर्थवाळावा ॥ तैसाप्रणवजाणावा ॥ कर्मांरसी ॥ ५९॥ उचिनदेचोदुशें ॥ द्रव्येंधर्मंआणिबुहुवसे ॥ दिजहाराहनहु
 ताशें ॥ यजितीपेंते ॥ ३६० ॥ आहवनीयादिवद्दीं ॥ निक्षपफूरीहवनं ॥ योजनीपेविधानीं ॥ फुडेंहोउनी ॥ ६१॥ किंबुहुनानाया
 गा ॥ निष्पत्तीचेंघेउनीअंगा ॥ करितीनावडतयात्याग ॥ उपाधीचो ॥ ६२॥ कान्यायेजोडलापवित्रीं ॥ मृत्यादिर्कस्वितत्रीं ॥ देशकाळशु
 द्धपात्रीं ॥ देतीदानें ॥ ६३॥ अथवायेंकातरांरुद्धीं ॥ चांद्रायणेंसामोपवसीं ॥ शांथोनिगाधातुराशीं ॥ करितीतपें ॥ ६४॥ एवंपयज्ञ
 दानतपें ॥ जियेंगाजतीबुंधरूपें ॥ तेंहचिहायसापें ॥ मोक्षाचेंतया ॥ ६५॥ स्थळींनावाजयादादज ॥ जळींनयाचजनीतरिजे ॥
 तेंविबहुकींमूटिजे ॥ नामयेणें ॥ ६६॥ परिहेंअसोऐसिया ॥ यायज्ञदानादिकिया ॥ ॥ करंसावायिलिया ॥ प्रवर्तती ॥ ६७
 ॥ तियासोटिकियाजेथफळीं ॥ रियोंमाहातीनिहाळीं ॥ प्रयोजितीतिथेकाळीं ॥ तच्छब्दानो ॥ ६८ ॥ ॥ स्तो० नरित्यनभिसंधायंक

पाठः श्रीः ५१ संमारा श्री ५४ यानामामींच श्री ५४ मधुजावीं श्री ५९ कर्मांरसा श्री ६४ गोष्टीनि

३४

३४

३४

३४

३४

३४

३४

३४

३४

३४

३४

३४

लंयततपः क्रियाः ॥ दानक्रियाश्च विविधाः क्रियन्ते मोक्षकांक्षिभिः ॥ १५ ॥ दी० जैसर्वो हो जग रणेने ॥ जै एकसर्व हो देर गने ॥ जै न च्छेद
बोलि जने ॥ पहिल जे वस्तु ॥ १६ ॥ ते सवें दिक ले चिन्ता ॥ तदुप आहु निचा सुमती ॥ उच्चारें हो व्यक्ती ॥ आगिनी पदती ॥ ३७ ॥ झणतें
तदुप ब्रह्म तथा ॥ फळे सी क्रिया दया ॥ ते चि होतु आह्म भागवया ॥ कांही चि नुरो ॥ १७ ॥ ऐसं निन दात्मक ब्रह्म ॥ तथे उगाणू निरुम
॥ आग झडिती नमसे ॥ येणें बोलें ॥ १३ ॥ आतां ओंकारें आदरिलें ॥ तत्कारें सम पिलें ॥ दयार्ति जथा आलें ॥ ब्रह्मत्व कमा ॥ १३ ॥ तें क
र्म करि ब्रह्म कारें ॥ जालें तें पोहो न सरें ॥ जें करी तें पोहो न सरें ॥ आहें झणोनि ॥ १४ ॥ सीतु आं जे जे विरे ॥ परिहार तावे मळ
उरें ॥ तें सें कर्म ब्रह्म कारें ॥ गमे तें होत ॥ १५ ॥ आगि दुजे जे व जे घडे ॥ तवत व ससार मय जोडे ॥ हे देवो आपले निताडे ॥ बोलती वे
दे ॥ १६ ॥ झणोनि पर त्वे ब्रह्म असे ॥ तें आत्मत्वे परि वसे ॥ सच्छब्द दयारिणा दोषें ॥ देविला देवें ॥ १७ ॥ तं रि ओंकार तत्कारें ॥ कर्म
केलें जें ब्रह्म शरीरें ॥ जें प्रशस्ना दि बोलवरी ॥ वाखाणिलें ॥ १८ ॥ प्रशस्त कर्मो ति ये ॥ सच्छब्द विनियोग आहे ॥ तो चि आदका
हो ये ॥ तें सा सांगों ॥ १९ ॥ म्लो० सद्वाचे साधु भावे च साहित्ये न त्ययुज्यते ॥ प्रशस्त कर्मणि तथा सच्छब्दः पार्थ युज्यते ॥ २० ॥ दी० त
रि सच्छब्द येणें ॥ आहुनि अस ताचे नाणे ॥ दाविज अव्यगवाणें ॥ सत्तें रूप ॥ २० ॥ जें सत्तें काळें देशें ॥ हां जें नेणें चि अजारी
से ॥ आपणा आपण असे ॥ अवर्दित ॥ २१ ॥ हं दिस तें जेतुले आहे ॥ तें अस त पण नाह ॥ दूरव तां रूपी सो ये ॥ लाभ जथाची ॥
२३ ॥ तेणें सि प्रशस्तें कर्म ॥ जें जालें स वात्मक ब्रह्म ॥ देवि जकस्तु नि स म ॥ ऐक्य बोधें ॥ २३ ॥ तें तरी ओंकार तत्कारें ॥ जें कर्म
दाविलें ब्रह्म कारें ॥ तें गाळ नि होइ जे एक सरें ॥ सच्चा चि ॥ २४ ॥ ऐसा हा अंतर ग ॥ सच्छब्द चा विनियोग ॥ जाणा झणे श्रीरं
ग ॥ सीन झणें हो ॥ २५ ॥ नामी चि जर हो झणे ॥ तं श्रीरंगी दुजे चि उणें ॥ झणोनि हे बोलणें ॥ देवाचे चि ॥ २६ ॥ आतां आ

पाठ. ओ. ८२ रिस्तें.

णिकहीपरी ॥ सच्छब्दहा अवधारी ॥ सान्विक्रमांकरि ॥ उपकारजो ॥ ८७ ॥ तनीसत्कर्मचंगे ॥ चालिलो अधिकारबगे ॥ परिरेका
 धेंकां आंगें ॥ दिणावर्तजें ॥ ८८ ॥ तेंउणेयेकें अवचवें ॥ शरीरठाके आघवें ॥ कां अंगहीन मांडावें ॥ रथाचंगती ॥ ८९ ॥ तेंसंयेकें
 चिरुणेंवीण ॥ संतचिपरी असंतपण ॥ कर्मधरिणा जाणा ॥ जिचेवेकें ॥ ३९० ॥ तेंद्वंद्वों आंकार तत्कारि ॥ सावाधिला चांगीपरी ॥ स-
 च्छब्दकमांकरि ॥ जीणेंद्वार ॥ ९१ ॥ तें असंतपण फंडा ॥ आणिसुद्धावांचि येकूटि ॥ निजसंतलाचि येयोटि ॥ सच्छब्दहा ॥ ९२
 ॥ दिव्योपधजें रोगिया ॥ कांसावावोय भंगलिया ॥ सच्छब्दकमाव्यंगलिया ॥ तें साजाणा ॥ ९३ ॥ अथवाकांहीप्रभाटें ॥ कर्मआ-
 पुलियेंमर्थाटें ॥ चुकोनिपडेंनिधिहू ॥ वांटदून ॥ ९४ ॥ चालतयाचि भागंसाडि ॥ पाररिवयाचि आखरेंपडे ॥ राहाटीभाजिनघडे ॥
 काइकाइ ॥ ९५ ॥ ह्मणोंनि तेंसीकमा ॥ गमस्यमांडेंसीमा ॥ असाधुत्वाचि यादुनामा ॥ येवोणहेजें ॥ ९६ ॥ तेथगाहासच्छब्द ॥ ये-
 गंदोहीपरीसप्रबुहु ॥ प्रयोजिलाकरीसाधु ॥ कर्मांतेंयया ॥ ९७ ॥ लोहापरिसाविष्यघृष्टि ॥ बोहकागोचियेंमेटी ॥ कासुतजेंसी-
 बूथी ॥ पीपूथाची ॥ ९८ ॥ पैअसाधुकर्मांतसा ॥ सच्छब्दप्रयोगवीरणा ॥ हेंअसंगोरवंचिएसा ॥ नामाचायया ॥ ९९ ॥ घेउनि-
 येथिचेंवसं ॥ जेंविचारसीहेंनाम ॥ तेंकेवकहेंचिब्रह्म ॥ जाणसीतु ॥ १०० ॥ पाहेंपां ओतत्सनुएसं ॥ हेंबोलणेंतेथनेतसे ॥
 जेसुनिकाहंप्रकाश ॥ दृश्यजात ॥ १०१ ॥ तेंतंवनिर्निशिष्ट ॥ परब्रह्मचारवट ॥ तथाचेंहें आतुवट ॥ व्यजकनाम ॥ १०२ ॥ परिअत्रय
 आकाशा ॥ आकाशचिकांजेसा ॥ यानासानांमिआश्रयंतसा ॥ अभंदअस ॥ ३ ॥ उदधिला आकाशी ॥ रवींविश्वीतंप्रकाशी
 हेंनामव्यक्तीतेंसी ॥ ब्रह्मकरी ॥ १०४ ॥ ह्मणोंनिव्यसूरहेंनाम ॥ नंदेजाणकवकब्रह्म ॥ राहालागीकर्म ॥ जेंजेंकाजे ॥ १०५ ॥ ह्मणों
 यनेतपसिदानेचस्थिति ॥ सादितिचोच्यंत ॥ कर्मचेंवतदर्थचंसिदित्सेवाभिधीयतें ॥ १०७ ॥ टी ० तेयागअथवादानें ॥ तपा

पार ओ ९३ जादि ओ ९५ गवडें ओ ९६ जें ओ ९८ ब्रह्मकाशी

६३

६४

६५

दिक्कंहींगहनें ॥ तैनिफजतुकांनूनें ॥ होऊनिवातु ॥ ६ ॥ परिपरिसाचावारकलीं ॥ नाहीचोस्वकाडाचीबोलीं ॥ तैसीं ब्रह्मां अपितां
 केलीं ॥ ब्रह्मचिहोती ॥ ७ ॥ उणिवापुरयाचिपरि ॥ नुरेंचितेथअवधारीं ॥ निवडुनयेतीसागरीं ॥ जेंसियानदी ॥ ८ ॥ एवंपाथी-
 नुजप्रति ॥ ब्रह्मज्ञानाचीहेशक्ती ॥ सागीतलउपपत्ती ॥ ९ ॥ आणियेककाहीअहारा ॥ वेगळेवेगळेवारा ॥ विनियो-
 गनागरा ॥ बोलिलींरिती ॥ १० ॥ आतांएसंएवसुमहिम ॥ झणोंनिहेब्रह्मनाम ॥ जाणीतलेंकीसुखमं ॥ रायातुगो ॥ ११ ॥ तरियेशुनि-
 यांचीअद्वा ॥ उपलविलीहोसर्वदा ॥ जयाचेंजालेंबंथा ॥ उरोनेदी ॥ १२ ॥ जियेकसींहाप्रयोग ॥ अनुधीजेसहिनियोग ॥ तेथअनुष्ठि-
 लासांग ॥ वेदचितो ॥ १३ ॥ श्लो० अथदूयाहुतंततपस्तसकृतंचयत् ॥ असादितुच्यतेपार्यनचतत्येत्येनोदह ॥ १४ ॥ हरिः ॐ
 तत्सदितिश्रीमद्भगवद्गीतासू० संवादब्रह्मचर्यविभागयोगोनामसप्तदशोऽध्यायः ॥ १५ ॥ दी० नासांडनिहेंसोये ॥ मोडनिअन्द-
 चिबाहे ॥ दुराग्रहाचित्राये ॥ वाहऊनियां ॥ १६ ॥ सगअम्बमेधाकोडीकीजे ॥ रत्नेंभरोनिपृथ्वीदीजे ॥ येकसुधीहांनपिजें ॥ तप-
 साहकीं ॥ १५ ॥ जळाशयाचिनिवावे ॥ ससुदूहीकीजतीनवे ॥ परिकिंबहुनाआघवे ॥ दृष्टांचितें ॥ १६ ॥ पाषाणावरशेवले ॥ जें
 सेंभस्मीहवनकेलें ॥ कांखेंवेदीधलें ॥ साउलिये ॥ १७ ॥ नातरिजेंसंचडकणा ॥ गगनहाणीतलेअर्जुना ॥ तैसासमारभसु-
 णीं ॥ गेलाचितो ॥ १८ ॥ याणागाकिलेयुडे ॥ तेथजेलुनापेडिजोडे ॥ तैसंदरिद्रतेवटे ॥ ठेलेंचिआगीं ॥ १९ ॥ याईबांधलीरवा-
 परी ॥ येथअथवापेलतीरीं ॥ नसरोनिजेंसीमारी ॥ उपवासींणी ॥ २० ॥ तैसैकमजातेंतेणें ॥ नाहीऐहकीचेंभोगणें ॥ ते-
 थपरत्रतोक्वणें ॥ अपेसावा ॥ २१ ॥ झणोंनिब्रह्मनामअद्वा ॥ सांडुनिकीजेतोधांदा ॥ हेंअसोसिणूजुसथा ॥ दृष्टादृष्टातो
 ॥ २२ ॥ ऐसेंकेलुषकीकेसरी ॥ वितापतिभिरतमारी ॥ श्रीचरवीरनरहरा ॥ बोलिलेतेंणें ॥ २३ ॥ तेथकिजानदाबहुवसा ॥ झा-

पाठः ओ० ५२० उपवासीयाः ओ० २३ आसुपवाः ओ० २३ नृ०

४३

४४

४५

जिअसुनतोसहसा॥हरपलाचंद्रजैसा॥चांदिणेंनि॥३४॥अहोसंशामहावाणिचा॥मोपेनाराचांचियाआणिचा॥सूरिसा
 सधेमवणिचा॥जीविर्तेसि॥३५॥ऐसियासमर्थककेश॥मोरीजनस्वानंदराज्यकैसे॥अजिमाग्योदयदानसे॥आणिके
 दाई॥३६॥संजयक्षणेकोरवराचा॥गुणारिगोचरिपूनिया॥आणिगुरुहिहाअसुनिया॥सुखाचावेथ॥३७॥दानपुसता
 दगाडी॥नरिदवकासोदितगादि॥तोरकैसेनिआझोभेदी॥परमाथेसी॥३८॥होताअज्ञानाचाआंधारा॥वोसतीतजन्म
 वाहरा॥तोआत्माप्रकाशसेदिरा॥आतआणिलं॥३९॥यवदाआझानुझोथार॥कलायेणेंउपकार॥क्षणांनिहाआसम
 हादर॥गुरुत्वेहोये॥३९॥तेर्विचरंजयाक्ष्मगानि॥हाअनिशययानृगनि॥खुपेलक्ष्मणोभिकिति॥वालनअसो॥३९॥ऐसी
 देवोलीसांडिली॥मरायेरीचिगाईआदरिनी॥अपथकाबुझिली॥श्रीकृष्णाने॥३९॥चांचेजसंकाकरणे॥तेसेभीहीकरी
 नयोलणे॥आधिकीजांजानदवक्ष्मण॥निवृत्तीचा॥४३॥इनिअमावाथेदीपिकायांजानंदविवरचितायांसतदशा-
 ध्याय॥१७॥श्रीकृष्णापणमस्तु॥

पार ओ-२६ कमवेशी ओ-४३ तेंचिजसजायेंनये

छ

छ

छ

छ

छ

छ

छ

छ

छ

श्रीगणेशाय नमः॥ जयजयदेवनिर्मल॥ निजजनाखिलमंगल॥ जन्मजरजलदजल॥ ममंजन॥ १॥ जयजयदयवक॥ विदळितासु
 गळकुळ॥ निगमागमद्रुमफळ॥ फलुप्रद॥ २॥ जयजयदेवसकळ॥ विगतविषयवत्सक॥ कलितकाळसौम्य॥ ३॥ जय
 जयदेवनिश्चळ॥ चैलितचिन्तेपानतुदिल॥ जगदुन्मीलनाविरल॥ केलिप्रिया॥ ४॥ जयजयदेवनिष्कळ॥ स्फुरदमदानदबहळ॥ नि
 त्यनिरस्ताखिलमल॥ मूळमूला॥ ५॥ जयजयदेवस्वप्नम॥ जगदुदुर्गार्जनम॥ सुवनोद्भवारभस्तम॥ भवध्वंस॥ ६॥ जयजयदे
 वविभुदु॥ विदुदयोद्यानिदिरद॥ शमदममदनमदसेद॥ दयार्णव॥ ७॥ जयजयदेवकरूप॥ अतिकृतकदर्पसर्पदप॥ भक्तभाक्कुमुव
 नदीप॥ तापापह॥ ८॥ जयजयदेवअद्वितीया॥ परिणतोपरमेकप्रिया॥ निजजनिजतमजनीया॥ मायागम्या॥ ९॥ जयजयदेवश्रीगुरो
 ॥ अकल्पनाकल्पतरो॥ स्वसंविद्रुमबीजप्ररो॥ हणावनी॥ १०॥ हंकारैकरोसे॥ नानापरिभाषावशे॥ स्तोत्रकरूतुजउद्देशे
 ॥ निर्विशेषा॥ ११॥ जिहींविशेषणीविशेषिजे॥ तेंदृश्यनळरूपतुसे॥ हेजाणेभीत्यणीनिलजे॥ वानणाइही॥ १२॥ परिमर्यादे
 चासागर॥ हातवंचितयाडगर॥ जवनदेवेसुधाकर॥ उदयाआला॥ १३॥ सोमकांतनिजनिर्झरी॥ चंद्राअर्घ्यादिकनकरी॥
 तेंतोचिअवधारी॥ करवीकीजी॥ १४॥ नेणेंकेशिवसंतसंगे॥ अवचितियावृक्षाचिअंगे॥ फुटतीतेंतयाहीजोगे॥ धरणेंनोहे
 ॥ १५॥ पद्मिनीरविकिरण॥ लाहेमगलजेकृपण॥ कांजळेंशिवतलेंलवण॥ आगमुले॥ १६॥ तेंसातुंतेजयमीस्मरे॥ तथमीप
 णमीविसरे॥ मगजाकळिलोटकरें॥ वसजेसा॥ १७॥ मजतुवाजीकेलेंतेंसे॥ माझेमीपणदवडुनिदशे॥ स्तुतिभिषेपचपि
 से॥ बांधलेंवाचे॥ १८॥ नायेन्हवीतरिआठवी॥ राहोनिस्तुतिजेंकरावी॥ तेंगुणागुणिकांधरावी॥ सरोवरीकी॥ १९॥ तारितु
 जीएकरसाचोळंग॥ केवीकरूगुणागुणीविभागा॥ मोतीफोडोनिसाधिताचागा॥ दोतेंसेचिभले॥ २०॥ आणिबापतुंसाय॥
 पाठ० ओ० ४० चळ० ओ० ७० दानासंवेद०

॥ १४ ॥

॥ १५ ॥

॥ १६ ॥

इहीबोलीनास्तुतीहोय॥ डिंभोपाधिकआहे॥ विटाळतें ये॥ २१॥ जीजालेनिपाइकंआले॥ तेंगोसावीपणकेविबोले॥ ऐसेंड
पाधीउधितले॥ कायवण॥ २२॥ जरिआत्मातुरकसरा॥ हेहीह्यपातोदातारा॥ तरीआतुलतूबहेरा॥ घापताभी॥ २३॥ ह्यपू
निसैत्यचिंतुजलगीं॥ स्तुतीनदेखेंजीजगीं॥ मोनावांचुनिखेणेंअंगीं॥ स्तुतीनामा॥ २४॥ स्तुतीकाहींनिबोली॥ पूजाका
हींनकरणें॥ सन्निधीकांहींनहोणें॥ तुझादायीं॥ २५॥ तरिजितलेंजेसैंसुली॥ पिसंआलापघाली॥ तेंसोवांचूतेंमाउली॥ उपसा
ह्रावतुवा॥ २६॥ आतांगीताथचिसुकुमुदी॥ लेववीमाझयेवागवुहू॥ जेणेंमानेंसभासदी॥ सज्जनाचा॥ २७॥ तेंथेंह्याणितले
श्रीनिवृत्ती॥ नकोहेपुढतपुढती॥ परिसोलाहपृष्टीकिती॥ वेळकीजगा॥ २८॥ मंडविनिवीज्ञानदेव॥ ह्यणेहोकांजीपसाव॥ तरि
अवधानदेतदेवा॥ ग्रंथाआती॥ २९॥ जीगीतारत्नप्रसादाना॥ कळसअर्थचिंतनाची॥ सदर्शनादर्शनाचा॥ पाठाउजो॥ ३०॥
लोकींनरीअर्थीऐसें॥ जेदुखनिर्याकलशादिसें॥ आपिभेदीनीहानवसे॥ दुवतचितया॥ ३१॥ तेंसैंविथेंहीआहे॥ जेकेचि-
येणेंअर्थये॥ आयवांचिदृष्टहोये॥ गीतागमहा॥ ३२॥ श्रीकलशायचिकारणें॥ अदरावाश्रयह्यणें॥ वादलाबादरायणें॥ गीता
आसादा॥ ३३॥ नोहेकलशापरतेंकाही॥ प्रासादीकामनाही॥ तेंसांगतेंसंगीताही॥ संपनेपण॥ ३४॥ व्यामसस्रुजेंसूत्रबळीं॥ तेंपोंनि
गमरत्नाचकीं॥ उपनिषदार्थचिमाळी॥ माजीखांडिली॥ ३५॥ तेंथेंत्रिचगचाअनुकार॥ आडुडनिघालाजोअपार॥ तोमहा
भारतप्रकार॥ सोंवताकला॥ ३६॥ माजिआत्माज्ञानचेंएकवट॥ दळवाडेंसांडनिघावट॥ ३७॥ अडनशायचुकुठा॥ सवादकुसरी॥ ३७
निवृत्तिसूत्रसोडवणिया॥ सर्वशास्त्रार्थपुरवणिया॥ अबोसाधिलाभाडवणिया॥ मात्तरवैभवा॥ ३८॥ ऐसेनिकरिताउभारा॥ पंध-
राअध्यायातपरा॥ मूसीनिवाळलियापुरा॥ प्रासादजाहाला॥ ३९॥ परिसोळावाअध्याय॥ मोखिविंयहेचआय॥ मासहशतोठाड्या॥
पाठ० ओं० ३३ साचा० ओं० २६ भूतकी०, उपसाहे०

॥३॥

॥४॥

॥७॥

पडघाणियो॥४०॥ तयाहीवरीअष्टदश॥ तोअपैसामंडलाकलश॥ उपरिगीतादिकीव्यासा॥ ध्वजलागला॥४१॥ द्युणोनिमागील
 जेअध्याय॥ तेचढतेभूमीचेअध्याय॥ तयाचेपुरंदारवविताहे॥ आपुलाआगी॥४२॥ जालथाकामानाहीचरी॥ तेकलशेहोयउज्ज्वलते
 विअष्टदशविबरी॥ साद्यतगीता॥४३॥ ऐसाव्यासेविदाणिये॥ गीतायासादसोडवणिया॥ आयु॥ नरा॥ खलेअणिदे॥ नानापरी
 ॥४४॥ एकप्रदक्षिणाजपचिया॥ बाहशेनिकरितीयया॥ एकतेअवणाभिषेछाया॥ सेवितीयचवी॥४५॥ एकतेअवधानाचा
 पुरा॥ विडापाडुसीतरंग॥ घेडीनिरियतीगाभारा॥ अर्थज्ञानाचा॥४६॥ तेनिजबोधेउराउरी॥ सेततीआत्मयात्रीहरी॥ परिमोक्षप्रा
 सादीसरी॥ सर्वोहोआथी॥४७॥ समर्थानियेपुनिक भोजन॥ तीळल्यावारिल्याएकपक्वान्ने॥ तेविश्रवणेंअर्थेपठणें॥ मोक्षचिलामे॥
 ४८॥ ऐसागीतावैष्णवावसाद॥ अठरावाअध्यायकलशविशद॥ व्याख्याणितलाहाभेद॥ जाणोनिया॥४९॥ आतांससदशापाठी॥
 अध्यायकैसेनिठुरी॥ तोसंबंधसांगोदुही॥ दसेतैसा॥५०॥ कांगायमुनाउदक॥ वोषवयोवेगळिक॥ दावीहोउनिएक॥ पाणीपणें
 ॥५१॥ नमोडतादोन्हीआकार॥ घडिलेएकशरीर॥ हेअर्धनारीनरेश्वर॥ रूपीदिसे॥५२॥ नानावाढलीदिवसे॥ कळाबिबीपैसे॥
 परिमिनानेलेवजैसे॥ चंद्रीनाही॥५३॥ तैसीमिनानीचारीपदे॥ श्लोकश्लोकावछेदे॥ अध्यायअध्यायभेदें॥ गमेकीर॥५४॥
 परिमेमेयाचीउजरी॥ आनानरूपनधरी॥ नानारत्नमणीदीरी॥ एकचिजैसी॥५५॥ मोतियेंमिळोनबहुवें॥ एकावळीचापा
 डुआहे॥ परिशोभेरूपहोये॥ एकचिजैसे॥५६॥ फुलाफुलसरांलेख चढे॥ दुतीदुजीआगळीनपडे॥ श्लोकअध्यायतेणेंपडे॥ जग
 णावेहे॥५७॥ सातशतश्लोक॥ अध्यायाअठराचेलेख॥ परिदेवबोलिलेएक॥ जेदुजेनाही॥५८॥ आणिस्याहीनसांडोनि सोये
 ग्रंथाव्याप्तीकेलीआहे॥ प्रकृततेणेंनिर्वाहो॥ निरूपणआइका॥५९॥ तरीसतरावाअध्याव॥ पावतांपुरताठाव॥ जेंसंपतांश्लो
 पाठ॥ ओं॥ ५५ प्रेमाचो॥

॥४९॥

॥४९॥

॥४९॥

॥४९॥



1131

॥ ३ ॥

पाठ. ओं. ७२ व्यंस्कीं. ओं. ७६ सरनां. ओं. ७७ आहः.

भिषं॥ जे अव्यवहार वस्तु असे॥ ते चि सो गिजे कीजे सो॥ दूर्पणी रूप॥ ८१॥ मग सवा दू तो ही पारुष॥ तो रोगी गत॥ मग पश्याक॥ हे सहा
 वेळ सखें॥ लांचा वलेया॥ ८२॥ यालागी त्याग संन्यास॥ पुसावया चें घेई निमिष॥ मग उपला वेलें दुस॥ गति नें॥ ८३॥ अतगवा अर्था
 य मोहो॥ हे एकाध्यायी गीता चि आहे॥ जे वत्स चि धेनु दुहो॥ ते वेळ कायसी॥ ८४॥ तेसी संपन॥ अवसरी॥ गीता आदर विली माधारी॥ स्वा
 सी मृत्या चान करी॥ संवाद काई॥ ८५॥ परि हें असे ऐसं॥ अर्जुने पुमि जत असे॥ म्हणो वनती॥ विशेष॥ अवधारिजे॥ ८६॥ अलो॥
 अर्जुन उवाच॥ सन्यास स्तुमहाबाहो॥ तत्त्व मिच्छा॥ भवो दुतुम्॥ त्याग रय चतुर्थ केश एथ क॥ शिनि बूदन॥ १॥ टी०॥ हांजी सन्यास
 आपित्यावा॥ इयां दो एक अर्थी लाग॥ जैसा सांघात आपि सघ॥ सघातें चि बोलिजे॥ ८७॥ तें सें चि त्यागे आपि सन्यासे॥ त्याग
 चि बोलि जत असे॥ आमचे नितवमानसे॥ जाणिजे हें चि॥ ८८॥ नाकां हीं आधी अर्थ भेद॥ तो देव करी सुविषाद॥ जेथ ह्यणनीची
 मुकुंद॥ भिन्न चि पै॥ ८९॥ तरि अर्जुना तुझा मनी॥ त्याग सन्यास दोनी॥ एका र्थाग मले हे मानी॥ सीही सात्त्व॥ ९०॥ इहां दोही को
 रशब्दी॥ त्यागा चि बोलिजे चि शुद्धी॥ परि करण एक भेदी॥ येतुलें चि॥ ९१॥ जें न पटुनि कर्म सांदिजे॥ तें सांदिणें सन्यास ह्यणि
 जे॥ आणि फळमात्र कां त्यजिजे॥ तो त्याग गा॥ ९२॥ तशे कोणा कर्म चें पळ॥ सांदिजे कोण कर्म के वळ॥ हे हे सांगों वै वळ॥ चि न देई॥ ९३
 तरि आपै सीं दांगे डोंगर॥ झाडें लागती असार॥ नैसे लांब राजागर॥ नुठतीति॥ ९४॥ नपेरितो सें यत्तुणें॥ उठनी तें सें साळि चें होणें॥ ना
 हीं गारा बाउणें॥ जिण परी॥ ९५॥ कां अंग जाहालें सहजें॥ परि लेणें उद्यम के जे॥ नदी आपै सीं आपादिजे॥ विहरि जेवी॥ ९६॥ जें सें
 नित्य नैमित्तिक॥ कर्म होय स्वाभाविक॥ परि न कांमिता कांमिक॥ नमि फजे॥ ९७॥ अलो॥ श्री भगवानुवाच॥ काय्यानां कर्मणां
 न्यास सन्यास कवयो विदुः॥ सर्व कर्म फल त्यागं प्रादुस्त्यागं विचक्षणाः॥ ३॥ टी०॥ कां काम न चें दळ बोडो॥ उभारा वया जे पडे॥ अश्व
 पाठ॥ ओ० ८१ आणि आ० ८३ उपरत विलें॥ ओ० ९३ एक वेळ॥

॥ ७॥

॥ ७॥

॥ ७॥

भेषादिकं फुडें॥ यागजैय॥ १८॥ वापीकूपआरास॥ अग्रहारं हनमहाग्राम॥ आणीकहीनांनासंश्रम॥ व्रतं जेजे॥ १९॥ ऐसें इष्टाष्ट-
 तसकळ॥ जयाकामनाएकमूळ॥ जेकेलें भोगवी फळ॥ बोधोनियां॥ १००॥ देहाचियागांवाआलिया॥ जयवृक्षुचियासोहळ-
 खा॥ नाझणोनयेधनंजया॥ जियापरी॥ ११॥ काललादींचिलाहलें॥ नमोडेगांकाहीकिलें॥ काळें गोरपणधुतळें॥ फुटोनेपो॥ १२॥ के-
 लें काव्यकर्म तें सें॥ फळभोगावयाधरणें बैसे॥ नफेडितां झणजैसें॥ वोसंडीना॥ १३॥ कां कामनाहीनकारतां॥ अवसांत पडेपुंडु-
 ता॥ तारि वायकांडनजुझतां॥ लागेजैसें॥ १४॥ गुळनेणांतोडी॥ घातलादेचि गोडी॥ आगीमानूनिरावोडी॥ चोपलापोळी॥
 १५॥ काव्यकर्म हिं एक॥ सामर्थ्य आधीं साभाविक॥ झणोनिकोकोतुक॥ मुमुक्षू एथ॥ १६॥ किबहुनापाथीऐसें॥ जेकाम्यकमया
 असें॥ तें त्यजिजेविषजैसें॥ वोकूनियां॥ १७॥ मगतयात्यागांतंजगीं॥ मन्यासऐसयासिगीं॥ बोलिजेअंतरंगीं॥ सर्वदृष्टा॥ १८॥
 हें काव्यकर्म सांडणें॥ तें कामनेनेचिउपडणें॥ द्रव्यत्यागेंदवडणें॥ भयजैसें॥ १९॥ आणिसोमसूर्यग्रहणें॥ येडुनिकरवितीपाव-
 णें॥ कामातापितरमरणें॥ अर्कितजेदवस॥ ११०॥ अथवाअतिथीहनपावे॥ हेऐसें सेंपडेजेंकरावे॥ तें तें कर्मजाणावें॥ नैमित्ति-
 कगा॥ १११॥ वर्षियालोभोगगन॥ वसंतेंदुणावेवन॥ देहाशुगारीयोंवन॥ दशाजसी॥ ११२॥ कांसोमकांतसोमंपयळे॥ सूर्येंफांक-
 तीकमळें॥ एथअसतेंचिपल्लाळे॥ आनये॥ ११३॥ तें सैन्यजंकां कर्म॥ तें नैमित्तिकांचेलाहेनियम॥ एथउंचावेतेणोनम॥ नैमि-
 त्तिकहोये॥ ११४॥ आणिसायप्रातर्मध्यान्हें॥ जें कांकरणीयप्रतिदिनीं॥ परिदृष्टीजेंसिलोचनीं॥ अधिकनोहे॥ ११५॥ कांनपादि
 सांगती॥ चरणजेंसीआथी॥ नातरीतेदीप्ती॥ दीपबिंबी॥ ११६॥ वामनेंहतजैसें॥ चंदनीसौरभ्यअसे॥ अधिकाराचेंतें सें॥ रूप-
 चिजें॥ ११७॥ बिलकर्मऐसेंजनीं॥ पायाबोलिजेतेंमानी॥ एवंनियनैमित्तिकदोन्ही॥ दाविलिंज॥ ११८॥ हेंचिनित्यनैमित्तिकं॥
 पाठ॥ ओं॥ ८॥ प्राणी॥ १३०॥ करणेंतेंही॥ ओं॥ १७॥ सौगंध्य॥

॥ १३॥

॥ १४॥

॥ १५॥

अनुष्ठेय अवश्यक ॥ द्युणोनिह्युणोपाहतीएक ॥ वां झययते ॥ १९ ॥ परीमोजनीजिसें होये ॥ तृतीलापे भूक जाये ॥ तैसें नित्य
 ने भित्ति कीं आहे ॥ सर्वांगी फळ ॥ २० ॥ कीड आंगिठा पडे ॥ तारिमळ तुटवानी चढे ॥ ययाक मत्तया सागडे ॥ फळ जाणावे ॥ २१ ॥
 प्रत्यवाय तें वगळे ॥ स्वाधिकार बहु वंजळ ॥ तैथ हातौ फळीया भिळे ॥ सहतीसी ॥ २२ ॥ येवढे वरी टिमाळ ॥ नित्य नै भित्ति कीं आ
 हे फळ ॥ परितें त्या जिजे मूळ ॥ नक्षत्री जैसें ॥ २३ ॥ लता पिके आयवी ॥ तंव च्युत बांधे पालवी ॥ मग हात नलावत माधवी ॥ सोडु-
 नियाली ॥ २४ ॥ तैसी नोलाडितां कर्म रेवा ॥ चित्त दीजे नित्य नै भित्ति ॥ पाठी फळा कीजे अशेरवा ॥ वांता चि वानी ॥ २५ ॥ बयक
 म फळ त्यागातें ॥ त्याग ह्युणतें पै जाणतें ॥ एव त्याग सन्यास त्तें ॥ परिस्म विले ॥ २६ ॥ हा सन्यास जे संपवे ॥ तें काम्य बांधून पवे ॥ नि
 षिद्ध तंव स्वभावे ॥ न षिद्ध गेले ॥ २७ ॥ आणि नित्यादि कजे असे ॥ तें येणे फळ त्यागे नाश ॥ शिरलो ठिल्या जैसें ॥ येर आग २८
 मग सस्य फळ पाकांत ॥ तैसें निमालिया कर्म जात ॥ आत्म ज्ञान गंव भित्त ॥ अपेसे ये ॥ २९ ॥ ऐसिया निगुती दोनी ॥ त्याग सन्या
 स अनुष्ठेनी ॥ चढेला आत्म ज्ञानी ॥ बांधती पाट ॥ ३० ॥ नातरी हे निगुती चुके ॥ मग त्याग कीजे हात तुकें ॥ तें काही नित्य जे अधिकें
 ॥ गोवी चि पडे ॥ ३१ ॥ जें औषध व्याधी अनोळख ॥ तें पैताल्या परतें विरव ॥ को अभ्यनमानितां भूक ॥ नमारी काय ॥ ३२ ॥ ह्युणोनि
 त्याज्य जें नीहे ॥ तैथ त्यागातें नसू वावें ॥ त्याज्या लागीं नोहावें ॥ लोभ पर ॥ ३३ ॥ चुकलिया त्यागाचें वंझे ॥ केला सर्व त्याग ही होय वो
 झें ॥ नदेरवती सर्व दुजें ॥ वीतराग ते ॥ ३४ ॥ श्लो ॥ त्याज्य दोष वीट्ये के कर्म माहु मर्नीषिण ॥ यज्ञ दान तपः कर्म न त्याज्य भि
 ति चापरे ॥ ३५ ॥ टी ॥ एकां फळ त्याग नटां के ॥ तैकर्म तें द्युणती बांधके ॥ जैसें आपण नग्न भांडके ॥ जगा तें द्युण ॥ ३५ ॥ काजि द्वा
 ले पद रो गिया ॥ अबे दूधी धनंजया ॥ आंगानरु से कोटिया ॥ मासियां कोपे ॥ ३६ ॥ तैसें फळ काम दुर्बळ ॥ द्युणती कर्म चि किडाळ ॥
 पाठ ॥ ओं ॥ २२ हाता ॥ ओं ॥ ३० निरुते ॥ ओं ॥ ३४ बुझें ॥ ओं ॥ ३५ फला भिलाष नटके ॥ ॥ ध ॥

मगनिर्णयदेतीकेवळ॥ त्याजवेंऐसा॥ ३७॥ एकद्वणतीयागादिक॥ करावेंचअवश्यक॥ जयावांचूनिशोपक॥ आसनसै॥ ३८॥ मनश्रद्धाचामार्ग॥ जेंविजयीव्हावेंवेगी॥ तेंकर्मसबळा लागी॥ आळसमकीजे॥ ३९॥ भागारअथोशोधावें॥ तरीआगीजिबीनुबगावें॥ कांदर्पणालागीसांचावें॥ अधिकेंज॥ ४०॥ नानावस्तुंचोरवहोआवी॥ ऐमेंआयीजरीजीवी॥ तरीसौंदणोनमनवी॥ मलिनतें॥ ४१॥ तैसीकर्मकुशकारें॥ द्वणोननन्यावी॥ अहरे॥ काअन्मलासैअरुवारें॥ राधितियेउणें॥ ४२॥ इहांइहीगाशब्दी॥ एकीकर्मोबाधविजतीबुद्धी॥ ऐसात्यागविसंवादी॥ पडोनिठला॥ ४३॥ तरीविसंवादतोफटे॥ त्यागाचाभिन्वयसेटे॥ तैसंबोलीगोमटे॥ अवधानदेइया॥ ४४॥ श्लो०॥ भिन्वयशृणुमेतन्नत्यागोमरतसत्तम॥ त्योगोहपुरुषव्याघ्रविधिः संमकीर्तितः॥ ४५॥ तरीत्यागार्थेपांडवा॥ त्रिविधविधाहीबरवा॥ विसागकरू॥ ४५॥ त्यागानेतीनीप्रकार॥ कीजतीजरीगोचर॥ तरीसुंदत्यर्थाचेसार॥ इतुलेंजाणा॥ ४६॥ मजसर्वज्ञाचियेहीबुद्धी॥ जेंआलोढमानेत्रिभुद्धी॥ निश्चयतलवेंआधी॥ अवधारिणं॥ ४७॥ तरिआपुलीयेसोडवणें॥ जोमुमुक्षुजागोंद्वणें॥ तयासर्वस्वेंकरणें॥ हेंचिएक॥ ४८॥ श्लो०॥ यज्ञदानतपःकर्मनत्याज्यकार्यमेवतु॥ यज्ञोदानतपश्चैवपावनानिमनीषिणाम्॥ ५०॥ तरी०॥ जियेयज्ञदानतपादि०॥ इयेंकर्मअवश्यक॥ तियेनसाडावीपाथिकें॥ पाउलेंजैसी॥ ४९॥ हरपलनदेखजे॥ तंवतयाचामार्गनसाडजे॥ काढेसनहोतानलोदिजे॥ भाणेंजेवी॥ ५०॥ नावथडीनपवता॥ नसाडिजैकेढीनफळता॥ काढेविलेंनदिसता॥ दीपजैसा ५१॥ तैसीआत्मज्ञानविषईकी॥ जंवनिश्चितीनाहीनकी॥ तंयनोहावेंयागादिकी॥ उदासीन॥ ५२॥ तरिस्वाधिकारानुरूप॥ तियेयज्ञदानंतपें॥ अनुष्ठावीविसाक्षेपें॥ अधिकेंकरी॥ ५३॥ जेचालणेंवेग्नवतजाये॥ तेवेगवैसावयाचिहाये॥ तैसाकपाठ-ओं० २८-नाहीं॥ ओं० ४९जैसी० ओं० ४४परि० ओं० ४५० सांगों॥

मांतिशयोआहे॥ नैकम्यांलागी॥ ५४॥ अधिकेंजंजवओषधी॥ सेवनेंचिमाडबाधी॥ तंवतंवसूकिजेव्याधी॥ नया-
 चिये॥ ५५॥ तैमीकर्महातोपाती॥ ऐकीजतीयथा॥ निगुती॥ तैरजतमेझडती॥ झाडादेउनी॥ ५६॥ काशटोसतपुट्टे॥ की
 गाराखारदेणेंयरे॥ तैकीडझडकरीनुटे॥ निव्याजहाये॥ ५७॥ तैमीनष्टाकैलेंकर्म॥ तैमाडीकरा॥ निरजतसं॥ मगसत्सुत्थी
 चेंधाम॥ डोळादावी॥ ५८॥ द्यणो॥ नियाधनजया॥ सत्वशुद्धी॥ गंवसीतया॥ नीर्थाचियासावाया॥ आलिकेमी॥ ५९॥ तीथेबाह्य
 मळसाळे॥ कर्मअस्पतरउजळे॥ एवन्तीथिजाणनिमळे॥ सत्कर्मेची॥ ६०॥ तृषातमारुवाडदेशी॥ झळेंअमृतेंवोळजेसी
 ॥ कीअंथालागीडोळयासी॥ सूर्यआला॥ ६१॥ बुडतयानदीचिधाविब्ली॥ पडतयाह्यचि॥ कळवळी॥ निमतयासुत्युनेदि
 धली॥ आयुष्यरुदी॥ ६२॥ तैमीकर्मबाधता॥ मुमुक्षुमाडविलेपडुसता॥ जेसारसरीतीमरता॥ राखिलाविषे॥ ६३॥ तै-
 सीएकेहातवटिया॥ कर्मकिजेतीधनजया॥ बंपकैचिसाडवावया॥ मुखेंहोती॥ ६४॥ आतंतैचिहातवटी॥ तुजसांगो
 मटी॥ जयाकर्मतीकरीटी॥ कर्मचिरुसे॥ ६५॥ श्लो०॥ एतान्यपितुं कर्माणि मंगत्युक्ता फलानि च॥ कर्तव्यानीतिमैपार्थनि
 श्रितं भूतं भुक्तं मम॥ ६६॥ टी०॥ तैरिमहायोगप्रमुखे॥ कर्मनिफजताहीअचुके॥ कर्तपणाचेंनटाके॥ फुंजणेंआगी॥ ६६॥
 जोमोलेंतीर्थजाये॥ तयामीयावाकरितआहें॥ ऐसियाश्लाघ्यतेचानोहे॥ तोषजीर्वा॥ ६७॥ कांमुद्रासमर्थाचिया॥ जोए
 कवटझोंबेराया॥ तोमीजिणतौऐसिया॥ नयेचिगर्वा॥ ६८॥ जोकांसेलागोनितरे॥ तयापेहातीमीऐसीऊमीनुरे॥ पुरोहि
 तनाविक्करो॥ दातेपणें॥ ६९॥ तैसैंकहंतुअहंकरें॥ नेयो॥ नयथा॥ अवसरें॥ कृतजातंचेंमोहरे॥ सारीजती॥ ७०॥ केल्याक्या
 पांडवा॥ जोआर्थीफळाचायावा॥ तयामोहराहोनेदाबा॥ मनोरथ॥ ७१॥ आर्थीचिफळींआशातुटिया॥ कर्मैआरंभावीधनज-
 पाठ॥ ओ॥ ६१ कर्मकरं ब्रह्मता, ओ॥ ६८ जाणता ओ॥ ७० मोहारे, ओ॥ ७१ आणि केलिया कर्मि,

या॥ परावें बाळ धाय॥ पाहजे जें सें॥ ७३॥ पिंपरुवांचि आशा॥ नासिं पिजे पिंपळ जें स॥ तें सिया फळा निराशा॥ कीजती क
र्म॥ ७३॥ सांडी न दुधाची त कळी॥ गोंवारि गांव धेन्वू दळी॥ किंबहुना कर्म फळी॥ तें सें कीजि॥ ७४॥ ऐसी ह्म हात वदी॥ पेंडु-
निजे क्रिया उदी॥ आपण आपुलिया गादी॥ लाहे चिना॥ ७५॥ ह्मणी न फळी लाग॥ सांडी न देही संग॥ कर्म करी हा चंगा॥
निरोप साझा॥ ७६॥ जी जी वबंधी शिणला॥ सुट के जाचे आपला॥ तें पुत पुत तीया बोला॥ आनन कीजे॥ ७७॥ श्लो०॥ निय
त स्य तु स्यासः कर्मणो नोपपद्यते॥ मोह तभ्य परित्याग स्तामसः परिकीर्तितः॥ ७८॥ तया च कर्म सांडणें॥ तें ताम समी ह्मणें॥ शिसाचे निरागें लोटणें॥
गों वजती नवें॥ तें सा कर्म दूषें अशे रवें॥ कर्म चि सांडी॥ ७८॥ तया च कर्म सांडणें॥ तें ताम समी ह्मणें॥ शिसाचे निरागें लोटणें॥
शिरी च जें सें॥ ७९॥ हागा माग दुवा डहोये॥ तरी निस्तारिती ते पाये॥ कीं तें चि रवांडणें आहे॥ मागा पराधें॥ ८०॥ भुके लिया पुट
अन्न॥ हो का भल तें सें उघ्या॥ बुद्धी न घेता लंघन॥ भाणें पाप राहल्या॥ ८१॥ तें सा कर्म चा बाध कर्म॥ निस्तारिजे कारि ते निवर्स॥
हें ताम समी फ्रमे॥ साज विला॥ ८२॥ कीं स्वभावं आलें विष्मागा॥ तें कर्म चि वो सें डी पिंगा॥ तर झणें आत ला त्यागा॥ ताम सात
या॥ ८३॥ श्लो०॥ दुःख भित्ये वयत्कर्म काय क्लेश प्रयाज्यजेत्॥ सकृत्पाराज संत्यगं नैव त्याग फलं लभेत्॥ ८४॥ अथवा स्वा
धिकार बुझें॥ आपुलें विहत ही सझें॥ परिकारित या उबजे॥ निबर पणा॥ ८४॥ जे कर्म रंभाची ऐली कडा॥ नवे कारि से दुवाड॥
जे वाहात येवें जडा॥ शिरी जें सी॥ ८५॥ जें सा निंबि जे कडवट॥ हिरडा षहिले तुरट॥ तें सा कर्म ऐले से वट॥ रचणु वाळा
होये॥ ८६॥ का धेनु दुवाड शिगा॥ शें वनिये आडव आगा॥ भोजन सूरवम हागा॥ पाक करि तो॥ ८७॥ तें सें पुत पुत ती कर्म॥ आ
रंभी चि अति विषम॥ ह्मणी न ते ते चम॥ कारितां मानी॥ ८८॥ येन्ही विहत त्वें मादी॥ परि घालितां अस्तर बाडी॥ तथ पोळल रेखा
पाद-ओं-७८॥ अमिकें-ओं-७९॥ लावणें-ओं-८०॥ रां धितां रायि-
॥ ८१॥ ॥ ८२॥

संडी॥ आंदरिलेही॥ ८९॥ ह्यपोवस्तदेहासारिवी॥ आलीबहुतीमारग्यविशरवी॥ माजाचुकांकर्मादकी॥ पापियाजेसा॥ ९०॥
 केलेकर्मजिंघावें॥ तेंद्राणेंमजहोआवें॥ आजिभोगूनावरवें॥ हातिचेभोगा॥ ९१॥ ऐसाशरीराचियाकूशा॥ भेणेंकर्मवैरीशा॥ संडी॥
 तोपरियेसा॥ राजस त्यागा॥ ९२॥ येह्वतिंयहीकर्मसांडें॥ परितयात्यागफळनजोडे॥ जेसेउतलेआर्गातिपडे॥ तेनलगोचिहोसा॥
 ९३॥ कांबुडोनिद्राणगेले॥ तेअर्थोदकींनिमाले॥ हेंद्राणोंनयेजाहाले॥ दुर्मरणाचि॥ ९४॥ तेंमेंदेहाचेनिलोभें॥ जेणंकर्मापापिसुमे
 ॥ तेंणेंसान्चानलसे॥ त्यागाचेंफळ॥ ९५॥ किंबहुनाआपुलें॥ तेंणेंज्ञानहोयउदयाआलें॥ तेंणेंनक्षत्रातेंपाहाले॥ गिळीजेसें॥ ९६॥ ते
 शासकारणक्रिया॥ हारपतीधनंजया॥ तोकर्मत्यागंजया॥ मोक्षफळेसी॥ ९७॥ तेंमोक्षफळअज्ञाना॥ त्यागियानाहींअर्जुना
 ॥ ह्यणोंनितो त्यागनव्हेमाना॥ राजसते॥ ९८॥ तरिकोणेपांएद्यत्यागें॥ तेंमोक्षफळपरिघे॥ हेंहीआइकप्रसंगें॥ बोलिलेला॥ ९९॥
 श्लो०॥ कार्यमित्येवयत्कर्मनियतंक्रियतेर्जुन॥ संगत्यत्काफलंचैव सत्यागः सात्त्विकोमतः॥ १०॥ टी०॥ तारिस्वाधिकाचारचिनिनावें॥
 जेंवांटियाआलेंस्वभावं॥ तेंआचरेविधिगोरवें॥ शृंगारोनि॥ २००॥ परिहर्मेकरितअसें॥ ऐसाआठवत्यजीमानसें॥ तेंसेंचियाणीदेआवें
 ॥ फळाचिये॥ ११॥ पेंअवज्ञाआणिकामना॥ मातेचाठायींअर्जुना॥ केलियादोनीपतना॥ काणहोती॥ २१॥ तारिदोनीयेंत्यजवी॥ म-
 गंधानाचिनेभजवी॥ वांचूनिमुखलागोंबळवी॥ गायचिसगळी॥ ३॥ आवडतियेहीफळीं॥ असारेसालीआठोळी॥ त्यासाठो
 अवगळी॥ फळातेंकोणही॥ ४॥ तेंसाकर्तृत्वाचासद॥ आणिकर्मफळाचाअस्वाद॥ दोहीचीनभेंबंध॥ कर्मचिकीं॥ ५॥ तारिबादो
 हींचाविधी॥ जैसाबापनातलेलेंकीं॥ तेंसाहानशकेदुःखीं॥ विहितक्रिया॥ ६॥ हातो त्यागतुरुवर॥ जोगामोक्षफळेंयेथोर॥ सावि
 करेसाडगर॥ यथासिजगीं॥ ७॥ आतांजाळनिबीजजेंसें॥ झाडाळीजेनिर्वेश॥ फळत्यागूनैकर्मतेंसें॥ त्यजिलेंजेणें॥ ८॥ लोहो
 पाठ-ओं-२ हेतु-ओं-८ त्यजुनि-ओं-९ तया-

॥ ३१ ॥

॥ ३१ ॥

॥ ३१ ॥

लागतखें वोपरिसीं ॥ धातूचीं गंधिकाळि माजैसी ॥ जाती रजनमें तैसीं ॥ तुटलीं दोन्हीं ॥ ९॥ भगसत्वेचो खाळें ॥ उघडनी आत्मबो
 धाचे डोळे ॥ तेथ मुगां बुसों जवेळें ॥ होय जैसें ॥ १०॥ तैसा बुध्यादिकां पुढें ॥ असतचि विश्वाभास येव्हटा ॥ तो न देखे कवणी कडां ॥ आ
 काशजैसें ॥ ११॥ श्लो ० ॥ नदेंद्रु कुशलं कर्म कुशले ननुषज्जते ॥ त्यागी सत्समाविशे धर्मावी छिन्नसंशयः ॥ १०॥ टी ० ॥ आपि
 प्राचीनाचे निबळें ॥ आलीं कृत्य कुशला कुशले ॥ तियें व्यासा आंगीं आभाळें ॥ विरालीं जैसीं ॥ १२॥ तैसीतयाच्ये हिटी ॥ कर्मचो
 खाळीं किरीटी ॥ झणोनि सुरवदुःखीं उटी ॥ पडेनाजो ॥ १३॥ तें पेश कर्मजाणावें ॥ भगते हें कुरावें ॥ कां अश्रुमालागीं -
 व्हावें ॥ दोषयान्ता ॥ १४॥ तरि दया विषयींचा काहीं ॥ तथा एक हीं मंदेहनाहीं ॥ जेमास्वभाचाटायीं ॥ जागिन्मलीया ॥ १५॥ ह्य
 पाउं न कर्म आपाकता ॥ या हें तपावाची वार्ता ॥ नेणे तो पंडुसुता ॥ सात्विकन्याग ॥ १६॥ ऐसीं न कर्म पार्थो ॥ त्यजिलीं त्यजितो
 सर्वथा ॥ अधिकें वाधती अन्यथा ॥ मांडिलीं तरी ॥ १७॥ श्लो ० ॥ नहि देहभूता शक्य न्यक्तुं कर्मोपयशेषत्वा ॥ यस्तु कर्मफलत्यागी
 सत्यागीत्यभिधीयते ॥ ११॥ टी ० ॥ आपि हांगा सव्यसाची ॥ मूर्तीनाही निदेहनाची ॥ खनिं कर्ति कर्मोची ॥ तें गांव देना ॥ १८॥
 मुनि केचावीर ॥ घेउनि काय करील घट ॥ केउतें तं नूपट ॥ मांडील तो ॥ १९॥ तेवीं चि वन्हिल आंगीं ॥ उवे उबागणें आगी ॥ कीं तो दीप
 यम लागीं ॥ दोष करील काई ॥ २०॥ हिं गचासला घाणी ॥ तरी केंचें सुगंधन्य आणी ॥ द्रवमांडुनि पाणी ॥ गंगहेतें ॥ २१॥ तैसाश
 रीगचे निभाभास ॥ नांदत जंव असें ॥ तंव कर्म त्यागाचीं पिसें ॥ काटूं मंतरी ॥ २२॥ जायत्यां जालें ॥ २३॥ तैसां नपुसाय अवलोका
 ॥ मायाली फेडी निडळा ॥ कांकरू येगा ॥ २४॥ तैसां मिहित स्वयें आदरिजे ॥ झणोनि न्यज्ये न्यजिजे ॥ पर कर्म चंदेह आतले ॥ तें का
 मांडीलगा ॥ २५॥ जेम्बा सौशवासुक्मी ॥ होत निजेली याही वरी ॥ कांही न करणे याचि पंगी ॥ होत निजयाची ॥ २६॥ याशरीगचे भि
 पाट ॥ ओ ॥ १२॥ झणोनि, अलंकृतं.

॥ १३ ॥

॥ १४ ॥

॥ १५ ॥

मितं॥ कर्मचलागले असिके॥ जितं मे लयान ठोके॥ इयारिती॥ २६॥ ययाकर्म तं सोऽर्तापरा॥ तर्को च तं अवधारी॥ जकारिता जाइ
 जहारी॥ फळां शोचिये॥ २७॥ कर्म फळाई वरी अपे॥ तत्समादे बोध उद्दिपे॥ तेथ गच्छू न्याते जोगे॥ न्याळ शांका॥ २८॥ तेणे आत्म बोधि
 तेसे॥ अविवेशां कर्म नाशे॥ पार्थात्यज जे ऐसे॥ ते त्याजिले होये॥ २९॥ ह्यणो न इया परीजगी॥ कर्म त्या जीतो महा त्यागी॥ ये
 रसूखने नावरी॥ विभ्यंती जैसी॥ ३०॥ ते साकर्म शिणे एकें॥ तो विसावो पाहे आणिकें॥ दांडयाचे पाय बुकी॥ धाडणें जैसे॥
 ३१॥ परिहें असो पुढती॥ तो च त्यागी भजगती॥ जेणें फळ त्यागें निष्कृती॥ नेले कर्म॥ ३२॥ ये नृवीतरी धनंजया॥ त्रिविधा कर्म
 फळागायया॥ समया तें कीं भोगावया॥ जे न सां इतीची आशा॥ ३३॥ आपणाचि विडुनि दुहता॥ कीं न मम ह्यणो पता॥ तो सुटे
 कीं प्रतिग्रहिता॥ जायद शिरके॥ ३४॥ विषाचे आगर ही वाहती॥ तो विकितां सरले जती॥ येर निमाले जे पती॥ वेचो निमोले॥
 ३५॥ ते सें कर्ता कर्म करू॥ अकर्ता फळा शान्धरू॥ एथ नशे के आवरू॥ दोही तें कर्म॥ ३६॥ वाढे पिकाल्या रुखाचे॥ फळ अपे
 क्षीतयाचें॥ ते विसाधारण कर्मचें॥ फळ घनया॥ ३७॥ परिकरू नि फळ न घे॥ तो जगाचा कामीं नरिये॥ जें त्रिविध जग आयवें
 ॥ कर्म फळ हें॥ ३८॥ देव मनुष्य स्थावर॥ ययाना वजगंडंबर॥ आणि हे तं तर्ता न्हो प्रकार॥ कर्म फळाचें॥ ३९॥ ते च एक गा
 अनिष्ट॥ एक तें के वळ इष्ट॥ आण एक इष्टा निष्ट॥ त्रिविध ऐसे॥ ४०॥ श्लो०॥ अनिष्टां भ्रष्टां मिश्रं च त्रिविधं कर्मणः फलम्॥ स
 वत्सत्यागिनां प्रेत्य ननु सन्यासिनां क्वचित्॥ १२॥ टी०॥ परिगषय मंता बुद्धी॥ आंगीसूनि अविधी॥ घवर्तते जे निषिद्धे॥
 कुन्यापारी॥ ४१॥ तेथ कर्म कीटलोष्ट॥ हें देह लाहती न कष्ट॥ तयाना मते अनिष्ट॥ कर्म फळ॥ ४२॥ कां स्वधर्मा मान देता॥
 स्वाधिकार पुढां सुता॥ स्मृकत कीं जे पुमता॥ आत्मा याते॥ ४३॥ ते द्रादि क देवाची॥ देह लाहि जती सव्यसाची॥ तया कर्म
 पाठ॥ ओं॥ २६ ठके॥ ओं॥ २७ कजाइजे॥ ओं॥ २७ बोधतेथें॥ ओं॥ ३१ तरि, वी, फळें॥

फळाश्च ॥ प्रसिद्धीगा ॥ ४४ ॥ आपिगोडआंबटमिळे ॥ तैथरसांतरफळरसळें ॥ उढोदोहीवेगळें ॥ दोहीजणतें ॥ ४५ ॥
 रेचकविद्योगवशें ॥ होयस्तंप्रावयोद्वेशें ॥ तैविसत्यासत्यसमसमें ॥ सैत्यासत्यैचिजिजने ॥ ४६ ॥ ह्यणोभिसमभगंशुभा-
 शुमें ॥ भिळोनिअनुष्ठानचेंउमें ॥ तैणमनुष्यत्वलाभें ॥ तैमिअफळ ॥ ४७ ॥ तैसैंत्रिविधयाभागी ॥ कर्मफळमांडिलेंसजगीं
 ॥ हंनसांडितयांभोगीं ॥ जेसूदलेआशा ॥ ४८ ॥ जेशजिक्चेचाहानफांटे ॥ तंतजेवितांवाटेंगोभटे ॥ मोगपरिणामीशेवटे ॥ अव-
 श्यमरण ॥ ४९ ॥ संवचोरैमैचीचांगा ॥ जवनपविजेनेदांग ॥ सामान्यामलीआंग ॥ नभिवेतवां ॥ ५० ॥ तैमीकर्मकारितांशरी-
 शीं ॥ लाहनीमहत्वाचीफरारी ॥ पाटींनिधनीएकसरी ॥ पावतीफळें ॥ ५१ ॥ जैमासमर्थभांगअणिआ ॥ मागोंआलाबाइणि
 या ॥ नलोतैसैसाध्याणियां ॥ पडेतांभोगा ॥ ५२ ॥ मगकणसौनिकणझडो ॥ तोंवरुतलाकाणसाचटे ॥ जोपुढतीभृमीपडे ॥ पुढती
 ठढी ॥ ५३ ॥ तैसैंभोगीजेंफळहोयो ॥ तेंफळांतरेवीतजाये ॥ चालतांपायेंपायें ॥ जिजिजेंजेंमा ॥ ५४ ॥ उताराचियेसांगडी ॥
 दाकेतेलीचयडी ॥ तोंवनभूकीजतीवोढी ॥ भोग्याचिये ॥ ५५ ॥ पैसाअसाधनप्रकारें ॥ रुळभोगतांपसरे ॥ एवंगोविलेसं
 सारें ॥ अत्यागीते ॥ ५६ ॥ येरवीजानीपुष्पाचेंवैकर्मणै ॥ त्याचिनामजेंसंभुकोणें ॥ तेंसंकर्मांभिवेनक्रणें ॥ केलेंजिही ॥ ५७ ॥
 बीजचिवरोशिचेच ॥ तैथवाढनीकुळवाडीरबांचे ॥ तेंविफळन्यागेंकमाचें ॥ मारिलेंकाम ॥ ५८ ॥ तैमान्यश्रीसाहाकारें ॥ गुरु
 रुपाभूततुषारें ॥ सासिभलेनिवांसरे ॥ हूतेंदेन्या ॥ ५९ ॥ तैव्हाजगदाभासमिथ ॥ स्फुगतांअशिथफळनाश ॥ एथामोक्ताभो
 ग्यआपेंसोनिमालेंहें ॥ ६० ॥ घडेजानप्रधानेरेमा ॥ मन्यामजयांविगेशा ॥ तेंचफळभोगसोसा ॥ मूकलेगा ॥ ६१ ॥ आ-
 णियणेंकीरसन्यासें ॥ जेंआत्मरूपीहृष्टीपेंसे ॥ तेंकर्मएकसें ॥ हेरवणेंआहे ॥ ६२ ॥ गडोनिगेअयाभिमंती ॥ चित्रांचीकेव
 षार ॥ ओं ॥ ४६ ॥ सत्यचि ॥ ओं ॥ ४९ ॥ गमे, परि ॥ ओं ॥ ५७ ॥ साकणें ॥

कहोयमांती॥ कोपाहालैयारती॥ आधारंउरे ॥ ६३॥ जैरूपचीनाहीउसें॥ तैछाय्याकान्याचशोभा॥ दपणेवणाविबो॥ वदनकेपा॥ ६४॥ फिरलियानिद्रेचाढावा॥ कैचास्वभासिमस्ताव॥ मगसैन्यकीतेयाव॥ कोपाद्वयो॥ ६५॥ मेल्लेपाज्यामेंसेमें॥ तैवअवशेषीनि
नाहीज्यो॥ मातियेचंकार्यकोपो॥ घेपेदोपि॥ ६६॥ द्यणोनिमन्यासीइयेपही॥ कर्मगौढीकैजेलकाई॥ परिअविद्याआपुलादेही॥
आहेजैको॥ ६७॥ जैकैतेपणाचेनथावे॥ आत्माशहसशस्मीधावे॥ दृष्टिसेदाचियेगाणवे॥ रचलीसेजै॥ ६८॥ तैतरोगास्त्वर्मा॥ बीजा
वळिआत्मायाकर्म॥ अपाण्डजैभीपञ्चिमा॥ पूर्वसिको॥ ६९॥ नातरिआकाशाकाआभाळा॥ सूर्याआणिभृगजळा॥ किवाविळि
भूतळा॥ वायूसिजैसी॥ ७०॥ पाघरोनिनईचेंउदक॥ असेनईमाजिखडक॥ परिजाणिजेकावेगाळिक॥ कोइचीते॥ ७१॥ होकाउद
काजवळी॥ परिसिनीबितेबाबुळी॥ कायसंगास्तवकाजळी॥ दीपद्वयोयें॥ ७२॥ जरीचंद्रजालाकलंक॥ तरिचंद्रसीनव्हेएक॥ आ
हेदृष्टीडोळयांविवेक॥ अपाडयेतुळा॥ ७३॥ नानावाटावटेजातया॥ बोयावोर्धापाहतया॥ आरसाआरसांपाहतया॥ अपाडजेतु
ली॥ ७४॥ पार्थोगातेतुलेनिमानें॥ आसोभसीकर्मसिनें॥ परिघर्वावजेअज्ञानें॥ तैकीरसें॥ ७५॥ विकाशेंरवीतेंउपजवी॥ दु
तीअलीकरवींभोगवी॥ तैसरोवरीकांबरवी॥ अजिणीजैसी॥ ७६॥ पुढतीकांअत्मक्रिया॥ अन्यकारणकीधनंजया॥ करूपा
चांहीतया॥ कारणरूपा॥ ७७॥ श्लो०॥ पंचैतानिमहाबाहोकारणानिबोधये॥ सांन्येकृतोतेप्रोक्तानिसिद्धयेसर्वकर्मणा
मु॥ १३॥ टी०॥ आणिपांचहीकारणोंतियें॥ दंहीजाणसीलविपायें॥ जेशास्त्रउभऊनिबाहे॥ बोलतीजयातें॥ ७८॥ वेदशया
चियाराजधानी॥ सांख्यवेदान्ताचामुवनी॥ निरूपणाचानिशाणध्वनी॥ गर्जतीजियें॥ ७९॥ जैसर्वकर्मोसिद्धीलागीं॥ इयेचि
मुदलेंहोजगीं॥ तैथनसुखावाअप्सगीं॥ आत्मारज॥ ८०॥ इयाबोलाचीडांगुरदी॥ तियेयसिद्धीआलींकिरीदी॥ ह्यणोंनिनुव्वा
पाठ॥ ओ०॥ ६५ साच॥ ओ०॥ ६६ दिजेकर्म॥ ओ०॥ ६७ सातु॥ ओ०॥ ७९ पुढतुहती॥ ॥ ७१॥

हनकणपुदी॥ वसोकांजें॥ ८१॥ आपि सुखांतरि आइकीजे॥ तैसें कायसें हे आइ॥ प्रींचितामणी रत्न तुझे॥ असतां हातीं॥ ८२॥
 दणपुढां माडलेया॥ कालोकांचिया डोळयां॥ मानद्यावापाहावया॥ आपुले निकें॥ ८३॥ भक्तजैसें भजे थापहे॥ तेथ ते तें चिह्ना
 जाये॥ तो मी तुझे जाहालों आहे॥ रेळणें आजी॥ ८४॥ तैसें हें प्रीतिचे निवेगे॥ देवबोलनां सेनेचे॥ तव आनदा मजी आगे॥
 विरत पथ॥ ८५॥ चांदिण्याचा पाडिभर॥ हातीं सोमकां ताचा डोंगरा॥ विघरोनि मरोवर॥ हां पाहे जैसा॥ ८६॥ तैसें सुख आ
 षि अनुभूती॥ या सावांची सोडुनि भिंती॥ आंतलें अर्जुनाकृती॥ करुनि जेथ॥ ८७॥ तेथ समर्थ ह्यणो निदेवा॥ अवकाश ला
 हा ला आठवा॥ मग बुडत्याचा धांवा॥ जीवें केला॥ ८८॥ अर्जुना येसणें धेंवें॥ प्रज्ञापये मी बुडें॥ आलें भरतें एवढें॥ तें सावरू
 नि॥ ८९॥ देव ह्यणो हा गा पार्थ॥ हें आपणें पेंदर वसवीथा॥ तंव मीं वरुनि येरें माथा॥ नुकीयेला॥ ९०॥ ह्यणो जाणसी दातारा॥ मी तुज
 सीव्यक्त शो जारा॥ उबगला आदि एका हारा॥ येवो पाहे॥ ९१॥ तया ही हाणेसा॥ लोभें तमा जरी लालसा॥ नरिकां जी धालीतसा॥
 आड आड जीवा॥ ९२॥ तेथ श्री कृष्ण ह्यणतीं निकें॥ अद्यापि नाहीं माठाउकें॥ वेदुयाच द्राभाणिचिं द्रुके॥ नमिलणें आहे॥ ९३॥
 आणि हा ही बोलों निभावो॥ तुज दाडोनि आह्मी भिवों॥ जेरुसता बांधेयावो॥ तें प्रमगां हें॥ ९४॥ एथ एक मेकांचिये रवुणो॥ विस
 वादत वर्जिणें॥ ह्यणो निअसं हें बालणें॥ इथे विषयीचा॥ ९५॥ मागें मकें तें भानो॥ बोलत हातों पदमना॥ मर्न करुं किं न्यना॥ आर्जो मसी॥ ९६॥
 तंव अर्जुन ह्यणें देवें॥ माझिये मनीचें चित्त सावे॥ मस्ता विलें बरवें॥ प्रमेयुंती जी॥ ९७॥ जें सकळ कर्मांचें बीज॥ कारण पंचकृतु
 ज॥ सांगन ऐसी पैंज॥ घनलीकां॥ ९८॥ आणि आत्मयाण्य काही॥ सर्वया लागन ही॥ हें पुढारलासितें देई॥ लाहाणें साझी॥
 ९९॥ यथाबोला विश्वेशो॥ ह्यणितलें तो बंधु वसे॥ इथे विषयी धरणें बेसे॥ तैसें कें जेडे॥ १००॥ तर अर्जुना निरुपजेला॥ तेथि
 पाठ॥ ओं ८२ चिदल॥ ओं ८६ जालिया॥ ओं ८९ काडुनि पुरती॥ ओं ९० श्यामो नि अ १०५ मया ॥ ११॥

कीरभाषेंआंतुल॥परिसेचयेहोइजेले॥अणियातुज॥१॥तंवअर्जुनस्वगद्वेचा॥काहेनिमगलमगीलभाबो॥इयेगोंठोरकी
 राखतआहो॥मीतूपणजो॥२॥एथश्रीकृष्णस्वपणतीहोका॥आताअवधानाचारराजिन्ता॥करुनियोआइका॥पुढार-
 लेते॥३॥तरिसेत्यचिगाधनुर्धरा॥सर्वकर्मोचाउभारा॥होतसेबाहोरबाहारा॥करणीपिंचि॥४॥आणिपंचकारणदळवाड॥-
 जिहीकर्मकारमांडे॥तेंहेतुस्तवयडे॥पांचअर्थी॥५॥येरआत्मतत्वउदासीन॥तेंमाहेतुनाउपादल॥नातेअंगोंकरिसंवाहन॥
 कर्मसिद्धिचि॥६॥नेथशभाशर्मांअंशी॥निफजतीकर्मैसी॥रातेवेवांआकाशी॥जियापरी॥७॥तोपतेजधूम॥यथावा
 यूसीसंगम॥जालियाहोयअभ्यागम॥व्योसतेंनेणो॥८॥मानांकाष्टीनावामळे॥तेनावाडनिचळे॥चालिविजेअनिळे॥उद
 कतेंसाक्षी॥९॥कांकवणेएकेपिडे॥वेंचितांअवतरेंभांडे॥भगवंतडीजेंदंड॥तेंभ्रमेचक्र॥१०॥आणिकर्तृत्वकुलालाचें॥तेथ
 कायतेंएथीयेचें॥आधारावांचूनिवेचें॥विचारीपां॥११॥हेहोअसोत्तोकोचिया॥राहादीहांतांआयविया॥कोणकामसवि
 तया॥आंगाआले॥१२॥तैसेंपांचहेतुमिळणी॥पांचेंचइहीकारणी॥कीजेकर्मलतांचीलावणी॥आत्मासिना॥१३॥आ
 तांचियेवेगळीं॥पांचहीविवंचुंगाभली॥तुकोनिघेतली॥मोतियेजेसी॥१४॥श्लो०॥अधिष्ठानंतथाकर्ताकारणचप्र
 क्षयधम्मा॥विविधानएथकृशेदवेंचैवाचपचमसु॥१४॥टी०॥तेंसीयथाक्षणे॥आइकेंपांचैकारणे॥तारेदहेहमीक्षणे
 ॥परिहलेंएथ॥१५॥ययातेंअधिष्ठानऐसे॥स्वणिजेतयाचिउद्देशी॥जेंसंभोगेयेंसीधसे॥सोत्ताएथ॥१६॥इंद्रियाचादोहो
 ती॥जाचोनिदेवोराती॥सरस्वतुःखेंयकृती॥जोडीजतीजियें॥१७॥तियेंभोगावयापुरुषा॥आनठावोचिनाहींदेखा॥स्वर्णा
 निअधिष्ठानभाषा॥बोलिजेदेह॥१८॥हेचोविसांहीतत्वांचें॥कुटुंबधर्मवस्तीचें॥तुरेबंधभाक्षाचें॥गुंथाईएथ॥१९॥किंबहुनअव
 पाठ॥ओं॥४॥साच॥ओं॥५॥कर्म॥ओं॥११॥गुंतले॥ ॥७॥

स्याच्चयां॥ हंअधिष्ठानधनंजया॥ द्यपणेनिदेहायया॥ होचनमा॥ २०॥ अणिकर्तहेतुजे॥ कर्मचेंकारणजाणिजे॥ प्रतिबि-
 बद्धानिजे॥ चैतन्याचेंजे॥ २१॥ आकाशचिद्यवर्षनीर॥ तैतळवटीबांधेनाडर॥ मगाबिबोनितदाकार॥ होयजेवीं॥ २२॥ कांनि
 द्रापरेंबहुवें॥ रायारायपणठाठवेंनळे॥ मगास्वमींचयेसामावे॥ रंकपणी॥ २३॥ तैसेआपुलेनिविसरें॥ चैतन्याचिदेहा
 करे॥ आत्मासोनिआविकरे॥ देहपणेजे॥ २४॥ जयाविचाराचादेशी॥ प्रसिद्धीगजीवऐसी॥ जेणेंभाषकेढीदेहेंसी॥ आ-
 घवाविषयी॥ २५॥ प्रकृतीकरीकर्म॥ तैस्याकेलेंद्वयपेभ्रमे॥ एथकर्तयेणेंनामें॥ बोलिजेजीव॥ २६॥ मगपांतयाचाकेशी॥ ए-
 क्रीउठीदुठीजैसी॥ मोकळीचचरीऐसी॥ चरीवंगमे॥ २७॥ कांधराअंतुलक॥ दीपाचाअवलोक॥ गवाक्षभेदेंअनेक॥
 आवडेजेवीं॥ २८॥ काएकचिपुरुषजैसा॥ अनुसरतनवरसा॥ नवविधपेसा॥ आवडोलागो॥ २९॥ तेंविबुद्धीचेंएकजाणणे॥
 श्रीवादिसेहेजेणें॥ बाहेरिश्रद्वयपणें॥ कांकेजेका॥ ३०॥ तेंष्टयविधकरणा॥ कर्मचेंइयाकारण॥ तिसरेंगाजाण॥ नृपनंदना॥
 ३१॥ आणिपूर्वपश्चिमवाहणी॥ निशालियावोपाचियामिळणी॥ होयनदीनदपणी॥ कचिजेवीं॥ ३२॥ तैसीक्रियाशक्तिप-
 वनी॥ असेजेअनपाथिनी॥ तेंपडिलीनानास्थानी॥ नानाहोये॥ ३३॥ जेंवाचेकरीयेणें॥ तैतेचिहोयबोलणें॥ हाताआ-
 लीनरीपेणें॥ देणेंहोये॥ ३४॥ अगाचरणाचाठायीं॥ तरिगतीतैचियाही॥ अधोद्वारीदेही॥ स्मरणेंतैचि॥ ३५॥ स्मरणेंनन्द-
 यवरी॥ पणवाचिउजरी॥ करितांतैचिशरीरीं॥ प्राणद्वयिजे॥ ३६॥ मगउंधींनियारिगांमिगा॥ पुढतीतैचिशक्तिपेगा॥ उ-
 दानेरेसियालिगा॥ पात्रजाहाली॥ ३७॥ अधोरंधाचेनिवाहें॥ अगनहेंनामलादे॥ व्यापकपणेंहोये॥ व्यानतैचि॥ ३८॥
 आरोगिलेनिरसें॥ शरीरसरिसरिसे॥ आणिनसांडितांअसे॥ सर्वसंधी॥ ३९॥ तैसयाइयाराहटी॥ मगतेचिक्रियापाठी-
 पाठ-ओं-२३-आपणपे-ओं-३७रिमि-

॥ ३९ ॥

॥ ३९ ॥

॥ ३९ ॥

॥समानऐसीकीरटी॥बोलिजेगा॥४०॥आणिजांभईशंकुदेकर॥ऐसेसाहोतसेव्यापार॥नागकूमककर॥इत्यादिहोय॥४१॥
 एवंपायूचीहेचेंछा॥एकीपरिरुभेटभा॥वर्तनास्तबपालटा॥येतसेजे॥४२॥तेचुनिसेदुनीपणें॥वायुशस्त्रीगाताये॥कर्मकारण-
 चोये॥ऐसेजाणा॥४३॥आणिअतुवरकाशरद॥शरदीपुदतीचांद॥आणिचंद्राजैसासंबंध॥पुणिमेचा॥४४॥कांबसंती-
 बरेवाअरसा॥आरसीप्रियसंगसा॥सगसीआगसा॥उपचाराचा॥४५॥नानाकमकांपडवा॥विकाशजैसाबरवा॥विकाशीहीयावा-
 परागाचातो॥४६॥वांचेबरवेंकवित्वा॥कवित्वांवरवेंसिकत्वा॥शमिकतीपरतत्वा॥स्पर्शजैसा॥४७॥तैसीसर्ववृत्तीवैसवी॥बुद्धि-
 चिएकलीबरवी॥बुद्धीहीबरवनवी॥इंद्रियभोटी॥४८॥इंद्रियभोटीमंडळा॥शृंगारएकचिनिर्मळा॥जैअधिष्ठात्रिया-
 कांमेळा॥देवमाचजा॥४९॥ह्मणूनिचक्रादिकोदाहे॥इंद्रियपटोस्वानुग्रहे॥सूर्यादिकांकोआहे॥सुराचेवृद्ध॥५०॥तैदेववृद्ध-
 बरवें॥कर्मकारणपांचवें॥अजुनाथजाणावें॥देवह्मणो॥५१॥एवंमानेनुग्रियेआयणी॥तैसीकर्मजातांचीहरवाणी॥पंचवि-
 धआकर्णी॥निरूपिली॥५२॥आतांहेचिरवाणविढे॥मगकर्मोचीसुष्टीघडे॥जिहीतेंहेतुहीउघडे॥तैदाखउपचैही॥५३॥
 ॥श्लो०॥शरीरवाडु॥मनोभिर्यत्कर्मभारभतेनरः॥न्याय्यवाविपरीतंवापंचेतैतस्यहेतवः॥१५॥टी०॥तैरिअवसांतआली-
 माधवी॥तैहेतुहोयेनपल्लवी॥पल्लवपुष्पजदाबी॥पुष्पफळाते॥५४॥कांवाधियेआणिजमेया॥स्वयंशुप्रिसंग॥वृष्टीस्त्व-
 भोगा॥सस्यसुरवचा॥५५॥नातरीप्राचीअरुणातैविये॥अरुणेंसूर्योदयहोये॥सूर्येसगळापाहे॥दिवसजैसा॥५६॥तैसं-
 मनहेतुपांडवा॥होयकर्मसंकल्पभावा॥तोसंकल्पलावीर्दवा॥वांचेचागा॥५७॥मगवांचेचातोदवटा॥दावीकृत्यजाता-
 चियावादा॥तेव्हांकर्तारिगेकामठां॥कर्तृत्वाचा॥५८॥तैथशरीरादिकदकवाडें॥शरीरादिकांहेतुचिघडे॥लोहकामलो-
 पाठ॥नाही॥

॥३५॥

॥३॥

॥३॥

खंडे॥निर्वाळिजेसै॥५१॥कांतांशुवाचाताणा॥तांधुघालितांवैरणा॥तेतंतूचिचिंचक्षणा॥होयपद॥६०॥तैसेंमनवाचा
 देहाचें॥कर्ममनादिहेतुचिस्व॥रत्नीघडेरत्नाचें॥दळवाडेंजेवी॥६१॥एथशरीरादिकेंकारणें॥तेचिहेतुकेवीहेकोणें॥अ
 पेक्षिजेतेरितणें॥अवधार्जो॥६२॥आइकासूर्याचियाप्रकाशा॥हेतुकारणसूर्यचिजेसा॥काउसाचेकाडुसा॥वाढहेतु
 ॥६३॥नानावर्ततांवांनावी॥तेंवाचाचि लागेकामवावी॥कावेदांवेदचिबोलावी॥प्रतिष्ठाजेवी॥६४॥तैसेंकर्मशरीरादिकें
 ॥कारणहेकीरठाउकें॥परहेचिहेतुनचुके॥हेंहीएथ॥६५॥आणिदेहादिकींकारणें॥देहादिहेतुभिळणी॥होयजयाउसा
 रंगी॥कर्मजातो॥६६॥हेंशास्त्रार्थमानिलेया॥मार्गाअनुसरेधनजया॥तरिन्यायतो न्याया॥हेतुहोये॥६७॥जेसाप-
 र्जन्योदकानालोट॥विषयेंधरीसाळीचापाठ॥तोंजरेपरिअचाट॥उपयोगआधी॥६८॥कारोषमिघालेअवचदे॥पाडले
 द्वारकेचियेवाटे॥तेंशिणेपरिरुखाटें॥नवचतीपदे॥६९॥तैसेंहेतुकारणमेळें॥उठीकर्मजेंआंधळें॥तेंशास्त्राचेलाहेडाळे॥तें
 न्यायस्त्राणें॥७०॥नादूधवादितांठावोनपावें॥तंवउतोमिजायस्वभावं॥तोहीवेचपरि नव्हे॥बोचलेंतें॥७१॥तैसेंशास्त्र
 साहायेचीण॥केलेंनोहेजरीअकारण॥तरलागोकांनागवण॥दानलेखी॥७२॥अगाबावनवर्णापरता॥क्रोणमंत्रआहे
 पंडुसुता॥कांबावन्महीनुच्चारिता॥जीवअर्थी॥७३॥परिमंत्राचीकुंडमणी॥जवनेणिजेकोटपणी॥तंवउच्चारफळावा
 णी॥नपवेजेवी॥७४॥तोंविकारणहेतुयोगें॥जेंबिसाटकर्मनगें॥तेंशास्त्राचियेनलगे॥कांसेजंव॥७५॥कर्महोत-
 चिअसेतेव्हाही॥परितेंहोणेनव्हेपाही॥तोअन्यायाअन्यायी॥हेतुहोये॥७६॥श्लो०॥तवैवंसतिकर्तारमात्मान
 केवलंतुयः॥पश्यत्यकृतबुद्धित्वाभ्यसपश्यतिदुर्मतिः॥१६॥टी०॥एवंपंचकारणाकर्म॥पांचहीहेतुहेसुमहिमा॥
 पाठ- ओ०-६३ इक्षु-ओ०-६८ जरी-ओ०-७१ पवे-

॥६॥

॥६॥

॥६॥

आतांथेपाहंआत्मा॥ सांपडलाअसे॥ ७७॥ भानुनहोनिरूपेंजैसी॥ चक्षुरूपातेंकांप्रकाशी॥ आत्मानहोनि कर्म
 तैसी॥ प्रकटीतअसेगा॥ ७८॥ पैयतिबिंबअगरिमा॥ दोन्हीनिहोनि वीरेशा॥ दोहीतेंप्रकाशजैसा॥ न्याहाळितता॥
 ७९॥ कांअहोरात्रहसविता॥ नहोनि करीपंडुसता॥ तैसाआत्माकर्मकत॥ नहोनिदावी॥ ८०॥ परिदूहोहअभिमान
 भुली॥ जयाचीबुद्धीदेहीचाओतली॥ तथाआत्माविषयीजाली॥ मध्यरात्रीगा॥ ८१॥ जेणेचैनन्याइश्वराब्रह्मा॥ देह
 चिकेलंपरमसीमा॥ तथाआत्माकतोहृप्रमा॥ अलोटउज॥ ८२॥ आत्माचिकर्मकती॥ हाहीनिश्चयनाहीतत्वता॥ देहो
 चिसीकर्मकती॥ मानितीसाचे॥ ८३॥ जआत्मामीकर्मतीत॥ सर्वकर्मसाक्षीभूत॥ हेआपुलीकहीमात॥ नायकेचिकर्मा
 ॥ ८४॥ द्यणोनिउपमाआत्मयाते॥ देहचिवरीमिविजये॥ विनिव्रकार्दशभिदवसाते॥ दुडुकनकरी॥ ८५॥ पैजेणेआका
 शींचाकंही॥ सैत्यसूर्यदेखिलानाही॥ तोधिल्लुरींचेबिंबकाई॥ मानूनलाहे॥ ८६॥ थिल्लुराचीनजालेपणे॥ सूर्यांसिआणि
 ह्मणे॥ त्यान्यानाशोनाशणे॥ कपेंकपा॥ ८७॥ आणिनिद्रिस्ताचवीनये॥ तैस्वप्नसाचहालाहे॥ रज्जुनेपातांसपाबिहे॥ वि-
 स्माकवणा॥ ८८॥ जंवकुवळअथीडोळां॥ तंवचंद्रदेखावाकोपिवळा॥ कायमृगीमृगजळा॥ साळावेनाही॥ ८९॥ ते-
 सांश्राअगुरुचनिनावे॥ जवाशहीटेकोनोदिसिबे॥ कवळमोत्याचेनिचिजोवे॥ जियालाजो॥ ९०॥ तेणेंदेहात्मदृष्टीमुळे
 ॥ आत्मयाथपंदेहाचेजळें॥ जैसाअग्नाचावेगकोल्हे॥ चंद्रोमानो॥ ९१॥ मगतयामानण्यासाठी॥ देहबंदीशाळाकि
 रीटी॥ कर्माचावज्रगांठी॥ कळासेतो॥ ९२॥ पाहंपाबधसावनादटी॥ नुळयेवरीतोबापुडा॥ कायमोकळेयाहीचव
 डा॥ नठकोचिपुसा॥ ९३॥ द्यणोनिनिर्मळआत्मस्वरूपी॥ जाप्रकृतीचेकलआरोपी॥ तोकल्यकोडीचामापी॥ मवीचिक
 पाठ॥ ओं-८६ सप्त॥ ओं-८८ अगा॥ ओं-८९ देवी॥

॥ ५॥

॥ ५॥

में॥१४॥ आतां कर्म माजिअसे॥ परितया तें कर्म नस्यरी॥ वडवानळा तें जें स॥ समुद्रोदक॥१५॥ तें से निवेगळे पणें॥ जयांचे
 कर्म असणें॥ तो करि चौकस्यो कवणें॥ तरी सांगों॥१६॥ जे मुक्ता तें निर्धारितां॥ लाभ आपली नमुक्ता॥ जें से दीपि दीसे पा
 हतां॥ आपली वस्तु॥१७॥ ना तरी दर्पण जे वडुठिजे॥ तें व आपण पण आपण भेटिजे॥ कां तो यपावना तो य होइजे॥ लवणें जेवी
 ॥१८॥ हें असो परतो निमागुतें॥ प्रति बिंब पाहें बिंबांतें॥ तंव पाहणे जो उनी आयितें॥ बिंबाचे होये॥१९॥ तें सें हार तें लें आपणें
 पावे॥ तें सें तें पाहतां गिवसावें॥ झणो निवाना वें कोवें॥ तें निसदा॥२०॥ परिकर्म असो निकर्म॥ जो नाग वेसम विषसे॥
 चर्म चक्षुचे निचामें॥ दृष्टि जें सी॥११॥ तें सा सोडवला जो आहें॥ तया चें रूप आतां पाहें॥ उपपत्तीची बाह॥ उभट निमांगों॥२२॥
 ॥२३॥ यस्या नाहं कृतो भावो बुद्धिर्यस्य न लिप्यते॥ हत्वापि स इमां लोकां न्वहं तिन निबद्धते॥१७॥ टी०॥ तिरिअ विद्ये चिया
 निदा॥ विश्वस्वभावा हा धादा॥ भागिन होत प्रबुद्धा॥ अनादिजे॥३॥ तो महावाक्याचे निनावें॥ गुरू कृपेचे निथावें॥ माथा
 हात ठेवणें नव्हे॥ थाप दिली जें सा॥४॥ तें सा विश्वस्वमंसी माया॥ नीद सांडुनि धनंजया॥ सहजें चिंचे इला अद्वया॥ नंदप-
 णें जो॥५॥ तें व्हा सुगळचे पुर॥ दिस तो एक निरंतर॥ हा रपती कांचंद्रकर॥ फाकतां जें से॥६॥ को बाळ कलनि यो निजाय॥ तें
 बागुलाना हीं नाया॥ पेंज कालिया इधन होये॥ इधन जेवी॥७॥ नानाचे वो आलिया पाठी॥ तें स्वप्न दीसे दिदी॥ तें सी अहममता
 गाकिरीदी॥ नुरोचि तया॥८॥ मग सूर्य आधारलागीं॥ शिपो कां भल ते सुं रंगी॥ परितो तया चा मागीं॥ नृमंजु जें सा॥९॥ तें सा
 आत्मते वें घुला होये॥ तो जया तया दृश्या तें पाहें॥ तें दृश्य दृष्टे पणें सी होत जाये॥ तया चें चिरूप॥१०॥ जें सावही जयाला
 जो॥ तें वही चें होय आंगें॥ दात द्वादह क विभागें॥ सांडि जें तें॥११॥ तें सा कर्मा कारा दुजेया॥ वोक ते पणाचा आत्मया॥ आळ
 पाठ-ओं-१५ जाणावा-ओं-१० आत्मतत्वे-ओं-११ जालिया-

॥ ७ ॥

॥ ७ ॥

अल्लोतो गेलिया ॥ कांही बांही जें उरे ॥ १२ ॥ तिये आत्मस्थितीचा जो रावो ॥ मग तो देही इये जाणे लठावो ॥ काय प्रलय बुचछना
 हो ॥ बोधसानी ॥ १३ ॥ तैसे रिते पूर्ण अहंता ॥ कांई देह पणें पंडूकता ॥ आवरे कांई सवितता ॥ बिंबे धरिला ॥ १४ ॥ तें मथुनि नोणी पि
 यें ॥ तें मागुती ताकीं यां पो ॥ तारितें अलि सपणें सिं पो ॥ तें पो सी कांई ॥ १५ ॥ नाना काष्ठो निवी रे शा ॥ वाळ्या को लया हुताशा ॥ राह
 काष्ठ चिया मांदुसा ॥ कांडले पणें ॥ १६ ॥ कारात्री चिया उदरा आत ॥ शिगला जो हा मास्वता ॥ तो निशा ऐसी माने ॥ ऐके कांई ॥
 १७ ॥ तें सवेद्य वेद कपणें सी ॥ णडले कांज्याचा घ्रासी ॥ तया देह सी ऐसी ॥ अहंता कैची ॥ १८ ॥ आणि आकाश जेथें जेथुनी ॥ जा
 इ जैथ असे मरोनी ॥ ह्मणो निठलें को दोनी ॥ अपें आप ॥ १९ ॥ तें सें जें तें णें करावें ॥ तो तें चि आह स्वभावें ॥ साको णे करी विष्टा
 वें ॥ कर्ते पणें ॥ २० ॥ नुरे चि गगनावीण ठावो ॥ नेहे चि समुद्राप्रचा हो ॥ नुठी चि भ्रुवा जावो ॥ तें सें जाहलें ॥ २१ ॥ ऐसे निअह
 कुती भावो ॥ जयाचा बोधी जाहा लावावो ॥ तन्ही देहा जवनि बाहो ॥ तंव आधी कर्म ॥ २२ ॥ वाराजरी वाजो निवासरो ॥ तरी तो
 डोल रुखी उरे ॥ कांसें देहु तिराहे कापुरो ॥ वेचलेनी ॥ २३ ॥ कां सरले यागीत चास मारं फु ॥ नवचरा हिले पणाचा सो फु ॥ फूमी
 लोळो निगोलया अंबु ॥ बोल थारे ॥ २४ ॥ अगमा वाळले निअकें ॥ संधाराग फूमिके ॥ ज्याती दीसी को तुकें ॥ दिसे जेसी ॥
 २५ ॥ पैलक्ष्मि दिला हाही वरी ॥ बाण थोवें चित्तं ववरी ॥ जंव सरली आधी उरी ॥ बळाची तया ॥ २६ ॥ नाना चक्री भांडें जालें ॥ तें
 कुलाल परत नल ॥ परस्पर मोचितें मागिलें ॥ भोंवांडले पणें ॥ २७ ॥ तें सां देहा भिमान गेलिया ॥ देह जें पें स्वभावें धन जया ॥ जा
 हें तें अ पें मया ॥ चेष्टी वृत्तें ॥ २८ ॥ संकल्पे वीण स्वप्न ॥ नल वितां दां गींचे वन ॥ नरा चितां गंधर्व सुवन ॥ उठी जें सें ॥ २९ ॥ आत्म
 याचे निरुद्य सें वीणा ॥ तें सें देहा दि पंचकारण ॥ होय आपणार्थी अपणा ॥ क्रिया जात ॥ ३० ॥ पें प्राची न संस्कार शेष ॥ पांच ही क्रि

प्राट् ओं १२३४५ आल्हाद होय - ओं १५ लिप्त - ओं १६ वेगळा विलया - ओं १७ जेंवें - ओं २३ सें - ओं २५ संख्ये चिये -

रणं सह तु कै॥ कामवीजतीगा अनेक॥ कर्माकारं॥ ३१॥ तया कर्माभाजीमगा॥ संहरो आघवे जगा॥ अथवानवे चांगा॥ अनु-
 करौ॥ ३२॥ परिकुमुदकै से निस्सके॥ तैक मळकै से फाके॥ ये दोन्ही रवी न देवे॥ ज्यापरी॥ ३३॥ कां बीजवर्षे नि आभाळ॥ ठि
 करिया आने मृतळ॥ अथवा कल्ला दुल॥ पर्जन्य वृष्टी॥ ३४॥ तरितया दो ही तै जै से॥ नेण जचिका आकाशं॥ तै सा देही च
 जं असे॥ विदेह वृष्टी॥ ३५॥ तो देहादिके चेशी॥ घडना मोडतां हे मृष्टी॥ नदरे स्वप्न मृष्टी॥ चेइला जैसा॥ ३६॥ ये हवीचा भा
 रेडोळे वरी॥ जेदसनी देह चिवरी॥ तै करि मो व्यापरी॥ ऐसे चि मानती॥ ३७॥ कां ठणाचा बाहुला॥ जो आगरा मेरे ठेविला॥
 तो मल्य राखता का ल्या॥ नमनी काई॥ ३८॥ पैसे ने सलें कां नागवे॥ हें लोकी येउनि जाणावे॥ ठाणोरिया चें मवावे॥ आणि
 कीं घाचे॥ ३९॥ कां महामती चें भोग॥ देवकीरस कळजगा॥ परिते आगिना आंगा॥ नालोक देसे॥ ४०॥ तै सा स्वस्वरूपे
 उठिला॥ जो दृश्येसी दृष्टा आतला॥ तो नेणें काय राहटला॥ इंदिय ग्रामा॥ ४१॥ अगथोरी कल्ला की कल्ला माने॥ लोपना
 तिरी चें निजन॥ एका एकी गिळि जे हं मन॥ मानि जन्ही॥ ४२॥ तंही उदकाप्रति काही॥ कोण ग्रामि तसे काई॥ तै से पु
 णां दुजे नाही॥ जेतो मारी॥ ४३॥ स्रवणार्णव्याचा डिका॥ स्रवणभृको चि देखा॥ स्रवणार्णव्यामा हिखा॥ भाशकुला
 ॥ ४४॥ तो देवल वभिया कडा॥ व्यवहारा मला फुडा॥ वांचुनि महिषशूक चा मुडा॥ स्रवणार्णवितें॥ ४५॥ पेंचि त्रिचि जळ
 हुनाश॥ तो वृष्टीचा चि आभास॥ पटी अग्नि वोल्लाश॥ दोन्ही नाही॥ ४६॥ मुक्ता चें देह ते॥ हाले चाल स्रस्कार वशी॥
 तें देखा नि लो कपि से॥ तो कर्ता स्वर्णती॥ ४७॥ आणितयां कारणें आंता॥ घडोत्रै लोकाया ना॥ परितेणें केला हे मान॥
 बोलां नये॥ ४८॥ अगा अंधकार देखावा तेजे॥ मगतो फेडी हे केंवो लिजे॥ तै से ज्ञानिया नाही दुजे॥ तो मारील काई ॥ ४९॥
 पाठ ओ॥ ३२॥ आनंदासो ओ॥ ३३॥ करीती ओ॥ ३८॥ मानिजेना ओ॥ ४१॥ आटला ओ॥ ४३॥ पाणिया कडे पाही ओ॥ ४७॥ हालते ओ॥ ४९॥ केवी ॥ ४९

ह्यणो नितयाची बुद्धी ॥ नेणे पाप पुण्याची गंधी ॥ गंगेसी नलियानदी ॥ जेसा विटाळ नाही ॥ ५० ॥ अग्नी भि अग्नी झगट
 लिया ॥ काय पोळे तो धनंजया ॥ केतेशस्त्र रूप आपणया ॥ आपणचि ॥ ५१ ॥ तेंस आपण पया पुरतें ॥ जे नेणें क्रिया जाता तें ॥
 तें थकायें लंपवी बुद्धी तें ॥ तयाचिये ॥ ५२ ॥ ह्यणो निकाय कर्ता क्रिया ॥ हे स्वरूप चि जाहलें जया ॥ नाही शरीरादी कींतया ॥ कर्म
 बंध ॥ ५३ ॥ जे कर्त जीव विदाणी ॥ कादनि पांच ही स्वाणी ॥ घडितें हे करणी ॥ आहुती दाहें ॥ ५४ ॥ तेथ न्यावो आणि अन्यवो ॥ हा
 द्विविधा साधुनि आवो ॥ उमा रितान लवो रवेवो ॥ कर्म सुवर्ने ॥ ५५ ॥ याथोराडा कीर कामा ॥ विवजानो हे आत्मा ॥ परस्मण सीहन
 उपक्रमा ॥ हात लावी ॥ ५६ ॥ तो सासी चिद्रूप ॥ कर्म प्रवृत्तीचा संकल्या ॥ उठी तो कोनि ॥ शेष ॥ आपणचि दे ॥ ५७ ॥ तरी कर्म प्रवृत्ती लागीं
 ॥ तया आयास नाही आंगी ॥ जे प्रवृत्तीचे ही उळिगी ॥ लोक चि आंथी ॥ ५८ ॥ ह्यणो नि आत्मयाचें केवळ ॥ जो रूप चि जाहाला निरि
 ल ॥ तया नाही बिंदी पाळा ॥ कर्माची हो ॥ ५९ ॥ परि अज्ञानाचा पदो ॥ अन्यथा ज्ञानाचें चि उठो ॥ तेथ चि तारणी हो त्रिपुटी ॥ प्रसिद्ध जे
 को ॥ ६० ॥ जे ज्ञान ज्ञाता ज्ञेया ॥ हें जगाचें बीज त्रया ॥ तें कर्म चि नि ॥ सदैह ॥ प्रवृत्ती जाण ॥ ६१ ॥ आतां ययाची गात्रया ॥ व्यक्ती विगळा
 लिया ॥ आई के धनंजया ॥ करू रूप ॥ ६२ ॥ तरि जीव सूर्ये विवाचे ॥ रश्मि ओत्रा दीकें पांचें ॥ धांवो नि विषय पद्माचें ॥ फोडितो मत
 ॥ ६३ ॥ की जीव नृपचे वारु पलाणे ॥ घडनि इंद्रियांची कें काणें ॥ विषय देश चि नागवणें ॥ आणितो जे ॥ ६४ ॥ श्लो ॥ ज्ञान ज्ञेय
 परि ज्ञाता त्रिविधा कर्मचो दना ॥ करण कर्म कर्तें त्रिविध ॥ कर्म संग्रह ॥ १८ ॥ टी ॥ हें असो इंद्र इंद्रियां राहातो ॥ जे सुख
 दुःखें सी जीवा भेदो ॥ तें संपुसी काळी वो हो ॥ जेथ ज्ञान ॥ ६५ ॥ तया जीवा नाव ज्ञाता ॥ आणि जे हें सांगी तें लें आतां ॥ त-
 चि एथें पंडु सता ॥ ज्ञान जाण ॥ ६६ ॥ जे अविद्ये चि येयोटी ॥ उपजत रवेवो कीरीटी ॥ आपणया तें वाटी ॥ तिहीं टायीं ॥ ६७ ॥
 पाठ ॥ ओं ॥ ५५ उषितां ॥ ओं ॥ ५५ यावटे ॥

॥ ७२ ॥

॥ ७३ ॥

अपुलियेयंवेपुढी॥घाव्निज्ञेयाचागुंडा॥उष्मरिमागलीकडां॥ज्ञातृत्वानें॥६८॥सगज्ञातयाज्ञेयादोयां॥तोनांदणुक्या
 बगा॥माजिजालोनैपंगा॥वाहेजणें॥६९॥टाकूनिज्ञेयाचींशिवां॥पुरेजयाचींथांवा॥सकळपदार्थानांवा॥सुतसेजें॥७०॥तेंगां
 सामान्यज्ञाना॥याबोलांनाहीआना॥ज्ञेयाचेहीचिन्ह॥आइकूआना॥७१॥तरिशब्दस्पृशं॥रूपगंधरस॥हापंचविधआभासा॥ज्ञेया
 चाज्ञो॥७२॥जेंसैंकोचिचूतफळें॥इंद्रियावेगळवेगळें॥रसेवर्णपरिमळें॥स्मृतिज्ञेयसैं॥७३॥तेंसैंज्ञेयतरीएकसरें॥परिज्ञानेइंद्रि
 यस्वरें॥पेदपणोनिप्रकरें॥याचेंजालें॥७४॥आणिसमुद्रविद्याचेंजणें॥सरलाणिणसिंथावणें॥कांफळीसरेवाटणें॥सस्या
 केंजेवीं॥७५॥तेंसैंइंद्रियाचावाहवटी॥धांवतयाज्ञानाजथउठी॥होयतेगाकिरीटी॥विषयज्ञेया॥७६॥एवज्ञातयाज्ञानाज्ञे-
 या॥तिहींरूपकेलधनजया॥हेत्रिविधसर्वक्रिया॥प्रवृत्तीजाणा॥जेशब्दादिविषया॥हंपंचविधजेंज्ञेया॥तेंचिप्रियकाअ-
 प्रिया॥एकेपरिचें॥७८॥ज्ञानमोदकेंज्ञातया॥दावीनाजंवधनजया॥तंवस्वीकाराकीत्यजावया॥प्रवर्तचित्तो॥७९॥परि-
 मीनातेंदेखोनिक॥जैसानिधानातेंरंक॥कांस्वीदेखोनिकामुक॥प्रवृत्तिधरी॥८०॥जेंसैंखोलोरोंधांवेपणी॥स्वसर
 पुष्याचियेयाणी॥नानासुदलामांजवणी॥वत्सविणा॥८१॥अगास्वर्गचिउर्वशी॥एकोनिजेवींमाणूसी॥वरतालावीज
 तोआकाशी॥यागांचिया॥८२॥पैपरिवोजेसाकिरीटी॥चढलानमानियेपौटी॥पारवीदेखोनिलोटी॥आंगचिसंगळें॥
 ८३॥हेनापनगर्जनासरिसा॥मयूरवोवांडेआकाशा॥ज्ञाताज्ञेयदेखोनितैसा॥धांवच्य॥८४॥झुणांनज्ञानज्ञयज्ञाता॥
 हेंत्रिविधयापंदुरुता॥होयचिकर्मांसमस्तो॥प्रवृत्तीणथा॥८५॥परितेचिज्ञेयविषये॥नरीज्ञातयाचेंप्रियहोये॥तरिभोगाव-
 यानसाहे॥क्षुणहीविलब॥८६॥नातरीअवचटें॥तेंचिविरुद्धहोउनिभेटो॥तरियुगांतवाटो॥सांडावथा॥८७॥व्याकाकांझ
 पाठ-ओं-७१एथ-ओं-७६टी-ओं-८१खालावां-ओं-८३पंढीं-ओं-८४मोर-ओं-८७विरु-

॥३॥

॥४॥

रा॥ वरपडाजालेयानरा॥ हर्षआणिदरारा॥ सरसाचिउठो॥ ८॥ तैसें जेयो प्रिया प्रिये॥ दोखला तजानतया होये॥ मरात्याग-
 स्वीकारी वाहो॥ व्यापारते॥ ८९॥ तेथरागीप्रतिमलाचा॥ गोसावीसर्वदकाचो॥ मर्यादाउपपणान्॥ होयजेसा॥ ९०॥ तैसे-
 ज्ञानेपणेजेअसे॥ तेंयेकर्तारेभियेदशो॥ जेवितेंबैसलेजेसे॥ रंधनकरु॥ ९१॥ कांश्चमरोचिकेलाभका॥ वोरकलरिगालाअ-
 कसुळो॥ नानादेवरिगालादेउका॥ चियाकामा॥ ९२॥ तैसाज्ञेयाचियाहोवा॥ ज्ञानाईद्रियांचामेळावा॥ राहादवीतथांडवा॥
 कर्ताहोये॥ ९३॥ आणिआपणहीउनीकर्ता॥ ज्ञानाआणीकरणता॥ तेथेज्ञेयचिस्वभावता॥ कार्यहोये॥ ९४॥ ऐसाज्ञाना
 चियेनिजगती॥ पूलटपडेगासुभती॥ नेत्राचीशोभारती॥ पालटेजैसी॥ ९५॥ कोअहृजालियाउदास॥ पालटेअस्मिता
 चाविलास॥ पूणिभेयाठीशीतांश॥ पालटेजैसा॥ ९६॥ तैसाचाळितांकरणो॥ ज्ञानावेष्टिजेकर्तेपणो॥ तेथिचि नित्ये लक्षणं
 ॥ ऐकआतां॥ ९७॥ तरिबुद्धिआणिमन॥ चित्तअहंकारहना॥ हंचतुविधिचिन्ह॥ अंतःकरणान्चि॥ ९८॥ बाह्यत्वचाश्रवण
 ॥ चक्षुरसनाघ्राणा॥ ह्रस्वचिविधजाणा॥ इंद्रियगा॥ ९९॥ तेथआतुलतंवकरणो॥ कर्ताकर्तव्यापेउमाणो॥ भगतेजरीजाणे
 ॥ सरसाधेतो॥ १००॥ तरिबाहेरिलेतयेही॥ चक्षुरादिकेदाहाही॥ उठोनिलवलाही॥ व्यापारासये॥ १०१॥ भगतोईद्रियकद-
 बं॥ करबिजेतंवसव॥ जंवकर्तव्याचालास॥ हातासिये॥ १०२॥ नातेंकर्तव्यजरीदुःखे॥ फळलेसेंदेखे॥ तालावीत्यागसुखे॥ नित्ये
 दाहाही॥ १०३॥ भगपदेदुःखाचाठावो॥ तंवराहादवारात्रिदिवो॥ विकणआतंकरावो॥ जयापरी॥ १०४॥ तैसेंनित्यागास्वीकारी
 ॥ वाहातांईद्रियांचीधुरी॥ ज्ञानयातेंअवधारी॥ कर्ताह्यणिपे॥ १०५॥ आणिकर्तयाचासर्वकर्मी॥ आउतांचियापरीक्षमी॥ ह्म
 णोनिईद्रियतेंआह्मी॥ करणह्यणो॥ १०६॥ आणिहोचकरणवरी॥ कर्ताक्रियाज्याउभारी॥ नित्याव्यापेतेंअवधारी॥ कर्मए-
 पाठ-ओं॥ ९२॥ शिवा-ओं॥ ९८॥ बाहेरी-ओं॥ २॥ तरि-ओं॥ ४॥ वातेंवाहावो॥ ॥ १०॥

शा॥७॥ सोनारगिचियबुद्धिलेणें॥ व्यापचंद्रकरींचांदिणें॥ कांव्यापेवल्हाळपणें॥ वेलीजैसी॥ ८॥ नानाप्रभाव्यापेप्रकाश॥ मो
डियाइक्षरस॥ हेअसोअवकाश॥ आकाशीजैसा॥ ९॥ तैमैकर्तयानियाक्रिया॥ व्यापलेंजैधनजया॥ तैकर्मगाबोलावया॥ ओ
ननाही॥ १०॥ एवकर्मकर्ताकरणा॥ यातिहीचिंहलक्षण॥ सांगीतलेंतुजविचक्षण॥ शिरामणी॥ ११॥ एथज्ञानाज्ञानाज्ञेय॥ हे
कर्मचंद्रबुद्धिचिया॥ तैमैचिकर्ताकारण॥ ह्यकर्मसचय॥ १२॥ वन्हीटोविलाअसेधुम॥ आशीबीजिजेंबुद्धि॥ कांमनी-
जोडेकामा॥ सदाजैसा॥ १३॥ तैसाकर्ताक्रियाकारणी॥ कर्माचेंआहेजितवणी॥ सोनैजैमैखणी॥ स्रवणार्चिया॥ १४॥ द्य-
णोनिहैकार्यमीकर्ता॥ ऐसैआथीजेथपंडुसुता॥ तेथआत्माद्रुमसस्ता॥ क्रियापासी॥ १५॥ याळगोपुटनपुटती॥ आत्माव
गकाचिसस्ता॥ आतांअसोहैकिती॥ जाणतांमिच्छु॥ १६॥ श्रुती॥ शानकर्मचकर्ताचिअर्थेवगुणभेदनः॥ प्रोच्यतेगुण
संख्यातेयथावच्छृणुताम्यपि॥ १७॥ टी॥ परिमाणीतलेंजंजान॥ कर्महाकर्ताहन॥ तेनेहीतिहीठायींभिन्न॥ गुणीआ
थी॥ १७॥ द्यणोनिज्ञानाकर्मकर्तया॥ यातेजानयेधनजया॥ जेदोनीबाधतीसोडावया॥ एकचिप्रोट॥ १८॥ तैसांलिकटा
उवेंहोये॥ तोगुणमिदसांगोपाहे॥ जोसारख्याशास्त्राआहे॥ उवाडला॥ १९॥ जेविचारदीरसमुद्र॥ स्वबाधकुमुदनेचंद्र॥
ज्ञानडोळसोनरद्र॥ शास्त्राचाजे॥ २०॥ कीमकुतिपुरुषादोनी॥ मिसकलीदिवारजनी॥ तियेनिवाडितांविभुवनी॥ मानड
जै॥ २१॥ जेथअपारामोहराशी॥ तत्वत्वाभापेचाविसी॥ उमाणेयउमपर॥ २२॥ अजुनातसारख्या॥ रूप्र
पुढेजयाचेंसोत्रा॥ तेंगुणभेदचरित्रा॥ ऐसैआहे॥ २३॥ जेंआपुलेंनिआंगिकें॥ त्रिविधगणाचेंभअकें॥ दृश्यजानतितकें॥ अ
कितकें॥ २४॥ एवसत्वरजतमाभनिहीचागवटीअसेमाहमा॥ जेंत्रैविषयआदिबद्दा॥ अतिक्रमी॥ २५॥ परिश्रव्याचि
पाठ-ओं-१२-कर्म- ॥ ७॥ ॥ ७॥

आधर्वासादी॥ जेणेसें दले त्रिगुणसेदी॥ पा॥ हले तें तंव सात्विक आधी॥ ज्ञानसांगां॥ २६॥ ननु प्रजरी चार खकीजे॥ तारि मल तें ही चार व
 रुजो॥ तैसें ज्ञानेश्वरुं ह्वाहिजे॥ सर्व ही शब्द॥ २७॥ ह्यणों नितें सात्विक जात॥ ३०॥ अन्तर्यामी तें प्रवधान॥ केवल्यगुण निधान॥ श्री
 कृष्ण ह्यणो॥ २८॥ अहो॥ सर्वभूतेषु येनैक भावमव्ययमीक्षते॥ अविभक्तीविभक्तेषु ते ज्ञानविद्वि सात्विकम्॥ २९॥ दी॥ तारि
 अर्जुनागातें पुढें॥ सात्विक ज्ञान चारवें॥ जयाच उदयी जे यबुड॥ ज्ञाते निसी॥ ३०॥ जे सासूर्य न देख आधारे॥ सरितानि णिज-
 ती सागरें॥ काक वळिलियान धरे॥ आत्मज्ञाया॥ ३०॥ तया परे जया ज्ञाना॥ शिवादि ह्ण विमाना॥ इया मृत व्यक्ती मित्रा॥ नाडक
 ती॥ ३१॥ जेसें हातें चित्र पाहातां॥ हाय पाणें येम ठातुतां॥ कांचे योगिनि स्वभायतां॥ जेसें हाये॥ ३२॥ तैसें ज्ञाने जेणो॥ करिता ज्ञान व्यातें
 पाहाणें॥ जाणतें निजाणें॥ जाणा वें उग॥ ३३॥ येसें नें आदि नलणी॥ नका ठि ते अपुले या आयणी॥ को तं रगन पे पनी पाणी॥ गा
 कुनि जेसें॥ ३४॥ तैसें ज्ञान ज्ञाना चिया हाता॥ नलगो च दृश्य पथ्या॥ तं ज्ञान जाण समर्थ॥ सात्विक गा॥ ३५॥ आरि सा पा हो जातों को
 हो॥ जेसें पाहातें चि को रोग पुढें॥ तैसें जे यला टा नि पडें॥ ज्ञात चि जे॥ ३६॥ पुढती तें च सात्विक ज्ञाना॥ जे मोक्ष लक्ष्मी चि सुवन॥ हे अ-
 मोरे का चिन्ह॥ राज साचें॥ ३७॥ अहो॥ एथ कुले न तु य ज्ञान नाना भावान् पृथग्विधान्॥ वेत्ति सर्वेषु भूतेषु ते ज्ञान विद्विराजस
 मे॥ ३८॥ दी॥ तारि पार्थापरि यम॥ तें ज्ञान गाराजसा॥ जेसें दाची कासा॥ धरूनि चाले॥ ३९॥ विचित्रता मृता चिया॥ आपण आ
 तो नि ठी करिया॥ बहूचकें ज्ञातया॥ आणिली जेणो॥ ४०॥ जेसें साचू रूपा आड॥ घालूनि विमर चक बाड॥ मग स्वमाचें का बा
 डा॥ विवरी निद्रा॥ ४०॥ स्वज्ञाना चिये पोकी॥ बाहेरी मिथ्या॥ मोह चारवळी॥ तिहीं अवस्था चीव त्याळी॥ दाविजे जीवा॥ ४१॥
 अलंकार पणें झोकलें॥ बाळका सोनें का वायांगेलें॥ तैसें नामी रूपां दुगवले॥ अहेत जया॥ ४२॥ अवतरली गाड गंधां यडा॥ एव्ही
 पाठ-ओं॥ २६ पडिलें॥ ओं॥ २७ जे दही॥ ओं॥ ३३ जाणताना॥ ओं॥ ४१ मिथ्ये चि मिहि॥

॥ ३५ ॥

॥ ३६ ॥

॥ ३७ ॥

॥ ३८ ॥

॥ ३९ ॥

॥ ४० ॥

॥ ४१ ॥

अनोळखजालीमूढा॥ वन्हिजालाकानडा॥ दीपत्वासाठी॥ ४३॥ कां वस्त्रपणाचेविआरोपो॥ मूर्खीयानिततुहारपो॥ नानासुखो
 पदलोपो॥ दांडीचित्र॥ ४४॥ तैसीजया ज्ञाना॥ जाणोनिसूतव्यकीभिन्ना॥ एक्यबांधाचीसावनो॥ निसोनिर्गलि॥ ४५॥ मगदे
 धनीभेटलाअनका॥ फुलावरीपरिमळा॥ कांजळभेटेसुकळा॥ चंद्रजैसा॥ ४६॥ तैसेपदार्थमदबहुवसा॥ जाणोनिलाहानयोरवे
 षा॥ आतलंतैराजसा॥ ज्ञानयेथा॥ ४७॥ आतांतामसाचिहीलिंगा॥ सांगनंतैवाळखचागा॥ डावलावयासातंगा॥ सतनजैसा॥ ४८॥
 श्लो०॥ यत्पुरुषवदेकस्मिन्कार्यसक्तमहेतुकं॥ अतत्ताथवदल्पन्तत्तामसमुदाहृतं॥ ४९॥ तैरी०॥ तैरिकरदीजेज्ञाना॥ हिंडे
 विधेचिनिवस्त्रहीना॥ श्रुतिपाठमोरीनगना॥ ह्यणोनितया॥ ५०॥ योंरहीशस्त्रबाह्यकारी॥ जैमिंदेचेविदाळवरी॥ बोळविले
 मेडोंगरी॥ म्लेंछधर्माचा॥ ५०॥ जेंगाज्ञानोसै॥ गुणयाहेतामसो॥ घेतलेमोर्वेपिसै॥ हाउनिया॥ ५१॥ जैसोयरिकेबाधनेणें
 ॥ पदार्थीनिषेधनह्यणो॥ निरोपिलेंजैसंरुणो॥ शून्यग्रामी॥ ५२॥ तयातोंडीजैनाडुळे॥ काखतांजणेंपोळे॥ तेंचियेकवाळे॥ ये
 रघचितें॥ ५३॥ पैसांनैचोरिताउदिरा॥ नह्यणेंथरविथर॥ नेणेंमोसखादर॥ काळंगोर॥ ५४॥ नानावनामाजिबोहरी॥ कड
 सणीजिविनकरी॥ काजीतमेलेंनविचारी॥ बेसतामासि॥ ५५॥ अगावांतवार्दलेया॥ साजुककामडालया॥ विवेकका
 वळिया॥ नाहीजैसा॥ ५६॥ तैसैनिषिद्धसांडुनिद्यावै॥ कांविहितआदरेंध्यावें॥ हेंविषयांचेनिनावें॥ नेणेंचिजे॥ ५७॥ जैतु
 लेआडपडेदीठा॥ तेंतुल्येचिनिषयासाठी॥ मगंतद्रव्यस्थियावारी॥ शिखादरा॥ ५८॥ तीयातयहमाषा॥ उदकानाईसनाळ-
 रवा॥ तृषाबाळतेंचिसरवा॥ वाचूनिया॥ ५९॥ तयाचिपरीखाद्याखाद्य॥ नह्यणोभिद्यानिद्य॥ तोडाआवडेतेमेध्या॥ ऐसा-
 चिबोधा॥ ६०॥ आणिसूजिजातितदुके॥ त्वंचोद्रयचिबोळखे॥ तियोविषईसोपरिके॥ मोदराचिबहु॥ ६१॥ पैसाधीजेंउपक्र
 पाठ॥ ओं॥ ४५ वासना॥ ओं॥ ४७ वेदें॥ ओं॥ ५५० वीरकारी॥ ओं॥ ५२ सुणागावी॥ ओं॥ ५७ जवें॥ ओं॥ ५८ स्त्रीद्रव्य॥ ओं॥ ६१ एकचिबोधा॥

॥ ४१॥

रे॥तथाचिनामसोधिरे॥देहसंबंधनसरे॥जियेजानी॥६२॥मृत्युचेआघवेचिअन्म॥आणिआघवेचिइंधन॥तेसंजगचि-
 आपलेधन॥तामसज्ञान॥ऐसेनिवश्वसकळ॥जेणोविषयचिसानिलेकंवळ॥तयाएकजाणफुल॥देहमरणा॥६४॥आ
 काशपतितानीरा॥जैसासिंधुचियेकथारा॥तेसंकृत्यजातउदरा॥लगिंचिबुझे॥६५॥वांचूनिस्वर्गनरकआंधी॥तयाहेतुपु-
 न्निवृत्ती॥इयेविषईआघवोचिराती॥जाणिवेचीते॥६६॥जेदेहस्वदानामआत्मा॥इश्वरपाषाणप्रतिमा॥ययापरोतीप्रस-
 दळोनेणो॥६७॥ह्योपडिलेनिशरीरें॥केलेनिमीआत्मामें॥मांसोगावयाउरें॥कोणवेधें॥६८॥नाइश्वरपाहतआहे॥तोसो
 गावीजरीहेहोये॥तेरीदेवचिस्वाये॥विकूनियां॥६९॥गावींचेदेवळेश्वर॥नियामकचिहोतीसाचार॥तरिदेसींचिडोंगर॥उगे
 कांसमती॥५७०॥ऐसाविपारयेदेवमानिजे॥तरिपाषाणमात्रचिजाणिजे॥आणिआत्मातवाचिद्वयणिजे॥देहातेचि॥७१॥येर-
 पापपुण्यादिकें॥तेंआघवेंचिकरोनिलटिकें॥हितमानिअग्निमुखें॥चरणेंजेंकां॥७२॥जेचाचाचोळोळदावितो॥जेंइंद्रयेगोडी
 लावितो॥तेंचिसाचहेमतीती॥फुडजिया॥७३॥किंबहुनाऐसीप्रथा॥वाटतीदेरस्तीपार्था॥धूमाचिवेलीवृथा॥आकाशीजि-
 मी॥७४॥कोरडानावाला॥उपयोगीआर्थीगोला॥तोवाटोनिमोडला॥मेंढजेसा॥७५॥नानाउसंचिकणसैं॥कंनपुंसकंमा-
 णुसैं॥वनलसालेंजैसैं॥साबरीचें॥७६॥नातरीबाळकाचेंभन॥काचोराघरींचेंपन॥अथवागळस्तन॥शोळियेच॥७७॥तें
 मेंजंवाथाणों॥वोसाळादिसेजाणणें॥तयातेंमीद्वणें॥तामसज्ञान॥७८॥तेंहीज्ञानइयाभाषा॥बोलिजेतोभाबरेसा॥जात्यथा
 चीकांजैसा॥डोळावाड॥७९॥कांबधिराचेनीटकांन॥अपेयानामपान॥तेंमेंआडनांवज्ञान॥तामसातया॥८०॥हेंअसोकितो
 बोलवें॥तरिऐसेजेदेखावें॥तेंज्ञाननोहेजाणावें॥डोळसतम॥८१॥एवंचितीर्हगुणी॥मेंदेलथथालसणीं॥ज्ञानश्रोतेशिरोमू-
 पाठ-ओं-६८ ह्योनि-ओं-६८ किमरे-ओं-७३ चर्मचक्र-ओं-७५ उपेगा-

॥१॥

॥१॥

॥१॥

णी॥ दाविंलेंतुज॥ ८२॥ आतां याचि त्रिकारा॥ ज्ञानचे निधनुं परा॥ प्रकाशें होतें गीचरा॥ कर्तयांच्या क्रिया॥ ८३॥ ह्मणोनिकर्म
पेंगा॥ अनुसरेंत हीं भागां॥ मोहें जालियां वोया॥ तोयजें सो॥ ८४॥ तें चि ज्ञान त्रय वशें॥ त्रिविध कर्म जें असे॥ तें थसा लिकतें वरे
सो॥ परिस आधीं॥ ८५॥ ष्टो॥ ॥ नित्यतं संगरहितमरागद्वेषतः कृतम्॥ अफलफेकनाकमयत्नस्मात्त्विकमुच्यते॥ १३॥ दी०
तरि स्वाधिकाराचे निमार्गी॥ आलें जें मानलें आंगें॥ पतिव्रतेचे निपरि शणें॥ प्रियातें जें सो॥ ८६॥ मावक्या आगाचें दुना॥ प्रभदा-
होचनं अंजन॥ तें सें अधिकारासिं सडणा॥ नित्यपणें जें॥ ८७॥ तें नित्य कर्म भलें॥ होय नो भित्तीं सावाइलें॥ सोनयासिं जो
डलें॥ सोरप्यजें सो॥ ८८॥ आणि आंगाजी वाचि संपनि॥ वेंचुनि करी बाळाची पाळती॥ परिजें विउ बगणें हे स्थिती॥ न
पाहं माये॥ ८९॥ तें सें सर्व स्वें कर्म अनुष्ठी॥ परिफळन सर्ये दठो॥ उरिविनी क्रिया पेटो॥ ब्रह्मीचि करी॥ ९०॥ आपि पिय-
आलिया स्वभावो॥ सबळ उरें वेचें राउवनब्धो॥ तें सें सत्त्वमर्गे करावें॥ पारुषे जरी॥ ९१॥ तरि अकरणाचें निरवेदो॥ द्वेषतें जिवो
न बाधो॥ जालियाचें निआनदो॥ फुजें नेणो॥ ९२॥ रोस रोसिया हातुं वटिया॥ कर्म निफजें धनंजया॥ जाण सात्विक हें त
या॥ गुणनामगा॥ ९३॥ ययापरी राजमाचें॥ लक्षण सांगि जे लसाचें॥ न करी अवधानाचें॥ वाणो पणा॥ ९४॥ ष्टो॥ ॥ यत्तु
कामेष्मिन्ना कर्म साहकारणवापुनः॥ क्रियते बहुलायासतद्राजसमुदाहृतम्॥ १४॥ ॥ नित्यतं संगरहितमरागद्वेषतः कृतम्॥ अफलफेकनाकमयत्नस्मात्त्विकमुच्यते॥ १३॥ दी०
न हीं संसारां॥ योगविश्वभरी आदरा॥ सूर्वजें सो॥ ९५॥ कांतु कुशाचिया झाडा॥ दुरूनि न पावें सिं तोडा॥ द्राक्षीचियां तरि
बुडा॥ दुधचिला विजे॥ ९६॥ तें सो निरन्य नो भित्तीं॥ कर्मो जिये अवश्य के॥ तयांचे विषां शक॥ बेसला उदु॥ ९७॥ येरां का
म्याचें नितरि नावें॥ देह सवस्व आघवें॥ वंचिता हो न मनवे॥ बहु रोसे॥ ९८॥ अगाद वटी वाटला हिजे॥ तें थसो लंदना थड
पाठ-ओं-८४ पाणी-ओं-९२ बंधे-ओं-९७ बंधला-
॥ ९३॥ ॥ ९४॥

जे॥ पेरितपुरेन द्वाणिजे॥ बीजजेवीं॥ ११॥ कांपरिस जालिया हाती॥ लोहालगसिं सर्वसपत्ति॥ वैचक रित्तये उन्मत्ति॥ साध
 कृजेसा॥ ६००॥ तैसीं फळ देखा निफुडे॥ काम्य कर्म दुबाडे॥ काम्य कर्म दुबाडे॥ काम्य कर्म दुबाडे॥ काम्य कर्म दुबाडे॥ यथावि
 धीने दे॥ काम्य कीजे तितके॥ क्रिया जात॥ २॥ आणितयाही केलियाचें॥ तोंडी लावोडो॥ डेंचें॥ कर्मियांना मपाठाचें॥ बा-
 णेसारी॥ ३॥ तैसा मेर कर्म हंकारु॥ मग पित्त अथवा गुरु॥ तनम नो काळ ज्वरु॥ ओषध जेसे॥ ४॥ तैसे नि साहंकारे॥ फ-
 क्का भिका धिये नरे॥ कीजे गाअदरे॥ जेजे काही॥ ५॥ पारितोही करणे बहु वसा॥ वळघो नि करी सायासा॥ जीव नो पायु काजे
 सा॥ को ल्हो दयाचा॥ ६॥ एका कणालागीं उदीर॥ आवधा उपसं डोंगर॥ काशे वाळो देशे दुंदुर॥ समुद्र डडुकी॥ ७॥ पैंभिके
 परते न लाहे॥ तन्ही गारुडी सापवाहे॥ काय कीजे शीण चिहाये॥ गोंडये का॥ ८॥ हें असो परमाणू चिनि लोभे॥ पाताळ लंघि
 नी वोंकबो॥ तैसे स्वर्ग सुख लोभे॥ विचबणें जे॥ ९॥ तें कास्य कर्म सकुश॥ जाणावें येथ राजस॥ आतां चिन्ह परिसा॥ तामसाचें १०
 प्रलो॥ अनुबंध सूर्या हि सा मनपेक्ष्य च पौरुष॥ मोहादरप्य तं कमयत्तन्नाम समुच्यते॥ २५॥ टी०॥ तरिते गाना मस कर्म॥
 जे नंदे चैकै धाम॥ निषेधाचें जन्म॥ साच जेणे॥ ११॥ जे निपज विल्या पाठी॥ काही च नदिसे देही॥ रेघ काढिल्या पोटी॥
 तैथ्याचें जेवी॥ १२॥ कांकाजी गुसळिल्या॥ कांसाखर फुंकिल्या॥ काही नदिसे गाळिल्या॥ वळघणा॥ १३॥ नाना उपणिलि
 यां भूस॥ कांविं धिल्या आकाश॥ नाना मांडिल्या पाशा॥ वारयां मि॥ १४॥ हें अवघें चिजेसे॥ वोंडें हो लुनि नाशे॥ जेके लि
 या पाठे तैसे॥ वारयां चिजाये॥ १५॥ येद्वीनरं देहा ही येवटे॥ धन आटणी येपडे॥ तें कर्म नि फज विता मोडु॥ जगाचें सुख॥
 १६॥ जैसा कमळ वर्ना फासा॥ काढिल्या काटसा॥ आपणें झिजनाश॥ कमळा करी॥ १७॥ काआपण अग्रजळे॥ आधि-
 पाठ॥ ओ० ६००० चिंता॥ ओ० ७००० अमका॥ ओ० ८००० पाही॥ ओ० ९००० बाळबें॥ ओ० १३०० शरवोंडी॥

॥ ६५ ॥

॥ ६५ ॥

नागवज्रगन्धोदोके॥ पतंगजैसासळें॥ दीपचेनि॥ १८॥ तैसें सर्वस्ववायां जावो॥ वरीस्वदेहाही होयचावो॥ परिपुटितअप्या
 वो॥ निफजविजेजों॥ १९॥ सासिआणपेयातोंगळवी॥ परिपुटिलांवांतींशिणवी॥ तेंकसमळअठवी॥ आचरणजें॥ ६२०॥
 तेंहीकरावयोदेशें॥ मजसामर्थ्यअसेकीनसे॥ हेहीपुढीलतैसें॥ नपाहातां करी॥ १९१॥ केवढासा आउपावो॥ करितंकोणयस्ता
 वो॥ कैलयाहीआवो॥ काययेथी॥ २२॥ इयेजाणिवीचसाये॥ अविवेकाचेनिपाये॥ पुसोनियाहोये॥ सादोपकमी॥ २३॥ आ
 प्लावसौदाजाकुनि॥ विसाढेजैसावन्ही॥ कोस्वमयादागळोनि॥ सिंपुढी॥ २४॥ मरानेणंवाहथोडें॥ नपाहमागेंपुढें॥ सा
 रीसार्गयेकवडें॥ करीतचालें॥ २५॥ तैसें कुत्याकुत्यसरकुटित॥ आपपरनुरवित॥ कर्महोयतेंनिश्चित॥ तामसजाण॥ २६॥
 ऐसीगुणत्रयपिन्ना॥ कर्मासिगाअजुना॥ हेकलीविवचना॥ उपपत्तीसी॥ २७॥ आनाथयाचिकूमाभजता॥ कर्मासिमा
 नियाकर्ता॥ तोजीवहीत्रिविधता॥ पातलाअसे॥ २८॥ चतुराभमवशो॥ एकपुरुषचतुर्थोदिसो॥ कतयात्रेविध्यतैसें॥ कर्मसे
 दें॥ २९॥ परितयांतिहीआत॥ सात्विकतत्त्वप्रस्तुत॥ सांगनदत्तचित्त॥ आकर्णित्ति॥ ३०॥ श्लो०॥ मुक्तसंगोनहवादीष्टतु
 ल्लाहममन्वितः॥ सिध्यसिध्योनिर्विकारः कर्त्तमात्तिकउच्यते॥ ३१॥ टी०॥ तीरफळोदेशेंसांडिलया॥ वाहतीजेविसर्गळया
 ॥ शाखाकांचंदनाचिया॥ बावनया॥ ३२॥ कांनफळांहीसार्थका॥ जैसियानागलतिका॥ तेंसियाकरीनित्यादिका॥ क्रिया
 जोका॥ ३३॥ परिफळून्यता॥ नाहीतयाविफळता॥ पैफळासींचिपुडुस्तता॥ फळेंकाधिसां॥ ३४॥ आणिआदरेंकरिबुडु
 वसे॥ परिमीकर्ताहेनुमसे॥ वर्षकाळीचिजैसें॥ मेघवृंद॥ ३५॥ तेंविचपरमात्सलगा॥ समर्पवयाजोगा॥ कर्मकळापिया
 ॥ निपजौवया॥ ३६॥ तयाकाळानेंनुलंपणें॥ देशशस्त्रीहीसाधणें॥ कांशास्त्रोचावौतोंपाहाणें॥ क्रियानिर्णय॥ ३६॥ रुत्तिक
 पाठ-ओं-२६नवचारित-ओं-३२गा ओं-३५निपजवितो-ओं-३६यानी-

॥३१॥

॥३२॥

रणायेकवक्त्रा॥ चित्तजवौनदणैफळा॥ नियमान्धियासांरवळा॥ वाहंसदौ॥ ३७॥ हा निरोधसाहावयालागी॥ यथांचियांचांगाचो
 गी॥ चित्तवर्णजितीआंगी॥ वाहंजोकां॥ ३८॥ आणिआत्मयांचियेआवडी॥ कर्मकारितांवरिपडी॥ देहसत्त्वानियेपगवडी॥ येवोन-
 लाहो॥ ३९॥ ऐसानिद्रादुहावे॥ क्षुधानबाणवे॥ सुखाडनपावे॥ आंगाचाठावो॥ ४०॥ तवअधिकाधिक॥ उत्साहपरिआगळीक॥
 सोनेजेसेपुढितुके॥ तुटालिया॥ ४१॥ जरिआवडीअर्थीसाच॥ तरिजीवत्वहीसलुच॥ आगीघालितांरमांच॥ दोरिजनीसिति
 यो॥ ४२॥ साआत्मायायेवटियाप्रिया॥ वालसेलाजोधनंजया॥ देहहीसिद्धतातया॥ कायरेवेदहीदुलै॥ ४३॥ ह्यणीनिविषयसर
 वाडतुटे॥ जंवजचदेहबुद्धिआटे॥ तंवतंवआनंददुणवटे॥ कर्माजया॥ ४४॥ ऐसोनिजोकर्मकरा॥ आणिकोणयेकेअवसरी॥
 तेंठाकेसीसरी॥ वाहेजरी॥ ४५॥ तरीकडाडीमोड्याडा॥ तोआपणपेंनमनीअवघडा॥ तैसाठाकलेनिहीथोडा॥ नोहेजोका॥
 ४६॥ नातरिआदरिले॥ अव्यंगसिद्धीगेलें॥ तरितेहीजिनिहें॥ भिरऊनेणो॥ ४७॥ इयास्वुणाकर्मकरितां॥ दोरिजेजोपंडुसुता
 तथातेंह्यणिपेंतलता॥ सालिककर्तो॥ ४८॥ आतांराजसाकर्तेया॥ वोळखणेंहेंधनंजया॥ जेअभिलाषजगानिया॥ वसेता-
 तो॥ ४९॥ म्हणे॥ रागीकर्मफलप्रसूतुब्धोहिंसात्माकोशुचि॥ हर्षशोकान्वितः कर्ताराजसः परिकीर्तितः॥ २७॥ टी०॥ जैसा
 गोंविंचियाकथमळा॥ उकरडाहोययेकवळां॥ कांस्वशानेंअमंगळा॥ आषवयांची॥ ६५०॥ तथापरिजेअशेषा॥ विष्वा-
 चियाअभिळाषा॥ पायप्रक्षालणियांदोषां॥ घरताजाला॥ ५१॥ ह्यणीनिफळाचालाग॥ दोरिजेजियेअसलगा॥ तियेकर्मचिंगा॥ रो
 होमांडी॥ ५२॥ आणिआपणजालियेजोडी॥ उपसोंनेदीकवडी॥ क्षणक्षणाकुरेंडी॥ जिवाचीकरा॥ ५३॥ छुपणचित्तेवअपु
 ळा॥ तैसादक्षपरावियामाला॥ बकजैसास्वतला॥ मांसेयासि॥ ५४॥ आणिगोंवीगेलियाजवळी॥ मृगवल्याआंगफळी॥
 याठ-ओं-३७ वाहाणेंइन-ओं-४१ तुक-ओं-४३ बेटितां-ओं-४३ बेटनवाट-

॥ ७॥

॥ ७॥

फलें औतपेढी॥ बोरंटीजैसी॥ ५५॥ तैसेमनेवाचाकर्ये॥ फलतयादुःखदैतजये॥ स्वार्थसाधितांनपाहे॥ परावैहता॥ ५६॥
 तैविंचआंगेकसी॥ आचरणेनोहेकसी॥ ननिधेमनोधर्मो॥ असेचक॥ ५७॥ कनकाचियाफळा॥ आंतमाजबाहरीसोका॥
 तैसासबात्सदुबळा॥ मुचित्वेजो॥ ५८॥ आणिकर्मजातकोलिया॥ फळलाहेजिधनंजया॥ तारिहर्षजगायया॥ बांकुलिया
 वाये॥ ५९॥ अथवजैआदरिले॥ हीनफळहोयकेले॥ तारिशोकेंतेणोंजितले॥ धिःकारंलगो॥ ६०॥ कर्मसाहाराएसी॥ जया
 तैहोतीदेरसी॥ तोचिजाणनिमुद्दीसी॥ राजसकती॥ ६१॥ आतांययापाठियेरा॥ जोकुकर्माचाआगरा॥ तोहीकलंगोचरा॥
 तामसकती॥ ६२॥ अलो॥ ०॥ अपुक्तःप्राकृतःस्तब्धःशठेनैकृतिःकोलमः॥ विषादीदपिस्तुत्रचिकित्तामसुच्यते॥ २८॥
 दी॥ तारिमियालागलीयाकैसे॥ पुढीलजळतअसे॥ हनेणिजेहुताशें॥ ६३॥ पेंवास्वैभियांनखेदो॥ नेणजेकै
 सेनिनिवदो॥ कानेणिकेकाळकूटें॥ आपलेंकेले॥ ६४॥ तैसापुढीलयाऔपुलया॥ घातकरीतधनंजया॥ आदरीवोरवदिया
 ॥ क्रियाजोको॥ ६५॥ तियाकरिताहीवेळी॥ कायजालेंहंनसासाळी॥ चकलावायूचाहुदुकी॥ चेषेतैसा॥ ६६॥ पेंकरणिया
 आणजया॥ मेकनाहीधनजया॥ तोपाहूनिपैसेया॥ कैचिआय॥ ६७॥ आणिइंद्रियाचवोइरिलें॥ चरोनिगारवेजोजिया
 लें॥ बैलातकींलागलें॥ गोचिडजैसे॥ ६८॥ हांसयाफुदनावेक॥ नेपातआदरीबाळ॥ गहनेतुंगुसळ॥ तयापरी॥ ६९॥ जो
 प्रकृतीआंतलेपणे॥ कृत्याकृत्यस्वप्नेण॥ फुगकेंरंधालेपणे॥ उकरडजैसा॥ ७०॥ ह्यणोंनिमान्याचेनिनावें॥ इस्वरचेही
 परीनरवैलवें॥ स्तब्धपणेंनमनवें॥ डोंगरासी॥ ७१॥ आणिमनजयाचेंकलाळी॥ राहाराहुडीचोरेकी॥ दितीकीरतेवा
 ली॥ पण्यागानेची॥ ७२॥ किंबहुभक्तपटाचें॥ देहचिबळिलेंतयाचें॥ तेंजोणेंक्रिंजुवारचें॥ टिटय॥ ७३॥ नोहेतयचाम्पा
 पाठ॥ ओं॥ ५३ तरीसीतरी॥ ओं॥ ५६ श्री॥ मागेंपुटें॥ ओं॥ ६५ आणखिया, घाय॥ ओं॥ ७९ लवे॥
 ॥ ७॥

दुर्मवो॥ तो सा भिळाष भिलां चांगवो॥ म्हणौं निनये वें जावों॥ तया ठायो॥ ७४॥ आणि आणि काचें नि कें केलें॥ विरुहो
 येज्या आलें॥ जे सें अपेय पया भिनलें॥ लवण करी॥ ७५॥ कोह व ऐसा पदार्थ॥ घातिल्या जंगल आंत॥ ते निस्पृणं डडिते
 अग्नि होये॥ ७६॥ नाना सुद्रव्यें गों मदीं॥ जालिया शरीरि पेटि॥ होउनि ठातीं किरीदी॥ मळाचि जे वें॥ ७७॥ तें सुटिलाचें बर
 वें॥ जयाचा भीतरि पावें॥ आणि विरुद्ध चि आयवें॥ होउनि निगो॥ ७८॥ जोगूण घे दे दोष॥ अमृताने करी विषा॥ दूध पाजिल
 या देख॥ व्याळ जे सा॥ ७९॥ आणि ऐहकी जियावें॥ जेणें परत्रा साचाये॥ तें उचित कृत्य पाये॥ अवसर जियो॥ ८०॥ तें क्हां ज
 या अपेसा॥ निद्राये विली ऐसो॥ दुहवें वारी जैरी॥ विटाळें लोटे॥ ८१॥ पैद्राक्षर स आश्वरसा॥ वेळें तो डस डवायसा॥ कांडो क
 रुदती दिवसा॥ दुहुळाचें॥ ८२॥ तें सा कृत्याण काळ पाहें॥ तें तया तें आळसरवाये॥ नाना प्रमादीं तरि होये॥ तो म्हणें तें सें॥ ८३
 जे वें चि सागराचा पोटी॥ जळें असं ड आगिरी॥ तें सा विषाद वाहें गों॥ जिवाचि येजो॥ ८४॥ हें डोरा आगी धूमाविधि॥ कां अपा
 नां आगें दुर्गंधी॥ तें सा जोजि विलाविधि॥ विषा दे वेळा॥ ८५॥ आणि कल्यांता चिया पारा॥ वेगळें हो जे वीरा॥ सूत्र धरी व्यापारा
 ॥ सा भिलाषां॥ ८६॥ आगाज गाही परोती॥ सूचना वाहें पें चिती॥ करितां वर्षा हातीं॥ तृण ही नलगे॥ ८७॥ ऐसा जे लोका
 आता॥ पाण पुज मूर्ती॥ देखसी तो अव्याहता॥ तामस कर्ता॥ ८८॥ एवं कर्म कर्ता ज्ञान॥ या निही चि विधाचि न्ह॥ दाविले तुज सज न
 ॥ चक्रवर्ती॥ ८९॥ श्लो०॥ बुद्ध में दृते श्रेष्ठ गुण तां स्त्रियि यशु पु॥ प्रोच्यमान मशेषेण एथे न धन जया॥ ९०॥ दीन आ
 तां विद्ये चांगां॥ मोहाची वेदुनि मदवी॥ सदेहाचीं आयवी॥ लेउनि लेणी॥ ९१॥ आत्मनि श्रव्या चि बरवा॥ जया आरि सां पाहिसा
 वयवा॥ तये बुद्धि चि हां पांवा॥ त्रिधा असो॥ ९२॥ आगासलां दुगुणीं इहो॥ काइ एक तिहां यायी॥ नकी जे चिये थाही॥ जगासा
 पाठ॥ ओं॥ ८९ दोह॥ ओं॥ ८५॥ आणि॥ ओं॥ ८७ स्पृहा॥ ओं॥ ८८ देख जे॥ ध॥

॥ ४॥

पाठ॥ ओं॥ ८९ दोह॥ ओं॥ ८५॥ आणि॥ ओं॥ ८७ स्पृहा॥ ओं॥ ८८ देख जे॥ ध॥

जी॥१३॥ आगीनवसन्तोपोटी॥ कवणकाष्टअसेसुष्टी॥ तैसेतेंकेंचेंदृश्यकोटी॥ त्रिविधजेनोहे॥१३॥ ह्यणोंनितीहंयुणी॥ बुद्धी
केलीत्रियुणी॥ घृतीमिहीवांलणी॥ तैसाचिअसे॥१४॥ तोंचियेकवेगाळों॥ तैथचिन्हीअळंकारलें॥ सांगिलेउपाइलें॥ मेदले
पणी॥१५॥ पारिबुद्धिनिदया॥ दोहीसांगांसाजधनंजया॥ आधीरूपबुद्धीचिया॥ मेदासिकळें॥१६॥ तीरुतसमथम
निकृष्टा॥ संसारसिगांसप्रदा॥ प्राणियायेतियावाटा॥ तिनीआथी॥१७॥ जेअकरणीयकार्यनिषिद्ध॥ तेहेसागंतिन्ही
प्रसिद्ध॥ संसारसयसंबध॥ जीवांयया॥१८॥ प्रवृत्तिचिन्वृत्तिकार्यकार्येभयापये॥ बधसोक्षचयावेनिबु
द्धि॥ सापार्थसात्विकी॥१९॥ टी०॥ ह्यणोंनिआधिकारंमानिलें॥ जेवधचिन्वोयेंआलें॥ तेंयकाचियेथमलें॥ नित्यकर्म॥
१९॥ तोंचिआत्मप्राप्तीफळ॥ दिटीसूनि केवळ॥ कीजेजेसंकाजळ॥ सेविजेनाहने॥७०॥ येतुलेंनेनेकर्म॥ सांडजन्म
भयविषम॥ करूनिदेसगम॥ मोक्षसिद्धि॥११॥ ऐसेंकरितोभला॥ संसारसयेसांडला॥ करणीयलेंआला॥ मुमु
क्षुप्रभा॥२॥ तेथजेबुद्धीरेसा॥ बळियाबांधेभरवसा॥ मोक्षठेविलाऐसा॥ जोडेलयेथ॥३॥ ह्यणोंनिनिवृत्तीचीसा
डली॥ सूनिप्रवृत्तिनळ॥ इयेकर्मबुडकुटी॥ दार्वाकीना॥४॥ त्रिषातउदकेंजिणें॥ कापुरीपडालियापळण॥ अधकू
पगताकिरणें॥ सूर्याचेनी॥५॥ नानापथ्यांमिअंगधलाहे॥ तरीगेगेदारनाहेमिचे॥ कायानचेनिव्हाळाहोये॥ जळा
चाजरी॥६॥ तरितयाचाजीविता॥ नाहजेंविअन्यथा॥ तैसेकर्मइयेंतैनी॥ जोडेंचिमोक्ष॥७॥ हेकरणीयाचियावडे॥ जें
ज्ञानआथीचोखडें॥ आणिअकरणीयहेंकुडे॥ तेंमेजाण॥८॥ जियेंतिन्हीकास्यादिकें॥ संसारसयदायकें॥ अकृत्यपणाचेंअ
बुद्धे॥ पाडिलेंजया॥९॥ तियेकर्मअकार्यी॥ जन्मसरणसमयी॥ प्रवृत्तीफलतीपायी॥ सांगिलिचि॥१०॥ तैआगिसाजीनरिद्य
पाठ॥ ओं॥ १३॥ नमस्तो॥ ओं॥ ७॥ जेंमे॥ ओं॥ ७॥ प्रवर्तना॥ ओं॥ ८॥ कुंडे॥

॥७॥

॥७॥

वे॥ अथावीनघलवे॥ धगधगतनांगो॥ श्रूळजवी॥ ११॥ कांकाळयाणाधुधुवात॥ देव्यांननयालवहात॥ नवचखापआत॥ व्या
 द्याचियो॥ १२॥ तैसैकर्मअकरणीय॥ देखांनमहासय॥ उपजानः संदेह॥ बुद्धिजय॥ १३॥ नानेतेनंनंनंनं॥ नेथजगिजेसू
 त्कननुके॥ तेविनिषेधोकांदरे॥ बधातेजो॥ १४॥ मगबधमयभारित॥ तियेनिषिद्धायामी॥ विनयागजाणेनिवृत्ती॥ कर्माचि
 यो॥ १५॥ ऐसेनिकार्याकार्यवेंको॥ जेप्रवृत्तिनिवृत्तीमापको॥ खराकुडापारखि॥ जियापरि॥ १६॥ तैसैकृत्याकृत्यशही॥
 बुझेजेनरवधी॥ सात्विकद्व्याणिपबुद्धी॥ तेंचिंतुजाण॥ १७॥ श्लो०॥ यथाधर्मसंपन्नकार्येचाकार्यमेवच॥ अथथावद्व्याजा-
 नातिबुद्धिः सापथराजसी॥ ११॥ टी०॥ आणबकाचागावी॥ घेपसीरनीरसकलवी॥ कांआहारात्रीचिंगावी॥ आंधळंने-
 पो॥ १८॥ तैसींदयेंकार्याकार्ये॥ धर्माधर्मरूपेजिये॥ तियेनचोजधितांजाये॥ जाणतीजेको॥ १९॥ जयाफुलांचासकरंदफवे॥ तोका-
 षेंकोरूखावे॥ परिफ्रमरणानद्ध॥ अव्हाटांजेवी॥ २०॥ अगाडोळावीणमोतिये॥ घेतांपाडिमळविपाये॥ नमिळणेंतेआहे
 ॥ ठेविलेंतें॥ २१॥ तैसैअकरणीयअवचटें॥ नोडवेतरीचलांत॥ येरवींजाणेंएकवटें॥ दोन्हीजेको॥ २२॥ तेंगाबुद्धिचोखविखी
 ॥ जाणयेथराजसी॥ अक्षतटाकेलीजेसी॥ मांदियेबरी॥ २३॥ श्लो०॥ अधर्मसंपत्तिथामन्यतेनमसावृता॥ सर्वाथान्विपरी-
 तोस्त्रबुद्धिः सापथतामसी॥ ३२॥ टी०॥ आणिराजाजियावाटाजाये॥ तेंचोर्गसिआडवेंहाये॥ कांरासमांदिवोपाहे॥ शातिहोउनी
 २४॥ ननानिधानचिनेंवा॥ होयेकोळसयाचाउडवा॥ पैअसतेंआपणपेंजीवा॥ नाहीजालें॥ २५॥ तैसैधर्मजाततिंतकें
 जियेबुद्धिसीपातकें॥ साचतलटें॥ ऐसेचिबुद्धे॥ २६॥ तेंआपवेचिअर्थ॥ करूनियालीअनर्थ॥ गुणतेतेव्यवस्थिता॥ दोषचि
 मानी॥ २७॥ किबहुनाश्रुतिजाते॥ अधिष्ठानिकलसरतें॥ तेंतुलीहउपरतें॥ जाणजेबुद्धी॥ २८॥ कोणातेहीनपुसता॥ तामसी-
 पाठ-ओं-१४निषिद्धं-ओं-२३अस्वत-ओं-२४आडवाट-
 ॥ १५॥ ॥ १६॥

जगन्नाथपुंड्रसूता॥ शस्त्रीकायधर्मार्थी॥ साचकरावी॥ ३९॥ एवं बुद्धिचे प्रेद॥ तिन्ही तज विषद॥ सांगितले स्वबोध॥ कुमुदचंद्रो॥
 ३०॥ आतोययाचि बुद्धिनी॥ निहं किला कर्मजाती॥ स्वादमां डजे रूती॥ अविधाजया॥ ३१॥ तियं रूतचे ही विस्माया॥ तिन्ही यथा
 लिंग॥ सांगी जनिचाग॥ अवधानदे॥ ३२॥ स्त्रो०॥ धृत्याय याधारयत मनः प्रणोदय क्रियाः॥ योगेन व्यभिचारिण्या रूतिः सा
 पार्थसात्विकी॥ ३३॥ टी०॥ तीरुदेलिया दिनकर॥ चोरिसिंघे आधार॥ कां राजाज्ञा अव्यवहार॥ कुठवीजेवो॥ ३४॥ नात्राप-
 वनाचा साद॥ वाजी नालियानटा॥ आंगें सीं बोभाट॥ सांडितसेय॥ ३५॥ कां अगस्तीचि निदर्शन॥ सिंधु येउनी ठाती सौने॥ न
 द्रोदयीं कसळवने॥ भिठेती॥ ३५॥ हें असो पावो उचलिला॥ मदसुखनदे वितीरवालो॥ गर्जो निपुटा जाला॥ सिंहजरी॥ ३६॥
 ते साजो धीर॥ उठलिया अंतर॥ सनादिकें व्यापार॥ सांडित उसी॥ ३७॥ इंद्रियां विषयो चिया गांठी॥ अपे सया सूनती किरंदी
 ॥ मनमायेचा पोटी॥ रिगती दाही॥ ३८॥ अधोर्ध्वपुटं काटी॥ प्राणनवांचि पेंडी॥ बांधोनि घाली उंडी॥ मध्यमेमाजी ॥ ३९॥ संक-
 ल्याविकल्पंचें लुगडें॥ सांडुनि मन उघडें॥ बुद्धिमागिले कडे॥ उगोचि बैसे॥ ४०॥ ऐसीं धैर्यगजें जेणें॥ मनप्राणकरणे॥ स्वचे
 घुंर्ची संसावणें॥ सांडवीजती॥ ४१॥ मग अयवी चिसडी॥ ध्यानाचा आंतुला मढी॥ कोण्डजती निरवडी॥ योगाचिये॥ ४२॥
 परिपरमात्मयाचक्रवर्ती॥ उगाणितो जंवहाती॥ तं वलांचन येता रूती॥ धरिजती जिया॥ ४३॥ नेगां रूतयेथें॥ मानिकहं-
 निरुते॥ आर्द्रक अर्जुनातें॥ श्रीकांतद्वारे॥ ४४॥ स्त्रो०॥ यथातुर्ध्वसंसाधनार्थं धृत्या पारयतेजुन॥ प्रसंगेन फलाकांक्षी रूतिः
 सापथराजसी॥ ४५॥ टी०॥ आणि हाउनियां शरीरी॥ स्वर्गसंसारचा दोही घरी॥ नांदे जो पोतमरी॥ त्रिवंगो पाये॥ ४५॥ तो-
 मनोरथाचा सागरी॥ धर्मार्थकामान्धता रुवावरी॥ जेणें धैर्य बळकरी॥ क्रियावाणिज॥ ४६॥ जेक मंगड वलासये॥ नयाची-

॥ ३९ ॥

॥ ३५ ॥

पाठ-ओं-३५ स्वाद, बांधिजे-ओं-४४ बोकल-

चैगुणीयेतिमाहे॥ येवदेसाहसवाहे॥ जयाधृती॥ ४७॥ तेगाधृतीराजस॥ पार्थाययगरयस॥ आतोआइकतामस॥
 तीसरीजेको॥ ४८॥ ॥ ४८॥ यथारिचमसयेशोकं विषादमदसवच॥ नविमुच्यतेदुर्महान् ॥ यणथतामसी॥ ३५॥ ही०
 तरिसवार्थसंगुणो॥ जयाचंकारूपयेणो॥ कोळसाकोळेपणो॥ घडळाजैसा॥ ४९॥ अहोयाकृतआणिहीन॥ नयाहकीगुण
 लाचामान॥ पारिनेह्मणिजिपुण्यजन॥ राक्षसकाई॥ ५०॥ पैंग्रहामाजिंद्राळ॥ नयातेह्मणिजमगळ॥ तेसातसींयसाळ॥ गुण
 शब्दहा॥ ५१॥ सर्वतमाचातोलाटा॥ किअमर्तोचपेटा॥ आगजैसाआगिठा॥ तेसाधडके॥ ५२॥ जैसर्वदोषाचावसोटा॥ त
 मचकासउनिरूप्रमटा॥ उमारिलाआंगवता॥ जयनराचा॥ ५३॥ तोआळसस्तानिकारवे॥ ह्मणोनिनेद्रुकहांनमुके॥ पापेपोंपि
 तांदुःखें॥ नसांडिजेजैवो॥ ५४॥ आणिदुहायनाचियाआवडी॥ सदाभयतयातेनसांडी॥ विसंबुनसंकंधाडी॥ काठण्य
 जैसो॥ ५५॥ आणिपदार्थजैतेरुहो॥ बायह्मणोनिताशोकेंटावो॥ केलानशकेपापजावो॥ कृतघ्नोनिजैसो॥ ५६॥ आणिअ
 सातोषजीवेसी॥ धरूनिठेलाआहनिशी॥ ह्मणोनिसेवीतेणेसी॥ विषादेकली॥ ५७॥ लमणातेनसांडीगंधी॥ कोअपथ्य
 शीळातंव्याधि॥ तेसीकेलीमरणवधी॥ विषादेतया॥ ५८॥ आणिवयसावित्तकाम॥ ययाचावाटवीसंभ्रम॥ ह्मणोनिमदे
 आभ्रस॥ तोचिकेळा॥ ५९॥ आगीतेनसांडीताप॥ सळातेजातीचासाप॥ कांजगाचवैरीयासिपा॥ अखंडजैसा॥ ६०॥ नातरि
 शरीरातेंकाळ॥ नविसंबेकवणेवंक॥ तेसाआशिअटक॥ तामसीमदा॥ ६१॥ एवंपाचहीहोनिद्रादिंक॥ तामसाचाटाईदेववा॥
 जियाधृतीदेखा॥ धरिलेआहाती॥ ६२॥ तयेगाधृतीनावें॥ तामसीयेयहजाणवें॥ ह्मणीतलेंतेणदेवो॥ जगाचनि॥ ६३॥ एव
 निविषजेंबुद्धि॥ कीजैकर्मनिश्चयेआधी॥ तोधृतियासिद्धि॥ नेइजोयेथे॥ ६४॥ सूर्यमागगोचरहोये॥ आणितोचालती
 ॥ ७॥ ॥ ७॥

पाठ. ओ. ४७ सायाससंह. ओ. ५६ मायी. ओ. ६० बाहे.

कीरणये॥ परिचालणेनें आहे॥ धैर्यजेवी॥ ६५॥ तेसी बुद्धी कर्माते दावी॥ ते करण सामर्थी निफजवी॥ परिनिफजावया हो आवी
धीरतजे॥ ६६॥ ते हगतुज प्रति॥ सांगितली॥ त्रिविध धृती॥ यक कर्मत्रय निष्पत्ती॥ जालिया मग॥ ६७॥ येथ फळ जे येक नि
फळे॥ सखज या ते ह्य गिजे॥ ते ही त्रिविध जगिजे॥ कर्म वशें॥ ६८॥ त रफळ रूप ते सरव॥ त्रिगुणीं मंद ले देख॥ विवंबुआ
तों चौरव॥ चोस्ती बोली॥ ६९॥ परि चौरव ते कैसी सांगें॥ ऐं पै वें जातं बोल बगें॥ कानी चिये ही लागे॥ हातीं चासळ॥ ७०॥
ह्यणीं निज याचे निअक्षरें॥ अवधान ही होय बाहिरें॥ तें पां आइ क हो अंतरें॥ जिवाचे निज वें॥ ७१॥ ऐसें ह्यणीं निदेवो॥ त्रिवि
धा सखाचा प्रस्तावो॥ माडला तो निवो हो॥ निरूपित असे॥ ७२॥ म्हो०॥ सखें निदानीं त्रिविधं शृणु से सरत र्षम॥ अम्या-
साद्रम ते यत्र दुःखानं च निगच्छति॥ ३६॥ टी०॥ ह्यणें सखत्रय मज्ञा॥ सांगां ह्यणीं निप्रतिज्ञा॥ बोलिला तं माज्ञा॥ ऐक आतां॥
७३॥ त रिस सखें गा किरीटी॥ दाखि जल तुज दीटी॥ जे आत्मर्या चयें मंदी॥ त्रीवा मि होये॥ ७४॥ परमाचे निमापें॥ दि
व्योषध जें संपें॥ कां की थिला चें कर्ज रूपें॥ रस मावनी॥ ७५॥ नानालवणानें जळ॥ हो अवया दोनि न्च्यार वेळ॥ देऊ नि
सां डिज ती दाळा॥ तो याचे जेवी॥ ७६॥ ते विजाले नि सखलज्ञा॥ जे वसा विप्रिया अम्यासे॥ जीवपणाचे नासे॥ दुःख जेथे
७७॥ तें येथ आत्म सरव॥ जालें असे त्रिगुणात्मक॥ तें हा सांगां ये कै॥ म्हो०॥ यत्तदमे विप्रमिव परि
णामे मृतोपमा॥ तत्सखं सान्त्विकं प्रोक्तमाद्य बुद्धिप्रसादज्ञ॥ ३७॥ टी०॥ आतां चंदनांचें नुड॥ सर्पी जें से दुवाड॥ कानि-
धाना चें तोंड॥ विवसिया जे वि॥ ७९॥ अगास्वर्गी चिंगो मंद॥ अद्वयागम संकटें॥ कां बाळक पण दास दे॥ त्रास काळें॥ ८०॥
हे असो दीपाचिये सिद्धि॥ अवयव डूधूम आधीं॥ नाना रंतां ओंघपी॥ जिमं चाठावो॥ ८१॥ तया परिणाद वा॥ जया सखाचा मिया॥
पाठ-ओं-६४ मर्माचकीं-ओं-७९ तरि॥

बा॥ विषमर्तग्रमंलावा॥ यमदुमान्चा॥ ८३॥ देतसर्वस्वोहामिदं॥ आंगीएसंवेरायउठी॥ स्वर्गसंसारकांठी॥ कांठनवी॥
 ८३॥ विवेकेश्वरपुंस्वरपुंसो॥ जेथव्रताचरणकुरुषो॥ करिताजानीमोकसे॥ ८४॥ सुषुप्तेचैतितोडें॥ मी-
 किजेप्राणानचेलोडें॥ बोहणियेसीचियेवटें॥ भारिजेथ॥ ८५॥ तेंसारमाहीविघडता॥ होयवाहा॥ निवत्सकांठता॥ न
 केसणगदबडिता॥ भाणयावरुनी॥ ८६॥ पैसायेपुढोनिबाळका॥ काळनेतायेकुलंतयेक॥ होयकोउदका॥ तुततामनि॥
 ८७॥ तेंसंविषयांचेंघर॥ इंद्रियासांदिताथेरा॥ युगातहोयतेंवीर॥ विरागसाहार्ता॥ ८८॥ ऐसाजयांसुखाचाआरस
 दावीकाठिण्याचाक्षोभ॥ मगसीराब्धीलाभ॥ अमृताचाजैसा॥ ८९॥ पहल्यावेराग्यागळ॥ धेयशंसुवाडुवीगळा
 तरिज्ञानामृतेंसोहळा॥ पाहेजेथें॥ ९०॥ पैकोलताहकंपैएसें॥ द्राक्षान्चैहरवेपणअसे॥ तेंपरियाकीजैसें॥ माधु-
 येअतें॥ ९१॥ तेंवेरायादीकतेंसें॥ पकलियाआत्मप्रकाशें॥ मगवेरायेसंहीनाशें॥ अविगाजान॥ ९२॥ तेंव्हा
 सागरींगजैसी॥ आत्मासीनल्याबुद्धितैसी॥ अदयानंदार्चाओपेसी॥ खाणीउघडे॥ ९३॥ ऐसंस्वानुभवविआ-
 में॥ वैराग्यमूळजेंपरिणम॥ तेंसात्विकयेणेंनामें॥ बोलिजेसुख॥ ९४॥ अलो॥ विषयेंद्रियसंयोगाद्यत्तदग्रेमृ-
 तोपम॥ परिणामेंविषमिवतत्सुखराजसंस्मृत॥ ३८॥ टी०॥ आणिविषयेंद्रिया॥ मेळहोताथंनजया॥ जेंसुखजा-
 यथडिया॥ सांडनिदोन्ही॥ ९५॥ अधिकारिपानिपतांगावो॥ होयजैसाउत्साहो॥ कांरिणावरीविवाहो॥ विस्तारिला॥
 ९६॥ नानारोगियाजिमेपासी॥ केळेंगोडसारवरेमि॥ काबचनागाचीजैसी॥ मधुरतापिहली॥ ९७॥ पहिलेंसवचोरा
 चेंमंत्र॥ हादभेटीचेंकळव॥ कालाघवीयाचेविचित्र॥ विनोदते॥ ९८॥ तेंसोविषयांद्रियदोषो॥ जेंसुखजीवातेंपोषी॥

पाठ. ओं ८४ अतित्रासे. ओं. ९१ गवे. ओं. ९७ महुता.

मगउण्टिलाखडकीं॥ हंसजैसा॥ ९९॥ तैसीजोइआयवीआहे॥ जीवित्ताचाठायफिटे॥ सकृत्ताचियाहीसुटे॥ धत्रा
 विगांटी॥ ८०॥ आणिमोगिलेंजेंकांहीं॥ तेंस्वप्नतेंसं होयनाहीं॥ मगहानिचाचियाई॥ लोकावेउरे॥ ९॥ ऐसंआप-
 न्हीजेंसूस॥ अहकींपरिणमेदेख॥ परत्रीकीरविख॥ होउनिपरतें॥ ३॥ जेइद्रियजाताळका॥ दीपलियाधमाचास-
 का॥ जाकनिमोगिजेसोहळा॥ विषयांचाजेथ॥ ३॥ तंथपातकेंबांधितीथावो॥ तियेनरुकींदेतीठावो॥ जेणंसूखेंहूअ
 पवो॥ परत्रीऐसा॥ ४॥ पैनांमैंविषमधुरें॥ परिमा रूनिअतीखरें॥ तैसंआदिजेंगोडिरे॥ तैअतीकडु॥ ५॥ पाषातसू
 खसाचें॥ वळलंआहेरजाचें॥ दण्णोनिनाशिवेतयाचें॥ आंगकांहीं॥ ६॥ श्लो०॥ यदयेचानुबधेसूखंस्वमांहुनमा-
 लूनः॥ निद्रालस्यप्रमादोस्थंतचामसंमुदाहृतं॥ ३९॥ टी०॥ आणिअपेयाचेनिपानें॥ अखाद्याचेनिभोजनें॥ स्वेरस्त्री
 संनिधानें॥ होयजेंसूखा॥ ७॥ कांपुटिलांचेनिमारे॥ नातरिपरस्वापहारे॥ जेंसूखअवतरे॥ भाटाचाबोली॥ ८॥ जें
 आलस्यावारिपोखिजे॥ निद्रेमाजिंदोरिखजे॥ जयाचाआचुंतीसूलिजे॥ आपुलीवाट॥ ९॥ तेंगासूखपार्थो॥ तामसजा
 णसर्वथा॥ हेबहुनसांगोंचजेकथा॥ असंभाव्यहे॥ १०॥ ऐसंकसंभेदेमुदले॥ फळसूखहीअिधजाले॥ तेंहंथगामेंकेले
 ॥ गोचरतुज॥ ११॥ तेंकर्ताकर्मफळा॥ होचिपुटयेकीकेवळा॥ वाचूनिकाहोचिनसंस्थळा॥ सुद्धीदये॥ १२॥ आणिहेतवचि
 पुट॥ तिहीगुणींहीकरेदी॥ गुंफलीअसंपटी॥ तांतुवीजैसी॥ १३॥ श्लो०॥ नतदस्तिशयिव्यावादिवेदेवेषुवापुनः॥
 सत्त्वपकृतंजमुक्तंयदेभिः स्यात्तत्रिभिर्गुणैः॥ ४०॥ टी०॥ दण्णोनिमकृतीचाआलोकीं॥ नबंधेइहीसत्वादिकीं॥ ते
 सीस्वर्गनामसूक्तलीकीं॥ आधीवस्तू॥ १४॥ कैचालोवेवीणकाबळा॥ मातिवीणभोटका॥ कांजकेंवीणकल्लोका॥ होफआ
 पाठ-ओं-६ कही.

हे॥ १५ ॥ तैसैनहोनिगुणाचें॥ सृष्टीचारचलारचे॥ ऐसेंनहींचगासाचें॥ माणिजात॥ १६॥ यालागींहेसकळ॥ तिहींगुणा
 चेंचिकेवळ॥ घडलेआहोनिखळ॥ ऐसेंजाणा॥ १७॥ गुणीदेवांत्रयीलंबिली॥ गुणीहोकींत्रिपुटीपाडिली॥ चतुर्वर्णायां
 तली॥ सिनानिउकिरो॥ १८॥ ॥ ब्राह्मणक्षत्रियविश्वशूद्राणांचपरतप॥ कर्माणिप्रविशक्तानिस्वभावप्रवर्गगु-
 णैः॥ १९॥ टी०॥ तेचचारिवर्णा॥ पुससीजरीकोणकाण॥ तरिजयामुख्यब्राह्मण॥ धुरेचेका॥ १९॥ येरक्षत्रियवैश्यदा-
 न्ही॥ तेहब्राह्मणाचाचिमांनिजमानो॥ जेतेंवैदीकाविधानी॥ योग्यह्मणोनी॥ २०॥ चाथाशूद्रजोपनंजया॥ वेदीलारा
 कीरनाहीतया॥ तन्हीवृत्तीवर्णत्रया॥ आधीनतयाची॥ २१॥ तियेवृत्तीचियाजवळिका॥ वर्णत्रयांब्राह्मणादिका॥ २२॥
 होशूद्रहीकींदेखा॥ चोथाजाला॥ २३॥ जेसफुलाचेंनिसांगाते॥ तांतुतुरांजेअधीमंतें॥ तैसोद्विजसगेशूद्रांतें॥
 स्वीकारोभ्युत्ती॥ २३॥ ऐसेंसीगापार्थी॥ हेचतुर्वर्णव्यवस्था॥ करूंआतांकमपंथा॥ यांचियारूप॥ २४॥ जिहीगुणीतें
 वर्णचारी॥ जन्मसूत्रचियेकातरी॥ चूकोनियांइश्वरी॥ पैठेहोती॥ २५॥ जियेआत्मप्रकृतीचेइही॥ गुणीसत्ता
 दिकींतिही॥ कर्मचोथाचहुंदाई॥ वांढलींवर्णा॥ २६॥ जैसेबापेंजोडिलेका॥ कांवांढलेसूर्यमागपांथिका॥ ना
 नोव्यापारसेवका॥ स्वामीनिजसें॥ २७॥ तैसीप्रकृतीचागुणी॥ जयाकमांचिवेल्हावणी॥ केलीआहेवर्णा॥ २८॥ आ-
 हुंइही॥ २८॥ तेथसत्त्वआपलाआंगी॥ समीनिंनिमीनभागी॥ दोयेकेलेनियोगी॥ ब्राह्मणक्षत्रिय॥ २९॥ आ-
 णिरजपरीसालिक॥ तेथेठेविलेवैश्यलोक॥ रजचितमसेषक॥ तेथशूद्रतेगा॥ ३०॥ ऐसायेकूचीमाणिवृदा॥ सेद
 चतुर्वर्णपा॥ गुणधर्चइहीप्रबुद्धा॥ केलाजाण॥ ३१॥ मराआपलेठेविलेजसे॥ आदोचिदीपोदसे॥ गुणभिन्न-
 पाठ॥ ओं॥ २९ सत्त्वं, सुमांनिमानोः

कर्मते सै॥ शास्त्रदात्री॥ ३२॥ तेचिभानांकोणकोण॥ वर्णाविहातेचलक्षणा॥ हंसगोएकश्रवणा॥ सौभाग्यनि
धी॥ ३३॥ श्लो०॥ शमोदमस्तपःशौचंक्षातिराजवमेवच॥ शानंविज्ञानमास्तिक्यब्रह्मकर्मस्वभावजा॥ ४२॥ टी०
तस्सर्वद्वियाचियावृत्ती॥ घेउनिआपुलाहती॥ बुद्धिआत्मयाभळयेकती॥ अयाजेसी॥ ३४॥ ऐसाबुद्धिचाउपरम
॥ तयानामध्यणपेशम॥ तोचिगुणोपक्रम॥ जयाकमाचा॥ ३५॥ आणिबाह्योद्व्याचेधेडें॥ पिटुनिविधीचेनिदंडें॥ ने
द्विअधर्मोक्ते॥ कहीचिजावो॥ ३६॥ तोपैगाशमाविरजा॥ दमगुणजयदुजा॥ आणिस्वधर्माचियावोजा॥ अजिजे
का॥ ३७॥ तेर्विचसटवोचियेराती॥ नविसंबिजेजेविवाती॥ तेसाइस्वरनिणयिचिती॥ वाहणंसदा॥ ३८॥ तयानामत
प॥ होतिनयागुणाचैरूप॥ आणिशौचहीनिष्ठाप॥ द्विविधजेथें॥ ३९॥ मनुभावशुद्धिपरले॥ आंगक्रियाअळकारिलें
॥ ऐसेसबाह्याजियोलें॥ साजिजेका॥ ४०॥ तयानामशौचपार्था॥ तोकर्मगुणजयचैथा॥ आणिएथ्हाचियापरीसर्व
था॥ सर्वजेसाहाणि॥ ४१॥ तेगाक्षमापाडवा॥ गुणजेथपांचवा॥ स्वरासजीसहावा॥ पंचमजेसा॥ ४२॥ आणिवांकडे
निवोयोसं॥ गंगावाहेउज्ज्विलेसी॥ काएष्टीवळलाउसी॥ गोडीजेसी॥ ४३॥ तेसाविषमांहजीवां॥ लागीउज्ज्वलकरवा
॥ तेआजवगासाहावा॥ जेथिनगुणा॥ ४४॥ आणिपाणिपेयप्रयत्नेमाळि॥ अरवडजनेझाडामुळी॥ पारितेआपवोचक्रकी
॥ जाणजेवि॥ ४५॥ तेसंशास्त्राचारिणें॥ इस्वरयकपावण॥ हेकृजेकाजाणजे॥ तपयज्ञान॥ ४६॥ तेगाक्रमींजे॥ आ
तवागुणहोये॥ आणिविज्ञानरुपाहे॥ तवरूप॥ ४७॥ तस्मिन्मुद्दिचयेवेके॥ शास्त्रकांथानबळे॥ इश्वरतत्वाचिमळे
॥ निष्कबुद्धी॥ ४८॥ होवज्ञानवरवें॥ तेगुणगत्वजेथआढवे॥ आणिआस्तिक्यजागावे॥ नववागुण॥ ४९॥ पैराजमुद्रा
पाठ-ओं-३४ कांती

आधिल्या ॥ प्रजाभजे भलतया ॥ तैविशास्त्रे स्विकारिलया ॥ मांगमात्राते ॥ ५० ॥ आदर जगामान्या ॥ तै आस्तिक
 त्वसी ह्यणे ॥ तोनववगुणजेणे ॥ कमनसाच ॥ ५१ ॥ रत्नवहाराणे ॥ ५२ ॥ गुणजगामा ॥ ५३ ॥ नालाचापाचा
 ब्राह्मणाचे ॥ ५४ ॥ तोनवगुणरत्नाकर ॥ यथानवरत्नाचाहार ॥ नफडीनलदुस्कर ॥ मनाशजिमा ॥ ५५ ॥ नालाचापाचा
 पोळीपूजिला ॥ चंद्रचंद्रिकाधवल्ला ॥ कांचंदनजंचचिला ॥ सारस्येजेवि ॥ ५६ ॥ तोनववगुणादयल्ला ॥ लोणे ब्रा-
 ह्मणाचे अव्यग ॥ कहीचिनसडी आग ॥ ब्राह्मणाचे ॥ ५७ ॥ आता उचित जे संचिया ॥ ते होकरुधनजया ॥ सांगत कुम-
 न्नेचिया ॥ भरोवरी ॥ ५८ ॥ शौर्यतेजार्धतदोस्वयुद्धचा व्यपलायन ॥ दोनमीत्यरभाव अक्षत्रमस्यभाव जे ६३
 टी० तरि भावहाते जे ॥ नापेक्षिजे विरजे ॥ कोसिद्धे नपाहे जे ॥ जावळिया ॥ ५९ ॥ ऐसास्वयमजा जे वलाव ॥ सावाय
 वोण उद्ध ॥ तै शौर्यगजे अम्ब ॥ पहलगुण ॥ ६० ॥ आणिसूर्याचे निमताप ॥ कोइहीनसत्राहारप ॥ नातोतरि नलोप
 सचंद्रीतिही ॥ ६१ ॥ तैसे नि आपुनं मोदीरुणे ॥ जगाया विस्मयदणे ॥ आपणतरे नि साभगे ॥ कायसनही ॥ ६२ ॥ तैमाग
 लस्य रूपतेजा ॥ जिये कमी गुणहुजा ॥ आणि धरतोतिजा ॥ तैयिचा गुण ॥ ६३ ॥ वारुणतैयि आकाश ॥ बुद्धीचि डोळ
 मानस ॥ झांकिनाते पारपेस ॥ धैर्यजेथे ॥ ६४ ॥ आणियाणी हाका भल ते तुके ॥ परत जिणोनि पक्षपाके ॥ को आकाश
 उचियाजिके ॥ आवडतयाते ॥ ६५ ॥ तै विविध विधा अवस्था ॥ यात नियाजिणोनि पक्षपाके ॥ मज्ञा फळतया अर्थ ॥ वेझदे
 णेजे ॥ ६६ ॥ तै दसू लगाचे रव ॥ जेथे चायुगदं रव ॥ आणि जुझु अलौकिक ॥ पांचवगुण ॥ ६७ ॥ आदित्याची झाडे ॥
 सदा ससुरवसूया कड ॥ तै विममोरशत्रुपुंड ॥ हाणेजे को ॥ ६८ ॥ माहवनामय तैसी ॥ रिपुपाठीनि दिजे तैसी ॥ चुक्रवि
 पाव ॥ ओ० ६५ युद्ध ॥ ओ० ६६ सदा ॥ ओ० ६७ मोतेवणी ॥

जेसेजेसी ॥ समरंगणी ॥ ६७ ॥ हासत्रियाचेया आचारी ॥ पंचवारुणेद्रुअवधारी ॥ चहुंरुषायांशिरी ॥ सत्तिजेसी ॥ ६८ ॥
 आणिलेभिफुल्लेफळे ॥ शांतिवयाजेसीमोकळे ॥ काउदारपरिमळे ॥ पद्याकर ॥ ६९ ॥ नानाआवडेचिनिभापे ॥ चांदणे-
 मलतेणेंयेपे ॥ सुटिलांचेनिमंकल्ये ॥ तेसंजेदेणो ॥ ७० ॥ तेउमपगादान ॥ जयसाहावेगुणरत्न ॥ आणिआज्ञेकरायन-
 न ॥ होणेंजेका ॥ ७१ ॥ पोष्टनिअवयवआपुले ॥ करविजतीमानविले ॥ तेविशालेलाभिविले ॥ जगजेसोगणे ॥ ७२ ॥
 तयानामईश्वरमावा ॥ जोसर्वसामर्थ्याचाठावा ॥ तोगुणभाजिरवा ॥ सातवाजय ॥ ७३ ॥ ऐसेंजेशायांदिक्तां ॥ इहो
 मातगुणविशरवी ॥ अबलहतसतसत्कृषि ॥ आकाशजेंसं ॥ ७४ ॥ तेसंसमगुणीविचित्र ॥ कर्मजजगीपवित्र ॥ तंसहजजा
 णक्षेत्र ॥ स्वत्रियाचे ॥ ७५ ॥ नानाक्षत्रियनहेनरु ॥ मोसलसोनयाचायोरु ॥ हाणोभिगुणस्वर्गआधारु ॥ सानांयिया ॥ ७६ ॥
 नातरिसमगुणार्णवी ॥ परिवारलोखरवी ॥ होक्रियानक्षेत्र्या ॥ मोर्गतमेता ॥ ७७ ॥ कागुणाचेसातहीवोधी ॥ होक्रयान
 गंगाजरी ॥ तयामहोदधीचियाआगी ॥ विलसेंजसी ॥ ७८ ॥ परहबहुअसोदेख ॥ शौर्यादिगुणान्यत्र ॥ कर्मगोनसर्गक
 स्वजतीसी ॥ ७९ ॥ आतांवेश्याचियेजाति ॥ उचितेंजमहामर्ता ॥ तेऐकेंनक्तो ॥ क्रियासोगो ॥ ८० ॥ इतिगोर
 स्वर्वाणिज्यवेश्यकर्मसंभावज ॥ परिचयात्मकमश्रुस्यापिस्वभावजे ॥ ८१ ॥ तद्विस्मर्तोजनागर ॥ यथाभाडव
 लाचाआधार ॥ येउनिनामअपार ॥ मेळवोणेंजे ॥ ८२ ॥ किंवहुनाहूर्विजं ॥ गोधनगरयापेते ॥ कासमयाचिचिक
 णें ॥ महायवस्तु ॥ ८३ ॥ येउलालाचिपादवा ॥ वेश्यांतेंकमाचामळावा ॥ हावेश्याजतिस्वभावा ॥ आनुत्ताजाणा ॥ ८४ ॥ आणिव
 शपक्षत्रिषास्यणा ॥ होहजजन्मेतान्दिवण ॥ ययांचेजशक्यवृषण ॥ तेश्रुदकसं ॥ ८५ ॥ पौद्वजसेवपरोते ॥ धावणेनाहीरु
 पाव ॥ ओं ॥ ७९ जातासी ॥ ७

द्राने ॥ एवं च पुर्वोचिने ॥ दाविनां कर्म ॥ ८५ ॥ श्रुत्वा ० स्वस्वैकर्मण्यभिरतः संश्रित्वा हि लभन्त नरः ॥ स्ववर्गमभिरतः सिद्धिं
 यथा विदति तच्छृणु ॥ ८५ ॥ दीपं आनादयो निविचस्पृणा ॥ वेगच्छालियावृणा ॥ उचिन्त अस कुर्यात् ॥ ८६ ॥ देव
 नातिरज्जुदत्तुता ॥ पाणिना उचिन्त सारिता ॥ सारिते सोपादुस्तता ॥ सिद्ध उचिन्त ॥ ८७ ॥ ते संवर्णा अभिवर्षा ॥
 जंकरणीय आलु असे ॥ गोरया अगजसे ॥ गोरपणा ॥ ८८ ॥ तथा स्वभावो वर्धना कस्मी ॥ शारद्व्या च निभुर्वेवरा
 न्मसा ॥ मृत्तना वयलागी न्मसा ॥ अतुल्य कज ॥ ८९ ॥ ये अपुनं चिरलयिते ॥ यूपपार शिवया च निहाते ॥ ते स्व स्व
 कर्म आपते ॥ शास्त्र्य करव ॥ ९० ॥ जै सोदिनी अस अपुलिया वार्धा ॥ परिदोषी ण भगना ही ॥ माग नला हता
 कां शिपांयी ॥ अमता होये ॥ ९१ ॥ ह्यणो निजानि वशं सात्तार ॥ सह ज्ञ असे जो अधि कर ॥ तो अपुला लिया शास्त्र
 गोचर ॥ आपण कीजा ॥ ९२ ॥ संगयरी चा चिन्तवा ॥ जिकिडान्क यादो वर्धा दिवा ॥ तरघिता काय पाडवा ॥ आडक अस
 ॥ ९३ ॥ ते स्व स्वभाव भागा आले ॥ वरा शास्त्र्य कर कन्द ॥ तो विहित जो अपुनं ॥ आन्तरणा ॥ ९४ ॥ परिभाळ सभा
 दुर्ना ॥ फळ काम दव दुर्ना ॥ ओं गेजो वें माडर्ना ॥ ते ये चि भ्रम ॥ ९५ ॥ वार्धा पाडुने पाणी ॥ नेण आनाना वाहणी
 ते साजाय आन्तरणी ॥ व्यवस्था नि ॥ ९६ ॥ अनुना जाया परी ॥ ते विहित कर्म स्वये करी ॥ तो सोसा चारु लुहा
 री ॥ पैरा होये ॥ ९७ ॥ जं अकरणा आणि निबिद्धा ॥ नवचे चि कां हो संवंधा ॥ ह्यणो निभवा विरुद्धा ॥ मूकला तो १८
 आणि काम्य कमा कडे ॥ न परत चि जेय कोडे ॥ ते थचं दना चे हा रवेडे ॥ नले विलो ॥ ९९ ॥ यरी नित्य कर्म नव ॥ फळ
 त्या गेवें चले सर्व ॥ ह्यणानि सोसा चो शिव ॥ ना कुला हो ॥ १०० ॥ एसे निशभा रमी संसारी ॥ साडिना तो अवध
 पाठ, ओं. ०७ पैल. ओं. १८ अकरणीया, ७,

शी ॥ वैराग्यमोक्षाच्चादौ ॥ उभातुक् ॥ १ ॥ जेसकल भाग्यार्थसीसा ॥ सोसुलाभाविजेयसा ॥ नानाकर्मसागंशुसा ॥ से
वदुजेय ॥ २ ॥ मोक्षफळेदिधलीबोल ॥ जेसकल नतरुत्तेकुल ॥ नयेवैराग्येनैर्वापाउल ॥ संवरुजसा ॥ ३ ॥ पाहोआल्य
ज्ञानसुदिनाचा ॥ वाधावासागतयअरुणाचा ॥ उदयत्यवैराग्याचा ॥ दावोपावे ॥ ४ ॥ निंबदुनाआत्मज्ञान ॥ जेणो
हानायनिधान ॥ तवैराग्यदिव्याजन ॥ जीवेनेतो ॥ ५ ॥ ऐसीसास्यार्थयोग्यता ॥ सिद्धिजायतयापंडुसुता ॥ अमु
सरोनिविहता ॥ कमायया ॥ ६ ॥ हेविहितकर्मपादवा ॥ आपुन्नाअन्यबोलावा ॥ आगिहोचिपरमसेवा ॥ मजसवा
त्यकाचि ॥ पैआयवाचिभोगेसि ॥ पतिव्रताकडंमयेसी ॥ भूतयाचिनामंजरी ॥ नपेनियकुली ॥ ७ ॥ काबाळका
येकीमाये ॥ वाचोनिजिणकायआहे ॥ द्यणोनिसेविजेकनोहोये ॥ पानाचाभय ॥ ८ ॥ नानापाणिद्व्यणोनिमासा ॥ रागा
नसांडितांजसा ॥ सर्वतोर्थसवसा ॥ वरपडाजाला ॥ ९ ॥ नमोभाग्नियार्थविहता ॥ उपायअसेनविभवता ॥ ऐसाकी-
जेकीजगन्नाथा ॥ आभारपड ॥ १० ॥ अगाजयाचविहित ॥ नेदुंशराचमनोरात ॥ द्यणोनिकेलियाभिप्रात ॥ सांपद-
यिता ॥ ११ ॥ पैजीवाचकसीउतरला ॥ नेदारीकंगोभावेणजाला ॥ सिसेवोचनयामबली ॥ विहेजेवी ॥ १२ ॥ तेसेसा
मीचियामनोभावा ॥ ननुकिजेहोचिपरमसेवा ॥ योगंगपाडवा ॥ वागिज्यवरण ॥ १३ ॥ अमुंयतः प्रवृत्तिर्हाना
येनसर्वभित्तन ॥ स्वकमणानमम्यर्थेभिद्विंदनिमानवः ॥ १४ ॥ टीठ ॥ द्यणोनिर्विहनांकयाकला ॥ नद्वतयाचिसु
पापाछिला ॥ जयापासुनिकाआली ॥ आकारासुते ॥ १५ ॥ जोअविदेविनयार्थधिया ॥ गुंडमिजववाहलिया ॥ रेवक
वीतसेनीगुणिया ॥ अहकाररज्जु ॥ १६ ॥ जेणजगहंसमस्त ॥ आनबाहेरीगुणभंगिन ॥ जालेआहेहोपजान ॥ मने
पार ॥ ओं ४ पै ॥ ओं १३ तेसासेवंनकरुहो ॥ ओं १३ विहितेजोर्न ॥ ४

जे ॥ १७ ॥ नचासवात्मनांदंभरा ॥ स्वकर्मकुसुमार्चविश्रा ॥ पूजाकलहासअगारा ॥ तायात्मागी ॥ १८ ॥ हांगांनिनयनि
 रिस्मलेनिआत्मराजे ॥ वेराग्यसिद्धिदेज ॥ पसायतया ॥ १९ ॥ जियेवरास्यदश ॥ दुःस्वराचापयउर ॥ २० ॥ तरेहागे
 देजेसे ॥ वातहोये ॥ २० ॥ माणनाथाविद्याआधी ॥ विरहिणीनजिणवार्धा ॥ तेससरवजानकदि ॥ दुःखाचिछणे
 २१ ॥ सम्यक्ज्ञानमुदंजता ॥ वेधेचित्तभूयता ॥ उपजेऐसीचायता ॥ बाधार्चिलाहे ॥ २२ ॥ हांगांनिमोक्षलासाला-
 गी ॥ जाअतवाहतसआगी ॥ तणस्तथर्मआस्थानागी ॥ अनुष्ठावा ॥ २३ ॥ अगोअथान्त्वधर्माविगुणः पन्धमा
 ललजुसिनात् ॥ स्वभावनिधनकर्मकुर्वनामातिकिन्विष ॥ २४ ॥ अगोआपलाहास्त्वधर्म ॥ आत्तरणीजरीविषम
 नरीपाहावातोपरिणाम ॥ फळेजणे ॥ २५ ॥ जसुखासुखीकडे ॥ कळितपाहाताआशमाहे ॥ एसात्त्वजिन्नोतरजोडे ॥ तेसिकेगा
 मदे ॥ २६ ॥ तेविस्वधर्मसाकडे ॥ देखांनिकलाजरीकुडे ॥ नरोसोत्ससरवाडु ॥ अनरन्माकी ॥ २७ ॥ आणिआपली
 माथ ॥ कुजुजरीआहे ॥ नरीजोर्जनोहे ॥ स्नाहकुर्दकी ॥ २८ ॥ चरंजियापराश्रिया ॥ रसहूनवरविद्या ॥ तिया
 क्षायकसविद्या ॥ बाळकतेणे ॥ २९ ॥ अगापाणियाहनिबूहवे ॥ तुरंगुणकीरआहे ॥ गरिर्मनोकायहोये ॥ असणे
 तये ॥ ३० ॥ पेंआद्यविद्याजगजिविष ॥ तेविषकीडियापरुष ॥ आणिजगासूखतेदूरव ॥ मरणदेनया ॥ ३१ ॥ ह-
 णोनिविहितजयाजणे ॥ फ्रिदेससारचंधरणे ॥ क्रियाकुठारतरिनेणे ॥ तेचिकरावी ॥ ३२ ॥ येरापराचरावरविद्या
 ऐसहोईलदेकलेया ॥ पायांचेचालणेडोइया ॥ केलजेस ॥ ३३ ॥ यालागीकर्मआपल ॥ जजातस्त्वभावैअसेआल
 पाठः ओं १७ जेसं ओं २१ बाधा. छ.

तेकरतेणेजिनिले॥कर्मबंधते॥३४॥आणिस्वधर्मचिपाळावा॥परधर्मतोशाळावा॥हानिमहीपाडवा॥नकीजेचिंपे
॥३५॥नरीआत्माहृदनेहे॥तंवकर्मकरुणेंकांदाये॥आणिकरुणेतेंथआहे॥आयासआधि॥३६॥स्त्रो० सहजं क
र्मकतेयसदापक्षपिनत्यजेत॥सर्वारंसाहिदोषेणधूमनाधिरिवावृताः॥३८॥दृ० ह्यणोनिन्नम्रतियेकमी॥आ
यांसजहीउपक्रमी॥तरीकायस्वधर्मो॥दोषसागो॥३७॥अगाउजूवादाचालावे॥नहीपाथचिभिणवावे॥नोआ
उरजेथंवावे॥तहेंतेचि॥३८॥पेंसिळाकांसिदोरिया॥दादणेंयेकयनजया॥थरजेवाहानाविसावया॥मिळिजे
नेधेपे॥३९॥येहूवैकणाआणिधूमसा॥कांडिताहीसोसमरसा॥जेचिरधनश्वानमासा॥तेचिहवी॥४०॥दधि-
जळानियायुसळणा॥व्यापारसांरिवृचिविचसणा॥वाळुवेतिळायाणा॥गाळणेंयेक॥४१॥पेंनित्यहोमदेयाव
या॥कामेरागिस्तवावया॥फुकिताधूमधनजया॥सागणेंतेचि॥४२॥परीधर्मपतीयागडी॥पोसिताजरीये-
कीबोदी॥तरिकांअपरबडी॥आणांविआगा॥४३॥हांगापढींलागलायाई॥मरगानचेंकुचिपाहो॥नरिसमा-
रुळाकाई॥आगळेंनकीजे॥४४॥कुळरुत्रीदांडयाचेघाये॥परघरिगांलियाहिजरिसाहे॥तरिस्तपतिनवा
चे॥त्यजिलेकी॥४५॥तेसंआवडतहीकरण॥नर्मपजेशिणल्याविणें॥नरिविहितवारकाणें॥नालेभारी॥४६॥
वरिणेंडेचिअमुतयेनां॥सर्वस्ववेचिकांपडुसता॥जेणेंजोडेजीविता॥अस्तयल॥४७॥यएकान्द्याभालवचुनि
विषयियावेघेउनि॥आत्महत्येसोनिमोनी॥जाधियेजेणें॥४८॥तेसंजाचुनियादेदिये॥चुनिआयुधानेनिदे-
ये॥सांचलेयापीआनआह॥दुःखावाचुनि॥४९॥ह्यणोभिरावास्वधर्म॥जोकरिताहिरांनियेअस॥उचिके
पाठ. ओ. ४५ अकुरु. ओ. ४५ सादिले. ओ. ४६ उणें. ७

७

७

७

७

७

७

७

७

देहलपरमा ॥ पुरुषाय राज ॥ १५० ॥ यातारणो हरिदो ॥ स्वधर्मा विधेयमहरं ॥ न विमो विमसकरो ॥ मिदुमनत्रजसा ॥
 कानावो भिजेसी उदधीना ॥ महाशरीरं दिव्यायथा ॥ न विमो विजेतयाद्विदि ॥ स्वकस्य यथ ॥ १५१ ॥ भगवतः पुराणं किं
 जा ॥ स्वकमा चिपामुहापूजा ॥ तापलादं वातभरजा ॥ सोऽडोकरुने ॥ १५३ ॥ शुद्धसन्धानि यानिना ॥ भाणि भापु-
 लीउत्कवा ॥ भवस्तुगकाळकृदा ॥ एसेदार्ग ॥ १५४ ॥ जेवराग्ययणबाले ॥ सागासमिद्धिरुयकले ॥ किबहुना आ-
 पुले ॥ मेळवीरवागे ॥ १५५ ॥ भगजितिलियाहभाय ॥ पुरुषसवधसाहाय ॥ कजाजालिजनाह ॥ नेआनसागा
 ॥ १५६ ॥ श्लो० असक्तबुद्धिः सर्वत्र जितात्यागिरतस्तुहः ॥ नेकस्यमिद्धिरमासन्धसिनाधिगच्छति ॥ १५७ ॥ टीक
 तरिदहादिक्कहंससार ॥ सर्वहोमाडलसजगुंकर ॥ तथेनातुदतावागुर ॥ वाराजसा ॥ १५८ ॥ पपरिगाकास्विय-
 वेळे ॥ फळदेवनादेवफळे ॥ नधरतसंस्तुहुरुळ ॥ सवनहाय ॥ १५९ ॥ पुनोवत्तकलत्र ॥ हेजालिगुहोस्वतंत्र ॥ सा-
 देनह्यणेपात्र ॥ विषचिजेसे ॥ १६० ॥ हेअसाविषयजार्ता ॥ बुद्धिपाकलोरीसाधार्ता ॥ पातुनयद्रुमिकार्ता
 तदुयात्वारिध ॥ १६१ ॥ ऐसयाअतः करण ॥ बाल्येतातगानिआण ॥ नमोदीसपर्यामण ॥ हासीजिमी ॥ १६२ ॥ ते
 सैरक्यापियेसुवा ॥ साजिवडेचित्तकिरार्हा ॥ करुनिवधीनेह्रा ॥ आत्मगान्ता ॥ १६३ ॥ तेस्कादुमादप्रस्तुह ॥ निग-
 णंजालेचिआह ॥ आगीदुडपलियाधुय ॥ राहिजजिसे ॥ १६४ ॥ ह्यणांभिनियमिनिगामानसो ॥ स्तुहानासो निजा
 यआपेसी ॥ किबहुनातोऽसी ॥ स्तोमकापये ॥ १६५ ॥ पुंअन्यथावोयआयवा ॥ सावळोनितापाडवा ॥ बोयमा
 वीचिजीवा ॥ वावहाये ॥ १६६ ॥ थारवणीवेचसर ॥ तसंभोगनाचीनपुर ॥ नयेनवसुपकर ॥ काहोचिकरु ॥ १६७ ॥

निकारि

पात्र, ओ. ५२ नोका. ओ. ५३ झड. ओ. ५४ अहा. ओ. ५५ वाजं. ओ. ५६ एसेतेगा. ओ. ५७ विगी. बोधी. ओ. ५८ दहादुश्य. ओ. ५९

ऐशी कर्मसाध्यदशा ॥ होय तैयवीरेशा ॥ मग अगुरु आपेसा ॥ सेवे निगा ॥ ६७ ॥ रात्रीची पाहरी ॥ वेचलिय-
 अवधारी ॥ डोळ्यात भारी ॥ भिळे जेसा ॥ ६८ ॥ कां येऊ नो फळाचा घड ॥ पारुषी केळीची वाद ॥ अगुरु सेवेनि
 करी पाड ॥ सुख स्तरेसा ॥ ६९ ॥ मग अलिगिता पोणया ॥ जे साउणी वसाडीच दुमा ॥ तें सहायवीरतासा ॥ शु-
 कल पातया ॥ ७० ॥ तक्षा अबाधमात्र अस ॥ तो नवतया ह्मणा नश ॥ नैयमिशा सवेज स ॥ आचारं जाये ॥ ७१
 तैसी अबोधार्थि कुशी ॥ कर्मकर्ता काय ऐशी ॥ विपरीत असै जे सा ॥ गाभिणी मारिली ॥ ७२ ॥ तैसी चि अबाध
 नाशा सवे ॥ नशि क्रिया जात आयवे ॥ ऐसा सभूळ सभव ॥ सन्यास हा ॥ ७३ ॥ येणें मूढा ज्ञान सन्यास ॥ इश्या
 ची जयदावा पुस ॥ तथ बुद्धावत आपे स ॥ तोचि आहे ॥ ७४ ॥ चंद्रिलिया बरि पाही ॥ स्वमी चिया ति येडोही ॥ आ-
 पण यात काई ॥ का ह्म जाई ॥ ७५ ॥ तैसी आता जाण न ॥ हे सरलुत शब्द स्वम ॥ जाला जातु जया वहीन ॥ चि हा
 काश ॥ ७६ ॥ सुरवाभासो सं आरि सा ॥ परना ने निया वीरेशा ॥ पाहाने पणें वीर जे सा ॥ पाहाना तके ॥ ७७ ॥ तै-
 सेने पणें जे गले ॥ ते पणें जाणें हो नेन ॥ मग निश्चि यउ रले ॥ चिन्मात्र चि ॥ ७८ ॥ तैय स्वसा वें यजु जया ॥ ना हो को-
 णी चि क्रिया ॥ ह्मणों नि यव दतया ॥ ने कर्म्य ऐसा ॥ ७९ ॥ तै आ पुने आण पें ॥ अस ते चि हा उनि हा रपें ॥ तर गका
 वायुलोपें ॥ समुद्र जे सा ॥ ८० ॥ तै सैन हाणें भि पजे ॥ तैने कर्म्या भिही जाणिजे ॥ सर्वे सिद्धी न सहजे ॥ परम ह्म वि-
 ॥ ८१ ॥ देउळ्या चि का माकळ स ॥ परम गंगे सिंधू मवेश ॥ कां मग गंगे रूही कस ॥ सोळा वां जे सा ॥ ८२ ॥ तै सै आ-
 पुने ने पणें ॥ प्रीति जे कां जाणें ॥ नें हि गिळुनि असणें ॥ ऐसी जे दशा ॥ ८३ ॥ ति ये परतें काही ॥ नि पजणें ये यसा
 पाठ ॥ ओ० ६० होद जेतया ॥ ओ० ६१ बुभुल्ल ॥ ओ० ७४ मुकमान ॥ ओ० ८० आरोंपे ॥ ओ० ८२ उपरम ॥ छ

हीं॥ ह्यणो विह्यणिपे पाहीं॥ परमसिद्धीं॥ ८६॥ श्लो॥ सिद्धिमासो यथा ब्रह्म तया भोति निबोधमे॥ समसेनैर्गकं तयो
 निष्ठा ज्ञानस्य यापरा॥ ८७॥ टी० परिहरे वि आत्मा सिद्धि॥ जोकाणी भाग्यनिधि॥ अंगुरुकृपालब्धि॥ काळोपावे
 उदयजतो दिनकर॥ अकाशचि आन आधार॥ कांदोपसर्गक पूर॥ दोपचि होये॥ ८८॥ नया लवुणा चो कणिका॥
 मिकुत रवे वो उदका॥ उदक चि होऊ निदखा॥ नाक जवि॥ ८९॥ कानिद्रित तचे विलिया॥ स्वमसि निज वाया म
 जाऊ नि आपण पया॥ भिळजे सा॥ ९०॥ ते संजया कोण हा सिंदवे॥ गुरुवाक्य अवाणा सवे॥ हे न गिळो नि किसेवे॥
 आपण पावनी॥ ९१॥ तया सीमगक म करणे॥ हें बोल जेल चि करेण॥ आकाशा येण जाणे॥ आहे काई॥ ९२॥ ह्य
 पोनि तया मिकां हो॥ विशुद्धी करे नही॥ परि ऐसें जरि हे कां हो॥ न कूजया॥ ९३॥ काना वचना चिये मेदा॥ स-
 रि सा चि पै किरीटी॥ वस्तु होउ नि डनि॥ कवण ये कजा॥ ९४॥ ये ह्वो स्वक मन्चे निव नही॥ काव्य नि पिडू चियाइ
 धनी॥ रजत मकीर दो नही॥ जा नि लो आधी॥ ९५॥ पुन विच प रलो क॥ यथा नि हींचि अपि मिलाव॥ परा होय पाद
 क॥ हे हे जालें॥ ९६॥ दीद ये मे रा पदार्थी॥ रिगतां विहाळ लो होतो॥ नये अत्याहार तीर्थी॥ न्हाणि लो कर॥ ९७॥
 आणि स्वधर्माचे फळ॥ दुम्बरो अपुनि सकळ॥ नेऊ नि कळे अढळ॥ वेरा गपद॥ ९८॥ ऐसी आत्म साक्षात्का
 री॥ सा भेजाना चिये उजरी॥ नेसा मयी करि पुरी॥ मेळी विली॥ ९९॥ आणि ते चि समयी॥ सद्गुरु मेढले पाही॥
 ते वीचि नि हीं कां हो॥ वंचि जेना॥ १००॥ परि वोखद ये न रेवे॥ कायला मे आपुला गवो॥ का उदय जता चि दिवो
 मध्या न्ह होय॥ १०१॥ सस्ते नो आणि वो लुटे॥ बीज ही पोरे लो गोमटे॥ तारि आला रफळ मेटे॥ परि वेळे कांगा १०००

प्राठः ओमः ८८ द्वा ऊनि, ओं ९१ जव ओं ९६ घेऊनि, घ

छ

छ

जोडलाभार्गसंजल ॥ भिनलासुसंगाचाहीमेळ ॥ यरिपाविजेवांजुनिवेळ ॥ लागेविकीं ॥ १ ॥ तेसावैराग्यलाभजाला
 वरिस्मदुरुहोसदला ॥ जीवोअकुरकुटला ॥ विवेकाचा ॥ २ ॥ तेणब्रह्मएकआर्थी ॥ येरायवोचिन्माति ॥ हेहीकी
 रमतीति ॥ गाढकेली ॥ ३ ॥ पारितेचिजेपरब्रह्म ॥ सर्वात्मकसर्वोत्तम ॥ मोक्षान्विहीकाम ॥ मरेजेथें ॥ ४ ॥ ययातिन्हो
 अवस्थापोटी ॥ जिरवीजोगाकिरीटी ॥ तथाज्ञानासिहीमिती ॥ हेजेवस्तु ॥ ५ ॥ ऐकाचिंएकपणसंरं ॥ तेथआनंदक
 णहीरिरे ॥ कांहीचिनुसोनुरे ॥ जेंकांहीगा ॥ ६ ॥ तियेब्रह्महीएकपणें ॥ ब्रह्मचिहोऊनिअसणें ॥ तेकसेचिकरू
 भितेणें ॥ पाविजेप ॥ ७ ॥ सुकेलियापासो ॥ वोगरिलेंषडसी ॥ नोत्तमप्रतिप्रासो ॥ लाहेजेविं ॥ ८ ॥ तेसावैराग्या
 चाचोलावा ॥ विवेकाचातोदिवा ॥ अंबुथितोआत्मदेवा ॥ कादींचितो ॥ ९ ॥ तरिभोगिजेआत्मकही ॥ येवदीयो
 रयतेचीसिद्धी ॥ जयाचाआर्गोनिरवधी ॥ लेणेंजाली ॥ १० ॥ नोजेणेक्रमेब्रह्म ॥ होणेंकरीगासुगम ॥ तथाक्रम
 चेंआतांवर्म ॥ आर्दकसांगो ॥ ११ ॥ स्तो० बुध्याविशुद्धयायुक्तोधृत्यान्मानियम्यच ॥ शब्दादींस्विषयांस्त्यक्कारा
 गद्वेषोव्युदस्यच ॥ १२ ॥ टी० नरिगुरुलागिलियावाना ॥ यद्रूनविवक्तोद्यतदा ॥ धुक्रुनियांमळकदा ॥ बुद्धीचातेणे
 ॥ १३ ॥ मगशहूनेउगळिली ॥ प्रभाचंद्रंआळिगिनी ॥ तेसांशहूलेजडनी ॥ आपणपावुंहु ॥ १४ ॥ सांडनिकळेंदो-
 न्ही ॥ प्रियासोअनुसरेकाभिनी ॥ हंदृत्यारेस्वचिंतनी ॥ यडलीतेसी ॥ १५ ॥ आणिज्ञानांमंजिझार ॥ नेवानवा-
 निंदतर ॥ इंद्रीकलेथार ॥ शब्दांदकजे ॥ १६ ॥ तेरशिभजाळकादुलुया ॥ मृगजळजाग्रत्या ॥ तेसंष्टितरोधेन
 या ॥ पचाहीकले ॥ १६ ॥ नेणतंअधमाचियाअन्ना ॥ खादुलियाकाजेवमना ॥ तेसांवाकविनींमवासना ॥ इंद्री
 मारु ॥ ओ० १४ गुरुसामी ॥ ओ० १६ ध्यानि ॥ ओ० १७ इंद्रियोवर्षवी ॥

यो विषयः ॥ १७ ॥ मरुत्तयगा हन्ती चोरवदे ॥ ला विन्नांगे च निनदे ॥ ऐसी प्रायश्चित्तं धुवदे ॥ क्लियेयो ॥ १८ ॥ पाविं
 सात्त्विके धरे तेणे ॥ शोभारली तिये करणे ॥ मरुत्तयगा हन्ती चोरवदे ॥ ऐसी प्रायश्चित्तं धुवदे ॥ क्लियेयो ॥ १८ ॥ पाविं
 सोरुत्तयगा हन्ती चोरवदे ॥ ला विन्नांगे च निनदे ॥ ऐसी प्रायश्चित्तं धुवदे ॥ क्लियेयो ॥ १८ ॥ पाविं
 तयां लागी न होये ॥ सा भिच्छा ॥ २१ ॥ या परिदृष्टा निह्नी ॥ रागद्वेष किं वदी ॥ त्यज्जुनि गिरि करपाटी ॥ निकुंजी विस ॥
 २२ ॥ श्लो ० विविक्त सवील व्याशायितवाक्कायमानसः ॥ ध्यानयोगपरे नित्यं वैराग्यसमुपाश्रितः ॥ २३ ॥ श्री ०
 गजबजासा इलिया ॥ वसवीवनस्थलिया ॥ अगाचिचासादिया ॥ एकलेया ॥ २३ ॥ शमदमादिकी रेवळे ॥ न
 बोलणे चित्तावळे ॥ गुरुवाक्याचे निमिच्छे ॥ नेणवेळ ॥ २४ ॥ आणि आगावळयावे ॥ नातरि स्फुधा जावे ॥ कंजि
 मेचे पुरावे ॥ मनोरथ ॥ २५ ॥ मोजन करितां विरवी ॥ यथाति होतें न लेखी ॥ आहार शंभितां सतोषी ॥ मापन सूये ॥
 २६ ॥ अशनाचे निपावके ॥ हारपता प्राणपोरवे ॥ इतु कि याचि भाग सोदके ॥ अशन करी ॥ २७ ॥ आणि परपुरुष
 कां भिली ॥ कुळवधू आगन घाली ॥ निद्रालस्यान मोकली ॥ आसन ते सें ॥ २८ ॥ दंडवताचे निमसंगे ॥ सुधी हन-
 अगलागे ॥ वाचूनि येने ये ॥ राभस्य तेने ॥ २९ ॥ देहनिवाहा पुरेते ॥ राहादवी हाता पायाते ॥ किबहुना आपते ॥
 सबाह्य फले ॥ ३० ॥ आणि मनचा उबरा ॥ हन्ती सोदे रवेने दीविरा ॥ तेथे केवळ व्यापारा ॥ अवकाश असे ॥ ३१ ॥
 ऐसे निदेह वाचा मानस ॥ हंजिणो निवात्य प्रदुश ॥ आकळिले आकाश ॥ ध्यानचें तेणे ॥ ३२ ॥ गुरुवाक्य उचि
 ला ॥ बोधीनि चर आपला ॥ न्याहाळी हातीं यतला ॥ आरि साजेसा ॥ ३३ ॥ पें ध्याता आपण पंचि परी ॥ ध्यान रुचे

वृत्तीमाझारी॥ ध्येयत्वं अवधारी॥ ध्यानरूढांगा॥ ३६॥ तेथे अथ ध्यानगता॥ यथा तिहायेक रूपाता॥ होय तं परं दुस्-
ता॥ कीजें तेगा॥ ३७॥ ह्युणोनि तो मुमुक्षू॥ आत्मज्ञानी जाला दुस्का॥ परिशुदांस्तु निपस्का॥ योगाभ्यासाचा॥ ३८॥
अपानरंध्य दुया॥ साद्वारोधनजया॥ पाष्ठापि पिडनियों॥ कावरसूळ॥ ३९॥ आकुंचनि अध॥ देउनि तिहू बंध॥
करुनि येक वद॥ बाधूमेदी॥ ४०॥ कुंडलनि जागुनि॥ सध्या वि काशूनि॥ आधारादि मेदुनी॥ ओं वरि ३९
सहस्रदळाचा मय॥ पर्युषं वर्षो निचागा॥ तो मूळवरी गोय॥ आणूनि यो॥ ४१॥ नाचतया पुण्यगिरी॥ विह्वरवा
चारवापरी॥ मनपवनाची रवीच पुरी॥ वादुनिया॥ ४२॥ जालिया योगाचा गादा॥ मेळावास्तु निहायुदा॥ ध्यानमा
गिली कडो॥ स्वयं सकल॥ ४३॥ आणि अशुभयोगदानी॥ इत्ये आत्मतल जानी॥ पैवी हो आवया निविमी॥ अधि
चित्ते॥ ४४॥ बीन राग ते सारि रवा॥ जाडुनि दिवला सरवा॥ तो आघविया चिभूमिका॥ सवेचाले॥ ४५॥ या हा वें-
दिसे तं वरि॥ दिदी तें न संडी दीपजरी॥ नरेंकें अवसर॥ ते स मोदीं मवत लया॥ वृत्ती ब्रह्मजा
यलया॥ तं वै गगन अर्थ तया॥ संगकंचा॥ ४६॥ ह्युणोनि सैव राग्य॥ ज्ञानाभ्यास तो सभाग्य॥ करुनि जाला
योग्य॥ आत्मलाभा॥ ४७॥ ते स वै राग्याची अंगी॥ बाणुनिया वज्रांगी॥ राजयोग तु रंगी॥ आरूढ ला॥ ४८॥ व-
रि आडपडिलें दिदी॥ साने थोर नवदी॥ ते बळि विवेक मुष्टि॥ ध्यानचें रंगडे॥ ४९॥ ऐसे नि संसारणा आत॥ आ
धारीं सूर्य ते सा असे जान॥ मोक्ष विजय अये वरत॥ हो आवया लागी॥ ५०॥ अन्तो॥ अहंकार बल दुर्पका मंत्रोपरि
ग्रह॥ विमुच्य निर्ममः शांता ब्रह्मसुखाय कल्पते॥ ५१॥ टी० तेथे आइवावया आले॥ दोष वैरी जे थोपडिले॥ तस्मा
पाठ॥ ओं... १९॥ आज्ञा॥ ४९

मजीणहिंते ॥ देहाहंकार ॥ ५१ ॥ ज्ञानमोकुलमारुनी ॥ जीवनेदीउपजवानी ॥ विचंबवीरवोडांचालुनी ॥ हा
 डांचिया ॥ ५२ ॥ तयाचदेहदुरेहाथा ॥ मोडोनियतलातोवारी ॥ आणिवळहादसरा ॥ मारिलावरी ॥ ५३ ॥
 जोविषयाचेनिनावे ॥ चोगुणहोवरीथावे ॥ जेणेभूतावस्थार्थावे ॥ सर्वत्रजगा ॥ ५४ ॥ तोविषयविषयाअ-
 थावो ॥ आद्यविषयादोषाचारवो ॥ परीध्यानरवडांचायावो ॥ साहेलुकेचो ॥ ५५ ॥ आणिमियविषयमासी ॥
 करीजयास्कराचीब्यक्ती ॥ तेचियालुनिबुयी ॥ आर्गजोवाजे ॥ ५६ ॥ जोभन्यागकुलवो ॥ मगअथमाच
 आउवो ॥ सूनिवायासांपडवो ॥ नरकादिका ॥ ५७ ॥ तोविश्वासमारितारिगु ॥ निवटुनिघातलादुपु ॥ ज-
 यचाअहाकपु ॥ तापसासी ॥ ५८ ॥ क्रोधाएसाभहादोष ॥ जयाचादखपरिपाक ॥ मरिजेतंवअधिक ॥ रि-
 ताहोयजो ॥ ५९ ॥ तोकाभकोणेचवारी ॥ नभेऐसेकलुगही ॥ कीर्तेचिकोधाही ॥ सहजेआले ॥ ६० ॥ सुखा
 चेताउणेजेसे ॥ होयकाशाखोदेश ॥ कामनाशालिनिनाश ॥ तेसाक्रोध ॥ ६१ ॥ ह्यणोनिकामवरी ॥ निमला
 जेथगोरी ॥ तेथसरलीवारी ॥ क्रोधाचीही ॥ ६२ ॥ आणिसमथआपुलाखोडा ॥ शिसवाहवीजेसाहोडा ॥
 तेसाभुंजोनिजोगादा ॥ परिग्रहो ॥ ६३ ॥ जोमाथानियालाणवी ॥ अगाअवगुणयालवी ॥ जिवेदाडीचेव-
 वी ॥ सहत्वची ॥ ६४ ॥ शिष्यशास्त्रादिविनासे ॥ मवादिमुदेचेनिमिसे ॥ यातलेआहातोफासे ॥ निःसगाजे
 णो ॥ ६५ ॥ घरीकुटुंबपणसर ॥ तरीवनीवन्यहोउनीअवतरे ॥ नागवीयाहोशरीरे ॥ लागलाआहे ॥ ६६ ॥ ऐसादुर्जय
 जोपरिग्रहो ॥ तयाचोफुडनिवावो ॥ भवीजयाचाउत्साहो ॥ भाभेतसेजा ६७ ॥ तेथअमानित्वादिआधव ॥ ज्ञानगुणचजमळाव
 पाठ, ओं. ५२ जेवों. ओं. ५३ कंदर्प, ओं. ५९ कामा. ७

नेकेवल्यदेभिंचेआशवे ॥ राकजैसेआले ॥ ६८ ॥ तेदासम्यकज्ञानाचिया ॥ राषिवाउगाणनिनया ॥ परिवारहोदु-
 मिया ॥ राहानआंगे ॥ ६९ ॥ प्रवृत्तीचियेराजबिदो ॥ अवस्थामंदप्रमदो ॥ कीजनआहप्रतिपदो ॥ सुरुवाचेल्लेण
 ॥ ७० ॥ पुढावोयाचियेकाबीवरी ॥ विवेकदृश्याचीमांदिसारी ॥ योगसूयिकाआरतीकरी ॥ येतीजेसिया ॥ ७१ ॥ ते
 यक्रुद्धिमिद्धीतोअनेगे ॥ हुंदेभिळतीप्रसंगे ॥ नित्यपुण्यवर्धाआंगे ॥ नाहातसेतो ॥ ७२ ॥ ऐसेनिअहोव्यासारि
 रेवो ॥ स्वराज्ययेताजवळिके ॥ झळबनआहहरिरेवो ॥ निन्दालोक ॥ ७३ ॥ तेहोवैरियाकामंत्रिया ॥ नयासिया
 संस्थाणावया ॥ समानताधनजया ॥ उरेचिहीना ॥ ७४ ॥ हेनामलतेणेव्याजे ॥ नोजयातेह्येणमाझे ॥ तेनोड -
 वेचिकाहुजे ॥ अहितीयजाला ॥ ७५ ॥ पैआपुलियाचेकीसन्ता ॥ सर्वहीकवळनियांपंडसुता
 कहांनलगतीसमता ॥ धाडलीनेणे ॥ ७६ ॥ ऐसाजिनिनियारिगुवर्ग ॥ अपमानिलियाहजरा ॥ अपेसयायो
 गखुरंग ॥ स्थिरजाला ॥ ७७ ॥ वेराग्योचिंगादले ॥ आंगीत्राणहानभरले ॥ तेहीनावेकदिले ॥ तेह्माकरी ॥
 ॥ ७८ ॥ आपिनिवटिआनाचेंखंडे ॥ तेंदुजनाहोचिपुढे ॥ ह्युणनिहानआसुडे ॥ वृत्तीचाहो ॥ ७९ ॥ जेसेर-
 मोषधरवर ॥ आपुलकाजकूरुनिपुणे ॥ आपणहीनुर ॥ तेंसहानसे ॥ ८० ॥ देखोनिटाकितावावो ॥ धाव-
 नाथिरावपावो ॥ तेसाब्रह्मासाम्यियावो ॥ अश्यासमाई ॥ ८१ ॥ घडनामहोदधसा ॥ गगावगसाईजिसी
 काकाभिनीकातापामी ॥ स्थिरहोये ॥ ८२ ॥ नानाफळतिथेवेळे ॥ केळनीवादिमादळे ॥ कागावापुंदवळे ॥ सा-
 गजैसा ॥ ८३ ॥ तेसाआत्मसाक्षात्कार ॥ हाडलदेखोनिगोचर ॥ ऐसासाधनहातिथेर ॥ हळूचिठवो ॥ ८४ ॥
 पाव, ओं ७२ पीयूष, ओं ७४ तेवेळी, ओं ८१ गतिकतो, ओं ८१ सारखें, ७२

ह्यणैर्निब्रह्मेसीतया ॥ रेक्यात्तासमाधेन जया ॥ हातसेतेउपाया ॥ बोहटपुंड ॥ ८५ ॥ मगवेरगयार्चगोथकुङ्क ॥ ज
 ज्ञानाभ्यासांचेवार्धिक्य ॥ योगफल्लाचाहोपरिपाक ॥ दशजेका ॥ ८६ ॥ तेशातिपेगासुभगा ॥ संपूजय ॥ ८७ ॥
 आंगा ॥ तेब्रह्महोआवथाजागा ॥ होयतोपुरुष ॥ ८७ ॥ पुनवेहनिचतुर्दशी ॥ जेतुलुउणंपणशशी ॥ कासोबे-
 पाऊनिजेसी ॥ पधरावीवानी ॥ ८८ ॥ सागराहोपाणिवेगो ॥ संचरेतेरूपगे ॥ यरनिब्रह्मजेंउगे ॥ नेसमुद्रने
 सा ॥ ८९ ॥ ब्रह्माप्राणिब्रह्महोतिये ॥ योग्यतेतसापडआहे ॥ तेचिशोतिचेनिलबलाहे ॥ होयतेतोगा ॥ ९० ॥ पे
 तेचिहोणेनशेण ॥ प्रतीतीआलेजेब्रह्मपण ॥ तेब्रह्महोतीजाण ॥ योग्यतायेथ ॥ ९१ ॥ ब्रह्म ॥ ब्रह्मभूतः प्रसन्ना
 त्मानशोचतिनकास्ति ॥ समः सर्वेषु सुतेषु मद्भक्तिलभतेपरा ॥ ९२ ॥ तेब्रह्मभावयोग्यता ॥ पुरुषतोमगपड
 भूता ॥ आत्मबोधमभ्यन्ता ॥ पदोबोस ॥ ९३ ॥ जणनिपजरससाय ॥ तोतापहीजिजाय ॥ तेतेकाहोय ॥ प्रसन्न
 जेसी ॥ ९४ ॥ नानाभरतिथालगवगा ॥ शरत्कालीभाडुजगगा ॥ कागीतरहातोउपागा ॥ बोहटपुंड ॥ ९५ ॥ तेसा
 आत्मबोधीउदस ॥ करिताहोयजोअस ॥ तोहीनेयशम ॥ होउनिजाये ॥ ९६ ॥ आत्मबोधप्रशस्ती ॥ होतिषेदश
 नोरच्याती ॥ नभागीनसेमहोमती ॥ योग्यतांगा ॥ ९६ ॥ तकाआत्मत्वशोचवे ॥ काहीपावावयाकामवे ॥ हेस
 रूढसमभावें ॥ भरितेतया ॥ ९७ ॥ उदरायेतागभास्ति ॥ नानासुखव्यक्ती ॥ हारवीजनीदीसी ॥ आगिकांजवि ॥ ९८ ॥ तेवि
 उतीतयाआत्मप्रथा ॥ हेसुतमेदव्यवस्था ॥ मोडीतमोडातपाथी ॥ बासपाहेतो ॥ ९९ ॥ पाटियेवरीलअसरे ॥ जेसीपुसता
 येतीकर ॥ तेसीहारपतीमिदातर ॥ तयाचियेदुर्हा ॥ १०० ॥ तेसनिअन्यथाज्ञाने ॥ जियेयेपतीजागरत्वसे ॥ वि
 पाट ॥ ओं. ८५ पडिमा. ओं. ९५ सम. ओं. ९६ प्रसन्नी. ओं. ९७ आसले. ओं. ११० दिवा. ७

येदोन्दीकेलोलीने ॥ अथ ततोऽप्यन्तः ॥ १॥ मगतेही प्रवृत्तः ॥ बोधवाततोऽजित ॥ पुरलां बोधिं समस्त ॥ बुद्धो नि
 जाये ॥ जेसी सो जनान्या व्यापारी ॥ स्मृधा जित जाय अवधारी ॥ मगत्त सीच्या अवसरी ॥ नाहं चि होये ॥ १॥ नाना
 बालीनियावारी ॥ चार होत जाय थोडी ॥ मग पातला ताथी बुडी ॥ देऊ नि नसे ॥ ४॥ काजार्तो जे बडो होये ॥ तबत
 वनि द्वा द्वार पे ॥ मग जागी नलिया स्वरूपे ॥ नाहं चि होये ॥ ५॥ हेना आपुले पूणत्व सेटे ॥ जेथ च द्वासी वादी खुटे ॥
 तेथ शक्रू पस्त आटे ॥ निःशेष जेसा ॥ ६॥ तेसा बोध ज्ञान भिक्खिन ॥ बोध बोधें ये मज्जात ॥ सिमळलानेथ सादं
 त ॥ अबोध गेला ॥ ७॥ तेसा कल्याता चिये वेळ ॥ नदी सिधू चें पे उवळे ॥ मोद नि भरिले जेळे ॥ आब्रह्म जेसे ॥ ८॥ ना
 नागे लिया घट मठ ॥ आकाश ठाके येक वट ॥ काजळो निकारु काष्ठ ॥ वन्दे चि होये ॥ ९॥ नातर लेणिया चेदसे ॥ आ-
 दोनि गेलिया सुसे ॥ नायरूप भेदे जेसे ॥ सांड जेसे ने ॥ १०॥ हेही असो ने दुलथा ॥ हेस्मम नाही जालथा ॥ मग
 आपण चि आपणया ॥ उरि जेसे ॥ ११॥ तेसा सीयेक वाचुनिका ही ॥ तथा तथा ही सकट नाही ॥ हेचो थाम्तः पा-
 ही ॥ माझी नोलाहे ॥ १२॥ यर आर्त जिज्ञास अर्थार्थी ॥ हं मज्जती जिये पर्थी ॥ तेति न्हा पावो निचो थो ॥ ह्यणि पत
 आहे ॥ १३॥ येह वीं निजी नचो थो ॥ हेपहि लीना सरति ॥ पैमाझिये सहज स्थिती ॥ मत्तिनाम ॥ १४॥ जेने पण-
 माझ मकास्तु नि ॥ अन्यथा त्वं माते दाडनि ॥ सर्व ही सर्वो भजो नि ॥ बुझावो तसे ॥ १५॥ जे जेथ जेसे पाहो वैसे ॥ तथा
 तेथ तेसे चि असे ॥ हे उजिये दे कां दिसे ॥ अरवें दे जेणे ॥ १६॥ स्वमाचे दिमणे न दिमणे ॥ जेसे आपले नि असले पणे
 विस्वाचे आहना ही तेणे ॥ प्रकाश तेसे ॥ १७॥ ऐसा हास हजमाझा ॥ प्रकाश जो कापि अज्जा ॥ तो भक्ति यावो जा ॥ बोलि
 पाठ ॥ ओ २ होतं, ७

जेगा ॥ ह्यणोमि अनांचा वार्था ॥ हे आर्ति होऊनि याही ॥ अपेक्षणीय जे कांहीं ॥ तें मी चिकेला ॥ १९ ॥ जिज्ञास पुढां वारे
 शा ॥ हेचि होउनि जिज्ञासा ॥ मी कां जिज्ञास करे सा ॥ दाखवि ला ॥ २० ॥ हेचि होउनि अर्थना ॥ मी विमाझा अर्थ
 अजुनो ॥ करूनि अर्था मिधाना ॥ आणी माते ॥ २१ ॥ त्वं धेनुनि अज्ञानातें ॥ माझी भक्ति जे हवते ॥ ने दावी मज
 दखयते ॥ हृश्य करूनि ॥ २२ ॥ येथें सुरवि दिसे सुरवं ॥ याबोला का हो नचुके ॥ परि दुजे पण हलटिके ॥ आरि सा
 करी ॥ २३ ॥ दिवंचि द्रवि घेसाचें ॥ परि यतुलें हति भराचें ॥ जे येक नि असे तयाचें ॥ दोनी दावि ॥ २४ ॥ तें सा प्रव
 त्र मी चि मिया ॥ ये पत संधन जया ॥ परि दृश्य त्वं हवाया ॥ अज्ञान वशे ॥ २५ ॥ तें अज्ञान आतां फुटले ॥ माझे हृ
 ख मज मेटले ॥ निज बिंबी येक वटले ॥ प्रतिबिंब जे मे ॥ २६ ॥ पेंजे काही असे कि डाळ ॥ ते काही सोने नि अ
 टळ ॥ परिते काढगे लिया के वळ ॥ उरें जे मे ॥ २७ ॥ हांगा पूर्णिमे आधी कांथो ॥ चंद्र सावयव नाही ॥ परि तिथे दिव
 सीं मे दयाही ॥ पूर्णतात या ॥ २८ ॥ तें सा मी चि ज्ञान दारें ॥ दिसें परि हस्ता नरें ॥ मग दृष्ट त्वें सरें ॥ मियां नि मी ला
 से ॥ २९ ॥ ह्यणो नि दृश्य पथा ॥ अतीत माझा पार्था ॥ भक्तियोग च वथा ॥ ह्यणीत लागा ॥ ३० ॥ भक्त्या मा
 भिजाना निया वा ल्य अस्मित त्वतः ॥ ततो मात ततो ज्ञात्वा विदते नदनतरं ॥ ३१ ॥ टी० इया ज्ञान भक्ति सह
 ज ॥ भक्तयेक वटला मज ॥ तो मी चिके वळें ह तज ॥ अनुत हे आहे ॥ ३२ ॥ जे उभरुनियां सुजा ॥ ज्ञानियां तो आ
 त्मा माझा ॥ हे वोलिलो कपि ध्यजा ॥ सम माध्यायी ॥ ३३ ॥ ते हे कल्यादि भक्ति मियां ॥ आभागवत भिषे ज्ञ ह्यया
 उत्तम ह्यणो नि धन जया ॥ उपदेशिली ॥ ३३ ॥ ज्ञानी दयेत स्वसं विनि ॥ शेव ह्यणती शक्ति ॥ आह्मी परम भक्ति ॥

पाठ, ओं २५ भक्तियां, ७४

आपली ह्यणों ॥ ३४ ॥ हे मज्झिमा निचे वेळे ॥ तयां कर्मयोगीयां फळे ॥ मग समस्त ही निरिवळे ॥ मियां चि मरे ॥ ३५ ॥
 तय वैराग्य विवेक सी ॥ आटे बंध मोक्ष सी ॥ वृत्ती तये अहंती सी ॥ बुडो नि जाये ॥ ३६ ॥ येउनि ऐल पणों ॥ पर-
 तव हार पे जेथे ॥ गिळ निचा हो भूते ॥ आकाश जे सें ॥ ३७ ॥ तया परित्थ दुयाद ॥ साध साधना ती त शूद्र ॥ तें मी
 होउ भिये कवद ॥ भोगि तो माते ॥ ३८ ॥ घडे नि मिथू चिया आंगा ॥ सिधू वरी तळ पंगगा ॥ तें सापाड तया भोगा ॥
 अवधां रजो ॥ ३९ ॥ का आरि सयासि अरि सा ॥ उढा नि दा वि लया जे सा ॥ देरवणा अनिश ये ते सा ॥ भोगणा ति ये
 ४० ॥ हे असो दर्पण नै लया ॥ तो भुरव बोध हा गेलिया ॥ देरवें पण ये कलया ॥ आस्वादि जे जे वि ॥ ४१ ॥ चे इत्थया
 स्वमनाशी ॥ आपलें एक्य चि दिसे ॥ तें दुजे नवीण जे सें ॥ भोगि जे का ॥ ४२ ॥ तो चि जालिया भोगत याचा ॥ न येइ-
 हा भाव जयाचा ॥ ते ही बोलें के व बोलाचा ॥ उच्चारका जे ॥ ४३ ॥ तयाचाने पोंगावी ॥ रवि मका शहन दिवि ॥ किं-
 ब्या मालागी माडवी ॥ उमली त ही ॥ ४४ ॥ हांगा राज जल नूतन आंगी ॥ रावो राय पण काय भोगी ॥ को आधा रू
 न आनिगी ॥ दिन कर ते ॥ ४५ ॥ आणि आकाश जे नूतने ॥ तया आकाश का रू ज्ञाणी वे ॥ रत्नाचा रूपी भिरवे ॥ गुंजा
 चेलु ॥ ४६ ॥ ह्योणा नि मी हाणे नाही ॥ तया मी चि आहे के ही ॥ मग प्रजल हें कायी ॥ बोलों कीर ॥ ४७ ॥ यालागी तो
 कर्मयोगी ॥ मी जाला चिया ते भोगी ॥ नारुण्य का नरुणागी ॥ जिया परि ॥ ४८ ॥ तरंग सर्वांगी तो यवुबी ॥ प्रभास
 र्वत्रिगुल से बिंबी ॥ नाना अवकाश नभी ॥ लुनत जे मा ॥ ४९ ॥ तें सारूप हउ नि माझे ॥ माते क्रिया विण तो भजे ॥ अब्ज
 कारका स हजे ॥ सोन था ते जो दि ॥ ५० ॥ काच दून ते दुर्त जे सी ॥ चंदनी भजे अप्रे सी ॥ कां आह भिम शशी ॥ चंद्रिका
 पात ॥ ओं ॥ ३७ ॥ तें थें, ओं, ३८ ॥ भगवत् ॥ ओं ॥ ४६ ॥ जाणव ॥

ते ॥ ५१ ॥ तेष्मां क्रियाकारनराह ॥ तस्मां अहंतां भिन्नाह ॥ हं भ्रमुमथाचिजोगनहे ॥ बोला एसे ॥ ५२ ॥ तेन्हा
 वं संस्कार छेदे ॥ जंकाहं तो अनुवाद ॥ तेणें आच्छविलें निवाद ॥ बोलतां मींचि ॥ ५३ ॥ बोलतया बोलताचि भेदे ॥ ते
 थें बोलिलें हें न घटे ॥ तेमोन तव गामदे ॥ स्तवन माझे ॥ ५४ ॥ ह्यणां नितया बोलतां ॥ बोलें बोलतां मीं भेटतां ॥ मो
 न होय तेणें तत्त्वता ॥ स्तवितां माते ॥ ५५ ॥ ते संचिबुद्धि कां दिती ॥ जे तो देखा जाय ह्मदी ॥ ते देखेणें हश्यलोदी
 देखवें तें चिदायी ॥ ५६ ॥ आरिभया अधिजसे ॥ देखें तें चिमुखा देसे ॥ तयाचें देखणें तसे ॥ मेळवी दळे ॥ ५७ ॥ ह
 द्य जाउनिया दळे ॥ दृष्ट्या भिचिजे भेदे ॥ ते एकले पण न घटे ॥ दृष्ट पण ही ॥ ५८ ॥ तया स्वर्गां चिया प्रिया ॥ चिबोनि
 द्यो बोले लिया ॥ तार्थिजे दोन्हां न होनिया ॥ आपणाचि जेसे ॥ ५९ ॥ कां दोहों कां धाचि ये दृष्टी ॥ माजी वन्हिये कुठरी
 तो दोन्ही हे भाष आदी ॥ आपणाचि होये ॥ ६० ॥ नाना प्रतिबिंब हाती ॥ घेऊ गोलयाग भस्ति ॥ बिंबता ही असता ॥ -
 जाय जेसी ॥ ६१ ॥ ते सामी होऊनि देखते ॥ तां घेऊ जाय दृष्ट्या ती ॥ तो वेंदश्य न थिते ॥ दृष्टत्व ही ॥ ६२ ॥ रवि आधार
 काशिनी ॥ नुराचि जे विप्र कायता ॥ ते विदृष्ट्या नाही दृष्टना ॥ मीं जालिया ॥ ६३ ॥ भगदेखि जे नानदेखि जे ॥ रे
 अदशानि पज ॥ ते तें दर्शन माझे ॥ साचो कोरे ॥ ६४ ॥ तें भलतया ही किरीटी ॥ पदार्थाचि या भेदी ॥ हृष्ट दृष्ट्या ती ताद
 र्था ॥ भोगि तो सदा ॥ ६५ ॥ आणि आकाश हे आकाशे ॥ दाटलें न देखे जेसे ॥ मिया आत्मन आपण पेतेसे ॥ जालें त-
 या ॥ ६६ ॥ कल्याती उदक उदकें ॥ रुंधिलिया वाहो नाकें ॥ ते सा आत्मनि मियां एकें ॥ कां दला तो ॥ ६७ ॥ पावो आपण
 या वळघे ॥ केविं विदु आपण पया लागे ॥ आपण पाया पाणि रये ॥ स्नाना केसे ॥ ६८ ॥ ह्यणां नित्य सर्व भजिले पणे ॥ तेले तु

यार्थेणंजाणे ॥ तैचिगाथायाकरणे ॥ अदयाभज ॥ ६९ ॥ पैजबावरीसुतरंग ॥ जरीधाविम्ललासवेग ॥ तरीनाहीसुमि
 भाग ॥ झमिलतैणे ॥ ७० ॥ जेसाडबेकाभांडावे ॥ जैचालुणंजेचालावे ॥ तैतोयचियेकआघवे ॥ ह्येणोभिया ॥ ७१ ॥
 केलियाहीमलतंडता ॥ उदकपणंपडुझता ॥ तरंगाचीएकात्मता ॥ नमोडेचिजेवि ॥ ७२ ॥ तैसाभीपणेहालोहला ॥
 तोआघवाचिमजआला ॥ यायाचाहोयझला ॥ कापडीमाझा ॥ ७३ ॥ आणिशरीरस्वभाववश ॥ काहोयेककरूज
 रीबेस ॥ तरिमीचिनोतेणेंविषे ॥ सिटतया ॥ ७४ ॥ नैथकर्मआणिकर्ता ॥ हुंजाडुनिपडुझता ॥ मियांआत्मेभिम
 जपाहतां ॥ मीचिहोये ॥ ७५ ॥ पैंदर्पणांतंदर्पणे ॥ पाहिलियाहोयनपाहाणे ॥ सोनेझाकिनियासुवर्णे ॥ नझीके
 जेवि ॥ ७६ ॥ दीपांतदीपेंप्रकाशिये ॥ तेंनमकाशणेंचिनिपजे ॥ तैसेकर्मभियाकीजे ॥ तैकरणेंकैसे ॥ ७७ ॥ कर्मही
 करीलचिआहे ॥ जेकरावेहोभाकजाये ॥ तैनकरणेचिहोये ॥ नयाचेकैले ॥ ७८ ॥ क्रियाज्ञानमीजालेपणें ॥ घडेकाही
 चिनकरणें ॥ तयाचिनावपूजणें ॥ खुणेंचेंमाझे ॥ ७९ ॥ ह्येणोनिहरीतयाहीवोजा ॥ तैनकरणेंहेंचिकपिध्वजा ॥ नि
 पजेतियामहापूजा ॥ पूजीतोमाते ॥ ८० ॥ गवनेबोलेतैस्तवन ॥ नोदरेवेंतदर्शन ॥ अदयायजगमन ॥ तोचालेतैचिने
 तोकरितेलुलीपूजा ॥ ताकल्यांतोजरमाझा ॥ तोअसेतैचिकपिध्वजा ॥ समाधीमाझी ॥ ८१ ॥ जैसेकनकेंसीकोकणे
 असिजेअनन्यपणें ॥ तोभक्तियोगेयेणें ॥ मजसीतैसा ॥ ८२ ॥ उदकींकलोळ ॥ कापुरीपरिमळ ॥ रत्नीउज्जळ ॥ अन
 न्यजेसा ॥ ८३ ॥ किंबहुनातलुसीपट ॥ कामुनिकेसीषट ॥ तैसानोयेकवट ॥ मजसीमाझा ॥ ८४ ॥ इयाअनन्यसि
 द्वाभक्ती ॥ याआघवाचिंदरयजातो ॥ मजआपणेंपेयासुमती ॥ दृष्टयानेजाणे ॥ ८५ ॥ तिन्हीअवस्थांचेनिहाकेभ

उपाधुपहिताकरं ॥ सावासावरूपस्फुरं ॥ दृश्यते ॥ ८७ ॥ तेहं आद्यवैचिमीद्रष्टा ॥ रंगसयावोधाचाभाजिवरा ॥ अनु-
 भवाचासुभदा ॥ धेडातोनाचे ॥ ८८ ॥ रज्जुजालियागोचर ॥ आभासनातोव्याव्याकारं ॥ रज्जुचरं भाविधार ॥ हांरं
 जेवि ॥ ८९ ॥ भागारापरतेकाही ॥ लेणगुजहोमरीनाही ॥ हे आदुनियाठार्या ॥ कीजेजसे ॥ ९० ॥ उदक्रयकापरते
 तरंगनाहीचिहंनिरुते ॥ जाणोनितया आकाराते ॥ नधेपेजेवि ॥ ९१ ॥ नातरिस्वयविहारसमस्ता ॥ चेउनियाउभा-
 रोंघेता ॥ तोआपणयापरेता ॥ नदिसेजेसा ॥ ९२ ॥ तेसीजेकाहीआशियाथी ॥ तेणहोयज्ञेयस्कृती ॥ तेज्जताचि-
 मीहेप्रतीती ॥ होउनिभोगी ॥ ९३ ॥ जाणंअजमीअजर ॥ असयमीअसर ॥ अपूर्वमीअपार ॥ आनंदमी ॥ ९४ ॥
 अचळमीअच्युत ॥ अनंतमीअदंत ॥ आद्यमीअव्यक्त ॥ व्यक्तहीमी ॥ ९५ ॥ ईशिलैमीईश्वर ॥ अनादिमी
 अमर ॥ अभयमीआधार ॥ आधेयमी ॥ ९६ ॥ स्वामीसीसरोदित ॥ सहजमीसतत ॥ सर्वमीसर्वगत ॥ सर्वो-
 तीतमी ॥ ९७ ॥ नवामीपुराण ॥ शून्यमीसंपूर्ण ॥ अस्युक्तंअनण ॥ जेकाहीतेंमी ॥ ९८ ॥ अक्रियमीएक ॥ अ-
 संगमीअशोक ॥ व्याप्यमीव्यापक ॥ पुरुषोत्तममी ॥ ९९ ॥ अशब्दमीअश्रोत्र ॥ अरूपमीअंगेव ॥ समसंस्व-
 त्त्व ॥ ब्रह्ममीपर ॥ १०० ॥ ऐसंआत्मलभजंएकते ॥ दयाअदृश्यमिक्किजाणोनिनिरुते ॥ आणियाहिबाधा
 जाणते ॥ तेहीमीक्किजाणे ॥ १०१ ॥ पंचेइलेयानतर ॥ आपुलेएकपणउर ॥ तेहीतयावुरीस्फुर ॥ तयाशीचिजे
 से ॥ १०२ ॥ काप्रकाशताअक ॥ तोचिहायमकाशक ॥ तयाहीअमदायातक ॥ तोचिजेसा ॥ १०३ ॥ तेसावेद्याचा
 विलई ॥ केवळवेदकउरपाही ॥ तेणंजाणवेतयानोही ॥ हेहीजाणे ॥ १०४ ॥ तयाअदृश्यपणाअपुलिया ॥ जाणतो

पाठ. ओ. ९६ ईश. ओ. १८ पुराण, स्थूलमीअणु. ७.

जमीजधनं जया ॥ ते ईश्वरनिमीहेतया ॥ बोधासिये ॥ ५ ॥ मगदेतोहेतातीत ॥ मीचिआत्माएकनिष्ठांत ॥ हं-
 जाणोनिजाणजे जेय ॥ अनुभवोरिये ॥ ६ ॥ तेथचेइलबायेकपण ॥ दुसेजेआपुलयाआपण ॥ तेहीजाताने-
 णोकोण ॥ होइजेजिं ॥ ७ ॥ कांडोळादेनियेसुणी ॥ स्वरूपपणसुवणी ॥ नादिताहोयआदणी ॥ अळकारावे
 ही ॥ ८ ॥ नानालवणतोयहोये ॥ मगसारतातायलराहे ॥ तेहीजिरतांजेविजाये ॥ जालपणते ॥ ९ ॥ तेसामी
 ताहेजेअसु ॥ नेस्वानदालुभवसमरसे ॥ कालउनियामवेश ॥ मजनिमाजि ॥ १० ॥ आणितोहेभाषजेयजा
 ये ॥ तेथेमीहेकोणहामीआहे ॥ ऐसाभीनातोतियेसामये ॥ माझाविरूपी ॥ ११ ॥ तेकापुजलोभरे ॥ त
 याचिनामअग्निपुर ॥ मगउभयातीतउर ॥ आकाशजिवि ॥ १२ ॥ काधाडिलियायेकायेक ॥ वाढतोइत्यवि
 शेष ॥ तेसाआहेनाहंत्याशेष ॥ मीचिमगआधी ॥ १३ ॥ तेथब्रह्मआत्माइश ॥ ययाबोलाभाडेसौरस ॥ नबो
 लणेयाहीपैस ॥ नाहीतेथे ॥ १४ ॥ नबोलणेंहीनबोलेनी ॥ तेबोलिजेतोडमरुनी ॥ जाणिवेनिणवनेणो
 नी ॥ जाणजेते ॥ १५ ॥ तेथबुझिजेबोधबोध ॥ आनदयेपेआनंद ॥ सरवरीनुसधे ॥ सरवचिमोगिजे ॥ १६
 तेथलाभजोडालाभा ॥ मभाआडिगिलीप्रभा ॥ विस्मयबुडालाउभा ॥ विस्मयाभाजी ॥ १७ ॥ शसतेथेसा
 मावला ॥ विस्वामविश्यातिआला ॥ अनुभववेडावला ॥ अनुभूतीपणें ॥ १८ ॥ किंवहुनारेसेनिरवळ ॥ सीप
 णजोडेतयाफळ ॥ सेडनिवेलीवल्हाळ ॥ कर्मयोगार्चीते ॥ १९ ॥ किंकर्मयोगमासादाचा ॥ कळसजोहोसो
 साचा ॥ तयावरीलअवकाशाचा ॥ उवावाजालातो ॥ २० ॥ पैकर्मयोगाकिरोदो ॥ नक्रवर्तिचासुकुदो ॥ भी-
 पाठ, ओं, ११ मीपण. ओं. १२ जेका.

चिद्रत्नतैसावेही ॥ होय तो माझ्या ॥ २१ ॥ नानासंसार आडवी ॥ कर्मयोग वाद बरवी ॥ जोडली तमई क्य गंवी ॥
 पैवी जालीसि ॥ २२ ॥ हें असो कर्मयोग बोधे ॥ तें पण सक्ति चिद्रंगे ॥ मोस्वानंदो दुध विंगे ॥ वाकिल्या किंगे ॥ २३ ॥ हा
 बायवरी स्मवसो ॥ कर्मयोगी आहे म हिमा ॥ ह्मणोनि वेळो वेळा तुम्हा ॥ सांगतो आह्मी ॥ २४ ॥ पेंदेशे काळें पदा
 ये ॥ साधुनि येइ जमाते ॥ तें मानव्हे मी आयते ॥ सर्वोचें सर्व हो ॥ २५ ॥ ह्मणोनि माझा वारी ॥ जाचो वें नलगे
 काही ॥ मीला भेइ येउपायी ॥ साच चिंगा ॥ २६ ॥ एक शिष्या एक गुरू ॥ हा रूढला साचव्य वहार ॥ तो सत्प्रासिप
 कारू ॥ जाणावया ॥ २७ ॥ अगावस्तु येचा पोती ॥ निधान सिद्ध करीतो ॥ वन्हि मिद्ध काढी ॥ बोहा दुध ॥ २८ ॥ प
 रिला भैतें असते ॥ तया कीजे उपायोंतें ॥ येर मिद्ध चितें सायेथ ॥ उपायीं मी ॥ २९ ॥ हा फळही वरी उपाय ॥ कापा
 यस्ता वीतसे देव ॥ हें पुस्ततांत हि अभिप्राय ॥ येथि चार समा ॥ ३० ॥ जेगीतार्थान्ने चागावे ॥ मात्सा पाय पर आय
 वें ॥ आणि शास्त्रा पायी किं नव्हे ॥ प्रमाण सिद्धी ॥ ३१ ॥ वार आमाळ नि फुडी ॥ वाचूनि स्मृत्यो तें न घडी ॥ काहा
 त बाबुळी याडी ॥ तोय न करी ॥ ३२ ॥ तैसा आत्म दर्शनी अडळ ॥ असे अविद्येचा जो मळ ॥ तो शास्त्र ना शोधेर
 नि मळ ॥ मी प्रकाश स्वये ॥ ३३ ॥ ह्मणोनि आद्य वींचि शास्त्र ॥ अविद्या विनाशाची पोंत्र ॥ वांचोनि न होती स्त
 त्रें ॥ आत्म बोधी ॥ ३४ ॥ तया अभ्यात्म शास्त्रासि ॥ जें साचु पणाचि ये पुसी ॥ तें येइ जे जया वायासी ॥ ते हे गीता
 ॥ ३५ ॥ प्रानुसूषिता सुचिया ॥ संते जादिशा आद्य विद्या ॥ तें संशास्त्र बुवारी ताया ॥ सनाये शास्त्र ॥ ३६ ॥ हें
 असा येण शास्त्र स्वर ॥ मागा उपाय बहु वे विस्तार ॥ सागीतला जें साकर ॥ धेवाये आत्मा ॥ ३७ ॥ परि प्रथम श्रव
 पाठ, ओं. २९ लामेल, ओं. ३४ अस्त्रे, ओं. ३६ तैसी से स्वर, ओं. ३७ कातें, ३

णासवे ॥ अर्जुनविषयं हे फले ॥ हाभावसत्त्वणे ॥ धरुनिष्प्रिहरी ॥ ३८ ॥ मंकिममेयरकवेळ ॥ शिष्यो हो आवया
अदळ ॥ सांगतसे सुकुळ ॥ सुदा आना ॥ ३९ ॥ आण प्रसंगे गीता ॥ हाठाय ही संपत्ता ॥ ह्योनि निदावी आचंता ॥ एका
अंत ॥ ४० ॥ जयथा चामय्य भागो ॥ नाना अधिकार प्रसंगी ॥ निरूपण अनेगी ॥ सिद्धांत केलें ॥ ४१ ॥ तरिते तु-
लें ही सिद्धांत ॥ इयं शाररु नस्तुत ॥ हे पूवा परेणत ॥ कोण हो जे मनी ॥ ४२ ॥ ते महा सिद्धांताचा आवाका ॥ सि-
द्धांत पक्षा अनेका ॥ सिद्धि नि आरंभ देखा ॥ संपत्तीत असे ॥ ४३ ॥ येथ अविद्या नाश हो स्थळ ॥ तेणें मोक्ष पादन प्र-
ळ ॥ यादो हो केवळ ॥ साधन ज्ञान ॥ ४४ ॥ हें इतुलें चिनाना परि ॥ निरूपि न्यंथ विस्तारी ॥ ते आतां दोहो अक्षरी
अनुवादावे ॥ ४५ ॥ ह्योनि निउपेव ही ज्ञानो ॥ जाल याउ पाय स्थिती ॥ देव प्रवर्तलें तें पुढती ॥ येणें चिमावे ॥ ४६ ॥ अत-
सर्व कर्माण्यपि सदा कुर्वाण मध्य पात्रियः ॥ मत्प्रभादाद्वा मोति शान्त्वं तं पदमथय ॥ ४६ ॥ टी० भगवणे गासु भदा
तो कर्म योगिचा निष्ठा ॥ मोही उनी होय पढा ॥ साक्षा रूपा ॥ ४७ ॥ स्वकर्माचा चारवाळी ॥ भज पूजा करुनि मलो ॥
तेणें मसादें आकळी ॥ ज्ञान निषेते ॥ ४८ ॥ ते ज्ञान निष्ठा जेथ द्वातवसे ॥ तेथ मक्ति माझी उल्लासे ॥ नयाय जसो-
समसे ॥ सभिया होय ॥ ४९ ॥ आणि विश्व प्रकाशितया ॥ आत्म या भज आशुलिया ॥ अनुसर जो करुनि या ॥
सर्व वताहे ॥ ५० ॥ सांड नि आपला आडळ ॥ लवण आन्याये जळ ॥ कां हिंडो निरा हो निश्चळ ॥ वायु व्योमो ॥ ५१
ते सा बुद्धि वाचा कायें ॥ जे माते आन्यावृत्ति नाये ॥ तो निषिद्ध हो विपायें ॥ कर्म करु ॥ ५२ ॥ परि गंगेचा सवधी
बिंदो आणि महानदी ॥ ऐक्ये वेवि साक्षा बोधी ॥ ५३ ॥ काबावने आणि धुरें ॥ हा निवाडान वनि
पाठ ॥ ओं ॥ ४४ नंदः मोक्षापादान ॥ ओं ॥ ४५ उपाय ॥

मेरे ॥ जवनवेषपतीवश्वानरे ॥ कुवळूनिदोन्हें ॥ ५६ ॥ नानापाचिके आपि सोळे ॥ हे सोनयांत वचि आले ॥ जवप-
 रि स आंग मेळें ॥ ये कुवठी ना ॥ ५५ ॥ तें सें शमाशम एसे ॥ हे तंव चिवरी आभासे ॥ जव येक नमकाशें ॥ सर्व
 बमी ॥ ५६ ॥ अणारात्रि आणिवो ॥ हातवचि दूत भावो ॥ जवन रिंगजे गावो ॥ गमस्तीचां ॥ ५७ ॥ म्हणो
 निमां शियासेही ॥ तयाचीं सर्व कर्म करीदो ॥ जाऊनि बैसे तो पादो ॥ सायुज्याचा ॥ ५८ ॥ देशों कोळे स्वभावे ॥
 देव जयानस भव ॥ तें पदमाक्षपव ॥ अविनाश तो ॥ ५९ ॥ किब हना पडुं मता ॥ मज आत्मयाची प्रसन्नता ॥
 लाहे तेणें न पविजतां ॥ लास कवण अस ॥ ६० ॥ स्तो ॥ चेतसां सर्व कर्माणि मायि सन्यस्य मत्परः ॥ बुद्धि यो
 गमुपाश्रित्य मच्चित्तः सततं भव ॥ ६१ ॥ टी ॥ याकारेण गातुवां दया ॥ सर्व कर्म आपुलिया ॥ माझा स्वरूपी थ-
 ने जया ॥ सन्यास कुजे ॥ ६२ ॥ परितो निसन्यास वरा ॥ करणियिचा झणें करा ॥ आत्मविवेकी दया ॥ चित्त वृ-
 तीहे ॥ ६३ ॥ मग तेणें विवेक बळे ॥ आपणें कर्मावेगळ ॥ माझा स्वरूपी निमळे ॥ देखि जेल सर्व ॥ ६४ ॥ आ-
 णिकर्माचि जन्म मोये ॥ प्रकृत जे कां आहे ॥ ते आपण याह निबहुवे ॥ देख सीदुरी ॥ ६५ ॥ तेथ महुषि आप-
 णया ॥ वेगळी सुगंधन जया ॥ रूपां वराण कां छाया ॥ जया परी ॥ ६६ ॥ ऐसे निमहुनि नाश ॥ जाल या कर्म सन्या-
 स ॥ निमजेल अनायास ॥ सकारण ॥ ६७ ॥ मग कर्म जात गेलया ॥ मो आत्मा उरें आपण पंचां ॥ तेथ बुद्धि सापेक
 रूखीयां ॥ पति मता ॥ ६८ ॥ बुद्धि अनन्य येणें योग ॥ मज्जमाजी जें रोग ॥ तें चित्तें चेत्य त्यागे ॥ माते चि मजे ॥ ६९
 ॥ ऐसे चेत्य जातें भांडिलें ॥ चित्त माझा रायी जडले ॥ दाकें तें सें वाहिलें ॥ सर्व दाकरी ॥ ७० ॥ स्तो ॥ मच्चित्तः सवृ

पाठ. ओं. ६८ वेत्य.

७

७

७

दुर्गाणिमत्यसादात्तरिष्यति ॥ अथ चेत्समंकारान्ननश्रोत्रसिचिन्नं ह्यसि ॥ ५८ ॥ टी० मगअसिन्ना इयासेवा
 चित्तभिर्याचिभरेलजेकां ॥ साद्याजसादजाणतेकां ॥ संपूर्णजाहान्ता ॥ ७९ ॥ तेषसकळदुःखधाये ॥ सुजोज
 तीजियेमलुजन्ने ॥ तिचेदुर्गमेचिभ्रगमे ॥ होतोलुज ॥ ७९ ॥ सूर्याचेनिमावाये ॥ डोळासावादलाहोये ॥ ते
 आधारचाआहे ॥ पाडुतया ॥ ७३ ॥ तेसासाक्षीनमसाते ॥ जीवकृणजयाचाउपमर्द ॥ तोससाशचिनिबाधे ॥ ते
 बागुलेकेवि ॥ ७४ ॥ ह्यणाभिधनजया ॥ तुससारदुर्गतिजया ॥ तरसीलमाक्षिया ॥ मसादास्तव ॥ ७५ ॥ अथ
 बाहनअहंभावे ॥ साक्षेबोलणेहेआधये ॥ कालामनाचियेशिव ॥ नेदिसादिको ॥ ७६ ॥ तीरिनित्यमुक्तअव्य
 य ॥ त्वाहासितेहोवीनिवाय ॥ दहसवधाचाधार ॥ राजलआगी ॥ ७७ ॥ जयादेहसंवधाआत ॥ मतिप
 दंआत्मयान् ॥ सुजतोउसत ॥ काहोचनाही ॥ ७८ ॥ येवर्देनिदरुणे ॥ निमणेनवीणनिमणे ॥ पडलजरीबोलुणे
 नेयसीसाक्षी ॥ ७९ ॥ ५८ ॥ यदहंकारमाधिन्यनयोत्स्यर्तमन्यसे ॥ मिष्येव्यवसायस्तेमकृतिस्त्वानि
 योद्व्यति ॥ ५९ ॥ टी० पथ्येद्विषयायोर्धाज्वर ॥ कादीपदेविष्याअंधकार ॥ विवेकद्वेषअहंकार ॥ पोषुनिते
 सा ॥ १२८० ॥ स्वदेहानामअजुन ॥ परदेहानामअजुन ॥ संयागानाममालिन ॥ पापचार ॥ ८१ ॥ इयामति
 आपुलिया ॥ तिघातीननामययो ॥ तद्वन्विधाधनजया ॥ नजुझेगमा ॥ ८२ ॥ जीवाभाजीभिषक ॥ करिमा
 जोआत्स्यनिक ॥ तोवायाधाईलुनेमगिक ॥ स्वभावचिनुसा ॥ ८३ ॥ आणिसीअजुनहआत्सिक ॥ यथाव
 धकरणहंपातक ॥ हेसायावाचुनिनानिक ॥ काहोआहे ॥ ८४ ॥ आधीजुसारगुवाहोआवे ॥ मगजुसावयासा
 पाठ ओं ५८ कथी

स्वयेयावें॥ कानंजुंसावुयाकरवें॥ देवांगण॥ ८५॥ ह्यणोनीनंजुं सणें॥ ह्यणसीतेंवायणें॥ नामानुलोकपणें॥ लो
 कहसी॥ ८६॥ तहीनजुंझेंगें सें॥ निधंकिंसीजेंमानस॥ तेंमहतीअनारिसे॥ करवीलचि॥ ८७॥ स्त्रो० स्वभाव
 जेनकोतेंयनिबद्धः स्विनकर्मणा॥ कर्तुनेच्छांभियन्मोहात्करिष्यस्ववशोपितं॥ ८८॥ टी० पेंपूर्ववाहतापाणि
 पङ्क्तिपेधिमंचेवाहणि॥ तारिआग्रहचिउरतेंआणि॥ आपुलियालेखा॥ ८८॥ कोसाढीचाकणह्यण॥ योलु
 गवेंसाळीपणें॥ तरीआहेआनकरणा॥ स्वभावांसि॥ ८९॥ तेंसाक्षात्रसंस्कारसिद्धा॥ महताघडिलासिद्धदुहा
 आतांनुविह्यणसीहाथादा॥ परिउठाविस्तींचित्॥ ९०॥ पेंशेंयेंतेजदक्षता॥ एवमादिकंपंडुसता॥ गुणार
 धलेजन्मता॥ महुतीतूज॥ ९१॥ तरितयाचियासमवाया॥ आनरूपेधनजया॥ नकरितांउगलिया॥ नयेल
 असो॥ ९२॥ ह्यणानियातिहीगुणों॥ बांधलासि त्कोदडपाणी॥ त्रिशद्विनिघसोवाहाणी॥ क्षात्रोचिया॥ ९३॥
 नोहेंआपुलेंजन्मसूळ॥ नविचारीतिचिंकवळ॥ नजुंझेंगेंसंअदळ॥ व्रतजरीघेसी॥ ९४॥ तरिबांधोनिहातपाये
 जेरथोघातलाहोय॥ तोनचेलतरिजाये॥ दिगनाजवि॥ ९५॥ तेंसांतुंआपुलियाकडनी॥ सीकांहांचिभ्वरी
 ह्यणोनि॥ वासिपरिभरवसेनी॥ तूचिकरिमी॥ ९६॥ उत्तरवेंसाटिचारजा॥ तोपळतोलुकांनिघालासोजु-
 झा॥ हास्तानस्वभावतुझा॥ जुझवीलतुज॥ ९७॥ महावीरअकराअस्मोहिणी॥ तुबायेकनागविलेरजांग
 णी॥ तोस्वभावकोदडपाणी॥ जुझवीलतूत॥ ९८॥ हागारोगकाथीरोगिया॥ आवडुंदरिदरिदिया॥
 परिभोगविजेबलिया॥ अटरेजेणें॥ ९९॥ तेंअदृष्टअनारिसे॥ नकरीलईश्वरवेंश॥ तोईश्वरहीअसे॥ ह-
 पात॥ ओं० ८५० देवांगण, ओं० ८७० जुंझणें, ओं० ९१० निआतां, ओं० ९२० अनुरूप, ओं० ९३० बुद्धाचिया, ओं० ९४० तेनि, ९५०

दद्यादुद्धा ॥ १३० ॥ अतो ईश्वरः सर्वभूतानां लहो रजुर्न तद्धति ॥ आत्मनो ह्यहं ब्रह्माणिमायया ६१
 ही ० सर्वभूतां च अंतरीं ॥ तद्दयमहा अंतरीं ॥ चिह्नं चित्तं स हस्त करो ॥ उदयसा असेजो ॥ १ ॥ अवस्थात्रयति
 होलोक ॥ प्रकाशतु अशेष ॥ अन्यथा ह्युद्दिपायिक ॥ चैव विले ॥ २ ॥ वेदादं काचा सरोवरी ॥ फां कृता विषय
 के लहरी ॥ इदं विषय एव दाचारी ॥ जीवश्च मेरुत ॥ ३ ॥ असो रूपक हे नो ईश्वर ॥ सकळ भूतां च अहंकार ॥ पो
 यारी निभिरुतर ॥ उल्हासग असे ॥ ४ ॥ स्वमायै च आड वस्त्र ॥ लघु निय कलारे वळवी सुत्र ॥ बाहरी नट्या
 याचित्र ॥ चोव्यासीलसा ॥ ५ ॥ तथा ब्रह्मादि कौं वाता ॥ अशो धां हां सुतजाता ॥ देहाकार योग्यता ॥ प्रविनि
 दावी ॥ ६ ॥ तेथ जे देह जयापुढे ॥ भयु रूप पण मोडे ॥ ते भूत नया आरुह ॥ हंसा ह्यणी नि ॥ ७ ॥ सतसु ते गु
 तले ॥ तृणतृणै विवाधिन ॥ का आत्म विबाधेतले ॥ बाळक जळी ॥ ८ ॥ तथा परा देहाकारे ॥ आपण पे नि
 दुसर ॥ इरा निजी वध विष्करे ॥ आत्म बुद्धि ॥ ९ ॥ ऐस निवार राकारे ॥ यत्रा सुते अवधारी ॥ बाहु नि
 हालवीदारी ॥ मत्ती नार्वा ॥ १० ॥ तथ जया जं कस सुत्र ॥ मादु निने विलि सुतत्र ॥ नो ते ये गती पात्र ॥ हो नि
 लागे ॥ ११ ॥ किं बहुना धनु रुरा ॥ भूत तेन स्वर्ग संसारा ॥ माजि मो वड तणे वारा ॥ आकाश जे सो ॥ १२ ॥ ह्या
 मका च निसंग ॥ जे संसाहा वदारी ॥ ते सो ईश्वर सना योग ॥ चैव त्रा सुते ॥ १३ ॥ जे सुच हा आपुला लि
 या ॥ समुद्रां देव धन जया ॥ चैव त्रा तं दा चिया ॥ सान्निधिये की ॥ १४ ॥ तथा मिधु मारि तद्रो ॥ सोम कात्मा
 पादरफुट ॥ कुमुदा च कोर च्छी फटे ॥ सका च तो ॥ १५ ॥ ते सीर्वा जम ह्य निवरा ॥ अने के भूत ये के ईशो ॥ चै
 पाठ ॥ ओ, १. स्वमराते, मवराते. ओ. १. विचित्र. ओ. ६. समस्तो. ७.

सर्वजतीतो असे ॥ त्रयाह दयी ॥ १६ ॥ अजुनपणनेना ॥ मी ऐसे जे फडसुवा ॥ उरतसे ते तलता ॥ तयाचेरुप
 १७ यालाग तो महुतेने ॥ प्रवर्तवील हो नरुत ॥ आणि ते अजुन वोलत ते ॥ नजुं संसीज हो ॥ १८ ॥ ह्युणा निड
 स्वरगोसावी ॥ तेणे प्रहृती हेने मावी ॥ तया सरंखरा बवावी ॥ इदिये आपुलो ॥ १९ ॥ तकरणे न करण दोहो ॥
 लाउनि प्रहृतीचा यानी ॥ प्रहृती ही कां आधीनी ॥ तदयस्यायया ॥ २० ॥ अस्ते ० तमेव शरणं गच्छ सर्वसाधने
 भारत ॥ तत्प्रसादात्तरं शांतिस्थानं प्राप्स्यसि शाश्वतं ॥ ६३ ॥ टी ० तया अहंवाचि चित्त आंश ॥ हेऊ निथांश
 रणरिग ॥ महोदधी कागागा ॥ रिगाल जंसे ॥ २१ ॥ संगत याचि निप्रसाद ॥ संवापशांति मंद ॥ कात हाऊ नि
 यास्वानंद ॥ स्वरूपो न्चरमसी ॥ २२ ॥ समूह ते जणे सभवे ॥ विआंति जथे विभवे ॥ अनुसूतो ही अनुभवे ॥
 अनुभवाजया ॥ २३ ॥ निचे निजाल्म पदोचारीवो ॥ हो उभिताकसी अव्ययो ॥ ह्यणलदमीना हो ॥ पाथति ॥ २४ ॥
 अस्ते ० इति ने ज्ञान भारव्यातं गुह्यं द्रव्यं तं रमया ॥ विमुंयेत दशोषेण यथेच्छ भितथा कुरु ॥ ६३ ॥ टी ० हे गो-
 तानाभ विख्यात ॥ सर्व वाङ्मय चिंमथित ॥ आत्मा जेणे हस्तगत ॥ रत्न होये ॥ २५ ॥ ज्ञान ए सो या रुढो विं
 ते जयाची मोटी ॥ वाभितां कीर्ती चोखडी ॥ पातली जगो ॥ २६ ॥ बुध्या दिक्कोळसे ॥ हे जयाचिंका कडवसे ॥ मो
 सर्वदशा हि दसे ॥ पाहाला जया ॥ २७ ॥ नेह गा आत्मज्ञान ॥ मजगो यांचे हे गुमधन ॥ परिवु ह्यनु निआम ॥
 क्वि कुरुं ॥ २८ ॥ याकारेण गा पाटवा ॥ आत्मी आपला हा गुप्त ववा ॥ तुज दिधला कणवा ॥ जाक बिले पणे ॥ २९
 जमी सुलली वीरसे ॥ माग बोलवा कोदेश ॥ प्रीति हा परी तेसे ॥ न करु चि हो ॥ ३० ॥ येथ आकाश आणि रम
 पाठ ॥ ओं ३० परि ॥

बिजे ॥ अमृताहीमातीफे डिजे ॥ काटिव्याकरवीकरविजे ॥ दिव्यजेसे ॥ ३१ ॥ जयाचिनिअंगमकाशे ॥ पुताळीलाप
 रमाणुदिसे ॥ तयासुखाहिकाजेसे ॥ अजनसुदले ॥ ३२ ॥ हेसमवज्ञी मिया ॥ सबहीनिथत्तनियां ॥ निकेहयतेथेन
 जया ॥ सागीतलेतुज ॥ ३३ ॥ आतातूययावरी ॥ निकेहेनिधीरी ॥ निधोकनिकरी ॥ आवडेतेसे ॥ ३४ ॥ ययादेवानि
 याबोला ॥ अखुनउगाचिठेला ॥ तेथदेवास्वणतीमला ॥ अवचकहोमी ॥ ३५ ॥ बाढीतयापुढेंसुकला ॥ उपरो
 धेस्वणसीथाला ॥ तेतोचिपेहे आपला ॥ दोषहीतया ॥ तेसासर्वज्ञागुरु ॥ सेदलियाआत्मनिधोरू ॥ ननु
 मिजेजोआमारू ॥ धरूनिया ॥ ३७ ॥ तेआपणपेनिवंचे ॥ आणिपापहीवचनंचे ॥ आपणयाचिसंचिअनुक
 विलेतेणे ॥ ३८ ॥ येउगेपणावुमिया ॥ हाअभिप्रावेकीधनजया ॥ जेएकवळआवाकुनियां ॥ सागावेज्ञान ॥ ३९
 तेथपार्थस्वणेदानारा ॥ मेलजाणसीमाझिया ॥ अतरा ॥ हेस्वणोतरादुसरा ॥ जाणतअसेकाई ॥ ४० ॥ येरजेयह
 जीआयव ॥ तुजोतायेकनिस्वभावे ॥ मासूयस्वणोनिवनाव ॥ सूर्यानेकाई ॥ ४१ ॥ याबोलाओहूखो ॥ स्वणीत
 लुकायेणे ॥ हेचिशोडेगावानेणे ॥ जेबुझतासित ॥ ४२ ॥ सर्वगुह्यतमसूयः ॥ शृणुसेपरमवचः ॥ इहो
 सिमहदुमतिस्तुतवस्यामितहिन ॥ ४३ ॥ तोंतरअवधानपयळ ॥ करुनियांआणीकरकवळ ॥ वाक्यमा
 सेनिर्मळ ॥ अवधारीपा ॥ ४४ ॥ हेवाच्यस्वणोनिबोलिजे ॥ काआव्यमगआधिकेज ॥ तेसेनहेपरितुझे ॥ प्रा-
 न्यवरवे ॥ ४५ ॥ कूसीचियापिलिया ॥ दिदीपान्हायेधनजया ॥ आकाशवाहबापिया ॥ यरीचेयाणी ॥ ४६ ॥ जौव्य
 वहारजेयनयेडे ॥ तयाचिफळचिनेयेजोडे ॥ कायेदेवनसंपडे ॥ सानकूळे ॥ ४७ ॥ येरवीहेताचीवारी ॥ सारुनि
 पाठ ॥ ओं ॥ ३६ पडे ॥ ओं ॥ ४० येय ॥

रेक्याचापरिवरीं॥ सो गिजे तें अवधारीं॥ रहस्यहं॥ ६०॥ आणि निरूपचार प्रेमा॥ विषय होय जें प्रयोत्तमा॥
 तें दुजे नहे किं आत्मा॥ ऐसें चिंजाणां वें॥ ६१॥ अरि सावित्रा देखिलया॥ गोमटे वीजे धन जया॥ तें तया नेहे
 आपण या॥ लागीं जेसे॥ ६२॥ तें संपाया तुझी मिषें॥ मी बोलें आपण याचि उद्देशीं॥ साझा तुझा वाई अस
 मी तू पण गा॥ ६३॥ ह्मणोनि जिह्मारी चें गुजें॥ सागतसे जीवां सितुज॥ हें अनन्य गती चें मज॥ आशी व्यसन
 ॥ ६४॥ पैजळा आपण पेटता॥ लवण भूल लपडुं मत्ता॥ किं आधव तया चें हाता॥ नल जे चितें॥ ६५॥ तें सात
 माझा वाई॥ राखे नण सोचि काहीं॥ तर आतां तुज काई॥ गोप्य मी करी॥ ६६॥ ह्मणोनि आधवा चि गूढ
 जं पाउनि अति उघडें॥ तें गोप्य माझे नोखडे॥ वाक्य आइक॥ ६७॥ भक्तना भव मद्रक्तो मद्याजी भानम
 स्फुर॥ मासे वेष्टा सिसव्य ते प्रतिजाने प्रियो मिसे॥ ६८॥ टी० नरिबात्यु अणि अंतरा॥ आपुलिया सर्व व्यापारा
 मज व्यापका ते वीरा॥ विषय करी॥ ६९॥ आधवा आंगीं जे सा॥ वायु भिद्योनि आहे आकाशा॥ तू सर्व कर्मा
 ते सा॥ मज सिंचि असे॥ ७०॥ किबहुना आपुलें मन॥ करी माझे एकाय तन॥ माझे निश्चय कान॥ मर नि-
 घालीं॥ ७१॥ आत्म ज्ञाने चोखडे॥ संत जे माझे रूपाडे॥ तें थट्टी पडा आवडी॥ कां भिजे सी॥ ७२॥ मां स
 र्ववस्ती चें वसोटे॥ माझे नोम जें चोखडे॥ तें येजी वाया वया वाटे॥ वाचि नये लावी॥ ७३॥ हातांचें क्रूर
 णें॥ कुरापायांचें चालणें॥ ते होय मज कारण॥ तें सुकुरी॥ ७४॥ आपुला अयुवा परावा॥ गयी उपक्रमी पाड
 वा॥ तें पायने होवी बरवा॥ याज्ञिक माझा॥ ७५॥ हे येक कशिक ऊकाई॥ पैसर्व आमुला गयीं॥ उरऊ

७५

७६

७७

७८

७९

८०

८१

८२

८३

८४

८५

८६

८७

८८

८९

९०

९१

९२

९३

९४

९५

९६

९७

९८

९९

१००

१०१

१०२

१०३

१०४

१०५

१०६

१०७

१०८

१०९

११०

१११

११२

११३

११४

११५

११६

११७

११८

११९

१२०

१२१

१२२

१२३

१२४

१२५

१२६

१२७

१२८

१२९

१३०

१३१

१३२

१३३

१३४

१३५

१३६

१३७

१३८

१३९

१४०

१४१

१४२

१४३

१४४

१४५

१४६

१४७

१४८

१४९

१५०

१५१

१५२

१५३

१५४

१५५

१५६

१५७

१५८

१५९

१६०

१६१

१६२

१६३

१६४

१६५

१६६

१६७

१६८

१६९

१७०

१७१

१७२

१७३

१७४

१७५

१७६

१७७

१७८

१७९

१८०

१८१

१८२

१८३

१८४

१८५

१८६

१८७

१८८

१८९

१९०

१९१

१९२

१९३

१९४

१९५

१९६

१९७

१९८

१९९

२००

२०१

२०२

२०३

२०४

२०५

२०६

२०७

२०८

२०९

२१०

२११

२१२

२१३

२१४

२१५

२१६

२१७

२१८

२१९

२२०

२२१

२२२

२२३

२२४

२२५

२२६

२२७

२२८

२२९

२३०

२३१

२३२

२३३

२३४

२३५

२३६

२३७

२३८

२३९

२४०

२४१

२४२

२४३

२४४

२४५

२४६

२४७

२४८

२४९

२५०

२५१

२५२

२५३

२५४

२५५

२५६

२५७

२५८

२५९

२६०

२६१

२६२

२६३

२६४

२६५

२६६

२६७

२६८

२६९

२७०

२७१

२७२

२७३

२७४

२७५

२७६

२७७

२७८

२७९

२८०

२८१

२८२

२८३

२८४

२८५

२८६

२८७

२८८

२८९

२९०

२९१

२९२

२९३

२९४

२९५

२९६

२९७

२९८

२९९

३००

३०१

३०२

३०३

३०४

३०५

३०६

३०७

३०८

३०९

३१०

३११

३१२

३१३

३१४

३१५

३१६

३१७

३१८

३१९

३२०

३२१

३२२

३२३

३२४

३२५

३२६

३२७

३२८

३२९

३३०

३३१

३३२

३३३

३३४

३३५

३३६

३३७

३३८

३३९

३४०

३४१

३४२

निधेरसर्वहो॥सीसेष्यचिकरी॥६१॥तथजाउनिभूतदुष्ट॥सर्वधनसर्वेसीचिवेक॥एसेभिआश्रयआत्यंतिक॥
 लाहासीतुसाझा॥६३॥सगभरलेयाजगाआंत॥जाउनिजियाचीसात॥होऊनिवायीलएकांत॥आह्यातुह्या
 ६४॥तेह्याप्रलुनियेअवस्थे॥सीतुतेतुमाते॥सोगिसेऐसेआइते॥वाटलसरव॥६५॥आणितिजेअडक
 रीते॥निमालेअजुनाजेथे॥तेसीचिहणोनितुमाते॥पावसाशरवी॥६६॥जेसीजबेचीप्रतिमा॥जबना
 सीबिंबा॥येतागाभागेभा॥काहीआहे॥६७॥पंपवनभबरा॥काकसुखसागरा॥मिळताआडवारा॥का
 णाचिगा॥६८॥हणोनितुआणिआहो॥हेदिसताहेदेहधर्मा॥सगरयाचाविरासी॥सीचिहोसी॥श्लो॥य
 याबोलाभाझारी॥होयनलेदोणेकरी॥येथआनआथीतरी॥तुझीचआणा॥७०॥पेंतुझीआणवाहणे॥हेभा
 त्यनिगातेसवणे॥सीतुचिजातिन्नाजणे॥आतवोनेदी॥७१॥येन्हीवेदनिमपच॥जेणेविश्वाभासहासा
 च॥आज्ञेचानरनाच॥काळानंजिणे॥७२॥तोदेवसीसत्यसकल्य॥आणिजगाचाहीबाप॥माआणचिआ
 क्षप॥काकरावा॥७३॥परीअजुनातुझेनिवेधे॥मियादेवपणत्विबिरुदे॥सांडिलीगाभितेआधे॥सगळे
 नितुवो॥७४॥पैकाजाअपुलिया॥राखेआपलीआपणया॥आणवाहेधनजया॥तेसेहंकी॥७५॥तेथअ
 जुनहणदेते॥अचारहेनबोलाव॥जेआमचकाजनों॥तुझेनिगेक॥७६॥यावरीसांगेबिससी॥कासा
 गताभावहीदेसी॥यातुझियाविनादासी॥परआहेजी॥७७॥कमळवनाविकाश॥करीरवीचाथेकअश॥
 तेथआश्रवाचिप्रकाश॥नितुदेतो॥७८॥पृथ्वीनिवऊनिसागर॥मरीजतीयेवदेयोर॥वर्षेतेथयिवात
 चानकरी॥७९॥हणोनिआनाचीतुझेया॥सजनिमित्यनामूणावया॥प्रार्माअसेदानीराया॥कृपानिधी ८९

तं वेदवह्यण्मतीराहं ॥ या बोलाचा प्रस्नावनेह ॥ पैमाने पावसी उयाये ॥ सान्निधेणे ॥ ८१ ॥ संधवासधूपाल्लिया ॥
 जो क्षणधनजया ॥ तेणें विरिचिंकरावया ॥ कारण कायी ॥ ८२ ॥ तें संधर्गवसांतें मजना ॥ सर्वसाहोता अहंता
 निःशेक जाउनि तबना ॥ सीचि होसी ॥ ८३ ॥ एवं साक्षि सुगामी वरी ॥ कुमाला गोनि अवधारी ॥ दाविली जुजु
 जरी ॥ उपायानि ॥ ८४ ॥ जे आधितव पडुसता ॥ सर्वकर्म मज अपिना ॥ सवत्रममन्ता ॥ लाहिजे माझी ८५
 पावी माझा दयमसादी ॥ साझे ज्ञान जाय सिद्धा ॥ तें पेमिसि कुजि शिःहा ॥ स्वरूपी साझी ॥ ८६ ॥ मग पाया
 तिघे राई ॥ साध्य साधन होय नाहीं ॥ किं वहा नुज काही ॥ उरिचिना ॥ ८७ ॥ तारि सवकर्म अपिना ॥ लुबास वेदा
 मज अपिनी ॥ तें पेममन्ता लोयनी ॥ आर्ज हे माझी ॥ ८८ ॥ ह्येणानि येणें मसादबळे ॥ नरु जुझाचि निआड
 खे ॥ नवी केचि येक वेळ ॥ साळलो जुज ॥ ८९ ॥ जे मपच अज्ञान जाये ॥ जेणें येक सीगोचर होये ॥ तें उपपत्तिच
 निउणें ॥ गीतारूप हें ॥ ९० ॥ मिया ज्ञान नुज आपुलें ॥ नाना परिउ पदे शिलें ॥ येणें अज्ञान जात भाडवले ॥ -
 धर्माधर्म जे ॥ ९१ ॥ स्तोत्र ॥ सर्वधर्मात्परित्यज्य मामेक शरणं व्रज ॥ अहं त्वा सर्वपापेभ्यो माक्षयिष्यामि मया
 वः ॥ ६६ ॥ टी० आशा जे मी दुःखी ॥ व्यालीनि दादुरितें ॥ हें असो जें संहन्यातें ॥ दुर्भंगल ॥ ९२ ॥ तें सें स्वर्गन
 रूक सूचक ॥ अज्ञान व्याल धर्मादिक ॥ तें साडुनिया लो अशरव ॥ ज्ञान येणें ॥ ९३ ॥ हाती येऊनि तो दोर ॥ सांड
 जे मास पोकार ॥ कां निद्रा त्या गंधराचार ॥ स्वमीचि जे सा ॥ ९४ ॥ नाना सांडिलें नि कवळें ॥ चर्चाचि थुपें विव
 रें ॥ व्याधित्यागी कुडवाळें ॥ पण सुरवाचें ॥ ९५ ॥ अगा दिवसा पावी देउनी ॥ मृगजळ या पत्यजूनी ॥ काकास
 पावनाही, ९६

त्यागेवन्हीं ॥ न्याजिजेसा ॥ ९६ ॥ तैसें धर्माधर्माधर्मचिंतवाळ ॥ दावी अज्ञानजे कां मुख ॥ नैत्यज्ञानिय जीसकळ
 धर्मजात ॥ ९७ ॥ मग अज्ञान निमालिया ॥ मीचियेक असें ऐसया ॥ समि इस्वमंगलया ॥ आपण पाजेसे ॥ ९८ ॥
 ते सासी एक वाचुनि कांहीं ॥ मग भिन्ना भिन्न आननाहीं ॥ सोहं वोगें न्याचा नाहीं ॥ अनन्य होये ॥ ९९ ॥ तें आपले
 निभे देविण ॥ माझे जाणिजे जें एक पुण ॥ न्याचि नाव शरणा ॥ मज येणारा ॥ १०० ॥ जे सघटाचे निनाश ॥ ग
 र्गनीगान मवेश ॥ मज शरण येणें तें सें ॥ एक कुरी ॥ ११ ॥ स्वर्ण राण सोनया ॥ येक लोले सा पाणि यां ॥
 ते सा मज धन जया ॥ शरण येतु ॥ १२ ॥ वाचुनि सा नाज वायादी ॥ घडवा नक्ष शरण आला किरादी ॥ जाळुनि नेक
 तया गोवी ॥ वाळुनि दे पा ॥ १३ ॥ मज हा शरण रीरि गिजे ॥ आणि जी निवे नि अं सजे ॥ दिग बोलीं दिग जल जे ॥ म
 जाकुवीं ॥ १४ ॥ अगा या कृता ही राया ॥ आंगां पडे जे धन जया ॥ ते दो भिन्न हि क नया ॥ समान होव ॥ १५ ॥ सासी
 विष्व श्वर भट ॥ आणि जी वेयंथान सट ॥ हे बोलेन वाचो रवे ॥ कारी नार ॥ १६ ॥ राणा दिग कर्म फल ॥
 जें आहे आयें ॥ ते सें करी हाताचेने ॥ ज्ञानें येणें ॥ १७ ॥ मग ता हो निरां का दिने ॥ सायां पाये ते ना को गतले ॥ प
 रिन धर्पे चि क ही केले ॥ तेणें जे वि ॥ १८ ॥ तें सें अहय ले मज ॥ शरण राया दिग या तुज ॥ धर्मा धर्म सहज ॥ नाग
 तील ना ॥ १९ ॥ लोह उभे रवाच मातो ॥ ते परि सावि ये मगत ॥ सोने जाल्य पुरत ॥ न सिधिमेट ॥ २० ॥ ह भसा
 का सा पासा नि ॥ मधु नि सुत न या वल्ह ॥ मग का छे हा को डो नि ॥ न ग के ज्ञा ॥ २१ ॥ अजुना काय दिग कर ॥ देर
 न आहे आधार ॥ किं म बोधे हो प्रगोचर ॥ स्व मन्त्र य ॥ २२ ॥ तें सें मज सी ये क न नया ॥ सासि रूपा न ला नि या ॥ २३ ॥
 पाठ ॥ ओं ॥ १०० धनं नया ॥ ओं ॥ ११ गणो नि ॥ ओं ॥ १२ काटिल्या ॥ ओं ॥ १३ मंत्रो य ॥ २४

नका हीं उरावया ॥ कारण असे ॥ १३ ॥ ह्मणों नित याचें का हीं ॥ चिंतीना आपुला वाई ॥ तुझे पाप पुण्य पाहो ॥ सो चहो
इन ॥ १४ ॥ तेथ सर्व बंध लक्षणे ॥ पाप उरावे दुज पणे ॥ तें माझा बोधा वार्याणे ॥ होतुं निजाईल ॥ १५ ॥ जन्मी पडि
लिया लवणा ॥ सर्व ही जळ होय विचस्पणा ॥ तजमी अनन्य शरणा ॥ होई न तें सा ॥ १६ ॥ येतुं लीन अपेसया ॥
सूटला चि आहा सिधंन जया ॥ येई भज प्रकाशो निया ॥ सोडवीन तूत ॥ १७ ॥ या कारण पुढती ॥ हा अधिन-
वाहू निनी ॥ भजर कासि येसु मती ॥ जाणों भिशरण ॥ १८ ॥ ऐसें सर्व रूप रसे ॥ सर्व दृष्ट होलसे ॥ सर्व देश
निवास ॥ बोलिले श्री ह्मण ॥ १९ ॥ मग सावळा सकृ कणा ॥ बाहू पसरों नीद सिणा ॥ आनि गिला स्वशरणा ॥ मक्त
राजती ॥ २० ॥ न पव तो जयाते ॥ का रेवू भूनि बुद्धी ते ॥ बोलणे मागों ते ॥ वोसरले ॥ २१ ॥ ऐसें जे का ही येक ॥ बोला
बुद्धि सी ही अटक ॥ तें द्यावया भिष ॥ रेववाचें केलें ॥ २२ ॥ लह दया लह दयेक जालें ॥ येतुं दयीचें तें लह दयी घालें
हूत न मोडिता केलें ॥ आपणा ऐसें अर्जुना ॥ २३ ॥ दीप दीप लाविला ॥ तें सापरि रंग तो जाला ॥ हूत न मोडिता
केला ॥ आपण पें पार्थ ॥ २४ ॥ तेज्जासु रवाचा भगतया ॥ पूर आला तो धन जया ॥ तेथ गाडत हीं बुद्धी निया ॥ तेज्जासु देव
॥ २५ ॥ सिंधु सिंधु ते पावा जाये ॥ ते पावण लाके दुणा होये ॥ वरीरि गुरुर वणिये ॥ आकाश हीं ॥ २६ ॥ तें संत यां दोघाचें
भिल्लेणें ॥ दोघाना वरे जाणा विक्वणे ॥ किंबहुना धीनारायणें ॥ विश्व कोटलें ॥ २७ ॥ एवें वेदांचें भूळ सूत्र ॥ सर्वाधि-
कारेक पवित्र ॥ श्री ह्मणारी ताशास्त्र ॥ प्रगट केलें ॥ २८ ॥ येथगीता भूळ वेदां ॥ ऐसें के विपा आलें बोधा ॥ ह्मणा
ल तरि मसिद्धा ॥ उपपत्ति मागों ॥ २९ ॥ तरि जयाचा निःश्वासी ॥ जन्म जाले वेद राशी ॥ तो सत्य मति जें पेजेसी ॥ वो

पार, नाही, ७

७

७

७

७

लिलास्वसुरेवं ३॥ ह्यणो निवेदां मुखमृत ॥ गीता ह्यणो हं होय उचित ॥ आणिक हीये नीयेथ ॥ उपपत्ति असे ॥ ३१ ॥ जेनग
बानस्वरूप ॥ जयाचा विस्तार जेथ लपे ॥ तयाचे ते ह्यणिधे ॥ बीजजर्गा ॥ ३२ ॥ तरिका उघया त्यक्त ॥ शब्द राशि अशेष
गीतमाजी असे करव ॥ बीज जेसा ॥ ३३ ॥ ह्यणो निवेदां चैव ज ॥ श्री गीता होय हे मज ॥ गुमे आणिस हज ॥ दिसुत हो
आहे ॥ ३४ ॥ जे वेदांचे तिन्ही माग ॥ गीत उपदल असती चांग ॥ मेषण रत्नो समर्गा ॥ शांमले जेसा ॥ ३५ ॥ तिये चिक
मीदिके तिन्ही ॥ काडे कोण कोण स्थानी ॥ गीते आहती ते नयनी ॥ दाखव ऊ आडका ॥ ३६ ॥ तरि प हिल जाओ अश्रव
नो शास्त्र महति प्रस्ताव ॥ द्वितीयां सांख्य सद्भाव ॥ मका शिन्ना ॥ ३७ ॥ मोक्ष दान स्तनत्र ॥ ज्ञान प्रथाने हं शास्त्र ॥ वि
पुला लहु आस्त्र ॥ उभारिले ॥ ३८ ॥ मग अज्ञाने बाधलेया ॥ मोक्ष पदो बिभावया ॥ साधनारंभ तो तृतीया ॥ अर्था
यां बोलिला ॥ ३९ ॥ जे देहाभिमान बंधे ॥ साड्नि काव्य निषिद्धे ॥ विहित परी अपभां दे ॥ अनुष्ठवे ॥ ४० ॥ ऐसे नि
संदे वे कूस करवा ॥ हाति जा अर्था रीते वें ॥ निर्णय कला ते ज्ञाणाव ॥ कर्म का उयेथे ॥ ४१ ॥ आणिते चिनि त्या टिक
अज्ञान चि अवश्य क ॥ आन्तरना मोचक ॥ के वि होराणा ॥ ४२ ॥ एं सो अपेसा जालिया ॥ बद्ध सुमुख ते आलिया ॥ देवे ब्र
ह्मापण खंभिया ॥ सागीतली ॥ ४३ ॥ जे देह वाचा मानसे ॥ विहीत नि ए जे जेसा ॥ ने ये कू ई चर होशे ॥ कीजे ह्यणी
तले ॥ ४४ ॥ हे चिदम्बरे कर्मयोगे ॥ भजन कथनाचे रवागे ॥ आदरिले शेष भागे ॥ चतुथाचनी ॥ ४५ ॥ ते विस्वरूप अ
करावी ॥ अर्थाय स पंजव आधवा ॥ तव कर्म ईश भजावा ॥ हे जे बोलिले ॥ ४६ ॥ ते अष्टमा अर्था उगड ॥ जाण येथे
देवता काड ॥ शास्त्र सांगत से आड ॥ मोडुनि बोले ॥ ४७ ॥ आणिते पोचि देश प्रसादे ॥ श्री गुरु संप्रदाय लब्धे ॥ सा
पाव ॥ ओं ॥ ३५ रत्न सूषणी ॥ आयुले ॥ ओं ॥ ३७ शास्त्र ॥ ओं ॥ ३९ व्याधी ॥ ओं ॥ ४१ मंदावे ॥ ४२

चजानेउद्धये॥ कोवलेजे ॥४८॥ तेअहृष्टादिअश्रुतिको॥ अथवाअभानिन्यादिको॥ नातुर्वजिह्यणोनितेरवो॥ बारा
 वारुणा॥४९॥ तोबाराकाअर्धांचंआदी॥ आणिपंधरावाअवधि॥ ज्ञानसुखादिसिद्धि॥ निरूपणासो॥५०॥ हं-
 णोभित्तुहंहोइही॥ उर्ध्वमूखातोअध्यायी॥ ज्ञानकाइयवाचो॥ निरुपणजि॥५१॥ एवकाइयनिरूपिणी॥ शु-
 तीचोहेकाइसवाणी॥ गीतापदारत्नाचोलेणी॥ लेयिनीआह॥५२॥ हेमसोकाइअयात्मक॥ शुतीमोसरूप
 फळयेक॥ बोभावेजेअवश्यक॥ ठाकावेसंणोनी॥५३॥ तयाचेनिभाधुनज्ञानेसो॥ वेत्तकरीजोअतिदिवशी॥
 तोअज्ञानवणपाडशी॥ प्रतिपादिजे॥५४॥ तोचिशास्त्राचाबालागी॥ धर्मानिवेर्दजिणावा॥ हानिरोपतोसत-
 रावा॥ अथाययेथे॥५५॥ ऐसाप्रथमालागोनी॥ रातरावालाणिकरूनी॥ आत्मनिश्वासाविरूनी॥ दाविलादे
 वे॥५६॥ तयाअर्थजातोअशेषा॥ केलातात्पर्याचाआवाका॥ तोहाअनरावादरवा॥ कलशाध्याय॥५७॥ एवसक
 ठसाख्यसिधू॥ श्रीभगवद्गोतामवेधु॥ हाओदयेआगळावेदु॥ मूर्तजाण॥५८॥ वेदमपन्नहोचनाइ॥ परि-
 कृपणऐसाआननाहो॥ जेकानीलागलानिहो॥ वणाचाचि॥५९॥ येराप्रवव्यथादेलिया॥ स्त्रोश्रुतादिकंजा
 णिया॥ अनवसरमाहुनिचा॥ राहिलाआह॥६०॥ तरीमजपाहातानेमागीलउणे॥ फेडावयागीतापणे॥ वेद-
 वेवलाभलेणे॥ सेव्यहोआवया॥६१॥ नाहेअर्थरिगाभिसनी॥ अरणेलागोभिकानी॥ जपमेषंवदनी॥ वस्त्रो-
 निया॥६२॥ येगीतेचापाकजेजाणे॥ तयाचनिसांगार्तापणे॥ गीतालिहोनिवाहणे॥ पुस्तकमेष॥६३॥ एसे
 सामिसकटा॥ संसाराचाचोहटा॥ गवादिधानेनचोरकटा॥ मोक्षसरस्वती॥६४॥ परिआकाशीवसावया॥

एधीवरौबैसावया ॥ रविदीप्तीराहाटावया ॥ आवारनम ॥ ६५ ॥ तेविउत्तमप्रथमरेसे ॥ सेविताकवणानेहीनपुसे ॥
 केवल्यदानेसरसे ॥ निवधीतजगा ॥ ६६ ॥ यालागिमागिलीकुटी ॥ म्यालावेदगीतेचापोटी ॥ रिगालाआतागाम
 दी ॥ कर्तितपातला ॥ ६७ ॥ ह्यणोनिवेदाचीसुसेव्यता ॥ तेहसूतजाणअगीता ॥ श्रीह्मणोपंडकता ॥ उपदेशिली
 ६८ ॥ परिवत्साचेनिवारसे ॥ दुभतेहोयपरउद्दरा ॥ जालेपाडवांचेनिमिषे ॥ जगदुद्धरण ॥ ६९ ॥ चातकानियेक
 णवे ॥ मयपाणियेसिधावे ॥ तेथचराचरआयवे ॥ निवालजेवि ॥ ७० ॥ काअनन्यगतीकमळा ॥ लागीसूर्ययेवेळ
 वेळा ॥ किंसांरियाहोइजेडोळा ॥ त्रिभुवनेचा ॥ ७१ ॥ तेसेअर्जुनाचेनियोजे ॥ गीतामक्रावृनिअरीजोर्गसं-
 सारायेवेदथावओझे ॥ फडिलेजगचे ॥ ७२ ॥ सर्वशास्त्ररत्नदीप्ती ॥ उज्ज्विताहोत्रिजगती ॥ सूर्यनहलक्ष्मीप
 ती ॥ वक्त्राकाशिचा ॥ ७३ ॥ बापकळतेपवित्र ॥ जेथिचापायययाज्ञानापात्र ॥ जेणगीताकेलेंस्वतंत्र ॥ आवारजगा
 ७४ ॥ हेअसोभगतेणे ॥ सदुरुद्धोह्यो ॥ पार्थिनेमिसळणे ॥ आपिलेहेता ॥ ७५ ॥ पांडित्यणतसेपाडवा ॥ शास्त्रहे
 मानिलेकिंजिवा ॥ तेथयेरुह्यणेदेवा ॥ आपुलियाह्यपा ॥ ७६ ॥ तरिनिधानजोडावया ॥ भाग्यधडगाधनंजया ॥ प
 रिजोडिलेभोगावया ॥ विपायेहोय ॥ ७७ ॥ पंक्षीरसागरमेवढे ॥ भविर्जादुधाचेभादे ॥ सराअस्मराकवढे ॥
 मथिताजान्ने ॥ ७८ ॥ तेसाहसहोफळाआले ॥ जेअमृतहोडोळांदेशिले ॥ परिवारिचिलीचूकले ॥ जतनेने ७९
 येथअमरलावोगरिले ॥ तेभरणाचिलार्गजाले ॥ भोगोनेणताजाडने ॥ तेसेआहे ॥ ८० ॥ नहुषस्वर्गाधिपति
 जाला ॥ परीराहादीभाब्रावला ॥ तोभुजंगलपवला ॥ नेणसीकार्या ॥ ८१ ॥ ह्यणोनिबहत्पुण्यतुवा ॥ केलेंतेणे
 पाठ, ओ. ६६ मध्यम, ओ. ७९ सर्प्यास, वरिली. ७.

धनंजया ॥ आजिशास्त्रराजा इया ॥ जालासि विषय ॥ ८२ ॥ तरियया चिशास्त्राचेनि ॥ समदाये पांघरोनि ॥ शास्त्रार्थहा-
 निकेनी ॥ अनुधी हो ॥ ८३ ॥ ये कंवीं अमृतमयना ॥ सारिरेव होईल अर्जुना ॥ जरि रिघसी अनुष्ठाना ॥ समदाये बी-
 णा ॥ ८४ ॥ गाथधुडजोडे गोमदी ॥ ते तें चिपिंवे ये किरीटी ॥ जे जाणिजे हातवटी ॥ सांजवणीची ॥ ८५ ॥ ते सांथी
 गुरु प्रसन्न होये ॥ शिष्यविद्याही कीरलाहे ॥ परिते फळे समदाये ॥ उपासिलिया ॥ ८६ ॥ ह्यणों निशास्त्रे जोइये ॥
 उचित समदाय आहे ॥ तो एक आतां बहुवे ॥ आदरेसी ॥ ८७ ॥ स्तोत्र इदं तेनात पस्कायना ॥ मक्ताय कदाचन ॥ नचा
 श्रुष्टूषे वाच्यन च भाषाभ्यसूयति ॥ ८७ ॥ टी ० तरितुवां हे जे पाथा ॥ गीताशास्त्राला धरें आस्था ॥ ते तपोहीना स-
 र्वथा ॥ सांगें नाहो ॥ ८८ ॥ अथवा तापस हा जाला ॥ परिगुरु भक्तिजो दिला ॥ तो वेदीं अत्यज वाळिला ॥ ते सावाळी
 ॥ ८९ ॥ नातरि पुरेडा श्रुजे सा ॥ नघोपे वृद्ध तरी वाचसा ॥ गीताने दी ते सीतापसा ॥ गुरु भक्तिहीना ॥ ९० ॥ कांतप
 ही जोडे देही ॥ भजगुरु देवाचा वाणी ॥ परि आकर्णनी नाही ॥ चाडजरी ॥ ९१ ॥ तरि सागील दोहा आंगी ॥ उत्त-
 म होय कीरजरी ॥ परि यथाश्रवणालागी ॥ योग्य नाह ॥ ९२ ॥ सुक्ता फळ मल ते स ॥ हो परि सुखनस ॥ तव गुणप्र-
 वेशी ॥ तेथ कायी ॥ ९३ ॥ सागरंग भीर होये ॥ हे कोण ना ह्यपात आहे ॥ परि वृष्टी वायां जाये ॥ जाली तेथे ॥ ९४ ॥ क्ष-
 लिया दिव्यान्मस वावे ॥ मग जे वाचा धाडवे ॥ ते आती कान करावे ॥ उदारपण ॥ ९५ ॥ ह्यणों नि योग्य मल ते स ॥ हो
 तपरी चाडनसे ॥ तरि झणे वा निवसे ॥ देसी हे तया ॥ ९६ ॥ रूपाचा सुजाण डोळा ॥ वोडउ ये काथि परि मळा ॥ जेय
 जंमान ते फळा ॥ तेथें चियेगा ॥ ९७ ॥ ह्यणों नितर्पि भक्ति ॥ याहावे ते स भद्रापति ॥ परि शास्त्र अवरणी अनासक्ति ॥

वाढावेचिते ॥९८॥ नातरितपमक्ति ॥ होउनिअवण ॥ आनि ॥ आथीरेसीहीअयती ॥ देरवसीजरी ॥ ९९ ॥ तरीगीता
 शारुत्रभिभिता ॥ जोसीसुकळलोकशास्ता ॥ तयाभातेसायान्यता ॥ बोलेलजो ॥ १०० ॥ साझासज्जनेसिंभाते ॥
 सेशून्याचेनिआह्वाते ॥ येकआहातीतयाते ॥ योग्यनम्रणे ॥ ११ ॥ तयाचीयेरआघवी ॥ सामझीरेसीजाणावी ॥ दी
 र्पवीणवाणादवी ॥ रात्रिचीजेसी ॥ १२ ॥ अंगोरे ॥ अणितरुणे ॥ वारिलेयलेआहेलणे ॥ परियेकलेनिअणे ॥ सांदि
 लेजेवि ॥ १३ ॥ सोनयाचेसुंदर ॥ निर्वाळिलेहोयधर ॥ परिसर्परागाद्वार ॥ रुंधलेआहे ॥ १४ ॥ निपजेदिव्यान्वचोर
 ट ॥ परिमाजीकाळकुट ॥ हेअसेमेघीकपट ॥ रात्रिणीजेसी ॥ १५ ॥ तैसीनपमक्तिमेधा ॥ तयाचीजाणप्रबुद्धा
 जोमाझयाचीकानिदा ॥ माझीचिकरी ॥ १६ ॥ याकारणेधनजया ॥ तोमक्तमेधावीनपिया ॥ तरिनकोवापाइया
 शारुत्रआनळादेवो ॥ १७ ॥ कायबहुबोलोनिदुका ॥ योग्यस्वष्टयाहीसारिखा ॥ गीताहेकवतिका ॥ लागीहीनेदी
 ॥ १८ ॥ हाणोनिनपाचाधनुर्धरा ॥ तळादातोनिगाडोरा ॥ वरिगुरुभक्तीचापुरा ॥ मासादजोजाला ॥ १९ ॥ आणिअव
 णेच्छेचापुढा ॥ दारवंदासदाउधडा ॥ वरिंकलशचोरवडा ॥ अनिदरत्नाचा ॥ २० ॥ अजो ॥ यइदपरमगुह्यमदक्ते-
 खमिधाम्यनि ॥ भक्तिमथिपुंगवत्वासमेवधन्यमशायः ॥ २१ ॥ देशाभक्तालीचीरयदी ॥ गीतारत्नेन्वरहा
 प्रतिष्ठा ॥ मरमाझियासवसादी ॥ तुकसीजरी ॥ २२ ॥ कांजेरकासुरपणेसी ॥ त्रिमानुकेनियेदुरी ॥ प्रणवहो-
 तागभवसी ॥ सांकडला ॥ २३ ॥ तोगीतेचियाबाहळी ॥ वेदबीजेनेषाहाळी ॥ कीगायत्रीकुलोफळी ॥ श्लो-
 कांचाआली ॥ २४ ॥ तेहमंत्ररहस्यगीता ॥ मेळवीजोमाझियाभक्ता ॥ अनन्यजीवनामाना ॥ बाळकाजैसी ॥ २५ ॥
 पाठ, ओ. १. उंगोरा. ७.

तेसीभक्तगोतमीं॥ सेटीकरीजो आदरसी॥ तो देहापावीं मजसी॥ येकचिहोय॥ १५॥ स्तोत्र नवतत्त्वान्मनु-
खपुकाश्चिन्माप्रियहृत्तमः॥ संविता न च मे तस्मादन्यः प्रियतरा सुवि॥ ६९॥ टी० आणदे हाचे होलेणे॥ हे
ऊनि वेगळे पणे॥ असे तव जिवे प्राणे॥ तो चि पि टये॥ १५॥ ज्ञानिया कर्म वा तापसां॥ यया रघुणे चिया भाणुसी
माजितो ये कुगाजे सा॥ पट्टये मज॥ १६॥ ते सा भूतर्षी आधवा॥ आनने रवे पांडवा॥ जोगीता संगोमेळावा
सक्त जनान्चा॥ १७॥ मज ईश्वराचे निलोम॥ हेगीतापदता अप्सोम॥ जो भूडण ह्य सप्त॥ सतांचिये॥ १८॥ न
वपल्लु वोरामाचित॥ मला निळका पवित॥ आसो दजळ बाळबत॥ स्वानंद डोळ॥ १९॥ को किळांक लखाचे
निमिषे॥ मझ दुबोल वीत जसे॥ वसंत कांय वेशी॥ मद्रक्त आरामी॥ २०॥ काजन्यांचे फळ चकोरा॥ होत जे
चंद्रये अंबरा॥ नाना नव धन मथुरा॥ वोदत पावे॥ २१॥ ते सा सज्जन चांमिळारपी॥ गीतापद्य रत्नी उमपी॥ वर्ष-
जा माझा रूपी॥ हे तु वे रु नि॥ २२॥ भगत यांचे निपाडे॥ पढिये ते मज फुडे॥ नाहीं विगासांगे फुडे॥ त्या हाकिती
॥ २३॥ अर्जुना हा रायवरि॥ सीतया ते सहू ये जिह्वारी॥ जोगीतार्थाचे करी॥ परगुणे संता॥ २४॥ श्लो० अध्ये-
ष्यते यथ इदं धर्म्यं स वाद्मावयोः॥ ज्ञानयज्ञे न तेनाह मिष्टः स्याभि ति समतिः॥ २५॥ टी० पैमा द्वियातु द्विका-
मिच्छणी॥ वादी नली जे हे काहाणी॥ मोक्ष धर्म काजिणी॥ आलासे जेथे॥ २५॥ तो हा सकळा थं मद॥ आहा दो-
धाचा सवाद॥ न करिता पद भेद॥ पाठे चि जो पटे॥ २६॥ तेणे ज्ञानान बो मदीसी॥ मूळ अवैद्य चिया आहुती॥ तो
ष विला होय स मती॥ परमात्मामी॥ २७॥ घेरु निर्गतार्थ उगाणा॥ ज्ञानिये जे विचक्षण॥ दाकिती ते गाणा-

ॐ, १७. सङ्गनावा. ॐ. १९. फुलानि, ॐ, २६. मन्थ, ॐ,

वाणा ॥ गीतचोलाहे ॥ ३८ ॥ गीतापाठकामिणें ॥ फलार्थज्ञाचिसरिसें ॥ गीतापाठलियेकीनेसे ॥ जाणेंताहे ॥ ३९ ॥
 श्लो० श्रद्धावाननसहस्रपुण्यादपियोनरः ॥ सोपिमुक्तः शक्राहोकात्रासुयात्युण्यकर्मणां ॥ ११ ॥ टी० आ-
 णिसर्वसागैर्निदा ॥ सोडुनिआस्थापेश्रद्धा ॥ गीताअवणीअद्दा ॥ उस्मरिजो ॥ ३० ॥ तथाचअवणपुढों ॥ गी-
 तचीअस्मरजवपेढों ॥ होनीनातवउठाउठी ॥ पळेचिपाण ॥ ३१ ॥ मगअदवीयमाजिजेसा ॥ वन्हिरिथतासहसा ॥
 लुधितीकादिशा ॥ वनोकेनिये ॥ ३२ ॥ काउदयाचळकुळी ॥ झळकताअश्रमाळी ॥ निमिरेअतगळी ॥ हारपती ॥
 ३३ ॥ तेसाकानाचासहादारी ॥ गीतागजरजेथकरी ॥ तेथसुधीचियेआदिवरी ॥ जायेचिपाण ॥ ३४ ॥ ऐसीजिम्ह
 वल्लुपुवढ ॥ होयपुण्यरूपचोखद ॥ याहवरीअचाट ॥ लाहेफल ॥ ३५ ॥ जियेगीतेचीअस्मरे ॥ जतुळीकांकण
 हार ॥ रिघतीतितुलहीनीपुणे ॥ अश्वमेधुर्का ॥ ३६ ॥ ह्यणोनिअवणेपापेजाती ॥ आणधर्मधरीउज्जती ॥ नेणेस्व
 गगज्यसपत्नी ॥ लाहेचिशेवरी ॥ ३७ ॥ तोपेसजथावयालागी ॥ पहिलेपणेकरास्वरी ॥ मगआवडेनवभोगी ॥ पा
 रोमजचिमिळे ॥ ३८ ॥ ऐसीगीताधुनजया ॥ ऐकतयाआणिपढतया ॥ फलमहानंदमिया ॥ ब्रह्मकायबोला ॥ ३९ ॥
 याकारणेहेअसो ॥ परिजयालागीशास्त्रानिसो ॥ केलातंतवतुजपुसो ॥ काजतुझे ॥ ४० ॥ कच्चिदेतच्छत
 पाथत्येकायेणचेतसा ॥ कासुंदज्ञानसंभोहः मनएस्मधनजया ॥ ४१ ॥ टी० तरिसागपापाडवा ॥ हाशस्त्र
 सिद्धातआयवा ॥ दजएकचित्तफावा ॥ गेलाओहे ॥ ४२ ॥ अथवामाझारी ॥ गेलेंसाडीविषवुरी ॥ किंवाउपेसवरी
 वाळूनिसांडिले ॥ ४३ ॥ जेसैंआहीसांगितले ॥ तेंसंचिन्दयाफावले ॥ तरीसागपावहिले ॥ पुसेनतेमों ॥ ४४ ॥

पाव नाही

आह्मीहं जैमं जराती ॥ उगाणिले कानाचा हाती ॥ येरांते संचितु झालि ॥ पंत कलिकि ॥ ४४ ॥ तारि स्वाज्ञान ज-
 निते ॥ मागिले मोहें तुते ॥ मूलु वीलें तो येथे ॥ असे किनाही ॥ ४५ ॥ हे बहु पुसो काड ॥ सारे तुं अपुला वाई ॥ कर्मो-
 कर्म काही ॥ देरवतांसी ॥ ४६ ॥ पाथ स्वानंद करसे ॥ विरलें सभे दश ॥ आणिल्या येणें मिव ॥ प्रज्ञाचिनि ॥ ४७
 ॥ पुण ब्रह्म जाला पाथ ॥ तारि पुढील साधा वथा कायार्थ ॥ मया दात्री कृष्ण नाथ ॥ उल्लुघोने दि ॥ ४८ ॥ येतूवीं आपुं-
 ल करणे ॥ सर्व जकाय तो जेणे ॥ परिकेले पुसणे ॥ याचि लागीं ॥ ४९ ॥ एवं करे निचा प्रश्न ॥ नसते चि अजुन पण ॥
 आपुं निचा आपण ॥ जाले पूण पणत बोलवी स्वये ॥ ५० ॥ मग स्त्री राखी ते साडित ॥ गगनी पुज मंडित ॥ निवरे
 जेमान निवडित ॥ पूर्ण चंद्र ॥ ५१ ॥ ते सा ब्रह्म हीं विसरे ॥ तेथ जग चि ब्रह्म त्वें मरे ॥ हेही साडी तरि विरे ॥ ब्रह्म
 पण ही ॥ ५२ ॥ ऐसा मोड न मांडन ब्रह्म ॥ तो दुःखें दहा चि येसी मि ॥ मो अजुन येणे नोम ॥ उभा देला ॥ ५३ ॥ मग
 कापता कूरतळीं ॥ दडपू निरो मावडी ॥ पुलिका स्वें दजळीं ॥ जिरु निचा ॥ ५४ ॥ माणसो सोडल नथा ॥ आंगा
 आंग चि दूकळियां ॥ स्मृनि स्तंभ चाल नथा ॥ सुलो निचा ॥ ५५ ॥ नेत्र शुशुळ चि निवोते ॥ आनदा मृत चि मरिते
 वोसडत न माथुते ॥ काढु निचा ॥ ५६ ॥ विविधा ओं न्मूक्याची दादी ॥ वीपदा दत होतो कवीं ॥ नेकरु निचा पेंवी
 हृदया माजी ॥ ५७ ॥ वाचिचें विवृळणे ॥ सावरु निमाणे ॥ आक्रमे चें स्व सणे ॥ ठेऊ निवाथी ॥ ५८ ॥ अस्त्रो अ-
 जुन उवाच ॥ नृशे मोहः स्मृतिल व्याल तमादान्मयाच्युन ॥ स्थितां भिगत संदेहः करिष्ये वचन तव ॥ ५९ ॥ टी-
 मग अजुन ह्यण काय दवा ॥ पुसतां ति आवड मोहा ॥ तीरतां सकुटुब गेला जीवावा ॥ घेऊ नि आपला ॥ ६० ॥ पा

पाठ, ओं. ४५ हींगा, ओं. ५५ देकया, छ

सिंघेकनिदिनकरं ॥ डोलयाते आधारे ॥ प्रसिजेहं कायिमेरे ॥ कोणेंगोवो ॥ ६० ॥ तेसातूं श्री कृष्ण राया ॥ आसुवि
 याडोळया ॥ गाचरहेचिकायिसया ॥ नपुंरंतव ॥ ६१ ॥ वरिलोमेमायेयाम्मनि ॥ तेसागसीताडमफुनि ॥ जेंकायि
 सेनिहीकुरुनि ॥ जाणूनये ॥ ६२ ॥ आतामोहअसेकिनाही ॥ हेरेसेजीपूसमीकादे ॥ कृतकृत्यजाहलेंपाहो
 तुझेपण ॥ ६३ ॥ गुंतलोहोतोअजुनगुणे ॥ तोभूफुझालेतुझेपण ॥ आतांपुसणेसांगणे ॥ दोहीनाही ॥ ६४ ॥
 मीतुझेनिमसादे ॥ लाधेलनिआत्मबोध ॥ सोहाचिंतयाकादे ॥ नहीचउरो ॥ ६५ ॥ आताकुरेणेंकानकरणे ॥
 हेजेणउतीदुजेपणे ॥ तेंतूवांचूनिनेणे ॥ सर्वत्रगा ॥ ६६ ॥ योविषुयीमाझावायो ॥ संदेहाचेसुरेचिकाही ॥ अश्र-
 द्हाकर्मजयनाही ॥ तेंमीजालो ॥ ६७ ॥ तुझेनिमजमीपावानी ॥ कतव्यनिलेनिपदूनि ॥ परिआज्ञातुझीवांचेनि
 आननाहीमो ॥ ६८ ॥ काजेदृश्यदृश्यातेनाशी ॥ जेंदुजेहेतातेयासी ॥ जेंएकपरिसर्वदेशी ॥ वसवीसदा ॥ ६९ ॥ ज-
 याचेनिमबधेबधफिरे ॥ जयाचियाआशाआशतुदे ॥ जेंभेतलयासर्वभेदे ॥ आपणपांचि ॥ ७० ॥ तेंतेंगुमलिगजो
 माझे ॥ जेंयेकलपणीचेंविरजे ॥ जयालागींवीलाहिजे ॥ अहेतबोध ॥ ७१ ॥ आपणांचेहाऊनब्रह्म ॥ सांरिजकु-
 त्याहृत्याचेंकाम ॥ मगकीजेकानिःसीम ॥ सेवाजयाचि ॥ ७२ ॥ गंगासिंधुसेवुगेम्भी ॥ यावतांचिमसुदजालो
 तेविष्मन्नासेलुदयली ॥ निजपदाची ॥ ७३ ॥ नातूमाझाजिनिरूपचारु ॥ श्रीकृष्णामेव्यमदुरु ॥ माझस्यनेन्म
 उपकारु ॥ हाचिमानो ॥ ७४ ॥ जेंमजतुह्याआड ॥ हातेमदोचेकवाद ॥ तेंफेडोमिकेलेगोड ॥ सिवास्वरव ॥ ७५ ॥
 तरेआनांतुझीआज्ञा ॥ सकळदेवाधिदेवराजा ॥ करीनेदयीअनुज्ञा ॥ मन्मनियेविषयी ॥ ७६ ॥ यथाअर्जुनासि
 पाव ॥ ओं ॥ ६४ ॥ पमो ॥ ओं ॥ ६८ ॥ कृतं ॥ ओं ॥ ७१ ॥ वां ॥ ओं ॥ ७२ ॥ वां ॥ ओं ॥ ७३ ॥ वां ॥ ओं ॥ ७४ ॥ वां ॥ ओं ॥ ७५ ॥ वां ॥ ओं ॥ ७६ ॥ वां ॥

याबोला ॥ देवनाचस्मरे सुलला ॥ ह्यर्णोविच फळाजाला ॥ समळा फळं हा मज ॥ ७७ ॥ उणना उभ मला सुखाकर ॥
 देरवुनी आपला कुमर ॥ मर्यादाक्षीरसागर ॥ विस्मरे चिना ॥ ७८ ॥ गेंसंमवादाचा बहुला ॥ लूनन दोघा चिया आलु
 ला ॥ लागलें देरवां निजाला ॥ निर्भर संजय ॥ ७९ ॥ तेंण ह्यणत संसजयो ॥ बापू ह्मणां न्थी रावो ॥ तो आयु न्नामं
 ना भावो ॥ अजुने मी केला ॥ ८० ॥ तेंण उच बळले पण ॥ संजय दूतरा द्वाते ह्यण ॥ जी केस बाद रायणो ॥ रक्षि-
 लो दोघे ॥ ८१ ॥ आजितु भर्ते अवधारा ॥ नाही चि मच कूहा संसारा ॥ कों जान ह्मण्य व हारा ॥ आणिले ति म ८२ ॥
 आणिरथोचिचे राहादी ॥ येइजे येडे चाभादी ॥ तथा आह्यायोगादी ॥ गोच राहानी ॥ ८३ ॥ वरीजु झोचें निर्वाण ॥ सा
 डले असे दारुणा ॥ दोही हागी आपण ॥ हारणिजे संसे ॥ ८४ ॥ येवदा जिये साकडां ॥ केसा अलु ग्रहोपेगादा ॥ जेव
 ह्यान दउधडा ॥ सागवीत सं ॥ ८५ ॥ ऐसं संजय बोलिला ॥ परिनद वे परु उगला ॥ चंद करणी शिव तला ॥ पाषाण जे
 सा ॥ ८६ ॥ हे देरवो भितयाची दवा ॥ मग करी चिना मारि सा ॥ परिसर व जाला पि सा ॥ बोल तंसे ॥ ८७ ॥ सुल विला
 हर्षवेगे ॥ ह्यर्णो निदूतरा द्वासागे ॥ येहू वी न ह्मंतया जोगे ॥ हे कीर जाणे ॥ ८८ ॥ अलु संजय उवाच ॥ इत्य
 ह्वा सुद वस्य पाथस्य च महात्मनः ॥ संवादि भिम मथ्योष मद्रुतरा म हर्षणे ॥ ८९ ॥ टीग मग ह्यणें पै कुरु राजा ॥
 पै सा फालु पुत्र तो ज्ञा ॥ बोलिला तें अथो सजा ॥ गोल जाले ॥ ९० ॥ अगा पूर्वा परसागर ॥ यथानामा मी चि मि
 नार ॥ येर आधवे त नीर ॥ येक जे सं ॥ ९१ ॥ तेसां अ ह्यणा पाथ रंसे ॥ हे आगा चि पा मि दिसे ॥ मग संवा दो जी
 नसे ॥ काही चि से द ॥ ९२ ॥ पै इयणा हू निचा रंवे ॥ दोन्ही हांती सन्मुख ॥ तेथ येरी येर देखे ॥ आपण पेजे सं

॥ ९२ ॥ तेसादेवमीपुडुस्ते ॥ आपणपेंदेवीदेखत ॥ पांडवेसीदेखेअनंत ॥ आपणपेंपाथी ॥ ९३ ॥ देवदेवामक्क
लागी ॥ जियविवरदेखेआगी ॥ येरुनियेचिहोस्मगी ॥ होन्हादेखे ॥ ९४ ॥ आपणिककाहोचिनाही ॥ ह्योनाजिके
रितीकाई ॥ दोघयेकपणपाही ॥ नादताति ॥ ९५ ॥ आतामेदजरीमोडे ॥ तरोम्योत्तरकायडे ॥ नामेदचित
रिजेडे ॥ संवादसरवका ॥ ९६ ॥ ऐसेबोलतादुजेपणे ॥ सवादींदेतगिळणे ॥ तेऐकिलेबोलणे ॥ दोघांचेभिया
॥ ९७ ॥ उठुनिदोहोआरसे ॥ बोडविलीयासारसे ॥ कोणकोणापाहातसे ॥ कल्यावपा ॥ ९८ ॥ कादोपाससुखदे
लयादीपके ॥ कोणकोणाअर्थिके ॥ कोणजाणे ॥ ९९ ॥ नानाअकारपुढेअर्के ॥ उदयलियाआणिक ॥ कोणह्योनेम
काशक ॥ यकायेकवण ॥ १०० ॥ हेनिथोरुजातांकुडे ॥ निधारामिठकपडे ॥ तदोयेजालेयेवडे ॥ संवादसरसे
॥ ११ ॥ जीमिळतादोन्हीउदुके ॥ साजिलवणवारुनाक ॥ किंवयासीहीनिमिरवे ॥ तेचिहोये ॥ १२ ॥ तेसेअक्रिष्ण
अर्जुनदोन्ही ॥ संवादलेतेमनी ॥ धरितामजहोवानी ॥ तेचिहोतसे ॥ १३ ॥ ऐसेह्योनेनामोटेके ॥ तबहिवाभिसा
लिके ॥ आवबनेलानेणके ॥ संजयपणाचा ॥ १४ ॥ रोसांचजवपरके ॥ तवतंवआंगसरके ॥ स्तमस्वदात
जिके ॥ ऐकलाकप ॥ १५ ॥ अहयानदपरिस ॥ दिदीरुसमयजालीअसे ॥ तेअनुनरुतीजेसे ॥ इवलचि ॥ १६ ॥
नेणाकायमायपोटी ॥ कायनेणोगुंकुंदी ॥ वागंथापडतमिनी ॥ उससाविद्या ॥ १७ ॥ किंवहुनासात्विकाआज
चचरभाडताउमेता ॥ संजयजालासचाहता ॥ संवादसरवाचा ॥ १८ ॥ तयासरवाचीऐसीजाती ॥ जेआपणिया
धरीशाती ॥ मगपुदतीदेहस्मृती ॥ लाधलीतेणे ॥ १९ ॥ अन्तो व्यासप्रसादाच्छुतवनेतहुत्यमहापर ॥ अ
पार ॥ ओ ॥ १९ अर्थिक ॥ ओ ६ ॥ म्मरी ॥ ७

गंयोरेश्वरात्तुणात्सात्सात्कथयतः स्वयं ॥ ७५ ॥ टी० ते ह्यंबे सते नि अनंदे ॥ ह्यणे जीजं उपनिषदे ॥ नेणतीने व्या
 समसादे ॥ ऐकिलं मिया ॥ १० ॥ ऐकता चिते गोदा ॥ ब्रह्मत्वाची प्रतिनिधि ॥ मीतुं पणसी दृष्टी ॥ विदुनिगेती ॥
 ११ हे आघव चिकारोरा ॥ जयाठायाय ते मागे ॥ नयाच वाक्य सुवर्ग ॥ केलें सजव्यासे ॥ १२ ॥ अहो अजुनचिनिमि
 वे ॥ आपणपे चिहुजे ऐसे ॥ नेटो नि आपणया उदेशे ॥ बोलिले जे देव ॥ १३ ॥ तेथे कां माझे ओत्र ॥ पावाचे जाले जी
 पात्र ॥ काय बाबु स्वतंत्र ॥ सांमर्थ्येची गुरुचे ॥ १४ ॥ स्त्रो० राजन्स स्मृत्यसंस्थत्यसंवादिमिममदुत ॥ केशवाजु
 नथोः पुण्यत्वाभिमिचमुहसुहः ॥ ७६ ॥ टी० रायाहं बोलतां विस्मय होये ॥ तेणे चिमा डावळा दाये ॥ रत्नक्रोर
 त्वकिळाये ॥ श्रीकोळिते जीसी ॥ १५ ॥ हिमवतचि संशे वरे ॥ चंद्रोदयो होती काशमीरे ॥ अगसूयागमीसायार ॥
 द्रवत्वये ॥ १६ ॥ तेसाशरीराचिया स्मृती ॥ तो संवाद संजय चिर्त्ता ॥ धरी आणि पुढती ॥ तेंचि होये ॥ १७ ॥ स्त्रो० क
 तच्च संस्मृत्यसंस्थत्यरूपमत्यदुत हरः ॥ विस्मयो मम हान्नाजं च ह्यभिचपुनः पुनः ॥ ७७ ॥ टी० सगउवो नित्य
 गेनपा ॥ श्रीहरिचिया विश्वरूपा ॥ दोखिलया उगाक्राया ॥ असा लाहसी ॥ १८ ॥ नंदे रवणे निजं हिसे ॥ नाहो पणे
 चिजं असे ॥ विसरे आठवतें कसे ॥ चुकउ आतां ॥ १९ ॥ देखो निचमत्कार ॥ कीजे तो नाहो पैसार ॥ मज हो स
 कृतम हां पुर ॥ नेतुं आहे ॥ २० ॥ ऐसा श्रीकृष्णाजुन ॥ सवाद संगमी स्नान ॥ कुरु निंदते सी तिळदान ॥ अहंते सं ॥
 तेथ असे वर अनंद ॥ अलौकिक कृष्ण का हो संयदे ॥ श्रीकृष्णाक्षणे सद्गद ॥ वेळो वळा ॥ २१ ॥ या अवस्थ्याची काही
 कोरवाते परी नाहीं ॥ ह्यणो निरायेत काही ॥ कल्याणें जव ॥ २२ ॥ तव जाला साखलाभ ॥ आपणयां करुनि स्वयं म
 पावना हो ॥ ७५

बुद्धाविला अवहंस ॥ संजयेतेषां ॥ २४ ॥ ते यकोणीये किं अवसरीं ॥ हो आर्वीते करु निदुःखी ॥ रावो ह्यणे संजयापरी
 के सीलुद्धीगा ॥ २५ ॥ तेणेतू ते येथे व्यासे ॥ बैस विन्का सया उदेशे ॥ अयसंगा माजिरेसे ॥ बोलसी काई ॥ २६ ॥
 गुनी चरा उळो नुलिया ॥ दाही दिशामानी सुनिया ॥ का रात्री होय याहा लया ॥ निशाचरा ॥ २७ ॥ जो जेथिचे गोरव
 नेणे ॥ तथासिते भिगुलवाणे ॥ ह्योणानि अयसगतेण ॥ ह्यणा वाकितो ॥ २८ ॥ मग ह्यणे सारे अस्तु त ॥ उदयल
 सेजे उत्कळित ॥ ते कोणा सिबारे जेत ॥ देई लशे रवी ॥ २९ ॥ ये हवीं विशेष बहते कु ॥ आमुचे एसे मानसिक ॥ जे
 दुरोधनाचे अधिक ॥ प्रतापसदां ॥ ३० ॥ अणिये गुचे निपाडे ॥ दळ हाया ते देहूडे ॥ ह्योणो निजे त फुडे ॥
 आणिल नाते ॥ ३१ ॥ आह्या तव गमेरेसे ॥ मालु झेजो तोषकसे ॥ तेनेणा संजया अस ॥ ते संसागपा ॥ ३२ ॥ भ्रु
 कु ० यथयोगे श्वरः कृष्णो यत्र पार्थो धनुर्धरः ॥ तत्रार्थी वंजयो मृतितुर्वानीति मीतिर्ममम् ॥ ३३ ॥ हरिः
 ओ नत्सादिति श्रीमद्भगवद्गीतासु पविषत्सु ब्रह्मविद्यायां योगशास्त्रे श्रीकृष्णार्जुनसंवादे मोक्षसंन्यासयोगो
 नाम अष्टादशाध्यायः ॥ १८ ॥ ॐ ॥ टी ० यथाबोला संजया ह्यणा ॥ जीयेरयेराचे र्म निणा ॥ परि आयुष्यते
 ये जेणे ॥ हे फुडे कींगा ॥ ३३ ॥ चंद तेथे चंदिका ॥ शंभू तेथे अंबिका ॥ संत तेथे विवेका ॥ असणे कीं जी ॥ ३४ ॥
 रावो तेथे कटक ॥ सो जल्य तेथे सोदरीक ॥ वहि तेथे दाहक ॥ सामर्थ्य कीं ॥ ३५ ॥ दया तेथे धर्म ॥ धर्म तेथे सत्त्वा
 गम ॥ सरवीं पुरुषोत्तम ॥ असे जे सा ॥ ३६ ॥ वसंत तेथे वन ॥ वन तेथे समने ॥ समनी पात्रिगने ॥ सारगोची ॥ ३७
 गुरु तेथे ज्ञान ॥ ज्ञानी आत्मदर्शन ॥ दर्शनी समाधान ॥ आधि जेसे ॥ ३८ ॥ भाग्य तेथे विलास ॥ सरव तेथे अमृत
 भूत. ओ. ३२ जोडस. ॐ

स ॥ हे असे तेथ मकाश ॥ सूर्य जेथें ॥ ३७ ॥ ते सैसकळ पुरुषार्थ ॥ जेणें स्वार्थी कामनाय ॥ तो आहूणारा वाजय ॥
 तेथ लक्ष्मी ॥ ४० ॥ आणि आपले निदाने सी ॥ ते जगदंबाजया पार्सी ॥ आणि सादिको कुरुदुसी ॥ न कृतीत याने ॥
 ॥ ४१ ॥ हृषा विजय स्वरूप निजाने ॥ तो राहिला असे जेणे भागे ॥ ते जयलागवगे ॥ तेथे चिआहे ॥ ४२ ॥ विज-
 यीना मे अर्जुन विख्यात ॥ विजय स्वरूप अहंकाराना ॥ अये सी विजय समस्त ॥ जाण निश्चिने तेथे चि अ-
 से ॥ ४३ ॥ तया चि येदेशी त्वाझाडी ॥ कल्प तरु ते होडी ॥ न जिणा वेकू ये वदी ॥ माय बाप असता ॥ ४४ ॥ नेपा-
 याण ही आयवे ॥ चितार त्वेकानो हावे ॥ तिये सुमिके कानयावे ॥ सवणें त्वे ॥ ४५ ॥ तया चियागो वीचिया ॥ नदी
 असते वाहाविया ॥ नवलकायगा ॥ विचारीपा ॥ ४६ ॥ तयाचे विसाद शब्द ॥ सूरवे त्वणो येती वेद ॥ सदेह सच्चिदा-
 नंद ॥ कानो हावे ते ॥ ४७ ॥ पस्वर्ग पवर्ग दोन्ही ॥ इथे पदं तथा आधीर्ना ॥ अहंकारा बापजननी ॥ कमळाजया ॥ ४८
 त्वणो निजिया बाहो उमा ॥ तो लक्ष्मी येचा वल्लभा ॥ तेथ सवसिद्धि स्वयंभा ॥ येर मोनेणो ॥ ४९ ॥ आणि समुद्राचा
 मेघ ॥ उपचोगें तथा हनिचांग ॥ ते सापार्थी अजिलाग ॥ आहतये ॥ ५० ॥ कनक त्वदी सायूरु ॥ लोहा परीस होय
 कीरु ॥ परिजगा पोसिता व्यवहारु ॥ ते चि जाणे ॥ ५१ ॥ येथे गुरुत्वा येतसे उणे ॥ ऐसेक्षण कोणही त्वणे ॥ वदि-
 मकाश दीपपणे ॥ मकाशी आपला ॥ ५२ ॥ ते सादेवा विद्याशक्ति ॥ पार्थदेवासी चबहुती ॥ परिसने इयेस्तुती ॥ गो-
 रंघ अस ॥ ५३ ॥ आणि पुत्र सी सर्वगुणो ॥ जिणा वाहे बापा सिराणी ॥ करी ते शार्डपाणी ॥ फळा आली ॥ ५४ ॥ किं-
 ब हुनारें मानूपा ॥ पार्थजाला स हृषा हृषा ॥ तो जयाकडे साक्षपा ॥ रीती आह ॥ ५५ ॥ तो विगा विजया सिवावा ॥

पाठ. ओं. ४५ चैतन्यंत, ७.

७

७

७

येथुजशोणसंदेहो ॥ तेथनयेतरीवावो ॥ विजयोनिहोये ॥ ५६ ॥ ह्यणोनिजेश्चीतेथश्चीमंत ॥ जेथतोपुंज्वास्त
 तेथदिजयमस्त ॥ अस्तुदयेतय ॥ ५७ ॥ जर्गव्यासाचेनिसाचे ॥ धिरेमनतुमचे ॥ तरीयाबोलचे ॥ ध्रुवचिमाजा
 ५८ ॥ जेथतोओविल्लुम ॥ तेथभक्तकंदव ॥ तेथसरव्आणिनाम ॥ मंगळाचा ॥ ५९ ॥ याबोलाआनहोये ॥ तारि
 व्यासाचाअंकनवाहे ॥ ऐसगाजोनिबाहे ॥ उमिलीतेणे ॥ ६० ॥ एवभारताचाआवाका ॥ आणूनिस्त्रोकाथका
 संजयेकुसुनाथका ॥ दीधलाहार्ता ॥ ६१ ॥ जेसार्निगोकवदावुन्हा ॥ परिगुणायीतेउनी ॥ आणजसूयाचिहाणी
 निस्तरावया ॥ ६२ ॥ तेसंशब्दअह्यअनंत ॥ जालेसवालुसमारने ॥ भारताचेशतसात ॥ सर्वस्वगीता ॥ ६३ ॥ त
 याहोसातांशताचा ॥ इत्यथहान्त्रोकराषिचा ॥ व्यासशिष्यसंजयाचा ॥ पूर्णोद्धारजो ॥ ६४ ॥ येणेंयेकचिस्त्रोके
 राहेतणेआसके ॥ अविद्याजानाचनिर्के ॥ जितलेंदोय ॥ ६५ ॥ ऐसयास्त्रोकांशतेसात ॥ गीतेचीपदेआगेवाह-
 त ॥ परह्यणोईपरमाभृत ॥ गीताकाशीचे ॥ ६६ ॥ किंआत्मराजानियेससे ॥ गीतेवोडबलेहेरवावे ॥ मजस्त्रो-
 कप्रतिसे ॥ ऐसेयेत ॥ ६७ ॥ कींगीताहेसमशती ॥ मंत्रप्रतिपाद्यमगवती ॥ मोहमहिषासुकी ॥ आनदलोअस ॥
 ६८ ॥ ह्यणोनिमनेकानेवाचा ॥ जोसेवकहोईलुदयेचा ॥ तोस्वानंदसाआज्याचा ॥ चक्रवर्तिकरी ॥ ६९ ॥ कीं-
 अविद्यानिभिरगेवं ॥ स्त्रोकसूयातेपैजाजिके ॥ ऐसंप्रकाशिलंगीताभिषे ॥ राखेंश्रीकृष्णो ॥ ७० ॥ कींस्त्रोका-
 स्तरासुलता ॥ भाडकजालीओहेगीता ॥ संसारपथआता ॥ विसंवावया ॥ ७१ ॥ कींसमारयसतीप्रमरी ॥
 सेविलुनेस्त्रोककल्हारी ॥ श्रीकृष्णारव्यसरोवरी ॥ सासिन्महीहे ॥ ७२ ॥ कींस्त्रोकनहेतिआन ॥ गमेगीतेचे-

गीत ओ ५९ सरवसावलाभ ओ ६० विद्या ओ ६१ मागुनी ओ ७० केले ७१

स्महिमान ॥ चारवाणिनल्लज्ज ॥ उदंज्जैस ॥ ७३ ॥ कीन्लोकां चिया आवारा ॥ सातशोते करु निमंदरा ॥ सवागम
 गीतापुरा ॥ वसे आले ॥ ७४ ॥ कीं निजकाता आत्मया ॥ आवडीगीता भिवावया ॥ श्लोकनसूतीवाल्या ॥ पसु
 रकाजी ॥ ७५ ॥ कीं गीताकसथे चें मृग ॥ हे गीतासागरतरंग ॥ कीं हरीचें हे तरंग ॥ गीतारथीचें ॥ ७६ ॥ कीं
 श्लोकसर्वतीर्थसांघान ॥ आला श्रुतिगंगे आन ॥ जंजुनचु भिहस्त ॥ जाला ह्यणोनि ॥ ७७ ॥ कीं नो हे हस्तो
 कथणी ॥ अचिन्वचिन्वतामणी ॥ कीं निविकल्या लावणी ॥ कल्यत रूची ॥ ७८ ॥ ऐमिया शोते सात श्लोका ॥ परि
 आगळ्या येक येका ॥ आता कोण वेगळिका ॥ वानावापा ॥ ७९ ॥ ताही आण पारधी ॥ इसाकामधे नूते दिवी ॥ सु
 चिजेसीयागोत्री ॥ कीं जेतीना ॥ ८० ॥ दीपा आगितु मागिल ॥ सूय धाकु दावडील ॥ अमृत सिंधू रवोल ॥ उयळ
 कायसा ॥ ८१ ॥ ते संप्रहिले सरते ॥ श्लोकन ह्यणा वेगीते ॥ जुनी नवी पारिजाते ॥ आहानी काई ॥ ८२ ॥ आ-
 णि श्लोका पाडनाही ॥ हे कोरसमर्थु काई ॥ येथ वाच्य वाचकाही ॥ सागन धरी ॥ ८३ ॥ जे इथे शास्त्रोपेक ॥
 श्री कृष्ण विवाच्य वाचक ॥ हे मसिद्ध जाण लोक ॥ फलताही ॥ ८४ ॥ येथे अर्थ जेतें चि पावें ॥ जे इथे वदें निरुदे
 वीच्य वाचक येक येक ॥ साधीत शास्त्र ॥ ८५ ॥ ह्यणा निमजकाही ॥ समर्थेनी आता विषय नाही ॥ गीता जाणा
 हे वाड्याणी ॥ श्री मूर्ति नमस्वी ॥ ८६ ॥ शास्त्र वाच्य अर्थ प्रजे ॥ मग आपण मावळे ॥ ते संप्रहिले सगळे ॥ फज
 द्याचि ॥ ८७ ॥ केसा विन्वाचिया ह्युपा ॥ करु निमहान दसोपा ॥ अर्जुन व्याज रुखा ॥ आणिले देवे ॥ ८८ ॥
 चकोराचि निमिभित्त ॥ तिन्ही सुवन सतसे ॥ निविली कळावते ॥ चंद्र जे वि ॥ ८९ ॥ ते सगीतेचे हे दुसरे ॥
 पाठ ॥ ओ. ७२ ॥ ओ. ८६ ॥ शास्त्रे ॥

वत्सकरुनिपायते ॥ दुस्मिन्लजगापुरते ॥ श्रीकृष्णायै ॥ ९० ॥ कांगौतमाचेनिभिषे ॥ कळिकळज्जगिर्नोदेशे
पाणिटाळगिरीशे ॥ गंगचोकला ॥ ९१ ॥ यथेजीवेजरीनाहाले ॥ तरोहेचकीरहोआले ॥ नातरपावमिषेतिवाल
ज्जीमचिजरी ॥ ९२ ॥ तरिलोहरकेशे ॥ झगटलियापरसे ॥ येरीकुडेअपेसे ॥ कवणहोये ॥ ९३ ॥ तेसापा-
वाचेतिवादी ॥ स्लोकपादलावानाजववादी ॥ तवब्रह्मतेचपुष्टी ॥ येइलआगा ॥ ९४ ॥ नाएणसिमुखवाकडे ॥
कुरुनिवाकालकानवडे ॥ तरिकानीहोयतापडे ॥ तेचिलेख ॥ ९५ ॥ जेहअवणेपावअये ॥ गीतानेदोसोदाअये
ते ॥ जेसासमर्थदाताकाणहोते ॥ नास्तिनह्यणे ॥ ९६ ॥ ह्यणोनिजाणतयासवा ॥ गीताचियेकीसेवा ॥ कायकर-
लआयवा ॥ शास्त्रीयेरी ॥ ९७ ॥ आपिपुष्पाजुनीमाकळी ॥ गोवीचावळिलिजेनिराळी ॥ तेअध्यासेकली
करतली ॥ येवोयेरी ॥ ९८ ॥ बाळकानेवोरसे ॥ मायजेवउबेसे ॥ तेतयादाकतीतेसे ॥ यासकरा ॥ ९९ ॥ काअ
फाटासमीरणा ॥ आपेंतपणशाहाणा ॥ केलजेसेविजणा ॥ निर्भूनिया ॥ १०० ॥ तेसेशब्दजनलसे ॥ तेथडनि
याअनुष्ठुमं ॥ स्त्रीशूद्रादिभूतसे ॥ सामादिले ॥ १ ॥ स्वातीचेनिपाणिये ॥ नहोतीजरीसातिये ॥ तरिआगी
सुंदराचिये ॥ काशाभतीतिये ॥ २ ॥ नादवाद्यानयेता ॥ तरिकागेचरहोता ॥ फुलेनहोताधपता ॥ आसादकावि
॥ ३ ॥ गोडीनहोतापकान्ते ॥ तरिकाफावतीरसने ॥ दर्पणावीणनयेने ॥ नयनकादिले ॥ ४ ॥ तेसाइसाश्रीगुरु-
मूर्ती ॥ नरिगतादृश्यपथी ॥ तरिकात्याउपास्ती ॥ आकळतातो ॥ ५ ॥ तेसेवस्तुजेअभरव्यात ॥ तथासरव्याशते
सात ॥ नहोतीतरिकाणायथ ॥ फावोशकते ॥ ६ ॥ मेथसिधूचेपाणीवाह ॥ तरोजगतयातेचिपाहे ॥ कांजेउम
पाठ, ओ. १० सरसी, ओ. १६ परीते, ओ. १६ नहो. ४

पतं नो हे ॥ ब्राह्मणं कोपहा ॥ ७ ॥ आणि वाचा जे न पवे ॥ ते हे श्लोक न हो ते बरे वे ॥ तरिकानि मुरें पवे ॥ ऐसे कां हो ते ॥
 ॥ ८ ॥ ह्यणो निश्रीव्यासाचा हा थोर ॥ विश्वामित्राला उपकार ॥ जे श्रीब्रह्म उक्ती आकार ॥ ग्रंथाचा केला ॥ ९ ॥
 आणि तो चि हा भी आता ॥ श्रीव्यासाची पद पाहता ॥ आणि लाश्रवण पया ॥ मत्स्यदिद्या ॥ १० ॥ व्यासादिकांचे उ-
 न्मेष ॥ राहादती जे भसां शंक ॥ तेथ भीहरं कथेक ॥ वाचाळी करी ॥ ११ ॥ परिगीता इश्वर भोळा ॥ लेइ लाव्या-
 मोक्ती कुसुम भाळा ॥ तरि माझ्या दुर्वाढला ॥ नान ह्मणें कीं ॥ १२ ॥ आणि ह्मारी सिंधु चि या तदा ॥ पाणि यांचे ते
 गजघटा ॥ नेथ काय मुरकुटा ॥ वारी जत असे ॥ १३ ॥ पारव कुंद फारि वरू ॥ नुडे तरो न मीचि स्थिर ॥ गगन आक्रमी
 सत्वर ॥ तो गडूड ही तेथ ॥ १४ ॥ राजहंसाचे चालेणें ॥ मृतळो जालियां सिंहाणें ॥ आणि कें काय कोणें ॥ चाला वेंचि-
 ना ॥ १५ ॥ जी आधुल नि अवकाशे ॥ अगाध जळ ये पें कलशे ॥ बुळो न्बुळ प्रणा ऐसे ॥ मरु नि निचे ॥ १६ ॥ दिव-
 रीचा आंगी सीरी ॥ तरि ते बहु ते जघरी ॥ वाती आपुलिया परी ॥ आणी चर्किना ॥ १७ ॥ जी समुद्राचे नि पेंसे ॥ म-
 मुद्रा आकाश आभासे ॥ धिल्लरी थिल्लरा ऐसे ॥ बिबिचिये ॥ १८ ॥ ते विव्यासादिक महा मती ॥ वावरो येती इये प्र-
 थो ॥ माया स्तीवा को हे युक्ती ॥ न भिळी कर ॥ १९ ॥ जिये सागरी जळ चुर ॥ संचरती मंदरा करे ॥ तेथ देवोनि
 संपुरे ॥ पोहोन लाहती ॥ २० ॥ अरुण आगाज वळिके ॥ ह्यणो नि स्तथा ते देखे ॥ माभूतळी चि न देखे ॥ मुगी काई
 ॥ २१ ॥ रालागी आह्मा माहता ॥ देशि करे बंधे गीता ॥ ह्यणें हें अनुचिता ॥ कारण नो हे ॥ २२ ॥ आणि बाप पु-
 दा जाये ॥ तेथे तपा उलाची सोये ॥ बाळय तरि न लाहे ॥ पावो कायी ॥ २३ ॥ ते साव्या साचा भागो वाघेत ॥ भाव-
 पात ॥ ओ. १० पाहता, ओ. १५ शाहोणें, ओ. १७ दिवि येच्या, ओ. १७ प्रकाशी, ओ. २० सामान्येयें, अ.

कारतवात्तुसत् ॥ अयोस्यहीमीनपवत ॥ केजाइन ॥ २४ ॥ अणिष्टश्रीजयाचियासमा ॥ लुबगेस्यवृजंगमा ॥ ज
 याचिजिअमृतचंद्रमा ॥ निवरीजग ॥ २५ ॥ जयाचिअगिकेअसिके ॥ तेजलाहोनिअके ॥ आधाराचसावाइके ॥
 लोहितजतआहे ॥ २६ ॥ समुद्राजयाचिनोय ॥ तोयजयाचिमाधुर्य ॥ माधुर्यसोदय ॥ जयाचिनि ॥ २७ ॥ पवनज
 याचिबळ ॥ आकाशजणेपयळ ॥ ज्ञानजणेउज्वळ ॥ चक्रवर्ति ॥ २८ ॥ वेदजणेसुभास ॥ स्मरवजणेसोल्लास
 हेंअसोरूपस ॥ विश्वजणे ॥ २९ ॥ तोसर्वोपकारसमर्थ ॥ सद्गुरुश्रीनिदृतिनाथ ॥ राहाततअसेमजदो
 आत ॥ श्रियोनिया ॥ ३० ॥ आताआयनोगीताजर्गा ॥ सीसांगमहादियाभागी ॥ येथकविस्मयालागी ॥
 ठावआह ॥ ३१ ॥ श्रीगुरुचनिनावमाती ॥ जोगशेजयापासिमाती ॥ तणेकोळियत्रिजगती ॥ येकवदकुली
 ॥ ३२ ॥ चंदनेपधनीझांड ॥ जालांचंदनाचिनिपांड ॥ विशिष्टमांडलीकांभांड ॥ सातुसीयादी ॥ ३३ ॥ माभीत
 वचिन्ताथिला ॥ अणिश्रीगुरुसोदादुला ॥ जोदीदीवेनिआपुला ॥ बेसरीरदो ॥ ३४ ॥ आधीचिदेखणीदि
 दी ॥ वरीसूयपुरवीपाठी ॥ तेनदिसरेसीगोठी ॥ केहाआहे ॥ ३५ ॥ ह्येणानिमाझानित्यनवे ॥ ज्वासांस्वास
 हीप्रबुधहोआवे ॥ श्रीगुरुपाकाययेकनोहे ॥ ज्ञानदेवह्येण ॥ ३६ ॥ याकारेणभियां ॥ श्रीगीतार्थमझादि-
 या ॥ केलालोकायथा ॥ दिदीचाविषयो ॥ ३७ ॥ परमहोतबोलुरंग ॥ कवळितांजगीतांगे ॥ तेगातयाचिनिपा
 ने ॥ चकाव्यतानोह ॥ ३८ ॥ ह्येणोनिगीतायांवाह्येण ॥ तेगाणिवेहोतीलेणे ॥ नामोक्केंतुडुणे ॥ गीताहआ
 णित ॥ ३९ ॥ सुंदरआर्णालेणनसूये ॥ तेतोमाकळांस्वगारहोये ॥ नालडलतरिआह ॥ तेसिकडचिस ॥ ४० ॥

पाठ. ओ. १९ देव. ओ. ३६ नीच. ४०

कांभोतिश्याञ्चिजैसीजाती ॥ सो नु याहीमानदेती ॥ नातरमानविती ॥ अंगिचिरहो ॥ ४१ ॥ मन्त्राणां लोकांभोकां
 उणीनहेतीपरिम्बो ॥ वसन्तांगमोचिवाटोकी ॥ सोरगजैसी ॥ ४२ ॥ तैसोनाणविनेमिरवा ॥ गीतिवाणहर-
 गदावी ॥ तोलासाचासुबधवी ॥ केलभिया ॥ ४३ ॥ तेणोआवाळसुबोधे ॥ वोचीनलेनिमने ॥ अत्यरसस-
 स्वादे ॥ असरगुथिलो ॥ ४४ ॥ आताचदनाचातरुगरी ॥ परिमळानागाकुलवरी ॥ गरुडगैत्रियापारि ॥ ला-
 गनाकी ॥ ४५ ॥ तैसामबधहाअवणी ॥ लागतरववासमाधिअणी ॥ तेकनियार्हाचारनाणी ॥ कावळसन-
 नलावी ॥ ४६ ॥ पावैकुरिताव्याज ॥ पाडित्येयतेविषजे ॥ तैअमृतातेनगिजे ॥ फावलिआ ॥ ४७ ॥ तैसनिआद-
 तेपण ॥ कविलजालहुपणे ॥ मननकिजध्यासअवणे ॥ जितिलेआता ॥ ४८ ॥ हस्तानदसागाचीसेलु ॥ म-
 लतयासीचिदेईल ॥ सर्वेदियांगोषवील ॥ श्रवणाकरवी ॥ ४९ ॥ चंद्रातेआंगवणे ॥ सोरुनिचक्रारशाहाण ॥
 परिफावेजेसुचादिणे ॥ मलतयाही ॥ ५० ॥ तैसैअध्यात्मशास्त्रीशिये ॥ अंतरंगचिअधिकारिये ॥ परिलो-
 कवाकूचतुये ॥ हाईलसुविषया ॥ ५१ ॥ तैसैअनिवृत्तीनायाचे ॥ गोरवआहजीसाचे ॥ ग्रथनोहहकपचे ॥
 वैभवतिये ॥ ५२ ॥ क्षीरसिधूपरिसरी ॥ नार्त्तकाकर्णकुहरी ॥ नेणोकेअविपुसरी ॥ सागीतलेजे ॥ ५३ ॥ ते-
 क्षीरकुलोळाआत ॥ मकरादरीगुप्त ॥ होनातयाचाहान ॥ पंचजाले ॥ ५४ ॥ तोमछंदससंढणी ॥ ममावयवा-
 चोरणी ॥ मटलाकातोसवोरी ॥ सपूणजाला ॥ ५५ ॥ मगसमाधीअप्सुत्ययो ॥ सागावीवासनायया ॥ ते-
 मुद्दुअंगोरक्षराया ॥ दिधर्लासीनी ॥ ५६ ॥ तेणोयोगाक्षिनीसरोवर ॥ विषयविध्वंसेकवीर ॥ तियेपदांका-
 पाव. ओ. ४४. गुफिली. ओ. ४६. च्यास्यानी. ओ. ४७. पाव. ओ. ४८. तैस. ओ. ४९. अलुच्छया. ७. ७.

सर्वेष्वम् ॥ अस्मिषु किले ॥ ५७ ॥ प्रगतिर्होतेशांभव ॥ अदृशानंदैश्वर्य ॥ संचितं संयमव ॥ श्रीमैणीनाथ ॥ ५८ ॥
 तेषां कलिकामता ॥ आलादरेवो निरुता ॥ तेषां आलादरेवो निरुता ॥ दिव्यलोरेसी ॥ ५९ ॥ नाआदिरुश
 कता ॥ लागेनिशिष्यपरंपरा ॥ बोधाचिह्नां संपरा ॥ जालाजो आसुते ॥ ६० ॥ तोहातुं येन अनिआधवा ॥ कर्त्तारि
 कित्तां जीवां ॥ सर्वप्रकारं ध्यांवा ॥ करीपावर्गो ॥ ६१ ॥ आधोत्तव तोहृपुल्ल ॥ वरिगुरु आनंदाबोलु ॥ जा
 लाजसावर्षकाळु ॥ रववळणमया ॥ ६२ ॥ मग आनोचनिवारसे ॥ गीतार्थं येन भिषे ॥ वर्षलाशातरसे ॥ तो
 हांश ॥ ६३ ॥ तेषु पुढांमीबापया ॥ मादला आनी आपुलिया ॥ क्रियया सादो येवदिया ॥ आणिलोयशा ॥ ६४
 एवंगुरुक्रमलाधले ॥ समाधिधनजें आपुले ॥ तें ग्रंथें बोधोनि दिधले ॥ गोसावीमज ॥ ६५ ॥ वाचूनि पुढे नावा
 ची ॥ नासेवाही जाणें स्वामीची ॥ ऐसिया मज ग्रंथाची ॥ योग्यता कें असे ॥ ६६ ॥ परिसाचि चिगुरुनाथे ॥ भिष
 तकरूनि माते ॥ प्रबोधव्यजे जगाते ॥ रसिलें जाणा ॥ ६७ ॥ नही पुरोहितगुण ॥ मोबोलिलो पुरेपणे ॥ तें तुह्या
 माउलीपणे ॥ उपसाहि जोनी ॥ ६८ ॥ शब्दकें साधडिजे ॥ प्रमेयीकें सें पाचडिजे ॥ अळकार होणजे ॥ काय
 तेनेणे ॥ ६९ ॥ साधिरं ड्याचें बाहुलें ॥ चालवीत्यास आचनिचाले ॥ तें सामातें दगोतबोलें ॥ स्वामीतोमाझा
 ॥ ७० ॥ खालागीं मीगुणदोष ॥ विषें समाविनां विषय ॥ जेमीस जात ग्रंथलो देख ॥ आचार्यें कीं ॥ ७१ ॥ आणि
 पुढ्यां मातांचे मसे ॥ जे उणिवे संचाकें उसे ॥ तें पूर्ण नोहें तें लामे ॥ तुह्या मीचि कोप ॥ ७२ ॥ सितलियाही प
 रिसे ॥ लोहत्वाचि ये अवदशे ॥ नमूनि जे आचसे ॥ तें कवणाबाल ॥ ७३ ॥ बोहलें हें चिकरावे ॥ जे गंगेचे ओग
 पाव ॥ ओं ५८ गयणी, ओं ६१ वेगा, ओं ७३ आपें मसे ॥

वाक्ये ॥ संगही गंगाजरी नो हवे ॥ तैतो काय करी ॥ ७४ ॥ ह्यणी नि माय योग बहु ब्र ॥ पाहे न ह्या सता च भू पभू ॥
 पातलो आतां कलह ॥ उणे जगी ॥ ७५ ॥ अहंजु माझे नि स्वामी ॥ सज संत जोडि नि तु ह्यो ॥ नि पले तिते सव फा
 मी ॥ परि पूर्ण जालो ॥ ७६ ॥ पाहा पाभा तु तु ह्यो सा गड ॥ माहे रते गे सर वाडे ॥ युथाच आळि वाडे ॥ सिद्धी गे
 ले ॥ ७७ ॥ जीकन काचे नि रूख ॥ वातु ये इल मूतळ ॥ चितार लो कुळाचळ ॥ निमूं येती ॥ ७८ ॥ सातां ही हा सा
 गर त ॥ सोप भरितां अमृत ॥ दुवाड नो हतारा त ॥ चंद्र करिता ॥ ७९ ॥ कल्प तरु ह्ये आराम ॥ लावितां नो ही वि
 षम ॥ परी गीता र्थ चिं वर्म ॥ निवड नये ॥ ८० ॥ हा यथ सागर ये फुडा ॥ उतरो नि पली फडा ॥ किर्तो कि जया चारे
 डा ॥ न्याचे जोका ॥ ८१ ॥ तो भीये क सर्व सुका ॥ बोला नि महा दया साषा ॥ करि दोळ वरी लाका ॥ येवो ये रंसे ॥ ८२ ॥ गी
 तार्थ चा आचार ॥ कल वासी महामरु ॥ रत्न नि माजीं थ्यी युरु ॥ लिग ज पुर्जी ॥ ८३ ॥ गीता निः कपट माय ॥ तुका
 निता न्दे हिं उ जे वायु ॥ ते माय पुतां मेरि होव ॥ हाथ मतु मुचा ॥ ८४ ॥ तु ह्यो सज्जनाने केल ॥ आकळ निजी मी बा
 ले ॥ ज्ञान द वरुण ये कुल ॥ तैस नो ह ॥ ८५ ॥ काय बहु बोलां सकळा ॥ मळ गिला जन्म फळा ॥ ग्रथ सिद्धी चा-
 मो हळा ॥ दाविला जाहा ॥ ८६ ॥ भिरांजे सजै सिया आशा ॥ केल तु मचा भर वसा ॥ ने पुर रू निजी बहु वसा ॥
 आणिलो सरवा ॥ ८७ ॥ सजला गो युथाची स्वामी ॥ दुजी सूरु जे हे केली तु ह्यो ॥ ते पाहो नि हा मो आ ह्यो ॥ विस्वा
 मित्रा ते हो ॥ ८८ ॥ जे असो भिक्षु कुड ह्यो ॥ धातया हो आणा व वास ॥ तेना मत कीजो करूं ॥ निमा विना हो ८९
 वास्तु पम न्युचे नि मोह ॥ क्षीर सागर हो कला आह ॥ चय तो ही उपम सरी नो ह ॥ जे विषग भर्मी ॥ ९० ॥ अथं कर

पाठ, ओं. ७५. तुलां. ओं. ८२. सुरवा, ओं. ८९. दोषे, ओं. ९०. दिपला. ७.

निशाचरा ॥ शिखितां सूर्यचराचरां ॥ धांषाकुलान्तरवरा ॥ ताउनीकीतो ॥ ९१ ॥ तान्त्रियाजगाकारणं ॥ चंद्रवैचि-
 लं च दिणं ॥ तथा सदा वाक्यं विद्या ॥ सारिरवह ॥ ९२ ॥ ह्युणो भित्तु ह्योमजसनी ॥ यथारूपजोहात्रिजगती ॥ उप-
 योगकेला तो पुदती ॥ निरूपमजी ॥ ९३ ॥ किं बहुना तु भूचक्रे ॥ धर्मधीर्न न हं भिहीनं ॥ येषां भांजो ज उरले ॥
 पार्दकपुण ॥ ९४ ॥ आता विच्चात्मकं देव ॥ येषां वायुज्ञता वाक् ॥ तोषो निमज द्यावे ॥ पसायदान ह ॥ ९५ ॥ जे-
 र्वेच्छा च व्यकटं सा दे ॥ तथा सत्कर्मो रतो वादो ॥ भूता परस्पर पडो ॥ सैत्रजीवांच ॥ ९६ ॥ ह्युरितान्त्रिंतिभिरजा-
 वो ॥ विश्वस्य मसूयया हो ॥ जो जे वा छिल तो ते ला हो ॥ माणि जात ॥ ९७ ॥ वर्षे ते सफल भगळो ॥ ईश्वर नि-
 द्याची पांदिवाळी ॥ अनवरत भूतळो ॥ सेवोतया भूतो ॥ ९८ ॥ चला कल्पतरूत्त आरव ॥ चेतना चिंता मणी चि-
 गाव ॥ बोल ते जे अणव ॥ पीयूषाच ॥ ९९ ॥ चंद्रमूर्जे अलाछन ॥ यांत उजेता पहीन ॥ ते सवा हो सदा सज्जन
 सोयरे होतु ॥ १०० ॥ किं बहुना सवस्करवी ॥ पूर्ण हो उ नित हो लोकी ॥ भजिजे आदि पुरुषो ॥ अरव दित ॥ १०१ ॥
 आणिय या पजी विचे ॥ विशेषी लोकी दय ॥ हृष्टा दृष्ट किजच ॥ हो ओंवेजी ॥ १०२ ॥ यत्तु ह्यंग श्री विश्वेश्वरा वा ॥ हं-
 हो इलदाय पसावो ॥ यणे वरं द्या जे देवा ॥ स्फुरिया जाला ॥ १०३ ॥ ऐसे युगो पुरि कळो ॥ आणिम हां राक्षस दुळो
 श्री गंगा दारो न्यातरो ॥ दक्षिणिही ॥ १०४ ॥ त्रिसुवने कपवित्र ॥ अनादि पचक्रांश सत्र ॥ जे थजगांचे जी वन सत्र
 श्रीमहालया अस ॥ १०५ ॥ तेथ यदु वंश विलास ॥ जो सक्क कुळा निवास ॥ न्यायाते पाषांस्मितीश ॥ श्रीरामचंद्र
 तेथ मह शास्त्रयस भूत ॥ श्रीनिहीति नाथ सक्त ॥ केले ज्ञान देव गीते ॥ १०६ ॥ एवमारताचा गावो
 पाठ ॥ ओं ॥ ४ कुळो ॥ दक्षिणहिंगो ॥ ओं ॥ ५ जीव ॥ महादेवो ॥ ४

श्री अज्ञानमुष्मिस्तु पूर्वी ॥ श्री कृष्णमुष्मिस्तु पूर्वी ॥ गोविजकेली ॥ ८ ॥ तं प्रनिषदाचसार ॥ सवशास्त्राच साहर ॥ पुर-
 महसो सरावर ॥ सविनज ॥ ९ ॥ तिगुगतिचाकलश ॥ सपूर्णहाअसादश ॥ ह्यणनिवृत्तिदास ॥ ज्ञानदेव ॥ १० ॥
 दतीपुढतीपुढती ॥ इयाग्रथपुण्यसपत्नी ॥ सर्वस्वरवीसर्वभूती ॥ सपूर्णहोइज ॥ ११ ॥ शकवारशतबारात्तर ॥ त-
 दीकाकेलीज्ञानेश्वरे ॥ सच्चिदानंदबावाआदरे ॥ लेखकजाहला ॥ १८ ॥ १२ ॥ ॥ इति श्री भावार्थदीपिका
 याज्ञानदेवविरचिताया अष्टादशोऽध्यायः ॥ १८ ॥ ॥ श्री शंके पुरुशोबासंत्तरी ॥ तारणनामसवत्सरी ॥
 येकजनानंदनअत्यादरी ॥ गीताज्ञानेश्वरप्रतिश्रद्धकेली ॥ १ ॥ ग्रंथपुर्वीचअतिश्रद्ध ॥ परंपरावतरीश्रद्धाबहु
 तोश्रोथुनिघाएवविध ॥ प्रतिश्रद्धासिद्धज्ञानेश्वरी ॥ २ ॥ नमोज्ञानेश्वरानिष्कलका ॥ जयनीगीनचवाचिनादी
 का ॥ ज्ञानहोयसोका ॥ अतिभाविकांशुआधिपा ॥ ३ ॥ बहुकाळपवणीगोमदी ॥ सादभासकपिलापक्षी ॥ अति
 खानीगोदातरी ॥ लेखनकायावीसपूर्णजाली ॥ ४ ॥ ज्ञानेश्वरपाठो ॥ जोवोवीकरालमहादी ॥ तंणअभृताचता
 धो ॥ जाणनरोढोवेविलो ॥ ५ ॥ ॥ श्री कृष्णार्पणमस्तु ॥ ॥ श्रुसंभवतु ॥ श्रीसीतारामचंद्रार्पणमस्तु ॥
 पाठ- ओं. १२ वाराशें, ओं. १ सावेत्तरी, ६
 हो, ज्ञानेश्वरी, शंके १७ ८६ नकासीनामसर्वतोरे, वैशाखशुद्धचतुर्विंश्या, मधुवासरे, तद्दिनेसमाप्ता, ॥ सुकाम, सुखद्विनेशे, गणे
 शसुपजी, शास्त्री, मालवणकर, राणी, लोककल्याणार्थे, आपले, शिलायंत्रछापखान्यात, छापिलो, ६ ॥ श्री भाग्यकृष्णाय नमः ॥ ॥ ६ ॥

॥ ॐ ॥ इति ज्ञानेश्वरी समाप्ता ॥ ॐ ॥

शुद्धी । स्वरूपीं माझ्या ॥ ८४ ॥ मग
 नाही । किंबहुना तुज कांहीं । उरें
 सुवां सर्वदा मज अर्पिलीं । तेणें
 झणौनि येणें प्रसादबलें । नवे
 ललों तुज ॥ ८७ * जें संप्र
 तें ईपपत्तीचेनि उपायें । गी
 नानापरी उपदेशिलें । येणें अज्ञानजात सांडवलें ।

सर्वधर्मान्परित्यज्य मामेकं शरणं ब्रज ।

अहं त्वा सर्वपापेभ्यो मोक्षयिष्यामि मा शुचः ॥ ६६ ॥

[सर्वधर्मान्परित्यज्य] आशा जैसी दुःखातें । व्याली निंदा दुँरितें । हें असो
 जैसें दैन्यातें । दुर्भगत्व ॥ १३९० ॥ तैसें स्वर्गनरकसूचक । अज्ञान व्यालें
 धर्मादिक । तें सांडूनि घालीं अशेख । ज्ञानें येणें ॥ ९१ ॥ हातीं घेऊनि तो
 दोर । सांडिजे जैसा सर्पाकार । कां निद्रात्यागें धराचार । स्वर्मींचा जैसा
 ॥ ९२ ॥ ना ना सांडिलेनि केंवलें । चंद्रीचें धुपें पिवलें । व्याधित्यागें केंडु-
 वाळें । पण मुखाचें ॥ ९३ ॥ अगा दिवसा पाठी देउनी । मृगजळ घापे
 त्यजूनी । कां काष्ठत्यागें वन्ही । त्यजिजे जैसा ॥ ९४ ॥ तैसें धर्माधर्माचें
 टर्वाळ । दावी अज्ञान जें कां मूळ । तें त्यजूनि त्यजीं सकळ । धर्मजात ॥ ९५ ॥
 [मामेकं] मग अज्ञान निमालिया । मीचि येक असें †अपैसया । †निद्र
 स्वप्न गेलया । आपणपें जैसें ॥ ९६ ॥ तैसा मी एकवांचूनि कांहीं । मग
 भिक्षाभिक्ष आन नाही । सोऽहंबोधें तयाच्या ठायीं । अनन्य होय ॥ ९७ ॥
 [शरणं ब्रज] पै आपलेनि भेदेंविण । माझें जाणिजे जें एकपण । तथाचि नांव
 शरण । मज येणें गा ॥ ९८ ॥ जैसें घटाचेनि नाशें । गर्गनीं गगन प्रवेशे ।
 मज शरण येणें तैसें । ऐक्य करी ॥ ९९ ॥ सुवर्णमणि सोनयां । ये कल्लोळ
 जैसा पाणिया । तैसा मज धनंजया । शरण ये तूं ॥ १४०० ॥ [अहं त्वा सर्व-
 पापेभ्यः] वांचूनि सागराच्या पोटी । वडवानळ शरण आला किरीटी । ‡जाळूं
 न ठके तथा गोठी । वांळूनि दे पां ॥ १ ॥ मजही शरण रिधिजे । आणि
 §जीवत्वेचि असिजे । धिग्न बोलीं यिया न लेंजे । प्रज्ञा केवि ॥ २ ॥ अगा
 प्रीकृताही राया । आंगीं पडे जें धनंजया । तें दौंसिरुंहि कीं तथा । समान

* जे प्रपंच. † धनंजया. ‡ जाळूनि. § जीवित्वेचि.

१ प्रातः शाली. २ अटकावानें. ३ तुझ्या स्वाधीन झालों. ४ प्रपंचासह. ५ साक्षात्. ६ युक्तीच्या.
 ७ पातकें. ८ दुर्दैवपणा. ९ सोडून दे. १० प्रपंच. ११ कावीळ रोगानें. १२ चांदणें. १३ कडव-
 टपणा. १४ बंड. १५ त्रास पावल्यावर. १६ निद्रेसह. १७ भिक्षाभिक्ष जें द्वैत त्याच्या ठाई.
 १८ घटाकाश आकाशांत मिळतें. १९ टाकून दे. २० लाजत नाही. २१ यःकश्चित् राजाच्या.
 २२ बटकूर.

वा-
तैसैं

माधौ

अद्वयत्वे भज । शरण ॥

॥ ७ ॥ लोह उमें खाय माती । त परिसाचिये संगती । सोनें जालया पुढती ।
न शिविजे मळें ॥ ८ ॥ हें असो काष्टापासोनि । मथूनि घेतल्या वन्ही । मग
काष्टेही कोंडोनि । न ठके जैसा ॥ ९ ॥ अर्जुना काय दिनकर । देखत आहे
आंधार । कीं प्रबोधीं होय गोचर । स्वप्नभ्रम ॥ १४१० ॥ तैसैं मजसीं येक-
वटलेया । मी सर्वरूप वांचनियां । आन कांहीं उरावया । कारण असे ॥ ११ ॥

[मोक्षयिष्यामि] ह्याणोनि तयाचें कांहीं । चितीं ना आपुल्या ठाई । तुम्हें पाप-
पुण्य पाहीं । मीचि होईन ॥ १२ ॥ तेथ सर्वबंधलक्षणें । पापें उरावें दुजे-
पणें । तें माझ्या बोधीं वांयाणें । होऊनि जाईल ॥ १३ ॥ जळीं पडिलिया
लवणा । सर्वही जळ होय विचक्षण । तुज मी अनन्यशरण । होईन तैसा
॥ १४ ॥ येतुलेनि अपैसया । सुटलाचि आहासि धनंजया । [मा शुचः] घेई
न प्रकाशोनियां । सोडवीन तूतें ॥ १५ ॥ याकारणें पुढती । हे आधी न
राहें चितीं । मज एकासि ये सुमती । जाणोनि शरण ॥ १६ ॥ ऐसैं सर्व-
रूपरूपसैं । सर्वदृष्टिडोळसैं । सर्वदेशनिवासैं । बोलिलें श्रीकृष्णें ॥ १७ ॥
[‘स्वानुभवसुखोक्तयः’] मग सांवळा सकर्कण । बाहु पसरोंनि दक्षिण । आ-
लिंगिला स्वशरण । भक्तराज तो ॥ १८ ॥ न पैंवतां जयातें । कांखे सून बु-
द्धीतें । बोलणें मागौतें । वोसरलें ॥ १९ ॥ ऐसैं जें कांहीं येक । बोला बुद्धी-
सिही अटक । तें घावया मिष । खेवांचें केलें ॥ १४२० ॥ हृदया हृदय येक
जालें । ये हृदयींचें ते हृदयीं घातलें । द्वैत न मोडितां केलें । आपणाऐसैं
अर्जुना ॥ २१ ॥ दीपें दीप लाविला । तैसा परिष्कृत तो जाला । द्वैत न
मोडितां केला । आपणपें पार्थ ॥ २२ ॥ तेव्हां सुखाचा मग तया । पूर
आला जो धनंजया । तेथ वाड तन्हीं बुडोनियां । ठेला देव ॥ २३ ॥ सिंधु
सिंधुतें पावों जाये । तें पावणें ठाके दुणा होये । वरी रिगे पुरवणिये । आ-
काशही ॥ २४ ॥ तैसैं तया दोघांचें मिलणें । दोघां नावरे जाणावें कवणें ।

* प्रबोधा, प्रबोध.

१ जीवदशा. २ वाईट. ३ ऐकू. ४ ताकांतून. ५ पुनः. ६ घेत नाही. ७ पुनः. ८ न राहे.
९ जागृतीत. १० प्रत्यक्ष. ११ चितू नको. १२ सर्वथैव बंधाला कारण अशा. १३ व्यर्थ.
१४ हे सुज्ञा. १५ प्रकट होऊन. १६ मनोव्यथा. १७ सर्व रूपें ज्याच्या योगानें रूपवान् होतात.
१८ हस्तभूषणयुक्त. १९ केवळ आपल्यालाच शरण आलेला. २० ज्या वस्तूची माती न हेतां
बोलणें बुद्धीला काळेस मारून मागौतें — मागें हटतें अशी जी वस्तु. २१ मागें हटलें. २२ प्रतिबंधक,
दुःप्रवेश्य. २३ आलिंगनाचें निमित्त केलें. २४ दोघांचे देह तसेच असतां. २५ आलिंगन.
२६ मोठा. २७ साम्राज.

किंबहुना श्रीनारायणें । विश्व कोंदें

गमें त्रिकांडोत्पत्ति व्याकरोति'] एवं

श्रीकृष्णें गीताशास्त्र । प्रकट केलें

पां आलें बोधा । हें ह्मणाल तरी

याच्या निश्चार्सी । जन्म झालें वेदराशी

स्वमुखें ॥ २८ ॥ ह्मणौनि वेदां मूलभूत । ग. मणों हें होय उचित । आणि-

कही येकी येथ । उपपत्ति असे ॥ २९ ॥ जें न नशत स्वरूपें । जयाचा विस्तार

जेथ लपे । तें तयाचें ह्मणपे । बीज जर्गी ॥ १४३० ॥ तरि कांडत्रयात्मक । श-

ब्दराशी अशेष । गीतेमाजि असे रंख । बीजीं जैसा ॥ ३१ ॥ ह्मणोनि वेदांचें

बीज । श्रीगीता होय हें मज । गंमे आणि सहज । दिसतही आहे ॥ ३२ ॥

जे वेदांचे तिन्ही भाग । गीते उमटले असती चांग । भूषणरत्नीं सर्वांग ।

शोभलें जैसें ॥ ३३ ॥ तियेंचि कर्मादिकें तीन्ही । कांडें कोणकोणे स्थानीं ।

गीते आहाति तें नयनीं । दाखऊं आइक ॥ ३४ ॥ [‘गीताशास्त्रोत्पत्त्यादिप्रस्ता-

वना'] तरि पहिला जो अध्याय । तो शास्त्रप्रवृत्तिप्रस्ताव । द्वितीयीं सांख्यस-

द्भाव । प्रकाशिला ॥ ३५ ॥ मोक्षदानीं स्वतंत्र । ज्ञानप्रधान हें शास्त्र । येतु-

लालें दुर्जी सूत्र । उभारिलें ॥ ३६ ॥ [‘कर्मकांड'] मग अज्ञानें बांधलेया । मो-

क्षपदीं बैसावया । साधनारंभतो तृतीया- । ध्यायीं बोलिला ॥ ३७ ॥ जे दे-

हाभिमानबंधें । सांडूनि काम्यनिषिद्धें । विहित परि अप्रमादें । अनुष्ठावें

॥ ३८ ॥ ऐसेनि सद्भावें कर्म करावें । हा तिजा अध्यायीं देवें । निर्णय केला

तें जाणावें । कर्मकांड येथ ॥ ३९ ॥ [‘उपासनाकांड'] आणि तेंचि नित्यादिक ।

अज्ञानाचें अवश्यक । आचरतां मोचक । केंवी होय पां ॥ १४४० ॥ ऐसी

अपेक्षा जालिया । बद्ध मुमुक्षुते आलिया । देवें ब्रह्मार्पणत्वे क्रिया । सांगी-

तली ॥ ४१ ॥ जे देह वाचा मानसें । विहित निपजे जें जैसें । तें येक ईश्वरो-

द्देशें । कीजे ह्मणीतलें ॥ ४२ ॥ हेंचि ईश्वरीं कर्मयोगें । भजनकथनाचें स्वांगें ।

आदरिलें शेषभागें । चतुर्थाचेनी ॥ ४३ ॥ तें विश्वरूप अकरावा । अध्याय

संपे जंव आघवा । तंव कर्म ईश भजावा । हें जें बोलिलें ॥ ४४ ॥ तें अष्टा-

ध्यायीं उघड । जाण येथें देवताकांड । शास्त्र सांगतसे आंड । मोडूनि बोले

॥ ४५ ॥ [‘ज्ञानकांड'] आणि तेणेंचि ईशप्रसादें । श्रीगुरुसंप्रदायलब्धें । सांच

ज्ञान उद्बोधे । कोवळें जें ॥ ४६ ॥ तें अद्वैतादिप्रभृतिर्की । अथवा अमानि-

त्वादिकीं । वाढविजे ह्मणोनि लेखी । बारावा गणू ॥ ४७ ॥ तो बारावा

अध्याय आदी । आणि पंधरावा अवधि । ज्ञानफलपाकसिद्धि । निरूपणासी

१ भरलें. २ सर्व अधिकारांत आतिशुद्ध. ३ सयुक्तिक कारण. ४ आसोच्छ्वासांपासून. ५ प्रति-
ज्ञेवर. ६ न नासतां. ७ कर्म-उपासना-ज्ञानरूप. ८ वेद. ९ वृक्ष. १० वाटे. ११ अशा प्रकारें.
१२ सोडविणारे. १३ इच्छा. १४ मोक्षेच्छुस्थितीला. १५ ठिकाण. १६ आठ अध्यायांत.
१७ उपासनाकांड. १८ गीताशास्त्र. १९ प्रतिबंध निवारून, गोंधळून. २० खरें. २१ प्रकाशे-
२२ गणनेंत.

॥ ह्यणौनि चहुंही इहीं । ऊर्ध्वमूलांतीं अध्यार्यी । ज्ञानकांड ये ठार्यी ।
 जे ॥ ४९ ॥ एवं *कांडत्रयरूपिणी । श्रुतीच हे कोडिसवाणी । गीता
 पंथरावीं लेणीं । लेयिली आहे ॥ १४५० ॥ हें असो कांडत्रयात्मक । श्रुति
 मोक्षरूप फळ येक । †बोभावे जें आवश्यक । ठाकावें ह्यणोनी ॥ ५१ ॥
 [‘षोडशाध्यायत्रयकारणं दर्शयति’] तयाचेनि साधन ज्ञानेंसी । वैर करी जो
 प्रतिदिवशीं । तो अज्ञानवर्ग षोडशीं । प्रतिपादिजे ॥ ५२ ॥ तोचि शास्त्राचा
 बोळावा । घेवोनि वैरी जिणावा । हा निरोप तो सतरावा । अध्याय येथ
 ॥ ५३ ॥ ऐसा प्रथमालागोनी । सतरावा लाणी करूनी । आत्मनिश्वास वि-
 वरूनी । दाविला देवें ॥ ५४ ॥ तया अर्थजातां अशेषां । केला तात्पर्याचा
 आवांका । तो हा अठरावा देखा । कैलशाध्याय ॥ ५५ ॥ एवं सकळ सांख्य-
 सिंधु । श्रीभगवद्गीताप्रबंधु । हा औदार्ये आगळा वेदु । मूर्त जाण ॥ ५६ ॥
 वेद संपन्न होय ठाई । परि कूर्पण ऐसा आन नाही । जे कार्नी लागला
 तिहीं । वर्णांच्याचि ॥ ५७ ॥ येरां भवव्यथा ठेलियां । स्त्रीशूद्रादिकां प्रा-
 णियां । अनवसर मांडूनियां । राहिला आहे ॥ ५८ ॥ तरी र्भज पाहतां तें
 मागील उणें । फेडावया गीतापणें । वेद वेढला भलतेणें । सेव्य होआवया
 ॥ ५९ ॥ ना हें अर्थे रिगोनि मनीं । श्रवणें लागोनि कार्नी । जपमिषें वदनीं ।
 वसोनियां ॥ १४६० ॥ ये गीतेचा पाठ जो जाणे । तयाचेनि सांगातीपणें ।
 गीता लिहोनि वाहणें । पुस्तकमिषें ॥ ६१ ॥ ऐसैसा मीसंकटा । संसाराचा
 चोहटां । गैवादि घालीत चोखटा । मोक्षसुखाची ॥ ६२ ॥ परि आकाशीं
 वसावया । पृथ्वीवरी बैसावया । रविदीप्ती रोंहाटावया । आवार नभ
 ॥ ६३ ॥ तेविं उत्तम ‡अधम ऐसें । सेवितां कवणातेंही न पुसे । कैवल्यदानें
 सरिसें । निववीत जगा ॥ ६४ ॥ यालागिं मोगिली कुटी । भ्याला वेद
 गीतेच्या पोटी । रिगाला आतां गोमटी । कीर्ति पातला ॥ ६५ ॥ ह्यणौनि
 वेदाची सुसेव्यता । ते हे मूर्त जाण श्रीगीता । श्रीकृष्णें पंडुसुता । उपदे-
 शिली ॥ ६६ ॥ परि वत्साचेनि वोरसें । दुभतें होय घरा उद्देशें । जालें पां-
 डवाचेनि मिषें । जगदुद्धरण ॥ ६७ ॥ चातकाचिये कैणवे । मेव पाणिघेसि
 धावे । तेथ चराचर आघवें । निर्वाले जेविं ॥ ६८ ॥ कां अनन्यगतीकमळा- ।

* कांडत्रयनिरूपिणी । श्रुतीचि. † बोभाये. ‡ मध्यम.

१ पंथराव्याच्या. २ लहानशी. ३ गर्जन सांगे. ४ सोवती. ५ जिकावा. ६ शेवट. ७ वेद,
 वेद हे निःश्वासापासून झाले ‘यस्य निःश्वासितं वेदा यो वेदेभ्योऽखिलं जगत् । निर्ममे—’
 ८ विचार. ९ शिखररूप. १० प्रकृतिपुरुषांचें विवेचन ज्यानें केलें जातें तो सांख्यसमुद्र.
 ११ ग्रंथ. १२ प्रत्यक्ष. १३ समर्थ. १४ कदर्य. १५ अनधिकारी. १६ मला (ज्ञानदेवाला)
 असें वाटतें कीं. १७ आकारला. १८ मलत्या कोणासही. १९ मजसहित. २० च्याव्यावर.
 २१ सत्र. २२ फिरण्याला. २३ अवकाश. २४ मोक्षदानानें. २५ मागल्या निंदेला भ्याला.
 २६ पांढ्यानें, ममतेनें. २७ दयेनें. २८ पाण्यासहित. २९ शांत झालें. ३० एकनिष्ठ अशा कमळासाठीं.

कागीं सूर्य ये वेळोवेळा । कीं सुखिया होइजे डोळा । त्रिभुवनीचा ॥
 तैसें अर्जुनाचेनि व्याजें । गीता प्रकाशनि श्रीराजें । संसारायेवढें थोर
 फेडिलें जगाचें ॥ १४७० ॥ सर्वशास्त्ररत्नदीप्ती । उजळिता हा त्रिजगता ।
 सूर्य नव्हे लक्ष्मीपती । वैष्णवाकाशीचा ॥ ७१ ॥ बापकुळ तें पवित्र । जे-
 थिचा पार्थ या ज्ञाना पात्र । जेणें गीता *केलें स्वतंत्र । आवार जगा ॥ ७२ ॥
 [चूर्णिका] हें असो मग तेणें । सदुरु-श्रीकृष्णें । पार्थाचें मिसळणें । आणिलें
 द्वैता ॥ ७३ ॥ पाठीं झणतसे पांडवा । शास्त्र हें मानलें कीं जीवा । तेथ
 येरु झणे देवा । आपुलिया कृपा ॥ ७४ ॥ तरि निधान जोडावया । भाग्य
 वढे गा धनंजया । परि जोडिलें भोगावया । विर्पायें होय ॥ ७५ ॥ पै क्षीर-
 सागरायेवढें । अविरजी तुधाचें भाडें । सुरां असुरां केवढें । मथितां जालें
 ॥ ७६ ॥ तें साहसही फळा आलें । जें अमृतही डोळां देखिलें । परि वरि-
 चिल चुकले । जेतनेतें ॥ ७७ ॥ तेथ अमरत्वा वोर्गरिलें । तें मरणाचिल्लागीं
 जालें । भोगों नेणतां जोडलें । ऐसें आहे ॥ ७८ ॥ नहुष स्वर्गाधिपति जाला ।
 परी रौद्राटीं भांवावला । तो भुजंगत्व पावला । नेणसी कायी ॥ ७९ ॥
 झणौनि बहुत पुण्य तुवां । केलें तेणें धनंजया । आजि शास्त्रराजा ह्या ।
 जालासि विषय ॥ १४८० ॥ तरि ययाचि शास्त्राचेनि । संप्रदायें ^{१५}पौष्टुरौनि ।
 शास्त्रार्थ हा निकेनी । अनुष्ठी हो ॥ ८१ ॥ येहवीं अमृतमथना- । सारिलें
 होईल अर्जुना । जरि रिघसी अनुष्ठाना । संप्रदायेंवीण ॥ ८२ ॥ गाय धड
 जोडे गोमटी । ते तेंचि ^{१६}सूर्य दे किरीटी । जें जाणिजे हातवटी । ^{१७}सांजव-
 णीची ॥ ८३ ॥ तैसा श्रीगुरु प्रसन्न होये । शिष्य विद्याही कीर लाहे ।
 परि ते फळे संप्रदायें । उपासिलिया ॥ ८४ ॥ झणौनि शास्त्री जो ह्ये ।
 उचित संप्रदाय आहे । तो ऐक आतां बहुवें । आदरेंसी ॥ ८५ ॥

इदं ते नातपस्काय नाभक्ताय कदाचन ।

न चाशुश्रूषवे वाच्यं न च मां योऽभ्यसूयति ॥ ६७ ॥

[इदं ते] तरि तुवां हें जें पार्था । गीताशास्त्र लाधलें आस्था । [नातपस्काय]
 तें तपोहीर्मा सर्वथा । [न] सांगावें ना हो ॥ ८६ ॥ [नाभक्ताय] अथवा ता-
 पस ही जाला । परि गुरुभक्तीं जो ठिलें । तो वेदीं अंत्यज वाळिलें । तैसा

* केली. † वरिचिली चुकलें. ‡ संप्रदायेंवीण ज्ञाना । सांगसी जरी.
 § पिवांये.

१ दूर केलें. २ मुखरूप आकाशीचा. ३ वसतिस्थान. ४ आळिगन. ५ गुप्तधन. ६ कविपु. ७ न विरल्लेळें. ८ निवावर उदार होऊन झटणें. ९ संभाळण्याला. १० वाडिलें. ११ नहुष राजाका काहीं दिवस स्वर्गाचें आधिपत्य मिळालें तेव्हां. १२ वर्तणुकींत चुकला. १३ या गीतेच. १४ धारण करून. १५ चांगलेपणानें. १६ दूध देते, पिवांये अद्या पाठीं धार काढणें. १७ दोह-
 णाची. १८ आस्थापूर्वक. १९ अनुष्ठानादिरहिताला. २० उदासीन. २१ दूर केला.

वाळी ॥ ८७ ॥ नातरि पुरोडोशु जैसा । न घापे वृद्ध तरी वायसा । गीता
 नेदी तैसी तापसा । गुरुभक्तिहीना ॥ ८८ ॥ [न चाशुश्रूषवे वाच्यं] कां तपही
 जोडे देहीं । भजे गुरुदेवांच्या ठाई । परि आकर्णनीं नाहीं । चाड जरी ॥ ८९ ॥
 तरि मागील दोहीं आंगीं । उत्तम होय कीर जर्गी । परि या श्रवणालागीं ।
 योग्य नोहे ॥ ९० ॥ मुक्ताफळ भलतैसें । हो परि सुख नसे । तंव गुण
 प्रवेशे । तेथ कायी ॥ ९१ ॥ सागर गंभीर होये । हें कोण ना झणत आहे ।
 परि वृष्टी वायां जाये । जाली तेथ ॥ ९२ ॥ धालिया दिव्यान्न सुवावें । मग
 जें वायां धांडावें । तें आर्ती कां न करावें । उदारपण ॥ ९३ ॥ [कदाचन]
 झणौनि योग्य भलतैसे । होत परी चाड तसे । तरि झणें वीनिवसें । देसी
 हें तयां ॥ ९४ ॥ रूपाचा सुजाण डोळा । वोडवूं ये कायि परिमळा । जेथ
 जें माने तें फळा । तेथचि गा ॥ ९५ ॥ झणौनि तपी भक्ति । पाहावे ते सुभ-
 द्रापति । परि शास्त्रश्रवणीं अनासक्ति । वाळावेचि ते ॥ ९६ ॥ [नच मां योऽभ्य-
 स्यति] नातरी तपभक्ति । होऊनि श्रवणीं आर्ति । आथी ऐसी ही आंयसी ।
 देखसी जरी ॥ ९७ ॥ तरी गीताशास्त्रनिर्मिता । जो मी सकळलोकशास्ता ।
 तया मातें सामान्यता । बोलेल जो ॥ ९८ ॥ माझ्या सज्जनेसि मातें । *पैशु-
 न्याचेनि आह्वाते । येक आहाती तयातें । योग्य न झण ॥ ९९ ॥ तयांची
 येर आवची । सामग्री ऐसी जाणावी । दीपेंवीण ठाणदिवी । रात्रिची जैसी
 ॥ १०० ॥ अंग गोरें आणि तरुणें । वरि लेयिलें आहे लेणें । परि येकलेनि
 प्राणें । सांडिलें जेविं ॥ १ ॥ सोनयाचें सुंदर । निर्वाळिलें होय घर । परि
 संपांगना द्वार । रुंधलें आहे ॥ २ ॥ निपजे दिव्यान्न चोखट । परि माजी
 काळकूट । असो मैत्री कपट- । गर्भिणी जैसी ॥ ३ ॥ तैसी तेंपभक्तिमेधा ।
 तयाची जाण प्रबुद्धा । जो माझ्यांची कां निंदा । माझीचि करी ॥ ४ ॥ या-
 कारणें धनंजया तो । भक्त मेढावी तपिया । तरी नको बापा ह्या । शास्त्रा
 आंतळों देवीं ॥ ५ ॥ काय बहु बोलों निंदका । योग्य सेंटयाहीसारखा ।
 गीता हे कवतिका- । लागीं ही नेदी ॥ ६ ॥ [चूर्णिका] झणौनि तपाचा ध-
 नुर्धरा । तळीं दाटोनि गाडोरा । वरि गुरुभक्तीचा पुरा । प्रोसाद जो जाला
 ॥ ७ ॥ आणि श्रवणेच्छेचा पुढां । दीरवंटा सदा उघडा । वरी कलश चो-
 खडा । अनिंदारत्नांचा ॥ ८ ॥

* जे सदा करिते आघातें. † डांगोरा.

१ टाकला जातो. २ यज्ञाचा अवशेष चरु. ३ श्रवणी. ४ इच्छा. ५ कर्मातुष्टानां. ६ छिद्र.
 ७ दोरा. ८ गुताळा. ९ वाडावें. १० दवडावें. ११ क्षुधिताला. १२ कदाचि. १३ कौतुकानें.
 १४ पुढें करूं येईल. १५ आवड नमलेले. १६ त्यागावे. १७ सामुग्री. १८ शासन करणारा.
 १९ ताडनानें. २० प्रकाशमान. २१ नागिणीनें. २२ कांडलें. २३ कपट आहे गर्भोत जिथ्या =
 कापट्यरूप. २४ केवळ तपाविषयीच बुद्धि. २५ बुद्धिमान्. २६ स्वर्ण. २७ ब्रह्मदेवासारखा.
 २८ दगडाचा पाया. २९ देवालय. ३० दरवाजा. ३१ कळप.

य इदं परमं गुह्यं मद्भक्तेष्वभिधास्यति ।

भक्तिं मयि परां कृत्वा मामेवैष्यत्यसंशयः ॥ ६८ ॥

[य इदं परमं गुह्यं] ऐशा भक्तालयीं चोखटीं । गीतारलेश्वर हा प्रतिष्ठीं । मग माक्षिया संवैसाटी । तूकसी जर्गी ॥ ९ ॥ कां जे एकाक्षरपणेंसी । त्रि-
मैत्रकेचिये कुशी । प्रणव होता गर्भवासी । सांकेडला ॥ १५१० ॥ तो गी-
तेचिया *बाहळीं । वेदबीज गेलें †पहाळीं । कीं गायत्री फुलींफळीं । श्लो-
कांच्या आली ॥ ११ ॥ ते हे मंत्ररहस्य गीता । मेळवी जो माक्षिया भक्ता ।
अनन्यजीवना माता । बाळका जैसी ॥ १२ ॥ [मद्भक्तेष्वभिधास्यति] तैसी
भक्तां गीतेसीं । भेटी करी जो आदरेंसी । तो [मामेवैष्यत्यसंशयः] देहा पाठीं
मजसीं । येकचि होय ॥ १३ ॥

न च तस्मान्मनुष्येषु कश्चिन्मे प्रियकृत्तमः ।

भविता न च मे तस्मादन्यः प्रियतरो भुवि ॥ ६९ ॥

[तस्मात्] आणि देहाचेंही लेणें । लेऊनि वेगळेपणें । असे तंव जीवें प्राणें ।
तोचि †पंडिये ॥ १४ ॥ [मनुष्येषु] ज्ञानियां कर्मठां तापसां । यया खुणेचिया
माणुसां । माजि तो एक गा जैसा । †पंडिये मज ॥ १५ ॥ [न च] तैसा भू-
तळीं आघवा । आन न देखें पांडवा । जो गीता सांगे मेळींवां । भक्तज-
नाचा ॥ १६ ॥ [भक्तिं मयि परां कृत्वा इति पूर्वश्लोकस्थं पदं] मज ईश्वराचेनि
लोभें । हे गीता पढतां अक्षोभें । जो मंडेन होय सभे । संतांचिये ॥ १७ ॥
नवपलवीं रोमांचित । मंदानिळें कांपवित । अमोदजळें बोलवित । फुलांचे
डोळे ॥ १८ ॥ कोकिला केलरवाचेनि मिषें । सद्गद बोलवीत जैसैं । वसंत कां
प्रवेशे । †मद्भक्तआरामीं ॥ १९ ॥ कां जन्माचें फळ चकोरां । होत जें चंद्र
ये अंबरा । ना ना नैव घन मयूरां । वो देत पावे ॥ १५२० ॥ [कश्चिन्मे प्रि-
यकृत्तमः] तैसा सज्जनाच्या मेळींपीं । गीतापथरलीं उमपीं । वर्षे जो माझ्या
रूपीं । हेतु ठेऊनि ॥ २१ ॥ [भवितेति] मग तयाचेनि पाडें । †पंडियंतें मजफुडें ।
नाहीचि गा मागेफुडें । न्याहाळितां ॥ २२ ॥ [चूर्णिका] अर्जुना हा ठायवरी ।
मी तयातें सूर्ये जिहारीं । जो गीतार्थाचें करी । परेगुणें संतां ॥ २३ ॥

* बहळीं. † पहाळीं. ‡ आरामामाजी.

१ स्थापन कर. २ बदलीस, साम्यतेस. ३ योग्य होशील. ४ अकार, उकार व मकार या
तीन मात्रांच्या. ५ ओकार. ६ संकुचिन होऊन राहिला. ७ विस्तारामध्ये. ८ वृक्षरूपानें उंच.
९ मातेच्या स्तन्यावांचून अन्य जीविकेला साधन नाही अशा. १० अत्यंत प्रिय. ११ समुदायाला.
१२ अहंकाररहित, स्थिरचित्तानें. १३ भूषणरूप. १४ सुगंधोदकानें. १५ मधुर स्वराच्या. १६ व-
गीचांत. १७ नूतन मेव. १८ समुदायांत. १९ पुष्कळ. २० आवडतें. २१ इत्यांत ठेवतो. २२ पा-
हुणेर, मेळवानी.

अध्येष्यते च य इमं धर्म्यं संवादमावयोः ।

ज्ञानयज्ञेन तेनाहमिष्टः स्यामिति मे मतिः ॥ ७० ॥

[अध्येष्यते इति] पै माक्षिया तुक्षिया मिळणीं । वाढीनली जे हे काहाणी । मोक्षधर्म कां *जिणी । आलासे जेथें ॥ २४ ॥ तो हा सकळार्थप्रद । आह्वां दोघांचा संवाद । न करितां पैदभेद । पाठेचि जो पढे ॥ २५ ॥ [ज्ञानयज्ञेनेति] तेणें ज्ञानानळीं प्रदीक्षीं । मूळ अविद्येचिया आहुतीं । तोषविला होय सु-
मती । परमात्मा मी ॥ २६ ॥ घेऊनि गीतार्थ उगाण्म । ज्ञानिये जें विच-
क्षणा । ठाकिती तें गाणावाणा । गीतेचा तो लाहे ॥ २७ ॥ गीतापाठकासि
†असे । फळ अर्थज्ञाचिसरिसें । गीता माउलिये कीं नसे । जाणेंतान्हें ॥ २८ ॥

श्रद्धावाननसूयश्च शृणुयादपि यो नरः ।

सोऽपि मुक्तः शुभाँल्लोकान्प्राप्नुयात्पुण्यकर्मणाम् ॥ ७१ ॥

[श्रद्धावाननसूयश्च] आणि सर्वमागीं निंदा । सांडूनि आस्था पै शुद्धा । गीताश्रवणीं श्रद्धा । उभारी जो ॥ २९ ॥ [शृणुयादपि यो नरः] तयाच्या श्रव-
णपुटीं । गीतेचीं अक्षरें जंव पैठीं । होती ना तंव उठाउठी । पळेचि पाप
॥ १५३० ॥ [पुण्यकर्मणां] ‡अटवीयेमाजि जैसा । वन्हि रिघतां सहसा । लं-
घिती कां दिशा । वनौकें तियें ॥ ३१ ॥ कां उदयाचळकुळीं । झळकतां अं-
शुमाळी । तिमिरें अंतराळीं । हारपती ॥ ३२ ॥ तैसा कानाच्या महाद्वारीं ।
गीता गजर जेथ करी । तेथ सृष्टीचिये आँदिवरी । जायचि पाप ॥ ३३ ॥
ऐसी जैन्मवह्ली धुवट । होय पुण्यरूप चोखट । याहीवरी आँचाट । लाहे
फळ ॥ ३४ ॥ जे यिये गीतेचीं अक्षरें । जेतुलीं कां कर्णद्वारें । रिघती तेतुले
होती पुरे । अश्वमेध कीं ॥ ३५ ॥ झणौनि §श्रवणें पापें जाती । [शुभाँल्लोका-
न्प्राप्नुयात्] आणि धर्म धरी उच्चती । तेणें स्वर्गराज्य संपत्ती । लाहेचि शेखीं
॥ ३६ ॥ [सोऽपि मुक्तः] तो पै मज यावयालागीं । पहिलें पेणें करी स्वर्गी ।
मग आवळे तंव भोगी । पाठीं मजचि मिळे ॥ ३७ ॥ [अयं भावः] ऐसी गीता
धनंजया । ऐकतया आणि पढतया । फळे महानंदें मियां । बडु काय वोळों

* जीवनी. † ऐसें. ‡ मग अरण्यामाजि. § गीताश्रवणें.

१ समागमांत. २ जगण्यास, हारीस. ३ एक पद सुद्धां न सोडतां, किंवा पदच्छेदादिक न
करितां केवळ श्लोकांचा पाठ. ४ प्रज्वलित ज्ञानाग्नि. ५ अज्ञानाच्या. ६ गीतेचा अर्थ उगाणा =
अनुभवून जें ज्ञान्याला प्राप्त होतें तेंच गीतेच्या गाणावाणा = गाण्यानें व वर्णन करण्यानें प्राप्त
होतें. ७ आहे. ८ जाणतें नेणतें. ९ प्रविष्ट. १० दाट अरण्यांत. ११ वनचरें, पशुपक्ष्यादि.
१२ सूर्य. १३ अंधकार. १४ आर्घाचें. १५ जन्माची परंपरारूप वेळ. १६ मोठें. १७ शेवटी.
१८ मुक्काम.

॥ ३८ ॥ [चूर्णिका] याकारणें हें असो । परि जयालागीं शास्त्रातिसो । केला तें तंव तुज पुसों । काज तुझें ॥ ३९ ॥

कच्चिदेतच्छुतं पार्थ त्वयैकाग्रेण चेतसा ।

कच्चिदज्ञानसंमोहः प्रनष्टस्ते धनंजय ॥ ७२ ॥

[कच्चिदेतच्छुतं पार्थेति] तरि सांग पां पांडवा । हा शास्त्रसिद्धांत आघवा । तुज एकचित्तें फावा । गेला आहे ॥ १५४० ॥ आर्ह्यां जैसें जया रीती । उँगाणिलें कानांच्या हातीं । येरीं तैसेंचि तुझ्या चित्तीं । पैठें केलें कीं ॥ ४१ ॥ अथवा माझारीं । गेलें सांडी विखुरी । किंवा उँपेक्षेवरी । वाळुनि सांडिलें ॥ ४२ ॥ जैसें आर्ह्यां सांगीतलें । तैसेंचि हृदयीं फावलें । तरी सांग पां व्हिलें । पुसेन तें मी ॥ ४३ ॥ [कच्चिदज्ञानसंमोह इति ।] तरि स्वाज्ञानजनितें । मागिले मोहें तूतें । भुलविलें तो येथें । असे कीं नाहीं ॥ ४४ ॥ हें बहु पुसों काई । सांगें तूं आपुल्या ठाई । कर्माकर्म कांहीं । देखतासी ॥ ४५ ॥ [अयं भावः] पार्थ स्वानंदैकरसें । विरेल ऐसा भेददशे । आणिला येणें मिपें । प्रश्नाचेनि ॥ ४६ ॥ पूर्णब्रह्म जाला पार्थ । तरि पुढील साधावया कार्यार्थ । मर्यादा श्रीकृष्णनाथ । उँलुंगों नेदी ॥ ४७ ॥ येन्हवीं आपुलें करणें । सर्वज्ञ काय तो नेणे । परि केलें पुसणें । याचिलागीं ॥ ४८ ॥ एवं करोनियां प्रश्न । नसतेंचि अर्जुनपण । आणूनियां *जालें पूर्णपण । तें बोलवी स्वये ॥ ४९ ॥ [चूर्णिका] मग क्षीराब्धीतें सांडित । गगनीं पुंजें मंडित । निवडे जैसा †न निवडित । पूर्णचंद्र ॥ १५५० ॥ तैसा ब्रह्म मी हें विसरे । तेथ जगचि ब्रह्मवें भरे । हेंही सांडी तरी विरे । ब्रह्मपणही ॥ ५१ ॥ ऐसा मोडत मांडत ब्रह्म । तो दुःखें देहाचिये सीमे । मी अर्जुन येणें नामें । उभा ठेला ॥ ५२ ॥ मँग कांपतां करतळीं । दडपूनि रोमावळी । पुलिका स्वेदजळीं । जिरऊनियां ॥ ५३ ॥ प्राणक्षोभे डोलतया । आंगा आंगाचि ‡टेक्या- । सूनि स्तंभ ¶चालया । भुलौनियां ॥ ५४ ॥ नेत्रयुगळाचेनि वौतें । आनंदामृताचें भरितें । वौसडत तें मागुतें । काढूनियां ॥ ५५ ॥

* आपण. † नवनीत. ‡ पुलकु. § टेंकावया, टेकलिया. ¶ चालतया.

१ अतिशय. २ समजून चुकला. ३ पदरीं घातले. ४ लवंगून. ५ चालडकलीवर. ६ झुगारून दिलें. ७ प्रविष्ट झालें. ८ सत्वर. ९ स्वकीय अज्ञानापासून उत्पन्न. १० निजानंदरूप सामरस्याने. ११ ओलांडूं देत नाहीं. १२ झालेलें पूर्णपण. १३ सोडीत. १४ तारागणाला शोभवीत. १५ विरघले. १६ एधून आठ सात्विकभाव वर्णिले आहेत ते येणेंप्रमाणें—'स्तंभः स्वेदोऽथ रोमांचः स्वरमंगोऽथ वेपथुः । वैवर्ण्यमश्रुप्रलय इत्यष्टौ सात्विका मताः'. १७ कांपत्या तळहातानें. १८ रोमांच. १९ प्राण्याच्या वाढीने. २० टेंका देण्यास ठेवून. २१ कंग, चाळयाला. २२ अशुभवाहानें. २३ उसळत.

विविधा औत्सुक्यांची दाटी । चीपे दाटत होती कंठी । ते करुनियां पैठी ।
हृदयामाजी ॥ ५६ ॥ वाचेचें वितुळणें । सांवरुनि प्राणें । अक्रमाचें श्वसणें ।
ठेऊनि ठायीं ॥ ५७ ॥

अर्जुन उवाच-नष्टो मोहः स्मृतिर्लब्धा त्वत्प्रसादान्मयाऽच्युत ।

स्थितोऽस्मि गतसंदेहः करिष्ये वचनं तव ॥ ७३ ॥

[नष्टो मोहः] मग अर्जुन ह्याने काय देवो । पुसताति आवडे मोहो । तरि
तो सकुटुंब गेला जी ठावो । घेऊनि आपला ॥ ५८ ॥ पोसीं येऊनि दिनकरें ।
डोळयातें आंधारें । पुसिजे हें कायि सरे । कोणे गांवीं ॥ ५९ ॥ तैसा
तूं श्रीकृष्णराया । आमुच्या डोळयां । गोचर हेंचि कायिसया । न पुरे तंव
॥ १५६० ॥ वरि लोभें मायेपासुनि । तें सांगसी तोंड भरुनि । जें कायीसं-
निही करुनि । जाणूं नये ॥ ६१ ॥ आतां मोह असे कीं नाहीं । हें ऐसें जी
पूससी काई । कृतकृत्य जाहलें पाहीं । तुझेपणें ॥ ६२ ॥ गुंतलों होतों
अर्जुनगुणें । तो मुक्त झालों तुझेपणें । आतां पुसणें सांगणें । दोन्ही नाहीं
॥ ६३ ॥ [त्वत्प्रसादान्मयाऽच्युत] * मी तुझेनि प्रसादें । लीधलेनि आत्मबोधें ।
मोहाचे तथा कैदे । नेदीच उरों ॥ ६४ ॥ [स्मृतिर्लब्धा] आतां करणें कां न
करणें । हें जेणें उठी दुजेपणें । तें तूवांचूनि नेणें । सर्वत्र गा ॥ ६५ ॥ [स्थितो-
ऽस्मि गतसंदेहः] येविपर्यां माझ्या ठायीं । संदेहाचें नुरेचि कांहीं । त्रिशुद्धी
कर्म जेथ नाहीं । तें मी जालों ॥ ६६ ॥ तुझेनि मज मी पावोनि । कर्तव्य
गेलें निपटूनि । [करिष्ये वचनं तव] परि आशा तुझीवांचोनि । आन नाहीं
प्रभो ॥ ६७ ॥ कां जें दृश्य दृश्यातें नाशी । जें हें जें द्वैतातें ग्रासी । जें एक
परि सर्वदर्शी । वसवी सदां ॥ ६८ ॥ जयाचेनि संबंधें बंध फिटे । जया-
च्या आशा आस तुटे । जें भेटल्यां सर्व भेटे । आपणपांचि ॥ ६९ ॥ तें
तूं गुरुलिंग जी माझें । जें येकलेपणीचें विरंजें । जयालागीं वोलांडीजे । अद्वैत
बोध ॥ १५७० ॥ आपणचि होऊनि ब्रह्म । सारिजे कृत्याकृत्याचें काम । मग
कीजे कां निःसीम । सेवा जयाची ॥ ७१ ॥ गंगा सिंधु सेवूं गेली । पाव-
तांचि समुद्र जाली । तेवि भक्तां सेलें दिधली । निजपदाची ॥ ७२ ॥ तो
तूं माझा जी निरूपचारु । श्रीकृष्णा सेव्य सद्गुरु । मा ब्रह्मतेचा उपचारु ।

* जी तुमचेनि.

१ स्वरमंग. २ प्रविष्ट. ३ क्रियारहितपणाचें. ४ आवडना होतो. ५ समीप. ६ शिरके. ७ हेंच
कोणत्या गोष्टीला पुरणार नाहीं. सर्व इतक्यानेच होईल. ८ कळवळ्याने, ममतापूर्वक. ९ कशाही
प्रयासानें. १० त्वद्रूपत्वानें. ११ प्राप्त झालेल्या. १२ गढे, मुळ्या. १३ खरेपणानें. १४ तुझ्या
योगानें मी माझ्या स्वरूपी मिळून. १५ जें दृश्य प्रत्यक्ष होतांच. १६ द्वैत, गुरुशिष्यभाव.
१७ आशा कुंठित होत. १८ गुरुमूर्ती. १९ साद्य. २० वांटा. २१ आदराचा.

हाचि मानीं ॥ ७३ ॥ जें मज तुझां आड । होतें भेदाचें कंवाड । तें फेडोनि
केलें गोड । सेवासुख ॥ ७४ ॥ तरी आतां तुझी आज्ञा । सकळ देवाधिदेव-
राज्ञा । करीन देखीं अनुज्ञा । भलतियेविपर्यां ॥ ७५ ॥ [अयं भावः] यया
अर्जुनाचिया बोला । देव नाचे सुखें भुलला । झणे विश्वफळा जाला । * फळ
ह्या मज ॥ ७६ ॥ उणेनि उमचला सुधाकर । देखुनी आपला कुंमर । मर्यादा
क्षीरसागर । विसरेचिना ॥ ७७ ॥ [चूणिका] ऐसें संवादाचा बहुलां । लग्न
दोघांचिया आंतुलां । लागलें देखोनि जाला । निर्भर संजय ॥ ७८ ॥ तेणें
झणतसे संजयो । बाप कृपानिधीरावो । तो आपुला मनोभावो । अर्जुनेंसीं
केला ॥ ७९ ॥ तेणें उंचंबळलेपणें । संजय धृतराष्ट्रातें झणे । जी कैसें बाद-
रायणें । रक्षिलों दोघे ॥ १५८० ॥ आजि तुमतें आवधारा । नाहीं चर्मच-
क्षुंही संसारा । कीं ज्ञानदृष्टी व्यवहारा । आणिलेति ॥ ८१ ॥ आणि रंथीं-
चिये राहाटी । घेइ जो घोडेयासाठीं । तथा आह्मां या गोष्टी । गोचरा होती
॥ ८२ ॥ जुंझाचें निर्वाण । मांडलें असे दारुण । दोहीं हारीं आपण । हार-
पिजे जैसें ॥ ८३ ॥ येवढा जिये सांकडां । कैसा अनुग्रहो पै गाढा । जे ब्र-
ह्मानंद उघडा । भोगवीतसे ॥ ८४ ॥ ऐसें संजय बोलिला । परि न द्रवे येई
उगला । चंद्रकिरणीं शिवतला । पाषाण जैसा ॥ ८५ ॥ हे देखोनि तथाची
दशा । मग करीचिना सिरिसा । परि सुखें जाला पिसा । बोलतसे ॥ ८६ ॥
भुलविला हर्षवेगें । झणौनि धृतराष्ट्रा सांगे । येव्हवीं नव्हे तथाजोगें । हें
कीर जाणे ॥ ८७ ॥

संजय उवाच—इत्यहं वासुदेवस्य पार्थस्य च महात्मनः ।

संवादमिममश्रौषमद्भुतं रोमहर्षणम् ॥ ७४ ॥

[इति] मग झणे पै कुरुराजा । ऐसा भ्रातृपुत्र तो तुझा । बोलिला तें अ-
धोक्षजा । गोड जालें ॥ ८८ ॥ [महात्मनः इति कृष्णपार्थयोर्विशेषणं] अगा
पूर्वापर सागर । यया नामासीचि सिर्नार । येर आघवें तें नीर । एक जैसें
॥ ८९ ॥ तैसा श्रीकृष्ण पार्थ ऐसें । हें आंगाचिपासीं दिसे । मग संवादीं
जी नसे । कांहींचि भेद ॥ १५९० ॥ पै दर्पणाहूनि चोखें । दोन्ही होती
सन्मुखें । तेथ येरीं येर देखे । आपणपें जैसें ॥ ९१ ॥ [संवादं] तैसा
देवेंसी पंडुसुत । आपणपें देवीं देखत । पांडवेंसीं देखे अनंत । आपणपें

* सफळाफळ, सकळफळ.

१ प्रतिबंधक. २ कलंकयुक्त जाणला, क्षीरसागर आपला कुमार चंद्र याला पाहून उणेन उम-
चला = आनंदित व्हायें त्याहून कमी आनंद पावला (भरून आला तरी मर्यादेपर्यंतच). ३ बहु-
व्यावर. ४ हृद्गत खुणेनें. ५ गहिवरून. ६ व्यावहारिक दृष्टीनें. ७ अर्जुनाच्या रथाची राहाटी
चालली पाहिजे झणून घोड्यांची संगति ज्यानें केली त्याच्या गोष्टी आह्मांस गोचरा = मलक्ष हो-
तात. ८ युद्धप्रकरण. ९ उभय पक्ष. १० संकटांत. ११ धृतराष्ट्र. १२ संबंध. १३ पुनः (अर्जुन).
१४ वेगळेपण. १५ देहभिज्जतेच्या दृष्टीनें.

पाथीं ॥ ९२ ॥ देव देवा भक्तालागीं । जिये विवेर देखे आंगीं । *येरु
तियेचिही भागीं । दोन्ही देखे ॥ ९३ ॥ आणिक कांहींचि नाहीं । ह्याणौनि
करिती काई । दोघे येकपणें पाहीं । नांदताति ॥ ९४ ॥ आतां भेद जरी
मोडे । तरी प्रभोत्तर कां घडे । ना भेदचि तरि जोडे । संवादसुख कां
॥ ९५ ॥ ऐसें बोलतां दुजेपणें । संवादीं द्वैतगिळणें । [इममश्रौषं] तें ऐकिलें
बोलणें । दोघांचें मियां ॥ ९६ ॥ उट्टनि दोन्ही आरसे । बोडविलीया
सरिसे । कोण कोणा पाहातसे । कल्पावें पां ॥ ९७ ॥ कां दीपासन्मुख ।
ठेविलया दीपक । कोण कोणा अर्थिक । कोण जाणे ॥ ९८ ॥ ना ना अर्का-
पुढें अर्क । उदयलिया आणिक । कोण ह्याणे प्रकाशक । प्रकाश्य कवण
॥ ९९ ॥ [अद्भुतं] हे निर्धारूं जातां फुडें । निर्धारसि ठेक पडे । ते दोघे
जाले येवढे । संवादें सरिसे ॥ १०० ॥ [अहं] जी मिळतां दोन्ही उदकें- ।
माजि लवण वारूं ठाके । कीं तयासींही निर्मिळें । तेंचि होय ॥ १ ॥
तैसें श्रीकृष्ण अर्जुन दोन्ही । संवादले तें मनीं । धरितां मजही वांनी । तेचि
होतसे ॥ २ ॥ ऐसें ह्याणे ना मोटकें । तंव हिरोनि सात्विकें । आठव नेला नेणो
कें । संजयपणाचा ॥ ३ ॥ [रोमहर्षणं] रोमांच जंव फेरके । तंव तंव आंग
सुरके । स्तर्भे स्वेदांतें जिके । एकला कंप ॥ ४ ॥ अद्वयानंदस्पर्शें । दिठी रस-
मय जाली असे । ते अश्रु नव्हती जैसें । द्रवत्वचि ॥ ५ ॥ नेणों काय माय
पोटीं । काय नेणों गुंफे कंठीं । वांगर्था पडत मिठी । उर्ससाचिया ॥ ६ ॥
किंबहुना सात्विका आठां । चर्चाचर मांडतां उमेठां । संजय जाहालासे चोहटां ।
संवादसुखाचा ॥ ७ ॥ तया सुखाची ऐसी जाती । जे आपणचि धरी शांती ।
मग पुढती देहस्मृती । लाधली तेणें ॥ ८ ॥

व्यासप्रसादाच्छ्रुतवानेतद्ब्रह्ममहं परम् ।

योगं योगेश्वरात्कृष्णात्साक्षात्कथयतः स्वयम् ॥ ७५ ॥

[व्यासप्रसादाच्छ्रुतवान्] तेव्हां बैसतेनि आनंदें । ह्याणे §जी जें उपनिषदें ।
नेणती तें व्यासप्रसादें । ऐकिलें मियां ॥ ९ ॥ [एतद्ब्रह्ममहं] ऐकतांचि ते
गोठी । ब्रह्मत्वाची पडिली मिठी । मीतूपणेसी ¶दिठी । विरोनि गेली

* येरुही तियेचि. † न माय पोटीं. ‡ परस्पर होत उमेठा. § ह्याणे जें.
¶ दृष्टी.

१ छिद्र. २ समोरासमोर ठेविले असतां. ३ प्रकाशक, इच्छा करणारा. ४ स्तब्धता. ५ निवारण
करण्यास राहे. ६ क्षणांत. ७ लवणाप्रमाणें. ८ थोडें बोलतो न बोलतो तों. ९ उमारे. १० संकोच
पडे. ११ स्तब्धता व धाम यांस. १२ ब्रह्ममय. १३ पाप्मरच. १४ कंठरूप गुंफेंत. १५ शब्दार्थांस.
१६ श्वासोच्छ्वासार्था. १७ आठ सात्विक भावांस. १८ बोवडी वळली असतां. १९ अतिशय.
२० उरनिपत्सारसंवाद. २१ हारपली.

॥ १६१० ॥ [योगं योगेश्वरात्कृष्णात्] हे आघवेचि कां योग । जयाठाया येते मार्ग । तयाचें वाक्य सवंग । केलें मज व्यासें ॥ ११ ॥ [साक्षात्कथयतः स्वयं] अहो अर्जुनाचेनि मिषें । आपणपेंचि दुजें ऐसें । नटोनि आपणया *उद्देशें । बोलिले जें देव ॥ १२ ॥ [अयं भावः] तेथ कीं माझे श्रोत्र । पाटाचें जाले जी पात्र । काय वानूं स्वतंत्र । सामर्थ्य श्रीगुरुचें ॥ १३ ॥

राजन्संस्मृत्य संस्मृत्य संवादमिममद्भुतम् ।

केशवार्जुनयोः पुण्यं हृष्यामि च मुहुर्मुहुः ॥ ७६ ॥

[राजन् इति स्पष्टं शब्दं अद्भुतं] राया हें बोलतां विस्मित होय । [केशवार्जुनयोः पुण्यं] तेणेंचि मोडोवला ठाये । रत्नीं कीं रत्नकिंळा ये । झांकोळित जैसी ॥ १४ ॥ [हृष्यामि च मुहुर्मुहुः] हिमवंतीचीं सरोवरें । चंद्रोदयीं होती कां-शमीरें । मग सूर्यागमीं माघारें । द्रवत्व ये ॥ १५ ॥ [संस्मृत्य संस्मृत्य संवादं] तैसा शरिराचिया स्मृती । तो संवाद संजय चित्ती । धरी आणि पुढती । तेचि होय ॥ १६ ॥

तच्च संस्मृत्य संस्मृत्य रूपमत्यद्भुतं हरेः ।

विस्मयो मे महान् राजन् हृष्यामि च पुनः पुनः ॥ ७७ ॥

[राजन्] मग उठोनि ह्याने नृपा । [तच्चेति] श्रीहरीचिया विश्वरूपा । देखिल्या उगा कां पां । असों लाहसी ॥ १७ ॥ न देखणेनि जें दिसे । नाहीपणेंचि जें असे । विसरें आठवे तें कैसें । चुकऊं आतां ॥ १८ ॥ [विस्मयो मे महान्] देखोनि चमत्कार । कीजे तो नाही पैसार । मजही सकट महापुर । नेत आहे ॥ १९ ॥ ऐसा श्रीकृष्णार्जुन- । संवादसंगमीं खान । करुनि देतसे तिळदान । अहंतेचें ॥ १६२० ॥ [हृष्यामि च पुनः पुनः] तेथ असंवरें आनंदें । अलौकिकही कांहीं स्फुंदे । श्रीकृष्ण ह्याने सद्गदें । वेळोवेळां ॥ २१ ॥ या अवस्थांची कांहीं । कौरवातें परी नाही । ह्याणोनि रायें तें कांहीं । कल्पावें जंव ॥ २२ ॥ तंव जाला सुखलाभ । आपणपां करुनि स्वयंभ । बुझाविला अव-ष्टंभ । संजयें तेणें ॥ २३ ॥ तेथ कोणी येकी अवसरी । होआवी ते करुनि दुरी । रावो ह्याने संजया परी । कैसी तुझी गा ॥ २४ ॥ तेणें तूतें येथें व्यासें । बैसविलें कांयसा †उद्देशें । अप्रसंगामाजि ऐसें । बोलसी काई ॥ २५ ॥ रानीचें राउळा नेलिया । दाही दिशा मानी सुनिया । कां रात्री होय पण्ह-

* आपणया दोष. † दोष.

१ योगयतेचें, अधिकाराचें पात्र. २ हिरमुसला होऊन राहे. ३ चकाकीला. ४ रक्तिकाकार. ५ शरीराच्या स्मृतीला संवादानें कांहीं वेळ धरलें—आवरलें, पण पुनः तीच स्मृति झाली. ६ न दिसणें व दिसणें, नसणें व असणें, स्मृति व आठव असें जें अत्यद्भुत. ७ प्रसार. ८ न सांवरणाऱ्या. ९ उसासा टाकी. १० जिरविला. ११ साद्विकाहंकार. १२ प्रसंग. १३ रीत. १४ कोणत्या. १५ अवधान सोडून. १६ उजाडलें असतां.

लया । निशाचरा ॥ २६ ॥ जो जेथिचें गौरव नेणे । तयासि तें भिंगुळवाणें ।
 ह्मणौनि अप्रसंग तेणें । ह्मणावा कीं तो ॥ २७ ॥ मग ह्मणें सांगें प्रस्तुत ।
 उदयलेंसे जें उत्कळित । तें कोणासि बारे जैत । देईल शेखी ॥ २८ ॥ ये-
 न्हवीं विशेषें बहुतेक । आमुचें ऐसें मानसिक । जे दुर्योधनाचे अधिक ।
 प्रताप सदा ॥ २९ ॥ आणि येरांचेनि पाडें । दळही याचें देव्हडें । ह्मणौनि
 जैत फुडें । आणील ना तें ॥ १६३० ॥ आह्मां तंव गमे ऐसें । मा तुमैं जो-
 तीथ कैसें । तें नेणों संजया असे । तैसें सांग पां ॥ ३१ ॥

यत्र योगेश्वरः कृष्णो यत्र पार्थो धनुर्धरः ।

तत्र श्रीर्विजयो भूतिर्धुवानीतिर्मतिर्मम ॥ ७८ ॥

हरिः ॐ तत्सदिति श्रीमद्भगवद्गीतासूपनिषत्सु ब्रह्मविद्यायां योगशास्त्रे
 श्रीकृष्णार्जुनसंवादे मोक्षसंन्यासयोगो नामाष्टादशोऽध्यायः ॥ १८ ॥

[यत्र योगेश्वरः कृष्णो] यया बोला संजयो ह्मणे । जी येर्येरांचें मी नेणें ।
 परि आयुष्य तेथें जिणें । हें फुडें कीं गा ॥ ३२ ॥ चंद्र तेथें चंद्रिका । शंभु
 तेथें अंबिका । संत तेथें विवेका । असणें कीं जी ॥ ३३ ॥ रीवो तेथें कटक ।
 सौजन्य तेथें सोडरीक । वन्हि तेथें दाहक । सामर्थ्य कीं ॥ ३४ ॥ दया तेथें
 धर्म । तेथें सुखागम । सुखीं पुरुषोत्तम । असे जैसा ॥ ३५ ॥ वसंत तेथें
 वन । वन तेथें सुमन । सुमनीं पालिंगेन । सारंगांचीं ॥ ३६ ॥ गुरु तेथ
 ज्ञान । ज्ञानीं आत्मदर्शन । दर्शनीं समाधान । आथि जैसें ॥ ३७ ॥ भाग्य
 तेथ विलास । सुख तेथें उल्लास । हें असो तेथ प्रकाश । सूर्य जेथें ॥ ३८ ॥
 तैसे सकळ पुरुषार्थ । जेणें स्वामी कां सनाथ । तो श्रीकृष्ण रावो जेथ ।
 [तत्र श्रीः] तेथ लक्ष्मी ॥ ३९ ॥ [भूतिः] आणि आपलेनि कांतेसी । ते जग-
 दंबा जयापासीं । अणिमादिकी काय दासी । नव्हती तयातें ॥ १६४० ॥
 [विजयः] कृष्ण विजयस्वरूप निजांगें । तो राहिला असे जेणें भागें । तें जय
 लागवेगें । तेथेंचि आहे ॥ ४१ ॥ [यत्र पार्थो धनुर्धरः] विजयी नामें अर्जुन
 विख्यात । विजयस्वरूप श्रीकृष्णनाथ । श्रियेसी विजय निश्चित । तेथेंचि
 असे ॥ ४२ ॥ तयाचिये देशीच्या झाडीं । कल्पतरूतें होडी । न जिणीवें
 कां येवडीं । मायबापें असतां ॥ ४३ ॥ ते पाषाणही आववे । चित्तोरखें कां
 नोहवे । तिये भूमिके कां न यावें । सुवर्णत्व ॥ ४४ ॥ तयाचिया गांवीं-
 चिया । नदी अमृतें वाहाविया । नवल काय राया । विचारीं पां ॥ ४५ ॥

१ भयंकर. २ उयाची मला उकंटा तें. ३ विजय. ४ इतर जे पांडव त्यांच्या योग्यतेस.
 ५ सैन्य. ६ अधिक. ७ गणित, भाकीत. ८ परस्परान्ते. ९ चांदणें. १० झाला. ११ राजा अ-
 सेल तिकडे सैन्य. १२ पुष्पें. १३ समुदाय. १४ अमरांची. १५ मुजोपभोग. १६ पतीसह.
 १७ अष्टसिद्धि. १८ लक्ष्मीसह. १९ पैत मारी. २० न जिंकावें. २१ चितामणी.

तयाचे बिंसाट शब्द । सुखें ह्मणों येती वेद । संदेह सच्चिदानंद । कां *नो-
 हावे ते ॥ ४६ ॥ पै स्वर्गापवर्ग दोन्हीं । इयें पदें तया अधीनीं । श्रीकृष्ण
 बाप जननी । कैमळा जया ॥ ४७ ॥ ह्मणौनि †जिया बाहीं उभा । तो लक्ष्मी-
 येचा बल्लभा । तेथ सर्वसिद्धि स्वयंभा । येर मी नेणें ॥ ४८ ॥ आणि समु-
 द्राचा मेघ । उपयोगें तयाहूनि चांग । तैसा पार्थी आजि लांग । आहे तये
 ॥ ४९ ॥ कैनकत्वदीक्षागुरू । लोह्या परीस होय कीरू । परि जगा पोसिता
 व्यवहारू । तेंचि जाणें ॥ १६५० ॥ येथ गुरूत्वा येतसे उणें । ऐसें झणें कोणही
 ह्मणे । वन्हिप्रकाश दीपपणें । प्रकाशी आपला ॥ ५१ ॥ तैसा देवाच्या
 शक्ती । पार्थ देवासीच बहुती । †परी माने इये स्तुती । गौरव असे ॥ ५२ ॥
 आणि पुत्रें मी सर्व गुणीं । जिणावा हे बापा शिरीणी । तरी ते शार्ङ्गपाणी ।
 फळा आली ॥ ५३ ॥ किंबहुना ऐसा नृपा । पार्थ जालासे कृष्णकृपा । तो
 जयाकडे साक्षेपा । रीती आहे ॥ ५४ ॥ तोचि गा विजयासि ठावो । येथ
 तुज कोण संदेहो । तेथ नये तरी वावो । विजयोचि होय ॥ ५५ ॥ ह्मणौनि
 जेथ श्री तेथ श्रीमंत । जेथ तो पंडुचा सुत । तेथ विजय समस्त । †अभ्युदय
 तेथ ॥ ५६ ॥ [ध्रुवा] जरी व्यासाचेनि सांचें । धिरे मन तुमचें । तरी या बो-
 लाचें । ध्रुवचि माना ॥ ५७ ॥ [नीतिः] जेथ तो श्रीवल्लभ । तेथ भक्तकंदर्ब ।
 तेथ सुख आणि लाभ । मंगळाचा ॥ ५८ ॥ [मतिर्मम] या बोला आन होये ।
 तरि व्यासाचा अंकें न वाहें । ऐसें गाजौनि बाहे । उभिली तेणें ॥ ५९ ॥
 [‘श्लोकमाहात्म्यं’] एवं भारताचा आवांका । आणूनि श्लोकां येका । संजयें
 कुरुनायका । दीधला हातीं ॥ १६६० ॥ जैसा नेणो केवढा वन्ही । परि
 गुणांम्रीं ठेऊनी । आणिजे सूर्याची हांणी । निस्तरावया ॥ ६१ ॥ तैसें शब्दब्रह्म
 अनंत । जालें सवालक्ष भारत । भारताचें शतें सात । सर्वस्व गीता ॥ ६२ ॥
 तयाही सातां शतांचा । इत्यर्थ हा श्लोकशेर्षीचा । व्यासशिष्य संजयाचा ।
 पूर्णोद्धार जो ॥ ६३ ॥ येणें येकेंचि श्लोकें । राहे तेणें असकें । अविद्याजाताचें
 निकें । जितिलें होय ॥ ६४ ॥ †ऐसे श्लोकशतें सात । गीतेचीं पदें आंगें वा-

* न होआवा तो. † जे बाहे. ‡ एसया श्लोकां.

१ भलते, अव्यवस्थित. २ ते मूर्तिमंत सच्चिदानंदरूप कां न व्हावे, आहेतच. ३ लक्ष्मी.
 ४ उया पक्षाकडे, उया भागी. ५ पति. ६ संबंध. ७ सुवर्णपणा येण्याची दीक्षा देणारा गुरू. ८ लो-
 खंडाला सुवर्ण करणारा परिस आहे परंतु. ९ सुवर्णच. १० कदाचित्. ११ या स्तुतीनें देवालाच
 महत्त्व आहे. १२ प्रकारें. १३ इच्छा. १४ पक्षपातपूर्वक. १५ विजयाचें विजयत्व व्यर्थ होईल.
 १६ अधिक उदय. १७ खरेपणानें. १८ विश्वासे. १९ अढळत्वच. २० समुदाय. २१ कल्या-
 णाचा. २२ अंकितपण, शिष्यत्वचिन्ह. २३ असें मोठ्यानें बोलून हात उभारला. २४ मतलब.
 २५ ‘यत्र योगेश्वरः कृष्णो’ ह्या शब्दाच्या श्लोकांत. २६ वातीच्या अर्मी. २७ नाश दूर करा.
 यास. २८ संपूर्ण.

हृत । पदं ह्यर्णो कीं परमावृत । गीताकाशीचें ॥ ६५ ॥ कीं आत्मराजाधिपे
सभे । गीते बौद्धवले हे खांबे । मज श्लोक प्रतिभे । ऐसे येत ॥ ६६ ॥ कीं
गीता हे सप्तशती । मंत्रप्रतिपाद्य भगवती । मोहमहिषा मुक्ती । आनंदली
असे ॥ ६७ ॥ ह्यणौनि मनं *कार्ये वाचा । जो सेवक होईल ह्येचा । तो
स्वानंदसाम्राज्याचा । चक्रवर्ती करी ॥ ६८ ॥ कीं अविद्यातिमिररोलें ।
श्लोक सूर्यातें पैजा जिंके । ऐसे प्रकाशिले गीतामिषें । रायें श्रीकृष्णें ॥ ६९ ॥
कीं श्लोकाक्षरद्राक्षलता । मांडव जाली आहे गीता । संसारपथ आता ।
विसंवावया ॥ ७० ॥ कीं सभाग्यसंतीं अमरी । सेविले ते श्लोक क-
लहारीं । श्रीकृष्णाख्यसरोवरीं । सासिजाली †हे ॥ ७१ ॥ कीं श्लोक नव्हती
आन । गमे गीतेचें महिमान । वाखाणिते बंदिजन । उदंड जैसे ॥ ७२ ॥
कीं श्लोकांचिया आवारा । सात शतें करुनि सुंदरा । सर्वांगम गीतापुरा ।
वसों आले ॥ ७३ ॥ कीं निजकांता आत्मया । आवडी गीता मिळावया ।
श्लोक नव्हती बाह्या । पसर कां जो ॥ ७४ ॥ कीं गीताकमळींचे भुंगीं । कीं
हे गीतासागरतरंग । कीं हरीचे हे तुरंग । गीतारथींचे ॥ ७५ ॥ कीं श्लोक-
सर्व तीर्थसंघात । आला श्रीगीतेगंगे आंत । जे अर्जुन सिंहस्थ । जाला
ह्यणौनि ॥ ७६ ॥ कीं नोहे हे श्लोकश्रेणी । अंचितचित्तचित्तामणी । कीं
निर्विकल्पां लावणी । कल्पतरूंची ॥ ७७ ॥ ऐसिया शतेंसातश्लोका । परी
आगळा येकयेका । आतां कोण वेगळिका । वार्तावा पां ॥ ७८ ॥ तान्ही
आणि पौरठी । ह्या कामधेनूतें दिठी । सूनि जैसिया गोठी । कीजती ना
॥ ७९ ॥ दीपा आगिलें मागिल । सूर्य धाकुटा वडील । अमृतसिंधू खोल ।
उधळ कायसा ॥ ८० ॥ तैसे पहिले सरते । श्लोक न ह्यणावे गीते । जुनीं
नवीं पारिजातें । आहाती काई ॥ ८१ ॥ आणि श्लोका पाड नाहीं । हें कीर
समर्थ काई । येथ वाच्य वाचकही । भाग न धरी ॥ ८२ ॥ [‘पाठमाहात्म्यं’]
जे ह्ये शास्त्रीं येक । श्रीकृष्णचि वाच्य वाचक । हें प्रसिद्ध जाणे लोक । भ-
लताही ॥ ८३ ॥ येथें अर्थें तेंचि पाठें । जोडे येवडें निर्धटें । वाच्यवाचक ये-
कवटें । साधितें ‡शास्त्र ॥ ८४ ॥ ह्यणौनि मज कांहीं । समर्थनीं आतां विषय
नाहीं । गीता जाणा हे वैद्ययी । श्रीमूर्ति प्रभूची ॥ ८५ ॥ शास्त्र वाच्यें अर्थें
फळे । मग आपण मावळे । तैसे नव्हे हें सगळें । परब्रह्मची ॥ ८६ ॥ कैसा

* कानें. † सेविली. ‡ ये. § शास्त्रें.

१ गीता हीच काशी तिथें, स्वर्गाचें. २ प्रतिभारून येतात. ३ आंतिमहिषापुराची मुक्ता निरास
केल्यानें. ४ होईल. ५ अज्ञानांधकार आडवून. ६ कमळांनीं. ७ सिद्ध झाली. ८ स्तुतिपाठक.
९ वेदशास्त्रादि. १० अमर. ११ अंचित = विरक्त यांच्या चित्ताला चित्तामणि. १२ वर्णावा.
१३ शुष्क. १४ दृष्टि देऊन. १५ पुढचाभागचा. १६ श्रेष्ठ, शेवटले. १७ पारिजात जुना असो, नया
असो, परिमळ सारखाच. १८ मोठ्या पराक्रमानें प्राप्त होण्याजोगें. १९ प्रतिपादनाला. २० वाणीरूप.

विश्वाचिया कृपा । करुनि महानंद सोपा । अर्जुनेव्याजें रूपा । आणिला देवें
 ॥ ८७ ॥ चकोराचेनि निमित्तें । तिन्हिं भुवनें संतसें । निवविर्लीं कळावंतें ।
 चंद्रें जेविं ॥ ८८ ॥ [गीताशास्त्रं वेदमाता च मंत्रो विप्रः पूज्यस्तच्चरित्रेऽभिलाषः ।
 कृष्णे भक्तिः सर्वभूतानुकंपा सद्भिः संगो यस्य तस्याकृतं किम्] कां गौतमाचेनि
 मिणें । कळिकाळ *ज्वरितोद्देशें । पाणि ठाळ गिरीशें । गंगेचा केला ॥ ८९ ॥
 तैसें गीतेचें हें दुभतें । वत्स करुनि पार्थातें । दुभीनली जगापुरतें । श्रीकृष्ण
 गाय ॥ १६९० ॥ येथें जीवें जरी न्याल । तरी हेंच कीर होआल । नातरी
 पाठमिणें †तिंबाल । जीभचि जरी ॥ ९१ ॥ तरि लोह एके अंशें ।
 झगटलिया परिसें । येरीकडे अपैसें । सुवर्ण होय ॥ ९२ ॥ तैसी पाठाची ते
 ‡वाटी । श्लोक पाद लावावा जंव वोठीं । तंव ब्रह्मतेची पुष्टी । येथील आंगा
 ॥ ९३ ॥ ना येणेंसीं मुख वांकडें । करुनि ठाकाल कांनवडें । तरि कार्नीही
 घेतां पडे । तेचि लेख ॥ ९४ ॥ जे हे श्रवणें पाठें अर्थें । गीता नेदी मोक्षा-
 अरौतें । जैसा समर्थ दाता कोणहातें । नास्ति न ह्मणे ॥ ९५ ॥ ह्मणोनि
 §जाणतया सवा । गीताचि येकी सेवा । काय कराल आघवां । शास्त्रीं येरीं
 ॥ ९६ ॥ [गीता सुगीता कर्तव्या श्लो०] आणि कृष्णार्जुनीं मोर्कळी । गोडी चौव-
 ळिली जे निरौळीं । ते श्रीव्यासें केली करतळीं । घेवों ये ऐसी ॥ ९७ ॥ बा-
 ळकातें चोरसें । माय जें जेवजं बैसे । तें तया ठाकती तैसे । घांस करी
 ॥ ९८ ॥ कां अफाटा समीरणा । अपैतें पण शाहाणा । केलें जैसें वि-
 र्जणा । निर्मूनियां ॥ ९९ ॥ तैसें शब्दें जें न लभे । तें घडूनियां अनुष्ठुभें ।
 स्त्रीशूद्रादिप्रतिभे । सामाविलें ॥ १००० ॥ स्वातीचेनि पाणियें । न होती
 जरी मोतियें । तरि आंगीं सुंदराचिये । कां शोभती तियें ॥ १ ॥ नाद वाद्या
 न येतां । तरि कां गोचर होता । ¶फुलें न होतां घेपता । आमोद केविं ॥ २ ॥
 § गोडीं न होती पक्काजें । तरि कां फौवती रसने । दर्पणावीण नयनें । नयन
 कां दिसे ॥ ३ ॥ ||द्रष्टा श्रीगुरुमूर्ती । न रिगता दृश्यपंथी । तरि कां ह्या †उ-
 पास्ती । आकळता तो ॥ ४ ॥ तैसें वस्तु जें असंख्यात । तया संख्या शतें
 सात । न होती तरि कोणा येथ । फौवों शकतें ॥ ५ ॥ मेघ सिंधूचें पाणी
 वाहे । तरी जग तयातेंचि पाहे । कां जें उर्मप तें नोहे । ठाकतें कोणहा ॥ ६ ॥

* ज्वरितदोषें. † तिमाल. ‡ वाटी । लावाल ना. § जाणा तया. ¶ पुष्प
 नव्हतां. § गौतयते न येती पक्काजें. || तैसा द्रष्टा.

१ जगावर कृपा करून. २ अर्जुनाच्या निमित्ताने. ३ प्रत्यक्षतेस. ४ कलिकालरूप जो
 च्चर ल्याणें पीडित. ५ पायउतार. ६ मिजवाल. ७ एका अंगावर. ८ प्रकार. ९ नाही.
 १० झाल्याबराबर. ११ स्पष्ट. १२ बोलिली. १३ आकाशांत. १४ पांढऱा दाटून आल्यानें,
 अतिममतेनें. १५ सोईस पडतील तसे. १६ वाऱ्याला. १७ आधीनपण, वश्यता. १८ पंखा.
 १९ प्रतिविंबांत. २० फुलें उत्पन्न झालीं नसतीं तर सुगंध कसा घेतां घेता. २१ पक्काजें गोड झालीं
 नसतीं तर जिभेला गोड कां लागतीं. २२ साक्षी. २३ साकार झाला नसता. २४ उपासनेला.
 २५ मिळूं शकतें. २६ अगणित.

आणि वाचा . . . १५ । त हे १५ होते बरवे । तरि कांनें मुखें फावे ।
 ऐसें कां होते ॥ ७ ॥ ह्मणोनि श्रीव्यासाचा हा थोर । विश्वासि जाला उपकार ।
 जे श्रीकृष्ण उक्ती आकार । ग्रंथाचा केला ॥ ८ ॥ [ग्रंथकर्तृत्वाभिमानपरिहारः]
 आणि तोचि हा मी आतां । श्रीव्यासाचीं पदें पाहतां *पाहतां । आणिला श्र-
 वणपथा । मन्हाठिया ॥ ९ ॥ व्यासादिकांचे उन्मेख । राहाटती जेथ साशंक । तेथ
 मीही रंक येक । वाचाळी करीं ॥ १० ॥ परि गीता ईश्वर भोळा । ले व्या-
 सोक्तिकुसुममाळा । तरि माझिया दूर्वादळा । ना न ह्मणे कीं ॥ ११ ॥ आणि
 श्रीरसिंधूचिया तटा । पाणिया येती गजघटा । तेथ काय मुरकुटा । वारिजत
 असे ॥ १२ ॥ पांखफुटे पाखिरं । जुडे तरी नभींच स्थिर । गगन आक्रमी सत्वर ।
 तो गुरुडही तेथ ॥ १३ ॥ राजहंसाचें चालणें । भूतळीं जालिया सिंहाणें ।
 आणिकें काय कोणें । चालावेंचि ना ॥ १४ ॥ जी आपुलेनि †अवकाशें । अ-
 गाध जळ घेपे कलशें । चुळीं चूळपणा ऐसें । भरुनि न निघे ॥ १५ ॥ दिव-
 टीच्या आंगी थोरी । तरि ते बहु तेज धरी । वाती आपुलिया परि । आणीच
 कीं ना ॥ १६ ॥ जी समुद्राचेनि पैसें । समुद्रीं आकाश आभासे । थिल्लीं
 थिल्लराऐसें । बिंबेचि पै ॥ १७ ॥ तेवि व्यासादिक महामती । वाचरों येती
 इये ग्रंथीं । मा आह्मी ठीकों हे युक्ती । न मिळे कीर ॥ १८ ॥ जिये सागरीं
 जळचरें । संचरती मंदराकारें । तेथ देखोनि ‡शेफरें यें । पोहों न लाहती
 ॥ १९ ॥ अरुण आंगीजवळिके । ह्मणोनि सूर्यातें देखे । मा भूतळींची न
 देखे । मुंगी काई ॥ १७२० ॥ यालागीं आह्मां प्राकृतां । देशिकारें बंधे
 गीता । ह्मणणें हें अनुचिता । कारण नोहे ॥ २१ ॥ आणि बाप पुढां जाये ।
 ते घेत पांउलाची सोये । बाळ ये तरि न लाहे । पावों कायी ॥ २२ ॥ तैसा
 व्यासाचा मांगोवा घेत । भाव्यकारातें वाट पुसत । अयोग्यही मी न प-
 वत । २० कें जाइन ॥ २३ ॥ आणि पृथ्वी जयाचिया क्षेमा । नुंबगे स्थावर
 जंगमा । जयाचेनि अमृतें चंद्रमा । निववी जग ॥ २४ ॥ जयाचें आंगिकें

* पाहतां. † सिंहाणें. ‡ अवकाश । जळ. § सपुरें.

१ जर हे श्लोक चांगले झाले नसते तर वाचा जें न पवे = वाणीला जें अगोचर तें कांनें
 मुखें फावे = कांताला व मुखाला प्राप्त कसें झालें असतें. २ ग्रंथ. ३ ज्ञानोद्धार. ४ अनिर्धारित.
 ५ बडबड. ६ व्यासोक्तिरूप फुलांची माळा. ७ गजसमुदाय. ८ चिलटाला. ९ पांख फुटणारे
 पांखरू व गरुड आपआपल्या सामर्थ्यांनुसार आकाशांत उडतात. सीमा दोघांलाही नाही.
 “नभः पतंत्यात्मसमं पतत्रिणः” भागवत. १० सुंदर. ११ कलश अगाध जळान गेला तरी
 त्याच्या अवकाशाइतकेंच पाणी त्यांत रहातें. १२ तसे व्यासादिक या ग्रंथांत वाचरतात. आम्ही
 मात्र ठाकों = हात टेंकावे हें उलट नाही. १३ लहान मत्स्य. १४ अगदीं जवळ राहणारा,
 सारथि. १५ देशभाषेनें. १६ अयोग्यपणाला. १७ पावळट. १८ माग घेन घेन. १९ न पावतां.
 २० कोणीकडे. २१ सहनशक्तीमुळे. २२ न कंटाळे. २३ संपूर्ण माय.

असिकें । तेज लाहोनि अकें । अंधाराचे सावाहक । लाहोनि जाह ॥ २५ ॥
 समुद्रा जयाचें तोय । तोया जयाचें माधुर्य । माधुर्या सौंदर्य । जयाचेनि
 ॥ २६ ॥ पवना जयाचें बळ । आकाश जेणें पेंघळ । ज्ञान जेणें उज्वळ । च-
 ऋवर्ति ॥ २७ ॥ वेद जेणें सुभास । सुख जेणें सोळास । हें असो रूपस ।
 विश्व जेणें ॥ २८ ॥ तो सर्वोपकारी समर्थ । सद्गुरु श्रीनिवृत्तिनाथ । राहटत
 असे मजहीआंत । रिघोनियां ॥ २९ ॥ आतां आयती गीता जर्गी । मी सांगें
 मन्हाठिया *भर्गी । येथ कें विस्मयालागीं । ठाव आहे ॥ १७३० ॥ श्रीगुरु-
 चेनि नांवें माती । डोंगरीं जयापासीं होती । तेणें कोळियें त्रिजगती । थि-
 कवंद केली ॥ ३१ ॥ चंदनें वेधलीं झाडें । जालीं चंदनाचेनि पाडें । वसिष्ठे
 मांडली कीं भांडे । भानुसीं शंटी ॥ ३२ ॥ मा मी तंव चित्ताथिला । आणि
 श्रीगुरु ऐसा ^{१३}दादुला । जो दिठीवेनि आयुला । बैसवी पर्दी ॥ ३३ ॥ आधींची
 देखणी दिठी । वरी सूर्य पुरवी पांठी । तें न दिसे ऐसी गोठी । केंही आहे
 ॥ ३४ ॥ ह्मणोनि माझे नित्य नवे । श्वासोश्वासही प्रबंध होआवे । श्रीगुरु-
 कृपा काय नोहे । ज्ञानदेव ह्मणे ॥ ३५ ॥ [ग्रंथवैभवकथनम्] याकारणें मियां ।
 श्रीगीतार्थ मन्हाठिया । केला लोकां यया । दिठीचीं विषो ॥ ३६ ॥ परि
 मन्हाटे बोलरंगें । कवळितां पै गीतांगें । तें गातयाचेनि पांगें । येकाढ्यता
 नोहे ॥ ३७ ॥ ह्मणौनि गीता गावों ह्मणे । तें गाणिवे होती लेणें । ना
 मोकळे तरि उणें । गीताही आणित ॥ ३८ ॥ सुंदर आंगीं लेणें न सूये ।
 तें तो मोकळा शृंगार होये । ना लेइलें तरि आहे । तैसें कें उचित ॥ ३९ ॥
 कां मोतियांची जैसी जाती । सोनयाही मान देती । नातरि मानवती ।
 अंगेंचि सैंडी ॥ १७४० ॥ ना ना गुंफिलीं कां मोकळीं । उणीं न होती परि-
 मळीं । वसंतागमींचीं वाटोळीं । मोगरीं जैसीं ॥ ४१ ॥ तैसा गाणीवेनं
 मिरवी । गीतेवीणही रंग दावी । तो लाभाचा प्रबंध वोवी । केला मियां
 ॥ ४२ ॥ तेणें आबालसुबोधें । वोवियेचेनि प्रबंधें । ब्रह्मरससुखादें । अक्षरें
 +गुंथिलीं ॥ ४३ ॥ आतां चंदनाच्या तरुवरीं । परिमळालागीं फुलवरी ।

* भागीं. † एकवट. ‡ मन्हाठी. § ह्मणौनि गा गावों. ¶ होय. § आणित्ती.
 || तैसी. + गुंफिलीं.

१ संपूर्ण ऐहिक. २ दूर करीत आहे. ३ विस्तार. ४ चांगले बोलणारा. ५ प्रकाशित, देखणें.
 ६ भाषेच्या रीतीनें. ७ एकत्र. ८ इतर झाडें चंदनसहवासानें त्याच्या तुलनेस येतात.
 ९ मांडणाऱ्या निवाड्यासाठी. १० छाटी. ११ चित सद्गुरुमय झालेला, सचेतन. १२ धनी.
 १३ दृष्टिमात्रानें. १४ पाठीराखा. १५ काव्य, ग्रंथ. १६ दृष्टिगोचर. १७ अधीनपणानें. १८ एकदेशित्व.
 १९ गाणीं. २० सुवर्णरहित, गुसती. २१ गाण्यावांचून. २२ आबालवृद्धांस सुगम.
 २३ सुवाससाठी, फूल येण्यापर्यंत.

पौरुखणें जियापरी। लागेना कीं ॥ ४४ ॥ तैसा प्रबंध हा श्रवणीं। लांगत-
खेंवो समाधि आणी। ऐकिलियाही वाखाणी। काय * व्यसन न लवी ॥ ४५ ॥
† पाठ करितां व्याजें। पांडिलें येती वेपजें। तें अमृतातें नेणिजे। फावल्या
॥ ४६ ॥ तैसेनि आहतेपणें। ‡ कवित्वा जालें हें उपेणें। मनन निदिध्यास
श्रवणें। जितिलें आतां ॥ ४७ ॥ हे स्वानंद भोगाची सेलें। भलतयासीचि
देईल। सर्वेद्रियां पोषवील। श्रवणाकरवीं ॥ ४८ ॥ चंद्रातें आंगवणें। भो-
गूनि चकोर शाहाणे। परि फांवे जैसैं चांदिणें। भलतयाही ॥ ४९ ॥ तैसैं
अध्यात्मशास्त्रीं यिये। अंतैरंगचि अधिकारियें। परि लोक वाक्चातुर्यें।
होईल सुखिया ॥ १७५० ॥ ऐसैं श्रीनिवृत्तिनाथाचें। गौरव आहे जी साचें।
ग्रंथ नोहे हें कृपेचें। वैभव तिये ॥ ५१ ॥ [युरुपरंपराकथनम्] क्षीरसिंधुपरि-
सरीं। शैक्तीच्या कर्णकुहरीं। नेणों कै श्रीत्रिपुरारीं। सांगीतलें जें ॥ ५२ ॥ तें
क्षीर कल्लोळाभांत। मेकरोदरीं गुप्त। होता त्याचा हात। पैठें^{१८} जालें ॥ ५३ ॥
तो मत्स्येंद्र ससशृंगीं। भ्रमावयवा चौरंगीं। भेटला कीं तो सर्वांगीं। संपूर्ण
जाला ॥ ५४ ॥ मग समाधी अव्ययया। भोगाची वासना यया। ते मुद्रा श्रीगो-
रक्षराया। दिधली मीनीं^{२०} ॥ ५५ ॥ तेणें योगांविजनीसरोवर। विषयविध्वंसै-
कवीर। तिये पर्दीं कां सर्वेश्वर। अभिषेकिले ॥ ५६ ॥ मग तिहीं तें शै-
भव। अद्वयानंदवैभव। संपादिलें संप्रभव। श्रीगैणीनाथा ॥ ५७ ॥ तेणें
§ कळिकळित भूतां। आला देखोनि निरुता। ते आज्ञा श्रीनिवृत्तिनाथा।
दिधली ऐसी ॥ ५८ ॥ ना आदि गुरु शंकरा। लागोनि शिष्यपरंपरा।
बोधाचा हा संसारा। जाला जो आमुतें ॥ ५९ ॥ तो हा तूं घेऊनि आ-
घवा। कळीं गिलितयां जीवां। सर्व प्रकारीं धांवो। करीं पां वेगीं
॥ १७६० ॥ आधींच तंव तो कृपालु। वरि गुरुआज्ञेचा बोलु। जाला जैसा
वर्षाकालु। खवळणें मेघां ॥ ६१ ॥ मग आर्ताचेनि वोरसैं। गीतार्थग्रंथन-
मिसैं। वर्षला शांतरसैं। तो हा ग्रंथ ॥ ६२ ॥ तेथ पुढां मीं बापियां। मां-
डला आर्तां आपुलिया। कीं यासाठीं येवढिया। आणिलों यज्ञा ॥ ६३ ॥

* व्यसन लावी. † पाकु करिती व्याजें, पाडीतें येती वेसजें। तें अमृतातें
नेणिजे। पावल्या. ‡ कवित्व. § कळिकाळ.

१ वाट पाहणें. २ लागण्याबराबर. ३ व्याख्यानरूपानें. ४ स्पष्ट. ५ प्राप्त झाल्यास. ६ विश्रांति-
स्थान. ७ विभाग. ८ नवसानें, स्वार्थें, आपल्या शक्तीनें. ९ प्राप्त होय. १० या आत्मानात्मवि-
वारशास्त्री. ११ अंतर्मुख. १२ सन्निधमार्गी. १३ पार्वतीच्या कानांत. १४ लाटांमध्ये. १५ माथाच्या
गेटांत. १६ प्राप्त. १७ हातपाय नुटलेल्या चौरंगी माथास. १८ निर्विघ्न. १९ या वासनैर्, हृच्छेनै.
१० मत्स्येंद्रनाथांनीं. २१ योगरूप कमलिनीचें. २२ विषयनाशाला मुख्य कारण. २३ अध्यात्मविद्या.
१४ मुळापासून. २५ कळीनें प्रसूत अशा. २६ खरा. २७ विस्तार. २८ धांवून रक्षणें. २९ पीडि-
ल्या पान्नासाठीं. ३० ग्रंथ करण्याच्या निमित्तानें. ३१ चातक.

एवं गुरुक्रमें लाधलें । समाधिधन जें आपुलें । तें ग्रंथें *बोधौनि दिधलें ।
 गोसावीं मज ॥ ६४ ॥ [गुरुस्तवनम्] वांचूनि पढे ना वाची । ना सेवाही
 जाणें स्वामीची । ऐशिया मज ग्रंथाची । योग्यता कें असे ॥ ६५ ॥ परि
 साचचि गुरुनाथें । निमित्त करुनि मातें । प्रबंधव्याजें जगातें । रक्षिलें जाणा
 ॥ ६६ ॥ तन्ही पुरोहितगुणें । मी बोलिलों पुरें उणें । तें तुझीं माउलीपणें ।
 उपसाहिजो जी ॥ ६७ ॥ शब्द कैसा घडिजे । प्रमेयीं कैसें पां चढिजे । अळं-
 कार ह्यणिजे । काय तें नेणें ॥ ६८ ॥ सौथिखडेयाचें बाहुलें । †चालवित्या सूत्राचेनि
 चाले । तैसा मातें दावीत बोलें । स्वामी तो माझा ॥ ६९ ॥ यालागीं मी गुण-
 दोष । विषीं क्षमाविना विशेष । जे मी संजात ग्रंथलों देख । आचार्यें कीं
 ॥ १७७० ॥ [संतजनस्तवनम्] आणि तुझांस संतांचिये सभे । जें उणिवेसीं ठाके
 उभें । तें पूर्ण नोहे तें लोभें । तुझांसीचि ‡कोपों ॥ ७१ ॥ सिंवतलियाही परिसें ।
 लोहत्वाचिये अंढसे । न मूकिये आंयसें । तें कवणा बोल ॥ ७२ ॥ वोईलें हेंचि
 करावें । जें गंगेचें आंग ठाकावें । मगही गंगा जरी नोहावें । तें तो काय करी
 ॥ ७३ ॥ ह्यणौनि भाग्ययोगें बहुवे पां हे । तुझां संतांचे मी पाये । पातलों आतां कें
 लाहें । उणें जर्गी ॥ ७४ ॥ अहो जी माझेनि स्वामी । मज संत जोडुनि तुझीं । दि-
 धलेति तेणें सर्वकामीं । परिपूर्ण जालों ॥ ७५ ॥ पाहा पां मातें तुझां †सां-
 गडें । माहेर तेणें मुरवाडें । ग्रंथाचें आळियाडें । सिद्धी गेलें ॥ ७६ ॥ जी क-
 नकाचें निखेल । वोतूं येईल भूतळ । चितारलीं कुळाचळ । निर्मू येती ॥ ७७ ॥
 सातांही हो सागरातें । सोपें भरितां अमृतें । दुवाड नोहे तारातें । चंद्र क-
 रितां ॥ ७८ ॥ कल्पतरूचे आराम । लावितां नाहीं विषम । परी गीतार्थाचें
 वर्म । निवडूं नये ॥ ७९ ॥ तो मी येक सर्व मुका । बोलोनि मन्हाटिया
 भाषा । करीं डोळेवरीं लोकां । घेवों ये ऐसें जें ॥ १७८० ॥ हा ग्रंथसागर
 येव्हडा । उतरोनि पैलीकडा । कीर्तिविजयाचा घेंडा । नाचें जें कां ॥ ८१ ॥
 गीतार्थाचा आहार । कलशेंसी महामेरू । रचूनि माजी श्रीगुरु । लिंग जें
 पूर्जी ॥ ८२ ॥ गीता निष्कपट माय । चुकोनि तान्हे हिंडे जें वोंय । ते मांय-
 पूतां भेटि होय । हा धर्म तुमचा ॥ ८३ ॥ तुझां सज्जनांचें केलें । आकलुनि
 जी मीं बोलें । ज्ञानदेव ह्यणे थेंकुलें । तैसें नोहे ॥ ८४ ॥ काय बहु बोलों स-

* बांधोनि. † चालविलेनि सूत्रें चालें. ‡ कोपें.

१ गुरुपरंपरेनं. २ परस्वाधीनपणानें. ३ क्षमा करा. ४ अर्थान्वयांत. ५ कळसूत्री बाहुली.
 ६ ग्रंथयुक्त बोललों, ग्रंथच मी झालों आहे. ७ कोपूं लागेन. ८ स्पर्शलेल्या. ९ वाईट स्थितीला.
 १० लोहानें. ११ प्रवाहानें. १२ तुमच्यासारखें. १३ अनुकूल. १४ हट्ट. १५ सर्व. १६ पर्वत.
 १७ कठिन. १८ बाग. १९ विपरीत. २० प्रत्यक्ष, दृष्टिगोचर. २१ देऊळ. २२ व्यर्थ. २३ आई-
 लेंकरांस. २४ तुम्ही संतांनीं केलेल्याचा विचार करून हें माझें बोलणें आहे, केवळ थेंकुलें = ज्ञाने-
 श्वराचें यत्नश्रित् बोलणें नव्हे.

कळां । मेळविलों जन्मफळा । ग्रंथसिद्धीचा सोहळा । दाविला जो हा ॥८१॥
 मियां जैसजैसिया आशा । केला तुमचा भरंवसा । ते पुरजनि जी बहुवसा ।
 आणिलों सुखा ॥ ८६ ॥ मजलागीं ग्रंथाची स्वामी । तुजी सृष्टी जे हे केली
 तुझी । ते पाहोनि हांसों आहीं । विश्वामित्रातेंही ॥ ८७ ॥ जे असोनि *त्रि-
 शंकुदोषें । धातयाही आणावें वोसें । तें नासतें कीजे कीं ऐसें । निर्मावें
 नाहीं ॥८८॥ शंभू उपमन्यूचेनि मोहें । क्षीरसागरही केला आहे । येथ तोही
 उपमेसरी नोहे । जे विषगर्भ कीं ॥ ८९ ॥ अंधकार निशाचरा । गिळितां सूर्यें
 चराचरां । धावा केला तरी खरा । ताउनी कीं तो ॥ १७९० ॥ तांतल्या
 जगाकारणें । चंद्रें वेंचिलें चांदिणें । तया सदोपा केवि हणें । सारिखें हें
 ॥ ९१ ॥ ह्यणोनि तुहीं मज संतीं । ग्रंथरूप जो हा त्रिजगतीं । उपयोग केला
 तो पुढती । निरुपम जी ॥ ९२ ॥ किंबहुना तुमचें केलें । धर्मकीर्तन हें सिद्धी
 नेलें । येथ माझे जी उरलें । पौर्णिकपण ॥ ९३ ॥ [वरप्रार्थना] आतां वि-
 श्वात्मकें देवें । येणें वाग्यजें तोषावें । तोपोनि मज द्यावें । पैसायदान हें
 ॥९४॥ जे खळाची व्यंकटी सांडो । तया सत्कर्मीं रती वाढो । भूतां
 परस्परें पडो । मैत्र जीवाचें ॥ ९५ ॥ दुरिताचें तिमिर जावो । †विश्व स्व-
 धर्मसूर्य पाहो । §जो जें वांछील तो तें लाहो । प्राणिजात ॥ ९६ ॥ वर्षत
 सकळमंगलीं । ईश्वरनिष्ठांची मांदियाळी । अनवरत भूतलीं । भेटो तयां
 भूतां ॥ ९७ ॥ †चलां कल्पतरूचे ॥ †अरव । चेतना चिंतामणीचे गांव । बो-
 लते जे अर्णव । पीयूषाचे ॥ ९८ ॥ चंद्रमे जे अंलांछन । मीतंड जे ताप-
 हीन । ते सर्वांहीं सदा सजन । सोयरे होतु ॥ ९९ ॥ किंबहुना सर्वमुखीं ।
 पूर्ण होऊनि तिहीं लोकीं । भजि जो आदिपुरुषीं । अवंडित ॥ १८०० ॥
 आणि ग्रंथोपजीविये । विशेषीं लोकीं द्ये । दृष्टादृष्टविजयें । होआवें जी
 ॥ १ ॥ येथ हणो श्रीविश्वेश्वरावो । हा होइल §दानपसावो । येणें वरें
 ज्ञानदेवो । सुखिया जाला ॥ २ ॥ [वास्तव्यस्थानमहिमा] ऐसें युगीं †परि-
 कळीं । आणि महाराष्ट्रमंडळीं । श्रीगोदावरीच्या कूळीं । †दक्षिणिली
 ॥ ३ ॥ त्रिभुवनैकपवित्र । अनादि पंचक्रोशक्षेत्र । जेथ जगाचें जीवनसूत्र ।
 श्रीमहालया असे ॥ ४ ॥ तेथ यदुवंशविलास । जो सकळकळानिवास ।
 न्यायातें पोषी क्षितीश । श्रीरामचंद्र ॥ ५ ॥ तेथ †महेशान्वयसंभूतें ।

* त्रिशंकुउद्देशे. † खळाचें व्यंकटै, ची वंकटै. ‡ विश्वा. § जें वांछेल तें तें
 लाहे. ¶ आरव. § दाय. || दक्षिण लिंगी, दक्षिणलिंग.

१ त्रिशंकुराजाच्या हेतूने. २ उणें. ३ दिला. ४ तस झालेल्या. ५ सेवकात्व. ६ ग्रंथरूप बहानें.
 ७ प्रसाद. ८ वक्रदृष्टी. ९ भगवज्जनांची. १० समुदाय. ११ सर्वकाल. १२ चालत्या. १३ कोटी,
 अंकुर. १४ जिवंत. १५ लांछनरहित. १६ सूर्य. १७ श्रीगुरु. १८ दानप्रसाद. १९ कलियुगांत.
 २० दक्षिणभागच्या तीरी. २१ पांच कोश विस्तृत, पंचक्रोशीत. २२ मोहनीराजदेव. २३ माधव.
 २४ आदिनाथपरंपरासंभूत, शिवसंप्रदाय.

श्रीनिवृत्तिनाथसुतें । केलें ज्ञानदेवें गीते । देशीकैरलेणें ॥६॥ एवं भारताच्या गांवीं । भीष्मनाम प्रसिद्ध पर्वीं । श्रीकृष्णार्जुनीं बरवी । गोठी जे केली ॥७॥ जें उपनिषदांचें सार । सर्वशास्त्रांचें माहेर । परमहंसीं सरोवर । सेविजे जें ॥ ८ ॥ तिये गीतेचा कैलश । संपूर्ण हा अष्टादश । ह्याने निवृत्तिदास । ज्ञानदेव ॥ ९ ॥ पुढती पुढती पुढती । इया ग्रंथपुण्यसंपत्ती । सर्वसुखीं सर्वमूर्तीं । संपूर्ण होइजे ॥ १८१० ॥ शके बाराशतें बारोत्तरें । तें टीका केली ज्ञानेश्वरें । सच्चिदानंदबाबा आदरें । लेखकु जाहाला ॥ १८११ ॥ *

इति श्रीज्ञानदेवविरचितायां भावार्थदीपिकायामष्टादशोऽध्यायः ॥ १८ ॥

इति श्रीभावार्थदीपिका समाप्ता ॥

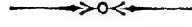
श्रीकृष्णार्पणस्तु ॥

श्लोक ७८, ओव्या १८११.

श्रीशकेपंधराशें बारोत्तरीं । तारणनामसंवत्सरीं । येकाजनार्दन अत्यादरीं । गीता ज्ञानेश्वरीप्रति शुद्ध केली ॥ १ ॥ ग्रंथ पूर्वींच अतिशुद्ध । परी पाठांतरीं शुद्ध अबद्ध । तो शोधूनियां एवंविध । प्रतिशुद्ध सिद्धज्ञानेश्वरी ॥ २ ॥ नमो ज्ञानेश्वरा निष्कळंका । जयाची गीतेची वाचितां टीका । ज्ञान होय लोकां । अतिभाविकां ग्रंथार्थियां ॥ ३ ॥ बहुकालपर्वणी गोमटी । भाद्रमासकपिलाषष्ठी । प्रतिष्ठानीं गोदातटीं । लेखनकामाठी संपूर्ण जाली ॥ ४ ॥ ज्ञानेश्वरीपाठीं । जो चोवी करील मज्हाटी । तेणें अमृताचे ताटीं । जाण नरोटी ठेविली ॥ ५ ॥

* शके सोळाशें तेरोत्तरें । तें पदपद्धति केली ज्ञानेश्वरें । बरवा गोविंद सुखांतरे । जगजीवना लेखका ॥ १८१२ ॥

श्रीज्ञानेश्वरीस्थगीतापद्यानामकारादि- वर्णक्रमः ।



श्लोकप्रतीकं.	अ० श्लो० पृ०	श्लोकप्रतीकं.	अ० श्लो० पृ०
अकीर्तिं चापि भूतानि	२ ३४ ३५	अधिष्ठानं तथा कर्ता	१८ १४ ४६६
अक्षरं ब्रह्म परमं	८ ३ १५५	अध्यात्मज्ञाननित्यत्वं	१३ ११ ३१८
अक्षराणामकारो	१० ३३ २२६	अध्येष्यते च य इमं	१८ ७० ५३१
अग्निज्योतिरहः शुक्लः	८ २४ १६९	अनंतविजयं राजा	१ १६ ९
अच्छेद्योऽयमदाह्यो	२ २४ ३१	अनंतश्चास्मि नागा	१० २९ २२४
अजोऽपि सन्नव्यया	४ ६ ७३	अनन्यचेताः सततम्	८ १४ १६२
अज्ञश्चाश्रद्धानश्च	४ ४० ८५	अनन्याश्चितयंतो	९ २२ १९५
अंतकाले च मामेव	८ ५ १५७	अनपेक्षः शुचिर्दक्षः	१२ १६ २८५
अंतवत्तु फलं तेषाम्	७ २३ १४८	अनादित्वान्निर्गुण	१३ ३१ ३४१
अंतवंत इमे देहाः	२ १८ ३०	अनादिमध्यांतमनं	११ १९ २५१
अत्र शूरा महेष्वासा	१ ४ ६	अनाश्रितः कर्मफलं	६ १ १०४
अथ केन प्रयुक्तोऽयम्	३ ३६ ६६	अनिष्टमिष्टं मिश्रं च	१८ १२ ४६१
अथ चित्तं समाधातुं	१२ ९ २८१	अनुद्वेगकरं वाक्यम्	१७ १५ ४३६
अथ चेत्त्वमिमां धर्म्यं	२ ३३ ३५	अनुबंधं क्षयं हिंसाम्	१८ २५ ४८१
अथ चैनं नित्यजातं	२ २६ ३२	अनेकचित्तविभ्रांता	१६ १६ ४१८
अथवा योगिनामेव	६ ४२ १३२	अनेकबाहूदरवक्त्रनेत्रं	११ १६ २४८
अथवा बहुनैतेन	१० ४२ २२९	अनेकवक्त्रनयनम्	११ १० २४३
अथ व्यवस्थितान् दृष्ट्वा	१ २० ११	अन्नाद्भवन्ति भूतानि	३ १४ ५८
अथैतदप्यशक्तोऽसि	१२ ११ २८२	अन्ये च बहवः शूरा	१ ९ ७
अदृष्टपूर्वं हपितोऽस्मि	११ ४५ २६८	अन्ये त्वेवमजानंतः	१३ २५ ३३८
अदेशकाले यद्दानम्	१७ २२ ४४१	अपरं भवतो जन्म	४ ४ ७२
अद्वेष्टा सर्वभूतानाम्	१२ १३ २८३	अपरे नियताहाराः	४ ३० ८२
अधर्मं धर्ममिति या	१८ ३२ ४८७	अपरेयमितस्त्वन्यां	७ ५ १३८
अधर्माभिभवात्कृष्ण	१ ४१ १७	अपर्याप्तं तदस्माकम्	१ १० ७
अधश्चोर्ध्वं प्रसृता	१५ २ ३७४	अपाने जुह्वति प्राणम्	४ २९ ८१
अधिभूतं क्षरो भावः	८ ४ १५६	अपि चेत्सुदुराचारो	९ ३० २०१
अधियज्ञः कथं कोऽत्र	८ २ १५४	अपि चेदसि पापेभ्यः	४ ३६ ८४

श्लोकप्रतीकं.	अ०	श्लो०	पृ०	श्लोकप्रतीकं.	अ०	श्लो०	पृ०
अप्रकाशोऽप्रवृत्तिश्च	१४	१३	३५६	अहं कतुरहं यज्ञः	९	१६	१९१
अफलाकांक्षिभिर्य	१७	११	४३४	अहंकारं बलं दर्पं	१६	१८	४१९
अभयं सत्त्वसंशुद्धिः	१६	१	४०२	”	१८	५३	५०५
अभिसंधाय तु फलं	१७	१२	४३४	अहमात्मा गुडाकेश	१०	२०	२२२
अभ्यासयोगयुक्तेन	८	८	१५९	अहं वैश्वानरो भूत्वा	१५	१४	३८८
अभ्यासेऽप्यसमर्थोसि	१२	१०	२८२	अहं सर्वस्य प्रभवो	१०	८	२१५
अमानित्वमदंभित्वम्	१३	७	२९८	अहं हि सर्वयज्ञानाम्	९	२४	१९७
अमी च त्वां धृत	११	२६	२५६	अहिंसा सत्यमक्रोधः	१६	२	४०५
अमी हि त्वां सुर	११	२१	२५२	अहिंसा समता तुष्टि	१०	५	२१३
अयनेषु च सर्वेषु	१	११	८	अहो वत महत्पापम्	१	४५	१८
अयतिः श्रद्धयोपेतो	६	३७	१३०	आ			
अयुक्तः प्राकृतः	१८	२८	४८४	आख्याहि मे को	११	३१	२६०
अवजानन्ति मां मूढाः	९	११	१८३	आचार्याः पितरः	१	३४	१५
अवाच्यवादांश्च बहून्	२	३६	३६	आढ्योऽभिजनवान	१६	१५	४१७
अविनाशि तु त	२	१७	३०	आत्मसंभाविताः स्त	१६	१७	४१८
अविभक्तं च भू	१३	१६	३३२	आत्मौपम्येन सर्वत्र	६	३२	१२८
अव्यक्तादीनि भू	२	२८	३३	आदित्यानामहं वि	१०	२१	२२३
अव्यक्ताद्यक्तयः स	८	१८	१६५	आपूर्यमाणमचलप्र	२	७०	४८
अव्यक्तोऽक्षर इ	८	२१	१६६	आब्रह्मभुवनाल्लोकाः	८	१६	१६४
अव्यक्तोऽयमचित्यो	२	२५	३१	आयुधानामहं वज्रम्	१०	२८	२२४
अव्यक्तं व्यक्तिमा	७	२४	१४८	आयुःसत्त्वबलारोग्य	१७	८	४३१
अशास्त्रविहितं धो	१७	५	४२९	आरुरुक्षोर्मुनेर्योगं	६	३	१०५
अशोच्यानन्वशोच	२	११	२७	आवृतं ज्ञानमेतेन	३	३९	६८
अश्रद्धाः पुरुषाः	९	३	१७७	आशापाशशतैर्बद्धाः	१६	१२	४१६
अश्रद्धया हुतं दत्तं	१७	२८	४४७	आश्चर्यवत्पश्यति क	२	२९	३३
अश्वत्थः सर्ववृक्षा	१०	२६	२२४	आसुरीं योनिमापन्ना	१६	२०	४२०
असक्तबुद्धिः सर्वत्र	१८	४९	५००	आहारस्त्वपि सर्वस्य	१७	७	४३१
असक्तिरनभिष्वंगः	१३	९	३१७	आहुस्त्वामृषयः सर्वे	१०	१३	२१८
असत्यमप्रतिष्ठं ते	१६	८	४१३	इ			
असौ मया हतः श	१६	१४	४१७	इच्छाद्वेषसमुत्थेन	७	२७	१५०
असंयतात्मना योगो	६	३६	१३०	इच्छा द्वेषः सुखं दुःखं	१३	६	२९३
असंशयं महाबाहो	६	३५	१२९	इति गुह्यतमं शास्त्रं	१५	२०	३९६
अस्माकं तु विशिष्टा	१	७	६९	इति ते ज्ञानमाख्यातं	१८	६३	५२०

श्लोकप्रतीकं.	अ०	श्लो०	पृ०
इति क्षेत्रं तथा ज्ञानं	१३	१८	३३३
इत्यर्जुनं वासुदेवस्त	११	५०	२७१
इत्यहं वासुदेवस्य	१८	७४	५३४
इदमद्य मया लब्धं	१६	१३	४१६
इदं तु ते गुह्यतमम्	९	१	१७६
इदं ते नातपस्काय	१८	६७	५२८
इदं शरीरं कौंतेय	१३	१	२९०
इदं ज्ञानमुपाश्रित्य	१४	२	३४८
इन्द्रियस्यैन्द्रियस्यार्थे	३	३४	६५
इन्द्रियाणां हि चरतां	२	६७	४७
इन्द्रियाणि पराण्याहु	३	४२	६९
इन्द्रियाणि मनो बुद्धिः	३	४०	६८
इन्द्रियार्थेषु वैराग्यम्	१३	८	३१३
इमं विवस्वते योगं	४	१	७१
इष्टान् भोगान् हि	३	१२	५६
इहैकस्थं जगत्कृत्स्नं	११	७	२४०
इहैव तैर्जितः सर्गो	५	१९	९५
ई			
ईश्वरः सर्वभूतानां	१८	६१	५१९
उ			
उच्चैःश्रवसमश्वानाम्	१०	२७	२२४
उत्क्रामन्तं स्थितं	१५	१०	३८६
उत्तमः पुरुषस्त्वन्यः	१५	१७	३९४
उत्सन्नकुलधर्माणां	१	४४	१८
उत्सीदेयुरिमे लोका	३	२४	६१
उदाराः सर्व एवैते	७	१८	१४६
उदासीनवदासीनो	१४	२३	३६३
उद्धरेदात्मनात्मानं	६	५	१०६
उपद्रष्टानुमंता च	१३	२२	२३७
ऊ			
ऊर्ध्वं गच्छन्ति स	१८	१२	३५९
ऊर्ध्वमूलमधःशास्त्र	१५	१	३७१

श्लोकप्रतीकं.	अ०	श्लो०	पृ०
ऋ			
ऋषिभिर्बहुधा गीतं	१३	४	२९१
ए			
एतच्छ्रुत्वा वचनं के	११	३५	२६२
एतद्योनीनि भूतानि	७	६	१३९
एतन्मे संशयं कृष्ण	६	३९	१३१
एतान्न हंतुमिच्छामि	१	३५	१५
एतान्यपि तु कर्माणि	१८	६	४५८
एतां दृष्टिमवष्टभ्य	१६	९	४१४
एतां विभूर्ति योगं च	१०	७	२१५
एतैर्विमुक्तः कौंतेय	१६	२२	४२१
एवमुक्तो हृषीकेशो	१	२४	१२
एवमुक्त्वाऽर्जुनः सं	१	४७	१९
एवमुक्त्वा ततो राज	११	९	२४२
एवमुक्त्वा हृषीकेशं	२	९	२६
एवमेतद्यथास्थ त्वम्	११	३	२३६
एवं परंपराप्राप्तम्	४	२	७१
एवं प्रवर्तितं चक्रं	३	१६	५९
एवं बहुविधा यज्ञाः	४	३२	८२
एवं बुद्धेः परं बुद्ध्वा	३	४३	६९
एवं सततयुक्ता ये	१२	१	२७७
एवं ज्ञात्वा कृतं कर्म	४	१५	७६
एषा तेऽभिहिता	२	३९	३८
एषा ब्राह्मी स्थितिः	२	७२	४९
ओ			
ॐ तत्सदिति निर्देशो	१७	२३	४४२
ओमित्येकाक्षरं ब्रह्म	८	१३	१६२
क			
कच्चिन्नोभयविभ्रष्टः	६	३८	१३१
कच्चिदेतच्छ्रुतं पार्थ	१८	७२	५३२
कटुम्ललवणात्युष्ण	१७	९	४३२
कथं न ज्ञेयमस्माभिः	१	३९	१६
कथं भीष्ममहं संख्ये	२	४	२३

श्लोकप्रतीकं.	अ०	श्लो०	पृ०
कथं विद्यामहं योगिन्	१०	१७	२२०
कर्मजं बुद्धियुक्ता हि	२	५१	४२
कर्मणः सुकृतस्याहुः	१४	१६	३५९
कर्मणैव हि संसिद्धिम्	३	२०	६०
कर्मणो ह्यपि बोद्धव्यं	४	१७	७७
कर्मण्यकर्म यः पश्येत्	४	१८	७७
कर्मण्येवाधिकारस्ते	२	४७	४०
कर्म ब्रह्मोद्भवं विद्धि	३	१५	५९
कर्मेन्द्रियाणि संयम्य	३	६	५४
कर्षयंतः शरीरस्थं	१७	६	४३०
कविं पुराणमनुशा	८	९	१५९
कस्माच्च ते न नमेर	११	३७	२६३
काम एष क्रोध एष	३	३७	६७
कामक्रोधवियुक्तानां	५	२६	९९
काममाश्रित्य दुष्पूर	१६	१०	४१५
कामात्मानः स्वर्गपरा	२	४३	३९
कामैस्तैस्तैर्हृतज्ञानाः	७	२०	१४७
काम्यानां कर्मणां न्या	१८	२	४५४
कायेन मनसा बुद्ध्या	५	११	९२
कार्पण्यदोषोपहत	२	७	२४
कार्यकारणकर्तृत्वे	१३	२०	३३४
कार्यमित्येव यत्कर्म	१८	९	४६०
कालोऽस्मि लोकक्ष	११	३२	२६०
काश्यश्च परमेष्वासः	१	१७	१०
कांक्षंतः कर्मणां सि	४	१२	७५
किं कर्म किमकर्मेति	४	१६	७६
किं तद्ब्रह्म किमध्या	८	१	१५४
किं पुनर्ब्राह्मणाः पुण्या	९	३३	२०४
किरीटिनं गदिनं च	११	४६	२६९
किरीटिनं गदिनं	११	१७	२५०
कुतस्त्वा कश्मल	२	२	२१
कुलक्षये प्रणश्यति	१	४०	१७
कृपया परयाविष्टो	१	२८	१२

श्लोकप्रतीकं.	अ०	श्लो०	पृ०
कृषिगोरक्षवाणिज्यं	१८	४४	४९६
कैलिंगैस्त्रीन्गुणानेता	१४	२१	३६२
क्रोधाद्भवति संमोहः	२	६३	४५
क्लैव्यं मास्मगमः पा	२	३	२२
क्लेशोऽधिकतरस्ते	१२	५	२७९
क्षिप्रं भवति धर्मा	९	३१	२०२
क्षेत्रक्षेत्रज्ञयोरेवं	१३	३४	३४३
क्षेत्रज्ञं चापि मां	१३	२	२९०
गतसंगस्य मुक्तस्य	४	२३	७९
गतिर्भर्ता प्रभुः साक्षी	९	१८	१९२
गाण्डीवं संसते हस्ता	१	३०	१३
गामाविश्य च भूता	१५	१३	३८८
गुणानेतानतीत्य त्री	१४	२०	३६१
गुरुनहत्वा हि महा	२	५	२३
चंचलं हि मनः कृष्ण	६	३४	१२९
चतुर्विधा भजंते मां	७	१६	१४५
चातुर्वर्ण्यं मया सृष्टं	४	१३	७५
चित्तामपरिमेयां च	१६	११	४१५
चेतसा सर्वकर्माणि	१८	५७	१६
ज			
जन्म कर्म च मे दिव्यं	४	९	७४
जरामरणमोक्षाय	७	२९	१५०
जातस्य हि ध्रुवो मृ	२	२७	३२
जितात्मनः प्रशांतस्य	६	७	१०७
ज्ञानयज्ञेन चाप्यन्ये	९	१५	१८९
ज्ञानविज्ञानतृप्तात्मा	६	८	१०८
ज्ञानेन तु तदज्ञानं	५	१६	९४
ज्ञानं कर्म च कर्ता च	१८	१९	४७६
ज्ञानं तेऽहं सविज्ञानं	७	२	१३७
ज्ञानं ज्ञेयं परिज्ञाता	१८	१८	४७३
ज्ञेयः स नित्यसंन्यासी	५	३	८९

श्लोकप्रतीकं.	अ०	श्लो०	पृ०
ज्ञेयं यत्तत्प्रवक्ष्यामि	१३	१२	३२९
ज्यायसी चेत्कर्मणस्ते	३	१	५०
ज्योतिषामपि तज्ज्यो	१३	१७	३३२
त			
तं तथा कृपयाविष्टं	२	१	२१
ततः पदं तत्परिमा	१५	४	३८०
तच्च संस्मृत्य संस्मृ	१८	७७	५३६
ततः शंखाश्च भेर्यश्च	१	१३	८
ततः श्वेतैर्हयैर्युक्ते	१	१४	९
ततः स विस्मयावि	११	१४	२४७
तत्त्ववित्तु महाबाहो	३	२८	६२
तत्र तं बुद्धिसंयोगं	६	४३	१३२
तत्र सर्वं निर्मलत्वा	१४	६	३५३
तत्रापश्यस्थितान्पा	१	२६	१२
तत्रैकस्थं जगत्कृत्स्नं	११	१३	२४६
तत्रैकाग्रं मनः कृत्वा	६	१२	११४
तत्रैवं सति कर्तारं	१८	१६	४६९
तत्क्षेत्रं यच्च यादृ	१३	३	२९०
तदित्यनभिसंधाय	१७	२५	४४४
तद्बुद्ध्यस्तदात्मानः	५	१७	९४
तद्विद्वि प्रणिपतेन	४	३४	८३
तपस्विभ्योऽधिको	६	४६	१३४
तपाम्यहमहं वर्षे	९	१९	१९३
तमस्त्वज्ञानजं विद्धि	१४	८	३५४
तमुवाच हृषीकेशः	२	१०	२६
तमेव शरणं गच्छ	१८	६२	५२०
तं विद्यादुःखसंयोगं	६	२३	१२६
तस्माच्छात्रं प्रमाणं	१६	२४	४२३
तस्मात्प्रणम्य प्रणि	११	४४	२६७
तस्मात्त्वमिन्द्रियाण्या	३	४१	६९
तस्मात्त्वमुत्तिष्ठ यशो	११	३३	२६१
तस्मात्सर्वेषु कालेषु	८	७	१५९
तस्मादमक्तः सततं	३	१९	६०

श्लोकप्रतीकं.	अ०	श्लो०	पृ०
तस्मादज्ञानसंभूतं	४	४२	८६
तस्मादोमित्युदाहृत्य	१७	२४	४४३
तस्माद्यस्य महाबाहो	२	६८	४७
तस्मान्नाहं वयं हंतुं	१	३७	१६
तस्य संजनयन् हर्षं	१	१२	८
तानहं द्विषतः क्रूरान्	१६	१९	४२०
तानि सर्वाणि संयम्य	२	६१	४५
तुल्यनिंदास्तुतिमौनी	१२	१९	२८७
तेजः क्षमा धृतिः	१६	३	४०८
ते तं भुक्त्वा स्वर्गलो	९	२१	१९५
तेषामहं समुद्धर्ता	१२	७	२८०
तेषामेवानुकंपार्थ	१०	११	२१७
तेषां सततयुक्तानां	१०	१०	२१६
तेषां ज्ञानी नित्ययु	७	१७	१४५
त्यक्त्वा कर्मफलासंगं	४	२०	७८
त्याज्यं दोषवदित्येके	१८	३	४५६
त्रिभिर्गुणमयैर्भावैः	७	१३	१४२
त्रिविधा भवति श्रद्धा	१७	२	४२७
त्रिविधं नरकस्येदं	१६	२१	४२१
त्रैगुण्यविषया वेदाः	२	४५	४०
त्रैविद्या मां सोमपाः	९	२०	१९४
त्वमक्षरं परमं वेदि	११	१८	२५१
त्वमादिदेवः पुरुषः	११	३८	२६४
द			
दंडो दमयतामस्मि	१०	३८	२२८
दंभो दमोऽभिमानश्च	१६	४	४१०
दंष्ट्राकरालानि च ते	११	२५	२५५
दानव्यमिति यद्दानं	१७	२०	४३९
दिवि सूर्यसहस्रस्य	११	१२	२६६
दिव्यमाल्यांबरधरं	११	११	२४५
दुःखमित्येव यत्कर्म	१८	८	४५९
दुःखेष्वनुद्गमनाः	२	५६	४३
दूरेण ह्यवरं कर्म	२	४९	४१

श्लोकप्रतीकं.	अ०	श्लो०	पृ०	श्लोकप्रतीकं.	अ०	श्लो०	पृ०
दृष्ट्वा तु पाण्डवानीकं	१	२	५	न जायते म्रियते वा	२	२०	३०
दृष्ट्वेदं मानुषं रूपं	११	५१	२७३	न तदस्ति पृथि	१८	४०	४९३
देवद्विजगुरुप्राज्ञ	१७	१४	४३५	न तद्भायसते सूर्यो	१५	६	३८३
देवान्भावयतानेन	३	११	५६	न तु मां शक्यसे	११	८	२४१
देही नित्यमवध्यो	२	३०	३४	न लेवाहं जातु नासं	२	१२	२८
देहिनोऽस्मिन्यथा देहे	२	१३	२८	न द्वेष्ट्यकुशलं कर्म	१८	१०	४६०
दैवमेवापरे यज्ञं	४	२५	८०	न प्रहृष्येत्प्रियं प्राप्य	५	२०	९६
दैवी ह्येषा गुणमयी	७	१४	१४२	न बुद्धिभेदं जनयेत्	३	२६	६२
दैवी संपद्धिमोक्षाय	१६	५	४१२	नभःस्पृशं दीप्तम	११	२४	२५४
दोषैरेतेः कुलघ्नानाम्	१	४३	१८	नभः पुरस्तादथ पृ	११	४०	२६४
द्यावापृथिव्योरिदमं	११	२०	२५१	न मां कर्माणि लिपं	४	१४	७६
द्युतं छलयतामस्मि	१०	३६	२२७	न मां दुष्कृतिनो	७	१५	१४५
द्रव्ययज्ञास्तपोयज्ञा	४	२८	८१	न मे पार्थास्ति क	३	२२	६१
द्रुपदो द्रौपदेयाश्च	१	१८	१०	न मे विदुः सुर	१०	२	२१२
द्रोणं च भीष्मं च	११	३४	२६१	न रूपमस्येह तथो	१५	३	३७८
द्वाविमौ पुरुषौ लोके	१५	१६	३९१	न वेदयज्ञाध्ययनै	११	४८	२७०
द्वौ भूतसर्गौ लोके	१६	६	४१२	नष्टो मोहः स्मृति	१८	१३	५३३
ध				नहि कश्चित्क्षणमपि	३	५	५३
धर्मक्षेत्रे कुरुक्षेत्रे	१	१	५	नहि देहभृता शक्यं	१८	११	४६१
धूमो रात्रिस्तथा कृ	८	२५	१६९	नहि प्रपश्यामि म	२	८	२५
धूमेनाव्रियते वह्निः	३	३८	६८	नहि ज्ञानेन सदृशं	४	३८	८४
धृत्वा यया धारयते	१८	३३	४८८	नांतोऽस्ति मम दिव्या	१०	४०	२२८
धृष्टकेतुश्चेकितानः	१	५	६	नात्यश्रतस्तु योगो	६	१६	१२३
ध्यानेनात्मनि पश्यं	१३	२४	३३८	नादत्ते कस्यचित्पापं	५	१५	९४
ध्यायतो विषयान्पुंसः	२	६२	४५	नान्यं गुणेभ्यः क	१४	१९	३६०
न				नासतो विद्यते भावः	२	१६	२९
न कर्तृत्वं न कर्माणि	५	१४	९३	नास्ति बुद्धिरयुक्तस्य	२	६६	४७
न कर्मणामनारंभात्	३	४	५३	नाहं प्रकाशः सर्वस्य	८	२५	१४९
न कांक्षे विजयं कृ	१	३२	१४	नाहं वेदैर्न तपसा	११	५३	२७४
न च तस्मान्मनुष्येषु	१८	६९	५३०	नांतोऽस्ति मम दि	१०	४०	२२८
न च मत्स्थानि भू	९	५	१७९	निमित्तानि च प	१	३१	१४
न च मां तानि क	९	९	१८२	नियतस्य तु संन्यासः	१८	७	४५८
न चैतद्विद्मः कतरन्नो	२	६	२४	नियतं कर्म कर्म न	२	२	२२

श्लोकप्रतीकं.	अ०	श्लो०	पृ०
नियतं संगरहितं	१८	२३	४८०
निराशीर्यतचित्ता	४	२१	७८
निर्मानमोहाजितसं	१५	५	३८१
निश्चयं शृणु मे तत्र	१८	४	४५६
निहत्य धार्तराष्ट्रान्नः	१	३६	१६
महाभिक्रमनाशोऽ	२	४०	३८
नैते सती पार्थ जा	८	२७	१७१
नैनं छिंदन्ति शस्त्राणि	२	२३	३१
नैव किञ्चित्करोमीति	५	८	९१
नैव तस्य कृतेनार्थो	३	१८	६०

प

पंचैतानि महाबाहो	१८	३	४६४
पत्रं पुष्पं फलं तोयं	९	२६	१९९
परस्तस्मात्तु भावो	८	२०	१६६
परं ब्रह्म परं धाम	१०	१२	२१८
परं भूयः प्रवक्ष्यामि	१४	१	३४८
परित्राणाय साधूनाम्	४	८	७३
पवनः पवतामस्मि	१०	३१	२२५
पश्य मे पार्थ रूपाणि	११	५	२३९
पश्यादित्यान्वसूनु	११	६	२४०
पश्यामि देवांस्तव	११	१५	२४७
पश्यैतां पांडुपुत्राणां	१	३	५
पार्थ नैवेह नामुत्र	६	४०	१३१
पांचजन्यं हृषीकेशो	१	१५	९
पितासि लोकस्य च	११	४३	२६७
पिताहमस्य जगतो	९	१७	१९१
पुण्यो गंधः पृथिव्यां	७	९	१४८
पुरुषः प्रकृतिस्थो हि	१३	२१	३३५
पुरुषः स परः पार्थ	८	२२	१६६
पुरोधसां च मुख्यं मां	१०	२४	२२३
पूर्वाभ्यासेन तेनैव	६	४४	१३३
पृथक्त्वेन तु यज्ज्ञानं	१८	२१	४७७
प्रकाशं च प्रवृत्तिं च	१४	२२	३६२

श्लोकप्रतीकं.	अ०	श्लो०	पृ०
प्रकृतिं पुरुषं चैव	१३	१९	३३४
प्रकृतिं स्वामवष्टभ्य	९	८	१८१
प्रकृतेः क्रियमाणानि	३	२७	६२
प्रकृतेर्गुणसंमूढाः	३	२९	६३
प्रकृत्यैव च कर्माणि	१३	२९	३४०
प्रजहाति यदा कामान्	२	५५	४३
प्रयत्नाद्यतमानस्तु	६	४५	१३३
प्रयाणकाले मनसा	८	१०	१६०
प्रलपन्विमृजन्गृह्णन्	५	९	९१
प्रवृत्तिं च निवृत्तिं च	१६	७	४१३
"	१८	३०	४८६

प्रशांतमनसं ह्येनम्	६	२७	१२७
प्रशांतात्मा विगतभी	६	१४	११६
प्रसादे सर्वदुःखानां	२	६५	४६
प्रह्लादश्चास्मि दैत्या	१०	३०	२२५
प्राप्य पुण्यकृतांल्लो	६	४१	१३२

ब

बलं बलवतां चाहं	७	११	१४०
बहिरंतश्च भूतानाम्	१३	१५	३३२
बहूनां जन्मनामंते	७	१९	१४६
बहूनि मे व्यतीतानि	४	५	७२
बंधुरात्मात्मनस्तस्य	६	६	१०७
बाह्यस्पर्शेष्वसक्तात्मा	५	२१	९६
बीजं मां सर्वभूता	७	१०	१४०
बुद्धियुक्तो जहातीह	२	५०	४२
बुद्धिर्ज्ञानमसंमोहः	१०	४	२१३
बुद्धेर्भेदं धृत्वैश्चैव	१८	२९	४८५
बुद्ध्या विशुद्धया	१८	५१	५०३
बृहत्साम तथा	१०	३५	२२७
ब्रह्मणो हि प्रतिष्ठा	१४	२७	३६६
ब्रह्मण्याधाय कर्माणि	५	१०	९१
ब्रह्मभूतः प्रसन्नात्मा	१८	१४	४६६
ब्रह्मार्पणं ब्रह्महविः	४	२४	१११

श्लोकप्रतीकं.	अ०	श्लो०	पृ०	श्लोकप्रतीकं.	अ०	श्लो०	पृ०
ब्राह्मणक्षत्रियविशाम्	१८	४१	४९३	मग्न्यव मन आधत्स्व	१२	८	२८१
भ				महर्षयः सप्त पूर्वे	१०	६	२१४
भक्त्या त्वनन्यया	११	५४	२७४	महर्षीणां भृगुरहम्	१०	२५	२२३
भक्त्या मामभिजा	१८	५५	५०९	महात्मानस्तु मां पार्थ	९	१३	१८६
भयाद्राणादुपरतं	२	३५	३६	महाभूतान्यहंकारो	१३	५	२९३
भवान् भीष्मश्च कर्णश्च	१	८	६	मां च योऽव्यभि	१४	२६	३६५
भवाप्ययौ हि भूता	११	२	२३५	मा ते व्यथा मा च	११	४९	२७०
भीष्मद्रोणप्रमुखतः	१	२५	१२	मात्रास्पर्शास्तु कौं	२	१४	२८
भूतग्रामः स एवायम्	८	१९	१६५	मानापमानयोस्तुल्यः	१४	२५	३६४
भूमिरापोऽनलो वायुः	७	४	१३८	मामुपेत्य पुनर्जन्म	८	१५	१६२
भूय एव महाबाहो	१०	१	२११	मां हि पार्थ व्यपा	९	३२	२०३
भोक्तारं यज्ञतपसाम्	५	२९	१००	मुक्तसंगोऽनहंवादी	१८	२६	४८२
भोगैश्वर्यप्रसक्तानाम्	२	४४	३९	मूढग्राहेणात्मनो यत्	१७	१९	४३८
म				मृत्युः सर्वहरश्चाहम्	१०	३४	२२७
मच्चित्तः सर्वदुर्गाणि	१८	५८	५१७	मोघाशा मोघकर्मा	९	१२	१८५
मच्चित्ता मद्गतप्राणाः	१०	९	२१६	य			
मत्कर्मकृन्मत्परमो	११	५५	२७५	य इदं परमं गुह्यम्	१८	६८	५३०
मत्तः परतरं नान्यत्	७	७	१३९	य एनं वेत्ति हन्तारं	२	१९	३०
मदनुग्रहाय परमम्	११	१	२३४	य एवं वेत्ति पुरुषं	१३	२३	३३७
मनःप्रसादः सौम्यत्वं	१७	१६	४३७	यच्चापि सर्वभूतानाम्	१०	३९	२२८
मनुष्याणां सहस्रेषु	७	३	१३७	यच्चावहासार्थमस	११	४२	२६६
मन्मना भव मद्भक्तो	९	३४	२०७	यजंते सात्त्विका दे	१७	४	४२९
"	१८	६५	५२२	यज्जाला न पुनर्मोहं	४	३५	८३
मन्यसे यदि तच्छ्रयं	११	४	२३७	यततो ह्यपि कौंतेय	२	६०	४४
मम योनिर्महद्ब्रह्म	१४	३	३४९	यतः प्रवृत्तिर्भूता	१८	४६	४९८
ममैवांशो जीवलोके	१५	७	३५३	यतेंद्रियमनोबुद्धिः	५	२८	९९
मया ततमिदं सर्वं	९	४	१७८	यतो यतो निश्चरति	६	२६	१२६
मयाध्यक्षेण प्रकृतिः	९	१०	१८३	यतंतो योगिनश्चैनं	१५	११	३८६
मया प्रसन्नेन तवार्जु	११	४७	२६९	यत्करोषि यदश्नासि	९	२७	२०
मयि चानन्ययोगेन	१३	१०	३१७	यत्तदग्रे विषमिव	१८	३७	४९१
मयि सर्वाणि कर्माणि	३	३०	६३	यत्तु कामेप्सुना कर्म	१८	२४	४८०
मग्न्यावेद्य मनो ये	१२	२	२७७	यत्तु कृत्स्नवदेकस्मिन्	१८	२२	४७८
मग्न्यासक्तमनाः पार्थ	७	१	१३७	यत्तु प्रत्युपकारार्थं	१७	२१	४४०

श्लोकप्रतीकं.	अ० श्लो० पृ०	श्लोकप्रतीकं.	अ० श्लो० पृ०
यत्र काले खनावृत्ति	८ २३ १६८	यं लब्ध्वा चापरं लाभं	६ २२ १२५
यत्र योगेश्वरः कृष्णो	१८ ७८ ५३७	यं संन्यासमिति प्राहुः	६ २ १०५
यत्रोपरमते चित्तम्	६ २० १२५	यं हि न व्यथयंत्येते	२ १५ २९
यत्सांख्यैः प्राप्यते	५ ५ ९०	यः सर्वत्रानभिस्नेहः	२ ५७ ४२
यथाकाशस्थितो	९ ६ १८०	यस्त्वात्मरतिरेव स्यान्	३ १७ ५९
यथा दीपो निवात	६ १९ १२४	यस्त्विन्द्रियाणि मनसा	३ ७ ५४
यथा नदीनां बहवो	११ २८ २५८	यस्मात्क्षरमतीतोऽहं	१५ १८ ३९५
यथा प्रकाशयत्येकः	१३ ३३ ३४३	यस्मान्नोद्विजते लोको	१२ १५ २८५
यथा प्रदीपं ज्वलनं	११ २९ २५८	यस्य नाहंकृतो भा	१८ १७ ४७०
यथा सर्वगतं गौ	१३ ३२ ३४२	यस्य सर्वे समारंभाः	४ १९ ७८
यथैधांसि समिद्धो	४ ३७ ८४	यज्ञदानतपः कर्म	१८ ५ ४५७
यदग्ने चानुबन्धे च	१८ ३९ ४९२	यज्ञशिष्टाश्रुतभुजो	४ ३१ ८२
यदहंकारमाश्रित्य	१८ ५९ ५१८	यज्ञशिष्टाशिनः संतो	३ १३ ५७
यदक्षरं वेदविदो	८ ११ १६१	यज्ञार्थात्कर्मणोऽन्यत्र	३ ९ ५५
यदा ते मोहकलिलं	२ ५२ ४२	यज्ञे तपसि दाने च	१७ २७ ४४६
यदादित्यगतं नेजो	१५ १२ ३८७	यातयामं गतरमं	१७ १० ४३३
यदा भूतपृथग्भावं	१३ ३० ३४१	या निशा सर्वभूतानां	२ ६९ ४८
यदा यदा हि धर्मस्य	४ ७ ७३	यामिमां पुष्पितां वाचं	२ ४२ ३९
यदा विनियतं चित्तं	६ १८ १२४	यावत्संजायते किञ्चित्	१३ २६ ३३९
यदा सत्त्वे प्रवृद्धे तु	१४ १४ ३५६	यावदेतान्निरीक्षेऽहं	१ २२ ११
यदा संहरते चायं	२ ५८ ४४	यावानर्थ उदपाने	२ ४६ ४०
यदा हि नैन्द्रियार्थेषु	६ ४ १०६	यांति देवव्रता देवान्	९ २५ १९७
यदि मामप्रतीकारं	१ ४६ १९	युक्तः कर्मफलं त्यक्त्वा	५ १२ ९३
यदि ह्यहं न वर्तेयं	३ २३ ६१	युक्ताहारविहारस्य	६ १७ १२४
यदृच्छया चोपपन्नं	२ ३२ ३५	युधामन्युश्च विकांत	१ ६ ६
यदृच्छालाभसंतुष्टो	४ २२ ७८	ये चैव सात्त्विका भा	७ १२ १४१
यद्यदाचरति श्रेष्ठः	३ २१ ६०	ये तु धर्म्यामृतमिदं	१२ २० २८८
यद्यद्विभूतिमश्नुते	१० ४१ २२९	ये तु सर्वाणि कर्माणि	१२ ६ २८०
यद्यप्येते न पश्यन्ति	१ ३८ १६	ये त्वक्षरमनिर्देशयं	२२ ३ २७८
यं यं वापि स्मरन्भावं	८ ६ १५८	ये त्वेतदन्यमूयन्तो	३ ३२ ६१
यया तु धर्मकामार्थान्	१८ ३४ ४८९	येऽप्यन्यदेवताभक्ता	९ २३ १९६
यया धर्ममधर्मं च	१८ ३१ ४८७	ये मे मतमिदं नित्यं	३ ३१ ६३
यया स्वप्नं भयं शोकं	१८ ३५ ४८९	ये यथा मां प्रपद्यन्ते	४ ११ ७५

श्लोकप्रतीकं.	अ०	श्लो०	पृ०
ये शास्त्रविधिमुत्सृज्य	१७	१	४२६
येषामर्थे कांक्षितं नो	१	३३	१४
येषां त्वन्तगतं पापम्	७	२८	१५०
ये हि संस्पर्शजा भोगाः	५	२२	९६
योगयुक्तो विशुद्धात्मा	५	७	९०
योगसंन्यस्तकर्माणं	४	४१	८६
योगस्थः कुरु कर्माणि	२	४८	४१
योगिनामपि सर्वेषाम्	६	४७	१३५
योगी युञ्जीत सततं	६	१०	१०९
योत्स्यमानानवेक्षेऽहं	१	२३	११
यो न हृष्यति न द्वेष्टि	१२	१७	२८६
योऽतः सुखोत्तरारामः	५	२४	९८
यो मामजमनादिं च	१०	३	२१३
यो मामेवमसंमूढो	१५	१९	३९५
यो मां पश्यति सर्वत्र	६	३०	१२७
यो यो यां यां तनुं	७	२१	१४८
योऽयं योगस्त्वया	६	३३	१२९
युञ्जन्नेवं सदाऽत्मानम्	६	१५	१२१
"	६	२८	१२७
यः शास्त्रविधिमुत्सृज्य	१६	२३	४२२

र

रजस्तमश्चाभिभूय	१४	१०	३५५
रजसि प्रलयं गत्वा	१४	१५	३५६
रजो रागात्मकं विद्धि	१४	७	३५३
रसोऽहमप्सु कौंतेय	७	८	१३९
रागद्वेषवियुक्तैस्तु	२	६४	६४
रागी कर्मफलप्रेप्सुः	१८	२७	४८३
राजन् संस्मृत्य संस्मृत्य	१८	७६	५३६
राजविद्या राजगुह्यं	९	२	१७७
रुद्राणां शंकरश्चास्मि	१०	२३	२२३
रुद्रादित्या वसवो ये	११	२२	२५२
रूपं महत्ते बहुवक्त्रेण	११	२३	२५३

श्लोकप्रतीकं.	अ०	श्लो०	पृ०
लभन्ते ब्रह्मनिर्वाणं	५	२५	९८
लेलिह्यसे प्रसमानः	११	३०	२५९
लोकेऽस्मिन्द्विविधा	३	३	५२
लोभः प्रवृत्तिरारंभः	१४	१२	३५६

व

वक्तुमर्हस्यशेषेण	१०	१६	२२०
वक्त्राणि ते त्वरमाणा	११	२७	२५७
वायुर्यमोऽग्निर्वरुणः	११	३९	२६४
वासांसि जीर्णानि	२	२२	३१
विद्याविनयसंपन्ने	५	१८	९१
विधिहीनमसृष्टान्नं	१७	१३	४३५
विविक्तसेवी लब्धाशी	१८	५२	५०४
विषया विनिवर्तते	२	५९	४४
विषयेन्द्रियसंयोगात्	१८	३८	४९१
विस्तरेणात्मनो योगं	१०	१८	२२१
विहाय कामान्यः	२	७१	४९
वीतरागभयक्रोधाः	४	१०	७४
वृष्णीनां वासुदेवोऽस्मि	१०	३७	२२७
वेदानां सामवेदोऽस्मि	१०	२२	२२३
वेदाविनाशिनं नित्यं	२	२१	३०
वेदाहं समतीतानि	७	२६	१४९
वेदेषु यज्ञेषु तपःसु	८	२८	१७२
व्यवसायात्मिका	२	४१	३८
व्यामिश्रेणेव वाक्येन	३	२	५०
व्यासप्रसादाच्छ्रुत्वा	१८	७५	५३५

श

शक्नोतीहैव यः सोढुं	५	२३	९८
शनैः शनैरुपरमेद्	६	२५	१२६
शमो दमस्तपः शौचं	१८	४२	४९४
शरीरं यदवाप्नोति	१५	८	३८५
शरीरवाङ्मनोभिर्यत्	१८	१५	४६८
शुक्लकृष्णे गती ह्येते	८	२६	१७०

श्लोकप्रतीकं.	अ०	श्लो०	पृ०	श्लोकप्रतीकं.	अ०	श्लो०	पृ०
शुचौ देशे प्रतिष्ठाप्य	६	११	११३	समः शत्रौ च मित्रे	१२	१८	२८६
शुभाशुभफलैरेवं	९	२८	२००	सर्गाणामादिरंतश्च	१०	३२	२२६
शौर्यं तेजो धृतिर्दाक्ष्यं	१८	४३	४९५	सर्वकर्माणि मनसा	५	१३	९३
श्रद्धया परया तप्तं	१७	१७	४३७	सर्वकर्माण्यपि सदा	१८	५६	५१६
श्रद्धावाननसूयश्च	१८	७१	५३१	सर्वगुह्यतमं भूयः	१८	६४	५२१
श्रद्धावाँलभते ज्ञानं	४	३९	८५	सर्वतः पाणिपादं तत्	१३	१३	३३०
श्रुतिविप्रतिपन्ना ते	२	५३	४२	सर्वद्वाराणि संयम्य	८	१२	१६१
श्रेयान्द्रव्यमयाद्यज्ञात्	४	३३	८३	सर्वद्वारेषु देहेऽस्मिन्	१४	११	३५६
श्रेयान्स्वधर्मो विगुणः	३	३५	६५	सर्वधर्मान्परित्यज्य	१८	६६	५२४
"	१८	४७	४९८	सर्वभूतस्थमात्मानम्	६	२९	१२७
श्रेयो हि ज्ञानमभ्या	१२	१२	२८३	सर्वभूतस्थितं यो मां	६	३१	१२८
श्रोत्रादीनीन्द्रियाण्यन्ये	४	२६	८०	सर्वभूतानि कौंतेय	९	७	१८०
श्रोत्रं चक्षुः स्पर्शनं च	१५	९	३८६	सर्वभूतेषु येनैकं	१८	२०	४७७
श्वशुरान्सुहृदश्चैव	१	२७	१२	सर्वमेतद्वत्तं मन्ये	१०	१४	२१९
स				सर्वयोनिषु कौंतेय	१४	४	३५१
स एवायं मया तेऽद्य	४	३	७१	सर्वस्य चाहं हृदि	१५	१५	३८९
सक्ताः कर्मण्यविद्वांसः	३	२५	६१	सर्वाणीन्द्रियकर्माणि	४	२७	८०
सखेऽसि मत्वा प्रसभं	११	४१	१६५	सर्वेन्द्रियगुणाभासं	१३	१४	३३१
स घोषो धार्तराष्ट्राणां	१	१९	१०	सहजं कर्म कौंतेय	१८	४८	४९९
सततं कीर्तयंतो	९	१४	१८७	सहयज्ञाः प्रजाः सृष्ट्वा	३	१०	५५
स तथा श्रद्धया युक्तः	७	२२	१४८	सहस्रयुगपर्यंतम्	८	१७	१६४
सत्कारमानपूजार्थं	१७	१०	४३८	साधिभूताधिदैवं मां	७	३०	१५१
सत्त्वान्संजायते ज्ञानं	१४	१७	३५९	मिद्धि प्राप्तो यथा ब्रह्म	१८	५०	५०२
सत्त्वं रजस्तम इति	१४	५	३५२	मीदन्ति मम गात्राणि	१	२९	१३
सत्त्वं सुखे संजयति	१४	९	३५५	सुखदुःखे रामे कृत्वा	२	३८	३७
सत्त्वानुरूपा सर्वस्य	१७	३	४२८	सुखमात्यंतिकं यत्तद्	६	२१	१२५
सदृशं चेष्टते स्वस्याः	३	३३	६४	सुखं त्विदानीं त्रिविधं	१८	३६	४९०
सद्भावे साधुभावे च	१७	२६	४४५	सुदुर्दर्शमिदं रूपं	११	५२	२७३
समदुःखसुखः स्वस्थः	१४	२४	३६४	सुहृन्मित्रार्युदासीन	६	९	१०९
समोऽहं सर्वभूतेषु	९	२९	२००	संकरो नरकायैव	१	४२	१८
समं कायशिरोग्रीवं	६	१३	११५	संकल्पप्रभवान्कामान्	६	२४	१२६
समं पश्यन्हि सर्वत्र	१३	२८	३४०	संतुष्टः सततं योगी	१२	१४	२८४
समं सर्वेषु भूतेषु	१३	२७	३३९	संनियम्येन्द्रियग्राम	१२	४	२७८

श्लोकप्रतीकं.	अ०	श्लो०	पृ०	श्लोकप्रतीकं.	अ०	श्लो०	पृ०
संन्यासस्तु महाबाहो	५	६	९०	स्वधर्ममपि चावेक्ष्य	२	३१	३४
संन्यासस्य महाबाहो	१८	१	४५३	स्वभावजेन कौतेय	१८	६०	५१८
संन्यासः कर्मयोगश्च	५	२	८९	स्वयमेवात्मनात्मानं	१०	१५	२२०
संन्यासं कर्मणां कृष्ण	५	१	८८	स्वे स्वे कर्मण्यभिरतः	१८	४५	४९६
सांख्ययोगौ पृथग्वालाः	५	४	८९				
स्थाने हृषीकेश तव	११	३६	२६३	ह			
स्थितप्रज्ञस्य का भाषा	२	५४	४२	हंत ते कथयिष्यामि	१०	१९	२२२
स्पर्शान्कृत्वा वह्निर्बाह्यान्	५	२७	९९	हतो वा प्राप्स्यसि स्वर्गं	२	३७	३७
				हृषीकेशं तदा वाक्यं	१	२१	११

समाप्तेयं गीतापद्यानामकाराद्यनुक्रमणी ।

त्वानें कर्मांमध्ये असतो, तो निश्चयेंकरून कोणी ओळखावा तें सांगतां. ३९६ कारण, मुक्त कोणते ह्याचा निश्चय करावयास गेलें ह्मणजे आपलीच मुक्तता होते. आपली वस्तु असते ती जशी दिव्यानें दिसते; ३९७ किंवा आरसा स्वच्छ करावा तेव्हां आपलेंच आपल्याला दर्शन होतें. किंवा मीठ पाण्याला भेटावयास गेलें तर आपणच पाणी होऊन जातें. ३९८ हें असो. प्रतिबिंब फिरून आपल्या बिंबाला पहावयाला लागलें ह्मणजे त्याचा प्रतिबिंबपणा जाऊन तें स्वतःच बिंब होतें. ३९९ त्याप्रमाणें आपण हरवलों असें वाटेल तेव्हां संतांचें दर्शन घ्यावें, ह्मणजे सांपडेल. ह्मणून सदासर्वकाल त्यांचेंच वर्णन करावें, व त्यांचेच गुणानुवाद श्रवण करावेत. ४०० परंतु कर्मांत राहूनही जो समविषमांत सांपडत नाही; चर्मचक्षूच्या चामड्यानें जशी दृष्टि, ४०१ त्याप्रमाणें जो निराळा आहे; त्याचें स्वरूप आतां पहा. बाहू उभारून त्याची उपपत्ति सांगूं.” ४०२

यस्य नाहंकृतो भावो बुद्धिर्यस्य न लिप्यते ।

हत्वाऽपि स इमल्लोकान्न हंति न निबद्धयते ॥ १ ॥

[यस्य नाहंकृतो भावः] तरि अविद्येच्या निर्दा. विश्वस्वप्नाचा हा धोंदा. भोगित होता प्रबुद्धा । अनादि जो ॥ ३ ॥ तो महावाक्याचेनि नांवें । गुरुकृपेचेनि नांवें । माथां हात ठेवणें नव्हे । थापटिला जैसा ॥ ४ ॥ तैसा विश्वस्वप्नेसीं माया । नीद सांडून धनंजया । सहजेंचि चेईला अद्वयानंदपणें जो ॥ ५ ॥ तेव्हां मृगजळाचे पुर । दिसते एक निरंतर । हारपती कां चंद्रकर । फांकातां जैसे ॥ ६ ॥ कां बाळव निघोनि जाय । तें बायला नाही त्राय । पै जळालिया इंधन न होय । रंधन जेवि ॥ ७ ॥ ना ना चेंवो आलिया पाठी । तें स्वप्न न दिसे दिठी । तैसी अहंमता गा किरीटी । नुरेचि तया ॥ ८ ॥ मग सूर्य आंधारालागीं । रिघो कां भलते सुरंगीं । परि तो तयाच्या भागीं । नाहीचि जैसा ॥ ९ ॥ तैसा आत्मत्वं वेष्टिला होये । तो जया तया दृश्यातें पाहे । तें दृश्य द्रष्टेपणेंसीं होत जाये । तयाचेंचि

१ निर्दा. २ धंदा. ३ योगानें. ४ बळानें. ५ जागा झाला. ६ चंद्रकिरण. ७ रक्षण, उपयोग. ८ पाकक्रिया. ९ जाणती. १० भुयारांत.

रूप ॥ ४१० ॥ जैसा वन्हि अया लागे । तें वन्हीचि जालिया आंगें । दाढ्यादाहकविभागें । सांडिजे तें ॥ ११ ॥ तैसा कर्माकारा दुजेया । तो कर्तेपणाचा आत्मया । आळ आला तो गेलिया । काहीं बांहीं जें उरे ॥ १२ ॥ तिये आत्मस्थितीचा जो रावो । मग तो देहीं इये जाणेल ठावो । काय प्रलयांबूचा उभाहो । बोध मानी ॥ १३ ॥ तैसी ते पूर्ण अहंता । काई देहपणें पंडुसुता । आवरे काई सविता । बिंब धरिला ॥ १४ ॥ पै मथुनि लोणी घेपे । तें मायुती तार्की घोपे । तरि तें लिप्तपणें सिंपे । तेणेंसी काई ॥ १५ ॥ नाना काष्ठौनि वीरेश । वेगळ्याविलिया हुताशा । राहे काष्ठचिया मांदुसा । कोंडलेपणें ॥ १६ ॥ कां रात्रीचिया उदराभांत । रिंगाला जो हा भास्वत । तो रात्री-ऐसी मात । एके काई ॥ १७ ॥ तैसें वेद्यवेदकपणेंसीं । पडिलें कां जयाच्या प्रासी । तया देह मी ऐसी । अहंता कैची ॥ १८ ॥ आणि आकाशें जेथें जेथुनी । जाइजे तेथ असे भरोनि । ह्मणोनि ठेलें कोंदोनी । आपेंआप ॥ १९ ॥ तैसें जें तेणें करावें । तो तेंचि आहे स्वभावें । मा कोणे कर्मी वेष्टावें । कर्तेपणें ॥ ४२० ॥ नुरेचि गगनावीण ठावो । नोहेचि समुद्रा प्रवाहो । गुठीचि ध्रुवा जावों । तैसें जाहालें ॥ २१ ॥ ऐसेनि अहंकृतिभावो । जयाचा बोधी जाहाला वावो । तन्हीं देहा जंव निवाहो । तंव आधीं कमें ॥ २२ ॥ वारा जरी वाजोनि वोरें । तरी तो डोल रुखीं उरे । कां सेंदे इति राहें कापुरें । वेचलेनी ॥ २३ ॥ कां सरलेया गीताचा समारंभु । न वचे वाहवलेणाचा क्षोभु । भूमी लोळोनि गेलिया अंबु । बोल थारे ॥ २४ ॥ अगा मावळलेनि अकें । संघेचिये भूमिके । ज्योतिदीप्तीकांतुके । दिसे जैसी ॥ २५ ॥ पै लक्ष भेदिलियाही वरी । बाण घावेचि तंववरी । जंव भरली आधीं उरी । बळाची तया ॥ २६ ॥ नाना चर्की भांडें जालें । तें कुलालें परतें नेलें । परि अंमंचि तें मागिलें । भोंवडिलेपणें ॥ २७ ॥ तैसा देहाभिमान गेलिया । देह जेणें स्वभावें धनंजया । जालें तें अपेसया । चेष्टवीचें तें ॥ २८ ॥ संकल्पवीण स्वप्न । न लावितां दंगीचें बन । न रचितां गंधर्वभुवन । उठी जैसें ॥ २९ ॥ आत्मया-चेनि उद्यमेंवीण । तैसें देहादिपंचकारण । होय आपणयां आपण । क्रियाजात ॥ ४३० ॥ पै प्राचीनसंस्कारशेषें ।

१ दाढ्या=काष्ठे आदि व दाहक=अग्नि हा दोन प्रकारचा विभाग. २ काहीं, अवशेष. ३ वृद्धि. ४ स्पर्श. ५ पृथक् केला असतां. ६ पेटीत. ७ सूर्य. ८ जाणण्याचें वस्तु व जाणणारा. ९ ध्रुवमंडळाशीं. १० आटोपे. ११ करंज्यांत, बेलक्यांत. १२ खपून गेला तरी. १३ वाहावा दिल्याचा. १४ निशाण. १५ अवशिष्टता. १६ चक्र. १७ अरण्यांतलें. १८ पूर्व जन्मीच्या संस्कारांचें.

पांचही कारणे सहेतुकें । कामवीजती गा अनेकें । कर्मा-
कारें ॥ ३१ ॥ [हत्वापि स इमांलोकान्] तथा कर्माभाजी
मग । संहरो आधर्वे जग । अथवा नवें चांग । अनुकरो
॥ ३२ ॥ परि कुमुद कैसेनी सुके । तें कमळ कैसे फांके ।
ये दोन्ही रवी न देखे । जया परी ॥ ३३ ॥ कां वीजु
वर्षोनि आभाळ । ठिकरिया आतो भूतळ । अथवा करू
शाडूळ । पर्जन्यवृष्टी ॥ ३४ ॥ तरि तथा दोहींतें जैसे ।
नेणिजेचि कां आकाशें । तैसा देहींच जो असे । विदे-
हदृष्टी ॥ ३५ ॥ तो देहादिकीं चेष्टीं । घडतां मोडतां हे
सृष्टी । न देखे स्वप्न दृष्टी । चेडल जैसा ॥ ३६ ॥ येन्हीवीं
चामाचे डोळेवरी । जे देखती देहचिवरी । ते कीर तो
व्यापारी । ऐसेंचि मानिती ॥ ३७ ॥ कां तृणाचा बाहुल ।
जो आंगरामेरे ठेविली । तो सत्य राखता कोल्हा । न मनी
काई ॥ ३८ ॥ पिसें नेसलें कां नागवें । हें लोकीं येऊनि
जाणावें । ठणोरियाचे मवावे । आणि की घाय ॥ ३९ ॥ कां
महासतीचे भोग । देखे कीर सकळ जग । परिते आगी ना
आंग । ना लोक देखे ॥ ४० ॥ तैसा स्वरूपे उठिला । जो
दृश्येंसी द्रष्टा आटला । तो नेणे काय राहटला । इन्द्रि-
यग्राम ॥ ४१ ॥ अगा थोरीं कळोळीं कळोळ साने । लोपतां
तिरींचेनि जने । एकाएकीं गळिलें हें मन । मानिजे जन्ही
॥ ४२ ॥ तन्हीं उदकाप्रति पाहीं । कोण प्रसितसे काई ।
तैसे पूर्णा दुजें नाहीं । जें तो मारी ॥ ४३ ॥ सुवर्णा-
चिया चंडिका । सुवर्णशुद्धेंचि देखा । सुवर्णाचिया महिखा ।
नाश केला ॥ ४४ ॥ तो देवेंलवसिया कडा । व्यवहार गमला
फुडा । वांचून महिष शुद्ध चांमुंडा । सुवर्णचि तें ॥ ४५ ॥
पें चित्राचें जळ हुंताश । तो दृष्टीचाचि आभास । पटीं
अग्नि बोलाशें । दोन्ही नाहीं ॥ ४६ ॥ मुक्ताचें देह तैसे ।
हाले चाले संस्कारवरी । तें देखोनि लोक पिसे । तो कर्ता
झणती ॥ ४७ ॥ [न हंति] आणि तयां करणेयांआंत ।
घडो त्रैलोक्या घात । परि तेणें केला हे मात । बोलीं नये
॥ ४८ ॥ अगा अंधकार देखावा तेजें । मग तो फेडिजे
हें कें बोलिजे । तैसें ज्ञानियां नाहीं दुजें । तो मारील काई
॥ ४९ ॥ [बुद्धिर्यस्य न लिप्यते] झणोनि तयाची बुद्धी ।

१ क्रिया करविती, सिद्ध केल्या जातात. २ रचो. ३ चंद्रवि-
कासी कमल. ४ वीज पडून. ५ तुकडे तुकडे होऊन व्यापो.
६ हिरवें तृण. ७ देहाभिमानरहित. ८ जागा झालेला. ९ चा-
मच्याचे. १० दृष्टीनं. ११ शेताच्या कडेस. १२ संरक्षक.
१३ भ्रमिष्ट. १४ लोकांनी. १५ बुद्धी मेलेल्यांचे. १६ व्या-
पला. १७ व्यवहारला. १८ इन्द्रियसमुदाय. १९ लहान
तरंग. २० देवीनं. २१ महिषासुर. २२ गुरवाला. २३ खरा.
२४ देवी. २५ अग्नि. २६ गारटा. २७ पूर्वकर्मानं. २८ दूर
करावा.

नेणे पापपुण्याची गंधी । गंगा मीनलिया नदी । विटाळ
जैसा ॥ ४५० ॥ अग्नीसि अग्नि झगटलिया । काय पोळे तो
धनंजया । कीं शस्त्र रूपे आपणया । आपणचि ॥ ५१ ॥
तैसे आपणपया परतें । जो नेणे क्रियाजातातें । तेथ काय
लिपवी बुद्धीतें । तयाचिये ॥ ५२ ॥ [न निबद्धयते]
झणोनि कार्य कर्ता क्रिया । हें स्वरूपचि जाहालें जया ।
नाहीं शरीरादिकीं तया । कर्मबंध ॥ ५३ ॥ जे कर्ता जीव
विदर्शी । काहूनि पांचही खाणी । घडित आहे करणी । आउती
दाहें ॥ ५४ ॥ तेथ न्यावो आणि अन्यावो । हा द्विविध घ्राणुनि
आवो । उभारितां न लवी खेंवो । कर्म भुवनें ॥ ५५ ॥
या थोरांडा कीर कामा । विरंजा नोहे आत्मा । परि झणसी
हन उपेकमा । हात लावी ॥ ५६ ॥ तो साक्षी चिद्रूप ।
कर्मप्रवृत्तीचा संकल्प । उठी तो कां निरोप । आपणचि हे
॥ ५७ ॥ तरी कर्मप्रवृत्ती ही लागीं । तया आयास नाहीं
आंगीं । जे प्रवृत्तीजेही उळिगीं । लोकचि आयी ॥ ५८ ॥
झणोनि आत्म्याचें केवळ । जो रूपचि जाहाला निखिल ।
तया नाहीं बंदिशाळ । कर्माची हे ॥ ५९ ॥ परि अज्ञानाच्या
पटीं । अन्यथा ज्ञानाचें चित्र उठी । तेथ चित्तोरणी हे त्रि-
पुटी । प्रसिद्ध जे कां ॥ ४६० ॥

“तर अनादि, प्रबुद्ध असा, जो अविद्येची
निद्रा व विश्वरूप स्वप्नाचा थंडा भोगित अस-
तो, ४०३ तो महा वाक्याच्या योगानें, गुरु-
कृपेच्या बळानें, मस्तकावर हात ठेवावा-नव्हे
थोपटावें, ४०४ त्याप्रमाणें धनंजया ! विश्व-
स्वप्नासहवर्तमान मायेची झोंप जाऊन जो
सहज अद्वयानंदानें जागा होतो, ४०५ तेव्हां
चंद्राचे किरण पसरतांच जसें निरंतर एकच
मृगजळाचे दिसणारे पूर नाहींसे होतात,
४०६ किंवा बाल्यत्व निघून गेलें झणजे
बागुलाला थारा उरत नाहीं; जळण संपल्या-
नंतर स्वयंपाक होत नाहीं; ४०७ किंवा
फिरून जागें झाल्यावर स्वप्न जसें दृष्टीला
दिसत नाहीं. त्याप्रमाणें किरीटी ! त्याला
अहंममता झणून उरतच नाहीं. ४०८ मग
सूर्य अंधारासाठीं भलत्या पखाया भुयारांत

१ वार्ता, गंध. २ भेटला असतां. ३ कोणता पदार्थ.
४ कार्य, तें करणारा, व करणें. ५ कीशल्यानं. ६ हेतु.
७ इन्द्रियरूप दहा नांगरांनी. ८ न्याय. ९ आकार.
१० क्षणही. ११ मोठ्या. १२ साक्षकर्ता. १३ आरंभास.
१४ ज्ञानस्वरूप. १५ वेगारीत. १६ चित्र काढणारी.

कां शिरेना ? तरी तो जसा त्याच्या वांढ्याला ह्मणून यावयाचाच नाही, ४०९ त्याप्रमाणे आत्मत्त्वाने जो गुंडाळलेला असतो, तो ज्याच्या दृश्य पदार्थाला पाहतो, तो दृश्य पदार्थ पाहणारा बरोबर पाहणाराचेंच रूप बनतो. ४१० ज्याप्रमाणे विस्त्व ज्याला लागतो, ते स्वतःच विस्त्व बनते, ह्मणजे मग जळणे आणि जाळणे हे दोन्हीही प्रकार नाहीसे होतात. ४११ त्याप्रमाणे कर्माच्या आकारामुळे त्या कर्त्याला दुसऱ्या कर्तेपणाचा आळ आलेला असतो, तो गेल्यानंतर जे कांहीं अवशेष राहतें, ४१२ त्या आत्मस्थितीचा जो राजा; तो मग ह्या देहामध्ये आपलें स्थान आहे, असें समजेल काय ? प्रलयकाळच्या समुद्राची भरती प्रवाहाची प्रतिष्ठा बाळगील काय ? ४१३ त्याप्रमाणे अर्जुना ! ती अहंता देहपणाने पूर्ण होईल होय ? बिंब धरल्यानें सूर्य सांपडेल काय ? ४१४ तसेंच घुसळून लोणी काढले, आणि ते पुन्हा ताकांत घातले, तर ते लिप्तपणाने त्यास मिळेल काय ? ४१५ किंवा हे वीरश्रेष्ठा ! काष्ठापासून अग्नि निराळा केला, तर तो लांकडाच्या पेटेंत कोंडून राहिल काय ? ४१६ किंवा हा सूर्य रात्रीच्या पोटांत शिरला तर तो रात्र असा शब्द तरी ऐकेल काय ? ४१७ त्याप्रमाणे जाणण्याची वस्तु व जाणणारा हे दोन्हीही ज्याच्या भक्ष्यस्थानी पडले, त्याला देह हा 'मी' ही अहंता कशाची ? ४१८ आणखी आकाश जेथून जेथे जाईल, तेथें तेथें भरूनच असतें, ह्मणून आपोआपच ते कोंडून राहतें. ४१९ त्याप्रमाणे त्यानें जें जें करावें, ते तो स्वतःच आपोआप असतो. मग कर्तेपणाने कोणत्या कर्मांत गुंतून रहावें ? ४२० गगनाशिवाय जागाच उरत नाही; समुद्राला प्रवाह उत्पन्न होत नाही; ध्रुवाला जाग्यावरून उठतां येत नाही. तसें होतें. ४२१ अशा प्रकारे अहंक्रुतीचा भाव त्याच्या ज्ञानाने जरी व्यर्थ झाला, तरी देहाला जोंपर्यंत निर्वाह आहे,

तोंपर्यंत कर्मे आहेतच. ४२२ वारा जरी वहावयाचा थांबला, तरी त्याचें हालणे झाडा-मध्ये राहतें. किंवा कापूर गेला तरी, करंज्यांत त्याचा वास रहातो. ४२३ किंवा गायनाचा समारंभ सरला तरी, मनोविकाराचा संस्कार जात नाही. भुईवर सांडलेले पाणी गेलें, तरी ओल रहाते. ४२४ अरे ! सूर्य मावळल्यानंतर सायंकाळच्या वेळीं जशी मजेची प्रकाशाची झांक दिसते; ४२५ निशाण भेदल्यावरही आपल्या आंगीं आलेले बळ अवशिष्ट असलेले संपेपर्यंत बाण धांवतच असतो. ४२६ किंवा चाकाने मडकें तयार झालें; ते कुंभाराने पलीकडे नेले; तरी ते आधीं भोंवडलेले असल्यामुळे फिरतच असतें. ४२७ त्याप्रमाणे अर्जुना ! देहाभिमान गेला तरी, ज्या स्वभावाने देह झालेला असतो, तो स्वभाव त्याला आपोआपच कर्मे करावयाला लावतो. ४२८ मनांत बेत केल्याशिवाय जसें स्वप्न; किंवा लागवड न करतां अरण्यांतलें रान; बांधल्याशिवाय गंधर्वनगर जसें उत्पन्न होतें, ४२९ त्याप्रमाणे आत्म्याच्या उद्योगाशिवाय देहादि पांच कारणांच्या योगाने हरएक क्रिया आपोआपच उत्पन्न होते. ४३० तसेंच पूर्वजन्मांच्या संस्काराने हेतुसहवर्तमान पांचही कारणे अनेक कर्मांच्या रूपाने क्रिया करवितात. ४३१ मग त्या कर्मांमध्ये सान्या जगाचा संहार होवो, किंवा दुसरे त्याहून चांगले तयार होवो. ४३२ तरी, चंद्र-विकासी कमल कशाने सुकतें; सूर्यविकासी कमल कशाने प्रफुल्लित होतें; हीं दोन्हीही जशीं सूर्य पहात नाही. ४३३ किंवा आभाळ हें वीज पाडून पृथ्वीच्या ठिकऱ्या करून टाको; अथवा पर्जन्यवृष्टि करून तृण उत्पन्न करो; ४३४ तरी त्या दोहोंलाही आकाश जसें जाणत नाही, त्याप्रमाणे विदेहदृष्टीनें जो देहामध्ये असतो, ४३५ तो देहादिकांच्या व्यापारांनीं ही सृष्टि नवी झाली कीं नाश पावली तरी, जाग्रुत झालेला मनुष्य जसें

स्वप्न दृष्टीनें पहात नाही, त्याप्रमाणे तोही पहात नाही. ४३६ परवीं चर्मचक्षूंनीं देहा-
पुरतेंच जे पहातात, ते खरोखर तोच व्यवहार
करणारा असें मानतात. ४३७ किंवा शेता-
च्या बांधावर गवताचा बाहुला ठेवलेला
असतो, तो राखित असतो तोंपर्यंत तो
खराच आहे, असें कोल्हा मानित नाहीं काय?
४३८ वेडा मनुष्य नेसला आहे कीं नागवा
आहे? हे लोकांनीं येऊन पहावें तेव्हां कळा-
वयाचें. युद्धांत पतन पावलेल्याचे घाव दुस-
ऱ्यांनीं मोजावेत! ४३९ किंवा महासतीचे
भोग खरोखर सारें जग पहात असतें. परंतु
तिला ती आग किंवा आपलें आंग किंवा लोक
ह्यांपैकीं कांहींच दिसत नाहीं. ४४० त्याप्र-
माणें आत्मस्वरूपानें जो संपन्न झाला, दृश्या-
सह द्रष्टा नाहींसा होऊन गेला, तो, इंद्रिय-
समुदाय काय करित आहे हें जाणतच नाहीं.
४४१ अरे! मोठ्या लाटांमध्ये लहान लाटा जिरून
गेलेल्या पाहून किनाऱ्यावर उभे राहिलेल्या
लोकांनीं त्या एकमेकांस गिळित आहेत असें
जरी मानलें, ४४२ तरी, उदकाला कोणी
खातो काय? ह्याचा विचार कर. त्याप्रमाणें
जो पूर्ण-सिद्ध-झाला त्याला मारावयाला
दुसरें कांहींच रहात नाहीं. ४४३ हें पहा!
सोन्याच्या चंडीनें-देवीनें-सोन्याच्याच त्रिशू-
ळानें सोन्याच्याच महिषाचा नाश केला;
४४४ तो पुजान्याला-गुरवाला- मात्र खरा
व्यवहार वाटतो. बाकी रेडा, त्रिशूळ, चामुं-
डा, हें सारें सोनेच. ४४५ तसेंच चित्रांतील
पाणी किंवा अग्नि; हा फक्त दृष्टीचा भास.
कापडाला जळणें आणि भिजणें हीं दोन्हीही
नाहींत. ४४६ त्याप्रमाणें जे मुक्त आहेत
त्यांचा देह पूर्वकर्मानें हालतो चालतो, तें
पाहून वेडे लोक तोच कर्ता असें ह्मणतात.
४४७ आणि त्याच्या कृतीनें त्रैलोक्याचा जरी
घात झाला, तरी तो त्यानें केला ही गोष्ट सुद्धां
बोलूं नये. ४४८ अरे! अंधकाराला प्रकाशानें
पाहिलें ह्मणजे मग तो दूर करावा हें कोणा-

पार्शी बोलवें? त्याप्रमाणें शान्याला दुसरें
ह्मणून कोणीच नाही. तो मारणार काय?
४४९ ह्मणून गंगेला नदी मिळाली ह्मणजे मग
ती जसा विटाळ समजत नाही, त्याप्रमाणें
त्याच्या बुद्धीला पाप आणि पुण्य यांचा
गंधही नसतो. ४५० हे धनंजया! अग्नीला
अग्नि भेटला तर पोळेल काय? किंवा शस्त्र
हें आपलें आपल्यासच कापील काय? ४५१
त्याप्रमाणें कोणतीही क्रिया जो आपल्याहून
वेगळी आहे असें समजतच नाही, तेथें
त्याच्या बुद्धीला लेप कोण घालणार? ४५२
ह्मणून कार्य, तें करणारा, आणि करणें हेंच
ज्याचें स्वरूप बनलें; हेंच जो मूर्तिमय बनला;
त्याला शरीरादिक कर्मांनीं बंध नाही. ४५३
कारण, कर्ता जो जीव तो कौशल्यानें पांचही
खाणी (हेतु) काढून इंद्रियरूप दहा आउ-
तांनीं तयार करतो. ४५४ तेव्हां न्याय आणि
अन्याय हा दोन बाजूंचा तट घालून कर्मांचीं
मंदिरे बांधण्यास क्षणाचाही विलंब लागत
नाहीं. ४५५ येवढ्या मोठ्या कामांतही आत्मा
हा खरोखर सहाय्य सुद्धां करित नाही. पण
तूं कदाचित् असें ह्मणशील कीं, आरंभाला
तरी तो हात लावित असेल. ४५६ पण तो
ज्ञानरूप असून साक्षिभूत मात्र असतो.
प्रवृत्तीचा संकल्प उठतो, तो निरोप तरी
आपण देईल काय? ४५७ तर कर्मप्रवृत्तीला
त्याच्या आंगांशीं कांहींएक संबंध नाही. कार-
ण, प्रवृत्तीच्या विगारीमध्ये लोकच असतात.
४५८ ह्मणून जो आत्म्याचें शुद्ध स्वरूप
बनला, त्याला ह्या कर्मांची बंदिशाळा नाही.
४५९ परंतु अज्ञानरूप वस्त्रावर अन्यथा
ज्ञानाचें चित्र उठतें, तेथें प्रसिद्ध जी ही त्रिपु-
टी तीच चितारीण आहे.” ४६०

ज्ञानं ज्ञेयं परिज्ञाता त्रिविधा कर्मचोदना ।

कारणं कर्म कर्तेति त्रिविधः कर्मसंग्रहः ॥ १८ ॥

[परिज्ञाता] जें ज्ञान ज्ञाता ज्ञेय । हें जगाचें बीजत्रय । तें
कर्मांची निःसंदेह । प्रवृत्ती जाण ॥ ६१ ॥ आतां यथाची गा

त्रया । व्यक्ती वेगळालिया । आहकें धनंजया । करूं रूप ॥ ६२ ॥ तरि जीवसूर्यबिंबाचे । रेश्मी श्रोत्रादिकें पांचें । धांवोनि विषयपद्माचे । फोडित मंड ॥ ६३ ॥ कीं जीवनु-
पाचे वारु उपलणे । घेऊनि इंद्रियांचीं कर्काणें । विषय-
देशीचें नांगवणें । आणीत जे ॥ ६४ ॥ हें असो इहीं इंद्रियां
राहटे । जें सुखदुःखेसीं जीवा भेटे । तें सुषुप्तिकाळीं वोहटे ।
जेथ ज्ञान ॥ ६५ ॥ तया जीवा नांव ज्ञाता । आणि जें हें
सांगीतलें आतां । तेंचि एथ पंडुसुता । ज्ञान जाण ॥ ६६ ॥
जें अंबिघेचिचे पोटी । उर्पजतखेवों किरिटी । आपणयातें
वांटी । तिहीं ठायीं ॥ ६७ ॥ आपुलिये धांवें पुढां । घा-
लूनि ज्ञेयांचा गुंढा । उभारी मागिलीकंडां । ज्ञातृत्वातें
॥ ६८ ॥ [ज्ञानं] मग ज्ञातया ज्ञेया दोघां । तो नांदणु-
केचा बैगा । माजि जालेनि पैगा । वाहे जेणें ॥ ६९ ॥
टाकूनि ज्ञेयाची शिंव । प्रजे जयाची धांव । सकळ पदार्थां
नांव । सुतसे जें ॥ ७० ॥ तें गा सामान्य ज्ञान । या
बोला नाहीं आन । [ज्ञेयं] ज्ञेयाचेंही चिन्ह । आइक आतां
॥ ७१ ॥ तरि शब्दस्पर्श । रूप गंध रस । हा पंचविध आ-
भास । ज्ञेयाचा तो ॥ ७२ ॥ जेसं एकेचि चूर्तफळें । इंद्रिया
वेगळवेगळें । रसें वर्णें परिमळें । भेटिजे स्पर्शें ॥ ७३ ॥
तैसें ज्ञेय तरी एकसरें । परि ज्ञान इंद्रियद्वारें । घे ह्मणोनि
प्रकारें । पांचें जालें ॥ ७४ ॥ आणि समुद्रीं बोधाचें जाणें ।
सरे लोणीपासीं धांवणें । कां फळां सरे वाढणें । संस्याचें
जेविं ॥ ७५ ॥ तैसें इंद्रियांच्या वाहवटीं । धांवतया ज्ञाना
मेथ ठी । होय तें गा किरिटी । विषय ज्ञेय ॥ ७६ ॥ एवं
ज्ञातया ज्ञाना ज्ञेया । तिहीं रूप केलें धनंजया । [त्रिविधा
कर्मचोदना] हे त्रिविध सर्वे क्रिया । प्रवृत्ति जाण ॥ ७७ ॥
जे शब्दादि विषय । हें पंचविध जें ज्ञेय । तेंचि प्रिय कां
अप्रिय । एकेपरिचें ॥ ७८ ॥ ज्ञान मोटकें ज्ञातया । दावी
ना जंव धनंजया । तंव स्त्रीकारा कीं ल्यजावया । प्रवर्तेचि
तो ॥ ७९ ॥ परि मीनांतें देखोनि बैकें । जैसा निर्धोनातें रंक ।
कां श्री देखोनि कामुक । प्रवृत्ति धरी ॥ ८० ॥ जैसें
खोलां धांवें पाणी । अमर पुष्पाचिये धोणी । ना ना सु-
टला साजेंवणी । वत्सचि पां ॥ ८१ ॥ अगा स्वर्गीची उ-

र्वशी । एकोनि जेविं माणुसीं । वराता लावीजती आकाशीं ।
यागांचिया ॥ ८२ ॥ पै पारिवें जैसा किरिटी । चढला
नभाचिये पोटीं । पारवी देखोनि लोटी । आंगचि सगळें
॥ ८३ ॥ हें ना धनगर्जनासरिसा । मयूर बोवाडे आकाशा ।
ज्ञाता ज्ञेया देखोनि तैसा । धांवचि घे ॥ ८४ ॥ ह्मणोनि
ज्ञान ज्ञेय ज्ञाता । हे त्रिविध गा पंडुसुता । होयचि कर्मां
समस्तां । प्रवृत्ति येथ ॥ ८५ ॥ [कर्ता] परि तेचि ज्ञेय
विपर्ये । जरी ज्ञातयाचें प्रिय होये । तरी भोगावयासाहे ।
क्षणही विलंब ॥ ८६ ॥ ना तरी अवचेंटें । तेंचि विरुद्ध
होऊनि भेटे । तरि युगांत वाटे । सांडावया ॥ ८७ ॥
व्याळा कां हागा । वरपडा जालेया नरा । हर्ष आणि दरा ।
सरसाचि उठी ॥ ८८ ॥ तैसें ज्ञेय प्रियाप्रियें । देखिलेनि
ज्ञातया होये । मग त्यागस्वीकारी वाहे । व्यापारातें ॥ ८९ ॥
तेथ रोगी प्रतिमंल्लाचा । गोसावी सर्वदळाचा । रथ सांडूनि
पायांचा । होय जैसा ॥ ९० ॥ तैसें ज्ञातेपणें जें असे ।
तें ये कर्ता ऐसिये दशे । जेविंतें बैसलें जैस । रंधन
करू ॥ ९१ ॥ कां मंवरेंचि केला मळा । वरेंकल जाला
अंकसळा । ना ना देव रिंगला देउळा- । चिया कामा ॥ ९२ ॥
तैसा ज्ञेयांचि हांवा । ज्ञाता इंद्रियाचा मेळवा । राहाटवी तेथ
पांडवा । कर्ता होय ॥ ९३ ॥ आणि आपण होउनी कर्ता ।
ज्ञाना आणि करंणता । तेथ ज्ञेयचि स्वभावता । कार्य होय
॥ ९४ ॥ ऐसा ज्ञानाचिये निजगती । पालट पडे गा सुमती ।
नेत्राची शोभा रातीं । पालटे जैसी ॥ ९५ ॥ कां अदृष्ट
जालिया उदासु । पालटे श्रीमंताचा विलासु । पूर्णिमेपाठीं
शीतांछुं । पालटे जैसा ॥ ९६ ॥ तैसा चाळितां करेणें ।
ज्ञाता वेष्टिजे कर्तेपणें । तेथिचीं तियें लक्षणें । ऐक आतां
॥ ९७ ॥ तरि बुद्धि आणि मन । चित्त अहंकार हन ।
हें चतुर्विध चिन्ह । अंतःकरणचें ॥ ९८ ॥ बाह्य त्वचा
श्रवण । चक्षु रसना घ्राण । हें पंचविध जाण । इंद्रिय गा
॥ ९९ ॥ तेथ आंतुलें तंव करेणें । कर्ता कर्तव्या घे उभाणें ।
मग तें जरी जाणें । सुखा येतें ॥ १०० ॥ तरि बाहेरिलें
तियेंही । चक्षुरादिकें दाहाही । उठोनि लवलाही । व्यापारा
सुये ॥ १ ॥ मग तो इंद्रियैकदंब । करविजे तंव रेंबि । जंव

१ आकार. २ किरण. ३ कळी. ४ घोडे. ५ खोगीर
पाठीवर नसलेले. ६ नामें व रूपें. ७ सुखदुःखभोग.
८ गाढ झोंपेंत. ९ अज्ञानाच्या. १० उपजतांच. ११ जाणा-
वयाचा विषयरूप दगड. १२ आपण मागें उभें राहून पुढें वि-
षयवृत्ति. १३ मार्ग, संबंध. १४ ज्ञानें. १५ वेवितसे, घालीतसे.
१६ आम्रफळांन. १७ शेवटापार्शी. १८ धान्याचें. १९ मार्गी.
२० शेवट. २१ अल्प, थोडें. २२ मत्स्याला. २३ बगळा.
२४ ब्रव्याला, ठेव्याला. २५ उतरणीकडे. २६ घ्राणी,
बासावर. २७ संख्याकाळ, धार काढण्याची वेळ.

१ शिक्षा. २ पारवा पक्षी. ३ उलटे. ४ कदाचित्.
५ एकाएकी. ६ प्रलयासारखें संकट. ७ प्राप्त. ८ प्रिय किंवा
अप्रिय ज्ञेय विषय पाहून ज्ञात्याला तसें=पूर्वोक्तासारखें
होतें. ९ ग्रीति. १० दुसऱ्या मल्लाच्या. ११ पायीं चालणें.
१२ जेवणारें. १३ स्वयंपाकास. १४ अमरानें. १५ कसोटी.
१६ धातू लावून त्याची परीक्षा करणारा. १७ विषयेच्छेन.
१८ विषयज्ञ. १९ क्रियेचें साधन. २० शरीरादि विषय.
२१ देव. २२ चंद्र. २३ इंद्रियें. २४ मनादि क्रियासाधन.
२५ माप. २६ घाली. २७ समुदाय. २८ राबणूक.

कर्तव्याचा लाभ । हातासि ये ॥ २ ॥ ना तें कर्तव्य जरी दुःखें । फळेस ऐसे देखे । तो लावी त्यागमुखें । तिचें दाहाही ॥ ३ ॥ मग फिटे दुःखाचा ठावो । तंव राहाटवी रात्रिदिनो । विकणुवातें करौवो । जयापरी ॥ ४ ॥ तैसेंनि त्यागस्वीकारी । बाहतां इंद्रियांची धुरी । ज्ञातयातें अवधारी । कर्ता ह्मणिए ॥ ५ ॥ [करण] आणि कर्तयाच्या सर्व कर्मी । आउतांचिया परी क्षमी । ह्मणोनं इंद्रियांतें आह्मी । करणें ह्मणों ॥ ६ ॥ [कर्म] आणि हेचि करणेंवरी । कर्ता क्रिया ज्या उभारी । तिया व्यापे तें अवधारी । कर्म एय ॥ ७ ॥ सोनाराचिया बुद्धी लेणें । व्यापे चंद्रकरीं चांदिणें । कां व्यापे वेव्हारूपणें । वेली जैसी ॥ ८ ॥ ना ना प्रभा व्यापे प्रकाशु । गोडिया इधुरसु । हें असो अवकाशु । आकाशीं जैसा ॥ ९ ॥ तैसें कर्तयाचिया क्रिया । व्यापलें जें धनंजया । तें कर्म गा बोलावया । आन नाही ॥ १० ॥ [इति] एवं कर्म कर्ता करण । या तिहींचेंही लक्षण । सांगितलें तुज विचक्षण- । शिरोमणी ॥ ११ ॥ [त्रिविधः कर्मसंप्रदः] एय ज्ञाता ज्ञान ज्ञेय । हें कर्माचें प्रवृत्तित्रय । तैसेंचि कर्ता करण कार्य । हा कर्मसंचय ॥ १२ ॥ वन्हीं ठेविला असे भ्रम । आधि बीजीं जेविं डुम । कां मनीं जोडे काम । सदां जैसा ॥ १३ ॥ तैसा कर्ता क्रिया करणी । कर्माचें आहे जितेंवणी । सोनं जैसं खाणीं । सुवर्णाचिये ॥ १४ ॥ ह्मणोनं हें कार्य मी कर्ता । ऐसं आधि जेय पंडुसुता । तेथ आत्मा दूरी समस्तां । क्रियांपासीं ॥ १५ ॥ यालागीं पुढतपुढती । आत्मा वेगळाचि सुमती । आतां असो हें किती । जाणतासि तूं ॥ १६ ॥

“ज्ञान, ज्ञाता आणि ज्ञेय हीं जीं जगाचीं तीन बीजें, तींच निःसंशय कर्मप्रवृत्तीस कारणीभूत आहेत हें ध्यानांत ठेव. ४६१ तर आतां धनंजया! ह्या तिघांच्या लक्षणांचें निरनिराळें विवेचन करूं, ऐक. ४६२ जीवरूप सूर्यबिंबाचे श्रोत्रादिक पांच किरण धावून येऊन विषयरूप कमळाची कळी उकलतात. ४६३ किंवा जीव हाच कोणी एक राजा; त्याचे उपलाणे वारू, इंद्रियांचीं नांवें व रूपे घेऊन विषयदेशाचे सुखदुःखरूप भोग हीच लूट, ती आणतात. ४६४ हें असो. ह्या इंद्रियांमध्ये जें वागते, जें सुखदुःखास घेऊन जिव्हास भेटतें; तें ज्ञान गाढनिद्रेमध्ये जेथें लय पावतें;

४६५ त्या जिवाचें नांव ज्ञाता. आणि आतां जें हें सांगितलें तें अर्जुना! येथें ज्ञान असें समजावें. ४६६ हे किरीटी! तें अविद्येच्या पोटी जन्मल्याबरोबरच आपल्याला तीन ठिकाणीं विभागून सोडतें. ४६७ जाणावयाचा विषयरूप जो दगड, तो आपल्या धांवच्याही पुढें घालून मागच्या बाजूला जो ज्ञातृत्वानें उभारतो, ४६८ मग ज्ञाता आणि ज्ञेय ह्या दोघांनाही नांदणूक करण्याचा जो मार्ग, तो मध्ये जें निपजल्याच्या योगानें वाहतो; ४६९ ज्ञेयाची शांव लागली ह्मणजे त्याची धांव संपते; तेंच ज्ञान सकल पदार्थास नांवारूपास आणतें; ४७० अरे! सामान्य ज्ञान ह्मणतात तें हें होय. ह्या भाषणांत संशय नाही. आतां ज्ञेयाचें लक्षण ऐक. ४७१ तर शब्द, स्पर्श, रूप, रस, गंध हा जो पांच प्रकारचा आभास आहे, तो ज्ञेयाचा आहे. ४७२ एकाच अव्ययाच्या फलानें रस, वर्ण, गंध स्पर्श येणेंकरून वेगवेगळ्या इंद्रियांना भेटावें. ४७३ त्याप्रमाणें ज्ञेय ह्मणजे विषय जरी एकच आहे, तरी तो इंद्रियांच्या द्वारानें ज्ञानाचा स्वीकार करतो ह्मणून त्याचेही पांच प्रकार होतात. ४७४ आणखी प्रवाहाचें जाणें समुद्रापर्यंत; धांवणें सीमेपर्यंत गेलें कीं संपतें; किंवा फळ आलें कीं जशी धान्याची वाढ खुंटते, ४७५ त्याप्रमाणें अर्जुना! इंद्रियांच्या मार्गानें धांवतांना ज्ञानाचा जेथें शेवट होतो, तें ज्ञेयाचें स्वरूप होय. ४७६ अशा प्रकारें धनंजया! ज्ञाता, ज्ञान आणि ज्ञेय ह्या तिहींचें स्वरूप सांगितलें. ह्या तिघांकडून होणाऱ्या ज्या क्रिया, ती प्रवृत्ति होय. हें लक्षांत असूं दे. ४७७ कारण, शब्दादिविषय हें जें पांच प्रकारचें ज्ञेय, तें प्रिय किंवा अप्रिय कोणत्या तरी एका प्रकारची, ४७८ अल्पता जाणेंपर्यंत ज्ञात्याला ज्ञान दाखवून देत नाही, तोपर्यंत तो स्वीकार करण्याला किंवा त्याग करण्याला सरसावतोच. ४७९ परंतु मासा पाहिला ह्मणजे जसा बगळा; द्रव्याला पाहिलें ह्मणजे जसा भिकारी;

१ फोलयुक्त धान्याला. २ सुपाचा वारा. ३ प्रवृत्ति. ४ नांगरादि. ५ समर्थ. ६ क्रियासाधन. ७ विस्तारानें. ८ अथवा. ९ कर्माचें साहित्य. १० जिन्हवाळा.

किंवा स्त्रीला पाहून जसा विषयी पुरुष उता-
वळा होतो, त्याप्रमाणे, ४८० पाणी जसें स-
खल प्रदेशाकडे धांवते; किंवा भ्रमर जसा पु-
ष्पाच्या परिमळाकडे धांवतो; किंवा सायंकाळीं
धार काढण्याच्या वेळेला जसें वासरू सुटते,
४८१ अरे! स्वर्गांतल्या उर्वशीची कीर्ति ऐकू-
नच मनुष्ये जशीं आकाशामध्ये अज्ञानाच्या
हुंड्या पाठवितात, ४८२ किंवा अर्जुना!
पारवा आकाशांत उंच गेलेला असला, आणि
पारवी त्याच्या दृष्टीस पडली, ह्मणजे तो जसा
सारें आंग एकदम धाडकर खालीं टाकून देतो,
४८३ त्याप्रमाणे, किंवा मेघगर्जनेबरोबर मोर
जसा आकाशाकडे धांव घेत सुटतो, त्याप्रमाणे
ज्ञेयाला-ह्मणजे विषयांना पाहून ज्ञाताही धांव
घेत सुटतो. ४८४ ह्मणून हे अर्जुना! ज्ञान,
ज्ञेय, आणि ज्ञाता हे तिघेच येथे कर्माच्या सर्व
प्रवृत्तीस कारण आहेत. ४८५ पण तेंच ज्ञेय
(विषय) ज्ञात्याला प्रिय झालें, तर त्याचा
उपभोग घेण्याला एक क्षणाचाही विलंब सहन
होत नाही. ४८६ किंवा एकापकीं तेंच विरुद्ध
होऊन आलें तर सोडवावयाला युगांत झाला
असें वाटतें. ४८७ पुरुषाला सर्प किंवा हार
ह्यांचा लाभ झाला तर, हर्ष आणि भय दोन्ही
एकदमच उठतात, ४८८ तसें ज्ञात्याला,
ज्ञेयामध्ये प्रिय किंवा अप्रिय दृष्टीस पडलें
ह्मणजे होऊन जातें. आणि मग तो त्याग किंवा
स्वीकार ह्याचा अवलंब करतो. ४८९ त्या
वेळेस दुसऱ्या मलाबरोबर कुस्ती धरण्याची
ज्याला हौस असते, तो सर्व सेनापतींचा अ-
धिपती असूनही रथांतून उतरून पायीं चालूं
लागतो, ४९० त्याप्रमाणे ज्ञातेपणानें जें असतें
तेंच कर्ता ह्या स्थितीला पोचतें. जेवणारांनीं
जसें स्वयंपाक करावयाला बसावें, ४९१ किंवा
भ्रमरांनींच जसा मळा लावावा, कसोटीनेंच
जसें परीक्षक बनावें, ४९२ त्याप्रमाणे अर्जुना!
ज्ञेयाच्या-विषयाच्या-इच्छेनें ज्ञाता-विषयज्ञ-
जेव्हां इंद्रियसमुदाय कामास लावतो, तेव्हां
तो कर्ता होतो. ४९३ आणखी कर्ता आपण-

हून ज्ञानाला क्रियेचें साधन करतो, तेव्हां
ज्ञेय असतें तें आपोआपच कार्य होते. ४९४
हे बुद्धिमंता! अशा प्रकारें स्वयंधर्मानें ज्ञा-
नाच्या गतीमध्ये पालट होतो. रात्री नेत्रांची
शोभा ज्याप्रमाणे पालटते, ४९५ किंवा दैव
फिरलें ह्मणजे श्रीमंताच्या विलासांत व्यत्यय
येतो, पूर्णिमेनंतर चंद्र जसा बदलतो, ४९६
त्याप्रमाणे इंद्रियांची हालचाल करण्यामुळें
ज्ञाता असतो तो कर्तेपणामध्ये गुंततो. तेथचीं
त्यांचीं लक्षणे आतां ऐक. ४९७ तर बुद्धि आणि
मन; चित्त आणि अहंकार; हे चार प्रकारचें
लक्षण अंतःकरणाचें होय. ४९८ बाहेरची
त्वचा; कान; डोळे; जिह्वा; नाक; हे इंद्रियांचे
पांच प्रकार होत. ४९९ तेव्हां आंतील मनादि-
क्रियासाधनांनीं कर्ता आहे तो, कर्तव्याचें
माप घेऊं लागतो. आणि त्यांत सुखप्राप्ती
होते असें जर त्यास वाटलें, ५०० तर बाहे-
रील नेत्र आदिकरून जीं दहा इंद्रिये, तींही
तत्काळ त्याच व्यापारांत घालतो. ५०१ मग
तो इंद्रियसमुदाय, कर्तव्याचा लाभ हातास
येईपर्यंत त्यांस राबवितो. ५०२ किंवा तेच
कर्तव्यांत जर दुःख प्राप्त होतें असें दिसून
येईल, तर तो त्या दहानांही त्याजपासून
पराड्मुख करतो. ५०३ मग दुःखाचा गंड
मोडेपर्यंत त्यांना रात्रंदिवस राबवितो. सुपा-
चा वारा ज्याप्रमाणे धान्याचा स्वीकार करतो,
व कोंड्याचा त्याग करतो, ५०४ त्याप्रमाणे
त्याग आणि स्वीकार करून इंद्रियांची प्रवृत्ति
होत असली, ह्मणजे ज्ञात्याला कर्ता असें
ह्मणतात. ५०५ आणि कर्त्याच्या सर्व कर्मा-
मध्ये इंद्रिये हीं नांगराप्रमाणे काम करण्यास
समर्थ असतात ह्मणून त्यांस आह्मी क्रियेचीं
साधनें असें ह्मणतो. ५०६ आणि ह्याच
इंद्रियांकडून कर्ता ज्या ज्या क्रिया उत्पन्न
करतो, त्यांनीं जें व्यास झालेलें असतें तें कर्म
होय. हे ध्यानांत असूं दे. ५०७ सोनाराच्या
बुखीनें अलंकार होतात; चंद्रकिरणांनीं
चांदणें होतें; किंवा विस्तारानें जशी वेली

पसरते, ५०८ किंवा प्रभेनें जसा प्रकाश प्राप्त होतो; गोडीनें जसा ऊंस व्याप्त होतो; हे असो, अवकाशामध्ये जसा अवकाश व्याप्त होतो; त्याप्रमाणे हे धनंजया! कर्त्याच्या क्रियेनें व्यापलेले जे, ते कर्म होय. ह्या बोलण्यांत संशय नाही. ५१० अशा प्रकारे हे मर्मज्ञशिरोमणे! कर्म, कर्ता, आणि कारण ह्या तिहींचंही लक्षण तुला सांगितले. ५११ येथे ज्ञाता, ज्ञान, आणि ज्ञेय ह्या कर्माच्या तीन प्रवृत्ति आहेत. त्याचप्रमाणे कर्ता, कारण आणि कार्य हे कर्माचे साहित्य होय. ५१२ अग्नीमध्ये जसा धूर ठेवलेला असतो; बीजामध्ये ज्याप्रमाणे वृक्ष ठेवलेला असतो; किंवा निरंतर मनामध्ये जसा काम उत्पन्न झालेला असतो, ५१३ त्याप्रमाणे; किंवा सोन्याच्या खाणीमध्ये जसे सोने असावे त्याप्रमाणे; कर्ता, क्रिया आणि क्रियासाधन ही तिन्ही मिळून कर्माचा जिव्हाळा आहे. ५१४ ह्मणून हे अर्जुना! हे कार्य, मी हा कर्ता; असे जेथे असते, तेथे सर्व क्रियांपासून दूर असणारा आत्मा त्या क्रियेपाशीं येतो. ५१५ ह्याकरितां हे सुमती! पुन्हा पुन्हा आत्मा हा अगदीं निराळाच आहे हे ध्यानांत ठेव. आतां हे किती सांगावे? तूही जाणतोसच. ह्मणून ते असो." ५१६

ज्ञानं कर्म च कर्ता च त्रिधैव गुणभेदतः ।

प्रोच्यते गुणसंख्याने यथावच्छृणु तान्यपि ॥१९॥

[ज्ञानमिति] परि सांगितले जे ज्ञान । कर्म कर्ता हन । ते तीन्ही तिहीं ठायीं भिन्न । गुणीं आहाति ॥ १७ ॥ ह्मणोनि ज्ञाना कर्मा कर्तया । पातेजों नये धनंजया । जे दोनी बांधती सोडावया । ऐकचि प्रौढ ॥ १८ ॥ [प्रोच्यते गुणसंख्याने] ते सात्विक ठाऊं होये । तो गुणभेद सांगों पाहें । जो सांख्यशास्त्री आहे । उवाइला ॥ १९ ॥ जे विचारक्षीरसमुद्र । स्वबोधकुमुदिनीचंद्र । ज्ञानढोळसां नरेंद्र । शास्त्रांचा जे ॥ ५२० ॥ कीं प्रकृतिपुरुष दोनी । मिसळलीं दिवोरजनी । तियें निवडिता त्रिभुवनी । मूर्तड जे ॥ २१ ॥

जेथ अपारा मोहराशी । तत्वाच्या मापीं चोविसीं । उमाणें घेऊनि पंरेशीं । सुरवाडिजे ॥ २२ ॥ अर्जुना तें सांख्यशास्त्र । पडे जयाचें स्तोत्र । [यथावच्छृणु तान्यपि] तें गुणभेदचरित्र । ऐसे आहे ॥ २३ ॥ जे आपुलेनि आंगिकें । त्रिविधपणाचेनि अंके । दृश्यजात तितकें । अंकित केले ॥ २४ ॥ एवं सत्वरजतमा । तिहींची एवढी असे महिमा । जे त्रैविध्य आदिब्रह्मा । अतिकमी ॥ २५ ॥ परि विश्वाची आवडी मीदी । जेणें भेदलेनि गुणभेदी । पडिली तें तंव आदी । ज्ञान सांगों ॥ २६ ॥ जे दिष्टी जरी चोख कीजे । तरी भलतेंही चोख सुजे । तैसे ज्ञानें शुद्धें लाहिजे । सर्वही शुद्ध ॥ २७ ॥ ह्मणोनि तें सात्विक ज्ञान । आतां सांगों दे अवधान । कैवल्यगुणनिधान । श्रीकृष्ण ह्मणे ॥ २८ ॥

“तसेंच ज्ञान, कर्म आणि कर्ता हीं तीन सांगितलीं खरीं, परंतु गुणांच्या संबंधानें आणखीही तीन तीन भेद होतात. ५१७ ह्मणून हे धनंजया! ज्ञानावर, कर्मावर किंवा कर्त्यावरही विश्वास ठेवूं नये. कारण, दोन्हीही बांधणाऱ्यांपासून सोडविण्याला समर्थ असें एकच आहे. ५१८ तें सात्विक नीट रीतीनें समजेल असे त्याचे निरनिराळे भेद आहेत ते आतां सांगतां. त्यांचें विवरण सांख्यशास्त्रामध्ये केलेले आहे. ५१९ जें विचाराचा क्षीरसमुद्र; आत्मज्ञानरूप कमलाला प्रफुल्लित करणारे चंद्र; ज्ञाननेत्रानें पाहणाऱांना जें शास्त्राचा राजा; ५२० किंवा प्रकृति आणि पुरुष हीं दिवसरात्रीप्रमाणें मिश्र झालेल्याची निवडणूक करण्याला त्रिभुवनामध्ये जे सूर्य; ५२१ जेथें मोहाच्या अपार राशी चोवीस तत्वांच्या मापानें माप घेऊन परतत्त्वानें सुख प्राप्त होतें, ५२२ अर्जुना! तें सांख्यशास्त्र ज्याची स्तुति गातें; तें गुणभेदाचें चरित्र असें आहे. ५२३ जें आपल्या सामर्थ्यानें तीन प्रकारच्या योगेंकरून जितकें ह्मणून दृश्यजात आहे, तितकें सर्व अंकित करून

१ विश्वासू नये. २ रज व तम. ३ सत्व-समर्थ. ४ स्पष्ट केला. ५ आत्मबोधकमलास प्रफुल्लितकर्ता चंद्र. ६ दिवस-रात्रीप्रमाणें. ७ सूर्य.

१ माप. २ परतत्वाशीं. ३ सुखी व्हावें. ४ स्वप्न. ५ साक्षानें. ६ आकारानें. ७ तीन प्रकारांनीं. ८ मेळा. ९ कळे, समजे.

सोडतें. ५२४ अशा प्रकारें सत्व, रज आणि तम ह्या तिहींची व्यापकता येवढी मोठी आहे कीं, तें ब्रह्मदेवापासून तों किड्यापर्यंत सर्वांचें अतिक्रमण करतें. ५२५ परंतु विश्वातील सर्व समुदाय ज्याच्या भेदानें भिन्न भिन्न गुणात्मक झाले आहेत, तें ज्ञान आर्थां सांगूं. ५२६ कारण, दृष्टि चांगली झाली झणजे कोणतेंही चांगलें समजतें. त्याप्रमाणें शुद्धज्ञानानें सारेंच शुद्ध प्राप्त होतें.” ५२७ झणून कैवल्यगुणनिधान श्रीकृष्ण झणतात “तें सात्विक ज्ञान आतां सांगूं. लक्ष्य दे.” ५२८

सर्वभूतेषु येनैकं भावमव्ययमीक्षते ।

अविभक्तं विभक्तेषु तज्ज्ञानं विद्धि सात्विकम् ॥२०॥

[सर्वभूतेषु येनैकं] तरी अर्जुना गा तें फुडें । सात्विक ज्ञान चोखडें । ज्याच्या उदयीं ज्ञेय बुडे । ज्ञातेनिशीं ॥ २९ ॥ जेसा सूर्य न देखे आंधारें । सैरिता नेणजती सागरें । कां कवळिलिया न धरे । आत्मच्छाया ॥ ५३० ॥ तथापरी जया ज्ञाना । शिवादि तृणावसाना । इया भूत-व्यक्ति भिन्ना । नाडळती ॥ ३१ ॥ [भावमव्ययमीक्षते] जेंसं हातें चित्र पाहतां । होय पाणियें मीठ धुतां । कां चेंबोनि खप्रा येतां । जेंसं होय ॥ ३२ ॥ तेंसं ज्ञानें जेणें । करितां ज्ञातव्यातें पाहाणें । जाणता ना जाणणें । जाणवें उरे ॥ ३३ ॥ [अविभक्तं विभक्तेषु] पै सोनं आटुनि लेणीं । न काढिती आपुलिया जायणी । कां तरंग न घेपती पाणी । गाळुनि जेंसं ॥ ३४ ॥ तैसी जया ज्ञानाचिया हाता । न लगेचि दृश्यकथा । [तज्ज्ञानं विद्धि सात्विकम्] तें ज्ञान जाण सर्वथा । सात्विक गा ॥ ३५ ॥ आरिसा पाहों जातां कोडें । जेंसं पाहातेंचि कां रिगे पुडें । तेंसं ज्ञेय लोटोनि पडे । ज्ञाताचि जें ॥ ३६ ॥ पुढती तेंचि सात्विक ज्ञान । जें मोक्षलक्ष्मीचें भुवन । हें असो एक चिन्ह । राजसाचें ॥ ३७ ॥

“तर अर्जुना ! ज्याच्या उदयानें ज्ञात्या-सहवर्तमान ज्ञेय लुप्त होऊन जातें, तेंच शुद्ध सात्विक ज्ञान हें स्पष्ट समजावें. ५२९ सूर्य ज्याप्रमाणें आंधारास पहात नाही; नद्या समुद्राला पहात नाहीत; किंवा आपल्या छायेला जशी वेगेंत धरतां येत नाही; ५३० त्याप्रमाणें

ज्या ज्ञानाला शिवापासून तृणापर्यंत ह्या भूत-व्यक्ति भिन्न अशा दिसतच नाहीत. ५३१ सारवून चित्र पाहतांना, पाण्यानें मीठ धुतांना, जसें होतें; किंवा जागे झाल्यानंतर स्वप्राची जशी अवस्था होते, ५३२ त्याप्रमाणें ज्या ज्ञानाच्या योगेंकरून विषयांस पाहिलें असतां विषय, ज्ञाता, व ज्ञान हीं तिन्हीही उरत नाहीत, ५३३ आपल्या आवडीसाठीं अलंकार आटून सोनं काढतात असें नाही, किंवा पाणी टाकून जसें तरंग घेत नाहीत, ५३४ त्याप्रमाणें ज्या ज्ञानाच्या हाताला दृश्यपदार्थ झणून लागतच नाहीत. तेंच ज्ञान खरोखर सात्विक आहे असें समज. ५३५ कौतुकांनं आरसा पहावयास जावें तों, पहाणाराच पुढें उभा राहतो. त्याप्रमाणें जेथें जें ज्ञाताच बनून राहतें; ५३६ मोक्षलक्ष्मीचें मंदिर असें जें, तेंच सात्विक ज्ञान श्रेष्ठ होय. हें असो. आतां राजस ज्ञानाचें लक्षण पेक.” ५३७

पृथक्त्वे न तु यज्ज्ञानं नानाभावान्पृथग्विधान् ।

वेत्ति सर्वेषु भूतेषु तज्ज्ञानं विद्धि राजसम् ॥ २१ ॥

[पृथक्त्वेन तु यज्ज्ञानं] तरि पार्था परियेस । तें ज्ञान गा राजस । जें भेदाची कांस । धरुनि चाले ॥ ३८ ॥ [नानाभावान्पृथग्विधान्] विचित्रता भूतांचिया । आपण आतां ठिकरिया । बहु चक्रे ज्ञातया । आणिली जेणें ॥ ३९ ॥ जेंसं साचा रुपा आड । घालुनि विसराचें कवाड । मग खप्राचें कांवाड । विवरी निद्रा ॥ ५४० ॥ तेंसं खज्ञानाचिये पौळी । बाहेरि मिथ्यामोहाचे खळीं । तिहीं अवस्थांची वझाळी । दावी जें जीवा ॥ ४१ ॥ आळंकार-पणें झांकलें । बाळका सोनं कां वायां गेलें । तेंसं नामीं रूपीं दुरावलें । अद्वैत जया ॥ ४२ ॥ अवतरली गाढग्या घडां । पृथ्वी अनोळख जाली मूढां । वन्हि जाला कौनडा । दीपत्वासाठीं ॥ ४३ ॥ कां वल्लपणाचेनि आरोपें । मूर्खांप्रति तंतु हारपे । ना ना मुग्धां पट लोपे । दाऊनि चित्र ॥ ४४ ॥ तैसी जया ज्ञाना । वेत्ति सर्वेषु भूतेषु जाणोनि भूतव्यक्ती भिन्ना । ऐक्यबोधाची भावना । निर्मोनि गेली

१ शुद्ध. २ नद्या. ३ गवतापर्यंत. ४ न दिसती. ५ सारवून. ६ जागें होऊन. ७ विषयाचें. ८ दृष्टीनं, बुद्धीनं. ९ आवडीनं. १० मंदिर.

१ व्याप्त. २ वेगवेगळीला. ३ चकभूल, भ्रम. ४ ओसें. ५ स्पष्ट करी. ६ आवार. ७ कीडा. ८ घागरीमध्यें. ९ अपरिचित. १० मूर्खांस. ११ नाश पावली.

॥ ४५ ॥ मग इंधनीं भेदला अनळ । फुलावरी परिमळ । कां जळभेदें सकळ । चंद्र जैसा ॥ ४६ ॥ तैसे पदार्थभेद बहुवस । जाणोनि लहान थोर वेष्ट । [तज्ज्ञानं विद्धि राजसं] आतलें तें राजस । ज्ञान येष्ट ॥ ४७ ॥ आतां तामसाचेंही लिंग । सांगेन तें बोळख चांग । डावलावया मातंग- । सदन जैसे ॥ ४८ ॥

“तर पार्था! ऐक. भेदाची कास धरून चालणारें जें ज्ञान, तें राजस होय. ५३८ ज्यानें आपण व्यास होऊन भूतांचे नानाविध भेद करून त्यांस वैचित्र्य आणलें आहे, आणि ज्ञात्यालाच ज्यानें चकभूल करून सोडलें. ५३९ ज्याप्रमाणें खऱ्या स्वरूपाच्या आड विस्मरणाचें कवाड घालून मग शोप जशी स्वप्नाचें ओझें लादते, ५४० त्याप्रमाणें आपल्या ज्ञानाच्या आवाराबाहेर मिथ्या मोहाच्या खळ्यामध्ये जिवाला जें तीन अवस्थांची क्रीडा दाखवितें. ५४१ अलंकारानें मुलांना झांकलें ह्मणून सोनें काय व्यर्थ गेलें? त्याप्रमाणें नामानें आणि रूपानें ज्याला अद्वैत दुरावतें; ५४२ गाडग्यामध्ये आणि घागरीमध्ये शिरली ह्मणून मूर्खाला पृथ्वीची (मातीची) ओळख नाहींशी होते; दिव्याच्या योगानें अग्नि अपरिचित होतो; ५४३ किंवा वस्त्रपणाच्या आरोपामुळें मूर्खाना तंतूच नाहींसे झालेसे वाटतात; किंवा अज्ञानाला चित्र दाखवून कापड नाहींसें होतें; ५४४ त्याप्रमाणें ज्या ज्ञानाला मिळाल्यानें भूतव्यक्ति भिन्न भिन्न आहेत असें वाटतें, व ऐक्यज्ञानाची भावना लयास जाते; ५४५ तेव्हां जळणानें अग्नीचीं जशीं निरनिराळीं स्वरूपें व्हायचीं; फुलांप्रमाणें परिमळ जसा निरनिराळा व्हावा, किंवा पूर्ण असलेला चंद्र जसा निरनिराळ्या जळानीं भिन्न भिन्नरूप व्हावा, ५४६ त्याप्रमाणें अनेक प्रकारचे पदार्थमात्रांचे भेद ते लहानथोरच आहेत हें मनांत आणून व्यास होणारें जें ज्ञान तें राजस होय. ५४७ आतां टाळून जाण्या-

साठीं मांगाचें घर दाखविल्याप्रमाणें तामसाचेंही लक्षण सांगतों. तेंही नीट ध्यानांत ठेव.” ५४८

यत्तु कृत्स्नवदेकस्मिन्कार्ये सक्तमहेतुकम् ।

अतत्त्वार्थवदल्पं च तत्तामसमुदाहृतम् ॥ २२ ॥

[यत्तु] तरि किरिटी जें ज्ञान । हिंडे विधीचेनि वळें हीन । श्रुति पाठमोरी नम । ह्मणोनि तया ॥ ४९ ॥ येरीही शास्त्र बाधकारीं । जें निंदेचे विटाळवरी । बोळविलेंसे ढोंगरी । म्लेंच्छधर्माच्या ॥ ५५० ॥ जें गा ज्ञान ऐसे । गुणप्रहें तामसें । घेतलें भोंवे पिसें । होऊनियां ॥ ५१ ॥ जें सोय-रिके बाध नेणे । पदार्थां निषेध न ह्मणे । निरोपिलें जैसें सुणें । शून्यग्रामी ॥ ५२ ॥ तया तोंडीं जें नोडळे । कां खातां जेणें पोळे । तेंचि येक वाळे । येर घेचि तें ॥ ५३ ॥ पै सोनें चोरितां उदिर । न ह्मणे धरविथर । नेणें मांसखा-इर । काळें गोरें ॥ ५४ ॥ ना ना वनामाजि बोहरी । कंडसणी जेवि न करी । कां जीत मेलें न विचारी । बैसतां मासी ॥ ५५ ॥ अगा वांतां कां वाढिलेया । साजुक कां सडलिया । विवेक कावळिया । नाहीं जैसा ॥ ५६ ॥ तैसें निषिद्धं सांठुनि घावें । कां विहित आदरें ध्यावें । हें विषयांचेनि नावें । नेणेचि जें ॥ ५७ ॥ जेतुलें आड पडे दिटी । तेतुलें घेचि विषयासाठीं । मग तें खीद्रव्य वांटी । शिश्रोदरां ॥ ५८ ॥ तीर्थातीर्थ हे भोष । उदकी नाहीं सनो-ळख । तृषा वोळे तेंचि सुख । वांचूनियां ॥ ५९ ॥ तया-चिपरी खोखाखाय । न ह्मणे निधानिय । तोंडा आवडे तें मेथ्यें । ऐसाचि बोध ॥ ५६० ॥ आणि खीजात तितुकें । त्वचेंद्रियेंचि वोळखे । तियेविषई सोयरिके । सादरचि बहु ॥ ६१ ॥ पै स्वार्थी जें उंपकरे । तयाचि नाम सोयिरें । देहसंबंध न सरे । जिये ज्ञानीं ॥ ६२ ॥ मृत्यूचें आघवेंचि अन्न । आगी आघवेंचि इंधन । तैसें जगचि आपलें धन । तामसज्ञाना ॥ ६३ ॥ [कृत्स्नवदेकस्मिन्] ऐसेनि विश्व सकळ । जेणें विषयचि मानिलें केवळ । तया एक जाण फळ । देहभरण ॥ ६४ ॥ आकाशपतिता नीरा । जसा सिधुचि येक

१ विकृताचरणातें. २ निंदा करून विटाळून टाकलें. ३ तमोगुणरूप नकानें. ४ पिशाच, अस्मिष्ठ. ५ शरीरसंबंधाविषयी. ६ सोडिलें. ७ कुत्रें. ८ ओसाड गांवीं. ९ प्राप्त होत नाहीं. १० त्यागी. ११ बरें वाईट. १२ मांसभक्षक. १३ अग्नी, वणवा. १४ विचार. १५ ओकलेलें. १६ कुजलेलें. १७ अपवित्र. १८ शास्त्रप्रतिपादित. १९ ह्मणणें. २० ओळखीची. २१ हरे. २२ भक्ष्याभक्ष्य. २३ पवित्र. २४ कामास येतें. २५ काष्ठ. २६ विषयच सर्वे जग असें मानलें. २७ पोषण.

१ प्रतिबिंबत्वानें भेद. २ व्यापलें. ३ लक्षण, चिन्ह. ४ मांगाचें घर.

धारा । तैसें कृत्यजात उदरा- । लागींचि बुद्धे ॥ ६५ ॥
 [अद्वैतुकं] वांचूनि खगं नरक आथी । तया हेतु प्रवृत्ती
 निवृत्ती । इये आघवीयेचि राती । जाणिवेची जें ॥ ६६ ॥
 [कार्ये सक्तं] जें देहखंडा नाम आत्मा । ईश्वर पाषाण
 प्रतिमा । यया परीती प्रमा । ढळों नेणे ॥ ६७ ॥ [अतत्त्वा-
 र्थवत्] ह्याने पडिलेनि शरीरें । केलेनिसी आत्मा सरें । मा
 भोगावया उरें । कोण वेणें ॥ ६८ ॥ ना ईश्वर पाहातां
 आहे । तो भोगवी जरी हें होये । तरी देवचि खाये । विकू-
 नियां ॥ ६९ ॥ गांवींचे देवलेश्वर । नियांमकचि होती साचार ।
 तरी देशींचे जोंगर । जगे कां असती ॥ ५७० ॥ [अल्पं च]
 ऐसा विपार्यें देव मानिजे । तरी पाषाणमात्रचि जाणिजे ।
 आणि आत्मा तंव ह्याणिजे । देहातेंचि ॥ ७१ ॥ येरें पाप-
 पुण्यादिकें । तें आघवेंचि करोनि लटिकें । हित मानी अभि-
 मुखें । चरणें जें कां ॥ ७२ ॥ जें चामाचे ढोळे दाविती ।
 जें इंद्रियें गोडी लाविती । तेंचि साच हे प्रेतीती । कुंडी
 जया ॥ ७३ ॥ [तत्तामसं] किंवहुना ऐसी प्रथा । वाढती
 देखसी पार्थी । धूमाची वेली वृथा । आकाशीं जैसी ॥ ७४ ॥
 कोरडा ना बोला । उपयोगा आथी गेला । तो वाढोनि
 मोडला । भेंडें जैसा ॥ ७५ ॥ ना ना उसांचीं कणसें । कां
 नपुंसकें माणुसें । वन लागलें जैसें । सोबरीचें ॥ ७६ ॥ ना
 तरी बाळकाचें मन । कां चोराघरीचें धन । अथवा गळ-
 स्तन । शोळियेचे ॥ ७७ ॥ तैसें जें बांयाणें । बोसोळ दिसे
 जाणणें । तयातें मी ह्याणें । तामस ज्ञान ॥ ७८ ॥ [उदाहृतं]
 तेंही ज्ञान इया भाषा । बोलिजे तो भाव ऐसा । जात्य-
 धाचा कां जैसा । ढोळा वाड ॥ ७९ ॥ कां बधिराचे नीट
 कान । अपेया नाम पान । तैसें आडनांव ज्ञान । तामसा
 तया ॥ ५८० ॥ हें असो किती बोलवें । तरी ऐसें जें
 देखावें । तें ज्ञान नोहे जाणावें । ढोळेंस तम ॥ ८१ ॥ एवं
 तिहीं गुणी । भेदलें र्थथालक्षणीं । ज्ञान श्रोतेशिरोमणी ।
 दाविलें तुज ॥ ८२ ॥ आतां याचि त्रिप्रकारा । ज्ञानाचेनि
 धनुर्धरा । प्रकाशें होती गोचरा । कर्तयांच्या क्रिया ॥ ८३ ॥
 ह्यार्णानि कर्म पै गा । अनुसरे तिहीं भागां । मोहरें जालियां
 बोधा । तोय जैसें ॥ ८४ ॥ तेंचि ज्ञानत्रयवशें । त्रिविध कर्म
 जें असे । तेथ सात्विक तंव ऐसें । परिस आधीं ॥ ८५ ॥

“तर अर्जुना ! जें ज्ञान विधिरूप वस्त्रा-
 वांचून हिंडतें; आणि तें नग्न असल्यामुळे

१ परिच्छिन्न देहाला. २ बुद्धि. ३ कर्मासहवर्तमान.
 ४ नासे. ५ एक नियते. ६ कश्चित्. ७ खाणें. ८ चामड्याचे.
 ९ अनुभव. १० खरी. ११ स्थिति, ख्याति. १२ भेंड्याचा
 वृक्ष. १३ निवडुंगाचें. १४ निरर्थक. १५ शून्य, ओसाळ,
 वाईट. १६ मोठा. १७ प्रत्यक्ष अंधार. १८ सर्वे लक्षणानीं
 युक्त. १९ प्रत्यक्ष. २० मार्गास लागलेले.

त्यास श्रुति पाठमोरी होते. ५४९ इतर शा-
 ख्यांनींही ज्याच्यावर निंदेचा बहिष्कार ठेवून
 मल्लच्छधर्माच्या डोंगरावर बोलवण करून
 दिली आहे. ५५० असें जें ज्ञान तामसगुणाच्या
 आग्रहानें तामसानें घेतलेलें, जें वेडें होऊन
 भ्रमत राहणारें; ५५१ ज्याला शरीरसंबंधाविषयीं
 प्रतिबंध ह्याणून ठाऊकच नाही; पदार्थांमध्ये
 निषेध ह्याणून ह्याणतच नाही. ओसाड गांवांत
 कुत्रें सोडलें ह्याणजे, ५५२ त्याच्या तोंडाला
 जेवढें मिळत नाही, किंवा खातांना ज्यानें
 तोंड भाजतें, तेवढें मात्र टाकावयाचें. बाकी
 सारें स्वाहा ! ५५३ तसेंच उंदीर सोने चोर-
 तांना हलकें भारी ह्याणत नाही; किंवा मांस
 खाणारा काळें गोरें ह्याचा विचार करीत नाही,
 ५५४ किंवा वनामध्ये अग्नि जसा कांहीं विचार
 करीत नाही; किंवा माशी वसतांना हा जि-
 वंत आहे कां मेलेला आहे ह्याचा विचार
 करीत नाही; ५५५ अरे ! ओकलेलें कीं आंव-
 लेलें; ताजें कीं कुजलेलें; ह्याचा विचार जसा
 कावळ्याला नाही; ५५६ त्याप्रमाणें अविहित
 असेल तें टाकावें; किंवा विहित असेल त्याचा
 स्वीकार करावा; हें विषयाच्या संबंधानें
 ज्याला माहितच नाही; ५५७ जितकें ह्याणून
 दृष्टीपुढें येईल, तितकें विषयाकरितां संपादन
 करावयाचेंच, आणि मग तें स्त्री व द्रव्य, शि-
 स्मोदराला वांटून द्यावयाचें. ५५८ उदकामध्ये
 तीर्थ कोणतें, आणि तीर्थ नव्हे असें कोणतें,
 ह्या शब्दांची ओळख सुद्धां नाही. तहान भा-
 गते येवढें सुख ठाऊक. दुसरें कांहीं जाणत
 नाही. ५५९ त्याप्रमाणें भक्ष्य कोणतें व अ-
 भक्ष्य कोणतें ? ह्याचा विचार करावयाचा
 नाही; निध कोणतें आणि अनिध कोणतें हें
 मनांत आणावयाचें नाही; तोंडाला गोड
 लागलें कीं तें पवित्र हीच मनाची आवड.
 ५६० आणखी स्त्रीची जात ह्याणून जितकी
 तितकी इंद्रियावरूनच ओळखावयाची. ति-
 च्याशीं संबंध ठेवावयाचा ह्याला कीं तिसरा
 पाय ! ५६१ आपल्या स्वार्थामध्ये कार्मी

पडेल तेवढ्याचेंच नांव सोयरे. ज्या ज्ञानाला देहसंबंधाचा विचार ह्मणून ठाऊकच नाही. ५६२ मृत्यूला सारेंच भक्ष्य; अग्नीला सारेंच जळण; त्याप्रमाणें सारें जगही तामस ज्ञानाचीच मालमत्ता आहे. ५६३ अशा प्रकारें सारें विश्व हें केवळ विषयच आहे असें ज्यानें मानलें, त्याला देहाचें पोषण करणें येवढेंच कायतें फळ असतें. ५६४ आकाशांतून पडलेल्या पाण्याला समुद्र हा एकच कायतो आश्रय; त्याप्रमाणें जें जें कृत्य ह्मणून करावयाचें तें पोटाकरितां करावयाचें ह्मणून समजणें. ५६५ शिवाय स्वर्ग आणि नरक जे आहेत, त्यांना प्रवृत्ति आणि निवृत्ति हे हेतु आहेत. ह्या सर्व ज्ञानाची जेथें रात्र असते. ५६६ देहाच्याच तुकड्याला आत्मा हें नांव; दगडाची मूर्ति हाच ईश्वर. ह्याच्या पलीकडे ह्मणून बुद्धि जावयाची नाही.” ५६७ तो ह्मणतो “शरीर पडलें कीं झालें. कर्मही गेलें आणि आत्माही गेला. त्याचा उपभोग घेण्याला कोण राहणार? ५६८ किंवा पाहतांना ईश्वर असेल व तोच जर हें होणारें सर्व भोगवीत असेल, तर तो देवच विकून खावा ह्मणजे झालें. ५६९ गांवच्या देवळांतले देवच जर जगाचे नियामक असतील, तर देशांतले डोंगर तरी स्वस्थ कां बसतात?” ५७० असा चुकून देव मानलाच तर दगडाचा मात्र मानावयाचा. आणखी देहालाच आत्मा ह्मणावयाचा. ५७१ इतर जीं पापपुण्यादिक आहेत, तीं सारीं खोटीं करून अग्निसारखें पाहिजे तें खात सुटावयाचें हेंच कायतें हित. ५७२ चर्मचक्षूंनीं जें दिसेल, ज्याची इंद्रियें गोडी लावून देतील, तेंच खरें अशी ज्याची पक्की खात्री; ५७३ किंबहुना अर्जुना! आकाशामध्ये ज्याप्रमाणें व्यर्थ धुराची वेल वाढते त्याप्रमाणें अशी वाढती स्थिति ज्याच्या ठिकाणीं पहाशील, ५७४ भेंड जसा कोरडाही नव्हे आणि ओलाही नव्हे. उपयोगास न पडतांच लयास जातो. ५७५ किंवा उसांचीं कणसें; नपुंसक माणसें;

किंवा साबरीचें (निवडुंगाचें) लागलेलें बन; ५७६ किंवा मुलांचें मन; चोराच्या घरचें द्रव्य; अथवा शेळीच्या गळ्याखालचें अचळ; ५७७ त्याप्रमाणें वायफळ, वाईट दिसणारें जें ज्ञान, त्याला मी तामस ज्ञान असें ह्मणतो. ५७८ त्याला देखील ज्ञान हा शब्द लावावयाचा, यांतला भावार्थ पाहिला तर इतकाच कीं, जन्मांधाचे डोळे मोठे मोठे आहेत असें झटल्याप्रमाणेंच. ५७९ किंवा बहिःच्याचे कान नीट आहेत असें ह्मणणें; किंवा अपेयाला पान ह्मणणें; तशापैकींच ह्या तामसाला ‘ज्ञान’ हें फक्त टोपण नांव आहे. ५८० हें असो. किती सांगावें? तर असें ज्ञान दृष्टीस पडतें तें ज्ञान नव्हे. मूर्तिमंत तमच तें असें समजावें. ५८१ अशा प्रकारें हे सर्वश्रेष्ठ श्रोत्या! तीन गुणांनीं ज्ञानाचेही झालेले तीन प्रकार तुला दाखवून दिले. ५८२ आतां धनुर्धरा! ह्याच ज्ञानाच्या तीन प्रकारांनीं कर्त्याच्या क्रिया प्रगट होतात. ५८३ ह्मणून ओघाचे जसे फांटे फुटतात त्याप्रमाणें पाणी जातें, तसें कर्म असतें तेंही ह्या तीन भागानुसार होतें. ५८४ ह्या तीन प्रकारच्या ज्ञानाप्रमाणें होणारें जें तीन प्रकारचें कर्म आहे, त्यांतील सात्विककर्म असें असतें, तें आधीं ऐक.” ५८५

नियतं संगरहितमरागद्वेषतः कृतम् ।

अफलप्रेप्सुना कर्म यत्तत्सात्विकमुच्यते ॥ २३ ॥

[नियतं] तरि स्वाधिकाराचेनि मागें । आलें जें मानिलें आगें । पतिव्रतेचेनि परिष्वंगें । प्रियातें जेसें ॥ ८६ ॥ सांवळ्या आंगा चंदन । प्रेमदालोचना अंजन । तैसें अधिका-रासी मईण । नित्यपणें जें ॥ ८७ ॥ तें नित्यकर्म भलें । होय नैमित्तिकीं सावाइलें । सोनयासि जोडलें । सौरभ्य जसें ॥ ८८ ॥ [संगरहितं] आणि आंगा जीवाची संपत्ती । वेंचूनि करी बाळाची पाळती । परि जीवें उबवणें हे स्थिती । न पाहे माय ॥ ८९ ॥ [अफलप्रेप्सुना कर्म] तैसें सवेंस्वें कर्म अनुष्ठी । परि फळ न धुये दिटी । उखिली

१ आलिंगनानें. २ श्यामवर्ण. ३ स्त्रियांच्या नेत्रांला. ४ भूषण. ५ साष्ट झालें. ६ सुगंध. ७ खर्चून. ८ रक्षण. ९ कंटाळणें, त्रासणें. १० दृष्टीस न घाली. ११ अवघी.

क्रिया पंढी । ब्रह्मीचि करी ॥ ५९० ॥ [अरागद्वेषतः कृतं] आणि प्रिये आलिया खभावें । शैबळ उरे वेंचे ठाडवें नव्हे । तैसें सत्प्रसंगे करावें । पाँढवे जरी ॥ ५९१ ॥ तरि अंकरणाचेनि खेदें । द्वेषातें जिवीं न बांधे । जालियाचेनि आनंदें । फुर्जो नेणें ॥ ५९२ ॥ ऐसऐसिया हातवटिया । कर्म निपजे जें धनजया । [यत्तत्सात्विकमुच्यते] जाण सात्विक हें तथा । गुणनाम गा ॥ ५९३ ॥ ययावरी राजसाचें । लक्षण सांगिल्ले साचें । न करी अवधानाचें । धर्मेपण ॥ ५९४ ॥

“पतिव्रतेचें आलिंगन जसें पतीला व्हावें, त्याप्रमाणें आपल्या अधिकाराच्या मार्गानें आलेलें, जें आंगालाही मान्य झालें, ५८६ काळ्या सावळ्या आंगाला चंदन; स्त्रियांच्या नेत्रांना काजळ; त्याप्रमाणें निरंतरपणानें अधिकारास भूषण. ५८७ तें नित्य कर्मच चांगलें असलें ह्मणजे त्याचा समावेश नैमित्तिकांत होतो. सोन्याला जसा सुगंध प्राप्त व्हावा, ५८८ आणखी आंगाची व जिवाची संपत्ति खर्च करून बाळकाचें पालग्रहण करते; परंतु जिवानें कंटाळावें, ही स्थिति आईला कधीं माहितच नसते. ५८९ त्याप्रमाणें सर्वभावें करून कर्माचें अनुष्ठान करावें, परंतु फळावर दृष्टी ठेवूं नये, सारी क्रिया ब्रह्मामध्येच अर्पण करावी. ५९० आणखी सहजगत्या आपलें कोणी आवडतें माणूस आलें, तर अन्न उरलें कीं संपलें ह्याचें भान राहत नाहीं. त्याप्रमाणेंच सुप्रसंगीं करण्याचें जर कांहीं राहिलें, ५९१ तर न केलेल्याच्या दुःखानें मनामध्ये कांहीं द्वेष धरीत नाहीं. किंवा झालें ह्मणून त्याच्या आनंदानें फुगण्याचें ज्याला माहित नाहीं; ५९२ हे धनंजया ! अशा हतोटीनें जें कर्म निपजतें, त्याच्या गुणावरून त्याला सात्विक असें नांव आहे. ५९३ आतां ह्यापुढें खऱ्या रजोगुणाचें लक्षण सांगेन. तरी लक्ष्य देण्याची कमतरता करूं नको.” ५९४

१ अपिली, प्रविष्ट. २ आवडतें. ३ अप्रिय. ४ राहे. ५ न केलें याविषयीच्या. ६ गर्वास चढत नाहीं. ७ रजो-गुणयुक्ताचें. ८ कमतायी.

यत्तु कामेप्सुना कर्म साहंकारेण वा पुनः ।

क्रियते बहुलायासं तद्राजसमुदाहृतम् ॥ २४ ॥

[यत्तु कामेप्सुना] तरि घरीं मातापितरां । धड बोली नाहीं संसारा । येर विश्व भरी आदरा । मूर्ख जैसा ॥ १५॥ कां तुळशीच्या झाडा । दुरुनि न बांधे सितोडा । द्राक्षी-चेया तरि बुडा । धूधवि लाविजे ॥ १६ ॥ [कर्म] तैसीं नित्यनैमित्तिकें । कर्म जियें आवड्यकें । तयांचेविषीं न शके । बैसला उठूं ॥ १७ ॥ येरां काम्याचेनि तरि नांवें । देह सर्वस्व आवडें । वेंचितांही न मनेवे । बहु ऐसें ॥ १८ ॥ अगा देवई वाढी लाहिजे । तेथ मोल देतां न धाडजे । पेरितां पुरे न ह्मणजे । बीज जेवीं ॥ १९ ॥ कां परिस जालिया हातीं । लोहालागीं सर्वसंपत्ती । वेंचितां न ये उंच-ति । साधक जैसा ॥ ६०० ॥ तैसीं फळें देखोन पुढें । काम्यकर्म कुवाडें । [पुनः] करी परि तें थोडें । केलेहि मानी ॥ १ ॥ तेणें फळकासुकें । यथाविधि नेटकें । काम्य कीजे तितकें । क्रियाजात ॥ २ ॥ [साहंकारेण वा] आणि तथाही केलियाचें ॥ तोंडीं लावी डोंडीचे । कमी या नामधेष्टाचें । वाणे सारी ॥ ३ ॥ तैसा भरे कर्माहंकार । मग पिता अथवा गुरु । ते न मनी काळज्वर । ओषध जैसें ॥ ४ ॥ तैसेनि साहंकारें । फळाभिलाषियें नरें । कीजे गा आदरें । जें जें कांहीं ॥ ५ ॥ [क्रियते बहुलायासं] परि तेंही करणें बहुवसा । वळघोनि करी सोयासा । जीवनोपाय कां जैसा । कोल्हांटा याचा ॥ ६ ॥ एका कणालागीं उंदीर । अवघा उपसे डोंगर । कां शेवाळा दोषें दंदूर । समुद्र हुंहुळी ॥ ७ ॥ पै भिकेपरतें न लाहे । तन्ही गाढी साप वाहे । काय कीजे शीणचि होये । गोड येकां ॥ ८ ॥ हें असो परमाणूचेनि लाभें । पाताळ लंघिती वोळबे । तैसें खर्गमुख लोभें । विचवणें जें ॥ ९ ॥ [यत्तद्राजसमुच्यते] तें काम्य कर्म सक्षेप । जाणावें येथ राजस । आतां चिन्ह परिस । तामसाचें ॥ ६१० ॥

“तर घरीं आईबापांशीं कीं इतर कुटुंबां-तील माणसांशीं धड बोलावयाचें नाहीं; परंतु मूर्ख जसा इतर साऱ्या जगाचें आदरातिथ्य करतो, ५९५ किंवा तुळशीच्या झाडावर दुरून एक शितोडा सुझां टाकावयाचा नाहीं. पण द्राक्षीच्या मुळाला दुधाचा रतीब लावा-

१ न घाली. २ मानवत नाहीं. ३ दिदी दुष्टीनें वाढ. ४ तृप्त न व्हावें. ५ उत्कर्षदेशेस. ६ कठीण. ७ चांगलें. ८ प्रसिद्धीच्या. ९ त्यासारखें करी. १० आरुढ होऊन. ११ कष्टास. १२ उद्देशानें. १३ आलोडी, ढवळी. १४ वाळवी. १५ श्रम करणें.

बयाचा; ५९६ त्याप्रमाणें नित्यनैमित्तिक अशीं जीं अवश्यकर्म, त्यांच्यासाठीं बसलेला उडा-
वयाचा सुद्धां नाहीं. ५९७ इतर काम्य क-
र्माच्या नांवानें देहासुद्धां सर्वस्व खर्च झालें
तरी, फार झालें असें वाटत नाहीं. ५९८
दिढी डुपटीची वाढ मिळाली ह्मणजे कर्जे
देणाराला जशी तृप्ति होत नाहीं, किंवा बीं
पेरित असतांना पुरे असें ह्मणत नाहीं; ५९९
किंवा परिस हस्तगत झाला असतां, लोखंडा-
साठीं सारी संपत्ति खर्च झाली तरी, साध-
काला पुरेसें होत नाहीं; ६०० त्याप्रमाणें पुढें
फळें पाहून हवीं तितकीं काम्य कर्मे करतो
तरी, तितकें केलेलेंही थोडेंच मानतो, ६०१
असा जो फलाची इच्छा करणारा आहे तो,
जितक्या जितक्या ह्मणून क्रिया यथाविधीनें
व नीटनेटक्या करतो, त्या सान्या काम्य-
ह्मणजे फलेच्छेसाठीं करतो. ६०२ आणखी,
त्या केलेल्यांचीही तोंडांनें दचंडी पिटतो. कर्म
करतांनाही त्याच्या प्रौढीची कांहीं वाण
करीत नाहीं. ६०३ तशाच रीतीनें कर्म केले-
ल्याचा अहंकार उत्पन्न होतो; त्यामुळें पि-
त्याला व गुरूलाही मानित नाहीं; कालज्वर
आला असतां जसें औषध मानवत नाहीं,
६०४ त्याप्रमाणें अहंकारानें, फलाच्या अभि-
लाषानें पुरुषानें जें जें कांहीं करावें, ६०५
आणखी तें करणेंही अतिशय कष्ट सोसून कराव-
याचें. कोल्हाट्यांचा जसा उदरनिर्वाहाचा धंदा
असतो, ६०६ किंवा एका धान्याच्या कणा-
साठीं उंदीर सारा डोंगर पोखरतो; किंवा
शेघाळीसाठीं वेडूक जसा सारा समुद्र ढव-
ळून सोडतो; ६०७ भिक्षेपेक्षां कांहीं माती
सुद्धां अधिक मिळत नाहीं, तरी गारोडी सर्प
वागवितो, हाही मासला त्यांतलाच ! एखा-
द्याला कष्ट काढणेंच गोड वाटतात, त्याला
काय करणार? ६०८ हें असो. एका रजः-
कणा करितां वाळवी पाताळपर्यंत जाते. त्या-
प्रमाणें स्वर्गाच्या सुखाकरितां जें रखडणें,
६०९ तें कर्म काम्य-कष्टप्रद- तें येथें राजस

आहे हें लक्ष्यांत ठेवावें. आतां तामसाचें
लक्षण ऐक. ६१०

अनुबंधं क्षयं हिंसामनपेक्ष्य च पौरुषम् ।

मोहादारभ्यते कर्म यत्तत्तामसमुच्यते ॥ २९ ॥

[अनुबंधं] तरि तें गा तामस कर्म । जें निदेचें काळें
धाम । निषेधाचें जन्म । साच जेणें ॥ ११ ॥ जें निपज-
विल्या पाठीं । कांहींच न दिसे दिठी । रेघ काढिलिया पोटीं ।
तोयाचे जेवीं ॥ १२ ॥ कां कांजी घुसळलिया । कां राख
कुंकिलिया । कांहीं न दिसे गाळिलिया । वाळुघाणा ॥ १३ ॥
ना ना उपणिलिया भूंस । कां विधिलिया आकाश । ना ना
मांडिलिया पाश । वारयासी ॥ १४ ॥ हें अवघेंचि जैसें । वांझें
होऊनि नारो । जें केलिया पाठीं तैसें । वायाचि जाय
॥ १५ ॥ [क्षयं] येन्हीं नरदेहाही येवढें । धन आटणीये
पडे । तें कर्म निफजवितां मोडे । जगाचें सुख ॥ १६ ॥
जैसा कमळवनीं फांस । काढिलिया काटेंस । आपण झिजे
नाश । कमळां करी ॥ १७ ॥ [हिंसा] कां आपण आंगें जळे ।
आणि नागवी जगाचे डोळे । पतंग जैसा सँळें । दीपाचेनि
॥ १८ ॥ तैसें सर्वेस वायां जावो । वरी खदेहाही होय
घावो । परि पुढिलां अपावो । निफजविजे जेणें ॥ १९ ॥
मासी आपणयातें गिळवी । परि पुढिलां वांती शिणवी । तें
कंदमळ आठवी । आचरण जें ॥ ६२० ॥ [अनपेक्ष्य च
पौरुषं] तेंही करावया दोषें । मज सामर्थ्य असे कीं नसे ।
हेंही पुढील तैसें । न पाहतां करी ॥ २१ ॥ कैवळा माझा
उपावो । करितां कोण प्रस्तावो । केलियाही आंवो । काय
येथ ॥ २२ ॥ [मोहादारभ्यते कर्म] इथे जाणिवेची सोये ।
अविवेकाचेनि पाये । पुसोनियां होये । सांठोप कर्मां ॥ २३ ॥
आपला वसांटां जाळुनी । विसांटे जैसा वन्ही । कां स्वम-
यांदा गिळोनि । सिधु उठी ॥ २४ ॥ मग नेणें बहु थोडें ।
न पाहे मागे पुढें । मार्गामार्ग येकवेढें । वरीत चाले ॥ २५ ॥
[यत्तत्तामसमुच्यते] तैसें कृत्याकृत्य सरकडित । आपपर
नुरवित । कर्म होय तें निश्चित । तामस जाण ॥ २६ ॥
ऐसी गुणत्रयभिन्ना । कर्मांची गा अजुना । हे केली विव-
र्चना । उपपत्तीसीं ॥ २७ ॥ आतां ययाचि कर्मा भजतां ।
कर्माभिमानीया कर्ता । तो जीवही त्रिविधता । पातला असे
॥ २८ ॥ चेंचुराप्रभवशें । एकपुरुष चेंचुरा दिसे । कर्तया

१ घर. २ अपवित्रतचें. ३ पेज. ४ घाण्यांत वाळू घातली
तरी. ५ पाखडलें असतां. ६ खर्ची. ७ कांढ्यांचा. ८ आधार
करी. ९ द्वेषानें. १० सद्बोध. ११ प्रसंग. १२ तात्पर्य. १३ अहंता-
युक्त. १४ वसतिस्थान. १५ पसर. १६ एकत्र. १७ रगडीत.
१८ विवरण. १९ ब्रह्मचर्य. गृहस्थ, वानप्रस्थ, व संन्यास
यांच्या योगें. २० चार प्रकारचा.

त्रैविध्य तैसैं । कर्मभेदें ॥ २९ ॥ परि तयां तिहींआंत । सात्विक तंव प्रसुत । सांगेन दत्तचित्त । आकर्णी तूं ॥ ६३० ॥

“तर जें निदेचें काळें घर; ज्याच्या योगानें खरी अपवित्रता जन्मास येते; तें कर्म तामस होय. ६११ जें उत्पन्न झाल्यानंतर डोळ्यांना कांहींच दिसत नाही; पाण्याच्या पोटावर जशी रेषा काढावी, ६१२ किंवा पेज घुसळली असतां, किंवा राखुंडी फुंकली असतां, किंवा वाळूचा घाणा गाळला असतां, ६१३ किंवा भूस उपणलें असतां, किंवा आकाशाला मारलें असतां, किंवा वाऱ्याला जालें घातलें असतां, ६१४ तें सारेंच जसें फुकट होऊन नाश पावतें, त्याप्रमाणें जें केल्यानंतर पाठीमागें कांहींच रहात नाही, व्यर्थ जातें. ६१५ बाकी, नरदेहायेवढी संपत्तिही खर्ची पडून तें कर्म उत्पन्न होतें. परंतु त्यानें जगाचें सुख लयास जातें. ६१६ ज्याप्रमाणें कमलाच्या वनांत कांट्यांचा फांस वाढला, तर तो आपण झिजतो, आणि कमळांचाही पण नाश करतो. ६१७ किंवा पतंग जसा दिव्याच्या द्वेषानें आपण स्वतः जळून जगाच्या डोळ्यांनाही शून्याकार करून सोडतो. ६१८ त्याप्रमाणें सर्वस्व व्यर्थ जावो; आणि आपल्या देहालाही दुःख झाले तरी होवो; तरी जो मागच्यांना अपाय करतो. ६१९ माशी आपणाला खाविवते; परंतु दुसऱ्याची ओकून ओकून आंतडीं तोडते. जें आचरणाच्या योगानें त्या दोषाची आठवण होते. ६२० तेही दोष करावयाला मजमध्ये सामर्थ्य आहे कीं नाही, ह्या पुढच्याचा विचारही न करितां जो करतो; ६२१ माझा उपाय केवढा आहे? करण्याचा प्रसंग कोणता आहे? केल्यामध्ये आज अर्थ कोणता? ६२२ हा ज्ञानाचा मार्ग अविचाराच्या पायानें पुसून टाकून, कर्मांमध्ये जो अहंकारयुक्त होतो; ६२३ आपलें रहाण्याचें ठिकाण जा-

ळून अग्नि जसा चव्हंकडे पसरतो; किंवा आपली मर्यादा सोडून समुद्र जसा पुढें सरतो; ६२४ मग थोडें किंवा पुष्कळ हें मनांत आणीत नाही; मागें किंवा पुढें पहात नाही; मार्ग अमार्ग सारे एक करित निघतो; ६२५ त्याप्रमाणें उचित, अनुचित सारेंच दडपीत, आपलें किंवा दुसऱ्याचें बाकी न ठेवतां, जें कर्म होतें तें निश्चयेंकरून तामस होय. ६२६ ह्याप्रमाणें अर्जुना ! गुणत्रयानें भिन्न भिन्न झालेल्या कर्मांचें सोपपत्तिक विवरण केले. ६२७ आतां कर्ता कर्माभिमानी होऊन ह्याच कर्मांना भजू लागला ह्मणजे तो जीवही तीन प्रकारचा होतो. ६२८ ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ व संन्यास ह्यांच्या योगानें एकच पुरुष चार प्रकारचा दिसतो, त्याप्रमाणें कर्मांच्या भिन्नत्वाप्रमाणें कर्त्यालाही त्रिविधता प्राप्त होते. ६२९ परंतु ह्या तिन्हींमध्ये प्रस्तुत सात्विक कर्ता सांगतों. त्याच्याकडे लक्ष्य देऊन तूं श्रवण कर.” ६३०

मुक्तसंगोऽनहंवादी धृत्युत्साहसमन्वितः ।

सिद्ध्यसिद्ध्योर्निर्विकारः कर्ता सात्विक उच्यते २६

[मुक्तसंगः] तरि फळोद्देशें सांडिलिया । वाढिती जेवि सरलिया । शाखा कां चंदनाचिया । बौवनया ॥ ३१ ॥ कां न फळतांही सार्थका । जैसिया नागलतिका । तैसिया करी निल्यादिका । क्रिया जो कां ॥ ३२ ॥ परि फळशून्यता । नाही तया विफळता । पै फळासीचि पंडुसुता । फळें कायिसीं ॥ ३३ ॥ [अनहंवादी] आणि आदरें करी बहुवसें । परि मी कर्ता हें नुमसे । वर्षाकाळीचें जैसैं । मेघवृंद ॥ ३४ ॥ तेविचि परमात्मलिगा । समर्पावयाजोगा । कर्मकैलाप पै गा । निपजौवया ॥ ३५ ॥ तया काळीतें नुलंघणें । देशशुद्धीही साधणें । कां शाखांच्या वार्ती पाहणें । क्रियानिर्णय ॥ ३६ ॥ [धृत्युत्साहसमन्वितः] वृत्तीकरणा येकवळा । चित्त जावों नेदणें फळा । नियमाचिया सांखळा । वाहे सदा ॥ ३७ ॥ हा निरोधें साहावयालागीं । धैर्याचिया चांगवांगी ।

१ फलेच्छा. २ सरळ. ३ मलयाचलसंबंधी. ४ नागवेल. ५ नुपजे. ६ समुदाय. ७ उपजण्यासाठी. ८ शास्त्ररूप दिव्यानें. ९ इंद्रियें, वृत्ती करणें अशा पाठीं बोलणें व चालणें याला. १० ऐक्यता. ११ प्रतिबंध. १२ अटक.

चितवणी जिती आंगी । वाहे जो कां ॥ ३८ ॥ आणि आत्मयाचिये आवडी । कमें करितां वरपणीं । देहसुखाचिये परबडीं । येवों न लाहे ॥ ३९ ॥ ऐसा निद्रा दुःहावे । क्षुधा न बाणवे । सुरवाड न पावे । आंगाचा ठावो ॥ ४० ॥ तंव अधिकाधिक । उत्साह धरी आंगळीक । सोनें जैसें पुटीं तुंक । तुटलिया कसीं ॥ ४१ ॥ जरी आवडी आधी साच । तरी जीवितही सैलच । आंगी घालितां रोमांच । देखिजंती सतिये ॥ ४२ ॥ मा आत्मया येवडिया प्रिया । बालभेला जो धनंजया । देहही सिद्धतां तया । काय खेद होईल ॥ ४३ ॥ ह्मणौनि विषय सुरवाड तुटे । जंव जंव देहबुद्धि आटे । तंव तंव आनंद दुणवटे । कमी जया ॥ ४४ ॥ [सिद्धसिद्धोर्निर्विकारः] ऐसेनि जो कर्म करी । आणि कोणे येके अवसरीं । तें ठांके ऐसी सरी । वाहे जरी ॥ ४५ ॥ तरी कंढाडीं मोडे गाडा । तो आपणपे न मनी अवघडा । तैसा ठाकलेनिही थोडा । नोहे जो कां ॥ ४६ ॥ ना तरि आदरिले । अव्यंग सिद्धी गेलें । तरि तेंही जितिलें । मिरळं नेणें ॥ ४७ ॥ इया खुणा कर्म करितां । देखिजे जो पंडु-सुता । [कर्ता सात्विक उच्यते] तयातें ह्मणिए तत्त्वता । सात्विक कर्ता ॥ ४८ ॥ आतां राजसा कर्तया । वोळखणें हें धनंजया । जे अभिलाषा जगाचिया । वसौटा तो ॥ ४९ ॥

“तर फळाचा हेतु सोडून, मलयागिरी चंदनाच्या शाखा जशा सरळ वाढतात, ६३१ किंवा नागवेलीला फळें न येतांही, ती जशी सार्धर्कां लागते, त्याप्रमाणें जो नित्यादिक क्रिया करतो. ५३२ तरी फळाच्या शून्यतेमुळें त्याला विफलता प्राप्त होत नाही. हे पंडुसुता ! फळांनाच फळें कशीं येणार ? ६३३ आणखी, तीं कमें अत्यंत आदरानें करावयाचीं. परंतु वर्षाकाळांतील मेघसमुदाय ज्याप्रमाणें मी कर्ता हें मात्र समजत नाही, ६३४ त्याचप्रमाणें परमात्मलिंगाला समर्पण करण्याजोगा कर्मसमुदाय निर्माण होईल, ६३५ त्या काळाचें

उल्लंघन करावयाचें नाही. देशशुद्धीही साधावयाची; किंवा शास्त्ररूप दिव्यानें शास्त्रनिर्णय पहाणें, ६३६ वृत्तीची ऐक्यता करणें, चित्स फलाकडे जाऊं न देणें, निरंतर नियमांची शृंखळा वहाणें; ६३७ हा प्रतिबंध सहन करण्यासाठीं आंगामध्ये जो धैर्याची उत्तमोत्तम जागृति वाहतो, ६३८ आणखी आत्म्याच्या आवडीनें प्राप्त झालेलीं कमें करतांना, देहसुखाच्या अवस्थेमध्ये यावयाला मिळत नाही. ६३९ अशी निद्रा दूर जाते; भूक समजत नाही; सुखावस्था कसली ती आंगाला स्पर्श करीत नाही; ६४० तों तों सोनें आटतांना जसें वजनांत कमी झालें तर, कसामध्ये चढतें, त्याप्रमाणें ज्याचा उत्साह अधिकाधिक वाढतच जातो. ६४१ खरी खरी जर प्रीति असेल, तर तिजपुढें प्राण केवळ तुच्छ होय. अग्नीस प्राण अर्पण करतांना सतीच्या आंगांवर रोमांच दृष्टीस पडतात काय ? ६४२ मग धनंजया ! आत्म्यासारख्या आवडत्या वस्तूशीं ज्याचें प्रेम जडलें, त्याला देहाच्या नाशानें खेद होईल होय ? ६४३ ह्मणून विषयाचें सुख जों जों कमी होतें; देहबुद्धी जों जों मालवते; तों तों कर्मांमध्ये आनंद दुणावत असतो. ६४४ अशा रीतीनें जो कर्म करतो, किंवा कोणा एखाद्या वेळीं तें कर्म बंद पडण्याचा जरी प्रसंग आला, ६४५ तरी, कड्यावरून गाडा पडून मोडला तरी त्याचा तो जसा खेद मानित नाही; तसा कर्मांमध्ये व्यत्यय आला ह्मणूनही जो संकोचित होत नाही. ६४६ किंवा आरंभलेलें कर्म निर्विघ्नपणें सिद्धीस गेलें तरी, तें आपण पार पाडलें ह्मणून त्याचा अभिमानही मिरवावयाचा समजत नाही. ६४७ अर्जुना ! अशा लक्षणांनीं कर्म करणारा जो पहाशील, त्यालाच खरोखर सात्विककर्ता असें ह्मणावें. ६४८ आतां धनंजया ! जगाच्या अभिलाषाचें स्थान, असा जो राजसकर्ता, त्याला ओळखण्याचें लक्षण असें.” ६४९

१ चिता. २ जिवंत, जागरूक. ३ प्राप्त. ४ अवस्थेस. ५ अनुभवास नये. ६ सुखावस्था. ७ अधिक. ८ वजन. ९ तुच्छ, दुःखरूप. १० आगीत उडी घालतांना सतीच्याही अंगावर भयानें रोमांच उभारतात. ११ आवडीनें युक्त झाला. १२ दुःख पावत असतां. १३ स्वच्छ राहे. १४ प्रकार. १५ डोंगराच्या अवघड ठिकाणीं. १६ लहान. १७ स्थान.

रागी कर्मफलप्रेप्सुर्लब्धो हिंसात्मकोऽशुचिः ।

हर्षशोकान्वितः कर्ता राजसः परिकीर्तितः ॥२७॥

[रागी] जैसा गांवींचिया कैमळ । उकरडा होय ये-
केवळा । कां स्मशानीं अमंगळा । आघवयांचि ॥ ६५० ॥
तया परी जो अशेष । विश्वाच्या अभिलाषा । पायपाख-
ळण्यां दोषा । घरटा जाला ॥ ५१ ॥ [कर्मफलप्रेप्सुः] ह्य-
गोनि फळाचा लांग । देखे जिये असलग । तिये कर्मी चांग ।
रोहो मांडी ॥ ५२ ॥ आणि आपण जालिये जोडी । उंपखों
नेदी कवडी । क्षणक्षणा कुरोडी । जीवाची करी ॥ ५३ ॥
[लब्धः] कृपणचित्तीं ठेवा आपुला । तैसा दक्ष परोवियां
माला । बक जैसा खुतला । मासेयासी ॥ ५४ ॥ [हिंसात्मकः]
आणि गोवी गेलिया जवळी । अंगटलिया आंग फाळी । फळें
तरी आंत पोकळी । 'बोरांटी जैसी ॥ ५५ ॥ तैसें मनं वाचा
कायें । भलतया दुःख देत जाये । स्वार्थ साधितां न पाहे ।
पराचें हित ॥ ५६ ॥ [अशुचिः] तेविच आंगें कर्मी । आच-
रण नोहे क्षमी । न निघे मनोधर्मी । अरोचक ॥ ५७ ॥
कैनकाचिया फळा । आंत माज वाहेरी मळें । तैसा सबाळ
दुबळा । शुचित्वें जो ॥ ५८ ॥ [हर्षशोकान्वितः] आणि
कर्मजात केलिया । फळ लाहे जरी धनजया । तरि हेरिखें
जगा यया । वांकुलिया वाये ॥ ५९ ॥ [कर्ता राजसः परि-
कीर्तितः] अथवा जें आदरिलें । हीनफळ होय केलें । तरि
शोकें तेणें जितिलें । धिक्कारों लागे ॥ ६० ॥ कर्मी राहाटी
ऐसी । जयातें होती देखसी । तोचि जाण त्रिशुद्धीसी ।
राजस कर्ता ॥ ६१ ॥ आतां यया पाठीं येरें । जो कुक-
र्माचा आंगर । तोही करु गोचर । तामस कर्ता ॥ ६२ ॥

“ज्याप्रमाणें गांवच्या साऱ्या केरकचऱ्याला
उकिरडा ह्याणून एक ठिकाण असतें; किंवा
सारीं अमंगलें तेवढीं स्मशानांत राहतात;
६५० त्याप्रमाणें जो यच्चयावत् विश्वाच्या
इच्छेच्या पायधुण्याच्या दोषाला आश्रयस्थान

होऊन राहिलेला असतो, ६५१ ह्याणून
सहजगत्या ज्या फळाचा लाभ साधण्यासारखा
असेल, त्या कर्माचा आरंभ आधीं कराव-
याचा; ६५२ आणखी उत्पन्न होईल तें आ-
पण घ्यावयाचें, एक कवडी खर्च करावयाची
नाहीं, घटके घटकेला जीव ओवाळून टाका-
वयाचा; ६५३ कृपणाच्या चित्तामध्ये जसा
सदासर्वकाल आपला ठेवा असतो, किंवा
माशाकरितां बगळा जसा ध्यानस्थ बसतो,
त्याप्रमाणें दुसऱ्याच्या मालाविषयीं जो दक्ष;
६५४ जसें बोरीचें झाड जवळ गेलें तर अड-
कवितें; हिसकाहिसकी केली तर आंगाला
ओरबाडे काढतें; फळलें तर आंत पोकळ;
६५५ त्याप्रमाणें कोणीही असो, कायावाचा-
मनानें त्याला दुःख देत सुटावयाचें. स्वार्थ
साधावयाचा येवढें माहित. त्यांत दुसऱ्याचें
हित ह्याणून पहावयाचें नाहीं. ६५६ तसेंच
आंगानें कर्म करण्याला सामर्थ्य नसेल तर,
मनानें तरी त्या वाईट गोष्टीची इच्छा करतो.
६५७ धोतऱ्याच्या फळाला, आंतून कैफ,
आणि बाहेरून कांटे; त्याप्रमाणें जो विचारा
शुचित्वाच्या संबंधानें आंतून बाहेरून सा-
रखा; ६५८ आणखी धनजया! प्रत्येक
कर्म केल्यानंतर फलप्राप्ति होईल तर, त्या
आनंदानें जगाला वेडावून दाखवितो; हिण-
वितो; ६५९ अथवा एखादें कृत्य करुं ला-
गून त्यांत फलप्राप्ति झाली नाहीं, तर त्याच्या
शोकानें आपल्या साऱ्या जन्माला धिक्कारुं
लागावयाचें. ६६० कर्मांमध्ये अशी वर्तणूक
ज्याची दिसून येईल, तो निश्चयकरून राजस
कर्ता असें समज. ६६१ आतां ह्यापुढें दुसरा
कुकर्माचा बाग, असा जो तामस कर्ता तोही
स्पष्ट सांगूं.” ६६२

अयुक्तः प्राकृतः स्वधः शठो नैष्कृतिकोऽलसः ।

विषादी दीर्घसूत्री च कर्ता तामस उच्यते ॥२८॥

[अयुक्तः] तरि मियां लागलिया कैस । पुढील जळत
असे । हें नेणिजे हुताशें । जियापरी ॥ ६३ ॥ पै शब्दें

१ मळ, केरकचरा. २ एक ठिकाण. ३ संपूर्ण.
४ इच्छेसाठीं. ५ पादप्रक्षालनार्थ. ६ आश्रय. ७ संबंध.
८ सोपा. ९ उपक्रम. १० लाभानें. ११ न खर्ची.
१२ दुसऱ्याच्या. १३ ध्यानस्थ झाला. १४ अडकवी.
१५ स्पर्श झाला असतां. १६ फाडी. १७ बोरीची डाळी.
१८ अंगानें करवत नाहीं तथापि मनानें तरी त्या वाईट गो-
ष्टीची इच्छा करतो. १९ समर्थ. २० अरुचि. २१ धोत-
ऱ्याच्या. २२ कांटवण. २३ हर्षानें. २४ वेडावी.
२५ निर्फळ. २६ वांचणें. २७ खचित. २८ इतर, तामस.
२९ मुख्य स्थान. ३० प्रत्यक्ष.

मियां तिखटें । नेणिजे कैसेनि निवटे । कां नेणिजे काळकूटें । आपलें केलें ॥ ६४ ॥ तैसा पुढीलया आपुलया । घात करीत धनंजया । आदरी वोखटिया । क्रिया जो कां ॥ ६५ ॥ तिया करितां ही वेळीं । काय जालें हें न सांभाळी । चळला वायू वाहदुळी । चेष्टे तैसा ॥ ६६ ॥ पै करणिया आणि जया । मेळ नाही धनंजया । तो पाहूनि पिसेया । कैची त्राय ॥ ६७ ॥ [प्राकृतः] आणि इंद्रियांचें वेरिलें । चरोनि राखे जो जियालें । बैलतळीं लागलें । गोविड जैसे ॥ ६८ ॥ हांसिया रुदना वेळ । नेणतां आदरी बाळ । रहाटे उंच्छेखळ । तयापरी ॥ ६९ ॥ जो प्रकृती आतलेपणें । कृत्याकृत्यखाद नेणे । फुगे केरें धालेपणें । उकरडा जैसा ॥ ७० ॥ [स्तब्धः] झणौनि मान्याचेनि नांवें । ईश्वराही परी न खालवे । स्तब्धपणें न मनवे । डोंगरासी ॥ ७१ ॥ [शठः] आणि मन जयाचें कळाली । राहाटी फुंडी चोरिली । दिठी कीर ते बोली । पण्यांगनेची ॥ ७२ ॥ किंवहुना कपटाचें । देहचि वळिलें तयाचें । तें जिणें कीं जुवाराचें । टिटेघर ॥ ७३ ॥ नोहे तयाचा प्रांडुर्भावो । तो साभिलाषभिळांचा गांवो । झणौनि नये येवो जावो । तया ठाया ॥ ७४ ॥ [नैष्कृतिकः] आणि आणिकाचें निरें केलें । विरें होय जया आलें । जैसे अपेय पंथा मिनलें । लवण करी ॥ ७५ ॥ कां हेंचि ऐसा पदार्थ । घातलिया आगीआंत । तेचि क्षणीं धेंढाडित । अग्नि होय ॥ ७६ ॥ ना ना सुदव्यें गोमटी । जालिया दारीरीं पंठी । होउनि ठोंती किरिटी । मळचि जेवि ॥ ७७ ॥ तैसें पुढिलचें वरवें । जयाच्या भीतरीं पावे । आणि विरुद्धचि आपवें । होऊनि निगे ॥ ७८ ॥ जो शुण घे दे दोष । अमृताचें करी विष । दूध पाजिलिया देख । व्याळ जैसा ॥ ७९ ॥ [अलसः] आणि ऐहिंकी जियावें । जेणें परेन्ना साच यावें । तें उचित कृत्य पावे । अवसरीं जिये ॥ ८० ॥ तेव्हां जया आपेसी । निद्रा ये ठंवली ऐसी । दुर्व्यवहारीं जंसी । विद्याळें लोटे ॥ ८१ ॥ पै द्राक्षरसा आन्नरसा । वेळे तोंड सडे बायसा । कां डोळे फुटती

१ मरे. २ वाईट. ३ हाले. ४ वेळाला, मूखाला. ५ टिकाव. ६ तोंडीं पडलेलें. ७ जीव. ८ हांसण्यास व रडण्यास. ९ प्रारंभी. १० यथेच्छ. ११ व्यापलेपणें. १२ कर्मकर्माची रुचि. १३ तृप्तपणानें. १४ न लवे. १५ कपटी, दाखू विव्हाणांसारखें लोकांस माल देऊनही वेड लावणारें. १६ खरी. १७ वेदयेची. १८ चोरी, चाहाडी, सिंदळकी, या तिख्यावरचें घर. १९ प्रगटपण. २० विरुद्ध. २१ दुधाला. २२ घृत. २३ प्रज्वलित. २४ प्राप्त. २५ राहती. २६ सपे. २७ या लोकीं वांचावें. २८ परलोकीं. २९ दुष्कृत्य करतांना. ३० विटाळशीप्रमाणें दूर जाते. ३१ कावळ्याला.

दिवसा । डुडुळाचे ॥ ८२ ॥ तैसा कल्याण काळ पाहे । तें तयातें आळस खाये । ना प्रेमादीं तरि होये । तो झणे तैसें ॥ ८३ ॥ [विषादी] जेविचि सागराच्या पोटी । जळे अखंड आगिठी । तैसा विषाद वाहे गांठी । जिवाचिये जो ॥ ८४ ॥ लेंडोरांआगीं धूमावधि । कां आपाना आगीं दुर्गिधि । तैसा जो जीवितावधि । विषादे केला ॥ ८५ ॥ [दीव्यसूत्री च] आणि कल्पांतचिया पारा । वेगळेंही जो वीरा । सूत्र धरी व्यापारा । साभिलाया ॥ ८६ ॥ अगा जगाही परीती । शुचा वाहे पै चित्ती । करितां विषीं हातीं । तृणही न लगे ॥ ८७ ॥ [कर्ता तामस उच्यते] ऐसा जो लोकाआंत । पोपपुंज मूर्त । देखसी तो अव्याहत । तामस कर्ता ॥ ८८ ॥ एवं कर्म कर्ता ज्ञान । या तिहींचें त्रिधा बिन्ह । दाविलें तुज सुजन । चक्रवर्ती ॥ ८९ ॥

“तर मीं स्पर्श केला असतां माझ्यापुढचें कसें जळतें, हें जसें अग्नीला समजत नाही; ६६३ मी किती तीक्ष्ण आहे; दुःसंन्यास कसें कांपतो; हें जसें शस्त्राला समजत नाही; किंवा कालकूटाला जशी आपली करणी समजत नाही; ६६४ त्याप्रमाणें धनंजया ! आपल्या पुढच्याचा घात करण्यासाठीं जो दुष्कर्म आचरण करतो. ६६५ आणखी तीं करतांनाही त्यांचा परिणाम काय झाला ह्याकडे लक्ष्यही पोंचवित नाही. वारा जसा वावटळींत सांपडला ह्याणजे फिरत राहतो, त्याप्रमाणें व्यापार करतो. ६६६ हे धनंजया ! ज्याच्या कृतीला आणि सिद्धीला मेळ नाही. त्याच्या पुढें वेळ्याची कथा ती काय ? ६६७ बैलाच्या खालीं चिकटलेल्या गोविडाप्रमाणें इंद्रियांच्या तोंडांत जें जें झणून पडेल, तें तें खाऊन जो जीव जगधितो; ६६८ मुलाला कांहीं समजत नसल्यामुळे, तें जसें वेळ अवेल कांहींच न पाहतां पाहिजे तेव्हां हावू लागतें, व पाहिजे तेव्हां रडूं लागतें, आणि यथेच्छ वागडत असतें. त्याप्रमाणें ६६९ मायेनें व्यापल्यामुळे ज्याला कृत्याकृत्याची रुचि समजत नाही. केरानें जसा यथेच्छ उ-

१ घुबडाचे. २ असावधपणीं. ३ तो तैसें होय झणे. ४ खेद. ५ लेंड्यांच्या विस्तवांत. ६ गुदद्वाराचा वारा. ७ पलीकडचे. ८ शोक. ९ पापाचा ढीग. १० निरंकुश.

किरडा फुगतो, त्याप्रमाणें जो फुगलेला असतो. ६७० त्यामुळें आंगामध्ये इतका ताठा कीं, ईश्वरासही खालीं वांकावयाचें नाहीं. गंभीरपणामध्ये डोंगरालाही जो तुच्छ मानतो; ६७१ मन ज्याचें कपटी; वागणूक, दृष्टि, व भाषण तर खरोखर वेश्येचें. ६७२ किंबहुना त्याचा सारा देह कपटाचाच घडलेला असतो. त्याचें जिणें ह्मणजे तिळ्यावरील जुवाराचेंच घर होय. ६७३ त्याचें प्रगटीकरण तें प्रगटीकरण नव्हे. तर तो लुटारू भिलांचा गांव होय. ह्मणून त्या ठिकाणीं जाऊंही नये. ६७४ आणखी दुसऱ्याचें चांगलें केलें तर, तें त्याला विरुद्ध होतें. ज्याप्रमाणें मीठ दुधांत मिसळलें असतां, त्याला तें पिण्यास अयोग्य करतें, ६७५ किंवा तुपासारखा पदार्थ अग्नींत घातला, तरी तो लागलाच प्रज्वलित अग्नीसारखाच होतो. ६७६ किंवा किरीटी ! चांगले चांगले पदार्थ, शरीरांत गेले असतां, जसे मल होऊन राहतात; ६७७ त्याप्रमाणें दुसऱ्याचें चांगलें तेवढें ज्याच्या आंत जातें, आणि त्याच्या उलट होऊन बाहेर पडतें. ६७८ सापाला कूध पाजिलें असतां, तो जसें अमृताचें विष करून सोडतो, त्याप्रमाणें जो गुण घेतो, आणि दोष देतो. ६७९ आणखी इहलोकीं संरक्षण व्हावें, आणि परलोकींही उपयोगीं पडावें, असें उचित कृत्य करण्याची जेव्हां वेळ येते, ६८० तेव्हां ज्याला आपोआप ठेवल्यासारखी निद्रा येते. आणि दुष्कृत्य करण्यामध्ये मात्र ती विटाळशीप्रमाणें लांब पळते. ६८१ द्राक्षाला आणि आंब्याला फळें आलीं ह्मणजे कावळ्याला मुखरोग येतो. किंवा घुबडाचे डोळे दिवसा फुटतात; ६८२ त्याप्रमाणे कल्याणाचा काल आला कीं त्याला आळस खातो. किंवा चुकीमध्ये तो ह्मणेल तसें चालतो; ६८३ सागराच्या पोटांमध्ये ज्याप्रमाणें अखंड अग्नि जळत असतो, त्याप्रमाणें जिवाच्या गाठीमध्ये जो विषाद बाळगतो; ६८४ शेणीच्या विस्तवामध्ये धूर, किंवा

अपान वायूमध्ये दुर्गंधी, त्याप्रमाणें जो जन्म-भर विषादानें-दुःखानेंच-भरलेला; ६८५ आणखी हे वीरा ! जो कल्पांताच्याही पलीकडचे निराळ्याच अभिलाषाचें सूत्र धरतो, ६८६ बाबा ! जगामध्ये दृष्टी सुद्धां पडावयाचा नाहीं, इतका शोक जो मनामध्ये वाहतो. पण इतकें करूनही, ज्याच्या हातीं गवताची एक काडीही लागत नाहीं. ६८७ असा जो लोकांमध्ये पापाची केवळ राशी, असा पहाशील, तो निःसंशय तामस कर्ता होय. ६८८ ह्याप्रमाणें हे सज्जनराजशिरोमणे ! कर्म, कर्ता, आणि ज्ञान ह्या तिहींचीं तीन तीन लक्षणां तुला दाखवून दिलीं.” ६८९

बुद्धेर्भेदं धृतेश्चैव गुणतत्त्विविधं शृणु ।

प्रोच्यमानमशेषेण पृथक्त्वेन धनंजय ॥ २९ ॥

[बुद्धेर्भेदं] आतां अविद्येच्या गांवीं । मोहाची वेहनि मंदवी । संदेहाचीं आवर्णी । लेऊनि लेणीं ॥ २९ ॥ आत्मा निश्चयाची बरव । जया आरिसां पाहे सावयव । तिचे बुद्धिचीही धांव । त्रिधा असे ॥ ३१ ॥ [गुणतत्त्विविधं शृणु] अगा सत्त्वादिगुणीं इहीं । काइ एक तिहीं ठायीं । न कीजेचि येथ पाहीं । जगामाजी ॥ ३२ ॥ आमी न वसतां पोटीं । कवण काष्ठ असे छटी । तैसें तें कैचें दृश्यकोटी । त्रिविध जें नोहे ॥ ३३ ॥ ह्मणौनि तिहीं गुणीं । बुद्धी केली त्रिगुणी । [धृतेश्चैव] धृतीसिद्दी वांटणी । तैसीचि असे ॥ ३४ ॥ [प्रोच्यमानमिति] तेंचि येक वेगळालें । यथाचिन्हीं अळकारलें । सांगिजेल उपाइलें । भेदलेपणें ॥ ३५ ॥ परि बुद्धि धृति इयां । दोहीं भागांमाजि धनंजया । आधीं रूप बुद्धीचिया । भेदासि करूं ॥ ३६ ॥ तरि उत्तम मध्यम निक्कंष्ट । संसारासि गा सुभटा । प्राणिनां येतिया वाटा । तिनी आथी ॥ ३७ ॥ जे करणीय कैम्य निषिद्ध । ते हे मार्ग तिन्ही प्रसिद्ध । संसार भय संबंध । जीवा ययां ॥ ३८ ॥

“आतां अविद्येच्या गांवामध्ये मोहाचें वख गुंडाळून, संशयाचीं सारीं भूषणें घालून, २९० आत्मनिश्चयाचें मूर्तिमंत स्वरूप जिच्या आरशांत पाहतो, त्या बुद्धीची धांवही तीन प्रकारची असते. २९१ अरे ! हे सत्त्वादि तीन

१ वख. २ चांगुलपणा. ३ मूर्तिमान्. ४ दृश्यवर्गांत. ५ धृतीला. ६ आरंभिल्लें. ७ कनिष्ठ. ८ विहित निष्काम कर्म. ९ फलेच्छायुक्तकर्म.

गुण कशा कशाचे ह्मणून ह्या जगांत तीन प्रकार करीत नाहीत? ६९२ पोटामध्ये अग्नि नाही, असें लांकूड ह्या सृष्टीमध्ये कोणचे? तद्वत् दृश्य वर्गामध्ये तीन प्रकारचे झालेले नाही, असें काय आहे? ६९३ ह्मणून ह्या तिहींनी बुद्धीला त्रिगुणात्मक केलेली आहे. धृतीलाही तशीच तीन प्रकारची वांटणी आहे. ६९४ तेंच एक निरनिराळें ज्याच्या त्याच्या लक्षणांनी सुशोभित झालेले यथाप्रकारे सांगूं. ६९५ परंतु धनंजया! बुद्धि आणि धृति ह्या दोन्ही भागांपैकी बुद्धीच्या भेदाचे निरूपण आधीं करूं. ६९६ तर हे वीरश्रेष्ठा! प्राण्यांना संसारामध्ये आल्यावर उत्तम, मध्यम, आणि कनिष्ठ ह्या तीन वाटा मिळालेल्या असतात. ६९७ करण्यास योग्य, कामनिक, आणि निषिद्ध हे तीन मार्ग प्रसिद्ध आहेत. आणि ह्यांच्या योगानें ह्या जीवांना संसाराच्या भयाचा संबंध आहे.” ६९८

प्रवृत्ति च निवृत्ति च कार्यकार्ये भयाभये ।

बंधं मोक्षं च या वेत्ति बुद्धिः सा पार्थ सात्विकी ३०

[प्रवृत्ति च] ह्मणोनि अधिकारें मानिले । जें विधीचेनि बोधें आले । तें येकचि येथ भलें । नित्य कर्म ॥ ९९ ॥ [कार्यें] तेंचि आत्मप्राप्ति फळ । दिठी सृनि केवळ । कीजे जेंसें कां जळ । सेविजे ताहने ॥ ७०० ॥ येतुलेनि तें कर्म । [अभये] सांडी जन्ममय विषम । करुनि दे सुगम । मोक्ष-सिद्धि ॥ १ ॥ ऐसें करी तो भला । संसारभयें सांडिला । करणीयत्वे आला । मुमुक्षुभागा ॥ २ ॥ [मोक्षं च] तेथ जे बुद्धि ऐसा । बळिया बांधे भरंवसा । मोक्ष ठेविला ऐसा । जोडेल येथ ॥ ३ ॥ ह्मणोनि निवृत्तिचि मांडली । सृनि प्रवृत्तिवळी । इये कर्मा बुडकुळी । यावी कीं ना ॥ ४ ॥ तृपाती उदकें जिणें । कां पुरी पडलिया पंढरणें । अंधकूर्पी गति फिरणें । सूर्योचेनि ॥ ५ ॥ ना ना पथ्येसीं ओंषध लाहे । तरी रोगें दाटलाही जिये । कां मीनां जिह्वाळा होये । जळाचा जरी ॥ ६ ॥ तरि तयाच्या जीविता । नाही जेवि अन्यथा । तसें कर्मा इये वर्ततां । जोडेचि मोक्ष ॥ ७ ॥

हें करणीयाचिया कडे । जें ज्ञान आधी चोखडें । [निवृत्ति च] आणि अकरणीय हें फुडें । ऐसें जाण ॥ ८ ॥ [अकार्यें] जीं तिये काम्यादिकें । संसारभयदायकें । अकृत्यपणाचें आंघुलें । पडिलें जयां ॥ ९ ॥ तिये कर्मा अकार्यी । [भये] जन्ममरणसमयीं । प्रवृत्ति पळवी पार्यी । मागिलीचि ॥ ७१० ॥ पै आगीमाजि न रिघवे । अंधावीं न घलवे । धगधगीत नांगवे । शूल जेवीं ॥ ११ ॥ कां काळियानाग पुंघुवात । देखोनि न घालवे हात । न वचवे खोपेआर्ते । व्याघ्राचिये ॥ १२ ॥ तैसें कर्म अकरणीय । देखोनि महा-भय । उपजे निःसंदेह । बुद्धी जिये ॥ १३ ॥ [बंधं] वाढिलें रांधूनि विषें । तेथ जाणिजे मृत्यु न चुके । तेवि निषेधीं कां कां देखे । बंधातें जो ॥ १४ ॥ [या वेत्ति] मग बंधभयभरित । तियें निषिद्धीं प्राप्ती । विनियोगें जाणे निवृत्ती । कर्माचिये ॥ १५ ॥ ऐसेनि कार्याकार्यविवेकी । जे प्रवृत्ति निवृत्ति मोपकीं । खरा फुडा पारखी । जिया परी ॥ १६ ॥ [बुद्धिः सा पार्थ सात्विकी] तैसी कृत्याकृत्यशुद्धी । बुद्धि जे निरवंधी । सात्विक ह्मणिजे बुद्धी । तेचि तूं जाण ॥ १७ ॥

“ह्मणून अधिकाराला योग्य झाले; जें प्रारब्धाच्या ओघानें आलें; तें एक नित्यकर्मच येथें योग्य आहे. ६९९ तेंच आत्मप्राप्तीच्याच एका फलावर दृष्टि ठेवून, तान्हेला जसें पाणी प्यावयाचें त्याप्रमाणें आचरण करावें. ७०० इतक्यानें तें कर्म विषम असें जें जन्मभय तें दूर करून मुक्तीचा लाभ सुलभ करून देतें. ७०१ असें करील तोच उत्तम; आणि त्याचेंच संसारभय नाहीसें झालें. तो कर्माच्या योगानेंच मुमुक्षूच्या योग्यतेला पोचतो. ७०२ तेव्हां येथें जी बुद्धि अशा प्रकारचा दृढनिश्चय करून राहते, तिला ठेवल्यासारखा मोक्ष प्राप्त होतो. ७०३ ह्मणून निवृत्तीला प्रवृत्तीच्या तळाशीं घातून ह्याच कर्मांमध्ये बुडी देऊं नये काय? ७०४ तृपातीला उदक हेंच जीवन; किंवा पुरांत पडलेल्यास पोंहणें; अंधारमय विहिरीमध्ये सूर्याच्या किरणानेंच गति होते. ७०५ किंवा पथ्यासह-वर्तमान औषध मिळालें तर रोगानें प्रस

१ तृपाशाख्यर्थ. २ मुक्तीलाभ. ३ निवृत्तीला=अ-तर्मुखवृत्तीला, प्रवृत्तीचे=विषयोन्मुख वृत्तीचे खालीं घालून प्रवृत्तिमार्ग धरतो. ४ बुडी मारणें. ५ पोंहणें. ६ व्यापला असतांही वांचतो. ७ मत्स्याला.

१ आहे. २ स्पष्ट, खरें. ३ आवरण. ४ शिरवे. ५ खोल पाण्यांत. ६ प्रखर. ७ धरतां येत नाही. ८ फुत्कार टाकीत. ९ जाळीत. १० निषिद्ध. ११ व्यवस्था. १२ स्वार्थ-त्यागाच्या. १३ मापानें. १४ खोटा. १५ समजे. १६ अत्यंत.

झालेलाही वांचतो. किंवा माशाला जर जळाचा जिह्वाळा मिळाला, ७०६ तर त्याच्या जिवाला मग भीति उरली नाही. त्याप्रमाणे ह्या कर्मांमध्ये वागत असतांना मोक्ष हा मिळावयाचाच. ७०७ ह्या उचित कर्माकडे जे ज्ञान लागते ते उत्तम होय. आणि अनुचित कर्मांचे लक्षण असे असते हेही लक्षांत ठेव. ७०८ जी काम्यादिक; संसारभय दाखविणारी; ज्यांच्यावर अकृत्यपणाचा-निषिद्धतेचा-शितोडा पडलेला, ७०९ अशा कर्मापासून, अकार्यापासून, जन्ममरणाच्या प्रसंगांतून प्रवृत्तीला जी मागच्या पायाने पळविते, ७१० अग्नीमध्ये शिरवत नाही; खोल पाण्यांत उडी घालवत नाही; प्रखर शूळाला जसे धरवत नाही; ७११ किंवा कृष्णसर्प फूत्कार टाकित असता त्याला हात घालवत नाही; व्याघ्राच्या गुहेमध्ये जावत नाही; ७१२ त्याचप्रमाणे निषिद्धकर्म पाहिले असता, ज्याच्या बुद्धीला निःसंशय महाभय उत्पन्न होते. ७१३ विषयुक्त स्वयंपाक करून वाढला तर तेथे मृत्यु चुकावयाचा नाही, हे पक्के समजावे. त्याप्रमाणे निषिद्धकर्मांमध्ये बंध आहे असे पाहून जिला, ७१४ पुढील बंधाचे भय घेऊन ती निषिद्धकर्म प्राप्त झाली असता, त्या कर्मांची निवृत्ति करणे माहित असते. ७१५ अशा प्रकारे कार्याकार्यविचार करते; प्रवृत्ति निवृत्तीच्या मापाने, परीक्षक ज्याप्रमाणे खऱ्याची आणि खोट्याची निवड करतो, ७१६ त्याप्रमाणे उचित कृत्य कोणते, आणि अनुचित कृत्य कोणते, हे जिला उत्तम तऱ्हेने कळते, तिलाच सात्विक बुद्धि ह्मणतात हे तुं लक्षांत ठेव." ७१७

यया धर्ममधर्म च कार्य चाकार्यमेव च ।

अयथावत्प्रजानाति बुद्धिः सा पार्थ राजसी ३१

[यथेति] आणि बकाच्या गांवी । घेपे क्षीरनेरी सैकलवी । कां अहोरात्रीची गोवी । आंधळे नेणे ॥ १८ ॥ जया कु-

१ बगळ्याच्या. २ दूध व पाणी. ३ एकत्र मिश्र, सरसकट.

लाचा मकरंद फावे । तो काष्ठे कोरुं धावे । परि भ्रमरपणा नेव्हे । अंघांटा जेवि ॥ १९ ॥ तैसीं हयें कार्याकार्ये । धर्माधर्मरूपे जिये । [अयथावत्प्रजानाति] तियें न चोखवितां जाये । जाणती जे कां ॥ ७२० ॥ अगा बोळावीण मोलिये । घेतां पांड मले विपाये । न मिळणे तें आहे । ठेविलें तेथे ॥ २१ ॥ तैसें अकरणीय अवघटें । नोडवे तरीच लोटे । येरवीं जाणें एकवटें । दोन्ही जे कां ॥ २२ ॥ [बुद्धिः सा पार्थ राजसी] ते गा बुद्धि चोखविखी । जाण येथ राजसी । अक्षत टाकिली जैसी । मांदिचेवरी ॥ २३ ॥

“आणखी बगळ्याच्या गांवामध्ये दूध व पाणी सरसकट चालतें. किंवा आंधळ्याला दिवस आणि रात्र ह्यांतील संबंध कळत नाही. ७१८ ज्याला फुलाचा मकरंद मिळतो, तो लांकडे पोखरावयालाही धांवतो. परंतु भ्रमरपणांत जसा बदल होत नाही; ७१९ त्याप्रमाणे हीं धर्माधर्मरूपाने असणारीं जीं कार्याकार्ये, त्यांतील भेदाभेद ज्यास कळत नाही. ७२० बाबा! नीट पाहिल्यावांचून मोठे घेतलीं, तर चांगलीं मिळतील एखादे वेळीं; परंतु चांगलीं न मिळणें हें मात्र अगदीं ठेवल्यासारखें असावयाचें. ७२१ त्याप्रमाणे अनुचित कृत्य अकस्मात् प्राप्त न झालें तर मात्र घडावयाचें नाही. बाकी दोन्हीची योग्यता जेथे एकच. ७२२ सान्या गांवाला जसे पैपाहुण्यासुद्धां आमंत्रण द्यावे, त्याप्रमाणे चांगल्या वाईटाची परीक्षा ज्या बुद्धीस नाही, ती राजस बुद्धि असें समज. ७२३

अधर्म धर्ममिति या मन्यते तमसावृता ।

सर्वार्थान्विपरीतांश्च बुद्धिः सा पार्थ तामसी ३२

[अधर्ममिति] आणि राजा जिया वाटा जाये । ते चोरांसि ओडव होये । कां राक्षसां दिवो पाहे । राति होउनी ॥ २४ ॥ ना ना निर्धोनचि निर्दैवो । होये कोळसयाचा उडवा । पै असतें आपणपें जीवा । नाही जालें ॥ २५ ॥ तैसें धर्मजात तितकें । जिये बुद्धीसी पातकें । साच तें लटिकें । ऐसेचि बुद्धे ॥ २६ ॥ [सर्वेति] ते आषवेचि अर्थ । करुनि

१ मिळे. २ आडवाट होत नाही. ३ न जाणें येतां. ४ योग्यता. ५ क्वचित्. ६ अकस्मात्. ७ प्राप्त न होय. ८ शुद्धविषयी. ९ सभेवर. १० अरण्य. ११ दिवस उजाडे. १२ ठेवा. १३ माग्यहीनाला. १४ रास, ढीग. १५ वाटे.

घाली अनर्थ । गुण ते ते व्यवस्थित । दोषचि मानी ॥२७॥
किंबहुना श्रुतिजार्ते । अधिष्ठूनि केले सरते । तेतुलेंहि उंप-
रते । जाणे जे बुद्धी ॥ २८ ॥ कोणातेंही न पुसता । ताम-
सी जाणावी पंडुशुता । रात्री काय धर्मार्था । साच करायी
॥ २९ ॥ एवं बुद्धीचे भेद । तिन्ही तुज विशद । सांगितले
स्वबोध- । कुमुदचंद्रा ॥ ३० ॥ आतां ययाचि बुद्धिहृत्ती ।
निष्ठकिल्ला कर्मजार्ती । खांद मांडिजे धृती । त्रिविधा जया
॥ ३१ ॥ तिथे धृतीचेही विभाग । तिन्हीं यथालेग । सांगी-
जति चांग । अवधान दे ॥ ३२ ॥

“आणखी राजा ज्या वाटेनें जातो, ती वाट चोराला अरण्य होते; किंवा राक्षसांना दिवस हा रात्रीच्या रूपाने उदयास येतो; ७२४ किंवा भाग्यहीनाला द्रव्याचा ठेवा, कोळ-शाचा ढीग होतो; व आपणाजवळ असले-लेंही जीवाला जसे नाहीसें होतें. ७२५ त्याप्रमाणे धर्म ह्याणून जितकें जितकें तितकीं ति-तकीं ज्या त्या बुद्धीस पातकें; खरे ह्याणून जि-तकें असेल, तितकें खोटें अशीच तिची सम-जूत. ७२६ जे अर्थ असतात त्या साऱ्यांचाच जी अनर्थ करून सोडते; आणि व्यवस्थित जे जे गुण असतील ते ते दोषच मानते. ७२७ किंबहुना प्रत्येक श्रुतीनें स्थापन करून जें जें मान्य केलेलें तितकें विपरीत-उलट-मानणारी जी बुद्धि; ७२८ हे अर्जुना! ती बुद्धि तामसी आहे हें पकें लक्षांत ठेवावें. कोणाला विचारण्याचें कारण नाही. धर्मा-र्थांला जी खरोखर रात्र-अभाव-करणारी ती काय करावयाची? ७२९ अशा प्रकारे हे ज्ञान-रूप कुमुदिनीस विकसित करणा-ऱ्या चंद्रा! बुद्धीचे तीन भेद तुला स्पष्ट करून सांगितले. ७३० आतां ह्याच बुद्धीच्या वृत्तीनें कर्मांमध्ये प्रवृत्त झालें असतां, त्याच्या धृतीचेही तीन प्रकार होतात. ७३१ त्या

धृतीचे ते तीनही भाग यथातथ्य रीतीनें सांगतो. तिकडे लक्ष्य दे.” ७३२

धृत्या यया धारयते मनःप्राणेंद्रियक्रियाः ।

योगेनाऽव्यभिचारिण्या धृतिः सा पार्थ सात्विकी ३३

[धृत्या यया] तरि उदेलिया दिनकर । चोरीसि धोके आधार । कां राजाज्ञा अव्यवहार । कुठवी जेवी ॥ ३३ ॥ ना ना पवनाचा साट । वाजीनलिया नीट । आंगेंसी बो-भाट । सांडिती मेघ ॥ ३४ ॥ कां अगस्तीचेनि दर्शने । सिंधु घेउनी ठाती मौने । चंद्रोदयीं कमळवने । पिठी देती ॥ ३५ ॥ हें असो पावो उचलिला । भेदमुख न ठेविती खालां । ग-जोंनि पुढां जाला । सिंह जरी ॥ ३६ ॥ तैसा जो धीर । उठलिया अतरे । मनादिकें व्यापार । सांडिती उर्भी ॥ ३७ ॥ [इंद्रियक्रियाः] इंद्रिया विळ्यांचिया गांठी । अपैसया सुटती किराटी । मन मायेच्या पोटी । रिगती दांही ॥ ३८ ॥ [प्राण-] अधोर्ध्व गुढे काठी । प्राण नवांची पंडी । बांधोनि घाली उडी । मध्यमेमाजी ॥ ३९ ॥ संकल्पविकल्पाचें लु-गडें । सांडूनि मन उघडें । बुद्धि मागिलेकडे । उगीचि बैसे ॥ ४० ॥ [धारयते] ऐसी धैर्यराजें जेणें । मन प्राण क-रणें । स्वचेष्टांचीं संभाषणें । सांडवीजती ॥ ४१ ॥ [योगेन] मग आगवीचि सैंडी । ध्यानाच्या आंगुल्या मंडी । कोंडिजती निरवडी । योगाचिये ॥ ४२ ॥ [अव्यभिचारिण्या] परी पर-मात्मया चक्रवर्ती । उंगणिती जंव हातीं । तंव लांच न घेतां धृती । धरिजती जिया ॥ ४३ ॥ [धृतिः सा पार्थ सात्विकी] ते गा धृति येथें । सात्विक हें निहत्तें । आईक अर्जुनातें । श्रीकांत ह्याने ॥ ४४ ॥

“तर सूर्य उगवला ह्याणजे चोरीचा आश्रय तुटतो, किंवा दुर्व्यवहार असेल तर राजा-क्षेने बंद होतो. ७३३ किंवा वाऱ्याचा वेग ह्यापाट्यानें सुटला ह्याणजे मेघ विद्युद्रजना वगैरे सोडून देतात. ७३४ किंवा अगस्तीला पा-हिलें कीं समुद्र मौन धरून बसतात; चंद्रो-दय झाला कीं, कमळवने कोमेजतात; ७३५ हें असो. गर्जना करून सिंह जर पुढें आला, तर हत्ती सुद्धां उचललेला पाय खालीं ठेवित

१ स्थापन. २ मान्य. ३ उलटें, विपरीत. ४ धर्मार्थाला जी खरोखर रात्र=अभाव करणारी ती काय करावयाची. ५ स्पष्ट. ६ ज्ञानरूप कमलास प्रफुल्लित करणाऱ्या चंद्रा. ७ निश्चयात्मक झाला. ८ वेगवेगळेपणा. ९ धैर्य. १० जसे आहेत तसे.

१ थावे. २ आश्रयस्थान, अंधकार अशा पाठी, चोरी व अंधकार हीं दोन्ही नाहीशीं होतात. ३ वेग. ४ वीज इत्यादि. ५ गर्जना. ६ राहाती. ७ मिटती. ८ हत्ती. ९ अंतरांतून. १० दाहा इंद्रियें. ११ खालतें वरतें. १२ आवरण. १३ सुपुत्रेंत. १४ शुद्ध, मोकळीं. १५ हृदयीं. १६ कुशलतेनें. १७ जाणती.

नाहींत. ७३६ त्याप्रमाणें अंतःकरणांतून धीर उत्पन्न झाला कीं, मनादिक आपआपले व्यापार उभ्याउभ्याच सोडून देतात. ७३७ हे किरिटी ! इंद्रियांच्या आणि विषयांच्या गांठी आपोआपच सुटतात. दाही इंद्रियें मनाच्या आणि मायेच्या पोटांत शिरतात.

७३८ प्राण हा खालचीं व वरचीं आच्छादनें काढून नवद्वारांची पेंडी बांधून सुषुम्नेमध्ये उडी घालतो. ७३९ संकल्प विकल्पाचें वृत्त सोडून मन उघडें पडतें. आणि बुद्धि मागच्या बाजूला उगेच बसलेली असते. ७४० अशा प्रकारें धैर्यरूप राजा, मन, प्राण, व इंद्रियें ह्यांच्या व्यापारांचीं संभाषणेंच बंद करवितो. ७४१ मग हीं सारीं ध्यानाच्या आंतील गामाच्यांत योगाच्या कौशल्यानें जी कोंडून ठेवते, ७४२ आणि परमात्मरूप जो सार्वभौम राजा तो त्यांस आपल्या ताब्यांत घेईपर्यंत, त्यांकडून लांच लुचपत कांहींपेक न घेतां जी त्यांस धरून ठेवते," ७४३ श्रीकांत ह्मणतात "वा अर्जुना! तीच खरोखर सात्विक धृति होय. हें ऐकून ठेव." ७४४

यया तु धर्मकामार्थान् धृत्या धारयतेऽर्जुन ।

प्रसंगेन फलाकांक्षी धृतिः सा पार्थ राजसी॥३४॥

[यथेति] आणि होऊनिचां शरीरीं । स्वर्गसंसाराच्या दोहीं घरीं । नांदे जो पोटभरी । त्रिवर्गोपायें ॥ ४५ ॥ तो मनोरथांच्या सागरीं । धर्मार्थकामांच्या तारुवावरी । जेणें धैर्यवळें करी । क्रिया वाणिज ॥ ४६ ॥ [प्रसंगेनेति] जें कर्म भांडवला मुये । तयाची चांगुणी येती पाहे । येवढें साहस वाहे । जिया धृती ॥ ४७ ॥ ते गा धृती राजस । पार्था येथ परियेस । आतां आइक तामस । तिसरी जे कां ॥ ४८ ॥

“आणखी शरीरामध्ये उत्पन्न होऊन धर्म, अर्थ आणि मोक्ष ह्या तीन उपायांनीं जो पोटभर नांदतो, ७४५ तो मनोरथरूप समुद्रामध्ये धर्मार्थकामाच्या गलबतावरचा मोठ्या साहसानें व्यापार करतो. ७४६ तो

जें कर्म भांडवलांत घालतो, त्याची चौपट होती हें ध्यानांत ठेव. इतकी ज्याची धृति साहस करते; ७४७ हे पार्था ! ऐक. ती धृति राजस होय. आतां तिसरी जी तामस धृति ती ऐक." ७४८

यया स्वप्नं भयं शोकं विषादं मदमेव च ।

न विमुंचति दुर्मेधा धृतिः सा पार्थ तामसी॥३५॥

[यथा] तरि सर्वाधमें गुणें । ज्याचें कां रूपा येणें । कोळसा काळेपणें । घडला जैसा ॥ ४९ ॥ अहो प्राकृत आणि हीन । तयाही कीं गुणत्वाचा मान । परि न ह्मणजे पुण्यजन । राक्षस काई ॥ ५० ॥ पै ग्रहांमाजि इंगळ । तयातें ह्मणजे मंगळ । तैसा तमीं घेसाळ । गुणशब्द हा ॥ ५१ ॥ जे सर्वदोषांचा वसोटा । तमचि कामजनि सुभटा । उभारिला आंगवटा । जया नराचा ॥ ५२ ॥ [स्वप्न] तो आळस सूनि असे कांखे । ह्मणोनि निद्रे कहीं न मुके । पापें पोशितां दुःखे । न सांडिजे जेवि ॥ ५३ ॥ [भय] आणि देहा धनाच्या आवडी । सदा भय तयातें न सांडी । विसंबूं न सके धोंडी । काठिण्य जैसे ॥ ५४ ॥ [शोक] आणि पदार्थजातीं लेंदो । बांधे ह्मणोनि तो शोकें ठावो । केला न शके पाप जावो । कुतंत्रांनि जैसे ॥ ५५ ॥ [विषाद] आणि असंतोष जीवेसी । धरुनि टेलीं अहिर्निशीं । ह्मणोनि मैत्री तेणेसी । विषादें केली ॥ ५६ ॥ लसणातें न सांडी गंधी । कां अपथ्यशीळातें व्याधी । तैसी केली मरणावधी । विषादें तया ॥ ५७ ॥ [मदमेव च] आणि वैयसा वित्तकाम । ययाचा वाढवी संभ्रम । ह्मणोनि मदे आश्रम । तोचि केला ॥ ५८ ॥ [धृतिः सा पार्थ तामसी] आगीतें न सांडी ताप । सळातें जातीचा साप । कां जंगचा वेरी योसिप । अखंड जैसा ॥ ५९ ॥ ना तरि शरीरातें काळ । न विसंवे कवणे वेळ । तैसा आथि अढळ । तामसी मद ॥ ६० ॥ [न विमुंचति दुर्मेधाः] एवं पांचही हे निद्रादिक । तामसाच्या ठाई दोख । जिया धृती देख । धरिले आहाती ॥ ६१ ॥ तिये गा धृती नांवें । तामसी येथ हें जाणावें । ह्मणीतलें तेणें देवें । जगाचेनि ॥ ६२ ॥ एवं त्रिविध जे बुद्धि । कीजे कर्मनिश्चयो आधि । तो धृती या सिद्धि ।

१ प्रसिद्धीस. २ पुण्यवान् लोक. ३ अमीसारखा क्रूर प्रह. ४ कल्याण करणारा. ५ स्थूल, अयथार्थ. ६ बस तिस्थान. ७ सिद्ध करून. ८ आकार. ९ घालून. १० दगड. ११ प्रीति. १२ ठेवितो. १३ अनुपकाऱ्यापासून. १४ राहिला. १५ खेदानें. १६ दुर्गंध. १७ आयुष्यधनवर्धनाची इच्छा. १८ मोठेपण. १९ द्वेषातें. २० सर्वांशीं विरुद्ध. २१ भय.

१ धर्म, अर्थ, काम या तीन उपायांनीं. २ गलबतावर. ३ व्यापार. ४ घाली. ५ रजोगुणात्मक.

नेइजो येथ ॥ ६३ ॥ सूर्ये मार्ग गोचर होय । आणि तो कीर पाये । परि चालणें तें आहे । धैर्य जेवि ॥ ६४ ॥ तैसी बुद्धि कर्मातें दावी । तें करणसामग्री निफेजवी । परि निफजावया होआवी । धीरता जे ॥ ६५ ॥ ते हे गा तुज-प्रति । सांगीतली त्रिविध धृति । यया कर्मत्रया निष्पत्ति । जालिया मग ॥ ६६ ॥ येथ फळ जें एक निफजे । सुख जायतें ह्मणिजे । तेंही त्रिविध जाणिजे । कर्मवशें ॥ ६७ ॥ तरि फळरूप तें सुख । त्रिगुणी भेदलें देख । विवंचू आतां चोखा चोखीं बोलीं ॥ ६८ ॥ परि चोखी ते कैसी सांगें । पें घेवों जातां बोलवें । कानींचियेही लागे । ह्यातीचा मळ ॥ ६९ ॥ ह्मणौनि ज्याचेनि अन्हेरें । अवधानही होय बाहिरें । तेणें आदक हो आदरें । जिवांचेनि जिवें ॥ ७० ॥ ऐसें ह्मणौनि देवो । त्रिविधा सुखाचा प्रस्तावो । मांडला तो निनाहो । निरूपित असे ॥ ७१ ॥

“तर कोळसा जसा काळेपणानें व्यापलेला असतो, त्याप्रमाणें सर्व अधम गुणांनींच ज्याचें प्रगट होणें, ७४९ अहो ! इतका तो हलका व कनिष्ठ प्रतीचा असून त्याला गुणत्वाचा मान कसा देतात ? पण राक्षसालाही पुण्यश्लोक असें ह्मणत नाहींत काय ? ७५० ग्रहांमध्ये अग्नीसारखा जो क्रूर ग्रह त्याला मंगळ ह्मणतात. त्याप्रमाणें तमालाही गुण हा शब्द अयथार्थच आहे. ७५१ हे वीरश्रेष्ठा ! सर्व दोषांचें जें स्थान; ज्यानें तमालाच कमावून त्याचें शहर वसविलेलें असतें. ७५२ तो आळस काखोटीस मारून बसलेला असतो ह्मणून, पापें पोसलेल्याला दुःखें जशीं कधीं सोडित नाहींत, त्याप्रमाणें निद्रेला कधींही दूर करीत नाहीं. ७५३ देहाच्या आणि धनाच्या आवडीमुळे, दगडाला जसा कठीणपणा सोडित नाहीं, त्याप्रमाणें त्याला भय ह्मणून सदासर्वकाल सोडितच नाहीं. ७५४ आणखी, प्रत्येक पदार्थावर प्रीति ठेवतो. ह्मणून कृतज्ञाला जसें पाप

सोडित नाहीं, त्याप्रमाणें त्यालाही शोक सोडित नाहीं. ७५५ आणखी रात्रंदिवस जिवाशीं असंतोपाला धरून बसलेला असतो, ह्मणून खेदाबरोबर त्याची मैत्री जडते. ७५६ लसणीला जशी घाण सोडीत नाहीं; किंवा अपथ्य करणाराला जशी व्याधि सोडित नाहीं; त्याप्रमाणें विपाद हा त्याच्या मरणकालपर्यंत सोबती होऊन बसतो. ७५७ शिवाय, आयुष्य व द्रव्येच्छा ह्यांची प्रतिष्ठा वाढवितो, ह्मणून मदालाही तोच आश्रयभूत होतो. ७५८ ताप अग्नीला सोडीत नाहीं; जातिवत सर्प द्वेष सोडित नाहीं; किंवा भय हें जसें जगाचें निरंतर वैर धरून असतें; ७५९ नाहीं तर शरिराला काळ जसा केव्हांही विसंबत नाहीं; त्याप्रमाणें तामसामध्ये मदही अढळ होऊन राहिलेला असतो. ७६० ह्याप्रमाणें हे निद्रादिक पांचही दोष तामसाच्या ठिकाणीं ज्या रीतीनें धरले जातात, ७६१ त्या धृतीला” “जगदीश्वर” ह्मणतात “तामसी धृति हें नांव आहे हें लक्ष्यांत ठेवावें. ७६२ अशा प्रकारें तीन प्रकारची बुद्धि जी आधीं कर्माचा निश्चय करते, तो ह्या रीतीनें धृति शेवटास नेते. ७६३ सूर्याच्या योगानें मार्ग दिसूं लागतो, आणि तो मार्ग निश्चयें करून पायानें चालतात. परंतु चालणें हें जसें धैर्य आहे, ७६४ त्याप्रमाणें बुद्धि कर्म दाखवून देते; इंद्रियांसाठीं सर्व तयारी करून देते; परंतु तें करण्याला जें धैर्य पाहिजे, ७६५ त्या धैर्याचेच हे तीन प्रकार तुला सांगितले. असें हें तीन प्रकारचें कर्म निष्पन्न झालें ह्मणजे मग, ७६६ तेथें जें एक फल उत्पन्न होतें; ज्याला सुख असें ह्मणतात; तेंही कर्माच्या जातीप्रमाणें तीन प्रकारचें असतें हें लक्ष्यांत असूं दे. ७६७ तर तें फळरूप सुखही तीन गुणांनीं तीन प्रकारचें झालेलें असतें, समजलास ? ह्याकरितां त्याचेंच आतां स्पष्ट शब्दांनीं निरूपण करूं. ७६८ परंतु त्याचा चांगुलपणा किती सांगावा ? तें शब्दाच्या मार्गानें घेऊं

१ प्रत्यक्ष. २ इंद्रियार्थ. ३ उत्पन्न करी. ४ धैर्य. ५ कर्माच्या योगानें. ६ स्पष्ट शब्दांनीं. ७ शब्दाच्या मार्गानें. ८ अंतःकरणयुक्त ध्वनानें. ९ करतलमलवत. १० ज्याणें अन्हेरें = तिरस्कार केला असतां अवधान देखील बाहिरें = व्यर्थ होतें त्या जीवाचे जीवानें ऐक. ११ विवरण. १२ व्यवस्था.

लागलें असतां, कानांच्या हातांचा मळ सुखां
त्याला लागेल ! ७६९ ह्मणून ज्याच्या तिर-
स्कारानें लक्ष्यही व्यर्थ होतें, त्या जिवाच्या
जीवानें आदरपूर्वक ऐक. ७७० असें ह्मणून
देवांनीं तीन प्रकारच्या सुखाचें निरूपण कर-
ण्यास प्रारंभ केला. त्याची व्यवस्था आतां
सांगतां. ७७१

सुखं त्विदानीं त्रिविधं शृणु मे भरतर्षभ ।

अभ्यासाद्रमते यत्र दुःखांतं च निगच्छति ॥ ३६ ॥

[सुखं त्विदानीमिति] ह्मणें सुखत्रयसंज्ञा । सांगां ह्मणोनि
प्रतिज्ञा । बोलिलों तें आज्ञा । ऐक आतां ॥ ७७२ ॥ तर सुख तें
गा किरीटी । दाविजेल तुज दिटी । जें आत्म्याचिये भेटी ।
जीवासि होय ॥ ७३ ॥ [अभ्यासाद्रमते यत्र] परि मात्रे-
चेनि मापें । दिव्यौषध जेस घेपे । कां कथिलाचें कीजे हपें ।
रसमावनीं ॥ ७४ ॥ ना ना लवणाचें जळ । होआवया दोनि
चार वेळ । देऊनि सांडिजती ढाल । तोयाचें जेवि ॥ ७५ ॥
तेवि जालेनि सुखलेशें । जीव भाविलिया अभ्यासें । [दुः-
खांतं च निगच्छति] जीवपणाचें नासे । दुःख जेथें ॥ ७६ ॥
ते येथ आत्मसुख । जालें असे त्रिगुणात्मक । तेंही सांगां
एकैक । रूप आतां ॥ ७७ ॥

ते ह्मणाले “ हे सुज्ञा ! तीन प्रकारच्या सु-
खाचीं लक्षणें सांगूं ह्मणून तुला वचन दिलें
होतें; तीं आतां ऐक. ७७२ तर अर्जुना !
आत्म्याच्या भेटीनें जिवाला जें सुख होतें, तें
सुख तुझ्या दृष्टीला दाखवून देऊं. ७७३ परंतु
दिव्य औषध जसें मात्रेच्या प्रमाणानें द्याव-
याचें, किंवा रसायनिक प्रयोगानें जसें कथ-
लाचें रूप करावें, ७७४ किंवा मिठाचें पाणी
करण्याकरतां, त्याला जशीं पाण्याचीं दोनचार
वेळ पुढें द्यावीं लागतात, ७७५ त्याप्रमाणें ज्ञा-
लेल्या यत्किंचित् सुखाचा अभ्यास जिवास
घडला असतां, जीवपणाचें जें कांहीं दुःख ह्म-
णून आहे तें जेथें नाश पावतें; ७७६ तें आ-
त्मसुखही येथें त्रिगुणात्मक झालेलें आहे. त्याचें-
ही एक एक स्वरूप आतां सांगूं. ७७७

यत्तदग्रे विषमिव परिणामेऽमृतोपमम् ।

तत्सुखं सात्त्विकं प्रोक्तमात्मबुद्धिप्रसादजम् ३७

१ बुद्धिमंता. २ भेटीनें. ३ प्रमाणानें. ४ किमयेच्या
कृतीनें. ५ पूर. ६ पाण्याचे.

[यत्तदग्रे विषमिव] आतां चंदनाचें बुड । सर्पी जेसें दु-
वाड । कां निधानाचें तोंड । विवसिया जेवि ॥ ७८ ॥ अगा
खर्गीचें गोमटें । आडवें यागसंकटें । कां बाळपण दोसटें ।
त्रासकाळें ॥ ७९ ॥ हें असो दीपाचिये सिद्धी । अवघड धूम
आधीं । ना तरि तो औषधीं । जिभेचा ठावो ॥ ८० ॥
तयापरि पांडवा । जया सुखाचा रिगावा । विषम तेथ मे-
ळावा । यमदमांचा ॥ ८१ ॥ देत सर्वज्ञेहा मिठी । आंगीं
ऐसें वैराग्य उठी । खर्गसंसारा कीठी । कांतिचिती ॥ ८२ ॥
विवेक श्रवणें खरपुसें । जेथ व्रताचरणें कर्कशें । करितां
जाती भोक्सें । बुध्यादिकांचे ॥ ८३ ॥ सुषुप्तेचेनि तोंडे ।
गिळिजे प्राणापानाचे लोंडे । बोहणियेसीचि येवढें । भारी
जेथ ॥ ८४ ॥ जें सारसांही विषडतां । होय बोहोहूनि
वत्स काडितां । ना भर्जन दवडितां । भोग्यावरुनी ॥ ८५ ॥
पैं मायेपुढीनि बाळक । काळें नेतां एकुलतें एक । होय कां
उदक । तुटतां मीना ॥ ८६ ॥ तैसें विषयांचें घर । इंद्रियां
सांडितां थोर । युगांत होय तें वीर । विरोग साहाती ॥ ८७ ॥
ऐसा जया सुखाचा आरंभ । दावी काटिण्याचा क्षोभ । [प-
रिणामेऽमृतोपमं] मग क्षीराब्धीं लाभ । अमृताचा जैसा
॥ ८८ ॥ पहिल्या वैराग्यगोरेळा । धैर्यशंभु बोडेंवी गळा ।
तरि ज्ञानामृतें सोहळा । पाहे जेथें ॥ ८९ ॥ पैं कोलितोहि
कोपे ऐसें । द्राक्षांचें हिरवेपण असे । तें परिपार्की कां जैसें ।
माधुर्य आते ॥ ९० ॥ [आत्मबुद्धिप्रसादजं] तें वैराग्या-
दिक तैसें । पिकलिया आत्मप्रकाशें । मग वैराग्येसींही नाशे ।
अविद्योजात ॥ ९१ ॥ तेव्हां सागरीं गंगा जैसी । आर्त्मी
मीनेल्या बुद्धि तैथी । अद्वयानंदाची आपसी । खाणी उघडे
॥ ९२ ॥ ऐसें खानुभवविश्रामें । वैराग्यमूळ जें परिणमे ।
[तत्सुखं सात्त्विकं प्रोक्तं] तें सात्त्विक येणें नामें । बोलिजे
सुख ॥ ९३ ॥

“ आतां चंदनाचें बुड सर्पीमुळें जसें भयं-
कर, किंवा ठेव्याचें तोंड भुतामुळें जसें भेसूर;
७७८ त्याप्रमाणें बाबा ! स्वर्गातील भोग चां-
गले आहेत. परंतु त्याकरितां यज्ञयागादिक

१ भयंकर. २ विघ्नदेवतेमुळें. ३ अरण्य. ४ यज्ञरूप ह्म-
शानें. ५ पीडाकारक. ६ औषधास. ७ विपरीत. ८ दांतखीळ.
९ कांटेरी. १० दूर करीतच. ११ तीव्र. १२ कठोर. १३ आं-
गच्या कातळाचें भोंक. १४ मध्यनाडी. १५ प्रथमारंभी.
१६ चक्रवाकाच्या युग्मास. १७ कासेपासून. १८ भिकारी.
१९ पात्रावरून. २० आईच्या पुढ्यांतून. २१ विरक्त.
२२ विषाला. २३ पुढें करी. २४ निखान्यालाही तीक्ष्ण
लागेल, कवलित्ता अशा पाठीं तक्षक. २५ अज्ञानसमूह.
२६ सिळाची असतां.

संकटांचीं अरण्ये ओलांडाचीं लागतात; किंवा बालपण कंटाळवाणें असल्यामुळें संतापदायक असतें. ७७९ हें असो. दिवा तयार करण्यापूर्वी धूर कठीण असतो, किंवा औषधाच्या गुणापूर्वी जिभेला कडवटपणा सोसावा लागतो. ७८० त्याप्रमाणें अर्जुना ! ज्याला ह्या सुखांत प्रवेश करावयाचा असेल, त्याला यम दम ह्यांचा समुदायाचा मोठा अडथळा आहे. ७८१ त्यांच्या योगानें झाडून साऱ्या जेहाचें पूज्य होईल; व स्वर्गसंसाराची आडकाठीच निघून जाईल, अशा प्रकारचें वैराग्य उत्पन्न होतें. ७८२ तीक्ष्ण विचार कानावर आल्यानें, कठोर वताचरणानें, बुद्धि आदिकरून फाटून त्यांना भोकसे पडतात. ७८३ सुषुप्तेच्या तोंडानें प्राणापानांचे लोंढे गिळावे लागतात. बोहनीलाच जेथें इतकें संकट असतें; ७८४ चक्रवाक पक्ष्याच्या युग्मांमध्ये विषाड झाला असतां, कासेपासून वासरूं ओढलें असतां, पात्रावरून भिकारी हांकून दिला असतां, ७८५ एकुलतें एक मूल आईपासून काळानें नेलें असतां, किंवा उदक संपलें असतां, मत्स्याला जसें होतें; ७८६ त्याप्रमाणें विषयांचें घर सोडतांना इंद्रियांना मोठा युगांत झाला असें वाटतें. परंतु हें सर्व, विरक्त वीर मात्र सहन करतात. ७८७ असा सुखाचा आरंभ जरी कठीणपणाचा कडेलेट दाखवितो, तरी मग जसा क्षीराब्धीमध्ये अमृताचा लाभ व्हावा, ७८८ तद्वत् पहिल्या वैराग्यरूप विषाला धैर्यरूप शंकर जर आपला गळा पुढें करील, तरच तेथें आत्मज्ञानामृताचा सोहळा पहावयास मिळतो. ७८९ निखान्याला सुखां तीक्ष्ण लागेल इतका द्राक्षाचा आंबटपणा असतो, परंतु त्यालाच परिपक्व झाल्यावर जसें माधुर्य प्राप्त होतें; ७९० त्याप्रमाणें तें वैराग्यादिक आत्मप्रकाशानें परिपक्व दशेला आलें ह्मणजे वैराग्यासहित अज्ञान ह्मणून जेवढें आहे तेवढें सारें लयास जातें. ७९१ तेव्हां समुद्राला जशी गंगा मिळते, त्याप्रमाणें आत्मस्वरूपामध्ये बुद्धीचें ऐक्य झालें ह्मणजे आपोआपच अज्ञान-

नंदाची खाण उघडते. ७९२ अशा प्रकारें स्वा-
नुभवाच्या विश्वांतीनें वैराग्यमूळापासून परि-
पक्व दशेस आलेलें जें सुख, त्यालाच सात्त्विक
सुख असें नांव आहे. ७९३

विषयेंद्रियसंयोगाद्यत्तदग्रेऽमृतोपमम् ।

परिणामे विषमिव तत्सुखं राजसं स्मृतम् ॥१८॥

[विषयेति] आणि विषयेंद्रिया । मेळ होतां धनंजया । जें सुख जाय थड्या । सांडून दोन्ही ॥ १४ ॥ अधिकारिया रितां गांवो । होय जैसा उत्साहो । कां रिणावरी विवाहो । विस्तारिला ॥ १५ ॥ नाना रोगिया जिभेपासीं । केळें गोड साखरेसीं । कां बचनागाची जैसी । मधुरता पहिली ॥ १६ ॥ पहिलें संव-चोराचें मैत्र । होतमेटीचें कलत्र । कां लाषवी-याचे विचित्र । विनोद ते ॥ १७ ॥ तैसें विषयेंद्रियदोखी । जें सुख जीवातें पोखी । [परिणामे विषमिव] मग उपर्जिला खडकीं । हंस जैसा ॥ १८ ॥ तैसी जोडी आघवी आटे । जीविताचा ठाय फिटे । सुकृताचियाही सुटे । धनाची गांठी ॥ १९ ॥ आणिक भोगिलें जें काहीं । तें स्वप्न तैसें होय नाहीं । मग हानिचाचि धोई । लोळावें उरे ॥ २० ॥ ऐसें आपत्तीं जें सुख । ऐहिकी परिणमे देख । परत्रीं कीर विख । होउनि परते ॥ १ ॥ जे इंद्रियजाता लळा । दीधलिया धर्माचा मळा । जाडुनि भोगिजे सोहळा । विषयांचा जेथ ॥ २ ॥ तेथ पातकें बांधिती थोवो । तियें नरकी देती ठावो । जेणें सुखें आपवो । परत्रीं ऐसा ॥ ३ ॥ पै नांमं विषं मधुरें । परि मारुनि अंतीं खरें । तैसें आदिजे 'भोडिरे' । अंतीं कडु ॥ ४ ॥ [तत्सुखं राजसं स्मृतं] पार्था तें सुख साचें । वै-
ळिलें आहे रजाचें । ह्मणीनि न शिवें तयाचें । आंग कहीं ॥ ५ ॥

“हे धनंजया ! विषयांचा आणि इंद्रियांचा मिलाफ झाला ह्मणजे जें सुख दोन्ही थडी सोडून जातें. ७९४ अधिकारी गांवांत शिरतांना जसा उत्साह होतो; किंवा ऋण काढून लग्नसोहळा होतो, ७९५ किंवा रोग्याच्या जिभेला जसें साखरेबरोबर केळें गोड लागतें; किंवा बचनागाची गोडी जशी प्रथम मधुर लागते, ७९६ बरोबर येणाऱ्या चोराची पहिली मैत्री; बाजारांत भेटलेली स्त्री; किंवा

१ तीरें. २ अधिकारी. ३ शिरतां. ४ कर्जानें. ५ बाजारां-तील स्त्री. ६ थडेचोराचे. ७ विषयांमुळें, उद्देशानें. ८ सांपडला. ९ संपादिलें. १० पुण्यरूप धन. ११ घायानें. १२ विप-
तिरूप. १३ या लोकांत. १४ परिणाम पावतें. १५ बळ. १६ अपाय. १७ मधुर नांवाचें विष. १८ मधुर. १९ बनविलें.

खुषमस्कऱ्याची विचित्र थड्डा; ७९७ त्याप्रमाणें विषयेंद्रियांच्या दोषानें जें सुख जिवाला पोसतें; मग हंस जसा खडकावर सांपडावा; ७९८ त्याप्रमाणें संपादलेलें सारें संपून जातें; जीविताचें ठिकाण मोडतें; पुण्यरूप धनाचा सांठा रिकामा पडतो; ७९९ आणखी भोगलेलें जें जें कांहीं, तें स्वप्नवत् नाहींसं होऊन जातें. मग हानीच्या धावामध्ये लोळत बसणें येवढेंच काय तें बाकी उरतें. ८०० असें आपत्तिरूप जें सुख तें ह्या लोकांत आपला गुण करतें, आणि परलोकीं तर जें विष होऊन परततें. ८०१ जें प्रत्येक इंद्रियाचा लळा पुरवितें. ज्यास धर्माचा मळा दिला असतां तो जाळून जेव्हां विषयांचा सोहळा भोगतें, ८०२ तेव्हां पातकें बळावतात; आणि तीं नरकामध्ये नेऊन टाकतात. इतका परलोकामध्ये ज्या सुखानें अपाय होतो. ८०३ तसेंच मधुर नांव असलेलें विष खरें; पण अखेर तें मारून शेवटीं आपलें नांव खरें करतें. त्याप्रमाणें आधीं जें गोड आणि अखेरीला कडू; ८०४ पार्था ! तें सुख खरोखर रजोगुणाचें बनविलेलें आहे. ह्याणून त्याच्या आंगाला कधीं हात सुद्धां लावूं नको.”

८०५

यदग्रे चानुबधे च सुखं मोहनमात्मनः ।

निद्रालस्यप्रमादोत्थं तत्तामसमुदाहृतम् ॥ ३९ ॥

[यदग्रे इति] आणि अपेयाचेनि पानें । अखायाचेनि भोजनं । खैरस्त्रीसंनिधानें । होय जें सुख ॥ ६ ॥ कां पुढिलोचने मारें । नातरि परस्वापहारें । जें सुख अवतरे । भाटाच्या बोलें ॥ ७ ॥ [निद्रालस्यप्रमादोत्थं] जें आलस्यावरि पोखिजे । निद्रेमाजी जें देखिजे । जयाच्या आधर्मी भूलिजे । आपुली वाट ॥ ८ ॥ [तत्तामसमुदाहृतं] तें या सुख पार्था । तामस जाण सर्वथा । हें बहु न सांगोचि जें कथा । असं भाव्य हें ॥ ९ ॥ ऐसें कर्मभेदें मुदलें । फळसुखही त्रिधा जालें । तें हें यथागमें केलें । गोचर तुज ॥ ८१० ॥ तें कर्ता कर्म फळ । हे त्रिपुटी येकी केवळ । वांचूनि क्रांहीचि नसे स्थूळ । सूक्ष्मीं इये ॥ ११ ॥ आणि हे तंव त्रिपुटी । तिहीं गुणीं इहीं किरीटी । गुंफिली असे पटी । तांतुवीं जैसी ॥ १२ ॥

१ व्यभिचारिणीच्या संसर्गानें. २ प्रगटे. ३ पृष्ठ होतें. ४ स्वधर्म. ५ कारण कीं. ६ त्याज्य, निघ. ७ तंतूनीं.

“ आणखी अपेयाचें पान केल्यानें, अभक्ष भक्षण केल्यानें, व्यभिचारिणीच्या सांसर्गानें जें सुख होतें; ८०६ किंवा दुसऱ्यास मारून, किंवा दुसऱ्यास सर्वस्वीं नागवून, भाटाच्या बडबडीप्रमाणें जें क्षणिक सुखच प्राप्त होतें; ८०७ आठसानें जें पोसलें जातें; निद्रेमध्ये जें दृष्टीस पडतें; ज्याच्या आदि व अंती आपली वाट चुकते; ८०८ हे पार्था ! तें सुख खरोखर तामस होय. त्याची कथा निघ आहे. ह्यास्तव अधिक सांगत नाहीं. ८०९ अशा प्रकारें मूळ कर्मभेदाप्रमाणें फळसुखही तीन प्रकारचें झालेलें आहे. तें हें प्रसंगानुसार तुला दाखवून दिलें. ८१० तें कर्ता, कर्म आणि फळ ह्या एका त्रिकुटाशिवाय, ह्या सूक्ष्मामध्ये स्थूळ असें कांहीं नाहीं. ८११ आणि हे अर्जुना ! हें त्रिकुट तर ह्या तीन गुणांनीं ब्रह्मामध्ये तंतु असल्याप्रमाणें गुंफलेलें आहे.” ८१२

न तदस्ति पृथिव्यां वा दिवि देवेषु वा पुनः ।

सत्त्वं प्रकृतिजैर्मुक्तं यदेभिः स्यान्निर्भिर्गुणैः ॥ ४० ॥

[सत्त्वं प्रकृतिजैरिति] झणानि प्रकृतीच्या आलोकीं । न बंधिजे इहीं सत्त्वादिकीं । [न तदस्तीति] तैसीं स्वर्गीं ना मृत्युलोकीं । आधी वस्तु ॥ १३ ॥ कैचा लोवेवीणें कांबळा । मातियेवीण मोढळा । कां जळेंवीण कळोळा । होणें आहे ॥ १४ ॥ तैसें नहोनि गुणाचें । सृष्टीच्या रचना रचे । ऐसें नाहींच गा साचें । प्राणिजात ॥ १५ ॥ यालागीं हें सकळ । तिहीं गुणांचेचि केवळ । घडलें आहे निखिळ । ऐसें जाण ॥ १६ ॥ गुणीं देवां त्रयी लाविली । गुणीं लोकीं त्रिपुटी पाडिली । चतुर्वर्णा घातलीं । सिनानि उळिगें ॥ १७ ॥

“ ह्याणून प्रकृतीच्या आभासांत ह्या सत्त्वादिकांनीं बांधली जाणार नाहीं, अशी स्वर्गांत किंवा मृत्युलोकावर एकही वस्तु नाहीं. ८१३ लोंकरीशिवाय कांबळा कशाचा ? मातीशिवाय ठेंकूळ कशाचें ? किंवा पाण्याशिवाय लाटा उत्पन्न होतील काय ? ८१४ त्याप्रमाणें गुणांना घेतल्याशिवाय सृष्टीच्या रचनेत उत्पन्न होईल, असा कोणताच प्राणी नाहीं. ८१५ ह्याकरितां

१ आभासांत, जगांत, दृष्टींत. २ लोंकरीवांचून. ३ मातीचें ठेंकूळ. ४ ब्रह्मा, विष्णु, महेश. ५ कर्ता, कर्म, करणें इ०. ६ कायें.

हैं सर्व निखालस तीन गुणांचेंच घडलेलें आहे असें समज. ८१६ गुणांनीं देवांतही तीन भेद करून टाकले; गुणांनींच जगामध्ये कर्ता-कर्म आणि करणें असे तीन भेद केले, आणि चतुर्वर्णांना भिन्न भिन्न कर्मे लावून दिलीं. ८१७

ब्राह्मणक्षत्रियविशां शूद्राणां च परंतप ।

कर्माणि प्रविभक्तानि स्वभावप्रभवेर्गुणैः ॥४१॥

[ब्राह्मणक्षत्रियेति] तेच चारी वर्ण । पुससी जरी कोण कोण । तर जयां मुख्य ब्राह्मण । घुरेचे कां ॥ १८ ॥ येर क्षत्रिय वैश्य दोन्ही । तेही ब्राह्मणाच्याचि मानिजे मानी । जे ते वैदिकविधानी । योग्य ह्मणानी ॥ १९ ॥ चौथा शूद्र जो धनंजया । वेदीं लाग कीर नाही तया । तन्ही वृत्ति वर्णत्रया- । अधीन तयाची ॥ ८२० ॥ तिये वृत्तीच्या जवळिका । वर्णत्रयां ब्राह्मणादिकां । अहो शूद्रही की देखा । चौथा जाला ॥ २१ ॥ जेसा फुलाचेनि सांगाते । तांतु तुरबिजे श्रीमंतें । तैसें द्विजसंगें शूद्रातें । स्वीकारी श्रुती ॥ २२ ॥ ऐसैसी गा पार्था । हे चतुर्वर्ण्यवस्था । करूं आतां कर्म-पथा । यांचियां रूप ॥ २३ ॥ [कर्माणि प्रविभक्तानि] जिहीं गुणीं ते वर्ण चारी । जन्ममृत्यूचिये कातरी । चुकोनियां ईश्वरीं । पेटे होती ॥ २४ ॥ जियें आत्मप्रकृतीचे इहीं । गुणीं सत्त्वादिकीं तिहीं । कर्म चौघां चहूं ठाई । वांटिलीं वर्णां ॥ २५ ॥ जैसें बापें जोडिलें लेंका । वांटिले सूर्यें मार्ग पांथिकां । ना ना व्यापार सेवकां । स्वामीन जैसे ॥ २६ ॥ [स्वभावप्रभवेर्गुणैः] तैसी प्रकृतीच्या गुणीं । जया कर्मांची वेल्होवणी । केली आहे वर्णां । चहूं इहीं ॥ २७ ॥ तेथ सत्त्वं आपल्या आंगीं । समीननिमीन भागीं । दोघे केले नियोगी । ब्राह्मण क्षत्रिय ॥ २८ ॥ आणि रज परी सात्त्विक । तेथ ठेविले वैश्य लोक । रजचि तैममेपक । तेथ शूद्र ते गा ॥ २९ ॥ ऐसा येकाचि प्राणिग्रंदा । भेद चतुर्वर्णधा । गुणींचि इहीं प्रबुद्धा । केला जाण ॥ ८३० ॥ मग आपलें ठेविलें जैसें । आहेंतेंचि दीपें दिसे । गुणभिन्न कर्म तैसें । शास्त्र दावी ॥ ३१ ॥ तेंचि आतां कोण कोण । वर्ण-विहिताचें लक्षण । हें सांगों ऐक श्रवण । सांभोग्यनिधी ॥ ३२ ॥

“ते चार वर्ण कोण कोण ? असें विचारशील

१ अग्रमार्गीचे. २ जीवोपाय. ३ वृत्तीच्या सात्त्विक्याने. ४ दोरा हुंगतात. ५ या चारी वर्णांच्या कर्ममार्गांचें स्पष्टीकरण. ६ कातरिस. ७ प्राप्त. ८ वाटसरू लोकांस. ९ अथवा. १० वांटणी. ११ अर्धोअर्ध, समविषमभावे. १२ स्वाधीन. १३ तमोमिश्र. १४ वर्णपरत्वे चार प्रकारचा. १५ हे भाग्यवंता.

तर, त्यामध्ये ब्राह्मण हे मुख्य-अग्रगणी-आहेत. ८१८ दुसरे क्षत्रिय आणि वैश्य हे दोन्ही. त्यांचा मानही ब्राह्मणांप्रमाणेच समजावा. कारण, ते वेदोक्त कर्म करण्यास योग्य आहेत ह्मणून. ८१९ अर्जुना ! जो शूद्र त्याला मात्र वेदांशीं कांहीं संबंध नाही. तरी त्याचा जीवोपाय तिन्ही वर्णांच्या हातांत आहे. ८२० अहो ! त्या वृत्तीच्या सात्त्विक्याने ब्राह्मणादि वर्णत्रयांत शूद्र हाही चौथा होऊन बसला कि हो ! ८२१ ज्याप्रमाणें फुलांच्या संगतीनें दोऱ्याचाही श्रीमंत लोक वास घेतात, त्याप्रमाणें श्रुतीनें ब्राह्मणावरोबर शूद्राचाही स्वीकार केला आहे. ८२२ पार्था ! अशी अशी ही चार वर्णांची व्यवस्था आहे. आतां ह्या चारी वर्णांच्या कर्ममार्गांचें विवरण करूं. ८२३ ते चारी वर्ण ज्या गुणांनीं जन्ममृत्यूच्या कातरितून सुटून ईश्वराच्या ठिकाणीं पोचतील, ८२४ अशीं जीं आत्मप्राप्तीचीं सत्त्वादिक तीन गुणांचीं कर्मे, तीं चारी वर्णांना चार प्रकारें वांटून दिलीं. ८२५ चापानें संपादलेलें ज्याप्रमाणें मुलांना वांटून द्यावें, किंवा सूर्य जसा प्रवाशांना मार्ग वांटून देतो, किंवा धन्यानें चारारांना जशीं कर्मे वांटून द्यावीत, ८२६ त्याप्रमाणें प्रकृतीच्या ह्या गुणांनीं ज्या कर्मांची ह्या चतुर्वर्णांमध्ये वांटणी केली आहे, ८२७ त्यांत सत्त्वानें आपल्या आंगच्या समविषमभावानें ब्राह्मण व क्षत्रिय हे दोघे स्वाधीन करून ठेवले आहेत. ८२८ आणखी रज-परंतु सात्त्विक आहे-त्यांत वैश्य लोक ठेवलेले आहेत. आणखी रजच तमानें मिश्रित झालेलें असतें, त्यांत शूद्र असतात. ८२९ हे बुद्धिमंता ! असा एकाच प्राणिसमुदायाचा चार प्रकारचा भेद ह्या गुणांनींच केला आहे, हें लक्षांत ठेव. ८३० मग आपलें ठेवलेलें दिव्यानें जसें सहज दिसूं शकतें, त्याप्रमाणें गुणांनीं भिन्न भिन्न केलेलें कर्म शास्त्र दाखवून देतें. ८३१ हे भाग्यवंता ! तेंच वर्णविहिताचें कोणकोणतें लक्षण ? तें सांगतों. कान देऊन ऐक ॥ ८३२

शमो दमस्तपः शौचं क्षांतरिार्जवमेव च ।

ज्ञानं विज्ञानमास्तिक्यं ब्रह्मकर्म स्वभावजम् ४२

[शमः] तरि सर्वेन्द्रियाचिया दृष्टी । घेऊनि आपुल्या हातीं । बुद्धि आत्मया मिळे येकांती । प्रिया जैसी ॥ ३३ ॥ ऐसा बुद्धीचा उपरम । तया नाम ह्मणिपे शम । तो गुण गा उपेकम । जया कर्माचा ॥ ३४ ॥ [दमः] आणि बाह्येन्द्रियांचें धेडें । पिटूनि विधीचेनि दंडें । नेदिजे अधर्माकडे । कहींचि जावों ॥ ३५ ॥ तो पै गा शमा विरेजा । दम गुण जेथ दुजा । आणि स्वधर्माचिया वोजा । जिणें जें कां ॥ ३६ ॥ [तपः] तेविचि सटवीचिये राती । न विसंबिजे जेविं वाती । तैसा ईश्वरनिर्णय चितीं । वाहणें सदा ॥ ३७ ॥ तया नाम तप । हें तिजया गुणाचें रूप । [शौचं] आणि शौचंही निष्पाप । द्विविध जेथ ॥ ३८ ॥ मन भावशुद्धी भरलें । आंग क्रिया अळकारिलें । ऐसें सबाह्य जियेलें । साजिरें जें कां ॥ ३९ ॥ तया नाम शौच पार्था । तो कर्मी गुण जये चौथा । [क्षांतिः] आणि पृथ्वीचिया परी सर्वथा । सर्व जें साहाणें ॥ ८४० ॥ ते गा क्षमा पांडवा । गुण जेथ पांचवा । स्वर्माजि उद्वावा । पंचम जैसा ॥ ४१ ॥ [आर्जवमेव च] आणि वांकडेनि वोधेंसी । गंगा वाहे उजूचि जैसी । कां पृष्ठी वळला उर्सी । गोडी जैसी ॥ ४२ ॥ तैसा विषमाहि जीवां- । लागीं उंजु-कार बरवा । तें आर्जव गा साहावा । जेथिचा गुण ॥ ४३ ॥ [ज्ञानं] आणि पाणियें प्रयत्नं मीळीं । अखंड जंचे झाडामुळीं । परि तें आषवेंचि फळीं । जाणे जेविं ॥ ४४ ॥ तैसें शास्त्राचारें तेणें । ईश्वरच येक पावणें । हें फुडें जें कां जाणणें । तें येथ ज्ञान ॥ ४५ ॥ तें गा कर्मी जिये । सातवा गुण होये । [विज्ञानं] आणि विज्ञान हें पाहें । एवरूप ॥ ४६ ॥ तरि सत्वशुद्धीचिये वेळे । शास्त्रें कां ध्यानबळें । ईश्वरतत्वाचि मिळे । निधंकुशुद्धी ॥ ४७ ॥ हें विज्ञान बरवें । तें गुणरत्न जेथ आठवें । [आस्तिक्यं] आणि आस्तिक्य जाणावें । नववा गुण ॥ ४८ ॥ पै रोजमुद्रा आथिलियां । प्रजा भजे भलतयां । तेविं शास्त्रें स्वीकारिलिया । मार्गमात्रातें ॥ ४९ ॥ आदरें जें कां मानणें । तें आस्तिक्य मी ह्मणें । तो नववा गुण जेणें । कर्म तें साच ॥ ८५० ॥ [ब्रह्मकर्म स्वभावजं] एवं नवही शमा-

१ विषयापासून उलटणें. २ शांति. ३ आरंभ. ४ सारी. ५ साह्य. ६ रीतीन. ७ वांचणें. ८ जन्मल्याच्या साहाय्या रात्रीं. ९ दिवा. १० शुद्धि. ११ विचारानें. १२ विहित कार्यानीं भूषित केलें. १३ जाहालें, जीवित. १४ सुशो-मित. १५ पंचम नांवाचा स्वर. १६ पाठीकडे वळले. १७ सरळ. १८ माळी नित्य झाडाच्या मुळांत पाणी घालून जचें=जप, श्रम करितो परंतु ते श्रम फळीं जाणतो=फळाचें श्रमाचें सार्थक्य होईल असें मानितो. १९ सिद्धांतबुद्धीन. २० वस्तुसत्यताबुद्धि. २१ राजचिन्ह असलेल्याला.

दिक । गुण जेथ निदोष । तें कर्म जाण खाभाविक । ब्राह्मणाचें ॥ ५१ ॥ तो नवगुणरत्नाकर । यया नवरत्नांचा हार । न फेळित ले दिनकर । प्रकाश जैसा ॥ ५२ ॥ ना ना चांपा चांपौळीं पूजिला । चंद्र चंद्रिका धवळला । कां चंदन निजें चंचिला । सौरभ्यें जेविं ॥ ५३ ॥ तेविं नवगुणटिकला । लेणें ब्राह्मणाचें अव्यंग । कहींचि न संडी आंग । ब्राह्मणाचें ॥ ५४ ॥ आतां उचित जें क्षत्रिया । तेंही कर्म धनंजया । सांगों एक प्रजेचिया । भरोवरी ॥ ५५ ॥

“पतीला जशी एकांती स्त्री भेटते; त्याप्रमाणें सर्व इंद्रियांच्या प्रवृत्ति आपल्या हाता-मध्ये घेऊन बुद्धि आत्म्याला मिळणें, ८३३ अशी जी बुद्धीची उलट, तिलाच शांति असें ह्मणतात. तो गुण ज्याच्या कर्माच्या आरंभाला असतो. ८३४ बाह्येन्द्रियांच्या धेडाना विधी-रूपदंडानें शासन करून पिटाळून लावतो. अधर्माकडे कधीं जाऊंच देत नाही. ८३५ त-साच तेथें त्या शमाला साह्य करणारा दुसरा गुण जो दम तो जेथें असतो. आणि स्वधर्माच्या रीतीन जें जगणें, ८३६ तसेंच सटवाईच्या रात्रीं (मूल जन्मल्यापासून पांचव्या व सहाव्या रात्रीं) दिव्याला जसें क्षण-भर विसंबत नाहीत, त्याप्रमाणें चित्तामध्ये निरंतर ईश्वराचा निर्णय धरून बसणें, ८३७ त्याचें नांव तप. तें तिसऱ्या गुणाचें लक्षण होय. आणि निष्पाप असा शुचिर्भूतपणाही जेथें दोन प्रकारचा; ८३८ शुद्ध भावनेन मन भरलेलें, आणि शरीर विहित कर्मांनीं अलंकृत झालेलें; असें अंतर्बाह्य सुशोभित जें जीवित, ८३९ हे पार्था! त्याचें नांव शौच. हा कर्मांतला चौथा गुण होय. आणखी बरोबर पृथ्वीप्रमाणें जें सर्व सहन करणें; ८४० अर्जुना! स्वरांमध्ये पंच-

मस्वर जसा उत्तम-शोभिवंत-त्याप्रमाणें जी क्षमा, ती त्याचा पांचवा गुण होय. ८४१ वांकड्या ओघानें गंगा जशी सरळच वाहते, किंवा उसाला पाठीकडे वळविला तरी, गोडी जशी कायमच्या कायम, ८४२ त्याप्रमाणें वांकड्या

१ तोच नवगुणरूप रत्नांचा समुद्र व त्या नवरत्नांचा हार करून तोच ले=आपल्या आंगावर घालितो. २ चांप्याच्या कळ्यांनीं. ३ चांदण्याचें शुभ्र केला. ४ शोभिवंत. ५ सामुग्रीन.

प्राण्यावर सुखां सरलता; असें जें आर्जव तें ज्यांतील सहाषा गुण. ८४३ आणखी, माळी नित्य झाडाच्या मुळांत पाणी घालून अखंड खपत असतो, पण तें सर्व झाडाच्या फळा-मध्ये समजून येतें. ८४४ त्याप्रमाणें शास्त्राचार ह्मणून जो आहे, त्याच्या योगानें एका ईश्व-रालाच पहावयाचें असें स्पष्ट समजणें ह्याचें नांव येथें ज्ञान होय. ८४५ तें कर्मांमध्ये रा-हिलेलें असतें. तें सातवा गुण होय. आणि विज्ञानही तसेंच आहे हें ध्यानांत ठेवावें. ८४६ तर सत्वशुद्धीच्या वेळेला शास्त्रद्वारे किंवा ध्यानशक्तीने सिद्धांतबुद्धि ईश्वरतत्त्वालाच मि-ळते. ८४७ तें सुंदर विज्ञान हें जेथचें आठवें गुणरत्न आहे. आणि आस्तिक्य-वस्तूच्या-ब्रह्माच्या-ठिकाणीं सत्यताबुद्धि हा नववा गुण आहे हें लक्ष्यांत ठेवावें. ८४८ राजचिन्हें धारण केलेला कोणीही असो, त्याला प्रजा भजू लागते. त्याप्रमाणें शास्त्रानें स्वीकारलेल्या प्रत्येक मार्गाला, ८४९ आदरानें जें मान देणें त्याला मी 'आस्तिक्य' असें ह्मणतों. तो खरो-खर नववा गुण असून त्याच्या योगानें कर्म शे-वटास जातें. ८५० ह्याप्रमाणें शमदमादिक नऊही गुण जेथें निर्दोष रीतीनें असतील, तें ब्राह्मणांचें स्वाभाविक कर्म आहे, हें लक्ष्यांत ठेव. ८५१ तो नऊ गुणरूपरत्नांचा समुद्र, व त्याच नऊ रत्नांचा हार, सूर्य जसा प्रकाश धारण करतो, त्याप्रमाणें धारण करतो, दूर करीत नाही. ८५२ किंवा चाफ्याची पूजा, चाफ्याच्याच कळ्यांनीं करावी, चंद्राला चां-दण्याचीच सफेती द्यावी, किंवा चंदनानें आ-पल्याच सुगंधाचें उटणें लावावें, ८५३ त्या-प्रमाणें त्रिगुणाचा शोभिवंत व अव्यंग असा ब्राह्मणाचा अलंकार आहे. तो ब्राह्मणांच्या आं-गापासून कधीही दूर होत नाही. ८५४ आतां धनंजया! क्षत्रियांना जें कर्म उचित, तेंही सांगतों, नीट लक्ष्य देऊन ऐक." ८५५

शौर्य तेजो धृतिर्दाक्ष्यं युद्धे चाप्यपलायनम् ।

दानमीश्वरभावश्च क्षात्रं कर्म स्वभावजम् ॥४३॥

[शौर्य] तरि भाव हा तेजें । नापक्षी जेवि विरजें । कां सिंह न पाहिजे । जावळिया ॥ ५६ ॥ ऐसा स्वयंभ जो जीवें लाठ । सावायेंवीण उड्डट । तें शौर्य गा जेथ श्रेष्ठ । पहिला गुण ॥ ५७ ॥ [तेजः] आणि सूर्यांचेनि प्रतापें । कोडिही न-क्षत्र हारपे । ना तो तरि न लोपे । सचंद्री तिहीं ॥ ५८ ॥ तैसेनि आपुले प्रौढिगुणें । जगा या विस्मय देणें । आपण तरी न क्षोभणें । कायसेनही ॥ ५९ ॥ तें प्रागल्भ्यरूप तेजा । जिये कर्मी गुण दुजा । [धृतिः] आणि धीर तो तिजा । जेथिचा गुण ॥ ६० ॥ वरिपडलिया आकाश । बुद्धीचे ढोळे मानस । झांकी ना तें परियेस । धैर्य जेथें ॥ ६१ ॥ [दाक्ष्यं] आणि पाणी हो कां भलतेतुकें । परि तें जिणोनि पद्म फांके । कां आकाश उंचिया जिंके । आवडे तयातें ॥ ६२ ॥ तेथि विविधा अवस्था । पातलिया जिणोनि पाथी । प्रज्ञाफळ तथा अर्था । वेक्षं देणें जें ॥ ६३ ॥ तें दक्षत्व गा चोख । जेथ चौथा गुण देख । [युद्धे चाप्यपलायनं] आणि जुंझ अलौकिका पांचवा गुण ॥ ६४ ॥ आदित्याचीं झाडें । सदां सन्मुख सू-र्यो कडे । तेथि समोर शत्रूपुढें । होणें जें कां ॥ ६५ ॥ माहे-र्वणी प्रयत्नेंसी । चुकविजे सेजे जैसी । रिपू पाठी नेदिजे तैसी । समरंगणी ॥ ६६ ॥ हा क्षत्रियाचेया आचारी । पां-चवा गुणें अवधारी । चहू पुरुषार्थी शिरी । भक्ति जैसी ॥ ६७ ॥ [दानं] आणि जालेनि फुलें फळें । शौखिया जैसी मोकळे । कां उदार परिमळें । पद्माकर ॥ ६८ ॥ ना ना आ-वडीचेनि मापें । चांदिणें भलतेणें घेपे । पुढिलांचेनि सं-कल्प । तैसें जें देणें ॥ ६९ ॥ तें उमेव गा दान । जेथ स-हावें गुणरत्न । [ईश्वरभावश्च] आणि आजे एकायतन । होणें जें कां ॥ ७० ॥ पोपुनि अवयव आपुले । करविजती मा-तविले । तेथि पालणें लोभविलें । जग जें भोगणें ॥ ७१ ॥ तया नाम ईश्वरभावो । जो सर्वसामर्थ्याचा ठावो । तो गु-णांमाजि रावो । सातवा जेथ ॥ ७२ ॥ [क्षात्रं कर्म स्वभा-वजं] ऐसें जें शौर्यादिकीं । इहीं सात गुणविशेखीं । अलंकृत सप्तकुळीं । आकाश जैसे ॥ ७३ ॥ तैसें सप्तगुणी विचित्र । कर्म जें जगीं पवित्र । तें सहज जाण क्षात्र । क्षत्रियाचें ॥ ७४ ॥ ना ना क्षत्रिय नव्हे नर । तो सत्व सोनयाचा मेरु । ह्मणोनि गुण स्वर्गो आधार । सातो यियां ॥ ७५ ॥ ना तरि सप्तगुणांणी । परिवारली बरवी । हे किया नव्हे पृथ्वी । भोगीतसे तो ॥ ७६ ॥ कां गुणाचे साताही ओधी ।

१ साह्य. २ सोबती. ३ बळवान्. ४ साक्षात्पूजून. ५ शूर. ६ कोट्यवधि. ७ कोसळल्यास. ८ भलत्या रीतीनें, कितीही. ९ जिंकून. १० सूक्ष्ममार्ग. ११ रजसला. १२ मुख्य गुण. १३ वृक्ष. १४ देतात. १५ मोठें. १६ वेदालेस एकनिष्ठ. १७ सप्तकृषींनीं. १८ वेष्टिली.

हे किया ते गंगा जगी । तथा महोदधीचिया आंगी । विलसे जैसी । ७७ ॥ परि हें बहु असो देख । शौर्यादि गुणात्मक । कर्म गा नैसर्गिक । क्षत्रजातीसी ॥ ७८ ॥ आतां वैश्याचिये जाती । उचित जें महामती । तें ऐकें निरैती । किया सांगें ॥ ७९ ॥

“ तर सूर्य हा प्रकाश पाडण्यासाठी कोणाचे साहाय्य मागत नाही; किंवा सिंह हा कधी सोबती धुंडावयास जात नाही. ८५६ त्याप्रमाणे स्वतःच जो बलाढ्य, कोणाच्या साहाय्याचूनच जो शूर, तो शौर्यगुण ज्यामध्ये पहिला व श्रेष्ठ होय. ८५७ आणखी, सूर्याच्या प्रभावाने कोट्यवधि नक्षत्रे असली तरीही ती लोपून जातात. पण चंद्रासहचर्तमान ती सारी असली तरी, तो मात्र लोपत नाही. ८५८ त्याप्रमाणे, आपल्या अप्रतिम गुणाने जे ह्या जगाला अगदी चकित करून सोडते, आणि आपण कधीही हार जात नाही. ८५९ ते उन्नतीला पोचलेले तेज, हे ज्याच्या कर्मातील दुसरा गुण होय, आणि ‘धीर’ हा ज्याच्यातील तिसरा गुण. ८६० मस्तकावर आकाश कोसळून पडले तरी, हे लक्ष्यांत ठेवावे की, मन बुद्धीचे डोळे सुखां झांकित नाही, असे जेथे धैर्य असते. ८६१ आणखी कितीही पाणी असो; पण तितक्यासही मागे सारून जसे कमल विकास पावते; किंवा उंचीमध्ये आकाश हें पाहिजे त्याला मागे टाकते; ८६२ त्याप्रमाणे पार्था! नानाप्रकारच्या दशा प्राप्त झाल्या तरी, त्यास मागे हटवून त्यामध्ये जी सुक्ष्मबुद्धि खर्च करणे, ८६३ असे जे उत्तम दाक्षिण्य ते ज्यांत चौथा गुण आहे. आणि अलौकिक युद्ध करणे हा पांचवा गुण. ८६४ सूर्यकमळाची झाडे, जशी सदासर्वकाल सूर्याकडे असतात, त्याप्रमाणे नेहेमी जे शत्रूच्या समोर असतात. ८६५ कांहीही झाले तरी रजस्वला स्त्री जशी शय्यास्थानी वर्ज्यच केली पाहिजे, त्याप्रमाणे समरांगणामध्ये शत्रूला पाठ झणून द्यावयाचीच नाही. ८६६ चारी पुरुषार्थामध्ये जशी भक्ति श्रेष्ठ,

तद्वत् क्षत्रियाच्या आचारामध्ये हा पांचवा गुण श्रेष्ठ आहे, हे ध्यानांत ठेवावे. ८६७ आणखी पुष्पे, फळे, तयार झाली झणजे डाहळ्या जशी ती देऊन टाकतात; किंवा सुगंध देण्याविषयी कमले जशी उदार असतात; ८६८ किंवा चांदणे हे पाहिजे त्याने पाहिजे त्या मापाने द्यावे, त्याप्रमाणे दुसऱ्याच्या संकलपप्रमाणे जे देणे; ८६९ ते मोठे दान जेथे सहावे गुणरत्न. आणि वेदाशेला जे एकनिष्ठ होणे; ८७० आपले अवयव पोसून पुष्ट करावयाचे; आणि त्यांजकडून पराक्रम करावयाचे, तसेच जोपासन करून ज्या जगाला आपलेसे करून त्याचा उपभोग घेणे, ८७१ त्याचे नांव ईश्वरीभाव. तो सर्व सामर्थ्याचे स्थान होय. तो गुणांतील जेथे सातवा राजसगुण होय. ८७२ अशा ह्या शौर्यादिक सात विशेष गुणांनी जे सुशोभित असतात. आकाशांत जसे सप्त ऋषी असावेत, ८७३ तद्वत् सात गुणांनी शोभणारे जे जगांतील पवित्रकर्म, तेच क्षत्रियाचे स्वाभाविक कर्म असे समज. ८७४ किंवा क्षत्रिय तो पुरुष नव्हे; तो सत्वरूप सोन्याचा मेरूच होय. झणून गुणरूप सप्तस्वर्गांना त्याचा आधार होतो. ८७५ किंवा सात गुणरूपी सप्तसमुद्रांनी वेष्टिलेली जी ही क्रिया, ती क्रिया नव्हे. तर ती पृथ्वी असून तिचाच तो उपभोग घेतो. ८७६ किंवा ह्या गुणरूप सात ओघांनी ह्या जगद्रूप महासागराच्या आंगामध्ये क्रियारूप गंगाच शोभत आहे. ८७७ पण हा पाल्हाळ असो. क्षत्रियजातीला हे शौर्यादि गुणात्मक कर्म स्वाभाविक आहे हे समजून ठेव. ८७८ आतां हे बुद्धिमंता! वैश्याच्या जातीला जी क्रिया उचित आहे, ती ही यथार्थ रीतीने सांगू. तीही ऐक.” ८७९

कृषिगोरक्ष्यवाणिज्यं वैश्यकर्म स्वभावजम् ।

परिचर्यात्मकं कर्म शूद्रस्यापि स्वभावजम् ॥४४॥

[कृषि-] तरि भूमि बीज नागर । यया भांडवलाचा आधार । घेऊनि लाभ अपार । मेळवणे जें ॥ ८८० ॥ किंबहुना

कृषीजिणें । [गोरक्ष-] गोधनें राखोनि वर्तणें । [वाणिज्यं] कां समर्पाची विकणें । मेहार्घ वस्तु ॥ ८१ ॥ [वैश्यकर्म स्व-भावजं] येतुलालचि पांडवा । वैश्यातें कर्माचा मेळावा । हा वैश्यजातिस्वभावा । आंतुला जाण ॥ ८२ ॥ [परिचर्येति] आणि वैश्य क्षत्रिय ब्राह्मण । हे द्विजन्मे तीनही वर्ण । य-यांचें जें शुभ्रूषण । तें शूद्र कर्म ॥ ८३ ॥ पै द्विजसेवेपरांतें । धावणें नाही शूद्रातें । एवं चतुर्वर्णोचितें । दाविलीं कर्म ॥ ८४

“ तर उत्तम प्रकारची भूमी, बीज, ह्यांना भांडवलाचा आधार घेऊन जो अपार नफा मिळविणें; ८८० किंबहुना शेतकीवर निर्वाह करणें; गाई रक्षण करून रहाणें, किंवा स्वस्त जिन्नस घेऊन महाग विकणें, ८८१ अर्जुना! वैश्य जातिस्वभावाच्या आंतील कर्माचा समुदाय इतकाच. हें लक्षांत असूं दे. ८८२ आपणही, वैश्य, क्षत्रिय, व ब्राह्मण हे दोनदा जन्मास आलेले आहेत. (स्वाभाविक जन्म हा एक आणि उपनयन हा दुसरा. ह्याून द्विज असें नांव झालें आहे.) ह्या द्विजांची शुभ्रूषा करणें हें शूद्रांचें कर्म होय. ८८३ द्विजांचे सेवेपुढें शूद्रांना अन्य मार्ग नाही. याप्रमाणें चतुर्वर्णांना उचित अशीं जीं कर्मे, तीं तुला दाखवून दिलीं.” ८८४.

स्वे स्वे कर्मण्यभिरतः संसिद्धिं लभते नरः ।

स्वकर्मनिरतः सिद्धिं यथा विंदति तच्छृणु ॥ ४९ ॥

[स्वे स्वे कर्मणि] आतां इयेचि विचक्षणा । वेगळालिया वर्णा । उचित जैसें करणा । शब्दादिक ॥ ८५ ॥ ना तरि जेळदच्युता । पाणिया उचित सरिता । सरितेसी पांडुसुता । सिधु उचित ॥ ८६ ॥ तैसें वर्णाश्रमवर्षे । जें करणीय आलें असे । गोरेया आंगा जैसें । गोरेपण ॥ ८७ ॥ [अभिरतः] तथा स्वभावविहिता कर्मा । शास्त्राचेनि मुखें वीरोत्तमा । प्रवर्तावयालागीं प्रेमा । अढळ कीजे ॥ ८८ ॥ पै आपुलेंचि रत्न थितें । घेपे पारस्त्रियाचेनि हातें । तैसें स्वकर्म आपैतें । शास्त्रें करावें ॥ ८९ ॥ जैसी दिठी असे आपुलिया ठाई । परि दीपेवीण भोग नाही । मारुं न लाहतां काई । पाय अ-

सतां होय ॥ ८९० ॥ ह्याणीनि ज्ञातिवर्षे साचार । सहज असे जो अधिकार । तो आपुलालिया शास्त्रें गोचर । आपण कीजे ॥ ९१ ॥ [संसिद्धिं लभते नरः] मग घरींचाचि ठेवा । जेविं झोळ्यां दावी दिवा । तरी घेतां काय पांडवा । आढळ असे ॥ ९२ ॥ [स्वकर्मनिरतः] तैसें स्वभावे भागा आलें । वरी शास्त्रें खरें केले । तें विहित जो आपुलें । आचरे गा ॥ ९३ ॥ परि आळस सांडुनी । फळकाम दवडुनि । आगें जीवें मांडुनि । तेथेंचि मेह ॥ ९४ ॥ बोधीं पडिलें पाणी । नेणे आनामी वाहणी । तैसा जाय आचरणी । व्यवस्थानि ॥ ९५ ॥ [यथा] अर्जुना जो यापरी । तें विहित कर्म स्वयें करी । [सिद्धि] तो मोक्षाच्या ऐलतीरी । [विंदति तच्छृणु] पेटां होय ॥ ९६ ॥ जे अंकरणा आणि निविद्धा । नेवचेचि काहीं संवंधा । ह्याणीनि भंवा विरुद्धा । मुकला तो ॥ ९७ ॥ आणि काम्यकर्माकडे । न परतेचि जेथ कोडें । तेथ चंदनाचेही खोडे । न लेचि तो ॥ ९८ ॥ येर नित्य कर्म तंव । फळयागे वेंचिलें सर्व । ह्याणीनि मोक्षाची शिव । ठाकूं लाहे ॥ ९९ ॥ ऐसेनि शुभाशुभी संसारी । सांडिला तो अवधारी । वैराग्य मोक्षद्वारी । उभा ठाके ॥ १०० ॥ जें सकळभाग्याची सीमा । मोक्षलाभाची जें प्रेमा । नाना कर्ममार्गभ्रमा । शेवटु जेथ ॥ ११ ॥ मोक्षफळें दिधलीं बोलें । जें सुकृततत्त्वं फूल । तये वैराग्यां ठेवी पाउल । भंवेंह जैसा ॥ १२ ॥ पाहीं आत्मज्ञानसुदिनाचा । बांधावा संगतया अहणाचा । उदय त्या वैराग्याचा । ठावो पावे ॥ १३ ॥ किंबहुना आत्मज्ञान । जेणें हाता ये निधान । तें वैराग्य दिव्यांजन । जीवें लेतो ॥ १४ ॥ ऐसी मोक्षाची योग्यता । सिद्धी जाय तथा पंडुसुता । अनुसरोनि विहिता । कर्मा यथा ॥ १५ ॥ हें विहित कर्म पांडवा । आपुला अनन्य बोळेंवा । आणि हेचि परम सेवा । मज सर्वात्मकाची ॥ १६ ॥ पै आघवाचि भोगेंसी । पतिव्रता कोडे प्रियेंसी । कीं तेंयाचि नामें जैसी । तपें तियां केलीं ॥ १७ ॥ कां याळका एकी माये- । वांचोनि जिणें काय आहे । ह्याणीनि संविजे की तो होये । पेटाचा धर्म ॥ १८ ॥ ना ना पाणी ह्याणीनि मासा । गंगा न सांडितां जैसा । सर्व-तीर्थसहवासा । वैरपडा जाला ॥ १९ ॥ तैसें आपलिया विहिता । उपाय असे न विसंबतां । ऐसा कीजे कीं जगन्नाथा ।

१ अडथळा. २ भर, आदर. ३ निरनिराळा प्रवाहमार्ग. ४ प्राप्त. ५ मुळीच कर्म न करण्याळा. ६ जातच नाही. ७ आत्मप्राप्तीस विरुद्ध जो संसार त्याळा. ८ आवडीने. ९ खोडा, प्रतिबंध. १० स्वीकारित नाही. ११ प्राप्तीस लाभतो. १२ वैराग्य हें मोक्षाचें द्वार आहे. १३ प्रमाण. १४ तारण. १५ भ्रमर. १६ वार्ता, उदय. १७ धाडी. १८ एकनिष्ठ. १९ जिव्हाळा. २० पतीशीं विहार करी. २१ त्याच्याच. २२ श्रेष्ठत्वाचा. २३ प्राप्त.

१ शेतकीवर निर्वाह करणें. २ स्वस्त दरानें घेतलेली वस्तु. ३ महाग. ४ दोन वेळ जन्म, पहिलें सर्वसामान्य शौक व दुसरें उपनयनांग सावित्री मंत्रोपदेशानें सावित्रि हीं ज्यांस आहेत ते. (ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य.) ५ पडलेल्या मेघजळाला. ६ बुद्धि, प्रमाण. ७ असलेले. ८ प्राप्त.

आभार पडे ॥ ९१० ॥ अगा जयाचें विहित । तें ईश्वराचें मनोगत । झणौनि केलिया निघांत । सांपडेचि तो ॥ ९१ ॥ पै जीवाचे केंसी उतरली । ते दासी कीं गोसावीणें जाली । तैसी सेवेची तिथा मावली । वेहि जेविं ॥ ९२ ॥ तैसें स्वा-मीच्या मनोभावा । न चुकीजे हेचि परमसेवा । येर तें गा पांडवा । वाणिज्य करणें ॥ ९३ ॥

“आतां हे विचक्षणा ! तसेंच ह्या निरनि-राल्या वर्णांना, इंद्रियांना जसें शब्दादिक योग्य, ८८५ किंवा अर्जुना ! मेघापासून निघालेल्या पाण्याला नदी योग्य, नदीला समुद्र योग्य, ८८६ किंवा गोण्याच्या आंगाला जसें गोरेपण, तसें वर्णाश्रमधर्मानें जें कर्म आलेलें असतें, ८८७ हे वीरोत्तमा ! त्या स्वभाव-विहित कर्मांला शास्त्राच्या मुखानें करावयाला निश्चित बुद्धि करावी. ८८८ आपलेंच असलेलें रत्न परीक्षकांच्या हातून घ्यावें, त्याप्रमाणें आलेलें कर्म शास्त्रयुक्तीनें करावें. ८८९ ज्याप्रमाणें डोळे आपल्याजवळ असतात, परंतु दिव्याशिवाय त्यांचा उपयोग नाही. मार्गच न सांपडेल तर पाय असून तरी काय उपयोग ? ८९० झणून जातिधर्मानुसार स्वयमेवच जो खरा अधिकार असतो, तो आपआपल्या शास्त्रांनीं आपणच पहावा. ८९१ मग अर्जुना ! घरचाच ठेवा जर दिव्यानें डोळ्यांना दाखवून दिला, तर तो घेण्यास कांहीं हरकत आहे काय ? ८९२ तसें स्वभावधर्माप्रमाणें वांट्यास आलेलें, आणखी शास्त्रानें जें खरें केलें—ठरविलें—तें आपलें विहित कर्म जो आचरण करतो; ८९३ परंतु आळस सोडून, फलेच्छा टाकून, जीवा-प्राणासुखां तेथेंच भर ठेवून, ८९४ ओघांत पडलेल्या पाण्याला, हिकडे तिकडे वहावयाचें माहित नसतें, त्याप्रमाणें व्यवस्थित आचरणानेंच चालतो, ८९५ अर्जुना ! ह्याप्रमाणें तें विहितकर्म स्वतः करतो, तो मोक्षाच्या पलीकडच्या तीरास पोचतो. ८९६ कारण, न करण्याच्या आणि निषिद्धाच्या संबंधाला तो जा-

तच नाही. झणून विरुद्ध असा जो संसार त्याला तो मुक्ततो. ८९७ आणखी, कायक-मार्कडे जो आनंदानें झणून कधीं वळतच नसल्यामुळें चंदनाचे खोडेही त्यास घ्यावे लागत नाहीत. ८९८ बाकीचें नित्यकर्म तर, फलत्याग केल्याच्या योगानें सारें नाश पावतें. झणून मोक्षाची शींव गांठतो. ८९९ अशा प्रकारें संसारांतील शुभाशुभें त्याचीं नाहीशीं होऊन तो मोक्षाच्या द्वारांत उभा राहतो, हें लक्षांत ठेव. ९०० जें सर्व भाग्याची सीमा; जें मोक्षलाभाचें माप; नानाप्रकारच्या कर्म-मार्गांच्या भ्रमाचा जेथें शेवट होतो; ९०१ मोक्षफळें ज्यानें तारण विलीं आहेत; जें सुकृततरूचें फूल; त्या वैराग्यामध्ये भ्रमर जसा पाऊल ठेवतो; त्याप्रमाणें पाऊल ठेवतो. ९०२ वैराग्य हें आत्मज्ञानरूप दिवस उगवण्याची सूचना करणाऱ्या अरुणोदयाच्या स्थानीं होतें हें ध्यानांत ठेव. ९०३ किंबहुना आत्मज्ञान-रूप ठेवा जेणेंकरून हातास चढेल, असें जें वैराग्यरूपी दिव्यांजन तें तो जीवेंभावेंकरून घालतो. ९०४ हे अर्जुना ! त्या विहितकर्मांला अनुसरल्याच्या योगानें त्याला अशा रीतीनें मोक्षाची सिद्धि होते. ९०५ अर्जुना ! तें विहितकर्म आपल्याला एकीएक ओलावा—जिव्हाळा—आहे. आणि हीच माझी, सर्वात्मकाची श्रेष्ठ सेवा होय. ९०६ सारे भोग भोगतांना पतिव्रता स्त्री आपल्या पतीशींच क्रीडा करीत असते; किंवा त्याच्या नांवानें ती त्याच्या नामाचें तपच करित असते. ९०७ किंवा एका आईशिवाय मुलाचा जन्म कशाचा ? झणून त्यानें तिची सेवा करणेंच योग्य आहे. कारण तोच त्याचा श्रेष्ठ धर्म होय. ९०८ किंवा पाणी समजून जरी माशानें गंगा सोडली नाही तरी, त्याला सर्व तीर्थांचा सहवास घडतो. ९०९ त्याप्रमाणें आपल्या हिताचा उपाय असेल तो क्षणमात्र न विसंबतां अशा रीतीनें करावा कीं, त्याचा जगन्नाथालाही भार पडेल. ९१० बाबा ! ज्याचें जें विहित तेंच ईश्वराचें मनोगत. झ-

णून तें केलें कीं, ईश्वर हस्तगत झालाच. ९११ जीवाच्या कसोटीला उतरते; ती दासी होते, कां धनीन होऊन बसते? तद्वत् वर्ष घातल्याप्रमाणें त्या सेवेची हद्द साधलेली असते. ९१२ अर्जुना! अशा प्रकारें धन्याचें मनोगत न चुकतां जी सेवा करणें, तीच परम सेवा होय. इतर जी सेवा तें केवळ वाणिज्य झणून समजावें." ९१३

यतः प्रवृत्तिर्भूतानां येन सर्वमिदं ततम् ।

स्वकर्मणा तमभ्यर्च्य सिद्धिं विंदति मानवः ४६

[यतः प्रवृत्तिर्भूतानां] झणौनि विहित क्रिया केली । नव्हे तथाची खूण पाळिली । जयापासूनि कां आली । आकारा भूतें ॥ १४ ॥ जो अविद्येच्या चिधिया । गुंढनि जीव बाहुलिया । खेळवीतसे तिगुणिया । अहंकाररज्जु ॥ १५ ॥ [येन सर्वमिदं ततं] जेणें जग हें समस्त । आंत वाहेरी पूर्ण भरित । जालें आहे दीपजात । तेजें जेंस ॥ १६ ॥ [स्वकर्मणा तमभ्यर्च्य] तथा सर्वात्मका ईश्वरा । स्वकर्मकुसुमांची वीरा । पूजा केली होय अपारा । तोपालागीं ॥ १७ ॥ झणौनि तिये पूजे । रिझलेनि आत्मराजें । वैराग्य-सिद्धि देखिजे । पेंसाय तथा ॥ १८ ॥ [सिद्धिं विंदति मानवः] जिये वैराग्यदशे । ईश्वराचेनि वैधर्म्यें । हें सर्वही नावडे जेंस । वांत होय ॥ १९ ॥ प्राणनाथाच्या आधी । विरहिणीतें जिणेंही बांधी । तेंसं सुखजात त्रिशुद्धि । दुःखचि लागे ॥ २० ॥ सम्यक्ज्ञान नुदेजता । वेधेंचि तन्मयता । उपजे ऐसी योग्यता । बोधाची लाहे ॥ २१ ॥ झणौनि मोक्षला-भालागीं । जो व्रतें वाहतसे आंगीं । तेणें स्वधर्म आस्था-चांगी । अनुष्ठावा ॥ २२ ॥

“झणून विहित क्रिया केली तरी, क्रिया केली असें होत नाहीं. तर ज्यापासून प्राणी उत्पन्न झाले आहेत, त्याची आपण आज्ञा पाळिली असें होतें. ९१४ जो अविद्येच्या चि-ध्या गुंढाळून तीन गुणांच्या तिपडीच्या अहं-काररूप दोरीनें जीवरूप बाहुलया खेळवितो; ९१५ तेजानें जसे सर्व दिवे व्याप्त असावेत त्याप्रमाणें ज्यानें हें सर्व जग आंतून व वाहे-रून पूर्ण भरून गेलें आहे; ९१६ हे वीरा!

त्या सर्वात्मक ईश्वराला अपार संतोष होण्यासाठीं स्वकर्मरूप पुष्पांनीं पूजा करतो. ९१७ झणून त्या पूजेच्या योगानें आत्मराजा संतुष्ट होऊन, त्याला तो वैराग्यसिद्धिरूप प्रसाददान देतो. ९१८ ज्या वैराग्यदशेमध्ये ईश्वराचा छंद लागल्यामुळें व मन असल्याप्रमाणें हेंही सारें आवडेनासें होतें. ९१९ पतीच्या मनो-व्याधीनें विरहिणीचें जिणेंही दुःसह होतें, त्याप्रमाणें सुख झणून जें जें आहे, तें खरो-खर दुःखच वाटतें. ९२० ज्ञानाची योग्यता अशी आहे कीं, खरें ज्ञान उत्पन्न झालें नाहीं तोंच, त्या छंदानें तन्मयता उत्पन्न होते. ९२१ झणून मोक्षलाभासाठीं जो स्वतः व्रतें आचरण करतो, त्यानें स्वधर्माचें मोठ्या आस्थेनें अनु-ष्ठान करावें." ९२२

श्रेयान्स्वधर्मो विगुणः परधर्मात्स्वनुष्ठितात् ।

स्वभावनियतं कर्म कुर्वन्नाप्नोति किल्बिषम् ४७

[श्रेयान्स्वधर्मः] अगा आपला हा स्वधर्म । आचरणीं जरी विषम । तरी पाहावा तो परिणाम । फळेल जेणें ॥ २३ ॥ [विगुणः] जें सुखालागीं आपणया । निंबवि आधी धनंजया । तें कडवटपणा तथाच्या । उवगिजे ना ॥ २४ ॥ फळण्या ऐलीकडे । केळीतें पाहातां आंस मोडे । ऐसी त्यजिली तरी जोडे । तेंसं कें गोमटें ॥ २५ ॥ तेवि स्वधर्म सांकड । देखोनि केला जरी कड । तरी मोक्षसुरवाड । अंतरला कीं ॥ २६ ॥ आणि आपली माये । कुज्जा जरी आहे । तरी जीजे तें नोहे । नेह कुंहे कीं ॥ २७ ॥ [परधर्मात्स्वनुष्ठितात्] येरी जिया पराविया । रंभेहूनि बरविया । तिया काय कराविया । बाळकें तेणें ॥ २८ ॥ अगा पाणियाहुनि बहुवें । तुपीं गुण कीर आहे । परि मीना काय होये । असतें तेथ ॥ २९ ॥ पें आषविया जगा जें विख । तें विख-कीडिया पीयूष । आणि गुळ तें देख । मरण दे तथा ॥ ३० ॥ [स्वभावेति] झणौनि जे विहित जया जेणें । फिटे संसाराचें धरणें । क्रिया कठोर तन्हि तेणें । तेचि करावी ॥ ३१ ॥ येरा पराचारा बरविया । ऐसं होईल टेंक-लेयां । पायांचें चालणें डोईया । केलें जेंस ॥ ३२ ॥ यालागीं कर्म आपलें । जें जातिस्वभावं असे आलें । तें करी तेणें जितिलें । कर्मबंधातें ॥ ३३ ॥ आणि स्वधर्माचि पाळावा ।

१ संतुष्ट झाल्यानें. २ प्रसाद. ३ छंदानें. ४ व मन. ५ मनोव्याधि. ६ वांचणें. ७ व्यर्थ. ८ ध्यासानें. ९ चांगल्या आस्थेनें.

१ कठीण. २ त्रासू नये, कंटाळू नये. ३ आशामंग. ४ वांचिजेतें, जेणें वांचावें. ५ वांकडें. ६ गोड. ७ आश्रय केल्यास. ८ डोक्यानें.

परधर्म तो गाळवा । हा नेमही पांडवा । न कीजेचि पै ॥ ३४ ॥ तरी आत्मदृष्ट नोहे । तंव कर्म करणें को ठाये । आणि करणें तेथ आहे । आयास आधीं ॥ ३५ ॥

“बाबा ! आपला हा स्वधर्म आचरणांमध्ये जरी कठीण असला, तरी त्याच्या परिणामावर दृष्टि घावी. ९२३ धनंजया ! निषानेंच आपल्याला आराम होणार असेल, तेव्हां त्याच्या कडवटपणाला त्रास नये. ९२४ फळें येण्याच्या आधींच केळीकडे पाहिलें तर आशा खुंटते. ह्मणून तिला टाकून दिली, तर तशी सुंदर फळें कशी मिळतील ? ९२५ त्याप्रमाणें स्वधर्मांत संकट आहे हें पाहून जर कडू मानला, तर मोक्षाचें सुख अंतरलेंच ह्मणून समजावें. ९२६ आणखी आपली माता जरी कुज्जा असली, तरी तिच्या पालनपोषण करण्याच्या ममतेत कांहीं वांकडेपणा नसतो. ९२७ इतर दुसऱ्या स्त्रिया रंभेहूनही सुंदर असल्या तर त्या मुलानें त्यांना करावें ? ९२८ बाबा ! पाण्याहून तुपामध्ये पुष्कळ गुण चांगले आहेत, ही गोष्ट खरी आहे. पण मत्स्यांना त्यांत असणें काय होय ? ९२९ तसेंच साऱ्या जगाला विष, तें विषांतील किड्यांना अमृत असतें, आणि गुळाच्या योगानें त्यांना मरण येतें. ९३० ह्मणून ज्याला जें विहित; ज्यानें संसाराचें धरणें निघतें; ती क्रिया कठोर असली तरी, त्यानें तीच करावी. ९३१ इतर-दुसऱ्याचा-आचार चांगला आहे ह्मणून त्याचा आश्रय केला तर, पायांनीं चालावयाचें जें काम, तें डोक्यानें केल्यासारखें होईल. ९३२ ह्यासाठीं आपलें कर्म जें जातिस्वभावाप्रमाणें आलें असेल, तें जो करील त्यानें कर्मबंधाला जिंकलें ह्मणून समजावें. ९३३ आणि अर्जुना ! स्वधर्मच पाळावा; परधर्माचा त्याग करावा; हा जर नेम केला नाही, ९३४ तर आत्मज्ञान प्राप्त होत नाही, आणि आत्मज्ञान प्राप्त झालें नाही तोंपर्यंत कर्म करणें राहिल काय ?

१ टाकावा. २ कसें रहातें.

आणखी कर्म करावयाचें झटलें कीं, तेरा सायास हे आहेतच.” ९३५

सहजं कर्म कौंतेय सदोषमपि न त्यजेत् ।

सर्वारंभा हि दोषेण धूमेनाग्निरिवावृताः ॥ ४८ ॥

[सर्वारंभा हि दोषेण] ह्मणौनि भलतिये कर्मी । आयाजन्ही उपकर्मी । तरी काय स्वधर्मी । दोष सांगें ॥ ३६ ॥ अगा उजू वाटा चालावें । तन्ही पायचि सिणवावे । न आढरानें धावावें । तन्ही तेंचि ॥ ३७ ॥ पै शिळा कसिदोरिया । दाटणें एक धनंजया । परि जें वाढातां विसावया । मिळिजे तें घेपे ॥ ३८ ॥ येन्हुवीं कैणा आणि भूसा काढितांही सोधें सरिसा । जेंचि रंधन श्वानमांसा । तेंचि हवी ॥ ३९ ॥ दधी जलाचिया घुसळणा । व्यापार सारिखेचि विचक्षणा । वाळुवे तिला घाणा । गाळणें एक ॥ ९४० ॥ [धूमेनाग्निरिवावृताः] पै निलहोम देयावया । कां सरें आगीं सुवावया । फुंकितां धूम धनंजया । साहणें तेंचि ॥ ४१ ॥ [सदोषमपि] परी धर्मपत्नी र्थागडी । पोसित जरी एकी वोढी । तरि कां अपरवढी । आणावी आंग ॥ ४२ ॥ हां गा पाटीं लागला घाई । मरण न चुकेचि पाहीं तरि संमोरला काई । आंगळें न कीजे ॥ ४३ ॥ कुळवं दांड्याचे घाये । परेघर रिगालीहि जरि साहे । तरि स्वपतीतें वायें । लजिलें की ॥ ४४ ॥ तैसे आवडतेंही करणें न निपजे शिणल्याविणें । तरि विहित वारे कोणें । बोलें भोरी ॥ ४५ ॥ वरि थोडेंचि अमृत घेतां । सर्वस्व वेंचो कपंडुसुता । जेणें जोडे जीविता । अक्षयव ॥ ४६ ॥ येर कांढ्यां मोलें वेचूनि । विष पियावें घेउनि । आत्महत्येनि निमोनि । जायिजे जेणें ॥ ४७ ॥ तैसे जाचूनिर्वा इद्रिये वेचूनि आगुण्याचेनि दियें । सांचले पापी आन आहे दुःखावांचूनि ॥ ४८ ॥ [सहजं कर्म कौंतेय] ह्मणौनि करावा स्वधर्म । जो करितां हिरौनि घे श्रम । उचित देई परम । पुंस्र्वाथराज ॥ ४९ ॥ [न त्यजेत्] याकारणें किरिटी । स्वधर्माचिये राहटी । न विसंबिजे संकटी । सिद्ध मंत्र जैसा ॥ ९५० ॥ का नाव जैसी उदधी । महारोग दिव्यौषधी । न विसंबिजे तया बुद्धी । स्वकर्म येथ ॥ ५१ ॥ मग ययाचि गा कपिध्वजा । स्वकर्मोचिया महापूजा । तोषल ईश तमरजा । झाडा करुनि ॥ ५२ ॥ शुद्ध सत्वाचिय

१ दडपणें. २ विश्रांतीस. ३ धान्य. ४ फोल. ५ श्रम सारखाच. ६ शिजविण्याची खटपट. ७ स्वेच्छ अग्नी घालण्यास. ८ दांडगी, व्यभिचारिणी. ९ अन्यायवर्तन १० समोर होऊन केलेला घाय. ११ ज्यास्ती. १२ दुसऱ्याचें घर. १३ कोणत्या शब्दानें कठीण असें ह्मणवें १४ कशाला. १५ दिवस. १६ मोक्ष.

बाटा । आणि आपली उत्कंठा । मग स्वर्ग काळकूटा । ऐसे दावी ॥ ५३ ॥ जियें वैराग्य येणें बोलें । मोगां संसिद्धी रूप केलें । किंबहुना तें आपलें । मेळवी खोंगें ॥ ५४ ॥ मग जितिलिया हे भोये । पुरुष सर्वत्र जैसा होये । कां जालाहि जें लाहे । तें आतां सांगों ॥ ५५ ॥

“ह्याकरितां कोणत्याही कर्माच्या आरंभाला जर आयास पडतात, तर मग स्वधर्मांत दोष तो कोणता ? सांग. ९३६ अरे ! सरळ वाटेनें चाललें तरी पाय दमतात; किंवा आड-रानांतून धांवलें तरी तेंच; ९३७ तसेंच धनंजया ! धोंडा आणि शिंदोरी दोहींचें ओझें सारखेंच. परंतु जें नेतांना सुखावह होईल तेंच घ्यावें. ९३८ नाहीं तर, दाण्याला आणि भुसाला वेगळें करतांना, दोहोंनाही श्रम सारखेच; कुत्र्याचें मांस शिजवावयाला आणि होमद्रव्य शिजविण्याला खटपट तितकीच. ९३९ हे बुद्धिमंता ! दही घुसळतांना आणि पाणी घुसळतांना क्रिया तीच. घाण्यांत वाळू घातली काय, आणि तीळ घातले काय ? गाळणें सारखेंच. ९४० तसेंच अर्जुना ! नित्य होम देण्याकरितां, किंवा उगाच जाळ करण्याकरितां फुंकणें आणि धूर लागणें हीं सारखींच. ९४१ त्याचप्रमाणें धर्मपत्नीला आणि वेश्येला पोसतांना जर एकसारखीच यातायात करावी लागते, तर अन्यायाचा कळंक तरी आपल्या आंगास कां लावून घ्यावा ? ९४२ आणखी असें पहा ! पाठीवर घाव लागला तरी मरण चुकत नाहीं, तर मग समोरासमोर होऊन श्रेष्ठत्वच कां घेऊं नये ? ९४३ कुळस्त्रीला दुसऱ्याच्या घरांत शिरूनही जर दांड्याचे घाव सोसावे लागतील, तर मग आपल्या नवऱ्याला व्यर्थ टाकून आल्यासारखें मात्र झालें. ९४४ त्याप्रमाणें आवडतें कर्म असलें, तरी सुद्धां तें कष्ट केल्याशिवाय होत नाहीं. तर मग बाबारे ! विहित असेल तें

कोणत्या शब्दानें कठीण असें झणावें ? ९४५ आणखी अर्जुना ! जें मिळालें असतां आयुष्याला चिरस्थायित्व येतें, तें अमृत थोडेंसें घेण्यासाठीं सर्वस्व गेलें तरी हरकत नाहीं. ९४६ जेणेंकरून मरावयाचें, आणि शिवाय आत्महृत्येचा दोष लागावयाचा, तें विष मोल देऊन घेऊन कशासाठीं घ्यावें ? ९४७ तसें, इंद्रियांना कष्ट देऊन आयुष्याचे दिवस खर्च करून, सांडविलेल्या पापांत तरी दुःखावांचून दुसरें काय आहे ? ९४८ ह्याणून जो आचरण करितांच श्रमाचा परिहार करतो तो स्वधर्मच आचरण करावा. श्रेष्ठ पुरुषार्थ जो मोक्ष तो तोच देईल. ९४९ ह्याकरितां किरीटी ! स्वधर्माच्या सांप्रदायाची उपेक्षा करूं नये. संकटामध्ये जसा सिद्धमंत्र, ९५० किंवा समुद्रांत जशी नौका; महारोगामध्ये दिव्यौषधाची जशी उपेक्षा करतां कामा नये, त्याच रीतीनें येथें स्वकर्मही उपेक्षूं नये. ९५१ मग हे कपिध्वजा ! ह्याच स्वकर्माच्या महापूजेनें ईश्वर संतोषित झाला ह्याणजे तो रजतमांचा झाडा करून, ९५२ आपली उत्कंठा शुद्ध सत्त्वाच्याच वाटेला आणतो. आणि ऐहिक व पारलौकिक भोग कालकूटाप्रमाणें दाखवितो. ९५३ वैराग्य ह्या शब्दानें पूर्वी “संसिद्धी-”चे [स्वे स्वे कर्मण्यभिरतः संसिद्धिं लभते नरः] निरूपण केलें. किंबहुना त्यानें आपलें स्थानच मिळविलें. ९५४ ही भूमी संपादन केली ह्याणजे, सर्वत्र पुरुषच कसा होऊन जातो, किंवा तो सर्वव्यापक झाला ह्याणजे त्याला काय प्राप्त होतें, तें आतां सांगतों.” ९५५

असक्तबुद्धिः सर्वत्र जितात्मा विगतस्पृहः ।

नैष्कर्म्यसिद्धिं परमां संन्यासेनाऽधिगच्छति ४९

[असक्तबुद्धिः सर्वत्र] तरि देहादिक हें संसारें । सर्वही मांडलेसे जें गुंफिरें । तेथ नातुडे तो वागुरे । वारा जैसा ॥ ५६ ॥ पै परिपाकाचिचे वेळे । फळ देठें ना देठ फळें । न भरे तैसें ब्रेह खुळें । सर्वत्र होय ॥ ५७ ॥ पुत्र वित्त कलत्र । हे जाल्याही स्वतंत्र । माझें न झणें पात्र । विषाचें

१ जाळें. २ न सांपडे. ३ जाळ्यांत. ४ पांगळें, वेष्टानें.

१ इहपरसंबंधीं भोग. २ मागें ‘स्वे स्वे कर्मण्यभिरतः संसिद्धौ’ इत्यादिकानें सांगितलें. ३ ठिकाण. ४ भूमि. ५ पूर्ण झालेला.

जैसे ॥ ५८ ॥ [जितात्मा] हे असो विषयजाती । बुद्धि पोळली ऐसी माघीती । पाउलें घेउन एकतांती । हृदयाच्या रिचे ॥ ५९ ॥ ऐसया अंतःकरण । बाह्य येतां तयाची आण । न मोडी समर्था भेण । दासी जैसी ॥ ६० ॥ तैसें ऐक्याचि ये मुठी । माजिवडें चित्त किरीटी । करुनि वेधीं नेहटी । आत्मयाच्या ॥ ६१ ॥ विगतस्पृह तेव्हां दृष्टादृष्ट स्पृहे । निर्मणें जालेचि आहे । आंगी दडपलिया धुयें । राहिजे जैसें ॥ ६२ ॥ ह्याणोनि नियमिलिया मानसीं । स्पृहा नासोनि जाय आपैसी । किंबहुना तो ऐसी । भूमिका पावे ॥ ६३ ॥ [नैष्कर्म्यसिद्धि परमां] पै अन्यथाबोध आघवा । मावळोनि तथा पांडवा । बोधमात्रीचि जीवा । ठाव होय ॥ ६४ ॥ धरवणी वेचें सरे । तैसें भोगें प्राचीन पुरे । नवें तंव उपकरे । कांहींचि करूं ॥ ६५ ॥ ऐसी कमें साम्य दशा । होय तेथ वीरेश । मग श्रीगुरु आपैसा । भेटेचि गा ॥ ६६ ॥ रात्रीची चापाहरी । वेंचलिया अवधारीं । ढोळ्यां तमारी । मिळे जैसा ॥ ६७ ॥ कां येऊनि फळाचा घड । पीरुषवी केळीची वाढ । श्रीगुरु भेटोनि करी पांड । मुमुक्षु तैसा ॥ ६८ ॥ मग आलिंगिला पूर्णमा । जैसा उणीव सांडी चंद्रमा । तैसें होय वीरोत्तमा । गुरुकृपा तया ॥ ६९ ॥ तेव्हां अबोधमात्र असे । तो तंव तया कृपा नाशे । तेथ निशिखरें जैसें । आंधारें जाय ॥ ७० ॥ तैसी अबोधाचिये कुशी । कर्म कर्ता कार्य ऐसी । त्रिपुटी असे ते जैसी । गर्भिणी मारिली ॥ ७१ ॥ [संन्यासेनाधिगच्छति] तैसेंचि अबोधनाशासवें । नाशे क्रियाजात आपवें । ऐसा समूळ संभवे । संन्यास हा ॥ ७२ ॥ येणें मूळज्ञानसंन्यासे । दयाचा जेथ ठावो पुसे । तेथ बुद्धावें तें आपेसें । तोचि आहे ॥ ७३ ॥ चेइलियावरि पाहीं । स्वर्णीच्या तिये ढोहीं । आपणयातें काई । काढुं जाइजे ॥ ७४ ॥ तें मी नेणें आतां जाणें । हें सरलें तया दुःस्वप्न । जाला ज्ञांतृज्ञेयाविहीन । चिदाकार ॥ ७५ ॥ मुखाभासेंसी आरिसा । परता नेलिया वीरेश । पाहातेपणेंवीण जैसा । पाहाता टांके ॥ ७६ ॥ तैसें नेणणें जें गेलें । तेणें जाणणेंही नेलें । मग निष्कर्म उरलें । चिन्मात्रचि ॥ ७७ ॥ तेथ स्वभावं धनंजया । नाहीं कोणीचि क्रिया । ह्याणोनि प्रवाद तया । नैष्कर्म्य तैसा ॥ ७८ ॥

१ छंदानें. २ इहपर भोगेच्छेन. ३ अंत, समाप्ति. ४ विपरीत ज्ञान. ५ धरून ठेवलेलें पाणी. ६ संचित. ७ आरंभ न करी. ८ थांबवी. ९ प्रकार, योग्यता. १० अज्ञान. ११ गर्भिणी. १२ अज्ञानाच्या नाशासह. १३ कर्मत्याग. १४ जाणावें. १५ जाणें झाल्यावर. १६ जाणणारा व जाणण्याची वस्तु या भेदावांचून. १७ राहें. १८ क्रियारहित. १९ ज्ञानस्वरूप. २० नांव, बोलणें.

तें आपुलें आपणणें । असतचि होऊनि हारपे । तरंग कां वायुलोपें । समुद्र जैसा ॥ ७९ ॥ [परमां] तैसें न होणें निपजे । ते नैष्कर्म्यसिद्धि जाणजे । सर्वसिद्धीत सहजें । परम हेचि ॥ ८० ॥ देउळाचिया कामा कळस । परम गंगेसी सिंधुप्रवेश । सुवर्णशुद्धी कस । सोळावा जैसा ॥ ८१ ॥ तैसें आपुलें नेणणें । फेडिजे कां जाणणें । तेंहि गिकुनि असणें । ऐसी जे दशा ॥ ८२ ॥ तियेपरतें कांहीं । निपजणें येथ नाहीं । ह्याणोनि ह्याणपे पाहीं । परमसिद्धि ते ॥ ८३ ॥

“तर जाळ्यामध्ये जसा वारा सांपडत नाहीं, त्याप्रमाणें देहादिक जो हा संसार, तो पसरलेलें जालें आहे, त्यांत जो सांपडत नाहीं, ९५६ फळ पिकलें ह्याणजे त्या फळाला देंड धरीत नाहीं, व देंडाला फळ धरत नाहीं. त्याप्रमाणें कोठेंच ममता ह्याणून नाहीं. ९५७ विषानें भरलेलें पात्र असलें ह्याणजे तें आपणास पाहिजे असे ज्याप्रमाणें कोणी ह्याणत नाहीं; त्याप्रमाणें पुत्र, वित्त, कलत्र, हीं सर्व आपल्या सत्तेत असतांही त्यांना आपलीं असें ह्याणत नाहीं. ९५८ हें असो. प्रत्येक विषयांत बुद्धि ही पोळून निघाल्याप्रमाणें माघारी पाऊल घेऊन हृदयाच्या एकांतांत शिरते. ९५९ असें असूनही अंतःकरणांतून बाहेर येण्याचा प्रसंग आलाच तर, समर्थाची आज्ञा जशी दासी मोडित नाहीं, त्याप्रमाणें त्याची शपथही ती मोडित नाहीं. ९६० ह्याप्रमाणें अर्जुना! चित्त हें ऐक्याच्या मुठीमध्ये ठेऊन आत्मछंदास लावतो. ९६१ तेव्हां अर्थात्च अग्नि दडपला ह्याणजे धूर नाहींसा झालाच, त्याप्रमाणें इहपर भोगेच्छा नाहींशीच होऊन जाते. ९६२ ह्याणून मनाचें नियमन केलें कीं, इच्छा आपोआपच नाहींशी होऊन जाते. किंबहुना त्याला अशी अवस्था प्राप्त होते. ९६३ अर्जुना! विपरीत असलेलें सर्व ज्ञान नाहींसें होऊन त्याच्या जिवामध्ये फक्त ज्ञानासच स्थान मिळतें. ९६४ धरून ठेवलेलें पाणी खर्च केलें ह्याणजे तें संपतें. त्याप्रमाणें सुकृत हें

१ तें=जाणणें, असतचि=नेहमीं असणारें आत्मस्वरूप. २ निष्कामकर्मता. ३ सोळा रुपये तोळा दराचा.

भोगल्यानें नष्ट होऊन जातें. आणि नवा आरंभ तर कथाचाच करीत नाही. ९६५ हे वीरश्रेष्ठा! अशी कर्माच्या योगानें जेव्हां साम्यदशा प्राप्त होते, तेव्हां मग आपोआपच श्रीगुरु भेटतो. ९६६ आणखी, एका रात्रीचे चार प्रहर गेले ह्मणजे नेत्रांना जसा सूर्य दिसतो, ९६७ किंवा फळांचा घड आला ह्मणजे तो केळीची वाढ खुंडवितो, त्याप्रमाणें श्रीगुरु भेटून मुमुक्षूची दशा करून सोडतो. ९६८ मग पौर्णिमेनें पदरांत घेतलेला चंद्र जसा आपल्या आंगचा कमीपणा सोडून देतो, त्याप्रमाणें हे शूरवर्या! ज्यावर, गुरु कृपा करतात, त्याची योग्यता होते. ९६९ त्या वेळीं अज्ञान ह्मणून जेवढें असतें, तेवढें सारें त्यांच्या कृपेनें नाश पावतें. तेव्हां रात्रीबरोबर जसा आधार जातो, ९७० त्याचप्रमाणें अज्ञानाच्या पोटांत कर्म, कर्ता आणि कार्य अशी त्रिपुटी असते तीही गर्भिणी मारल्याप्रमाणेंच नाश पावते. ९७१ त्याचप्रमाणें अज्ञानाच्या नाशाबरोबरच कर्म ह्मणून जितकें आहे तितकें यच्चयावत् नाश पावतें. अशा प्रकारें हा समूळ संन्यास (कर्म-त्याग) घडतो. ९७२ ह्या मूळ अज्ञानाच्या संन्यासानें दृश्याचें स्थानच जेव्हां नाहीस होऊन जातें, तेव्हां जाणावयाचें जें असतें तें आपोआपच शिळक राहतें. ९७३ हें पहा! जागें झाल्यानंतर स्वप्नांतील डोहांतून आपणास काय काढावें लागतें? ९७४ माझें अज्ञान मला समजू लागतें तेव्हां त्याचें सारें दुःस्वप्न संपतें आणि तो ज्ञाता व ज्ञेय ह्या भेदाच्या अतीत होतो. ९७५ हे वीरश्रेष्ठा! मुखाचा आभास दाखविणारा आरसा बाजूस नेला ह्मणजे पाहणारा जसा पाहण्याशिवाय राहतो, ९७६ त्याप्रमाणें अज्ञान जेव्हां जातें, तेव्हां तें ज्ञानासही घेऊन जातें. मग क्रियारहित असें ज्ञानरूप मात्र उरतें. ९७७ तेव्हां अर्जुना! स्वभावगल्याच तेथें कोणतीही क्रिया रहात नाही. ह्मणून त्याला “ नैष्कर्म्य ” असें ह्मणतात. ९७८ तें नेहेमी असणारें आत्मस्वरूपच

आपलें आपल्यामध्ये लय पावतें. वारा बंद झाला ह्मणजे लाटांचाच जसा समुद्र होतो, ९७९ त्याप्रमाणें न होतां होणारी जी, तिचें नांव निष्कामकर्मता हें लक्ष्यांत ठेव. ह्मणून अर्थात् ती सर्व सिद्धींतील श्रेष्ठ सिद्धि होय. ९८० देवळाच्या कामामध्ये जसा कळस श्रेष्ठ; गंगेला जसा समुद्रप्रवेश श्रेष्ठ; किंवा सोऱ्याच्या परिक्षेमध्ये जसा सोळांचा कस, ९८१ आपलें अज्ञान नाहीस करणें आणि ज्ञान असेल तेंही गिळून वसणें अशी जी दशा, ९८२ तिच्यापेक्षां जगामध्ये दुसरें कांहीं साध्य करावयाचें नसतें. ह्मणून तिलाच ‘परमसिद्धि-’ अत्यंत श्रेष्ठ सिद्धि असें ह्मणतात.” ९८३

सिद्धि प्राप्ति यथा ब्रह्म तथाऽमोति निबोध मे ।

समासेनैव कौंतेय निष्ठा ज्ञानस्य या परा ॥ ९० ॥

[निष्ठा ज्ञानस्य या परा] परि हेचि आत्मसिद्धि । जो कोणी भाग्यनिधि । श्रीगुरुपालब्धि- । काळीं पावे ॥ ८४ ॥ उदयजतांचि दिनकर । प्रकाशचि आते आधार । कां दीपसंगें कपूर ॥ दीपचि होय ॥ ८५ ॥ तया लवणाची कणिका । मिळेतसेवो उदका । उदकचि होऊनि देखा । ठाके जेवि ॥ ८६ ॥ कां मिद्रित चेवविलिया । खपेंसी नीद वाया । जाऊनि आपणपयां । मिळे जेसा ॥ ८७ ॥ तैसें जया को-पहासि देवें । गुरुवाक्य श्रवणाचिसवें । द्वैत गिळोनि विधेवें । आपणया वृत्तां ॥ ८८ ॥ तयासी मग कर्म करणें । हें बोलिलेजलचि कवणें । आकाशा येणें जाणें । आहे काई ॥ ८९ ॥ ह्मणोनि तयासि कांहीं । त्रिशुद्धि करणें नाही । परि ऐसें जरि हें कांहीं । नव्हे जया ॥ ९० ॥ कानां वचनाचिये भेटी- । शिरसाचि पें किरीटी । वेस्तु होऊनि सुटी । कवणि एक जो ॥ ९१ ॥ येव्हीं खकर्मांचेनि बंधीं । काम्यनिधि-दाचिया इंधनीं । रज तम कीर दोन्हीं । जाळिलीं आधीं ॥ ९२ ॥ पुत्र वित परलोक । यया तिहींचा अभिलेख । घरीं होय पौंड्र । हेंही जालें ॥ ९३ ॥ इंदियें सैरा पदार्थी । रिगतां विटाळलीं होतीं । तियें प्रत्याहारतीर्थी । न्हाणिलीं कीर ॥ ९४ ॥ आणि स्वधर्माचें फळ । ईश्वरी अर्पुनि बळ । घेऊनि केलें अढळ । वैराग्यपद ॥ ९५ ॥ ऐसी आत्मसाक्षा-

१ प्राप्तीच्या वेळीं. २ व्यापी. ३ मिळातां क्षणीं. ४ जागृत केला असतां. ५ निद्रा. ६ विध्वांति पावे. ७ शिष्याचा कान व गुरुवचन यांची भेट. ८ लागलाच. ९ ब्रह्मस्वरूप. १० अमीमर्त्य. ११ काष्ठांत. १२ इच्छा. १३ नोकर. १४ इन्द्रियनिग्रहरूप तीर्थांत.

जो द्वेष करीत नाही; १०१९ किंवा कदाचित् चांगलें इष्टच पुढें आणून ठेवेलें तरी, त्याच्या-बद्दल अभिलाष धरीत नाही. १०२० याप्रमाणें अर्जुना ! इष्ट येवो किंवा अनिष्ट येवो; कांहीं आलें तरी द्वेष सोडून जो गुहेंत व दाट झाडींत वास्तव्य करतो; १०२१

विविक्तसेवी लघ्वाशी यतवाकायमानसः ।

ध्यानयोगपरो नित्यं वैराग्यं समुपाश्रितः ॥५२॥

[विविक्तसेवी] गजबजा सांडिलिया । वसवी वनस्थळिया । अंगचिया भोंदिया । एकलेया ॥ २२ ॥ शमदमादिकीं खेळे । न बोलणेंचि चावळे । गुरुवाक्याचेनि मेळें । नेणे वेळ ॥ २३ ॥ [लघ्वाशी] आणि आंगा बळ यावें । ना तरि क्षुधा जावें । कां जिभेचे पुरावे । मनोरथ ॥ २४ ॥ भोजन करितां विव्ही । यया तिहींतें न लेखी । आहारीं मिती संतोषी । माप न सूये ॥ २५ ॥ अनशनाचेनि पांवकें । हारपतां प्राण पोखे । इतुकियाचि भाग मोटकें । अशन करी ॥ २६ ॥ [यतवाकायमानसः] आणि परपुरुषें कोमिलि । कुळवधू आंग न घाली । निद्रालस्या न मोकली । अशन तैसें ॥ २७ ॥ दंडवताचेनि प्रसंगें । सुयीं हन अंग लागे । वांचूनि येर नेघे । रामस्य तेथ ॥ २८ ॥ देहनिर्वाहापुरतें । राहाटवी हातापायांतें । किबहुना ओपेंतें । सबाह्य केले ॥ २९ ॥ आणि मनाचा उंवरा । वृत्तीसी देखीं नेदी वीरा । तेथ कें वाग्यापारा । अवकाश असे ॥ १०३० ॥ ऐसेनि देहवाचा मानस । हें जिणोनि बाह्यप्रदेश । [ध्यान-] आकळिलें आकाश । ध्यानाचें तेणें ॥ ३१ ॥ गुरुवाक्यें उठविला । बोधीं निश्चय आला । न्याहाळी हातीं घेतला । आरिसां जैसा ॥ ३२ ॥ पै ध्याता आपणपेंचि परी । ध्यानरूप वृत्तिमाझारी । ध्येयत्वं धेहे अवधारीं । ध्यानरूढी गा ॥ ३३ ॥ तेथ ध्येय ध्यान ध्याता । ययां तिहीं एकरूपता । होय तंव पंडसुता । कीजे तें गा ॥ ३४ ॥ झणौनि तो मुसुक्षु । आत्मज्ञानी जाला देखु । [योगपरो नित्यं] परि पुढेंसुनि पेंडु । योगाभ्यासाचा ॥ ३५ ॥ अपानरंद्रया- । माझारीं धनंजया । पांणीं

१ जनसहवास. २ वनांत स्थळ वसविलें. ३ अवयवसमुदाय. ४ मन इन्द्रियांच्या अंतर्मुखतें. ५ बोले. ६ क्षुधा मंदव्हावी. ७ विषयी. ८ मोजलेला. ९ माप घालीत नाहीत. १० जठराग्नीन, प्राण पोषण होतो. ११ इच्छिली किंवा बोलाविली. १२ दबडीत नाही. १३ विषयसुख, अविचार. १४ उपयोग करी. १५ खाधीन. १६ शब्दास. १७ जिकून. १८ ध्यान करण्यास योग्यपणानें. १९ ध्यान करितो. २० प्रकार. २१ शहाणा. २२ पुढें करून. २३ प्रकार. २४ गुदशिश्रिद्धांच्या. २५ खोटेनं दाबून.

पिडूनियां । कांवरुमूळ ॥ ३६ ॥ आकुंचुनि अध । देऊनि तिन्ही बंध । करुनि एकवद । वायू भेदी ॥ ३७ ॥ कुंडलिनी जागळुनि । मध्यमा विकाशुनि । आधारादि भेदुनि । अमिचरी ॥ ३८ ॥ सहस्रदळाचा मेघ । पीयूषं वर्षोनि चांग । तो मूळवरी वोघ । आणूनियां ॥ ३९ ॥ नाचतया पुण्यगिरी । चिद्वैरावाच्या खापरीं । मनपवनाची खीच पुरी । बाहुनियां ॥ १०४० ॥ जालिया योगाचा गांढा । मेळावा सुनि हा पुढां । ध्यान मागिलीकेंडां । स्वयंभ केले ॥ ४१ ॥ आणि ध्यानयोगदोनी । इयें आत्मतत्त्वज्ञानी । पैटी होभावया निर्विघ्नी । आधींचि तेणें ॥ ४२ ॥ वीतरांगतेसारखा । जोडुनि ठेविला सखा । तो आघवियाचि भूमिकी- । सर्वे चाले ॥ ४३ ॥ पहावें दिसे तंववरी । दिठीतें न संधी दीप जरी । तरी कें अंधसरीं । देखावया ॥ ४४ ॥ तैसें मोक्षीं प्रवर्तल्या । वृत्तीं ब्रह्मीं जाय लया । तंव वैराग्य आधी तया । भंग कैचा ॥ ४५ ॥ झणौनि सवैराग्य । ज्ञानाभ्यास तो सभाग्य । करुनि जाला योग्य । आत्मलभा ॥ ४६ ॥ ऐसी वैराग्याची अंगी । बाणूनियां वैज्रांगीं । राजयोगतुरंगीं । आरूढला ॥ ४७ ॥ वरि आडपडिलें दिठी । सैनं थोर निर्वेदी । तें बळी विवेकसुधीं । ध्यानाचें खाडें ॥ ४८ ॥ ऐसेनि संसारणाभांत । आधारीं सूर्य तैसा असे जात । मोक्ष विजय श्रिये वरेंत । होभावयालागीं ॥ ४९ ॥

“जनांचा सहवास सोडावयाचा; वनांत वस्ती करावयाची; आपल्या आंगाचे अवयव येवढेच काय ते सोबती; १०२२ शमदमादिकां-मध्ये खेळतो; न बोलण्याचीच बडबड करतो; गुरुवाक्याच्या तळीनतेमध्ये वेळसुद्धां ज्याला कळत नाही. १०२३ आणखी आंगाला शक्ति

१ गुदशिश्रास सांधणाऱ्या रेपाकृतीचें मूळ, चार बोटांचा मध्य. २ आकर्षण करून. ३ गुदस्थानचा वज्रबंध, नाभिस्थान उड्डियाणबंध व कंठस्थान जालंधरबंध. ४ नाभिकमलांतील मूळशक्ति. ५ सुपुत्रा. ६ गुदस्थानच्या आधारचक्राचा भेद करून. ७ कुंडलिनीच्या जागृतावस्थेपासून उत्पन्न झालेल्या तेजावर. ८ मस्तकस्थित ब्रह्मरंध्रीचा. ९ मूलाधारगुदस्थित चक्रापर्यंत. १० द्विदलरूप कमल जें अमिचक्र तद्रूप पर्वतावर. ११ चैतन्यरूप भैरवाच्या शिक्षापत्रांत झणजे सहस्रदलरूप कमलमस्तकांत. १२ मनोरूप वायूची पूर्ण खिचडी. १३ बळकटी. १४ वर सांगितलेला समुदाय पुढें करून. १५ ब्रह्मध्यानाकडे. १६ स्थिर प्राप्त. १७ वैराग्यासारखा. १८ अवस्थांसमागमें. १९ वेळ. २० अहंस्फुरण. २१ कवच. २२ वज्राप्रमाणें बळकट. २३ राजयोगरूप घोळ्यावर २४ स्थूल, सूक्ष्म. २५ संहारी. २६ खड्ग. २७ वरणाऱ्या, भर्ता.

यावी; किंवा क्षुधा मंद व्हावी; किंवा जिमेचे हेतु पूर्ण व्हावेत; १०२४ भोजन करीत असतां ह्या तिहींनाही जो मोजित नाही. आहारा-मध्ये मोजकेपणा; संतोषामध्ये मात्र माप नाही. १०२५ जठराग्नीनें दग्ध होणारा प्राण वांचेल, इतका परिमित आहार मात्र सेवन करावयाचा. १०२६ आणखी परपुरुषानें हाक मारिली तरी, कुलीन स्त्री त्याच्या आंगाला स्पर्श करीत नाही, त्याप्रमाणें निद्रेला आणि आळसाला जो थारा देत नाही. १०२७ नमस्कार घालतांना जें काय भूमीला आंग लागेल तें लागेल. त्याशिवाय उगाच अविचारानें लोळणें नाही. १०२८ देह चालेल इतक्या पुरताच हातापायांचा उपयोग करतो. किंबहुना अंतर्बाह्य सारें आपल्याच स्वाधीन करून सोडतो. १०२९ हे वीरा! वृत्तीला मनाचा उंबराही जो पाहूं देत नाही, तेथें शब्दादिकांच्या व्यापाराला संधि कोठची? १०३० अशा प्रकारें तो काया, वाचा, व मन हीं जिकून ध्यानाच्या आकाशासुद्धां बाह्य प्रदेश आपल्या ताब्यांत घेतो. १०३१ तो गुरुवाक्यानें जागृत होतो आणि ज्ञानानें आलेला निश्चय, आरसा घेऊन पहात वसावें त्याप्रमाणें जो पहात बसतो. १०३२ ध्यान करणारा आपणच असतो आणि तोच ध्यानरूपवृत्तीमध्ये ध्यान करण्यास योग्य जें आपण त्याचेंच ध्यान करतो. असा जो ध्यानाचा प्रकार तो आतां ऐक. १०३३ तेव्हां अर्जुना! ध्येय, ध्यान आणि ध्याता ह्या तिहींची एकरूपता होईल तोंपर्यंत तें तो करतो. १०३४ झणून तो मुमुक्षु आत्मज्ञानामध्ये प्रवीण होतो. परंतु हें सर्व योगाभ्यासाचा प्रकार पुढें करून करतो. १०३५ धनंजया! खालच्या दोन्ही छिद्रांमध्ये खोट देऊन मधील शिवणीस रेटून, १०३६ अधोभाग (गुदस्थानचा) आकर्षण करून वज्रबंध, (नाभिस्थान) उड्डीयानबंध, (कंठस्थान) जालंधरबंध हे तिन्ही बंध साधून वायुभेदांची एकवाक्यता लावून, १०३७ कुंडलिनी जागृत करून, मध्यमा-सु-

पुन्ना विकसित करून आधारचक्राचा भेद करून, त्या अग्नीवर, १०३८ मस्तकांतील ब्रह्मरंभरूप मेधापासून अमृताची उत्तम वृद्धि करीत तो ओघ मूलाधारचक्रापर्यंत आणून, १०३९ पुण्यपर्वतावर नाचणारा जो चैतन्यरूप भैरव, त्याच्या भिक्षापात्रांत मनाची आणि वायूची भरपूर खिचडी वाढून, १०४० योगाचा अभ्यास दृढतर झाला झणजे हा सर्व समुदाय पुढें करून त्याच्या पाठीमागें ध्यानाला स्वयंभु करून सोडतो. १०४१ आणखी हें ध्यान व योग दोन्हीही ह्या आत्मतत्त्वज्ञानामध्ये निर्विघ्नपणें स्थिर होण्याकरितां, त्यानें आधींच, १०४२ वैराग्यासारखा मित्र जोडून ठेवलेला असतो. तो प्रत्येक स्थितीमध्ये त्याच्याबरोबर चालत असतो. १०४३ दिसतें तोंपर्यंत पहावें. परंतु दीप जर दृष्टीला सोडित नाही, तर पहावयाला अवकाश तरी कोठें राहिला? १०४४ तद्वत् मोक्षामध्ये शिरलें, कीं अहं हें स्फुरण लयास जाईपर्यंत त्याला वैराग्य असतें. मग त्याला भंग कशाचा? १०४५ झणून वैराग्यासहवर्तमान जो ज्ञानाचा अभ्यास करतो, तो भाग्यवान् होय. आणि तोच आत्मलाभाला योग्य होतो. १०४६ अशा प्रकारें वैराग्याचें वज्राप्रमाणें बळकट कवच आंगांत घालून जो राजयोगरूपी (अद्वैतबोधरूप) घोड्यावर बसतो. १०४७ तो विवेकाच्या बळकट मुठीत ध्यानरूप तरवार घेऊन दृष्टीपुढें जें जें लहान किंवा थोर येईल, तें स्थूल असो कीं सूक्ष्म असो, त्याचा संहार करीत सुटतो. १०४८ अशा रीतीनें आंधारांत सूर्य जातो तसा, संसारयुद्धामध्ये मोक्षाची विजयश्री वरण्याकरितां जात असतो.” १०४९

अहंकारं बलं दर्पं कामं क्रोधं परिग्रहम् ।

विमुच्य निर्ममः शांतो ब्रह्मभूयाय कल्पते॥१३॥

[अहंकार] तेथ आडवावया आले. दोषवैरी जे धोपटिले. तयांमाजी पहिले. देहाहंकार ॥ १०५० ॥ जो न मोकली मारुनी. जीवों नेदी उपजवोनी. विचंबवी खोडां घालुनी. हाडांचिया ॥ ५१ ॥ तेंयाचा देहदुर्ग हा थारा। मोडोनि १ श्रमवी. २ त्या अभिमानाचा. ३ देहरूप किष्ठा.

जो द्वेष करीत नाही; १०१९ किंवा कदाचित्
बांगलें इष्टच पुढें आणून ठेवले तरी, त्याच्या-
बद्दल अभिलाष धरीत नाही. १०२० याप्रमाणें
अर्जुना ! इष्ट येवो किंवा अनिष्ट येवो; कांहीं
आले तरी द्वेष सोडून जो गुह्यत व दाट झा-
डीत वास्तव्य करतो; १०२१

विविक्तसेवी लघ्वाशी यतवाक्कायमानसः ।

ध्यानयोगपरो नित्यं वैराग्यं समुपाश्रितः ॥ १२ ॥

[विविक्तसेवी] गजबजा सांडिलिया । वंसवी वनस्थळिया ।
अंगाच्या मांदिया । एकलेया ॥ २२ ॥ शमदमादिकीं खेले ।
न बोलणेंचि नावळे । गुरुवाक्याचेनि मेळें । नेणे वेळ ॥ २३ ॥
[लघ्वाशी] आणि आंगा बळ यावें । ना तरि छुधा जावें ।
कां जिभेचे पुरावे । मनोरथ ॥ २४ ॥ भोजन करितां
बिंबी । थया तिहींतें न लेखी । आहारीं मिती संतोषी ।
मोप न सूये ॥ २५ ॥ अनशनाचेनि पांवकें । हारपतां
प्राण पोखे । इतुकियाचि भाग मोटकें । अशन करी ॥ २६ ॥
[यतवाक्कायमानसः] आणि परपुरुषें कामिलि । कुळवधू आंग
न घाली । निद्रालस्या न मोकली । अशन तैसे ॥ २७ ॥
दंडवताचेनि प्रसंगें । सुरीं हन अंग लागे । वांचूनि येर
नेघे । रामस्य तेथ ॥ २८ ॥ देहनिर्वाहापुरतें । राहाटवी
हातापायांतें । किंबहुना आपैतें । सबाळ केले ॥ २९ ॥
आणि मनाचा उंबरा । वृत्तीसी देखो नेदी वीरा । तेथ कें
वाग्य्यापारा । अवकाश असे ॥ १०३० ॥ ऐसेनि देहवाचा
मानस । हें जिणोनि बाह्यप्रदेश । [ध्यान-] आकळिले आ-
काश । ध्यानचें तेणें ॥ ३१ ॥ गुरुवाक्यें उठविला । बोधीं
निश्चय आला । न्याहाळी हातीं घेतला । आरिसां जैसा ॥ ३२ ॥
पै ध्याता आपणपेंचि परी । ध्यानरूप वृत्तिमाझारी । ध्ये-
यचें धेहे अवधारीं । ध्यानरुढी गा ॥ ३३ ॥ तेथ ध्येय
ध्यान ध्याता । थयां तिहीं एकरूपता । होय तंव पंडुसुता ।
कीजे तें गा ॥ ३४ ॥ झणौनि तो सुसुधु । आत्मज्ञानी जाला
देखु । [योगपरो नित्यं] परि पुढेंसुनि पेंडु । योगाभ्यासा-
चा ॥ ३५ ॥ अपानरंद्रया- । माझारीं धनंजया । पांष्णीं

१ जनसहवास. २ वनांत स्थळ वसविलें. ३ अवयवसमु-
दाय. ४ मन इन्द्रियांच्या अंतर्मुखतें. ५ बोले. ६ छुधा मंद
व्हावी. ७ विषयीं. ८ मोजलेला. ९ माप घालीत नाहीत.
१० जठराग्नीनें, प्राण पोषण होतो. ११ इच्छिली किंवा
बोलाविली. १२ दबडीत नाही. १३ विषयसुख, अविचार.
१४ उपयोग करी. १५ स्वाधीन. १६ शब्दास. १७ जिकून.
१८ ध्यान करण्यास योग्यपणानें. १९ ध्यान करितो.
२० प्रकार. २१ शहाणा. २२ पुढें करून. २३ प्रकार.
२४ गुदशिश्निद्रांच्या. २५ खोटेनं दाबून.

पिडूनियां । कावैरुमूळ ॥ ३६ ॥ आकुंचनि अध ।
देऊनि तिन्ही बंध । करुनि एकवद । वायू भेदी ॥ ३७ ॥
कुंडलिनी जागळनि । मध्यमा विकाशनि । आधारदि भे-
दनि । अमिर्वरी ॥ ३८ ॥ सहस्रदळाचा मेघ । पीयूषं वषोनि
चांग । तो मूळवरी बोध । आणूनियां ॥ ३९ ॥ नाचतया
पुण्यगिरी । चिद्वैरवाच्या खापरीं । मनपवनाची खीच पुरी ।
बाहुनियां ॥ १०४० ॥ जालिया योगाचा गाढा । मेळावा
सुनि हा पुढा । ध्यान मागिलीकडे । स्वयंभ केले ॥ ४१ ॥
आणि ध्यानयोगदोनी । इयें आत्मतत्त्वज्ञानी । पेंटी होआवया
निर्वित्री । आधींचि तेणें ॥ ४२ ॥ वीतरंगतेसारखा । जो-
डुनि ठेविला सखा । तो आधवियाचि भूमिर्का- । सर्वे चाले
॥ ४३ ॥ पहावें दिसे तंववरी । दिडीतें न संधी दीप जरी ।
तरी कें अवसरीं । देखावया ॥ ४४ ॥ तैसें मोक्षीं प्रवर्तल्या ।
वृत्ती ब्रह्मीं जाय लया । तंव वैराग्य आधी तया । अंग
केंचा ॥ ४५ ॥ झणौनि सर्वैराग्य । ज्ञानाभ्यास तो सभाग्य ।
करुनि जाला योग्य । आत्मलाभा ॥ ४६ ॥ ऐसी वैराग्याची
अंगी । बाणनियां वेज्जगीं । राजयोगतुरंगीं । आरूढला
॥ ४७ ॥ वरि आडपडिलें दिडी । सौने थोर निवेंटी । तें
बळी विवेकमुष्टीं । ध्यानचें खांडें ॥ ४८ ॥ ऐसेनि सं-
सारणाभांत । आधारीं सूर्य तैसा असे जात । मोक्ष विजय
श्रिये वरेंतें । होआवयालागीं ॥ ४९ ॥

“जनांचा सहवास सोडावयाचा; वनांत
वस्ती करावयाची; आपल्या आंगाचे अवयव
येवढेच काय ते सोबती; १०२२ शमदमादिकां-
मध्ये खेळतो; न बोलण्याचीच बडबड करतो;
गुरुवाक्याच्या तळीनतेमध्ये वेळसुद्धां ज्याला
कळत नाही. १०२३ आणखी आंगाला शक्ति

१ गुदशिश्नास सांधणाऱ्या रेपाकृतीचें मूळ, चार बोटांचा
मध्य. २ आकर्षण करून. ३ गुदस्थानचा वज्रबंध, नाभिस्थान
उड्डियाणबंध व कंठस्थान जालंधरबंध. ४ नाभिकमलातील
मूळशक्ति. ५ सुपुत्रा. ६ गुदस्थानच्या आधारचक्राचा भेद
करून. ७ कुंडलिनीच्या जाणूतावस्थेपासून उत्पन्न झालेल्या
तेजावर. ८ मस्तकस्थित ब्रह्मरंध्रीचा. ९ मूलाधारगुदस्थित
चक्रापर्यंत. १० द्विदलरूप कमल जें अमिचक्र तद्रूप पर्व-
तावर. ११ चैतन्यरूप भैरवाच्या भिक्षापानांत झणजे सह-
स्रदलरूप कमलमस्तकांत. १२ मनोरूप वायूची पूर्ण खिचडी.
१३ बळकटी. १४ वर सांगितलेला समुदाय पुढें करून.
१५ ब्रह्मध्यानाकडे. १६ स्थिर प्राप्त. १७ वैराग्यासारखा.
१८ अवस्थांसमागणें. १९ वेळ. २० अहंस्फुरण. २१ कवच.
२२ वज्राप्रमाणें बळकट. २३ राजयोगरूप धोव्यावर
२४ स्थूल, सूक्ष्म. २५ संहारी. २६ खड्ग. २७ वरगारा, भर्ता.

यावी; किंवा क्षुधा मंद व्हावी; किंवा जिमेचे हेतु पूर्ण व्हावेत; १०२४ भोजन करीत असतां ह्या तिहींनाही जो मोजित नाही. आहारा-मध्ये मोजकेपणा; संतोषामध्ये मात्र माप नाही. १०२५ जठराग्नीनें दग्ध होणारा प्राण वांचेल, इतका परिमित आहार मात्र सेवन करावयाचा. १०२६ आणखी परपुरुषानें हाक मारिली तरी, कुलीन स्त्री त्याच्या आंगाला स्पर्श करीत नाही, त्याप्रमाणें निद्रेला आणि आळसाला जो थारा देत नाही. १०२७ नमस्कार घालतांना जें काय भूमीला आंग लागेल तें लागेल. त्याशिवाय उगाच अविचारानें लोळणें नाही. १०२८ देह चालेल इतक्या पुरताच हातापायांचा उपयोग करतो. किंबहुना अंतर्बाह्य सारें आपल्याच स्वाधीन करून सोडतो. १०२९ हे वीरा! वृत्तीला मनाचा उंबराही जो पाहूं देत नाही, तेथें शब्दादिकांच्या व्यापाराला संधि कोठची? १०३० अशा प्रकारें तो काया, वाचा, व मन हीं जिकून ध्यानाच्या आकाशासुद्धां बाह्य प्रदेश आपल्या ताब्यांत घेतो. १०३१ तो गुरुवाक्यानें जागृत होतो आणि ज्ञानानें आलेला निश्चय, आरसा घेऊन पहात बसावें त्याप्रमाणें जो पहात बसतो. १०३२ ध्यान करणारा आपणच असतो आणि तोच ध्यानरूपवृत्तीमध्ये ध्यान करण्यास योग्य जें आपण त्याचेंच ध्यान करतो. असा जो ध्यानाचा प्रकार तो आतां ऐक. १०३३ तेव्हां अर्जुना! ध्येय, ध्यान आणि ध्याता ह्या तिहींची एकरूपता होईल तोंपर्यंत तें तो करतो. १०३४ झणून तो मुमुक्षु आत्मज्ञानामध्ये प्रवीण होतो. परंतु हें सर्व योगाभ्यासाचा प्रकार पुढें करून करतो. १०३५ धनंजया! खालच्या दोन्ही छिद्रामध्ये खोट देऊन मथील शिवणीस रेटून, १०३६ अघोभाग (गुदस्थानचा) आकर्षण करून वज्रबंध, (नाभिस्थान) उड्डियाणबंध, (कंठस्थान) जालंधरबंध हे तिन्ही बंध साधून वायुभेदांची एकराक्यता लावून, १०३७ कुंडलिनी जागृत करून, मध्यमा-सु-

षुम्ना विकसित करून आधारचक्राचा भेद करून, त्या अग्नीवर, १०३८ मस्तकांतील ब्रह्मरंध्ररूप मेघापासून अमृताची उत्तम वृष्टि करीत तो ओघ मूलाधारचक्रापर्यंत आणून, १०३९ पुण्यपर्वतावर नाचणारा जो चैतन्यरूप भैरव, त्याच्या भिक्षापात्रांत मनाची आणि वायूची भरपूर खिचडी वाढून, १०४० योगाचा अभ्यास दृढतर झाला झणजे हा सर्व समुदाय पुढें करून त्याच्या पाठीमागें ध्यानाला स्वयंभु करून सोडतो. १०४१ आणखी हें ध्यान व योग दोन्हीही ह्या आत्मतत्त्वज्ञानामध्ये निर्विघ्नपणें स्थिर होण्याकरितां, त्यानें आधींच, १०४२ वैराग्यासारखा मित्र जोडून ठेवलेला असतो. तो प्रत्येक स्थितीमध्ये त्याच्याबरोबर चालत असतो. १०४३ दिसतें तोंपर्यंत पहावें. परंतु दीप जर दृष्टीला सोडित नाही, तर पहावयाला अवकाश तरी कोठें राहिला? १०४४ तद्वत् मोक्षामध्ये शिरलें, कीं अहं हें स्फुरण लयास जाईपर्यंत त्याला वैराग्य असतें. मग त्याला भंग कशाचा? १०४५ झणून वैराग्यासहवर्तमान जो ज्ञानाचा अभ्यास करतो, तो भाग्यवान् होय. आणि तोच आत्मलाभाला योग्य होतो. १०४६ अशा प्रकारें वैराग्याचें वज्राप्रमाणें बळकट कवच आंगांत घालून जो राजयोगरूपी (अद्वैतबोधरूप) शोड्यावर बसतो. १०४७ तो विवेकाच्या बळकट मुर्तीत ध्यानरूप तरवार घेऊन दृष्टीपुढें जें जें लहान किंवा थोर येईल, तें स्थूल असो कीं सूक्ष्म असो, त्याचा संहार करीत सुटतो. १०४८ अशा रीतीनें आंधारांत सूर्य जातो तसा, संसारयुद्धामध्ये मोक्षाची विजयश्री वरण्याकरितां जात असतो." १०४९

अहंकारं बलं दर्पं कामं क्रोधं परिग्रहम् ।

विमुच्य निर्ममः शांतो ब्रह्मभूयाय कल्पते॥५३॥

[अहंकारं] तेथ आढवावया आले. दोषवैरी जे धोपटिले। तयांमाजी पहिले। देहाहंकार ॥ १०५० ॥ जो न मोकली मारुनी। जीवों नेदी उपजवोनी। विचंबवी खोडां घालुनी। हाडांचिया ॥ ५१ ॥ तयाचा देहेंदुर्य हा थारा। मोडोनि

१ श्रमवी. २ त्या अभिमानाचा. ३ देहरूप किष्ठा.

घेतला तो वीरा । [बल] आणि बळ हा दुसरा । मारिला
वैरी ॥ ५२ ॥ जो विषयाचेनि नांवें । चौगुणेंही वरी थावे ।
जेणें मृतावस्था धावे । सर्वत्र जगा ॥ ५३ ॥ तो विषयवि-
षाचा ठावो । आषविषा दोषांचा रावो । परी ध्यानखड्याचा
घावो । साहेल कैचा ॥ ५४ ॥ [दर्प] आणि प्रिय विषय-
प्राप्ती । करी जया सुखाची व्यक्ती । तेचि घालनि बुंधी ।
आंगी जो वाजे ॥ ५५ ॥ जो सन्मार्ग भुलवी । मग अध-
र्माच्या आडवी । सूनि वाघां सांपडवी । नरकादिकां ॥ ५६ ॥
तो विश्वासे मारिता रिपु । निर्वदनि घातला दुर्पु । [काम]
आणि जयाचा अहा कंपु । तापसांसी ॥ ५७ ॥ कोधा ऐसा
महादोख । जयाचा देख परिपाक । भरजे तंव अधिक ।
रिता होय जो ॥ ५८ ॥ तो काम कोणेचठायी । नसे ऐसे
केले पाहीं । [क्रोध] की तेंचि क्रोधाही । सहजें आलें ॥ ५९ ॥
मुळाचें तोडणें जैसे । होय कां शाखोदेशें । काम नाशलेनि
नाशे । तैसा क्रोध ॥ १०६० ॥ ह्याणीनि काम वैरी । जाला
जेथ ठाणरी । तेथ सरली वारी । क्रोधाचीही ॥ ६१ ॥ [प-
रिग्रह] आणि समर्थ आपुला खोडा । शिसे वाहवी जैसा
होडा । तैसा भुंजोनि जो गाढा । परिग्रहो ॥ ६२ ॥ जो
माथाचि पालवणी । अंगा अवगुण घालवी । जीवें दांडी
घेववी । ममत्वाची ॥ ६३ ॥ शिष्यशास्त्रादिविलासे । मेठा-
दिसुद्धेचि मिसे । घातले आहाती फांसे । निःसंगा जेणें
॥ ६४ ॥ धर्मी कुटुंबपणें सरे । तरी वनी वैश्य होउनि अ-
वतरे । नागवीयाही शरीरें । लागला आहे ॥ ६५ ॥ [वि-
मुच्य] ऐसा दुर्जय जो परिग्रहो । तयाचा फेहूनि ठावो ।
भवविजयाचा उत्साहो । भोगीतसे जो ॥ ६६ ॥ [निर्ममः] तेथ
अमानित्वादि आघवे । ज्ञानगुणाचे जे मेळावे । ते कैवल्य-
देशीचे आघवे । राव जैसे आले ॥ ६७ ॥ तेव्हां सम्यक्-
ज्ञानाच्या । राणिवा उठाणूनि तया । परिवार होऊनियां ।
राहत आंगें ॥ ६८ ॥ प्रवृत्तीचिये राजविदी । अवस्थाभेद-
प्रमदी । कीजत आहे प्रतिपदी । सुखाचें लोण ॥ ६९ ॥
पुढां बोधाचिये कांबीवरी । विवेक दयाची मादी सोरी ।

१ सर्व विषयांचें नांव घेतांना. २ बळावे. ३ कसे सहन
करील. ४ खोक. ५ आदळे. ६ अरण्यांत. ७ घालून. ८ गुरु-
शास्त्रवचनी विश्वासाचें. ९ वधून. १० गर्व. ११ पक्तावस्था.
१२ रिकामा. १३ इच्छा. १४ युद्धहत, युद्धकर्ता. १५ बेडी.
१६ मस्तकें. १७ पैजेचें. १८ संग. १९ ओझे घाली, डो-
क्यावर बसतो. २० जडवी. २१ काठी. २२ शिष्यसंप्रदाय
वाढविण्याचे प्रकार. २३ मठ करणें, मुद्रा दाखविणें.
२४ विरक्तास. २५ ज्या परिग्रहानें. २६ घरकुटुंब त्याग
करून दूर झाला. २७ वन्यसंवाधाचे विषयी. २८ स्वामित्वानें.
२९ झाडा करून. ३० राजमार्गावर. ३१ जाणुति इत्यादिक
झियांविषयी. ३२ धनुष्यानें. ३३ नाहींशी करी.

योगभूमिका आरती करी । येती जैसिया ॥ १०७० ॥ तेथ
ऋद्धिसिद्धीचीं अनेगें । वुंदें मिळती प्रसंगें । तिये पुष्पवर्षी
आंगें । नाहातसे तो ॥ ७१ ॥ ऐसेनि ब्रह्मक्यासारिखें । स्व-
राज्य येतां जवळिकें । झळवित आहे हरिखें । तिन्ही लोक
॥ ७२ ॥ तेव्हां वैरिया कां मैत्रिया । तयासि माझे ह्याण-
वया । समानता धनंजया । उरेचिही ना ॥ ७३ ॥ हें ना
भलतेणे व्याजें । तो जयातें ह्याणे माझे । तें नोडवेचि कां
हुंजें । अद्वितीय जाला ॥ ७४ ॥ पै आपुलिया एकी सत्ता ।
सर्वही कवळुनियां पंडुसुता । केहीं न लगती ममता । धां-
डिली तेणें ॥ ७५ ॥ [शांतः] ऐसा जितिलिया रिपुवर्ग ।
अपमानिलिया हें जग । अपैसा योगगुरुंग । स्थिर जाला
॥ ७६ ॥ वैराग्याचें गाढलें । अंगत्राण होतें भलें । तेंही
नावेक दिलें । तेव्हां करी ॥ ७७ ॥ आणि निर्वदो ध्यानाचें
खांडें । तें हुजें नाहींचि पुढें । ह्याणनि हात आसुडे । वृत्ती-
चाही ॥ ७८ ॥ जैसे रसौषध खरें । आपुलें काज करुनि
पुरें । आपणही सुरे । तैसें होतसे ॥ ७९ ॥ देखोनि ठाकिता-
ठावो । धांवतां थिरावे पावो । तैसा ब्रह्मसामीप्यें थावो ।
अभ्यास सांडी ॥ १०८० ॥ घडतां महोदधीसी । गंगा वेग
सांडी जैसी । कां कामिनी कांतापारसी । स्थिर होय ॥ ८१ ॥
ना ना फळतिये वेळे । केळीची वाढि मोडुळे । कां गांवापुढें
वळे । मार्ग जैसा ॥ ८२ ॥ तैसा आत्मसाक्षात्कार । होईल
देखोनि गोचर । ऐसा सार्धनैहतिथेर । हळुचि ठेवी ॥ ८३ ॥
ह्याणीनि ब्रह्मंसी तथा । ऐक्याचा समो धनंजया । होतसे तें
उपाया । वोहटें पडे ॥ ८४ ॥ मग वैराग्याची गोंधळुक ।
जे ज्ञानाभ्यासाचें बांधक्य । योगफळासही परिपाक । दशा
जे कां ॥ ८५ ॥ ते शांति पै गा सुबेगा । संपूर्ण ये तया-
च्या आंगा । [ब्रह्मभूयाय कल्पते] तें ब्रह्म होआवयाजोगा ।
होय तो पुरुष ॥ ८६ ॥ पुनवेहूनि चतुर्दशी । जेतुलें उणेंपण
शशी । कां सोळेया ऊनि जैसी । पंधरावी वांनी ॥ ८७ ॥
सागरीही पाणी वेणें । संचरे तें रूप गंगे । येर निश्चळ जें
उणें । तें समुद्र जैसा ॥ ८८ ॥ ब्रह्मा आणि ब्रह्महोतिये ।
योगयते तैसा पांड आहे । तेचि शांतीचेनि लाहे । हातें तो

१ आरती करणाऱ्या. २ पुष्पवृष्टीनें. ३ आनंदित,
गुंडाळित. ४ साम्यतेनें. ५ निमित्तानें. ६ प्राप्त होत नाहीं.
७ दुसरेपणानें. ८ वेष्टून. ९ कधीं. १० फेडिली. ११ शत्रु-
समुदाय. १२ सहज. १३ योगरूप घोडा. १४ अंगावर
बळकट घातलेलें. १५ कवच. १६ वधी. १७ खड्ग.
१८ झुगारी. १९ विश्रांतिस्थान. २० पाय स्थिर होतो.
२१ बळ. २२ सरे, कुंटे. २३ शास्त्र. २४ समय. २५ तूट.
२६ मावळती वेळ. २७ वृद्धपणा. २८ परिणाम. २९ ऐश्वर्य-
वंता. ३० उणी. ३१ कस. ३२ साम्य.

गा ॥ ८९ ॥ पै तैचि होणेनवीण । प्रतीती आलें जें ब्रह्म-
पण । ते ब्रह्महोती जाण । योग्यता येथ ॥ १०९० ॥

“तेव्हां दोषरूप शत्रु जे जे आडवे येतात, आणि त्यांपैकी ज्यांना धोपटून काढावे लागते, त्यांमध्ये पहिला कोण ? तर देहाहंकार. १०५० त्याला नुसता मारूनच सोडित नाही, तर त्याने पुन्हा डोकेंसुद्धां वर करूं नये असें करून टाकतो. १०५१ हे वीरा ! त्या देहाहंकाराचें राहण्याचें ठिकाण जो देहरूप किला तो जिकून टाकलेला असतो. आणखी, बळ हा दुसरा वैरी मारतो. १०५२ विषयांचें नांव घेतांच जो चौपटीहूनही अधिक वाढतो. आणि ज्याच्या योगानें सर्व जगाला मृतावस्था प्राप्त होते. १०५३ तो विषयरूप विषाची खाण; सर्व दोषांचा राजा तरी, ध्यानरूप तरवारीचा वार कसा सहन करणार ? १०५४ आणखी प्रिय विषय प्राप्त झाले कीं ज्याचें सुख दिसू लागतें. आणि तेंच कवच आंगांत घालून जो गरजतो. १०५५ जो सन्मार्गाला भुरळ पाडतो; चुकवितो; आणि अधर्माच्या अरण्यांत घालून नरकादिक वाघांच्या तावडींत देतो. १०५६ विश्वासानें मारणारा दुस्मान; असा जो गर्व तो ज्यानें ठार करून टाकलेला. आणि अरेरे ! ज्याचा तपस्व्यांनासुद्धां धाक, १०५७ क्रोधासारखा महादोष हें ज्याचें फळ; भरूं लागलें कीं जो अधिकाधिक रिताच होत जाणारा; १०५८ असा जो काम तो कोठेंच ज्यानें नाहींसा करून टाकलेला. तेव्हां क्रोधाच्या कपालालाही सहर्जा तीच दशा आली. १०५९ ज्याप्रमाणें मूळ तोडलें ह्मणजे शाखा तुटतातच; त्याप्रमाणें कामाचा नाश झाला कीं, क्रोधाचाही झालाच. १०६० ह्मणून कामरूप शत्रु जेथें पराजित होतो, तेथें क्रोधाचीही वारी संपते. १०६१ आणखी सत्ताधीश असतो तो आपला खोडाही पैजेनें डोक्यावरून न्यावयाला लावतो, त्याप्रमाणें भोग भोगून मातलेला जो

परिग्रह, १०६२ जो आपल्या नुसत्या मस्तक हालविण्यानेंच आपल्या आंगचा अवगुण छि-
कटिवतो, व जिवाकडून ममत्वाची दांडी घे-
ववितो, १०६३ शिष्यसांप्रदाय वाढविणें;
मठ करणें; मुद्रा दाखविणें, इत्यादि निःसंगा-
वरही ज्यानें फांसे घालून ठेवलेले आहेत. १०६४ घरांतील कुटुंबांतून निघतो परंतु ब-
नामध्ये वन्यविषयीं होऊन राहतो; नागव्यांच्या
शरीरालाही जो चिकटलेला; १०६५ असा
जिकण्याला कठीण जो परिग्रह, त्याचा गंड
मोडून जो संसारापासून विजयी होत्साता
आनंदोत्सवाचा उपभोग घेतो. १०६६ तेव्हां
अमानित्वादि सारे ज्ञानगुणांचे समुदाय, ते
जणों काय मोक्षदेशाचे राजे असावेत त्याप्र-
माणें येतात. १०६७ त्या वेळीं यथार्थज्ञानाच्या
राज्याचा त्यांस झाडा देऊन, त्यांचा अंकित
होऊन राहतो. १०६८ प्रवृत्तीच्या राजमार्गा-
वर जागृति इत्यादि अवस्था, भेदरूपी स्त्रिया
पावलोपावलीं सुखाचें लिंबलोन उतरित अस-
तात. १०६९ पुढें विचार हा ज्ञानाची काटी
घेऊन दृश्याची दाटी मागे करतो. आरती
ओवाळण्यास स्त्रिया आल्याप्रमाणें योगभूमिका
(अवस्था) येतात. १०७० तेव्हां प्रसंगानुसार
ऋद्धिसिद्धीचेही अनेक समुदाय जमा होतात,
आणि त्यांच्या पुष्पवृष्टीनें त्यांचें आंग अगदीं
झांकून जातें. १०७१ अशा प्रकारें ब्रह्मेक्षयासा-
रख्या स्वराज्याची प्राप्ति झाली ह्मणजे त्रि-
भुवन आनंदामध्ये बुडून जातें. १०७२ त्या
वेळीं धनंजया ! शत्रूला किंवा मित्राला माझे
ह्मणावयाला कांहीं उरतच नाही. १०७३ हें
नसलें तर, कोणत्याही इतर निमित्तानें माझे
असें झटलें तरीसुद्धां तें दुसरें होत नाही.
कारण, तो स्वतःच अद्वितीय झालेला असतो.
१०७४ अर्जुना ! आपल्या एकाच सत्तेखालीं
सर्व घेऊन कधीं न सुटणारी ममता त्यानें सो-
डलेली असते. १०७५ अशा प्रकारें शत्रुसमु-
दाय जिकला; ह्या जगाचा अब्देर केला; कीं
योगरूप घोडा आपोआपच उभा राहतो. १०७६

१ तें ब्रह्म झाल्यावांचून ब्रह्मपणा जो प्रतीतीस येतो तो
ब्रह्म होण्याची योग्यता. २ ब्रह्म होण्याची.

त्या वेळेस वैराग्याचें बळकट घातलेलें कवच असतें तें सुद्धां घटकाभर दिलें करतो. १०७७ आणखी ध्यानाचें खड्गही फेंकून देतो; कारण, दुसरें ह्मणून कांहीं उरत नाही त्यामुळें वृत्तीचाही हात क्षिप्तकारून देतो. १०७८ ज्याप्रमाणें खरें रसायन आपलें काम पुरतें करून मग आपणही शिल्पक रहात नाही, त्याप्रमाणें होतें. १०७९ थांबावयाचें ठिकाण पाहिलें ह्मणजे धांवणारा जसा पाय थांबवितो, त्याप्रमाणें ब्रह्मार्थी ऐक्यभाव झाला ह्मणजे अभ्यासाचें ठिकाण सोडून देतो. १०८० महासागराची गांठ पडली कीं, गंगा जशी वेग टाकून देते; खी जशी पतीपाशीं स्थिर होते; १०८१ किंवा फलद्रूप होण्याच्या वेळेला केळीची वाढ खुंटते; किंवा गांवाजवळ जसा मार्ग मुरडतो; १०८२ त्याप्रमाणें आत्मसाक्षात्कार होतो असें समजतांच साधनरूप शस्त्र हळूच खालीं ठेवतो. १०८३ ह्मणून हे धनंजया! ब्रह्माच्या आणि त्याच्या ऐक्याचा समय येतो तेव्हां उपायामध्ये तूट पडते. १०८४ मग वैराग्याची जी मावळती वेळ; जें ज्ञानाभ्यासाचें वार्धक्य; योगफळाची जी परिपक्व दशा; १०८५ हे ऐश्वर्यवंता! ती संपूर्ण शांति त्याच्या आंगास येते. तेव्हां तो पुरुष ब्रह्म होण्यास योग्य होतो. १०८६ पौर्णिमेपेक्षां चतुर्दशीच्या चंद्रांत जितकी कमतरता, किंवा सोळांच्या कसाहून पंधरांचा कस जितका उणा, १०८७ समुद्रांत जें पाणी जोरानें शिरतें, तें गंगेचें स्वरूप होय. बाकी जें स्थिर-निश्चल-पाणी तो समुद्र होय. १०८८ त्याप्रमाणें ब्रह्माची आणि ब्रह्म होणाऱ्याची योग्यता अगदीं जवळ जवळ आहे. तीच त्याला शांतीच्या द्वारानें प्राप्त होते. १०८९ तेंच ब्रह्म झाल्याशिवाय ब्रह्मत्वाचा जो अनुभव घडतो, तीच ब्रह्म होण्याची योग्यता होय." १०९०

ब्रह्मभूतः प्रसन्नात्मा न शोचति न कांक्षति ।

समः सर्वेषु भूतेषु मद्भक्तिं लभते पराम् ॥ ९४ ॥

[ब्रह्मभूतः प्रसन्नात्मा] ते ब्रह्मभावयोग्यता । पुरुष तो

मग पंडुजुता । आत्मबोध प्रसन्नता । पदीं बैसे ॥ ९१ ॥ जेणें निपजें रससोय । तो तापही जें जाय । तों तें कां होय । प्रसन्न जैसी ॥ ९२ ॥ ना ना भरतिया लगवग । शरत्काळीं सांडिजे गंगा । कां गीत राहतां उपांगा । वोहट पडे ॥ ९३ ॥ तैसा आत्मबोधीं उद्यम । करितां होय जो भ्रम । तोही जेथें शम । होऊनि जाय ॥ ९४ ॥ आत्मबोध प्रशस्ती । हे तिये दशेची ह्याती । ते भोगीतसे महामती । योग्य तो गा ॥ ९५ ॥ [न शोचति न कांक्षति] तेव्हां आत्मत्वे शोचोंवें । कांहीं पावावया कामावें । हें सरलें समावें । भरितें तया ॥ ९६ ॥ [समः सर्वेषु भूतेषु] उदया येतां गैमस्ती । नाना नक्षत्रव्यक्ती । हारवीजती दीप्ती । आंगिकां जेवि ॥ ९७ ॥ तेवि उठतिया आत्मप्रभा । हे भूतभेदव्यवस्था । मोडीत मोडीत पार्था । वांस पाहे तो ॥ ९८ ॥ पाटियेवरील अक्षरें । जैसीं पुंसां येती 'करें' । तैसीं हारपती भेदांतरे । तयाचिये दृष्टी ॥ ९९ ॥ तैसेनि अन्यथाज्ञानें । जियें घेपती जागरस्वप्न । तियें दोन्हीं केलीं लीन । अव्यक्तामाजि ॥ १०० ॥ मग तेंही अव्यक्त । बोध वाढतां झिजत । पुंरलां-बोधीं समस्त । बुडोनि जाय ॥ १ ॥ जैसी भोजनाच्या व्यापारी । क्षुधा जिरत जाय अवधारी । मग तृप्तीच्या अवसर । नाहीच होय ॥ २ ॥ नाना चालीचिया वाढी । वाट होत जाय थोडी । मग पातळायां बुडी । देऊनि निमै ॥ ३ ॥ कां जाणूती जंव उंदीपे । तंव तंव निद्रा हारपे । मग जागीनलियां खरूपे । नाहीच होय ॥ ४ ॥ हें ना आपुलें पूर्णत्व भेटे । जेथ चंद्रासी वाढी खुंटे । तेथ शुक्रपक्ष आटे । निःशेष जैसा ॥ ५ ॥ तैसा बोधेंजात गिळित । बोधबोधें ये मजआंत । मिसळला तेथ सायंत । अंबोध गेला ॥ ६ ॥ [मद्भक्ति] तेव्हां कल्पांताचिये वेळे । नदी सिंधूचे पेंढेवळें । मोडुनि भरिलें जळें । आब्रह्म जैसे ॥ ७ ॥ ना ना गेलिया घट मठ । आकाश ठाके एकवट । कां जळोनि काष्ठे काष्ठ । वन्हीच होय ॥ ८ ॥ ना तरि लेणियांचे ठसे । आटोनि गेलिया मुंसे । नामरूपभेदें जैसे । सांडिजे सोनें ॥ ९ ॥ हेंही असो चेइलेंथो । हें स्वप्न नाही जालया । मग आपणचि आपणयां । उरिजे जैसे ॥ १११० ॥ [लभते

१ रससोय. २ आपणास पूर्ण करण्याची लगवग. ३ मृंदगादि. ४ उद्योग. ५ शांत. ६ मोठेपण. ७ शोक करावा. ८ इच्छावें. ९ सूर्य. १० आंगच्या. ११ आत्मानुभव. १२ वाट. १३ हातांनं पुसतां येतात तशीं. १४ विपरीत ज्ञानानें. १५ घेतलीं जाती. १६ सूक्ष्मवृत्तीत. १७ पूर्ण बोधकाळी. १८ समर्थी. १९ नाश पावे. २० प्रकाश पावे. २१ सर्व बोध, सर्व ज्ञान. २२ अज्ञान. २३ बांध, मर्यादा. २४ ब्रह्मलोकापर्यंत. २५ अलंकार घडण्याचे छाप. २६ मुशीत. २७ जागें झाल्यावर.

परां तैसा मी एकवांचूनि काहीं । तया तयाहीसकट नाही ।
हे चौथी भक्ती पाहीं । माझी तो लाहे ॥ ११ ॥ येर आतं
जिज्ञासु अर्थीयां । हे भजती जिये पंथी । ते तिन्ही पावोनि
चौथी । ह्यणिपत आहे ॥ १२ ॥ ये-हवीं तिजी ना चौथी ।
हे पहिली ना सरती । पै माझिये सहजस्थिती । भक्ति नाम
॥ १३ ॥ जे नेरणें माझे प्रकाशनि । अन्यथात्वे मातें दाऊनि ।
सर्वही सर्वा भजौनि । बुझावीतसे ॥ १४ ॥ जो जेथ जेसं
पाहों बैसे । तया तेथ तैसेचि असे । हें उजियेडें कां दिसे ।
अखंडें जेणें ॥ १५ ॥ स्वप्राचें दिसणें न दिसणें । जैसे
आपलेनि असलेपणें । विश्वाचें आहे नाही जेणें । प्रकाशें
तैसे ॥ १६ ॥ ऐसा हा सहज माझा । प्रकाश जो कपिध्वजा ।
तो भक्तीचा वोजा । बोलिजे गा ॥ १७ ॥ ह्यणौनि आतां-
च्या ठायीं । हें आतं होऊनि पाहीं । अपेक्षणीय जें काहीं ।
तें मीचि केला ॥ १८ ॥ जिज्ञासुपुढां वीरेशा । हेचि होऊनि
जिज्ञासा । मी कां जिज्ञासु ऐसा । दाखविला ॥ १९ ॥ हेचि
होऊनि अर्थना । मीचि माझ्या अर्थी अजुना । करुनि अर्थो-
भिधाना । आणि मातें ॥ ११२० ॥ एवं घेऊनि अज्ञानातें ।
माझी भक्ति जे हे वतें । ते दावी मज द्रष्टयातें । दृश्य
करुनि ॥ २१ ॥ येथें मुखचि दिसे मुखें । या बोला काहीं
न चुके । परि दुजेपण हें लटिकें । आरिसा करी ॥ २२ ॥
दिठी चंद्रचि घे साचें । परि येतुलें हें तिमिरांचें । जे एकचि
असे तयाचे । दोनी दावी ॥ २३ ॥ तैसा सर्वत्र मीचि
मियां । घेपेंतसे धनंजया । परि दृश्यत्व हें वायां । अज्ञान-
वशें ॥ २४ ॥ तें अज्ञान आतां फिटलें । माझे द्रष्टृत्व मज
भेटलें । निजबिंबीं एकवटलें । प्रतिबिंब जेसं ॥ २५ ॥ पै
जेव्हांही असें किडोळ । तेव्हांही सोनेचि अडळ । परि तें
कीडें गेलिया केवळ । उरे जेसं ॥ २६ ॥ हांगा पूर्णमे
आधीं कायी । चंद्र सावयव नाही । परि तिये दिवसीं भेटे-
पाहीं । पूर्णता तया ॥ २७ ॥ तैसा मीचि ज्ञानद्वारें । दिसें
परि हेस्तातरें । मग दृष्टत्व तें सरे । मियांचि मी लाभें ॥ २८ ॥
ह्यणौनि दृश्यपथा । अतीत माझ्या पार्था । भक्तियोग चवथा ।
ह्यणीतला गा ॥ २९ ॥

“अर्जुना ! त्या ब्रह्म होणाऱ्या योग्यतेस पों-
चलेला पुरुष असतो तो मग आत्मज्ञानप्रसन्न-

१ शुद्धज्ञान. २ लाभे. ३ पीडित. ४ ज्ञानेच्छु. ५ द्र-
व्येच्छु. ६ शेवटली. ७ ब्रह्मरूप स्थिति. ८ अज्ञान. ९ अन्य
प्रकारें. १० भजवून. ११ समजावीत आहे. १२ प्रकाशानें.
१३ भक्तीच्या रीतीनं. १४ पीडिताच्या. १५ इच्छा करण्यास
योग्य. १६ ज्ञानेच्छुच्या पुढें. १७ अर्थीदिक या नांवास.
१८ सर्वसाक्षीला. १९ एवढें. २० नेत्ररोगाचें. २१ घेतला
जातो. २२ साक्षीरूपत्व. २३ डाकलग. २४ स्थिर. २५ हीण.
२६ उपाधीच्या योगानें हाताच्या अंतरानें. २७ ज्ञान.

तेच्या सिंहासनावर बसतो. १०९१ जिनें स्वयं-
पाक तयार होतो, ती आग जेव्हां विझून जाईल,
तेव्हांच तो स्वयंपाक उपयोगी पडतो; १०९२
किंवा शरदतूमध्ये गंगा पुराचा जोर सोडून
देते; किंवा गाणें बंद झालें कीं, बाकी मृदंग
वगैरे साधनें बंद पडतात; १०९३ त्याप्रमाणें
आत्मज्ञानासाठीं केलेले जे श्रम तेही जेथें शांत
होऊन जातात. १०९४ आत्मज्ञानाचें महत्त्व
हेंच त्या दशेचें प्रसिद्ध नांव होय. त्या दशेला
तो महात्मा योग्य होऊन तिचा उपभोग घेतो.
१०९५ तेव्हां आत्मज्ञानासाठीं शोक करावा,
काहीं मिळण्याची इच्छा धरावी, हेंच संपत्ते.
ह्मणून अर्थात्च त्याला साम्यता प्राप्त होते.
१०९६ सूर्य उदयास आला ह्मणजे नानाविध
असलेल्या नक्षत्रांच्या आंगचें असलेलें तेज लोपू-
न जातें; १०९७ त्याप्रमाणें हे पार्था ! आत्मा-
नुभव प्राप्त झाला ह्मणजे, प्राणिमात्रांतील भेद
मोडित मोडित त्याच मार्गानें तो जात असतो.
१०९८ पाटीवर असलेलीं अक्षरें जशीं पुसून
टाकतां येतात, त्याप्रमाणें त्याच्या दृष्टीतील
भेदाभेद मोडून जातात. १०९९ तसेंच जागृति
स्वप्न हीं जीं विपरीत ज्ञानें मानलीं जातात,
तीं दोन्हीही तो अव्यक्तामध्ये नाहीशीं करून
सोडतो. ११०० मग ज्ञान जसजसें वाढूं ला-
गतें, तसतसें तें अव्यक्तही कमी कमी होत होत
पूर्ण ज्ञान झालें ह्मणजे त्यांत सर्वच बुडून जातें.
११०१ ऐक. भोजन करतांना क्षुधा जशी कमी
कमी होत जाऊन तृप्तीच्या वेळीं तर ती अग-
दीच नाहीशी होऊन जाते. ११०२ किंवा चा-
लणें जसें जसें अधिक वाढत जातें, तस-
तशी वाट थोडथोडी रहाते. आणि नेमलेल्या
टिकाणीं पोचलें ह्मणजे ती मुळीच नाहीशी
होते. ११०३ किंवा जों जों जागेपणा येत
जातो, तों तों निद्रा नाहीशी होते. आणखी
नीट जाणें झाल्यावर तर ती मुळीच नाहीशी
होते. ११०४ हें, किंवा चंद्राचें जेथें पूर्णत्व
होतें; त्याची जेथें वाढ खुंटते; तेथें जसा शु-
क्लपक्ष नाहीसा होऊन जातो, ११०५ त्याप्र-

माणें झाडून सारें ज्ञान गिळून ज्ञानाच्या ज्ञानानें माझ्या मध्ये एकरूप होऊन जातो, आणि अज्ञान सारें नाहीसेंच होऊन जातें. ११०६ तेव्हां कल्पांताच्या वेळेला नदीची आणि सिंधूची मर्यादा सारीच मोडून ब्रह्मलोकापर्यंत जसें सारें पाणीच पाणी भरून जातें, ११०७ किंवा घट आणि मठ दोन्ही नाहीशीं झालीं ह्मणजे आकाश जसें एक होऊन राहतें, किंवा लांकडे जळल्यानंतर लांकूड जसें विस्तवच बनतें, ११०८ किंवा अलंकाराकरचे ठसे मुशीत आटून गेले ह्मणजे सोनें जसें नामरूप ह्यांच्या भेदाला सोडून देतें. ११०९ हेंही असो. जागे झालेल्याला स्वप्न हें असत नाही, आणि तो जसा आपल्याच ठिकाणीं उरतो, १११० त्याप्रमाणें माझ्या एकाशिवाय त्याला त्याच्या सहवर्तमान दुसरें कांहीं दिसत नाही. अशी ही माझी चौथी भक्ति त्याला प्राप्त होते. ११११ इतर आर्त, जिज्ञासू, अर्थार्थी, हे ज्या ज्या पंथानें माझें भजन करतात, त्या तिन्ही पंथांहून ही भक्ति निराळी होय. ह्मणूनच हिला चौथी भक्ति असें ह्मणतात. १११२ बाकी ती तिसरीही नव्हे आणि चौथीही नव्हे. ती पहिलीही नव्हे, आणि शेवटचीही नव्हे. माझ्या ब्रह्मरूप स्थितीलाच भक्ति हें नाम आहे. १११३ जी माझें अज्ञान उघडकीस आणून मला निराळ्या प्रकारानें दाखवून सर्वांच्या भजनांत सर्व प्रकारची समजूत घालून देते. १११४ जो जेथें जसें पहावयास बसेल, त्याला तेथें तसेंच असतें, आणि ज्यानें हें सर्व अखंड प्रकाशित दिसतें. १११५ स्वप्नाचें दिसणें किंवा न दिसणें हें जसें आपल्या अस्तित्वावर अवलंबून असतें, त्याप्रमाणें विश्वाचें असणें आणि नसणें ज्यानें भासमान होतें, १११६ कपिध्वजा! असा जो हा माझा स्वाभाविक प्रकाश तोच भक्ति ह्या शब्दानें बोलतात. १११७ ह्मणून आर्तामध्ये हेंच आर्ति होऊन ज्याची अपेक्षा करावयाची तें मीच होतों. १११८ हे वीर-श्रेष्ठा! जिज्ञासपुढें हेंच जिज्ञासा होऊन जि-

ज्ञासा तो मी असा भास करतें. १११९ हेंच अर्थी होऊन अर्जुना! माझ्याकरितां मीच अर्थादिक नांवास पात्र होतों. ११२० अशा प्रकारें अज्ञानाला घेऊन जी ही माझी भक्ति वागते, तीच मला पाहणाराला पहाण्याचा पदार्थ करून दाखविते. ११२१ येथें तोंडानेंच तोंड दिसतें. ह्या बोलण्यांत कांहींच चुक नाही. पण हें जें मिथ्या दुसरेंपण तें आरसा करतो. ११२२ दृष्टी खरोखर चंद्राचाच स्वीकार करीत असते, पण येवढें कृत्य फक्त त्या एक नेत्ररोगाचें; कीं एक असलेला पदार्थ द्विधा करून दाखवावयाचा. ११२३ त्याप्रमाणें धनंजया! सर्व ठिकाणीं मीच माझें सेवन करतों. आणि दृश्यत्व हें अज्ञानानें व्यापल्यामुळें मिथ्या होय. ११२४ आपल्या विंबांत जसें प्रतिबिंब मिळून जावें त्याप्रमाणें तें अज्ञान आतां नाहीसें होतें. माझें साक्षीरूपत्व माझ्या प्रत्ययास येतें. ११२५ हीण मिसळलेलें असतें, तेव्हांही तें खरोखर सोनेच असतें. परंतु हीण गेल्यानंतर तें जसें शुद्ध बाकी रहातें; ११२६ किंवा पौर्णिमेच्या आधीं चंद्र संबंध नसतो काय? पण त्या दिवशींच त्याला संपूर्णता प्राप्त होते. ११२७ त्याप्रमाणें ज्ञानद्वारानें मीच दिसतों; पण हाताच्या अंतरावरून दिसतों. मग तें दिसणेंही संपतें, आणि माझाच मला लाभ होतो-पाहणारा आत्मस्वरूपाशीं-माझ्याशीं-ऐक्यता पावतो. ११२८ ह्मणूनच अर्जुना! चवथा जो भक्तियोग तो दृश्यमार्गाच्या अतीत-ह्मणजे पलीकडे आहे असें ह्मणतात." ११२९

भक्त्या मामभिजानाति यावान्यश्चासि तत्त्वतः ।
ततो मां तत्त्वतो ज्ञात्वा विशते तदनंतरम् ॥ ११॥

[भक्त्या] इया ज्ञान भक्ती सहज । भक्त एकवटला मज । तो मीचि केवळ हें तुज । श्रुतही आहे ॥ ११३० ॥
जे उभऊनियां भुजा । ज्ञानिया तो आत्मा माझा । हें बोलिलें कपिध्वजा । सप्तमाध्यायी ॥ ३१ ॥ ते हे केल्यादि भक्ति मिया । श्रीभागवतमिषें ब्रह्मया । उत्तम ह्मणानि धनंजया । उपदे-

शिली ॥ ३२ ॥ ज्ञानी इयेतें स्वसंविति । शैवं क्षणती शक्ति ।
आह्मी परम भक्ति । आपली क्षणों ॥ ३३ ॥ [मामभिजा-
नाति] हे मैज मिळतिये वेळे । तयां कैमयोगियां फळे ।
मग समस्तही निखिलें । मियांचि भरे ॥ ३४ ॥ तेथ वैराग्य
विवेकेंसी । आटे बंध मोक्षेंसी । वृत्ती तये अवृत्तीसी ।
बुडोनि जाय ॥ ३५ ॥ बेकनि ऐलेंपणातें । परतव हारपे
जेथें । गिळनि चान्ही भूतें । आकाश जैसे ॥ ३६ ॥ तया
परि धड्याद । साध्यसाधनातीत शुद्ध । तें मी होऊनि
एकवद । भोगितो मातें ॥ ३७ ॥ घडोनि सिंधूचिया आंगा ।
सिंधूवरी तळपे गंगा । तैसा पांड तया भोगा । अवधारी जो
॥ ३८ ॥ कां आरिसयासि आरिसा । उद्वनि दाविलिया
जैसा । देखणा अतिशय तैसा । भोगणा तिये ॥ ३९ ॥
हें असो दर्पण नेलिया । तो मुखबोधही गेलिया । देखलें-
पण एकलेया । आस्वादिये जेवि ॥ ११४० ॥ चेडलेंया स्वप्न
नाशे । आपलें ऐक्यचि दिसे । तें दुजेनवीण जैसे । भोगिजे
कां ॥ ४१ ॥ 'तोचि जालिया भोग तयाचा । न घडे हा
भोव जयांचा । तिहीं बोले केवि बोलाचा । उंचार कीजे
॥ ४२ ॥ [यावान्] तयांच्या नेणो गांवीं । रवीं प्रकाशी हन
दिवी । कीं व्योमालागीं मांडवी । उभिली तिहीं ॥ ४३ ॥
हां गा राजन्यत्व नव्हांतां आंगीं । रावो रायपण काय भोगी ।
कां आंधार हन आलिंगी । दिनेकरातें ॥ ४४ ॥ आणि आ-
काश जें नव्हे । तया आकाश काय जाणवे । रत्नाच्या
रूपी मिरवे । गुंजांचें लेणें ॥ ४५ ॥ क्षणौनि मी होणें
नाहीं । तया मीचि आहे केही । मग भजेल हें कायी ।
बोलें कीर ॥ ४६ ॥ यालागीं तो कर्मयोगी । मी जालाचि
मातें भोगी । तारुण्य कां तरुणांगी । जियापरि ॥ ४७ ॥
तरंगें सर्वांगी तोय चुंबी । प्रभा सर्वत्र विलसे विंबी । ना
ना अवकाश नमीं । छुंउतें जैसा ॥ ४८ ॥ तैसा रूप होउनि
माझें । मातें क्रियावीण तो भजे । घंताकार कां सहजें ।
सोनयातें जेवि ॥ ४९ ॥ कां चंदनाची हुंती जैसी । चंदनीं
भजे अपैसी । कां अंकुत्रिम शशीं । चंद्रिका ते ॥ ११५० ॥

१ स्वकीय ज्ञानकला. २ शिवोपासक. ३ ही भक्ति ते
कर्मयोगी जेव्हां माझ्याशीं ऐक्य पावतात तेव्हां त्यांस
सफल होते. ४ लय पावे. ५ येरझारा. ६ त्वंपद. ७ तत्पद.
८ शुद्धस्वरूप कूटस्थ, ब्रह्म तटस्थ, उदासीन. ९ एकस्वरूप.
१० शोभे. ११ पदवी. १२ पाहतां. १३ आरसा. १४ जा-
गृतास. १५ तेंच झाला क्षणजे त्याचा भोग घडत नाही
असा ज्यांचा भाव आहे ते बोलानेंच बोलाचा कसा उच्चार
करतात. १६ त्या प्रकाशकारांच्या गांवीं प्रकाश पाडण्यास
रवि दिवा आहे असे वाटतें. १७ आकाशासाठीं मांडव. १८
उभारला. १९ राजेपणा. २० सूर्याला. २१ कोठें. २२ म-
द्रूप होऊन. २३ लाट. २४ पोकळी. २५ लोळे. २६ लगड.
२७ सुवास. २८ साहजिक.

तैसी क्रिया कीर न साहे । तन्हीं अद्वैती भक्ति आहे । हें
अनुभवाचि जोगें नव्हे । बोलाऐसें ॥ ५१ ॥ तेव्हा पूर्वसं-
स्कारछेदें । जें काहीं तो अनुवादे । तेणें आळविलेनि बो हें ।
बोलता मीचि ॥ ५२ ॥ बोलतया बोलताचि भेटे । सेवें
बोलेल हें न घटे । तें मौन तंव गोमटें । स्वप्न माझें ॥ ५३ ॥
क्षणौनि तया बोलतां । बोली बोलता मी भेटतां । मौन होय
तेणें तत्वता । स्ववितो मातें ॥ ५४ ॥ तैसेचि बुद्धी कां
दिठी । जें तो देखों जाय किरीटी । तें देखणें दृश्य लोटी ।
देखतेंचि दावी ॥ ५५ ॥ आरिसया आधीं जैसे । देखतेंचि
मुख दिसे । तयाचें देखणें तैसें । मेळवी द्रष्टें ॥ ५६ ॥ दृश्य
जाउनियां द्रष्टें । द्रष्टयासिचि जें भेटे । तें एकलेपणें न घटे ।
द्रष्टेपणही ॥ ५७ ॥ तेथ स्वप्नीचिया प्रियां । चेंबोनि भांबो
गेलिया । टाथिजे दोन्हीं न होनियां । आपणचि जैसें
॥ ५८ ॥ कां दोही काष्ठांचिये धृष्टी । माजी बन्दि येक
उठी । तो दोन्हीं हे भाष आटी । आपणचि होय ॥ ५९ ॥
ना ना प्रतिबिंब हातीं । घेऊं गेलिया गंभस्ती । बिषताही
असती । जाय जंसी ॥ ११६० ॥ तैसा मी होऊनि देखतें ।
तो घेऊं जाय दृश्यातें । तेथ दृश्या ने धितें । द्रष्टवेंसी
॥ ६१ ॥ रवि आंधार प्रकाशिता । नुरेचि जेवि प्रकाशयता ।
तेवि दृश्यी नाही दृष्टता । मी जालिया ॥ ६२ ॥ मग दे-
खिजे ना न देखिजे । ऐशी जे दशा निपजे । ते तें दर्शन
माझें । सौचोकारें ॥ ६३ ॥ तें मलतयाही किरीटी । पदा-
र्थाचिया भेटी । द्रष्टृदृश्यातीता दृष्टी । भोगितो सदा ॥ ६४ ॥
[यथास्मि] आणि आकाश हें आकाशें । दाटलें न ढळे जैसें ।
मियां आत्मेन आपणपें तैसें । जालें तया ॥ ६५ ॥ कल्पातीं
उदक उदकें । संधारिथीं वाहों टाकें । तैसा आत्मेनि मियां
येकें । कोदंला तो ॥ ६६ ॥ पावो आपणपयां वोळखे । केवि
बन्दि आपणपयां लागे । आपणपां पाणी रिधे । झाना कैसें
॥ ६७ ॥ क्षणौनि सर्व मी जालेपणें । ठेलें तया येणें जाणें ।
तेंचि गा यात्राकरणें । अद्वया मज ॥ ६८ ॥ पें जळावरील
तरंग । जरी धाविन्नला सवेग । तरी नाही भूमिभाग । क-
मिला तेणें ॥ ६९ ॥ जें सांडावें कां मांडावें । जें चालणें
जेणें चालावें । तें तोयचि एक आपवें । क्षणोनियां ॥ ११७० ॥
गेलियाही भलतेउता । उदकपणें पंडुमुता । तरंगाची एका-
त्मता । न मोडेचि जेवि ॥ ७१ ॥ तैसा मीपणें हा लोटला ।

१ पूर्वपुण्यबलानें. २ बोले. ३ विनविल्यानें, हाक
मार्तांच मी ओ देतो. ४ दृष्टीन. ५ पलीकडे सारी. ६ पा-
हणारास. ७ पतीला. ८ जागृत होऊन. ९ भेटण्यास. १० घ-
षणानें. ११ बोलणें संपवून. १२ सूर्य. १३ मूळ असणारें
नेतें. १४ प्रकाशकपणा. १५ खरेपणानें. १६ प्रतिबंध केला
असतां. १७ भरला. १८ उलथे. १९ केवढाही.

तो आषवेयाचि मज आला । या यात्रा होय भला । कापडी माझ्या ॥ ७२ ॥ [ततो मां] आणि शरीर स्वभाववशें । कांहीं येक करूं जरी वैसे । तरि मीचि तो तेणें मिषें । भेटें तया ॥ ७३ ॥ तेथ कर्म आणि कर्ता । हें जाऊनि पंडुडुता । मियां आत्मेनि मज पाहतां । मीचि होय ॥ ७४ ॥ पें दर्पणातें दर्पणें । पाहिलिया होय न पाहणें । सोनं झांकिलिया सुवर्णें । न झांके जेव्हां ॥ ७५ ॥ दीपातें दोषें प्रकाशिले । तें न प्रकाशणेंचि निपजे । तैसें कर्म मियां कीजे । तें करणें कैवें ॥ ७६ ॥ कर्मही कैरितचि आहे । जें करावें हें भाष जाये । तें न करणेंचि होये । तयाचें केलें ॥ ७७ ॥ क्रियाजात मीं जालेपणें । घडे कांहींचि न करणें । त्याचि नांव पूजणें । खुणेचें माझें ॥ ७८ ॥ ह्याणीं करि तयाही वोजा । तें न करणें हेंचि कपिध्वजा । निपजे तिया मद्रा-पूजा । पूजी तो मारतें ॥ ७९ ॥ एवं तो बोले तें स्वप्न । तो देखे तें दर्शन । अद्वया मज गमन । तो चाले तेंचि ॥ ११८० ॥ तो करी तेतुली पूजा । तो कल्पी तो जप माझा । तो निजे तेचि कपिध्वजा । समाधी माझी ॥ ८१ ॥ जैसैं कनकेंसीं कांकणें । असिजे अनन्यपणें । तो भक्तियोगें येणें । मजसीं तैसा ॥ ८२ ॥ उदकीं कळोळ । कापुरीं परिमळ । रत्नीं उंजाळ । अनन्य जैसा ॥ ८३ ॥ किंवहुना तंतुसीं पट । कां मृत्तिकेसीं घट । तैसा तो येकवट । मजसीं माझा ॥ ८४ ॥ इया अनन्यसिद्धा भक्ती । या आषवाचि दृश्यजातीं । मज आपणपें या सुमती । दृष्ट्यातें जाणे ॥ ८५ ॥ तिनेही अवस्थांचेनि द्वारें । उपाधुपहिताकरें । भावाभावरूप स्फुरे । दृश्य जें हें ॥ ८६ ॥ तें हें आषवेंचि मी द्रष्टा । ऐसिया बोधाचा माजिवटा । अनुभवाचा सुमटा । धेंडां तो नाचे ॥ ८७ ॥ [तत्त्वतः] रंजु दोर जालिया गोचर । आभासतां तो व्याळाकार । रज्जुच ऐसा निधोर । होय जेवि ॥ ८८ ॥ भांगारापरतें कांहीं । लेणें गुंजहीभरी नाही । हें आडुनियां ठांवीं । कीजे जैसैं ॥ ८९ ॥ उदका येकापरतें । तरंग नाहीचि हें निरतें । जाणोनि तया आकारातें । घेवे जेवि ॥ ११९० ॥ ना तरि स्वप्रविकार समस्ता । चेडुनियां उमाणें घेतां । तो आपणया परंता । न दिसे जैसा ॥ ९१ ॥ तैसें जें कांहीं आधि नाथी । तेणें होय ज्ञेयस्फूर्ती । तें ज्ञाताचि मी हे प्रतीती । होऊनि भोगी ॥ ९२ ॥ [ज्ञात्वा]

१ यात्रेकरू. २ आत्मत्वानें. ३ करीत असतां. ४ त्याचेंच नांव. ५ रीतीनं, निमित्तानें. ६ सुवर्णशीं कंकणानें. ७ च-कचकाट. ८ या अद्वैतभक्तीनें. ९ जागृति, स्वप्न, सुषुप्ति. १० माया शरीर या उपाधीच्या योगानें, उपाधीनें केलेला जो आकार त्याणें. ११ सोहळा. १२ दोर. १३ सोन्याहून. १४ एकत्र. १५ खरें. १६ उदून. १७ माप. १८ आहे व नाही अशा स्थितीनं. १९ जाणावयाच्या पदार्थाचें स्फुरण.

जाणे अज सी अजर । अक्षय मी अक्षर । अपूर्व मीं अपार । आनंद मी ॥ ९३ ॥ अचळ मी अच्युत । अनंत मी अद्वैत । आय मी अर्थवक्त । व्यक्तही मी ॥ ९४ ॥ ईशत्व मी ईश्वर । अनादि मी अमर । अमय मी आधार । आषेय मी ॥ ९५ ॥ स्वामी मी सदोदित । सहज मी सतत । सर्व मी सर्वगत । सर्वोत्तीत मी ॥ ९६ ॥ नवा मी पुराण । ईश्वर्य मी संपूर्ण । अस्थूळ अनण । जें कांहीं तें मी ॥ ९७ ॥ अ-क्रिय मी एक । असंग कीं अशोक । व्यास मी व्यापक । पु-रुषोत्तम मी ॥ ९८ ॥ अशब्द मी अश्रोत्र । अरूप मी अ-गोत्र । सम मी स्वतंत्र । ब्रह्म मी पर ॥ ९९ ॥ ऐसें आत्मत्वं मज एकातें । इया अद्वयभक्ती जाणोनि निरतें । आणि याहि बोधा जाणतें । तेंही मीचि जाणे ॥ १०० ॥ पें चे-इल्लेयानंतरें । आपुलें एकपण उरे । तेंही तयावरी स्फुरे । तयाशींचि जैसैं ॥ १०१ ॥ कां प्रकाशतां अर्क । तोचि होय प्रकाशक । तयाही अभेदा द्योतक । तोचि जैसा ॥ १०२ ॥ तैसा वेद्याच्या विलयां । केवळ वेदक उरे पाहीं । तेणें जा-णवे तया तेंही । हेंही जो जाणे ॥ १०३ ॥ तया अद्वयपणा आपुलिया । जाणतीं हेंही जे धनंजया । ते ईश्वरचि मी हे तया । बोधासि ये ॥ १०४ ॥ [विशते तदनंतरें] मग द्वैता-द्वैतातीत । मीचि आत्मा एक मिश्रांत । हें जाणोनि जाणणें जेथ । अनुभवीं रिघे ॥ १०५ ॥ तेथ चेडुल्लेयां येकपण । दिसे जें आपुलया आपण । तेंही जातां नेणों कोण । होइजे जेवि ॥ १०६ ॥ कां डोळां देखति ये क्षणीं । स्वरूपपण सुवर्णी । ना-टितां होय आटणी । अळंकाराचीही ॥ १०७ ॥ वा ना लेवण तोय होये । मग क्षारता तोयतें राहे । तेही जिरतां जेवि जाये । जालेपण तें ॥ १०८ ॥ तैसा मी तो हें जें असे । तें खानंदानुभवसमरस । कालवूनियां प्रवेशे । मजचिमाजि ॥ १०९ ॥ [तत्त्वतः] आणि तो हे भाष जेथ जाये । तेथें मी हें को-

१ उत्पन्न न होणारा. २ दृढपणरहित. ३ नाशरहित. ४ अविनाश. ५ ज्याच्या पूर्वी कांहीं नाही असा. ६ चलन न पावणारा. ७ पतित न होणारा. ८ अंतररहित. ९ पहिला. १० निराकार, अस्पष्ट. ११ ईशित्व. १२ समष्टिरूप, जीवधर्मरहित. १३ ज्या आधारावर सर्व ठेवले जातें तें. १४ अधिपति. १५ चेतनाचेतनांत भरून असणारा. १६ सर्वांच्या पलीकडे. १७ जुना. १८ अभावरूप. १९ अणूहून भिन्न. २० कियारहित. २१ 'अशब्दमस्पर्शमरूपमव्यय' या श्रुतीनं प्रतिपाद्य. २२ सत्यतेनं. २३ जागृतीनंतर. २४ सूर्यच आपणाला प्रकाशक करतो असा जो अभेद त्यालाही जसा सूर्यच प्रकाशक तसा. २५ जाणण्यायोग्य पदार्थांच्या नाशा-नंतर. २६ ज्ञान. २७ ज्ञानकला. २८ दोहोंच्याही पलीकडे. २९ जागृतांस. ३० आटविल्यावांचून. ३१ मीठ पाणी होऊन जातें. ३२ पूर्णानंदाविर्भावानें. ३३ शब्द.

प्राप्ती आहे । ऐसा मी ना तो तिये सामाये । माझ्याचि रूपी ॥ १२१० ॥ तेव्हां कापुर जळो सरे । तयाचि नाम अशि पुरे । मग उभयातीत उरे । आकाश जेचि ॥ ११ ॥ कां धाडिलिया एका एक । वाढे तो शून्यविशेख । तैसा आहे नाहींचा शेख । मीचि मग आथी ॥ १२ ॥ तेथ ब्रह्म आत्मा ईश । यथा बोला मोडे सौरस । न बोलणें याही पैस । नाहीं तेथ ॥ १३ ॥ न बोलणेंही न बोलोनी । तें बोलिजे तोंड भरुनी । जाणिव नेणिव नेणोनि । जाणिजेतें ॥ १४ ॥ तेथ बुझिजे बोध बोधें । आनंद घेपे आनंदें । सुखवरी नुसवें । सुखचि भोगिजे ॥ १५ ॥ तेथ लाभ जोडला लाभ । प्रभा आलिंगिली प्रभा । विस्मय बुडाला उभा । विस्मया-माजी ॥ १६ ॥ शम तेथ सौमावला । विश्राम विश्रान्ती आला । अनुभव वेडावला । अनुभूतिपणें ॥ १७ ॥ किव-हुना ऐसे निखळ । मीपण जोडे तथा फळ । सेवुनि वेळी वेढाळ । कर्मयोगाची ते ॥ १८ ॥ पै कर्मयोगा किरीटी । चक्रवर्तिच्या मुकुटी । मी चिद्रल तें सांठोवाटी । होय तो माझा ॥ १९ ॥ कीं कर्मयोगप्रासादाचा । कळस जो हा मोक्षाचा । तथा वरील अवकाशाचा । उवावो जाला तो ॥ १२२० ॥ ना ना संसार आडवी । कर्मयोग वाट वरवी । जोडली ते मदक्यगांवी । पेटि जालीसे ॥ २१ ॥ हें असो कर्मयोगबोधें । तेणें भक्तिचिद्रंगें । मी स्वानंदोदधिघेणें । ठाकिला कीं गा ॥ २२ ॥ हा ठीयवरी सुवर्मा । कर्मयोगीं आहे महिमा । झणौनि वेळोवेळां तुझां । सांगतों आझी ॥ २३ ॥ पै देशें काळें पदार्थें । सांभूनि घेदजे मातें । तैसा नव्हे मी आयतें । सर्वांचें सर्वही ॥ २४ ॥ झणौनि माझ्या ठायीं । जैचावें न लगे काहीं । मी लाभें दिये उपायीं ।

१ असाच मी नाहीं व तोही नाहीं होऊन माझ्या स्वरूपी मिळतो. २ विज्ञतो. ३ अग्नि व कापूर यांहून भिन्न. ४ एकांत एक वजा केला असतां बाकी शून्य. ५ अभिप्राय. ६ अवकाश. ७ न बोलणेंही न बोलून मग तोंडभर बोललें जातें तसें जाणीव व नेणीव टाकून जाणलें जातें. ८ ज्ञानज्ञान. ९ जाणावें. १० सुखमय होऊन. ११ प्रभेन, प्रकाशानें. १२ नवल, आश्चर्य. १३ विश्रान्ति पावला. १४ संकोच पावला. १५ त्याला कर्मयोगाची वेढाळ=सुंदर वेळ सेविल्यानं मीपण=मी हेंच त्यास फळ मिळतें. १६ चैतन्य=ज्ञानरूप रत्न. १७ अदलाबदलीनं. १८ तो कर्मयोगी कर्मयोगप्रासादाचा=देवळाचा मोक्षरूप जो कळस त्यावरच्या आकाशाचा उवावो=प्रसर झाला. १९ अवकाश, प्रसर. २० अरण्यांत. २१ माझ्याशीं जें ऐक्य, तद्रूप गांवांत. २२ प्रविष्ट. २३ भक्ति व ज्ञान एतद्रूप जी गंगा (या दोहोंचा संगम). २४ त्रिजानंदरूप समुद्र. २५ एधपर्यंत. २६ मर्मज्ञा अर्जुना ! २७ आपलासा करून. २८ शिणावें लागत नाहीं. २९ ह्या कर्मयोगानं.

साचचि गा ॥ २५ ॥ एक शिष्य एक गुरु । हा रुढला साच व्यवहार । तो मत्प्राप्तिप्रकार । जाणवया ॥ २६ ॥ अगा वसुधेच्या पोटी । निधान सिद्ध किरीटी । बन्दि सिद्ध काष्टी । वोहां दूध ॥ २७ ॥ परि लाभें तें असतें । तथा कीजे उपा-यातें । येर सिद्धचि तैसा येथें । उपायीं मीं ॥ २८ ॥ हा फळवरी उपावो । कां पां प्रस्तावीतसे देवो । हें पुसतां तरि अभिप्रावो । येथिचा ऐसा ॥ २९ ॥ जे गीतार्थाचें वांगवें । मोक्षोपायपर आवचें । आन शास्त्रोपाय कीं नव्हे । प्रमाण-सिद्ध ॥ १२३० ॥ वारा आभाळचि फेंडी । वांचूनि सूर्योतें न र्घडी । कां हात बांजळी धाडी । तोय न करी ॥ ३१ ॥ तैसा आ-त्मदर्शनी आंढळ । असे अवियेचा जो मळ । तो शास्त्र नाशी येर निर्मळ । मीं प्रकाशें स्वयें ॥ ३२ ॥ झणौनि आ-धर्वाचि शास्त्रें । अवियांविनाशाचीं पात्रें । वांचोनि न होरी स्वतंत्रे । आत्मबोधी ॥ ३३ ॥ तथा अर्थात्मशास्त्रांशीं । जें सांचपणाची ये पुंसी । तें येईजे जया ठायसी । ते हे गीता ॥ ३४ ॥ मानु भूषिता प्राचिया । सतेजां दिशा आधविया । तैसी शास्त्रेश्वरा गीताया । संन्यास शास्त्रें ॥ ३५ ॥ हें असो येणें शास्त्रेश्वरें । मांगा उपाय बहुवे विस्तारें । सांगीतला जैसा करें । घेवो ये आत्मा ॥ ३६ ॥ परि प्रथमभ्रवणासवें । अर्जुना विषयें हें फांवे । हा भौव संकणवे । धरुनि श्रीहरी ॥ ३७ ॥ तेंचि प्रमेयें एक वेळ । शिष्यां हो आवया अढळ । सांगतसे मुंडळ । मुद्रा आतां ॥ ३८ ॥ आणि प्रसंग गीता । ठोंवही हा संपता । झणौनि दावी आंधता । एकार्थत्व ॥ ३९ ॥ जे प्रथांच्या मध्यमार्गी । नाना अधिकारप्रसंगी । निरूपण अनेगी । सिद्धांतीं केले ॥ १२४० ॥ तरि तेनुळेही सिद्धांत । इये

१ पृथ्वीच्या. २ ऊधास (कासेस). ३ असतें तेंच लाभतें, परंतु त्यास उपाय केला पाहिजे. ४ फलप्राप्ती-पर्यंत. ५ चांगुलपण. ६ मोक्षप्राप्तिविषयक. ७ निवारी. ८ तयार करीत नाहीं. ९ शेवाळा, गोडाळ दूर करी. १० बंध. ११ अज्ञानाचा. १२ अज्ञान हरणारीं पात्रें, योग्य स्थलें. १३ आत्मानात्मप्रतिपादक वेदांतशास्त्रांशीं. १४ जेव्हां खरोखर पुसण्याचें मनांत येई. १५ साध्य. १६ पूर्वस सूर्योदय होतांच. १७ प्रकाशमय. १८ शास्त्रांत श्रेष्ठ अशा या गीतेनं अन्य सर्व शास्त्रे सनाथे=समर्थ होतात. १९ बहुत. २० हातानं आत्मा हस्तगत होईल असा. २१ नवविधभक्ती-तील प्रथम जें श्रवण त्याबराबर. २२ कदाचित्. २३ प्राप्त होईल. २४ अभिप्राय. २५ दयेनं. २६ तात्पर्य, सार. २७ संक्षिप्त. २८ स्वरूपानं, संक्षेपलक्षण, स्पष्ट लक्षण. २९ गीता हा प्रसंग व हें स्थान हीं दोनीही आतां संपण्याचीं आहेत झणून. ३० आरंभापासून शेवटपर्यंत एकार्थता. ३१ अनेक सिद्धांतांनीं. ३२ तेवढी सर्व.

शास्त्री प्रस्तुत । हें पूर्वापार नेणत । कोणही जें मानी ॥४१॥
तें महासिद्धांताचा आवांका । सिद्धांतकक्षा अनेका । मिळ-
उनि आरंभ देखा । संपवीत असे ॥ ४२ ॥ येथ अविद्या-
नाश हें स्थळ । तेणें मोक्षापादन फळ । या दोहीं केवळ ।
साधन ज्ञान ॥ ४३ ॥ हें श्रुत्येचि नानापरी । निरूपिलें अं-
थविस्तारी । तें आतां दोहीं अक्षरी । अनुवादवें ॥ ४४ ॥
झणौनि उपेयही हातीं । जाल्या उपायस्थिती । देव प्र-
तेले ते पुढेंती । येणेंचि भावें ॥ ४५ ॥

“ह्या ज्ञानभक्तीच्या योगानें सहजगत्या जो
भक्त मजशीं ऐक्यता पावतो, तो निखालस
मत्स्वरूपच होतो हें तुलाही माहितच आहे.
११३० कारण, हे कपिध्वजा ! सातव्या अ-
ध्यायामध्ये “ज्ञानी तो माझा आत्मा” असें
बाहू उभारून-मोठ्या खात्रीनें-मी तुला सां-
गितलें आहे. ११३१ ती, ही, कल्पांच्याही
आदीपासून असलेली भक्ति, उत्तम, ह्मणून
श्रीभागवताच्या निमित्तानें मी ब्रह्मदे-
वाला सांगितली. ११३२ ज्ञानी हिला आपली
ज्ञानकला असें ह्मणतात. शिवोपासक हि-
लाच शक्ति असें ह्मणतात. आणि आह्मी
आमची परमभक्ति असें ह्मणतो. ११३३ ही
भक्ति, कर्मयोगी मला मिळतात, तेव्हांच
त्यांस प्राप्त होते. आणि जिकडे तिकडे मीच
एक भरून राहतो. ११३४ तेव्हां विचारा-
सहवर्तमान वैराग्य; मोक्षासहवर्तमान बंधही
आहून जातो. आणि पुनरावृत्तिसहवर्तमान
वृत्तीही बुडून जाते. ११३५ जीवण्याला घे-
ऊन ईश्वरपणाही जेथें नाहींसा होऊन जातो.
आकाश जसें चारही भूतें गिळतें, ११३६
त्याप्रमाणें अलित; साध्यसाधनातीत; शुद्ध; तें
माझें पद एक स्वरूप होऊन मीच भोगतो.
११३७ समुद्राच्या आंगांत शिरूनही गंगा
समुद्राच्या वर शोभते. तीच योग्यता त्या भो-
गाला आहे, हें लक्ष्यांत ठेव. ११३८ किंवा
आरशानें उठून आरशास भेटलें ह्मणजे त्याची

शोभा जशी अधिक वाढते, तद्वत् त्या भोगणा-
राची स्थिति असते, ११३९ हें असो. आरसा
नेला ह्मणजे मुखाचें ज्ञानही जातें. पण पाहि-
लेला अनुभव असतो तो जसा एकट्याला घेतां
येतो, ११४० जागृत झाल्यावर स्वप्न नाहींसें
होऊन आपलें ऐक्यच दिसूं लागतें, तें दुसरेपणा-
शिवाय जसें भोगतां येतें, ११४१ तें तोच
झाला ह्मणजे त्याचा भोग घडत नाहीं. असा
ज्यांचा भाव आहे, ते बोलानेंच बोलाचा कसा
उच्चार करतील ? ११४२ त्या प्रकाशकारांच्या
गांवीं प्रकाश पाडण्याला रविच दिवा आहे
असें वाटतें. किंवा त्यांनीं आकाशासाठीं मांड-
वच घातला आहे असें वाटतें. ११४३ अरे !
आंगांत राजेपणाच नसला तर, राजा राजेपणा
भोगील काय ? आंधार हा सूर्याला कधीं आ-
लिंगन देईल काय ? ११४४ आणखी जें स्वतः
आकाश नव्हे; त्याला आकाश समजणार कसें ?
रत्नाच्या रूपामध्ये गुंजांचे अलंकार मिरवतील
काय ? ११४५ ह्मणून मी होणें नाहीं, त्याला
मी कोठचा ? मग तो माझें भजन करील ही
खात्री तरी काय सांगावी ? ११४६ ह्याकरितां
तो कर्मयोगी, तरुणी जसा तारुण्याचा उप-
भोग घेते, तद्वत् मद्रूप होऊनच मला भोगतो.
११४७ लाट जशी सर्वांगानें पाण्याचाच उप-
भोग घेते; प्रभा जशी बिंबामध्ये सर्वत्र विलसत
असते; किंवा आकाशामध्ये जसा अवकाश लो-
ळत राहतो; ११४८ त्याप्रमाणें मद्रूप होऊन
तो क्रियेशिवाय मला भजतो. सोन्याची जशी
सहज लगड होते; ११४९ किंवा चंदनाचा
सुवास जसा आपोआपच चंदनाची सेवा क-
रतो; किंवा न्यूनत्वरहित जो चंद्र तेंच चां-
दणें. ११५० त्याप्रमाणें खरोखर क्रिया त्याला
आवडत नाहीं तरी, अद्वैतामध्ये भक्ति असते.
तें अनुभवानेंच जाणलें पाहिजे. बोलून दाख-
विण्यासारखें नव्हे. ११५१ ते वेळीं पूर्वपुण्या-
ईच्या बळानें तो जें कांहीं बोलतो, त्या वि-
नंतीरूप हाकेला ‘ओ’ देऊन बोलणारा मीच.
११५२ बोलणाराला बोलणाराच भेटला, तर

१ पूर्वापार संगती ध्यानांत राहत नाहीं. २ बळ.
३ सिद्धांताच्या युक्ति. ४ मिळवून. ५ मोक्षसंपादन.
६ संक्षेपानें. ७ पुनः बोलवें. ८ उपायसाध्य, उपायानें
साध्य होणारें. ९ प्राप्त झालें असतां. १० पुनः.

बोलणें होण्याचा संभवच नाही. तेव्हां मौन तेंच माझे उत्तम स्तवन होय. ११५३ झणून तो भाषण करतांना, मला भेटला तरी मौनच धरतो. आणि त्यानेच माझे उत्तम स्तवन करतो. ११५४ तसेंच अर्जुना ! तो बुद्धीने किंवा दृष्टीने जें जें काय पहावयास जातो, तेव्हां तेव्हां दृष्टीस पडण्याचे झणून जेवढे जेवढे पदार्थ तेवढे तेवढे दूर लोटून पाहणारालाच दाखवितें. ११५५ आरशाचे पुढे ज्याप्रमाणें पहाणाराचेंच तोंड दिसतें, त्याप्रमाणें त्याचें पहाणें, पहाणाराच दाखवितें. ११५६ पहाण्याचा पदार्थ नाहीसा होऊन पहाणारा पहाणारासच जेव्हां मिळतो, तेव्हां एकत्वानें पहाणाराच नाहीसा होत नाही काय ? ११५७ तर जाग्रत होऊन स्वप्नांतल्या पतीस आलिंगन देण्यास गेली असतां, आपण व तो दोघेही आपणच झालें होतें हें जसें समजून येतें, ११५८ किंवा दोन काष्ठांच्या घर्षणामध्ये अग्नि एकच उत्पन्न होतो. तो दोन हें भाषण नाहीसें करून आपण एक निराळाच होतो. ११५९ किंवा सूर्य आपलें प्रतिबिंब हातांत धरावयाला गेला तर, असलेलें प्रतिबिंबही जसें लुप्त होतें, ११६० त्याप्रमाणें मी देखतें होऊन तो दृश्याला ध्यावयास पहातो, तेव्हां मूळ पहाणारें असतें तें दृष्ट्वासहवर्तमान दृश्यालाच घेऊन जातें. ११६१ सूर्य, आंधाराला प्रकाशित करूं लागला झणजे जसा प्रकाशकपणा उरत नाही. त्याप्रमाणें मत्स्वरूप झालें झणजे दृश्यामध्ये द्रष्टाही असत नाही. ११६२ मग दिसणें किंवा न दिसणें; पाहणें किंवा न पाहणें; अशी जी दशा उत्पन्न होते; ती दशा हेंच माझे खरोखर दर्शन आहे. ११६३ अर्जुना ! तें कोणताही पदार्थ पाहून द्रष्टृ दृश्यातीत दृष्टीने तो सदासर्वकाल भोगित असतो. ११६४ आणि आकाश हें आकाशानें दाटलें झणजे तें जसें हालत नाही, तसें त्याला माझ्या आत्मस्वरूपानें होऊन जातें. ११६५ कल्पांताच्या वेळीं पाण्यानेच पाणी अडवून

धरलें झणजे तें वहावयाचें बंद होतें. त्याप्रमाणें माझ्या एका आत्मस्वरूपानेंच तो अगदीं भरून जातो. ११६६ पाय हा आपल्यालाच कसा उलंघन करील ? अग्नि आपल्यालाच कसा लागेल ? पाणी आपल्यामध्येच झानाला कसें जाणार ? ११६७ झणून सारें मीच झाल्याच्या योगानें त्याचें जाणें येणें बंद पडतें. तीच माझी अद्वैताची यात्रा झणून समजावें. ११६८ तसेंच पाण्यावरची लाट जोरानें जरी धावली, तरी तिनें कांहीं जमीन ओलांडली असें होत नाही. ११६९ तिचें उत्पन्न होणें, लय पावणें; किंवा तिचें चालणें, हें सारें एका पाण्यांतल्या पाण्यांतच असतें झणून. ११७० अर्जुना ! पाण्याच्या धर्माप्रमाणें ती हवी तिकडे गेली तरी, त्या लाटेची एकात्मता (पाण्याशीं असलेलें ऐक्य) जशी भंग होत नाही; ११७१ तद्वत् हा मीपणा ज्यानें सोडला, तो सर्वतोपरी मजकडेच आला, आणि ह्या माझ्या यात्रेतला तो एक उत्तम वारकरी-यात्रेकरू-झाला. ११७२ आणखी शरीर, स्वभावधर्माप्रमाणें कांहीं एखादें करावयास लागलें, तर, त्याच्या रूपानें मी त्यास भेटत असतां. ११७३ तेव्हां अर्जुना ! कर्म आणि कर्ता हें जाऊन मी आत्मत्वानें पाहून मीच होतो. ११७४ आरशानें आरशाला पाहिलें, तर न पाहिलेल्यासारखेंच होतें. सुवर्णानें सोनें झांकलें तर जसें झांकत नाही, ११७५ दिव्यानें दिव्यालाच प्रकाशित केलें तर तें प्रकाशित न केल्यासारखेंच होतें. त्याप्रमाणें मद्रूप होऊन केलेलें कर्म तें केलें कसलें ? ११७६ कर्म तर करितच असतो. पण तें केलें हा शब्द जेव्हां नाहीसा होतो, तेव्हां त्याचें केलेलें कर्म न केल्यासारखें होतें. ११७७ प्रत्येक कर्म मद्रूप होत असल्यामुळे, कांहींएक न घडल्याप्रमाणेंच होतें. त्याचेंच नांव माझे खुणेंचें पूजन होय. ११७८ झणून हे कपिध्वजा ! तो करतो त्या रीतीनें तें करणेंच न करणें होतें. त्याच महापूजेनें तो माझी पूजा

करतो. ११७९ अशाच प्रकारें तो बोलतो तेंच माझे स्तवन; तो पाहतो तेंच माझे दर्शन; तो चालतो तेंच माझे अद्वैताचें चालणें होय. ११८० तो जें जें करतो, ती ती सारी माझी पूजा; तो जी जी कल्पना करतो तो तो माझा जप; आणि हे कपिध्वजा ! तो निजतो, तीच माझी समाधी. ११८१ सोन्याशीं कंकणाचा जसा ऐक्यभाव असतो, तद्वत् त्याच्या ह्या भक्तियोगानें माझ्याशीं ऐक्यभाव असतो. ११८२ उदकाशीं लाटा; कापराशीं सुगंध; रत्नाशीं तेजस्विता; हीं जशीं ऐक्यरूपानें असतात, ११८३ किंवा तंतूबरोबर वस्त्र; किंवा मातीबरोबर घागर; हीं जितकीं ऐक्यरूप असतात, तितकाच तो माझ्याशीं एकवट असतो. ११८४ हे सुमते ! ह्या अद्वितीय भक्तीच्या योगानें हें सर्व दिसणारें जें जें ह्मणून आहे, तें तें सर्व आपणहूनच मला द्रष्टांला जाणतें. ११८५ जागृति, स्वप्न आणि सुषुप्ति, ह्या तीन अवस्थांच्या द्वारानें, स्थूल, सूक्ष्म व कारण ह्या तीन देहाकार उपाधींच्या संबधानें जे हें भाव व अभावरूप दृश्य स्फुरण पावतें, ११८६ हे शूरवर्या ! तें हें सारें मद्रूपच आहे. अशा ज्ञानाच्या धुंदीत तो ऐक्यभावाचा झेंडा नाचवित असतो. ११८७ रज्जूही दोरीच आहे असें समजलें, ह्मणजे सर्पाकाराचा होणारा भास जाऊन ही दोरीच आहे, ह्याप्रमाणें जसा निर्णय होतो. ११८८ अलंकारामध्यें सोन्यावांचून गुंजभरही दुसरें कांहीं नाहीं. हें समजून तें आटून जसें एकत्र करावें, ११८९ एका पाण्याहून लाटा कांहीं भिन्न नाहींत, हाच निश्चय मनांत आणून त्याच्या आकारांत जसा भेद धरीत नाहींत, ११९० किंवा जागें होऊन स्वप्नांतील साऱ्या विकारांचें माप घेऊं लागलें तर, आपणाहून भिन्न असें कांहींच दिसत नाहीं. ११९१ त्याप्रमाणें आहे व नाहीं अशा स्थितीनें जें असतें, त्याच्याच योगानें जाणावयाच्या पदार्थाची स्फूर्ति होते. आणि मग ज्ञाता तेंही तेंच हा

अनुभव येऊन त्याचाच तो उपभोग घेतो. ११९२ मी जन्मरहित आहे; मी जरारहित आहे; मी नाशरहित; मी अविनाश; ज्यापूर्वी कांहीं नाहीं असा मी; अपार मी व आनंदही मीच. ११९३ अचल व अच्युत मी; अनंत व अद्वैत मी; आद्य आणि अव्यक्त मी; आणि व्यक्तही मीच. ११९४ सर्वश्रेष्ठ मी; जीवधर्मविरहित मी; अनादि व अमर मी; अभय व आधार मी; आणि आधारभूत ही मीच. ११९५ अधिपति मी; शाश्वत मी; सुलभ मी; निरंतर मी; सर्व मी; व्यापक मी; आणि सर्वांच्या पलीकडचा-अगम्य-मी. ११९६ नवा व जुना मी; शून्य मी; संपूर्ण मी; सूक्ष्म परमाणूहून जें जें कांहीं भिन्न, तें तें मी. ११९७ मी; एक; अक्रिय; असंग; अशोक मी; व्याप्त मी; आणि पुरुषोत्तम तो मी. ११९८ अशब्द, अश्रोत्र तो मी; अरूप अगोत्र मी; सम स्वतंत्र मी; परब्रह्म मी. ११९९ अशा प्रकारें आत्मस्वरूपानें मला एकाला ह्या अद्वय भक्तीनें नीट ओळखून सत्य आणि ह्या ज्ञानाला जाणणारें तेंही मीच, हें लक्षांत ठेव. १२०० तसेंच जागृत झाल्यानंतर आपलें ऐक्यपणच शिल्लक राहतें. तेंही त्यानंतर त्यालाच जसें स्फुरतें. १२०१ किंवा सूर्य प्रकाश करतांना तोच प्रकाशक होतो. त्या अभेदाचा जसा तोच द्योतक. १२०२ त्याप्रमाणें जाणण्याच्या पदार्थाचा नाश झाल्यानंतर केवळ ज्ञानच शिल्लक राहतें. त्याच्या योगानें त्याला तें कळतें हेंही जो जाणतो. १२०३ धनंजया ! त्या आपल्या अद्वयपणाला जाणणारी जी कला, तीही माझे ईश्वरी स्वरूपच आहे असें त्यास ज्ञान झालेलें असतें. १२०४ मग द्वैताद्वैताच्या पलीकडे असणारा जो आत्मा, तो निःसंशय मीच हें समजून जाणीव जेथें अनुभवांत शिरतें, १२०५ तेव्हां जागृत झाल्यानंतर आपला आपल्याला जो ऐक्यपणा दिसतो तोही गेला असतां काय होईल हें जसें समजत नाहीं. १२०६ किंवा सुवर्णाकडे त्याच्या स्वरूपाच्या दृष्टीनें पाहिलें

कीं, लगेच न आटतांही अलंकाराची आटणी होते. १२०७ किंवा मिठाचें पाणी होतें, आणि मग तो खारटपणा पाण्याच्या स्वरूपानें राहतो. तें पाणीही जिरून गेलें ह्मणजे तें मिश्रणही नाहींसें होऊन जातें. १२०८ त्याप्रमाणें मी आणि तो हें जें आहे तें पूर्णानंदाच्या ऐक्यानें कालवून तो माझ्यामध्येच शिरतो. १२०९ आणि 'तो' हा शब्द नाहींसा होतो तेव्हां 'मीपण' कोणाला असणार? अशा प्रकारें मीही नव्हे, आणि तोही नव्हे असें होऊन माझ्याच स्वरूपामध्ये मिळतो. १२१० कापूर जेव्हां जळून नाहींसा होतो, त्याच वेळेस अग्निही त्याच नांवाबरोबर नाहींसा होतो. आणखी मग दोघांहूनही भिन्न असें जें आकाश, तें जसें शिल्पक राहतें, १२११ किंवा एकांतून एक काढला तर, बाकी शून्य राहतें; त्याप्रमाणें आहे व नाहीं ह्यांचा शेवट मीच आहे. १२१२ तेव्हां ब्रह्म; आत्मा, ईश ह्या बोलण्याचा कांहीं अर्थच नाहींसा होतो. न बोलण्यालाही तेथें जागा रहात नाहीं. १२१३ न बोलणेंही न बोलून मग जें तोंडभर बोललें जातें, आणि जाणीव व नेणीव हीं दोन्हीही टाकून जें जाणलें जातें. १२१४ ज्ञानानें ज्ञान जाणावयाचें; आनंदानें आनंद ध्यावयाचा; केवळ सुखमय होऊन सुख भोगावयाचें. १२१५ तेव्हां लाभालाच लाभ होतो; प्रकाशालाच प्रकाश मिठी मारतो; विस्मय तर विस्मयामध्ये उभाच्या उभाच बुडून जातो. १२१६ तेथें शम शमतो; विश्रामाला विश्रान्ति प्राप्त होते; अनुभव अनुभवानेंच वेडा होतो. १२१७ किंबहुना ती कर्मयोगाची सुंदर वेल सेवन केली ह्मणजे त्याला ह्याप्रमाणें माझ्या शुद्धस्वरूपाचें फळ प्राप्त होतें. १२१८ हे किरीटी! कर्मयोगरूप सार्वभौम राजाच्या मुकुटावर मी ज्ञानरत्न होऊन राहतों. आणि तसाच उलट तोही माझ्या मुकुटावरचें रत्न होऊन राहतो, १२१९ किंवा कर्मरूप देउळाचा कलस जो

मोक्ष, त्याच्यावरील आकाशाचा जो विस्तार होऊन राहतो, १२२० किंवा संसारारण्यामध्ये कर्मयोगही उत्तम घाट सांपडलेली असून ती, मदैक्यरूप गांवांत गेली आहे. १२२१ हें असो. कर्मयोगाच्या ओघांतून त्याची भक्ति व ज्ञान एतद्गुप गंगा निजानंदरूप समुद्रास वेगानें जाऊन मिळालेली असते. १२२२ हे मर्मज्ञा! इतकें ह्या कर्मयोगाचें माहात्म्य आहे. ह्मणूनच मी तुला पुन्हा पुन्हा सांगतों. १२२३ देश, काल, पदार्थ इत्यादिक पाहून मोठी संधि साधून मला आपलासा केला पाहिजे, अशांतला मी नव्हे. तर, मी सर्वांचा सर्वदायी आणि आयताच आहे. १२२४ ह्मणून मजकरितां कांहीं कष्ट काढावे लागत नाहींत. मी खरोखर ह्याच उपायांनीं प्राप्त होतो. १२२५ एक शिष्य, एक गुरु; हा केवळ लौकिक व्यवहार वाढलेला आहे, तो फक्त माझ्या प्राप्तीचा प्रकार कळण्यासाठी. १२२६ हे अर्जुना! पृथ्वीच्या पोटांत ठेवा हा पूर्वीचाच आहे. काष्ठामध्ये अग्नि; कासेमध्ये दूध, हीं मूळचींच आहेत. १२२७ असतें तेंच प्राप्त होतें, परंतु त्याला उपाय करावे लागतात. त्याप्रमाणें उपायांनींच मी प्राप्त होतो तरी मूळचा मी सिद्धच आहे." १२२८ हा फळप्राप्तीपर्यंतचा उपाय देवांनीं कशाकरितां सांगितला असें विचाराल तर, त्यांतील हेतु असा. १२२९ कीं, गीतार्थामध्ये असलेले सर्व उपाय, मोक्षप्राप्तिविषयकच असल्यामुळे उत्तम आहेत. तसे इतर शास्त्रांतील उपाय नव्हेत. कारण, ते प्रमाणसिद्ध नसतात. १२३० "चारा अम्राला दूर करतो; शिवाय सूर्याला कांहीं नवा करीत नाहीं. किंवा हात शेवाळ बाजूस सारतो, पाणी करीत नाहीं. १२३१ तद्वत् आत्मदर्शनाला प्रतिबंध करणारा जो अविद्येचा मळ असतो तो नाश करतो. बाकी मी निर्मळ आणि स्वयंप्रकाशच आहे." १२३२ ह्मणून सारीं शास्त्रे हीं अविद्या हरण करण्याचीं सा-

धर्मे आहेत. त्यांशिवाय स्वतंत्रपणे आत्मबोध करण्यास समर्थ नाहीत. १२३३ अध्यात्म-शास्त्र ह्याने काय ते खरोखर त्यांना विचारा-वयाची इच्छा झाली तर त्यांना ज्या ठिकाणी आले पाहिजे, ती ही गीता होय. १२३४ सूर्याने पूर्वदिशेला शोभा आणली की, साऱ्या दिशा प्रकाशमान होतात. त्याप्रमाणे ह्या एका श्रेष्ठ गीताशास्त्राने सर्व शास्त्रे समर्थ होतात. १२३५ हे असो. ह्या शास्त्रश्रेष्ठाने ज्या रीतीने आत्मा हस्तगत करता येईल, असा उपाय मागे पुष्कळ विस्तारेंकरून सांगितला. १२३६ परंतु एकदां ऐकूनच अर्जुनास प्राप्त होणे कठीण पडेल, असा सद्य अंतःकरणाने श्रीहरींनी हेतु धरून, १२३७ तोच सारांश शिष्याच्या ठिकाणी दृढतर होण्याकरितां संक्षिप्तरूपाने सांगत आहेत. १२३८ आणखी गीतेचा प्रसंग व स्थान ही दोन्हीही संपावयाची आहेत, ह्याून आरंभापासून शेवटपर्यंत एकवाक्यता दाखवून दिली. १२३९ कारण, ग्रंथांच्या मध्यभागामध्ये नानाप्रकारच्या समयानुसार अनेक सिद्धांतांचे निरूपण केले आहे. १२४० तरी तितके सारे सिद्धांत प्रस्तुत ह्या शास्त्रांत आहेत. त्यांची पूर्वापार संगति जर कोणास न राहिल, १२४१ तर महासिद्धांतांचे बळ, सिद्धांताच्या अनेक युक्ति ह्यांची एकवाक्यता करून आरंभाप्रमाणे समाप्तिही करित आहे. १२४२ येथे अविद्यानाश हे स्थळ असून त्यांत मोक्ष-संपादन हे फळ आहे. ह्या दोहोंच्या प्राप्ती-लाही साधन एक शुद्ध ज्ञान होय. १२४३ हे इतके परोपरीने ग्रंथविस्तारेंकरून निरूपण केले, ते आतां थोडक्यांत सांगावे, १२४४ ह्याून उपायाने साध्य झाले असूनही पुन्हा उपाय सांगण्यास देव प्रवृत्त झाले, ते याच उद्देशाने. १२४५.

सर्वकर्माण्यपि सदा कुर्वाणो मध्यपाश्र्वयः ।

मत्प्रसादादवाप्नोति शाश्वतं पदमव्ययम् ॥५६॥

[सर्वकर्माण्यपि] मग ह्याने गा सुभटा । तो कर्मयोगी या निष्ठा । मी होउनी होय पैठा । माझ्या रूपी ॥ ४६ ॥ स्व-कर्माच्या चौखोळी । मज पूजा करुनि भली । तेणे प्रसादे आकळी । ज्ञाननिष्ठेतें ॥ ४७ ॥ ते ज्ञाननिष्ठा जेथ हातवसे । तेथ भक्ति माझी उल्लासे । तिथे मजसी संमरसे । सुखिया होय ॥ ४८ ॥ [मध्यपाश्र्वयः] आणि विश्वप्रकाशितया । आत्मया मज आपुलिया । अनुसरे जो करुनिया । सर्वत्रैता हे ॥ ४९ ॥ सांझुनि आपला आडळ । लवण आश्रयि जळ । कां हिंडोनि राहे निश्चळ । वायु व्योमी ॥ १२५० ॥ तैसा बुद्धी वाचा कायें । जो माते आश्रऊनि ठाये [सदा कुर्वाणः] तो निषिद्धेही विर्पाये । कर्म करू ॥ ५१ ॥ [मत्प्रसादादवा-प्नोति] परि गंगेच्या संवंधी । विदी आणि महा नदी । ऐक्य तेवि माझ्या बोधी । शुभाशुभांसी ॥ ५२ ॥ कां वावने आणि धुरें । हा निवाड तंवचि सरे । जंव न घेपती वैश्वानरें । कवळुनि दोन्ही ॥ ५३ ॥ ना ना पोचिकें आणि सोळें । हें सोनया तंवचि ओळें । जंव परिस आंगमेलें । येकवटीना ॥ ५४ ॥ तैसें शुभाशुभ ऐसें । हें तंवचिवरी आर्भसे । जंव येक न प्रकाशें । सर्वत्र मी ॥ ५५ ॥ अगा रात्रि आणि दिवो । हा तंवचि द्वैतभावो । जंव न रिगिजे गांवो । गर्भेस्तीचा ॥ ५६ ॥ ह्याणोनि माझिया भेटी । तयाचीं सर्व-कर्मं किरिटी । जाऊनि बेसे तो पांटी । सांयुज्याच्या ॥ ५७ ॥ [शाश्वतं पदमव्ययं] देहीं काळें स्वभावे । वेंचें जया न संभवे । तें पद माझे पावे । अविनाश तो ॥ ५८ ॥ किंबहुना पंडसुता । मज आत्मयाची प्रसन्नता । लाहे तेणे न पवि-जता । लोभ कवण असे ॥ ५९ ॥

मग ह्याणतात “हे शूरवर्षा! अशा निष्ठेनें तो कर्मयोगी मत्स्वरूप होऊन मजमध्ये प्रवेश करतो. १२४६ स्वकर्माच्या उत्तम फुलांनीं माझी उत्तम प्रकारे पूजा करून, तिच्या प्रसादाने ज्ञाननिष्ठा संपादन करतो. १२४७ ती ज्ञाननिष्ठा जेव्हां हस्तगत होते, तेव्हां माझी भक्ति पसरते. तिच्या साह्यानें मजशी ऐक्य-रूप होऊन तो सुखी होतो. १२४८ आणखी

१ या भावनेने. २ प्रविष्ट. ३ चोख पुष्पांनी. ४ हस्तगत होते. ५ त्या भक्तीने. ६ ऐक्य पावे. ७ पांचही कोशांत. ८ प्र-तिबंध. ९ आकाशांत. १० कायावाचामनेंकरून. ११ क्वचित. १२ ओहोळ. १३ मैलागिरी चंदन. १४ सामान्य काष्ठ. १५ हिणकट. १६ सोळांच्या दराचे. १७ आळ, अपवाद. १८ मासे, वाटे. १९ दिवस. २० सूर्याचा. २१ पदवीवर. २२ ब्रह्मांत लय पावणे. २३ नाश. २४ न पावण्याजोगें, अप्राप्य असें काय आहे ?

जो हेंच सर्वत्र करून विश्वास प्रकाशित कर-
णाऱ्या मला-आपल्या आत्म्याला-अनुसरतो;
१२४९ आपला प्रतिबंध नाहीसा करून मीठ
जसें जळाचा आश्रय करून राहतें, किंवा वायु
आकाशामध्ये हिंडून निश्चळ राहतो, ११५०
त्याप्रमाणें जो कायावाचामनंकरून माझाच आ-
श्रय करून राहतो, त्यानें चुकून एखादे वेळीं
जरी निषिद्ध कर्में आचरण केलीं, १२५१ तरी,
गंगेशीं मिळणारा ओहोळ आणि मोठी नदी
जशीं एकरूप होतात, त्याप्रमाणें माझ्या ज्ञाना-
मध्ये शुभ आणि अशुभ दोन्हीही एकरूप हो-
तात. १२५२ हा मैलागिरी चंदन; आणि दु-
सरें हें लांकूड; हा भेद तरी, अग्नीनें दोन्ही-
लाही एके ठिकाणीं कवळून घेतलीं नाहीत
तोंपर्यंत चालतो. १२५३ हें हिणकट; आणि
हें शुद्ध-सोळांच्या दराच्या सोनें. हा अपवाद
तरी, जोंपर्यंत परिसानें आपलें आंग त्यास ला-
वेलें नाही तोंपर्यंतच. १२५४ त्याप्रमाणें हें
शुभ आणि हें अशुभ हें तोंपर्यंतच वाटतें,
जोंपर्यंत एक मी सर्वत्र प्रकाशमान झालों
नाहीं. १२५५ सूर्याच्या गांवांत शिरलें नाही,
तोंपर्यंतच हा दिवस आणि ही रात्र; हे दोन
भेद. १२५६ ह्याणून अर्जुना ! माझी भेट हो-
ण्याबरोबर त्यांचीं सर्व कर्में लयास जाऊन तो
मुक्तीच्या पदावर जाऊन बसतो. १२५७ देशानें,
कालानें, किंवा नैसर्गिक धर्मानें ज्याचा नाश
होण्याचा संभवही नाही, असें जें अविनाश
पद, तें तो पावतो. १२५८ किंबहुना अर्जुना !
माझ्या आत्म्याच्या प्रसन्नतेला तो पात्र ह्या-
ल्यानंतर त्याला लाभ मिळणार नाही असा
कोणता ?” १२५९

चेतसा सर्वकर्माणि मयि संन्यस्य मत्परः ।

बुद्धियोगमुपाश्रित्य मच्चित्तः सततं भव ॥ १७ ॥

[चेतसा सर्वकर्माणि] याकारणें गा तुवां श्या । सर्व कर्मां
आपुलिया । माझ्या स्वरूपी धनंजया । संन्यास कीजे ॥ १२६० ॥

१ त्याग.

परि तोचि संन्यास वीरा । कुरणीयाचा क्षणें करा । आत्मवि-
वेकी धेरा । चित्तवृत्ति हे ॥ ६१ ॥ [मयि] मम तेणें विवे-
कवळें । आपणें कर्मावेगळें । माझ्या स्वरूपी निर्मळें । दे-
खिजेल सर्व ॥ ६२ ॥ [संन्यस्य] आणि कर्मांची जन्मभोये ।
प्रकृति जे कां आहे । ते आपणयाहूनि बहुवे । देखसी दुरी
॥ ६३ ॥ तेथ प्रकृति आपण्यां- । वेगळी नुरे धनंजया ।
रूपेवीण कां छया । जयापरी ॥ ६४ ॥ ऐसेनि प्रकृतिनाश ।
जालया कर्मसंन्यास । निफजेल अनायास । सकारण ॥ ६५ ॥
[मत्परः] मग कर्मजात गेलया । मी आत्मा उरें आपणपयां ।
[बुद्धियोगमुपाश्रित्य] तेथ बुद्धि धापे करुनियां । पतिव्रता
॥ ६६ ॥ बुद्धि अनन्य येणें योगें । मजमाजी जें रिंगे ।
[मच्चित्तः सततं भव] तें चित्त चैत्येलागें । मातेंचि भजे
॥ ६७ ॥ ऐसें चैत्यजातें सोडिलें । चित्त माझ्या ठायीं ज-
डलें । ठाके तैसें वहिलें । सर्वदा करी ॥ ६८ ॥

“ह्याकरितां हे अर्जुना ! तूं ह्या आपल्या
सर्व कर्मांचा माझ्या स्वरूपामध्ये संन्यास
करून टाक. १२६० पण हे शूरवीरा ! तोच
संन्यास स्वधर्माचा करशील हो ! तसा मात्र
करूं नको. तर ही चित्तवृत्ति आत्मविचारा-
मध्ये ठेव. १२६१ ह्याणजे त्या विचाराच्या
बळानें आपोआप कर्माशिवायच, माझ्या स्व-
रूपामध्ये सारें निर्मळ दृष्टीस पडेल. १२६२
आणखी कर्मांची जन्मभूमि जी प्रकृति ह्याणून
आहे, ती स्वस्वरूपाहून फार निराळी आहे,
हेंही दृष्टीस पडेल. १२६३ तेव्हां धनंजया !
स्वरूपापासून छया जशी वेगळी नसते, त्या-
प्रमाणें प्रकृती ही आत्मस्वरूपाहून वेगळी रा-
हणार नाही. १२६४ असें केलेंस ह्याणजे प्र-
कृतीचा नाश होऊन अनायासें कारणासहित
आपोआप कर्मांचा संन्यास घडेल. १२६५
असा कर्मांचा संन्यास घडला ह्याणजे मग मी
जो आत्मा तोच काय तो स्वतःसिद्ध राहतो.
तेव्हां बुद्धिरूप पतिव्रता करून सोडावी. १२६६
ह्या अनन्ययोगेंकरून माझ्या मध्ये जेव्हां बुद्धि
प्रविष्ट होते तेव्हां चित्त आपला अहंपणा सो-
डून माझ्याच भजनीं लागतें. १२६७ अशा

१ स्वधर्माचा. २ ठेवा. ३ जन्मभूमि. ४ स्वस्वरूपाहून.
५ आत्मस्वरूपाला. ६ कारणासहित. ७ सर्व कर्मसमुदाय.
८ घातली जाते. ९ द्वैतरहित. १० विलाचे चंचलादिक
धर्मत्यागानें. ११ सत्वर.

प्रकारें चंचलपणा सोडलेलें चित्त माझ्या ठि-
काणीं जडून राहील असा उपाय सदासर्व-
काल शीघ्र करीत जा." १२६८

मच्चित्तः सर्वदुर्गाणि मत्प्रसादात्तरिष्यसि ।

अथ चेत्त्वमहंकारान्न श्रोष्यसि विनक्ष्यसि ॥१८॥

[मच्चित्तः] मग अभिन्ना इया सेवा । चित्त मियांचि म-
रेल जेव्हां । माझा प्रसाद जाण तेव्हां । संपूर्ण जाहाला
॥ ६९ ॥ [सर्वदुर्गाणि] तेथ सकळ दुःखांभे । भुंजींजती
जियें मृत्युजन्में । तियें दुर्गमंचि सुगमें । होती तुज
॥ १२७० ॥ सूर्याचेनि सावायें । डोळा सावाइला होये । तें
आंधाराचा आहे । पांड तथा ॥ ७१ ॥ [मत्प्रसादात्] तैसा
माझेनि प्रसादे । जीवकण जयाचा उपमदे । तो संसाराचेनि
बांधे । बागुलें केवि ॥ ७२ ॥ [तरिष्यसि] ह्मणोनि धनंजया ।
तूं संसारदुर्गती यया । तरसील माझिया । प्रसादास्तव ॥ ७३ ॥
अथवा हून अहंभावे । माझे बोलणें हें आधवें । कानामना-
चिये ' 'शिवें । नेदिसी टेंकों ॥ ७४ ॥ [चेत्त्वमहंकारान्न
श्रोष्यसि] तरि नित्यमुक्त अव्यय । तूं आहासि तें होवुनि
वाय । [विनक्ष्यसि] देहसंबंधाचा घाव । बाजेल आंगी ॥ ७५ ॥
जया देहसंबंधाआंत । प्रतिपदीं आत्मघात । भुंजतां उंसंत ।
कहींच नाही ॥ ७६ ॥ येवढेनि दांरुणें । निर्मणेनवीण निर्मणें ।
पडेल जरी बोलणें । नेदिसी माझे ॥ ७७ ॥

“मग ह्या अभिन्न सेवेनें चित्त जेव्हां
मजमध्यें भरेल तेव्हां माझा प्रसाद संपूर्ण
झाला ह्मणून समजावें. १२६९ तेव्हां जन्ममृ-
त्युरूप जी दुःखाचीं स्थानें भोगाचीं लागतात
तीं, तुला कठीण असतांही सुलभ होतील.
१२७० सूर्याच्या साह्यानें डोळा साह्यभूत
होतो, तेव्हां मग त्याला आंधाराची कांहीं मा-
तबरी आहे काय ? १२७१ तद्वत् माझ्या प्र-
सादानें ज्याचा जीवांश नाश पावला, त्याला
संसाराच्या बागुलापासून कशी बाधा होणार ?
१२७२ ह्मणून अर्जुना ! तूं ह्या माझ्या प्रसादानें
संसाररूप दुर्गतींतून पार पडशील. १२७३

१ दुःखाचीं स्थानें. २ भोगिलीं जातात. ३ अवघड.
४ मदतीनें, साह्यानें. ५ साह्यभूत. ६ योग्यता, विश्वाद.
७ ज्याचा जीवकण=जीवांश उपमदे=नासे किंवा नष्ट झाला.
८ पीडा पावेल. ९ बुझावण्यानें. १० अहंकारानें. ११ हद्दीस.
१२ व्यर्थ. १३ आदलेल. १४ पावलोपावली. १५ विसावा.
१६ भयंकर. १७ न मरूनही मरणें. १८ घेत नाहीस.

अथवा अभिमानानें माझे हें सारें बोलणें, का-
नाच्या आणि मनाच्या शिवेला सुद्धां टेंकूं न
देशील, १२७४ तर तूं नित्ययुक्त व अव्यय
आहेस तें व्यर्थ होऊन देहसंबंधाचा घाव
तुझ्या आंगावर पडेल. १२७५ त्या देहसंबं-
धाच्या आंत पावलोपावलीं आत्मघात असून
भोगतांना विसावा ह्मणून कधीं नाहीच. १२७६
हें माझे भाषण मनास जर न आणशील, तर
येवढें भयंकर न मरतांच जें मरणें तें भोगावें
लागेले." १२७७

यदहंकारमाश्रित्य न योत्स्य इति मन्यसे ।

मिथ्यैष व्यवसायस्ते प्रकृतिस्त्वां नियोक्ष्यति १९

[यदहंकारमाश्रित्य] पथ्यवेष्टिया पोषी ज्वर । कां दीप-
द्वेषिया अंधकार । विवेकद्वेषे अहंकार । पोषूनि तैसा ॥ ७८ ॥
खदेष्टा नाम अर्जुन । परदेहा नाम खजन । संग्रामा नाम
मलिन । पापाचार ॥ ७९ ॥ इया मती आपुलिया । तिघां
तीन नामें यथा । ठेऊनियां धनंजया । [न योत्स्य इति म-
न्यसे] न जुंझें ऐसा ॥ १२८० ॥ [मिथ्यैष व्यवसायस्ते] जी-
वामाजी निष्ठेक । करिसी जो आत्मिक । तो वायां धाडील
नैसर्गिक । स्वभावचि तुझा ॥ ८१ ॥ आणि मी अर्जुन हे
आत्मिक । यथां वध करणें हें पातक । हे माया वांचुनि
तात्विक । कांहीं आहे ॥ ८२ ॥ आधीं जुंझार तुवां हो-
आवें । मग जुंझावया शस्त्र घेयावें । कां न जुंझावया करावें ।
देवांगण ॥ ८३ ॥ ह्मणूनि न जुंझणें । ह्मणसी तें वायाणें ।
ना मातुं लोकहणें । लोकदृष्टीही ॥ ८४ ॥ [प्रकृतिस्त्वां नि-
योक्ष्यति] तन्ही न जुंझें ऐसें । निष्ठंरिसी जें मानसें । तें
प्रकृति अंनारसें । करवीलचि ॥ ८५ ॥

“पथ्याचा द्वेष करणाराचें जसें ज्वर पोषण
करतो; किंवा द्वीपद्वेष्याचें जसें अंधकार
पोषण करतो; त्याप्रमाणें विवेकाच्या द्वेषानें
अहंकार पोसून, १२७८ आपल्या देहाला नांव
अर्जुन; दुसऱ्या देहाला आपले लोक; आणि
युद्धाचें नांव फार वाईट असें पापाचरण.
१२७९ धनंजया ! अर्शां आपल्या बुद्धीनें ह्या
तिघांना तीन नामें ठेवून युद्ध करणार नाहीस

१ राखी. २ शेवटचा सिद्धांत. ३ अतिशय. ४ तुझा
नैसर्गिक स्वभाव—क्षात्रधर्म. ५ आपले जन. ६ तत्वदृष्टीनें.
७ युद्धकर्ता. ८ मिथ्यानिश्चय, गंधर्वनगर. ९ व्यर्थ. १० नि-
धारिसी. ११ निराळें.

असा जो, १२८० तूं जिवामध्ये अतिशय डाम निश्चय करून बसला आहेस, तो तुझा नैसर्गिक स्वभावच मोडून टाकील. १२८१ आणखी मी अर्जुन; हे आपले; ह्यांचा वध करणें हें पाप; ही माया. खरें तत्त्व आहे तें काहीं निराळेंच आहे. १२८२ आधीं युद्धाला आपणच तयार व्हावें; आणि मग युद्ध करण्याकरितां शस्त्र उचलावें, कां युद्ध न करण्याचा झलताच निश्चय करावा? १२८३ ह्मणून तूं युद्ध करित नाहीं ह्मणतोस हें व्यर्थ होय. तें तिन्हाइतपणानें, व व्यवहारदृष्टीनेंही उक्त नाहीं. १२८४ तर युद्ध करित नाहीं असा मनामध्ये निश्चय करून बसला आहेस, त्याला प्रकृति वेगळेंच करावयाला लावील.” १२८५

स्वभावजेन कौंतेय निबद्धः स्वेन कर्मणा ।

कर्तुं नेच्छसि यन्मोहात्करिष्यस्यशोपि तत्॥१०

[स्वभावजेन कौंतेय] पें पूर्वे वाहतां पाणी । पंढिजे पश्चिमेचे वाहणी । तरी आग्रहचि उरे तें आणी । आपुल्या लेखा ॥ ८६ ॥ कां सालीचा कृण ह्मणे । मी जुगवें साली-पणें । तरी आहे आन करणें । स्वभावांस ॥ ८७ ॥ [निबद्धः स्वेन कर्मणा] तैसा क्षात्र संस्कारसिद्धा । प्रकृती घडिलासि प्रबुद्धा । आतां नुटीं ह्मणसी हा धांदा । परि लठविजसीची तूं ॥ ८८ ॥ पें शौर्य तेज दक्षता । एवमादिक पंडुसुता । गुण दिधले जन्मतां । प्रकृती तुज ॥ ८९ ॥ तरी तयाचिया संभवाया । अनुरूप धनंजया । न करितां उंगलियां । नयेल असों ॥ १२९० ॥ ह्मणोनियां तिहीं गुणीं । बांधलासि तूं कोदंडपाणी । त्रिशुद्धि निधसि बांहाणी । क्षात्राचिया ॥ ११ ॥ [कर्तुं नेच्छसि यन्मोहात्] ना हें आपुलें जन्म-मूळ । न विचारीतचि केवळ । जुंझें ऐसें अढळ । वत जरी घेसी ॥ ९२ ॥ [करिष्यस्यशोऽपि तत्] तरी बांधोनि हात पाये । जो रथीं घातला होये । तो न चेंले तरी जाये । दिगंता जेवि ॥ ९३ ॥ तैसा तूं आपुल्याकडनी । मीं काहींच न करीं ह्मणोनी । ठांसी परि भरंवसेनी । तूंवि

करिषी ॥ ९४ ॥ उत्तर वैराटिचा राजा । पळतां तूं कां निघालासि जुंझा । हा क्षात्रस्वभाव तुझा । जुंझवील तुज ॥ ९५ ॥ महावीर अकरा असौहिणी । तुवां येकें नांगविले रणांगणीं । तो स्वभाव कोदंडपाणी । जुंझवील तूतें ॥ ९६ ॥ हां गा रोग कायी रोगिया । आवडे दरिद्र दरिद्रिया । परि भोगविजे बळिया । अर्धें जेणें ॥ ९७ ॥ तें अष्ट अनारिसें । न करील ईश्वरवशें । तो ईश्वरही असे । हृदयीं तुझ्या ॥ ९८ ॥

“पाणी—पूर्वेस वहात असून आपण पश्चिमेकडे पोहं लागलों, तर आपला हट्ट मात्र दिसून येणार. बाकी तें, आपल्याच मार्गावर आल्यावांचून राहवयाचें नाहीं. १२८६ किंवा भाताच्या दाण्यानें निश्चय केला कीं, मी भाताच्या रूपानें उगवावयाचा नाहीं; तर उपयोग काय? स्वभावकर्म आहे तें निराळेंच आहे. १२८७ त्याप्रमाणें हे बुद्धिमंता! क्षात्र संस्कारानें तुझी प्रकृति बनलेली आहे. ह्यामुळे आतां तूं उठत नाहीं असें ह्मणतोस, पण तें कर्तव्यच तुला उठवील. १२८८ हे पंडुसुता! शौर्य, तेज आणि दक्षता इत्यादि गुण प्रकृतीनेंच तुला दिलेले आहेत. १२८९ तर अर्जुना! त्यांच्या स्वभावानुरूप जर तूं न करशील तर ते तुला उगाच बसूं देणार नाहीत. १२९० ह्याकरितां हे कोदंडपाणी! तूं ह्या तीन गुणांनीं बांधलेला आहेस. ह्मणून तूं क्षात्र-मार्गानेंच जाशील ह्यांत तिळमात्र संशय नाहीं. १२९१ कारण आपला जन्म, कुल, ह्यांचा काहींच विचार न करितां “मी युद्ध करणार नाहीं इतकेंच केवळ अढळ वत घेऊन बसशील” १२९२ तर हातपाय बांधून ज्याला रथावर घातलेला असतो, तो जरी चालला नाहीं, तरी जसा दिगंताला जातो, १२९३ त्याप्रमाणें तूं आपल्याकडून मी काहींच करित नाहीं ह्मणून स्वस्थ बसशील, तरी खात्रीनें सांगतां कीं तूं करणारच. १२९४ विराट

१ पोहावें. २ मार्गानुरूप. ३ पलीकडे, हिशोबास, मार्गोस. ४ दाणा. ५ उगवणार नाहीं. ६ प्रकृतिभावास. ७ कारणानुरूप. ८ साहजिक. ९ खरेपणानें. १० मार्गोस. ११ क्षत्रियस्वभावाच्या. १२ चालत नसला तरी. १३ स्वस्थ राहासी.

१ तूं गोप्रहणप्रसंगी उत्तराचा सारथि जेव्हां झालास तेव्हां तो युद्धांतून पळत असतांही तूं मुद्दाम त्याला सारथि करून युद्ध केलेंस, हा तुझा क्षात्रधर्म तुझ्याकडून युद्ध करवील. २ फसविले, पराभूत केले. ३ दुष्कृतसंचित प्रारब्धानें. ४ वेगळें.

राजाचा पुत्र उत्तर पळू लागला तेव्हां, तूं कां युद्धाला निघालास ? हा तुझा क्षत्रिय स्वभाव. तोच तुला युद्ध करावयाला लावील. १२९५ हे कोदंडपाणी ! तूं एकट्यानें रणांगणामध्ये अकरा अक्षौहिणी महावीर पराजित केलेस. तोच तुझा स्वभाव तुला युद्ध करावयाला लावील. १२९६ अरे ! रोग्याला रोग आणि दारिद्र्याला दारिद्र्य काय आवडत असतें ? पण भवितव्य झणून असतें तें बलवान् असतें. तें त्याजकडून भोगवितें. १२९७ तें भवितव्य ईश्वराच्या आधीन असल्यामुळें, त्यालाही भल-तेंच करतां येत नाही. आणखी तो ईश्वरही तुझ्या हृदयामध्ये आहेच." १२९८

ईश्वरः सर्वभूतानां हृद्देशेऽर्जुन तिष्ठति ।

भ्रामयन्सर्वभूतानि यंत्रारूढानि मायया ॥ ६१ ॥

[सर्वभूतानां] सर्वभूतांच्या अंतरीं. हृदय महाअंबरीं. चिद्धृतीच्या सहस्रकरीं । उदयला असे जो ॥ ९९ ॥ अवस्था-त्रय तिन्ही लोक । प्रकाशित अशेष । अन्यथादृष्टि पांथिक । चैवविळे ॥ १३०० ॥ वेयोदकाच्या सरोवरीं । फांकतां विषय कलहारीं । इन्द्रियषट्पदा चारी । जीवभ्रमरातें ॥ १ ॥ [ईश्वरः] असो रूपक हें तो ईश्वर । सकळभूतांचा अहंकार । पांथरोनि निरंतर । उल्लासत असे ॥ २ ॥ [मायया] स्व-मायेचें आडवळ । लावून एकल खेळवी सूत्र । बाहेरी नेटी छायाचित्र । चौर्यासी लक्ष ॥ ३ ॥ तथा ब्रह्मादिकी-टांतां । अशेषांही भूतजातां । देहाकार योग्यता । पाहोनि दावी ॥ ४ ॥ [यंत्रारूढानि] तेथ जें देह जयापुढें । अर्जुन-पपणें मांडे । तें भूततया आरुढे । हें मी झणोनि ॥ ५ ॥ सूत सूतें गुंतले । तृण तृणेंचि बांधले । कां आत्मविबा घे-तले । बाळकें जळीं ॥ ६ ॥ तयापरी देहाकारें । आपणपेंचि दुसरें । देखोनि जीव आविष्करे । आत्मबुद्धी ॥ ७ ॥ ऐसेनि

१ हृदयरूप महाकाशामध्ये. २ चैतन्यवृत्तिरूप हजारों किरणांनी. ३ जागृती, स्वप्न, सुषुप्ति. ४ स्वर्ग, मृत्यु, पाताळ. ५ विपरीत ज्ञानानें भुललेले जीव, वाटसरू. ६ जागृत केले. ७ जाणण्यास योग्य दृश्य वस्तुरूप जलाच्या. ८ कमळांनी. ९ भ्रमराच्या धोरणानें. १० चारतो. ११ सूत्र-धाराची झी. १२—२० लक्ष वृक्ष, ११ लक्ष कीटक, ३० लक्ष पक्ष, ९ लक्ष जलचर, १० लक्ष पक्षी, ४ लक्ष मनुष्य-योनि. मिळून एकंदर ८४ लक्ष योनि. १३ ब्रह्मदेवापासून कीडमुंगीपर्यंत. १४ योग्यतेनुष्य. १५ भूत असें होऊन. १६ प्रगटे. १७ तें मी नसून मीच अशा बुद्धीनें.

शरीराकारी । यंत्रां भूतें अवधारी । [भ्रामयन्] वाहूनि हालवी दोरी । प्राचीनाची ॥ ८ ॥ तेथ जया जें कर्मसूत्र । मांडूनि ठेविलें स्वतंत्र । तें तिये गती पात्र । होंचि लागे ॥ ९ ॥ किंबहुना घनुर्धरा । भूतांतें खेगसंसार । माजि भोंवडी तृणें वारा । आकाशीं जैसी ॥ १३१० ॥ भ्रामका-चेनि सणें । जैसे लोहो वेढां रिगे । तैसी ईश्वरसत्तायोगें । चेष्टेती भूतें ॥ ११ ॥ जैसे चेष्टा आपुलालिया । समुद्रादिक धनंजया । चेष्टती चंद्राचिया । सन्निधी येकी ॥ १२ ॥ तथा सिंधू भरितें दाटे । सोमकांता पाझर फुटे । कुमुदांचको-रांचा फिटे । संकोच तो ॥ १३ ॥ तैसी बीज-प्रकृतिवशें । अनेकें भूतें येकें ईशें । चेष्टवीजती तो असे । [हृद्देशेऽर्जुन तिष्ठति] तुझ्या हृदयां ॥ १४ ॥ अर्जुनपण न घेतां । मी ऐसें जें पंडुघुता । उठतसे तें तत्वता । तयाचें रूप ॥ १५ ॥ यालागीं तो प्रकृतीतें । प्रवर्तवील हें निवृत्तें । आणि तें जुं-झवील तूतें । न झुंजसी जन्ही ॥ १६ ॥ झणोनि ईश्वर गोसांवी । तेणें प्रकृति हे नेमावी । तियां सुखें राववावी । इन्द्रियें आपुलीं ॥ १७ ॥ तूं करणें न करणें दोन्ही । लाजुनि प्रकृतीच्या मानीं । प्रकृतीही कां अधीनी । हृदयस्था जया ॥ १८ ॥

“सर्व प्राणिमात्रांच्या अंतःकरणांत हृदयरूप महाकाशांत चैतन्यवृत्तिरूप हजारों किरणांनीं जो उदय पावलेला आहे, १२९९ प्रवृत्ति, स्वप्न आणि सुषुप्ति, ह्या तिन्ही अवस्था, व स्वर्ग, मृत्यु आणि पाताळ ह्या तिन्ही लोकांना संपूर्ण प्रकाशित करून विपरीत ज्ञानानें भुल-लेले जीव ज्यानें जागृत केले आहेत, १३०० दृश्य वस्तुरूप जलाच्या सरोवरांमध्ये विषयरूप कमळें उमललीं झणजे इन्द्रियषट्पदरूप जे जीव-भ्रमर, त्यांचा चारा घालतो. १३०१ हें रूपक असो. तो ईश्वर सर्व प्राणिमात्रांचा अहंकार पांथरून निरंतर प्रकाशतो. १३०२ आपल्याच मायेचें आडवळ लावून एकटाच सूत्र नाच-वितो. बाहेर मायारूप नदी आणि तिच्या छायेपासून निघालेलीं तिचीं चैत्यायशीं लक्ष

१ पूर्वकर्माची. २ इहपरलोकी. ३ लोहचुंबकाच्या. ४ वा-टोळें फिरे. ५ व्यवहार करतात. ६ चंद्रविकासी कमलाळ. ७ मिटलेपणा. ८ प्रकृतिबीजाच्यानें, ‘यथा बीजं तथाकुंरः’ या न्यायानें बीजाच्या प्रकृत्यनुसार—बीजासारखी. ९ ईश्वर. १० खरें. ११ प्रकृति. १२ इन्द्रियस्वामी. १३ प्रकृतीनें. १४ चेष्टवाची. १५ धोरणानें.

योनी हीं चित्रें. १३०३ त्या ब्रह्मदेवापासून किड्यापर्यंत यक्षयावत् प्राणिमात्रांना योग्यता पाहून आकार देतो. १३०४ तेव्हां ज्याच्या त्याच्या योग्यतेप्रमाणें त्याला जो जो देह प्राप्त होतो तो तो प्राणी, हें 'मी मी' झणून अहं-कारास चढतो. १३०५ सूत सुतानेंच गुंतवावें; गबत गबतानेंच बांधावें; किंवा मुलानें पाण्या-मध्ये आपलेंच प्रतिबिंब पहावें, १३०६ त्याप्र-माणें वेहाकारानें आपणच दुसरा पाहून, जिव हा तोच मी अशी बुद्धि धारण करतो. १३०७ अशा प्रकारें शरीराकाररूप यंत्रामध्ये भूतें अडकवून पूर्वकर्माची दोरी हालवितो, हें लक्ष्यांत ठेव. १३०८ तेव्हां ज्याचें जें स्वतंत्र कर्मसूत्र मांडून ठेवलेलें असतें, तें त्याच्या गतीला पात्र करतें. १३०९ किंबहुना धनु-र्धरा! आकाशामध्ये वारा जसा गवताला गरगर गरगर फिरवितो, त्याप्रमाणें इहपर-लोकीं तो फिरवित असतो. १३१० लोहचुं-वकाच्या सान्निध्यानें लोखंड जसें वाटेलें फिरतें, त्याप्रमाणें ईश्वरी सत्तेच्या योगेंकरून प्राणी व्यापार करतात. १३११ अर्जुना! चंद्राच्या एका सान्निध्यानें समुद्रादिक आपआपला व्यापार करतात. १३१२ समुद्राला भरती येते; सोमकांताला पाझर फुटतो; चंद्रविकासी कम-लांचा वचकोर पक्ष्यांचा संकोच नाहीसा होतो; १३१३ त्याप्रमाणें बीजप्रकृतीनुसार एक ईश्वर हे सर्व प्राणी वागवितो. तो ईश्वर तुझ्या हृदयांत आहे. १३१४ हे अर्जुना! मी हा अ-र्जुन असा अभिमान न धरितां 'मी' असें उत्पन्न होणारें जें स्वरूप, तेंच त्याचें स्वरूप होय. १३१५ ह्याकरितां तो प्रकृतीला पुढें करील हें खचित आहे. आणि तूं जरी युद्ध करित नस-लास तरी ती तुला करावयाला लावील. १३१६ झणून ईश्वर हा धनी असून त्यानें जी प्रकृति नेमलेली आहे, तिच्या अनुपंगानें सुखानें आपआपलीं इंद्रियें वागूं घावीत. १३१७ तूं करणें आणि न करणें हीं दोन्ही ज्या हृद-

यांत राहणाऱ्याच्या स्वाधीन प्रकृति आहे, त्या प्रकृतीच्याच मर्जीवर ठेव." १३१८

तमेव शरणं गच्छ सर्वभावेन भारत ।

तत्प्रसादात्परां शान्तिं स्थानं प्राप्यसि शाश्वतम् ॥ १२

[तमेव शरणं गच्छेति] तथा अहं वांचा चित्त आंग । देऊनियां शरण रिग । महोदधी कां गोंग । रिगलें जैसे ॥ १९ ॥ [तत्प्रसादात्परां शान्तिं] मग तथाचेनि प्रसादे । सर्वोपशान्तिप्रमदे । कांत होऊनियां स्वानंदें । स्वरूपीच रमसी ॥ १३२० ॥ [स्थानं प्राप्यसि शाश्वतं] संभूति जेणें संभवे । विश्रान्ति जेथें विसंवे । अनुभूतिही अनुभवे । अनु-भवा जया ॥ २१ ॥ तिथे निजात्मपदींचा रावो । होऊनि ठाकसी अव्ययो । झणे लक्ष्मीनाहो । पार्था तूं ॥ २२ ॥

“गंगेचें उदक जसें महासागरांत शिरतें, त्याप्रमाणें त्याला काया, वाचा, मन आणि अभिमान अर्पण करून शरण जा. १३१९ झणजे त्याच्या प्रसादानें शान्तिस्त्रीचा पति होऊन निजानंदानें स्वस्वरूपांतच रममाण होशील. १३२० जेथें उत्पत्तीची उत्पत्ती; जेथें विश्रान्तीला विश्रान्ति; जेथें अनुभवालाही अनु-भव घडतो;” १३२१ लक्ष्मीपति झणाले, “पार्था! तूं त्या निजात्मपदाचा अक्षयी राजा होऊन राहशील.” १३२२

इति ते ज्ञानमाख्यातं गुह्याद्गुह्यतरं मया ।

विमृश्यैतदशेषेण यथेच्छसि तथा कुरु ॥ १३ ॥

[इति] हे गीतानाम विख्यात । सर्ववाक्याचें मथित । आत्मा जेणें हस्तगत रत्न होय ॥ २३ ॥ [ज्ञानमाख्यातं] ज्ञान ऐसीया व्हडी । वेदांतें जयाची प्रौढी । वांनितां कीर्ति चो-खडी । पातली जमी ॥ २४ ॥ बुद्ध्यादिकें बोलसें । हें जयाचें कां कडेवसे । मी सर्वद्रष्टाहि दिसें । पांढळा जया ॥ २५ ॥ [गुह्याद्गुह्यतरं] तें हें गा आत्मज्ञान । मज गोप्या-चेंही गुप्त धन । परि तूं झणूनि आन । केवि करूं ॥ २६ ॥ [मया] याकारणें गा पांडवा । आर्क्षी आपला हा गुप्त ठेवा ।

१ त्या हृदयस्थाला. २ ज्या कायावाचामनाला मी झणतोस. ३ गंगोदक. ४ शान्तिस्त्रीचा. ५ उत्पत्ति. ६ राहासी. ७ लक्ष्मीपति. ८ वेदांचें. ९ प्रसिद्धि. १० वर्णितां. ११ आभास, परावर्तन, प्रतिबिंब. १२ उदय पावलेला.

[ते] तुज दिधला कणवा । जांकळिलेपणें ॥ २७ ॥ जैसी भुलली बोरेंस । माय बोले बाळा दोषें । प्रीती ही परी तैसें । न करुंचि हो ॥ २८ ॥ येथ आकाश आणि गाळिजे । अमृताही साली फेडिजे । कां दिव्याकरवीं करविजे । दिव्य जैसें ॥ २९ ॥ ज्याचेनि अंगप्रकाशें । पाताळींचा परमाणु दिसे । त्या सूर्यादि कां जैसें । अंजन सुदलें ॥ १३३० ॥ तैसें सर्वज्ञेही मियां । सर्वेही निर्धारनियां । निके होय तें धनंजया । सांगीतलें तुज ॥ ३१ ॥ [विमृश्यैतदशेषेण] आतां तूं ययावरी । निके हें निर्धारी । निर्धारिनि [यथेच्छसि तथा कुरु] करी । आवडे तैसें ॥ ३२ ॥ यया देवाचिया बोला । अर्जुन उगाचि ठेला । तेथ देवो ह्मणती भला । अंबंचक होसी ॥ ३३ ॥ वाढितया पुढें भुकेला । उतरोधें ह्मणे धोला । तें तोचि पीडे आपला । आणि दोषही त्या ॥ ३४ ॥ तैसा सर्वज्ञ श्रीगुरु । भेटलिया आत्मनिर्धार । न पुसिजे जें आभाळ । धरुनियां ॥ ३५ ॥ तें आपणपेंचि वंचे । आणि पापही वंचनाचें । आपण्याचि साचें । चुकविलें तेणें ॥ ३६ ॥ पें उगेपणा तुझिया । हा अभिप्रावो कीं धनंजया । जें एक वेळ औवांकुनियां । सांगावें ज्ञान ॥ ३७ ॥ तेथ पार्थ ह्मणे दातारा । भलें जाणसी माझिया अंतरा । हें ह्मणों तरी दुसरा । जाणता असे काई ॥ ३८ ॥ येर जेथ हें जी आपवें । तूं ज्ञाता येकचि स्वभावे । मा सूर्य ह्मणोन वानावें । सूर्यांत काई ॥ ३९ ॥ या बोला श्रीकृष्णें । ह्मणीतलें काय येणें । हंचि थोडें गा वानणें । जें बुद्धतासि तूं ॥ १३४० ॥

“हें गीतानामक सर्व वेदांचें सार आहे. आणि ज्याच्या योगानें आत्म्यासारखें रत्न हस्तगत होतें. १३२३ ज्ञान हें मोठें ह्मणून त्याच्या प्रौढीचें वर्णन केलें ह्मणून जगामध्ये वेदांची मोठी कीर्ति पसरली. १३२४ बुद्ध्यादिक जाणण्याचीं जीं साधनें तीं ज्याचीं प्रतिविधे, माझ्या सर्व द्रष्ट्याचा उदय झालेला ज्याच्या योगानें दिसतो; १३२५ तें हें आत्मज्ञान—मी

१ कृपेने. २ व्याप्त झाल्याने. ३ पान्हाने. ४ आकाश गाळावे, अमृताच्या साली काढाव्या व प्रकाशानें प्रकाश करावा ह्या असंभवनीय गोष्टी, तसें असंभाव्यही मी सर्वज्ञानें निर्धारून इत्यादि १३३१ ओवीशीं संबंध. ५ काजळ घातलें. ६ खरें. ७ वंचना न करणारा—आपणाला ठकविणारा (इष्ट वस्तु कोणी देत असतां ती नको ह्मणणारा) असा होणार नाहीस. ८ भिडेनें. ९ तृप्त झालों. १० धुधेनें पीडा पावतो. ११ भय, भार. १२ आपणाला फसविलें ह्मणून त्याला वंचनाचें पापही लागतें. १३ पूर्णपणें. १४ जाणावयाचें. १५ समजलास.

जो गुप्त त्या गुप्ताचेंही गुप्त धन. पण तुझ्या जवळ प्रतारणा कां करावी? १३२६ अर्जुना! आह्मी करणेनें व्याप्त झालों आहों. या कारणानें हा आह्मी आपला गुप्त ठेवा तुला दिला. १३२७ ज्याप्रमाणें आईला पान्हा दाटून वेदना होऊं लागल्या ह्मणजे, प्रीति असूनही आई मुलाला दोष देते. पण तसेंही आह्मी केलें नाहीं. १३२८ आकाश गाळावे; अमृताची साल काढावी; किंवा दिव्याकडून जसें दिव्य करवावे; १३२९ ज्याच्या अंगच्या प्रकाशानें पाताळांत असलेलाही परमाणु दृष्टीस पडतो, त्या सूर्यालाही जणों काय काजळ घालावे, १३३० तद्वत् मी सर्वज्ञ असतांही सर्व धुंडाळून हे अर्जुना! जें खरें ह्मणून होतें तें तुला सांगितलें. १३३१ आतां ह्यावर खरें तत्त्व कोणतें ह्याचा तूंही निश्चय कर. आणि तो निश्चय झाला ह्मणजे तुला वाटेले तसें कर.” १३३२ ह्या देवाच्या भाषणावर अर्जुन उगाच राहिला. तेव्हां देव ह्मणाले “तूं फार भिडस्त आहेस.” १३३३ वाढणाऱ्या पुढें भुकेलेला मनुष्य लाजेनें पोट भरलें ह्मणाला, तर त्याचा तोच उपाशीं रहातो; आणखी वर खोटें बोलण्याचा दोषही येतो. १३३४ तद्वत् सर्वज्ञ श्रीगुरु भेटले असतांना तेथे भय धरून जर आत्मज्ञान विचारून घेतलें नाहीं, १३३५ तर आपलें आपणासच ठकविल्यासारखें होतें; परवंचना केल्याचें पातक लागतें; आणि आपणच आपल्यास खरें नाहीसें केल्याप्रमाणें होतें. १३३६ अर्जुना! तुझ्या उगाच बसण्यांतील मतलब हा, कीं एक वेळ संपूर्ण सांगावें. १३३७ तेव्हां अर्जुन ह्मणाला “हे दातारा! माझें अंतःकरण आपण उत्कृष्ट जाणतां. पण हें बोलून दाखविण्यांत तरी अर्थ कोणता? कारण, दुसरा कोणी जाणता आहे काय? १३३८ स्वभावधर्मैकरून ज्ञाता असा तूं एक; आणि बाकीचें सारें हें ज्ञेय होय. तेव्हां सूर्य ह्मणून सूर्याला तें काय दाखणावें?” १३३९ ह्या भाषणावर श्रीकृष्ण ह्मणाले “झालें हें वर्णन काय

थोडें झालें ?" ह्मणून समजतोस होय ? १३४०

सर्वगुह्यतमं भूयः शृणु मे परमं वचः ।

इष्टोऽसि मे दृढमिति ततो वक्ष्यामि ते हितम् १४

[शृणु मे परमं वचः] तरि अवधान पंचळ । करुनियां आणी एक वेळ । वाक्य माझें निर्मळ । अवधारीं पां ॥ ४१ ॥ [सर्वगुह्यतमं भूयः] हें वाक्य ह्मणोनि बोलिले । कां श्राव्य मग आयिकिजे । तैसें नव्हे परि तुझें । भाग्य बरवें ॥ ४२ ॥ कूर्मीचिया पिलयां । दिंठी पान्हा ये धनंजया । आकाश वाहे बापिया । बरींच पाणी ॥ ४३ ॥ जो व्यवहार जेथ न घडे । तयाचें फळचि तेथ जोडे । काय दैवें न सांपडे । सानुकुळें ॥ ४४ ॥ येरवीं द्वैताची बारी । सारुनि ऐक्याच्या पैरिबरीं । भोगिजे तें अवधारीं । रहस्य हें ॥ ४५ ॥ आणि निरुपचारा प्रेमा । विषय होय जें प्रियोत्तमा । तें तुजें नव्हे कीं आत्मा । ऐसेंचि जाणावें ॥ ४६ ॥ [इष्टोऽसि मे] आरिसाचिया देखिलया । गोमटे कीजे धनंजया । तें तया नोव्हे आपण्यां । लागीं जैसें ॥ ४७ ॥ तैसें पार्था तुझेनि मिषें । मी बोलें आपण्याचि दोषें । माझ्या तुझ्या ठाई असे । मी तूंपण गा ॥ ४८ ॥ ह्मणोनि जिह्वाहीचें गुज । सांगतसें जीवाहीं तुज । हें अनन्य गतीचें मज । आथी व्यसन ॥ ४९ ॥ [दृढमिति] पै जळा आपणपें देता । लवण मुललें पंडुसुता । कीं आघवें तयाचें होतां । न लजेचि तें ॥ १३५० ॥ तैसा तूं माझ्या ठाई । राखों नेणसीचि कांहीं । तरी आतां तुज काई । गोप्य मी करीं ॥ ५१ ॥ [ततो वक्ष्यामि ते हितं] ह्मणोनि आघ-वीचि गूढें । जें पाऊनि अति उघडें । तें गोप्य माझें चोखडें । वाक्य आइक ॥ ५२ ॥

“तर आतां आणखी एक वेळ चांगलें लक्ष्य देऊन माझें निर्मळ भाषण पेक. १३४१ हें बोलण्यासारखें आहे ह्मणून बोलावयाचें, किंवा ऐकण्यासारखें आहे ह्मणून ऐकावयाचें, अशांतला प्रकार नाही. तर तुझे भाग्य मोठे असें समज. १३४२ हे धनंजया! कासवांच्या पिलांचा पान्हा दृष्टीतूनच फुटतो; चात-काला आकाश हेंच घरचें पाणी होतें. १३४३ जी गोष्ट जेथें व्हावयाची नाही, त्याचें फळ तेथें प्राप्त होतें. दैव अनुकूल झालें ह्मणजे

१ विस्तारलेलें असें. २ बोलण्यासारखें. ३ श्रवण करण्यास योग्य. ४ दृष्टीचें. ५ चातकाल. ६ निवारण. ७ घरीं. ८ गुह्य, तात्पर्य. ९ आदरयुक्त प्रेमानें. १० निमित्तानें. ११ आपल्या उद्देशाचें. १२ अंतर्गत. १३ एकनिष्ठतेचें. १४ चटक.

काय काय ह्मणून सांपडणार नाही ? १३४४ नाहीतर द्वैताला बाजूस सारून ऐक्याच्या घरामध्ये भोगावयाचें जें रहस्य तें हें. ध्यानांत असूं दे. १३४५ आणखी हे प्रियोत्तमा! जें निरुपचार-निरुपमेय-प्रेमाला जें विषय होतें, तें दुसरें कांहीं नव्हे. तर तोच आत्मा ह्मणून समजावें. १३४६ अर्जुना! आरथांत पाहणाराला शृंगारलें, तर त्याचें त्याला कांहींच नाही. तर तें आपल्यालाच शृंगारल्याप्रमाणें आहे. १३४७ तद्वत् अर्जुना! तुझ्या निमित्तानें मी मलाच अनुलक्षून बोलत आहे. माझ्यामध्ये आणि तुझ्यामध्ये मी-तूंपणा आहे काय ? १३४८ ह्मणून हें अंतर्गत गुह्य, तुला प्राणासमानाला सांगतों. एकनिष्ठेची मला मोठी आवड आहे. १३४९ अर्जुना! पाण्याला आपला देह अर्पण करतांना मीठ भुलून जातें. तें आपण स्वतः तद्रूप झालें तरी, त्याची त्याला लाज वाटत नाही. १३५० त्याप्रमाणें माझ्या-पासून लपवून ठेवावयाचें तुला माहितच नाही. तर मग मी काय आतां तुझ्यापासून गुप्त ठेवूं ? १३५१ ह्मणून जें गुह्य पाहिलें असतां बाकींचीं कितीही गुह्ये असलीं तरी तीं उघडीं वाटतात, असें जें माझें सुंदर भाषण तें आतां ऐक.” १३५२

मन्मना भव मद्भक्तो मद्याजी मां नमस्कुरु ।

मामेवैष्यसि सत्यं ते प्रतिजाने प्रियोऽसि मे १५

[मन्मना भव] तरि बाह्य आणि अंतरा । आपुलिया सर्व व्यापारा । मज व्यापकांत वीरा । विषय करीं ॥ ५३ ॥ आघवा आणीं जैसा । वायू मिळोनि आहे आकाशा । तूं सर्व कर्मी तैसा । मजसीचि असें ॥ ५४ ॥ किंबहुना आपुलें मन । करी माझें एकायतन । माझेनि श्रवणें कान । भरुनि घालीं ॥ ५५ ॥ आत्मज्ञानें चोखडीं । संत जे माझीं रूपडीं । तेथ दृष्टि पडो आवडी । कामिनी जैसी ॥ ५६ ॥ मीं सर्व-वस्तीचें बसोटें । माझीं नामें जियें चोखटें । तियें जीवा यावया वाटे । वाचेचिये लावीं ॥ ५७ ॥ हाताचें करणें । कां पायांचें चालणें । तें होय मजकारणें । तैसें करीं ॥ ५८ ॥ [मद्याजी] आपुला अथवा पैरावा । ठायीं उपकरसी

१ एक स्थान. २ वसतिस्थान. ३ दुसऱ्याचा. ४ उपयुक्त हो, उपकार करणारा हो.

पांडवा । तेणें यज्ञें होयीं बरवा । याज्ञिक माझा ॥ ५९ ॥ [मद्रक्तः] हें येकैक शिकऊं काई । पै सैवकै आपुल्या ठाई । उरऊनि येर सर्वही । मी सेव्यचि करी ॥ १३६० ॥ [मां नमस्कुरु] तेथ जाऊनि भूतद्वेष । सर्वत्र नमेव नम मीचि येक । ऐसेनि आश्रय औखंतिक । लाहसी तूं माझा ॥ ६१ ॥ [मामेवैध्यसि] मग भरलेया जगाआंत । जाऊनि तिजयाची मात । होऊनि ठायील एकांत । आह्वां तुझां ॥ ६२ ॥ तेव्हां भलतिये अवस्थे । मी तूतें तूं मातें । भोगिशी ऐसें आह्मते । वाढेल सुख ॥ ६३ ॥ आणि तिजें ओढळ करितें । निर्मालें अर्जुना जेथें । तें मीचि ह्मणौनि तूं मातें । पावसी शेखीं ॥ ६४ ॥ जैसी जळींची प्रतिभा । जळनाथीं बिंबा । येतां गंगागोभा । काहीं आहे ॥ ६५ ॥ पै पवन अंबरा । कां कैळोळ सागरा । मिळतां आंडवारा । कोणाचा गा ॥ ६६ ॥ ह्मणौनि तूं आणि आह्मी । हें दिस-ताहे देहधर्मी । मग ययाच्या विरामां । मीचि होसी ॥ ६७ ॥ [सत्यं ते] यया बोलामाझारीं । होय नव्हे झेणें करीं । येथ आन आथी तरी । तुझीच आण ॥ ६८ ॥ [प्रतिजाने] पै तुम्ही आण वाहणें । हें औत्सर्गिकार्ते शिवणें । [प्रियोऽसि मे] प्रीतीची जाति लोचणें । आठवों नेदी ॥ ६९ ॥ ये-हवीं वेह्मनि प्रपंच । जेणें विश्वाभास हा साच । औज्ञेचा नटनाच । काळातें जिणें ॥ १३७० ॥ तो देव मी संत्यसंकल्प । आणि जगाच्या हिती बाप । मों आणेचा ओक्षेप । कां करावा ॥ ७१ ॥ परी अर्जुना तुझे वैधे । मियां देवपणाचीं बिरुद्धें । सांडिलीं गा मी हें आंधें । सगळेनि तुवां ॥ ७२ ॥ पै काजा आपुलिया । रावो आपली आपणया । आण वाहे धनंजया । तैसें हें कीं ॥ ७३ ॥ तेथ अर्जुन ह्मणे देवें । आंचाट हें न बोलावें । जें आमचें काज नावें । तुझेनि एकें ॥ ७४ ॥ यावरी सांगों वेससी । कां सांगतां भाषही देसी । या तुझिया विनोदीसी । पार आहे जी ॥ ७५ ॥ कमळवना विकाशु । करी रवीचा येक अंशु । तेथ आघवाचि प्रकाशु । नित्य देतो ॥ ७६ ॥ पृथ्वी निवऊनि सागर । भरीजती येवढें थोर । वर्षें तेथ मिषांतरें । चातक कीं ॥ ७७ ॥ हा-

१ सेवकपणा मात्र आपले ठिकाणीं ठेवून बाकी सर्व. २ नमोनमः. ३ अतिशय. ४ प्रेम. ५ प्रतिबंध. ६ गेलें. ७ प्रतिबंध. ८ आकाशास. ९ लाटा. १० अडचण. ११ निरनिराळ्या शरीरांनीं. १२ अभावसमयीं. १३ करुं नको. १४ अन्यथा असेल तर. १५ आत्मस्वरूपा. १६ लज्जा. १७ हें सर्व दृश्य जग. १८ वेदाज्ञेचा प्रताप. १९ जिकी. २० सफलसंकल्पी. २१ कल्याणाविषयीं. २२ त्यापेक्षां. २३ शंका. २४ छंदातें. २५ चिन्हें. २६ आंधें. २७ अद्भुत. २८ वचन. २९ मौजेस. ३० किरण. ३१ निमित्ताला धनी.

गौनि औदार्यां तुझेया । मज निमित्त ना ह्मणावया । प्राप्ति असे दानी-राया । कृपानिधी ॥ ७८ ॥ तंव देव ह्मणती राहें । या बोलाचा प्रस्ताव नोहे । पै मातें पावसी उपायें । साचचि येणें ॥ ७९ ॥ सैधव सिंधू पडिलिया । जो क्षण धनंजया । तेणें विरेचि कीं उरावया । कारण काथी ॥ १३८० ॥ तैसें सर्वत्र मातें भजतां । सर्व मी होतां अ-हंता । निःशेष जाऊनि तत्वता । मीचि होसी ॥ ८१ ॥ एवं माझिये प्राप्तीवरी । कर्मालगोनि अवधारीं । दाविली तुज उंजरी । उपायांची ॥ ८२ ॥ जे आधीं तंव पंडसुता । सर्व कमें मज अर्पितां । सर्वत्र प्रसन्नता । लाहिजे माझी ॥ ८३ ॥ पाठीं माझ्या इये प्रसादीं । माझें ज्ञान जाय सिद्धी । तेणें मिसळिजे त्रिशुद्धी । स्वरूपी माझ्या ॥ ८४ ॥ मग तिये ठाई । साध्य साधन होय नाहीं । किंबहुना तुज कांहीं । उरेचिना ॥ ८५ ॥ तरि सर्व कमें आपलीं । तुवां सर्वदा मज अर्पिलीं । तेणें प्रसन्नता लोधली । आजि हे माझी ॥ ८६ ॥ ह्मणौनि येणें प्रसादबळें । नवे जुंझाचेनि ओढळें । न ठाकेचि येकवेळे । माळिलें तुज ॥ ८७ ॥ जें संप्रपंच अज्ञान जाये । जेणें येक मी गोचर होयें । तें उपपत्ती-चेनि उपायें । गीतारूप हें ॥ ८८ ॥ मियां ज्ञान तुज आ-पुलें । नानापरी उपदेशिलें । येणें अज्ञानता सांडवळें । धर्मा-धर्म जें ॥ ८९ ॥

“तर हे वीरा ! मला सर्वव्यापकाला आपल्या सर्व अंतर्बाह्य व्यापाराचाच विषय करून सोड. १३५३ सर्वांगानें घायु जसा आकाशाला मिळून असतो, त्याप्रमाणें तूंही सर्वकर्मांमध्ये मलाच मिसळून अस. १३५४ किंबहुना तूं आपलें मन माझ्या ठिकाणचेंच वतन करून ठेव. माझ्या ऐकण्यानेच कान भरून टाक. १३५५ स्त्रीची दृष्टि जशी आपल्या पतीवर वेधून राहते, त्याप्रमाणें आत्मज्ञानानें पवित्र ज्ञालेल्या माझ्या मूर्ति जे सज्जन, त्यांच्यावर तुझी दृष्टि राहूं दे. १३५६ सर्व वस्तीचें वसतिस्थान मी; माझी जी उत्तम उत्तम नामें आहेत, तीं जिवाला येण्यासाठीं वाणीच्या वाटेस लाव. १३५७ हाताचें करणें, किंवा पायाचें चालणें, तें सुद्धां माझ्या प्रीत्यर्थ होईल असें कर. १३५८ अर्जुना ! आपला असो कीं, परका

१ उदारपणाला. २ धर्मात्मराजा, महादाला. ३ प्रसंग. ४ मीठ. ५ प्राप्तीपर्यंत. ६ स्पष्टता. ७ पूर्वी. ८ प्राप्त झाली. ९ अटकावाचें. १० तुझ्या खाधीन झालों. ११ प्रपंचाबद्द. १२ साक्षात्. १३ युक्तीच्या.

असो; त्याजवर उपकार करणारा होऊन, त्या यज्ञाने माझा उत्तम यज्ञ करणारा हो. १३५९ हे एक एक काय काय ह्मणून शिकवावे? एक सेवकपणा मात्र आपल्याकडे घेऊन बाकी सर्व मी आहे हे समजून सेवाच करीत जा. १३६० तेव्हां प्राणिमात्राचा द्वेष जाऊन सर्वत्र मीच एक आहे असे समजून 'नमस्कार' 'नमस्कार' असे करशील, तेव्हांच तू माझ्या दृढतर आश्रयास पात्र होशील. १३६१ मग साऱ्या भरलेल्या जगामध्ये तिसऱ्याची गोष्ट ही न उरता, तुझ्याला आह्वालाच, एकांत होऊन राहील. १३६२ तेव्हां पाहिजे त्या अवस्थेमध्ये मला तुझा आणि तुला माझा उपभोग घेतां येईल, असे आयतेंच सुख वृद्धिंगत होईल. १३६३ आणखी अर्जुना! तिसरे, मध्ये अडथळा करणारे नाहीसे झाले ह्मणजे, बाकी राहणार तें मीच; ह्मणून शेवटी मलाच पावशील. १३६४ ज्याप्रमाणें जळांतील प्रतिबिंब, जळ नाहीसे झाल्यावर बिंबांत येतांना काहीं प्रतिबंध आहे काय? १३६५ वायु आकाशाला मिळतांना, लाटांस समुद्र मिळतांना, कोणाची आडकाठी असणार? १३६६ ह्मणून तू आणि मी हे निरनिराळ्या देहामुळे मात्र दिसतो आहो. तेव्हां त्यांच्या अभावीं तू मत्स्वरूपच होशील. १३६७ ह्या भाषणामध्ये होय नाही काहींएक ह्मणू नको. ह्यांत अन्यथा असेल तर तुझीच शपथ! १३६८ आणखी तुझी शपथ वाहणें हे आत्मस्वरूपावरच हात मारण्यासारखें आहे. परंतु प्रीतीचें लक्षण असे आहे कीं, ती लजेची आठवणच होऊं देत नाही. १३६९ बाकी प्रपंचास वेढा घालून ज्याणें हा विश्वाभास सत्य करून दाखविला आहे, आणि ज्याचा आज्ञेचा प्रताप तर असा कीं, जो काळालाही जिंकिल. १३७० तो मी सत्यसंकल्प देव; जगाच्या कल्याणाविषयीं तत्पर; मग शपथेबद्दल शंका कशाला घ्यावी? १३७१ पण अर्जुना! तुझ्या छंदानें मी देवपणाचीं लक्षणेही सोडून दिलीं. मी अर्धा आहे. तूं मिळाले-

लास ह्मणजे संपूर्ण होतो. १३७२ हे धनंजया! आपल्या कार्यासाठीं राजाही आपली आपण शपथ वाहतो, त्यासारखेंच हेंही आहे. १३७३ तेव्हां अर्जुन ह्मणाला "देवा! इतकें हें अचाट बोलूं नये. कारण, तुझ्या एका नांवानेंच आमचें कार्य होणार आहे. १३७४ असे असतां आपण आणखी सांगावयास तयार होतां, इतकेंच नव्हे, तर सांगातांना वचनही देतां, तेव्हां ह्या तुमच्या प्रसन्नतेला काहीं अंतपार आहे काय? १३७५ सूर्याचा एक किरणही कमलाचें सर्व वन विकसित करून सोडतो. असे असतां तो साराच प्रकाश निरंतर देतो. १३७६ पृथ्वीला गारीगार करून समुद्र भरून जातील येवढी मोठी वृष्टि होते तेथें, चातकाचें निमित्त कशाचें? १३७७ ह्मणून तुझ्या औदार्याला निमित्त नाही ह्मणतां येऊं नये ह्मणून मी निमित्तास धनी झालों आहे. बाकी हे कृपानिधि! हे महादात्या! हा आपला लाभ सर्व जगालाही फार मोठा झाला आहे. १३७८ तेव्हां देव ह्मणाले "थांब. तें असूं दे. स्तुति करित बसण्याची ही वेळ नव्हे. तर तूं खरोखर ह्याच उपायांनीं मला पावशील. १३७९ अर्जुना! मीठ समुद्रांत पडलें, तर तें क्षणामध्ये विरूनच जाईल. उरावयाला कारण काय? १३८० तद्वत् सर्वत्र माझेच भजन केलें, सर्व मत्स्वरूपच होऊन राहिलें, ह्मणजे झाडून सारी अहंता नाहीशी होऊन तूं खरोखरच मीच होशील. १३८१ अशा प्रकारें कर्मापासून माझ्या प्राप्तीपर्यंत उपायांची स्पष्टता तुला दाखवून दिली, हें लक्षांत आण. १३८२ कारण अर्जुना! आधीं तर सारीं कर्मे मला अर्पण केलीं कीं, सर्व ठिकाणीं माझी प्रसन्नताच प्राप्त होते. १३८३ नंतर माझ्या ह्या प्रसादानें माझे ज्ञान परिपूर्ण होतें. आणि त्याच्या योगेंकरून निश्चयानें माझ्या स्वरूपांमध्ये ऐक्य होतें. १३८४ मग पार्था! त्या ठिकाणीं साध्य आणि साधन हीं दोन्हीही

नाहींशीं होतात. किंबहुना तुला कांहींच उरत नाही झटले तरी चालेल. १३८५ तर तूं आपलीं सारीं कर्मे सदा सर्वकाल मला अर्पण केलींस, त्यामुळे आज ही माझी प्रसन्नता तुला प्राप्त झाली आहे. १३८६ झणून ह्या प्रसादाच्या बळाने ह्या युद्धामध्ये आणखी एक नवीनच आडकाठी येईल, हे एक वेळही मनांत आले नाही. इतका मी तुला भुलून गेलो आहे. १३८७ कारण, प्रपंचासह अज्ञानाचा नाश होतो, जिच्या योगाने एक मीच व्यक्त होतो, त्या युक्तीचा उपाय हे ह्या गीतेचे स्वरूप आहे. १३८८ मी तुला अनेक प्रकारांनीं ज्ञान दिले. येणेकरून धर्म आणि अधर्मरूप जे जे झणून कांहीं अज्ञान आहे, ते सारे नाश पावले आहे.” १३८९

सर्वधर्मान्परित्यज्य मामेकं शरणं ब्रज ।

अहं त्वा सर्वपापेभ्यो मोक्षयिष्यामि मा शुचः ६१

[सर्वधर्मान्परित्यज्य] आशा जैसी दुःखातें । व्याली निंदा दुरितें । हे असो जैसें दैन्यातें । दुर्मगत्व ॥ १३९० ॥ तैसें स्वर्गनरकसूचक । अज्ञान व्याले धर्मादिक । तें सांझनि घालीं अशेख । ज्ञानें येणें ॥ ९१ ॥ हातीं घेऊनि तो दोर । सांढिजे जैसा सर्पाकार । कां निद्रात्यागे धराचार । स्वप्नींचा जैसा ॥ ९२ ॥ ना ना सांढिलेनि कंबळें । चंद्रीचें धुपे पिवळें । व्याधियागे कंडुवाळें । पण मुखाचें ॥ ९३ ॥ अगा दिवसा पाठी देउनी । मृगजळ घापे लज्जुनी । कां काष्ठत्यागे वन्ही । लजिजे जैसा ॥ ९४ ॥ तैसें धर्माधर्माचें उवाळ । दावी अज्ञान जें कां मूळ । तें लज्जुनि लजीं सकळ । धर्मजात ॥ ९५ ॥ [मामेकं] मग अज्ञान निमालिया । मीचि मेक असें अपेसया । संनिद्र स्वप्न गेल्यां । आपण पें जैसें ॥ ९६ ॥ तैसा मी एकवांचूनि कांहीं । मग भिन्नाभिन्न आन नाही । सोडईबोधें तयाच्या ठायीं । अनन्य होय ॥ ९७ ॥ [शरणं ब्रज] पें आपलेनि भेदेबिण । माझे जाणजे जें एकपण । तयाचि बाव शरण । मज येणें गा ॥ ९८ ॥ जैसें घटाचेनि नाशें । गंगेनीं गगन प्रवेशे । मज शरण येणें तैसें । ऐक्य करी ॥ ९९ ॥ सुवर्णमणि सोनयां । ये कळोळ जैसा पाणियां । तैसा मज धनंजया । शरण ये तूं ॥ १०० ॥

१ पातकें. २ दुर्दैवपणा. ३ सोडून दे. ४ प्रपंच. ५ कावीळ रोगाचें. ६ चांदणें. ७ कडवटपणा. ८ बंड. ९ नाश पावल्यावर. १० निद्रेसह. ११ भिन्नाभिन्न जें द्वैत त्याच्या ठाई. १२ घटाकाय आकाशांत मिळतें.

[अहं त्वा सर्वपापेभ्यः] वांचूनि सागराच्या पोटी । वडवा- नळ शरण आला किरीटी । जाऊं न ठके तया गोठी । वांचूनि दे पां ॥ १ ॥ मजही शरण रिधिजे । आणि जीव- त्वेंचि अशिजे । धिग बोलें यिया न लेंजे । प्रज्ञा केवि ॥ २ ॥ अगा प्राकृताही राया । आगीं पडे जें धनंजया । तें दसिरुहि कीं तया । समान होय ॥ ३ ॥ मा मी विश्वेश्वर भेटें । आणि जीवेंधरी न सुटे । हे बोल नको बोखेटे । कौनी लाऊं ॥ ४ ॥ झणौनि मी होऊनि मातें । सेवणें आहे आयितें । तैसें करी हाता येतें । ज्ञानें येणें ॥ ५ ॥ मग ताकौनियां काढिलें । लोणी भाषौतें ताकीं घातलें । परि न धेपेचि कांहीं केलें । तेणें जेवि ॥ ६ ॥ तैसें अद्वयत्वं मज । शरण रिघालिया तुज । धर्माधर्म हे सहज । लागतील ना ॥ ७ ॥ कोह उमें खाय माती । तें परिसाचिये संगती । सोनें जालया पुढती । न शिविजे मळे ॥ ८ ॥ हे असो काष्ठापासोनि । मथूनि घेतल्या वन्ही । मग काष्ठेही कोंडोनि । न ठके जैसा ॥ ९ ॥ अर्जुना काय दिनकर । देखत आहे आंधार । कीं प्रबोधी होय गोचर । स्वप्नभ्रम ॥ १० ॥ तैसें मजसीं येकवटलेया । मी सर्वरूप वांचूनियां । आन कांहीं उरावया । कारण असें ॥ ११ ॥ [मोक्षयिष्यामि] झणौनि तयाचें कांहीं । चितीं ना आपल्या ठाई । तुसें पाप- पुण्य नाही । मीचि होईन ॥ १२ ॥ तेथ सर्वबंधलेक्षणें । पापें उरावें दुजेपणें । तें माझ्या बोधीं बोयाणें । होऊनि जाईल ॥ १३ ॥ जळीं पडिलिया लवणा । सर्वही जळ होय विवेक्ष- णा । तुज मी अनन्यशरणा । होईन तैसा ॥ १४ ॥ येतुलेनि अपेसया । सुटलाचि आहासि धनंजया । [मा शुचः] वेई मज प्रकाशोनियां । सोडवीन तूतें ॥ १५ ॥ याकारणें पुढती । हे आधी न वाहे चितीं । मज एकासि ये सुमती । जाणोनि शरण ॥ १६ ॥ ऐसें सर्वरूपरूपसें । सर्वदेष्टिबोळसें । सर्वदेशनिवासें । बोलिले श्रीकृष्ण ॥ १७ ॥ [स्वानुभवसुखो- क्तयः] मग सांवळा सकंकेण । बाहु पसरौनि दक्षिण । आ- लिंगिला स्वशरण । भक्तराज तो ॥ १८ ॥ न पेंवेतां जयातें । कोखे सुनि बुद्धीतें । बोलणें मागीतें । बोसरेलें ॥ १९ ॥ ऐसें जें कांहीं येक । बोला बुद्धीसिही अटक । तें थावया

१ टाकून दे. २ लाजत नाही. ३ यः कश्चित् राजाच्या. ४ बटकूर. ५ जीवदशा. ६ वाईट. ७ ऐकू. ८ ताकांतून. ९ पुनः. १० न राहें. ११ जाणूत. १२ प्रत्यक्ष. १३ चित्त नको. १४ सर्वथैव बंधाला कारण अशा. १५ व्यर्थ. १६ हे सुज्ञा. १७ प्रकट होऊन. १८ मनोव्यथा. १९ सर्व रूपें ज्याच्या योगाने रूपवान् होतात. २० हस्तभूषणयुक्त. २१ केवळ आपल्याला शरण आलेला. २२ ज्या वस्तूची प्राप्ति न होतां बोलणें बुद्धीला काखेस माकून मागीतें=मागे हटतें अशी जी वस्तु. २३ मागे हटलें. २४ दुःप्रवेश्य.

मिष । खेपाचें केलें ॥ १४२० ॥ हृदया हृदय येक जालें ।
 ये हृदयींचें ते हृदयीं घातलें । द्वैत न मोडितां केलें । अ-
 पणाऐसैं अर्जुना ॥ २१ ॥ दीप दीप लाविला । तैसा परि-
 ध्वंग तो जाल्म । द्वैत न मोडितां केला । आपणपें पार्थ
 ॥ २२ ॥ तेव्हां सुखाचा मग तया । पूर आला जो धन-
 जया । तेथ वाढ तन्हीं बुडोनियां । ठेला देव ॥ २३ ॥
 क्षिपु क्षिपुतें पावों जाये । तें पावणें ठाकें दुणा होये । वरी
 सिंगे पुरवणिये । आकाशही ॥ २४ ॥ तैसं तया दोषांचें
 मिळणें । दोषां नावरे जाणावें कवणें । किंबहुना श्रीनारायणें ।
 विश्व कांदलें ॥ २५ ॥ [‘गीतायाः गर्भे त्रिकांशोऽपि व्याक-
 रोति’] एवं वेदाचें मूळसूत्र । सर्वाधिकारैकपवित्र । श्रीकृष्णें
 गीताशास्त्र । प्रकट केलें ॥ २६ ॥ येथ गीता मूळ वेदां ।
 ऐसे केवि पां आलें बोधा । हें झणाल तरी प्रसिद्धा ।
 उपपत्ति सांगों ॥ २७ ॥ तरी जयाच्या निश्चोटी ।
 जन्म झालें वेदराशी । तो सत्यप्रतिज्ञ पेंजेसी । बो-
 लिला स्वमुखें ॥ २८ ॥ झणौनि वेदां मूळभूत । गीता
 झणो हें होय उचित । आणिकही येकी येथ । उपपत्ति
 असे ॥ २९ ॥ जें न नशत स्वरूपें । जयाचा विस्तार जेथ
 रूपे । तें तयाचें झणिपे । बीज जर्गी ॥ १४३० ॥ तरि
 कांडत्रयात्मक । शब्दराशी अशेष । गीतेमाजि असे रेंव ।
 बीजें जैसा ॥ ३१ ॥ झणौनि वेदांचें बीज । श्रीगीता
 होय हें मज । गंमे आणि सहज । दिसतही आहे ॥ ३२ ॥
 जे वेदांचे तिन्ही भाग । गीते उमटले असती चांग । भूष-
 णरत्नी सर्वांग । शोभलें जैसें ॥ ३३ ॥ तियेंचि कर्मादिकें
 तिन्हीं । कांडें कोणकोणे स्थानी । गीते आहाति तें नयनीं ।
 दाखळ आइक ॥ ३४ ॥ [‘गीताशास्त्रोत्पत्त्यादिप्रस्तावना’]
 तरि पहिला जो अध्याय । तो शास्त्रप्रवृत्तिप्रस्ताव । द्वितीयीं
 सांख्यसद्भाव । प्रकाशिला ॥ ३५ ॥ मोक्षदानां स्वतंत्र ।
 ज्ञानप्रधान हें शास्त्र । येतुल्लें दुर्जी सूत्र । उभारिलें ॥ ३६ ॥
 [‘कर्मकांड’] मग अज्ञानें बांधलेया । मोक्षपदी बैसावया ।
 साधनारंभ तो तृतीया- । ध्यायीं बोलिला ॥ ३७ ॥ जे दे-
 हाभिमानबंधें । सांझि काम्यनिषिद्धें । विहित परि अप्रमादें ।
 अनुष्ठानें ॥ ३८ ॥ ऐसेनि सद्धानें कर्म करावें । हा तिजा
 अध्यायीं देव । निर्णय केला तें जाणार्व । कर्मकांड येथ
 ॥ ३९ ॥ [‘उपासनाकांड’] आणि तेंचि नित्यादिक । अज्ञा-
 नाचें आवश्यक । आचरतां मोचक । केंवी होय पां ॥ १४४० ॥
 ऐसी अपेक्षां जालिया । बद्ध सुसुधुते आलिया । देवें ब्रह्मा-

१ आलिंगनाचें निमित्त केलें. २ दोषांचे देह तसेच
 असतां. ३ आलिंगन. ४ मोठा. ५ साक्षास. ६ भरलें.
 ७ सर्व अधिकारांत अतिशुद्ध. ८ सयुक्तिक कारण. ९ श्वासो-
 च्छ्वासांपासून. १० प्रतिज्ञेवर. ११ न नासतां. १२ कर्म-
 उपासना-ज्ञानरूप. १३ वेद. १४ वृक्ष. १५ वाटे. १६ अज्ञा
 प्रकारें. १७ इच्छा. १८ मोक्षच्छुद्धितीला.

पणतें क्रिया । सांगीतली ॥ ४१ ॥ जे देह वाचा मानचें ।
 विहित निपजे जें जैसें । तें येक ईश्वरोद्देशें । कीजे झणौतलें
 ॥ ४२ ॥ हेंचि ईश्वरी कर्मयोगें । भजनकथनाचें सांगें ।
 आदरिलें शेषभागें । चतुर्थाचेनी ॥ ४३ ॥ तें विश्वरूप
 अकरावा । अध्याय संपे जंव आषषा । तंव कर्म ईश म-
 जावा । हें जें बोलिलें ॥ ४४ ॥ तें अष्टाध्यायीं उचड ।
 जाण येथें देवताकांड । शास्त्र सांगतसे आड । मोडनि
 बोले ॥ ४५ ॥ [‘ज्ञानकांड’] आणि तेणेंचि ईशप्रसादें । श्री-
 गुरुसंप्रदायलब्धें । साच ज्ञान उद्बोधे । कोवळें जें ॥ ४६ ॥
 तें अद्वैतादिप्रभृतीकी । अथवा अमानित्वादिकीं । वाढविजे
 झणौनि लेखीं । बारावा गणू ॥ ४७ ॥ तो बारावा अध्याय
 आदी । आणि पंधरावा अवधि । ज्ञानफळपाकसिद्धि । निरू-
 पणासी ॥ ४८ ॥ झणौनि चव्दही इहीं । ऊर्ध्वमूर्खातीं अ-
 ध्यायीं । ज्ञानकांड ये ठायीं । निरूपिजे ॥ ४९ ॥ एवं
 कांडत्रयरूपिणी । श्रुतीच हे कोडिंशवाणी । गीतापद्यरत्नाचीं
 लेणीं । लेयिलि आहे ॥ १४५० ॥ हें असो कांडत्रयात्मक ।
 श्रुति मोक्षरूप फळ येक । बोभावे जें आवश्यक । ठाकावें
 झणौनी ॥ ५१ ॥ [‘षोडशाध्यायत्रयकारणं दर्शयति’]
 तयाचेनि साधन ज्ञानेंसी । वैर करी जो प्रतिदिशशीं । तो
 अज्ञानवर्ग घोडशीं । प्रतिपादिजे ॥ ५२ ॥ तोचि शास्त्राचा
 बोळावा । घेवोनि वैरी जिर्णावा । हा निरोप तो सतरावा ।
 अध्याय येथ ॥ ५३ ॥ ऐसा प्रथमालागोनी । सतरावा लेणी
 करुनी । आत्मनिश्वास विवरुनी । दाविला देवें ॥ ५४ ॥
 तया अर्थजातां अशेषां । केला तात्पर्याचा आवाका । तो
 हा अठरावा देखा । कलशाध्याय ॥ ५५ ॥ एवं सकळ सां-
 ख्यसिंधु । श्रीभगवद्गीताप्रबंधु । हा ओदार्यें आगळा वेडु ।
 मूर्त जाण ॥ ५६ ॥ वेद संपन्न होय ठाई । परि कृपण ऐसा
 आन नाहीं । जे कार्नी लागला तिहीं । वर्णाच्याचि ॥ ५७ ॥
 येरां भवव्यथा ठेलियां । श्रीशुद्धादिकां प्राणियां । अनेकसर
 मांडूनियां । राहिला आहे ॥ ५८ ॥ तरी मज पाहतां तें
 मागील उणें । फेडावया गीतापणें । वेद वेडला मेलतेणें ।
 सेव्य होआवया ॥ ५९ ॥ ना हें अर्थ रिगोनि मनीं । श्रवणें

१ टिकाण. २ आठ अध्यायांत. ३ उपासनाकांड.
 ४ गीताशास्त्र. ५ प्रतिबंध निवारून, गोधदून. ६ गणनेंत.
 ७ पंधराव्याच्या. ८ लहानशी. ९ गर्जून सांगे. १० सो-
 बती. ११ जिवावा. १२ शेवट. १३ वेद, वेद हे निःश्वासा-
 पासून झाले ‘यस्य निःश्वसितं वेदा यो वेदेभ्योऽक्षिक्तं जगत् ।
 निर्ममे...’. १४ विचार. १५ शिखररूप. १६ प्रकृतिपुरुषांचें
 विवेचन ज्यानें केलें जातें तो सांख्यसमुद्र. १७ ग्रंथ.
 १८ प्रत्यक्ष. १९ समर्थ. २० कदर्थु (कद्). २१ अनधिकारी.
 २२ मला (ज्ञानदेवाला) असें वाटतें कीं. २३ आकाररूप.
 २४ मल्ल्या कोणासही.

लागोनि कानीं । जपमिधें वदनीं । वसोनियां ॥ १४६० ॥
 ये गीतेचा पाठ जो जाणे । तयाचेनि सांगावीपणें । गीता
 लिहोनि वाहणें । पुस्तकमिधें ॥ ६१ ॥ ऐसैसा मीसकटा ।
 संसाराचा चोहटां । गैवादि घालित चोखटा । मोक्षसुखाची
 ॥ ६२ ॥ परि आकाशीं वसावया । पृथ्वीवरी बैसावया ।
 रविदीप्ती राहाटावया । आचार नभ ॥ ६३ ॥ तेवि उत्तम
 अधम ऐसें । सेवितां कवणातेंही न पुसे । कैवल्यदानें सरिसें ।
 निववीत जगा ॥ ६४ ॥ यालागि मागिलि कुटी- । भ्याला
 वेद गीतेच्या पोटी । रिगाला आतां गोमटी । कीर्ति पातला
 ॥ ६५ ॥ झणौनि वेदाची सुसेव्यता । ते हे मूर्त जाण श्री-
 गीता । श्रीकृष्णें पंडुसुता । उपदेशिली ॥ ६६ ॥ परि वत्सा-
 चेनि वोरसैं । दुभतें होय घरा उद्देशें । जालें पांढवाचेनि
 मिधें । जगदुद्धरण ॥ ६७ ॥ चातकाचिये कणवे । मेव
 पांणियेसिंधावे । तेथ वराचर आघवें । निर्वाळें जेवि ॥ ६८ ॥
 कां अन्नन्यगती- कमळा- । लागीं सूर्य ये वेळोवेळा । किं सु-
 खिया होइजे डोळा । त्रिभुवनीचा ॥ ६९ ॥ तैसें अर्जुनाचेनि
 व्याजें । गीता प्रकाशनि श्रीराजें । संसारायेवढें थोर ओझें ।
 फेडिलें जगाचें ॥ १४७० ॥ सर्वशास्त्ररत्नदीप्ती । उजळिता
 हा त्रिजगती । सूर्य नव्हे लक्ष्मीपती । वैष्णवाकाशीचा ॥ ७१ ॥
 बापकुळ तें पवित्र । जेथिचा पार्थ या ज्ञाना पात्र । जेणें
 गीता केलें स्वतंत्र । आचार जगा ॥ ७२ ॥ हें असो मग
 तेणें । सद्गुरु-श्रीकृष्णें । पाथोचें मिसळणें । आणिलें द्वैता ॥ ७३ ॥
 पाठीं झणतसे पांढवा । शास्त्र हें मानलें की जीवा । तेथ
 येरू झणे देवा । आपुलिया कृपा ॥ ७४ ॥ तरि निर्धान
 जोडावया । भाग्य घडे गा धनंजया । परि जोडिलें भोगा-
 वया । विर्यायें होय ॥ ७५ ॥ पै क्षीरसागरायेवढें । अविरजो
 दुधाचें भाडें । सुरां असुरां केवढें । मथितां जालें ॥ ७६ ॥
 तें सौंदर्यही फळा आलें । जें अमृतही डोळां देखिलें । परि
 वरिचिल चुकले । जंतनेतें ॥ ७७ ॥ तेथ अमरत्वा वोगरिलें ।
 तें मरणाचिलागीं जालें । भोगों नेणतां जोडलें । ऐसैं आहे
 ॥ ७८ ॥ नहुष स्वर्गाधिपति जाला । परीं रौद्रादीं भावावला ।
 तो भुजंगत्व पावला । नेणसी काथी ॥ ७९ ॥ झणौनि बहुत पुण्य
 दुवां । केलें तेणें धनंजया । आजि शास्त्रराजा दैया । जालासि

१ मजसहित. २ चवाक्यावर. ३ सत्र. ४ फिरण्याला. ५ अवकाश. ६ मोक्षदानें. ७ मागल्या निंदेला भ्याला. ८ पान्थानें, ममतेनं. ९ दयेनं. १० पाण्यासहित. ११ घात झालें. १२ एकनिष्ठ अशा कमळासाठी. १३ दूर केलें. १४ सुखरूप आकाशीचा. १५ वसतिस्थान. १६ आलिंगन. १७ गुप्त धन. १८ कवित्. १९ न विरजलेलें. २० जिवा-वर उदार होऊन झटणें. २१ संभाळण्याला. २२ वाडिलें. २३ नहुष राजाला कांहीं दिवस स्वर्गाचें आधिपत्य मिळालें तेव्हां. २४ वर्तणुकीत चुकला. २५ या गीतेवर.

विषय ॥ १४८० ॥ तरि यवाचि शास्त्राचेनि । संप्रदायें पांघु-
 रौनि । शास्त्रार्थ हा निकैनी । अनुष्ठी हो ॥ ८१ ॥ येन्ही
 अमृतमथना- । सारिखें होईल अर्जुना । जरी रिचसी अनुष्ठाना ।
 संप्रदायेंवीण ॥ ८२ ॥ गाय घड जोडे गोमटी । ते तैचि
 पैय दे किरीटी । जें जाणिजे हातवटी । सांजवणीची ॥ ८३ ॥
 तैसा श्रीगुरु प्रसन्न होये । शिष्य विद्याही कीर लाहे । परि
 ते फळे संप्रदायें । उपासिलिया ॥ ८४ ॥ झणौनि शास्त्री जो
 इये । उचित संप्रदाय आहे । तो ऐक आतां बहुवें ।
 आदरेंसी ॥ ८५ ॥

“आशेपासून दुःखें; आणि निंदेपासून पा-
 तकें जशीं उत्पन्न होतात; हें असो, दुर्दैव जसें
 दारिद्र्य उत्पन्न करतें, १३९० त्याप्रमाणें स्वर्गनर-
 कसुचक अज्ञानापासून धर्मादिक उत्पन्न होतात.
 तीं सारीं ह्या ज्ञानाच्या योगानें नाहींशीं करून
 टाक. १३९१ दोर हातांत घेऊन सर्पाकार
 जसा टाकून घावा, किंवा निद्रा गेल्यानंतर
 स्वप्नांतला प्रपंच जसा सोडावा, १३९२ किंवा
 कामीण नाहींशी झाली झणजे चंद्राच्या चांद-
 ण्यांतील पिंवल्लेपणाही नाश पावतो; रोग गेला
 झणजे तोंडाचा जसा कडवटपणा जातो;
 १३९३ दिवस गेला झणजे मृगजळ जसें नाहींसें
 होतें, किंवा (जळकें) लांकूड टाकून दिलें झणजे
 जसा अग्नि टाकावा लागतो, १३९४ त्याप्रमाणें
 धर्माधर्माचें बंड, ज्याच्या मुळाशीं अज्ञान अस-
 लेलें दृष्टीस पडतें, तें टाकून सारे दरोबस्त
 धर्मच सोडून दे. १३९५ तें अज्ञान निघून गेलें
 झणजे अर्थात् मीच एक राहतों. निद्रेसहवर्त-
 मान स्वप्न गेलें झणजे जसें आपलें आपण राहतों,
 १३९६ त्याप्रमाणें माझ्या एकाशिवाय दुसरें
 भिन्न अभिन्न असें दुसरें कांहींच नाहीं. “तोच
 मी” ह्या ज्ञानानें त्याच्या ठिकाणीं अनन्य हो.
 १३९७ आपल्याही भेदावांचून माझे एकत्व
 जाणणें त्याचेंच नांव मला शरण येणें होय.
 १३९८ घटाचा नाश झाला झणजे जसें त्यां-
 तील आकाश, आकाशामध्ये शिरतें, त्याप्रमाणें
 मला शरण येणें माझ्याशीं ऐक्य करतें. १३९९
 सोन्याचे मणी जसे सोन्यांत येतात; पाण्याच्या

१ धारण करून. २ चांगलेपणांनं. ३ दूध देते, पिबों ये
 अशा पाठीं धार काढणें. ४ दोहनाची. ५ आस्थापूर्वक.

लाटा जशा पाण्यांत येतात; त्याप्रमाणे अ-
 र्जुना ! तूही मला शरण ये. १४०० नाहीतर
 अर्जुना ! समुद्राच्या पोटांमध्ये वडवानळ
 शरण आला तर काय उपयोग ? तो त्याला
 जाळणार नाही, ही गोष्ट सोडून दे. १४०१
 मला शरण येऊन सुखां जीवपणानेच कायम
 राहिला, अशा बोलण्याला धिक्कार असो.
 तसें करतांना बुद्धीला लज्जा वाटणार नाही
 काय ? १४०२ वा अर्जुना ! यःकश्चित् राजा-
 च्या आंगाखाली पडणारें एखादें बटकुर असलें,
 तर तें सुखां त्याच्या बरोबरीचें होतें. १४०३
 मग मी तर विश्वेश्वर आहे. आणि तो मला भे-
 टल्यानंतरही जीवदशा सुटणार नाही, हें दुर्भा-
 षण कानावर सुखां घेऊं नको. १४०४ ह्मणून
 मी होऊन आयतें मलाच सेवन करावयाचें
 असतें. ह्याकरितां ह्या आलेल्या ज्ञानानें मी हस्त-
 गत होईन असें कर. १४०५ मग ताकापासून
 काढलेलें लोणी फिरून ताकांत घातलें, तर
 तें कांहीं केलें तरी जसें घेत नाही, १४०६
 त्याप्रमाणें अद्वयपणानें मला तूं शरण आलास
 ह्मणजे अर्थात् तुला धर्माची किंवा अधर्माची
 कांहीं गरज राहणार नाही. १४०७ लोखंड
 उभें असलें तर, माती खातें. पण तें परि-
 साच्या संगतीनें सोने झाल्यानंतर मळ त्याला
 शिवत नाही. १४०८ हें असो. काष्ठापासून
 मंथन करून अग्नि काढला ह्मणजे मग तो जसा
 काष्ठांनीं कोंडून राहत नाही, १४०९ अर्जुना !
 सूर्य हा कधीं आंधार पाहतो काय ? किंवा
 जागृतींत स्वप्नाचा भ्रम प्रकट होतो काय ?
 १४१० त्याप्रमाणें माझ्याशीं ऐक्यरूपता झाली
 ह्मणजे मग माझ्या सर्व स्वरूपाशिवाय, दुसरें
 रहावयाला कांहीं कारण आहे काय ? १४११
 ह्मणून त्याची तूं आपल्या ठिकाणीं कांहींएक
 चिंता करूं नको. हें पहा ! तुझे पाप आणि
 पुण्य मीच होईन. १४१२ तेव्हां सर्वथैव
 बंधाला कारण, अशा पापानें दुसरेपणानें
 रहावें हें माझ्या ज्ञानानें व्यर्थ होऊन जाईल.
 १४१३ हे सुज्ञा ! पाण्यांत मीठ पडलें तर

सारें पाणीच होऊन जातें. त्याप्रमाणें तूं मला
 अनन्यभावे शरण आलास ह्मणजे तसाच मद्रूप
 होऊन जाशील. १४१४ अर्जुना ! तेवढ्यानें
 आपोआपच मुक्त होशील. याकरितां मला
 आपलासा करून घे. ह्मणजे मी तुला सोडवीन
 १४१५ आणखी पुन्हां ही मनामध्ये चिंता
 वाहूं नको. हे बुद्धिमंता ! मला एकालाच
 तूं शरण ये." १४१६ सर्व रूपे ज्याच्या योगानें
 रूपवान् होतात; सर्व दृष्टी ज्याच्या योगानें
 डोळस होतात; असे सर्वत्र व्यापून असणारे जे
 श्रीकृष्ण ते ह्याप्रमाणें बोलले. १४१७ आ-
 णखी कंकणयुक्त शामवर्णाचा उजवा बाहु पस-
 रून आपणास शरण आलेल्या भक्तराजास
 आलिंगन दिलें. १४१८ ज्या वस्तूची प्राप्ति न
 होतां, बोलणें बुद्धीला काखोटीस मारून मार्गें
 हटतें; १४१९ अशी जी कांहीं एक वस्तु,
 जिच्यामध्ये आपण व बुद्धिही शिरकत नाही, ती
 वस्तु देण्यासाठीं आलिंगनाचें एक निमित्त केलें.
 १४२० हृदयाला हृदय भिडलें; ह्या हृदयांतलें
 त्या हृदयांत घातलें; द्वैत न मोडतां अर्जुनाला
 आपणासारखें करून सोडलें. १४२१ दिव्यानें
 दिवा लावावा त्याप्रमाणें तो आलिंगनाचा
 प्रकार झाला. द्वैत न मोडतां पार्थाला स्वस्व-
 रूप करून सोडलें. १४२२ तेव्हां त्या अर्जु-
 नाला इतका कांहीं सुखाचा पूर आला कीं,
 देव येवढे मोठे होते तरी सुखां त्यांत बुडून
 गेले. १४२३ समुद्राला समुद्र भेटावयास
 गेला ह्मणजे तें भेटणें एका बाजूस राहून तोच
 दुप्पट होतो. आणि शिवाय आपल्या सांठ्याला
 अवकाश सुखां होतो. १४२४ त्याप्रमाणें त्या
 दोघांची भेट दोघांनाही आवरेना. हें कळणार
 तरी कोणाला ? किंवाहुना श्री नारायणांनीं
 सारें विश्वच कोंडून टाकलें ह्मटलें तरी चालेल.
 १४२५ अशा प्रकारें वेदाचें मूळसूत्र, सर्व
 अधिकारामध्ये अत्यंत पवित्र, असें जे गीता-
 शास्त्र, तें श्रीकृष्णांनीं प्रगट केलें. १४२६
 येथें गीता ही वेदाचें मूळ असें कशावरून स-
 मजलें असें ह्मणाल ह्मणून, सबळ कारण सांगतो.

१४२७ तर ज्याच्या श्वासोच्छ्वासापासून वेदरा-
शींचें जन्म झालें, असा जो सत्यप्रतिज्ञ भगवान्
त्यानें आपल्या मुखानें ती सांगितली. १४२८ म्ह-
णून वेदांना मूलभूत गीता असें म्हटलें तें योग्यच
आहे. शिवाय आणखीही एक कारण आहे.
१४२९ नाश न पावणारें जें स्वरूप, आणि
ज्याचा विस्तार ज्यांत गुप्त असतो, तें त्याचें
बीज असें जगामध्ये म्हणतात. १४३० तर
बीजामध्ये जसा वृक्ष असतो, त्याप्रमाणें त्रिकां-
डात्मक एकून एक वेदराशी ह्या गीतेमध्ये आ-
हेत. १४३१ झणून श्रीगीता हें वेदांचें
बीज आहे असें मला वाटतें. आणि उघड दि-
सण्यांतही दिसतेंच आहे. १४३२ रत्नालंका-
रांनीं जसें सारें आंग शोभतें, त्याप्रमाणें वेदांचे
जे तिन्ही भाग ते, गीतेमध्ये उत्कृष्ट रीतीनें उम-
टलेले आहेत. १४३३ तींच कर्मादिक तीन
कांडें, गीतेमध्ये कोणकोणत्या ठिकाणीं आहेत
तीं डोळ्यांस दाखवून देऊं. ऐका. १४३४ तर
पहिला जो अध्याय तो शास्त्रारंभाची प्रस्तावना
होय. दुसऱ्या अध्यायांत सांख्यशास्त्राचीं उत्तम
लक्षणें व्यक्त केलीं. १४३५ हें शास्त्र ज्ञानप्रधान
असून मोक्षदान देण्याविषयीं मुखत्यार आहे,
अशाबद्दल दुसऱ्या अध्यायांत सूत्राची उभारणी
केली आहे. १४३६ नंतर अज्ञानानें बद्ध झाले-
ल्याला मोक्षपदावर बसावयाला साधनें काय
तीं सांगण्याला आरंभ तिसऱ्या अध्यायांत केला
आहे, १४३७ असा कीं, वेदाभिमानानें बद्ध झा-
लेलीं काम्य, व निषिद्ध कर्मे सोडून विहित अ-
सणारीं कर्मे, प्रमादरहित अशीं आचरण करावीं-
त. १४३८ अशा सद्भावनेनें कर्म करावें. हा दे-
वांनीं तिसऱ्या अध्यायांत निर्णय सांगितला.
तें येथें कर्मकांड आहे हें लक्ष्यांत ठेवावें. १४३९
आणखी तसेंच नित्य नैमित्तिक कर्म आचरण
करतांना अज्ञानाची आवश्यक मुक्तता कशी
होईल ? १४४० बद्ध मुमुक्षु होऊन त्यास
अशी अपेक्षा उज्ज्वल्यास त्याकरितां देवांनीं
ब्रह्मार्पणामध्ये क्रिया सांगितली. १४४१ ती
अशी कीं, कायावाचामनें करून जें जसें वि-

हित कर्म होईल, तें एक ईश्वराप्रीत्यर्थ करावें
असें सांगितलें. १४४२ हेंच कर्मयोगानें ईश्व-
राचें भजन करण्याचें ठिकाण होय. हें चवथ्या
अध्यायांतील राहिलेल्या भागांत सांगितलें.
१४४३ तें अकराव्या अध्यायांतील विश्वरूप
संपेपर्यंत जें सारें कर्मानें ईश्वराचें भजन
करावें असें कथन केलें, १४४४ तेंच देवताकांड
आठ अध्यायांत स्पष्ट, सर्व शंका दूर
करून हें शास्त्र बोलले. १४४५ आणि त्याच
ईश्वरप्रसादानें श्रीगुरुकृपाप्राप्तीनें कोमल आणि
सत्वज्ञानाचा जो अनुभव, १४४६ तें 'अद्वेष्टा-
दि'क श्लोकांनीं किंवा 'अमानित्वादि'क श्लोकां-
नीं वाढविलें. ह्यांतच बाराव्याची गणना आहे.
१४४७ तो बारावा अध्याय पहिला, आणि
पंधरावा शेवटचा, येथपर्यंत ज्ञानफलाची पाक-
सिद्धि निरूपण केली आहे. १४४८ झणून ह्या
चारी अध्यायांनीं 'ऊर्ध्वमूल' ह्या अध्यायाच्या
अखेरपर्यंत ज्ञानकांडाचें निरूपण केलें. १४४९
अशा प्रकारची गीतापद्यरूप रत्नालंकार घात-
लेली ही एक गोजिरवाणी लहानशी श्रुतीच
आहे. १४५० हें असो. ही त्रिकांडात्मक श्रुति,
मोक्षरूप फल घेण्यासाठीं 'थांबा' 'थांबा'
झणून हाका मारित आहे. १४५१ त्याचें साधन
जें ज्ञान, त्याच्याशीं प्रत्येक दिवशीं वैर करणारा
जो अज्ञानवर्ग, तो सोळाव्या अध्यायांत वर्णन
केला आहे. १४५२ तो वैरी, शास्त्राचा खेही
घेऊन जिंकावा, ह्याचें निरूपण तो सतरावा
अध्याय होय. १४५३ ह्याप्रमाणें पहिल्या अ-
ध्यायापासून सतराव्या अध्यायापर्यंत देवांनीं
आपल्याच श्वासोच्छ्वासाचें-वेदांचें-निरूपण
केलें. १४५४ त्यांतील एकून एक तात्पर्यांचा
ज्यांत विचार केला आहे, तो हा अठरावा-
कळसरूप अध्याय आहे हें समजावें. १४५५
अशा प्रकारें सांख्य-प्रकृति पुरुषाचा-विचार
केलेल्या शास्त्राचा समुद्र असा हा श्रीमद्भगव-
द्गीता ग्रंथ प्रत्यक्ष वेदाचाच अवतार असून
औदार्यानें त्याहूनही थोर आहे. १४५६ वेद
आपल्या ठिकाणीं समर्थ आहे खरा; पण त्या-

च्या सारखा दुसरा कृपणच कोणी नाही. कारण, तो तिन्ही वर्णांच्याच कानांशी लागतो. १४५७ इतर स्त्रीशूद्रादिक प्राण्यांना ते संसारायातनेत पडले तर, त्यांना त्याने अनधिकारी करून ठेवले आहेत. १४५८ तर मला असे वाटते की, तो मागचा उणेपणा काढून टाकण्यासाठी आणि पाहिजे त्याला सेवन करतां येण्यासाठी, गीतेच्याच रूपाने वेद जन्मास आला. १४५९ किंवा हे [गीताशास्त्र] अर्थाने मनांत शिरून श्रवणाने कानास लागून जपाच्या निमित्ताने मुखांत राहून, १४६० ह्या गीतेचा पाठ जो करतो, त्याच्या संगतीला बसून गीता लिहून पुस्तकरूपाने जो जवळ बाळगतो; १४६१ त्याला अशा अशा निमित्ताने संसाराच्या चव्हाळ्यावर मोक्षसुखाचे त्याने अन्नछत्रच घालून ठेवले आहे. १४६२ परंतु आकाशांत संचार करण्याला, पृथ्वीवर बसावयाला, सूर्यप्रकाश पसरावयाला जसे आकाशच अवार, १४६३ त्याप्रमाणे सेवन करतांना गीताही तू उत्तम आहेस कीं अधम आहेस हे विचारित नाही. मोक्ष देऊन सरसकट सर्व जगाला तृप्त करून सोडते. १४६४ याकरितां मागच्या निंदेला वेद भ्याला, आणि गीतेच्या पोटांत शिरला. झणून तो आतां सुंदर कीर्तीस पात्र झाला आहे. १४६५ ह्याकरितां वेदांचे सुलभ सेवन अशी जी ही मूर्तिमंत श्रीगीता, तिचा श्रीकृष्णांनीं अर्जुनाला उपदेश केला. १४६६ पण वासराच्या पांढ्याने साऱ्या घराला दुभते होते. तद्वत् अर्जुनाच्या निमित्ताने जगाचा उद्धार झाला. १४६७ चातकाची करुणा येऊन मेघ पाणी घेऊन धांवतो, तेव्हां सारे चराचर ज्याप्रमाणे गारीगार होते, १४६८ किंवा कमलाच्या एकनिष्ठेकरितां सूर्य वारंवार येतो; पण त्याने त्रिभुवनांतील सर्व डोळ्यांस संतोष होतो. १४६९ त्याप्रमाणे अर्जुनाच्या निमित्ताने लक्ष्मीकांतांनीं गीता प्रकट करून जगाचे संसारायेवढे प्रचंड ओझे कमी करून टाकले. १४७० हा लक्ष्मीपती नव्हे, तर त्रिभुवनांतील सर्व

शास्त्रज्ञांच्या प्रभेला दैदीप्यमान करणारा बवनाकाशांतील सूर्यच होय. १४७१ ते कुलही फार श्रेष्ठ व पवित्र होय, कीं ज्यांतील पार्थ, ह्या ज्ञानास पात्र होऊन त्याने गीता हे साऱ्या जगाला स्वतंत्र आवार करून सोडले. १४७२ हे असो. मग त्या सदृश श्रीकृष्णांनीं अर्जुनाची मिठी सोडली. १४७३ मग अर्जुनाला झणाले “हे शास्त्र तुझ्या जिवाला आवडले काय ? ” तेव्हां तो झणाला “देवा ! आपली रूपा.” १४७४ तर अर्जुना ! ठेवा मिळण्याइतकें दैव अनुकूल होतें, परंतु जोडलेल्याचा उपभोग घेणे मात्र कठीण आहे. १४७५ देवदानवांना समुद्रमंथनाच्या वेळीं क्षीरसागरायेवढे विरजण न घातलेले दुधाचे भांडे मिळाले; १४७६ त्या साहसाचे फलही मिळालेले जे अमृत तेही डोळ्यांनीं पाहिले. पण कित्येक ते सांभाळावयास चुकले. १४७७ तेव्हां अमरत्व येण्यासाठीं वाढलेले, ते मरणाळाच कारण झाले. संपादलेल्याचा उपभोग कसा घ्यावा, हे माहित नसले झणजे हे असे होते. १४७८ नहुषराजा

१ नहुष हा आयुराजाच्या पुत्रांतील ज्येष्ठ पुत्र होय. हा राजा परम पराक्रमी व सद्गुणी असा होता. झणून श्रृंगसुराच्या हत्येने इंद्र पीडित होऊन जलामध्ये विभ्रंति घेत असतां, संपूर्ण देव आणि ऋषि यांनीं मिळून झाला इंद्रपदाचा अधिकारी केले होते. त्याप्रमाणे तो तेथील अधिकार व ऐश्वर्य भोगित असतां, कांहीं काळाने यास असे वाटले कीं, इंद्राणांवाही उपभोग आपणांस घडावा, ह्यास्तव ह्याने तिला पाचारण्याकरितां, देवदूतांस पाठविले. तेव्हां तिनं गुरुबृहस्पतींच्या संमतीने असा निरोप पाठविला कीं, तूं एखाद्या अपूर्व वाहनांत बसून ये, झणजे मी तुझी सेवा करीन. ते अपूर्व असे वाहन कोणतें ? ह्याचा तो विचार करूं लागला. तेव्हां दुंदेवाने त्यास असें मुचले कीं, आजपर्यंत वाहनास कोणी सप्तऋषि लावलेले नाहीत, ह्याकरितां ते लावावेत, झणजे अपूर्व वाहन झाले. त्याप्रमाणे त्याने आपल्या वाहनास ऋषि लावून तो इंद्रायणीकडे जावयास निघाला, सारे ऋषि, आपल्या पायाखालीं कृमिकीटक सांपडूनयेत झणून पायाखालीं पहात पहात हक्क हक्क चालले होते. परंतु नहुषाला, जाण्याची फार तयारी झाली होती. ह्यास्तव तो ऋषींस लताप्रहार करून “सप, सप”—लंकर लोकर पाय उचला—असें ह्णूं लागला. तेव्हां अगस्तिऋषीय कोप

कांहीं दिवस स्वर्गाचा राजा झाला होता. परंतु वर्तणुकीत चुकला. झणून तो सर्प झाला हें तुला माहित नाही काय ? १४७९ ह्याकरितां अर्जुना ! तूं पुष्कळ पुण्य केलें आहेस, झणूनच ह्या शास्त्राजाला पात्र झालास. १४८० तर ह्याच शास्त्राचे सांप्रदाय धारण करून ह्याच शास्त्रार्थ नीट रीतीने अनुष्ठान कर. १४८१ नाही तर अर्जुना ! सांप्रदायाशिवाय अनुष्ठान करशील तर, अमृतमंथनासारखें होईल बरें ! १४८२ अर्जुना ! गाय चांगली खाशी सांपडली, पण धार काढावयाची माहित असेल, तरच ती दूध देईल. १४८३ तसें श्रीगुरुही प्रसन्न होतील; शिष्याला निश्चय करून विद्याही प्राप्त होईल; परंतु ती सांप्रदायानें उपासना केल्यावांचून फलप्राप्ति मात्र होणार नाही. १४८४ झणून ह्या शास्त्रामध्ये जो उचित सांप्रदाय आहे, तो आतां नीट अगत्यपूर्वक ऐक.” १४८५

इदं ते नातपस्काय नाभक्ताय कदाचन ।

न चाशुश्रूषवे वाच्यं न च मां योऽभ्यसूयति ॥६७॥

[इदं ते] तरि तुवां हें जें पार्था । गीताशास्त्र लाघलें आस्था । [नातपस्काय] तें तपोहीना सर्वथा । [न] सांगावें ना हो ॥ ८६ ॥ [नाभक्ताय] अथवा तापस ही जाला । परि गुरुभक्ती जो ढिल्ले । तो वेदीं अंजळ वाळिले । तैसा वाळी ॥ ८७ ॥ ना तरि पुरोडेशु जैसा । न घापे वृद्ध तरी वायसा । गीता नेदी तैसी तापसा । गुरुभक्तीहीना ॥ ८८ ॥ [न चाशुश्रूषवे वाच्यं] कां तपही जोडे देहीं । भजे गुरुदेवांच्या ठाई । परि आकर्णेनीं नाही । चाड जरी ॥ ८९ ॥ तरि मागील दोहीं आणीं । उत्तम होय कीर जगीं । परि या श्रवणालागीं । योग्य नोहे ॥ ९४९० ॥ मुक्ताफळ भलतैसें । हो परि मुख नसे । तंव गुण प्रवेशे । तेथ कायी ॥ ९१ ॥ सागर गंभीर होये । हें कोण ना ह्मणत आहे । परि वृष्टी वायां

येऊन “तूंच सर्प होऊन पतन पावशील” असा त्यांनीं त्यास शाप दिला. त्याबरोबर तो अजगर होऊन पतन पावला.

—भा. उद्योग-अ० ११-१७—

१ अनुष्ठानादिरहिताला. २ उदासीन. ३ दूर केला. ४ त्याज्य करावा. ५ यज्ञाचा अवशेष चर. ६ श्रवणीं. ७ इच्छा. ८ कर्मानुष्ठानांत. ९ छिद्र. १० दोरा.

जाये । जाली तेथ ॥ ९२ ॥ धाळिया दिव्यास सुंवावें । मग जें वायां धाडावें । तें भातीं कां न करावें । उदारपण ॥ ९३ ॥ [कदाचन] झणोनि योग्य भलतैसे । होत परी चाड नसे । तरि श्रेणें वानिवसें । देसी हें तथा ॥ ९४ ॥ रूपाचा सुजाण बोळा । बोडवूं ये कायि परिमळा । जेथ जें माने तें फळा । तेथचि गा ॥ ९५ ॥ झणोनि तपीं भक्ति । पाहावे ते सुभद्रापति । परि शास्त्रश्रवणीं अनासक्ति । बोळावेचि ते ॥ ९६ ॥ [नच मां योऽभ्यसूयति] ना तरी तपभक्ति । होऊनि श्रवणीं आर्ति । आथी ऐसी ही भांयती । देखसी जरी ॥ ९७ ॥ तरी गीताशास्त्रनिर्मिता । जो मी सकळलोकेशास्ता । तथा मातें सामान्यता । बोळेल जो ॥ ९८ ॥ माझ्या सजनेसि मातें । पैशुन्याचेनि आंढाते । येक आहाती तथातें । योग्य न ह्मण ॥ ९९ ॥ तथाची येर आघवी । सामग्री ऐसी जाणावी । दीपेवीण ठाणदिवी । रात्रिची जैसी ॥ १०० ॥ अंग गोरे आणि तरुणें । वरि लेयिलें आहे लेणें । परि येकलेनि प्राणें । सडिलें जेविं ॥ १ ॥ सोनयाचें सुंदर । निर्वाळिलें होय घर । परि सर्पांगना द्वार । रुंधलें आहे ॥ २ ॥ निपजे दिव्यास चोखट । परि माजी काळकूट । असो मैत्री कपट- । गर्भिणी जैसी ॥ ३ ॥ तैसी तैपभक्तिमेधा । तथाची जाण प्रबुद्धा । जो माझ्यांची कां निंदा । माझीचि करी ॥ ४ ॥ याकारणें धनंजया । तो भक्त मेर्धावी तपिया । तरि नको बापा इया । शास्त्रा ओतळों देवों ॥ ५ ॥ काय बहु बोळों निंदका । योग्य संध्याहीसारीखा । गीता हे कवतिका- । लागींही नेदीं ॥ ६ ॥ झणोनि तपाचा धनुर्धरा । तळीं दाटोनि गांडोरा । वरि गुरुभक्तीचा पुरा । प्रसाद जो जाला ॥ ७ ॥ आणि श्रवणेच्छेचा पुढां । दोरवंदा सदा उघडा । वरी कलश चोखडा । अनिंदारजांचा ॥ ८ ॥

“तर अर्जुना ! तुला हें जें गीताशास्त्र प्राप्त झालें, तें ज्याला आस्था नाही, ज्याला तप नाही, त्याला कधीही सांगूं नकोस बरें ! १४८६ अथवा तपस्वीही आहे. परंतु गुरुभक्तीमध्ये ढिला असेल, तर वेदामध्ये जसें अंत्यजाला दूर टाकलें आहे, त्याप्रमाणें त्याला

१ तृप्ताला. २ वाढावें. ३ दवडावें. ४ क्षुधिताला. ५ कदाचित्. ६ कौतुकानें. ७ पुढें करूं येईल. ८ आवड नसलेले. ९ त्यागावे. १० सामुग्री. ११ शासन करणारा. १२ ताडणानें. १३ प्रकाशमान. १४ नागिणीनें. १५ धरलें. १६ कपट आहे गर्भीत जिच्या=कापट्यारूप. १७ केवळ तपाविषयीच बुद्धि. १८ बुद्धिमान्. १९ स्पशों. २० ब्रह्मदेवासारखा. २१ दगडाचा पाया. २२ देवालय. २३ दरवाजा. २४ कळस.

दूर टाक. १४८७ किंवा यज्ञाचा अवशेष, ह्यातारा कावळा असला तरी त्यास घालित नाहीत; त्याप्रमाणे तापस असून गुरुभक्तिहीन असेल तर, त्यास ही गीता देऊं नये. १४८८ किंवा देहाला तपही घडले असेल, गुरुदेवांच्या ठाई भक्तिही असेल, पण ऐकण्याची जर इच्छा नाही, १४८९ तर पूर्वी सांगितलेली दोन्ही आंगे जरी खरोखर त्याची चांगली असली तरी, तोही ऐकण्याला योग्य नाही. १४९० मोती कसलेही असले तरी, त्याला जर तोंड नाही, तर त्यांत दोरा जाईल काय ? १४९१ समुद्र गंभीर आहे, हे कोण नाही ह्मणतो आहे ? पण त्यावर झालेली वृष्टि वांधा जातेच. १४९२ तृप्त झालेल्याला सुग्रास अन्न घालून मग जे वांधा दवडावे, त्यापेक्षा भुकेलेल्याला घालूनच उदारपणा कां दाखवूं नये ? १४९३ ह्मणून पाहिजे तितके योग्य असून त्यांना जर ऐकण्याची इच्छा नाही, अशांना एखादे वेळीं हे देशील हो ! १४९४ रूपाला उत्तम तऱ्हेने जाणणारा डोळा आहे, ह्मणून तो परिमळाकडे लावला तर चालेल काय ? जेथे जे योग्य असते, तेच तेथे फलद्रूप होतें. १४९५ ह्मणून हे सुभद्रापती ! तपस्वी भक्तिमान् असतील ते पहावेत. पण शास्त्रश्रवणांत जर आवड नसेल तर, त्यांचा त्याग करावा. १४९६ किंवा तप, भक्ति, व श्रवण करण्याची इच्छा, इतकी सामग्रीही असलेली जरी पाहशील, १४९७ तरी त्या गीताशास्त्राला निर्माण करणारा, सकल लोकांचे शासन करणारा जो मी; त्या मला सामान्य असें जो मानील, १४९८ मला, माझ्या सुजनतेला, जे कोणी वाग्नहार करणारे असतील, त्यांना थोर असें ह्मणूं नको. १४९९ रात्रीच्या वेळीं दिव्याशिवाय जशी ठाणवई असावी, त्याप्रमाणे त्यांची बाकी सारी सामुग्री समजावी. १५०० आंग चांगले गोरें असून तरुणही आहे; त्याच्यावर अलंकारही घातलेले आहेत; परंतु ते एका प्राणाशिवाय जसें टाकावे

लागतें, १५०१ सोन्याचे सुंदर घर असून ते मोठे निर्मळ आहे; परंतु नागीण बसली आहे दार धरून ! १५०२ सुग्रास अन्न तयार झालेले आहे, पण त्यांत विष आहे; पोटांत कपट असलेली जशी मैत्री, १५०३ त्याप्रमाणे हे बुद्धिमंता ! जो माझ्या भक्तांची किंवा माझी निंदा करतो, त्याची केवळ तपाविषयीच बुद्धि आहे हे लक्षांत ठेव. १५०४ ह्याकरितां अर्जुना ! तो भक्त, बुद्धिमान् व तपस्वी असला तरी बाबा ! ह्या शास्त्राला शिवूं देऊं नकोस. १५०५ फार काय सांगावे ? ब्रह्मदेवासारखा योग्य असूनही तो जर निष्क असेल, तर त्याला ही गीता कौतुकखातर सुखां देऊं नकोस. १५०६ ह्मणून धनुर्धरा ! खाली तपाचा पाया भरून वर जो गुरुभक्तीचा संपूर्ण राजवाडा बांधील, १५०७ आणखी श्रवणेच्छेचा दरवाजा निरंतर पुढे उघडा असून त्याच्या वर अनिंदारत्नांचा सुंदर कलश बसविलेला असेल," १५०८

य इदं परमं गुह्यं मद्रक्तैष्यभिधास्यति ।

भक्तिं मयि परां कृत्वा मामेवैष्यत्यसंशयः ॥ ६८ ॥

[य इदं परमं गुह्यं] ऐशा भक्तालयीं चोखटी । गीतारत्नेश्वर हा प्रतिष्ठी । मग माझिया संवसाटी । तुकसी जर्गी ॥ ९ ॥ कां जे एकाक्षरपणेंसी । त्रिमात्रकेचिये कुशी । प्रेणव होता गर्मवासी । सांकडला ॥ १५१० ॥ तो गीतेचिया बाहळीं । वेदवीज गेलें पाहाळीं । कीं गायत्री फुलीफळीं । श्लोकांच्या आळी ॥ ११ ॥ ते हे मंत्ररहस्य गीता । मेळवी जो माझिया भक्ता । अनन्यजीवना माता । बाळका जैसी ॥ १२ ॥ [मद्रक्तैष्यभिधास्यति] तैसी भक्तां गीतेसीं । भेटी करी जो आदरेसी । तो [मामेवैष्यत्यसंशयः] देहा पाठीं मजसीं । येकचि होय ॥ १३ ॥

“अशा सुंदर भक्तमंदिरांत हा गीतारत्नेश्वर स्थापन कर. ह्मणजे जगामध्ये माझ्या साम्यतेस योग्य होशील. १५०९ किंवा एका-

१ स्थापन कर. २ बरोबरीस, साम्यतेस. ३ योग्य होशील. ४ अकार, उकार व मकार या तीन मात्रांच्या ५ ओंकार. ६ संकुचित होऊन राहिलेला. ७ विस्तारामध्ये. ८ वृक्षरूपानें उंच. ९ मातेच्या स्तनावांचून अन्य जीविकेला साधन नाही अशा.

क्षरपणानें अकार, उकार, व मकार ह्या तीन मात्रांच्या पोटामध्ये गर्भवासी 'प्रणव' कुचमत होता, १५१० तो गीतेच्या विस्तारांत वेदरूप बीजानें जन्मास आला आहे. किंवा श्लोकांच्या फुलामध्ये आणि फळामध्ये गायत्री उत्पन्न झाली आहे. १५११ ती ही मंत्ररहस्यरूप गीता, जो कोणी माझ्या भक्तांना देईल; दुसरे जीवनच ज्याला माहिती नाही, अशी आई ज्याप्रमाणें मुलाला भेटते, १५१२ त्याप्रमाणें अगत्यपूर्वक गीतेची आणि भक्ताची जो कोणी गांठ घालून देईल, तो देह टाकल्यानंतर मत्स्वरूपाला पोचेल." १५१३

न च तस्मान्मनुष्येषु कश्चिन्मे प्रियकृतमः ।

भविता न च मे तस्मादन्यः प्रियतरो भुवि ॥ ६९ ॥

[तस्मात्] आणि देहाचेही लेणें । लेऊनि वेगळेपणें । असे तंव जीवें प्राणें । तोचि पंडिये ॥ १४ ॥ [मनुष्येषु] ज्ञानियां कर्मठां तापसां । यया खुणेचिया माणुषां- । माजि तो एक गा जेसा । पंडिये मज ॥ १५ ॥ [न च] तैसा भूतळीं आघवा । आन न देखें पांढवा । जो गीता सांगे मेळवां । भक्तजनांचा ॥ १६ ॥ [भक्तिं मयि परां कृत्वा इति पूर्वश्लोकस्थे पदे] मज ईश्वराचेनि लोभें । हे गीता पढतां अक्षोभें । जो मंडन होय सभे । संतांचिये ॥ १७ नवपल्लवी रोमांचित । मंदानिळें कांपवित । आमोदजळें बोलवित । फुलांचे डोळे ॥ १८ ॥ कोकिळा केलरवाचेनि मिषें । सद्गद बोलवीत जैसें । वसंत कां प्रवेशे । सद्गक्तआरामी ॥ १९ ॥ कां जन्माचें फळ चकोरां । होत जें चंद्र ये अंवरा । ना ना नव घन मयूरां । वो देत पावे ॥ १५२० ॥ [कश्चिन्मे प्रियकृतमः] तैसा सज्जनाच्या मेळोपीं । गीतापधरळीं उभोपीं । बपें जो माझ्या रूपीं । हेतु ठेऊनी ॥ १२१ ॥ [भवितेति] मग तयाचे निपाडें । पंडियेंतें मज फुडें । नाहींचि गा मागेफुडें । न्याहाळितां ॥ २२ ॥ अर्जुना हा ठायवरी । मीं तयातें सूर्यें जिह्दारी । जो गीतार्थाचें करी । परेगुणें संतां ॥ २३ ॥

“आणखी देहाचा अलंकार घालूनही तो जर त्यापासून अलिप्त राहील, तर त्याची मला जीवाभावापासून आवड. १५१४ ज्ञानी, कर्मठ, तपस्वी, ह्या लक्षणांच्या मनुष्यामध्ये तो जसा

मला प्रिय आहे, १५१५ तसा अर्जुना ! जो भक्तसमुदायामध्ये गीता सांगतो, त्याच्या सारखा सर्व भूमंडळावर दुसरा कोणी दिसत नाही. १५१६ माझ्या ईश्वराच्या लाभासाठी स्थिर चित्तानें गीता सांगून जो संतांच्या सभेमध्ये भूषणभूत होईल, १५१७ रोमांच ही नवी पल्लवी; मंद वाण्यानें कंपवीत सुगंधरूप जळानें फुलांचे डोळे ओले करीत, १५१८ कोकिळ मधुर स्वराच्या निमित्तानें सद्गद भाषण करीत, माझ्या भक्तरूप बगीच्यांत जणों काय वसंतच प्राप्त व्हावा, १५१९ किंवा चंद्रोदय झाला ह्मणजे चकोराला जसें जन्माचें सार्थक झालें असें वाटावें, किंवा नवे मेघ मयूराला जसे “ओ” देत यावेत, १५२० त्याप्रमाणें जो माझ्या स्वरूपामध्ये हेतु ठेवून सज्जनांच्या समुदायांत अनेक गीतापधरळांचा वर्षाव करतो; १५२१ त्याच्या इतका खरोखरच आवडता पदार्थ मागचा पुढचा विचार केला तरी, मला दुसरा कोणताच नाही. १५२२ अर्जुना ! जो संतांना गीतार्थाची मेजवानी घालतो, त्याला मी इतका जिवार्शी बाळगतां.” १५२३

अध्येष्यते च य इमं धर्म्यं संवादमावयोः ।

ज्ञानयज्ञेन तेनाहमिष्टः स्यामिति मे मतिः ॥ ७० ॥

[अध्येष्यते इति] पै माझिया तुझिया मिळणीं । वाढी- नली जे हे काहाणी । मोक्षधर्म कां जिणीं । आलासे जेथें ॥ २४ ॥ तो हा सकळार्थप्रद । आझां दोघांचा संवाद । न करितां पैदमेद । पाठेंचि जो पडे ॥ २५ ॥ [ज्ञानयज्ञेनेति] तेणें ज्ञानानळीं प्रदीर्ती । मूळ अविद्येचिया आहुतीं । तोष- विला होय सुमती । परमात्मा मी ॥ २६ ॥ घेऊनि गीतार्थ उगाणा । ज्ञानिये जें विचक्षण । ठाकिती तें गाणावाणा । गीतेचा तो लाहे ॥ २७ ॥ गीतापाठकासि असे । फळ अर्थ- शाचिसरिसे । गीता माउलिये कीं नसे । जाणेंतान्हें ॥ २८ ॥

१ समागमांत. २ जगण्यास, हारीस. ३ एक पद दुद्धानं न सोडतां, किंवा पदच्छेदादिक न करितां केवळ श्लोकांचा पाठ. ४ प्रज्वलित ज्ञानामीत. ५ अज्ञानाच्या. ६ गीतेचा अर्थ उगाणा=अनुभवून जें ज्ञान्याला प्राप्त होतें तेंच गीतेच्या गाणावाणा=गाण्यानें व वर्णन करण्यानें प्राप्त होतें. ७ आहे. ८ जाणतें नेणतें.

१ अत्यंत प्रिय. २ समुदायाला. ३ अहंकाररहित, स्थिर- चित्तानें. ४ भूषणरूप. ५ सुगंधोदकानें. ६ मधुर स्वराच्या. ७ बगीचांत. ८ नूतन मेघ. ९ समुदायांत. १० पुष्कळ. ११ आवडतें. १२ हृदयांत ठेवतां. १३ पाहुणे, मेजवानी.

“तसैच माझ्या तुझ्या समागमांत ही जी कथा वाढली आहे, जीत मोक्षधर्म जन्मास आला आहे, १५२४ तो सकलार्थप्रद आपणा उभयतांचा हा संवाद, एकही पदच्छेद न करतां जो केवळ पठण करील, १५२५ त्यानें हे बुद्धिमंता ! ज्ञानाग्नीच्या प्रज्वलित ज्वालेमध्ये मूळ अविद्येची आहुति देऊन मला परमात्म्याला तृप्त केलें. १५२६ हे विचक्षणा ! गीतार्थाचा ठाव पाहून ज्ञानी ज्या पदास पोंचतात, तेंच पद गीतेचें गायन करणारास व वर्णन करणारास प्राप्त होतें. १५२७ गीतेचा पाठ करणाराला, गीतेचा अर्थ जाणणाऱ्या-इतकेंच फल असतें. गीतामाउलीला जाणतें मूल आणि नेणतें मूल, अशी भेदबुद्धीच नाही.” १५२८

श्रद्धावाननसूयश्च शृणुयादपि यो नरः ।

सोऽपि मुक्तः शुभ्रालोकान्प्राप्नुयात्पुण्यकर्मणाम् ७१

[श्रद्धावाननसूयश्च] आणि सर्वमार्गी निंदा । सांडुनि आत्मा पै शुद्धा । गीताश्रवणीं श्रद्धा । उभारी जो ॥ २९ ॥ [शृणुयादपि यो नरः] तयाच्या श्रवणपुटी । गीतेचीं अक्षरें जंव पैटी । होती ना तंव उठाउठी । पळेवि पाप ॥ १५३० ॥ [पुण्यकर्मणां] अटवीयेमाजि जैसा । वनिह रिघतां सहसा । लंघिती कां दिशा । वनौकें तियें ॥ ३१ ॥ कां उदयाचळकुळीं । झळकतां अंशुमाळी । तिमिरें अंतराळीं । हारपती ॥ ३२ ॥ तेसा कानाच्या महाद्वारीं । गीता गजर जेथ करी । तेथ सृष्टीचिये आदिबरी । जायचि पाप ॥ ३३ ॥ ऐसी जन्मवली धुवट । होय पुण्यरूप चोखट । याही बरी अंचाट । लाहे फळ ॥ ३४ ॥ जेथिये गीतेचीं अक्षरें । जेतुलीं कां कर्णद्वारें । रिघती तंतुले होती पुरे । अश्वमेध कीं ॥ ३५ ॥ ह्मणोनि श्रवणें पापें जाती । [शुभ्रालोकान्प्राप्नुयात्] आणि धर्म धरी उन्नती । तेणें स्वर्गराज्य संपत्ती । लाहेचि शेखीं ॥ ३६ ॥ [सोऽपि मुक्तः] तो पै मज यावयालागीं । पहिलें पैणें करी स्वर्ग । मग आवडे तंव भोगी । पाठीं मजचि मिळे ॥ ३७ ॥ ऐसी गीता धनंजया । ऐकतया आणि पढतया । फळे महानंद मिघां । बहु काय बोलें ॥ ३८ ॥ याकारणें हें असो । परि

जयालागीं शास्त्रातिसो । केळ तें तंव तुज पुसों । काज तुमैं ॥ ३९ ॥

“आणि सर्वतोपरी निंदा सोडून शुद्ध आस्थेनें गीता ऐकण्याविषयीं जो श्रद्धा बाळगील, १५२९ त्याच्या कर्णामध्ये गीतेचीं अक्षरें शिरतात न शिरतात तोंच, पाप उठाउठी पळून जातें. १५३० अरण्यामध्ये अकस्मात् वणवा लागला ह्मणजे वनचरें जशीं दशदिशेला पळत सुटतात, १५३१ किंवा उदयाचलावर सूर्य झळकूं लागला कीं, अंधकार जसा आकाशामध्ये नाहीसा होतो, १५३२ त्याप्रमाणें कानाच्या महाद्वारावर जेव्हां गीतेचा चौघडा झडूं लागतो, तेव्हां सृष्टीच्या आदिपासून झालेलें पाप सुद्धां नाहीसें होतें. १५३३ ह्याप्रमाणें जन्माची परंपरारूप वेल अशा रीतीनें निर्मळ-उत्तम पुण्यरूप-झाली ह्मणजे मग तिला फळ येतें, तें फार मोठें येतें. १५३४ कारण ह्या गीतेचीं जितकीं जितकीं अक्षरें कर्णद्वारांत शिरतील, तितके तितके अश्वमेध घडल्याप्रमाणें होतें. १५३५ ह्मणून श्रवणानें पापें जातात, आणि धर्माची उन्नति होते. आणि त्यामुळें शेवटीं स्वर्गाच्या राज्याची संपत्ति मिळते. १५३६ माझ्याकडे येण्यासाठीं तो पहिला मुकाम स्वर्गाचा करतो; आणि वाटेळ तेथपर्यंत त्याचा उपभोग घेऊन मागाहून मलाच येऊन मिळतो. १५३७ अर्जुना ! अशी ही गीता, ऐकणाराला आणि पठण करणाराला महदानंदानें फळते. ह्याहून फार तें मी काय सांगूं ? १५३८ ह्याकरितां तें असो. पण ज्याकरितां हें येवढें शास्त्र वाढविलें, तें तुझें काम कसें काय झालें, तें तुला विचारूं या.” १५३९

कच्चिदेतच्छ्रुतं पार्थ त्वयैकाग्र्येण चेतसा ।

कच्चिदज्ञानसंमोहः प्रनष्टस्ते धनंजय ॥ ७२ ॥

[कच्चिदेतच्छ्रुतं पार्थति] तरि सांग पां पांडवा । हा शास्त्रसिद्धांत आपघा । तुज एकचित्सें फावना गेला आहे ॥ १५४० ॥ आह्मी जसें जया रीती । उगाणिलें कानांच्या हातीं । येरीं तैसेंचि तुझ्या चित्तीं । पडें केलें कीं ॥ ४१ ॥ अथवा मा-

१ प्रविष्ट. २ दाट अरण्यांत. ३ वनचरें, पशुपक्ष्यादि. ४ सूर्य. ५ अंधकार. ६ आधींचें. ७ जन्माची परंपरारूप वेल. ८ मोठें. ९ शेवटीं. १० मुकाम.

१ अतिशय. २ समजून चुकला. ३ पदरीं घातले.

झारी । गेलें सांडी विखुरी । किंवा उपेक्षेवरी । बाळुनि सां-
डिलें ॥ ४२ ॥ जेसं आझी सांगितलें । तैसेंचि हृदयीं का-
वळें । तरी सांग पां वेंडिलें । पुसेन तें मी ॥ ४३ ॥ [कृ-
दज्ञानसंगोह इति ।] तरि स्वाज्ञानजनितें । मागिले मोहें
तुतें । भुलविलें तो येथें । असे की नाही ॥ ४४ ॥ हें बहु
पुसों काई । सांगें तूं आपुल्या ठायीं । कर्मकर्म कांहीं । देख-
तासी ॥ ४५ ॥ पार्थ स्वानंदैकरसे । विरेल ऐसा भेददशे ।
आणिला येणें मिथें । प्रश्नाचेनि ॥ ४६ ॥ पूर्णब्रह्म जाला
पार्थ । तरि पुढील साधावया कार्यार्थ । मर्यादा श्रीकृष्णनाथ ।
उल्लेखी नेदी ॥ ४७ ॥ येव्हवीं आपुलें करणें । सर्वज्ञ काय
तो नेणे । परि केळें पुसणें । याचिलागीं ॥ ४८ ॥ एवं
करोनियां प्रश्न । नसतेंचि अर्जुनपण । आणूनियां जालें
पूर्णपण । तें बोलवी खरें ॥ ४९ ॥ मग क्षीराब्धीतें सां-
डितें । गगनीं पुजें मंडित । निवडे जैसा न निवडित ।
पूर्णचंद्र ॥ १५५० ॥ तैसा ब्रह्म मी हें विसरे । तेथ जगचि
ब्रह्मत्वं भरे । हेंही सांडी तरी विरे^१ । ब्रह्मपणही ॥ ५१ ॥
ऐसा मोडत मांडत ब्रह्म । तो दुःखें देहाचिये सीमे । मी अर्जुन
येणें नामें । उभा ठेला ॥ ५२ ॥ मग कांपतां करतळीं ।
दडपून रोमांचळी । पुलिका खेदजळीं । जिरऊनियां ॥ ५३ ॥
प्राणक्षोभे डोलतया । आंगा आंगचि टेंक्या । सुनि स्तंभ
चाल्या । मुलीनियां ॥ ५४ ॥ नेत्रयुगलाचेनि वोटें । आनं-
दामृताचें भरितें । बोसंडत तें मायुतें । काहूनियां ॥ ५५ ॥
विविधा औत्सुक्यांची दाटी । चौप^२ दाटत होती कटीं । ते
करूनियां पैटी । हृदयामाजी ॥ ५६ ॥ वाचेचें वितुळणें ।
सावरुनि प्राणें । अकामचें श्वसणें । ठेऊनि ठायीं ॥ ५७ ॥

“तर अर्जुना ! हा सारा शास्त्राचा सि-
द्धांत तुला नीट एकाप्रचित्तानें समजला ना ?
सांग पाहूं. १५४० आझी जसें, ज्या रीतीनें,
तुझ्या कानाच्या स्वाधीन केलें, तसेंच त्यांनीं
तुझ्या चित्तास अर्पण केलें ना ? १५४१ कां

मध्येच सांडावांडी वारी गेलें ? कां तिरस्कारानें
फेंकून दिलें ? १५४२ आझीं जसें सांगितलें,
तसेंच हृदयामध्ये शिरलें असेल तर, मी
विचारतो तें शटपट सांग पाहूं. १५४३ तर
तुझ्या अज्ञानापासून मागे उडवलेल्या मोहानें
तुला भ्रमविलें होतें. तो आतां आहे कां नाही ?
१५४४ हें आतां फार काय काय झणून
विचारावें ? कर्म कोणतें आणि अकर्म कोणतें ?
हें तुझें तुलाच समजू लागलें किंवा नाही ? हें
सांग बरें.” १५४५ अर्जुन हा निजानंदस्वरू-
पांत ऐक्यरूप होईल हें मनांत आणून ह्या
प्रश्नाच्या निमित्तानें त्याला अशा भेदस्थितीला
आणला. १५४६ अर्जुन जर पूर्ण ब्रह्म बनला,
तर पुढील कार्यभाग साधावयाचा नाही. तो
साधावा झणून श्रीकृष्णांनीं द्वैताची मर्यादा
उल्लंघन करूं दिली नाही. १५४७ बाकी तो
सर्वज्ञ होता, तेव्हां त्याचें सामर्थ्य त्यास मा-
हित नव्हतें कीं काय ? पण विचारलें तें ह्याच
करितां. १५४८ अशा प्रकारें प्रश्न करून, नस-
लेलें अर्जुनपण त्याच्या आंगीं आणून, त्याच्या
स्वतःच्या तोंडून आंगीं पूर्णपणा आलेलें बोल-
विलें. १५४९ मग क्षीराब्धीला सोडून आ-
काशांतील तारकामंडलासहचर्तमान पूर्णचंद्र
वेगळा नसतांही वेगळा दिसतो; १५५० त्या-
प्रमाणें ब्रह्म मी हें विसरतें, तेव्हां ब्रह्मानें सारें
विश्वच भरून जातें. तेंही सोडलें तर, ब्रह्म-
पणही नाहीसें होतें. १५५१ अशा प्रकारें
ब्रह्मानें धरून धरून सोडला तेव्हां, मोठ्या
दुःखानें तो “मी अर्जुन” ह्या भावानें दे-
हाच्या सीमेवर येऊन उभा राहिला. १५५२
मग कांपण्या कांपण्या तळहातांनीं उभे राहि-
लेले केंस दडपून ग्रामामध्ये रोमांच जिरवून,
१५५३ प्राणाच्या उंचवळीनें डोलत असलेल्या
आंगाला, आंगाचाच टेंका देऊन, स्तंभाचे चाळे
सोडून, १५५४ नेत्रयुग्माच्या अश्रुप्रवाहानें
आनंदामृताचा पूर वाहत होता तो पुसून
काढून, १५५५ अनेक उल्लासलहरींची दाटी
होऊन गळा दाढून येऊन, स्वरभंग होत होता

१ लवडून. २ चालढकलीवर. ३ झुगारून दिलें.
४ प्रविष्ट झालें. ५ सत्वर. ६ स्वकीय अज्ञानापासून
उत्पन्न. ७ निजानंदरूप सामरस्यानें. ८ ओलांडूं देत नाही.
९ झालेलें पूर्णपण. १० सोडीत. ११ तारागणाला
शोभवीत. १२ विरघळे. १३ एथून आठ सात्विकभाव
वर्णिले आहेत ते येणेंप्रमाणें—‘स्तंभः स्वदोऽथ रोमांचः
स्वरभंगोऽथ वेपथुः । वैवर्ण्यमश्रुप्रलय इत्यष्टौ सात्विका
मताः’. १४ कांपण्या तळहातांन. १५ रोमांच. १६ प्रा-
णाच्या वाढीनें. १७ टेंका देण्यास ठेवून. १८ कंप,
चाळ्याला. १९ अश्रुप्रवाहानें. २० उसळत. २१ स्वरभंग,
२२ प्रविष्ट. २३ क्रियारहितपणाचें.

तो हृदयांतील हृदयांत दाबून, १५५६ वाणी
विस्कळित झाली होती तिला प्राणानें सांवरून
धरून मधून मधून येणारे हुंदके जागच्या
जागी ठेवून," १५५७

अर्जुन उवाच—

नष्टो मोहः स्मृतिर्लब्धा त्वत्प्रसादान्मयाऽच्युत ।
स्थितोऽस्मि गतसंदेहः करिष्ये वचनं तव ॥ ७३ ॥

[नष्टो मोहः] मग अर्जुन झणे काय देवो । पुसताति आवडे
मोहो । तरि तो सकुटुंब गेला जी ठावो । घेऊनि आपला
॥ ५८ ॥ पोर्षी येऊनि दिनकरें । डोळ्यातें आंधारें ।
पुसिजे हें कायि संरे । कोणें गांवीं ॥ ५९ ॥ तैसा तूं श्रीकृष्णराया ।
आमुच्या डोळ्यां । गोचर हेंचि कायिसया । न पुरे तंव
॥ १५६० ॥ वरि लोभें मायेपासुनि । तें सांगसी तोंड भरु-
नि । जें कायीसैनही करुनि । जाणूं नये ॥ ६१ ॥ आतां
मोह असे कीं नाही । हें ऐसं जी पूससी काई । कृतकृत्य
जाहलें पाहीं । तुझेपणें ॥ ६२ ॥ गुंतलों होतो अर्जुनगुणें ।
तो मुक्त झालों तुझेपणें । आतां पुसणें सांगणें । दोन्ही
नाहीं ॥ ६३ ॥ [त्वत्प्रसादान्मयाच्युत] मी तुझेनि प्रसादें ।
लाधलेनि आत्मबोधें । मोहाचे या कांदे । नेदीच उरों ॥ ६४ ॥
[स्मृतिर्लब्धा] आतां करणें कां न करणें । हें जेणें उठी दुजे-
पणें । तें तूंवांचुनि नेणें । सर्वत्र गा ॥ ६५ ॥ [स्थि-
तोऽस्मि गतसंदेहः] येविषयीं माझ्या ठायीं । संदेहाचें
नुरेचि कांहीं । त्रिशुद्धी कर्म जेथ नाही । तें मी जालों
॥ ६६ ॥ तुझेनि मज मी पावोनि । कर्तव्य गेलें निपटुनि ।
[करिष्ये वचनं तव] परि आज्ञा तुझीवांचोनि । आन नाही
प्रभो ॥ ६७ ॥ कां जें दृश्य दृश्यातें नाशी । जें दुजे द्वैतातें
प्रासी । जें एक परि सर्वदेशीं । वसवी सदां ॥ ६८ ॥
जयाचेनि संबंधें बंध फिटे । जयाच्या आशा आस तुटे ।
जें भेटल्यां सर्व भेटे । आपणपांचि ॥ ६९ ॥ तें तूं गुंरे
लिंग जी माझे । जें येकलेपणीचें विरजें । जयालागीं बोला-
डिजे । अद्वैत बोध ॥ १५७० ॥ आपणचि होऊनि ब्रह्म ।
सारिजे कृत्याकृत्याचें काम । मग कीजे कां निःसीम । सेवा
जयाची ॥ ७१ ॥ गंगा सिंधु सेवूं गेली । पावतांचि समुद्र
जाली । तेवि भक्तां सेलें दिधली । निजपदाची ॥ ७२ ॥
तो तूं माझा जी निरुपचार । श्रीकृष्णा सेव्य सद्गुरु । मा

१ आवडता होतो. २ समीप. ३ शिरके. ४ हेंच कोणत्या
गोष्टीला पुरणार नाही ? सर्व इतक्यानेंच होईल. ५ कळ-
वळ्यानें, ममतापूर्वक. ६ कशाही प्रयासानें. ७ त्वद्वत्त्वानें.
८ प्राप्त झालेल्या. ९ गृष्टे, मुळ्या. १० खरेपणानें. ११ तुझ्या
योगानें मी माझ्या स्वरूपां मिळून. १२ जें दृश्य प्रत्यक्ष
होतांच. १३ द्वैत, गुरुशिष्यभाव. १४ आशा कुंठित होते.
१५ गुरुमूर्ति. १६ साक्ष. १७ वांटा. १८ आदराचा.

ब्रह्मतेचा उपकार । हाचि माहीं ॥ ७३ ॥ जें मज तुझा
आड । होतें भेदाचें कंवाड । तें फेडोनि केलें गोड । सेवा-
सुख ॥ ७४ ॥ तरी आतां तुझी आज्ञा । सकळ देवाधिदेव-
राज्ञा । करीन देयीं अनुज्ञा । भलतियेविषयीं ॥ ७५ ॥ यथा
अर्जुनाच्या बोला । देव नाचे सुखें भुलला । झणे विश्वफळा
जाला । फळ हा मज ॥ ७६ ॥ उणेनि उमचला सुधाकर ।
देखुनी आपला कुंमर । मर्यादा क्षीरसागर । विसरेचिना
॥ ७७ ॥ ऐसं संवादाचा बेहुला । लम दोषांच्या आतुला ।
लागलें देखोनि जाला । निर्भर संजय ॥ ७८ ॥ तेणें झणतसे
संजयो । बाप कृपानिधीरावो । तो आपुला मनोभावो ।
अर्जुनेसीं केला ॥ ७९ ॥ तेणें उंचबळलेपणें । संजय धृतरा-
ष्ट्रातें झणे । जी कैसं बादरायणें । रक्षिलों दोषे ॥ ८० ॥
आजि तुमतें आवधारा । नाहीं चर्मचक्षुही संसारा । कीं
ज्ञानदृष्टी व्यवहारा । आणिलेति ॥ ८१ ॥ आणि रैधीचिये
राहाटी । पेइ जो घोड्यासादीं । तथा आज्ञा या गोष्टी ।
गोचरा होती ॥ ८२ ॥ कुंक्षाचें निर्बाण । मांडलें असे वा-
रुण । दोहीं हारी आपण । हारपिजे जैसें ॥ ८३ ॥ येवळा
जिये सांकडां । केसा अनुग्रहो पें गाढा । जे ब्रह्मानंद उषळा ।
भोगवीतसे ॥ ८४ ॥ ऐसं संजय बोलिला । परि न द्रवे येई
उगला । चंद्रकिरणीं शिवतला । पाषाण जैसा ॥ ८५ ॥ हे दे-
खोनि तथाची दशा । मग करीचिना संरिसा । परि सुखें जाला
पिसा । बोलतसे ॥ ८६ ॥ भुलविला हर्षवेगें । झणौनि धृतराष्ट्रा
सांगे । ये-हवीं नव्हे तथाजोगे । हें कीर जाणे ॥ ८७ ॥

मग अर्जुन झणाला "देवा ! मोह आव-
डतो कीं काय झणून विचारतां होय ? तर
महाराज ! तो आपलें ठिकाण सोडून सह-
कुटुंब गेला हो ! १५५८ सूर्यानें जवळ येऊन
डोळ्यांनाच विचारावें कीं, आतां आंधार आहे
काय ? असें कोणत्या गांवीं घडलें आहे ? १५५९
त्याप्रमाणें हे श्रीकृष्णराया ! तूं आमच्या
डोळ्यांसमोर आहेस येवढेंच त्याला पुरें होणार
नाहीं काय ? १५६० आणखी लोभानें ममता-
पूर्वक जें कशानेंही समजणारें नव्हे, तें तोंड

१ प्रतिबंधक. २ उणेनि=कलंकापासून. उमचला=मुक्त
झालेला, सुटलेला. सुधाकर=चंद्र आपला कुंमर=क्षीरसागरा-
चा मुलगा. (समुद्रमंथनाच्या वेळीं, चवदा राजपैकी निचा-
लेलें चंद्र हें एक रत्न प्रसिद्धच आहे. ३ बहुल्यार. ४ हृदय
सुणनें. ५ गहिंवहन. ६ व्यावहारिक दृष्टीनें. ७ रथाची राहटी
चाली पाहिजे झणून घोड्यांची संगति ज्यानें केली अशा
आज्ञांस असल्या गोष्टी गोचरा=प्रत्यक्ष होतात. ८ युद्धप्रकरण.
९ उभय पक्ष. १० संकटांत. ११ धृतराष्ट्र. १२ संबंध.

भरून सांगतोस. १५६१ तेव्हां आतां मोड आहे किंवा नाही हें महाराज ! विचारवें काय ? त्वद्रूपत्वाचें कृतकृत्य झालों हो ! १५६२ अर्जुनाच्या गुणांनीं गुंतलों होतो, तो तुझेपणानें मुक्त झालों. आतां विचारणें आणि सांगणें हीं दोन्हीही उरलीं नाहीत. १५६३ तुझ्या प्रसादेंकरून प्राप्त झालेल्या आत्मज्ञानसामर्थ्यानें त्या मोहाचे कांदे हणून उरूनच दिले नाहीत. १५६४ आतां करणें किंवा न करणें हें ज्या दुसरेपणानें उत्पन्न होतें, तें आतां तुझ्याशिवाय दुसरें कोठेंच दिसत नाही. १५६५ ह्याबद्दल माझ्या मनामध्ये संशय हणून कांहीं उरलाच नाही. कर्माचा संबंधच ज्यास नाही, असें जें स्वरूप तेंच शपथपुरस्कर मी बनलों आहे. १५६६ तुझ्या योगानें मी माझ्या स्वरूपीं मिळून कर्तव्य सारें लयास गेलें आहे, हणून, प्रभो ! तुझ्या आज्ञेशिवाय दुसरें कांहीं राहिलें नाही. १५६७ कारण, जें प्रत्यक्ष होतांच दृश्याचा नाश करतें. जें द्वैताद्वैतालाच गिळून टाकतें; जें एक असून सर्वत्र सर्वकाल वास्तव्य करतें; १५६८ ज्याच्या संबंधानें बंध तुटतो; ज्याच्या आशेनें आशा नाहीशी होते; ज्याची भेट झाली असतां आपल्याच ठिकाणीं सर्व कांहीं भेटतें. १५६९ महाराज ! जें एकत्वाला साह्य करतें; ज्याच्यावरून अद्वैत ओंवाळून टाकावें; ती आपण माझी गुरुमूर्ति. १५७० आपणच ब्रह्म होऊन कृत्याकृत्याचें काम संपवावें, आणि मग त्याची निस्सीम सेवा करावी. १५७१ गंगा समुद्राची सेवा करावयाला गेली, ती तेंथें पांचतांच समुद्ररूप बनली. त्याप्रमाणें आपणही भक्तांला निजपदाचा वांटा दिलात. १५७२ श्रीकृष्णा ! तो तूं माझा आदराचा सेव्य गुरु आहेस. मग ब्रह्मत्वाचा हाच उपकार मानावयास नको काय ? १५७३ तुमच्या माझ्यामध्ये जें भेदाचें दार आडवें होतें, तें काढून टाकून सेवासुख गोड केलेंत. १५७४ तर आतां हे सकल देवाधिदेवा ! तुमची आज्ञा मला शिरसा बंध आहे. मग ती

कशाविषयीही कां असेना ?” १५७५ ह्या अर्जुनाच्या भाषणानें देव अगदीं भांबावून गेले. आणि आनंदाच्या भरानें नाचूं लागले. आणि ह्मणाले “हा मला विश्वफळालाही फळ झाला !” १५७६ आपला मुलगा चंद्र सर्व कलांनीं युक्त पाहिला ह्मणजे समुद्र तरी थोडा उंचबळतो काय ? आपली मर्यादा सुद्धां विसरत नाही काय ? १५७७ तसें संवादाच्या बहुल्यावर दोघांच्या अंतःकरणाचें लग्न लागलेलें पाहून संजयाला परमानंद झाला. १५७८ त्या भरांत संजय ह्मणाला, “प्रभु ! कृपा-निधि ! फार थोर ! त्यानें अर्जुनाला आपला मनोभावच करून सोडला.” १५७९ तसाच सद्वादित कंठानें संजय धृतराष्ट्रास ह्मणाला “महाराज ! व्यासांनीं आपलें दोघांचें कसें बरें संरक्षण केलें ! १५८० अहो ऐका ! तुम्हांलाही आज संसार करावयाला डोळे नाहीत. हणून ज्ञानदृष्टीनें सर्व व्यवहार करावा लागतो. १५८१ आणि रथाचें काम चालविण्यासाठीं ज्यानें घोड्याची संगत पतकरली आहे, त्या आम्हांला ह्या असल्या गोष्टी उपलब्ध

१ संजय हा गावल्गण नामक सूताचा पुत्र असून धृतराष्ट्राचा सारथी होता. तेव्हां त्यानें आपल्या स्थितीचे दर्शक असे हे उद्गार काढले आहेत. हा मोठा सत्यवक्ता व निःस्पृह असे. तो धृतराष्ट्रासही बोध करण्यास मार्गेपुढें पहात नसे. युद्धांतील सर्व वृत्त घर बसल्याच यास व्यास-प्रसादानें कळे, आणि तें जशाचें तसेंच हा त्यास सांगे. संजय हा दिव्यदृष्टी, दिव्यज्ञानी, व दिव्यशरीरी असा होता. त्याचें वर्णन फार चमत्कारिक आहे. तें असें:—

चक्षुषा संजयो राजन् दिव्येनैव समन्वितः ।

कथयिष्यति ते युद्धं सर्वं ज्ञात्वा भविष्यति ॥ १ ॥

प्रकाशं वाऽप्रकाशं वा दिवा वा यदि वा निशि ।

मनसा चिंतितमपि सर्वं वेत्स्यति संजयः ॥ २ ॥

नैनं शस्त्राणि छेत्स्यन्ति नैनं बाधिष्यते श्रमः ।

गावल्गणिदयं जीवन् युद्धादस्माद्विमोक्ष्यति ॥ ३ ॥

—भा. भी. अ० २—

धृतराष्ट्राचा सारथी संजय; अर्जुनाचा सारथी कृष्ण; कर्णाचा सारथी शल्य; ह्या सर्वांचा विचार मनांत आणला ह्मणजे प्राचीनकालीं सारथ्यकर्म हें फार महत्वाचें असून त्यांत अखंत श्रेष्ठ लोकही पडत असत असें दिसतें.

झाल्या ! १५८२ युद्धाची तर घनचक्र माजून राहिली आहे. दोहों पक्षांमध्ये आपण तर कोणीकडेच्या कोणीकडेच जाऊं, १५८३ येवढें जेथें संकट, त्यांतच हा अनुग्रह हें किती विलक्षण पहा ! कीं ज्याच्या योगानें प्रत्यक्ष ब्रह्मानंदच भोगावयास मिळतो.” १५८४ ह्याप्रमाणें संजय बोलला. पण धृतराष्ट्राच्या मनाला यांत किंचित्ही द्रव आला नाहीं. चंद्रकिरणांनीं स्पर्श केला तर, धोंडा जसा उगाच बसतो, त्याप्रमाणें तोही उगाच बसला. १५८५ ही त्याची अवस्था पाहून त्यानें बोलण्याचें सोडून दिलें. हर्षातिशयानें तो अगदीं भुलला होता, झणून तो धृतराष्ट्राशीं भाषण करूं लागला. १५८६ नाहीं तर तो तें सांगण्याच्या योग्यतेचा नव्हे, हें तो पूर्णपणें जाणून होता. १५८७

संजय उवाच—

इत्यहं वासुदेवस्य पार्थस्य च महात्मनः ।

संवादमिममश्रौषमद्भुतं रोमहर्षणम् ॥ ७४ ॥

[इति] मग ह्यानें पै कुरुराजा । ऐसा आत्पुत्र तो तुझा । बोलिला तें अयोध्या । गोड जालें ॥ ८८ ॥ [महात्मनः] अगा पूर्वापर सागर । यथा नामासीचि सिनार । येर आघवें तें नीर । एक जैसें ॥ ८९ ॥ तैसा श्रीकृष्ण पार्थ ऐसें । हें आंगाचिपासीं दिसे । मग संवादी जी नसे । कांहींचि भेद ॥ १५९० ॥ पै दर्पणाहूनि चोखें । दोन्ही होती सन्मुखें । तेथ येरी येर देखे । आपणपें जैसें ॥ ९१ ॥ [संवाद] तैसा देवेंसी पंडुसुत । आपणपें देवीं देखत । पांडवेंसीं देखे अनंत । आपणपें पार्थी ॥ ९२ ॥ देव देवा भक्तालागीं । जिये विवर देखे आंगीं । येर तिचेचिही भागीं । दोन्ही देखे ॥ ९३ ॥ आणिक कांहींचि नाहीं । ह्याणैनि करिती काई । दोघे येकपणें पाहीं । नांदताति ॥ ९४ ॥ आतां भेद जरी मोडे । तरी प्रश्नोत्तर कां घडे । ना भेदचि तरि जोडे । संवादमुख कां ॥ ९५ ॥ ऐसें बोलतां दुजेपणें । संवादी द्वैत गिल्लें । [इममश्रौष] तें ऐकिलें बोलणें । दोघांचें मियां ॥ ९६ ॥ उट्टनि दोन्ही आरसे । वोढविलींयां सरिसे । कोण कोणा पाहातसे । कल्पावें पां ॥ ९७ ॥ कां दीपासन्मुख ठेविलिया दीपक । कोण कोणा अर्थिक । कोण जाणे ॥ ९८ ॥ ना ना अर्कापुढें अर्क ।

१ पुतण्या (अर्जुन). २ वेगळेंपण. ३ देहभिन्नतेच्या दृष्टीनें. ४ छिद्र. ५ समोरासमोर ठेविले असतां. ६ प्रकाशक, इच्छा करणार.

उदयलिया आणिक । कोण ह्याने प्रकाशक । प्रकाश्य कवण ॥ ९९ ॥ [अद्भुत] हें निघांरुं जातां फुडें । निघांरासि ठेक पडे । ते दोघे जाले येवढे । संवाद सरिसे ॥ १०० ॥ [अहं] जीं मिळतां दोन्ही उदकें । माजि लवण वारूं ठाके । कीं तयासींही निमिळें । तेंचि होय ॥ १०१ ॥ तैसें श्रीकृष्ण अर्जुन दोन्ही । संवादले तें मनीं । धरितां मजही वांनी । तेचि होतसे ॥ १०२ ॥ ऐसें ह्याने ना मोटकें । तंव हिराणि सात्विकें । आठव नेला नेणो कें । संजयपणाचा ॥ १०३ ॥ [रोमहर्षण] रोमांच जव फेरके । तंव तंव आंग धुरके । स्तंभ स्वदां तें जिके । एकला कंप ॥ १०४ ॥ अद्वयानंदस्पर्श । दिठी रसमय जाली असे । ते अश्रु नव्हती जैसें । द्रवत्वचि ॥ १०५ ॥ नेणों काय माय पोटीं । काय नेणों गुंफे कटीं । बांगथो पडत मिठी । उसासचिया ॥ १०६ ॥ किंबहुना सारिवका आटां । चौचर मांडता उमेठां । संजय जाहालासे चोहटां । संवादमुखाला ॥ १०७ ॥ तथा सुखाची ऐसी जाती । जे आपणचि धरी शांती । मग पुढती देहस्पृती । लाधली तेणें ॥ १०८ ॥

मग ह्याणाला “हे कौरवाधिपते ! असें तुझा पुतण्या जो अर्जुन तो बोलला. तें अधोक्षजाला फार गोड वाटलें. १५८८ अरे ! पूर्वसमुद्र, पश्चिमसमुद्र हीं नांवेंच कायतीं वेगवेगळीं, बाकी पाणी सारें जसें एकसारखेंच, १५८९ त्याप्रमाणें श्रीकृष्ण आणि अर्जुन हे देहामुळेच भिन्न भिन्न दिसत. परंतु संवादामध्ये भेद झणून कांहींच नव्हता. १५९० आरशाहूनही स्वच्छ असे दोन पदार्थ जर समोरासमोर आले, तर ते जसे परस्पर आपणांला पहातात, १५९१ त्याप्रमाणें अर्जुन, देवामध्ये आपणास पहात होता; आणि देव आपणाला पार्थामध्ये पहात होते. १५९२ देव, देवाला आणि भक्ताला ज्या ठिकाणीं पहात होता, त्याच ठिकाणीं तोही दोघांस पहात होता. १५९३ दुसरें कांहींच नाहीं, तेव्हां करणार काय ? झणून दोघेही एकत्रपणानें नांदूं लागले. १५९४ आतां असा जर भेद

१ स्वच्छता. २ निवारण करण्यास राहें. ३ क्षणांत. ४ लवणाप्रमाणें. ५ थोडें बोलतो न बोलतो तों. ६ उभारे. ७ संकोच पावे. ८ स्वच्छता व घाम यांस. ९ ब्रह्ममय. १० पाझरच. ११ कंठरूप गुंफेंत. १२ शब्दार्थास. १३ श्रासोच्छ्वासाच्या. १४ आठ सात्विक भावांस. १५ बोवडी वळली असतां. १६ अतिशय.

मोडलेला होता, तर प्रश्नोत्तरं कशीं झालीं ?
 भेदच जर नाही, तर संवादाचें सुख तरी
 मिळणार कसें ? १५९५ असें द्वैतपणानें बो-
 लतां बोलतांच संवादामध्ये द्वैत नाहीसं हो-
 ऊन गेलें, असें जें दोघांचें भाषण तें मीं श्रवण
 केलें. १५९६ दोन आरसे उठून एकमेकांपुढें
 आले तर, त्यांपैकीं कोणकोणाकडे पहातो आहे
 झणून कल्पना करावी ? १५९७ किंवा दिव्या-
 समोर दिवा ठेवला, तर कोणकोणाचा प्रका-
 शक कोण जाणे ? १५९८ किंवा सूर्यापुढें आ-
 णखी एक सूर्य उगवला तर, प्रकाश करणारा
 कोण आणि प्रकाश करून घेणारा कोण ?
 १५९९ ह्याचा खरा निर्णय करावयाला गेलें
 झणजे विचारच खुंटतो. इतके दोघे संवादानें
 एकरूप झाले. १६०० महाराज ! दोन ठि-
 काणचीं उदकें एकमेकांस मिळतील झणून
 त्यांचें निवारण करण्यास मध्यंतरीं जर मीठ
 बसलें, तर क्षणमात्रांत तेंही तद्रूप होऊन
 जातें. १६०१ त्याप्रमाणें श्रीकृष्ण आणि
 अर्जुन ह्या दोघांचें संभाषण झालें तें मनांत
 आल्यामुळें माझीही तशीच अवस्था झाली.”
 १६०२ असें बोलला न बोलला, तों त्या संभा-
 षणाची स्मृति सात्विकपणानें कोठें नेली कोण
 जाणे ! १६०३ जों जों रोमांच उभे राहूं ला-
 गले, तों तों आंगाचा संकोच होऊं लागला.
 गर्हिवर आणि घाम ह्या दोघांस एका कंपा-
 नेच मार्गें सारलें. १६०४ अद्वयानंदाची गांठ
 पडल्यामुळें दृष्टि ब्रह्ममयच होऊन गेली होती.
 त्यामुळें आलेले अश्रु, अश्रु नव्हेत, तर जणों काय
 पाह्यारच फुटलेसे दिसत होते. १६०५ पोटांत
 काय राहिलें होतें कोण जाणे ? कंठांत काय
 बसलें तें समजेनाच ! हुंदके येऊन ते शब्दार्थाला
 आडकाठी करूं लागले. १६०६ किंबहुना अशा
 सात्विकाच्या आठ भावांनींही त्याची अगदीं
 बोबडीच वळवून सोडली. त्यामुळें संजय हा
 त्या संवादसुखाचा चव्हाटाच होऊन राहिला.
 १६०७ पण त्या सुखांत एक असा धर्म होता

कीं, तें आपलें आपणच शांति धरित असे.
 त्यामुळें पुन्हां तो देहमानावर आला. १६०८
 व्यासप्रसादाच्छ्रुतवानेतद्ब्रह्महं परम् ।

योगं योगेश्वरात्कृष्णात्साक्षात्कथयतः स्वयम् ॥७९॥

[व्यासप्रसादाच्छ्रुतवान्] तेव्हां नैसर्तेनि आनंदें । झणे
 जी जें उपनिषदें । नेणती तें व्यासप्रसादें । ऐकिलें मियां
 ॥ ९ ॥ [एतद्ब्रह्महं परं] ऐकतांचि ते गोटी । ब्रह्मत्वाची
 पडिली मिठी । मीतूंपणेसी दिठी । विरोनि गेली ॥१६१०॥
 [योगं योगेश्वरात्कृष्णात्] हे आधवेचि कां योग । जयाठाया
 येते मार्ग । तयाचें वाक्य स्वर्ग । केलें मज व्यासें ॥ ११ ॥
 [साक्षात्कथयतः स्वयं] अहो अर्जुनाचेनि मिथें । आपणपेंचि
 दुजें ऐसें । नटोनि आपण्या उद्देशें । बोलिले जें देव ॥ १२ ॥
 तेथ कीं माझे श्रोत्र । पांटाचें जाले जी पात्र । काय वाचूं
 स्वतंत्र । सामर्थ्य श्रीगुरूचें ॥ १३ ॥

तेव्हां आनंद स्थीर झाल्यानंतर झणूं ला-
 गला “महाराज ! जें उपनिषदांना सुखां
 माहित नाही, तें मला व्यासाच्या प्रसादानें
 एकावयास मिळालें. १६०९ तो संवाद ऐक-
 तांच ब्रह्मत्वाचीच गांठ पडली आणि मी तूं-
 पणाची दृष्टि होती ती नाहीशीच झाली.
 १६१० हे सारे योग ज्याच्या ठिकाणीं जा-
 ण्याचे मार्ग, त्या भगवंताचें वाक्य व्यासांनीं
 मला सुलभ करून दिलें. १६११ अहो !
 अर्जुनाच्या निमित्तानें आपणच दुसरेपणाचें
 सोंग घेऊन आपल्यासाठींच देव बोलले.
 १६१२ त्याच्या अधिकाराला किहो माझे कान
 पात्र झाले ! तेव्हां त्या श्रीगुरूचें स्वतंत्र सा-
 मर्थ्य किती झणून वर्णन करूं ?” १६१३

राजन्संस्मृत्य संस्मृत्य संवादमिममद्भुतम् ।

केशवार्जुनयोः पुण्यं हृष्यामि च मुहुर्मुहुः ॥७९॥

[राजन् इमं अद्भुतं] राया हें बोलतां विस्मित होय ।
 [केशवार्जुनयोः पुण्यं] तेणेंचि मोडावला ठाये । रत्नी कीं
 रत्नकिळें ये । झांकोळित जैसी ॥ १४ ॥ [हृष्यामि च मुहु-
 र्मुहुः] हिमवंतीचीं सरोवरें । चंद्रोदयी होती कांश्मीरें । मग
 सूर्यागमीं माघारें । द्रवत्व ये ॥ १५ ॥ [संस्मृत्य संस्मृत्य]

१ उपनिषत्संवाद. २ हारपली. ३ योग्यतेचें, अ-
 धिकाराचें पात्र. ४ हिरसुसला होऊन राहो. ५ चकाकीला.
 ६ स्फटिकाकार.

संवाद' तैसा शरिराचिया स्मृती । तो संवाद संजय चित्ती । धरी आणि पुढती । तेचि होय ॥ १६ ॥

हें ऐकून धृतराष्ट्र राजाला मोठें आश्चर्य वाटलें. त्यामुळें संजय हिरमुष्टि होऊन राहिला. रत्नाची झकाकीच जशी रत्नाला झांकते, १६१४ हिमालय पर्वतावरील सरोवरें, चंद्रोदय झाला कीं, स्फटिकासारखीं होतात. आणि सूर्योदय झाला झणजे फिरून तीं पाझरूं लागतात. १६१५ त्याप्रमाणें देहभानावर येतांच तो संवाद पुन्हा संजयाच्या मनांत आला, आणि पुन्हा त्याची पूर्ववत् अवस्था झाली! १६१६

तच्च संस्मृत्य संस्मृत्य रूपमत्यद्भुतं हरे: ।

विस्मयो मे महान् राजन् हृष्यामि च पुनः पुनः ७७

[राजन्] मग उठोनि झणे तृपा । [तच्चेति] श्रीहरीचिया विश्वरूपा । रेखिलया उगा कां पां । असों लाहसी ॥ १७ ॥ न देखेणेंनि जें दिसे । नाहीपणेंचि जें असे । विसरें आठवे तें कैसे । जुकजं आतां ॥ १८ ॥ [विस्मयो मे महान्] देखोनि चमत्कार । कीजे तो नाही पसार । मजही सकट महापुर । नेत आहे ॥ १९ ॥ ऐसा श्रीकृष्णार्जुन- । संवाद-संगमीं स्नान । करुनि देतसे तिळदान । अहंतेचें ॥ १६२० ॥ [हृष्यामि च पुनः पुनः] तेथ अंसवरें आनंदें । अलौकिकही कांहीं स्फुंदे । श्रीकृष्ण झणे सद्गदें । वेळोवेळां ॥ २१ ॥ या अवस्थांची कांहीं । कौरवातें परी नाही । झणोनि रायें तें कांहीं । कल्पावें जंव ॥ २२ ॥ तंव जाला सुखलाम । आपणपां करुनि स्वयंभ । बुझाविला अवष्टम । संजयें तेणें ॥ २३ ॥ तेथ कोणी येकी अर्धसरी । होआवी ते करुनि दुरी । रावो झणे संजया परी । कैसे तुझी गा ॥ २४ ॥ तेणें तूतें येथें व्यासें । बैसविलें कांयसा उद्देशें । अप्रसंगामाजि ऐसे । बोलसी काई ॥ २५ ॥ रानीचें राउळ नेलिया । दाही दिशा मानी सुनिया । कां रात्री होय पांहुलया । निशाचरा ॥ २६ ॥ जो जेथिचें गौरव नेणे । तयासि तें भिरुळवाणें । झणोनि अप्रसंग तेणें । झणावा कीं तो ॥ २७ ॥ मग झणे सांगें प्रसुत । उदयलेंसे जें उत्कळित । तें कोणासि बारे जैतें । देखील शेखीं ॥ २८ ॥ येन्हवीं विशेषिं बहुतेक । आमुचें ऐसें मानसिक । जे दुयां-

१ शरीराच्या स्मृतीला संवादानें कांहीं वेळ धरलें=आवरलें पण पुनः तीच स्मृति झाली. २ न दिसणें व दिसणें, नसणें व असणें, स्मृति व आठव असें जें अत्यद्भुत. ३ प्रसार. ४ न सांवरणाऱ्या. ५ हुंदके देई, उसासा टाकी. ६ जिरविला. ७ सात्विकाहंकार. ८ करमणूक. ९ रीत. १० कोणत्या. ११ अवधान सोडून. १२ उजाडलें असतां. १३ भयंकर. १४ ज्याची मला उत्कंठा तें. १५ विजय.

धनाचे अधिक । प्रताप सदा ॥ २९ ॥ आणि येरांचेनि पाडें । देळही याचें देव्हडें । झणोनि जैत फुडें । आणील ना तें ॥ १६३० ॥ आझां तंव गमे ऐसें । मा तुमं जोतीचें कैसें । तें नेणों संजया असे । तैसें सांग पां ॥ ३१ ॥

मग उठून झणाला “महाराज!—अकराव्या अध्यायांत वर्णन केलेलें—श्रीहरीचें विश्वरूप मनांत बिंबलें असतांही, आपल्याच्यानें स्वस्थ बसवतें तरी कसें ? १६१७ न पाहतांही जें विसतें, नसूनच जें भासतें; विस्मृतींतही जें स्मरतें, त्याला आतां टाळावें तरी कसें ? १६१८ तो चमत्कार पाहून चमत्कार असें झणण्याला सुखां अवकाश रहात नाही. इतका तो महापूर मला सुखां वाहून नेत आहे ! १६१९ ह्याप्रमाणें श्रीकृष्णार्जुनाच्या संवादरूप संगमांत स्नान करून अहंतेची तिळांजुळी देऊं लागला. १६२० तेव्हां आनंद आवरेनासा झाला. कांहीं विलक्षण प्रकारचे हुंदके देऊं लागला. सद्गदित अंतःकरणानें वारंवार “श्रीकृष्ण” “श्रीकृष्ण” असें झणूं लागला. १६२१ ह्या अवस्थेची धृतराष्ट्राला कल्पनाही नव्हती. झणून तो असें कां करतो, असा तर्क करणार, १६२२ तोंपर्यंत संजयानें यथेच्छ सुख भोगलें, आणि मग आपला आपणच निग्रह करून आलेला गद्दिवर सांवरून घेतला. १६२३ तेव्हां राजा झणाला “संजया ! तूं कांहीं तरी करमणूक करावयाची तें सारें टाकून ही तुझी भलतीच तन्हा कसली ? १६२४ तुला येथें त्या व्यासांनीं कोणत्या उद्देशानें बसविलेलें आहे ? आणि हें—अप्रासंगिक—भलतेंच काय बडबडत बसला आहेस ?” १६२५ रानांत राहणाऱ्याला जर घरांमध्ये नेलें, तर त्याला दाही दिशा शून्य वाटूं लागतात. किंवा चोराला उजाडलें कीं, रात्र होते. १६२६ ज्या ठिकाणचें महत्त्व ज्याला समजत नाही, त्याला तें भयंकरच वाटतें. तेव्हां त्यानें त्याला अप्रसंग झणावा हें योग्यच आहे. १६२७ मग झणाला “बाबारे ! आतां हें सांग, कीं हें जें सुख उपास्थित झालें आहे,

१ इतर जे पांडव त्यांच्या योग्यतेस. २ सैन्य. ३ अधिक. ४ गणित, भाकीत.

त्यांत शेवटीं विजयी कोण होईल ? १६२८
बाकी फार करून-हजार वाटेनें-आमचा तर्क
तर असा आहे कीं, केव्हांही झालें तरी दुयो-
धनाचा प्रताप हा अधिकच, १६२९ आणखी
प्रतिपक्षाच्या योग्यतेनें पाहिलें तर, यांचें सैन्य-
ही फार मोठें आहे. तेव्हां त्याला विजय येणार
नाहीं काय ? १६३० आह्वांला तर असें वाटतें.
मग संजया ! तुझें ज्योतिष कसें काय तें कळत
नाहीं. तर तें कसें काय आहे सांग पाहूं.” १६३१

यत्र योगेश्वरः कृष्णो यत्र पार्थो धनुर्धरः ।

तत्र श्रीविजयो भूतिर्धुवानीर्तिर्मतिर्मम ॥ ७८ ॥

हरिः ॐ तत्सदिति श्रीमद्भगवद्गीतासूपनिषत्सु ब्रह्मवि-
द्यायां योगशास्त्रे श्रीकृष्णार्जुनसंवादे मोक्षसंन्यास-

योगो नामाष्टादशोऽध्यायः ॥ १८ ॥

[यत्र योगेश्वरः कृष्णो] यया बोला संजयो झणे । जी
येरंयेरांचें मी नेणें । परि आयुष्य तेथें जिणें । हें फुडें कीं गा
॥ ३२ ॥ चंद्र तेथें चंद्रिका । शंभु तेथें अंबिका । संत तेथें
विवेका । असणें कीं जी ॥ ३३ ॥ रावो तेथें कटक ।
सौजन्य तेथें सोदरीक । बन्दि तेथें दाहक । सामर्थ्य कीं
॥ ३४ ॥ दया तेथें धर्म । धर्म तेथें सुखागम । सुखीं पुरुषो-
त्तम । असे जैसा ॥ ३५ ॥ वसंत तेथें वनं । वन तेथ
सुमेनं । सुमनीं पार्लिंगे । सारंगांचीं ॥ ३६ ॥ गुरु तेथ
ज्ञान । ज्ञानीं आत्मदर्शन । दर्शनीं समाधान । आधि जैसं
॥ ३७ ॥ भाग्य तेथ बिर्लास । सुख तेथें उल्लास । हें असो तेथ
प्रकाश । सूर्य जेथें ॥ ३८ ॥ तैसे सकळ पुरुषार्थ । जेणें
स्वामी कां सनाथ । तो श्रीकृष्ण रावो जेथ । [तत्र श्रीः] तेथ
लक्ष्मी ॥ ३९ ॥ [भूतिः] आणि आपलेनि कैतेसी । ते
जगदंबा जयापासीं । अणिमादिकी काय दासी । नव्हती
तयातें ॥ १६४० ॥ [विजयः] कृष्ण विजयस्वरूप निजांगें ।
तो राहिला असे जेणें भागे । तें जय लागवेगें । तेथेंचि आहे
॥ ४१ ॥ [यत्र पार्थो धनुर्धरः] विजयी नामें अर्जुन वि-
ख्यात । विजयस्वरूप श्रीकृष्णनाथ । ‘‘अत्रियेसीं विजय नि-
श्चित । तेथेंचि असे ॥ ४२ ॥ तयाचिये देशींच्या झाडीं ।
कल्पतरूतें ‘होडी । न जिणोंवें कां येवढीं । मायबापें
असतां ॥ ४३ ॥ ते पाषाणही आघवे । चित्तराजें कां नो-
हावे । तिये भूमिके कां न यावें । सुवर्णत्व ॥ ४४ ॥ तया-
चिया गांवींचिया । नदी अमृतें वाहाविया । नवल काय

१ दुसऱ्या तिसऱ्यांचें. २ चांदणें. ३ विचार. ४ राजा असेल
तिकडे सैन्य. ५ पुष्पें. ६ समुदाय. ७ भ्रमरांचीं. ८ सुखो-
पभोग. ९ पतीसह. १० अष्टसिद्धि. ११ लक्ष्मीसह. १२ पैज
मारी. १३ न जिंकावे. १४ चित्तामणी.

राया । विचारीं पां ॥ ४५ ॥ तयाचे बिर्साट शब्द । सुखें
झणों येती वेद । संदेह सच्चिदानंद । कां नोहावे ते ॥ ४६ ॥
पें स्वर्गपवर्ग दोन्ही । इयें पदें तया अधीनीं । श्रीकृष्ण बाप
जननी । कैमळा जया ॥ ४७ ॥ झणौनि जिंया बाहीं उभा ।
तो लक्ष्मीयेचा वल्लभा । तेथ सर्वसिद्धि स्वयंभा । येर मी
नेणें ॥ ४८ ॥ आणि समुदाचा मेघ । उपयोगें तयाह्मनि
चांग । तैसा पार्थी आजि लाग । आहे तये ॥ ४९ ॥
कैनकवदीक्षागुरु । लोई परीस होय कीड । परि जगा पो-
सिता व्यवहार । तेंचि जाणें ॥ १६५० ॥ येथ गुरुत्वा येतसे
उणें । ऐसें झणें कोणही झणे । बन्दिप्रकाश दीपपणें ।
प्रकाशी आपला ॥ ५१ ॥ तैसा देवाचिया शक्ती । पार्थ
देवांसीच बहुती । पॅरी माने इये खुती । गौरव असे ॥ ५२ ॥
आणि पुत्रें मी सर्व गुणीं । जिणावा हे बापा शिरोणी । तरी
ते शास्त्रपाणी । फळा आली ॥ ५३ ॥ किंबहुना ऐसा नृपा ।
पार्थ जालासे कृष्णकृपा । तो जयाकडे साक्षपा । रीती आहे
॥ ५४ ॥ तोचि गा विजयासि ठावो । येथ तुज कोण संदेहो ।
तेथ नये तरी बावो । विजयोचि होय ॥ ५५ ॥ झणौनि
जेथ श्री तेथ श्रीमंत । जेथ तो पंडुचा सुत । तेथ विजय
समस्त । अभ्युदय तेथ ॥ ५६ ॥ [ध्रुवा] जरी व्यासाचेनि
सांचें । धिरे मन तुमचें । तरी या बोलाचें । ध्रुवेचि माना
॥ ५७ ॥ [नीतिः] जेथ तो श्रीवल्लभ । तेथ भक्तकंदब । तेथ
सुख आणि लाभ । मंगळाचा ॥ ५८ ॥ [मतिर्मम] या बोला
आन होये । तरि व्यासाचा अंके न वाहें । ऐसें गोंजोनि
वाहे । उमिली तेणें ॥ ५९ ॥ [‘श्लोकमाहात्म्यं’] एवं भार-
ताचा आंवांका । आणुनि श्लोकां येका । संजयें कुरुनायका ।
दीधलाहतीं ॥ १६६० ॥ जैसा नेणो केवढा बन्दि । परि गुंणांप्रीं
ठेऊनी । आणजे सूर्याची हानी । निस्तरावया ॥ ६१ ॥
तैसें शब्दब्रह्म अनंत । जालें सवालक्ष भारत । भारताचें
शतें सात । सर्वस्व गीता ॥ ६२ ॥ तयाही सातां शतांचा ।
इत्यर्थ हा श्लोकेशींचा । व्यासशिष्य संजयाचा । पूर्णोद्धार
जो ॥ ६३ ॥ येणें येकेंचि श्लोकें । राहें तेणें अंसकें ।

१ भलते, अव्यवस्थित. २ ते मूर्तिमंत सच्चिदानंदरूप कां
न व्हावे, आहेतच. ३ लक्ष्मी. ४ ज्या पक्षाकडे, ज्या
भागी. ५ पति. ६ संबंध. ७ सुवर्णपणा येण्याची दीक्षा
देणारा गुरु. ८ लोखंडाला सुवर्ण करणारा परिस आहे
परंतु. ९ सुवर्णच. १० कदाचित्. ११ या खुतीनें देवा-
लाच महत्त्व आहे. १२ प्रकारें. १३ इच्छा. १४ पक्षपा-
तपूर्वक. १५ विजयाचें विजयत्व व्यर्थ होईल. १६ अधिक
उदय. १७ खरेपणांन. १८ विश्वासे. १९ अढळत्वच. २० भक्त-
समुदाय. २१ कल्याणाचा. २२ अंकितपण, शिष्यत्व-
चिन्ह. २३ असें मोठ्यानें बोलून हात उभारला. २४ मत-
लब. २५ ‘यत्र योगेश्वरः कृष्णो’ ह्या शेवटच्या श्लोकांत.
२६ बासीच्या अर्मी, २७ नाश दूर करायचा. २८ संपूर्ण.

अविद्याजाताचें निवें । जितिलें होय ॥ ६४ ॥ ऐसे श्लोकशतें सात । गीतेचीं पदें आंगे वाहत । पदें झणों की परमाभूत । गीताकाशीचें ॥ ६५ ॥ कीं आत्मराजाचिये सभे । गीते वो-डबळे हे खांबे । मज श्लोक प्रतिभे । ऐसे येत ॥ ६६ ॥ कीं गीता हे सप्तशती । मंत्रप्रतिपाद्य भगवती । मोहमहिषा मुक्ती । आनंदली असे ॥ ६७ ॥ झणौनि मनें कार्ये वाचा । जो सेवक होईल इयेचा । तो खानंदसाम्राज्याचा । चक्रवर्ती करी ॥ ६८ ॥ कीं अविद्यातिमिररोखें । श्लोक सूर्यातें पैजा जिके । ऐसे प्रकाशिले गीतामिषें । रायें श्रीकृष्ण ॥ ६९ ॥ कीं श्लोकाक्षरद्राक्षलता । मांडव जाली आहे गीता । संसार-पथ-भ्रांता । विसंवावया ॥ ७० ॥ कीं सभाग्यसंतीं भ्रमरी । सेविले ते श्लोक कंठहारी । श्रीकृष्णाख्यसरोवरी । सांसिखली हे ॥ ७१ ॥ कीं श्लोक नव्हती आन । गमे गी-तेचें महिमान । वाखाणिते बंदिजन । उदंड जैसे ॥ ७२ ॥ कीं श्लोकांचिया आवारा । सात शतें करुनि सुंदरा । सर्वा-गम गीतापुरा । वसों आले ॥ ७३ ॥ कीं निजकांता आ-त्मया । आवडी गीता मिळावया । श्लोक नव्हती बाधा । पसर कां जो ॥ ७४ ॥ कीं गीताकमळांचे भुंयें । कीं हे गीतासागरतरंग । कीं हरीचे हे तुरंग । गीतारथीचे ॥ ७५ ॥ कीं श्लोकसर्व तीर्थसंघात । आला श्रीगीतेगंगे आंत । जे अर्जुन सिंहस्थ । जाला झणौनि ॥ ७६ ॥ कीं नोहे हे श्लोकश्रेणी । अंचितचित्तचित्तामणी । कीं निर्विकल्पां लावणी । कल्पतरूची ॥ ७७ ॥ ऐसिया शतेंसात-श्लोका । परी आगळा येकयेका । आतां कोण वेगळिका । वानावां पां ॥ ७८ ॥ तान्ही आणि पारंटी । इया कामधे-नूतें दिडी । सुनि जैसिया गोठी । कीजती ना ॥ ७९ ॥ दीपा आगिलें मागिल । सूर्य धाकुटा वडील । अमृतसिंधू खोल । उथळ कायसा ॥ ८० ॥ तैसे पहिले सरंते । श्लोक न झणावे गीते । जुनीं नवीं पारिजातें । आहाती काई ॥ ८१ ॥ आणि श्लोका पाड नाही । हें कीर समर्थ काई । येथ वाच्य वाचकही । भाग न धरी ॥ ८२ ॥ [पाठमा-हात्म्ये] जे इये शास्त्री येक । श्रीकृष्णचि वाच्य वाचक । हें प्रसिद्ध जाणे लोक । भलताही ॥ ८३ ॥ येथें अर्थें तेंचि पाठें । जोडें सेवढे निधेटें । वाच्यवाचक येकवटें । साधितें

शास्त्र ॥ ८४ ॥ झणौनि मज काहीं । समर्थनीं आतां विषय नाही । गीता जाणा हे बाळ्या । श्रीमूर्ति प्रभूची ॥ ८५ ॥ शास्त्र वाच्यें अर्थें फळे । मग आपण मावळे । तैसें नव्हे हें सगळें । परब्रह्मची ॥ ८६ ॥ कैसा विश्वैचिया कृपा । करुनि महानंद सोपा । अर्जुनव्याजें रूपा । आणिला देवें ॥ ८७ ॥ चकोराचेनि निमित्तें । तिन्हीं भुवनें संततें । निवविलीं कळा-वतें । चंद्र जेवि ॥ ८८ ॥ कां गीतमाचेनि मिषें । कळिकाळ उवरितोइशें । पाणिढाळ गिरीशें । गंगेचा केला ॥ ८९ ॥ तैसें गीतेचें हें दुभतें । वत्स करुनि पार्थातें । दुभीनली जगा-पुरतें । श्रीकृष्ण गाय ॥ ९० ॥ येथें जीवें जरी न्याल । तरी हेंच कीर होआल । ना तरि पाठमिषें तिंवाळ । जीभचि जरी ॥ ९१ ॥ तरि लोह एकें अशें । झगटलीया परिसें । येरी-कडे अपसैं । सुवर्ण होय ॥ ९२ ॥ तैसी पाठाची ते बाटी । श्लोक पाद लाबावा जंव वोटी । तंव ब्रह्मतेची पुट्टी । येथील आंगा ॥ ९३ ॥ ना येणेंसी मुख बांकडें । करुनि ठाकाल कानवडें । तरि कार्नीही घेतां पडे । तेचि लेखें ॥ ९४ ॥ जे हे श्रवणें पाठें अर्थें । गीता नेदी मोक्षाभरीतें । जैसा समर्थ दाता कोण्हातें । नास्ति न झणे ॥ ९५ ॥ झणौनि जाणतया सवा । गीताचि येकी सेवा । काय कराल आपवां । शास्त्री येरी ॥ ९६ ॥ आणि कृष्णाजुनीं मोर्कळी । गोठी चावळिली जे निराली । ते श्रीव्यासें केली करतळी । घेवों ये ऐसी ॥ ९७ ॥ बाळकातें बोरसें । माय जें जेवळ बैसे । तें तेंचि ठाकती तैसे । घांस करी ॥ ९८ ॥ कां अफाटा समीरण । आपेंतेंपण शाहाणा । केळें जिसें विजंणा । निर्मूनियां ॥ ९९ ॥ तैसें शब्दें जें न लभे । तें घडूनियां अनुष्ठुमें । क्रीश्र्वादिप्रतिभे । सामाविलें ॥ १०० ॥ खाती-चेनि पाणियें । न होती जरी मोतियें । तरि आंगीं सुंदरा-चिये । कां शोभती तियें ॥ १०१ ॥ नाद वाद्या न येतां । तरि कां गोचर होता । फुलें न होतां घेपता । आमोद केवि ॥ १०२ ॥ गोडीं न होती पकाभें । तरि कां फावती रसने । दर्पणा-विण नयनें । नयन कां दिसे ॥ १०३ ॥ द्रष्टा श्रीगुरुमूर्ती । न रिगता दैश्यपंथी । तरि कां ह्या उपांस्ती । आकळता तो

१ गीता हीच काशी तिचें, स्वर्गीचें. २ प्रतिभारुन येतात. ३ भ्रांतिमहिषासुराची मुक्ता निरास केल्यानें. ४ करिते. ५ अज्ञानांधकार आवडून. ६ कमळांनीं. ७ सिद्ध झाली. ८ स्तुतिपाठक. ९ वेदशास्त्रादि. १० भ्रमर. ११ अ-चित्त=विरक्त यांच्या चित्ताला चित्तामणि. १२ वर्णावा. १३ शुष्क. १४ दृष्टि देऊन. १५ पुढचाभागचा. १६ श्रेष्ठ, श्रेष्ठले. १७ पारिजात जुना असो नवा असो, परिमळ सारखाच. १८ मोठ्या पराक्रमानें प्राप्त होण्याजोगें.

१ प्रतिपादनाल. २ वाणीरूप. ३ जगावर कृपा करून. ४ अर्जुनाच्या निमित्तानें. ५ प्रत्यक्षतेस. ६ कलिकालरूप जो ज्वर, त्याणें पीडित. ७ पायउतार. ८ भिजवाल. ९ एका अंगावर. १० प्रकार. ११ नाही. १२ शाल्याबराबर. १३ स्पष्ट. १४ बोलिली. १५ आकाशांत. १६ पान्हा दाटून आल्यानें, अति ममतेनें. १७ सोईस पडतील तसे. १८ वाऱ्याळा. १९ आधीनपण, वक्ष्यता. २० पंखा. २१ प्रतिविंबांत. २२ फुलें उत्पन्न झालीं नसतीं तर गुंगय कसा घेतां येता ? २३ पकाभें गोड झालीं नसतीं तर जिमेला गोड कां लागतीं ? २४ साक्षी. २५ साकार झाला नसता. २६ उपासनेला.

॥ ४ ॥ तैसें वस्तु जें असंख्यात । तथा संख्या शतें सात ।
न होती तरि कोणा येथ । फावो शकतें ॥ ५ ॥ मेघ सिं-
धूचें पाणी वाहे । तरी जग तयातेंचि पाहे । कां जें उर्मप
तें नोहे । ठाकतें कोण्हा ॥ ६ ॥ आणि वाचा जें न पवे ।
तें हे श्लोक न होते बरवे । तरि कां नें मुखें फावे । ऐसें
कां होतें ॥ ७ ॥ ह्मणोनि श्रीव्यासाचा हा थोर । विश्वासि
जाला उपकार । जे श्रीकृष्ण उक्ती आकार । ग्रंथाचा केला
॥ ८ ॥ आणि तोचि हा मी आतां । श्रीव्यासाचीं पदें पा-
हातां पाहातां । आणिला श्रवणपथा । मन्हाठिया ॥ ९ ॥
व्यासादिकांचे उन्मेख । राहाटती जेथ सांशक । तेथ मीही
रंक येक । वाचाळी करीं ॥ १० ॥ परि गीता ईश्वर
भोळा । ले व्यासोक्तिकुसुममाळ । तरि माझिया दूबांदळा ।
ना न ह्मणे कीं ॥ ११ ॥ आणि क्षीरसिंधूचिया तटा । पा-
णिघा येती गंजघटा । तेथ काय मुरकुटा । वारिजत असे
॥ १२ ॥ पाखें-फुटे पाखिरं । नुडे तरी नमींच स्थिर ।
गगन आक्रमी सत्वर । तो गंजवडी तेथ ॥ १३ ॥ राजहं-
साचें चालणें । भूतळीं जालिया शंहाणें । आणिकें काय
कोणें । चालावेंचि ना ॥ १४ ॥ जी आपुलेनि अवकाशें ।
अगाध जळ घेपे केलशें । चुळीं चूळपणा ऐसें । भरुनि न
निघे ॥ १५ ॥ दिवडीच्या आंगीं थोरी । तरि ते बहु तेज
धरी । वाती आपुलिया परी । आणीच कीं ना ॥ १६ ॥
जी समुद्राचेनि पैसें । समुद्रीं आकाश आभासे । थिळरीं
थिळराऐसें । विवेचि पें ॥ १७ ॥ तेवि व्यासादिक महामती ।
वावरां येती इये ग्रंथीं । मा आझी ठांकीं हे युक्ती । न मिळे
कीर ॥ १८ ॥ जिये सागरीं जळचरें । संचरती मंदराकारें ।
तेथ देखोनि शंफरें घेरें । पोहों न लाहती ॥ १९ ॥ अरुण
आंगार्जवळिके । ह्मणोनि सूर्यातें देखे । मा भूतळीची न
देखे । मुंगी काई ॥ २० ॥ यालागीं आझां प्राकृतां ।
देशिकारें बंधे गीता । ह्मणणें हें अनुचिता । कारण नोहे
॥ २१ ॥ आणि वाप पुढां जाये । ते घेत पांउलाची सोये ।

१ मिळू शकतें. २ अगणित. ३ जर हे श्लोक चांगले
झाले नसते तर वाचा जें न पवे-वाणीला जें अगोचर तें
कां नें मुखें फावे-कानांला व मुखाला प्राप्त कसें झालें असतें.
४ ग्रंथ. ५ ज्ञानोद्धार. ६ अनिर्धारित. ७ बडबड. ८ व्यासो-
क्तिरूप फुलांची माळा. ९ गजसमुदाय. १० चिलटाला.
११ पंख फुटणारें पांखरूं व गडद आपआपल्या सामर्थ्यानु-
रूप आकाशांत उडतात. सीमा दोघांलाही नाही. “नभः
पतंल्यात्मसमं पतन्निग्नः” भागवत. १२ सुंदर. १३ कलश
अगाध जलांत गेला तरी त्याच्या अवकाशाइतकेंच पाणी
त्यांत रहातें. १४ तसे व्यासादि या ग्रंथांत वावरतात.
आझी मात्र ठाको-हात टेंकावे-उगेच वसावें-हें बरें नव्हे.
१५ लहान मत्स्य. १६ अगदीं जवळ राहणारा, सारथी.
१७ देशभाषेनें. १८ अयोग्यपणाला. १९ पावळट.

बाळ ये तरि न लाहे । पावो कायी ॥ २२ ॥ तैसा व्यासाचा
मागोवा घेत । भाष्यकारातें वाट पुसत । अयोग्यही मी न
पवत । १ कें जाइन ॥ २३ ॥ आणि पृथ्वी जयाचिया क्षमा ।
नुबगे स्थावर जंगमा । जयाचेनि अमृतें चंद्रमा । निववी
जग ॥ २४ ॥ जयाचें आंगिके असिकें । तेज लाहोनि अकें ।
आंधाराचे सावाइकें । लोटिजत आहे ॥ २५ ॥ समुद्रा
जयाचें तोय । तोया जयाचें माधुर्य । माधुर्या सौंदर्य ।
जयाचेनि ॥ २६ ॥ पवना जयाचें बळ । आकाश जेणें
पेधळ । ज्ञान जेणें उज्वळ । चक्रवर्ति ॥ २७ ॥ वेद जेणें
सुभास । सुख जेणें सोळास । हें असो रूपस । विश्व जेणें ॥ २८ ॥
तो सर्वोपकारी समर्थ । सद्गुरु श्रीनिवृत्तिनाथ । रहाटत असे
मजहीआंत । रिघोनियां ॥ २९ ॥ आतां आयती गीता
जगीं । मी सांगें मन्हाठिया भंगीं । येथ कें विस्मयालागीं ।
ठाव आहे ॥ १०३० ॥ श्रीगुरुचेनि नांवें माती । डोंगरां
जयापासीं होती । तेणें कोळियें त्रिजगती । येकवर्दे केली
॥ ३१ ॥ चंदनं वेधलीं झाडें । जालीं चंदनाचेनि पाडें ।
वसिष्ठें मांडली कीं भांडे । भानुसीं शोटी ॥ ३२ ॥ मा मी
तंव चित्ताथिला । आणि श्रीगुरु ऐसा दांडुला । जो दिठीवेनि
आपुला । वसवी पदीं ॥ ३३ ॥ आधींचि देखणी दिठी । वरी
सूर्य पुरवी पांठी । तें न दिसे ऐसी गोठी । केंही आहे ॥ ३४ ॥
ह्मणोनि माझे निल्य नवे । श्वासोच्छ्वासही प्रबंध होआवे ।
श्रीगुरुकृपा काय नोहे । ज्ञानदेव ह्मणे ॥ ३५ ॥ याकारणें
मियां । श्रीगीतार्थ मन्हाठिया । केला लोकां यया । दिठीचां
विपो ॥ ३६ ॥ परि मन्हाटे बोलरेंगे । कवळितां पें गीतांगें ।
तें गातयाचेनि पांगें । येकांब्यता नोहे ॥ ३७ ॥ ह्मणोनि
गीता गावो ह्मणे । तें गांणिवे होती लेणें । ना मोकळे तरि
उणें । गीताही आणित ॥ ३८ ॥ सुंदर आंगीं लेणें न सूये ।
तें तो मोकळा श्रंगार होये । ना लेढलें तरि आहे । तैसें
कें उचित ॥ ३९ ॥ कां मोतियांची जैसी जाती । सोनयाही
मान देती । ना तरि मानवती । अंगेंचि सडीं ॥ १०४० ॥
ना ना गुंफिलीं कां मोकळीं । उणीं न होती परिमळीं । व-
संतागमींचीं वाटोळीं । मोगरीं जैसीं ॥ ४१ ॥ तैसा गाणीवेनें

१ माग घेत घेत. २ न पावतां. ३ कोणीकडे ?
४ सहनशक्तीमुळे. ५ न कंटाळे. ६ संपूर्ण साख.
७ संपूर्ण ऐहिक. ८ दूर करीत आहे. ९ विस्तार.
१० चांगलें बोलणारा. ११ प्रकाशित, देखणें. १२ भाषेच्या
रीतीनें. १३ एकत्र. १४ इतर झाडें चंदनसहवासानें त्याच्या
तुलनेस येतात. १५ भांडणाच्या निवाज्यासाठी. १६ छाटी.
१७ चित्त सद्गुरुमय झालेला, सचेतन. १८ धनी. १९ दृष्टि-
मात्रानें. २० पाठीराखा. २१ काव्य, ग्रंथ. २२ दृष्टिगोचर.
२३ अधीनपणानें. २४ एकदेशित्व. २५ गाणीं. २६ सुवर्ण-
रहित, नुसतीं.

मिरवी । नीतेवीर्णही रंग दावी । तो लाभाचा प्रबंध बोवी ।
केला मियां ॥ ४२ ॥ तेणें आंबाळसुबोधें । वोवियेचेनि
प्रबंधें । प्रहारससुखादें । अक्षरें गुफिलीं ॥ ४३ ॥ आतां
चंदनाच्या तरुवरीं । परिमळांलगीं फुलवरी । पारुखणें जि-
यापरी । लागेना कीं ॥ ४४ ॥ तैसा प्रबंध हा श्रवणीं ।
लागतखेबो समाधि आणी । ऐकिलियाही वाखाणी । काय
व्यसन न लवी ॥ ४५ ॥ पाठ करितां व्याजें । पांडिलें येती
वैधेजें । तें अमृतातें नेणजे । फाविल्या ॥ ४६ ॥ तैसेनि
आइतेपणें । कवित्वा जालें हें उपेणें । मनन निदिध्यास श्रवणें ।
जितिलें आतां ॥ ४७ ॥ हे खानंदमोगाची सेलें । भलत-
यासीचि देखिलें । सर्वेद्रियां पोषवील । श्रवणाकरवीं ॥ ४८ ॥
चंद्रातें आंगवणें । भोगीन चकोर शाहाणे । परि फावे जिसें
चांदिणें । भलतयाही ॥ ४९ ॥ तैसें अंध्यात्मशास्त्रीं यिये ।
अंतरंगचि अधिकारियें । परि लोक वाकूचातुयें । होईल
सुखिया ॥ ५० ॥ ऐसें श्रीनिश्चिनाथाचें । गोरष आहे
जी साचें । ग्रंथ नोहे हें कृपेचें । वैभव तिये ॥ ५१ ॥ क्षी-
रसिंधूंपेरिसरीं । शक्तीच्या कर्णकुहरीं । नेणें कै श्रित्तिपुरारीं ।
सांगीतलें जें ॥ ५२ ॥ तें क्षीर कळोळाआंत । मंक्रोदरीं
गुप्त । होता तयाचा हात । पेटें जालें ॥ ५३ ॥ तो मत्स्येंद्र
सप्तशृंगीं । भेन्नावयवा चौरंगीं । भेटला कीं तो सर्वांगीं ।
संपूर्ण जाला ॥ ५४ ॥ मग समाधी अंजलया । भोगावी वॉसना
यया । ते मुद्रा श्रीगोरक्षराया । दिधली मीनीं ॥ ५५ ॥ तेणें
चोर्गोळिजनीसरोवर । विषयविध्वंसकबीर । तिये पदीं कां
सर्वेश्वर । अभिषेकिले ॥ ५६ ॥ मग तिहीं तें शोभव ।
अद्रयानंदवैभव । संपादिलें संभव । श्रीगंणीनाथा ॥ ५७ ॥
तेणें कैळिकळित भूतां । आला देखोनि निरुतां । ते आज्ञा
श्रीनिश्चिनाथा । दिधली ऐसी ॥ ५८ ॥ ना आदि गुरु
शंकरा- । लागोनि शिष्यपरंपरा । बोधाचा हा संसारा । जाला
जो आमुतें ॥ ५९ ॥ तो हा तूं घेऊनि आघवा । कळीं
गिळितयां जीवां । सर्व प्रकारीं धांवो । करीं पां वेगीं

॥ १७६० ॥ आधींच तंव तो कृपालु । वरि गुरुआशेचा
बोलु । जाला जैसा वर्षाकालु । खबळणें मेवां ॥ ६१ ॥ मग
आतांचेनि बोरसें । गीतार्थग्रंथनमिसें । वर्षेला शांतरसें ।
तो हा ग्रंथ ॥ ६२ ॥ तेथ पुढां मीं बापिया । मांडला आर्ती
आपुलिया । कीं यासाठीं येवढिया ! आणिलों यशा ॥ ६३ ॥
एवं गुरुकमें लाधलें । समाधिधन जें आपुलें । तें ग्रंथे बो-
धौनि दिधलें । गोसावीं मज ॥ ६४ ॥ बांचूनि पडे ना
वाची । ना सेवाही जाणें स्वामीची । ऐशिया मज ग्रंथाची ।
योग्यता कें असे ॥ ६५ ॥ परि साचचि गुरुनाथें । निमित्त
करुनि मातें । प्रबंधव्याजें जगातें । रक्षिलें जाणा ॥ ६६ ॥
तन्ही पुरोहितगुणें । मी बोलिलों पुरें उणें । तें तुझीं मा-
उलीपणें । उपासहिजो जी ॥ ६७ ॥ शब्द कैसा घडिजे ।
ग्रंथीं कैसें पां चडिजे । अळंकार हाणिजे । काय तें नेणें
॥ ६८ ॥ साहिखडेयाचें बाहुलें । चालविल्या सूत्राचेनि
चाले । तैसा मातें दावीत बोलें । स्वामी तो माझा ॥ ६९ ॥
यालागीं मी गुणदोष । विषीं क्षमाविना विशेष । जे मी
संजात ग्रंथलों देख । आचार्यें कीं ॥ ७० ॥ आणि तुझां
संतांचिये सभे । जें उणिवेसीं ठाके उभें । तें पूर्ण नोहे तें
लोभें । तुझांसीचि कोपो ॥ ७१ ॥ सर्वतैलियाही परिसें ।
लोहत्वाचिये अवदसे । न मूकिये आंयसें । तें कवणा बोल
॥ ७२ ॥ वोहळें हेंचि करावें । जे गंगेचें आंग ठाकावें ।
मग ही गंगा जरी नोहावें । तें तो काय करी ॥ ७३ ॥
ह्यानि भाग्ययोगें बहुवे पां हे । तुझां संतांचे मी पाये ।
पातलों आतां कें लाहें । उणें जर्गीं ॥ ७४ ॥ अहो जी
माझेनि स्वामी । मज संत जोडुनि तुझीं । दिधलेति तेणें
सर्वकामीं । परिपूर्ण जालों ॥ ७५ ॥ पाहा पां मातें तुझां
संगडें । माहेर तेणें सुरवाडें । ग्रंथाचें आळींयडें । सिद्धी
गेलें ॥ ७६ ॥ जी कनकाचें निखळ । वातूं येईल भूतळ ।
चितारवीं कुळचळ । निर्मू येती ॥ ७७ ॥ सातांही हो
सागरातें । सोपें भरितां अमृतें । दुवाड नोहे तारातें । चंद्र
करितां ॥ ७८ ॥ कल्पतरूचे आराम । लावितां नाहीं विषम ।
परी गीतार्थाचें वर्म । निवडूं नये ॥ ७९ ॥ तो मी येक सर्व
मुक्ता । बोलोनि मन्हाटिया भावा । करीं डोलेवरी लोकां ।
धेवों ये ऐसें जें ॥ १७८० ॥ हा ग्रंथसागर येव्हडा । उत-
रोनि पैलीकडा । कीर्तिविजयाचा धंडा । नाचें जें कां ॥ ८१ ॥

१ गाण्यावांचून. २ आबालवृद्धास सुगम. ३ सुवाससाठी. फूल येण्यापर्यंत. ४ वाट पहाणें. ५ लागण्याबराबर. ६ व्याख्यानरूपानें. ७ स्पष्ट. ८ प्राप्त झाल्यास. ९ विप्रां-
तिस्थान. १० विभाग. ११ नवसानें, खभावें, आपल्या
शक्तीनें. १२ प्राप्त होय. १३ या आत्मानात्मविचार-
शास्त्री. १४ अंतर्मुख. १५ सन्निधभागी. १६ पार्वतीच्या
कानांत. १७ लाटांमध्यें. १८ माशाच्या पोटांत. १९ प्राप्त.
२० हातपाय तुटलेल्या चौरंगीनाथास. २१ निर्विघ्न. २२ या
वाचनेनें, इच्छेनें. २३ मत्स्येंद्रनाथांनीं. २४ योगरूप कमलि-
नीचें. २५ विषयनाशाला मुख्य कारण. २६ अध्यात्मवि-
द्या-शंभूपासून उत्पन्न झालेलें तें. २७ मुळपासून. २८ क-
लीनें प्रस्त अशा. २९ खरा. ३० विस्तार. ३१ धांवून रक्षणें.

१ पीडिताच्या पान्थासाठी. २ ग्रंथ करण्याच्या निमित्तानें.
३ चातक. ४ गुरुपरंपरेनें. ५ परस्वाधीनपणानें. ६ क्षमा करा.
७ अर्थान्वयांत. ८ कळमूखी वाहुली. ९ ग्रंथयुक्त बोललों,
ग्रंथच मी झालों आहें. १० कोपुं लागून, रसेन. ११ स्पष्टलेल्या.
१२ वाडें स्थितीला. १३ लोहानें. १४ प्रवाहानें. १५ तुम-
च्यासारखें. १६ अनुकूल. १७ हट. १८ सर्व. १९ पर्वत.
२० कठिण. २१ वाग. २२ विपरीत. २३ प्रत्यक्ष, दृष्टिगोचर.

गीतायांचा आचार । कलशेंसी महामेरु । रचुनि माजी श्रीगुरु । लिंग जें पूजी ॥ ८२ ॥ गीता निष्कपट माय । चुकोनि तान्हें हिंडे जें बाय । ते मायपूतां भेटि होय । हा धर्म तुमचा ॥ ८३ ॥ तुझ्या सज्जनांचें केलें । आकळुनि जी मी बोलें । ज्ञानदेव ह्याने थेंकुलें । तैसें नोहे ॥ ८४ ॥ काय बहु बोलें सकळां । मेळविलों जन्मफळा । ग्रंथसिद्धीचा सो- हळा । दाविला जो हा ॥ ८५ ॥ मियां जैसजैसिया आशा । केला तुमचा भरवसा । ते पुरऊनि जी बहुवसा । आणिलों सुखा ॥ ८६ ॥ मजलागीं ग्रंथाची खात्री । दुजी सृष्टी जे हे केली तुझी । ते पाहोनि हांसां आझी । विश्वासिन्नातेंही ॥ ८७ ॥ जे असोनि त्रिशंकुदोषें । घातयाही आणावें बोसें । तें नासतें कीजे कीं ऐसें । निर्मावें नाही ॥ ८८ ॥ शंभू उपमन्युचेनि मोहें । क्षीसागरही केला आहे । येथ तोही उपमेसरी नोहे । जे विषगर्भ कीं ॥ ८९ ॥ अंधकार नि- शाचरा । गिळितां सूर्य चराचरा । धावा केला तरी खरा । ताउनी कीं तो ॥ ९० ॥ तातल्या जगाकारणें । चंद्रें वेंचिलें चांक्षिणें । तया सदोषा केवि ह्याणें । सारिखें हें ॥ ९१ ॥ ह्याणेनि तुझीं मज संतीं । ग्रंथरूप जो हा त्रि- जगतीं । उपयोग केला तो पुढती । निरुपम जी ॥ ९२ ॥ किंबहुना तुमचें केलें । धर्मकीर्तन हें सिद्धी नेलें । येथ माझें जी उरलें । पौंड्रपण ॥ ९३ ॥ आतां विश्वात्मकें देवें । येणें वांग्यज्ञें तोषावें । तोषोनि मज यावें । पंसायदान हें ॥ ९४ ॥ जे खळाची व्यंकटी सांडो । तया सत्कर्मी रती वाडो । भूतां परस्परें पडो । मैत्र जीवाचें ॥ ९५ ॥ दुरिताचें तिमिर जावो । विश्व खधर्मसूर्य पाहो । जो जें बांझील तो तें लाहो । प्राणिजात ॥ ९६ ॥ वषेत सकळमंगळीं । ईश्वर- निष्ठाचीं मांदियाळी । अंतवरत भूतळीं । भेटो तयां भूतां ॥ ९७ ॥ घेलां कल्पतरूचे अंबर । चेतनां चितामणीचे गांव । बोलते जे अणव । पीयूषाचे ॥ ९८ ॥ चंद्रमे जे अलांछन । मांतिष्ठ जे तापहीन । ते सर्वाहीं सदा सज्जन । सोयरे होतु ॥ ९९ ॥ किंबहुना सर्वसुखीं । पूर्ण होऊनि तिहीं लोकी । भजिजो आदि पुरुषीं । अखंडित ॥ १०० ॥ आणि ग्रंथोपजीविये । विशेषीं लोकीं इये । दृष्टादृष्टविजयें । होआवें जी ॥ १ ॥ येथ ह्याने श्रीविश्वेश्वरावो । हा होइल दानपसावो । येणें वरें

१ देऊळ. २ व्यर्थ. ३ मायलेंकरास. ४ तुझीं संतांनीं केलेल्याचा विचार करून हें माझें बोलणें आहे. केवळ थेंकुलें-ज्ञानेश्वराचें यःकश्चित् बोलणें नव्हे. ५ त्रिशं- कुराजाच्या हेतूनें. ६ उणें. ७ दिला. ८ तप्त झालेल्या. ९ सेवकत्व. १० ग्रंथरूप यज्ञानें. ११ प्रसाद. १२ वकदष्टि. १३ भगवज्जनाची. १४ समुदाय. १५ सर्वकाळ. १६ चाल- ल्या. १७ कोटी, अंकुर. १८ जीवंत. १९ लांछनरहित. २० सूर्य. २१ श्रीगुरु. २२ दानप्रसाद.

ज्ञानदेवो । सुखिया जाला ॥ २ ॥ ऐसैं सुणीं परिकळीं । आणि महाराष्ट्रमंडळीं । श्रीगोदावरीच्या केलीं । दक्षिणिलीं ॥ ३ ॥ त्रिभुवनैकपवित्र । अनादि पंचक्रोशक्षेत्र । जेथ जगाचें जीवनसूत्र । श्रीमहालया असे ॥ ४ ॥ तेथ यदुवं- शविलास । जो सकळकळनिवास । न्यायातें पोषी क्षितीश । श्रीरामचंद्र ॥ ५ ॥ तेथ महेशान्वयसंभूतें । श्रीनिवृत्तिना- थंसुतें । केलें ज्ञानदेवें गीते । देशीकारलेणें ॥ ६ ॥ एवं भारताच्या गांवीं । भीष्मनाम प्रसिद्ध पर्वी । श्रीकृष्णार्जुनीं बरवी ॥ गोठी जे केली ॥ ७ ॥ जें उपनिषदाचें सार । सर्वशास्त्रांचें माहेर । परमहंसीं सरोवर । तेविजे जें ॥ ८ ॥ तिये गीतेचा कैलश । संपूर्ण हा अष्टादश । ह्याने निवृत्तिदास । ज्ञानदेव ॥ ९ ॥ पुढती पुढती पुढती । इया ग्रंथपुण्यसंपत्ती । सर्वसुखीं सर्वभूतीं । संपूर्ण होइजे ॥ १०१ ॥ शके बाराशतें बारोत्तरें । तें टीका केली ज्ञानेश्वरें । सच्चिदानंदबाबा आदरें । लेखकु जाहाला ॥ १०११ ॥

इति श्रीज्ञानदेवविरचितायां भावार्थदीपिकायामष्टाद-
शोऽध्यायः ॥ १८ ॥

इति श्रीभावार्थदीपिका समाप्ता ॥

श्रीकृष्णार्पणमस्तु ॥

श्लोक ७८, ओव्या १८११.

ह्या भाषणावर संजय ह्याणाला “महाराज ! मला दुसऱ्या तिसऱ्याचें कांहीं माहित नाही. पण आयुष्य असेल तेथें जीव असावयाचा हें उघड आहे. १६३२ महाराज ! चंद्र तेथें चांदणें; शंकर तेथें पार्वती; संत तेथें विचार; हीं असावयाचींच. १६३३ राजा तेथें सैन्य; सौ- जन्य तेथें स्नेह; अग्नि असेल तेथें जाळण्याचें सामर्थ्य. १६३४ दया असेल तेथें धर्म; धर्म तेथें सुखोत्पत्ति; आणि सुख तेथें जसा ईश्वर असतो. १६३५ वसंत असतो तेथें वन; वन तेथें पुष्पें; आणि पुष्पें असतील तेथें भ्रमरांचे समुदाय. १६३६ गुरु तेथें ज्ञान; ज्ञान तेथें

१ कलियुगांत. २ दक्षिणभागच्या तीरीं. ३ पांच कोश विद्यत, पंचक्रोशींत. ४ मोहनीराजदेव-श्रीविष्णूनीं घेतलेल्या मोहनीचा अवतार. हें देवालय नेवासे येथें असून त्यास, श्रीपुंस्वाचक दोग्हीही नामें देतात. अधिक माहिती ‘केरळकोकिळ’तील “ज्ञानेश्वराची ज्ञानेश्वरी” ह्या लेखांत पहावी. ५ यादव वंशास सुशोभित करणारा. ६ आदिना- थपरंपरासंभूत, शिवसंप्रदाय. ७ शिष्यरूप पुत्रानें. ८ देश- भाषेचा अलंकार. ९ कळस. १० उत्तरोत्तर.

आणि आत्मदर्शनासम्यं जसे समा-
पन्न करवें. १६३७ भाव्य तेथें सुखोपभोग,
सुख तेथें उन्हास, हें असो. जेथें सूर्य तेथें
प्रकाश. १६३८ त्याप्रमाणें सकल पुरुषार्थानें
जोयकारा प्रभु जेथें श्रीकृष्ण, तेथें लक्ष्मी;
१६३९ आणखी, आपल्या पतिसहवर्तमान
जयादेवाच ज्याच्यापाशीं असेल, त्याच्या
अग्निमादिक सिद्धि दासी होणार नाहीत काय ?
१६४० कृष्ण हा स्वयमेव विजयस्वरू-
प आहे. तो ज्या पक्षाकडे राहिलेला आहे,
तिकडे विजय असणार हें उघडच दिसते.
१६४१ शिवाय 'विजय' हें अर्जुनाचें नांव
प्रसिद्धच आहे. श्रीकृष्णनाथ, तर विजयस्व-
रूपीच. ह्याकरितां लक्ष्मीसहवर्तमान विजय
तेथेंच असणार हें खचित. १६४२ येवढे ज्याचे
आईबाप आहेत, त्या गांवांतलीं झाडे सुद्धां
कल्पतरूशीं पैज मारून त्याला जिकावयाचीं
नाहींत काय ? १६४३ तेथले जे दगड अस-
तील, त्या साऱ्यांनीं चितामणी तरी कां होऊं
नये ? आणि तेथच्या जमिनी सुवर्णाच्या तरी
कां होऊं नयेत ? १६४४ हे राजा ! त्याच्या
गांवांतल्या नद्यांतून असृत वहावयाला लागलें
तर आश्चर्य तें काय ? विचार कर. १६४५
त्यांच्या अव्यवस्थित शब्दांना सुद्धां वेद ह्यावांचे
लागेल. ते मूर्तिमंत सच्चिदानंदरूपच नव्हेत
काय ? आहेतच. १६४६ स्वर्ग आणि मोक्ष हीं
दोन्ही पदे, श्रीकृष्ण ज्यांचे बाप, व लक्ष्मी
ज्यांची आई आहे, त्यांच्या अगदीं हातांतलींच
आहेत. १६४७ ह्याणून तो लक्ष्मीचा पति ज्या
बाजूकडे उभा राहील, त्या बाजूकडे सर्व सिद्धि
स्वयंभूच आहेत. दुसरें मी कांहीं जाणत नाहीं.
१६४८ आणखी समुद्रापासून मेघ होतो, पण
तो उपयोगामध्यें समुद्राहूनही चांगला असतो.
तर तीच गोष्ट आज त्या अर्जुनाला लागू आहे.
१६४९ लोखंडाला सुवर्णाची दीक्षा देणारा
परिस आहे, ही गोष्ट खरी. परंतु जगाला
पोषण करण्याचें काम लोखंडालाच माहिती
आहे. १६५० अशानें गुस्तेवाला डोपेपणा येतो

असें जर कोणी झणेल, तर अज्ञांचे तेज नि-
व्याच्या रूपानें आपलेंच तेज प्रकाशित करवें.
१६५१ त्याप्रमाणें पार्थ ही देवाचीच शक्ति
होय. पण ही त्याची स्तुति देवालाच पार
मानवते. आणि त्यांतच त्याला मोठेपणा आहे.
१६५२ आणखी आपणाला सर्व गुणांमध्यें मुळावें
जिकाचें अशी बापाला मोठी हौस असते. तर
तीही शार्ङ्गपाणी जे भगवान् त्यांची पूर्ण
झाली. १६५३ किंबहुना राजा ! अशा कृष्ण-
रूपेस तो अर्जुन पात्र झाला आहे. तो ज्या-
कडे पक्षाभिमानानें राहिला, १६५४ तेथें
विजयाचें स्थान, हांत तुला संशय तो कसला ?
तिकडे जर विजय न आला, तर त्याचें विजय
हें नांवच व्यर्थ होईल. १६५५ ह्याणून जेथें
लक्ष्मी, तेथें लक्ष्मीपति; आणि जेथें तो
अर्जुन तेथें सारा विजय आणि मरभराद.
१६५६ व्यासाच्या खरेपणावर जर तुमचा
विश्वास असेल, तर हें भाषण अडळच आहे,
हें लक्ष्यांत ठेवा. १६५७ जेथें तो लक्ष्मीपति,
तेथें भक्तांचे समुदाय, तेथेंच कल्याणाचा आणि
सुखाचा लाभ. १६५८ ह्या भाषणांत जर अंतर
पडेल तर, पुन्हा व्यासाचा शिष्याच ह्याणवि-
णार नाही." असें मोठ्यानें बोलून त्यानें आवे-
शानें हात उचलला. १६५९ ह्याप्रमाणें संज-
यानें साऱ्या भारताचें सार एका श्लोकांत
आणून कौरवराजा जो धृतराष्ट्र, त्याच्या हा-
तांत दिलें. १६६० अग्नि हा केवढा आहे हें
कांहीं समजत नाही. पण तो वातीच्या टोंका-
वर ठेवून, सूर्यापासून झालेली हानि भरून
काढण्याकरितां (दिव्याच्या रूपानें) जसा त्याला
घेऊन येतात, १६६१ त्याप्रमाणें वेद हे अनंत,
त्यांपासून सव्वालक्ष भारत झालें. भारताचें
सर्वस्व—सातथें श्लोकांची गीता. १६६२ त्या
सातथें श्लोकांच्या इत्यर्थाचा, व्यासाचा
शिष्य जो संजय, त्याचा जो पूर्णोद्धार तो
हा शेवटचा श्लोक. १६६३ ह्या एकाच
श्लोकाचा जो कोणी आश्रय करून राहील,
त्यानें सर्व अज्ञान जिकलें ह्याणून समजावें.

१६६४ असे गीतेचीं पदे वाहणारे सातशें श्लोक आहेत. त्यांना पदे ह्याणावीत कां गीतारूप भागीरथीचे परमामृत ह्याणावे ? १६६५ किंवा आत्मराजाच्या गीतारूप समेला हे श्लोकरूपी खांबच लावलेले आहेत, असे माझ्या मनाला वाटते. १६६६ किंवा गीता ही सप्तशती मंत्रांनी प्रतिपादन केलेली भगवतीच असून, मोहरूप महिषाला मुक्ति देऊन ती आनंदित झाली आहे. १६६७ ह्याणून कायावाचमनें करून जो हिचा सेवक होईल, तो स्वानंदसाम्राज्याचा उपभोग घेईल. १६६८ किंवा अज्ञानांधकारास रोखून धरतील, सूर्याशीही पैजा मारतील, असे श्रीकृष्ण प्रभुंनी गीतेच्या रूपाने हे श्लोक प्रकाशित केले. १६६९ किंवा संसाराचा मार्ग क्रमण करून थकलेल्यांना विसांवा घेण्यासाठी श्लोकांशरूप द्राक्षाच्या वेलीला, ही गीता मांडवच झाली. १६७० किंवा भाग्यवान् संतसज्जनरूपी भ्रमरांना सेवन करण्याकरितां श्रीकृष्णरूप सरोवरांतून श्लोकरूप कमलेंच वर आली आहेत. १६७१ किंवा हे श्लोक नव्हेत. दुसरेच कोणी असावेत. गीतेचा महिमा वर्णन करण्यासाठी जणों काय हे शेंकडो भाटच जमलेले आहेत. १६७२ किंवा सातशें श्लोकांचा सुंदर तट घालून सर्व शास्त्रे ह्या गीतानगरांत राहावयास आली आहेत. १६७३ किंवा हे श्लोकही नव्हेत. तर आपला पति जो आत्माराम, त्याला परम प्रीतीने भेटण्यासाठी गीतेने हे हातच पसरले आहेत. १६७४ किंवा गीतारूप कमलांतील हे भृंग असावेत; किंवा गीतारूप समुद्राच्या लाटा; किंवा श्रीहरीच्या गीतारूप रथाचे हे घोडे होत. १६७५ किंवा अर्जुन हा सिंहस्थ पर्वणी झाला ह्याणून सारे श्लोक हीं अनेक तीर्थे होत. तीं श्रीगीतारूप गंगेमध्ये येऊन मिळालीं. १६७६ किंवा ही श्लोकपंक्ति नव्हे. विरक्त चित्ताचे चिंतामणीच होत. किंवा विकल्परहित अशा ब्रह्माची प्राप्ती करून देणारे हे कल्पवृक्षच

होत. १६७७ अशा प्रकारें ह्या सातशें श्लोकांची योग्यता एकापेक्षां एक चढ आहे. तेव्हां एकएकांचें वर्णन कोठपर्यंत करावें ? १६७८ कामधेनूच्या संबंधानें बोलतांना ती व्यालेली आहे का पालटी आहे ? ह्याची जशी कोणी चौकशी करीत नाही; १६७९ दिवा हा मागचा कसला आणि पुढचा कसला ? सूर्य हा लहान कसला आणि मोठा कसला ? अमृताचा समुद्र उथळ कसला, आणि खोल कसला ? १६८० त्याप्रमाणें गीतेच्या श्लोकांना चांगले आणि वाईट ह्याणूच नयेत. पारिजातकाचीं पुष्पे, नवीं आणि जुनीं अशीं असतात काय ? १६८१ याउपपर श्लोकांना मोल नाही, ह्याणून आणखी किती तरी प्रतिपादन करावें ? तेथे वाच्य आणि वाचक ह्यांचा भागच रहात नाही. १६८२ कारण, ह्या शास्त्रामध्ये श्रीकृष्ण हेच एक काय ते वाच्य आणि वाचक आहेत, ही गोष्ट सर्व प्रसिद्ध-कोणा पाहिजे त्यालाही माहित आहे. १६८३ येथें जें अर्थानें तेंच पठणानेंही प्राप्त होतें. आणि वाच्यवाचकांचें ऐक्य करणारें असें हें महत्वाचें शास्त्र आहे. १६८४ ह्याणून मला आतां प्रतिपादन करण्याचा हा विषय नाही. कारण, गीता ही वाणीरूप श्रीप्रभूची मूर्ति आहे हें लक्षांत ठेवा. १६८५ कोणतेंही शास्त्र वाचनें व अर्थानेंही फल देतें, आणि मग आपण नाहीसें होतें. त्याप्रमाणें हें शास्त्र नव्हे. हें सारें परब्रह्मस्वरूपच आहे. १६८६ देवांनीं विश्वावर कृपा करून अर्जुनाच्या रूपानें महदानंद सोपाकरून रूपाला कसा आणला पहा ! १६८७ कलायुक्त चंद्रानें चकोराच्या निमित्तानें संतप्त झालेले तिन्ही लोक जसे निववून सोडावेत, १६८८ किंवा कलिकालरूपी ज्वरानें लोक पीडित झाले असे पाहून श्रीश्यांबकांनीं जसा गंगेचा प्रवाह निर्माण केला, १६८९ त्याप्रमाणें श्रीकृष्ण ही कोणीएक गाय, अर्जुनाला वांसरू करून जगाला पुरेसें तिनें गीतारूप दूधच दिलें. १६९० हें पोटांत घ्याल तर तत्स्वरूप व्हाल ह्यांत तर शंका नाहीच.

किंवा पठणाच्या १८ करून, १ जरी ओली कराल, १६९१ अ. १८ जरी बाजू जरी परिसाला लावली, तरी दुसरी बाजू जशी आपोआप सोने बनत जाती, १६९२ तद्वत् श्लोक, चरण, इत्यादिकांच्या पाठाची वाटी जरी तोंडाला लावली, तरी आंगाला ब्रह्मस्वरूपाची पुष्टी येईल. १६९३ किंवा त्याला, तोंड वांकडें करून एका कुशीवरच पडाल आणि कानांत थोडेंसे घ्याल, तरी सुद्धांतसाच प्रकार होईल. १६९४ कारण, श्रीमान् व समर्थ दाता जसा कोणाला 'नाहीं' असे ह्मणत नाहीं, त्याप्रमाणें ही गीता अर्थासह पठण करा, कीं नुसती पठण करा; किंवा श्रवण करा; कांहीं केलें तरी, ती मोक्षाशिवाय दुसरें कांहीं द्यावयाचीच नाहीं. १६९५ ह्मणून जाणत्या लोकांप्रमाणें गीताच एक सेवन करावी. बाकी शास्त्रांना घेऊन काय करावयाचें? १६९६ आणखी श्रीकृष्ण व अर्जुन ह्यांनीं जें भाषण केवळ मोकळें-अधांतरीं-केलें होतें, तें तळहातांत घेतां येईल, असें श्रीव्यासांनीं करून ठेवलें. १६९७ आई ममतेनें जेव्हां मुलांस जेऊं घालावयास बसते, तेव्हां त्याच्या सोयीसारखे घास करते. १६९८ किंवा अफाट असलेल्या वाऱ्याला वेतापुरताच घेण्यासाठीं शहाण्या लोकांनीं जसा पंखा तयार केलेला आहे, १६९९ त्याप्रमाणें शब्दांनीं जी गोष्ट कळावयाची नाहीं, ती अनुष्टुप् छंदांत आणून स्त्रीशूद्रादिकांतही तिचा प्रसार करून टाकला. १७०० स्वातीच्या पाण्यानें जर मोल्यें बनलीं नसतीं, तर तीं सुंदर आंगावर विराजमान झालीं असतीं काय? १७०१ वाद्यांत जर नादच नसता, तर पेकावयाला कोठून मिळाला असता? फुलेंच नसतीं तर वास कसा द्यावयास मिळाला असता? १७०२ पक्कानें गोड झालीं नसतीं, तर तीं जिमेला रुचकर कशीं लागतीं? आरशाशिवाय, डोळ्याला डोळा दिसता काय? १७०३ पाहणारे-साक्षी-असे जे श्रीगुरु, ते जर दृश्य

आकारास न येते, तर त्यांची कोणत्या उपासना-मार्गानें प्राप्ती झाली असती? १७०४ त्याप्रमाणें अनंत असें जें ब्रह्म, त्याची सातशें श्लोकांनीं गणना न होती, तर तें कोणाच्या हस्तगत झालें असतें? १७०५ मेघ हा समुद्रांतलेंच पाणी आणतो, तरी सारें जग त्याच्याकडेच पहात असतें. कारण, जें अपरिमित आहे, तें कोणालाच आकलन करितां येत नाहीं. १७०६ हे सुंदर श्लोक जर न होते, तर वाणीला जें अगम्य तें कानांला आणि मुखाला कसे प्राप्त झालें असतें? १७०७ ह्मणून श्रीकृष्णाच्या भाषणाला ग्रंथाचा आकार दिला, हा श्रीव्यासाचा विश्वावर मोठाच उपकार झाला. १७०८ आणि तोच हा गीताग्रंथ मी श्रीव्यासांचीं पदें पाहतां पाहतां महाराष्ट्र लोकांच्या श्रवणमार्गास आणला. १७०९ व्यासादिकासारख्यांच्याही ज्ञानाला, संचार करतांना शंका रहातात. त्याची मी ही एका यःकश्चित् मनुष्यानें बडबड केली. १७१० परंतु गीतारूप ईश्वर मोठा आहे. तो व्यासोक्त रूप फुलांची माळा धारण करतो, तरी माझ्या एका दूर्वादळालाही नाहीं ह्मणत नाहीं. १७११ आणखी क्षीरसागराच्या तटाकाला हत्तींचे कळपच्या कळप पाणी प्यावयास येतात, ह्मणून त्यानें मुरकुटास कधीं मज्जाव केलें आहे काय? १७१२ तो गरुड तेथें भराभर आकाश आक्रमण करित आहे, ह्मणून पंख फुटलेलें पांखरूं मुळीं उडणारच नाहीं काय? आकाशांतच स्थिर राहील? १७१३ भूमंडळावर राजहंसाचें चालणें फार उत्तम आहे, ह्मणून दुसऱ्या कोणी मुळीं चालूच नये काय? १७१४ महाराज! आपल्या सांठवणाप्रमाणें घागर पुष्कळ पाणी घेते, पण चुळीमध्ये चुळीच्या मानानें पाणी राहत नाहीं काय? १७१५ दिवटीचा आकार मोठा असतो, ह्मणून तिचा प्रकाश मोठा पडतो. पण वात आपल्या परीनें उजेड करित नाहीं काय? १७१६ महाराज! आकाशाचें प्रतिबिंब समुद्राच्या विस्तारा-

प्रमाणें समुद्रांत पडतें, तसेंच डबक्याप्रमाणें डबक्यांतही पडतेंच, १७१७ तद्रत् व्यासासारखे महान् महान् बुद्धिमान् ह्या ग्रंथामध्ये परिश्रम करतात झणून आहीं मागें सारावें हें खरोखरच सयुक्तिक दिसत नाही. १७१८ ज्या समुद्रामध्ये मंदराचल पर्वतासारखी महान् महान् जलचरें संचार करतात, तीं पाहून तेथेंच लहान लहान मासेही पोहत नाहीं काय ? १७१९ अरुण अगदीं सान्निध्याला असतो झणून सूर्याला पहातो, पण जमिनीवरील मुंगीला तो पहातां येणार नाहीं काय ? १७२० ह्याकरितां आमच्यासारख्या प्राकृतांनीं देशी भाषेंत गीतेचें काव्य करणें तें कांहीं अयोग्यतेस कारण होणार नाही. १७२१ आणखी बाप पुढें गेलेला असला, आणि त्याच्याच पाउलाच्या वाटेनें मूल आलें, तर तें त्याच्या ठिकाणीं पोंचणार नाहीं काय ? १७२२ त्याप्रमाणें व्यासाचा माग काढीत काढीत, भाष्यकारांना वाट विचारीत विचारीत मी आलों. आतां मी अयोग्य असलों तरी, त्यांच्या ठिकाणीं जाणार नाहीं, तर कोठें बरें जाईन ? १७२३ ज्याच्या क्षमेच्याच योगानें पृथ्वी ही स्थावर जंगमाला कंटाळत नाही; ज्याच्या अमृतानें चंद्र साऱ्या जगाला गारीगार करून सोडतो; १७२४ सूर्य, ज्याच्या आंगचें सर्व तेज घेऊन आंधाराची रास दूर झुगारून देत आहे; १७२५ समुद्राला ज्याचें पाणी; पाण्याला ज्याचें माधुर्य; ज्याच्या योगानें माधुर्याला सौंदर्य; १७२६ वाऱ्याला ज्याचें बळ; आकाशाला ज्याचा विस्तार; सर्वांवर सत्ता करणारें ज्ञान ज्याच्या योगानें दैदीप्यमान झालें आहे. १७२७ वेद ज्याच्या योगानें बोलका झाला; सुख ज्यानें उल्हासयुक्त झालें; हें असो. सारें विश्व ज्याच्या योगानें प्रकाशित झालें आहे. १७२८ तो सर्वांवर उपकार करणारा, समर्थ, सद्गुरु जो श्रीनिवृत्तिनाथ तो मजमध्ये प्रवेश करून सारा व्यवहार करीत आहे. १७२९ झणून आतां मी आयती ही

गीता जगाला मन्-अशा प्रथिनें सांगत आहे. तेव्हां आतां आश्चर्यालागेल्यांना कोठें राहिली ? १७३० श्रीगुरुचें नांव ठेवलेली माती, डोंगरामध्ये ज्याच्याजवळ होती, त्या कोळ्यानें

१ हा एकलव्य होय. हा हिरण्यधेनुक नामक निषादाधिपतीचा पुत्र. भीष्मानें द्रोणाचार्यास, धार्तराष्ट्र आणि पांडव इ० मुलांस धनुर्वेद शिकविण्यासाठीं हस्तिनापुरीं आपल्या समीप ठेऊन घेतल्यावर, तीं मुलें त्यासमीप अभ्यास करूं लागलीं. हें वर्तमान देशोदेशीं कळून, अनेक राजपुत्र तेथें येऊन द्रोणाचार्यासमीप अस्त्रविद्येचा अभ्यास करूं लागले, असें ऐकून हाही तेथें आला, आणि माझा अंगीकार करून विद्या पढवावी, हणून आचार्यास प्रार्थू लागला. पण त्याचा त्यांनीं अंगीकार केला नाही. त्यावरून त्यानें द्रोणाचार्याच्या पादुका मागितल्या, त्या त्यांनीं यास विमुख लावूं नये हणून दिल्या असतां, हा, त्या घेऊन खगृहीं गेला, आणि भक्तिपुःसर द्रोणाचार्यांची मृण्मय मूर्ति करून व तीपुढें आणलेल्या पादुका ठेवून, त्यांची नियमपूर्वक नित्य पूजा करीत होतासात, इत्थामध्ये आपणच धनुष्यबाण घेऊन उभा राही. व असें अन्न सोडूना ? हणून आपण आपल्याच मनास प्रश्न करी, व आपणच, हो हो, असेंच सोड, हणून उत्तर करून, सोडी. असें करतां करतां, विमोक्ष, आदान, संधान इ० जीं धनुर्विद्येचीं प्रकरणें, त्यांत तो अल्पकाळांतच तिकडे प्रवीण झाला.

इकडे कौरव, पांडव, तसेच अन्य राजपुत्र, हेही धनुर्विद्येंत प्रवीण होऊन, एकदां सर्वही मुगयेस गेले, व मुगामागें लागले असतां, त्यांचा मृगयाश्वान त्यांपासून दूर राहून चुकल्यामुळें, जेथें एकलव्य होता, तिकडे गेला. परंतु त्यास नेहेमीं सुंदर वेष केलेल्या राजपुत्रांस पाहण्याची संवय असल्यामुळें, विचित्रवेषधारी एकलव्यास पाहून तो त्याच्या आंगावर भुंकूं लागला. तें त्याचें पसरलेलें मुख एकलव्यानें पाहून त्यांत अशा युक्तीनें एक लहान लहान वाणांचा जुंवडा भरला की, त्यास भुंकतां व तोंड मिटतां येऊं नये. पुढें तो श्वान तेथून पळाला, व इकडे तिकडे हिंडत आहे तो त्यानें राजपुत्रांस, व राजपुत्रांनीं त्यास परस्पर पाहिलें. नंतर तो समीप आला असतां, संपूर्ण राजपुत्रांनीं त्याच्या मुखांत भरलेला वाणांचा जुंवडा पाहतांच, त्यांस अति आश्चर्य झालें, व अशी कृति करणारा धनुर्धर या अरण्यांत कोण असावा, हणून ते त्याचा शोध करीत चालले. जातां जातां, हस्तांत धनुष्यबाण घेतलेल्या एकलव्यास त्यांनीं पाहिलें, व हाच तो असावा, हणून ते सवे तेथें उभे राहिले. नंतर सवे राजपुत्रांत, एकजण पुढें होऊन, त्यानें त्यास पुसलें कीं, तूं कोण व कोणाचा शिष्य आहेस ? त्यानें

सुखां त्रिभुवाणामेकं करून सोडलें. १७३१ चंदनाच्या संगतीला असलेलीं झाडें चंदनाच्याच योग्यतेचीं होतात. भांडणाचा निर्णय करण्याकरितां वसिष्ठ ऋषींनीं सूर्यास आपल्या बरोबर साक्षीकरितां घेतलें व त्रैलोक्य प्रकाशित करण्याच्या कामगिरीवर आपली छाटी ठेवली! १७३२ छाटी निर्जीव होती; मग मी तर सजीव; आणि श्रीगुरूसारखा धनी; जो दृष्टिमात्रानेंच आपल्या पदावर वसविणारा; १७३३ आधींच उत्तम पाहणारे डोळे; आणखी त्यावर सूर्य पाडिराखा; मग दिसणार नाहीं ही गोष्ट कोठें राहणार? १७३४ झणून माझे नित्य नवे श्वासोच्छ्वास सुखां काव्येच होऊं लागले आहेत. ज्ञानदेव झणतात

उत्तर केलें, मी हिरण्यधेनुक नामक निषादाधिपतीचा पुत्र असून, द्रोणाचार्याचा शिष्य आहे. त्यावरून सर्वांमही काहीसा विषाद वाटून ते गृहीत आले, आणि आचार्यास झगले की, आपण आझांस न कडू देतां, गुप्तपणें एक निषाद प्रवीण केलात हें कसें? तें ऐकून द्रोणाचार्यास त्याचा कांहींच संबंध ध्यानांत येईना, तथापि तो कोण असावा हें पाहून यावें झणून आचार्य हस्तिनापुरांतून राजपुत्रांस समागमें घेऊन त्यास पाहण्यास निघाले, व तथें गेले. त्यांस पाहतांच एकलव्यानें दंडवत् प्रणाम केला, व हात जोडून आचार्यापुढें उभा राहिला. पुढें द्रोणाचार्यांनीं याच्या अस्त्रविद्येची परीक्षा पाहून, तीन तो अत्युत्कृष्ट प्रवीण आहे, असें जाणल्यावर त्यास पुसलें की, ही विद्या, तूं मजपासून कशी संपादन केलीस? तेव्हां यानें संपूर्ण पूर्ववृत्त त्यांस निवेदन केलें. तें ऐकून राजपुत्र निःसंशय झाले, व त्याच्या भावनेचें आणि आचार्यांच्या पुण्यप्रभावाचें, त्यांस परमार्थ होऊन, परस्परंशीं गोष्टी करीत आहेत तो आचार्यांनीं, हा प्रसंगवशात् अर्जुनासही भारी होईल असें मनांत आणून, यास गुरुदक्षिणा मागितली की, तूं तुझा अंगुष्ठ, वाण सोडतांना इतःपर कधींही त्यास स्पर्शवीत जाऊं नको. त्यावरून यानें तथास्तु झणून, त्या दिवसापासून बाणास अंगुष्ठाचा स्पर्श करणें सोडलें. तें व्रत अजून सर्व किरात पाळतात. तात्पर्य, इतकें जरी द्रोणाचार्यांनीं यास बांधून घेतलें होतें, तरी हा अर्जुनास भारीच होता. (भार० आदि०) हा भारती युद्धांत दुर्योधनाकडे झगतायास मात्र होता; परंतु युद्धमयीं सुजीव आला नाही.

भा० प्रा० पें० कोश.—

श्रीगुरूरूपा काय काय झणून करणार नाहीं? १७३५ ह्याच कारणानें श्रीगीतेचा अर्थ मन्हाठी भाषेमध्ये ह्या लोकांच्या दृष्टीचा विषय केला. १७३६ मन्हाठी शब्दांच्या माधुर्यानें गीतेचा सर्वतोपरी अंगीकार केला तरी, पठणामुळें त्याला कांहीं उणीव येत नाहीं. १७३७ झणून गीता पठण करून आणखी अर्थही समजून घेतला, तर तें पठण भूषणभूत होईलच होईल. पण अर्थ समजला नाहीं तरी सुखां, पठण करणाराला गीता कोणत्याही प्रकारें उणेपणा आणीत नाहीं. १७३८ आंगावर उत्तमोत्तम अलंकार घातले नाहीत तरी, साधा शृंगार तो असतोच. किंवा ते घातले, तर मग त्याच्या तुलनेला दुसरें कोठें काय आहे? १७३९ मोत्यांची जात जशी सोन्याचें महत्त्व वाढविते, किंवा मोकळीं असलीं तरी एकटींही लोकांस आवडतात. १७४० किंवा वसंतऋतूतील वटमोगरीचीं फुले गुंफलेलीं असोत किंवा मोकळीं असोत, परिमळांत जशीं कांहीं कमी पडत नाहीत, १७४१ त्याप्रमाणें अर्थ-बाला लाभ घडेल तर घडेलच; पण अर्थावांचून नुसतें पठण करणारासही तोच लाभ घडेल. अशा प्रकारचें हें ओवीबद्ध काव्य मी रचलें आहे. १७४२ त्या ओवीबद्ध काव्याच्या योगानें आबालवृद्धांसही सुलभ होतील अशीं, ब्रह्मरसाच्या उत्तम स्वादानें युक्त अशीं अक्षरें गुंफलेलीं आहेत. १७४३ आतां चंदनाच्या वृक्षापासून परिमळ येण्याला फूल येईपर्यंत वाट पहात बसायें लागत नाहीं. १७४४ त्याप्रमाणें हें काव्य कानावर पडतांच समाधि लावतें. मग अर्थ ऐकल्यावर तें चटक लावल्याशिवाय राहील काय? १७४५ केवळ पाठाच्या निमित्तानें अंगीकार केला तरी, मूर्तिमंत पांडित्य येऊन उभें राहतें. त्या वेळीं अमृताचा लाभ होत असला तरी, त्याच्याकडे इच्छा जात नाहीं. १७४६ अशा प्रकारें हें कवित्व आयतेंच विश्रान्तिस्थान होऊन राहिलें आहे. मनन आणि निजध्यास हे एका श्रवणानेंच

जिकलेले आहेत. १७४७ हें पाहिजे त्याला स्वानंदभोगाचा वांटा देईल. आणि काना-कडून सर्व इंद्रियांना पोशील, १७४८ चंद्राचा उपभोग घेऊन चकोर मोठे श्रेष्ठ ह्मणवितात. पण चांदणें हें पाहिजे त्याला मिळतें. १७४९ तसें ह्या अध्यात्मशास्त्राचे, अंतर्मुख ज्ञानीच योग्य अधिकारी आहेत. परंतु इतर लोक भाषणशैलीनेच आनंदित होतील. १७५० महाराज! खरोखर असा हा श्रीनिवृत्तिनाथांचा महिमा आहे. हा ग्रंथ नव्हे. तर त्यांच्या कृपेचें वैभव आहे. १७५१ क्षीरसिंधुसमीप श्रीशंकरांनीं पार्वतीच्या कानांत जें सांगितलें—केव्हां तें मात्र समजत नाहीं. १७५२ पण त्या वेळीं क्षीरसमुद्राच्या लाटांमध्ये मत्स्याच्या पोटांत मत्स्येंद्रनाथ गुप्त होते, त्यांना तें हस्तगत झालें. १७५३ ते मत्स्येंद्रनाथ सप्तशृंग पर्वतावर येऊन हातपाय तुटून पडलेल्या चौरंगीनाथास भेटतांच तो संपूर्ण अवयवयुक्त झाला. १७५४ नंतर गोरक्षनाथानें समाधिसुख भोगावें, अशी मत्स्येंद्रनाथास इच्छा झाल्यावरून मत्स्येंद्रनाथांनीं गोरक्षनाथास या अध्यात्मविद्येची मुद्रा—अर्थात् दीक्षा—दिली. १७५५ आणि योगरूपी कमळिणीच्या सरोवरांतील विषयविध्वंसक सर्वेश्वरपदावर त्यांची स्थापना केली. १७५६ तें अध्यात्मविद्येचें अद्वयानंदवैभव त्यांनीं गडनीनाथास दिलें. १७५७ गडनीनाथांनीं कलिकालग्रस्त जीवांचा उद्धार करण्याकरितां श्रीनिवृत्तिनाथास अशी आज्ञा केली. १७५८ कीं, आदिगुरु श्रीशंकरापासून शिष्यपरंपरेनें जो बोध (ज्ञान) अर्थात् आत्मज्ञानाचा विस्तार आमच्यापर्यंत येऊन पोचला आहे, १७५९ तो सारा हा तूं घेऊन त्यानें, कलिप्रासित असलेल्या जीवांचें सर्व प्रकारें संरक्षण कर. १७६० ते स्वभावानें प्रथमपासूनच कृपाळू; त्यांत आणखी गुरुची आज्ञा झालेली; मग काय ? मेघांना खवळायला जसें वर्षाकाळाचें निमित्त होतें, तसें झालें.

१७६१ पीडितजनां सार्थ गीतार्थ ग्रंथ करण्याच्या निमित्ताने तत्परूप ब्रह्मरसाची वृष्टि केली. तो हा ग्रंथ आहे. १७६२ तेव्हां मी चातकरूपानें आपल्या दुःखानें संतप्त झालेला पुढेंच तोंड करून बसलों होतो. ह्मणून एवढ्या यशास पात्र झालों. १७६३ अशा प्रकारें गुरुपरंपरेनें प्राप्त झालेलें जें समाधिरूप धन, ते प्रभूंनीं ग्रंथरूपानें बांधून माझ्या स्वाधीन केलें. १७६४ नाहीं तर, मी कांहीं शिकलेला नाहीं; कांहीं वाचलेलें नाहीं; स्वामींची—सद्गुरूंची—सेवा करावयाचीही माहिती नाहीं. अशा मला ग्रंथ करण्याची योग्यता कोठची ? १७६५ परंतु खरोखर गुरुनाथांनीं माझें निमित्त करून—मला पुढें करून—काव्याच्या निमित्तानें जगाचें संरक्षण केलें. हेंच खचित समजा. १७६६ तर महाराज ! परस्वाधीनपणानें—आचार्य या नात्यानें—मी जें उणें पुरें बोललों, त्याची आपण जननीच्या नात्यानें मला क्षमा करावी. १७६७ शब्द कसा योजावा ? अर्थ कसा साधावा ? अलंकार ह्मणजे काय ? तें मला माहीत नाहीं. १७६८ कळसूत्री बाहुलें, नाचविणाराच्या दोऱ्यानें नाचत असतें; त्याप्रमाणें माझ्या स्वामींनीं—सद्गुरूंनीं—मला दाखवून दिलें, तसतसें बोलत गेलों. १७६९ ह्याकरितां गुणदोषाबद्दल फारशी क्षमा मागत बसत नाहीं. कारण, ग्रंथद्वारे मी जें सारें भाषण केलें आहे तें आचार्यांच्या नात्यानें केलेलें आहे. १७७० आणखी तुझां संतांच्या सभेमध्ये उणीव जर जशीच्या तशीच राहील,—ती पूर्ण होणार नाहीं, तर ममतेनें—लडिवाळपणानें—मी तुझांवरच रुसेन. १७७१ परिसानें स्पर्श केला असूनही लोखंडांतील हलकेपणा निघून गेला नाहीं, तर त्याचा शब्द कोणावर बरे ? १७७२ ओढ्याचें काम एवढेंच कीं, त्यानें जाऊन गंगेस मिळावयाचें. इतकें करूनही तो गंगा झाला नाहीं, तर तो काय करणार ? १७७३ ह्मणून मोठ्या सुदैवानें तुझां संतांचे द्वे पाय मला प्राप्त झाले

आहेत. आतां जगामध्ये उणेपणा रहाणार कोठें ? १७७४ अहो महाराज ! माझ्या स-
दुरुस्वामींनीं मला आपली संतांची जोड मिळ-
वून दिली. तिच्या योगानें सर्व इच्छा परिपूर्ण
झाल्या. १७७५ मला आपल्यासारखे मायबाप
मिळाले ह्मणून त्यांच्या अनुकूलतेनं ग्रंथाचा
हट्ट शेवटास गेला. १७७६ महाराज ! सान्या
सोन्यानेंच पृथ्वी ओतवून काढतां येईल; सारे
पर्वत चिंतामणीचेच करतां येतील; १७७७
सात समुद्रही अमृतानें सहज भरतां येतील;
तारांचा चंद्र करावयाचेंही कठीण नाहीं.
१७७८ कल्पतरूंचे मळे लावण्यालाही फारशी
अडचण नाहीं; पण गीतार्थाचें मर्म मात्र
काढतां येणार नाहीं. १७७९ तो मी एक
केवळ मुका; असें असतां मराठी भाषेत तो
प्रत्यक्ष घेतां येईल असें जें केले; १७८० हा एवढा
ग्रंथसागर उतरून कीर्तिविजयाचा जो पलीकडे
झेंडा फडकाविला; १७८१ गीतार्थाचें देऊळ
महामेरु कळसासहवर्तमान तयार करून त्या-
मध्ये श्रीगुरुमूर्तीचें पूजन केलें; १७८२ गी-
तारूप निष्कपट मातेला चुकून हें मूल व्यर्थ
भटकत होतें, त्या मायलेंकरांची भेट झाली;
हा तुमचा प्रसाद. १७८३ ज्ञानदेव ह्मणतात
“महाराज ! तुझी सज्जनांनीं केलेल्याचा
विचार करून मी बोलतो. तें उगाच कांहीं
तरी भाषण नव्हे. १७८४ फार काय सांगूं ?
ग्रंथसमाप्तीचा हा जो सोहळा आपण दाख-
विलात येणेंकरून सकल जन्माची सफलता
झाली. १७८५ महाराज ! मी आपल्या भर-
वशावर जितक्या जितक्या आशा धरल्या,
तितक्या तितक्या सर्व परिपूर्ण होऊन मी
अप्रतिम सुखास पात्र झालों. १७८६ महाराज !
तुझी माझ्याकडून ग्रंथाची ही दुसरी सृष्टि
निर्माण केली, ती पाहून आम्ही विश्वामि-
त्राला सुद्धां हिणावूं. १७८७ कारण, त्रिशं-
कूकरितां ब्रह्मदेवालाही कमीपणा आणावा,

ह्मणून त्यानें दुसरी सृष्टि निर्माण केली. पण
ती नाशवंत होती, व ही माझी अविनाशी

ळचें नांव सत्यवत असें होतें. हा ‘वाल्यापासूनच दुर्भोग-
वर्ती’ होता, व पुढें त्यानें ‘ब्राह्मणस्त्रियाही हरण’ केल्या.
तेव्हां पित्यास याचा राग येऊन, त्यानें त्यास राज्यांतून पार
हाकून लाविलें. आणि त्या दुःखानें, त्याचा पिताही स्वतः
मंत्रिमंडळावर राज्याचा भार टाकून, अरण्यांत तपश्चर्या
करण्यास गेला. पितापुत्र उभयतांही ‘श्रृपाकाप्रमाणें’ अर-
ण्यांत भटकूं लागल्यामुळें अयोध्या नगरीस कोणी धनी
ना वाली असें होऊन, सारी बेवंद पातशाही माजली.
आणखी ‘दुष्काळांत तेरावा महिना’ या ह्मणीप्रमाणें तशा-
तही सान्या राज्यांत अवर्षण पडलें. अशा दुर्धर प्रसंगीं,
विश्वामित्र ऋषि अरण्यांत तपश्चर्येस गेले होते, व इकडे
त्यांच्या मागे त्यांचीं बायकांमुळे उघडीं पडून, अन्नास मोताद
होऊ लागलीं. अशा वेळीं ह्या सत्यव्रतानें त्यांस रोज थोडें
मांस आणून देऊन, त्यांचा सांभाळ केला. पण त्याच वेळीं
त्याच्या हातून वसिष्ठ ऋषींचा एक अक्षम्य अपराध झाला
होता. ह्मणजे सत्यव्रतानें विश्वामित्राच्या कुटुंबास वसि-
ष्ठाच्या धेनूचा वध करून, एकदां मांस आणून दिलें. त्यामुळे
वसिष्ठ क्रोधाविष्ट होऊन, त्यांनीं त्यास शाप दिला की, ‘ब्राह्म-
णस्त्रियांचा अपहार, पित्याचा क्रोध, आणि धेनूचा वध, ह्या
तीन शंकूस्तव (पातकास्तव) सत्यव्रत हा त्रिशंकु नाम पावो.’
तेव्हांपासून तर हा अधिकच वेड्यासारखा वनांत भटकूं
लागला. पुढें कालोतरानें त्याचा पिता पुन्हां खनगरीस आला.
पण त्यानें त्याचें सुळीच कांहीं नांव काढलें नाहीं. तेव्हां
तर हा देहत्यागासही प्रवृत्त झाला. तो इतक्यांत कोणी
देवतेनें यास सांगितलें की, ‘तू देहत्याग करूं नको. तुझा
पिता तुला लवकरच राज्यावर स्थापील.’ तेव्हां त्रिशंकुनें तो
वेत रहित केला. कांहीं काल लोटल्यावर त्याच्या पित्यानें
त्यास राज्यमंत्रें हातीं घेण्यास आज्ञा दिली, व सद्गुपदेश
केला. प्रथमतः एकदां त्याच्या पित्यानें त्यास उपदेश केला
होता, पण त्या वेळीं ‘पालथ्या घागरीवर पाणी’ झालें.
तथापि ह्या वेळीं मात्र तो पितृवोध त्याच्या पथ्यावर पडला.
व पुढें त्रिशंकु नीतीनें राज्य करूं लागला. असो. हा त्रि-
शंकूचा थोडासा मूळवृत्तांत झाला.

त्रिशंकु ह्याप्रमाणें राज्य करीत असता, एकदां त्याच्या
मनानें घेतलें की, आपण ‘या मर्त्यदेहानेंच स्वर्गास जाऊन,
तेथील दिव्य भोग चिरकाळ भोगीत बसावें, असा एक यज्ञ
करावा.’ ह्मणून तो वसिष्ठाकडे गेला. तेव्हां वसिष्ठानें सां-
गितलें ‘तू ह्मणतोस तसें होणार नाहीं.’ तेव्हां तो ह्मणाला
‘हं समजलों. पूर्वीं मी आपली धेनू मारिली, ह्मणून, हें आ-
पण देवानें सांगत आहां’ ‘बरें आहे. मी दुसऱ्या उपाध्या-

१ त्रिशंकु हा इक्ष्वाकुकुलोत्पन्न निबंधन राजाचा पुत्र व
प्रख्यात पुण्यश्लोक हरिश्चंद्र राजाचा बाप होय. ह्याचें मू-

आहे. १७८८ उपमन्यूच्या मोहासाठीं शंकरांनीं क्षीरसागरही निर्माण केला. पण तोही येथें उपमेला योग्य होत नाही. कारण- त्याच्या पोटांत विष आहे. १७८९ अंधकाररूप राक्षस स्थावरजंगमास गिळूं लागला असतां, सूर्य धांवून संरक्षण करतो खरा, पण लोकांना त्याच्यापासून ताप होतो. १७९० संतस झालेल्या जगासाठीं चंद्रानें चांदणें पाडलें पण त्या कलंकयुक्त चंद्राला ह्यासारखें कसें ह्मणावें? १७९१ ह्मणून महाराज! तुझीं संतांनीं मजकडून जो हा ग्रंथाच्या रूपानें त्रिभुवनावर

यास आणून, असा यज्ञ करून स्वर्गास जातो कीं नाही तें पहा.' यावर वसिष्ठ रागानें ह्मणाले 'तूं स्वर्गास जा किंवा न जा; पण आतांच्या आतां तर चांडाल हो.' असें ह्मणतांच, त्यास चांडालस्वरूप प्राप्त झालें. त्यामुळें त्रिशंकूस पराकाष्ठेची लाज वाटली, व पश्चात्ताप झाला. त्याच संधीस विश्वामित्र घरी आले, व 'माझ्या मागे तुमचें रक्षण कोणी केले?' ह्मणून वायकामुलांस विचारूं लागले. तेव्हां त्यांनीं त्याचें नांव सांगून, त्रिशंकूची हताश स्थिति निवेदन केली. पुढें विश्वामित्राची व त्रिशंकूची गांठ पडली. तेव्हां त्रिशंकू ह्मणाला:—'आतां माझें रक्षण करणें आपणांकडे आहे.' विश्वामित्र ह्मणाले:—'ठीक आहे.' नंतर ह्या दोहोंनीं यज्ञ आरंभिला; व ब्राह्मणांस निमंत्रणें केलीं. पण वसिष्ठांनीं 'चांडाल यज्ञमान व क्षत्रिय उपाध्याय' ह्मणून निंदा केल्यामुळें ब्राह्मण कोणी येतना. तेव्हां विश्वामित्रानें रागानें वसिष्ठपुत्रांस 'तुझी चांडाल व्हाल' ह्मणून शाप दिला. तदनंतर कांहीं ब्राह्मण आले. परंतु पुढें हविर्मागास देव घेईनात. तेव्हां विश्वामित्रानें त्रिशंकूस सांगितलें कीं, 'आतां जर कांहीं माझे खाजित पुण्य असेल, तर तूं स्वर्गी जाशील.' इतकें ह्मणतांच त्रिशंकू पक्ष्याप्रमाणें उडून स्वर्गी जाऊं लागला. तेव्हां इंद्रास क्रोध येऊन, त्यानं गुरुश्रापानें दग्ध झालेला जो तूं त्या तुला मर्त्यदेहानें स्वर्गी येण्याचा अधिकार नाही, यास्तव खाली पतन पाव' असें ह्मटलें. 'तेव्हां त्रिशंकू खाली पडूं लागला, व ओरडूं लागला. तें ओरडणें ऐकून विश्वामित्रानें 'तिष्ठ तिष्ठ' (स्थिर रहा, स्थिर रहा) असें ह्मटलें. तेणेंकरून हा तेथेंच अंतरिक्षांत स्थिर राहिला. 'नंतर विश्वामित्रानें प्रतिष्ठति व प्रतिस्वर्ग निर्माण करून, तेथें त्रिशंकूस स्थापीन अशी प्रतिज्ञा करून इष्टी आरंभिली, व कांहीं पदार्थही निर्माण केले. त्यावरून इंद्रानें त्याची समजूत करून, मर्त्यदेह त्रिशंकूकडून टाकवून, त्यास दिव्यदेही के- त्यावर स्वर्गास नेलें'. (भा० क०.)

उपकार केलात, तो फारच निरुपम आहे! १७९२ एवढेंच नव्हे तर महाराज! तुमचें जें हें मीं धर्मकीर्तन केलें तें तुमचें तुझींच सिद्धीस नेलेंत. आणि त्यांत माझा सेवकपणा मात्र उरला. १७९३ आतां विश्वात्मक देवानें हा जो मीं वाग्यज्ञ केला—गीतेवर टीका केली—तिच्या योगानें संतुष्ट होऊन मला एवढा प्रसाद द्यावा. १७९४ कीं, दुष्टांची दुष्टवृत्ति जाऊन त्यांना सत्कर्माची अभिरुचि उत्पन्न व्हावी. प्रत्येक प्राणिमात्रामध्ये परस्परचा स्नेह जमावा. १७९५ पापरूपी अंधकार लयास जाऊन विश्वामध्ये स्वधर्मरूप सूर्याचा उदय व्हावा. आणि जो जो प्राणी जी जी इच्छा करील, ती ती त्याची परिपूर्ण व्हावी. १७९६ सदासर्वकाळ जगताचें कल्याण इच्छिणारे, भाग्यवान्, अशा ईश्वरनिष्ठांचे समुदायच्या समुदाय निरंतर प्राणिमात्रांस भेटावेत. १७९७ कोट्यावधि चालते बोलते कल्पतरूच; सजीव चिंतामणींचे गांवच; अमृताचे बोलते चालते समुद्रच; १७९८ जे कलंकरहित चंद्र; जे तापरहित सूर्य; असें जे संतसज्जन ते, सर्वांचे सदासर्वकाळ सोयरे—आप्त—होवोत. १७९९ किंबहुना तिन्ही लोक सर्वमुखी पूर्ण होऊन सदासर्वकाळ आदिपुरुष जो परमेश्वर त्याच्या भजनीं लागोत. १८०० आणखी महाराज! ह्या लोकांमध्ये जे कोणी विशेष आदारानें ग्रंथ वाळगतील ते या लोकांत व परलोकांतही विजयी व्हावेत; १८०१ ह्यावर सद्गुरु ह्मणाले "हा प्रसाद होईल." त्या वराच्या योगेंकरून ज्ञानदेवांना फार आनंद झाला. १८०२ अशा प्रकारें कलियुगांत आणि महाराष्ट्रदेशामध्ये, श्रीगोदावरीच्या दक्षिणतीरी, १८०३ त्रिभुवनमध्ये अत्यंत पवित्र असें जें अनादि पंचक्रोशीक्षेत्र—ज्या- मध्ये जगाचें जीवनसूत्र श्रीमहालय

१ 'श्री महालया' हें दैवत अहमदनगर जिल्ह्यांत वासे ह्या गांवीं आहे. ह्याला 'श्री मोहनाराज' असें नांव पुरुषवाचकही नाम आहे. श्रीविष्णूनीं समुद्रमंथनकाली व

स्तव्य करीत आहे. १८०४ जेथे यादववंश-
भूषण सकलकलाप्रवीण असा श्रीरामचंद्र
प्रभु न्यायाने राज्य करितो. १८०५ तेथे शि-
वसांप्रदायाने चालणारा श्रीनिवृत्तिनाथाचा

मोहनीचे रूप धारण केलें होते, त्याचा हा अवतार आहे
झणून त्यास श्रीलिंगी व पुल्लिंगी अशीं दोन्हीही नामें आहेत.
ह्या देवाचा मुळचा वेष स्त्रीचा आहे. परंतु उत्सवात बंगरे
पुरुषाचाही पोषाख घालतात. ह्याच नेवाशात ज्ञानेश्वरांनी
ज्ञानेश्वरी लिहिली. तेथे अद्याप 'ज्ञानोबा' चा खाव ह्या नां-
वानें एक प्रसिद्ध दगडी खाव आहे. त्याजवर प्रथमतः कोळ-
शानें ज्ञानेश्वर महाराज ओव्या लिहीत, व नेवाशाचे कुळक-
र्णी सच्चिदानंद बाबा हे त्याची नीट प्रत उतरून ठेवीत.
अहमदनगर डिस्ट्रिक्ट 'ग्याझिटीयर' झणून सरकारमार्फत
प्रसिद्ध झालेल्या इंग्रजी पुस्तकात 'निवास' ह्या शब्दाचा अर्थ
नेवासें असा केला आहे. ती निखालम चूक, केवळ महाराष्ट्र-
भाषेचे अज्ञान होय. कारण मुळातील 'सकलकलानिवास'
येवढें संपन्न पद सामासिक असून ते राजे रामचंद्र ह्याचे
विशेषण आहे, हे स्पष्ट दिसतें. अधिक माहितीकरिता 'कर-
ळकोकिळां'तील 'ज्ञानेश्वराची ज्ञानेश्वरी' हा विषय पाहून
त्यातील नेवासें येथील एका सन्मान्य वकिलाचे पत्र पहावे.

१ मुळात 'श्रीनिवृत्तिनाथमुते' असे आहे. मुत ह्याचा
अर्थ शिष्य असाही होतो, व कित्येक महती पथांमध्ये
शिष्यपरंपरेला पुत्र अशीच संज्ञा असून त्यास पुत्राप्रमाणेंच
जिनर्गा बंगरे मिळते. शिवाय, शिष्य हा पुत्ररूपीच आहे,
असा ज्ञानेश्वराचाही आशय ठिकांठकाणी ज्ञानेश्वरीत

शिष्यरूप पुत्र जो ज्ञानदेव त्यानें हा गीतेला
देशभाषेच्या तऱ्हेचा अलंकार केला आहे
१८०६ असें भारताच्या गांवांत श्रीधर्म
नामक प्रसिद्ध पर्वामध्ये श्रीकृष्ण आणि
अर्जुन ह्यांनीं जें सुंदर भाषण केलें, १८०७
जें उपनिषदाचें सार; सर्व शास्त्राचें माहेर
परमहंसांनीं सेवन करण्याचें जें सरोवर
१८०८ निवृत्तिदास ज्ञानदेव झणाले
'त्या गीतेचा अठरावा अध्याय हा कळस तें
शेवटास गेला.' १८०९ उत्तरोत्तर ह्या
ग्रंथाच्या पुण्यरूपसंपत्तीच्या सर्व सुखांनीं स
प्राणिमात्रांनीं संपन्न व्हावें. १८१० शके बाराशें
बारामध्ये ज्ञानेश्वरांनीं ही टीका केली
आणि मच्चिदानंदबाबा ह्यांनीं ती लिहि-
ण्याचें काम फार आस्थापूर्वक केलें. १८११

प्रगट झालेला आहे. पहा ओव्या १६५३१७२९. कर्ण, ३
भागवरामापाशी मी ब्राह्मण आहे असें मागून
शिकत असता, ते रागावले, त्या वेळी त्यानें असे
आहे की "शिष्याचा गुरू हा पिताच होय. झणून जी गुरू-
जाती, तीच शिष्याची, असें मनात आणून मी ब्राह्मण
असें सांगितलें."

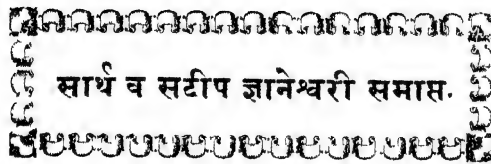
भारत-उद्योगपर्व.

शेवटीं जोडलेल्या ओव्याः—

श्रीशकेपंधराशें बारीतरीं । तारणनामसंवत्सरीं । येकाज-
पैर्दन् अत्यादरीं । गीता ज्ञानेश्वरीप्रति शुद्ध केली ॥ १ ॥
लघू पूर्वीच अतिशुद्ध । परी पाठांतरी शुद्ध अबद्ध । तो
संघुनियां एवंविध । प्रतिशुद्ध सिद्धज्ञानेश्वरी ॥ २ ॥ नमो
पनेश्वरा निष्कळंका । जयाची गीतेची वाचितां टीका । ज्ञान
वैद्य लोकां । अतिभाविकां ग्रंथार्यियां ॥ ३ ॥ बहुकाळपर्वणी
ममदी । भाद्रमासकपिलाषष्ठी । प्रतिष्ठानीं गोदातटीं । लेख-
नामाठी संपूर्ण जाली ॥ ४ ॥ ज्ञानेश्वरीपाठीं । जो बोवी
यतिल मन्हाटी । तेणें अमृताचे ताटीं । जाण नरोटी
पडिली ॥ ५ ॥

ज
ल
घ
श्रीशके पंधराशें बारामध्ये तारणनामसंव-
त्सर असतां, अत्यंत आदरानें एकाजनार्द-
सांनीं गीताज्ञानेश्वरीची प्रत शुद्ध केली. १
ह्याच ग्रंथ अत्यंत शुद्ध होता. परंतु पाठां-
नांचे सगळे
विश्वामित्राः

तरानें अतिशय विसंगत झाला. तो अ-
रीतीनें तपासून ज्ञानेश्वरीची दुसरी शुद्ध प्रत
तयार केली. २ निष्कलंक असे जे ज्ञानेश्वर
त्यांना नमस्कार असो. ज्यांची गीतेची टीका
वाचली असतां अतिभाविक व ग्रंथार्थजिज्ञासूंना
ज्ञान प्राप्त होतें. ३ बहुतकालानें येणारी
दुर्लभ पर्वणी कपिलाषष्ठी, भाद्रपदमास, असत
गोदातीरीं प्रतिष्ठान (पैठण) नगरामध्यें
लेखनाचें काम समाप्त झालें. ४ ज्ञानेश्वरीच्या
पाठामध्ये जो कोणी मराठी ओवी रचून घालील
त्यानें अमृताच्या ताटामध्ये नरटी ठेवल्याप्रमाणें
आहे, हें लक्ष्यांत ठेवावें. ५



सार्थ व सटीप ज्ञानेश्वरी समाप्त.

“जनार्दन महादेव गुजर, बुकसेलर रामबाई डी-मुंबई

किं. ३० पवमानसूक्तम् विष्णुसूक्तं इत्यादि विषय ४२. पोथी सुटी. किं. रु. १।० ट. ख. ८८ रेशमी बांधीव.
रु. १।१ ट. ख. ८८ किं. ट.

ऋग्वेदीश्रावणी-पोथी १८ ८८

श्रीशुक्लयजुर्वेदीयमाध्यंदिनवाजसनेयिनां-

आह्निकसूत्रावलि: (ब्रह्मकर्म)

आवृत्ति ४ थी विषय ४२८ टाईप सुंदर. कागद चांगला बुकसांचा.

॥०॥ किंमत २॥ रु. होती ती कमी करून किं. १॥ साधा कागद ट. ख. ८८, उत्तम कागद किं. रु. २ ट. ख. १०

माध्यंदिनवाजसनेयी ब्राह्मणांस हा बहुत लाभ आहे.

याज्ञवल्क्यस्मृति.

मिताक्षराव्याख्यासंवलित.

अनेक स्मृत्यादि धर्मशास्त्रग्रंथेभ्यः टिप्पण्यादि युक्तीकृता च । बुक. कायद्याच्या पुस्तकासारखी सुरेख
वस्था केली आहे. किं. रु. ३ ट. ख. १८

मनुस्मृति: सटीका.

कुल्लूकभट्टव्याख्यासंवलित २ १८

कुल्लूकभट्टव्याख्यासंवलित. मोठे अक्षरांची २॥ १८

कृत्यसंग्रहः.

विषय १७१. द्वादशमास व अधिकमास हातील विशेष कृत्ये घेऊन त्यांचे संकल्प, पूजा, कथा वगैरे शुद्ध व सरळ
आहेत. कर्मशील गृहस्थांचा व मुख्यत्वेन भिक्षुकांचा हे एक पुस्तक संग्रही असल्याने निर्वाह होईल. आ-
वृत्ति २ री. टाईप मोठा, कागद सुंदर, पोथी सांचा. किं. १॥१ ट. १८

संस्कृतधर्मसिंधुः.

टिप्पण्यादियुतः । लेखी प्रतीवरून धर्मशास्त्रज्ञ विद्वानांकडून शुद्ध करवून स्थलविशेषी टिप्पण्या व विषय ज्यास्त
मार्जिन्स (विषयसूची) देऊन, कायद्याच्या पुस्तकासारखी व्यवस्था केली आहे. त्यामुळे विषय पाहण्या
सारच सोईचें झाले आहे. रायल अष्टपत्री सांच्याचे बुक. टाईप उत्तम, कागद तेजस्वी जाड, कपड्याची सुरेख बांधणी.
हा धर्मसिंधूत विशेष विषय व टिप्पण्या जोडल्या आहेत, एकादशीचा निर्णय, गोत्रव्यवहार कोष्टक, आशौचप्र-
करण वगैरे नेहमी लागणाऱ्या विषयांचे विवेचन अगदी मुलभ रीतीने केले आहे. किं. रु. ३ ट. ख. १८

फारच सुरेख, स्वस्त, आणि उपयुक्त

अमरकोशः ।

शब्दाना वर्णानुक्रमेण (Index) मयुक्त. । पाकट (खिशांत राहणाऱ्या) सांचा.

रोजच्या अभ्यासासाठी. माथी बांधणी. किं. १८ ट. ख. ८८

दादा, बीम, पंचवीस प्रती एकदम घणारांस मुलभ रीतीने पडतील. पृष्ठे ३५०.

गृहद्वारूपावलि:-(सिद्धांतकौमुदीअनुक्रमानें) ८॥

रूपावलि:-एकाक्षरीकोशसहित ८८ ८॥

धातुरूपावलि. ८८ ८॥

सिद्धांतकौमुदी.

स्वरवेदिकीसमेता (पंचम्यार्शत्त.) अष्टा-श्रुती, गणपाठ, धातुपाठ, लिङ्गानुशासन, शिक्षा, अष्टाध्यायीसू-
त्रिकमकोशः सूत्रासहिता च. किं. रु. २ ट. ख. १८

डी, मुंबई.

श्रीगुरुगणेशाय नमः

सुभाषितरत्नभाण्डागारम्.

(तृतीयावृत्तिः) ग्रंथसंख्या १९,४४०. विषयसंख्या ७४४. श्लोकसं० १०,५६८. कोणता श्लोक कोणत्या ग्रंथातीतं
निर्णयपूर्वकं व वर्णानुक्रमसूचीसहित. ३॥ ००

शतश्लोकी सटीका.-श्रीमच्छंकराचार्यप्रणीता आनन्दगिरिकृतटीकासमेता. १ ८०

उपदेशसाहस्री सटीका.

श्रीमच्छंकराचार्यप्रणीता, रामतीर्थखामिकृतटीकासमेता.	३	००
„ रेशमी पुढ्याची	३॥	००
मुहूर्ततत्व सटीक, पोथी	१	८०

क्रियापदप्रकाश.

आवृत्ति ३ री (भागद्वयात्मक.) A guide to Sanskrit Verbs.

Part 1 & 2

THIRD EDITION.

Price 12 Annas

REVISED AND ENLARGED.

Containing a full conjugation in all tenses and moods with important rules of almost all the important Sanskrit verbs, with an addition of two cantos (14 & 15) from मट्टिकाव्य, illustrating the forms of the Perfect and Aorist, by Mr GOVIND SHASTRI BASTI

नांवें	कि. रु.	ट. ख.	नांवें	कि. रु.	ट. ख.
संहिता, मूलपोथी.	४	॥०	रूपावलि:	८-	८॥
इग्वेदमंत्रसंहिता....	१॥	८२	धातुरूपावलि:	८२	८॥
इग्वेदीब्रह्मकर्म.	१	८२	सिद्धांतकौमुदी.	२	०॥
„ रेशमी बांधीव.	१॥	८३	संधिप्रकाश....	८३	८
ऋग्वेदीश्रावणी पोथी.	॥०	८-	समासचक्र,	८॥	८
प्रवमानपंचस्तुति-पोथी....	॥०	८-	समासचंद्रिका.	८॥	८
रुद्रस्तुतम्-पोथी.	८२	८॥	सर्वपूजा.	८॥	८
वेदांगचतुष्टय-पोथी.	००	८॥	विष्णुसहस्रनाम-मूल.	८-	८॥
आहिकसूत्रावली: (माध्यंदिनब्रह्मकर्म) -			सत्यनारायण-मूल.	८-	८॥
„ कागद उत्तम.	२	००	मंगलाष्टके.	८॥	८॥
„ कागद साधा.	१॥	८३	पुरुषोत्तमसहस्रनाम.	८२	८॥
मनुस्मृति: सटीका	२	००	देवीसहस्रनामावलि.	८-	८॥
„ „ अक्षर मोठे.	२॥	००	गणपतिसहस्रनामावलि.	८-	८॥
समग्र-पोथी.	१॥	००	विष्णुसहस्रनामावलि.	८-	८॥
त्रयं नारायणभट्टी.	२	००	शिवसहस्रनामावलि	८-	८॥
शिवकव्यस्मृति मिताक्षरास०	३	००	शिवकवच.	८-	८॥
शिवस्तोत्र-पोथी.	००	८-	रामरक्षा.	८॥	८॥
कोश-साधा पुढा.	००	८-	महिम्न.	८॥	८॥
महिल:	००	८॥	महाराजमहात्म.	०॥	८॥

"जनादन महादेव गुर्जर, बुकसेलर रामवाडी-मुंबई."

नावें	कि.	र.	ट.	ख.	नावें	कि.	र.	ट.	ख.
सुसुकर-कापडी सोनेरी.	१॥	०-	०-		वसंतकोकिलकादंबरी.	१॥	०-	०-	
,, , रेशमी बांधणी.	१॥	०-	०-		सुभाषितपथमाला.	०-	०-	०-	
विचित्रभाण्डागारम्	३॥	१-	०-		सद्गुरुभक्ति कविता.	०-	०-	०-	
ओफी सटीका	१	०-	०-		विवाहविधिचंद्रिका....	१॥	०-	०-	
देशसाहस्यसटीका.	३	१-	०-		सार्थगणेशगीता.	१॥	०-	०-	
,, , रेशमी पुढ्याची.	३॥	१-	०-		विठोबा अण्णा दसरदार-चरित्र	१-	०-	०-	
दुर्लभसटीक पोथी... ..	१	०-	०-		वैद्यविनोद सार्थ.	२॥	१-	०-	
प्यापदप्रकाश.	१॥	०-	०-		वैद्यक शास्त्रधर मराठी भाषांतरासह.	२॥	१-	०-	
मराठी पुस्तकें.					डोंगरेकृत संगीतमाला-				
चित्र लोकोत्तरचमत्कार भाग १	१॥	०-	०-		संगीत इंद्रसभा.	१-	०-	०-	
सुखसंस्थितिविचार.	१-	०-	०-		,, वेणीसंहार.	१-	०-	०-	
पारलमाला	१॥	०-	०-		,, रंगीनायकीण.	१-	०-	०-	
मोमच्छंकराचार्यचरित्र.	१॥	०-	०-		,, मृच्छकटीक.	१-	०-	०-	
मुमुक्षुति मराठी भाषांतरासहित.	५	१-	०-		,, शाकुंतल.	११-	०-	०-	
मतिमुक्ताहार.	१॥	०-	०-		,, वसंतोत्सव.	११-	०-	०-	
माक्षे कळसूत्रीधर, नरदेहाच्या आकृतीसह.	१-	०-	०-		त्रिलोकेकरकृत संगीत नाटके-				
पंचतंत्रामृत.	०-	०-	०-		संगीत हरिश्चंद्र.	१॥	०-	०-	
मीनचा इतिहास.	१-	०-	०-		,, सावित्री नाटक.	१-	०-	०-	
सारिथ्यविमोचन.	१-	०-	०-		सुलभप्रसूति.	०-	०-	०-	
गीता. (रामचरित)... ..	२	०-	०-		शिवलीलामृत पोथी....	१-	०-	०-	
पुष्पप्रबोध.	१-	०-	०-		,, साधी बांधलेली.	११-	०-	०-	
कृतकविपंचक.	१॥	०-	०-		,, रेशमी बांधलेली.	१-	०-	०-	
धर्मज्ञानधर्माची आवश्यकता. १	०॥	०-	०-		शनिमाहात्म्य पोथी.	०-	०-	०-	
धर्मज्ञान-आर्यधर्माचा इतिहास.	५॥	०-	०-		,, बुक.	०-	०-	०-	
वर्षाचा वृत्तांत.	२	०-	०-		उदारदामोदर नाटक.	१॥	१-	०-	
मोकानयनाचा इतिहास.	१-	०-	०-		मिताक्षराव्यवहाराध्याय सार्थ.	६	१॥	०-	
वचनचरित्र.	०-	०-	०-		सार्थसत्यनारायण.	१-	०-	०-	
गीतामंदोदरीभेट.	०-	०-	०-		श्रीमद्भगवद्गीता, (मराठीभाष्यासह)	४	१॥	०-	
पद्मोदानंदशांतवन.	०-	०-	०-		स्त्रीगीतमाला-गीतागीत भाग १.	०-	०-	०-	
गीतास्वयंवर.	०-	०-	०-		रुक्मिणीहरणगीत भाग २.	०-	०-	०-	
चंद्रहासचरित्र.	०-	०-	०-		कृष्णाचीं गाणीं भाग ३.	०-	०-	०-	
मुलीचें पहिलें पुस्तक.	०-	०-	०-		विचारसागर (हिंदुस्थानी) मदीं....	२	१-	०-	
मुली पहीलें पुस्तक चित्रांसह.	१-	०-	०-		अश्वघाटीप्रबोधिका....	०-	०-	०-	
गवळिका. (रांगोळी लेणी)	१-	०-	०-		हरिविजयपोथी.	१॥	१-	०-	

पुस्तकें मागविण्याचे पत्ते:-

जनार्दन महादेव गुर्जर,
मु० पार्पुड-पो. बनवेल.

जनार्दन महादेव गुर्जर,
रामवाडी, मुंबई.

